शब्दार्थभानुः ।

.BDÂRTHA BHÂNÛ,

A

SKRITA-HINDUSTANI DICTIONARY

HE USE OF SECONDARY SCHOOLS.

Compiled under the directions of the
Punjab Text Book Committee

BY

NDIT BHÂNUDAT, VISHÂRAD.

SECOND EDITION.

PUNJAB TEXT BOOK COMMITTEE,
LAHORE.

All rights reserved.

1899.

LAHORE

RAI SAHIB M. GULAB SINGH

PRINTED FOR

PANDIT BISHAMBHARNATH,

SANSKRIT BOOK-SELLER, LAHORE, AT THE NIRNAYA-SAGAR PRE

Bombay:

ॐ

विज्ञापन ।

प्रथमसंस्करण.

प्रगट हो कि, प्रत्येक भाषामें पूर्ण व्युत्पत्ति लाभ करनेके लिये, उनके व्याकरण और कोशोंको जान लेनेकी सबको आवश्यकता बनी रहती है । यही कारण है कि, हमारे प्राचीन ऋषियों और पण्डितोंनेभी अपनी मातृभाषास्वरूप संस्कृत-भाषाके शुद्ध लिखने, और पढ़नेके लिये, अत्यन्त परिश्रम और पाण्डित्यके साथ कई अत्यन्त परिपूर्ण, और महो-पकारक व्याकरण और कोशोंकी पुस्तकें लिखी हैं, जिनको देख, बड़े २ पंण्डित चकित रह, उनकी प्रशंसा करते २ हारे हैं । परंतु यह एक बड़े शोकका विषय है, कि ये सब पुस्तकें आधुनिक अंग्रेज़ी पाठशालाओंके बीच जो रीति पढ़ाने पढ़नेकी चल रही है, कि विद्यार्थी, संस्कृत अंग्रेज़ी फ़ारसी उर्दू हिन्दी आदि भाषा, और गणित भूगोल इतिहास आदि सामयिक विद्याभी एक साथही सीखें, और समय २ में उनमें परीक्षा देकर उत्तीर्णभी होवें अधिक उपकारक नहीं होतीं । क्योंकि और २ भाषाके व्याकरण और कोशोंकी सरल प्रक्रियाकी नांई, इन प्राचीन संस्कृत-भाषाके व्याकरण और कोशोंकी रीति सुगम नहीं । रचना प्रणाली ऐसी कठिन रीतिके साथ संस्कृत भाषामेंही है, कि बिना कई एक वर्ष अध्यापकके पास पढ़े, और निरन्तर कण्ठ किये उपकारक नहीं होतीं ।

इस न्यूनताके पूर्ण करनेके लिये यद्यपि कितने एक महात्मा पुरुषोंने नई रीतिसे व्याकरण और कोशोंकी पुस्तकें लिखी हैं, और उनसे संस्कृत प्रारिप्सुओंका बहुतसा उपकारभी दर्शित हुआ है; परन्तु वह उपकार यथेष्ट उपकार नहीं; क्योंकि एक तो वे सब पुस्तकें अंग्रेज़ी भाषामेंही लिखी गयी हैं, दूसरे उनका मूल्यभी बहुत है स्कूलोंके संपूर्ण छात्र मोल नहीं ले सकते। इस न्यूनताके पूर्ण करनेके लिये अपने कई एक मित्रोंके अनुरोधसे यह एक छोटासा कोश जिसका नाम "शब्दार्थभानु" है, और जो संस्कृत पाठशालाओंके विद्यार्थियोंकीभी अंग्रेज़ी कोशोंकी नांई अकारादि क्रमसे शब्दार्थज्ञानरूप मनोरथ पियासाको शान्त करता है लिखा है । यद्यपि और २ कोशोंमें शब्द बहुत होंगे, और इसमें प्राय उनसे थोडे हैं; परंतु यह सब शब्द ऐसे हैं कि इनमें न तो कोई शब्द अति सुगम, न अप्रचलित और न केवल यौगिकही है, ऐसे २ शब्दहि लिखे हैं, जो कालेज और स्कूलोंके विद्यार्थियोंके अत्यन्त उपयोगी हैं ।

१ इस कोशके बहुत बड़ा हो जानेके भयसे एक यह रीतिभी इसमें रक्खी गई है कि, शब्दके भिन्नार्थ तो सब हों, परंतु अर्थोंमें पर्य्यायवाची शब्द न हों । यथा ।–"हरिः" इस शब्दके अर्थोंमें विष्णु, सूर्य्य, बन्दर, मेंडक, चांद, वायु, घोडा, यम, शिव, ब्रह्मा, किरण, इन्द्र, मोर, कोइल, हरा, भर्तृहरि आदि अर्थ तो हों; परंतु और बड़े २ कोशोंकी नांई सूर्य्य आदिके अधिक पर्य्याय न हों ।

२ इस ग्रन्थके लिखनेके समय बङ्गाली, अंग्रेज़ी, संस्कृत और महरटी भाषाके कई एक कोश, तथा संस्कृत–भाषाकी प्रचलित पुस्तकेंभी रखली गयींथीं, कि उनमेंका कोई शब्द और विलक्षण अर्थभी इसमें न रह जाय ।

३ शब्दके आगे यथाक्रम देश–भाषामें अर्थ दिखाया है; भिन्नार्थ शब्दको (,) लघु–विराम, हिन्दी अर्थको (;) गुरुविराम, और उर्दू अर्थको (।) पूर्ण विराम चिन्हसे पृथक् कर दिया है ।

४ क्रियावाची शब्दोंकी तालिका, उनके गण, पद, और हिन्दी अर्थसमेत अन्तमें लिख दी है ।

५ इसमें शब्द सब निर्विभक्तिक इसलिये लिखे हैं कि, विभक्ति लगानेसे एक २ शब्दके प्राय २१ स २, रूप बन जाते हैं कहांतक लिखें; परन्तु उनके जाननेके लियेभी व्याकरणसम्बन्धीय स्थूल २ थोड़ेसे नियम आरम्भमे दिखा दिये हैं। यह एक बड़े हर्षकी बात है, कि इस ग्रन्थको समग्र लिखकर अपनी असमर्थताके कारण लखु–पुरप्रदेशीय पाठ-शालाओंके परीक्षक और निरीक्षक श्रीमान् अलग ज़ैण्डर साहिब बहादुरके-पास जब छापनेके लिये निवेदन किया, तो विन्होंने वड़ी उपकार–दृष्टि और हृष्ट–चित्तके साथ राजकीय शिक्षा–प्रणालीके अध्यक्ष विद्योत्साही श्रीयुत मेजर हालरायड़ साहिब बहादुरकेपास भेज दिया, और उन्होंने देहली तथा लखुपुरीय विद्यालयस्थ संस्कृताध्यापकोंकी अनुमतिसे स्वयं अङ्गीकार कर, अपने निज द्वीपमें जानेके समय अपने स्थानापन्न उक्त गुण–सम्पन्न श्रीयुत कार्डरी साहिब बहादुरको पूर्ण आज्ञा देनेके लिये मन्त्रणा दी और उक्त साहिबनेभी कलिकत्ता विश्वविद्यालयके प्रधान परीक्षक, के, एम्, बन्द्योपाध्यायजीकी अनुमतिसे मुझको यथेष्ट पुरस्कार देकर छापनेकी आज्ञा दी, जिसके छापनेमें श्रीमान् हरिभक्त लाला बिहारी लाल पुरी कोठीवालेनेभी बहुत सहायता की है, जिसका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

॥ इति ॥

सं. १९३२ वैशाख
सं. ई. १८७५ मं.

पुष्करज्ञातीय
पं. भानुदत्त विशारद।

द्वितीयसंस्करण सन १८९९

ईश्वर–कृपासे सन ९३ में १ म, संस्करण समाप्त हुआ था, और पुस्तक-प्राप्तिके लिये बहुतसे निवेदनपत्र, ग्रन्थ-कर्ताके नाम, और कईएक सण्टरेल बुकडिपोके मुख्य अधिकारी श्रीमान् रायसाहिब मुन्शी गुलाबसिंह एण्डसन्सके नाममी आये। इस निमित्त सन १८९५ मे उक्त मुन्शीसाहिबने उक्त कोशके पुनर्मुद्रित करानेका यत्न करके संशोधनार्थ ग्रन्थ-कर्ताके पास भेजा। ग्रन्थ-कर्ताने संपूर्ण स्वत्व राजकीय जानकर उक्त मुन्शीसाहिबको राजकीय आज्ञा लेनेके लिये निरोध किया, और इसपर राजकीयशिक्षा-प्रणालीके अध्यक्ष, गुण-ग्राही, विद्योत्साही, परम-दयालु, न्यायशील श्रीमान् जे. साईम साहिब बहादुर एम. ए. एल-एल-डी, सी. आई. ई की देशोपकार दृष्टिने पञ्जाब टैक्सबुक सुसाईटीको पुनर्मुद्रणार्थ उत्तेजना, और सुफारिश की, और उक्त सुयोग्य सभानेभी बहुतसे परामर्श और पञ्जाब देशीयपाठ-शालाओंके मुख्याध्यापकोंकी तथा एम. ए. स्टाईन रजिस्टरार पञ्जाब यूनीवर्सिटी की सम्मति ग्रहण करके "स्कूल संस्कृत हिंदुस्थानी कोश" नाम धरकर ३॥ मूल्यके पलटे छात्रोंकी सुविधाके लिये केवल २ रुपये मात्र मोलनियत कर मुम्बई निर्णयसागर प्रेसमे छापवानेका प्रबन्ध करके मुझे पुनः सुसंस्कृत करनेकी आज्ञा दी। जिसके अनुसार आज यह द्वितीय संस्करण आप लोगोंके दृष्टि-गोचर होता है।

यद्यपि इस संस्करणमें पृष्ठसंख्या कुछ घटी है; क्योंकि अप्रचलित शब्द, और शब्दोंके संस्कृत अर्थ कुछ निकाले गये हैं; तथापि और कई एक नये शब्द डालदेनेसे शब्द-संख्या चढ़भी गई है और हिन्दी भाषाके अमूल्य भंडारमें नवीन रत्न डाला गया है"

श्रीमान् पं. भानुदत्त शर्म्मा.

प्रस्तुत विभक्तियोंका शब्दोंमें जोड़नेके लिये स्वरूप, और उनके अर्थ.

अर्थ.	विभक्ति.	एक.	द्वि.	बहु.	भाषामें अर्थ
कर्ता–	प्र०	०	औ	अः	०–ने
कर्म–	द्वि०	अम्	,,	,,	को
करण–	तृ०	आ	भ्याम्	भिः	से, द्वारा–साथ–करके
सम्प्रदान–	च०	ए	भ्याम्	भ्यः	को–अर्थ–लिये–निमित्त–ताईं
अपादान–	पं०	अः	,,	,,	से
सम्बन्ध–	ष०	अः	ओः	आम्	का–के–की
अधिकरण	स०	इ	,,	सु	में–बीच–पर–ऊपर–पास

स्वरान्तशब्दोंका उच्चारण।

अकारान्त पुल्लिङ्ग (नर) शब्द ।

	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	नरः	नरौ	नराः
द्वि०	नरम्	,,	नरान्
तृ०	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
च०	नराय	,,	नरेभ्यः
पं०	नरात्	,,	नरेभ्यः
ष०	नरस्य	नरयोः	नराणाम्
स०	नरे	,,	नरेषु
सं०	हे नर !	हे नरौ !	हे नराः !

सर्वनाम शब्दोंको छोड़ प्राय सब निम्न लिखित अकारान्त शब्द इसी (नर) शब्दकी नांईं जानो। यथा।–राम–कृष्ण–शिव–घट–कुम्भ–लेखक–पाठक–पाचक–रजक–कूप–सिंह–तरुण–वृद्ध–बाल–त्याग–वास–निवास–वियोग–संयोग–भोग–नास्तिक–भक्षक–नाश–भेक–मण्डूक–दर्दुर–क्रय–विक्रय–लाभ–आलोक–प्रकाश–गोपाल–शूर–वीर–आश्रम–सज्जन–दुर्जन–सुजन–भ्रम–विभ्रम आदि–

आकारान्त (सोम-पा) शब्द ।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	सोमपाः	सोमपौ	सोमपाः
द्वि०	सोमपाम्	,,	,, पः
तृ०	सोमपा	सोमपाभ्याम्	सोमपाभिः
च०	सोमपे	सोमपाभ्याम्	सोमपाभ्यः
पं०	सोमपः	,,	,,
ष०	,,	सोमपोः	सोमपाम्

स०	सोमपि	,,	सोमपासु
सं०	हे सोमपाः !	हे सोमपौ !	हे सोमपाः !

(हाहा) शब्दको छोड़ प्राय सारे दीर्घ आकारान्त धातु निष्पन्न शब्द इसी शब्दकी नाईं हैं। यथा।– जलपा–कीलालपा–शङ्खध्मा–विश्वपा–आदि ।

इकारान्त (मुनि) शब्द ।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वि०	मुनिम्	,,	मुनीन्
तृ०	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
च०	मुनये	,,	मुनिभ्यः
पं०	मुनेः	,,	मुनिभ्यः
ष०	,,	मुन्योः	मुनीनाम्
स०	मुनौ	,,	मुनिषु
सं०	हे मुने !	हे मुनी !	हे मुनयः !

पति, और सखिको त्याग, सारे इकारान्त शब्द (मुनि)के तुल्य हैं। यथा।–हरि–अरि–कपि–कवि–अग्नि–वन्हि–दैत्यारि–नृप ति–भू पति–सीतापति–ज्ञाति–तिथि–गिरि–अद्रि–ध्वनि–जलधि–इषुधि–शरधि–रश्मि–अवि–रवि–कवि–कृमि–धर्म बुद्धि–पाप बुद्धि–अरत्नि–सारथि–आदि ।

पतिकी ३ या के एकवचनमे "पत्या" ५ मी ६ ष्ठी के एकवचनमे "पत्युः"

उकारान्त (साधु) शब्द ।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	साधुः	साधू	साधवः
द्वि०	साधुम्	,,	साधून्
तृ०	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
च०	साधवे	,,	साधुभ्यः
पं०	साधोः	,,	,,
ष०	,,	साध्वोः	साधूनाम्
स०	साधौ	,,	साधुषु
सं०	हे साधो !	हे साधू !	हे साधवः !

शम्भु आदि सारे उकारान्त शब्द (साधु)की नाईं उचरित होते हैं। यथा।–भानु–मन्यु–जन्तु–बाहु–तन्तु–गोमायु–अणु–वेणु–भिक्षु–दस्यु–शिशु–सेतु–ओतु–हेतु–मृत्यु–क्रतु–विन्दु–बन्धु–सिन्धु–विधु–शत्रु–रिपु–हनु–प्रभु–निद्रालु–कम्बु–शम्बु–वेपथु–वायु–पायु आदि ।

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग (प्रतिभू) शब्द ।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	प्रतिभूः	प्रतिभुवौ	प्रतिभुवः
द्वि०	प्रतिभुवम्	,,	,,
तृ०	प्रतिभुवा	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभिः
च०	प्रतिभुवे	,,	प्रतिभूभ्यः

पं०	प्रतिभुवः	„	„
ष०	„	प्रतिभुवोः	प्रतिभुवाम्
स०	प्रतिभुवि	„	प्रतिभूषु
सं०	हे प्रतिभूः !	हे प्रतिभुवौ !	हे प्रतिभुवः !

खलपू, दन्भू, पुनर्भू, वर्षाभू, करभू, कारभू, सुद्ध, हुहू, स्वयम्भू आदि और सब ऊकारान्त शब्द इसीकी नाईं जानो।

ऋकारान्त (दातृ) शब्द।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	दाता	दातारौ	दातारः
द्वि०	दातारम्	„	दातॄन्
तृ०	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
च०	दात्रे	„	दातृभ्यः
पं०	दातुः	„	„
ष०	„	दात्रोः	दातॄणाम्
स०	दातरि	„	दातृषु
सं०	हे दातः !	हे दातारौ !	हे दातारः !

पितृ भ्रातृ दुहितृ आदि कई एक शब्दोंकी प्रथमा, और द्वितीयाके पहिले दो वचनोंको छोड़ निम्न लिखित प्राय सारे शब्द इसीके तुल्य हैं। यथा।—नेतृ–भर्तृ–भोक्तृ–होतृ–पोतृ–शास्तृ–यन्तृ–जेतृ–स्रष्टृ–धातृ–मातृ–कर्तृ–शासितृ–वक्तृ–विदितृ–भवितृ आदि।

ऌकारान्त एकारान्त ऐकारान्त शब्द अप्रसिद्ध हैं, इसलिये नहीं लिखे।

ओकारान्त (गो) शब्द।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	गौः	गावौ	गावः
द्वि०	गाम्	„	गाः
तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
च०	गवे	„	गोभ्यः
पं०	गोः	„	„
ष०	„	गवोः	गवाम्
स०	गवि	„	गोषु
सं०	हे गौः !	हे गावौ !	हे गावः !

सारे पुंलिंग ओकारान्त इसीकी नांईं होवे हैं।

औकारान्त (ग्लौ) शब्द।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वि०	ग्लावम्	„	„
तृ०	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः
च०	ग्लावे	„	ग्लौभ्यः
पं०	ग्लावः	„	ग्लौभ्यः

ष०	ग्लाव:	ग्लावो:	ग्लावाम्
स०	ग्लावि	,,	ग्लौषु
सं०	हे ग्लौ: ।		

नौ, आदि सारे औकारान्त पुल्लिंग ऐसेही होते हैं।

अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंकोही जब स्त्रीत्वकी विवक्षा होती है तो कोई आबन्त और कोई ईबन्त बन जाते हैं।

आबन्त (लता) शब्द ।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	लता	लते	लता:
द्वि०	लताम्	,,	,,
तृ०	लतया	लताभ्याम्	लताभि:
च०	लतायै	,,	लताभ्य:
पं०	लताया:	,,	,,
ष०	,,	लतयो:	लतानाम्
स०	लतायाम्	,,	लतासु
सं०	हे लते	प्रथमावत्	

रमा–गङ्गा–शिवा–पीडा–क्रिया–प्रतिज्ञा–शोभा–भिक्षा–निन्दा–नौका–योषा–शाला–पाठ–शाला–आज्ञा–शङ्का–धारा–माला–मक्षिका–शर्करा–सुधा–देवता–सुन्दरता–आदि सब आबन्त स्त्रीलिङ्ग ऐसेही जानने।

इकारान्त (मति) शब्द ।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	मति:	मती	मतय:
द्वि०	मतिम्	,,	मती:
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभि:
च०	मत्यै (तये)	,,	मतिभ्य:
पं०	मत्या:(ते:)	,,	,,
ष०	,,	मत्यो:	मतीनाम्
स०	मत्याम्(तौ)	,,	मतिषु
सम्बो०	हे मते !		

धृति–प्रीति–कान्ति–भ्रान्ति–शान्ति–नीति–भीति–रीति–प्राप्ति–शक्ति–भक्ति–मुक्ति–स्तुति–कीर्त्ति–ख्याति–पुष्टि–तुष्टि–दृष्टि–भूति–विभूति–भृति–निकृति–उपरति–आदि सारे इकारान्त स्त्रीलिंग इसीकी नांई जानों।

ईकारान्त (नदी) शब्द ।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	नदी	नद्यौ	नद्य:
द्वि०	नदीम्	,,	नदी:
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि:
च०	नद्यै	,,	,,
पं०	नद्या:	,,	,,

ष०	,,	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	,,	नदीषु
सम्बो०			

नगरी–पुरी–पुत्री–पृथिवी–मही–मेदिनी–धरणी–मैत्री–दरी–हंसी–शुनी–पिशाची–शशकी–देवी–मसी–मृणाली–दूती–जनिनी–धात्री–रजिनी–लेखिनी–बुद्धिमती–धनमती–वापी–युवती–तरुणी–मानुषी आदि सारे ईकारान्त इसी रीत जानो।

ऊकारान्त (वधू) शब्द।

एक.	द्वि.	बहु.
वधूः	वध्वौ	वध्वः
वधूम्	,,	वधूः
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
वध्वै	,,	वधूभ्यः
वध्वाः	,,	वधूभ्याम्
,,	वध्वोः	वधूनाम्
वध्वाम्	,,	वधूषु,

भू, भ्रू, सुभ्रू आदि भिन्न सारे स्वम्भू आदि ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द इसीकी नाईं होते हैं।

ऋकारान्त (दुहितृ) शब्द।

एक.	द्वि.	बहु.
दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः
दुहितरम्	,,	दुहितॄः
दुहित्रा	दुहितृभ्याम्	दुहितृभिः
दुहित्रे	,,	दुहितृभ्यः
दुहितुः	,,	,,
,,	दुहित्रोः	दुहितॄणाम्
दुहितरि	,,	दुहितृषु
हे दुहितः	प्रथमावत्–	

स्वसृके सिवाय और सब यातृ–ननन्दृ–मातृ आदि ऋकारान्त शब्द एसेहि उच्चारित होते हैं।

ऐकारान्त (सुरै) आदि स्त्रीलिंग शब्द, पु. (रै)के; ओकारान्त (द्यो) आदि पु. (गो)के; औकारान्त (नौ) आदि पु. (ग्लौ) शब्दके तुल्य हैं।

स्वरान्त नपुंसकलिङ्गशब्दाः

अकारान्त (फल) शब्द।

वि०	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	फलम्	फले	फलानि।
द्वि०	,,	,,	,,

और विभक्तियोंमें अकारान्त पुलिङ्ग (नर)की नाईं हैं।

मङ्गल–शुभ–कुशल–शिव–कल्याण–क्षेम–चरित्र–दौत्य•पाण्डित्य–काव्य–सौन्दर्य्य–सौभाग्य–अन्वेषण–गवेषण–परिवेषण–प्रेरण–मस्तक–शरव्य–दान–गान–आव्हान–आमन्त्रण–वस्त्र–वासन–शासन–मण्डल–

स्थण्डिल-युद्ध=औपम्य-नक्षत्र-आरोग्य-ताम्र-धान्य-मरण-शरण-भरण-चरण-चिन्ह-लिङ्ग-लाञ्छन-तिमिर-तीव्र आदि फलवत् ।

आकारान्त (श्रीपा) शब्द ।

प्र०	श्रीपम्	श्रीपे	श्रीपाणि
द्वि०	,,	,,	,,

आकारान्त शब्द प्राय नपुंसकमें ऐसेहि उच्चारित होते हैं ।

इकारान्त (वारि) शब्द ।

विभ.	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
च०	वारिणे	,,	वारिभ्यः
पं०	वारिणः	,,	,,
ष०	,,	वारिणोः	वारीणाम्
स०	वारिणि	,,	वारिषु
सं०	हे वारे(रि)!	हे वारे	

दधि, सक्थि, अक्षि, अस्थिके सिवा इकारान्त क्लीव लिङ्ग सारे विशेष्य शब्द इसी प्रकार हैं। दधि आदि शब्दोंमे इ लुप्त हो, ध् आदि ना आदिमे मिलजाते हैं । यथा-दध्ना-अक्ष्णा । आदि ।

उकारान्त (मधु) शब्द ।

वि.	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
च०	मधुने	,,	मधुभ्यः
पं०	मधुनः	,,	,,
ष०	,,	मधुनोः	मधुनाम्
स०	मधुनि	,,	मधुषु
सं०	हे मधो	,,	

सारे उकारान्त क्लीव लिङ्ग विशेष्य शब्दोंके ऐसेही रूप होते हैं ।

ऋकारान्त (धातृ) शब्द ।

प्र०	धातृ	धातृणी	धातृणि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	धात्रा (णा)	धातृभ्यां	धातृभिः
च०	धातृणे(धात्रे)	,,	धातृभ्यः
पं०	धातृणः(धातुः)	,,	,,
ष०	,, ,,	धातृणोः(धात्रोः)	धातृणाम्
स०	धातरि	धातृणोः ,,	धातृषु
सं०	हे धातः (हे धातृ)	,,	,,

व्यञ्जनान्त शब्द ।

ककारान्त (सर्व-शक्) शब्द ।

विभ.	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	सर्व-शक् (ग्)	शर्व-शकौ	सर्वशकः
द्वि०	सर्वशकम्	,,	,,
तृ०	सर्वशका	सर्वशग्भ्याम्	सर्वशग्भिः
च०	सर्वशके	,,	भ्यः
पं०	,, कः	,,	भ्यः
ष०	,,	सर्वशकोः	सर्वशकाम्
स०	सर्वशकि	,,	सर्वशक्षु

खकारान्त, अञ्चधातुको छोड़ चकारान्त और जकारान्त शब्दोंकी १ मा, के १ क वचनमें ख को (क्-ग्), ३ या, आदि पञ्चम्यन्त विभक्तियोंके द्विवचनमें खको ग् होकर और सब रूप उक्तशब्दकी नांई होते हैं । यथा । चित्रलिक् (ग्) जलमुक् (ग्) ऋत्विक् (ग्) चित्रलिग्भ्याम्–जलमुग्भ्याम्–ऋत्विग्भ्यामित्यादि ।

छकारान्त (सर्वप्राच्छ्) शब्द ।

सर्वप्राट्–ड्	सर्वप्राच्छौ (शौ)	सर्वप्राच्छः (शः)
सर्वप्राच्छम्	,,	,,
सर्वप्राच्छा (शा)	सर्वप्राड्भ्याम्	सर्वप्राड्भिः
सर्वप्राच्छे (शे)	,,	,, भ्यः
सर्वप्राच्छः (शः)	,,	,,
सर्वप्राच्छः (शः)	च्छोः (शोः)	च्छाम् (शाम्)
सर्वप्राच्छि (शि)	,,	,, ट्सु (क्षु)

जकारान्त (सम्राज्) शब्द ।

विभ.	एक.	द्वि.	बहु.
प्र०	सम्राट्–ड्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वि०	सम्राजम्	,,	,,
तृ०	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
च०	सम्राजे	,,	,, ड्भ्यः
पं०	सम्राजः	,,	,,
ष०	,,	सम्राजोः	सम्राजाम्
स०	सम्राजि	,,	सम्राट्सु
सं०	हे सम्राट् ड्	प्रथमावत्	

णकारान्त (सुगण्) शब्द ।

विभ.	एक.	द्वि.	बहु
	सुगण्	सुगणौ	सुगणः
	सुगणम्	,,	,,
	सुगणा	सुगण्भ्याम्	सुगण्भिः

सकारान्त (वेधस्) शब्द ।

प्र०	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
द्वि०	वेधसम्	,,	,,
तृ०	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः
च०	वेधसे	,,	भ्यः
पं०	वेधसः	,,	,,
ष०	,,	सोः	साम्
स०	सि	,,	स्सु
सं०	हे वेधः	,,	,,

इस् उस् प्रत्ययान्तोंमें थोड़ासा भेद है, और सब असन्त ऐसेही होते हैं ।

हकारान्त (मधुलिह्) शब्द ।

प्र०	मधुलिट् (ड्)	,, लिहौ	,, लिहः
द्वि०	मधुलिहम्	,,	,,
तृ०	मधुलिहा	लिड्भ्यां	लिड्भिः
च०	मधुलिहे	,,	भ्यः
पं०	मधुलिहः	,,	,,
ष०	मधुलिहः	लिहोः	लिहाम्
सं०	मधुलिहि	,,	लिट्सु (त्सु)

दुहादि, खेतवाह् और अनडुह्को छोड़ और सब हकारान्त ऐसेही होते हैं ।

पं० भानुदत्त विशारद.

श्रीपरमेश्वरो जयतितराम् ।

शब्दार्थ-भानुः ॥

संस्कृत कोश-हिन्दीभाषामें.

पुं=पुल्लिङ्ग स=स्त्रीलिङ्ग न=नपुंसक त्रि=त्रीलिङ्ग व्य=अव्यय.

अ, संस्कृतवर्णमालाका १ ला, अक्षर इसका उच्चारणस्थान कण्ठ है ।

अ, पु. विष्णु (व्य). अभाव, अल्प, निषेध, सादृश्य, अन्यत्व, अप्राशस्त्य, विरोध । (अभाव) अकरुण (जिसमे दया नहीं) अल्प (अकेशी) थोड़े जिसके वाल हैं (निषेध) अलोप (लोपका अभाव) सादृश्य (अब्राह्मण) (ब्राह्मण जैसा) (अविद्वान्) (विद्वानके) सिवा ।

अऋणिन्, त्रि. ऋणरहित । बेकर्ज़ ।

अंश, पु. भाग, खण्ड (न) दिन, भूपरिधिका एक भाग ।

अंशक, पु. जाति (न.) दिन (त्रि) वारिस, वांटनेवाला ।

अंशकल्पना, स. हिस्सा कायम करना ।

अंश (स) कूट, पु. ककुद; वैलका कंधा ।

अंशन, न. पार्थक्य; वांट ।

अंशांश, पु. हिस्सेका हिस्सा, अलग २ हिस्सा ।

अंशित, त्रि. वांटा हुआ ।

अंशिन्, त्रि. भागी, भागकारी ।

अंशु, पु. सूर्यकी किरण, सूत आदिका अग्रभाग, किरण ।

अंशुक, न. वस्त्र, दुपट्टा ।

अंशुधर, } पु. सूर्य, सगरका पोता,
अंशु(मत्)मालिन्, } (त्रि) प्रकाशवाला ।

अंशुमालिक, पु. सूर्य, चांद ।

अंशुल, न. सुन्दर, (पु.) चाणक्यमुनि ।

अंस, पु. कंधा, हिस्सा ।

अंहति(ती), स्त्री. दान, भाग, भेंट, रोग, पीड़ा ।

अंहस, न. पाप । गुनाह ।

अंह्रि, पु. पांव, चौथा भाग, श्लोककी चौथाई ।

अंह्रिप, पु. पेड़.

अक, पु. वक्रगति पुरुष, (न) पाप, दुःख. ।

अकच, पु. केतुग्रह, (त्रि.) मुंडा हुआ ।

अकण्टक, त्रि. निरुपद्रव; बेखटके ।

अकठोर, त्रि. नाकड़ा, साफ । मुलायम ।

अकथित, त्रि. नकहाहुआ ।

अकर्तन, त्रि. वामन; वाउंना ।

अकर्ण, त्रि. जिसके कान नहिं; वहिरा ।

अकर्मक, पु. कर्मरहित धातु (त्रि) निकम्मा ।

अकर्मन्, पु. निकम्मा, आलसी ।

अकल्प, त्रि. निकम्मा, आलसी ।

अकस्मात्, व्य. दैवात् । अचानक ।

अकाम, त्रि. कामनारहित । वेख्वाहिश ।

अकाण्ड, व्य. असमय । वेमौकअ ।

अकाय, पु. राहुग्रह (त्रि) जिसका देह नहिं ।

अकार, पु. आद्यस्वर; पहिला स्वर ।

अकारण, न. व्यर्थ । वेफ़ायदा ।

अकार्य, न. असत्कर्म । बुराकाम ।

अकल्प, त्रि. रोगी । वीमार ।

अकिञ्चन, त्रि. निर्द्धन । मुफ़लिस ।

अकिञ्चन(त्व)ता, न. स्त्री. निर्धनता । मुफ़लसी ।

अकिञ्चित्कर, त्रि. जो कुछ नकहसके । नाचीज ।

अकिल्बिष, त्रि. निष्पाप । वेगुनाह ।

अकीर्ति, स. अपयश । वदनामी ।

अकु, स. बुरी धरती ।

अकुतोभय, त्रि. निर्भय; जिसे किसीसे भय नहिं।

अकुप्य, न. सोना, रूपा । [सूर्य ।
अकूपार (वार), पु. कछुआ, समुंदर, पत्थर,
अकृतचूड, त्रि. जिसका मूंडन नहीं हुआ ऐसा वालक ।
अकृतज्ञ, त्रि. कृतघ्न । एसानफरामोश ।
अकृतदार, पु. अविवाहित; क्वारा ।
अकृष्णकर्मन्, पु. आग (त्रि) निष्पाप ।
अकृत्स्न, त्रि. अपूर्ण; अधूरा ।
अकृष्टचल, त्रि. अनवाहा खेत ।
अकृष्ट, त्रि. अनवाहा खेत ।
अकेतु, त्रि. जिसपर कोई चिन्ह नहीं ।
अकैतव, त्रि. सचा, निष्कपट ।
अकोट, पु. सुपारीका पेड़ ।
अकोविद्, त्रि. अबोध, मूर्ख ।
अक्का, स. माता; मा । [मिलाहुआ ।
अक्त, त्रि. जुड़ाहुआ, प्राप्त हुआ २ प्रकट हुआ २,
अक्तु, पु. मरहम, न. रौशनी ।
अक्र, न. कवच, ध्वजा, किला ।
अक्रान्त, त्रि. अपराजित, स. (न्ता) वेंगनका पोदा।
अक्रतु, त्रि. असमर्थ, मूर्ख, इच्छारहित, ।
अक्रम, पु. वेतरतीव (न) वेतरतीवी ।
अक्रिय, त्रि. क्रियारहित । निकम्मा ।
अक्रूर, पु. श्रीकृष्णसखा, गांदिनीपुत्र, (त्रि) जो निर्दय नहिं । [पुत्र ।
अक्रोधन, त्रि. क्रोधरहित (पु) आयतकूपिका
अक्लम, त्रि. क्लांतिरहित । वेतकान ।
अक्लिष्ट, त्रि. क्लेशरहित; अथक ।
अक्लिष्टकर्मन्, पु. } अश्रान्त, क्लान्तिरहित
अक्लिष्टकारिन् त्रि. } अनथक ।
अक्लेद्य, त्रि. अश्रान्त, अनायाससाध्य । जो पानीमें गले नहीं, जो सहिज होसके ।
अक्ष, पु. कर्ष (१६ मासे) भर, पासा, व्यवहार, रुद्राक्ष, सर्प, चक्र, छकडा, रावण-पुत्र, गरुड़ (न) इन्द्रिय ।
अक्षक, पु. वहेड़ेका पेड़ (त्रि.) पासाखेलनेवाला ।
अक्षक्रीडा, स. द्यूतक्रीड़ा; पासेसे जूआ खेलना ।
अक्षण्वत्, त्रि. आंखवाला ।
अक्षत, त्रि. अखण्डित (न) भुजे चावल, जों (स्त्री) (ता) क्वारी कन्या, काकाड़ा सिंहीवूटी ।
अक्षधून, पु. जुवारिया ।
अक्षद्यूत, न. पासेकी खेल ।
अक्षद्यूतिक, न. जूएका झगड़ा ।
अक्षदेविन् पु. द्यूतकारी; जुवारिया ।
अक्षधूर्त, पु. अक्षशौण्ड; पासा खेलनेमें होशियार ।
अक्षधूर्तिल, पु. वृषभ; वैल ।
अक्षपाट्, पु. रङ्गभूमि; दङ्गल । [शिव ।
अक्षपाट(टि)क, पु. धर्माध्यक्ष । अदालती, मुन-
अक्षपाद, पु. न्यायशास्त्रकर्ता गौतममुनि, (न) रथका चक्र ।
अक्षम, त्रि. क्षमारहित (स्त्री) (मा) क्रोध ।
अक्षमता, स्त्री. ईर्षा, असामर्थ्य । [स्त्री अरुंधती ।
अक्षमाला, स. रुद्राक्षकी माला, वर्णमाला, वसिष्ठ-
अक्षय, त्रि. क्षयरहित, पु. ईश्वर, नित्य, (स) (या) योगविशेष । सोमकी अमावस, रविकी सप्तमी, मंगलकी चौथ । [तीज ।
अक्षयतृतीया, स. युगाद्यातिथि; वैशाख शुदी
अक्षय्य, न. जल (त्रि) नाश होनेके अयोग्य ।
अक्षयललिता, स्त्री. व्रतविशेष; भादो शुदी ७ मी, को स्त्रीयोंका ।
अक्षर, पु. विष्णु, शिव, ब्रह्मा, (न) ब्रह्म, आकाश, धर्म, तप, वर्ण, (त्रि) नाशरहित (स) (रा) वाणी ।
अक्षरचण(न), } त्रि. उत्तम लेखक । अच्छा कातिव ।
अक्षरचञ्चु, }
अक्षरजननी, स. लेखनी; कलम ।
अक्षरपङ्क्ति, स. छन्दोविशेष । भगणान्तेगद्वय ।
अक्षरमुख, पु. छात्र; विद्यार्थी ।
अक्षवती, स. द्यूतक्रीडा; जूएकी खेल ।
अक्षसूत्र, न. मालाका डोरा, यज्ञोपवीत ।
अक्षहृदय, न. पासा खेलनका हुनर ।
अक्षांश, पु. भूगोलके ऊपर कल्पित रेखा । [हसद ।
अक्षान्ति, स. अक्षमा, असहिष्णुता । वेसवरी ।
अक्षार, पु. लवन; निमक । [सैंधानिमक, धांई ।
अक्षारलवन, न. गोघृत, दूध, मुंगी, तिल, जों ।
अक्षि, न. चक्षु; आंख ।
अक्षिकूटक, न. आंखका गोला;
अक्षिव, पु. सुहांजनेका पेड़, (न) सैंधानिमक ।
अक्षीण, त्रि. पूर्ण, अदीन ।
अक्षीव, त्रि. स्थिर चित्त(न) सेन्धानिमक, ।

अक्षीयमाण, न. न नाश होनेवाला, ।
अक्षुण्ण, त्रि. चोरसे बचा हुआ, नया ।
अक्षेत्र, न. जिस खेतमें कुछ न पैदाहो ।
अक्षेत्रिन्, त्रि. जिसका खेत नहिं ।
अक्षोट्(ड) पु. अखरोटका पेड़ । न उसका फल.
अक्षोभ, त्रि. क्षोभशून्य (पु.) हाथी बांधनेका खूंटा ।
अक्षौहिणी, स. सेनाविशेष २१९७० हाथी, २१९७० रथ, ६५६१० घोड़े,१०९३५० पैदल।
अखट्ट(ट्टि),पु.पीपलका पेड़, बुरा खयाल, व्याधी।
अखण्ड, त्रि. पूरा, (न) ब्रह्म ।
अखण्डकल, पु. पूरा चन्द्रमा ।
अखण्डद्वादशी, स. भादोंसुदी द्वादशी ।
अखण्डपरशु, पु. परसराम ।
अखर्व, त्रि. दीर्घ; लंबा ।
अखात, पु. देवखात; झील ।
अखाद्य, त्रि. अभक्ष्य; न खाने योग्य ।
अखिल, त्रि. सर्व; सारा ।
अखिलेन, व्य. सब तरहसे । [शङ्कर, निंदा ।
अख्यात, त्रि. अप्रसिद्ध (स) (ति) अपवाद । नाम
अग, पु. पर्वत, वृक्ष, सर्प, सूर्य ।
अगज, न. धातु वि० । सिलाजीत ।
अगणन, न. / **अगणित,** त्रि. / **अगण्य,** न. } असंख्य; अनगिनत ।
अगत, त्रि. विद्यमान (स) (ति) गतिहीन, अनुपाय । मौजूद, उपायरहित ।
अगतिक, त्रि. निराश्रय; अनाथ ।
अगत्या, व्य. तुतरां । लाचार ।
अगद, पु. ओषधि (त्रि) नीरोग।दवाई,तनदरुस्त।
अगदङ्कार, पु. वैद्य। तबीब ।
अगदन, न. वैद्यविद्याका अंग ।
अगम, पु. वृक्ष, पर्वत, दुर्ग, अपमान (त्रि) जिसपर चढ़ा न जाय। [स्त्रीसे भोग करनेमें पाप हो।
अगम्य, त्रि. गमनके अयोग्य, (स) (म्या) जिस
अगरी, स्त्री. एक बूटीकी जड़ जिसके लगानेसे मूसा काटेका विष दूर होताहै ।
अगरु, न. पु. सुगन्धिवाला काष्ठ, गुग्गल, न्दस वर्ण।

अगस्त(स्ति) पु. मुनिविशेष; मित्रावरुणीके वीर्यसे उर्वशीके गर्भमें उत्पन्न, खास पेड़ ।
अगस्त्योदय, पु. भादोंमें १७ दिन आकाशमें नक्षत्ररूपमें उदय । [गड़ा ।
अगाध, त्रि. जिसकी थाह न आवे, गहिरा, (न)
अगु, पु. राहुग्रह, (त्रि) किरणरहित, ।
अगुरुगंध, न. हींग् ।
अगृही(भी)त, त्रि. नपकड़ा हुआ ।
अगृह्य, त्रि. न पकड़ने योग्य । [ब्रह्म ।
अगोचर, त्रि. जो इन्द्रियोंसे न देखा जाय (न)
अगौकस, पु. सिंह, शरभ एक पशुविशेष, ।
अग्नायी, स. अग्निभार्या, स्वाहा । [ड़, सोना ।
अग्नि, पु. आग, अग्निकोनका देवता, भिलावेका पे-
अग्निक, पु. पटवीजना ।
अग्निकण, पु. स्फुलिंग, आगका चंगारा ।
अग्निकार्य, पु. यज्ञसे पहिला कर्म, अग्निक्रिया अग्निकर्म इनपदोंकाभी यही अर्थ । [जैसा ।
अग्निकल्प, त्रि. अग्निमय, उग्र, क्रोधी । आग
अग्निकोण, पु. पूर्व और दक्खनके बीचका कोना।
अग्निगर्भ, पु. सूर्यकान्तमणि, आतशीशीशा, जंडीका पेड़ ।
अग्निचय, पु. वेदीसंस्कार ।
अग्निचित्, पु. अग्निहोत्री ।
अग्निचित्या, स्त्री. यज्ञकी अग्निका स्थापन ।
अग्निचूडा, स्त्री. आगका शोला ।
अग्निजिव्हा, स्त्री. आगका शोहला । [लाट ।
अग्निज्वाला, स्त्री. गजपीपल,धातकी वृक्ष, आगकी
अग्नित्रय, न. गार्हपत्य, आह्वनीय और दाक्षिण्य तीन अग्नियें ।
अग्निदूत, पु. यम ।
अग्निध्वज, पु. धूम; धूंआं । [श्लोक हैं ।
अग्निपुराण, न. १८ मेंसे एक, जिसका १६ हज़ार
अग्निबीज, न. स्वर्ण, कार्तिकेय ।
अग्निभू, न. सोना, कृत्तिका नक्षत्र ।
अग्निभूति, पु. बौद्धभेद; जैनमतवालोंका सबसे पिछला गुरु । [अरणी ।
अग्निमन्त(न्थ), पु. श्रीपर्णवृक्ष अगस्त्यमुनि,
अग्निमुख, पु. देवता, ब्राह्मण (स्त्री) (खी) भिलावा।
अग्निवाह(हु), पु. धूंआ ।

अग्निशिख(शेखर), पु. दायक, बान, कुसुंबेका [पेड़, केसर, सोना,

अग्निष्टुत, पु. प्रायश्चित्तविशेष गौब्राह्मणके मारनेसे अग्निदेवताकी स्तुतिरूप कर्म । [अङ्ग ।

अग्निष्टोम, पु. यज्ञविशेष; ज्योतिष्टोमका १ म

अग्निष्वात्त, पु. मरीचिकी सन्तान, पितर, पितरोंका लोग ।

अग्निसख, पु. वायु । हवा । [काम ।

अग्निसंस्कार, पु. शवदाहक्रिया, मुर्दा जलानेका

अग्निसात्, व्य. अग्नि जैसा ।

अग्निस्वामिन्, पु. राजा वि० ।

अग्निषोम, पु. अग्नि और सोम ।

अग्निषोम्य, न. अग्नि और सोमकी हवि ।

अग्निहोत्र, न साग्निकोंका प्रात्यहिक कर्तव्य होम, पु. घृत ।

अग्निहोत्रिन्, पु. आहिताग्नि; वेदमंत्रोंसे अग्नि स्थापन करके उसमें नित्य होता ब्राह्मण ।

अग्नि(ग्नी)ध्र, पु. अग्निरक्षक ब्राह्मण ।

अग्निध्रीय, पु. दक्षिणाग्नि । [आग धरी रहती है ।

अग्न्यागार, पु. होमगृह; जिस घरमें सदैव होमकी

अग्न्याधान, न. होमके लिये वेदीमे आगका धरना।

अग्न्याहित, पु. साग्निक ब्राह्मण । [१६ मासे ।

अग्र, न. सामने, ऊपर, चोटी, (त्रि) उत्तम अधिक,

अग्रकर, पु. दहना हाथ, लगामका सिरा ।

अग्रन, त्रि. अगुआ । पेशवा ।

अग्रगण्य, त्रि. सबसे आगे गिनतीके योग्य ।

अग्रगामिन्, त्रि. अगुआ । [जन्मा हुआ ।

अग्रज(जात), पु. ब्राह्मण, बड़ाभाई (त्रि) आगे

अग्रणी, त्रि. प्रधान, श्रेष्ठ (पु.) विष्णु ।

अग्रतस्, व्य. आगे, पहिले, सामने ।

अग्रदानिन्, पु. प्रेतदानग्राही ब्राह्मण; अचारज ।

अग्रपाणि, पु. दहिना हाथ । [हुआ ।

अग्रदीधिषु, पु. पुनर्भूपति, वेवासे शादी किया

अग्रयायिन्, पु. अगुआ ।

अग्रहस्त, पु. दहना हाथ, हाथीकी सूंड, ।

अग्र(ग्रे)सर, त्रि. अगुआ । राहनुमा ।

अग्रहायण, पु. मार्गशीर्ष; मंगशिर ।

अग्रहार, पु. देवता वा ब्राह्मणका भाग, (न) अनाज भरा खेत ।

अग्राणीक, न. सेनाका पूर्व भाग । [मौल्य ।

अग्राह्य, त्रि. जो लेवे योग्य नहो, (न) शिवनि-

अग्रिम(य) (ग्रीय) } त्रि. प्रथम, श्रेष्ठ, अग्रगामी ।

अग्रदीधिषु, पु. पुनर्भूपति (स्त्री) (पू) ज्येष्ठाके होते विवाहिता कनिष्ठा ।

अग्र्य, पु. प्रधान, बड़ाभाई, (त्रि) पहिला ।

अघ, पु. दैन्य, दुःख, पाप, कंसकी सेनाका सर्दार, (त्रि.) दुःखी, पापी । [द्रष्टा मुनि ।

अघमर्षण, न. पापनाशन मंत्र, (पु) उन मंत्रोंका

अघपार, पु. यम ।

अघासुर, पु. कंसकी सेनाका सर्दार ।

अघो, व्य. संबोधनके लिये शब्द [चौदस ।

अघोर, पु. महादेव, (स) (रा) भांदों वदी १४

अघोष, त्रि. शब्दरहित, (पु) व्याकरणमें वर्गका १ म, २ य, वर्ण और श, ष, स, ।

अघोस, व्य. संबोधनके लिये अव्यय । [गौ ।

अघ्न्य, पु. ब्रह्मा (त्रि) न मारने योग्य, (स) (घ्न्या)

अङ्क, पु. चिन्ह, गोदी, अपराध, भूषण, नाटकग्रंथका भाग, देह, अदद, युद्ध । [वायु ।

अङ्कति, पु. अग्निहोत्री, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अग्नि,

अङ्कन, न. संख्या लिखना, नशान लगाना ।

अङ्कपाली, (का) स्त्री. आश्लेष, गले लगाना, हिंदसोंकी कतार, वेदी ।

अङ्कपात, पु. हिसाबके वकत हींदसोंका लिखना ।

अङ्कित, (त्रि.) चिन्ह किया हुआ, गिनाहुआ, मालूम किया हुआ ।

अङ्किन्, पु. वाद्यविशेष, मृदंग ।

अङ्कु (कू)र, रुधिर, लोम, अंगूरी ।

अङ्कुरक, पु. नीड़; घोंसला ।

अङ्कुरित, त्रि. फूला हुआ, फलाहु० फूटा हुआ ।

अङ्कुश(ष), पु. आंकुश, (स्त्री) (शी) अंकस ।

अङ्कोट(ठ) पु. हिंगोटका पेड़ ।

अङ्ग, न. गात्र, देह, मन, मित्र (पु.) देशवि० (त्रि) देहका, पासका, (व्य.) संबोधनका शब्द, फिर ।

अङ्गग्रह, पु. शरीरपीड़ा । [हुसे उत्पन्न ।

अङ्गज, पु. पुत्र, केश, रोग, लहू, पीडा, (त्रि) दे-

अङ्गन (ण), अंगन, सहन । [ग्निहोत्री ।

अङ्गति, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव, वायु (त्रि) अ-

अङ्गद, पु. वानरोंका राजा, (न) बाजूबंद (स) (दा) दिशाके गजकी स्त्री ।

अङ्गना, स्त्री. सुन्दरी स्त्री, उत्तर दिशाके हाथीकी पत्नी, वृष, वृश्चिक, कर्क, मकर, मीन और कन्याराशि, दक्षिण । [हाथ लगाना ।

अङ्गन्यास, पु. पूजाके समय अंगोंपर भिन्न २

अङ्गमर्द, पु. देहको मलनेवाला सेवक, (त्रि) जो देहको मले ।

अङ्गमर्द(क), अङ्गमर्द्दिन्, पु. सेवक, (त्रि) जो देहको मले वा दबाये ।

अङ्गव, पु. सूखा फल । [की बीमारी ।

अङ्गविकृति, पु. रोगविशेष, (स्त्री) लकवा, मिरगी-

अङ्गराग, पु. वटना, उबटन । इतर ।

अङ्गराज, पु. अङ्गदेशका राजा, कुन्तीपुत्र, कर्ण ।

अङ्गरुह, न. रोम, ऊन, दांत ।

अङ्गसंस्कार, पु. मुर्दाजलाना(न) देहका सुधारना ।

अङ्गार(क), पु. मंगलग्रह, अंगारी, दधूरा ।

अङ्गारमणि, पु. न. मोंगा, पला ।

अङ्गारधानी(निका), हसन्ती; अंगीठी ।

अङ्गारमञ्जरी(वल्लरी), स्त्री. करोंदा ।

अङ्गिका, स्त्री. अंगिया ।

अङ्गिन्, त्रि. अङ्गविशिष्ट, मुख्य, आत्मा ।

अङ्गिरस्, पु. बृहस्पतिका पिता, मुनि ।

अङ्गीकरण, न. प्रतिज्ञा । एहद ।

अङ्गीकार, पु. स्वीकार । कबूल ।

अङ्गीकृत, त्रि. प्रतिज्ञात । मनजूर किया हुआ ।

अङ्गुरि(री), स्त्री. उंगली ।

अङ्गुलि(ली), स्त्री. उंगली हाथपावोंकी ।

अङ्गुरीय(क), न. अंगूठी ।

अङ्गुस, पु. वात्स्यायनमुनि, आठ जौं भर ।

अङ्गुलिपर्व, पु. अंगुलीकी गांठें ।

अङ्गुलित्र(त्राण), न. अंगुश्ताना ।

अङ्गुलिमुद्रा, स्त्री. नामकी मोहर ।

अङ्गुष्ठ, पु. वृद्धांगुलि; अंगूठा ।

अंगुष्ठाना, स्त्री. अंगुश्ताना ।

अङ्हस्, न. पाप । गुनाह ।

अङ्घ्रि, पु. पैर, चौथा भाग, पेड़की जड़ ।

अङ्घ्रिप, पु. वृक्ष; पेड़ ।

अङ्घ्रिपर्णी(का), स्त्री. चकोलिया वेल ।

अचक्षुस्, त्रि. नेत्रहीन; अंधा ।

अचर, त्रि. जड़, न हिलनेवाला ।

अचल, पु. पेड़, पहाड़, कीला, (स) (ला) पृथिवी ।

अचलकीला, स्त्री. पृथिवी; जमीन । [चमक ।

अचलत्विष्, पु. कोकिल (स्त्री.) (षा) पायदार

अचिकुर, त्रि. खल्वाट; गंजा ।

अचित्, त्रि. अज्ञान, मूर्ख ।

अचित, पु. मूर्ख (स्त्री) (ता) मूर्खता ।

अचिरप्रभा, अचिररोचिस्, अचिरद्युति, स्त्री. विद्युत्; बिजली ।

अचिरात्, व्य. तुरन्त । जल्दीसे ।

अचिराय, व्य. शीघ्र । जल्दीसे ।

अचीर्ण, त्रि. जो व्रत पूरा नहीं हुआ ।

अचेतन, त्रि. मुग्ध, जड़ । बेहोश, बेजान ।

अचेष्ट, त्रि. बेहर्कत ।

अच्युताग्रज, पु. बलदेव । [क्षीरसमुद्र ।

अच्युतावास, पु. पीपलका पेड़, मथुरा, वृंदावन,

अच्छ, पु. बिल्लौर, रीछ, (त्रि) साफ़, शफ़ाफ ।

अच्छत्र, पु. अराजक देश ।

अच्छिद्र, त्रि. जिसमें छेद नहिं । साबत ।

अच्छिन्न, त्रि. न कटा हुआ ।

अच्छेद्य, त्रि. जो कट न सके ।

अज, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काम, दशरथराजाका पिता, मेष, छाग (त्रि) जिसका जन्म नहिं, (न.) ब्रह्म, (स्त्री). (जा) माया, बकरी, प्रकृति ।

अजक(ग)व, पु. न. शिवजीका धनुष ।

अजगव, पु. अजदहा सांप ।

अजथ्या, स्त्री. पुष्पविशेष, बकरियोंका गल्ला, एक पौदा जिसे पीले फूल लगतेहैं ।

अजन्त, पु. जिसके अन्तमें स्वर अक्षर हो ।

अजन्मन्, त्रि. जिसका जन्म नहिं ।

अजप, पु. कुपाठक, अजासमूह, अजारक्षक, (स्त्री) (पा) "ह सः" यह मन्त्र ।

अजमीढ, पु. देशवि० राजा युधिष्ठिर ।

अजमोदा, स्त्री. एक पोदा ।

अजम्भ, पु. मेंडक, (त्रि.) जिसके दांत नहीं ।

अजर(र्य), पु. देवता (त्रि) जो बूढ़ा न हो ।

अजर्य, न. मेल, दोस्ती ।

अजस्र, व्य. निरन्तर; लगातार ।
अजहल्लक्षणा, स्त्री. लक्षणावृत्तिवि॰ जहां शब्द निजअर्थको छोड़े विना और अर्थ जताऐं ।
अजहत्स्वार्थ, स्त्री. "अजहल्लक्षणा" देखो ।
अजहल्लिङ्ग, पु. नित्यलिंग, जो शब्द विशेष्यके संग मिलकरभी अपना लिंग न छोड़े ।
अजक(का)र, पु. शिवका धनुष ।
अजाजी, स्त्री. जीरेको पोदा ।
अजात, त्रि. जिसका जन्म नहिं ।
अजातशत्रु, **अजातारि**, } पु. युधिष्ठिरराजा (त्रि.) जिसका शत्रु पैदा नहिं हुआ ।
अजानि, पु. अभार्य; रंडवा ।
अजानेय, पु. उत्तमाश्व; अच्छा घोड़ा ।
अजाविक, पु. कूकर और भेड़िये ।
अजावी, स्त्री. रेवड़, गल्ला ।
अजित, त्रि. जो जीता नहिं गया, (पु) ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।
अजितात्मन्, पु. जार (त्रि.) जिसने अपने आपको नहिं जीता ।
अजिन, न. काले हिरणका चमड़ा ।
अजिनपत्रा, स्त्री. चमगीदड़ ।
अजिर, पु. अङ्गन, हवा, मेंडक (स्त्री) (रा) चण्डी ।
अजिह्म, त्रि. सरल, मेंडक ।
अजिह्मग, पु. तीर, (त्रि) सीधा चलनेवाला ।
अजि(जी)गर्त, पु. मुनिविशेष ।
अजीव, त्रि. वेजान ।
अजीर्ण, न. वदहज़मीका रोग (त्रि) जो जरे नहीं ।
अजैकपाद, पु. ११ रुद्रोंमेंसे एक, पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र, शिव ।
अजुष्ट, त्रि. असेवित, अप्रिय ।
अज्जुका, स्त्री. नाट्योक्तिमें वेश्या, नटी ।
अज्झल, न. फलक; ढाल ।
अज्ञ, त्रि. मूर्ख (स्त्री) (ज्ञा) ।
अज्ञात, त्रि. न जाना हुआ । नामअलूम ।
अज्ञातयौवना, स्त्री. नायकावि॰; जिसने अपने जोवनको जाना नहीं । [जहालत ।
अज्ञान, त्रि. निर्बोध (न) अविद्या । नादान, रूहानी
अज्ञानतस्, व्य. अनजानें ।
अज्ञानिन्, पु. मूर्ख । जाहिल, नादान ।
अज्ञेय, त्रि. जाननेके अयोग्य; (न) ब्रह्म ।
अञ्चति, पु. वायु । हवा ।
अञ्चल, पु. वस्त्रप्रान्त; आंचल ।
अञ्चित, त्रि. पूजित; पूजा हुआ ।
अञ्चितभ्रू, स्त्री. सुभ्रू स्त्री ।
अञ्जन, न. आग, काजल, मसी, (स्त्री) (ना) पश्चिम दिशाके हाथीकी हथिनी, अंजनावती ।
अञ्जलि, पु. करपुट; जुड़े हुए हाथ, बुक ।
अञ्जलिकारिका, **अञ्जलिनी**, } स्त्री. लजावंतीका पोदा ।
अञ्जस्, त्रि. सरल; सीधा । जल्दी ।
अञ्जसा, व्य. साक्षात्, शीघ्र, सत्यता ।
अञ्ज, पु. प्रेरक; भेजनेवाला ।
अञ्जिष्ट, पु. भास्कर; सूरज ।
अञ्जीर, न. वृक्षवि॰, फलवि॰ । फगवाड़ा ।
अट, त्रि. जानेवाला, घूमनेवाला, स्त्री. (टा) घूमना ।
अटन, न. जाना, घूमना ।
अटनि(नी), स्त्री. धनुष्कोटि; कमानका गोशा ।
अटवि(वी), स्त्री. वन, जंगल ।
अटविक, पु. वनवासी, जंगली ।
अटल, त्रि. दृढ़, स्थिर । मजबूत, कायम ।
आटाट्या, स्त्री. पर्यटन । जावजा फिरन ।
अट्ट, पु. अटारी, दुकान, अटा, (न) अन्न, ज्यादती, दरियाई, वेइज़ती ।
अट्ट(हास), पु. खिड़ खिड़ाके हंसी, ऊंची हंसी ।
अट्टहासिन्, पु. महादेव (त्रि) ऊंचे हंसनेवाला ।
अट्टाल(क), पु. बरसाती, सवात ।
अट्टालिका, स्त्री. सौध; अटारी ।
अड्डहु, पु. लकुचवृक्ष ।
अ(ण)नक, त्रि. नीच । कमीना ।
अणव्य, न. छोटे २ धान पैदा करनेवाला खेत ।
अणि(णी), स्त्री. गाडीके पहियेकी कील, सूईकी नोक, तरवारकी धार, हद्द । [एक, वारीकी ।
अणिमन्, पु. छोटा भाग (न) छोटाई, सिद्धिओंमेंसे
अणीयस्, त्रि. बहुत छोटा, बहुत थोड़ा, बहुत वारीक ।
अणु, पु. सूक्ष्मधान्य (त्रि.) छोटासा, ज़रासा ।
अणुक, त्रि. दाना, पुरुष (न) थोड़ा, वारीक, आत्मा ।

अणुभा, स्त्री. विद्युत्; बिजली ।
अणुमात्रिक, त्रि. अतिक्षुद्र; बहुत छोटा जीव ।
अणुरेणु, पु. त्रसरेणु । ज़र्रह ।
अण्ड(क), पेशी, अंश, कस्तूरीका नापा (स्त्री) (ण्डी) चिटली अंगुल, गलिया, ।
अंडकटाह, पु. ब्रह्माण्ड । कुरा ।
अंडकोश(ष) (क), पु. वृषण । थयज़ा ।
अण्डज, पु. पक्षी, सर्प, मच्छी, (स्त्री) (जा) कस्तूरी (त्रि) अंडेसे उत्पन्न वस्तु ।
अण्डालु, पु. अण्डेवाली मछली ।
अण्डीर, पु. शक्त । ज़ोरावर ।
अतएव, व्य. इसी लिये, इसीसे ।
अतन्द्र(न्द्रित), त्रि. निरलस; उद्यमी ।
अतर्कित, त्रि. बेविचारा काम, अचानक । [नहीं ।
अतल, न. पहिला पताल, (त्रि) जिसकी थाह
अतलस्पृश् (स्पर्श), त्रि. अगाध; अथाह ।
अतस्, व्य. इसीसे । [(न) रेशमी वस्त्र ।
अतस, पु. पवन, आत्मा, शस्त्र, (स्त्री) (सी) अलसी
अति, व्य. बहुत करके, ।
अतिकरुण, त्रि. दयावान्, दुःखी ।
अतिकाय, त्रि. बड़ी देहका ।
अतिकृच्छ्र, न. व्रतवि०, छथदिन एक ग्रास, तीन दिन उपवास, बड़ी तकलीफ़ ।
अतिकृति, स्त्री. छन्दोवि०, २५ पचीस २ अक्षरके चरणवाला छन्द, बड़के काम ।
अतिक्रम, पु. उलांघना, जो नियम बांधा है उससे उल्ट, उल्ट, निरादर, काम पूरा होगया तिसपरभी किये जाना । [लतादा हुआ ।
अतिक्रान्त, पु. उलांघा हुआ, निरादर कियाहु०,
अतिगण्ड, पु. ६ ठा, योग, । [बड़ी खुशबूदार ।
अतिगन्ध, पु. खस्स, गन्धक, चंबेका पेड़, (त्रि)
अतिगुहा, स्त्री. पृश्निपर्णी लता, पहाड़की लंबी गुफा।
अतिचार. पु. शीघ्रगमन, अतिक्रम्य गमन, भौम आदिक ५ ग्रहोंका एक राशिसे दूसरीमें जाना ।
अतिच्छत्र, पु. तालमखाना, छतिया (स्त्री) (त्रा) शतपुष्पीलता । [क्षरका एक चरण होता है ।
अतिजगती, स्त्री. छन्दोवि०; जिसका १३२ अ-
अतिजागर, पु. पनकुकड़ी, पनडुब्बी, (त्रि) निद्रारहित ।
अतिडीन, न. पक्षिगति वि०, बड़े वेगसे पंछीकी उडारी ।
अतितराम्, व्य. निहायत, बहुत करके ।
अतिथि, पु. अभ्यागत, कुशिकमुनिका पुत्र, ।
अतिथ्या, स्त्री. अतिथिसेवा । मेहिमान निवाजी ।
अतिदाह, पु. बहुत गर्मी, बहुत जलना ।
अतिदीप्त, त्रि. चमकीला; रौशन ।
अतिदीर्घ, त्रि. बहुत लंबा । [सताया हुआ ।
अतिद्रुत, त्रि. हिलाया हुआ, दुराया हुआ,
अतिदेश, पु. व्याकरणकी संज्ञा विशेष; अन्यके धर्मका अन्यमें आरोप करना ।[(त्रि) बुद्धिमान् ।
अतिधृति, स्त्री. छन्दोवि०; १९ वर्णका एक श्लोक
अतिनु, त्रि. नाओसे उतरा हुआ ।
अतिपतन, न. अलय, नाश । तबाही ।
अतिपत्ति, स्त्री. अतिमात्र; बहुतही ।
अतिपथिन्, पु. सन्मार्ग; चंगीवाट ।
अतिपात, पु. अतिक्रम, । बे सबरीसे कामको उलटपुलट करनेवाला ।
अतिपातक, न. महापातक विशेष; माता कन्या और बहूसे जनाह; उपपाप ।
अतिपातकिन्, पु. महापापी ।
अतिपिनद्ध, त्रि. मजबूत बंधाहुआ ।
अतिपेलव, त्रि. सुकुमार । नाजुक । स्त्री (वता) न ज़ाकत, मुलायमी ।
अतिपेशल, त्रि. अतिदक्ष; अतिचतुर ।
अतिप्रसङ्ग, पु. अतिविस्तार, पुनरुक्ति, व्यभिचार। फजूलगोई, गलती ।
अतिप्रसक्ति, स्त्री. अतिसेवा, लगाव ।
अतिबल, त्रि. अतिबलवान्, समर्थ योधा, (स) (ला) दैवी अस्त्रविद्या जो विश्वामित्र जीने रामचन्द्रजीको पढ़ाई ।
अतिभद्र, त्रि. विशिष्ट; बहुत भला ।
अतिभी, पु. विजली (त्रि.) बहुत डरा हुआ ।
अतिमङ्गल्य, पु. विल्वृक्ष, (त्रि) नेक, बड ।
अतिमात्र, त्रि. अत्यर्थ । निहायत ।
अतिमुक्त, त्रि. निःसङ्ग (पु.) वृक्षविशेष । नजातयाफ्तह, माधवीवेल ।
अतिमैत्र, न. ९ म, तार, (त्रि) परममित्र ।
अतिमोदा, स्त्री. नवमल्लिका(त्रि)अतिसुरभिगंधयुत ।

अतिरथिन्, पु. अतियोद्धा; बहुतोंके साथ अकेला लड़नेवाला।
अतिरसा, स्त्री. मूर्वालता।
अतिरात्र, पु. यज्ञविशेष,(न) पिछली रातका समय।
अतिरिक्त, त्रि. अधिक, भिन्न, अतिशय।
अतिरेक, पु. आधिक्य। ज्यादती।
अतिरोग, पु. क्षयरोग; सिल्की बीमारी।
अतिरोमश, पु. जंगली बकरा, बड़ा बंदर, (त्रि) बहुत बालोंवाला।
अतिललित, त्रि. बड़ा सुंदर।
अतिलुब्ध, त्रि. बड़ा लालची।
अतिलोम, त्रि. बड़े बालोंवाला।
अतिलोल, त्रि. बड़ा चालाक।
अतिलौल्य, त्रि. बड़ी हिर्स।
अतिवर्तन, न. बड़ी मुसीबत।
अतिवर्तिन्, त्रि. तजावुज़ करनेवाला।
अतिवर्तुल, त्रि. बड़ा गोल।
अतिवात, पु. आंधी, झक्खड़।
अतिवाद, पु. कठोर वाक्य,।
अतिवादन, न. वाचालता। बकवाज़।
अतिवादिन्, त्रि. बहुत बोलनेवाला। बकवाजी।
अतिविष, त्रि. विषउतारनेवाला, स्त्री (षा) लताविशेष, भृंगी।
अतिवृष्टि, स्त्री. अत्यन्तवर्षा। निहायत बारिश।
अतिवेल, न. अतिशय, (त्रि) निर्मर्याद।
अतिव्यथा, स्त्री. बड़ी दर्द।
अतिव्याप्ति, स्त्री. अतिशय व्यापन; न्यायमतमें अलक्ष्यमें लक्षणका जाना। जैसें शृङ्गवत्व गायका लक्षण मानें, तो लक्षण महिषीमेंभी जाघटेगा।
अतिशय, न. आधिक्य। ज्यास्ती।
अतिशयोक्ति, स्त्री. काव्यशास्त्रमें एक अलंकार। तूलगोई या तूलकलामी।
अतिशयोपमा, स्त्री. बढ़कर तशबीह।
अतिशोभन, त्रि. बड़ा सुंदर, शोभमान।
अतिष्ठा, स्त्री. प्रतिष्ठा। इज़्जत।
अतिसर्ग, पु. बहुतदेना, त्याग।
अतिसर्जन, न. अतिदान, वध, प्रवंचन, विलंब।
अतिसर्व, त्रि. सबसे बढ़कर।
अतिसह, त्रि. सहिष्णु; सहनेवाला।
अतिसन्तपन, न. व्रतविशेष; रातको पंचगव्य १ दूध २ दधि ३ घृत ४ गोमूत्र ५ गोबर पीकर दिन काटने।
अति(ती)सार, पु. रोगवि०; संग्रहणीकी बीमारी।
अति(ती)सारकिन्, त्रि. संग्रहणीसे बीमार।
अतिसृष्ट, त्रि. दत्त; दियागया।
अतिहसित, } त्रि. हंसागाया।
अतिहास, } पु. हंसी.
अतिहिम, व्य. हिम (बरफ)का नाश।
अतीत, त्रि. गत, गुजराहुआ। माज़ी।
अतीतकाल, पु. हेत्वाभास विशेष, भूतकाल।
अतीन्द्र, पु. विष्णु।
अतीन्द्रिय, त्रि. इन्द्रियगोचर (न) ब्रह्म (गैरमासूस।
अतीव, व्य. अत्यन्त, यथेष्ट। निहायत, काफ़ी।
अतुल, त्रि. अनुपम, तिलवृक्ष। लमसानी।
अतुहिनरश्मि, पु. सूर्य।
अतृप्त, त्रि. जो सेर नहिं हुआ २। बेसबरा।
अत्क, पु. अवयव (त्रि) पांथी।
अत्ता, स्त्री. मां, सास, बड़ी बहिन।
अत्ति(का) स्त्री. मां, बड़ी बहिन।
अत्नु, पु. सूर्य। आफ़ताब।
अत्तृ, पु. खानेवाला, (स्त्री) (त्री) खानेवाली।
अत्य, पु. घोड़ा, (त्या) घोड़ी।
अत्यन्त, त्रि. जो अंतसे आगेहे, (न) बहुतही।
अत्यन्ताभाव, पु. सदासे न होना, ४ प्रकारके अभावोंमेंसे एक; जैसे बांझका बेटा नहिं है।
अत्यन्तीन, त्रि. बहुतजल्द चलनेवाला,
अत्यय, पु. दुःख, भय, नाश, अभाव, उलांघ जाना।
अत्यर्थ, न. बहुतहि, (व्य) अर्थका अभाव, (त्रि) [अत्यन्त।
अत्यल्प त्रि. बहुत थोड़ा। [रण।
अत्यष्टि(ष्टी), स्त्री. छन्दोविशेष। पु. अन्यायाच-
अत्याचार, पु. अन्याय। जुल्म।
अत्याचारिन्, त्रि. दुष्ट। जालिम।
अत्याधान, न. ऊपर रखना।
अत्याय, न. जल्द चलना। तेज़रफतार।
अत्याल, पु. सुरख चित्र।
अत्याशा, स्त्री. बहुत उम्मीद।

अत्याश्रम, पु. परमहंस आश्रम (त्रि) आश्रमोंकी मर्यादसे जो लंघगया है।
अत्युक्ति, स्त्री. वाह्यात कहना, मुबालगेसे कहना, । एक अर्थालंकारका नाम।
अत्युक्त्या, स्त्री. दो अक्षरोंका चरणवद्ध छंद।
अत्युत्कण्ठा, स्त्री. अतिचिन्ता। बड़ा खियाल।
अत्युग्र, त्रि. बहादुर, खौफनाक।
अत्यूह, पु. नीलकण्ठ (स्त्री) (हा) बड़ी दलील।
अत्र, व्य. यहां। इस स्थानमें।
अत्रत्य, व्य. यहांका।
अत्रप, त्रि. निर्लज्ज। बेशरम।
अत्रभवत्, त्रि. पूज्य, माननीय।
अत्रान्तरे, व्य. इस असनामें।
अत्रि(क), पु. ऋषिविशेष; सातोंमेंसे एक जो चंद्रमाके नेत्रसे उत्पन्न हुआ है।
अत्रिज, त्रि. चांद। माहताव।
अत्रिवर्ष, त्रि. तीनसालसे कमका।
अत्वर, त्रि. धीमा (स्त्री) (रा) सुस्ती।
अथ, व्य. अनन्तर, भलाई, प्रश्न, बहुतायत, संशय, आरम्भ, विकल्प, अगद।
अथच, व्य. किंवा, या, औरभी।
अथर्व, न. ४ थं. वेद. (पु) वासिष्ठ।
अथर्वण, पु. शिव, ऋत्विक्।
अथर्वन् (र्वा), पु. ब्राह्मण वि. अथर्वांगिरस, पु. अथर्वा और आंगिरसकी सन्तान।
अथवा, व्य. या।
अथो, व्य. अनन्तरआदि "अथ"के जो अर्थ हैं।
अदत्त, त्रि. न दियाहुआ, (स्त्री) (त्ता) क्वारी, (न) न दी हुई वस्तु।
अदक्षिण, त्रि. चतुर नहीं, बांया हाथ।
अदक्षिणता, स्त्री. मूर्खता। बेवकूफी।
अदन, न. भोजन; खुराक, खाना।
अदनीय, त्रि. खानेकेयोग्य, खुराक।
अदन्त, त्रि. जिसके दांत नहीं, (न्ता) "अ" जिसके अन्त है।
अदन्ध, त्रि. बहुत। काफ़ी।
अदभ्र, त्रि. प्रचुर, बहुत। ज्यादह।
अदम्य, त्रि. दुर्दान्त। बेकाबू।
अदर्शन, न. लोप, (त्रि) जिसकी दृष्टि नहीं।
अदात्, त्रि. जो न दे, जो न काटे।
अदान, त्रि. खायाहुआ।
अदाम्य, त्रि. जो कष्टदेनेके योग्य नहिं।
अदिति, स्त्री, दक्षकी कन्या, कश्यपकी स्त्री, पृथिवी, पुनर्वसु नक्षत्र।
अदितिनन्दन, पु. देवता।
अदित्सु, पु. कृपण। कंजूस।
अदूय, त्रि. न सताया हुआ, न कांपा हुआ।
अदूषित, त्रि. नेक, खूब।
अदृढ, त्रि. ढीला, । न मज़बूत।
अदृश्य, त्रि. जो दिखाई न दे, मैला।
अदृष्ट, त्रि. न देखा हुआ (न) पाप, पुण्य।
अदृष्ट-पूर्व, त्रि. जो पहिले नहिं देखा।
अदृष्टवत्, त्रि. भाग्यवान्। किसमतमंद.।
अदेवमातृक, पु. जिस देशकी खेती वर्षापरहि निर्भर न रक्खे। [मुचमुच।
अद्धा, व्य. ठीक २, सामने २ यकीन, ज्यादातर
अद्भुत, न. अचरज, नवरसोंमेंसे एक अजीव।
अद्मन, न. भोजन, अन्न। खुराव।
अद्मनि, पु. आग। आतिथ्य।
अद्मर, त्रि. भक्षण करनेवाला; खाऊ, पेटू।
अद्य, व्य. आज।
अद्यकार, त्रि. आजका।
अद्यतन, त्रि. आजका (स्त्री) (नी) आजकी।
अद्यश्वीन, त्रि. आजकल होनेवाला (स्त्री) (ना) आजकल सूनेवाली।
अद्यापि, व्य. अवतकभी।
अद्यावधि, व्य. आजसे लेकर।
अद्रि, पु. पेड़, पहाड़, सूरज, पैमाना।
अद्रिकीला, स्त्री. पृथिवी। ज़मीन।
अद्रिज, न. गेरी, (त्रि) पहाड़की वस्तु, शिलाजीत (स्त्री) (जा) पार्वती।
अद्रिभित्, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।
अद्रिराज्, पु. हिमालय पर्वत।
अद्रोह, त्रि. बेखटके (पु) दया।
अद्वय, पु. बुद्ध, (त्रि) लासानी, (न) परमब्रह्म।
अद्वितीय, त्रि. लासानी, (न) परमात्मा।
अद्वेष्टृ, पु. मित्र। दोस्त।
अद्वैतवादिन् त्रि. जो एक परमेश्वरकेसिवा दू-

सरेको न माने, जो जीव और ईश्वरको एक मानता है ।
अधम, त्रि. नीच । कमीना ।
अधमचेष्ट, त्रि. बद-चलन ।
अधमभृतक, त्रि. दरवान, बारकश ।
अधमर्ण (र्णिन्), त्रि. ऋणी । क़र्ज़दार ।
अधमाङ्ग, न. चरण; पैर, पाँओं ।
अधर, पु. निचला ओंठ, (त्रि) नीचा ।
अधरामृत, न. ओठोंका रस ।
अधरात्, व्य. नीचेसे ।
अधरीण, त्रि. तिरस्कृत । मलामत कियाहु० ।
अधरेद्युस् व्य. परदिन; तरसों ।
अधरोष्ठ, पु. निचला ओंठ ।
अधर्म, पु. पाप, (त्रि) पापी ।
अधर्मिन्, त्रि. पापी, । गुनाहगार ।
अधस्तन, त्रि. नीचेका ।
अधस्तात्, व्य. पीछेसे, नीचेसे ।
अधस्पद, त्रि. पांओंके नीचे ।
अधार्मिक, त्रि. धर्मसे गिरा हुआ ।
अधि, व्य. ऊपर, मिलकियत, हक़, हश्मत, ज्यादती, (पु) मनकी चिन्ता । [दह, बहुत ।
अधिक, त्रि. अनेक, अर्थालंकारविशेष । ज्या-
अधिकतर, त्रि. दोमेंसे ज्यादह ।
अधिकतम, त्रि. सबसे ज्यादह।
अधिकता, स्त्री. ज्यादती ।
अधिकरण, न. सप्तमी कारक, आश्रय कचहरी ।
अधिकरणभाज(क), पु. मुनसिफ़, जज ।
अधि (धी)कार, पु. हक़, औलियत, उहदह, हुकम, विरसा ।
अधिकारिन्, त्रि. प्रभु । मालिक, हाकम ।
अधिकृत, त्रि. मालिक, (त्रि) मुकरर किया हु०
अधिक्रम, पु. बड़ाई, फ़ज़ीलत, चढ़ाई ।
अधिक्षिप्त, त्रि. इलज़ाम दिया हुआ, फेंका हुआ, भेजाहुआ ।
अधिक्षेप, पु. मलामत, अमानत ।
अधिगत, त्रि. जाना हुआ, पाया हुआ, पढ़ा हुआ ।
अधिगम, पु. प्राप्ति । हासिल,
अधिगम्य, त्रि. पहुंचके योग्य, समझके योग्य ।
अधिगुण, त्रि. गुणवान् । सिफ़त मंद ।
अधिजिह्व, पु. जिह्वास्फोटक; जुबानका फोड़ा ।
अधिज्य (धन्वन्), त्रि. चिलेचढ़ी कमानवाला ।
अधित्यका, स्त्री. पर्वतके ऊपरकी धरती ।
अधिदेव (ता), पु. स्त्री. इष्टदेवता । मलिक, देवता ।
अधिदैव(त), न. इष्टदेवता, अधिष्ठातृदेवता ।
अधिप, पु. राजा, स्वामी । मालिक ।
अधिमन्थ, पु. आंखकी पीड़ा ।
अधिमन्थन, न. पथानी, मथना ।
अधिमास, पु. मलमास । लोंदका महीना, इसमें दो अमावस होती हैं ।
अधिमासक, पु. दांतोंकी बीमारी ।
अधियज्ञ, पु. विष्णु । भगवान् ।
अधियोग, पु. यात्राके योग । [गाड़ीवान् ।
अधिरथ, पु. राजा कर्णका बाप, गाड़ीसवार,
अधिरथ्य, व्य. राजमार्ग । शाह सड़क ।
अधिराज्(ज), पु. बादशाह, शाहान्शाह ।
अधिरूढ, त्रि. चढ़ा हुआ, दबा हुआ ।
अधिरोपण, न. कमानपर चिल्ला चढ़ाना ।
अधिरोपित, त्रि. ऊंचे स्थानपर धरा हुआ ।
अधिरोह, पु. चढ़ना । रबकत लेजाना ।
अधिरोहण, न. ऊंचे चढ़ना (स्त्री) (णी) लकड़ी आदिकी पौड़ी ।
अधिलोक, पु. विश्व, जगत् ।
अधिवासन, न. गन्धफूल आदिसे पूज्य देवका पूजन, वा संस्कार । [आई है ।
अधिविन्ना, स्त्री. पहिली ब्याही स्त्री, जिसपर सौत
अधिवेदन, न. एक स्त्रीके जीते दूसरा ब्याह ।
अधिवेदनीया, स्त्री. पहिली स्त्रीके जीते दूसरी ब्याही हुई ।
अधिश्रयण, न. रिंधना (स्त्री) (णी) चुल्ली । भट्टी ।
अधिश्रित, त्रि. रक्खा हुआ, ठहराया हुआ ।
अधिष्ठातृ, त्रि. अध्यक्ष्य । मालिक, मुंतज़िम ।
अधिष्ठान, न. नगर, चक्र, आसन ।
अधिष्ठित, त्रि. मुकरेर, (स्त्री) (ति) आसन ।
अधीत, त्रि. पढ़ा हुआ, (न) पढ़ना, (स्त्री) (ति) पढ़ना ।
अधीतिन्, त्रि. पढ़ा हुआ ।
अधीन, त्रि. मातहत, ताबेदार ।
अधीनता, स्त्री. दासत्व । ताबेदारी ।

अधीयत्, त्रि. पढ़ता हुआ।
अधीयान, त्रि. छात्र, विद्यार्थी, वेदपाठक।
अधीर, त्रि. हैरान, मूर्ख (स्त्री) (रा) बिजली, एक नायिका। [लिक (स्त्री)(शी) महाराणी, देवी।
अधीश, (श्वर) पु. बुद्ध, महाराज, (त्रि) मा-
अधीष्ट, न. किसी अच्छे काममें आदरपूर्वक दूसरेको लगाना, (त्रि) लगाया हुआ।
अधुना, व्य. संप्रति; अब।
अधुनातन, त्रि. अबका। [विर्बनी।
अधृत, पु. विष्णु, (त्रि) न पकड़ा हुआ, स्त्री. (ति)
अधृष्ट, त्रि. शर्मनाक, हलीम, तवा।
अधृष्य, त्रि. न धमकनेके योग्य,। (मग़रूर, गैर मग़लूब (न) मलीन कपड़ा, लँधा धोती आदि।
अधोक्ष, त्रि. जितेंद्रिय।
अधोक्षज, पु. विष्णु, भगवान्।
अधोमुख, (त्रि) नीचे मुखवाला, (न) कृत्तिका मूला आदि नक्षत्र।
अधोस्रपित्त, न. खूनी ववासीर।
अध्यग्नि, न. धनविशेष; विवाहसमय आगके सामने कन्याको जो धन दिया जाता है।
अध्यग्निधन, न. दहेज।
अध्यधीन, त्रि. बहुतही अधीन, दास, तावेदार।
अध्ययन, न. पढ़ना।
अध्यर्द्ध, त्रि. सार्द्ध; डेढ़।
अध्यात्मज्ञान, न. ब्रह्मज्ञान। [में लाना।
अध्यात्मयोग, पु. विषयोंसे मन रोक कर आत्मा-
अध्यापक, त्रि. उपाध्याय। उस्ताद।
अध्यापन, न. ब्रह्मयज्ञ; पढ़ाना।
अध्याहार, पु. तर्क, जिस वाक्यका अर्थ साफ नहिं, उसे साफ़ करनेके लिये दूसरा शब्द लगा लेना। वाक्य पूरा बनानेके लिये पद जोड़ लेना। दलील।
अध्याय, पु. ग्रंथका एक भाग; सर्ग, वर्ग, पर्व, स्कन्ध, अंक, परिच्छेद, यह नाम होते हैं। बाब।
अध्याहार्य, त्रि. ऊह्य। मुखफ़फ़, मअ्जूफ़।
अध्युष्ट, त्रि. प्रसिद्ध; साढ़े तीन संख्या।
अध्युष्ट्र, पु. ऊंटोंकी गाड़ी।
अध्यूढ, त्रि. भाग्यवान् (पु) शिव, धनी (स्त्री) (ढा) जिसपर सौत पड़ी है।

अध्येतव्य, त्रि. पढ़नेकेयोग्य।
अध्येतृ(ता), पु. पढ़नेवाला।
अध्रुव, त्रि. अनित्य, सन्दिग्ध। फ़ानी, मुतलव्विन।
अध्वग, पु. पथिक, ऊंठ, सूरज, (स्त्री)(गा) गंगानदी।
अध्वगामिन्, पु. पांथ; पांथी।
अध्वन्, पु. पथ, वक़्त, रास्ता, तदबीर।
अध्वनीन, **अध्वन्य** } त्रि. पथिक। मुसाफ़िर।
अध्वर, पु. यज्ञ, एक वसुदेवता, (त्रि) सावधान।
अध्वरथ, पु. दूत। क़ासिद।
अध्वर्यु, पु. यजुर्वेदके जाननेहारा, ऋत्विक् (स्त्री) (र्यू) उस वंशकी स्त्री।
अध्वान्त, न. थोड़ासा अंधेरा।
अन, न. प्राश, छकड़ा, अनाज।
अनक, त्रि. नीच, छोटा। अदना।
अनक्षर, त्रि. मूर्ख, जो एक अक्षर नहीं जानता।
अनगार, पु. मुनि, (त्रि) जिसका घर नहीं।
अनग्नि, पु. श्रुतिस्मृतिमें विहित कर्म्मके न करनेहारा। [लगगई हो।
अनग्निका, स्त्री. ऐसी क्वारी कन्या जिसे ऋतु आने
अनघ, त्रि. निष्पाप। बेगुनाह। [गहीन।
अनङ्ग, पु. कामदेव, (न) आकाश, मन, (त्रि) अं-
अनच्छ, त्रि. मैला, न खुश। [अंजनरहित।
अनञ्जन, न. आकाश, पादब्रह्म (पु) नारायण (त्रि)
अनडुह्, पु. बैल (स्त्री) (ही) गाय।
अनद्य, पु. गोरी सरसों।
अनध्याय, पु. जिन दिनों पढ़ना नहिं ८ मी, १४ श, १५ शी, पड़वा, यमद्वितीया।
अनन्त, पु. विष्णु, बलराम, शेषनाग, (न) ब्रह्म, आकाश, अभ्रक (त्रि) हद्द, जैनऋषि (स्त्री) (न्ता) पार्वती, पृथिवी, हरड़, दूब। [आवाज़।
अनन्तगौर, पु. इलम मौसीकीमें एक किसमकी
अनन्तचतुर्दशी, स्त्री. भादों शुदि चौदश, इसमें अनन्तका व्रत और पूजन होता है।
अनन्तजित, पु. विष्णु, चौवीस जिनोंमेंसे चौदवां जिन।
अनन्तदेव, पु. विष्णु, शेपनाग।
अनन्तमूल, पु. औषधिविशेष।
अनन्तरूप, पु. भगवान्, विष्णु।

अनन्तविजय, पु. राजा युधिष्ठिरका शंख ।
अनन्तवीर्य, त्रि. जिसका बे अन्त बल हो, (पु) तेईसवां जिन । [पूर्णिमासी ।
अनन्तिका, स्त्री. माघ कार्तिक और विशाखकी
अनन्य, त्रि. एक भक्त, आत्मा, । लासानी ।
अनन्यगतिक, त्रि. एकाश्रय । जिसने एकही-पर भरोसा किया है ।
अनन्यचेतस्, त्रि. एकाग्रचित्त यकदिल ।
अनन्यज, पु. कामदेव, (त्रि) जो खुद पैदा हो ।
अनन्यवृत्ति, त्रि. एकाम, एकतान ।
अनन्वय, पु. अर्थालंकारविशेष, (त्रि) अन्वयरहित ।
अनन्वित, त्रि. असंगत । बेतरतीब ।
अनपत्य, त्रि. निःसंतान । बेऔलाद ।
अनपर, पु. ब्राह्मण ।
अनपाय, त्रि. लाज़वाल, नाशरहित ।
अनपायिन्, त्रि. स्थिर, अविनाशी, लाचार ।
अनपेक्ष, त्रि. निरपेक्ष । आज़ाद, बेपरवाह ।
अनभिज्ञ, त्रि. मूर्ख । जाहिल ।
अनभियुक्त, त्रि. निरादृत । बेइज़्ज़त ।
अनमस्य, त्रि. नमस्कारके अयोग्य ।
अनय, पु. दुर्दैव, विपदा, पाप, (त्रि) बदइख़लाकी ।
अनर्गल, त्रि. बेरोक ।
अनर्घ(र्घ्य), त्रि. अमूल्य । बेबहा । [नहिं ।
अनर्थ, त्रि. खराबी, (पु) विष्णु (त्रि) जिसका अर्थ
अनर्थक, न. ऐसा वचन जिसका अर्थ कुछ नहिं ।
अनर्थिन्, त्रि. बेपरवाह, बेख़ाहिश ।
अनल, पु. आग, कृत्तिकानक्षत्र ।
अनलि, पु. मुनिवृक्ष, वकवृक्ष ।
अनल्प, त्रि. बहुत सारा ।
अनव, त्रि. पुराना । जो नया नहीं । [नहिं ।
अनवगीत, त्रि. उत्तम यशवाला, जो निंदायोग्य
अनवग्रह, त्रि. जिसका कुछ पलटा न होसके ।
अनवद्य, त्रि. तअरीफ़के लायक ।
अनवधान, न. ग़फ़लत, बेख़बरी, भूल ।
अनवधानता, स्त्री. प्रमाद । बेख़बरी ।
अनवम, त्रि. सदृश, कम नहिं ।
अनवर, त्रि. श्रेष्ठ, पूज्य, प्रधान ।
अनवरत, त्रि. निरन्तर। हमेशा, लगातार, उमदह।
अनवरार्ध्य, त्रि. नेक, सरदार, दूसरा आधा ।
अनवसर, त्रि. बेफ़ुरसद, बेमौक़अ ।
अनवस्कर, त्रि. निर्मल, साफ़, पवित्र ।
अनवस्थ, त्रि. चंचल (स्त्री) (स्था) दलीलका दोष, नापायदारी ।
अनवस्थित, त्रि. मुतलव्विन दिल, (स्त्री) (ति)ना क़ायमी, (पु) पवन । [खायाहुआ ।]
अनशन, न. उपवास (त्रि) अभुक्त । फ़ाक़ा, न
अनश्वर, त्रि. अव्यय । लाज़वाल ।
अनस्, न. छकड़ा, गाड़ी । अनाज, ज़िन्दगी, (स्त्री) (स्त्री) माता ।
अनसूय, त्रि. असूयारहित । बेहसद ।
अनाकर, त्रि. निराकार । बेशकल ।
अनाकुल, त्रि. न घबराया हुआ ।
अनाक्रान्त, त्रि. न हारा हुआ । न दबा हुआ । (स्त्री) (न्ता) कंडियारी बेल ।
अनागत, त्रि. भावी । ग़ैरहाज़िर, न आया हुआ ।
अनागतार्तवा, स्त्री. जिस स्त्रीको ऋतु नहीं आई ।
अनागस्, पु. पवित्र । बेगुनाह ।
अनाचार (रिन्), पु. दुष्ट (त्रि) बदचलन ।
अनाथ, त्रि. यतीम, बेमालक ।
अनादर, पु. बेइज़्ज़ती (त्रि) बेइज़्ज़त हुआ ।
अनादि, त्रि. जिसका आदि नहिं (न) ब्रह्म ।
अनादिनिधन, पु. परमेश्वर, (त्रि) जिसका आदि अन्त नहिं ।
अनादीनव, त्रि. निर्दोष बेकसूर ।
अनादृत, त्रि. अवज्ञात । बेइज़्ज़त ।
अनादेय, त्रि. न लेनेयोग्य ।
अनाधृष्य, त्रि. न मग़लूब, बेक़ाबू ।
अनापन्न, त्रि. न हासिल हुआ २ ।
अनामक, न. एक बीमारी, (त्रि) जिसका नाम नहिं ।
अनामय, न. कुशल, सेहत, (त्रि) जिसको बीमारी नहिं, तनदरुस्त । [उंगली ।
अनामा (मिका), स्त्री. चिटली उंगलीकेपासकी
अनायत, त्रि. पासका, न लंबा ।
अनायास, पु. सहूलियत, (न) आसान ।
अनायासकृत, त्रि. आसानीसे किया हुआ, सहजे किया हुआ ।
अनारत, न. सदा, हमेशा, लगातार । [फ़रेबी ।
अनार्जव, न. कुटिलता, (पु) रोग, (त्रि) कुटिल ।

अनार्य, (क) त्रि. न. श्रेष्ठ, नीच, कमीना ।
अनार्यज, न. चंदन, गोरोचन (त्रि) अनार्यके घर वा देशमें उत्पन्न ।
अनार्यजुष्ट, त्रि. जो काम बडे लोग नहीं करते हैं।
अनाविल, त्रि. स्वच्छ; साफ़ ।
अनावृत, त्रि. खुला हुआ, न ढका हुआ ।
अनावृष्टि, स्त्री. वर्षाकी रोक ।
अनाश्रित, त्रि. फलकी इच्छारहित ।
अनासन्न, त्रि. दूरका, जो पास नहिं ।
अनास्था, स्त्री. अविश्वास । बेएहतिकादी ।
अनाहत, त्रि. नया वस्त्र, (न) हृदयके १२ चक्रोंमेंसे एक ।
अनाहार, पु. अनशन । फ़ाका ।
अनाहूत, त्रि. न बुलाया हुआ ।
अनिकेत(तन), पु. संन्यासी, (त्रि) बेघरा ।
अनिक्षु, पु. वृक्षविशेष; किलक, काही ।
अनिच्छु, पु. इच्छारहित । बेख़ाहिश ।
अनित्य, त्रि. अविनाशी । फ़ानी ।
अनिद्र, पु. परमात्मा, (त्रि) निद्रारहित ।
अनिन्द्य, त्रि. जो निंदाके योग्य नहिं ।
अनिपुन(ण), त्रि. मूर्ख ।
अनिभृत, त्रि. खुल्लमखुल्ला ।
अनिमिष, पु. देवता, मछली (त्रि) जो झिमके नहिं।
अनिमिषक्षेत्र, न. नैमिष अरण्य, जंगल ।
अनिमिषाचार्य, पु. गुरु, बृहस्पति ।
अनियत, त्रि. अनित्य । नाकायम ।
अनिमेष, पु. अनिमिष देखो ।
अनियन्त्रित, त्रि. उच्छृंखल । आज़ाद ।
अनिरुद्ध, पु. कंदर्पका पुत्र, कृष्णजीका मित्र (त्रि) आज़ाद (न) घोड़ेकी पिछाड़ी । [हुई नहिं ।]
अनिरुद्ध-पथ, न. आकाश (त्रि) जिसकी राह रुकी
अनिर्वचनीय, त्रि. अवाच्य, (न.) आकाशआदि, परमात्मा, स्त्री (या) माया ।
अनिर्विण्ण, त्रि. निर्घृण, विषादरहित । बेरंज ।
अनिल, पु. पवन, आठ वसुओंमेसे एक, स्वाती नक्षत्र ।
अनिलवन्धु, पु. आग ।
अनिलसख, पु. आग । आतिश।
अनिलात्मज, पु. हनूमान, भीम ।
अनिलाशिन्, पु. सांप (त्रि) हवाखोरा ।
अनिश, त्रि. लगातार, हमेशा ।
अनिष्ट, न. दुःख, पाप (त्रि) जो पसंद नहीं ।
अनिष्ठुर, त्रि. साफ़ दिलवाला, रहीम ।
अनीक, न. रण, फौज, (पु) जंग । [चिन्ह.
अनीकस्थ, पु. सैन्य, महौत, नशानआदि सेनाके
अनीकिनी, स्त्री. फौज, फौजकी तादाद २१०७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोडे, १०९३५ पैदल ।
अनीति, स्त्री. बुरा इख़लाक, जबरदस्ती, बेईमानी।
अनीदृश्(श), त्रि. जो ऐसा नहिं ।
अनीश, पु. विष्णु, नास्तिक ।
अनीश्वर, त्रि. मुलहिद । [आलस ।]
अनीह, त्रि. सुस्त, आलसी, (स्त्री) (हा) सुस्ती,
अनु, व्य. हरफ़े रबत जो, साथ, पीछे, छोटाई, मुताबिकत, निशान, एक २ भाग, मानिंद, इसलिये, इसीतरहसे, नज़दीक, को, किनारे २ इन अर्थोंमें आता है ।
अनुक, त्रि. शहवती (व्य) दलील ।
अनुकर्ष, पु. रथ आदिके नीचेकी लकडी, खैंच।
अनुकरण, न. नकल करना।
अनुकर्षण, न. खैंचना, बुलाना ।
अनुकल्प, पु. प्रतिनिधि । कायम मुकायम ।
अनुकार, पु. नकल करना ।
अनुकारिन्, त्रि. नकल करनेवाला ।
अनुकीर्ण, त्रि. फैला हुआ । मुहीत ।
अनुकूल, त्रि. मुताबिक, अनुसार, सहायक ।
अनुक्रम, पु. यथाक्रम । तरीकहवार ।
अनुक्रमणिका, स्त्री. दीवाचह ।
अनुक्रोश, पु. दया, कृपा ।
अनुक्षण, न. हर लहमे, हमेशह ।
अनुग, त्रि. नौकर, साथी, मालिक ।
अनुगत, त्रि. सेवक, अधीन, शरणागत ।
अनुगवीन, पु. गोपाल; ग्वाला ।
अनुगामिन्, त्रि. नौकर, शागिर्द, पैरौ ।
अनुगुण, व्य. सदृश । बराबर ।
अनुग्रह, पु. मेहरबानी, दरिद्री आदिकी परवरिश ।
अनुग्राहक, त्रि. समर्थक । मेहरबान ।
अनुग्राहिन्, त्रि. मेहरबानी करानेवाला ।

अनुचर, त्रि. नौकर आदि।
अनुचित, त्रि. नामुनासिब।
अनुज, पु. छोटा भाई, (स्त्री) (जा) छोटी बहिन।
अनुज्ञा, स्त्री. अनुमति। इजाज़त।
अनुज्ञात, त्रि. इजाजत दिया हुआ।
अनुतर्ष, न. मद पीनेका प्याला।
अनुताप, पु. पछतावा।
अनुदात्त, पु. नीची स्वर, वेदपाठमें धीमी स्वर।
अनुदित, त्रि. न कहा हुआ, न चढ़ा हुआ।
अनुनय, पु. हलीमी, सलाम, आजज़ी।
अनुपद, व्य. पद २ में (न) पीछेसे।
अनुपदिन्, त्रि. तलाश करनेवाला, (त्रि) पीछे चलनेवाला।
अनुपदीना, स्त्री. पादुका; खड़ाओ, जूती।
अनुपम, त्रि. लासानी, बेमिसल (स्त्री) (मा) कुमुद नामदिक् गजकी हथिनी। [न पैदा हुआ २
अनुपन्न, त्रि. अयुक्त। नामुनासिब। न तैयार,
अनुपयुक्त, त्रि. अयोग्य। नामुनासिब।
अनुपयोगिता, स्त्री. व्यर्थता (बेफ़ायदगी)।
अनुपरोध, पु. अपक्षपात। ना तर्फ़दारी।
अनुपाय, त्रि. लाचार। बेतद्बीर।
अनुप्रास, पु. तुल्य वर्णोंका पादोंमे रखना, ऐसी इबारतमें सुंदरता है। [जाता है।]
अनुबन्ध, पु. उच्चारण करतेहि जिसका नाश हो
अनुभव, पु. स्मरणसे भिन्न ज्ञान; वह ज्ञान जो किसी संस्कारके विना पैदा हुआ है।
अनुभाव, पु. प्रभाव, महिमा, ताकत, बड़ाई, दोप, बल
अनुभूत, त्रि. अनुभव किया हुआ, (स्त्री) (ति) निश्चय करनेवाली बुद्धि।
अनुमत, त्रि. मनजूर (स्त्री) (ति) इजाज़त, सलाह चतुर्दशीसे मिली हुई पूर्णिमा।
अनुमित, त्रि. अनुमान किया हुआ, कयास किया हुआ (स्त्री) (ति) अनुमान, परामर्शसे उत्पन्न ज्ञान, मनोगतभाव प्रकाशक भ्रूभंगी आदि, हेतु या तर्कसे किसी वस्तुको जानना।
अनुमेय, त्रि. अनुमानसे जानने योग्य। दलीलसे जिसे साबित करना है। [खुशी।]
अनुमोद, पु. दूसरेको सुखी देख सुखी होना।
अनुमोदन, न. रायमें राय मिलानी।
अनुमोदित, त्रि. सम्मति दिया हुआ।
अनुयान, त्रि. अनुगत। पैरौ।
अनुयायिन्, त्रि. पैरो, नौकर।
अनुयुक्त, त्रि. जाननेको इच्छित।
अनुयुग, न. युग २ में।
अनुयोग, पु. सवाल, निरादरी, उलाहना, उपदेश।
अनुयोगिन्, त्रि. आचार्य। धर्मोपदेश करनेवाला
अनुयोजन, न. प्रश्न। सवाल।
अनुरक्त, त्रि. अनुरागी। महबूब।
अनुरञ्जक, त्रि. हर्षक। प्रसन्न करदेनेवाला।
अनुरञ्जन, न. प्रीतिविधान। खुश करदेना।
अनुरत, त्रि. अनुरागवाला। प्रसन्न।
अनुरहस्, न. तनहाई।
अनुराग, पु. प्रीति। मुहब्बत।
अनुरागिन्, त्रि. आसक्त। अशक।
अनुराधा, स्त्री. २७ नक्षत्रोंमेंसे १७ वां।
अनुरुद्ध, त्रि. रुका हुआ, काबू किया हुआ।
अनुरूप, त्रि. सदृश। म्वाफ़िक।
अनुरोध, पु. अभीष्ट सिद्ध करनेकी इच्छा।
अनुलाप, पु. वारंवार कहना।
अनुलेप, पु. लेपन।
अनुलेपन, न. चंदन आदिका अंगोंमे लगाना।
अनुलोम, त्रि. यथाक्रम (व्य) प्रतिलोम, वर्णसंकर-जाति। सिलसिलेवार, रोम २ में, ब्राह्मणसे क्षत्रिय आदिकी स्त्रीमें उत्पन्न सन्तान।
अनुवर्तन, न. पीछे पड़ना, पैरवी करना।
अनुवर्तित, त्रि. सेवित। पैरवी किया हुआ।
अनुवर्तिन्, त्रि. पैरौ, मुताबिक शख़्स।
अनुवाक, पु. शास्त्र, वेदका एक भाग।
अनुवाक्या, स्त्री. वैदिक स्तोत्र। यज्ञमें देवताओंको बुलानेवाले मंत्र।
अनुवाद, पु. तर्जुमा, (न) पीछेकी बात।
अनुवादक, } अनुवाद करनेवाला।
अनुवादिन्, } त्रि. मुतरज्जम।
अनुवाद्य, त्रि. तर्जुमेकेयोग्य।
अनुवार, व्य. वारंवार।
अनुवास, पु. गंधि। बू।
अनुवासन, न. धूप दीप देकर खुशबूदार करना।

अनुविद्ध, त्रि. जड़ा हुआ, बिंधा हुआ।
अनुविहित, त्रि. देखकर किया हुआ।
अनुवृत्त, त्रि. प्रविष्ट (स्त्री) (त्ति) (व्या) एक पदको दूसरी स्थान ले जाना। पैरवी।
अनुव्रज्या, स्त्री. चलतेके पीछे चलना। पैरवी।
अनुशय, पु. पछतावा, पुरानी दुश्मनी (स्त्री) (यी) पैरोंकी बीमारी। [करनेवाला, जीव।
अनुशयिन्, त्रि. पछतानेवाला। वेदोक्त कर्मके
अनुशयाना, स्त्री. एक प्रकारकी नायिका।
अनुशासन, न. हुकम, हिदायत।
अनुशासित, त्रि. सिखाया हुआ।
अनुशासितृ, पु. उस्ताद, सिखानेवाला, हुकम करनेवाला।
अनुशिष्टि, स्त्री. अनुशासन। सिखाना।
अनुशीलन, न. वारवार याद करना, घोखना।
अनुशोक, पु. मनका फ़िकर। [पछतावा
अनुशोचन, न. सोचना, पछताना, (स्त्री) (ना)
अनुश्रव, त्रि. बुद्धिमान, (पु) वेद।
अनुषक्त, त्रि. अनुगत।
अनुषङ्ग, पु. दया, आसक्ति, न्याय।
अनुष्टुभ्(ष्टुप्), पु. आठ २ अक्षरोंके पादवाला छन्द (स्त्री) सरस्वती। [रना, करना।
अनुष्ठान, न. कामका आरम्भ करके उसे पूरा क-
अनुष्ठित, त्रि. किया हुआ, आरंभ किया हुआ।
अनुष्ण, त्रि. ठंडा, आलसी, (न) कमलका फूल।
अनुसंस्था, स्त्री. अनुमरण; पीछे मरना।
अनुसंधान, न. तलाश। तरद्दुद।
अनुसंधानिन्, पु. जिज्ञासु। मुत्तलाशी, तरद्दुती
अनुसरण, न. पैरवी करना, मुताबिक करना।
अनुसार, पु. पहिलेके मुताबिक।
अनुसारिन्, त्रि. पीछे चलनेवाला। पैरौ।
अनुसूचन, न. जता देना, इशारह करना।
अनुसृत, त्रि. उपासित, अनुसरण किया गया।
अनुस्मृत, त्रि. पीछे याद किया गया, (स्त्री) (ति) ध्यान, फ़िकर।
अनुस्यूत, त्रि. सिया हुआ, पिरोया हु०
अनुस्वार, पु. (ं) यह अक्षर,। नूनगुन्नह।
अनुहार, पु. नकल करना, तशबीह।
अनुहार्य, पु. मासिकश्राद्ध, नित्यश्राद्ध, नैमित्तिक-श्राद्ध। माहवार। रोजमर्रा यामोंके २ पर जो पितरोंको जगात दी जाती है।
अनूक, न. घराना, आदत (न) पिछला जन्म।
अनूचान, पु. छय अंगोंसमेत वेद जाननेवाला, (त्रि) हलीम।
अनूढ, त्रि. क्वारा (स्त्री) क्वारी।
अनूद्य, त्रि. तर्जुमेके लायक (पु) वह नाम जो लेने नहिं चाहिये अपना २ गुरुका ३ कंजूसका ४ बड़ी औलाद ५ औरतका।
अनून, (क) त्रि. सारा, पूरा, अनिश्चित।
अनूप, त्रि. जलवाला मुल्क, (पु) भैंसा।
अनूरु, पु. सूर्यका सारथी, (त्रि) बेजांघका।
अनूरुसारथि, पु. सूर्यदेवता।
अनूच, पु. बालक। जिसका उपनयन नहिं हुआ।
अनृजु, पु. शरीर, लुच्चा, शठ।
अनृणिन्, त्रि. जो कर्ज़दार नहिं।
अनृत, न. झूठ, पेतीका काम।
अनृजु, पु. काष्ठ; शरीर।
अनृणिन्, न. ऋणमुक्त।
अनेक, त्रि. एकसे ज्यादह। दो. बहुत।
अनेकज, पु. पक्षी, विष्णु व्यक्त, प्रकट।
अनेकता, स्त्री. फूट, (त्रि) बहुतात।
अनेकदा, व्य. कई दफ़ा।
अनेकधा, व्य. कई तरह, कई वार।
अनेकप, पु. हाथी।
अनेकरूप, पु. विष्णु (त्रि) जिसके कई रूप हों।
अनेकविध, त्रि. नानाप्रकार।
अनेकशस्, व्य. कई तरह, कई प्रकार।
अनेजत्, त्रि. जो चलनसके।
अनेनस्, त्रि. निर्दोष। बेकसूर।
अनेहस्, व्य. समय,। वक़्त।
अनैक्य, न. एकता। बेइत्तिफ़ाकी।
अनैकान्त, त्रि. मुतलव्विन।
अनैकान्तिक, पु. हेत्वाभास वि० जिस हेतुमें व्यभिचारदोष हो, दुष्ट हेतु।
अनो, व्य. ना. नहिं।
अनोकह, पु. पेड़, दरख़्त।
अनौचिती, स्त्री. लोकमर्यादाका अतिक्रम।

अनौपम्य, त्रि. परमात्मा । लासानी ।
अन्त, पु. नाश, निश्चय, (न) स्वरूप (त्रि) पासका, सुन्दर, आख़री (पु. न.) आखिर, बाकी ।
अन्तःकरण, न. चित्त, मन, बुद्धि, अहंकार ।
अन्तःकरणदेवता, स्त्री. चन्द्र २ अच्युत ३ ब्रह्मा ४ शङ्कर ।
अन्तःकरणवृत्ति, स्त्री. मनकी सिफ़तें । शान्त घोर, और मूढ ।
अन्तःपातिन्, त्रि. वीचका, विचोला ।
अन्तःपुर, न. शुद्धान्त । महिलसरा ।
अन्तःपुरचरा, स्त्री. रणवासमें आने जानेवाली [दासी ।
अन्तःप्रकृति, स्त्री. मन; । दिल ।
अन्तःशरीर, न. आत्मा । रूह ।
अन्तःसत्वा, स्त्री. गर्भवती । हामिला ।
अन्तःस्थ, त्रि. विचोला (व्या०) य, र, ल, व, यह चार अक्षर ।
अन्तःस्वेद, पु. स्त्री. हाथी । फ़ील ।
अन्तक, पु. यम, धर्मराज, (त्रि) नाश करनेवाला।
अन्तकाल, पु. मरणसमय ।
अन्तग, त्रि. मरा हुआ, पार पहुंचा हुआ ।
अन्ततस्, व्य. आख़ीरमें ।
अन्तर, व्य. पहिरनेके कपडे, मनज़ूर, हद्द, मौका, छुकाव, सुराख़, अपना, वाहिर, सिवाय, रूह, मुताबिक ।
अन्तरा, व्य. अलग, विना, सिवा भीतर, नज़दीक।
अन्तरङ्ग, त्रि. वीचका, अपना, (व्या) प्रवृत्ति के आश्रयकार्य ।
अन्तरात्मन्, न. जीव, प्राण, मन।
अन्तरतस्, व्य. वीचमें ।
अन्तरता, स्त्री. दूरी, जुदाई ।
अन्तराय, पु. विघ्न; रोक ।
अन्तराल, न. वीचकी जाय ।
अन्तरिक्ष, न. आकाश । आसमान । [मराहुआ ।
अन्तरित, त्रि. निरादर किया हुआ, वीचका,
अन्तरीण, न. मध्यस्थ । सालिस ।
अन्तरीप, न., द्वीप; टापू ।
अन्तरीय(क), न. साड़ी, धोती ।
अन्तर्गत, त्रि. वीचका। मियानका ।
अन्तर्जठर, न. कोष्ट, कुक्षिका मध्य ।
अन्तर्जल, न. जलवाला, मेघ ।
अन्तर्द्धा, व्य. तिरोधान । छिपाव ।
अन्तर्धान, न. लुकाव, छिपाव ।
अन्तर्द्धि, पु. व्यवधान । छिपाव ।
अन्तर्भूत, त्रि. वीचका ।
अन्तर्वत्नी, स्त्री. गर्भवती । हामिला ।
अन्तर्वर्तिन्, त्रि. मध्यका । वीचका ।
अन्तर्वमि, पु. अजीर्ण, अपाक । बदहज़मी ।
अन्तर्वंशिक, पु. ख़ाजा सरा ।
अन्तर्वाणि, त्रि. शास्त्रज्ञ । आलिम ।
अन्तर्वासस्, न. अंदर पहिरनेका वस्त्र ।
अन्तर्वेदि(दी), पु. स्त्री. गंगा यमुनाके वीचका देश । हरिद्वारसे प्रयागतकका देश ।
अन्तर्वासिन्, पु. शिष्य, चाण्डाल ।
अन्तशय्या, स्त्री. मृत्यु, श्मशान । मरघट ।
अन्तावसायिन्, पु. मुनिविशेष, नीच, हज्जाम।
अन्तस्थ, पु. य, व, र,ल ।
अन्तर्हास, पु. गूढ़ हंसी (त्रि) मुसकरानेवाला ।
अन्तर्हित, त्रि. अदृश्य; छिपा हुआ ।
अन्तर्वन्हि, पु. कालानल ।
अन्तवत्, त्रि. विनाशी । फ़ानी ।
अन्ति, स्त्री. नाट्योक्तिमें ज्येष्ठा भगिनीः ।
अन्तिक, त्रि. समीपका, न. सामीप्य स्त्री (का) चुल्ली ।
अन्तिकात्, व्य. अभिमुख । सामने ।
अन्तिके, व्य. निकट; पास । नज़दीक ।
अन्तिम, त्रि. अख़ीरी, नज़दीकतर ।
अन्तेवासिन्, पु. विद्यार्थी, चाण्डाल, पड़ौसी ।
अन्त्य, पु. तृणविशेष, जघन्य । नीच कौम, आख़री, मुथाघास, १०००००००००००००००, हज़ार लाख गुणित किरोड़ लाख ।
अन्त्यज, **अन्त्यजन्मन्**, **अन्त्यजाति**, } शूद्र, रजक आदि सात जातियें, । धोबी, चमार, नट, मलाह, धीवर, भील, गड़रिया ।
अन्त्यभ, न. रेवतीनक्षत्र, मीनराशि ।
अन्त्यावसायिन्, पु. चंडाल आदि सात जातियों ।
अन्त्येष्टि, स्त्री. अन्त्ययज्ञ, मुर्दा जलानेसे लेकर तेरहवें दिनतक उसकेनिमित्त जो पिण्डदान वगैरह होता है।

अन्त्र, न. पुरीतती नाड़ी, आंतड़ी ।
अन्त्रवृद्धि, स्त्री. रोगविशेष । हिचकी ।
अन्त्राद, पु. उदरकीट; पेटके भीतरका कीड़ा ।
अन्त्रकूज, पु. उदरशब्द; पेटका गुड़गुड़ाना ।
अन्दिका, स्त्री. अन्तिका, चुल्ही, । [ज़ंजीर ।
अन्दु(न्दू)क, पु. स्त्री. पायजेब, हाथीके पांवका
अन्धपु, न. अन्धकार, जल(त्रि) दृष्टिहीन पु. भिक्षु ।
अन्धकारि, पु. शिव, महादेव ।
अन्धक, पु. देशभेद, नृपभेद, असुरभेद, मुनिविशेष, यादववि० हिरण्याक्षका बेटा ।
अन्धकरिपु, पु. शिव, अग्नि, चन्द्र, सूर्य्य ।
अन्धकूप, पु. अंधेरा कुआ, मोह, नरकवि० ।
अन्वक्षम्, व्य. आंखके समीप ।
अन्धकार, पु. न. तिमिर । अंधेरा । [अंधेरा ।
अन्धतमिस्र, न. अत्यन्त अन्धकार । निहायत-
अन्ध, न. ओदन, चावल ।
अन्धाहि, पु. स्त्री. एक क़िसमकी मछली ।
अन्धिका, स्त्री. चक्षुरोग, द्यूतक्रीड़ा, राजिसर्षप । आंखकी बीमारी, राईसरसों ।
अन्धु, पु. कूप, । कुआ ।
अन्धुल, पु. शिरिसका दरख़्त ।
अन्ध्र, पु. मृगयु, देशविशेष, जातिविशेष । शिकारी । तिलंगदेश । ख़ासक़ौम ।
अन्न, न. खानेकी चीज़, भात, (त्रि) खाया हुआ ।
अन्नगन्धि, पु. अजीर्णरोग । बदहज़मी । इत्यादि ।
अन्नद, त्रि. अन्नदाता (स्त्री) (दा) देवी ।
अन्नपूर्ण, न. अन्न परिपूर्ण, स्त्री. (र्णा) विश्वेश्वरी ।
अन्नप्राशन, न. लड़के वा लड़कीको पहले पहले ६ ठे ९ वें महीने अनाज खुलाना ।
अन्नमय, पु. स्थूलशरीर ।
अन्नविकार, पु. शुतफ़ह, गूह ।
अन्नाद, त्रि. अन्नभक्षक, (पु) विष्णु; अनाज ।
अन्नार्थिन्, त्रि. बुभुक्षु; भूखा । [खानेवाला ।]
अन्य, त्रि. भिन्न, पर; दूसरा ।
अन्यत्, न. इतर; और ।
अन्यच्च, व्य. अपरञ्च; औरभी ।
अन्यतस्, व्य. अन्यस्मात्; दूसरेसे ।
अन्यतम, त्रि. भिन्नतम; बहुतोंमेंसे एक ।
अन्यतर, पु. दोनोंमेंसे एक ।

अन्यतरेद्युः, व्य. और एक दिन ।
अन्यत्र, व्य. और कहीं ।
अन्यथा, व्य. और तरह, खराब, झूंठ ।
अन्यथासिद्धि, पु. हेत्वाभासवि० कार्य्यसे पहिले हो, पर कार्य्यका उत्पादक न हो ।
अन्यदा, व्य. और वक़्त ।
अन्यपुष्ट, पु. स्त्री. कोकिल; कोइल पक्षी ।
अन्यपूर्वा, स्त्री. द्विरूढा; एक पतिके मरनेके पीछे दूसरी वेर व्याही हुई औरत । [कोइल ।]
अन्यभृत, (त्) पु. स्त्री काक, कोकिल; कव्वा,
अन्यादृश(ृश्), अन्य प्रकार । और तरह ।
अन्याय, पु. ज़ुल्म, वेइन्साफ़ी ।
अन्याय्य, त्रि. अयोग्य । न मुनासिब ।
अन्यायिन्, त्रि. ज़ालिम, वेइन्साफ़ ।
अन्यून, त्रि. सम्पूर्ण; सारा ।
अन्येद्युस्, व्य. परेद्युः; दूसरे दिन ।
अन्योदर्य, त्रि. वैमात्रेय । सौतेला भाई ।
अन्योन्य, त्रि. उभयतः, परस्पर । आपसमें ।
अन्योन्याभाव, पु. परस्पर अभाव । एक वस्तुमें दूसरीका न होना ।
अन्योन्याश्रय, पु. एकको दूसरेकी अपेक्षा ।
अन्वञ्च, त्रि. पश्चाद्गामी; पीछे चलनेवाला ।
अन्वय, पु. वंश, पदोंकी परस्पर आकाङ्क्षा, पदोंका योग्यतासम्बन्ध । ख़ान्दान, लफ़्ज़ोंकी तरक़ीब ।
अन्वयव्यतिरेकि, पु. हेतुविशेष । पूरा सबब ।
अन्ववसर्ग, पु. कामाचारानुज्ञा ।
अन्ववाय, पु. वंश, कुल ।
अन्वष्टका, स्त्री. पौष माघ फाल्गुन और आश्विनके कृष्णपक्षकी नवमीको सामिक लोकोंका एक श्राद्ध ।
अन्वह, व्य. नित्य । प्रतिदिन ।
अन्वाचय, त्रि. अनुषंग संयुक्त; मिलाहुआ ।
अन्वाजे, व्य. दुर्बल को बल देना ।
अन्वादेश, पु. कहकर कुछ और कहना ।
अन्वाधि, पु. अमानत दरअमानत ।
अन्वाधेय, न. स्त्रीधनविशेष; विवाहके पीछे मातापितासे तथा भर्तृकुलसे स्त्रीको प्राप्त धन ।

अनौपम्य, त्रि. परमात्मा । लासानी ।
अन्त, पु. नाश, निश्चय, (न) स्वरूप (त्रि) पासका, सुन्दर, आख़री (पु. न.) आखिर, बाकी ।
अन्तःकरण, न. चित्त, मन, बुद्धि, अहंकार ।
अन्तःकरणदेवता, स्त्री. चन्द्र २ अच्युत ३ ब्रह्मा ४ शङ्कर ।
अन्तःकरणवृत्ति, स्त्री. मनकी सिफ़तें । शान्त घोर, और मूढ ।
अन्तःपातिन्, त्रि. बीचका, विचोला ।
अन्तःपुर, न. शुद्धान्त । महिलसरा ।
अन्तःपुरचरा, स्त्री. रणवासमें आने जानेवाली [दासी ।
अन्तःप्रकृति, स्त्री. मन; । दिल ।
अन्तःशरीर, न. आत्मा । रूह ।
अन्तःसत्वा, स्त्री. गर्भवती । हामिला ।
अन्तःस्थ, त्रि. विचोला (व्या०) य, र, ल, व, यह चार अक्षर ।
अन्तःस्वेद, पु. स्त्री. हाथी । फ़ील ।
अन्तक, पु. यम, धर्मराज, (त्रि) नाश करनेवाला।
अन्तकाल, पु. मरणसमय ।
अन्तग, त्रि. मरा हुआ, पार पहुंचा हुआ ।
अन्ततस्, व्य. आख़ीरमे ।
अन्तर, व्य. पहिरनेके कपडे, मनजूर, हद्द, मौका, लुकाव, सुराख़, अपना, बाहिर, सिवाय, रूह, मुताबिक ।
अन्तरा, व्य. अलग, विना, सिवा भीतर, नज़दीक।
अन्तरङ्ग, त्रि. बीचका, अपना, (व्या) प्रवृत्ति के आश्रयकार्य ।
अन्तरात्मन्, न. जीव, प्राण, मन।
अन्तरतस्, व्य. बीचमें ।
अन्तरता, स्त्री. दूरी, जुदाई ।
अन्तराय, पु. विघ्न; रोक ।
अन्तराल, न. बीचकी जाय ।
अन्तरिक्ष, न. आकाश । आसमान ।
अन्तरित, त्रि. निरादर किया हुआ, बीचका, [मराहुआ ।
अन्तरीण, न. मध्यस्थ । सालिस ।
अन्तरीप, न., द्वीप; टापू।
अन्तरीय(क), न. साड़ी, धोती ।
अन्तर्गत, त्रि. बीचका। मियानका ।
अन्तर्जठर, न. कोष्ट, कुक्षिका मध्य ।
अन्तर्जल, न. जलवाला, मेघ ।
अन्तर्द्धा, व्य. तिरोधान । छिपाव ।
अन्तर्धान, न. लुकाव, छिपाव ।
अन्तर्द्धि, पु. व्यवधान । छिपाव ।
अन्तर्भूत, त्रि. बीचका ।
अन्तर्वत्नी, स्त्री. गर्भवती । हामिला ।
अन्तर्वर्तिन्, त्रि. मध्यका । बीचका ।
अन्तर्वमि, पु. अजीर्ण, अपाक । बदहज़मी ।
अन्तर्वंशिक, पु. खाजा सरा ।
अन्तर्वाणिं, त्रि. शास्त्रज्ञ । आलिम ।
अन्तर्वासस्, न. अंदर पहिरनेका वस्त्र ।
अन्तर्वेदि(दी), पु. स्त्री. गंगा यमुनाके बीचका देश । हरिद्वारसे प्रयागतकका देश ।
अन्तर्वासिन्, पु. शिष्य, चाण्डाल ।
अन्तशय्या, स्त्री. मृत्यु, श्मशान । मरघट ।
अन्तावसायिन्, पु. मुनिविशेष, नीच, हज्जाम।
अन्तस्थ, पु. य, व, र,ल ।
अन्तर्हास, पु. गूढ़ हंसी (त्रि) मुसकरानेवाला ।
अन्तर्हित, त्रि. अदृश्य; छिपा हुआ ।
अन्तर्वह्नि, पु. कालानल ।
अन्तवत्, त्रि. विनाशी । फ़ानी ।
अन्ति, स्त्री. नाट्योक्तिमें ज्येष्ठा भगिनीः ।
अन्तिक, त्रि. समीपका, न. सामीप्य स्त्री (का) चुल्ली ।
अन्तिकात्, व्य. अभिमुख । सामने ।
अन्तिके, व्य. निकट; पास । नज़दीक ।
अन्तिम, त्रि. अख़ीरी, नज़दीकतर ।
अन्तेवासिन्, पु. विद्यार्थी, चाण्डाल, पड़ौसी ।
अन्त्य, पु. तृणविशेष, जघन्य । नीच कौम, आख़री, मुथाघास, १०००००००००००००००. हज़ार लाख गुणित किरोड़ लाख ।
अन्त्यज, }
अन्त्यजन्मन्, } शूद्र, रजक आदि सात जातियें, । धोबी, चमार, नट, मलाह, धीवर, भील, गड़रिया ।
अन्त्यजाति, }
अन्त्यभ, न. रेवतीनक्षत्र, मीनराशि ।
अन्त्यावसायिन्, पु. चंडाल आदि सात जातियों ।
अन्त्येष्टि, स्त्री. अन्त्ययज्ञ, मुर्दा जलानेसे लेकर तेरहवें दिनतक उसकेनिमित्त जो पिण्डदान वगैरह होता है।

अन्त्र, न. पुरीतती नाड़ी, आंतड़ी ।
अन्त्रवृद्धि, स्त्री. रोगविशेष । हिचकी ।
अन्त्राद, पु. उदरकीट; पेटके भीतरका कीड़ा ।
अन्त्रकूज, पु. उदरशब्द; पेटका गुड़गुड़ाना ।
अन्दिका, स्त्री. अन्तिका, चुल्ली, । [जंजीर ।
अन्दु(न्दू)क, पु. स्त्री. पायजेब, हाथीके पांवका
अन्धपु, न. अन्धकार, जल(त्रि) दृष्टिहीन पु. भिक्षु ।
अन्धकारि, पु. शिव, महादेव ।
अन्धक, पु. देशभेद, नृपभेद, असुरभेद, मुनिविशेष, यादववि० हिरण्याक्षका बेटा ।
अन्धकरिपु, पु. शिव, अग्नि, चन्द्र, सूर्य्य ।
अन्धकूप, पु. अंधेरा कुआ, मोह, नरकवि० ।
अन्वक्षम्, व्य. आंखके समीप ।
अन्धकार, पु. न. तिमिर । अंधेरा । [अंधेरा ।
अन्धतमिस्र, न. अत्यन्त अन्धकार । निहायत-
अन्ध, न. ओदन, चावल ।
अन्धाहि, पु. स्त्री. एक क़िसमकी मछली ।
अन्धिका, स्त्री. चक्षुरोग, द्यूतक्रीड़ा, राजिसर्षप । आंखकी बीमारी, राईसरसों ।
अन्धु, पु. कूप, । कुआ ।
अन्धुल, पु. शिरिसका दरख़्त ।
अन्ध्र, पु. मृगयु, देशविशेष, जातिविशेष । शिकारी । तिलंगदेश । ख़ासक़ौम ।
अन्न, न. खानेकी चीज़, भात, (त्रि) खाया हुआ ।
अन्नगन्धि, पु. अजीर्णरोग । बदहज़मी । इत्यादि ।
अन्नद, त्रि. अन्नदाता (स्त्री) (दा) देवी ।
अन्नपूर्ण, न. अन्न परिपूर्ण, स्त्री. (र्णा) विश्वेश्वरी ।
अन्नप्राशन, न. लड़के वा लड़कीको पहले पहले ६ ठे ९ वें महीने अनाज खुलाना ।
अन्नमय, पु. स्थूलशरीर ।
अन्नविकार, पु. नुतफ़ह, गूह ।
अन्नाद, त्रि. अन्नभक्षक, (पु) विष्णु; अनाज ।
अन्नार्थिन्, त्रि. बुभुक्षु; भूखा । [खानेवाला ।]
अन्य, त्रि. भिन्न, पर; दूसरा ।
अन्यत्, न. इतर; और ।
अन्यच्च, व्य. अपरञ्च; औरभी ।
अन्यतस्, व्य. अन्यस्मात्; दूसरेसे ।
अन्यतम, त्रि. भिन्नतम; बहुतोंमेंसे एक ।
अन्यतर, पु. दोनोंमेंसे एक ।
अन्यतरेद्युः, व्य. और एक दिन ।
अन्यत्र, व्य. और कहीं ।
अन्यथा, व्य. और तरह, ख़राब, झूठ ।
अन्यथासिद्धि, पु. हेत्वाभासवि० कार्य्यसे पहिले हो, पर कार्य्यका उत्पादक न हो ।
अन्यदा, व्य. और वक़्त ।
अन्यपुष्ट, पु. स्त्री. कोकिल; कोइल पक्षी ।
अन्यपूर्वा, स्त्री. द्विरूढा; एक पतिके मरनेके पीछे दूसरी बेर ब्याही हुई औरत । [कोइल ।]
अन्यभृत, (त्) पु. स्त्री काक, कोकिल; कव्वा,
अन्यादृश(श्), अन्य प्रकार । और तरह ।
अन्याय, पु. ज़ुलम, बेइन्साफ़ी ।
अन्याय्य, त्रि. अयोग्य । न मुनासिब ।
अन्यायिन्, त्रि. ज़ालिम, बेइन्साफ़ ।
अन्यून, त्रि. सम्पूर्ण; सारा ।
अन्येद्युस्, व्य. परेद्युः; दूसरे दिन ।
अन्योदर्य, त्रि. वैमात्रेय । सौतेला भाई ।
अन्योन्य, त्रि. उभयतः, परस्पर । आपसमें ।
अन्योन्याभाव, पु. परस्पर अभाव । एक वस्तुमें दूसरीका न होना ।
अन्योन्याश्रय, पु. एकको दूसरेकी अपेक्षा ।
अन्वञ्च, त्रि. पश्चाद्गामी; पीछे चलनेवाला ।
अन्वय, पु. वंश, पदोंकी परस्पर आकाङ्क्षा, पदोंका योग्यतासम्बन्ध । ख़ान्दान, लफ़ज़ोंकी तरक़ीब ।
अन्वयव्यतिरेकि, पु. हेतुविशेष । पूरा सबब ।
अन्ववसर्ग, पु. कामाचारानुज्ञा ।
अन्ववाय, पु. वंश, कुल ।
अन्वष्टका, स्त्री. पौष माघ फाल्गुन और आश्विनके कृष्णपक्षकी नवमीको साग्निक लोकोंका एक श्राद्ध ।
अन्वह, व्य. नित्य । प्रतिदिन ।
अन्वाचय, त्रि. अनुषंग संयुक्त; मिलाहुआ ।
अन्वाजे, व्य. दुर्बल को बल देना ।
अन्वादेश, पु. कहकर कुछ और कहना ।
अन्वाधि, पु. अमानत दरअमानत ।
अन्वाधेय, न. स्त्रीधनविशेष; विवाहके पीछे मातापितासे तथा भर्तृकुलसे स्त्रीको प्राप्त धन ।

अनौपम्य, त्रि. परमात्मा । लासानी ।
अन्त, पु. नाश, निश्चय, (न) स्वरूप (त्रि) पासका, सुन्दर, आख़री (पु. न.) आख़िर, बाकी ।
अन्तःकरण, न. चित्त, मन, बुद्धि, अहंकार ।
अन्तःकरणदेवता, स्त्री. चन्द्र २ अच्युत ३ ब्रह्मा ४ शङ्कर ।
अन्तःकरणवृत्ति, स्त्री. मनकी सिफ़तें । शान्त घोर, और मूढ ।
अन्तःपातिन्, त्रि. बीचका, बिचोला ।
अन्तःपुर, न. शुद्धान्त । महिलसरा । [दासी ।
अन्तःपुरचरा, स्त्री. रणवासमें आने जानेवाली
अन्तःप्रकृति, स्त्री. मन;। दिल ।
अन्तःशरीर, न. आत्मा । रूह ।
अन्तःसत्वा, स्त्री. गर्भवती । हामिला ।
अन्तःस्थ, त्रि. बिचोला (व्या०) य, र, ल, व, यह चार अक्षर ।
अन्तःस्वेद, पु. स्त्री. हाथी । फ़ील ।
अन्तक, पु. यम, धर्मराज, (त्रि) नाश करनेवाला।
अन्तकाल, पु. मरणसमय ।
अन्तग, त्रि. मरा हुआ, पार पहुंचा हुआ ।
अन्ततस्, व्य. आख़ीरमें ।
अन्तर, व्य. पहिरनेके कपडे, मनजूर, हद्द, मौका, लुकाव, सुराख़, अपना, बाहिर, सिवाय, रूह, मुताबिक़ ।
अन्तरा, व्य. अलग, विना, सिवा भीतर, नज़दीक।
अन्तरङ्ग, त्रि. बीचका, अपना, (व्या) प्रवृत्ति के आश्रयकार्य ।
अन्तरात्मन्, न. जीव, प्राण, मन।
अन्तरतस्, व्य. बीचमें ।
अन्तरता, स्त्री. दूरी, जुदाई ।
अन्तराय, पु. विघ्न; रोक ।
अन्तराल, न. बीचकी जाय ।
अन्तरिक्ष, न. आकाश । आसमान । [मराहुआ ।
अन्तरित, त्रि. निरादर किया हुआ, बीचका,
अन्तरीण, न. मध्यस्थ । सालिस ।
अन्तरीप, न., द्वीप; टापू।
अन्तरीय(क), न. साड़ी, धोती ।
अन्तर्गत, त्रि. बीचका। मियानका ।
अन्तर्जठर, न. कोष्ट, कुक्षिका मध्य ।
अन्तर्जल, न. जलवाला, मेघ ।
अन्तर्द्धा, व्य. तिरोधान । छिपाव ।
अन्तर्धान, न. लुकाव, छिपाव ।
अन्तर्द्धि, पु. व्यवधान । छिपाव ।
अन्तर्भूत, त्रि. बीचका ।
अन्तर्वत्नी, स्त्री. गर्भवती । हामिला ।
अन्तर्वर्तिन्, त्रि. मध्यका । बीचका ।
अन्तर्वमि, पु. अजीर्ण, अपाक । बदहज़मी ।
अन्तर्वंशिक, पु. खाजा सरा ।
अन्तर्वाणि, त्रि. शास्त्रज्ञ । आलिम ।
अन्तर्वासस्, न. अंदर पहिरनेका वस्त्र ।
अन्तर्वेदि(दी), पु. स्त्री. गंगा यमुनाके बीचका देश । हरिद्वारसे प्रयागतकका देश ।
अन्तर्वासिन्, पु. शिष्य, चाण्डाल ।
अन्तशय्या, स्त्री. मृत्यु, श्मशान । मरघट ।
अन्तावसायिन्, पु. मुनिविशेष, नीच, हज्जाम।
अन्तस्थ, पु. य, व, र,ल ।
अन्तर्हास, पु. गूढ़ हंसी (त्रि) मुसकरानेवाला ।
अन्तर्हित, त्रि. अदृश्य; छिपा हुआ ।
अन्तर्वह्नि, पु. कालानल ।
अन्तवत्, त्रि. विनाशी । फ़ानी ।
अन्ति, स्त्री. नाट्योक्तिमें ज्येष्ठा भगिनीः ।
अन्तिक, त्रि. समीपका, न. सामीप्य स्त्री (का) चुल्ली ।
अन्तिकात्, व्य. अभिमुख । सामने ।
अन्तिके, व्य. निकट; पास । नज़दीक ।
अन्तिम, त्रि. अख़ीरी, नज़दीकतर ।
अन्तेवासिन्, पु. विद्यार्थी, चाण्डाल, पड़ौसी ।
अन्त्य, पु. तृणविशेष, जघन्य । नीच क़ौम, आख़री, मुथाघास, १००००००००००००००० हज़ार लाख गुणित किरोड़ लाख ।

अन्त्यज, अन्त्यजन्मन्, अन्त्यजाति,	}	शूद्र, रजक आदि सात जातियें, धोबी, चमार, नट, मलाह, क्षीवर, भील, गड़रिया ।

अन्त्यभ, न. रेवतीनक्षत्र, मीनराशि ।
अन्त्यावसायिन्, पु. चंडाल आदि सात जातियों ।
अन्त्येष्टि, स्त्री. अन्त्ययज्ञ, मुर्दा जलानेसे लेकर तेरहवें दिनतक उसकेनिमित्त जो पिण्डदान वगैरह होता है ।

अन्त्र, न. पुरीतती नाड़ी, आंतड़ी ।
अन्त्रवृद्धि, स्त्री. रोगविशेष । हिचकी ।
अन्त्राद, पु. उदरकीट; पेटके भीतरका कीड़ा ।
अन्त्रकूज, पु. उदरशब्द; पेटका गुड़गुड़ाना ।
अन्दिका, स्त्री. अन्तिका, चुल्ली, । [जंजीर ।
अन्दु(न्दू)क, पु. स्त्री. पायज़ेब, हाथीके पांवका
अन्धपु, न. अन्धकार, जल(त्रि) दृष्टिहीन पु. भिक्षु।
अन्धकारि, पु. शिव, महादेव ।
अन्धक, पु. देशभेद, नृपभेद, असुरभेद, मुनिविशेष, यादववि० हिरण्याक्षका बेटा ।
अन्धकरिपु, पु. शिव, अग्नि, चन्द्र, सूर्य्य ।
अन्धकूप, पु. अंधेरा कुआ, मोह, नरकवि० ।
अन्वक्षम्, व्य. आंखके समीप ।
अन्धकार, पु. न. तिमिर । अंधेरा । [अंधेरा ।
अन्धतमिस्र, न. अत्यन्त अन्धकार । निहायत-
अन्ध, न. ओदन, चावल ।
अन्धाहि, पु. स्त्री. एक क़िसमकी मछली ।
अन्धिका, स्त्री. चक्षुरोग, द्यूतक्रीड़ा, राजिसर्षप । आंखकी बीमारी, राईसरसों ।
अन्धु, पु. कूप, । कुआ ।
अन्धुल, पु. शिरिसका दरख़त ।
अन्ध्र, पु. मृगयु, देशविशेष, जातिविशेष । शिकारी । तिलंगदेश । ख़ासक़ौम ।
अन्न, न. खानेकी चीज़, भात, (त्रि) खाया हुआ ।
अन्नगन्धि, पु. अजीर्णरोग । बदहज़मी । इत्यादि ।
अन्नद, त्रि. अन्नदाता (स्त्री) (दा) देवी ।
अन्नपूर्ण, न. अन्न परिपूर्ण, स्त्री. (र्णा) विश्वेश्वरी ।
अन्नप्राशन, न. लड़के वा लड़कीको पहले पहले ६ ठे ९ वें महीने अनाज खिलाना ।
अन्नमय, पु. स्थूलशरीर ।
अन्नविकार, पु. शुतफ़ह, गूह ।
अन्नाद, त्रि. अन्नभक्षक, (पु) विष्णु; अनाज ।
अन्नार्थिन्, त्रि. बुभुक्षु; भूखा । [खानेवाला ।]
अन्य, त्रि. भिन्न, पर; दूसरा ।
अन्यत्, न. इतर; और ।
अन्यच्च, व्य. अपरञ्च; औरभी ।
अन्यतस्, व्य. अन्यस्मात्; दूसरेसे ।
अन्यतम, त्रि. भिन्नतम; बहुतोंमेंसे एक ।
अन्यतर, पु. दोनोंमेंसे एक ।

अन्यतरेद्यु, व्य. और एक दिन ।
अन्यत्र, व्य. और कहीं ।
अन्यथा, व्य. और तरह, खराब, झूठ ।
अन्यथासिद्धि, पु. हेत्वाभासवि० कार्य्यसे पहिले हो, पर कार्य्यका उत्पादक न हो ।
अन्यदा, व्य. और वक़्त ।
अन्यपुष्ट, पु. स्त्री. कोकिल; कोइल पक्षी ।
अन्यपूर्वा, स्त्री. द्विरूढा; एक पतिके मरनेके पीछे दूसरी बेर ब्याही हुई औरत । [कोईल ।]
अन्यभृत, (त्) पु. स्त्री काक, कोकिल; कव्वा,
अन्यादृश(दृक्), अन्य प्रकार । और तरह ।
अन्याय, पु. ज़ुल्म, बेइन्साफ़ी ।
अन्याय्य, त्रि. अयोग्य । न मुनासिब ।
अन्यायिन्, त्रि. ज़ालिम, बेइन्साफ़ ।
अन्यून, त्रि. सम्पूर्ण; सारा ।
अन्येद्युस्, व्य. परेद्युः; दूसरे दिन ।
अन्योदर्य, त्रि. वैमात्रेय । सौतेला भाई ।
अन्योन्य, त्रि. उभयतः, परस्पर । आपसमें ।
अन्योन्याभाव, पु. परस्पर अभाव । एक वस्तुमें दूसरीका न होना ।
अन्योन्याश्रय, पु. एकको दूसरेकी अपेक्षा ।
अन्वञ्च, त्रि. पश्चाद्गामी; पीछे चलनेवाला ।
अन्वय, पु. वंश, पदोंकी परस्पर आकाङ्क्षा, पदोंका योग्यतासम्बन्ध । ख़ान्दान, लफ़्ज़ोंकी तरकीब ।
अन्वयव्यतिरेकि, पु. हेतुविशेष । पूरा सबब ।
अन्ववसर्ग, पु. कामाचारानुज्ञा ।
अन्ववाय, पु. वंश, कुल ।
अन्वष्टका, स्त्री. पौष माघ फाल्गुन और आश्विनके कृष्णपक्षकी नवमीको सामिक लोकोंका एक श्राद्ध ।
अन्वह, व्य. नित्य । प्रतिदिन ।
अन्वाचय, त्रि. अनुषंग संयुक्त; मिलाहुआ ।
अन्वाजे, व्य. दुर्बल को बल देना ।
अन्वादेश, पु. कहकर कुछ और कहना ।
अन्वाधि, पु. अमानत दरअमानत ।
अन्वाधेय, न. स्त्रीधनविशेष; विवाहके पीछे मातापितासे तथा भर्तृकुलसे स्त्रीको प्राप्त धन ।

अन्वासन, न. उपासना, पछताव, कारखाना, तक्लीफ़ ।
अन्वासित, त्रि. सेवित, पश्चादुपवेशित ।
अन्वाहार्य्य, न. मासिक-श्राद्ध; माहवारी श्राद्ध ।
अन्वाह्निक, त्रि. प्रात्याहिक । हररोज़का ।
अन्वाहित, पु. त्रि. गच्छित, गैर शख़्सके देनेकेलिये जो अमानत रक्खी जाती है ।
अन्वित, त्रि. युक्त; मिला हुआ ।
अन्विष्ट, त्रि. अन्वेषित । तलाश किया हुवा ।
अन्वीक्षण, त्रि. अन्वेषण । तालाश ।
अन्वीक्षा, स्त्री. सुविचार, विकल्प, खूंब सोच ।
अन्वेषण, पु. गवेषण । तहक़ीक़ात् स्त्री० । (णा) तलाश ।
अन्वेषित, त्रि. तलाश किया हुआ ।
अन्वेषिन्, **अन्वेष्टृ** } त्रि. मुतलाशी, खोजी ।
अप्, स्त्री. जल; पानी । आव ।
अप, व्य. उपसर्गविशेष–अनादर, अंश, असा, कल्य, वैरूप्य, त्याग, वियोग, विपर्य्यय, आनन्द, विकृति, चौर्य, निर्दोष, हर्ष, बेअदबी, नतमामी, बदसूरती, जुदाई, चोरी, खुशी ।
अपकरण, न. अनिष्टकरण; बुरा करना ।
अपकर्म्म, न. बुरा काम (त्रि.) बुरा काम करनेवाला।
अपकर्ष, पु. हीनता । बुराई ।
अपकार, पु. नुकसान, दुश्मनी ।
अपकारिन्, त्रि. **अपकारक**, पु. } अपकारक; बुरा करनेवाला ।
अपकीर्त्ति, स्त्री. अपयश । बदनामी ।
अपकृत, त्रि. अपकारप्राप्त । मज़लूम, (न.) बुराई।
अपकृष्ट, पु. दांतोंका वेग । (त्रि.) बुरा ।
अपक्रम, पु. यातना । पीड़ा
अपकृष्ट, त्रि. अधम; बुरा नीचे खेंचा हुआ ।
अपक्षय, पु. बरबादी. कमी ।
अपक्षीण, न. तबाह, गिराहुआ ।
अपक्षेपण, न. नीचे फेंकना ।
अपक्रिया, स्त्री. द्रोह, बुराई ।
अपक्रोश, पु. निन्दा । बदनामी, मलामत ।
अपगत, त्रि. मरा हुवा, चला गया ।
अपगम, पु. **अपगमन**, न. } भागना, मरना । रवानगी ।
अपगा, स्त्री. आपगा; नदी । दर्या ।
अपग्रह, पु. प्रतिकूलग्रह । बुरेग्रह ।
अपघन, पु. अवयव, (त्रि.) निर्मेघ, शरत्काल ।
अपघात, पु. हत्या । क़तल । बुरी मौत ।
अपघातिन्, त्रि. हन्ता; मारनेवाला । क़ातिल ।
अपघृण, त्रि. निर्लज्ज । बेशरम ।
अपचय, पु. क्षति । नुक्सान ।
अपचायित, त्रि. पूजा हुआ, तेज़ किया हु० बुरी भांत खर्च किया हुआ ।
अपचायिन्, त्रि. क्षतिकारक, वृथाव्ययी । नुक्सान कुनिन्दा, बेफ़ायदह खर्च करनेवाला ।
अपचार, पु. बदहज़मीकी बीमारी, बदसलूकी ।
अपचित, त्रि. खर्च किया गया (स्त्री) (ति) नुकसान, खर्च, परस्तश, महरूमी । [करनेवाला ।
अपचेतृ, पु. खर्च करनेवाला, बेफ़ायदह खर्च
अपच्छाय, पु. छायारहित स्त्री. (या) बुरी छाया ।
अपटी, स्त्री. कनात, पड़दा । [का प्रवेश ।
अपटीक्षेप, पु. नाट्यमे विनापटीक्षेप ससम्भ्रमपात्र-
अपटु, पु. अक्षम, असमर्थ ।
अपत्य, न. सन्तान, लड़का बाला । औलाद ।
अपत्रप, त्रि. बेशरम, स्त्री (पा) बेशर्मी ।
अपत्रपिष्णु, त्रि. लज्जाशील । शर्मसार ।
अपत्रस्त, त्रि. भीत; डरा हुआ ।
अपथ, पु. कुपथ, पथाका न होना ।
अपथिन्, पु. कुपथ । [नामुवाफ़िक ।
अपथ्य, त्रि. रोग्य, अहित । बीमार करनेवाली,
अपदस्थ, त्रि. कर्मच्युत ।
अपदिश, न. व्य. विदिक्; कोन ।
अपदेश, पु. व्यपदेश, कपट, शरव्य, प्रशंसा, ख्याति । बहाना, छल, नशाना, तअरीफ़, मशहूरी ।
अपध्यान, न. दुष्टचिन्तन । बदख्याल ।
अपध्वंस, पु. धिक्कार, निन्दा ।
अपध्वस्त, त्रि. त्यक्त । तर्क किया हुवा ।
अपनय, पु. **अपनयन**, न } खण्डन 'दूरीकरण, मरण, रोगापनयन । तोड़ना, रफ़ा करना, मौत, बीमारी हटाना ।
अपनाम, पु. निंदासूचक नाम; खराब नाम ।
अपनीत, त्रि. दूरीकृत । हटाया गया, खंडित ।
अपनुति, स्त्री. खण्डन ।

अपनेतृ, त्रि. विनायक, अपहारी । चोर ।
अपनोद, / **अपनोदन,** } पु. न. तोड़ना, रफ़ा करना ।
अपमस, त्रि. निर्भय । बेखौफ
अपभाषा स्त्री अपकृष्ट भाषा । ग़लत जुबान ।
अपभी, त्रि. निर्भय; वेडर । वेख़ौफ़ ।
अपभ्रंश, पु. कुत्सितवाक्य, पतन । गंवरी बोली, विगड़ा हुआ शब्द, गिरना ।
अपमर्श, (र्ष) पु. अपहरण; लूटना ।
अपमान, न. अवज्ञा, अनादर, मानहानि।वेइज़्ज़ती।
अपमानित, त्रि. मानहीन । बेइज़त किया हुआ
अपमित्यक, न. ऋण । कर्ज़ । [मौत, खून ।
अपमृत्यु, पु. अपघात मरण । बगैर बिमारीके
अपयशस्, दुर्नाम । बदनामी ।
अपयान, न. पलायन; भाग जाना ।
अपर, त्रि. इतर, अन्य, (स्त्री) (रा) पश्चिमदिशा, जरायू (न) हस्तिपश्चाद्भाग वा पद, दूसरा, और, मगरब, हाथीका पिछला भाग, यापैर ।
अपरक्त, त्रि. अननुकूल, विरक्त । विरागी ।
अपरश्च, व्य. पुनरपि; फिरभी, औरभी । [हना ।
अपरति, स्त्री. निवृत्ति, विरति; ठहरना, बाज़र-
अपरत्र, व्य. परकाले । और कहिं, ।
अपरथा, व्य. अन्यथा; और तरहसे ।
अपदन्च, न. अपद व्यवहार कारक ।
अपरपक्ष, पु. कृष्णपक्ष; अंधेरा पक्ख । [पहर ।
अपर-रात्र, पु. रात्रिशेष भाग, रातका पिछला
अपदवक्त्र, न. अर्द्धसम वृत्तविशेष ।
अपरवैराग्य, न. वैराग्यविशेष । [रहना ।
अपरस्पर, त्रि. क्रियानैरन्तर्य्य । कामका जारी
अपराग, पु., द्वेष विराग, । दुश्मनी ।
अपराजित, पु. शिव, विष्णु, (त्रि) अनिर्जित, स (ता) दूर्वा दुर्गा । न जीता हुआ, दूब, देवी ।
अपराद्ध, त्रि. अपराधी, पापी, भ्रान्त ।
अपराध, पु. पातक; पाप ।
अपराधिन्, त्रि. मुजरम ।कसूरवार ।
अपरान्त, त्रि. पाश्चात्य (न.)पश्चिमदिशाका अन्त।
अपराह्ण, पु. दिनका पिछला हिस्सा ।
अपराह्णतन, त्रि. दिनशेषभावी; जो काम दिनके पिछले हिस्सेमें होता है ।

अपराविद्या, स्त्री. ऋग्वेदादि विद्या ।
अपरिग्रह, पु. असंग्रह हठ (त्रि) परिग्रहहीन ।
अपरिचित, त्रि. ग़ैर, अनजाना, अनदेखा ।
अपरिचेय, त्रि. जो किसीसे मिलना न चाहे ।
अपरिच्छद, त्रि. विवस्त्र । जिस्की लिबास दुरुस्त नहिं, नंगा ।
अपरिच्छन्न, त्रि. वस्त्रहीन । नंगा, वेहद्द ।
अपरिच्छिन्न, त्रि. असीम । वेहद्द ।
अपरिज्ञान, न. मूर्खता ।
अपरिमित, त्रि. अप्रमेय । वेअन्दाज़ ।
अपवृति, स्त्री. अपवारण । हटाना ।
अपवृत्त, त्रि. पराङ्मुखीभूत । हटा हुआ ।
अपशब्द, पु. भ्रष्ट शब्द, अशुद्ध शब्द ।
अपरिमेय, त्रि. वेअंदाज़, निहायत ।
अपरिसर, त्रि. दूरवर्त्ती; दूरका । [लायक नहिं ।
अपरिहार्य्य, त्रि. अत्यजनीय; जो छोड़नेके
अपरिक्षित, त्रि. अकृतपरीक्ष । न अज़मूदह ।
अपरूप, त्रि. अद्भुत, कुरूप । अजीव, बदसूरत ।
अपरेद्युस्, व्य. अपरेन्हि; परसों ।
अपर्ण, त्रि. पत्रहीन; स्त्री, (र्णा) पार्वती, जिस्के पत्ते नहिं । [ग़ैरकाफ़ी, कम ।
अपर्य्याप्त, त्रि. असमर्थ, अयथेष्ट, असम्पूर्ण ।
अपर्य्युषित, न. सद्योद्भव । ताज़ा ।
अपल, न. कीलक, अनिमेष । चटकनी, ।
अपलाप, पु, पोशीदह, मुहब्बत, इनकार ।
अपवन, न. उपवन, वायुशून्य । बाग़, वेहवा ।
अपवरक, पु. गर्भगृह । पोशीदा घर ।
अपवर्ग, पु. मुक्ति, पूर्णता, दान, त्याग, फलसिद्धि। नजात, पूरापन, देना, छोड़ना, फल मिलजाना।
अपवरण, न. अपवारण; ढाकना । ग़ैब ।
अपवर्जन, न. वखशिश, तर्क, नजात, तनहाई ।
अपवार्जित, त्रि. त्यक्त । तर्क किया हुआ ।
अपवर्तन, पु. न. संक्षिप्तकरण, अल्पकरण । मुख़्तसर करना, कम करना ।
अपवाद, पु. वदनामी, हुकम, ख़ास कायदह, फ़र्क़, जुदाई, दुश्मनी, रुकावट । [निवाला ।
अपवादिन्, त्रि. अपवादकारक । बदनाम कर-
अपवारण, न, अन्तर्द्धान, व्यवधान, छादन । पोशीदगी, ग़ैब होना, पर्दा ।

अपवारित, त्रि. आच्छादित, ढका हुआ।
अपवार्य्य, व्य. जनान्तिक, स्वगत । पोशीदह, दिलहिमें ।
अपवारित, त्रि. अनाहित । छया हुआ ।
अपवाह, पु. युक्ति, अनुमान, अनुभव । दलील, अटकल, कयास ।
अपवित्र, त्रि. अशुद्ध । नापाक ।
अपविद्ध, त्रि. मर्द्दद, हटाया हुआ, फेंका हुआ ।
अपविद्ध-पुत्र, पु. बारह तरहके धर्म्मशास्त्रोक्त पुत्रोंमेंसे एक; माता पिता करके छोड़ा हुआ । सुत बच्चा ।
अपशङ्क, त्रि. निर्भय । बेख़ौफ़ ।
अपशद, पु. अपसद; नीच । कमीना ।
अपशब्द, पु. असंस्कृत शब्द । गलत लफ़ज़ ।
अपशुच्, पु. आत्मा, जीव । रुह । [शाग्र ।
अपष्ठ, त्रि. प्रतिकूल, विपरीत, पु. काल, अङ्कु-
अपष्ठु, व्य. निरवय, विपरीत, शोभन, (पु) काल, (त्रि) वाम । बेगुनाह, मुख़ालिफ़ ख़ूबसूरत, वक़्त, बायां ।
अपष्ठुर, त्रि. निंदित, प्रतिकूल; उलटा । बरक्त ।
अपसद, पु. नीच जातिविशेष; ब्राह्मणके वीर्य्य-से क्षत्रिय वैश्य शूद्र कन्याके गर्भमें उत्पन्न सन्तान । [जाना ।
अपसर, (ण.) पु. न. । एक जगहसे दूसरी जगह
अपसव्य, त्रि. शरीरका दक्षिण भाग, वरखिलाफ (न) पितृतीर्थ ।
अपसर्जन, न. मोक्ष, परित्याग, मुक्ति, दान, वध । नजात, तर्क, क़तल, बख़शश ।
अपसर्प, त्रि. हरकारा, जासूस । [भागना ।
अपसर्पण, न. गमन, धावन, पीछे चले जाना,
अपसारण, न. हटादेना ।
अपसारित, त्रि. हटाया हुआ।
अपसिद्धान्त, पु. स्वीकृत सिद्धान्तसे च्युति ।
अपस्कर, पु. पहिया. गुदा, गूंह।
अपस्नात, त्रि. मृतस्नात, मृतव्यक्तिकी क्रिया करनेकेलिये न्हाया हुआ ।
अपस्मार, पु. मृगीरोग, मूर्छा ।
अपहत, त्रि. नष्ट (स्त्री) (ति) नाश, उच्छेद ।
अपहरण, न. चौर्य्य; चोरी ।
अपहर्तृ, पु. (र्ता) चोर; चोर ।
अपहतपाप्मन्, पु. परमात्मा । बेगुनाह ।
अपहन्, पु. हन्ता । क़ातिल, ख़ूनी ।
अपहार, पु. लूट, राहज़नी, चोरी, नुक्सान, तर्क।
अपहास, पु. अकारण हासी, ऊंचीहंसी ।
अपहारक, त्रि. अपहारी; चोर, लुटेरा ।
अपहृत, त्रि. चोरित, अपचित । चुराया हुआ ।
अपहेला, स्त्री. अनादर । बेअदबी । [नापाक ।
अपहारिन् त्रि. चोर, ।
अपन्हव, पु. चोरी, प्यार लुकाओ ।
अपन्हुत, त्रि. गोपित । पोशीदह (स्त्री) (ति) अपलाप, अर्थालङ्कारविशेष, प्रकृत वस्तुको छिपाकर उसमें अन्य वस्तुका आरोप करना ।
अपांनिधि, पु. } सागर, वरुण ।
अपांपति, पु. } सागर, वरुण ।
अपाक, पु. अजीर्ण रोग, न. अजीर्ण ।
अपाकरण, न. निराकरण, विकृति, परिशोध, उल्लङ्घन ।
अपांपित्त, न. अग्नि, चित्रक वृक्ष । [शोध ।
अपाकृति, स्त्री. निंदाकरण प्रशमन, विकृति, परि-
अपांक्तय, अपंक्तेय त्रि. पंक्तिमे भोजनके अयोग्य, जो पंक्तिमें बंधा नहीं, पंक्तिमें भोजनके अयोग्य ।
अपाङ्ग, (क) पु. आंखकी नोक, (त्रि) बेअज़व ।
अपाङ्गदर्शन, न. कटाक्ष । करिश्मा ।
अपाची, स्त्री अवाची; दक्खन, शमाल ।
अपाचीन, } न. दाक्षणिक, विपरीत । जनूबी ।
अपाच्य, } न. दाक्षणिक, विपरीत । जनूबी ।
अपाठ्य, त्रि. न. अपठनीय । जो पढ़ने के लायक नहिं ।
अपात्र, न. कुपात्र । नालायक ।
अपात्रीकरण, त्रि. नवविध पापके मध्यमें पापविशेष । नाजाइज़ लेना, शूद्रकी चाकरी, झूठ बोलना ।
अपादान, न. छय कारकोंमेंसे ५ मां, क़ारक़, जिस्के पार्थक्य भीत, गृहीत, पराजित, उत्पन्न, त्रात, वा भीत आदि अर्थ है । जुदाई वग़ैरह ।
अपान, पु. गुह्य-पवन(न) भग । पाद, कुस ।
अपान्नपात्, पु. देवविशेष ।
अपान्नाथ, पु. समुद्र, वरुण देवता ।

अपामार्ग, पु. अपुकुंडा ।
अपाम्पित्त, न. अग्नि आग ।
अपांपति, पु. समुद्र, वरुण ।
अपाय, पु. जुदाई, तबाही, फर्क, रफ्तार, भा- [गमांत ।
अपार, त्रि. दुस्तर (त्रि) अकूल, (न) नद्यादेरपरतीर । जिस्को तर न सकें ।
अपारक, त्रि. असमर्थ । नाचार ।
अपार्थ, न. व्यर्थ । वेफायदह ।
अपावृत, त्रि. अनाच्छादित, अगुप्त । खुला ।
अपाश्रय, पु. सायहवान, त्रि. निराश्रय । वेपनाह ।
अपासन, न. मारण, बध, दूर हटाना ।
अपास्त, त्रि. निरस्त; हटाया हुआ ।
अपाश्रुत, त्रि. वहिर्गत; निकला हुआ ।
अपास्त, त्रि. दूरीकृत; निरस्त, अग्राह्य; एक जगहसे दूसरीमें निकाला गया, न लेनेके योग्य ।
अपि, व्य. उपसर्गविशेष, आहरण, यथेच्छाचार, निन्दा, सम्भावना, अनुज्ञा, अल्पत्व, समुच्चय, प्रश्न, शङ्का, एव, वा, अपि, सत्य, च, एवं, अपरञ्च । छीनलेना, अपनी मरजीसे, वदनामी, इमकान, इजाजत, कमी, सवाल, शक, भी, सच, और, ऐसे, और भी ।
अपिच, व्य. एवं, च, अपरञ्च । ऐसे,और,और भी।
अपिगीर्ण, त्रि. स्तुत, तारीफ किया हुआ ।
अपितु, व्य. किन्तु, यदि, यद्यपि, प्रत्युत, । वलकि, गरचे ।
अपिधान, न. आवरण,अन्तर्धान । ढकना, छिपना ।
अपिनद्ध, त्रि. परिहित । वंधा हुआ ।
अपिशुन, त्रि. निष्कपट । जो फरेवी नहिं,
अपीच्य, त्रि. अतिसुन्दर । निहायत खूबसूरत ।
अपुत्र(क), त्रि. पुत्रहीन । जिसके वेटा नहीं ।
अपुनरावृत्ति, स्त्री. } फिरना आना, फिर न जन्मना।
अपुनरागन, न. }
अपुनर्जन्म, न. }
अपुनर्भव, पु. निर्वाण मुक्ति; जब आत्मा आवागवनसे रहित हो (त्रि.) फिर जिसका जन्म नहो ।
अपूप, पु. पिष्टक; आटेका पूड़ा ।
अपूप्य, पु. गोधूमचूर्ण; आटा, मयदा ।
अपूरणी, स्त्री. वृक्षविशेष; सिंबलका पेड ।
अपूर्व, त्रि. आश्चर्य, अविदित । अजीव ।
अपृक्त, त्रि. न मिला हुआ । खालिस ।
अपृष्ट, त्रि. अनपूछा ।
अपेक्षणीय, त्रि. चाहनेके योग्य । [ऐसी वुद्धि ।
अपेक्षावुद्धि, स्त्री. वहुतोंमें यह एक यह एक-
अपेक्षित, त्रि. चाहा हुआ ।
अपेत, त्रि. रहित, गत; गया हूवा, निकाला हु० ।
अपेतकृत्य, त्रि. काम से फारग ।
अपेतराक्षसी, स्त्री. तुलसीवृक्ष ।
अपेक्षा, स. प्रतीक्षा, अनुरोध । इंत जारी ।
अपेक्षित, त्रि. आकांक्षित । चाहा हुआ ।
अपेय, त्रि. जो पीनेके योग्य नहिं ।
अपेशल, त्रि. अपटु; सीधा ।
अपोगण्ड, त्रि. वदशकल, वच्चा, डरपोक ।
अपोढ, त्रि. त्यक्त, निरस्त । तर्क किया गया ।
अपोह, पु. तर्क, त्याग । मुवाहसा, छोड़ना ।
अपोहन, न. दलील, मुवाहसेसे मकसूदको पहुचना ।
अपोहित, त्रि. छिपाया हुआ, निकाला हुआ । दलीलसे कायम ।
अप्पति, पु. समुद्र, वरुण ।
अप्पित्त, न. अग्नि; आग ।
अप्यय, पु. ध्वंस, नाश । तबाही ।
अप्युत, व्य. खलु, नूनं, किल । यकीनन ।
अप्रकर्ष, पु. अधमत्व । खरावी ।
अप्रकाण्ड, पु. शाखा रहित वृक्ष, क्षुद्र । [हुआ ।
अप्रकाश, पु. गोपन, त्रि. गुप्त, । छिपाना, छिपाया
अप्रकाश्य, त्रि. गोपनीय; छिपाने के लायक ।
अप्रकृष्ट, त्रि. अधम, (पु) काक ।
अप्रज, त्रि. निःसन्तान । वे औलाद ।
अप्रतप्त, त्रि. नीच । कमीना । [आम शखस ।
अप्रतिपन्न, त्रि. जो इज्जत देनेके लायक नहिं ।
अप्रतिम, त्रि. अतुल्य । लासानी ।
अप्रतिरथ, पु. सामोक्त प्रास्थानिक मन्त्र, त्रि. प्रतियोध शून्य न. युद्ध यात्रा । जंगी सफर, सफरके समय पढ़ने योग्य सामवेदीय मंत्र लस्सान वहादुर भट, हरि ।
अप्रतिरूप, त्रि. अतुल्य । लासनी ।
अप्रतिष्ठान, न. न कायमी स्त्री. (ष्ठा) वेइज्जती ।

अप्रतिष्ठ(ष्ठित), वेइज़त, वेजा।
अप्रतिहत, त्रि. अनाघात, विघ्नोंसे अवश्वित।
अप्रधान, न. गौण, पीछे पड़ा हुआ, न दवाया हुआ।
अप्रमादिन्, त्रि. बुध। खबरदार।
अप्रमेय, त्रि. असीम, प्रमारहित। वेहद; जो प्रमाणोंसे जाना न जावे (पु) ईश्वर। [वाला।
अप्रलम्ब, न. शीघ्र। जल्दी। (त्रि) शीघ्र चलने-
अप्रशस्त, त्रि. अश्रेष्ठ।
अप्रशान्त, त्रि. व्यथित; दुःखी।
अप्रसन्न, त्रि. असन्तुष्ट। नाखुश, नाराज़।
अप्रसह्य, त्रि. असहनशील। जो वरदाश्त न कर सके।
अप्रस्तुत, त्रि. शरमिंदा, हैरान, नातैयार, नातारीफ़ किया नया, वेमौकेकी वात।
अप्रस्तुतप्रशंसा, स्त्री. काव्यमें अर्थालङ्कारविशेष; प्रस्तुतका वर्णन जहां अप्रस्तुत करके हो। तनज़।
अप्रहत, त्रि. अक्षुण्ण, अकृष्ट, अनाहत।
अप्रियवचस्, न. निष्ठुरवाक्य। सख़्त कलाम।
अप्राप्त, त्रि. अलब्ध (स्त्री) (प्ति) नाहासिल।
अप्राप्तकाल, न. वेमौके की वात, (त्रि) वेमौकेका।
अप्रिय, त्रि. अनीप्सित, न. निन्दा। नापसंद,।
अप्रोपित, त्रि. अप्रवासी।
अप्सरस्, स्त्री. स्वर्गवेश्या। हूर। [मेनका। हूरें।
अप्सरा, वेश्या, उर्वशी, तिलोत्तमा, रम्भा, घृताची,
अफल, त्रि. निष्फल, स्त्री (ला) भूम्यामलकी, घृतकुमारी; फलरहित।
अफेन, न. वृक्षनिर्यासविशेष। अफ़ीम्।
अबद्ध (क) न. अर्थशून्यवाक्य, (त्रि.) अबन्धित। वेमानी कलाम, आज़ाद।
अबद्ध-मुख, त्रि. अप्रियवादी। ज़बानदराज़।
अबन्ध्य, त्रि. सफल, फलवाला।
अबन्धुर, त्रि. अप्रिय। नाप्यारा, बदसूरत।
अबन्ध, त्रि. सफल। फलदार।
अबल, त्रि. दुर्बल, (पु) वरुण वृक्ष स्त्री. (ला)-कमज़ोर औरत।
अबाध, त्रि. बाधारहित। वेरोक, तनदरुस्त।
अबाध्य, त्रि. बाधानर्ह, अवश। वेरोक।
अबालिश, त्रि. बहुदर्शी। तजरुवेकार।
अबोध, त्रि. मूर्ख। वेअक़ल, पु. ज्ञानाभाव।
अब्ज, पु. चन्द्र, धन्वन्तरि (न) कमल विशेष। १०००००००००० संख्या।
अब्जदृश्, पु. कमलाक्षी; कमल फूलके समान जिस्की आंखें हैं।
अब्जयोनि, पु. ब्रह्मा।
अब्जिनी, स्त्री. नलिनी, पद्मसमूह, लक्ष्मी।
अब्जिनी-पति, पु. सूर्य्य। आफ़ताव।
अब्द, पु. वर्ष, मेघ। वरस, बादल।
अब्धि, पु. महासमुद्र,।
अब्धि-कफ, पु. समुद्रफेन; समुंदरझाग। [लक्ष्मी।
अब्धिज (जौ) पु. अश्विनीकुमार स्त्री० (जा)
अब्धिद्वीपा, स्त्री. पृथिवी। ज़मीन।
अब्धिनगरी, स्त्री. द्वारिका, लङ्का।
अब्धिनवनीत, न. शशि, चांद।
अब्ध्यग्नि, पु. समुद्राग्नि; समुंदर की आग।
अब्भक्ष, पु. सर्प्प, (त्रि) हमेशह पानीसे गुज़ारा करनेवाला।
अभ्र, न. मेघ, अभ्रक। बादल। [हाथी।
अभ्रमातङ्ग, पु. ऐरावत हस्ती; इन्द्रका सुपेद
अभ्रि, स्त्री. काष्ठ कुद्दाल; फौड़ा।
अभ्रिय, त्रि. मेघोद्भव वस्तु; विजली।
अब्रह्मण्य, न. अवध्य, नाट्यमें ये व्यक्ति वेशक मारनेके लायक नहिं।
अब्राह्मण, पु. निषिद्ध ब्राह्मण।
अभद्र, त्रि. नीच। खराव। नामुवारिक।
अभव्य, त्रि. नाभला, नापैदा, वदचलन।
अभय, न. भयका न होना, (त्रि) निर्भय, स्त्री० (या) हरड़, दुर्गा।
अभक्ष्य, त्रि. जो खाने योग्य नहीं।
अभयडिंडिम, पु. युद्ध वाद्यविशेष, जंगी धौंसा।
अभाव, पु. नभाव, प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभाव, मृत्यु। नाबूदी, नहोना, मौत, ग़ारतगीरी।
अभाषण, न. मौन; चुप।
अभावसंपति, स्त्री. ज्ञातृज्ञेयमे मिथ्या बुद्धि।
अभावनीय, त्रि. अचिन्त्य। वे सोच।
अभि, व्य. समन्तात्, वीप्सा, धर्षण, अभिलाष,

आभिमुख्य, चिन्ह। चारों तरफ़, बार २, दबाव, ख़ाहिश, सामने, निशान।
अभिक, त्रि. कामुक; लुच्चा। शहवती।
अभिक्रम, पु. रणमें अभीतिपूर्वक योद्धाका शत्रुके सामने जाना, चढ़न, शुरु।
अभिख्या, स्त्री. नाम, शोभा, कीर्ति।
अभिगत, त्रि. उपस्थित। हाज़िर, हासिल, हसिल।
अभिगम, **अभिगमन**, पु. पनाह, नज़दीक-होना, न. तहसील।
अभिग्रस्त, त्रि. आक्रान्त। दबा हुआ। [एहद।
अभिग्रह, पु. हमला, बुजुर्गी, लूट, ललकार।
अभिग्रहण, न. चौर्य्य, ग्रहण; छीन लेना, लूटना।
अभिघात, पु. दण्डादिद्वारा ताडन; छड़ीसे मारना हत्या, पीडा।
अभिघातिन्, त्रि. मारनेवाला। दुश्मन।
अभिघार, पु. होम, हवि, घृत, होममें डालनेकी चीज़, घी।
अभिचर, पु. दास, भृत्य, गुलाम, चाकर।
अभिचार, पु. अथर्व वेदोक्त मारण, मोहन, उचाटन, स्तम्भन, विद्वेषण, वशीकरण, पञ्चविध कर्म्म। मारना, फरेफ्तह करना, उखेड़ देना, रोकना, दुश्मनी करना, वशमें करना।
अभिचारक, त्रि. अभिचार कर्त्ता, इन्द्रजालिक। जादूगर, मदारी।
अभिचैद्य, पु. राजा शिशुपाल।
अभिजन, पु. वंश, वंशश्रेष्ठ, जन्मभूमि, ख्याति, सभा। ख़ान्दन, मुअज़िज़, वतन, महहूरी, मजलस।
अभिजात, त्रि. कुलीन, सुन्दर, न्याय्य, पण्डित।
अभिजित, न. स्त्री. दिनका अष्टम मुहूर्त, नक्षत्रविशेष, प्रायश्चित्तविशेष, कुतुपलम।
अभिज्ञ, त्रि. निपुण, बुद्धिमान, स्त्री. (ज्ञा) आद्यज्ञान। दाना, आक़िल१म, ज्ञान।
अभिज्ञता, स्त्री. पाण्डित्य। दानाई, वाकफ़ी।
अभिज्ञान, न. सम्यक् स्मरणार्थ चिह्नविशेष, चिह्न, निर्धारित, विज्ञान, अङ्गीकार। याद्दाश्तका निशान, मुतहक़्क़िक़, इल्म, मनजूर।
अभिज्ञात, त्रि. चिन्हद्वारा ज्ञात। जाना हु०।
अभितस्, व्य. जल्दी, तमाम, सामना, दोनों तरफ़, नज़दीक।
अभितप्त, त्रि. दुःखित, तपा हुआ।
अभिद्योतित, त्रि. उच्छासित, प्रकाशित रोशन।
अभिद्रोह, पु. अनिष्टचिन्ता। बुराखियाल।
अभिधा, स्त्री. अभिधान; शब्दशक्तिविशेष। नाम। [लुग़ात।
अभिधान, न. नाम, शब्दोंका कोश। इसम,
अभिधाव, न. अनुसरण। पैरवी।
अभिधित्सा, स्त्री. उद्देश्य, आज्ञा, इच्छा।
अभिध्या, स्त्री. लोभ, अभिलाष, विषय कामना। लालच, ख़ाहिश, दुनियांकी ख़ाहिश।
अभिध्यान, न. परद्रव्य स्पृहा, ध्यान। पराये माल लेनेकी ख़ाहिश, दिललगाना।
अभिनन्दन, पु. जैनोंका चौथा संत, सबर, तारीफ़।
अभिनय, पु. अङ्गुल्यादि सञ्चालनद्वारा हृद्गतक्रोधादिभावस्य प्रकाशनं, नाट्यक्रिया। बताना, नाचना।
अभिनव, त्रि. नूतन, पु. प्रशंसाकरण।
अभिनिर्मुक्त, त्रि. सूर्यास्तकाले निद्रित, परित्यक्त।
अभिनिर्याण, न. जंगी सफ़र।
अभिनिविष्ट, त्रि. मनोयोगी। दिललगाया हूवा, दाख़िल हुआ।
अभिनिवेश, पु. मनोनिवेश। दिल देना, योगशास्त्रके मतमें मरनेका ख़ौफ़।
अभिनिर्याण, न. युद्ध जीतनेकी इच्छा। चढ़ाई, सफ़र। [दादत करनेवाला, गज़बनाक।
अभिनीत, त्रि. लायक, दोस्त, सिंगारा हुआ, बर-
अभिपन्न, त्रि. कसूरवार, हारा हुआ, मददख़ाह, मुसीबत ज़दह, भगोड़ा, होशयार।
अभिप्रणय, पु. अनुनय। तसल्ली।
अभिप्रणीत, त्रि. शान्त, प्रसन्न। खुश।
अभिप्राय, पु. इच्छाविशेष, मानस, मत। मरज़ी।
अभिप्रेत, त्रि. मरज़ी मवाफ़िक़, मतलब।
अभिभव, **अभिभाव**, पु. मलामत, शकस्त, बेइज़्ज़ती।
अभिभावक, त्रि. रक्षक, तत्वावधारक अभिभवकारी। [मदद।
अभिभावकता, स्त्री. तत्वावधारकता, सहायता।
अभिभाषिन्, त्रि. वक्ता; कहनेवाला।

अभिभूत, त्रि. दबा हुआ, बेवकूफ़, हलीम मलामत कियाहु० (स्त्री) (ति) बेइज्जत हुआ२।
अभिमत, त्रि. मनपसंद, मान लिया हुआ।
अभिमनस्, त्रि. तृप्त, तुष्ट। सैर, खुश।
अभिमन्त्रण, बुलाना, मुखातिब करना।
अभिमन्यु, पु. अर्जुनका पुत्र, सुभद्राकी सन्तान।
अभिमर, पु. युद्ध, वध विश्वासघात, बन्धन।
अभिमर्द, पु. युद्ध, पीडन, मर्दन।
अभिमर्षण, न. ओष्ठाधर लेहनद्वारा अपराध, ज्ञापन, घर्षण, मार्जन। घिसना, मांजना।
अभिमाति, पु. शत्रु। दुश्मन।
अभिमान, पु. धनादिद्वारा दर्प, अहङ्कार, प्रणय, प्रार्थना, हिंसा। मगरूरी, मुहबत, मिन्नत,ईजा।
अभिमानित, न. सुख, मगरूर किया हुआ।
अभिमानिन्, त्रि. अभिमान युक्त। मगरूर।
अभिमुख, त्रि. सम्मुख। सामने।
अभियान, न युद्धकी यात्रा। जंगी सफ़र।
अभियुक्त, त्रि. मशगूल, मुद्दई, जिसपर नालिश होती है झिड़का हु०। [कारी।
अभियोक्तृ, त्रि. अभियोगकर्ता, वादी, अभियोग-
अभियोग, पु. युद्धार्थाव्हान, नालिश, कोशिश, झिड़कन।
अभिरत, त्रि. अनुरागी। मुहब्बत वाला, (स्त्री) (ति) मुहबत, प्रेम, खुशी। [चस्प।
अभिराम, त्रि. मनोहर, सुन्दर। खूबसूरत, दिल-
अभिरुचि, स्त्री. स्पृहा, आस्वाद, उज्वलता। ख्वाहिश, जायकह, चमक।
अभिरूप, पु. चन्द्र, पण्डित, कामदेव, शिव, विष्णु, (त्रि) बुध, पंडित, सुन्दर, मनोहर।
अभिरोध, पु. पीडन, तक्लीफ़।
अभिलषित, त्रि. दृष्ट,। मतलब।
अभिलाव, पु. ध्वंस, छेदन।
अभिलाष, पु. इच्छा, अनुराग। ख्वाहिश, चाह।
अभिलाषिक, } पु. लोलुप, लुब्ध। लोभी।
अभिलाषुक, }
अभिवन्दन, न. वन्दना। बन्दगी, इल्तमास।
अभिवाद, पु. प्रणाम, अपवाद।
अभिवादन, न. प्रणाम, वंदना। सलाम।
अभिवादिन्, त्रि. प्रणामकरनेवाला।
अभिवाह्य, न. अर्पण, आनयन। चढ़ाना, लाना।
अभिविधि, पु. व्याप्ति।
अभिविनीत, त्रि. परमहंस, साधु।
अभिव्यक्त, त्रि. प्रत्यक्ष, प्रकाशित, (पु.) प्रकाशन। सामने, रोशन, ज़ाहर।
अभिव्याहार, पु. उच्चारित-शब्द; ऊंची करी हुई आवाज।
अभिशमन, न. परिवाद, कलङ्क। तोहमत।
अभिशस्त, वि. शायनसी। सरापिया होया।
अभिशापन, न. झूठी नालिश, मुलामत, झूठी तोहमत।
अभिशस्त, त्रि. लम्पट, दोषदूषित. (पु) राजा, परस्त्री परपुरुष और परपुरुष परस्त्रीसे मैथुनका इल्जाम दीये हुए स्त्री. (स्त्री.) याच्ञा, झूठी तोहमत, मांगना।
अभिशाप, पु. झूठी तोहमत, बददुआ।
अभि(भी)षङ्ग, पु. बगलगीरी, शकस्त, गाली कसम, झूठी तोहमत।
अभिषव, पु. यज्ञान्तस्नान,
अभिषवण, न. याग, याग करनेके पीछे नहाना, सोमवेलको पीसकर मंत्रोंसे उसका रस पीना, शराब निकालना, कुरबानी।
अभिषिक्त, त्रि. विधिसे न्हाया हुआ. ओहदह पर मुकर्रर किया हुआ।
अभिषुत, न. कूटा हुआ.
अभिषेक, पु. राज्यतिलक। (न) मार्जन।
अभिषेचन, न. मन्त्रोंसे न्हलाना, ओहदह पर मुकर्र करना।
अभिषेणन, न. दुश्मनके शकस्त देनेको फौज लेकर जाना।
अभिष्टुत, त्रि. प्रशंसित स्तुत (न.) स्तव। तारीफ किया हुआ, तअरीफ।
अभिष्य(स्य)न्द, पु. अतिस्फीतता, आदिक्य, स्मरण, त्रि. अधिक, उद्धृत, बलक्षय फूलावट ज्यादत्ती, याद ज्यादह, निकाला हुआ. [नगर.
अभिष्यन्दन, न. नवस्थापित नगर, नवावसा हुआ
अभिष्यन्दवमन, न. देशसे लोगोंका निकासन।
अभिषङ्ग, पु. आसक्ति, आलिङ्गन।
अभिसन्ताप, पु. युद्ध, रण। जङ्ग, मैदान।

अभिसन्तार, पु. नदी अथवा समुद्रसे पार होना।
अभिसन्ध, पु. सचाईका अभिमान।
अभिसन्धान, न. वञ्चना, उद्देश्य, अनुराग। ठगी, मुहब्बत, गर्ज़।
अभिसन्धि, **अभिसम्पात**, } पु. संग्राम, पतन। जङ्ग, गिरना।
अभिसर, पु. अनुचर, सहाय, मित्र। साथी, मददगार, दोस्त। [खून, विद्ध।
अभिसर्जन, न. दान, वध, विसर्जन। खैरात,
अभिसार, पु. नायकका नायिकाके वास्ते सङ्केतस्थानमें जाना, बल, युद्ध, सहाय, साधन।
अभिसारक, पु. **अभिसारकिन्**, पु. } नायकाके पीछे सङ्केतस्थानमें जानेवाला। (स्त्री) (का) (नी) नायकके पीछे संकेतस्थानमें पहुंचनेवाली औरत।
अभिसृष्ट, त्रि. दत्त, विसृष्ट। दिया हुआ, छोड़ा हु०।
अभिहत, त्रि. विनष्ट, नम्रीकृत। तबाह किया हुआ, लुकाया हुआ।
अभिहार, पु. चौर्य, कवचधारण; लूट, चोरी, संजोह पहरना। [हिर किया हुआ।
अभिहित, त्रि उक्त, प्रकाशित। कहा हुआ, जा-
अभी, पु. निर्भय। वेख़ौफ़। [उत्सुक।
अभीक, पु. कवि, स्वामी, (त्रि) काम, निर्भय, क्रूर,
अभीक्ष्ण, त्रि. सतत, अतिशय (न) व्य. सर्वदा, पुनः पुनः लगातार, वार २।
अभीप्सित, त्रि. वांछित; चाहा हुआ।
अभीप्सु, पु. इच्छु। ख़ाहिशमन्द।
अभीर, पु. आभीर, गोप; गूजर। [विख़ौफ़।
अभीरु, त्रि, निर्भय, (पु) भैरव (स्त्री) (रू) शतमूली।
अभीशु, पु. प्रगह (स्त्री) अङ्गुली, त्रि. इच्छुक। लगाम, शुआ, इज़्ज़त, मुहब्बत, उंगली, ख़्वाहिशमन्द। [गज़ब, बद दुआ, हसद।
अभीषङ्ग, पु. आक्रोश, कोप, शाप, ईर्षा। निंदा,
अभीषुमत्, पु. सूर्य्य, (त्रि) कामी। शहवती।
अभीष्ट, त्रि. चाहागिया। अज़ीज़।
अभूतपूर्व, त्रि. जो पहिले नहिं। अजीब।
अभृशम्, व्य. अल्पमात्र; थोड़ासा।
अभेद, त्रि. भेदरहित, ऐक्य, पु. अविशेष। एकता।
अभेद्य, त्रि. नहटनेयोग्य, (न) हीरक।

अभोग, पु. परिपूर्णता; पूरापन। [लिहुए।
अभ्यक्त, त्रि. लिपा हुआ, सींचा हुआ, तेलमं-
अभ्यञ्जन, न. तैल लेपन, तैल। तेल लगाना तेल।
अभ्यनुज्ञा, स्त्री. अनुमति। इजाज़त।
अभ्यन्तर, न. मध्य। दरमियान।
अभ्यन्तर्वर्तिन्, त्रि. मध्यवर्ती; बीचका।
अभ्यमित, त्रि रोगी। बीमार।
अभ्यमित्र्य, पु. वीरविशेष; जो अपनी ताक़त से दुश्मन का सामना करे।
अभ्यमिन्, त्रि. गन्ता; जानेवाला।
अभ्यर्ण, त्रि. निकट। नज़दीक।
अभ्यर्थना, स्त्री. प्रार्थना। दरख़ास्त।
अभ्यर्दित, त्रि. पीडित। दुखिया।
अभ्यर्हणीय, त्रि. पूज्य; पूजाके योग्य।
अभ्यर्हित, त्रि. उचित, श्रेष्ठ, पूजित। [करना।
अभ्यवस्कन्द, पु. अभ्यासादन। दुश्मन पर वार
अभ्यवहरण, **अभ्यवहार**, } न. पु. भोजन। खुराक।
अभ्यवहित, त्रि. कृत। तैयार किया हुआ।
अभ्यवस्कन्द, पु. शत्रूको दबा लेना।
अभ्यसन, न. अभ्यासकरण। फिर २ एकहि कामको करना, दुहराना।
अभ्यसूया, स्त्री. निन्दा। गुणोंमें दोष लगाना।
अभ्यस्त, त्रि. शिक्षित, कण्ठस्थ। सीखा हुआ, हिफ़्ज़ किया हुआ।
अभ्याकाङ्क्षित, त्रि. मिथ्या भियोग। झूठादावा।
अभ्याख्यान, न मिथ्यानुयोग; झूठा दावा।
अभ्यागत, त्रि. अज्ञानपूर्वक गृहागत, (पु) अतिथि। महमान।
अभ्यागम(मन) पु. न. समीप, मरण, युद्ध, वैर, अभ्युत्थान। नज़्दीक, जङ्ग, दुश्मनी, ताज़ीम।
अभ्यागारिक, त्रि. गृहस्थ व्याकुल। घरमें मसरूफ़।
अभ्याघात, पु. अवगोरण; मारपीट, दंगा।
अभ्यान्त, त्रि. रोगी। बीमार।
अभ्याधान, पु. अनुशासन। सज़ा।
अभ्यामर्द, पु. संग्राम। जंग। [दुहराव।
अभ्याश, त्रि. समीप, (पु) आवृत्ति। नज़्दीक,

अभ्यास, पुनःपुनरनुशीलन । रवत ।
अभ्यासादन, न. शत्रुसम्मुख गमन । दुश्मनके सामने जाना ।
अभ्याहार, पु. अभिहार, आहार, आहरण । चोरी, खाना, छीनलेना ।
अभ्युच्चय, पु. अभ्युदय । तरकी ।
अभ्युत्थान, न. प्रत्युद्गमन । इसतकवाल ।
अभ्युद्यत, न. समुद्यत (त्रि) अयाचितोपस्थित अन्नादि । तैयार, विनमांगे प्राप्त अन्न वगैरह)
अभ्युदय, पु. अभीष्ट कार्य प्रादुर्भाव, वृद्धि, चूडादि संस्कार ।
अभ्युदित, पु. सूर्योदयकाल, त्रि. प्रकाशित ।
अभ्युपगत, त्रि. मक़बूल, हाज़िर, मअलूम ।
अभ्युपगम, पु. नज़दीक आना, मनजूर, दलील ।
अभ्युपपत्ति, स्त्री. मेहरवानी, देवरसे औलाद का पैदा करवाना । [बीज, मनजूर ।
अभ्युपाय, पु. श्रेष्ठोपाय, अङ्गीकार । नेकतज-
अभ्युपेत, त्रि. स्वीकृत, उपस्थित । मनज़ूर ।
अभ्यूष, पु. थोड़े भुंजे हुए धान आदि ।
अभ्यूह, पु. तर्क । दलील ।
अभ्यूहित, त्रि. ज्ञात; जाना हुआ ।
अभ्र, न. आकाश, मेघ, अभ्रकधातु, स्वर्ण ।
अभ्रलिह, पु. वायु, (त्रि) वहुत ऊंचा ।
अभ्रंश, पु. दृढधर्म्म । मज़बूत ।
अभ्रक, न. अभरक धात ।
अभ्रङ्कष, पु. वायु, (त्रि) वहुत ऊंचा ।
अभ्रपिशाच, पु. राहु ।
अभ्रपुष्प, न. जल, (पु) वांसका पेड़ ।
अभ्रमातङ्ग, पु. ऐरावत, इन्द्रका हाथी । [हथिनी।
अभ्रमू, स्त्री. ऐरावतकी स्त्री; पूर्व दिशाके हाथीकी ।
अभ्रि(भ्री) स्त्री. काष्ठकुद्दाल; कुदाल, फौड़ा ।
अभ्रिय, त्रि. मेघभव । वादलसे जो पैदा हो ।
अभ्रेष, पु. औचित्य, न्याय्य । मुनासिब ।
अभ्यभ्रोत्थ, न. विजली; वज्र ।
अम, व्य. शीघ्रता, अल्प, (पु) रोग, (त्रि) अपरिपक्व फलादि । जल्दी, थोड़ा, वीमारी, कच्चाफल वगैरह (स्त्री) (मा) अमावस, (व्य) साथ नज़दीक ।
अमङ्गल, पु. एरण्ड, (त्रि) मङ्गलरहित । बुरा ।
अमत, त्रि. असम्मत, (पु) रोग, मृत्यु, काल (स्त्री) (ति) कुमति ।
अमत्र, न. पात्र, भांड । वर्तन, भोजन पात्र, हथियार, रसोईका वर्तन । [गिलो, दूध ।
अमर, पु. देवता, पारा, त्रि मृत्युरहित स्त्री. (रा)
अमरज, पु. खदिर वृक्ष । खैरेका पेड़ ।
अमररत्न, न. स्फटिक, काच, विलौर ।
अमरद्विज, पु. पुजारी ।
अमराद्रि पु. सुमेरु पर्वत । सुमेर पहाड़ ।
अमरापगा, स्त्री. स्वर्गगङ्गा ।
अमरालय, पु. स्वर्ग । वहिश्त ।
अमरावती, स्त्री. इन्द्रपुरी ।
अमरेश, पु. इन्द्र । देवताओंका राजा ।
अमर्त्य, पु. देवता ।
अमर्ष, पु. क्रोध । गुस्सा ।
अमर्षण, त्रि. क्रोधी । गुस्सेवाला । [अभरक ।
अमल, त्रि. परिष्कार, (न) अभ्रक धातु, स्त्री (ला) लक्ष्मी, भूम्यामलकी, नाभिनाला ।
अमात्य, पु. मन्त्री, बन्धु । वज़ीर, सलाहकार, रिश्तहदार ।
अमानन, न. अनादर । वेइज़्ज़ती । [गार ।
अमानस्य, न. पीड़ा, (त्रि) पीड़ायुक्त । दर्द, वी-
अमानिता, स्त्री. विनीतता । शरम, हया ।
अमावसी, स्त्री. अमावस ।
अमाव(वा)स्या, } स्त्री. कृष्णपक्षके अन्तकी
अमाम(मा)सी, } तिथि; अमावस ।
अमित, त्रि. अपरिच्छिन्न । वेमिकदार ।
अमितौजस्, त्रि अतिवली । वेहद जोरवाला ।
अमित्र, पु. वैरी । दुश्मन ।
अमिन्, त्रि. रोगी । वीमार ।
अमीव, न. पाप, दुःख । गुनाह, तक्लीफ़ ।
अमुक, त्रि. कोई एक,; फलान् ।
अमुतस्, व्य. अतः तस्मात्, अर्थात्, अतएव । इस्से, उस्से, याअने, इसी लिये ।
अमुत्र, व्य. परलोकमें । आक़िबत में । [दानी ।
अमुष्यपुत्र, पु. स्त्री. प्रख्यातवंशोद्भव । खान-
अमूढ, त्रि. जो मूर्ख नहीं (पु) ज्ञानी ।
अमूर्त्त, त्रि. निराकार; (न.) आकाश, काल, दिशा, आत्मा ।

अमूला स्त्री. अग्निशिखा वृक्ष (त्रि) मूलशून्य ।
अमृत, पु. धन्वन्तरि, देवता, (त्रि) सुन्दर, अमर, (न) पीयूष, जल, घृत, यज्ञशेष, अनमांगी वस्तु, मुक्ति, दुग्ध, विष, पारा, अन्न, धन, स्वर्ण, हृद्य, स्वादुद्रव्य, (त्रि) मरणरहित (स्त्री) दूर्वा, तुलसी ।
अमृतकर, पु. चन्द्र । महताव ।
अमृतगति, पु. छन्दोविशेष ।
अमृततरङ्गिणी, स्त्री. ज्योत्स्ना; चांदनी । [मला ।
अमृतफला, स्त्री. द्राक्षा, आमलकी । दाख, आं-
अमृतयोग, पु. नक्षत्रविशेष वा वारविशेष युत-तिथि ।
अमृतरसा, स्त्री. गोस्तनी । अंगूर, दाख ।
अमृतवल्ली, स्त्री. गुडूची । गिलो ।
अमृतान्धस्, पु. देवता ।
अमृताशन, पु. देवमात्र । देवता ।
अमृताष्टक, न. हरीतक्यादि अष्ट द्रव्य । हरड़, गिलो, मुस्थां, चित्रा, चिरायता, हलदी, इन्द्रजौं ।
अमृतसिद्धियोग, पु. योगविशेष ।
अमृतहरण, पु. गरुड़ ।
अमृतसू, पु. चन्द्र, चांद । [सपाती ।
अमृताव्ह, न. रुचिफल; खुरासान देशकी ना-
अमृष्य, त्रि. असह्य । जो वरदाश्त न किया जावे ।
अमृषोद्य, न. सत्य, सच । रास्त ।
अमेधस्, त्रि. मूर्ख । वेवकूफ़ ।
अमेध्य, त्रि. अपवित्र (न.) विष्टा । नापाक, गूह ।
अमेय, त्रि. अप्रमेय, अनन्त, । जो मापसे बाहर है । बेहद ।
अमोघ, त्रि. अव्यर्थ, सफल, (पु) नदविशेष, (स्त्री) (घा) हरितकी । नावेफ़ायदह, एक दर्य्या, हरीड़ ।
अम्बक, न. चक्षु, ताम्र, पिता । आंख, तांमा, बाप ।
अम्बर, न. आकाश, वस्त्र, आसमान, कपड़ा, कपास, लिबास, खुशबू, अभरक ।
अम्बरि(री)ष, न. कड़ाही, युद्ध, (पु) विष्णु, शिव, वचा, भास्कर, नरकभेद, पश्चाताप, मांधाता राजाका पुत्र । [हस्तिपक, कायस्थ । महावत ।
अम्बष्ठ, पु. वैद्य जाती, मुनिविशेष, देशविशेष,
अम्बा, अम्बाला, अम्बालिका, } स्त्री. माता, दुर्गा, पाण्डुराज माता, मातृ स्वसा । मा, देवी, पाण्डुराजाकी मां, भूआ ।

अम्बु, न. जल । पानी ।
अम्बुकण्टक, पु. शृङ्गाट । सिंघाड़ा ।
अम्बुकूर्म्म, पु. शिशुमार । घड़ियाल ।
अम्बुज, न. पद्म, वज्र, (पु) स्थलवेतस, चंद्र ।
अम्बुद, अम्बुधर, अम्बुधि, } पु. मेघ, समुद्र, मुस्तक । बादल समुंदर, मुथरां ।
अम्बुभृत्, पु. मेघ, समुद्र ।
अम्बुर, पु. द्वाराधःकाष्ट । दहलीज़ ।
अम्बुरुह, पु. कमल । गुले सौसन (स्त्री) (हा) स्थलकमलिनी ।
अम्बुसर्पिणी, स्त्री. जलौका; जोंक ।
अम्भस्, न. वारि, लग्नसे चतुर्थराशी, देव, मनुष्य, पितर, असुर, बालक ।
अम्भोज, न. कमल, सारसपक्षी, (पु) चंद्र, (त्रि) जलजात । पानीकी पैदाइश ।
अम्भोजनि, अम्भोजजनि, } पु. चतुरानन, ब्रह्मा ।
अम्भोजिनी, स्त्री. पद्मलता, पद्मसमूह, पद्मयुक्त देश । [देनेवाला ।
अम्भोद, पु. जलद, त्रि. जल दाता । बादल, पानी
अम्भोधर, पु. जलधर, समुद्र, मुस्तक । बादल, समुंदर, मुथां, घास ।
अम्भोधि, पु. समुद्र; समुंदर । बहर ।
अम्भोनिधि, पु. समुद्र । बहर ।
अम्र, पु. आम्रवृक्ष, न. फल, पत्र ।
अम्रात, पु. वृक्षविशेष ।
अम्ल, न. तक्र, (पु) अम्बल, त्रि. अम्लरसविशिष्ट । छाछ, मट्ठा, खटाई, खट्टी चीज़, स्त्री, (म्ला) तिन्तड़ी, इमली ।
अम्लक, पु. लकुच वृक्ष । कुचलेका पेड़ । [लगल ।
अम्लकेशर, पु. बीजपूर । चकोतरा, तुरञ्ज, ग-
अम्लचूड, पु. खटिकन, कुरफ़ा ।
अम्लफल, न. तिंतिड़ीवृक्ष । इमली ।
अम्लभेदन, पु. खट्टावांस ।
अम्लरुहा, स्त्री. मालवादेशकी नागवेल ।
अम्लवर्ग, आम्रादिगण ।
अम्लसार, पु. निम्बू, हिन्ताल (न) कांजी ।
अम्ललोणिका, स्त्री. शाकविशेष । लूणक साग ।

अम्लबीज, न. वृक्षाम्ल । तैंतुल । [निंबू हितर ।
अम्लसार, पु. निम्बुक, हिन्ताल । चकोदरा,
अय, पु. शुभावहविधि, सौभाग्य । अच्छी किस्मत।
अयतिन्, त्रि. लम्पट । अय्याश ।
अयन, न. शास्त्र, पन्था, वत्सरार्द्ध, गमन, आश्रय दक्षिणसे उत्तर और उत्तरसे दक्षिणको सूर्यका जाना । रास्ता, निसफ़साल, रफ़तार, पनाह ।
अयमपि, व्य. यह भी ।
अयस्, न. धातुविशेष, लोहा ।
अयस्कान्त, पु. लोहविशेष, कान्तलोह । चुम्बक पत्थर । [पाठ ।
अयस्कार, पु. लोहकार, जङ्घाग्रभाग, लोहार,
अयाचित, न. अनमांगे गुजारा, त्रि. अप्रार्थित, (पु) मुनिविशेष ।
अयाचितव्रत, त्रि. प्रार्थनाविना स्वयं उपस्थित द्रव्यद्वारा जीविकाकारी । मांगे विन जो कुछ खुद आगया है उसीसे गुज़ारा करनेवाला ।
अयान, न. स्वभाव, गमनाभाव, (त्रि) वाहनहीन । मिज़ाज, कायमीकी हालत, वग़ैर असवारी ।
अयानय, पु. गाम; गांव ।
अयि, व्य. प्रश्न, कोमलामन्त्रण, अनुनय । सवाल, मुहब्बतसे पुकारना, हलीमी ।
अयुक्छद, पु. सप्तपर्ण वृक्ष ।
अयुक्त, त्रि. अनुचित, असङ्गत, । ना मुनासिब । स्त्री. (क्ति) बुरी दलील ।
अयुग्म, पु. विषम, । ताक ।
अयुत, त्रि. अयुक्त, (न) दशसहस्र संख्या । ना मिला हुआ, १०००० दस हज़ार ।
अये, व्य. विषाद, स्मरण, कोप, सम्भ्रम, रिपुभयार्थ संबोधन । रञ्ज, याद्दास्त, गुस्सा, और हैरानीमें दूसरेके बुलानेके लिये शब्दके पहिले जोड़ा जाता है ।
अयोग, पु. योगाऽभाव, उद्योगविधुर, जातिविशेष; शूद्रके वीर्यसे वैश्यकी कन्यामें उत्पन्न सन्तान ।
अयोगवाह, पु. अनुस्वार विसर्ग । (ं) (ः)
अयोग्य, त्रि. अनुपयुक्त । नालायक ।
अयोग्र, न. मुसल । माला, बर्छा ।
अयोत्र, त्रि. निर्धन । मुफ़्लिस । [दांत हैं ।
अयोदत्, त्रि. लोहदन्त; लोहेकी न्याई जिसके
अयोघन, न. लोहमुद्गर । [अवध ।
अयोध्या, स्त्री. उत्तरकोशला; श्रीरामजीकी पुरी ।
अयोनिज, पु. परमेश्वर (स्त्री) (जा) सीता ।
अयोमल, न. लोहमल । लोहेकी मैल ।
अर, न. चक्रनाभ्योर्मध्यस्थ काष्ठ, (पु) जैनमत में कालचक्र का अंश, (त्रि) शीघ्रग । आर, जल्द रौ ।
अरक, पु. शैवाल, शिवाल, एरा ।
अरघट्ट(क) पु. महाकूप, जलोत्तोलनयन्त्र । गहरा कूआ, घिरनी, हरट ।
अरङ्कार, पु. कृत्रिमविष; बनावटी ज़हर ।
अरजस्, स्त्री. कुमारी, (त्रि) रजोगुणरहित, क्वारी, जिसमें रजोगुण नहिं ।
अरण, न. निरुपद्रव । बेखटके ।
अरणिक, पु. अग्निमंथनकाष्ठ । [ठती हैं ।
अरण्य, न. वन, वह आश्रम जहां स्त्री. जन बै- ।
अरण्य-षष्ठी, स्त्री. ज्येष्ठशुक्लषष्ठी; जेठसुदी छठ ।
अरण्यानी, त्रि. महावन; बड़ा जंगल ।
अरतत्रप, पु. श्वान । कुत्ता, [अप्रेम ।
अरति, त्रि. रतिरहित (पु) क्रोध । (स्त्री) (ति)
अरत्नि, पु. सम्मुष्टिहस्त; कोहिनीसे चिटली अंगुलीतकका पैमाना ।
अरम्, व्य. शीघ्रता । ज़ल्दबाज़ी ।
अरदम्, व्य. पटंदार्गे, किवाड ।
अरर्दि पु. किवाड (स्त्री) (री) किवाड़ ।
अरल, पु. अलंकार, शत्रु ।
अरर, त्रि. द्वार । दरवाज़ा, किवाड़ ।
अररे, व्य. अति व्यग्रतया सम्बोधने । [मलिनी ।
अरविन्द, न. पद्म, स्त्री. (न्दा) । कमलफूल, क-
अराजक, त्रि. नृपतिरहित देश, विचारहीन देश; जिस देशमें राजा नहिं, जहां इन्साफ़ नहिं ।
अरात्, व्य. दूरतः; दूरसे ।
अराति, पु. शत्रु । दुश्मन ।
अराल, त्रि. वक्र, (पु) सर्जरस, मत्त हस्ती, वक्र हस्त, स्त्री (ली) वेश्या । टेढ़ा, मस्त हाथी, टेढ़ा हाथ, कंचनी, रानगी ।
अरि, पु. शत्रु, चक्र, खदिरपत्रिका । दुश्मन । पहिया ।

अरित्र, न. नौकाचालनकाष्ठ । चप्पा ।
अरिन्दम, त्रि. शत्रुजयी । दुश्मनोंपर ग़ालिब ।
अरिमर्द, पु. कासमर्दन वृक्ष । कांसा ।
अरिमेद, वृक्षविशेष । विट्खदिर ।
अरिला, स्त्री. मात्रा वृत्तविशेष ।
अरिष्ट(क) न. सूतिकागृह, अशुभ, (पु) लशुन, निम्ब, कौआ, वृषभासुर, मद्यविशेष ।
अरिष्टनेमिन्, पु. जैनमतवालोंके चौबीस अवतारोंमेंसे २२ सवां अवतार, एक राजाका नाम, एक मुनि वि० । [बदीके दूर करनेवाला ।
अरिष्टसूदन, पु. विष्णु भगवान् (त्रि) बुराई या
अरुचि, स्त्री. रोगविशेष । बद हज़मीके सबब खाना न चाहना । [प्रकारकाका पेड़ ।
अरुज, त्रि. नीरोग (पु) वृक्षविशेष । राज़ी, एक
अरुण, पु. सूर्य्यका सारथी, अर्कका वृक्ष, ईषद्रक्तवर्ण, कपिलवर्ण, गुड़, प्रभात, (न) कुङ्कुम, सिन्धूर (त्रि) रक्तवर्ण वस्तु (स्त्री) (णा) मंजिष्ठा, नदीविशेष ।
अरुणलोचन, पु. कपोत, कोकिल (त्रि) जिस्की आंखें सुरख़ हों, कबूतर पु. सूर्य ।
अरुणिमन्, पु. रक्तत्व । सुरख़ी ।
अरुणोदय, न. सरोवर भेद । पु. सूर्य्योदयसे पहिली दो घड़ियें । [सप्तमी तिथि ।
अरुणोदय-सप्तमी, स्त्री. माघके शुक्लपक्षकी
अरुणोदा, स्त्री. नदीविशेष ।
अरुणोपल, पु. पद्मराग । पन्ना ।
अरुन्तुद, त्रि. मर्म्मपीडक; तीखा । ईज़ारसां ।
अरुन्धती, स्त्री. वसिष्ठमुनिकी स्त्री, कर्दममुनिकी कन्या, अतिसूक्ष्म नक्षत्र ।
अरुन्धतीजानि, पु. वसिष्ठमुनि, नक्षत्रविशेष ।
अरुष्क, भल्लातकवृक्ष; भिलावेका दरख़्त ।
अरुस्, पु. अर्क, खदिर, खैरा ।
अरुस्कर, पु. भिलावा, (त्रि) ज़ख़म कर्नेवाला ।
अरुहा, स्त्री. भूधात्री; मलमेडा । ममोली ।
अरूप, सर्प, सूर्य ।
अरे,(रे) ञ. नीच सम्बोधन, सक्रोधाव्हान । अदनेको बुलाना, गुस्सेसे बुलाना ।
अरोक, त्रि. निष्प्रभ, अछिद्र ।
अरोकदन्त, त्रि. मलिनदशन; जिस्के दांत मैलेहों ।
अरोग, त्रि. स्वस्थ, पु. दोषसाम्य ।
अरोष, पु. शान्ति । सन्नीदगी ।
अर्क, पु. सूर्य, इन्द्र, ताम्र, स्फटिक, पण्डित, ज्येष्ठभ्राता, रविवार ।
अर्कचन्दन, पु. रक्तचंदन ।
अर्ककान्ता, स्त्री. सूर्यप्रिया ।
अर्कजौ, पु. अश्विनीकुमार, स्वर्गवैद्य ।
अर्कतनय, पु. सुग्रीव, कर्णराज, वैवस्वतमनु, शनि, यम, (स्त्री) (या) यमुना नदी ।
अर्कत्विष्, स्त्री. किरण । शुआ ।
अर्कपत्र, पु. अर्कवृक्ष; आकका पेड़ (स्त्री) (त्रा) अर्कमूला । निर्विसी ।
अर्कप्रिया, स्त्री. जवापुष्प । एक किसमका पौदा ।
अर्कबन्धु=बान्धव, पु. गौतममुनि, इक्ष्वाकुवंशोद्भव शाक्यवंशीयबुद्ध । बौद्धमत के चलाने वाला ।
अर्कव्रत, न. आरोग्यसप्तमी आदि सूर्य्यके व्रत, सूर्य्यके जल खींचनेकी न्याई प्रजासे कर ग्रहणरूप नियम ।
अर्कसूनु, पु. शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण ।
अर्कसोदर, पु. ऐरावत हस्ती । [तशीशीशा ।
अर्कोदमन्, पु. अरुणोपल, सूर्य्यकान्तमणि । आ-
अर्गल, न. देवीपाठके आदिमें पढ़ने योग्य स्तोत्र, किवाड़ बन्द करनेकी कल, कल्लोल; चटकनी, हुड़का, बड़ी लहर (स्त्री) (ला) (ली)
अर्घ, पु. पूजाविधि, मूल्य । क़ीमत ।
अर्घीश, पु. शिव, महादेव ।
अर्घ्य, त्रि. पूज्य, (न) अर्घार्थ जल ।
अर्घट, न. स्फुलिंग । चंगारा ।
अर्चक, पु. पूजक; पूजा करनेवाला ।
अर्च, त्रि. चमकता हुआ (स्त्री) र्चा, पूजा ।
अर्चन, न. पूजन, स्त्री. (ना) उपासना । इबादत ।
अर्चा, स्त्री. पूजा, प्रतिमा ।
अर्चि(स्), स्त्री. शिखा, ज्वाला, दीप्ति ।
अर्चित, त्रि. पूजित, आगकी, लाट, किरण, चमक ।
अर्चिरादिमार्ग, पु. उत्तरायण । [(ती)अग्निलोक ।
अर्चिष्मत्, पु. अग्नि, सूर्य्य, (त्रि) चमकीला । स्त्री
अर्च्य, त्रि. पूज्य, आराधित । मुअज़्ज़िज़ ।
अर्जक, त्रि. अर्जन कर्ता, इकट्ठा करनेवाला । (पु) न्याज़बू,

अर्जन, न. प्राप्ति, उपार्जन। हासल, जमा करना।
अर्जुन, पु. सहस्रबाहु, पण्डुका ३ य पुत्र, स्वनामख्यात वृक्ष, मयूर, श्वेतवर्णविशिष्ट, (स्त्री) (नी) तृण, नेत्ररोग, गौ, करतोयानदी, कुटनी, ऊषा।
अर्जुनोपम, पु. स्वनामख्यात वृक्ष।
अर्ण, पु. वर्ण, (न) जल, छन्दोविशेष। [बहिरका।
अर्णव, पु. समुद्र, छन्दोविशेष। बहर, खास वजन
अर्णवतरि, पु. बृहन्नौका। जहाज़।
अर्णवपोत, पु. समुद्रयान। जहाज़।
अर्णस्, न. जल; पानी।
अर्णोद, पु. बादल, मुस्तक।
अर्तन, न. निंदा, तिरस्कार। हजो, मलामत।
अर्ति, स्त्री. दर्द, कमानका सिरा।
अर्तिक, पु. पूज्य, (त्रि.) दर्दमंद स्त्री. (का) नाट्योक्तिमें बड़ी बहिन।
अर्थ, पु. विषय, याच्ञा, धन, कारण, वस्तु, निवृत्ति, प्रकार, तात्पर्य्य प्रकाश, कुशल, प्रार्थना, समर्थन, फल, शब्द प्रतिपाद्य। मांग, दौलत, सबब, चीज, हटना, क़िसम, नतीजह, ज़ाहिर, अमन, अर्ज़, मअने। [वाला।
अर्थकाम, पु. कृपण। कंजूस (त्रि) धन चाहने
अर्थतस्, व्य. फलतः, अर्थात्। यअने।
अर्थन, न. मागना, स्त्री. (ना) प्रार्थना, मांगना। अर्ज़ करना।
अर्थपति, पु. नृप, कुबेर, राजा। दौलतमंद।
अर्थप्रयोग, पु. वृद्धिनिमित्त धनदान। सूद, पर रूपाया देना। [नौकर।
अर्थ-भृत, पु. प्रधानभृत्य। बड़ी तनख्वाह का
अर्थवाद, पु. प्रशंसावाद। तअरीफ़की कलाम।
अर्थशालिन्, त्रि. धनवान्। दौलतमन्द।
अर्थ-शास्त्र, न. चाणक्य आदि मुनियोंकरके बनाईहुई पुस्तकें, दण्डनीति, आन्वीक्षिकी। खेतीका इल्म।
अर्थागम, पु. धनागम। आमदनी।
अर्थात्, व्य. वस्तुतः। यअने।
अर्थान्तर, न. अन्यार्थ। दूसरे माअने।
अर्थान्तरन्यास, पु. अलङ्कारविशेष।
अर्थापत्ति, स्त्री. प्रमाणविशेष। अनुमानवि; का व्यलंकार वि०।
अर्थार्थिन्, त्रि. धनार्थी। धन चाहने वाला।
अर्थिक, पु. वैतालिक, भिक्षु; भाट, भिखारी।
अर्थित, त्रि. प्रार्थित; मांगा हुआ, चाहा हुआ (स्त्री) (ता) इच्छा।
अर्थिन्, त्रि. भिखारी, नौकर, मददगार, दौलतमंद। मुद्दई।
अर्थ्य, त्रि. न्याय्य, याच्य, वाञ्छितव्य, पण्डित, धनवान्, (न) शिलाजतु। लायक, चाहने लायक, दाना, दौलतमंद, शिलाज़ीत।
अर्दन, न. पीड़न, हनन, याचन, नमन (स्त्री) (ना)।
अर्दनि, पु. अग्नि, यन्त्रणा, रोग। आग, तक्लीफ, बीमारी, मांगना।
अर्द्ध, न. समानांश, (पु) खण्ड, (त्रि) द्विभागीकृत। आधा, टुकड़ा, निसफ़ किया हुआ।
अर्दित, त्रि. पीडित, गत, याचित (न) वातरोग।
अर्द्ध-गङ्गा, स्त्री. कावेरी नदी।
अर्द्ध-चन्द्र, पु. चन्द्रार्द्ध, नखक्षत, बाणविशेष, गलहस्त, मयूरचंद्र, सानुनासिक चिन्ह। अष्टमीका चांद, नखूनसे जो ज़खम होता है, तीरकी किसम, गलहत्था. (ˇ) यह हरूफ़।
अर्द्धचोलक न. कैचली।
अर्द्ध-जान्हवी, स्त्री. कावेरी नदी।
अर्द्ध-नारी(श)श्वर, पु. महादेव, शिवपार्वतीकी मूर्त्तिविशेष।
अर्द्धनाव, न. नावका आधा।
अर्द्धयत, पु. तीतर।
अर्द्धपलायित, न. घोडेकी दुलकी चाल।
अर्द्धमात्रा, स्त्री. व्यंजन, आधी मात्रा।
अर्द्धरात्र, न. आधीरात।
अर्द्धवीक्षण, न. कटाक्षदर्शन।
अर्द्धहार, पु. चौंसठ लड़ा हार।
अर्द्धासन, न. स्नेह दान।
अर्द्धेन्दु, पु. गलहत्था।
अर्द्धर्च, पु. न. वेदका आधामन्त्र।
अर्द्ध-शरीर, पु. देहार्द्ध, (स्त्री) (रा) पत्नी। आधाजिसम, जोरू। [आधा जिसम।
अर्द्धाङ्ग, न. शरीरार्द्ध, स्त्री. (ङ्गी) अपनी औरत,
अर्द्धोदय, पु. पर्वविशेष। रविवार और श्रवण नक्षत्र युक्त माघमहीनेकी अमावस्या। [साड़ी, घागरा।
अर्द्धोरुक, न. स्त्री (का) परिधेय वस्त्रविशेष;

अर्पण, न. निक्षेप, सम्प्रदान, नियुक्त, समर्प्पण। सौंपन, खैरात, मुकर्रर करना, सौंपना।
अर्प्पा, स्त्री. दान। खैरात। [मानत रक्खा हुआ।
अर्प्पित, त्रि. स्थापित, प्रदत्त; दे दिया गया, अ-
अर्प्पिस, पु. हृदय। दिल, छाती।
अर्बुद, पु. न. दशकोटि संख्या, १०००००००० (पु) पर्वतविशेष।
अर्भ, पु. बालक, शिशिर, कुशतृण न. नेत्ररोग। लड़का, सर्द मौसम, दूबका तिन्का।
अर्भक, पु. बालक, मूर्ख, शिखर, अल्प, सदृश।
अर्मण, पु. द्रोण, अर्य, त्रि. वैश्य, स्वामी (स्त्री) वैश्य जातकी, ४ आढक परिमाण।
अर्यमन्, पु. सूर्य, उत्तराफाल्गुणी नक्षत्र, अर्कवृक्ष, पितरोंका राजा।
अर्वन्, पु. घोड़ा, इंद्र, गोकर्णपरिमाण।
अर्वान्, त्रि. कुत्सित, नीच, (पु) इन्द्र, घोटक, घोड़ा, गोकर्ण परिमाण। कमीनह, खराब। घोड़ा, गौ के कान जितना। [नज़दीक।
अर्वाच, त्रि. पूर्व, पर, निकट। पहिले, पीछे,
अर्व्वाचीन, त्रि. प्रतिकूल, पश्चाज्जात, नूतन। खिलाफ़, पीछेकी पैदायश, नया।
अर्शस्, न. रोगविशेष। बवासीर।
अर्शस्, } त्रि. बवासीरकी
आर्शस, } जिसे बीमारी हो।
अर्शसान, पु. आग।
अर्शिन्, त्रि. बीमार, बवासीरवाला।
अर्शोघ्न, पु. शूरण, भल्लातक (स्त्री) (घ्नी) तालमूली, जीमीकंद, भिलावा।
अर्शोहित, पु. भल्लातक; भिलावा। [(र्हा) पूजा।
अर्ह, त्रि. परमेश्वर, योग्य, पूज्य, (पु) इन्द्र, (स्त्री)
अर्हण, न. पूजन, (पु) बुद्धविशेष। पूजाका सामान। (स्त्री) (णी) पूजा।
अर्हणीय, त्रि. पूजनीय। पूजाके लायक।
अर्हत्, पु. क्षपणक, (त्रि) पूज्य, मान्य, स्तुत्य। बुद्ध अवतार, मुतवर्रक, लायक़ तारीफ़।
अर्हन्त पु. बुद्धविशेष, शिव, सुगत, क्षपण।
अलम्, व्य. भूषण, पर्य्याप्ति, वारण, निषेध, शक्ति, (न) वृश्चिकपुच्छकण्टक, हरिताल। ज़ेवर, पहिरना, काफ़ी, हटाना, इन्कार, ताक़त, विच्छूकी पूंछ परके कांटे, हरताल।
अलक, पु. न. कुन्तल, भङ्गीयुतकेश, (पु) कुक्कुर। जुलफ़, पागल कुत्ता।
अलक-नन्दा, स्त्री. कुमारी, गंगा। आठ वरसकी क्वारी लड़की कुबेरपुरी।
अलकाधिप, पु. कुबेर।
अलक्त } पु. वृक्षनिर्यासविशेष, लाक्षारस;
अलक्तक, } लाख का रंग.
अलक्षण, त्रि. दुर्भाग्य। बद नसीब।
अलक्षित, त्रि. अज्ञात। नामअलूम।
अलगर्द(र्द्द), पु. जलव्याल; पानीका सांप।
अलंकरण, न. भूषा, भूषण। ज़ेवर पहिराना।
अलङ्कार, पु. भूषण, साहित्यशास्त्र। काव्यके गुण और दोषके जतानेवाला शास्त्र, ज़ेवर।
अलङ्कृत, त्रि. भूषित। सजा हुआ।
अलंक्रिया, स्त्री. भूषा; ज़ेवाइश।
अलर्जी, स्त्री. चक्षुरोगविशेष; आंखकी बीमारी।
अलञ्जर, पु. बहुजलधर मृण्मयपात्र; मट्ट।
अलन्तराम्, व्य. यथेष्ट। काफ़ी।
अलवाल, न. आलवाल, वृक्षकी जड़में जल ठहरानेके लिये बन्द; थामला।
अलले } व्य. पिशाच भाषामें दूसरे पुकारने का
अले, } शब्द.
अलस, त्रि. निरुद्योग (पु) पादरोग, (स्त्री) (सा) हंसपदीलता। सुस्त, पाओंकी बीमारी, एक बेल।
अलसक, पु. उदरामय रोग। [आंखेंहों।
अलसेक्षणा, स्त्री. खास औरत, जिसकी मस्त
अलात, न. दग्धकाष्ठ। कोइला।
अलाबू, स्त्री.लताविशेष, तुम्बी। कद्दू।
अलार, न. कपाट। किवाड़।
अलि, पु. भ्रमर, काक, कोकिल, मदिरा। भौंरा, कव्वा, कोइल, शराब, विच्छू।
अलिक, त्रि, मिथ्या (न) ललाट। दरोग, पेशानी।
अलिङ्ग, त्रि. निरुपमेय। लासानी।
अलिगर्द्द, पु. जलसर्प्प; पानीका सांप। [चाटी।
अलिञ्जर, पु. मृत्तिकानिर्मित वृहत् जलपात्र;
अलिन्द, पु. प्रधान। चौतरा।
अलिप्सा, स्त्री. अनिच्छा। नाख़ाहिश।

अर्जन, न. प्राप्ति, उपार्जन। हासल, जमा करना।
अर्जुन, पु. सहस्रबाहु, पण्डुका ३ य पुत्र, स्वनामख्यात वृक्ष, मयूर, श्वेतवर्णविशिष्ट, (स्त्री) (नी) तृण, नेत्ररोग, गौ, करतोयानदी, कुटनी, ऊषा।
अर्जुनोपण, पु. स्वनामख्यात वृक्ष।
अर्ण, पु. वर्ण, (न) जल, छन्दोविशेष। [वहिरका।
अर्णव, पु. समुद्र, छन्दोविशेष। वहर, खास वजन
अर्णवतरि, पु. वृहन्नौका। जहाज़।
अर्णवपोत, पु. समुद्रयान। जहाज़।
अर्णस्, न. जल; पानी।
अर्णोद, पु. वादल, पुस्तक।
अर्तन, न. निंदा, तिरस्कार। हजो, मलामत।
अर्ति, स्त्री. दर्द, कमानका सिरा।
अर्तिक, पु. पूड़ा, (त्रि.) दर्दभेद स्त्री. (का) नाट्योक्तिमें वड़ी वहिन।
अर्थ, पु. विषय, याच्या, धन, कारण, वस्तु, निवृत्ति, प्रकार, तात्पर्य्य प्रकाश, कुशल, प्रार्थना, समर्थन, फल, शब्द प्रतिपाद्य। मांग, दौलत, सवव, चीज, हटना, क़िस्म, नतीजह, ज़ाहिर, अमन, अर्ज़, मअने। [वाला।
अर्थकाम, पु. कृपण। कंजूस (त्रि) धन चाहने
अर्थतस्, व्य. फलतः, अर्थात्। यअने।
अर्थन, न. मागना, स्त्री. (ना) प्रार्थना, मांगना। अर्ज़ करना।
अर्थपति, पु. नृप, कुवेर, राजा। दौलतमंद।
अर्थप्रयोग, पु. वृद्धिनिमित्त धनदान। सूद, पर रुपाया देना। [नौकर।
अर्थ-भृत, पु. प्रधानभृत्य। वड़ी तनख्वाह का
अर्थवाद, पु. प्रशंसावाद। तअरीफ़की कलाम।
अर्थशालिन्, त्रि. धनवान्। दौलतमन्द।
अर्थ-शास्त्र, न. चाणक्य आदि मुनियोंकरके वनाईहुई पुस्तकें, दण्डनीति, आन्वीक्षिकी। खेतीका इलम।
अर्थागम, पु. धनागम। आमदनी।
अर्थात्, व्य. वस्तुतः। यअने।
अर्थान्तर, न. अन्यार्थ। दूसरे माअने।
अर्थान्तरन्यास, पु. अलङ्कारविशेष।
अर्थापत्ति, स्त्री. प्रमाणविशेष। अनुमानवि; का व्यलंकार वि०।
अर्थार्थिन्, त्रि. धनार्थी। धन चाहने वाला।

अर्थिक, पु. वैतालिक, भिक्षु; भाट, भिखारी।
अर्थित, त्रि. प्रार्थित; मांगा हुआ, चाहा हुआ (स्त्री) (ता) इच्छा।
अर्थिन्, त्रि. भिखारी, नौकर, मददगार, दौलतमंद। मुद्दई।
अर्थ्य, त्रि. न्याय्य, याच्य, वाञ्छितव्य, पण्डित, धनवान्, (न) शिलाजतु। लायक, चाहने लायक, दाना, दौलतमंद, शिलाजीत।
अर्द्दन, न. पीड़न, हनन, याचन, नमन (स्त्री) (ना)।
अर्द्दनि, पु. अग्नि, यन्त्रणा, रोग। आग, तक्लीफ, वीमारी, मांगना।
अर्द्ध, न. समानांश, (पु) खण्ड, (त्रि) द्विभागीकृत। आधा, टुकड़ा, निसफ़ किया हुआ।
अर्दित, त्रि. पीडित, गत, याचित (न) वातरोग।
अर्द्ध-गङ्गा, स्त्री. कावेरी नदी।
अर्द्ध-चन्द्र, पु. चन्द्रार्द्ध, नखक्षत, वाणविशेष, गलहस्त, मयूरचंद्र, सानुनासिक चिन्ह। अष्टमीका चांद, नखूनसे जो ज़खम होता है, तीरकी क़िसम, गलहत्था. (ँ) यह हरफ़।
अर्द्धचोलक न. कैंचली।
अर्द्ध-जान्हवी, स्त्री. कावेरी नदी।
अर्द्ध-नारी(श)श्वर, पु. महादेव, शिवपार्वतीकी मूर्त्तिविशेष।
अर्द्धनाव, न. नावका आधा।
अर्द्धवत, पु. तीतर।
अर्द्धपलायित, न. घोडेकी दुलकी चाल।
अर्द्धमात्रा, स्त्री. व्यंजन, आधी मात्रा।
अर्द्धरात्र, न. आधीरात।
अर्द्धवीक्षण, न. कटाक्षदर्शन।
अर्द्धहार, पु. चौसठ लड़ा हार।
अर्द्धासन, न. स्नेह दान।
अर्द्धेन्दु, पु. गलहत्था।
अर्द्धर्च, पु. न. वेदका आधामन्त्र।
अर्द्ध-शरीर, पु. देहार्द्ध, (स्त्री) (रा) पत्नी। आधाजिसम, जोरू। [आधा जिसम।
अर्द्धाङ्ग, न. शरीरार्द्ध, स्त्री. (ङ्गी) अपनी औरत,
अर्द्धोदय, पु. पर्वविशेष। रविवार और श्रवण नक्षत्र युक्त माघमहीनेकी अमावस्या। [साड़ी, घागरा।
अर्द्धोरुक, न. स्त्री (का) परिधेय वस्त्रविशेष;

अर्पण, न. निक्षेप, सम्प्रदान, नियुक्त, समर्प्पण । सौंपन, खैरात, मुकर्रर करना, सोंपना ।
अर्प्पा, स्त्री. दान । खैरात । [मानत रक्खा हुआ ।
अर्प्पित, त्रि. स्थापित, प्रदत्त; दे दिया गया, अ-
अर्प्पिस, पु. हृदय । दिल, छाती ।
अर्बुद, पु. न. दशकोटि संख्या, १०००००००० (पु) पर्वतविशेष ।
अर्भ, पु. बालक, शिशिर, कुशतृण न. नेत्ररोग । लड़का, सर्द मौसम, दूबका तिन्का ।
अर्भक, पु. बालक, मूर्ख, शिखर, अल्प, सदृश ।
अर्मण, पु. द्रोण, अर्य, त्रि. वैश्य, स्वामी (स्त्री) वैश्य जातकी, ४ आढक परिमाण ।
अर्यमन्, पु. सूर्य, उत्तराफाल्गुणी नक्षत्र, अर्क-वृक्ष, पितरोंका राजा ।
अर्वन्, पु. घोड़ा, इंद्र, गोकर्णपरिमाण ।
अर्वान्, त्रि. कुत्सित, नीच, (पु) इन्द्र, घोटक, घोड़ा, गोकर्ण परिमाण । कमीनह, खराब । घोड़ा, गौ के कान जितना । [नजदीक ।
अर्वाच, त्रि. पूर्व, पर, निकट । पहिले, पीछे,
अर्व्वाचीन, त्रि. प्रतिकूल, पश्चाज्जात, नूतन । खिलाफ, पीछेकी पैदायश, नया ।
अर्शस्, न. रोगविशेष । बवासीर ।
अर्शस्, } त्रि. बवासीरकी
अर्शस्, } जिसे बीमारी हो ।
अर्शसान, पु. आग ।
अर्शिन्, त्रि. बीमार, बवासीरवाला ।
अर्शोघ्न, पु. शूरण, भल्लातक (स्त्री) (घ्नी) तालमूली, जीमीकंद, भिलावा ।
अर्शोहित, पु. भल्लातक; भिलावा । [(र्हा) पूजा ।
अर्ह, त्रि. परमेश्वर, योग्य, पूज्य, (पु) इन्द्र, (स्त्री)
अर्हण, न. पूजन, (पु) बुद्धविशेष । पूजाका सामान । (स्त्री) (र्णा) पूजा ।
अर्हणीय, त्रि. पूजनीय । पूजाके लायक ।
अर्हत्, पु. क्षपणक, (त्रि) पूज्य, मान्य, तुल्य । बुद्ध अवतार, मुतबर्रक, लायक तारीफ ।
अर्हन्त पु. बुद्धविशेष, शिव, सुगत, क्षपण ।
अलम्, व्य. भूषण, पर्य्याप्ति, वारण, निषेध, शक्ति, (न) वृश्चिकपुच्छकण्टक, हरिताल । ज़ेवर, पहि-रना, काफ़ी, हटाना, इन्कार, ताक़त, विच्छूकी पूंछ परके कांटे, हरताल ।
अलक, पु. न. कुन्तल, भङ्गीयुतकेश, (पु) कुक्कुर । जुलफ़, पागल कुत्ता ।
अलक-नन्दा, स्त्री. कुमारी, गंगा । आठ बरसकी क्वारी लड़की कुबेरपुरी ।
अलकाधिप, पु. कुबेर ।
अलक्त } पु. वृक्षनिर्यासविशेष, लाक्षारस;
अलक्तक, } लाल का रंग.
अलक्षण, त्रि. दुर्भाग्य । बद नसीब ।
अलक्षित, त्रि. अज्ञात । नामअलूम ।
अलगर्द्द(र्द्ध), पु. जलव्याल; पानीका सांप ।
अलंकरण, न. भूषा, भूषण । ज़ेवर पहिराना ।
अलङ्कार, पु. भूषण, साहित्यशास्त्र । काव्यके गुण और दोषके जतानेवाला शास्त्र, ज़ेवर ।
अलङ्कृत, त्रि. भूषित । सजा हुआ ।
अलंक्रिया, स्त्री. भूषा; ज़ेवाइश ।
अलर्जी, स्त्री. चक्षुरोगविशेष; आंखकी बीमारी ।
अलञ्जर, पु. बहुजलधर मृण्मयपात्र; मट ।
अलन्तराम्, व्य. यथेष्ट । काफ़ी ।
अलवाल, न. आलवाल, वृक्षकी जड़में जल ठहरानेके लिये बन्द; थामला ।
अलले } व्य. पिशाच भाषामें दूरसे पुकारने का
अले, } शब्द.
अलस, त्रि. निरुद्योग (पु) पादरोग, (स्त्री) (सा) हंसपदीलता । सुस्त, पाओंकी बीमारी, एक बेल ।
अलसक, पु. उदरामय रोग । [आंखेंहों ।
अलसेक्षणा, स्त्री. खास औरत, जिसकी मस्त
अलात, न. दग्धकाष्ठ । कोइला ।
अलाबू, स्त्री.लताविशेष, तुम्बी । कद्दू ।
अलार, न. कपाट । किवाड़ ।
अलि, पु. भ्रमर, काक, कोकिल, मदिरा । भौंरा, कव्वा, कोइल, शराब, विच्छू ।
अलिक, त्रि, मिथ्या (न) ललाट । दरोग, पेशानी ।
अलिङ्ग, त्रि. निरुपमेय । लासानी ।
अलिगर्द्द, पु. जलसर्प; पानीका सांप । [चाटी ।
अलिञ्जर, पु. मृत्तिकानिर्मित वृहत् जलपात्र;
अलिन्द, पु. प्रधान । चौतरा ।
अलिप्सा, स्त्री. अनिच्छा । नाख़ाहिश ।

अलिमक, पु. पद्मकेशर, भेक, भ्रमर, कोकिल। मेंडक, भौंरा, कोइल, मधुमक्खी।

अलिन्, पु. भ्रमर, वृश्चिक, (त्रि) छलविशिष्ट। भौंरा, विच्छू, फ़रेबी।

अलिप्रिय, न. रक्तक पट स्त्री. (या) पाटलावृक्ष।

अलिपक, पु. भेक, पिक, भ्रमर, मधुक।

अलीक, त्रि. असत्य, अल्प (न) स्वर्ग, ललाट। दरोग, कम, बहिश्त, पेशानी।

अलुब्ध त्रि. लोभहीन। बेहिर्स।

अरे(ले) संबोधन।

अलोभ, पु. लोभाभाव, (त्रि) निर्लोभ।

अलौकिक, त्रि. लोकातीत। अजीव।

अल्प (क) त्रि. किञ्चित् क्षुद्र. सूक्ष्म, मर्त्य, ज़रा-सा, महीन, थोडा।

अल्पता, स्त्री. न्यूनता। कमी।

अल्पशस्, व्य. क्रमशस्। आहिस्तह २। थोड़ा २।

अल्पायुस्, त्रि. अचिरजीवी (पु) छाग। थोड़ा चिर जीनेवाला, बकरा।

अल्पिका, स्त्री. मुद्गपर्णी।

अल्पिष्ठ, **अल्पीयस्**, } त्रि. अत्यल्प; बहुत थोड़ा।

अल्ला, स्त्री. माता, दुर्गा; मां, देवी।

अव, व्य. निश्चय, आप्ति, असाकल्य, अनादर, अलम्बन, विज्ञान, व्यापन. शुद्धि, अल्प, परिभव, नियोग, पालन। यक़ीन, ना तमाम, बेअदबी, पनाह, इल्म, जरा, हतक, परवरिश।

अवकठ, त्रि. अभिमुख, पश्चात्, अत्यय, अधोमुख, (न) निरोध। सामने, पीछे, बरबादी, नीचे की ओर मुखवाला, रोक।

अवकथन, न. स्तव। ताअरीफ़।

अवकर, पु. झाड़ू से उड़ती हुई धूलि आदि।

अवकर्त्तन, न. काटना, चरसा।

अवकलित, त्रि. देखा हुआ, गुणा गुआ।

अवकाश, पु. अवसर, फ़ासलह, फ़ुरसत।

अवकीर्ण, त्रि. फैलाया हुआ, पिसा हुआ।

अवकीर्णिन्, त्रि. धर्म्मभ्रष्ट। धर्मसे गिराहुआ।

अवकुटार, त्रि. उलटा, पीछे, नीचेमुख वाला, मुख़ालिफ़।

अवकुट्टन, न. टकोरना, ठोकना, कूटना।

अवकुठार, पु. वैरूप्य। बदसूरती, इख़्तिलाफ़।

अवकुण्ठन, न. वेष्टन, भीरुता। लपेटना ख़ौफ़।

अवकृष्ट, त्रि. ख़ारिज किया हुआ, निकाला हुआ, नीच।

अवक्रन्दन, न. ऊंची स्वर से पुकारना।

अवक्रय, पु. मूल्य; मोल, भाड़ा।

अवक्रुत, त्रि. भर्त्सन, झिड़कना।

अवक्रान्ति, स्त्री. अधोगमन, अवतरण। नीचे जाना, उतरना, सामने जाना।

अवक्रिया, स्त्री. तर्क करना, शुरू ना करना।

अवक्रुष्ट, त्रि. निन्दित, मन्द ध्वनित।

अवक्रोश, पु. शिकायत, मलामत।

अवक्वण, पु. ख़राब आवाज़। बीनकी अवाज़।

अवक्वाथ, पु. मन्दाग्नि। बदहज़मी।

अवक्षेप, पु. निन्दा। हजो।

अवक्षेपण, न. भर्त्सन. गिड़कत।

अवखात, न. गव्हर, गर्त। गढ़ा।

अवगणन, न. अमान्यकरण। परवाह ना करना।

अवगत, त्रि. जाना हुआ, प्राप्त किया हुआ, स्त्री. (ति) ज्ञान।

अवगथ, त्रि. प्रातःस्नायी, (न.) प्रातःस्नान। सुबह नहानेवाला, सुबह नहाना।

अवगम, पु. ज्ञान, उपलब्धि, गमन। मालूम करना, जाना।

अवगाढ, त्रि. निमज्जित, निविड़; न्हाया हुआ, गाढ़ा।

अवगाह(न) पु. न. स्नान, स्नान-गृह। नहाना, नहानेका घर।

अव(ग्र)ग्राह, पु. नाव में माझी

अवगीत, त्रि. कुत्सित, दुष्ट (न) लोकापवाद। शरीर, इलज़ाम।

अवगुण, पु. दोष। ऐब।

अवगुण्ठन, न. **अवगुण्ठिका**, स्त्री. } स्त्रीयों का मुखावरण, मुद्रा विशेष, धूल्यादिप्रक्षण। घुंगट, बुरका, मट्टीवग़ैरह में लेटना।

अवगुण्ठित, त्रि. कृतावगुण्ठन, चूर्णित। घुंगट निकाले हुए, पिसाहुआ।

अवगूहन, न. आलिङ्गन। बग़लगीरी।

अवगृह्य, न. प्रातिशाख्य में पदविशेष।

अवगोरण, न. ताड़नार्थ दण्डाद्युद्यमन। मारनेके लिये छड़ी उठानी, घूरना।

अवग्रह, पु. वृष्टिरोध, बाधा, स्वभाव । ओड़, रोक, आदत ।
अवग्रहण, न. रोक । बेइज़्ज़ती ।
अवघट्ट, पु. ज़मीन में का गढ़ा ।
अवघर्षण, न. घिसना, मांजना ।
अवघात, पु. अपमृत्यु, तण्डुलादि कुट्टन । मौत नागहानी, धानों का छड़ना । [वाला ।
अवघातिन्, त्रि. वधकारी । खूनी, धान छड़ने-
अवघूर्ण, पु. घूमना, घुंबर ।
अवचय(चाय), पु. सञ्चय, फलफूलों का तोड़ना, चुनना । जमा । [गेके बंधेवस्त्र ।
अवचूल, पु. ध्वजामबद्धाधोवस्त्र । नशान के आ-
अवचूलक, न. मयूरचामर, चामर । चौरी, मोरछल ।
अवच्छात, त्रि. अनाहार से परिक्लिष्ट, कर्तित । फ़ाके से नाचार, कतरा हुआ । [निरूपक ।
अवच्छिन्न, त्रि. संकुचित, विशिष्ट, अवच्छेदकता-
अवच्छुरित, न. टह २ हंसी ।
अवच्छुरित, न. अतिशयहास्य; मिश्रित।बड़ी हंसी।
अवच्छेद, पु. विराम, संकोच, परिच्छेद, एकदेश ।
अवच्छेदक, त्रि. विशेषण । मुहीतपन, सिफ़त ।
अवच्छेदकावच्छेद, पु. व्यापकत्व । सिफ़त ।
अवच्छेद, पु. विराम, खण्ड, सीमा, एकदेश । टहराव, टुकड़ा, हद ।
अवच्छेदक, त्रि. छित्वर, परिच्छन्न, विशेषण । काटनेवाला, ढंका हुआ, एक लफ़्ज़ इलम मन्तिक का, जो सिफ़त या ऐब से एक की किसी दूसरी चीजों से इलहदगी जताता है ।
अवच्छेदन, न. खण्डन, कर्त्तन । तोड़ना, काटना।
अवजय, पु. पराजय; हार । शिकस्त ।
अवज्ञा, स्त्री. बेअदबी, नफ़रत, बेलिहाज़ी ।
अवज्ञात, त्रि. अपमानित । बेइज़्ज़त, नफ़रत किया हुआ ।
अवट, पु. गर्त, कूप, (त्रि) कपटी । गढ़ा, कूआ, फ़रेबी ।
अवटङ्क, पु. बाज़ार, मेला ।
अवटिन्, पु. गर्त; गढ़ा ।
अवटीट, त्रि. चपटीनाकवाला, फीना ।
अवटु, पु. कूआ, गढ़ा, वृक्षविशेष (स्त्री) (टू) बेल ।
अवडङ्ग, पु. हट्ट । दुकान ।
अवडीन, न. परिन्दोंकी नीचेकी ओर उडारी ।
अवतंस, पु. न. कर्णफूल, मुकुट । ताज ।
अवतमस, न. थोड़ा अंधेरा ।
अवतर (ण), पु. उतराउ, पैदा यश ।
अवतरणिका, स्त्री. भूमिका । दीबाचह ।
अवतार, पु. अवतरण, तीर्थस्थान, विष्णुका भिन्न २, देहधारण ।
अवतीर्ण, त्रि. उतरा हुआ, पार उतरा हुआ, पार हुआ २, प्रकट हुआ ३ ।
अवतोका, स्त्री. तूई हुई गाय । [तुकल ।
अवदंश, पु. उपदंश । नशा पीनेके वकत का
अवदात (क), पु. सफेदरंग, पीलारंग (त्रि) सुफेद, पीला, सफ़ा, ख़ूबसूरत ।
अवदान, न. उपहार, बलि, खण्डन, खस्स ।
अवदारण, न. खनित्र; कही, कुदाल ।
अवदाह, न. वीरणमूल । खस्स । [हुआ ।
अवदून, त्रि. तापित । अफ़सोसवाला, कांपा
अवद्य, त्रि. निंद्य, अधम (न) पाप ।
अवद्योत, त्रि. तनक रौशन । चमकीला । [नहीं ।
अवध्य, त्रि. वधके अयोग्य । जो मारने लायक
अवधान, न. मनोयोग । तवज्जो ।
अवधीरण, न. नासुनन, बेलिहाज़ी, बेअदबी ।
अवधीरित, त्रि. अवज्ञात, हकीर जाना हुआ ।
अवधूक, पु. अविवाहित । क्वारा । [संन्यासी ।
अवधूत, त्रि. त्यक्त, तिरस्कृत, वर्णाश्रमधर्मत्यागी,
अवधूनन, न. कंपन; कांपना ।
अवन, न. तसल्ली, हिफ़ाज़त, तर्पण शोभा, सुनना, मारना, ज्ञान, ख़ाहिश ।
अवनट, त्रि. चपटीनाकवाला ।
अवनत, त्रि. झुका हुआ, नम्र, (स्त्री) (ति) नम्रता, झुकाव, प्रणाम । [हुआ ।
अवनद्ध, न. ढका, वस्त्र कपड़ा पहिरना, (त्रि) बंधा
अवनय, पु. निपातन; गिराना । [लिआना ।
अवनाय, पु. अधोनयन, निपातन; गिराना, नीचे
अवनि (नी), स्त्री. पृथिवी. ज़मीन ।
अवनीपति, पु. राजा ।
अवनेजन, न. धोना, मांजना ।
अवन्तय, पु. मालवे का देश विशेष ।

अवन्ति (न्ती) (का), पु. स. उज्जैन नगरी, एक नदीका नाम ।
अवन्तिसोम, न. कांजी ।
अवपात, पु. बिल, गढ़ा, हाथी पकड़नेके लिए घाससे ढंपाहुआ गढ़ा, गिरन ।
अवपीड, पु. नस्य; नसवार ।
अवप्लुत, त्रि. हठ से तैराहुआ।
अवभास, पु. रोशनी, दीदार, फ़रेब ।
अवभासक, त्रि. प्रकाशक, रोशन करनेवाला ।
अवभृत, पु. प्रधान् यज्ञकी न्यूनाधिक्य शान्तिके लिये जो होम आदि कियाजाता है, यज्ञके अन्तका स्नान ।
अवभ्रट्, पु. चपटी नाकवाला, फीना ।
अवम, त्रि. बुरा, नीच, (न) एक दिनमें एक तिथिका अन्त, और दूसरीका प्रारम्भान्त स्पर्श ।
अवमत, त्रि. अवज्ञात । वेइज़त ।
अवमर्द(न), पु. न. पीडन, शत्रु नगरोच्छेद ।
अवमर्श, न. विचार, सोच ।
अवमान, न. तिरस्कार । वेइज़ती, मलामत ।
अवमान(ना), न. स्त्री. अपमान । वेइज़ती ।
अवमानित, त्रि. वेइज़त किया हुआ ।
अवमोचन, न. उन्मोचन; खोलदेना ।
अवमोटन, न. वदली, (स्त्री) (नी) वदलनेवाली ।
अवयव, पु. अङ्ग, भाग, न्याय मतमें पंचावयव वाक्य ।
अवर, त्रि. छोटा, कमीना, आख़री, (न) हाथीकी जांघका अगला भाग, स्त्री (रा) छोटी ।
अवरज, पु. छोटाभाई, शूद्रजाति, (स्त्री) (जा) छोटी वहिन ।
अवरति, स्त्री. विराम, निवृत्ति। आराम ।
अवरिका, स्त्री. धनियांन ।
अवरिण, त्रि. धिक्कार कियाहुआ.
अवरुग्ण, त्रि. विदीर्ण, रोगी । [औरत ।
अवरुद्ध, त्रि. रुका हुआ (स्त्री) (द्धा) सतरमेंकी
अवरोध, पु. राजाओंका स्त्री गृह, रानी, घुंगट, दुरुका, ढकना, रोक ।
अवरोधक, पु. राजाके अन्तःपुरमें रहनेवाला ।
अवरोपण, न. चोरी, ठगी, गरूव ।
अवरोह, पु. चढ़ना, स्वर्ग ।
अवरोहण, न. उतरना, चढ़ना, ।
अवर्ण, पु. अ. अक्षर (त्रि) नीच ।
अवल, त्रि. जिसमें बल नहो, (स्त्री) (ला) औरत ।
अवलम्ब, पु. न. आश्रय, शरण ।
अवलम्बन, न. आश्रय । पनाह ।
अवलम्बित, त्रि. जल्दी, मातहत, पकड़ा हुआ ।
अवलाञ्छन, न वदनामीका नशान ।
अवलिप्त, त्रि. अहंकारी, लिवड़ा हुआ ।
अवलीढ, त्रि. चाटाहुआ, खाया हुआ ।
अवलीला, स्त्री. खेल, आसानी, ।
अवलुञ्चन, न. विदारण, फाड़ना ।
अवलुण्ठन, न. लुण्ठन; लुटकना ।
अवलून, न. छिन्न, खंडित; कटाहुआ ।
अवलेप, पु. लेपन, अहंकार, भूषण ।
अवलेपन, न. चंदन, मलना, लिपना ।
अवलेहन, न. चटनी, चाट ।
अवलेह्य, त्रि. आस्वादित, चटनी, चाटने योग्य ।
अवलोकन, न. देखना, सोचना । तलाश करना ।
अवशिष्ट, त्रि. शेप । बाकी ।
अवशीन, पु. वृश्चिक; विच्छू।
अवशेष, पु. अन्त । बाकी ।
अवशोषण, न. सुखाना ।
अवश्यम्, व्य. सवभांत, ज़रूर (त्रि) जोवसमें न आय, (स्त्री) (श्या) कुहर ।
अवश्यम्भाविन्, त्रि. ज़रूर होनहार ।
अवश्याय, पु. शिशिर, गर्व । पाला; फ़ुहर ।
अवश्रयण, न. चुल्हीसे उतारकर रखना ।
अवष्कयणी, स्त्री. चिरप्रसूता गौ; चिर पीछे सूनेवाली गाय । [हुआ, रुकाहुआ ।
अवष्टब्ध, त्रि. वेष्टित, बद्ध; लपेटा हुआ, बंधा-
अवष्टम्भ, पु. सूचना, स्वर्ण, स्तम्भ, आरम्भ ।
अवस, पु. सूर्य, राजा, (न) रक्षण ।
अवसक्तिका, स्त्री. निचोल; जामा ।
अवसक्थिका, स्त्री. जांघिया, कछ । [करना ।
अवसज्जन, न. गले मिलना, प्रेमसे वातचीत
अवसथ(थ्य), पु. पाठशाला, घर, गांव ।
अवसन्त, त्रि. वेहोश, थकाहुआ, घरवाद किया हुआ ।
अवसव्य, न. अपसव्य । दाहना ।

अवसर, पु. अवकाश, वर्ष, क्षण। मौका, लहमा।
अवसर्ग, पु. स्वतन्त्र। आज़ाद।
अवसर्पिणी, स्त्री. बौद्धकन्या।
अवसाद, पु. कमजोरी, थकावट, दुस्मनी।
अवसादन, न. नाश, ढीलाकरना।
अवसान, न. शेष, समाप्ति; मृत्यु, सीमा।
अवसाय, पु. शेष, निश्चय, समाप्ति। बाकी, यकीन, इख्तताम।
अवसारण, न. बाहर निकालना।
अवस्कन्द, पु. छावनी, हमला।
अवस्कन्दन, न. तोड़ना, छीनना, उतरना, हमला करना।
अवस्कर, पु. कूड़ा, कटकर, गूंह।
अवस्तात्, व्य. इसपीछे।
अवस्तार, पु. कनात, दरी।
अवस्था, स्त्री. हालत, उमर।
अवस्थान, न. स्थिति, प्रतिष्ठा।
अवस्थित, त्रि. बैठा हुआ।
अवस्रंसन, न. अधःपतन; नीचे गिरना।
अवहनन, न. कूटना, छड़ना।
अवहार, पु. हांगर, चोर, जूआ, दूसरे धर्मका आश्रय लेना, छोड़ना।
अवहालिका, स्त्री. फ़सील।
अवहित, त्रि. जाना हुआ, खबरदार, सावधान।
अवहित्था, स्त्री. भेसवदलना। फ़रेब।
अवहेल, पु.
अवहेलन, न. } अवज्ञा, अनादर।
अवहेला, स्त्री.
अवाक्ष, त्रि. रक्षक। मुहाफ़िज़।
अवाग्र, त्रि. नत, नम्रमुख।
अवाङ्मुख, त्रि. अधोमुख। नीचे मुखवाला।
अवाच, त्रि. गूंगा, स्त्री (ची) दक्षिणदिशा।
अवाचीन, त्रि. दक्खनका।
अवाच्य, त्रि. जो निंदायोग्य नहिं, (न) दुर्वचन।
अवाच्यवाद, पु. गाली, मेहना, ताना।
अवान्तर, त्रि. मध्यका; भीतरी।
अवान्तर, त्रि. न बोया हुआ।
अवाप्त, त्रि. पाया हुआ (स्त्री) (प्ति) हसूल।
अवाप्य, त्रि. लब्धव्य; लभनेके योग्य।

अवार, न. इसओरका तट।
अवारपार, पु. समुद्र; उत्तरपार।
अवारपारीण, त्रि. पारग; पार जानेवाला।
अवारिका, धनियां।
अवावट, पु. दिधिषुपुत्र। हराम ज़ादा।
अवावत्, पु. चोर।
अवासस्, त्रि. नग्न; नंगा।
अवि (क) (का), पु. सूर्य, पर्वत, मेढा, स्वामी, मूसा, फ़सील, वायु, कम्बल (स्त्री) (का) रजस्वलास्त्री।
अविकट, पु. रेवड़, (त्रि) जो भयानक नहिं।
अविकल, त्रि. ठीक ठीक।
अवस्थित, त्रि. ठहरा हुआ (स्त्री) (ति) ठहराव।
अवस्यन्दन, न. नाट्य; खेल।
अविघ्न, पु. करोंचे का पेड़।
अविगीत, त्रि. अनिन्दित। शुभ।
अविगुण, त्रि. उपयुक्त। मुनासिब।
अविचार, पु. अन्याय। वेइन्साफ़ी।
अविच्युत, त्रि. नित्य, सदा, नगिरा हुआ।
अविच्छिन्न, त्रि. जुड़ा हुआ।
अविडीन, न. पक्षियोंका सीधा सामने उड़ना।
अवित, त्रि. त्रात, बचाया हुआ।
अवितृ, (त्रि) पालक, रक्षक।
अवितथ, न. सच (त्रि) सांचा।
अवित्यज, पु. पारद; पारा।
अविदग्ध, त्रि. निर्गन्ध, मूर्ख।
अविदूस, न. भेड़का दूध, [भंगराज बेल,
अविद्धकर्ण, (स्त्री) (र्णा) त्रि. जिसके कान विंधे नहीं,
अविद्य, पु. मूर्ख (स्त्री) (द्या) मूर्खता, अज्ञानकी एक शक्ति।
अविन्धन, पु. बिजुली। वर्क।
अविधि, स्त्री. शास्त्रमें जिसका विधान नहीं।
अविधेय, त्रि. अयोग्य; विधानके योग्य नहिं।
अविन, पु. याजक, राजा।
अविनत, त्रि. ऊंचा, स्त्री (ता) छनाल औरत।
अविनाभाव, पु. व्याप्ति; व्याप्यनिष्ट व्यापक निरूपित धर्म।
अविनाशिन्, त्रि. नित्य, सत्य (त्रि) नाशरहित।
अविनीत, त्रि. उद्धत, (स्त्री) (ता) बदकार औरत।
अविपट, पु. कंबल, भूरा।

अविमरीस, न. भेड़ीका दूध ।
अविमुक्त, त्रि. न छूटा हुआ (न) काशीक्षेत्र ।
अविरत, न निरंतर (त्रि) मशगूल ।
अविलाम्बित, त्रि. जल्दबाज़ ।
अविला, स्त्री. मेषी; भेड़ी ।
अविवेक, त्रि. निर्बोध (पु) मूर्खता ।
अविवेकिन्, त्रि. मूर्ख । जाहिल ।
अविशिष्ट, त्रि. समान । यकसां ।
अविश्रान्त, त्रि. सतत; निरंतर ।
अविश्वास, त्रि. वेपरतीता, (पु) वे परतीती (स्त्री) (सा) चिरपीछेसूनेवाली गाय ।
अविष, पु. समुद्र, राजा, आकाश, (त्रि) विपरहित (स्त्री) (षा) एकबूटी (षी) नदीविशेष ।
अविसोढ, न. भेड़ीका दूध.
अविस्पष्ट, न. गुनगुना वचन ।
अवी, स्त्री. ऋतुवाली स्त्री.
अवीचि, पु. तरंग, नरकवि० (त्रि) जिसमें तरंग [नहिं।
अवीजा, स्त्री. किसमिस, दाख ।
अवीत, न. अनुमान भेद । [रहित स्त्री ।
अवीर, त्रि. वीरता रहित, (स्त्री) (रा) पतिपुत्र
अवेद्य, पु. गौका बछड़ा (त्रि) न जानने योग्य ।
अवेक्षण, न. दर्शन, (स्त्री) (णा) गौर ।
अवेक्षा, स्त्री. देखना, गौर करना ।
अवेक्षित, त्रि. देखा हुआ ।
अवेक्षितृ, पु. (ता) देखनेवाला ।
अवेल, पु. बकड़वाज, (त्रि) वेकिनार, स्त्री० (ला) चावी हुई सुपारी
अवैध, त्रि. निषिद्ध । ना जायज़ ।
अवोद, त्रि. आर्द्र; गीला ।
अव्य, पु. मेघ, वर्ष, मुस्ताघास ।
अव्यक्त, पु. विष्णु, शिव, काम मूर्ख, (न) परमात्मा (त्रि) अप्रकट ।
अव्यक्तक्रिया, स्त्री. पाटी गणितका हिसाब ।
अव्यक्तमूलप्रभव, पु. संसारवृक्ष ।
अव्यक्तराग, पु. लोहितवर्ण, अप्रकाश्य । लाल रंग, दिलकी मनशा ।
अव्यक्तराशि, स्त्री. त्रैराशिकमें अज्ञात ४ थीराशि।
अव्यङ्ग, त्रि. पूर्णाङ्ग; जिसमें कोई विकार नहिं, (स्त्री) (ङ्गी) लताविशेष ।
अव्यथ, त्रि. पीडारहित (पु) सांप (स्त्री) (था) हरीड़ ।
अव्यभिचारिन्, त्रि. अनिवार्य । ठीक २
अव्ययीभाव, पु. समासविशेष; अव्ययके साथ नामका समास ।
अव्यवधान, न. अति समीपता । नज़दीकी ।
अव्यवस्था, स्त्री. वेतरतीवी, शास्त्रके विरुद्ध कहना । [उलटापुलटा
अव्यवस्थित, त्रि. जिसका चित्त स्थिर नहिं;
अव्यय, पु. विष्णु, (त्रि) व्ययरहित, (न. पु.) शब्दविशेष ।
अव्यवहित, त्रि. व्यवधान रहित; मिला हुआ ।
अव्याज, पु. सरलता, (त्रि) शीघ्र ।
अव्याजे, व्य. सद्यः, निष्कपट तासे, तातकालही ।
अव्याप्ति, स्त्री. अलक्ष्मे लक्षणका जानारूप देष ।
अव्याप्य, त्रि. व्याप्तिरहित । [हिसे मे जो रहे ।
अव्याप्यवृत्ति, त्रि. एक देश मे स्थित (स्त्री) किसी
अव्युत्पन्न, त्रि. अनभिज्ञ; मूर्ख ।
अशक्य, त्रि. असाध्य । मुशकल । जो न होसके।
अशत्रु, त्रि. निर्भय । वेखौफ़ । [शत्रु नहिं ।
अशाङ्क, पु. चन्द्र, युधिष्ठिर, (त्रि) जिसका कोई
अशन, न. भोजन, (पु) खानेवाला, पीत सालवृक्ष।
अशनपर्णी, स्त्री. लताविशेष ।
अशनाया, स्त्री. भूख ।
अशनायित, त्रि. भूखा ।
अशनि, पु. वज्र, (स्त्री) (नी) विजली ।
अशरीर, पु. काम (त्रि) शरीररहित, (न) परब्रह्म ।
अशाश्वत, त्रि. अस्थिर; जो सदा न रहे ।
अशिक्षित, त्रि. मूर्ख, जो लिखा पढ़ा नहिं ।
अशित, त्रि. खाया हुआ, तृप्त हुआ २ ।
अशितम्भव, न. खानेकी वस्तु ।
अशिन्न, पु. चोर ।
अशिर, पु. राक्षस, वीति होत्र, सूर्य अग्नि ।
अशिश्विका, स्त्री. संतानरहित स्त्री ।
अशिश्वी, स्त्री. वेउलाद स्त्री ।
अशीति, स्त्री. अस्सी ।
अशीतिक, त्रि. अस्सी वर्षका ।
अशुचि, (त्रि) अपवित्र, (पु) विष्ठा मूत्रआदि ।
अशुद्ध, त्रि. अपवित्र । नापाक, गुलत ।

अशुभ, त्रि. बुरा, (न) पाप ।
अशेष, त्रि. तमाम (न.) बेअन्त,
अशेषतस्, व्य. सब प्रकारसे । [वृक्षविशेष ।
अशोक, न. पारा (त्रि.) शोकरहित, (पु) पुष्प-
अशोकरोहिणी, स्त्री. काँड़ ।
अशोकषष्टि, स्त्री. चेतके शुक्रपक्षकी छठ ।
अशोकाष्टमी, स्त्री. चैत्र शुक्लाअष्टमी ।
अशोच्य, त्रि. शोककरनेके अयोग्य ।
अशौच, न. शुचित्वाभाव । नापाकी ।
अश्म, पु. पर्वत, मेघ, पत्थर, (न.) लोहा ।
अश्मवर्म, पु. मणिविशेष । पन्ना ।
अश्मन्, पु. पहाड़, पत्थर ।
अश्मन्त, न. अशुभ, मरणा, क्षेत्र, चुल्ली ।
अश्मन्तक, पु. न. चूल्हा ।
अश्मज, न. सिलाजीत पत्थर ।
अश्मभिद्, पु. वृक्ष जो पत्थरमेसे निकले ।
अश्मसार, पु. लोहा, कड़ा ।
अश्मर, पु. पथरीला (स्त्री) (री) पथरीकी बीमारी ।
अश्र (स्र), न. नेत्रजल, आंसू, लहू, धार ।
अश्रद्धान, पु. श्रद्धारहित । बे एतकाद ।
अश्र(स्र)प, पु. राक्षस, निशाचर । [लगता । २, ।
अश्रान्त, त्रि. श्रमरहित (न) सतत । क्षनथक ।
अश्रि (स्रि), स्त्री. धार, नोक (श्री) श्रीरहित । बेरोव ।
अश्रु (स्रु), न. आंसू.
अश्रुत, न. अनसुना (पु) मूर्ख ।
अश्लील, न. शर्मनाकवचन ।
अश्लेषा, स्त्री. नक्षत्रविशेष; ९म, नक्षत्र, इसके पांचतारे होते हैं ।
अश्व, पु. घोडा, (स्त्री) (श्वा) घोड़ी ।
अश्वखुरा(री), स्त्री. अपराजिता लता ।
अश्वगोष्ट, न घुड़साल । अस्तबल ।
अश्वतर, पु. बछड़ा, नागराजा (त्रि) शीघ्रचलनेवाला, खचरा स्त्री (री) खचर ।
अश्वत्थ, पु. पीपलका पेड़, (स्त्री) पूर्णिमा ।
अश्वत्थामन्, पु. द्रोणाचार्यका बेटा ।
अश्वत्थिका, स्त्री. वृक्षविशेष पिप्पली ।
अश्वन्त, न. अशुभ, क्षेत्र, चुल्ला, मुर्दा ।
अश्वपद, पु. न. गेहूं (स्त्री) चंद्रमल्लीवेल ।
अश्वपाल, पु. चाबकसवार (त्रि) जो घोड़े पाले (न.) पानी ।
अश्वभा, स्त्री. बिजली । [सासुख है]
अश्वमुख, पु. किन्नर, (त्रि) जिसका घोड़ेका
अश्वमेध, पु. यज्ञविशेष. इसमें एक प्रकारके उत्तम घोड़ेके माथे पर जयपत्र बांध, एक वर्षकेलिये घूमनेको छोड़देते हैं जब घोड़ा वर्ष पीछे अपने स्थान घर आजाय, कोई उसेनपकड़े उसको वेदविधिसे बड़ी २ पूजा ओंकेपीछे हना जाताहै और अग्निमें उसकी देवताओंके अर्थ बलियें दीजाती हैं ।
अश्वमेधीय, त्रि. अश्वमेधका घोड़ा ।
अश्वयुज, पु. १ म, नक्षत्र, स्त्री (जा) पौर्णमासी ।
अश्वविद्, पु. राजानल (त्रि) अश्वविद्याजाननेवाला ।
अश्वारि, पु. महिष; भैसा (त्रि) घोड़ोंका वैरी ।
अश्विनी, स्त्री. २७ नक्षत्रोंमें १ म, किन्नरी, सूर्यपत्नी।
अश्विनीकुमार, पु. स्वर्वैद्य; सूरजकी विंदसे अश्विनीमें उत्पन्न जोड़े बेटे ।
अश्विनौ(नौ), पु. अश्विणीके पुत्र स्वर्गवैद्य ।
अश्वीय, न. घोडोंका समूह, (त्रि) घोड़ेका ।
अषडक्षीण, न. दोमनुष्योंमे की हुईविचार ।
अषाढ, पु. असाढ महीना, ब्रह्मचारीका दंड, (स्त्री) (ढा) २७ मेंसे २० औ. २१ सवां नक्षत्र ।
अष्टक, न. अष्टाध्यायी ग्रंथ, ऋग्वेदके भाग, (स्त्री) (का) सप्तमी आदिक तीनदिन, उसदिनका श्राद्ध ।
अष्टगाध, पु. मकड़ी ।
अष्टधा, व्य. आठभांत ।
अष्टधातु, न. सोना २ चांदी ३ पीतल ४ तांबा ५ जस्त ६ कली ७ लोहा, यह सात धांतें ।
अष्टपाद्(द), मकड़ी । अनकबूत ।
अष्टम, पु. आठवा (स्त्री) (मी) अठवीं तिथि ।
अष्टमङ्गल, पु. आठ मंगलद्रव्य सिंह, वृष, हाथी, घी, कलश, पंखा, माला, भेरी, दीपक, (कईयोंके मतमे) ब्राह्मण, गौ, आग सोना, घी, सूर्य, पाणी, राजा । एक घोड़ा जिसका मुंह, खुर, छाती, पूंछ और गर्दनके बाल सुपेद हों ।
अष्टमिका, स्त्री. चारतोले वज़न ।
अष्टमूर्ति, पु. शिव, अष्टलोक, अष्टधातु ।

अष्टाकपाल, पु. पुरोडाश, तत्साधकयज्ञ। ८ कपालोंमे पकीहुई रोटी कछूएकी शकल्की, यज्ञवि०,।
अष्टाङ्ग, पु. योगविशेष, एकभांतकी प्रणाम; डंडौत।
अष्टादश,(त्रि) १८ संख्या, ।
अष्टावक्र, पु. मुनिविशेष, कुरूप ।
अष्टाशीत, त्रि. अठासी ।
अष्ठीवत्, पु. जानु; घुटना । [नीलापन
अष्ठीला, स्त्री. गोलपत्थर, बीमारी वि०, चोटका-
असपल, त्रि. वेखटके, (पु.) उत्तमपथ, सीधीराह।
असङ्क्रान्तमास, पु. मलमास ।
असङ्ख्य, त्रि. अगणित । वेशुमार ।
असङ्ख्यात, त्रि. संख्यातीत । अनगिनत ।
असंश्रव, त्रि. अकर्ण; बोल ।
असंस्कृत, त्रि. शास्त्ररीतिसे जिसके दशसंस्कार नहीं हुए, व्याकरणसे अनजान ।
असंहत, पु. व्यूहविशेष, त्रि. पृथक । फौजकाकिला वांधकर युद्धमें खलोणा ।
असकृत्, व्य. वार २।
असङ्ग, पु. वैराग्य, (त्रि) जि सेकिसीका संगनहिं।
असङ्गत, त्रि. खिलाफ़, बेलगाओ (स्त्री) (ति) वेलगाओ ।
असत्, त्रि. झूठा, दुष्ट, मूर्ख, (न) जगत् (पु) इन्द्र (स्त्री) (ती) छिनाल औरत, गशती ।
असत्ता, स्त्री. नामौजूदगी, झूठ ।
असत्य, त्रि. मूठा, (पु) झूठ ।
असद्धेतु, पु. दोषवाला सवव ।
असपत्न, त्रि. वेखटके, शत्रुरहित ।
असपिण्ड, त्रि. भिन्नवंश; घरकी सामा ।
असभ्य, त्रि. सभाके अयोग्य, नीच ।
असम, पु. बुद्ध (त्रि) विषम, अतुल्य; नवरावर ।
असमञ्जस, न. असङ्गत (पु) सगरका वड़ाभाई ।
असमर्थ, त्रि. दुर्बल, शक्तिरहित । नाताकत ।
असमवायीकारण, न. समवायी कारणके नज़दीकका दूसरा कारण । जैसे घड़ेका दो कपालोंका संयोग ।
असमीक्ष्य, व्य. विन सोचे । [ला
असमीक्ष्यकारिन्, पु. जालम; वे सोचे करने वा-
असंबद्ध, त्रि. अनन्वित; अनमिल ।
असमृद्धि, स्त्री. दुर्भाग्य । वदकिसमती ।
असमृद्ध, त्रि. दुर्भाग्य । वदकिसमत, गरीब ।
असाधारण, त्रि. विशेष, अधिक, (पु) दुष्ट-हेतु । खास, जो सवव दोषवाला है ।
असाधु, त्रि. अधर्मी । वद चलन ।
असाध्य, (त्रि) जो हो न सके, जो वसमें न आवे।
असाम्प्रत, व्य. अयुक्त । ना मुनासिव ।
असार, त्रि. निकम्मा, जिसमें सार नहिं ।
असि, पु. खड्ग, । तलवार ।
असिक, न. मुह, (त्रि) जिसके हाथ तलवार है ।
असिक्नी(क्ना), स्त्री. जनानोंमें जानेवाली दायी, एक दर्या,
असिगण्ड, पु. तकिया ।
असित, पु. काला, शनीचर, अंधेरापक्ष, एक मुनि । (त्रि) काले रंगका ।
असिदन्त, पु. घड़ियाल ।
असिद्ध, पु. न्यायमें दुष्ट हेतु (त्रि) अपक्व, (स्त्री) (द्धि) न्यायमतमें पक्षासिद्धि २ स्वरूपासिद्धि और व्याप्यत्वासिद्धि ।
असिधाव, पु. हथियार मांजनेवाला, सिकलीगर ।
असिधेनुका, स्त्री. छुरी ।
असिपत्र, पौंड़ा, शमशेर, मियान, खासनरक ।
असीम, त्रि. वेहद, वेअन्त ।
असु, न. चित्त, संताप, पु. पांचोंप्राण ।
असुभृत्, त्रि. प्राणी । जानवर ।
असुमत्, त्रि. प्राणी; जानवर । [राई ।
असुर, पु. राक्षस, सूर्य, राहु (स्त्री) (री) राक्षसी,
असुस्थता, स्त्री. वीमारी ।
असु(सू)क्षण, न. वेइज़ती ।
असुस्थ, त्रि. रोगी । बीमार ।
असूया, स्त्री. पराये गुणोंमें दोष चुनना ।
असूर्यपश्या, स्त्री. रणवासकी स्त्री जिसको सूरजकी किरण नहिं पहुंच सकती ।
असृज्, न. खून, लहू । [है ।
असृक्कर, पु. धातुविशेष; जिस पानीसे लहू वन्ता
असृक्प, पु. राक्षस (त्रि) खून पीनेवाला ।
असृग्धर, न. चमड़ा (स्त्री) (रा) नाड़ी । रग ।
अस्कन्त, त्रि. स्थायी । कायम ।
अस्खलन, त्रि. न खिसलनेवाला ।
अस्खलित, त्रि. निश्चल । कायम ।

अस्त, पु. अस्ताचल (न) मौत, त्रि. तजा हुआ ।
अस्तक, पु. मोक्ष । न जात ।
अस्तम्, व्य. विनाश, अन्तर्धान ।
अस्तमित; न. अस्तकाल । गुरुत्वकावकृत
अस्ति, व्य. विद्यमान । मौजूद ।
अस्तिमत्, त्रि. धनवान् ।
अस्तिमय, पु. प्रलय । आकिंचत ।
अस्तु, व्य. अंगीकार । अच्छा, सही ।
अस्तेय, न. सत्यता; सचाई, न चोरी ।
अस्त्यान, न. निन्दा, अपमान ।
अस्त्र, न. आयुध, तीर ।
अस्त्रविद्, त्रि. अस्त्रके जाननेहारा ।
अस्त्रिन्, त्रि. धनुषधारी ।
अस्थायिन्, त्रि. विनाशी । फ़ानी ।
अस्थाविर, त्रि. स्थूलदेहरहित; ऐन देह जिसमें न हड्डी औरन नाड़ी अदिक हैं ।
अस्थिधन्वन्, पु. शिव ।
अस्थिपञ्जर, पु. कंकाल । हड्डियोंका पिंजर ।
अस्थिसार, पु. मज्जा । चर्बी ।
अस्पर्श, त्रि. संबंध रहित । नछूने वाला ।
अस्पष्ट, अस्फुट, } त्रि. अव्यक्त । जो साफ़नहीं दीखता या ज़ाहिर नहीं ।
अस्वक्ष, न. चूल्हा (पु) मदन ।
अस्वप्न, पु. देव (त्रि) निद्रारहित ।
अस्वर्ग्य, न. बुराकाम, जिससे सुख या स्वर्ग न मिले । [हती ।
अस्वातन्त्र्य, न. पराधीनता । तावेदारी, मात-
अस्वाध्याय, पु. अनध्याय । अष्टमी चौदस पूर्णा- अमावस पड़यायेह दिन ।
अह, व्य. स्तुति, फेंकना, वियोग बोधक शब्द ।
अहंयु, त्रि. मग़रूर ।
अहःपति, पु. सूर्य । आफ़ताव ।
अहङ्कार, पु. अभिमान । ग़रूर ।
अहङ्कारिन्, पु. अभिमानी । मग़रूर ।
अहत्, न. नवाम्बर; नयावस्त्र ।
अहन्, पु. वासर, रोज, दिन ।
अहंपूर्विका, स्त्री. मैं पहिले मैं पहिले ।
अहमहमिका, स्त्री. अपनी अपनी बड़ाई ।
अहन्ता, स्त्री. ग़रूर ।
अहर, पु. दिवस; दिन ।
अहरह, व्य. हररोज़, नित्य ।
अहर्गण, पु. महीना, श्वेत वराहकी सृष्टिसे ब्रह्मसिद्धान्तके कल्पानुसार कलियुगके अन्त दिनतक सारे दिन ।
अहर्जर, पु. वरस ।
अहर्दिव, न. रोज़मरा, प्रतिदिन ।
अहर्निश, व्य. दिनरात ।
अहर्मुख, पु. प्रभात । सुवह ।
अहर्पति, पु. सूर्य । आफ़ताव ।
अहर्मणि, पु. सूर्य, चन्द्र । [(ल्या) गोतमकी स्त्री ।
अहल्य, त्रि. जिस खेतमें हल नहिं चला (स्त्री)
अहस्कर(स्पति), पु. सूरज, अर्कका पौदा ।
अहह, व्य. खेदआदि प्रकाशक शब्द ।
अहार्य, पु. पर्वत, (त्रि) जो चुराया न जाय ।
अहिंसा, स्त्री. अवध प्राणिको पीड़ा न देनी, दूसरोंको पीड़ा न देनी ।
अहि, पु. साप, सूरज, पांथ, एक असुर ।
अहिक, पु. धव वृक्ष स्त्री. (का) सिंवलका पेड़ ।
अहिकान्त, पु. पवन । हवा ।
अहिगण, पु. वहुतसांप ।
अहिछत्रा, स्त्री. शर्करा (पु) मेढ़ेसिंहीबूटी ।
अहिजित्, पु विष्णु, इन्द्र ।
अहित्र, पु. शत्रु, (त्रि) अपथ्य, बुरा, ।
अहितुंडिक, पु. सांप ।
अहिद्विष्, पु. इंद्र, गरुड़, मोर, नेउला, विच्छु ।
अहिनकुलिका, स्त्री. सांप और नेवलेका वैर ।
अहिफेन(ण), न. अफीम । [नक्षत्र ।
अहिर्वंधु, पु. शिव, चांद, रुद्र, उत्तरभाद्रपदा
अहिभुज, पु. गरुड़, मोर, नेवला ।
अहिमर्दिनी, स्त्री. गन्धमादिनी लता ।
अहीरणी, स्त्री. दुमूहीं सापनी ।
अहीरदिप्प, पु. दुमूहांसांप ।
अहुत, पु. ध्यानयोग (ता) ब्रह्मयज्ञ (त्रि) अनाहूत ।
अहृष्ट, त्रि. शोकार्त । ना खुश ।
अहे, व्य. शोक, करुणा, विषाद, संबोधन, निंदा, विस्मय, असूया, वितर्कबोधक शब्द ।
अहेय, त्रि. ग्राह्य; न छोड़ने योग्य ।

अहोरात्र, न. दिनरात ।
अहोवत, व्य. दया, खेद, तकान, संबोधन वाचक शब्द ।
अहोहे, व्य. आश्चर्य; अचरच बोधक ।
अन्हाय, व्य. झटिति । जल्दी ।

आ.

आ, वर्णमालाका दूसरा अक्षर, महादेव ।
आङ्, व्य. हां, थोड़ा, हद्, तवतक, चारोंओर, अव ऐसा मांताहै, इन अर्थोंका बोधक शब्द ।
अकम्र, त्रि. निस्पृह । वेखाहिश ।
आकर, पु. कान, मजमा, नेक, वेख ।
आकर्णन, न श्रवण; सुनना ।
आकर्णित, त्रि. सुनाहुआ ।
आकर्प, पु. जूए कापासा । [लाठी ।
आकर्पण, न. खेंचना (स्त्री) (र्णी) एक भांतकी
आकलन, न. एकट्ठा करना, वांधना, जमा करना, गिनना ।
आकल्प, पु. भेसवदलना, वा वनाना ।
आकल्पक, पु. अंधेरा, वेहोशी, गांठ, खाहिश ।
आकप, पु. पत्थरविशेष; कसौटी ।
आकस्मिक, त्रि. अचानक होनेवाला ।
आकांक्षा, स्त्री. इच्छा, जिसके विना जिस पदका अन्वय न होसके उस पदकी ख्वाहिश ।
आकांक्षिन्, त्रि. अभिलापी । ख्वाहिश मंद
आकाय, पु. घर, मसानकी आग । [अक्षर ।
आकार, पु. शकल, इशारह, वर्णमाला का २ रा
आकारण, न. बुलाना (स्त्री) (णा) बुलावा ।
आकारित, त्रि. बुलाया हुआ ।
आकाश, पु. गगन । आसमान् ।
आकाशदीप, पु. कार्तिकमासमें लक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थ आकाशमें ऊंचा दीपक दान करके जलाना ।
आकाशवाणी, स्त्री. नागहानी अवाज़ ।
आकुण्ठित, त्रि. लज्जित । शरमिंदा ।
आकुल, त्रि. व्याकुल । हैरान ।
आकूत, न. अभिप्राय (स्त्री) (ति) मनशा, शकल ।
आकृष्ट, त्रि. खेंचाहुआ ।
आकृति, स्त्री. शकल ।
आक्रन्द, पु. रोना, बुलाना, अवाज़ ।
आक्रम, पु. ज़ोरसे हमलाकरना, कावू ।
आक्रान्त, त्रि. दवाया हुआ, कावूकियाहुआ ।
आक्रान्त, त्रि. थका हुआ ।
आक्रीड, त्रि. उद्यम, कोशिश, जंगल ।
आक्रुष्ट, त्रि. निंदित, बुरा ।
आक्रोश, पु. निंदा । हजो । [वदहुआ देनेवाला ।
आक्रोशक, त्रि. वाग्दुष्ट । हजो करनेवाला या
आक्रोशन, न. शाप । वददुआ ।
आक्षद्यूतिक, } त्रि. जुआरिया ।
आक्षपाटिक, }
आक्षार, पु. जो स्त्रीअगम्य है, उसके साथ मैथुन, पाप । [गियाहै ।
आक्षारित, त्रि. जिसको मैथुनका दोष लगाया
आक्षि(क्षी)व, पु. सुहांजनेका पेड़ । पागल ।
आक्षेप, पु. भर्त्सन, झिड़कना, निंदा, अमानत, अर्थालंकार विशेष, ।
आखण्डल, पु. इन्द्र ।
आख(न), पु. कही, कुदाल ।
आखु, पु. चोर, सूअर, मूसा, कुदाल ।
आखुभुज, पु. विल्ला, सांप ।
आखुकर्णी, स्त्री. मूसेकन्नी वेल ।
आखुविपहा, स्त्री. देवताली लता ।
आखेट, पु. शिकार, मृगया ।
आखेटिक, पु. व्याध, (न) शिकार, (त्रि)भयानक ।
आखेटिन्, त्रि. भयानक, दारुण । शिकारी ।
आखोट, पु. अखरोटका पेड़ ।
आख्या, स्त्री. नाम, संज्ञा । इसम ।
आख्यात, त्रि. कथित, प्रसिद्ध, तिङन्त पद ।
आख्यान, न. कथा, नाम; कहना ।
आख्यायक, पु. कथक; कहनेवाला (स्त्री) (यिका) कहवत, गप्प ।
आख्येय, त्रि. कहनेके योग्य ।
आगस्, न. पाप, अपराध ।
आगत, त्रि. आया हु० । हाज़िर ।
आगन्तु(क), पु. अभ्यागत । महिमान ।
आगम, पु. शास्त्र, (न) तन्त्रशास्त्र ।
आगमन, न. आना । हाज़री ।
आगमित, त्रि. पढ़ाहुआ, याद किया हुआ ।

आगामिन्, त्रि. अगान्तु देखो ।
आगार, न. गृह; घर ।
आगुर, स्त्री. प्रतिज्ञा । अहद ।
आगुरव, त्रि. गरिष्ठ, चंदन ।
आग्नीध्र, न. होमका घर, (पु) प्रियमतका बड़ा पुत्र ।
आग्नेय, न. स्वर्ण, रक्त, घृत, नगरविशेष, अगस्त-मुनि, पुराणविशेष, (त्रि) अगका (स्त्री) (यी) अग्निकोन, अग्निदेवताकी स्त्री, स्वाहा।
आग्रह, पु. हठ, यत्न । हिमाकत ।
आग्रहायण, पु. मंगशिर महिना, (न) नवान्न खानेके पहिले यज्ञ (स्त्री) (णी) मंगशिरकी पूर्नो ।
आघट्ट, पु. अपुठकंडेका पेड़ ।
आघट्टन, न. घिसना, मिलना ।
आघर्ष(ण) पु. न. । घिसना, रगड़ना ।
आघाट, पु. सीमा । हद्द ।
आघात(न), पु. न. चोट, कसाईखाना ।
आघार, पु. घृत, मन्त्रविशेष; जिनको पढ़कर अग्निमें आहुति डालते हैं ।
आघारण, न. सींचना ।
आघूर्णन, न. घुमाना ।
आघूर्णित, त्रि. घुमाया हुआ ।
आघ्राण, न. सूंघना । (त्रि.) तृप्त । सेर ।
आघ्रात, पु. सूंघाहुआ, तृप्तहुआ २ ।
आङ्, व्य. थोड़ा, हद्द, चारोंओर ।
आङ्गिक, त्रि. वतानेवाला, (न) मृदङ्गबाजा ।
आङ्गिरस, पु. देवगुरु, वृहस्पति, गोत्रविशेष ।
आङ्गुलिक, त्रि. अंगुलीका ।
आचक्षुस, पु. पण्डित । दाना ।
आचमन, न. भोजनके पीछे मुहमें जल डालना, संध्याआदिके समय मुखमें तीनवार थोड़ा २ जल डालन ।
आचमनक, पु. पीकदान । [जल ।
आचमनीय, न. मुह धोनेका वा आचमन लेनेका
आचरण, न. चालचलन, आदत ।
आचर्य, त्रि. करने योग्य ।
आचान्त, त्रि. जिसने आचमन किया है ।
आचाम, पु. भात की मांड, आचमन ।
आचार, पु. चरित्र(स्त्री) (री) लताविशेष ।
आचार्यक, पु. आचार्यका काम ।

आचार्य, पु. वेद पढ़ानेवाला, सिखानेवाला, धर्मकार्य करानेवाला (स्त्री) (र्या) उपदेश करनेवाली ।
आचार्याणी, स्त्री. गुरुकी स्त्री ।
आचिक्षासा, स्त्री. कहनेकी इच्छा ।
आचित पु. गाड़ीका भार २५ मन (त्रि) इकट्ठा किया हुआ, ढांपा हुआ ।
आच्छन्न, त्रि. ढकाहुआ । महफूज़ ।
आच्छाक, पु. वृक्षविशेष ।
आच्छाद, पु. वस्त्र; कपड़ा ।
आच्छादन, न. वस्त्र, पड़दा, पहिरनेके वस्त्र ।
आच्छिन्न, त्रि. कटाहुआ, ज़ोरसे छीना हुआ ।
आच्छुरित(क) न. खिलखिलाकर हंसना, नाखूनोंको घिसना ।
आच्छोदन, न. मृगया । शिकार । [गल्ला ।
आज(क) न, घी, बकरेका मास आदि, बकरोंका
आजगव, न. शिवजीका धनुष ।
आजन्म, व्य. जनमसे ।
आजामय, पु. उमदह घोड़ा ।
आजानु, व्य, घुटनेतक । [गमन ।
आजि, स्त्री. युद्ध, हमवार धरती, निन्दा, झिड़क,
आजिर, न. भीतर । दरमियान ।
आजीव, पु. जीविका । गुज़ारा ।
आजीविका, स्त्री. वृत्ति । गुज़ारा ।
आजू(र), त्रि. विगारसे काम करनेवाला ।
आज्ञप्त, त्रि. आज्ञादिया हुआ । जाना हुआ ।
आज्ञा, स्त्री. हुकम ।
आज्ञात, त्रि. हुकमदिया हुआ,
आज्ञापक, त्रि. हुकम देनेवाला ।
आज्ञापत्र, न. हुकमनामा, परवाना ।
आज्य, न. घृत; घी ।
आज्यपा, पु. घृत पीनेवाला ।
आज्यभाग, पु. एकप्रकारकी आहुतिएं ।
आञ्जनेय, पु. हनूमान ।
आटविक, त्रि. जंगली ।
आटि(डि), पु. पक्षिविशेष, मत्स्यविशेष ।
आटिकी, स्त्री. स्त्रीविशेष; जिसे स्त्रियोंके चिन्ह नहीं।
आटीकर, पु. बैल, सांड ।
आटोप, पु. गरुड़, वाईसे पेटकी दर्द ।

आडम्बर, पु. डोंडी, दिखावा, अभिमान, गुस्सा, हाथीकी चिंघाट। [औन्स चीज़ आवे]
आढक, पु. न. वह वर्तन जिसमें ७ पौण्ड ११
आढ्य, त्रि. धनी, श्रेष्ठ।
आणक, त्रि. अधम। कमीना।
आणव, न. वारीक।
आणवीन, त्रि. ज़रातकी ज़मीन जिसमें सरसों आदि छोटे २ अनाज उत्पन्न हों।
आणि, पु. स्त्री. कोन, तलवारकी धार, हद्द।
आण्डीर, त्रि. अण्डेवाला। [आवाज़, शक।
आतङ्क, पु. भय, सन्ताप, रोग, ज्वर, मुरजकी
आतञ्चन, न. गालते हुए, सोनेमे सुगाहा देना, नाश, उपद्रव।
आतत, त्रि. व्याप्त, विस्तृत (न) ढोलकी आवाज़।
आततायिन्, त्रि. महापापी; ठगनेवाला (२) ज़मीन छीननेवाला, (३) आग लगानेवाला, (४) ज़हिर देनेवाला, (५) जोरू छीननेवाला (६) फ़रेब देनेवाला।
आतप, पु. धूप।
आतपत्र(क), न. छत्र; छाता।
आतर, पु. तराही, मलाही।
आतापिन्, त्रि. धूर्त, (पु) चिल्लपक्षी।
आतिथि, पु. अभ्यागत। महिमान। [है।
आतिथेय, न. अतिथिके लिये जो भोजन आदि
आतिथ्य, त्रि. अतिथिकी सेवा।
आतिशय्य, न. ज्यादती।
आतु, पु. भेलक; घरनई।
आतुर, त्रि. रोगी, बीमार, लाचार।
आतोद्य, न. हरभांतका वाजा।
आत्त, त्रि. पकड़ा हुआ, लिया हुआ।
आत्मक, त्रि. कुदरती, ज़ाती।
आत्मगत, व्य. मनहिमें।
आत्मगुप्ता, स्त्री. आलकुशी वेल।
आत्मघात, पु. खुदकुशी।
आत्मघातिन्, त्रि. खुदकुश।
आत्मघोश, पु. कव्वा।
आत्मज, पु. पुत्र, (स्त्री) (जा) वेटी, वुद्धि, औलाद।
आत्मन्, पु. स्वरूप, यत्न, मन, देह।
आत्मनीन, पु. वेटा, साला, विदूषक, (त्रि) अत्यन्त भला करनेवाला।
आत्मबोध, पु. आत्मज्ञान।
आत्मभू, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव।
आत्मम्भरिन्, त्रि. सिरफ़ अपना पेट करनेवाला।
आत्मयोनि, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव।
आत्मलाभ, पु. ज्ञान. निजरूप की प्राप्ति।
आत्मलोमन्, न. डाढ़ी, मूछ, वाल।
आत्मवत्, त्रि. मनस्वी। दाना, ज़िंदादिल।
आत्मविद् पु. जिसको अपना ज्ञान है।
आत्मशुद्धि, स्त्री. चित्तकी सफ़ाई, देहकी सफ़ाई।
आत्मसात्, त्रि. अपना।
आत्मस्थ, त्रि. हृदयका। [आग, पवन।
आत्मन्, पु. यत्न, बुद्धि, स्वभाव, ब्रह्म, जीव,
आत्मार्थ, त्रि. अपनेलिये।
आत्माश्रय, पु. आज़ादी, दलीलका नुकस।
आत्मीय, त्रि. अपना, (स्त्री.) (या) अपनी।
आत्रेय, पु. अत्रिमुनिका पुत्र।
आथर्वण, पु. पुरोहित, अथर्ववेदके जाननेवाला, अथर्ववेदके स्तोत्र।
आथर्वणिक, त्रि. अथर्व पढ़नेवाला ब्राह्मण।
आदत्त, त्रि. गृहीत; लियाहुआ।
आददान, त्रि. आदान; लेनेवाला।
आदर, पु. संभाव। इज़त।
आदर्श, पु. टीका, प्रति, आइन।
आदि, पु. पहिला, गणसूचक।
आदिकवि, पु. ब्रह्मा, वाल्मीकी।
आदिकारण, न. ईश्वर, प्रकृति, पहिला सबब।
आदितस्, व्य. पहिलेसे।
आदितेय, पु. आदितिके पुत्र।
आदित्य, पु. देवता, सूर्य, अर्कवृक्ष, १२ सूर्य।
आदित्यसूनु, पु. सुग्रीव, यम, शनीचर, सावर्णिमनु, वैवस्वतमनु, कर्ण।
आदिदेव, पु. नारायण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा।
आदिम, त्रि. पहिला।
आदिमत्, त्रि. कारण, वाला।
आदिष्ट, त्रि. हुकम दियाहुआ।
आदीनव, पु. कष्ट, दोष, अभाग।
आदृत, त्रि. पूजित। इज़तकियाहुआ।

आदृत्य, त्रि. आदरके योग्य ।
आदेश, पु. आज्ञा । हुकम ।
आदेशन, इजाजत देना ।
आद्य, त्रि. प्रथम, (न) धान्य, (स्त्री) (द्या) दुर्गा ।
आद्योपान्त, न. आदिसे अन्ततक ।
आधमन, न. बंधक, आधि । अमानत ।
आधर्षण, न. दोषको सबूत करना, धमकना ।
आधर्षित, त्रि. जिसका कसूर देखाहै, धमका हुआ ।
आधान, न. हमल, अमानत ।
आधार, पु. वृक्षका आलवाल, आश्रय, पनाह ।
आधि, पु. मनकी चिन्ता, अमानत ।
आधिक्य, न. ज्यादती ।
आधिज्ञ, त्रि. मनकी चिन्ताजाननेवाला, (पु) टेढा ।
आधिपत्य, न मिलकीयत, हकूमत । [धन ।
आधिवेदनिक, न. विवाहके समय स्त्रीको दातव्य
आधिभौतिक, त्रि. बाघ साप आदिसे दुःख ।
आधुनिक, त्रि. इदानींतन; अबका ।
आधूत, त्रि. कांपाहुआ, कंपित ।
आधूर्य, न. दुर्बलता । कमजोरी ।
आधेय, त्रि. एकवस्तुपर रक्खीहुई दूसरी वस्तु ।
आधोरण, पु. हाथीवान् ।
आध्मात, त्रि. बजायाहुआ, फूकाहुआ, जलायाहुआ (पु) जलोदरका रोग ।
आध्मान, पु. बाईसे पेटफूलना, लुहारकी धोंकनी ।
आध्या, स्त्री. फ़िकर, याद्दाश्त ।
आध्यान, न. यजुर्वेदविहित अध्वर्युकर्म ।
आन, पु. ऊर्ध्वश्वास । ऊंचीसास ।
आनक, पु. ढोल, नौबत, मृदङ्ग, मेघगर्जना ।
आनकदुन्दुभि, पु. वसुदेव, (स्त्री) (भी) बडी नौबत ।
आनत, त्रि. झुकाहुआ, प्रणाम कियेहुये (स्त्री) (ति) प्रणाम, सन्तोष । [आ, फैलाहु० ।
आनद्ध, न. चमडेसे मढ़ाहुआ बाजा(त्रि) मढ़ाहु-
आनन, न. मुख । चेहरा ।
आनन्त्य, न. बहुत । बेशुमार पन ।
आनन्द, पु. खुशी । शराब, छन्दोविशेष, आत्मा, ब्रह्म, (त्रि) सुखी (स्त्री) (न्दा) विजया ।
आनन्दथु, पु. खुशी (त्रि) खुश ।
आनन्दन, न. जुदाईके वकत दोस्तोंसे मिलना ।
आनन्दभुज्, पु. प्राज्ञ, जीव । रुद्र ।
आनन्दमय, पु. जीव, प्राज्ञ ।
आनन्दि, पु. हर्ष । खुशी । [(त्रि) वहांका ।
आनर्त, पु. नृत्यशाला, देशविशेष, द्वारिकादेश ।
आनय, पु. उपनयन संस्कार ।
आनयन, न. लाना ।
आनर्तित, त्रि. कांपाहुआ । [लंबाई ।
आनाह, पु. एक बीमारी जब विष्ठामूत्र बंदहो,
आनाय, पु. जाल, लाना ।
आनाय्य, पु. दक्षिणाग्नि । [नक्षत्र ।
आनिलि, पु. हनूमान्, भीम, (स्त्री) (ली) स्वाति
आनीत, त्रि. लाया हुआ ।
आनुगुण्य, न. समता; बराबरी ।
आनुपूर्वी, स्त्री. तरीका ।
आनुमानिक, न. प्रधान (त्रि) कयासीबात ।
आनुरूप्य, न. सादृश्य । बराबरी ।
आनुश्रविक, पु. वेदविहित कर्म ।
आनूप, पु. जहांपानी बहुत है ऐसा देश ।
आनृत, त्रि. झूठा (न) झूठ ।
आन्तरतम्य, त्रि. अतिसादृश्य । निहायत बराबरी ।
आन्तर, व्य. भीतर ।
आन्तिका, स्त्री. नाट्योक्तीमें बड़ी बहिन ।
आन्दोलन, न. कांपना, फिरविचारन ।
आन्धसिक, त्रि. पाचक; रसोईया ।
आन्वयिक, त्रि. उत्तम कुलका ।
आन्वहिक, त्रि. दिन २का ।
आन्वीक्षिकी, स्त्री. तर्कविद्या, अध्यात्मविद्या ।
आप, पु. (वां) वसु (न) जल, पाप ।
आपगा, स्त्री. नदी ।
आपण, पु. दुकान, कोठी ।
आपत्ति, स्त्री. मुसीबत, नुक्सदलील ।
आपद्, (दा), स्त्री. मुसीबत ।
आपन, न. लाभ खरच, दुकान । [कान्दार ।
आपनिक, पु. इन्द्रनील मणि, किरात (त्रि) दु-
आपन्न, त्रि. मुसीबत ज़दा, विपदावाला ।
आपन्नसत्वा, स्त्री. हामिला ।
आपराह्णिक, त्रि. पिछले पहिरका ।
आपव, पु. वसिष्ठमुनि ।
आपमित्यक, न. पलटेकी वस्तु ।
आपस्, न. जल, पाप, कन्याराशि ।

आपस्तम्भ, पु. धर्मशास्त्र बनानेवाला एक मुनि, कल्पसूत्रका कर्ता ।
आपस्तम्भिनी, स्त्री. लिंगिनीलता ।
आपाक, पु. कन्दू; पजावा ।
आपात, पु. गिरना, गिराना(न) जल्दी ।
आपाततस्, व्य. अब । फौरन ।
आपान, न. मदपीनेकी सभा, कौलचक्र ।
आपानभूमि, स्त्री. कलालखाना, पीनेकी जगह ।
आपालि, पु. केशकीट; जूं ।
आपिञ्जर, न. स्वर्ण; सोना ।
आपी, स्त्री. पूर्वाषाढा नक्षत्र ।
आपीड, पु. शिरोभूषण, मुकुट, घरका छज्जा ।
आपीडित, त्रि. चारोंओरसे घुटाहुआ ।
आपीत, न. धातुविशेष (त्रि) मत्त । तनकजर्द ।
आपीन, पु. कूआ, (न) लेवा, (त्रि.) तनकमोटा ।
आपूप्य, पु. सत्तू, मैदा बेसन आदि ।
आपूरित, त्रि. पूरा भराहुआ ।
आपूप, न. रंग ।
आपृच्छा, स्त्री. बातचीत । राशी ।
आपोक्लिम, न. लग्नसे ३ य, ६ ष्ठ, और १२ वीं
आप्त, त्रि. विश्वासपात्र, सब ऐबोंसे खाली, लायक, (न) लाभ (स्त्री) (प्ता) जटा ।
आप्तकाम, त्रि. पूर्णकाम, पु. परमेश्वर ।
आप्ति, स्त्री. हुसल, रिश्ता, मेल ।
आप्तोक्ति, स्त्री. सिद्धान्तवाक्य, मुनसिफ़का फ़ैसला ।
आप्य, न. मंत्रविशेष, (त्रि) प्राप्त करनेयोग्य ।
आप्यान, न. मोटाताज़ा ।
आप्यायन, न. तसल्ली, सेरी ।
आप्यायित, त्रि. सेर, खुश, मोटा ।
आप्लवन, न. स्नान, न्हाना ।
आप्लुत, पु. स्नातक (त्रि) स्नात; ब्रह्मचर्यसे गृहस्थमें आगत, न्हाया हुआ । [गृहस्थी बना है ।
आप्लुतव्रतिन्, पु. वेदपढ़ा हुआ ब्रह्मचारी जो
आबद्ध, पु. मज़बूत बंधन, जोतर (त्रि) बंधा हु०
आबाधा, स्त्री. खेलकूद पीड़ा, त्रिभुजके दोनों घोर ।
आबाल्य, न. लड़कपनतक ।
आबिल, (त्रि) मैला, नाखुशरा ।
आवृत, त्रि. घिराहुआ, लपेटाहुआ ।
आवुत्त, पु. बहनोई ।
आवृत्ति, स्त्री. आवर्तन । दुहराना, मागना ।
आभरण, न. भूषण । ज़ेवर ।
आभा, स्त्री. शोभा, चमक, वाईकी बीमारी ।
आभाति, स्त्री. छाया । साया ।
आभाषण, न. गुफ़्तगूकरना ।
आभाषित, त्रि. कहाहुआ ।
आभास, पु. वेदान्तका एक मत, दीप्ति, सदृश, अवतरणिका, प्रतिबिम्ब ।
आभास्वर, पु. ६४ चोसठ देवताओंका गण ।
आभिजन, पु. कुलसम्बन्धी । रिश्तहदार ।
आभिजात्य, न. कुलीनता । खान्दानी ।
आभिधा, स्त्री. ध्वनि । अवाज़, नाम ।
आभिमुख्य, न. सामनापन ।
आभीक्ष्ण्य, न. पौनःपुन्य; बार २ ।
आभीर, पु. गोप (स्त्री) गोपी, अहीरी ।
आभीरपल्लि, स्त्री. ग्वालोंके गांओं ।
आभील, न. कष्ट (त्रि) भयानक ।
आभोग, पु. पूर्णता, यत्न, वरुणका छतर ।
आभ्युदयिक, त्रि. नांदीमुखश्राद्ध ।
आम, त्रि. कच्चा, बीमारी, आमका फल ।
आमगन्धि, न. गन्धयुक्त चिताधूम आदि, जलते मासकी बू ।
आमन्त्रण, न. बुलाना । दावत देना ।
आमन्त्रित, त्रि. आहूत; बुलाया हुआ ।
आमय, पु. रोग, (न) कुष्टकी बीमारी ।
आमरक्त, पु. पेचशकी बीमारी, । [फल ।
आमलक, पु. आंवला (स्त्री) (की) (न) आवलेका
आमात्य, पु. मंत्री (न) वर्तन ।
आमान्न, न. कच्चा अन्न ।
आमाशय, पु. आमस्थली । मेदह ।
आमिक्षा, स्त्री. दधिकूर्चिका; फिटाया हुआ दूद ।
आमिष, न. मांस, रूप, भोजन (स्त्री) (षा) जटा-मांसी बूटी ।
आमुष्मिक, (त्रि) परलोकका, (स्त्री) की परलोककी ।
आमुष्यायण, त्रि. ऊँचघरानेका ।
आमृष्ट, त्रि. घर्षित; घिसाहुआ ।
आमोद, पु. तेजबू, खुशी ।
आमोदन, न. प्रसन्न करना ।
आमोदित, त्रि. खुश, खुश किया हुआ ।

आमोदिन् त्रि. खुशबाश, खुशबूदार ।
आम्नाय पु. वेद, उपदेश, कुल ।
आम्र, पु. आमका पेड़ (न) फल ।
आम्रातक, पु. भिलवेका पेड़ ।
आम्रावर्त, पु. आमचूरा । [हुआ ।
आम्रेडित, त्रि. द्विरुक्त; दुबारा तिबारा कहा
आम्ल, न. तुरश जायका (पु) इमलीका पेड़ ।
आय, पु. आमदनी, जनाने घरोंका मुहाफिज़ ।
आयत, त्रि. दीर्घ (पु) समद्विभुज । लंबा चौड़ा, मुतज़ावियुलसाकैन ।
आयतच्छाया, स्त्री. केलेका पेड़ ।
आयतन, न. यज्ञस्थान, घर, परिमाण ।
आयति(ती), स्त्री. लंबाई, मिलाप, हासिल ।
आयत्त, त्रि. अधीन, मातहत (स्त्री) (त्ति) प्यार, मर्यादा, बल, दिन, हद्द, लंबाई, ।
आयव्यय, पु. जमाखर्च (स्त्री) बख़तर ।
आयस, न. लोहा (त्रि) लोहेसेबनाहुआ. ।
आयात, (त्रि) आगत; आयाहुआ ।
आयाम, पु. लंबाई, चिरकाल, रोक, विस्तार ।
आयास, पु. न, जीवनेका समय, उद्यम, यत्न ।
आयुक्त, त्रि. नियुक्त, निपुण । होशियार ।
आयुस्, न. उमर, घी ।
आयुध, पु. अस्त्र । हथियार ।
आयुर्वेद, पु. चिकित्साशास्त्र, वेदका उपाङ्ग ।
आयुष्मत्, त्रि. चिरजीवी, विष्कम्भ आदियोगोंमेंसे १३ वां, योग । [गिज़ा ।
आयुष्य, त्रि. उमरवाला, (न) उमर, बीमारकी
आये, व्य. दूरसे पुकारनेमें नामके पहिले आनेवाला शब्द ।
आयोग, पु. व्यापार, भेटा, तीर ।
आयोजन, न. जमा करना, लेना, कोशिश ।
आयोज्य, त्रि. जमा करने लायक ।
आयोधन, न. युद्ध, वध, युद्धस्थान ।
आर, न. लोहेका सूआ, कोन (पु) मंगल और शनीचर ग्रह, संगतरेका पेड़ ।
आरकूट, पु. न. पीतलका जेवर, मोचीकी आर ।
आरक्ष, न. हाथीके कानोंके निचला स्थान, फौज, (त्रि) रक्षक । पु. अच्छी रक्षा [देशका ।
आरट्टज, पु. आरट्ट देशका घोड़ा, (त्रि) आरट्ट
आरणि, पु. जलावर्त; पानीकी भंवर ।
आरण्य, त्रि. जंगली । [दीप दिखाना ।
आरति, स्त्री. उपराम, निवृत्ति । प्रतिमाके सामने
आरब्ध, त्रि. आरम्भ किया हुआ ।
आरभट, पु. बेशर्मी, बहादुरी, (स्त्री) (टी) नटोंके काम, नटोंकी खेल ।
आरम्भ, पु. कामका शुरु, उद्यम, अहंकार ।
आर(रा)व, पु. शब्द ।
आरात्, व्य. दूर, नेड़े ।
आराति, पु. शत्रु । दुश्मन ।
आरातीय, त्रि. पासका ।
आरात्रिक, न. नीराजना, आरती ।
आराधक, पु. सेवक; पुजारी । [सेवा ।
आराधन, न. उपासना, प्राप्ति । खिदमत करना,
आराम, पु. बाग, विश्राम, बगीचा । [वाला ।
आरालिक, पु. रसोईया (त्रि) तिरछा चलने-
आरु, पु. आड़ूका पेड़, कैंकड़ा, सूअर ।
आरू, पु. पीला रंग ।
आरूढ, त्रि. चढ़ाहुआ ।
आरोग्य, न. सेहत ।
आरोग्यशाला, स्त्री. हसपताल ।
आरोप, पु. थापना, एक अलंकार, समक्ष रखना ।
आरोपन, न. रखना, एक वस्तुमें दूसरी मानलेनी, झुकाना, कमानपर तीर चढ़ाना (स्त्री) (णी) सीढ़ी ।
आरोह, पु. लंबाई, चढ़ाई, (स्त्री) (हा) चूतड़, ऊंचाई, परिमाणवि० ।
आरोहण, स. न. सीढ़ी, न. ऊंचे चढ़ना ।
आर्कि, पु. शनीचर, यम, सूर्यका पुत्र ।
आरग्वध, पु. दारचीनीका पेड़ ।
आर्घ्य, न. शरद ।
आर्घ्या, स्त्री. मधुमक्खी ।
आर्जव, न. सीधापन, सफ़ाई । [मन्त्र ।
आर्जिक, पु. ऋचाकी व्याख्या (त्रि) ऋग्वेदके
आर्जुन, पु. अर्जुनका पुत्र ।
आर्त, त्रि. पीडित । तकलीफ़ ज़दा (स्त्री) (र्ति) दर्द, बीमारी, कमानका गोशा ।
आर्थ, त्रि. अर्थ सम्बन्धीय; धनका ।
आर्थिक, त्रि. पंडित, धनी ।
आर्द्र, त्रि. भीगा, गीला ।

आशंसा, स्त्री. प्रार्थना, आकांक्षा, अनुमान, प्रशंसा, इच्छा । दरखास्त, खाहिश ।
आशंसित, त्रि. चाहाहुआ, कहाहुआ, कौल ।
आशंसु, त्रि. प्रार्थना करनेवाला, चाहनेवाला ।
आशस, पु. भोजन । खुराक ।
आशङ्का, स्त्री. खौफ, शक ।
आशय, पु. मुराद, पनाह, मनशा, भाग ।
आशयाश, पु. अग्नि; आग ।
आशर, पु. आग, राक्षस (स.) (सी) ।
आशा, स्त्री. उमीद, खाहिश, तरफ़ ।
आशाढ, पु. असाडमाह, पलाशका दंड ।
आशाबन्ध, पु. मकड़ी का जाला । तसल्ली ।
आशास्य, न. तअरीफ़के लायक ।
आशु, व्य. जल्दी, (त्रि) जल्दरौ, पु. हवा, तीर, सूरज (न) धान ।
आशुग, पु. हवा, तीर, सूर्य (त्रि) जल्दरौ ।
आशुतोष, त्रि. तुरंतप्रसन्न होनेवाला (पु)महादेव।
आशुशुक्षणी, स्त्रि. आग, हवा ।
आशेकुटी, स्त्री. पर्वत; पहाड़ ।
आशौच, न. अशुद्धि । नापाकी । [पत्थर ।
आश्मन, पु. वरुण, (त्रि) पत्थरका (न) बहुत
आश्मरथ्य, पु. ऋषीका नाम, जमनेपर आयाहुआ दही ।
आश्यान, त्रि. सूखा, ।
आश्रम, पु. न. शास्त्रोक्त ४ धर्म, वन, मठ, मुनियोंके रहनेका घर ।
आश्रयाश, पु. आग (त्रि) पनाह का विगाड़नेवाला ।
आश्रयासिद्ध, पु. हेत्वाभास विशेष, । [दार ।
आश्रव, पु. अंगीकार, दुःख, ऐब(त्रि) फरमा बर-
आश्रित, त्रि. शरणागत, अधीन, तावेदार, पतित ।
आश्रुत, त्रि. कबूल कियाहुआ, सुनाहुआ ।
आश्रेय, त्रि. शरणागतोंका बचाने वाला ।
आश्लेष, पु. अलंकारविशेष; मिलाप ।
आश्व, न. घोड़ोंका झुंड । [पुर्णा ।
आश्वयुज, पु. असूज महीना (स्त्री) (जी) असूजकी
आश्वस्त, त्रि. तसल्लीदिया हुआ । साविर ।
आश्वास, पु. उम्मीद, भरोसा, तसल्ली ।
आश्विक, पु. घोड़ेका सामान ।
आश्विन, पु. कुवारमाह (स्त्री) (नी) कुआरकी पूनो ।
आश्विनेयौ, पु. दोनों अश्विनीकुमार ।
आश्विन, न. घोड़ेकी एक मंजिल ।
आषाढ, पु. असाढ महीना, मलय पहाड़ (स्त्री) (ढा) ग्यारवां बारवां नक्षत्र (ढी) असाडकी पूनों।
आष्ट, न. आकाश । आसमान ।
आस्, व्य. हरफ़निदा । हाय २ ।
आस, न. धनुष । कमान । [लगानार ।
आसक्त, त्रि. आशक (स्त्री) (क्ति) इशक (व्य)
आसज्जन, न. सजना, मिलना ।
आसन, न. पीढ़ी, चौकी, हाथीका कंधा,(स्त्री) (ना) विठाव, (नी) दुकान, योगका ३ य, अङ्ग, ज़ीरेका पोदा ।
आसन्न, त्रि. नजदीकका ।
आसन्य, न. प्राण, (त्रि) मुखका ।
आसव, पु. मद्य (न) प्याला, ।
आसादन, न. रखना, वैठना, पाना, मिलना ।
आसादित, त्रि. लभाहुआ, पायाहुआ ।
आसार, पु. मूसलाधार वारिश, पानीकी बूंद ।
आसिक, पु. तलवारवाला (स्त्री) (का) आसन ।
आसित, त्रि. वैठाहुआ, घर ।
आसीन, त्रि. वैठाहुआ ।
आसुति, पु. शराब निकालना । [(री) राई ।
आसुर, पु. दैत्योंका, (पु) विवाह विशेष, (स्त्री)
आसुरि, पु. कपिलमुनिका शिष्य ।
आसेचन, त्रि. प्रियदर्शन (न) प्रोक्षण ।
आसेध(क), अवरोध । कैद, रोक ।
आस्कन्दन, न. मलामत, जंग, सुखाना ।
आस्कन्दित, त्रि. घोड़ेकी चाल ।
आस्त, त्रि. फेंका हुआ ।
आस्तर(क), पु. विस्तरा, घोडेकी झूल ।
आस्तरण, न. विस्तरा, वैठन, हाथीका कंबल ।
आस्तिक, पु. मुनिविशेष, (त्रि) ईश्वर और परलोकके माननेवाला ।
आस्तिक्य न. वैदिकधर्ममें श्रद्धा ।
आस्तीक, पु. मनसापुत्र मुनिविशेष ।
आस्तीर्ण, त्रि. फैलायाहुआ, विछायाहुआ ।
आस्था, स्त्री. विश्वास, निश्चय, सभा ।
आस्थान, न. सभा, आश्रम ।
आस्थित, त्रि. आरूढ; चढ़ाहुआ । [पात्र ।
आस्पद, न. प्रतिष्टा स्थान, प्रभुता, अहंकार,
आस्पंदन, न. कांपना ।

आर्द्रक, पु. मूलवि०, आदरक ।
आर्द्रा, स्त्री. २७ नक्षत्रोंमें से ६ ठा, नक्षत्र ।
आर्द्रित, त्रि. भिगोया हु० ।
आर्य, पु. श्रेष्ठ, वृद्ध, स्वामी, मित्र, गुरु, भर्ता, (स्त्री) (र्या) दादी, नानी, एक छंदका नाम ।
आर्यक, पु. दादा, नाना (त्रि) मानी, श्रेष्ठ। [विंद ।
आर्यपुत्र, पु. नाट्यमें नटी का भर्ता, गुरु पुत्र वा स्वा-
आर्यमिश्र, त्रि. मानी, सज्जन । दोस्त ।
आर्यावर्त, पु. विंध्य और हिमालयके वीचकी धरती, पवित्रभूमि ।
आर्ष, त्रि. ऋषिप्रणीत; ऋषिका वनाया ।
आर्हत, पु. बुद्धविशेष, (स्त्री) (ता) योग्यता ।
आल, न. हरिताल, (त्रि) वड़ा, चौडा, ।
आलगर्द, पु. केंचुआ ।
आलजिव्हा, स्त्री. उपजिन्हा, घंडी ।
आलभन, न. स्पर्श; छूना ।
आलस्य, त्रि. आलसी । सुस्त ।
आलम्ब, पु. अवलम्ब, आश्रय । पनाह ।
आलात, न. अङ्गार; भपता अंगारा ।
आलान, न. रस्सा, हाथीवांधनेकाखूंटा, संगल ।
आलाप, न. पु. संभाषण, गुफ़्तगू ।
आलावर्त, न. कपड़ेका वनाहुआ पंखा ।
आलाबू स्त्री. तुम्बी, कद्दू । [पाल (त्रि) अनर्थ ।
आलि,(ली) स्त्री. विच्छू, भौंरा, (स्त्री) सहेली, पुल,
आलिङ्गन, न. बगलगीरी । [वाला ।
आलिङ्गिन्, पु. मिरदंग वाजा (त्रि) गल लगाने-
आलिञ्जर, पु. मट, चाटी ।
आलिन्द, पु. चौतडा, चवूतरा ।[पैंतडा, चाटना ।
आलीढ, त्रि. चाटाहुआ, खायाहुआ, तीरंदाज़का
आलीन, त्रि. छिपा हुआ, पिघला हुआ ।
आलीनक, न. धातुविशेष; रांगा, शीशा ।
आलु, पु. चन्द्र, कन्दविशेष; आलू, स. घड़ी ।
आलेख्य, न. चित्र, नकश, तहरीर । त्रि. लिखने योग्य (न) लिखना ।
आलोक, पु. दीदार; चमक, तअरीफ़ ।
आलोकन, न. दीदार, नज़र ।
आलोचन, न. सोच, विचार ।
आलोडन न. मन्थन; वलोना ।
आवदज, पु. घोडेकी किसम, अरवी घोड़ा ।
आवत्थ पु. पतित ब्राह्मण (त्रि) अवन्तीका ।
आवरण, न. ढकना, ढाल, छावनी, कोट ।
आवर्त, पु. घुंवर, घुमाओ, (न) सोनामाखीधात, वादल वि० । [स्त्री (नी) कुठाली ।
आवर्तन न. दुग्ध आदिका विलोना, पिघलना,
आवर्तिनी, स्त्री. मेढासिंही वूटी ।
आवलि, स्त्री. जमात, कतार ।
आवश्यक, त्रि. ज़रूरी (स्त्री) (ता) ज़रूरत ।
आवसथ, पु. आरामगाह, व्रतविशेष ।
आवह, पु. सातपवनोंमेसे एक, स्थान ।
आवहमान, त्रि. क्रमागत, अचिर प्रचलित ।
आवहित, त्रि. उखाड़ा हुआ ।
आवाधा, स्त्री. निहायतदर्द, मुसीवत ।
आवाप, पु. थाम्ला, वर्तन, वोना ।
आवास, पु. गृह; घर । [लनेको हाथ जोड़ने ।
आवाहन, न. आव्हान; वुलाना (नी) देवताके वु-
आविक, पु. कम्वल (त्रि) ऊनका, भेड़ीका ।
आविग्न, पु आज़ुर्दह, दुःखी । [मूर्ख ।
आविद्ध, त्रि. टेढ़ा, हराहुआ, फैंकाहुआ, विंधाहु०,
आविध, पु. वरमा, मेखचू ।
आविर्भाव पु. प्रगट । ज़ाहिर ।
आविर्भूत, त्रि. ज़ाहिर हुआ २, प्रकटहुआ २।
आविष्कार, पु. नवप्रकाश, प्राकट्य, क्षेपण, ज़ाहिर जहूर, फेंकना ।
आविस, त्रि. मैला, गंदा ।
आविष्करण, न. ज़ाहिर करना ।
आविस्, व्य. व्यक्त । ज़ाहिर ।
आवी, स्त्री. प्रसूतकालकी पीड़ा ।
आवीत, त्रि. गत; जनेऊवाला ।
आवुक, पु. नाट्योक्तिमे पिता ।
आवृत, त्रि. वेष्टित; लपेटा हुआ, घिराहुआ ।
आवृत्त, त्रि. अभ्यास कियाहुआ, दुहरायाहुआ, गुणाहुआ, (स्त्री) (त्ति) दुहराव, ज़र्ब ।
आवेद, पु- प्रार्थना । दरखास्त ।
आवेदन, न. निवेदन । गुज़ारिश ।
आवेश, पु. अहङ्कार, मिरगीरोग, भूतकी विमारी ।
आवेशन, न. दखल, गुस्सा, दायरा, कारखाना, आसेव । [अपना, ख़ास ।
आवेशिक, त्रि. आगन्तु, महिमान, इज़तमंद

इतरेद्युस्, व्य. और किसी दिन।
इतश्चेतश्च, व्य. इधर उधर।
इतस्ततस्, व्य. यहां वहां। [यह।
इति, व्य. सबब, बाब, आदि, खतम, बंदोबस्त
इतिकर्तव्यता, स्त्री. काम करनेका तरीक।
इतिकथा, स्त्री. बेफायदा कलाम।
इतिमध्ये, व्य. इतनेमें।
इतिह, व्य. सुनासुनाया। नसीहत। [हानी।
इतिहास, पु. पूर्ववृत्तान्त, भारतग्रंथ, तारीक, क-
इतिहासपुराण, न. अथर्वका ब्राह्मणभाग।
इत्थम्, व्य. सब प्रकारसे, ऐसे।
इत्थम्भूत, त्रि. इसभांत हुआ २।
इत्वर, त्रि. क्रूरपुरुष, नीच, दरिद्री, (स्त्री) (री)। छिनाल औरत। [पालकी।
इत्य, पु. गम्य, (स्त्री) (त्या) जानेके योग्य,
इत्यादि, व्य. वगैरह २।
इदम्, त्रि. सामनेका। यह।
इदानीम्, व्य. अभी, इसी समय।
इदानीन्तन, त्रि. अबका, नया। [प्रकट, सामने।
इद्ध, न. धूप (त्रि) अचरज, रौशन (स्त्री) (द्धा)
इध्मा, न. ईंधन।
इन, पु. सूरज, स्वामी, एक राजाका नाम।
इन्दि(न्दी)वर, न. नीलोत्पल नीलोफर।
इन्दिर, पु. भौरा, (स्त्री) (रा) लक्ष्मी देवी।
इन्दिरावर, पु. विष्णु (न.) नीलोफर।
इन्दीवरणी, स्त्री. मृगशिर नक्षत्र।
इन्दु, पु. चांद, कापूर, पूर्वानक्षत्र।
इन्दुकमल, न. सुपेदकमल।
इन्दुकलिका, स्त्री. केतकीका फूल।
इन्दुकान्ता, स्त्री. रात, चन्द्रकान्त मणि,।
इन्दुक्षय, पु. अमावस।
इन्दुजा, स्त्री. नर्मदा नदी।
इन्दुभृत्, पु. शिव, महादेव।
इन्दुमती, स्त्री. पूर्णिमा, राजा अजकी रानी।
इन्दुर, पु. मूसा, चूहा।
इन्द्र, पु. अदिति का बेटा, देवताओंका राजा,। परमेश्वर, महाधनी, ज्येष्ठानक्षत्र, योगविशेष।
इन्द्रक, न. सभाका घर।
इन्द्रकील, पु. मंदिर, पर्वत।
इन्द्रकुञ्जर, पु. ऐरावत हाथी।
इन्द्रगोपक, पु. खटिया, पलंग।
इन्द्रगोप, पु. पटवीजना, वीरबहुटी।
इन्द्रजाल, न. मायाका काम। फरेब।
इन्द्रजालिक, त्रि. मदारी, फरेबी।
इन्द्रजित्, पु. रावणका पुत्र, मेघनाद।
इन्द्रतूल, न. कपास, रुई।
इन्द्रधनुस्, पु. कौस कजा।
इन्द्रदारु, पु. दियारका पेड़।
इन्द्रध्वज, पु. भादोंसुदी द्वादशीको प्रजारक्षणार्थ इन्द्रदेवकी पूजाके लिये खड़ी कीहुई ध्वजा।
इन्द्रनील, पु. मरकतमणि, पन्ना।
इन्द्रपुष्पा, स्त्री. विषलांगलवेल।
इन्द्रप्रस्थ, न. पुरानी देहली; दिल्ली।
इन्द्रवृद्धा, स्त्री. जखमकी बीमारी।
इन्द्रभ, ज्येष्ठा नक्षत्र।
इन्द्रभेषज, न. शुण्ठी; सौंठ।
इन्द्रमहकामुक, पु. श्वान; कुत्ता।
इन्द्रयव, पु. न. इन्द्रजौं। यह दवाई पेचश और दस्तकी बीमारी पर दी जातीहै।
इन्द्रसावर्णि, पु. १४ वां मनु।
इन्द्रलुप्त, न. बालझरका रोग।
इन्द्रलुप्तिक, त्रि. गंजा। [छन्द।
इन्द्रवज्रा, स्त्री. ग्यारां २ अक्षरोंके पादवाला
इन्द्रवारुणी, स्त्री. लताविशेष।
इन्द्रिय, न. हृषीक; १ आंख २ कान ३ नाक ४ जिव्हा, ५ त्वचा पांच ज्ञानेन्द्रिय, १ वाक २ पाणी ३ पाद ४ पायु ५ उपस्थ पांच कर्मेन्द्रिय।
इन्द्रियार्थसन्निकर्ष, पु. इन्द्रियका वस्तुके साथ सम्बन्ध, वह छय प्रकारका है।
इन्द्रियायतन, न. शरीर, देह।
इन्द्रियार्थ, पु. इन्द्रियोंसे जो वस्तु जानी जाती है। जैसे १ रूप २ रस ३ गंध ४ स्पर्श, ५ श्रवण।
इन्द्रेज्य, पु. बृहस्पति।
इन्धन, न. समित्; समिधा; लकड़ी।
इभया, स्त्री. स्वर्णक्षीरा लता।
इभ, पु. हाथी, आठवां।
इभकण, स्त्री. गजपीपल।
इभदन्ता, स्त्री. गांदिनी लता।

आस्फाल, पु. हाथीका कान हिलाना (न) फिसलना।
आस्फालन, न. मारना, चोट लगाना, गरूर करना, फलांग मारना।
आस्फालित, त्रि. चोट दिया हुआ, कुदायाहुआ।
आस्फोट, पु. पहलवानोंकी भुजाका शब्द।
आस्फोटक, पु. अखरोटका पेड़। [सलाई।
आस्फोटन, न. फूटना, खिलना, (स्त्री) (नी) वेधनी,
आस्फोत, पु. अर्कका पेड़, पलाशका पेड़, आवनूसका पेड़।
आस्माकीन, त्रि. हमारी तर्फ़का। [(स्था)स्थिति।
आस्य, न. मुख, चेहरा (त्रि) मुहमेंका, (स्त्री)
आस्रप, पु. मूलानक्षत्र १९ वां, नक्षत्र।
आस्रव, पु. दुःख, खिरना।
आस्वाद, पु. मीठा आदि ६ रस, । ज़ायका।
आस्वादन, न. ज़ायका, स्वाद।
आस्वादिन्, त्रि. सुरस, मिष्ट; मीठा, स्वादी।
आह, व्य. हैरानी, अफ़सोस आदिका बोधक शब्द।
आहत, त्रि. गुनाहुआ, ताड़ाहुआ (न) नया श्वेत कपड़ा (पु) डिब्बा, ढक्का।
आहनन, न. मारना, चोट लगाना।
आहरण, न. लाना, छीनना, जमा करना।
आहर्तृ, पु. चोर (त्रि) लानेवाला, छीननेवाला, जमाकरनेवाला।
आहव, पु. युद्ध, यज्ञ।
आहवन, न. यज्ञ।
आहवनीय, पु. यज्ञाग्निविशेष।
आहाव, पु. चौंबच्चा, बुलावा।
आहार, पु. भोजन।
आहार्य, त्रि. खानेके योग्य, पु. नेपथ्य, अजनवी।
आहित, त्रि. रक्खाहुआ, किया हुआ।
आहितुण्डिक, पु. सपादा, मदारी।
आहुत, स्त्री. पु. सम्यक् हुत (न) गृहस्तके ५ यज्ञ, (ति) मन्त्र पढ़कर देवताके अर्थ घी आदि जो वस्तु अग्निमें डाली जातीहैं।
आहूत, त्रि. बुलायाहुआ, (स्त्री) (ती) बुलावा।
आहृत, त्रि. लायाहुआ, जमा किया हुआ, छीना हुआ।
आहो, व्य. हरफ़ निदा, सवाल, संशय, विचार अर्थमें।
आहोस्वित्, व्य. विकल्प, प्रश्न, जाननेकी इच्छा। या।
आन्ह, पु. बहुतदिन। [भाग।
आह्निक, त्रि. दिनका, (न) खुराक, महाभाष्य ग्रंथका
आह्राद, पु. मेघशब्द। बादलकी गर्ज।
आल्हाद, पु. आनन्द। खुशी।
आल्हादित, त्रि. आल्हादयुत। खुश।
आव्हय, पु. नाम। इसम।
आव्हा, स्त्री. नाम। इसम।
आव्हान, न. बुलाना।

इ

इ, व्य. भेद, क्रोधोक्ति, खेद, (पु) काम, दया, हैरानी, हजो, बुलाना।
इक्षु, पु. पौंडा, गन्ना।
इक्षुकाण्ड, पु. मूंज, काही, गन्ना।
इक्षुज, पु. गुड़, खांड।
इक्षुपत्र, पु. जुवार, मक्की।
इक्षुप्र, पु. कानां।
इक्षुमती, स्त्री. खास एक दर्या।
इक्षुतूल, पु. बांसका पेड़।
इक्षुयन्त्र, न. वेलना, रसनिकालनेकी कल।
इक्षुरस, पु. पौंडेका रस, रौह।
इक्षुव(वा)टी, स्त्री. पौंडेका खेत, कुमाद।
इक्षुसार, पु. सूर्यवंशी १ म, राजा। [पुत्र।
इक्ष्वाकु, पु. सूर्यवंशी १ म, राजा, वैवस्वतमनुका
इक्ष्वारि(लि)(क), पु. काही घास।
इङ्ग, पु. इलम, इशारह, (त्रि) उमदा, अजीव।
इङ्गित, न. इशारह। हर्कत,। [जाननेवाला।
इङ्गितज्ञ, त्रि. भावज्ञ, (स्त्री) (ज्ञा) तीक्ष्णबुद्धि। मनकी
इङ्गुद, पु. हिंगोटका पेड; जीयापोता।
इच्छा, स्त्री. ख़ाहिश। मर्जी।
इच्छजिल, पु. बृहस्पति, (त्रि) सिखाणेवाला।
इच्छु(क) पु. चाहनेवाला। [गौ, कुट्टिनी।
इज्य, पु. गुरु, (स्त्री) (ज्या) दान, यज्ञ, पूजा, संगम,
इडा, स्त्री. बुधकी भार्या, गौ, वचन, धरती, स्वर्ग, नाडी खास, सरस्वती नदी, त्वरा। [याहुआ।
इत, त्रि. गयाहुआ, याद किया हुआ, हासिल कि-
इतस्, व्य. यहांसे।
इतर, त्रि. गैर, नीच।
इतरथा, व्य. और भांतसे।
इतरेतर, त्रि. आपसमें।
इतरेतरयोग, पु. आपसमेका, द्वंद्वसमासका भेद।

ईषत्, व्य. थोड़ा सा।
ईषत्कर, पु. बहुतथोड़ा। थोड़ासा।
ईषदुष्ण, त्रि. थोड़ा गरम।
ईषा, स्त्री हलका फल।
ईषि(षी)का, स्त्री. रुई, हाथीकी आंख।
ईषिर, पु. अग्नि; आग।
ईहा, त्रि. उद्यम, इच्छा।
ईहामृग, पु. बनावटी मृग, रूपक विशेष।
ईहातस्, व्य. कोशिशसे।
ईहित, त्रि. चेष्टित, चाहाहुआ, (न) यत्न।

उ

उ, पु. पांचवां स्वर, शंकर, भूत, उग्र, प्रभु, विष्णु, महादेव, धृप, हर (व्य) विस्मय, संबोधन, पादपूरण, प्रश्न।
उक्त, न. एकाक्षरछंद, (त्रि) कथित (स्त्री) (क्ति) कथन। [एकाक्षर छंद।
उक्थ, न. उपवेद. (पु) यज्ञविशेष, (स्त्री) (क्था)
उक्थशस्, पु. याज्ञिक; यजमान।
उक्षण, न. सेचन; सींचना।
उक्ष, (त्रि) धोयाहुआ, (स्त्री) (क्षा) बैल।
उक्षतर, पु. बड़ाबैल,।
उक्षन्, पु. वृष, (त्रि) सेचक। स्त्री. गौ।
उक्षाल, त्रि. द्रुत, उंचा, बड़ा, (पु) बंदर।
उक्षित, त्रि. सींचाहुआ, लिपाहुआ।
उखर्वल, पु. तृणविशेष, भोजपत्र,।
उखल, पु. उत्तम तृण।
उखा, स्त्री. पिठर, बटलोही, हांडी, भरथिया।
उख्य, त्रि. पैदर, हांडीमें पकाहुआ।
उग्र, पु. महादेव, नक्षत्रवि॰ वर्णसङ्कर, (त्रि) क्रोधी, न. क्रोध। क्षत्रियकी विंदसे शूद्रीकी संतान (स्त्री) (ग्रा)। चण्डी [वर्चे।
उग्रगन्ध, न. हींङ् (पु) लस्सन, बंवा, (त्रि) बूदार,
उग्रचण्डा, स्त्री. देवीका नाम।
उग्रतारा, स्त्री. देवी विशेष। [राजा।
उग्रधन्वन्, पु. शिव, इन्द्र, (त्रि) देवताओंका
उग्रनासिक, त्रि. दीर्घनासिक।
उग्रश्रवस्, त्रि. रोमहर्षणका बेटा, सूत।
उग्रसेन, पु. मथुरापुरीका राजा, कंसका पिता।
उङ्कण, पु. जूं।

उचित, त्रि. योग्य, युक्त। मुनासिब, उचित।
उच्च, त्रि. उन्नत; ऊंचा।
उच्चकैस्, व्य. प्रांशु; बहुतऊंचा।
उच्चटा, स्त्री. लहशन, रत्ती, छोटी झाड़ी।
उच्चण्ड, त्रि. अतिउग्र, त्वरायुक्त। खौफ़नाक।
उच्चतर, त्रि. बहुतऊंचा।
उच्चतरु, पु. नरियेलका पेड़।
उच्चदेव, पु. श्रीकृष्ण देव।
उच्चाय, पु. फलोंफूलोंका चुनना, पुञ्ज, नांदी-कटि, वस्त्र-ग्रन्थि, नीवि।
उच्चार, पु. उच्चारण, विष्ठा।
उच्चारण, न. कथन। तलफ़ज़।
उच्चावच, त्रि. कईप्रकारसे, भलाबुरा।
उच्चूल, पु. ध्वजाके अगलीकोन।
उच्चैस्, व्य. ऊंचा, बड़ा लंबा, काफ़ी।
उच्चैःश्रवस्, पु. इन्द्रदेवताका घोड़ा, बहिरा।
उच्छास्त्र, त्रि. शास्त्रसे विरुद्ध।
उच्छिख, त्रि. प्रकाशमान। रौशन।
उच्छित्ति, स्त्री. तबाही, बेखकनी।
उच्छिन्न, त्रि. विनष्ट; कटाहुआ, उखड़ाहुआ।
उच्छिलीन्ध्र, पु. ककरुंधा, खुंब।
उच्छिष्ट, त्रि. जूठा, छोड़ा हुआ। न. जूठ।
उच्छिष्टमोदन, पु. सिक्थ; सित्था, मोम।
उच्छीर्षक, न. तकिया, पगड़ी।
उच्छुष्क, त्रि. उपरसे सूखा।
उच्छून, त्रि. फूलाहुआ, बढ़ाहुआ।
उच्छृङ्खल, त्रि. शृंखलारहित। बेतरतीब।
उच्छेद, पु. उन्मूलन; उखाड़ना।
उच्छेदिन्, त्रि. उखाड़नेवाला, नाशकरनेवाला।
उच्छोषण, त्रि. सुखानेवाला, (न) सुखाना।
उच्छ्वसन, न. प्राण; सांस भरना।
उच्छ्रा(च्छ्र)य पु. ऊंचाई, बड़ाई, तरक्की।
उच्छ्रित, त्रि. ऊंचा, छोड़ाहुआ, बढ़ाहुआ।
उच्छ्वसित, त्रि. विकसित, जीवित; खिलाहुआ, जीताहुआ (स्त्री) (ति) ऊंचाई, बढ़ाई।
उच्छ्वास, पु. प्राण; सांस। [आवंतीपुरी।
उज्ज(य)यिनी, स्त्री. राजा विक्रमकी राजधानी
उज्जयन्त, पु. रैवतपर्वत; हिंदुस्थानके उत्तरमें।
उज्जासन, न. मारण। कतल।

इभपोटा, स्त्री. हाथीका बचा।
इभ्य, त्रि. धनवान् (स्त्री) (भ्या) हथिनी।
इयत्, त्रि. एतावत्; इतना (स्त्री) (त्ता) हद्द, मिकदार, तादाद।
इरम्मद, पु. बिजली, समुंदरी आग। [स्त्री।
इरा, स्त्री. धरती, मदिरा, पानी, सरस्वती, कश्यप
इरावत, पु. समुद्र, मेघ, राजा, (त्रि) जलका, (स्त्री) (ती), परीक्षितराजाकी रानी।
इरिण, न. शून्य, बंजर ज़मीन।
इरु, पु. बीज। तुख़म।
इरेश, पु. विष्णु, राजा, वरुण, अच्छा बोलनेवाला।
इर्वारु, स्त्री. ककड़ी फल। [गाय, कलाम,।
इलविला, स्त्री. कुबेरकी माता, विश्वश्रवा मुनि की,
इल, त्रि. प्रेरक, (स्त्री) (ला) वैवखतमनुकी लड़की (ली) नीलगिरिसे पच्छमनिषधसें उत्तरका देश।
इलिका, स्त्री. पृथिवी; धरती।
इल्वल, पु. खास देत्य, खासमछली, (स्त्री) (ला) मृगशिर नक्षत्रके तारा।
इलावृत, न. देशविशेष।
इव, व्य. तुल्य, उत्प्रेक्षा। मांनिंद, भी, जैसाकि।
इष, पु. असोजमहीना।
इषि, न. वन(स्त्री) (षी) हाथीके नेत्रोंकी पुतली।
इषिर, पु. आग।
इषीक, पु. मूंज, काही।
इषु, बाण; तीर, पांच।
इषुधि, स्त्री. तूनीर। तर्कश।
इष्ट, न. यज्ञकार्य, पु. यज्ञ, एरंडीका वृक्ष, (त्रि) चाहिया हुआ, प्यारा, पूजाहुआ (स्त्री) (ष्टा) प्यारी।
इष्टकापथ, न. ईटोंकी बनी सड़क।
इष्टि, स्त्री. यज्ञ, अभिलाषा, श्लोकोंका सङ्ग्रह।
इष्य, पु. वसन्तका मौसिम।
इष्वास, न. धनुष (त्रि) तीरंदाज।
इह, व्य. अस्मिन्काले; यहां।
इहत्य, त्रि. यहांका। [जहान।
इहामुत्र, व्य. यहां वहां। इस जहान और दूसरे

ई

ई, ४ र्थ स्वर,
ई, स्त्री. लक्ष्मी, (पु.) काम (व्य) दया, रंज, ज़ाहर।
ईक्षक, पु. देखनेवाला।
ईक्षण, न. चशम, नज़ारा।
ईक्षा, स्त्री. देखना,। नज़ारा।
ईक्षणीय, त्रि. शोभायमान। देखनेयोग्य।
ईक्षित, त्रि. दृष्ट, देखाहुआ।
ईडा, स्त्री. स्तवन। तअरीफ़।
ईड्य, त्रि. स्तुत्य; स्तुतियोग्य।
ईडित, त्रि. स्तुत; जिस की स्तुति की गई है।
ईति, स्त्री. छ प्रकारके खेतीके रोग। जैसे— ज्यांदा वारिश, २ ना वारश, ३ मकड़ी ४ चूहा, ४ पंछी ५ मकड़ी ६ देशोपद्रव।
ईदृक्ष, त्रि. ईदृश; ऐसा।
ईदृश्, (श) (क्ष) त्रि. ऐसा।
ईप्सा, स्त्री. हासलकरनेकी इच्छा।
ईप्सित, त्रि. चाहा हुआ।
ईप्सु, त्रि. हासिल करनेकी इच्छावाला।
ईयिचत्, त्रि. हासल किया हुआ।
ईरण, पु. पवन, (न) चलन। [हुआ।
ईरित, त्रि. फेंकाहुआ, प्रेरण किया हुआ, कहा
ईरितात्मन्, पु. प्रकटितस्वरूप।
ईर्म्म, न. फोड़ा, जख़म, क्षत।
ईर्य्या, स्त्री. चर्या।
ईर्यापथ, पु. ध्यानआदि उपाय।
ईर्वारु, पु. स्त्री. ककड़ी।
ईर्षा, स्त्री. अक्षमा। हसद।
ईर्षालु, त्रि. ईर्षावाला। हासिद।
ईर्ष्यक, त्रि. ईर्षाकरनेवाला। हासिद।
ईर्ष्या, स्त्री. अक्षमा।
ईर्ष्यालु, त्रि. न क्षमा करनेवाला।
ईला, स्त्री. धरती, वार्ता, सौम्य स्त्री।
ईलि, स्त्री. कटारी, कटार।
ईलित, त्रि. स्तुत। तअरीफ़ किया हुआ।
ईश्(श) त्रि. ईश्वर (पु) महादेव, ईशानकोण (स्त्री) (शा) भगवती।
ईशसखा, पु. कुबेर।
ईशान, पु. महादेव, परमेश्वर, सूर्य (त्रि) स्वामी, (स्त्री) (नी) देवी। [हकूमत।
ईशिता, स्त्री. अणिमा आदि आठ ऐश्वर्योंमेंसे एक,
ईश्वर, पु. शिव, काम, भगवान् (त्रि) इकबालवाला (स्त्री) (री) देवी।
ईश्वर सभा, स्त्री. देवसभा।

ईषत्, व्य. थोड़ा सा।
ईषत्कर, पु. बहुतथोड़ा। थोड़ासा।
ईषदुष्ण, त्रि. थोड़ा गरम।
ईषा, स्त्री हलका फल।
ईषि(षी)का, स्त्री. रुई, हाथीकी आंख।
ईषिर, पु. अग्नि; आग।
ईहा, त्रि. उद्यम, इच्छा।
ईहामृग, पु. बनावटी मृग, रूपक विशेष।
ईहातस्, व्य. कोशिशसे।
ईहित, त्रि. चेष्टित, चाहाहुआ, (न) यत्न।

उ

उ, पु. पांचवां स्वर, शंकर, भूत, उग्र, प्रभु, विष्णु, महादेव, वृष, हर (व्य) विस्मय, संबोधन, पादपूरण, प्रश्न।
उक्त, न. एकाक्षरछंद, (त्रि) कथित (स्त्री) (क्ति) कथन। [एकाक्षर छंद।
उक्थ, न. उपवेद. (पु) यज्ञविशेष, (स्त्री) (क्था)
उक्थशास्, पु. याज्ञिक; यजमान।
उक्षण, न. सेचन; सींचना।
उक्ष, (त्रि) धोयाहुआ, (स्त्री) (क्षा) बैल।
उक्षतर, पु. बड़ाबैल,।
उक्षन्, पु. वृष, (त्रि) सेचक। स्त्री. गौ।
उक्षाल, त्रि. द्रुत, उंचा, बड़ा, (पु) बंदर।
उक्षित, त्रि. सींचाहुआ, लिपाहुआ।
उखर्वल, पु. तृणविशेष, भोजपत्र,।
उखल, पु. उत्तम तृण।
उखा, स्त्री. पिठर, बटलोही, हांडी, मरथिया।
उख्य, त्रि. पैठर, हांडीमें पकाहुआ।
उग्र, पु. महादेव, नक्षत्रवि० वर्णसङ्कर, (त्रि) क्रोधी, न. क्रोध। क्षत्रियकी विंदसे शूद्रीकी संतान (स्त्री) (ग्रा)। चण्डी [वच।
उग्रगन्ध, न. हींङ् (पु) लस्सन, चंपा, (त्रि) बूदार,
उग्रचण्डा, स्त्री. देवीका नाम।
उग्रतारा, स्त्री. देवी विशेष। [राजा।
उग्रधन्वन्, पु. शिव, इन्द्र, (त्रि) देवताओंका
उग्रनासिक, त्रि. दीर्घनासिक।
उग्रश्रवस्, त्रि. रोमहर्षणका बेटा, सूत।
उग्रसेन, पु. मथुरापुरीका राजा, कंसका पिता।
उङ्कुण, पु. जूं।
उचित, त्रि. योग्य, युक्त। मुनासिब, उचित।
उच्च, त्रि. उन्नत; ऊंचा।
उच्चकैस्, व्य. प्रांशु; बहुतऊंचा।
उच्चटा, स्त्री. लहशन, रत्ती, छोटी झाड़ी।
उच्चण्ड, त्रि. अतिउग्र, त्वरायुक्त। खौफ़नाक।
उच्चतर, त्रि. बहुतऊंचा।
उच्चतरु, पु. नरियेलका पेड़।
उच्चदेव, पु. श्रीकृष्ण देव।
उच्चाय, पु. फलोंफूलोंका चुनना, पुञ्ज, नांदी-कटि, वस्त्र-ग्रन्थि, नीवि।
उच्चार, पु. उच्चारण, विष्ठा।
उच्चारण, न. कथन। तलफ़्ज़।
उच्चावच, त्रि. कईप्रकारसे, भलाबुरा।
उच्चूल, पु. ध्वजाके अगलीकोन।
उच्चैस्, व्य. ऊंचा, बड़ा लंबा, काफ़ी।
उच्चैःश्रवस्, पु. इन्द्रदेवताका घोड़ा, बहिरा।
उच्छास्त्र, त्रि. शास्त्रसे विरुद्ध।
उच्छिख, त्रि. प्रकाशमान। रौशन।
उच्छित्ति, स्त्री. तबाही, बेखकनी।
उच्छिन्न, त्रि. विनष्ट; कटाहुआ, उखड़ाहुआ।
उच्छिलीन्ध्र, पु. ककरंघा, खुंब।
उच्छिष्ट, त्रि. जूठा, छोड़ा हुआ। न. जूठ।
उच्छिष्टमोदन, पु. सिक्थ; सित्था, मोम।
उच्छीर्षक, न. तकिया, पगड़ी।
उच्छुष्क, त्रि. उपरसे सूखा।
उच्छून, त्रि. फूलाहुआ, बढ़ाहुआ।
उच्छृङ्खल, त्रि. शृंखलारहित। बेतरतीब।
उच्छेद, पु. उन्मूलन; उखाड़ना।
उच्छेदिन्, त्रि. उखाड़नेवाला, नाशकरनेवाला।
उच्छोषण, त्रि. सुखानेवाला, (न) सुखाना।
उच्छ्वसन, न. प्राण; सांस भरना।
उच्छ्रा(च्छ्र) य पु. ऊंचाई, बड़ाई, तरक्की।
उच्छ्रित, त्रि. ऊंचा, छोड़ाहुआ, बढ़ाहुआ।
उच्छ्वसित, त्रि. विकसित, जीवित; खिलाहुआ, जीताहुआ (स्त्री) (ति) ऊंचाई, बड़ाई।
उच्छ्वास, पु. प्राण; सांस। [आवंतीपुरी।
उज्ज(य)यिनी, स्त्री. राजा विक्रमकी राजधानी
उज्जयन्त, पु. रैवतपर्वत; हिंदुस्थानके उत्तरमें।
उज्जासन, न. मारण। कतल।

उज्जृम्भ, पु. प्रफुल्ल; खिलाहुआ।
उज्जृम्भित, त्रि. खिलाहुआ, (न) खिलन।
उज्वल, त्रि. चमकदार, सफ़ा, (न) सोना,
उज्वलन, न. चमकाना।
उञ्छ, पु. कनशआदान। खोशाचीनी।
उञ्छन, न. खोशाचीनी।
उञ्छवृत्ति, स्त्री. खोशे चीनीसे गुज़ारा।
उञ्छशील, त्रि. खोशा चीनीसे गुज़ारा करनेवाला।
उट, न. तृण, पत्ता।
उटज, पु. न. पत्तोंकी कुटिया, झोंपड़ी।
उडुन, न. पु. नक्षत्र, (न) जल।
उ(डु) डूप, पु. न. मेला, (पु) चांद।
उडुपति, पु. चांद।
उडुपथ, पु. आकाश। आसमान। [कोढ़ह।
उडुम्बर, पु. उदुंबरका पेड़, तांबा। दहू लीज,
उड्डयन, पु. नभोगति; उडारी।
उड्डामर, त्रि. अति प्रचंड, अफ़ज़ल। [उड़नेवाला
उड्डीन न. पंछियोंका ऊंचेउड़ना, (त्रि) आकाशमें
उड्डीयमान, त्रि. उड़ता हुआ।
उड्डीश, पु. शिव, तंत्रशास्त्र।
उड्ड, पु. पानी, जवापूल।
उत, व्य. प्रश्न, शङ्क, या, भी (त्रि) सीया हुआ।
उतथ्य, पु. एकमुनिका नाम, अंगिराका बड़ापुत्र।
उतक, व्य. प्रश्न, विचार, विकल्प।
उताहो, व्य. सवाल, या, भी।
उताहोस्वित्, व्य. विकल्प, शङ्क, या।
उत्कट, त्रि. तेज, मस्त, ऊंचा,।
उत्कण्ठ, पु. शृङ्गारके १६ रसोंमेंसे तेरवां रस, (स्त्री) (ण्ठा) दिली खाहिशकेलिये फिकर, रञ्ज।
उत्कण्ठित, त्रि. ख्वाहिशमंद,।
उत्कन्धर, त्रि. ऊंची गर्दवाला।
उत्क (त्का) २, पु. राशि, पुंज, विक्षेप, प्रसारण।
उत्कर्ष, पु. बड़ाई। ज्यादती, (त्रि) श्रेष्ठ [फैलाना।
उत्कर, पु. धानका तोदालगाना, फैलाना, हाथपांव
उत्कल, पु. शिकारी, भार उठानेवाला, उड्रदेश; उडीसा।
उत्काका, स्त्री. हरवरस सूनेवाली गौ। [करना।
उत्कार, पु. अनाजको उछालकर भूसेसे अलग
उत्कास, पु. खांसीकी वीमारी।
उत्किर, त्रि. उछालनेवाला।
उत्कीर्ण, त्रि. लिखाहुआ, विंधाहुआ, उछला हुआ।
उत्कुट, न. सीधासोना।
उत्कुण, पु. केशकीट; जूं।
उत्कूट, पु. छत्र; छाता।
उत्कृति, स्त्री. एकछन्दका नाम, जिसके एक पदमें २६ अक्षर होते हैं।
उत्कृष्ट, त्रि. अतिउत्तम; वढ़िया।
उत्कोच, पु. घूंस. रिशवत।
उत्क्रम, पु. उछलना, वेतरतीवी। [हुआ।
उत्क्रान्त, त्रि. बाहर निकलाहुआ। सवकत केगया
उत्क्रुष्ट, पु. गौगा, चिल्लाट, शोर।
उत्क्रोश, पु. गूंज। गौगा।
उत्क्षिप्त, पु. दधूरेका फल, (त्रि.) उछाला हुआ।
उत्क्षेपण, न. उछालन, १६ मनोंका पैमाना।
उत्खात, त्रि. जड़से उखाड़ा हुआ, फ़ाड़ा हुआ।
उत्खातिन्, त्रि. उखाड़ने वाला। [खेलना।
उत्खातकेलि, पु. सींङ्आदिसे मटी ३ छालकर
उत्त, त्रि. आर्द्र; गीला।
उत्तंस, पु. कर्णफूल, मुकुट, कलगी।
उत्तप्त, न. सूखामास (त्रि) जलाहुआ।
उत्तम, त्रि. भला, (पु) उत्तानपादराजाकी सुरुचि स्त्रीमेंसे पुत्र, ३ य, मनु।
उत्तमर्ण, त्रि. कर्ज़देनेवाला। [वड़ी सज़ा।
उत्तमसाहस, न. १४०००० पण का दंड, सबसे
उत्तमाङ्ग, न. माथा; सिर।
उत्तमौजस्, पु. बहादुर, एक राजाका नाम।
उत्तम्भन, न. अवलम्बन; खूंटी।
उत्तर, न. जवाब, (पु) विराट्राजाका वेटा, (स्त्री) (रा) उत्तराजाकी वेटी, शमाल, (त्रि)नेक, योग्य।
उत्तरकुरु, पु. न. वर्षविशेष। पु. बहु० कोशल देश।
उत्तरकोशल, पु. देशवि० (स्त्री) (ला) अयोध्यापुरी।
उत्तरक्रिया, स्त्री. मरनेके पीछे पुत्र आदिसे किये पिंड श्राद्ध तर्पण आदि। [हुई लहर।
उत्तरङ्ग, न. दरवाज़ेके ऊपरकी दहलीज़, उछलती
उत्तरण, न. पार उतरना।

उत्तरतस्, व्य. शमाली तर्फ़से ।
उत्तरभाद्रपद, न. २१ वां, नक्षत्र ।
उत्तराभास, पु. झूठा जवाब । [छय मास ।
उत्तरायण, न. देवताओंका दिन, माघसे लेकर
उत्तराहि, व्य. उत्तरदिशा । शमाल, शमालसे ।
उत्तरीय, न. बृहतिका; दुपट्टा ।
उत्तरेद्युस्, व्य. अगलेदिन में । [जवाब ।
उत्तरोत्तर, त्रि. सिलसिलेवार, क्रमसे, जवाब दर
उत्तान, त्रि. उर्ध्वमुख; सीधा ।
उत्तानपाद, पु. स्वयम्भूमनुका बेटा । [सोनेवाला ।
उत्तानशय, पु. बहुतछोटा बालक, (त्रि) सीधा
उत्ताप, पु. गरमी, धूप । [उलांघना ।
उत्तार, त्रि. बड़ाऊंचा, उमदा, (पु) उताड़,
उत्ताल, (त्रि) बड़ा, अच्छा, श्रेष्ठ, विकट शब्दकारी, पु. स्त्री. बंदर ।
उत्तिष्ठमान, त्रि. उठता हुआ, चढ़नेवाला ।
उत्तीर, व्य. तीर । किनारा ।
उत्तीर्ण, त्रि. पारंगत, मुक्त ।
उत्तुङ्ग, त्रि. बहुतऊंचा, (स्त्री) (ङ्गा) ऊंची ।
उत्तेजन, न. कामकेलिये फिर २ कहना (स्त्री) (ना) उकसाना, भेजना । [दियाहुआ ।
उत्तेजित, त्रि. भेजाहुआ, उकसाया हुआ, तसल्ली
उत्तोलक, त्रि. उठानेवाला, तोलनेवाला ।
उत्तोलन, न. उठाना, तोलना ।
उत्तोलित, त्रि. उठाया हुआ, तोला हुआ ।
उत्यक्त, क्रि. छोड़ाहुआ ।
उत्त्रास, पु. भय, (त्रि) वेखौफ़ ।
उत्त्रासन, न. डराना. भयदिखाना ।
उत्थान, न. उठाना ।
उत्थानैकादशी, स्त्री. कार्तिकशुक्ल एकादशी ।
उत्थापन, न. उठाना, जगाना ।
उत्थित, त्रि. उठाहुआ। तैय्यार ।
उत्पतन, न. पंछियोंकी ऊंची उड़ारी, उछलन ।
उत्पतत्, पु. उंचा चढ़नेवाला, उछलनेवाला ।
उत्पत्ति, स्त्री. पैदाश ।
उत्पथ, पु. खोटीराह ।
उत्पन्न, त्रि. जात; पैदाहुआ हुआ ।
उत्पल, न. नीलकमल, कुद्दवाई (त्रि) पतला, दुबला (स्त्री) (ला) तुपकी रोटी ।
उत्पलिनी, स्त्री. कमलोंका मजमद, कमलनी ।
उत्पवन, न. मार्जन; कुशद्वारा जलसींचना ।
उत्पाटन, न. उखाड़ना ।
उत्पाटित, त्रि. उखाड़ाहुआ ।
उत्पात, पु. उपद्रव, कहिर, । भूंचालआदि [वाला ।
उत्पादक, पु. पशुवि॰पिता, (त्रि) पैदाकरने
उत्पाद्य, त्रि. पैदेकरनेके योग्य ।
उत्पाव, पु. साफ़ घी ।
उत्पाली, स्त्री. सेहत ।
उत्पिञ्जल, त्रि. बड़ाहैरान, पीला २ ।
उत्पिपरसु, त्रि. उछलना चाहने वाला ।
उत्पिष्ट, त्रि. पीसाहुआ ।
उत्पीड, पु. फेन; झाग, दर्द ।
उत्पीडन, न. दुखदेना, तकलीफ़देना ।
उत्प्रास, पु. मुसकराव ।
उत्प्रेक्षा, स्त्री. अलंकारविशेष; प्रस्तुतको छोड अप्रस्तुतके साथ अभेदकल्पना । वेपरवाही, मुकाबला । [नाओ,डोंगी ।
उत्प्लव, पु. न. ऊंचे उछलना, कूद, (स्त्री) (वा)
उत्प्लवन, न. ऊंचे उछलन ।
उत्प्लुति, स्त्री. ऊंचीछाल।
उत्फाल, पु. लम्फ, कूद ।
उत्फुल्ल, त्रि. प्रफुल्ल; फूलाहुआ ।
उत्स, पु. चशमा, झरना, तोदा ।
उत्सङ्ग, पु. गोदी, पट्ट ।
उत्सङ्गित, त्रि. साथी, (पु) जख़म ।
उत्सन्न, त्रि. नाशहुआ२, गिराहुआ ।
उत्सर्ग, पु. त्याग, दान, मलत्याग, यज्ञविशेष, व्या. समान्य सूत्र ।
उत्सर्जन, न. तजना, देना, । [चक्रका अवयव ।
उत्सर्पण, न. उछालन (स्त्री) (र्पिणी) जैनोंके काल
उत्सर्पिन्, त्रि. उछालनेवाला, चढ़नेवाला ।
उत्सर्प्पा, स्त्री ऋतुमतीगी ।
उत्सादन, न. भगादेना, निकालदेना, दूसरी जगह भेजना । उबटन मलना, मल दूर करना ।
उत्सादित, त्रि. उखाड़ाहुआ, नाशकियाहुआ, तोड़ाहुआ, साफ़कियाहुआ ।
उत्साह, पु. उद्यम, कोशिश, खुशी, ।
उत्साहित, त्रि. उत्सुक । रुवाहशमंद ।

उत्साहिन्, त्रि. उद्यमी, मेहनती, रव्वाहिशमंद ।
उत्सिक्त, त्रि. सिंचाहुआ । मगरूर, । [हुआ ।
उत्सुक, त्रि. मनपसंद काममें लगाहुआ, चाहता ।
उत्सृजन, न. छोड़ना, चढ़ादेना ।
उत्सृष्ट, त्रि. छोड़ा हुआ ।
उत्सेचन, न. ऊपरको सींचना ।
उत्सेध, पु. ऊंचाई, न. देह, कतल ।
उत्स्वन, न. ऊंची अवाज़, (त्रि) ऊंची आवाज़वाला ।
उद्, व्य. उत् देखो ।
उद(क), न. जल, पानी ।
उदकक्रिया, स्त्री. तर्पण; मुर्दोंको पानीदेना ।
उदक्य, त्रि. पानीका, (स्त्री) (क्या) रजस्वला ।
उदगद्रि, पु. हिमालय पर्वत ।
उदगयन, न. उत्तरायण देखो ।
उदग्र, स्त्री. अच्छा, ऊंचा, लंबा, ।
उदङ्क, पु. बोका, संडासी । [भिमुख ।
उदच्, व्य.उत्तरदिशा, देश, वा काल (त्रि) उत्तरा
उदञ्च, त्रि. ऊंचेमुखवाला ।
उदञ्चन, न. उछालना, ढंकना, (उ) डोल ।
उदञ्चित, ऊंचेफेंकाहुआ, पूजाहुआ, संकोड़ा हु० ।
उदधि, पु. समुंदर, घड़ा ।
उदन्त, पु. वृत्तांत ।
उदन्या, स्त्री. प्यास ।
उदन्वत्, पु. समुद्र, पेट ।
उदपान, न. कूआ, गड़ा ।
उदय, प. लग्न, पूर्वपर्वत, भलाई, इकवाल ।
उदयन, न. ऊंचेचढ़ना, (पु) अगस्त मुनि, वत्सराज, कुसुमांजलीग्रंथका कर्ता ।
उदर, न. पेट, युद्ध, (स्त्री) (री) रोगवि० ।
उदरम्भरि, त्रि. भूखा, पेटू ।
उदरामय, पु. पेचशकी बीमारी ।
उदरावर्त, पु. नाभि । नाफ़ । [औरत ।
उदरि(न्)(ल), पु. गोगड़िया (स्त्री) (णी) हामिला
उदर्क, पु. भावीफल, भावीकाल ।
उदर्चिस्, पु. अग्नि, शिव, काय ।
उदर्द, पु. रोगविशेष ।
उदायुध, त्रि. शस्त्रधारी । मुसल्ला ।
उदार, त्रि. दाता, सरल, गंभीर, काव्यगुणविशेष ।
उदारधी, पु. बड़ा अकलमंद ।
उदास, त्रि. विरागी, पु. उत्क्षेप, ऊंचाई ।
उदासीन, सालिस, वेतअल्क (पु) एकफ़िरका जो गुरुनानकजीके पुत्र श्रीचन्दजीसे निकला है ।
उदाहरण, न. दृष्टान्त । मिसाल ।
उदाहृत, त्रि. मिसाल दियागया (स्त्री) (ति) मिसाल ।
उदित, त्रि. कहाहुआ, जाहिरकियाहुआ ।
उदित्वर, (त्रि) चढ़नेवाला ।
उदीक्षण, न. प्रतीक्षा । इन्तज़ारी ।
उदीची, स्त्री. उत्तरदिशा । शमाल ।
उदीचीन, त्रि. उत्तरका ।
उदीच्य, पु. सरस्वती नदीके उत्तर पश्चिमका देश, (न.) वला खुशवू (त्रि) उत्तर का ।
उदीरण, न. उच्चारण, कथन, जिम्हाई, उकसाव ।
उदीरित, त्रि. कहाहुआ, ।
उदीर्ण, त्रि. फ़याज, बड़ा, बढाहु० ।
उदुम्बर, पु. गूल्हरका पेड़, कोढ़ की बीमारी ।
उदूपल, पु. न. ऊपल, गुग्गल ।
उदूढ, त्रि. मोटा, व्याहाहुआ । [खास शहर ।
उद्गत, त्रि. उठाहुआ, पैदाहुआ, (स्त्री) (ता) एक
उद्गम, पु. } उठना, चढ़ना, ज्ञान, न. पैदाहोना ।
उद्गमन, न. }
उद्गाढ, त्रि. अधिक । ज्यादह । [ऊंचे गानेवाला ।
उद्गातृ, पु. सामवेद जाननेवाला ब्राह्मण (त्रि)
उद्गार, पु. कै, अवाज़ ।
उद्गारण, न. कै, डकार । [छन्दका भेद ।
उद्गीत, त्रि. ऊंचे गाया हुआ (स्त्री) (ति) आर्या-
उद्गीथ, पु. सामवेदका भाग, "ॐ" अक्षर, सामवेदकी अवाज़ । [हुआ ।
उद्गीर्ण, त्रि. ऊंचे कहा हुआ, तजाहुआ, कैकिया
उद्गूर्ण, त्रि. उठाया हुआ ।
उद्ग्रन्थन, न. गांठना, बनाना ।
उद्घ, पु. स्तुति, पवन, आग, बुक्क, (त्रि) उमदा ।
उद्घट्टन, न. छुड़ाना, घुटना ।
उद्घर्षण, न. घिसना, रगड़ना, खुरचना ।
उद्घस, न. खानेकी वस्तु ।
उद्घास, पु. थाना, कोतवाली ।
उद्घाटक, त्रि. खोलनेवाला ।
उद्घाटन, न. खोल... ना ।
उद्घाटित, त्रि. ...

उद्‌घात, पु. शुरु, पांओंफिसलन, एक हथियार, मूसल, जख़्म ।
उद्‌घात्यक, पु. प्रस्तावनाविशेष ।
उद्‌घुष्ट, त्रि. घोषाहुआ, वारंवार कहाहुआ ।
उद्‌दंश, पु. खटमल, मच्छर, पिस्सू ।
उद्दान, न. बंधन, चुल्हा, समुद्रकी आग ।
उद्दामन्, त्रि. खुलाहुआ, आज़ाद, पु. वरुणदेवता ।
उद्दाल(क), पु. ऋषिका नाम, कोदोंका पेड़ ।
उद्दिष्ट, त्रि. अभीप्रेत, लक्षीकृत ।
उद्दीप, न. गुग्गल, (पु) दीपक, ।
उद्दीपक, त्रि. तेज़ करनेवाला, जलानेवाला ।
उद्दीपन, न. जलाना, रौशनक० अलंकार वि० शास्त्रमें प्रेमको अधिक करनेवाली कलाम ।
उद्दीप्त, त्रि. प्रकाशित । रौशनकियाहुआ ।
उद्देश,(श्य) पु. लक्ष्य । मुद्दआ ।
उद्‌भाव, पु. भागना ।
उद्योत, पु. प्रकाश । रौशनी ।
उद्धत, त्रि. शोख, (स्त्री) (ति) गरूर ।
उद्धरण, न. छुटकारा । कर्ज़से बेबाकी ।
उद्धर्ष, पु. उत्सव, मेला, जलसा ।
उद्धर्षण, न. रोमांच; रोंगटे खड़ेहोना ।
उद्धव, पु. उत्सव, कृष्णजीका मित्र, यज्ञकी आग ।
उद्धान, पु. वमन, ऊंचे जानां ।
उद्धार, पु. कर्ज़, हिस्सा, (स्त्री) (रा) गिलो ।
उद्धृत, त्रि. उठायाहुआ, उछालाहुआ, छोड़दिया हुआ ।
उद्बन्धन, न. लटकाना, फांसीदेना ।
उद्बोध, पु. प्रत्यभिज्ञान । याद्दाश्त ।
उद्बोधन, न. याददिलाना, समझाना ।
उद्भट, पु. कछुआ, साप, प्रसिद्ध ।
उद्‌भव, पु. जन्म । पैदाश ।
उद्‌भावन, न. कल्पना; प्रकट करना । ज़ाहिरकरना ।
उद्‌भास, पु. तेज़ । रौशनी ।
उद्‌भिज, त्रि. नबातात । [का यज्ञ ।
उद्भिद्(द), त्रि. वनस्पति, पहाड़, (पु) एकप्रकार-
उद्भिन्न, त्रि. हराहुआ, खिलाहुआ ।
उद्‌भूत, त्रि. प्रकट, न्यायमतमें प्रत्यक्ष योग्य ।
उद्‌भेद, पु. रोमाञ्च; रोंकटे खड़ेहोने ।
उद्‌भ्रम, पु. भूल, ऊंचे घूमना, काल्ही, मस्ती ।
उद्‌भ्रान्त, त्रि. चकरायाहुआ, (न) भुजा उठाकर चक्करमें तलवार घुमाना । [कोशिश ।
उद्यत, त्रि. तैय्यार, (पु) किताबका बाब, (स्त्री)(ति)
उद्यम, पु. मेहनत, कोशिश ।
उद्यमिन्, त्रि. उद्योगी । मेहनती ।
उद्यान, न. पुष्पवाटिका । बगीचा ।
उद्यापन, न. व्रत आदिका समाप्त करना ।
उद्योग, पु. उद्यम । कोशिश ।
उद्योगिन्, त्रि. उद्यमी ।
उद्र, पु. ऊदबिलाव ।
उद्रथ, पु. गाड़ीकी धुरी, ताम्रचूड़पंछी ।
उद्राव, पु. ऊंची आवाज ।
उद्रेक, पु. अधिकता, आरम्भ, वृद्धि ।
उद्वर्त, पु. आधिक्य, ज्यादती ।
उद्वर्तन, न. उबटन, घिसना, उछलन । [वाला ।
उद्वह, पु. नायक, सन्तान, वायुविशेष, (त्रि) उठने-
उद्वाह, पु. व्याह, एक खेत जिसमें दोबार हल चलाया गियाहै । [(हिनी) रस्सी, कौड़ी ।
उद्‌वाहन, न. व्याहदेना, दुबारा हलचलाना (स्त्री)
उद्वाहु, त्रि. ऊंचे भुजा उठाये हुए ।
उद्‌विग्न, त्रि, उतावला, घबरायाहुआ ।
उद्‌वीक्षण, न. देखना, ऊंचे देखना ।
उद्वृत्त, त्रि. बदचलन, ऊंचेफेंकना ।
उद्‌वेग, पु. भय, त्वरा, उत्कराठा, (न) सुपारी, (त्रि) उतावला ।
उद्वेजक, त्रि. उतावला ।
उद्वेल, त्रि. किनारेसे उछलाहुआ ।
उद्‌वेष्ट, पु. लपेटन, वेठन (त्रि) लपेटनेवाला ।
उद्‌वेष्टन, न. उष्णीष, पगड़ी ।
उद्‌वेष्टित, त्रि. लपेटाहुआ ।
उधस्, न. लेवा, या खीरी ।
उन्द(न्दु) (न्दू)र, पु. मूसा, चूहा ।
उन्न, त्रि. गीला; तर ।
उन्नत, त्रि. उच्च, (स्त्री) (ति) ऊंचाई ।
उन्नद्ध, त्रि. बंधाहुआ, लटकाया हुआ ।
उन्नमन, न. उठाना, ऊंचा करना ।
उन्नमित, त्रि. ऊंचाकियाहुआ ।
उन्नयन, न. दलीलकरना, ऊंचे उठाना ।
उन्नत, त्रि. ऊंची नाकवाला,

उत्साहिन्, त्रि. उद्यमी, मेहनती, ख्वाहिशमंद ।
उत्सिक्त, त्रि. सिंचाहुआ । मग़रूर, । [हुआ ।
उत्सुक, त्रि. मनपसंद काममें लगाहुआ, चाहता ।
उत्सृजन, न. छोड़ना, चढ़ादेना ।
उत्सृष्ट, त्रि. छोड़ा हुआ ।
उत्सेचन, न. ऊपरको सींचना ।
उत्सेध, पु. ऊंचाई, न. देह, कतल ।
उत्स्वन, न. ऊंची अवाज़, (त्रि) ऊंची आवाज़वाला ।
उद्, व्य. उत् देखो ।
उद(क), न. जल, पानी ।
उदकक्रिया, स्त्री. तर्पण; मुर्दोंको पानीदेना ।
उदक्य, त्रि. पानीका, (स्त्री) (क्या) रजस्वला ।
उदगद्रि, पु. हिमालय पर्वत ।
उदगयन, न. उत्तरायण देखो ।
उदग्र, स्त्री. अच्छा, ऊंचा, लंबा, ।
उदङ्क, पु. वोका, संडासी । [भिमुख ।
उदञ्च्, व्य.उत्तरदिशा, देश, वा काल (त्रि) उत्तरा
उदञ्च, त्रि. ऊंचेमुखवाला ।
उदञ्चन, न. उछालना, ढंकना, (उ) डोल ।
उदञ्चित, ऊंचेफेंकाहुआ, पूजाहुआ, संकोड़ा हु० ।
उदधि, पु. समुंदर, घड़ा ।
उदन्त, पु. वृत्तांत ।
उदन्या, स्त्री. प्यास ।
उदन्वत्, पु. समुद्र, पेट ।
उदपान, न. कूआ, गढ़ा ।
उदय, प. लग्न, पूर्वपर्वत, मलाई, इकवाल ।
उदयन, न. ऊंचेचढ़ना, (पु) अगस्त मुनि, वत्सराज, कुसुमांजलीग्रंथका कर्ता ।
उदर, न. पेट, युद्ध, (स्त्री) (री) रोगवि० ।
उदरम्भरि, त्रि. भूखा, पेटू ।
उदरामय, पु. पेचशकी बीमारी ।
उदरावर्त, पु. नाभि । नाफ़ । [औरत ।
उदरि(न्)(ल), पु. गोगड़िया (स्त्री) (णी) हामिला
उदर्क, पु. भावीफल, भावीकाल ।
उदर्चिस्, पु. अग्नि, शिव, काय ।
उदर्द, पु. रोगविशेष ।
उदायुध, त्रि. शस्त्रधारी । मुसल्ला ।
उदार, त्रि. दाता, सरल, गंभीर, काव्यगुणविशेष ।
उदारधी, पु. बड़ा अकलमंद ।

उदास, त्रि. विरागी, पु. उत्क्षेप, ऊंचाई ।
उदासीन, सालिस, वेतअल्लक (पु) एकफ़िरका जो गुरुनानकजीके पुत्र श्रीचन्दजीसे निकला है ।
उदाहरण, न. दृष्टान्त । मिसाल ।
उदाहृत, त्रि. मिसाल दियागया (स्त्री) (ति) मिसाल ।
उदित, त्रि. कहाहुआ, ज़ाहिरकियाहुआ ।
उदित्वर, (त्रि) चढ़नेवाला ।
उदीक्षण, न. प्रतीक्षा । इन्तज़ारी ।
उदीची, स्त्री. उत्तरदिशा । शमाल ।
उदीचीन, त्रि. उत्तरका ।
उदीच्य, पु. सरस्वती नदीके उत्तर पश्चिमका देश, (न.) वला खुशवू (त्रि) उत्तर का ।
उदीरण, न. उच्चारण, कथन, जिम्हाई, उकसाव ।
उदीरित, त्रि. कहाहुआ, ।
उदीर्ण, त्रि. फ़याज, बड़ा, बडाहु० ।
उदुम्बर, पु. गूल्हरका पेड़, कोढ़ की बीमारी ।
उदूपल, पु. न. ऊपल, गुगल ।
उदूढ, त्रि. मोटा, व्याहाहुआ । [खास बहर ।
उद्गत, त्रि. उठाहुआ, पैदाहुआ, (स्त्री) (ता) एक
उद्गम, पु. }
उद्गमन, न. } उठना, चढ़ना, ज्ञान, न. पैदाहोना ।
उद्गाढ, त्रि. अधिक । ज्यादह । [ऊंचे गानेवाला ।
उद्गातृ, पु. सामवेद जाननेवाला ब्राह्मण (त्रि)
उद्गार, पु. कै, अवाज़ ।
उद्गारण, न. कै, डकार । [छन्दका भेद ।
उद्गीत, त्रि. ऊंचे गाया हुआ (स्त्री) (ति) आर्या-
उद्गीथ, पु. सामवेदका भाग, "ॐ" अक्षर, सामवेदकी अवाज़ । [हुआ ।
उद्गीर्ण, त्रि. ऊंचे कहा हुआ, तजाहुआ, कैकिया
उद्गूर्ण, त्रि. उठाया हुआ ।
उद्ग्रन्थन, न. गांठना, बनाना ।
उद्घ, पु. स्तुति, पवन, आग, वृक्ष, (त्रि) उमदा ।
उद्घट्टन, न. छुड़ाना, घुटना ।
उद्घर्षण, न. घिसना, रगड़ना, खुरकना ।
उद्घस, न. खानेकी वस्तु ।
उद्घास, पु. थाना, कोतवाली ।
उद्घाटक, त्रि. खोलनेवाला ।
उद्घाटन, न. खोलना (स्त्री) (नी) चावी ।
उद्घाटित, त्रि. खोलाहुआ ।

उद्घात, पु. शुरु, पांओफिसलन, एक हथियार, मूसल, जखम ।
उद्घात्यक, पु. प्रस्तावनाविशेष ।
उद्घुष्ट, त्रि. घोषाहुआ, वारंवार कहाहुआ ।
उद्दंश, पु. खटमल, मच्छर, पिस्सू ।
उद्दान, न. बंधन, चुल्हा, समुद्रकी आग ।
उद्दामन्, त्रि. खुलाहुआ, आज़ाद, पु. वरुणदेवता ।
उद्दाल(क), पु. ऋषिका नाम, कोदोंका पेड़ ।
उद्दिष्ट, त्रि. अभीप्रेत, लक्षीकृत ।
उद्दीप, न. गुग्गल, (पु) दीपक, ।
उद्दीपक, त्रि. तेज़ करनेवाला, जलानेवाला ।
उद्दीपन, न. जलाना, रौशनक० अलंकार वि० शास्त्रमें प्रेमको अधिक करनेवाली कलाम ।
उद्दीप्त, त्रि. प्रकाशित । रौशनकियाहुआ ।
उद्देश,(श्य) पु. लक्ष्य । मुद्दआ ।
उद्भाव, पु. भागना ।
उद्योत, पु. प्रकाश । रौशनी ।
उद्धत, त्रि. शोख, (स्त्री) (ति) ग़रूर ।
उद्धरण, न. छुटकारा । कर्ज़से बेबाकी ।
उद्धर्ष, पु. उत्सव, मेला, जलसा ।
उद्धर्षण, न. रोमांच; रोंगटे खड़ेहोना ।
उद्धव, पु. उत्सव, कृष्णजीका मित्र, यज्ञकी आग।
उद्धान, पु. वमन, ऊंचे जाना ।
उद्धार, पु. कर्ज़, हिस्सा, (स्त्री) (रा) गिलो ।
उद्धृत, त्रि. उठायाहुआ, उछालाहुआ, छोड़दिया हुआ ।
उद्बन्धन, न. लटकाना, फांसीदेना ।
उद्बोध, पु. प्रत्यभिज्ञान । याद्दास्त ।
उद्बोधन, न. याददिलाना, समझाना ।
उद्भट, पु. कछुआ, साप, प्रसिद्ध ।
उद्भव, पु. जन्म । पैदाश ।
उद्भावन, न. कल्पना; प्रकट करना। ज़ाहिरकरना।
उद्भास, पु. तेज़ । रौशनी ।
उद्भिज, त्रि. नबातात । [का यज्ञ ।
उद्भिद्(द), त्रि. वनस्पति, पहाड़, (पु) एकप्रकार-
उद्भिन्न, त्रि. हराहुआ, खिलाहुआ ।
उद्भूत, त्रि. प्रकट, न्यायमतमें प्रत्यक्ष योग्य ।
उद्भेद, पु. रोमाञ्च; रोंकटे खड़ेहोने ।
उद्भ्रम, पु. भूल, ऊंचे घूमना, काल्ही, मस्ती ।
उद्भ्रान्त, त्रि. चकरायाहुआ, (न) भुजा उठाकर चक्करमें तलवार घुमाना । [कोशिश ।
उद्यत, त्रि. तैय्यार, (पु) किताबका बाब, (स्त्री)(ति)
उद्यम, पु. मेहनत, कोशिश ।
उद्यमिन्, त्रि. उद्योगी । मेहनती ।
उद्यान, न. पुष्पवाटिका । बगीचा ।
उद्यापन, न. व्रत आदिका समाप्त करना ।
उद्योग, पु. उद्यम । कोशिश ।
उद्योगिन्, त्रि. उद्यमी ।
उद्र, पु. ऊदबिलाव ।
उद्रथ, पु. गाड़ीकी धुरी, ताम्रचूड़पंछी ।
उद्राव, पु. ऊंची आवाज ।
उद्रेक, पु. अधिकता, आरम्भ, वृद्धि ।
उद्वर्त, पु. आधिक्य, ज़्यादती ।
उद्वर्तन, न. उबटन, घिसना, उछलन । [वाला ।
उद्वह, पु. नायक, सन्तान, वायुविशेष, (त्रि) उठने-
उद्वाह, पु. व्याह, एक खेत जिसमें दोबार हल चलाया गियाहै । [(हिनी) रस्सी,कौड़ी ।
उद्वाहन, न. व्याहदेना, दुबारा हलचलाना (स्त्री)
उद्वाहु, त्रि. ऊंचे भुजा उठाये हुए ।
उद्विग्न, त्रि, उतावला, घबरायाहुआ ।
उद्वीक्षण, न. देखना, ऊंचे देखना ।
उद्वृत्त, त्रि. बदचलन, ऊंचेफेंकना ।
उद्वेग, पु. भय, त्वरा, उत्कराठा, (न) सुपारी, (त्रि) उतावला ।
उद्वेजक, त्रि. उतावला ।
उद्वेल, त्रि. किनारेसे उछलाहुआ ।
उद्वेष्ट, पु. लपेटन, वेठन (त्रि) लपेटनेवाला ।
उद्वेष्टन, न. उष्णीष, पगड़ी ।
उद्वेष्टित, त्रि. लपेटाहुआ ।
उधस्, न. लेवा, या खीरी ।
उन्द(न्दु) (न्दु)र, पु. मूसा, चूहा ।
उन्न, त्रि. गीला; तर ।
उन्नत, त्रि. उच्च, (स्त्री) (ति) ऊंचाई ।
उन्नद्ध, त्रि. बंधाहुआ, लटकाया हुआ ।
उन्नमन, न. उठाना, ऊंचा करना ।
उन्नमित, त्रि. ऊंचाकियाहुआ ।
उन्नयन, न. दलीलकरना, ऊंचे उठाना ।
उन्नस, त्रि. ऊंची नाकवाला,

उन्नाह, न. काञ्जी । तागडी ।
उन्निद्र, त्रि. खिलाहुआ, जागाहुआ ।
उन्नीत, त्रि. मअल्लूमकियाहुआ, समरा हु० ।
उन्मग्न, त्रि. जलआदिसे वाहर आया हु० ।
उन्मज्जन, न. डुबकी मारकर पानीमेंसे वाहर निकलहुआ ।
उन्मत्त, त्रि. पागल, नशई (पु) दधूरेका पौदा ।
उन्मथ(न), न. पु. मथना, मलना, विलोना ।
उन्मद, त्रि. मस्त, नशीली चीज़ ।
उन्मनस्, त्रि. मुतलव्विन मिज़ाज ।
उन्मन्थ, (न) पु. न. मारना, विलोना ।
उन्माथ, पु. फंदा, कतल, वेइज़ती ।
उन्माद, पु. दिलका भटकना, वाईकी वीमारी ।
उन्मादन, न. कामदेवके पांचवाणोंमेंसे एक वाण जिससे आदमी मस्त होजाय ।
उन्मान, न. तोला आदि वट्टे, पैमाना ।
उन्मित, त्रि. मापाहुआ ।
उन्मीलन, न. आंखझिमकना, फूलका खिलना ।
उन्मीलित, त्रि. उत्पाटित; खोलहुआ ।
उन्मुख, त्रि. ऊंचे मुखवाला ।
उन्मुद्र, त्रि. खिलाहुआ । खुलाहुआ ।
उन्मूलन, न. उखाडना ।
उन्मूलक, त्रि. जड़से उखाड़नेवाला ।
उन्मृजा, स्त्री. मांज़ना, पूंछना ।
उन्मृष्ट, त्रि. मांजाहुआ ।
उन्मेष, पु. आंख झपकना ।
उन्मोचन, न. छुड़ादेना । रिहाकरना ।
उप, व्य, दया, नज्दीकी, तुलना, रोग, नाश, भूषण, आज्ञा, दान, मारण उद्यम, पूजा ।
उपकण्ठ, त्रि. किनारेके पास, घोड़ेका चाल, (व्य) कंठके पाससे ।
उपकथा, स्त्री. कल्पना, गप्प । [आदि वस्तु ।
उपकरण, न. सामा, राजाओंकी छतर चौवर
उपकर्तृ, त्रि. उपकार करनेवाला ।
उपकल्पित, त्रि. प्रस्तुत । तैय्यार ।
उपकार, पु. ऐहसान, मदद, फैलायेहुए फूल । वगैरह, सहायता ।
उपकारक, त्रि. सहायक । मददगार ।
उपकार्य, त्रि. मददके लायक ।
उपकृत, त्रि. जिसपर उपकार कियाहो ।
उपकुम्भ, त्रि. समीप, निर्जन (व्य) कुंभके समीप ।
उपकूप, पु. चौवचा, (व्य) कूएके नज़दीक का ।
उपक्रम, पु. विचारसे आरंभ, बल, इलाज, भागना ।
उपक्रोश, पु. निंदा, झिड़क (व्य) कोसके लगभग ।
उपक्रोष्टृ, त्रि. निंदा करनेवाला, (पु) गधा ।
उपक (क्व) ण, न. वीनकी आवाज़ ।
उपगत, त्रि. मनजूर कियाहुआ, हासल किया हुआ, जाना हुआ, आशक, जिसने मैथुन किया हो (न) रसीद ।
उपगम, पु. मनजूर या वादा पास पहुंच ।
उपगीत, त्रि. राग गायाहुआ (स्त्री) (ति) छन्दोविशेष ।
उपगूढ, त्रि. छिपाहुआ, छिपायाहुआ ।
उपगूहन, न. गले लगाना । [धूमकेतु आदिग्रह ।
उपग्रह, पु. रोक, प्रार्थना, (त्रि) रुकाहुआ,
उपग्राह्य, न. उपढौकन; भेंट ।
उपघात, पु. एक वीमारी, नुक्सान, हैरानी ।
उपचय, पु. वृद्धि, स्तूप, आधिक्य, लग्नसे ३ रा, ६ ठा, और ११ वां स्थान ।
उपचरित, त्रि. सेवित, ख़िदमत कियाहुआ ।
उपचर्या, स्त्री. सेवा, ख़िदमत, इलाज ।
उपचाय्य, पु. यज्ञकी आग ।
उपचार, पु. रोगका इलाज ।
उपचित्र, न. एकादशाक्षर छंदविशेष (स्त्री (त्रा) स्वातीनक्षत्र (व्य) चित्रके समीप ।
उपचित, त्रि. पुष्ट, संचयकियाहुआ, जलाहुआ, अर्थबोध (स्त्री) (ति) पूजा ।
उपच्छद, पु. प्रार्थना, अनुरोध, सांत्वन ।
उपच्छन्न, न. गूढ; छिपाहुआ ।
उपज, त्रि. छोटाभाई, वहिन ।
उपजन, पु. पासका आदमी ।
उपजाति, स्त्री. वर्ण वृत्त छन्दोविशेष ।
उपजाप, पु. भेद, विच्छेद ।
उपजिह्वा, स्त्री. घंडी, एक छोटासा कीडा, (स्त्री) (ह्विका) घंडी ।
उपजीविका, स्त्री. जीविका । गुज़ारा ।
उपजीवन, न. जीविका । गुज़ारा ।
उपजीविन्, त्रि. आश्रित, नौकर ।
उपजीव्य, त्रि. आश्रय; नौकर ।

उपजोपम्, व्य. आनन्द, चुपचाप।
उपज्ञा, स्त्री. प्रथमज्ञान।
उपढौकन, न, भेंट। नजराना, रिशवत।
उपताप, पु. रोग, चिंता, शोक, विपदा।
उपतापिन्, त्रि. चिंतावान्। मुतफ़िक्कर।
उपत्यका, स्त्री. पर्वतके पासकी भूमी।
उपदंश, पु. नशीयोंका शुकल, एक खास पेड़।
उपदर्शक, पु. दरवान (त्रि) दिखानेवाला।
उपदा, स्त्री. उपढौकन; भेंट।
उपदान, न. उत्कोच; घूंस। रिशवत।
उपदिष्ट, त्रि. जिसे उपदेश हुआ है, कहा हुआ।
उपदेश, पु. मंत्रदेना, भलेकी वात कहनी। हिदायत।
उपदेशिन्, त्रि. उपदेशक। हिदायत कुनिंदा।
उपदेष्टव्य, त्रि. शिष्य। शागिर्द।
उपदेष्टृ, पु. उपदेश करनेवाला। उस्ताद।
उपद्रव, पु. जुलम। सख्ती।
उपद्वीप, पु. प्रायः द्वीप। जज़ीरानुमा।
उपधर्म, पु. पाखण्ड; दिखानेका धर्म।
उपधा, स्त्री. छल, (व्या) अन्त्यवर्णसे पहिला वर्ण।
उपधातु, पु. आठ प्रकार धातु सदृश १ माक्षिक २ तुत्थक, ३ अभ्रक, ४ नीलाञ्जन, ५ मनःशिल, ६ हरिताल, ७ रसांजन। शरीरके सात धातु।
उपधि, पु. छल, पहिया, डर।
उपधूपित, त्रि, सन्तापित, आसन्नमृत्यु। लबेजान।
उपनत, त्रि. उपस्थित, शरणमें आयाहुआ (स्त्री (ति) नमस्कार, हाज़री।
उपनय, पु. उपनयन; यज्ञोपवीत धारण संस्कार।
उपनयन न. यज्ञ सूत्र धारण; जनेऊ धारना।
उपनाम, न. पदवी। दर्जा, ख़िताव।
उपनाह, पु. वीनके बंद, मर्हम, पुल्टिस।
उपनिधि, पु. अमानत, धईवस्तु।
उपनिबन्ध, पु. प्रतिज्ञा। ऐहद।
उपनिर्गम, पु. निकला हुआ, निकलनेकी राह।
उपनिषद्, स्त्री. वेदान्त, वेदशिरोभाग, ज्ञानकांड।
उपनिष्कर, पु. नगरके वीचकी सड़क।
उपनिहित, त्रि. अमानत। [पास लेजायाहुआ।
उपनीत, त्रि. जिसे जनेऊ दियागया है (त्रि)
उपन्यस्त, त्रि. सौंपाहुआ, धराहुआ।
उपपति, पु. यार; जार। विशनी।

उपनेतृ, पु. जनेऊडारनेवाला, पासले जाने वाला।
उपपत्ति, स्त्री. सिद्धान्त, योग्यता, कारण, मूल, अन्त, दैव।
उपपद, न. पदके पूर्वका पद।
उपपन्न, न. सिद्ध। तैयार, दलीलसे सबूत।
उपपादन, न. युक्तिसे किसी वातको पूराकरना।
उपपादित, त्रि. सिद्ध कियाहुआ, कहाहुआ। साबत कियाहुआ।
उपपुराण, न. व्यासजीके सिवा और मुनियोंके रचेहुए, यथा, १ सनत्कुमार, २ नारसिंह, ३ नारद, ४ शिव, ५ दुर्वासा, ६ कापिल, ७ मानव, ८ उशनस, ९ वरुण, १० शाम्ब, ११ नंदिकेश्वर, १२ सौर, १३ पाराशर, १४ आदित्य, १५ माहेश्वर, १६ भागवत, १७ वासिष्ठ, १८ पद्म।
उपप्लव, पु. उल्कापात आदि खराबियें, राहुग्रह, नाश, ग्रहण। [फंसाहुआ।
उपप्लुत, त्रि. पानीमें डुबा हुआ, मुसीवतमें
उपवन, न. उद्यान। वगीचा।
उपबृंहित, त्रि. बढ़ाहुआ।
उपभुक्त, त्रि. खायाहुआ, वर्तावोंमें लायाहुआ, (स्त्री) (क्ति) इसत माल।
उपभृत्, स्त्री. यज्ञपात्र; वड़की लकड़ीसे वनाहुआ गोलपात्र जो यज्ञोंमे वर्ता जाता है।
उपभोग, पु. सुखभोग। ऐशअशरत।
उपभोक्तृ, त्रि. अधिकारी; भोगनेवाला।
उपभोग्य, त्रि. लायक इसतह माल।
उपमन्यु, पु. मुनिविशेष। [तशबीह
उपम, त्रि. सदृश; वरावर (स्त्री) (मा) बराबरी।
उपमातृ, त्रि. स्तुतिकरनेवाला, मापनेवाला (स्त्री) (त्री) दाई।
उपमान, न. जिसके साथ उपमा दीजाय।
उपमित, त्रि. जिसकी उपमा दीगई है (स्त्री) (ति) सादृश्य ज्ञान। [उपमा दीजाय। मुशब्बह।
उपमेय, त्रि. उपमा देनेके योग्य; जिसको किसीसे
उपयन्तृ, पु. (न्ता) वियाहनेवाला, वर।
उपय(या)म, पु. विवाह (न) विवाहके मन्त्र।
उपयुक्त, त्रि. योग्य, उचित। मुनासिब।
उपयोग, पु. इष्टसिद्धिके लिये काम। ज़रूरत।
उपयोगिता, स्त्री. प्रयोजन, ज़रूरत।

उपयोगिन्, त्रि. उपकारी, सहायक, मुताबिक।
उपरत, त्रि. संन्यासी, मृत, निवृत्त (स्त्री) (ति) उपराम, शांति। सबर।
उपरस, पु. सुरमा गेरु अदिक धातें। [निन्दा।
उपराग, पु. सूर्यचन्द्रमाका ग्रहण, राहु, विपदा,
उप(र)राम, पु. शांति; हटजाना।
उपरि, व्य, ऊर्द्ध; ऊंचे।
उपरिष्टात्, व्य. ऊपरसे।
उपरुद्ध, त्रि. रुकाहुआ, ढंकाहुआ।
उपरूपक, न. एक नाटक।
उपरोध, पु. रोक, पीड़ा, पड़दा।
उपरोधक, त्रि. रोकनेवाला (न) घर।
उपर्युपरि, व्य. ऊंचे ऊंचे।
उपल, पु. पाषाण; पत्थर।
उपलक्ष, पु. व्याज; बहाना। [वाला।
उपलक्षक, त्रि. लक्षणासे अधिक अर्थका जताने-
उपलक्षण, न. विशेषण, लक्षणासे अधिक अर्थका जताना।
उपलक्षित, त्रि. जतायाहुआ, छोड़ाहुआ।
उपलब्ध, त्रि. लभाहुआ, जानाहुआ, पायाहुआ, स्त्री (ब्धि) प्राप्ति, ज्ञान। हसूल,।
उपलभ्य, त्रि. जानने योग्य। हासल करनेलायक। स्तुतिके योग्य।
उपवन, न. उद्यान। बागीचह।
उपवर्तन, न. शूद्रदेश, देश।
उपवसन, न. } उपवास, फाका।
उपवास, पु. }
उपवाह्य, पु. राजाकी सवारी।
उपवर्ह, पु. शिरोधान; सहाना।
उपविष्ट, त्रि. बैठाहुआ।
उपवीत, त्रि. जनेऊ धारेहुए, (न) जनेऊ।
उपवीतिन्, त्रि. यज्ञोपवीत पहरेहुए।
उपशम, पु. इन्द्रियोंकी रोक। आराम।
उपशय, पु. व्याधके छुपनेकीजा गढ़ा, गोदी।
उपशार, पु. पहरुओंका बारी २ से सोना जागना।
उपश्रुत, त्रि. स्वीकार कियाहुआ, (स्त्री) (ति) मान लेना, प्रारब्ध पूछना।
उपश्लेष, पु. आश्लेष; गले मिलना।
उपष्टम्भ, पु. आरंभ, अंकस, थंम, खूंटा।
उपष्टम्भक, त्रि. रोकनेवाला हटाना, हमला।
उपसंख्यान, न. जमा, गिनती, (व्या०) एक आदेशका नाम, एकहि अर्थवाला पद।
उपसंग्रह, प्रणिपात; पांओंपर हाथ लगाकर नमस्कार करना।
उपसंव्यान, न. पहिरनेका कपड़ा, धोती, चादर।
उपसंहरण, न. खतम, मौत हटाना, हमला।
उपसंहार, पु. संग्रह, संक्षेप. जमा, इख़तसार।
उपसत्ति, स्त्री. उपासना, मिलाप, दानपास होना।
उपसद, त्रि. नज़दीकका, पु. दान।
उपसदन, न. पड़ोसी।
उपसन्न, त्रि. उपगत। नज़दीक।
उपसन्नता, स्त्री. नज़दीकी।
उपसमाधान, न. राशीकरण, इकट्ठाकरना।
उपसर, पु. निर्गमन; गौ और सांडका मेल।
उपसर्ग, पु. उपद्रव, व्याधि, रोग. (व्या.) 'प्र' आदि २० शब्द।
उपसर्जन, न. त्याग, अप्रधान। फ़ालतू (व्या.)
उपसर्प,(ण) पु. न. पास जाना (स्त्री) (णा)रेंद्देना।
उपसर्या, पु. पासले जाने योग्य (स्त्री) (र्या) सांडके चाहने वाली गाय, हैज़वाली।
उपसुन्द, पु. सुन्दका भाई एकदैत्य।
उपसूर्यक, न. चांद और सूरजका मण्डल।
उपसृष्ट, त्रि. उपसर्ग युक्त, युक्त; तजाहु० कामी।
उपसेक, पु. सींच २ कर नरमकरना।
उपस्कर,(स्कार) } पु. तरकारीका मसाला,
उपस्करण, न. } बटना।
उपस्थ, पु. लिंग, भग, गोद, (त्रि) पास।
उपस्थातृ, त्रि. पास बैठनेवाला (पु) नौकर।
उपस्थान, न. पासजाना, नमस्कार, संध्यासमय, सूर्यके सामने खड़े होकर मंत्रपाठ।
उपस्थाय, व्य. पास जाकर।
उपस्थित, त्रि. पासगयाहुआ, आनाहुआ, हासल कियाहुआ स्त्री (ति) नज़दीकी, हाज़री।
उपस्पर्श, } पु. छूना, न्हाना, पीना, आचमन।
उपस्पर्शन, } (न)।
उपस्पृष्ट, त्रि. न्हायाहुआ। अछाहुआ।
उपहत, त्रि. नष्ट, माराहुआ। ऐबी।
उपहव, पु. बुलाना।

उपहार, पु. भेंट। नज़र।
उपहास, पु. ठट्ठा; । हंसी, मस्खरी।
उपहासक, त्रि. ठट्ठेबाज (पु) विदूषक।
उपहास्य, त्रि. ठट्ठेके योग्य। [दियाहु०।
उपहित, त्रि. रक्खा हुआ, लाया हुआ सौंपाहुआ,
उपहूत, त्रि. बुलाया हुआ। [हुआ।
उपहृत, त्रि. आहृत आनीत। लायाहुआ छीना-
उपह्वर, न. तनहा जगह, नज़दीक।
उपांशु, व्य, अकेले, तनहाई (पु) ऐसा जप जिसे दूसरा न सुनसके। [लिये पशुमारण।
उपाकरण, न. संस्कार पूर्वकश्रुतिग्रहण, यज्ञके
उपाकृत, त्रि. देवताके लिये मारने योग्य पशु। शुरु किया हुआ।
उपाख्य, त्रि. सामने।
उपाख्यान, न. पुरानी कथा कहना।
उपागत, त्रि मिलगया। हाजिर, हासिल किया।
उपागम, पु. स्वीकार, प्राप्त, अनुभूत, उपस्थित्व।
उपाङ्ग, न. प्रधानके उपयोगी। [हुआ।
उपाचार्य, पु. सहकारी आचार्य।
उपाजे, व्य. दुर्बलको बलदेना।
उपात्त, पु. मदरहित हाथी, (त्रि) ग्रहण किया।
उपात्तशस्त्र, त्रि. हथियारबंद। मुसल्ला।
उपादान, न. लेना, समवायीकारण।
उपादेय, त्रि. ग्राह्य, विधेयकर्म, लेनेलायक।
उपाधि, पु. धर्मचिन्ता, छल, पदवी, कुटुम्बपोषणकी योग्यता, साध्य व्यापक और साधनमें अव्यापक धर्म्म। [(यानी) उस्तादनी।
उपाध्याय, पु. अध्यापक, उस्ताद (स्त्री) (यी)
उपानह, पु. जूती, चमड़ेकी जूती।
उपान्त, त्रि. निकट (पु.)आंखका कोन।
उपान्त्य, त्रि. अन्तके समीप, उत्तर भाद्रपदनक्षत्र।
उपान्तिक, त्रि. निकट; नज़दीक।
उपान्य, पु. आंखका गोशा (न) नज़दीकी।
उपावर्तन, न. घूंमना, और आना,।
उपाय, पु. शत्रुओंके वश करनेके चार कारण, साम दान दण्ड भेद। पास आना।
उपायन, न. उपहार, भेंट पास जाना।
उपायात, त्रि. पास आयाहुआ (न.) वार्दात।
उपारत, त्रि. गयाहुआ, हटाहुआ।
उपार्जन, न. धन जमा करना।
उपालब्ध, त्रि. उलाहना दियागया।
उपालम्भ, पु. तिरस्कार। उलाहना।
उपावृत, त्रि. लौटाहुआ, छुटकाहुआ।
उपाश्रय, पु. आसद। पनाह।
उपाश्रित, त्रि. शरणमें आया हुआ। [सेवक,
उपासक, पु. शूद्र, (त्रि) उपासना करनेवाला,
उपासन, न. तीरन्दाज़ीका इलम, चौकी, खिदमत, (स्त्री) (ना) परमात्माका ध्यान, धारना, जप, पूजन चार कर्म।
उपासित, त्रि. उपासना कियाहुआ।
उपासीन, त्रि, पास बैठा हुआ।
उपास्य, त्रि. आराध्य। उपासनाके लायक।
उपास्ति, स्त्री. सेवा। परस्तिश।
उपाहत, त्रि. ताड़ाहुआ। [रक्खा हुआ।
उपाहित, पु. उलकापात आदि उपद्रव (त्रि) पास
उपेक्षा, स्त्री. अदना जान छोड़देना। इनकार।
उपेत, त्रि. मिलाहुआ, पास आयाहुआ।
उपेन्द्र, पु. विष्णु, वामन, इन्द्रका छोटा।
उपेन्द्रवज्रा, स्त्री० एक छन्द११अक्षरका एकबहर।
उपोढ, त्रि. व्याहाहुआ, श्रेणिमें बंधाहु०, पासका।
उपोद्घात, पु. आरम्भ, परिच्छेद प्रकृतोपयोगी चिंता, संगतिवि०।
उपोष(ण), पु. उपवास। फ़ाका।
उपोषित, त्रि. फ़ाकेकश (न) फाका।
उप्त, त्रि. बीजाहुआ (स्त्री) (प्ति) बीजना।
उभ(य), त्रि. द्वय; दो।
उभयतस्, व्य. दोनोंतर्फ़, आपसमें।
उभयत्र, व्य. दोनों जगह।
उभयथा, व्य. दोनों तरह।
उभय(ये)द्युस्, व्य. दोनों दिनोंमें।
उभये, व्य. परस्पर; आपसमे।
उम्, व्य. कोप, स्वीकार, प्रश्न, आमन्त्रण।
उमा, स्त्री. दुर्गा, अतसी वृक्ष, कीर्ति, हरिद्रा, कान्ति, शान्ति। अलसी, मशहूरी, हलदी, चमक, श्रमन।
उमाचतुर्दशी, स्त्री. ज्येष्ठशुदी चौदस।
उमाकट, त्रि. मसिनाका रज।

उमाधव, }
उमापति, } पु. शिव महादेव ।
उमेश, }

उमासुत, }
उमासूनु, } पु. कार्तिकेय, गणेश ।

उम्बर, पु. द्वारोर्ध्वकाष्ठ । चौखटके ऊपरकी लकड़ी ।

उरग(ङ्ग)(ङ्गम) पु. सर्प्प; सांप, सिका, वा नक्षत्र ।

उरगारि, }
उरगाशन, } पु. गरुड़, मोर, नेवला ।

उरण, }
उरभ्र, } पु. स्त्री. मेष, । मेंढा, ।

उरी, }
उररी, } व्य. स्वीकार, विस्तार । मनज़ूर, फैलाव।

उरस्, त्रि. श्रेष्ठ, (न) वक्षःस्थल । नेक, छाती ।

उरसि, व्य. स्वीकार ।

उरसिज, पु. वक्षोज; चूंची । पिस्तान ।

उरस्तस, व्य. वक्षःस्थलात्; छातीसे ।

उररीकार, पु. अंगीकार । मनज़ूर ।

उररीकृत, त्रि. अंगीकृत, स्वीकृत ।

उरुव्यचस, पु. राक्षस वि०, ।

उरु, त्रि. महत्, बड़ा ।

उरुगाय, पु. विष्णु, श्रीकृष्ण ।

उरुमान, पु. पूजा ।

उर्णा, स्त्री. मेषादि लोम; ऊन ।

उर्द्र, पु. ऊदवि लाओ ।

उर्व, पु. खास, एक मुनि ।

उर्व्वरा, पु. वत्सर; वरस। [पृथ्वी । ज़रखेज़ ज़मनी।

उर्व्व(र) स्त्री. पु. जिसमें सब फसलें हों सर्वसस्याढ्य

उर्वरित, त्रि. जरखेज़ कियाहुआ ।

उर्व्वशी, स्त्री. स्वर्गवेश्याविशेष । हूर ।

उर्वशी-रमण, }
उर्वशी-वल्लभ, } पु. पुरूरवाराजा ।

उर्व्वी, स्त्री. पृथिवी । ज़मीन ।

उर्वी-रुह(ह) पु. वृक्ष, उद्भिद ।

उल(लु)प, पु. प्रतानिनीलता (न) खवतृण; पुरूरवा राजा, दासकी वेल, चटाईका घास ।

उलुक, न. तृणविशेष, (पु) उल्लू, इन्द्र, शकुनी-पुत्र । वृक्ष, उल्लू, देवताओंका राजा ।

उलूखल, न. ऊखल, गुग्गल ।

उलूत, पु. अजगरसर्प्प । अज़दहा ।

उलूपिन्, पु. जलका जीव ।

उलुलु, पु. मंगल जनकशब्दविशेष ।

उल्का, स्त्री. आकाशसे गिरतीहुई आग, आगका शोलह, जलती लकड़ी ।

उल्कामुखी, स्त्री. शृगालीविशेष ।

उल्मुक, न. अङ्गार, उल्का, जलती हुई लकड़ी ।

उल्लङ्घन, न. अतिक्रमण । उलांघना ।

उल्लङ्घित, त्रि. अतिक्रान्त । उलांघाहुआ ।

उल्लम्फ, }
उल्लम्फन, } पु. न. उत्प्लवन; उछलना, लंघजाना ।

उल्लसत्, त्रि. कांपताहुआ, हिलता हुआ ।

उल्लसित, त्रि. उज्ज्वल, हृष्टचित्त । खुश ।

उल्लाघ, त्रि, रोगमुक्त, हृष्ट, निष्पाप, (पु) मरिच, स्याह मिरच ।

उल्लाघन, न. रोग नाश, भारसे छूटना ।

उल्लाप, पु. विकृत-शब्द । बीमारी या खौफ़से बदलीहुई अवाज़ ।

उल्लास, पु. ग्रन्थपरिच्छेद, वृद्धि, हर्ष, प्रकाश ।

उल्लिखित, त्रि. लिखाहुआ, चित्राहुआ । कहाहु०, उछालाहु० ।

उल्लुञ्चन, न. केशोत्पाटन; वाल चुंथा ।

उल्लुण्ठन, न. लौटना, उलटपलट करना ।

उल्लेख, अर्थालंकारवि०, उच्चारण, कथन ।

उल्लेखन, न. कहना; खोदना, रद्द करना ।

उल्लोच, पु. चन्द्रातप; चंदोआ, चांदनी ।

उल्लोल, पु. महातरङ्ग । वड़ी लहर (त्रि) लहराता

उल्ब, न. जरायु, गर्त्त । रेहम, गढ़ा ।

उल्बण, त्रि. स्पष्ट, स्फुट (न) कफपित्तआदि तीनों धातुओंमेंसे एककी अधिकता । जाहर, साफ़ ।

उश(ष)ती, स्त्री. अमङ्गल वाक्य । बुरीकलाम ।

उशनस्, पु. शुक्राचार्य्य । [घी, खूबसूरत ।

उशिस्, पु. अग्नि, घृत, (त्रि) कमनीय । आग,

उशीनर, पु. गन्धार देश, चंद्रवंशीय राजा । शिवीका पिता ।

उशी(षी)र पु. न. वीरणमूल । खस्स ।

उष, (पु) कामी प्रभात (स्त्री) (षा) रात, शोरा, वाण राजाकी कन्या, गौ (व्य) प्रभात ।

उषर्बुध, पु. अग्नि, गौ (व्य) प्रभात ।

उषस्, न. प्रत्यूष । सुबह (स्त्री) (सी) सायंसंध्या ।

उपरुनी; पु. ऋषिवि० ।
उपस्य, न. हविर्विशेष (त्रि) प्रभातका ।
उपाकल, पु. सं. कुकुट । मुर्ग़ ।
उपित, त्रि. दग्ध, त्वरित, स्थित, निविष्ट ।
उष्ट्र, पु. पशुविशेष; ऊंठ । शुत्तर ।
उष्ट्रगोयुग, पु. उष्ट्रद्वय; दो ऊंठ । [ऊंठनी ।
उष्ट्रिका, स्त्री. मिट्टीका बनाहुआ मद्यका पात्र,
उष्ण, पु. ग्रीष्मऋतु, आतप, पलाण्डु, (त्रि) तप्त, (स्त्री) संताप ।
उष्णरश्मि, **उष्णांशु**, } पु. सूर्य ।
उष्णालु, त्रि. धूपसे जलताहुआ । [किया हुआ ।
उष्णित, त्रि. कोपित । गुस्सह कियाहुआ, गरम
उष्णीष, पु. न. शिरोवेष्टन; पगड़ी । दस्तार ।
उष्णिह् स्त्री. सप्ताक्षर छन्दोविशेष ।
उष्म, **उष्मन्**, } पु. ग्रीष्मकाल, । गरम मोसम । गुस्सा, श, ष, स, ह अक्षर ।
उष्मक, पु. ग्रीष्मकाल । मौसिम गरमा ।
उष्मपा, स्त्री. पितृलोकवि०
उष्माण, न. गरमी । [गाय ।
उस्र, पु. रूप, रश्मि, (स्त्री) (स्रा) धेनु । बैल । शुआ,
उह्यमान, त्रि. आकृष्य मान । वाहा जानेवाला ।

ऊ.

ऊ, व्य. संबोधन, वाक्यारम्भ, दया, रक्षा, (पु) महेश्वर, चंद्र, छटाखर, त्रि. रूपक । [भार्या ।
ऊढ, त्रि. विवाहित, वाहित, नीत, स्त्री. (ढा)
ऊत, त्रि. स्यूत (स्त्री) (ति); बुनाहुआ, सीयाहुआ सिलाई, बुनाई ।
ऊधस्, न. आपीन । लेवा ।
ऊध(न्य)(स्य), त्रि. न. दुग्ध; दूध । शीर ।
ऊन, त्रि. हीन, न्यून । कम, दुबला ।
ऊम्, व्य. निन्दा, स्पर्द्धा, स्पृहा, प्रश्ण, गर्व, क्रोध । मलामत, गुस्ताखी, ख्वाहिश, सवाल गरूर, बोधक शब्द (न) म, नगर ।
ऊररी, स्त्री. स्वीकार, विस्तार ।
ऊरव्य, त्रि. वैश्य; बनिया वग़ैरेह ज़ातें, (त्रि) पट्टोंसे जो पैदा हो ।
ऊरी(उररी), व्य. मान लेना, विस्तार ।
ऊरु, पु. जङ्घा; जांघ ।
ऊरुज, पु. वैश्य । बनियां आदि ।
ऊरुदघ्न, त्रि. जानुदघ्न; जांघतक ।
ऊरुपर्वन्, न. जानु; घुटना । [जल ।
ऊर्ज, पु. कार्तिकमास, उत्साह, बल, सांस (न)
ऊर्जस्वल(त्), त्रि. अतिशय, बलवान् । निहायत ज़ोरावर । रोबदार ।
ऊर्जस्विन्, त्रि. बलिष्ठ, (न) काव्यालङ्कारविशेष । ज़ोरावार, इबारतकी रंगीनी । [मशहूर ।
ऊर्जित, त्रि. तेजस्वी, विख्यात, वर । ताकतवर,
ऊर्णनाभ, पु. कीटविशेष, लूता; मकड़ी ।
ऊर्णा, स्त्री. ऊण, पशम, पानीकी भंवर, दोनों भवोंके बीजके रोम ।
ऊर्णायु, पु. भूरा, मकड़ी, मेंढ़ा ।
ऊर्णुत, त्रि. आच्छादित; ढंपाहुआ । [ऊपर ।
ऊर्द्ध, त्रि. उच्छ्रित, उत्कृष्ट, उपरि । ऊंचा, उमदह,
ऊर्द्धक, पु. मृदङ्गविशेष ।
ऊर्द्ध-जानु, **ऊर्द्ध-ज्ञु**, } त्रि. ऊंचे घुटनेवाला ।
ऊर्द्ध-देव, पु. विष्णु ।
ऊर्द्धपाद, पु. शरभ (त्रि) जिस्के पाव ऊंचे हों ।
ऊर्द्धपुण्ड्, पु. तिलकविशेष । वैष्णवों काऊंचा तिलक । [मुनि, योगी ।
ऊर्द्ध-रेतस्, पु. शिव, भीष्म, सनकआदि चार
ऊर्द्धलिङ्ग, पु. महादेव ।
ऊर्म्मि, पु. स्त्री. लहर, रौशनी, तेज़ी, दर्द, चाह । संग, प्रकाश, कोश्र, समूह पीड़ा, भ्रांति (स्त्री) अश्वगति वि० । [लहर ।
ऊर्म्मिका, स्त्री. उत्कण्ठा, भौंरेकी गुंजार, अंगुठी,
ऊर्म्मिमत्, त्रि. तरङ्गित, तरङ्गवाला ।
ऊर्म्मिमालिन्, पु. समुद्र; समुंदर ।
ऊर्म्मित, त्रि. समुद्र । लहरांवाला ।
ऊर्म्मिला, स्त्री. लक्ष्मणकी स्त्री ।
ऊर्वष्ठीव, न. ऊरु और जानू । पाट और घुटनो ।
ऊष, पु. क्षारमृत्तिका, (न) प्रभात स्त्री. (षा) खारीमट्टी, सुबह ।
ऊषक, न. प्रत्यूष; प्रभात । गढ़ा ।
ऊषण, न. मरिच, (पु) व्याघ्र, (स्त्री) (णा) शुंठी; स्याह मरिच, चीता सौंट, मघ ।

ऊपर, } पु. वंजरज़मीन। [औरत, सवह।
ऊपवत्, }
ऊषा, स्त्री. अनिरुद्ध-भार्या, प्रभात, । अनिरुद्धकी
ऊष्मन्, पु. निदाघ; ज्येष्ठअसाढ़।
ऊह, पु. वितर्क, अनुमान, अध्याहार । दलील, नतीजह निकालना, छुटेहुए लफ़्ज़ोंको लगाकर इबारत पूरा करना।
ऊहन, न. तर्क। स्त्री. (नी) सम्मार्जनी। झाड़ू।
ऊहिनी, स्त्री. राशि, सेना। मजमा, फ़ौज।
ऊह्य, त्रि. अध्याहार्य्य। माहज़ूफ़।

ऋ.

ऋ, व्य. निन्दा हंसी, पु. ७ म, स्वर, स्वर्ग (स्त्री) देवमाता, अदिति।
ऋक्ष, पु. रीछ। खासपहाड़, शोनक वृक्ष, न. नक्षत्र त्रि. विद्ध। [धारा।
ऋक्षर, न. वारिधारा, (पु) पुरोहित । पानीकी
ऋक्षराज, पु. जाम्बवान्, चन्द्रमा।
ऋक्षवत्, पु. नर्मदाके तीरपरका पर्वत।
ऋक्षेश, पु. चांद, जांबवान्। [ज़र, त्रि. वारस।
ऋक्थ, न. दाय, धन, स्वर्ण । विरसा, दौलत,
ऋक्थ-हर, त्रि. दायाद। वारिस।
ऋच्, स्त्री. वेदमंत्र, वेद।
ऋच्छारा, स्त्री. वेश्या; कंचनी।
ऋजिमन्, पु. सुलायमी, नरमी।
ऋजीक, पु. इन्द्र, धूम; धूंआं।
ऊर्द्धमुख, न. नक्षत्रवि.। [दौलत, दोज़ख़।
ऋजीष, न. भर्जनपात्र, धन, नरकविशेष; कड़ाई,
ऋजु(क), त्रि. सरल; सीधा। [सीधा जिसमवाला।
ऋजुकाय, पु. कश्यपमुनि, (त्रि) अवक्रशरीर;
ऋण, पु. न. उधार, दुर्ग, जल,। [लिना।
ऋणादान, न. अष्टादश व्यवहारोंमेंसे एक, कर्ज
ऋणिक, पु. अधमर्ण। कर्ज़ख्वाह।
ऋणिन्, त्रि. ऋणग्रस्त। कर्ज़दार।
ऋत, न. परब्रह्म, जल, सत्य, इच्छा (त्रि) दीप्त, पूजित, यथार्थ।
ऋतधामन्, पु. विष्णु, नारायण। [भाग्य।
ऋति, स्त्री. गति, निन्दा, स्पर्द्धा, शुभ वाद, सौ-
ऋतिकर, त्रि. शुभजनक।

ऋतीया, स्त्री. घृणा, लज्जा निंदा।
ऋतु, पु. षड्विध काल। छय मौसम, (वसंत, ग्रीष्म वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर)। हैज़, चमक।
ऋतुमती, स्त्री. रजस्वला। हैज़वाली।
ऋतुराज, पु. वसन्त।
ऋते, व्य. विना। सिवाय।
ऋतोक्ति, पु. सत्यभाषण; सच बोलना।
ऋत्विज्, पु. पुरोहित, ऋतुयाजक।
ऋद्ध, न. पक्वधान्य, (त्रि) समृद्ध। पकेहुए धान, धनी (स्त्री) (द्धि) स्मृद्धि, पार्वती, धन। दौलतका बढ़ना, पार्वतीका नाम, दौलत।
ऋद्धिमत्, त्रि. धनाढ्य। दौलतमंद।
ऋभु, पु. देवता।
ऋभुक्ष, पु. स्वर्ग, इन्द्र, वज्र।
ऋभुक्षिन्, पु. इन्द्र।
ऋश्य, पु. स्त्री. मृगविशेष।
ऋश्यकेतु, पु. अनिरुद्ध।
ऋषभ, पु. वृष, खासस्वर, कर्णरंध्र, वराह-पुच्छ, श्रेष्ठ, एकदवाई, जड भरत (स्त्री) (भी) विधवा; दाढ़ीवाली स्त्री।
ऋषभ-ध्वज, पु. शिव, अर्हद्विशेष।
ऋषि, पु. मन्त्रद्रष्टा मुनि; सातभांतके १ श्रुतर्षि, २ काण्डर्षि, ३ पुरर्षि, ४ महर्षि, ५ राजर्षि, ६ ब्रह्मर्षि, ७ देवर्षि, वेद, किरण (स्त्री) (षी) ऋषिपत्नी।
ऋषिकुल्या, स्त्री. नदी। दर्य्या।
ऋषिपञ्चमी, स्त्री. भाद्रपदमासके शुक्लपक्षकी पञ्चमी, नागपञ्चमी।
ऋष्टि, स्त्री. खड्ग। दुधारी तलवार, बुराई।
ऋष्य, पु. श्वेतपादमृग। जिस मृगके पांव सुपेद हैं।
ऋष्यमूक, पु. पर्वतविशेष; एक पहाड़का नाम।
ऋष्य-शृङ्ग, पु. मुनिविशेष; विभाण्डकका पुत्र।

ॠ.

ॠ, व्य. भय, (न) वक्ष, (स्त्री) देवमाता, स्मृति, गति, (पु) भैरव, दनुज, आठवां स्वर, भैरव। (१) एक, देह पु. बुधग्रह।

ऌ, व्य. देव[illegible] [illegible]त।

ऌ, स्त्री. देवनारी, माता, (पु) महादेव (स्त्री) दैत्य-माता ।

ए.

ए, व्य. स्मृति, दया, असूया, आव्हान, आमन्त्रण, (पु) विष्णुस्त्री. पृथिवी । [प्रथमसंख्याबोधक ।

एक, त्रि. मुख्य, केवल, अन्य, अद्वितीय,

एकक, त्रि. असहाय, । अकेला ।

एककुण्डल, पु. बलराम, कुवेर ।

एकगुरु, पु. सतीर्थ, सहाध्यायी ।

एकचक्र, पु. सूर्यरथ, स्त्री. (क्रा) नगरीविशेष ।

एकचर, पु. हिंस्रपशु, (त्रि) असंसर्ग । गैंडा, अकेला फिरनेवाला ।

एकजातीय, त्रि. तुल्य प्रकार । एक क़िसमका ।

एकतम, त्रि. बहूनामेकः । बहुतोंमेंसे एक ।

एकतर, त्रि. द्वयोर्म्मध्ये एकः, दोनोंमेंसे एक ।

एकतस्, व्य. एक ओरसे ।

एकता, स्त्री. एकत्व । एकता ।

एकतान, त्रि. एकाग्र, पु. एक योग स्वर ।

एकतीर्थिन्, पु. सहपाठी ।

एकत्र, व्य. एकस्मिन् स्थाने; एकजगह ।

एकतर, स्त्री. ऐक्य । दोनोंमें से एक ।

एक-दन्ष्ट्र, } पु. गणेश ।
एकदन्त, }

एकदा, व्य. एकस्मिन् काले । एक वक्त । [काना ।

एकदृश्, पु. महादेव, काक, (त्रि) कोण, कौवा

एकदेश, पु. अवयव, एकांश । एक भाग ।

एकधा, व्य. एक प्रकार । एकतरह ।

एकधुर, } त्रि. एक प्रकारका भार उठानेवाला ।
एक-धुरावह, }
एक-धुरीण, }

एकपक्ष, त्रि. सहाय । मददगार ।

एकपत्नी, स्त्री. पतिव्रता, बड़ी स्त्री, ।

एकपद, न. तत्काल, (पु) शृङ्गारबन्धविशेष, (स्त्री) (दी) उस वक्त; सोलह शृङ्गारमेंसे १ एक मार्ग, बाट ।

एकपदे, पु. न. अचानक, उत्सीक्षण ।

एकपाद, पु. शिव ।

एकपेष्टिक, स्त्री. यज्ञ हारवि० मार्ग ।

एकपिङ्ग(ल), पु. कुबेर । दौलतका देवता ।

एकभक्त, त्रि. एकाहारी, एक प्रभु-भक्त । दिनमें एक वेर खानेवाला, एक मालिककी खिदमत करनेवाला ।

एकभक्तव्रत, न. दिनमें एकवार भोजन करना और रातको न करना ।

एकमनस्, त्रि. एकचित्त । एकदिल ।

एकमला, स्त्री. अतसी; अलसी ।

एकयष्टिका, स्त्री. हारविशेष ।

एकराज, पु. चक्रवर्ती । शानशाह ।

एकरूप, त्रि. समानरूप । यकसां ।

एकल, त्रि. एकाकी; एकला । तनहा । [महादेव ।

एकलिङ्ग, पु. कुवेर, (न) स्थानविशेष, खास

एकवचन, न. व्याकरणोक्त एकसंख्यावाचक । मुफ़रिदका सीगह ।

एकर्षि, पु. सूर्य (स्त्री) (र्षी) ताली ।

एकवर्णसमीकरण, न. बीजगणितकी संज्ञाविशेष । मुफ़रिद मुसावात ।

एकवाद, पु. डिण्डिमवाद्य, पटह । डौंड़ी; नकारा ।

एकविंश, पु. संख्याविशेष, २१ वां ।

एकविंशति, स्त्री. इकीस ।

एकवीर, पु. वृक्षविशेष । [घोड़ा आदि ।

एकशफ, पु. एकखुर, । एक सुमदार हैवान । गधा

एकशृङ्ग, पु. विष्णु, पु. स्त्री. गैंडा । एक सिंघवाला ।

एकशेष, पु. समासविशेष, द्वंद्वका भेद ।

एकश्रुति, स्त्री. एक अवाज़ ।

एकषष्टि, स्त्री. एकासठ ।

एकसङ्ग, पु. विष्णु; कृष्ण ।

एकसङ्गिन्, त्रि. सार्थ; साथी ।

एकसर्ग, त्रि. एकाग्र चित्त । मुतवज्जह ।

एकहायनी, एक वर्षायागौ; एक बरसकी गाय ।

एका, स्त्री. दुर्गा, सङ्गरहिता, अकेली ।

एकाकिन्, त्रि. असहाय; अकेला ।

एकाक्ष, पु. काक, (त्रि) काण । कौआ, यकचश्म ।

एकाग्र, } त्रि. एक ओर लगाहुआ ।
एकाग्र्य, }

एकाग्रता, स्त्री. अनन्यचित्तता । एक तरफ़ तवज्जह ।

एकाङ्ग, पु. बुधग्रह, (न) चन्दन । संदल, सयारा अतारिद । [पादशाहत ।

एकातपत्र, न. सार्वभौम । तमाम ज़मीनका

ऊपर, } पु. वंजरज़मीन।
ऊपवत्, } [औरत, सवह।
ऊपा, स्त्री. अनिरुद्ध-भार्या, प्रभात, । अनिरुद्धकी
ऊष्मन्, पु. निदाघ; ज्येष्ठअसाढ़।
ऊह, पु. वितर्क, अनुमान, अध्याहार । दलील, नतीजह निकालना, छुटेहुए लफ़ज़ोंको लगाकर इबारत पूरा करना।
ऊहन, न. तर्क। स्त्री. (नी) सम्मार्जनी। झाड़ू।
ऊहिनी, स्त्री. राशि, सेना। मजमा, फ़ौज।
ऊह्य, त्रि. अध्याहार्य्य। माहज़ूफ़।

ऋ.

ऋ, व्य. निन्दा हंसी, पु. ७ म, स्वर, स्वर्ग (स्त्री) देवमाता, अदिति।
ऋक्ष, पु. रीछ। खासपहाड, शोनक ऋक्ष, न. नक्षत्र त्रि. विद्ध। [धारा।
ऋक्षर, न. वारिधारा, (पु) पुरोहित । पानीकी
ऋक्षराज, पु. जाम्बवान्, चन्द्रमा।
ऋक्षवत्, पु. नर्मदाके तीरपरका पर्वत।
ऋक्षेश, पु. चांद, जांववान्। [ज़र, त्रि. वारस।
ऋक्थ, न. दाय, धन, स्वर्ण । विरसा, दौलत,
ऋक्थ-हर, त्रि. दायाद। वारिस।
ऋच्, स्त्री. वेदमंत्र, वेद।
ऋच्छारा, स्त्री. वेश्या; कंचनी।
ऋजिमन्, पु. मुलायमी, नरमी।
ऋजीक, पु. इन्द्र, धूम; धूंआं।
ऊर्द्ध्वमुख, न. नक्षत्रवि.। [दौलत, दोज़ख़।
ऋजीप, न. भर्जनपात्र, धन, नरकविशेष; कढाई,
ऋजु(क), त्रि. सरल; सीधा। [सीधा जिसमवाला।
ऋजुकाय, पु. कश्यपमुनि, (त्रि) अवक्रशरीर;
ऋण, पु. न. उधार, दुर्ग, जल,। [लेना।
ऋणादान, न. अष्टादश व्यवहारोंमेंसे एक, कर्ज
ऋणिक, पु. अधमर्ण। कर्ज़ख्वाह।
ऋणिन्, त्रि. ऋणग्रस्त। कर्ज़दार।
ऋत, न. परब्रह्म, जल, सत्य, इच्छा (त्रि) दीप्त, पूजित, यथार्थ।
ऋतधामन्, पु. विष्णु, नारायण। [भाग्य।
ऋति, स्त्री. गति, निन्दा, स्पर्द्धा, शुभ बाट, सौ-
ऋतिकर, त्रि. शुभजनक।
ऋतीरा, स्त्री. घृणा, लज्जा निंदा।
ऋतु, पु. षड्विध काल। छय मौसम, (वसंत, ग्रीष्म वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर)। हैज़, चमक।
ऋतुमती, स्त्री. रजस्वला। हैज़वाली।
ऋतुराज, पु. वसन्त।
ऋते, व्य. विना। सिवाय।
ऋतोक्ति, पु. सत्यभाषण; सच बोलना।
ऋत्विज्, पु. पुरोहित, ऋतुयाजक।
ऋद्ध, न. पक्वधान्य, (त्रि) समृद्ध । पकेहुए धान, धनी (स्त्री) (द्धि) स्मृद्धि, पार्वती, धन। दौलतका वढ़ना, पार्वतीका नाम, दौलत।
ऋद्धिमत्, त्रि. धनाढ्य। दौलतमंद।
ऋभु, पु. देवता।
ऋभुक्ष, पु. स्वर्ग, इन्द्र, वज्र।
ऋभुक्षिन्, पु. इन्द्र।
ऋश्य, पु. स्त्री. मृगविशेष।
ऋश्यकेतु, पु. अनिरुद्ध।
ऋषभ, पु. वृष, खासस्वर, कर्णरंध्र, वराह-पुच्छ, श्रेष्ठ, एकदवाई, जड भरत (स्त्री) (भी) विधवा, दाढ़ीवाली स्त्री।
ऋषभ-ध्वज, पु. शिव, अर्हद्विशेष।
ऋषि, पु. मन्त्रद्रष्टा मुनि; सातभांतके १ श्रुतर्षि, २ काण्डर्षि, ३ पुरर्षि, ४ महर्षि, ५ राजर्षि, ६ ब्रह्मर्षि, ७ देवर्षि, वेद, किरण (स्त्री) (षी) ऋषि-पत्नी।
ऋषिकुल्या, स्त्री. नदी। दर्य्या।
ऋषिपञ्चमी, स्त्री. भाद्रपदमासके शुक्लपक्षकी पञ्चमी, नागपञ्चमी।
ऋष्टि, स्त्री. खड्ग। दुधारी तलवार, बुराई।
ऋष्य, पु. श्वेतपादमृग। जिस मृगके पांव सुपेद हैं।
ऋष्यमूक, पु. पर्वतविशेष; एक पहाड़का नाम।
ऋष्य-शृङ्ग, पु. मुनिविशेष; विभाण्डकका पुत्र।

ॠ.

ॠ, व्य. भय, (न) वक्ष, (स्त्री) देवमाता, स्मृति, गति, (पु) भैरव, दनुज, आठवां स्वर, भैरव। (१) एक, देह पु. बुधग्रह।

ऌ.

ऌ, व्य. देवमाता, भूमि, पर्व्वत। ज़मीन, पहाड़।

ऐकात्म्य, न. ऐक्य। एक दिल होना। [यकीनी।
ऐकान्तिक, त्रि. दृढ़, अवश्यम्भावी। मज़बूत।
ऐकाह्निक, त्रि. एक दिन साध्य, एक दिवसमें होनेवाला, तृतीयज्वर।
ऐक्य, न. एकीभाव। एक राय, मेल।
ऐक्षुक, पु. इक्षुवाहक, वा व्यवसायी। ऊंखके उठानेवाला, या बेचनेवाला। [घराना।
ऐक्ष्वाक, त्रि. सूर्य्यवंशीय राजा; सूर्य्यवंशियोंका
ऐङ्गुद, न. इङ्गुदी फल; हिंगोटका फल।
ऐडविड, पु. कुबेर।
ऐडक, न. एडुक। दिवार, झोंपड़ी, कबर।
ऐणक, न. मृगचर्म। कालेहिरणका चमड़ा।
ऐणिक, त्रि. एणहन्ता, एणसंबंधीय; काले हरिनके मारनेवाला, कालेहिरणका। [वगैरह।
ऐणेय, त्रि. कृष्णमृगचर्म्मादि। कालेहरणकी खाल
ऐतदात्म्य, न. एतत्स्वरूप। एकरूप।
ऐतरेय, पु. } उपनिषद् विशेष।
ऐतरेयक, }
ऐतरेयिन्, त्रि. ऋगवेदकी शाखाका पढ़नेवाला।
ऐतिहासिक, त्रि. इतिहास संबंधीय, तारीख़दान।
ऐतिह्य, न. परम्परागत उपदेश वाक्य, प्रमाणविशेष, कथा कहानी। [(स्त्री) सोमराजी।
ऐन्दव, पु. मृगशिरा नक्षत्र, (त्रि) चांदसंबंधीय,
ऐन्द्र, पु. इन्द्रपुत्र, जयन्त, वाली, बंदरोंका राजा, (स्त्री) (न्द्री) इन्द्राणी पूर्वदिशा, (न.) ज्येष्ठा नक्षत्र, त्रि. इन्द्रका।
ऐन्द्रजालिक, पु. मायावी; मदारी। [काल।
ऐन्द्रि, पु. जयन्त, सुग्रीव, बाली, अर्जुन,
ऐन्द्रियक, इन्द्रिय सम्बन्धीय; इन्द्रियोंका।
ऐरावन, } पु. इन्द्रहस्ती, एरावण, नागराज।
ऐरावत, } इन्द्रका हाथी (स्त्री) (ती) ऐरावत स्त्री, रावी नदी, बिजली।
ऐरेय, न. मद्य। अन्नकी शराब।
ऐल, पु. पुरूरवा राजा; चन्द्रवंशीयोंमेंसे पहिला।
ऐलविल, पु. कुबेर।
ऐलेर, न. इलायचीकी गंधी।
ऐशानी, स्त्री. ईशानकोन, शक्तिविशेष।
ऐश्वर्य्य, न. अणिमा आदि आठ विभूतियें, यथा- अणिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व।
ऐश्वर्य, न. ईश्वरकी विभूति।
ऐषमस, व्य. वर्तमान वत्सर; हालका वरस।
ऐषीक, न. महाभारतका एक पर्व।
ऐषणस्त्य, त्रि. आजका।
ऐहलौकिक, न. धन, (त्रि) यहांका।
ऐहिक, त्रि. इहलोकभव। इसलोकका।

ओ.

त्रयोदश स्वर; तेहरवांस्वर।

ओ, व्य. स्मरण, सम्बोधन, आह्वान, दया, (पु.) ब्रह्मा। [चंडाल।
ओक, न. गृह, आश्रय (पु) पक्षी, घर, पनाह, पंछी,
ओकस, न. गृह, मंदिर।
ओकण(णि), यूक; जूं।
ओकुल, पु. मयदेकी गरम रोटी।
ओकोदनी, स्त्री. यूक; जूं।
ओक्ष(क), न. रव। आवाज़।
ओग्य, न. रिंधाहुआ।
ओघ, पु. समूह, जलवेग, तरङ्गपरम्परा, उपदेश, द्रुतनृत्य गीतवाद्य। मजमा, पानीका ज़ोर, लहर, नसीहत, जल्दीसे नाचना गाना बजाना।
ओङ्कार, पु. प्रणव ब्रह्म, "ओं" अक्षर।
ओजस्, न. बल, तेज, *विषम राशि, विषम संख्या,* स्वर्ग, दीप्ति। काव्यगुण वि० ३ री ५ मी, ७ मी, ९ वीं, ११ मी राशि, १३५७ वगैरह अदद, सोना, चमक।
ओजस्विन्, त्रि. तेजवाला, वलवान्, प्रकाशमान।
ओजस्वन्त, पु. वली। रोबवाला।
ओजिष्ठ, त्रि. अति तेजस्वी, सारवान्। निहायत चमकीला, निहायत ज़ोरावर।
ओडव, पु. रागविशेष।
ओडिका, } स्त्री. धान्यविशेष, नीवार। जंगली-
ओडी, } चावल।
ओड्र, न. जवापुष्प, पु. उत्कलदेश; उडीसा। [तात।
ओत, त्रि. प्रोत, पिरोया हुआ (न) कपड़ेकी लंबीतांत।
ओतु, पु. विडाल; बिल्ली।
ओदन, न. अन्न; अनाज, उबले हूए चावल।

एकात्मन्, पु. परमात्मा, विष्णु। एकप्राण, एकजान।
एकादश, त्रि. संख्याविशेष; (स्त्री) (शी) तिथि विशेष। ११ ग्यारहवां, ग्यारहवीं तिथि।
एकादशन्, त्रि. बहु० ग्यारह।
एकान्त, न. अत्यन्त, दृढ, (त्रि) निभृत, अवश्य। निहायत, मज़बूत, तनहा, ज़रूर।
एकान्ततस्, व्य. सिरफ़, ज़्यादह। [हनेवाला।
एकान्तिन्, पु. विष्णुभक्तविशेष (त्रि) तनहा र-
एकान्तवादिन्, पु. सप्तपदार्थवादी नास्तिकवि०
एकान्न, पु. सहभोजी। इकट्ठा खानेवाला।
एकादूनविंशति, **एकान्नविंशति**, **एकोनविंशति**, स्त्री. उनीस।
एकावली, स्त्री. माला, वि०, अर्थालंकारविशेष।
एकाश्रय, त्रि. एकपर भरोसा रखनेवाला।
एकाह, पु. एक दिन। [रनेवाला।
एकाहारिन्, त्रि. एकभोजी, एकवार भोजन कर-
एकीभाव, पु. एकहो जाना। [२ करके।
एकैकशस्, व्य. यथाक्रम। सिलसिलहवार एक
एकोद्दिष्ट, न. साम्वत्सरिक श्राद्ध, क्षयाह श्राद्ध। वरस पीछे मौतके दिन जो मृतके उद्देश्य श्राद्ध किया जाता है।
एजन, न. कम्पन; कांपना, उकसाना।
एजित, त्रि. कम्पित; कांपाता हुआ।
एड(क), पु. मेष (त्रि.) वहिरा।
एडका, पु. मेष स्त्री. मेषी; भेड़ी।
एडगज, पु. मेष मेंढ़ा।
एडमूक, त्रि. गूंगा और वहिरा पुरुष।
एडु(डू)(डो)क, न. कुड्यविशेष, मकबरा, रौज़ा कच्ची दीवार।
एण(क), पु. कृष्णहरिण (स्त्री) (णी) हरिणी।
एणतिलक, पु. चन्द्र। माहताव।
एणनाभि, स्त्री. मृगनाभि। कस्तूरी।
एणाजिन, न. मृगचर्म्म। हिरणकी खाल।
एत, त्रि. मृग, चितकवरा (स्त्री) (ता, नी) हरिण, हिरिणी, (त्रि) आयाहुआ।
एतद्, त्रि. पुरोवर्ती; सामने, यह।
एतदन्त, त्रि. अवशेषे, यहांतक। आख़िरमें।
एतदवधि, व्य. एतावत्पर्य्यन्तं; यहांतक।
एतदर्थ, व्य. एतन्निमित्त; इसलिये।
एतदीय, त्रि. एतत्सम्बन्धीय; इस्का।
एतन, पु. निश्वास, प्रश्वास; सांसलेना या निकालना।
एतर्हि, व्य. इस कालमें, अव।
एतादृश, **एतादृस्**, त्रि. एतत्तुल्य; ऐसा।
एतावत्, इतना ही।
एध, **एधस्**, पु. इन्धन; जलानेकी लकड़ी घास आदि।
एधित, (त्रि) वर्द्धित; वढ़ाहुआ।
एनस्, न. पाप, अपराध, निन्दा,। गुनाह, कसूर।
एनस्विन्, त्रि. पापी, अपराधी। गुनाहगार, [क़सूरवार।
एरका, स्त्री. तृणविशेष; एरा। पटेरघास।
एरङ्ग, पु. प्रसिद्ध मत्स्यविशेष।
एरण्ड, **एरण्डक**, पु. वृक्षविशेष; एरंडका पेड़।
एरण्डा, स्त्री. पिप्पली। मघ।
एलक, पु. मेष; मेंढा।
एलङ्गा, पु. मत्स्यविशेष; एक किसमकी मछली।
एलविल, पु. कुवेर; दौलतका देवता।
एला, **एलीका**, स्त्री. इलायचीका फल, वा पेड़।
एव, व्य. सादृश्य, अवधारण, परिसंख्य, ईषदर्थ, वाक्यपूरण। मुशाविहत, तहक़ीक़ात, हिकारत, थोड़ापन अर्थोंका वोधक शब्द।
एवम्, व्य. एतादृश; ऐसा, वरावरी, निश्चय, प्रश्न।
एषण, पु. लोहा (स्त्री) (णा) इच्छा।
एषणिका, स्त्री. तुला; सुनारका कांटा।
एषणीय, त्रि. स्पृहनीय। खाहिश करनेके लायक।
एषितव्य, त्रि. तलाशके योग्य।
एषितृ, **एष्ट्री**, त्रि. इच्छुक। खाहिश मंद।

ऐ.

ऐ, व्य. स्मरण, सम्वोधन, आमन्त्रण, (पु) शिव। यादाश्त, वुलाना, मुखातव करना।
ऐकमत्य, न. एकविध अभिप्राय। मुत्तफ़िक़ुलराय।
ऐकागारिक, त्रि. चौर, एक गृहनिवासी चोर, एक घरमें रहनेवाले। [एकही तरफ़ है।
ऐकाग्र(ग्र्य), त्रि. एकाग्रचित्त। जिस्का दिल

ऐकात्म्य, न. ऐक्य । एक दिल होना । [यकीनी ।
ऐकान्तिक, त्रि. दृढ, अवश्यम्भावी । मज़बूत ।
ऐकाह्निक, त्रि. एक दिन साध्य, एक दिवसमे होनेवाला, तृतीयज्वर ।
ऐक्य, न. एकीभाव । एक राय, मेल ।
ऐक्षुक, पु. इक्षुवाहक, वा व्यवसायी । ऊंखके उठानेवाला, या वेचनेवाला । [घराना ।
ऐक्ष्वाक, त्रि. सूर्य्यवंशीय राजा; सूर्य्यवंशियोंका
ऐङ्गुद, न. इङ्गुदी फल; हिंगोटका फल ।
ऐडविड, पु. कुवेर ।
ऐडक, न. एडुक । दिवार, झोंपड़ी, कवर ।
ऐणक, न. मृगचर्म । कालेहिरणका चमड़ा ।
ऐणिक, त्रि. एणहन्ता, एणसंबंधीय; काले हरिनके मारनेवाला, कालेहिरणका । [वगैरह ।
ऐणेय, त्रि. कृष्णमृगचर्म्मादि । कालेहरणकी खाल
ऐतदात्म्य, न. एतत्स्वरूप । एकरूप ।
ऐतरेय, पु. } उपनिषद् विशेष ।
ऐतरेयक, }
ऐतरेयिन्, त्रि. ऋगवेदकी शाखाका पढ़नेवाला ।
ऐतिहासिक, त्रि. इतिहास संबंधीय, तारीख़दान ।
ऐतिह्य, न. परम्परागत उपदेश वाक्य, प्रमाणविशेष, कथा कहानी । [(स्त्री) सोमराजी ।
ऐन्दव, पु. मृगशिरा नक्षत्र, (त्रि) चांदसंबंधीय,
ऐन्द्र, पु. इन्द्रपुत्र, जयन्त, वाली, बंदरोंका राजा, (स्त्री) (न्द्री) इन्द्राणी पूर्वदिशा, (न.) ज्येष्ठा नक्षत्र, त्रि. इन्द्रका ।
ऐन्द्रजालिक, पु. मायावी; मदारी । [काल ।
ऐन्द्रि, पु. जयन्त, सुग्रीव, वाली, अर्जुन,
ऐन्द्रियक, इन्द्रिय सम्वन्धीय; इन्द्रियोंका ।
ऐरावन, } पु. इन्द्रहस्ती, एरावण, नागराज । इन्द्रका हाथी (स्त्री) (ती) ऐरावत
ऐरावत, } स्त्री, रावी नदी, विजली ।
ऐरेय, न. मद्य । अन्नकी शराव ।
ऐल, पु. पुरूरवा राजा; चन्द्रवंशीयोंमेंसे पहिला ।
ऐलविल, पु. कुवेर ।
ऐलेर, न. इलायचीकी गंधी ।
ऐशानी, स्त्री. ईशानकोन, शक्तिविशेष ।
ऐश्वर्य्य, न. अणिमा आदि आठ विभूतियें, यथा- अणिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व ।
ऐश्वर्य, न. ईश्वरकी विभूति ।
ऐषमस, व्य. वर्तमान वत्सर; हालका वरस ।
ऐषीक, न. महाभारतका एक पर्व ।
ऐषणस्त्य, त्रि. आजका ।
ऐहलौकिक, न. धन, (त्रि) यहांका ।
ऐहिक, त्रि. इहलोकभव । इसलोकका ।

ओ.

त्रयोदश स्वर; तेहरवांस्वर ।

ओ, व्य. स्मरण, सम्वोधन, आह्वान, दया, (पु.) ब्रह्मा । [चंडाल ।
ओक, न. गृह, आश्रय (पु) पक्षी, घर, पनाह, पंछी,
ओकस, न. गृह, मंदिर ।
ओकण(णि), यूक; जूं ।
ओकुल, पु. मयदेकी गरम रोटी ।
ओकोदनी, स्त्री. यूक; जूं ।
ओक्ष(क), न. रव । आवाज़ ।
ओग्य, न. रिंधाहुआ ।
ओघ, पु. समूह, जलवेग, तरङ्गपरम्परा, उपदेश, द्रुतनृत्य गीतवाद्य । मजमा, पानीका ज़ोर, लहर, नसीहत, जल्दीसे नाचना गाना वजाना ।
ओङ्कार, पु. प्रणव ब्रह्म, "ओं" अक्षर ।
ओजस्, न. बल, तेज, विषम राशि, विषम संख्या, स्वर्ग, दीप्ति । काव्यगुण वि० ३ री ५ मी, ७ मी, ९ वीं, ११ मी राशि, १३५७ वगैरह अदद, सोना, चमक ।
ओजस्विन्, त्रि. तेजवाला, वलवान्, प्रकाशमान ।
ओजस्वन्त, पु. वली । रोबवाला ।
ओजिष्ठ, त्रि. अति तेजस्वी, सारवान् । निहायत चमकीला, निहायत ज़ोरावर ।
ओडव, पु. रागविशेष ।
ओडिका, } स्त्री. धान्यविशेष, नीवार । जंगली-
आडी, } चावल ।
ओड्र, न. जवापुष्प, पु. उत्कलदेश; उड़ीसा । [तात ।
ओत, त्रि. प्रोत, पिरोया हुआ (न) कपड़ेकी लंवीतांत ।
ओतु, पु. विडाल; विल्ली ।
ओदन, न. अन्न; अनाज, उवले हूए चावल ।

ओम्, व्य. प्रणाव; अ, उ, ओर, म्, इन तीनोंसे वना हुवा वीजमंत्र, स्वीकार, अनुमति, अपसारण, मङ्गल, ब्रह्म, इन अर्थोंका वोधक। शुरु, कवूल, इजाज़त, उठाना, भलाई।

ओल, न. मूलविशेष।

ओष, पु. दाह, जलन।

ओषण, त्रि. जलनेवाला (पु) कड़वा ज़ायका।

ओषधि(धी), स्त्री. ज्योतिर्लता, फल पाकान्त वृक्षादि।

ओषधि-पति, पु. } चन्द्र; चांद।
ओषधीश, पु. }

ओष्ठ, पु. स्त्री. दशनाच्छादन; होंठ,नीमका पेड़, फल।

ओष्ठ्य, पु. वे हरूफ़ जिन्का होंठोंमें उच्चारण होता है।

औ.

औ, व्य. सम्बोधन, विरोध, निर्णय, स्त्री. पृथिवी, पु०अनन्त, शङ्क।

औक्ष(क), न. वृषसमूह; वैलोंका गल्लह त्रि. वैलका।

औख, पु. मस्तहाथी, नीर (न) दारुचीनी (स्त्री) (खी) सिंहलीलता। [वस्तु।

औख्य, त्रि. स्थालीपक्व; वटलोहीमें रिंधी हुई

औचिती, स्त्री. } औचित्य, योग्यता। लियाकत, लायकी।
औचित्य, न. }

औड, त्रि. उडीसाका निवासी।

औडुम्बर, पु. यम, (न) कुष्टरोग, ताम्र, (त्रि) ...वर निर्म्मित, ताम्रनिर्म्मित. कोड़। मौत... ...वता, कोहडकी वीमारी, तांवा, गूलरका ...आ, ताम्वेका वना हुआ।

...न. उत्कर्षता। उमदगी, वड़ाई।

...दि, पु. ध्रुव; राजा उत्तानपादका पुत्र, ...मतमें निश्चल तारा।

... त्रि. स्वाभाविक, स्वाज्य। ज़ाती,।

.... उत्कण्ठा। तरद्दुद, अफ़सोस।

...नक, त्रि. पाचक; रसोईया।

...दरिक, त्रि. पेडुक; पेट्ट। [मठा।

...दश्वित(क) न. अर्द्धजल युक्त घोल। छाछ,

...ार्य्य, न. महत्व, उदारता,। वजुरगी, फ़याज़ी।

...दासीन्य, न. उदासीनता, उपेक्षा। वेपरवाही।

...द्धत्य, न. अविनीतत्व। मग़रूरी, ज़ुलम।

औद्भिज्ज } न. पांशव लवण; सैंधा नमक (त्रि) वनस्पति का।
औद्भिद्, }

औद्वाहिक, न. उद्वाहकाले लब्धयौतुक। हैदज।

औधस्य, न. पशुस्तन्य दुग्ध; हैवानका दूध।

औपकर्णिक, त्रि. कानतक फैला हुआ।

औपगव(क) पु. उपगुसन्तति। गायके नजदीक रहनेवालोंकी औलाद।

औपचारिक, पु. उपचार; (त्रि) उपचारका।

औपछन्दसिक, न. छन्दोविशेष। खास नज़म।

औपनिषद, पु. वेदान्तमात्र वेद्य परमात्मा।

औपम्य, न. सादृश्य। मुशाविहत।

औपयिक, त्रि. उपायलब्ध, उपयुक्त तदवीरसे मिला हुआ, लायक, ठीक, मुनासिव।

औपल, त्रि. पत्थरका।

औपवस्त , न. उपवास। फ़ाक्कह।

औपसर्गिक, पु. सन्निपात रोग विशेष, उपसर्ग,। सिरसामकी वीमारी।

औपाधिक, त्रि. उपाधिसे उत्पन्न।

औपाध्यायक, त्रि. उसतादका।

औमीन, त्रि. उमाक्षेत्र। अलसीका खेत।

औरग, त्रि. सर्प्पसम्बन्धीय, सर्प्पवत् (न) अश्लेषा-नक्षत्र। सांपका, सांपकी तरह।

औरभ्र, न. मेषलोम निर्म्मित कम्वल प्रभृति। आसन, भूरा वग़ैरह (त्रि) मेष का।

औरभ्रक, न. मेषसमूह; भेड़ियोंका गल्लह।

औरस, } त्रि. धर्म्मपत्नीज; धर्म्मशास्त्रकी रीतसे विवाही हुई स्त्रीसे पैदा हुई सन्तान, आप पैदा की हुई सन्तान।
औरस्य, }

और्ध्वदे(दै)हिक, त्रि. मरणदिनसे लेकर सपिण्डी के दिनतक किये हुऐ श्राद्ध तर्प्पण वग़ैरह।

और्व, पु. वाड़वानल, पांशवलवन। समुंदरी आग, पहाड़ी निमक।

और्वशेय, पु. अगस्त्य मुनि; उर्वशीका वेटा।

और्व, पु. मुनिविशेष।

औलक, पु. उलूक समूह; उलुओं का मजमह।

औलूक्य, त्रि. वैशेषिक दर्शनके वनानेवाला।

औशनस, न. शुक्राचार्य्य प्रोक्त उपपुराण।

औशी(षी)र, न. शयन, आसन, (पु) चामरदंड। विस्तरा, चौकी, चौरीकी डंडी।

औषध, न. भेषज। दवाई। [शोर, बंजर ज़मीन का।
औषर(क), न. पांशु लवन (त्रि.) ऊपर भूमिजात,
औषस, त्रि. ऊषाका।
औष्ट्र(क), न उष्ट्र दुग्धादि; ऊंटका दूध वग़ैरह।
औष्ठ्य, त्रि. ओठोंसे उच्चरित।
औष्ण्य, न. सन्ताप। धूप, गरमी।

क.

क, वर्ग का १ म, कंठ्य।
क, पु. सूर्य्य, ब्रह्मा, विष्णु, काम, अग्नि, काल वायु, यम, दक्ष, राजा, मयूर, मन, शरीर। सिर, वास, जल, सुख, रोधन, शब्द, प्रकाश।
कंस(श) पु. असुरविशेष, (पु. न.) फांसी, तैजस वस्तु, परिमाण पात्रविशेष। पैमाना।
कंसकार, पु. कास्मारी; कसेरा।
कंसजित, पु. वासुदेव, श्रीकृष्ण।
कंसवती, स्त्री. कंसभगिनी; कंसकी बहिन।
कंसारि, पु.
कंसा-राति, पु. } श्रीकृष्ण चन्द्र।
कंसहन्, पु.
ककुञ्जल, पु. स्त्री. चातक पक्षी; पपीहा।
ककुत्स्थ, पु. सूर्य्यवंशीय नृप विशेष; राजा-इक्ष्वाकु का पोता।
ककुद, } पु. वृषस्कन्ध, पर्वतशृङ्ग, बैलका कंधा,
ककुद्, } पहाड़की चोटी, छतर चांवर आदि राजके चिन्ह। [कमर।
ककुद्मत्, पु. बैल, सांढ, पहाड़, कमर (स्त्री) (ती)
ककुद्मिन्, त्रि. बैल, रेवतीका पिता। [शास्त्र।
ककुभ्(भा) स्त्री. दिशा, चम्पकमाला, रागिनी,
ककुभ, पु. राग, वीणका तूंबा, ख़ास पंछी, स्त्री. (भा) दिशा।
कक्कोल, न. सुगंधियुत द्रव्य।
कक्कोलक, न. मोटी मरच।
कक्खट, त्रि. कठिन, दृढ, स्त्री. (टी) खड़िया मट्टी।
कक्ष, पु. बाहु-मूल, शुष्कतृण, लता, पाप, अरण्य, भित्ति, पार्श्व, महिष, (स्त्री) (क्षा) हस्तिबंधन रज्जु, कांची। बगल, सूखी घास, बेल, गुनाह, दिवार, पास, भैंसा,।
कक्षरुहा, स्त्री. नागरमुस्था।
कक्षशाय, पु. कुक्कुर; कुत्ता।
कक्षापट, पु. कौपीन; कुपीन, लंगोटी।
कक्षावत्, पु. मुनिविशेष।
कक्षावेक्षक, पु. अन्तःपुररक्षक, उद्यानपाल, चित्रकर, कवि, लम्पट। रनवासका पहरेदार, बाग़बान, मुसव्वर, शायर, अय्याश, दरबार।
कक्ष्या, स्त्री. चर्म्म निर्म्मित हस्तिबन्धन-रज्जु, हर्म्म्यादि प्रकोष्ठ, काञ्ची, सादृश्य, उद्योग, बृहितिका, उत्तरीय वस्त्र, गुञ्जा। हाथी कसनेको चमड़ेकी रस्सी, हवेलीका सहन, औरतोंकी तड़ागी, मुशाबिहत, तरद्दुद, चादर, रत्ती तोलनेके कामकी।
कङ्क, पु. पक्षिवि॰ विराट-सभ्य-युधिष्ठिर, छली ब्राह्मण, यम, कंसभ्राता (स्त्री)(ङ्का) उग्रसेन की कन्या।
कङ्कट(क) पु. कवच, वर्म्म। संजोह।
कङ्कण, न. करभूषण विशेष, हस्तसूत्र, मण्डन, शेपर। कड़ा, पौंचेपर बांधनेका तागा, ज़ेवर, ताज, मुकुट, चोटी। [घुंगरू।
कङ्कणी(का), स्त्री. क्षुद्रघण्टिका; छोटी घंटी,
कङ्कत, न. (त्री) (ती) (तिका) कंघी।
कङ्कपत्र, न. तीर, कंकपक्षी का पर।
कङ्कमुख, पु. न. संडासी, चिमटा।
कङ्कर, त्रि. ख़राब, सख़त, छाछ।
कङ्कशाय, पु. कुक्कुर; कुत्ता।
कङ्काल, पु. हड्डियोंका पंजरा, कंगरोड़, कमर।
कङ्कालमालिन्, पु. शिव, (नी) रुद्राणी।
कङ्कु(ङ्गु) पु. पुष्पविशेष (न) तृण वि॰, उग्रसेनफूल, कंगनी। [काम आती है।
कङ्कुष्ठ, न. पहाड़ी मिट्टी, जो कई एक दवाईयोंके
कङ्कोलि(लि), पु. अशोक का पेड़।
कङ्ख, न. भोग। ऐशअशरत।
कङ्गु, स्त्री. धान्य विशेष। कंडनी।
कच, पु. केश, मेघ, बंध, बृहस्पति का पुत्र, (स्त्री) (चा) हथिनी, शोभा।
कचंगन, न. विक्रयस्थान। मंडी।
कचंगल, पु. समुद्र; समुंदर।
कचय, न. तृण, पत्र; घास, पत्ता।
कचमाल, पु. धूम्र; धूंआ।
कचाकु, त्रि. शरीर, लुचा (पु.) सांप।
कचाग्र, न. तीरकी नोक या फल।

कचाचित, त्रि. खुलेवालों वाला ।
कचु(चू), स्त्री. कचूर । [बूटी ।
कच्चर, त्रि. मैला, (न) छाछ (स्त्री) (रा) शूकरदिंगी
कच्चित्, व्य. इष्ट प्रश्न, हर्ष ।
कच्छ, पु. पुन्नाग वृक्ष, (त्रि) सजल देश, स्त्री (च्छा) काछनी, नाओकापिछला भाग, नदीका किनारा ।
कच्छप, पु. कछुआ, कुबेरकी एक निधि, नंदीवृक्ष, मद्य निकालनेकी कल, (स्त्री) (पी) (पिका) कछुई, सरस्वतीकी वीन, एक रोग ।
कच्छु(च्छू), स्त्री. खुजलीका रोग ।
कच्छूर, त्रि. खुजली वाला, पराई स्त्रीसे सोहवत करनवाला, (स्त्री) (रा) बदकार औरत ।
कज, न. कमल, (त्रि) जलकी उत्पत्ति ।
कज्जल, न. अंजन, (पु) मेघ, (स्त्री) (ला) एक मछली, एक दवाई ।
कज्जलरोचक, न. दीवट, शय्यादान ।
कञ्चार, पु. सूर्य्य; सूरज ।
कञ्च(ञ्चि)का, स्त्री. वांसकी टहनी, चाबी ।
कञ्चुक, पु. कुड़ती, जांघिया, जामा, अंगरखा, (स्त्री) (की) चोली, सांपकी कैंचली । [जाभेवाला ।
कञ्चुकिन्, पु. ख़ाजासरा, सांप, एकमुनि, (त्रि)
कञ्चुली(लिका), स्त्री. चोली, अंगिया, केंचली ।
कञ्ज, पु. ब्रह्मा, केश, (न) कमल, (त्रि) जलका
कञ्जक, पु । कोयल, मयना ।
कञ्जन, पु. कामदेव ।
कञ्जर, पु. ब्रह्मा, सूर्य, उदर, हाथी ।
कञ्जार, पु. जठर, सूर्य, हाथी ।
कट, पु. हाथीकी कनपटी, मुनि विशेष, चटाई, हाथीका रस्सा, वक्त, मौसिम, दवाई, घास, जौं, मसान, अर्थी, मिर्च ।
कटक, पु. न. पहाड़के पासे, हमवार ज़मीन, खासशहर, कड़ा, सेंधानिमक, दायरा, राजधानी, सेना, हाथीके माथेका चांद ।
कटकट, पु. अग्नि । आग ।
कटकिन्, पु. पर्वत (त्रि) कड़े पहिरेहुए ।
कटकोल, पु. पीकदान । [वाला ।
कटपू, पु. महादेव, राक्षस, कीट, चिटाई बनाने-
कटम्ब, पु. एक प्रकारका बाजा, तीर ।
कटम्भ, पु. श्येनाक वृक्ष ।
कटव्रण, पु. भीमसेन ।
कटाकु, पु. पक्षी; चिड़िया ।
कटाटक, पु. शिव ।
कटाक्ष, पु. अपाङ्गदर्शन । तिरछी नज़र करिश्मा ।
कटायन, न. वीरणमूल । खस् ।
कटार, पु. नागर, कामी । अयाश ।
कटाह, पु. कड़ाह, एक ख़ास टापू, कूआ, चितकवरा, खप्पर, नरक, राक्षस, ढेर ।
कटि(टी), पु. स्त्री. श्रोणी देश, हस्तिगण्ड, नितम्ब कटिसूत्र कमर, हाथीकी कनपटी, चूतड़ ।
कटित्र, न. चन्द्रहार, तागड़ी ।
कटिदेश, पु. जोड़ । कमर ।
कटिप्रोथ, पु. चूतड़ोंके नीचेका मांस ।
कटिल्ल(क), पु. कारवेल्ल; करेला, ख़ास बेल ।
कटु, त्रि. कड़वा, कसैला, सुरभि, कर्कश, मतार, उग्र, कुत्सित, (न) आकार्य (स्त्री) लताविशेष ।
कटुक, पु. पटोल, अर्कवृक्ष, राजसर्षप, (न) त्रिकुटा । [पिपलीकी जड़ ।
कटुग्रंथि, न. शुण्ठीमूल, पिप्पलीमूल । सोंठकी जड़,
कटुच्छद, पु. तगर वृक्ष ।
कटुत्रय, न. त्रिकुटा । सोंठ, पीपल, स्याहमिरच ।
कटुपत्रिका, स्त्री. कण्टकारी; कंडियारी बूटी ।
कटुर, न. तक्र; छाछ ।
कटूत्कट, न. आर्द्रक; अदरक । [कटारी ।
कट्टार, पु. अस्त्रविशेष । एक किसमका हथियार,
कठ, पु. मुनिविशेष, ऋग्वेद शाखा, उपनिषद्विशेष, (स्त्री) (ठा) ब्राह्मणी, हथिनी ।
कठधूर्त्त, पु. ऋग्वेदके जानने वाला ब्राह्मण ।
कठ-श्रोत्रिय, पु. कठवेदके जाननेवाला ब्राह्मण ।
कठिका, स्त्री. तुलसी । एक पौदा जिस्को हिन्दू पूजते हैं, चाक मट्टी ।
कठिन, त्रि. क्रूर, कठोर, ढीठ (स्त्री) (ना) पात्रवि०, (नी) स्थाली, खड़ियामट्टी । [सिद्ध घास, तुलसी ।
कठिल्ल (क), पु. कारवेल्ल; करेला । एक प्र-
कठेर, त्रि. कृच्छ्रजीवी, दरिद्र ।
कठोर, त्रि. कठिन; पूर्ण । सख़्त, पूरा ।
कड, त्रि. मूर्ख, मस्त, ख़ुराक ।
कडक, न. लवणविशेष, समुंदरी निमक ।
कडङ्गर, पु. भुस; तोह ।

कडङ्ग, पु. सुराविशेष। एक किसमकी शराब।
कडङ्गरीय, त्रि. तुषभोजी; गाय भैंस आदि पशु।
कडत्र, न. पात्रविशेष। एक किसमका बर्तन।
कडम्ब, पु. कोण, प्रान्तभाग (स्त्री) (म्बी) लतावि०,
कडार, पु. पिङ्गलवर्ण, दास, (त्रि) पिङ्गलवस्तु। ज़र्द रङ्ग, गुलाम, ज़र्द रंगकी चीज़। कोनह।
कण, पु. शस्यके क्षुद्र २ अंश, अतिसूक्ष्म, (स्त्री) (णा) (णी) (णिका) कनियां, ज्यादह बारीक, वनका ज़ीरा, शहदकी मक्खी।
कण, पु. कणा, मयदा, शत्रु, नीराजनविधि, (स्त्री) (का) निहायत बारीक चीज़, ज़री, एक क़िसमका पौदा, एक क़िसमके चावल।
कण-जीर, पु. श्वेतजीरक। सुपेद ज़ीरा।
कणभक्ष, (क), **कणभुज्**, **कणाद**, पु. एक किसमकी चिड़िया, सुनार, वैशेषक शास्त्रका कर्ता-मुनि।
कणित, त्रि. आर्तनाद। दुखसे रोना।
कणिश, न. शस्य—मञ्जरी; अनाजका सिट्टा।
कणीयस्, त्रि. कनिष्ठ, अत्यल्प; छोटा, बहुत थोड़ा।
कणे, व्य. तृप्ति। सेरी।
कणेरु, स्त्री. वेश्या, हथिनी।
कण्टक, पु. न. क्षुद्र—शत्रु, रोमाञ्च, लग्नसे ४ थं; १० म, और ७ म, स्थान, केन्द्र, मच्छीकी हड्डी, कांटा, मर्कज़।
कण्टक-भुज्, पु. उष्ट्र; ऊंठ। [एक क़िसमका पौदा।
कण्टकाढ्य, पु. कुण्टक-वृक्ष (त्रि.) कांटेदार।
कण्टकारिका, **कण्टकारी**, स्त्री. स्वनामख्यात क्षुद्र वृक्ष; कंडियारी।
कण्टकाशन, पु. उष्ट्र; ऊंठ (त्रि) कांटेखानेवाला।
कण्टकित, त्रि. जिस्के रोम खड़ेहुए हैं; कांटेदार।
कण्टकिल, पु. एक ख़ास बांस।
कण्टकिन्, पु. मत्स्यविशेष, खदिर वृक्ष, मदन वृक्ष, गोक्षुर वृक्ष, बदरी वृक्ष, वंश। ख़ास-मछली, ख़ैरा दरख़्त, बेरी, कटहरा दरख़्त (त्रि) कांटेदार।
कण्ट-दला, स्त्री केतकी; फूलोंका पौदा।
कण्टपत्रफला, स्त्री. महादण्डीबूटी। -
कण्टफला, त्रि. क्षुद्रगोक्षुर, पनस, धूस्तर, लता, करञ्ज, एरण्ड। कटहरा कटल करंजुआ, हिरंड, धतूरह।
कण्टल, पु. वृक्षविशेष; बाबुलका दरख़्त।
कण्टाह्वय, न. पदमकन्द। भिस।
कण्टिन्, पु. मटर, अपुठ कांटा, खैरा, कटहरह।
कण्ठ, त्रि. गलदेश, कण्ठध्वनि। गला, गलेकी आवाज़ (पु) मदन वृक्ष।
कण्ठकुणिका, स्त्री. वीणा; वीण बाजा।
कण्ठनीडक, पु. चिल्ल-पक्षी; चील।
कण्ठ-पाशक, पु. हाथीके गलेमें लपेटनेकी रस्सी।
कण्ठभूषा, स्त्री. माला; हार।
कण्ठमणि, पु. कण्ठमे पहिरनेका रत्न।
कण्ठसूत्र, न. माला, अलिंगन।
कण्ठस्थ, त्रि. अभ्यस्त। नोकेज़ुबां।
कण्ठाग्नि, पु पक्षिविशेष। एक क़िसमकी चिड़िया जो अपने गलेमे हि खाना हज़म करती है।
कण्ठाल, पु. शरम, जङ्ग, नाव, कुदाल, ऊंठ, चप्पा, गाय या बैलके गलेके नीचे जो मास लटकता है।
कण्ठी(ण्ठिका), स्त्री. कंठी, माला।
कण्ठीरव, पु. सिंह, मत्तगज, कपोत। शेर, मस्त-हाथी, कबूतर।
कण्ठेकाल, पु. शिव, नीलकंठ।
कण्ठ्य, त्रि. कण्ठोचार्य। गले से निकली हुई आवाज़ कवर्ग, और ह अक्षर।
कण्डन, न. तुषनिष्कासन (स्त्री) (नी) धानसे तुषका अलग करना, ऊखल, ऊखली।
कण्डरा, स्त्री. महा स्नायु। बड़ी रग।
कण्डु (ण्डू) (ति), स्त्री. कंडूयन; खुजलाना, खाज।
कण्डूर, पु. करेलेकी बेल, खाज। क़िसम का घास।
कण्डूयन, न.
कण्डूया, स्त्री. "कण्डु" देखो।
कण्डूल, त्रि. कंडूयुत; खाजवाला।
कण्डोल (क), पु. धान्य स्थापन पात्र, उष्ट्र। चांराका भड़ोला, ऊंठ (स्त्री) (ली) चंडालकी बांसरी।
कण्व, पु. मुनिविशेष, (न) पाप, त्रि. विद्वान्, बुद्धिमान्, पूज्य, बहिरा, स्तुति करनेवाला।
कत(क), पु. मुनिविशेष, कतकवृक्ष (न.) सुपारी, झड़ाया।
कतम, त्रि. बहुतोमेंसे कौन।
कतमाल, पु. अग्नि। आग।

कतर, त्रि. दोनोंमेंसे कौन ।
कति (पय), त्रि. कियत्परिमाण । कितनेहि ।
कतिधा, व्य. कितने प्रकारसे ।
कतिविध, व्य. कितने प्रकारका ।
कतिशस्, व्य. एक बार, कितने ।
कथक, त्रि. वक्ता, नाटक वर्णनकर्त्ता मुनक्लम ।
कथङ्कथिक, त्रि. प्रष्टा । सायल ।
कथङ्कथिकता, स्त्री. पृच्छा, प्रश्न । पूछना, सवाल ।
कथङ्कारम्, व्य. किस्प्रकार । किसतरहसे ।
कथञ्चन, व्य. कैसे ।
कथञ्चित्, व्य. कथञ्चन, अति यत्नात् । किसी न किसी तरहसे, बड़ी ख़बरदारीसे ।
कथन, न. वर्णन; कहना । बयान करना ।
कथम्, व्य. कैसे, या किस तरीकेसे, सवाल, नफ़रत, खुशी, तरद्दुद, मुमकिनात । [तरद्दुदसे ।
कथमपि, व्य. मुश्किलसे, इज़्ज़तसे, निहायत
कथम्भूत, त्रि. किम्भूत; कैसा, किस तरह से ।
कथा, स्त्री. उक्ति, प्रबन्ध कल्पना । बयान, कहानी, सचसे मिले हुए गप्पके ग्रंथ ।
कथानक, पु. कहानी ।
कथाप्रसंग, पु. बात, विपर्वय । [हना, बात ।
कथित, त्रि. उक्त, (न) कथन । कहा हुआ, क-
कथितपदता, स्त्री. अलंकारमें एकभांतका दोष ।
कथोपकथन, न. वाकोवाक्य, उक्तिप्रत्युक्ति । सवाल जवाब ।
कद्, पु. मेघ । बादल ।
कदक, पु. वितान, चंदोया ।
कदक्षर, न. ख़राब हरूफ़ ।
कदध्वन्, पु. कुपथ । ख़राब सड़क ।
कदन, न. मारण, मर्दन, पाप, युद्ध । क़तल, तबाही, गुनाह, जंग ।
कदन्न, न. कुत्सितान्न । बुरी खुराक, ।
कदम्ब (क), पु. कदम, सरसोंका पौदा, एक किसमकी घास (न) मजमह ।
कदम्ब(कोरक)गोलकन्याय, पु. कदम्ब पुष्पस्य गोलके यथा सर्वावयवेषु युगपत् पुष्पाणामुत्पत्तिस्तादृशे एकदोत्पत्तौ दृष्टान्त भेदे । कदम फूल के गोलमें जैसे सब अवयवोंमें एकहि बेर सब फूल निकल आते हैं ऐसी मिसाल ।

कदध्वन, पु. कुपथ । ख़राब सड़क ।
कदर्थन, न. अवमाणन (स्त्री) (ना) विडंबना ।
कदर्थित, त्रि. दूषित, निराकृत, कथित ।
कदर्य, त्रि. कृपण, क्षुद्र, नीच ।
कदल (क), पु. केलेका पेड़, वा केला, दर्याई पौदा, सिंबलका पेड़, बुलबुल, खासहरिण (स्त्री) (ली)पताका, नशान ।
कदा, व्य. किस समयमें, कब, किस वक़्त ।
कदाकार, त्रि. कुत्सिताकार । बदसूरत ।
कदाचन, } व्य. अनिर्द्धारित; किसी समयमें, किसी
कदाचित्, } न किसी वक्त ।
कदापि, व्य. कस्मिन्नपिकाले । किसी वक्तमें भी ।
कदुष्ण, न. ईषदुष्णस्पर्श । थोड़ासा गर्म ।
कद्रु, पु. पिङ्गलवर्ण; पीलारङ्ग, (त्रि) पीला, (स्त्री) (द्रू) कश्यपकी स्त्री सांपोंकी मा ।
कद्वद, त्रि. कुत्सितवक्ता, अति कुत्सित । गलत बोलनेवाला, निहायत कमीनह । [वाले फूल ।
कनक, न. स्वर्ण; सोना, (पु) पलाशादि रक्तवर्ण-
कनकक्षार, पु. टङ्कन; सोहागा ।
कनकपल, पु. पलपरिमाण; सोलह मासे ।
कनकप्रभा, स्त्री. सुवर्णकेतकी; केतकी फूलकी बेल ।
कनकाचल, पु. सुमेरु पर्वत; सोनेका पहाड़ ।
कनकाव्ह(य), पु. नागकेसरका फूल, धतूरेका फूल । [पर्वत ।
कनखल, पु. तीर्थविशेष, कुरुक्षेत्रसे उत्तरका
कनल, त्रि. एकाक्ष; कांना । [अंगुली ।
कनिष्ठ(क), त्रि. छोटा (स्त्री) (ष्ठा) छोटी, चिटली
कनीची, स्त्री. रत्तीका पोदा, गाडी ।
कनी, स्त्री. कन्या; लड़की । [छोटी बहिन ।
कनीनिका, स्त्री. आंखकी पुतली, चिटली अंगुली,
कनीनी, स्त्री. चिटली अंगुली ।
कनीयस्, त्रि. सबसे छोटा, बहुत छोटा ।
कन्तु, पु. कामदेव, (न) भढौला, दिल, (त्रि) सुखी ।
कन्था, स्त्री. गुदड़ी, कची दीवार, (न) एक देश ।
कन्द, पु. न. वनस्पतिकी जड़, गाजर, बादल, गोंगल्ह, एक प्रकारकी भगकी बीमारी ।
कन्दट, पु. श्वेतपद्म ।
कन्दर, पु. पहाड़, (स्त्री) (रा) गुफा, (न) अदरक ।
कन्दराकर, पु. पर्वतविशेष ।

कन्दर्प, पु. कामदेव ।
कन्दर्पकूप, पु. भग । कुस ।
कन्दर्पमूपल, पु. लिङ्ग । केर ।
कन्दल, न. समूह, गोल, कनपटी, खोपरी, तालियोंका शब्द, शगूफ़ह, मुलायम । (स्त्री) (ला) (ली) मृगीवि०, भूमिकदली, (पु) युद्ध कलह, स्वर्ण ।
कन्दसार, पु. इन्द्रका नन्दनवन ।
कन्दाढ्य, पु. जीमीकन्द ।
कन्दालु, पु. कंसालु, रतालु, जीमीकंद ।
कन्दुरी, स्त्री. लज्जालुलता; लाजवंती वेल ।
कन्दु(क), पु. गेंद, कड़ाहा ।
कन्दुपक्व, त्रि. भुजिया, कड़ाहीमें भुजी हुई वस्तु ।
कन्दोत, पु. कुमुद । नीलोफ़र ।
कन्ध, पु. मेघ, घटा, (स्त्री) (न्धी) गर्दन ।
कन्धर, पु. गर्दन, कंधा, बादल, स्त्री. (रा) गर्दन ।
कन्न, न. पाप, ग़श ।
कन्यका, स्त्री. दसवर्षकी लड़की ।
कन्या, स्त्री. दसवर्षा कन्या, एक दवाई, मोटी इलायची, आकाशबेल, ६ ठी, राशि, देवी, पार्वती, पतिव्रता, आहल्या, आदि पांच १ अहल्या २ द्रौपदी ३ तारा ४ सीता ५ मंदोदरी ।
कन्यकुब्ज, पु. देशविशेष । कनौज ।
कन्याट, पु. घरमें लड़कियोंके खेलनेका घर ।
कन्याराम, पु. बुद्धभेद ।
कपट, पु. न. लुचपना, ठगी,-फ़रेब ।
कपटिन्, पु. छलिया । फ़रेबी ।
कपर्द, (क) शिवजटा, कौड़ी ।
कपर्दिन्, पु. महादेव (त्रि) कौड़ियावाला ।
कपल, न. आधा, छोटा भाग ।
कपाट, न. द्वारावरण; किवाड़ ।
कपाल(क), पु. न. खोपरी, कोढ़, भीड़, मट्टीका वर्तन, आधा, एक फिरका, एक खास ज़ात ।
कपाल (लिन्) (भृत्), पु. महादेव, शिवजी ।
कपालिका, स्त्री. टूटे हुए मट्टीके वर्तनका टुकडा, दांतोका रोग । [आमला, धूप, विष्णु ।
कपि, पु. वंदर, सुरखसंदल, लोबान, शिलाजीत,
कपिकच्छू(रा), स्त्री. वृक्षविशेष; आलकुशी ।
कपिकन्दुक, न. शिरोस्थि; शिरकी हड्डी ।
कपिकेतन, पु. अर्जुन, पांडव ।
कपिकोलि, पु. कोलिविशेष; एक प्रकारका छोटा फल, वा झाड़ी जिससे वह फल लगता है ।
कपिज, पु. तुरुष्क, शिलारस । [तर, पपीहा ।
कपिञ्जल, पु. तित्तिरि-पक्षी, चातकपक्षी । तीं-
कपित्थ, पु. न. कैथेका दरख़्त, कैथेका फल ।
कपित्थपर्णी, स्त्री. वृक्षविशेष । कपित्थके मुआफ़िक जिसके पत्ते हैं ।
कपित्थास्य, पु. वानरविशेष, जिसका मुंह कपित्थकी नाई और पूछ गौकी । [चिन्ह ।
कपिध्वज, पु. अर्ज्जुन, जिसकी ध्वजापर कपिका
कपिनामन्, पु. सिल्हक, धूप, लोबान ।
कपिप्रियकैथा, स्त्री. आम्रातक । तिंतडी ।
कपिरथ, पु. रामचन्द्र, अर्जुन ।
कपिल, पु. साङ्ख्य शास्त्रके बनानेवाला मुनि, आग, कुत्ता, ज़र्द रङ्ग, सिल्हक नाम खुशबूदार चीज़, धूप, ज़र्द रङ्गकी चीज़ स्त्री. (ला) पुंडरीक नाम हाथीकी हथिनी ।
कपिलद्युति, पु. सूर्य्य । आफ़ताब ।
कपिलधारा, स्त्री. स्वर्गनदी, गंगा ।
कपिलवस्तु, न. बुद्धजीकी राजधानी ।
कपिलाश्व, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा ।
कपिलोह, न. पित्तल । पीतल ।
कपिल्लिका, स्त्री. गज—पिप्पली ।
कपिवदान्य, पु. आम्रातक वृक्ष ।
कपिवल्ली, स्त्री. गजपिप्पली, कपित्थ ।
कपिश, पु. स्याह और ज़र्द मिला हुआ रंग, भूरा रंग, शिलाजीत स्त्री (शा) एक नदी, माधवी लता, शराब ।
कपिशाञ्जन, पु. शिव ।
कपिशापुत्र, पु. पिशाच ।
कपिशी(का), स्त्री. मदिरा । शराब ।
कपिशीर्ष, न. प्राकाराग्र । कोटकी अगली तरफ़ ।
कपीज्य, पु. क्षीरिका वृक्ष । एक किसमका पौदा ।
कपीतन, पु. आम्रातक वृक्ष, गर्दभांड वृक्ष, शिरीष वृक्ष, अश्वत्थ वृक्ष, गुवाक वृक्ष, विल्व वृक्ष ।
कपीन्द्र, पु. हनूमान्, सुग्रीव ।
कपुष्टिका, स्त्री. मस्तककी दोनो ओरके वाल ।

कराल, त्रि. खौफ़नाक, ऊंचे दांतवाला, (पु.) तैल वि. (स्त्री) (ली)चण्डी (ला) अनन्तमूल। आगकी सात जिव्हाओंमेंसे एक, शोलह।
करालिक, पु. वृक्ष। दरख़्त।
करास्फोट, पु. ताल ठोकना। [नखून, जख़्म।
करिक, पु. विट्खदिर, (स्त्री) (का) पांवका निशान-
करिन्, पु. हाथी (स्त्री) (णी) हथिनी।
करि(री)र, पु. न. वांसका अंकुर, (पु.) हाथी, वचा, घड़ा (स्त्री) (रा, री) दांतकी जड़।
करीष, पु. सूखा गोवर, उपला।
करीषङ्कष, पु. वायु; हवा। [दया, (पु)रसविशेष।
करुण, त्रि. दीन, दुखिया, दयावान् (स्त्री) (णा)
करुणमल्ली, स्त्री. नयी मालती, चंवेली।
करुणामय, त्रि. दयावान्। रहीम।
करूथ, पु. एक देशका नाम है।
करेणु, पु. गज, (स्त्री) (णू) हथिनी।
करेणुका, स्त्री. हथिनी।
करेणुभू, पु. पालकाश्वमुनि।
करेन्दुक, पु. एक प्रकारकी घास।
करोट(टि), पु. कपाल (स्त्री) (टी) खोपरी।
कर्क, त्रि. सुपेद, उत्तम, (पु.) केंकडा, दर्पण, सुपेद घोड़ा, घड़ा, ४ थी, कर्क राशि। खत सर्ता।
कर्कचिर्पटी, स्त्री. ककड़ी खीरा आदि।
कर्कट, पु. केकड़ा, ४ थी राशि, भिस, लमर्डांग, कांटा, निसव कुतर।
कर्कटशृङ्गी, स्त्री. काकडासिंही। वूटी।
कर्कटि(टी), स्त्री. सिंवलका फूल, गगरी, ककड़ी।
कर्कटिनी, स्त्री. दारुहरदी।
कर्कटु, पु. पक्षी विशेष; केंकड़ा।
कर्कन्धु, पु. वेर, उनाव(न्धू) वेरी।
कर्कर, पु. दर्पण, हथौड़ा, केंकड़ा (त्रि) कड़ा, ठोस, (स्त्री) (री) घड़ी, लोटा, छलनी।
कर्कर(रा)न्धुक, पु. अंधेरा कूआ।
कर्कराङ्ग, नीलकंठ पक्षी।
कर्कराटु, पु. तिरछी निगाह, इशारह।
कर्कराल, पु. न. जुलफ़।
कर्करीका, स्त्री. झारी।
कर्करेटु, पु. गलहत्था।
कर्कश, त्रि. कड़ा, निर्दय, बड़ा दलेर, कंजूस, (पु) पौंडा, तलवार, स्त्री. (शा) कड़ी, बुरे स्वभाववाली औरत।
कर्कसार, न. दहीमें मिला आटा, या मांस।
कर्काह, पु. कूष्मांण्ड; पेठा।
कर्किन्, पु. खतसर्ता।
कर्केतन, न. गोंद, स्त्री. (ना) गोंद, दन्तविशेष।
कर्कोट(क), पु. नागराज; सांपोका राजा। तुंमेकी जड़, विछूका पेड़, ईख।
कर्चूर, पु. कचूर, (न) सोना, हरिताल।
कर्ण, पु. बङ्गाले का राजा, सूर्य का पुत्र, जहाज़का मस्तूल, वर्तन पकड़नेका स्थान, कुन्तीका पुत्र पाण्डव, कान। [खुजली।
कर्णकण्डु, पु. कानोंका रोग। हरवक्त कानमेंकी
कर्णकोटि, स्त्री. कणकोल।
कर्णक्ष्वेड, पु. कानमें शां २ होनेकी बीमारी।
कर्णगूथ, न. कानकी मैल।
कर्णजलौका, स्त्री. मूलपदी। कनकोल।
कर्णजित्, पु. अर्जुन।
कर्णधार, पु. मल्लाह।
कर्णवाली, स्त्री. कानकी वाली।
कर्णमोटी, स्त्री. चामुण्डा देवी।
कर्णवेध, पु. संस्कारविशेष; पहिले पहिल बालकका कान वींधाना।
कर्णवेष्ट(क), पु. } कर्णकुण्डल; कानके वाले या
कर्णवेष्टन, न. } कुण्डल।
कर्णशष्कुली, स्त्री. कर्णगोलक; कानमेंका सुराख़ जो पतली झिल्लीसे मढ़ा हुआ होता है, जिसपर हवाकी टक्करसे आवाज़ सुनाई देती है।
कर्णाट, पु. देशविशेष, (स्त्री) (टी) रागिनीविशेष, कर्णाटकी स्त्री। कविताकी एक रीति।
कर्णानुज, पु. राजा युधिष्ठिर।
कर्णारि, पु. अर्जुन, नदी वि., वृक्षविशेष।
कर्णि, पु. शरविशेष, कण्टकारिका वृक्ष। एक किसमका तीर, कंडियारी वूटी।
कर्णिका, स्त्री. कानका एक ज़ेवर, मंझली अंगुली, हाथीकी सूंड़का अगला हिस्सा, कलम, मेढासिंही वूटी।
कर्णिकाचल, पु. सुमेरु पर्वत।
कर्णिकार, पु. कनेरका दरख़्त (न) कनेरका फूल।

कर्णिन्, पु. सप्तवर्ष पर्वतान्तर्गत पर्वतविशेष; सात पहाड़ोंमेंसे एकका नाम है ।
कर्णीकर, त्रि. भृत्य, पु. वायुविशेष ।
कर्णीरथ, पु. रथतुल्य वाहन; डोली, पालकी ।
कर्णीसुत, पु. कंसासुर; कंस राक्षस, चोरोंका शास्त्र बनानेवाला ।
कर्णेजप, पु. खल । खराब सलाह देनेवाला ।
कर्णेन्दु, पु. अर्द्धचन्द्राकृति कर्णभूषण; तंदोड़ा, कुण्डल ।
कर्त्तन, न. छेदन; काढना, कातना ।
कर्तरि(री)(रिका), स्त्री. कटारी, छुरी ।
कर्तृत्व, न. कर्तृधर्म्म । अमाल ।
कर्तव्य, त्रि. साध्यकार्य । करनेके लायक ।
कर्द्दम, पु. पङ्क; कीचड़, पाप, (न) मांस ।
कर्द्दट, पु. पद्मकेशर, पङ्क, पङ्कजात; कमलकी तिरी, कीचड़ पानीकी पैदाइश ।
कर्द्दमक, पु. शालिविशेष । एक प्रकारके धान ।
कर्द्दमित, त्रि. मैला, गंधला ।
कर्प्पट, पु. न. चीर । चीथड़ा, पुराना और फटा-हुआ, स्त्री. (टि) (टिका) पुराना कपड़ा ।
कर्प्पर, पु. न. खोपरी, कड़ाही, एक क़िसमका ह-थियार, अंजीरका दरख़्त, कछुएकी हड्डी, स्त्री॰ (री) सुरसा राक्षसी ।
कर्प्परांश, पु. शर्क्करा; रेता, कंकर ।
कर्पराल, पु. कन्दराल, पर्वतज पीलु वृक्ष । आखरोट ।
कर्प्पास, न. कापास, (स्त्री) (सी) कपासका पौदा ।
कर्प्पास-फल, न. कर्पासबीज; चनौला ।
कर्पूर, न. स्वनाम ख्यात शुभ्रवर्ण गन्धद्रव्य । काफ़ूर, कचूर । [छन्दोवि० ।
कर्पूरतिलका, स्त्री. उमासखी; पार्वतीकी सहेली,
कर्पूरमणि, पु. रत्नविशेष । जवाहर ।
कर्फर, पु. दर्पण । आईना ।
कर्बर, पु. व्याघ्र, राक्षस (स्त्री) (री) शिवा । गिदड़ी ।
कर्बुदार, पु. कोविदार । कच नार ।
कर्बुर, पु. चितकवरा, सोना, पानी, धतूरा, हरिताल (री) देवी, दुर्गा । [षोडश संस्कार ।
कर्म्मकाण्ड, पु. कर्म्मसमूह, वेदांश । संध्याआदि
कर्म्मकार, पु. कुम्हार, बैल, मिस्त्री, यमवि०, नौकर ।
कर्म्मकीलक, पु. रजक; धोबी ।
कर्म्मक्षम, त्रि. जो कामकर सके ।
कर्मक्षेत्र, न. भारतभूमि । हिंदुस्थान ।
कर्म्मठ, त्रि. कर्म्मदक्ष । काम करनेमे होशयार ।
कर्म्मणिवाच्य, पु. व्याकरणका वाच्यविशेष । सीग़ह मजहूल । [(ण्या) तनखाह, मोल ।
कर्म्मण्य, त्रि. कर्म्मयोग्य, कामके लायक, (स्त्री)
कर्म्मधारय, पु. व्याकरणोक्त समासविशेष सिफत और मौसूफ़का समास ।
कर्म्मन्, न. काम, मफऊल, न्यायके उछलना गि-राना, समेटना, फैलाना, चलना यह पांच, यज्ञादि ।
कर्म्मन्दिन्, पु. भिक्षुक, सन्यासी । मस्करी ।
कर्मफल, न. सुख दुःख । [हुई धरती ।
कर्म-भू, स्त्री. आर्यावर्त, कृष्टभूमि । हिंदुस्तान, वाही
कर्मभूमि, स्त्री. आर्यावर्त । विंध्य और हिमालयके बीचका देश ।
कर्मयोग, पु. चित्तशुद्धिकारक संध्यादि कर्म ।
कर्म्ममूल, न. कुशतृण; कुशा घास ।
कर्म्मरी, स्त्री. वंशरोचना । तवाशीर ।
कर्म्मविपाक, पु. स्वनामख्यात ग्रंथ । एक किताब जिससे आदमीके भले या बुरे ऐमाल मालूम होते हैं ।
कर्म्मव्यतिहार, पु. परस्पर एक रूप कार्य्य वि-निमय । आपसमें कामका बदल लेना; बदला लेना । [तक काम करनेवाला ।
कर्म्मशूर, त्रि. कर्म्मठ । नतीजहके हासल होने-
कर्मशेष, पु. कर्मका अन्त ।
कर्म्मसाक्षिन्, पु. सूर्य्य, चांद, यम, काल पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, ये नव ।
कर्मसिद्धि, स्त्री. भले या बुरे कामका फल ।
कर्म्माध्यक्ष, पु. कर्म्मतत्त्वावधारक । मुहाफ़िज़ ।
कर्म्मार, पु. कर्म्मकार; लोहार, तरखान वग़ैरह क़ौमें, बांस, एक क़िसमका पौदा ।
कर्म्मार्ह, पु. पुरुष, (त्रि) कर्म्मयोग्य, । आदमी, कामके लायक । [जमान ।
कर्म्मिन्, त्रि. कर्म्मिष्ठ । काममें मशग़ूल, (पु) य-
कर्म्मीर, पु. कर्ब्बुर वर्ण; चितकवरा ।
कर्मीरक, पु. आखोट वृक्ष ।
कर्म्मेन्द्रिय, न. वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ । ज़ु-बान, हाथ, पांओं कुन फेर ये पांच ।

कर्व्व, पु. ख्वाहिश, मुहब्बत, मूसा ।
कर्व्वट, पु. न. दोसौ गाओंमेंसे उत्तम स्थान, जहां पर आसपासके गाओंके लोक इकट्ठे होकर ख़रीद फ़रोख्त करते हैं पुर, नगर, ज़िलहमेंसे बड़ा शहर ।
कर्व्वर, पु. व्याघ्र, राक्षस, (स्त्री) (रा) शिवा, हिङ्गुपत्री । चीता, गिदड़ी, हीङ्का पौदा ।
कर्श्य, पु. कच्चूर; कचूर ।
कर्शित, त्रि. दुर्बलीकृत । कमज़ोर किया हुआ ।
कर्ष, पु. न. षोडश माष परिमाण; १६ सोलह मास्से।
कर्षक, त्रि. किसान, आकर्षणकर्त्ता । खेंचनेवाला ।
कर्षण, न. कृषिकर्म्म, (स्त्री) (णी) असती स्त्री (पु) कसौटी, खेती । [पौदा।
कर्षफल, पु. बहेड़ेका फल (स्त्री) (ला) आवलीका
कर्षिन्, त्रि. खेंचनेवाला सुंदर (स्त्री) (णी) लगाम, खीरीका पौदा ।
कर्षू, पु. उपलोंकी आग, तुखकी आग, जीविका, एक मुनिका नाम, (स्त्री) कूल, नदी ।
कर्हि, व्य. कस्मिन् समये । किस वक्त, कब ।
कर्हिचित्, व्य. कदाचित्; कबी भी । [अजीर्ण ।
कल, पु. मीठी आवाज़, साल का पेड़, (न) शुक्र,(त्रि)
कलक, पु. शकुलमत्स्य । एक क़िसमकी मच्छी ।
कलकण्ठ, पु. कोकिल; कोइल, कबूतर, हंस, (त्रि) सुंदर आवाज़वाला ।
कलकल, पु. कोलाहल । गौंगा ।
कलघोष, पु. कोकिल; कोइल ।
कलङ्क, पु. चिन्ह, अपयश, । दाग़, बे इज़ती ।
कलङ्कष, पु. सिंह (स्त्री) (षा) खटताल । शेर ।
कलङ्कित, त्रि. बदनाम दाग़ी ।
कलङ्किन्, त्रि. बदनाम, दाग़ी ।
कलङ्कुर, पु. आवर्त, जलभ्रम । गिरदावर ।
कलञ्ज, पु. ताम्रकूट (त्रि) विषास्त्रविद्ध मृग, पक्षी, ताम्रकूट, (तमाकू)।ज़हरी तीरसे विंधाहुआ मृग।
कलत्र, न. भार्य्या, नितम्ब, दुर्ग । अपनी औरत, चूतड़, क़िलअ ।
कलधौत, न. सोना, चांदी, मीठी आवाज़ ।
कलध्वनि, पु. कबूतर, कोइल, मोर ।
कलन, पु. बेतका पेड़ (न) दाग़, कसूर, जोड़ बग़ैर, बननेके पहिले शिकममें बचेकी शकल, (स्त्री) (ना) वशता, गिणती ।
कलभ, पु. ३० तीस बरसका हाथीका बच्चा,धतूरेका पेड़ (स्त्री) (भी) चंचुवृक्ष ।
कलम, पु. धान्यविशेष, लेखनी, चौर ।
कलम्ब, पु. तीर, कदमका दरख़्त, (स्त्री) कलमीका शाक ।
कलम्बिका, स्त्री. शाकविशेष ।
कलम्बुट, न. हैयङ्गवीन, ताज़ह मक्खन ।
कलरव, पु. कोकिल, पारावत, कलकलध्वनि । कोइल, कबूतर, अच्छी आवाज़ ।
कलल, पु. न. बच्चहदान, बचह ।
कललज, पु. सर्जरस; राल । [जौंका पेड़ ।
कलविङ्क,(ङ्ग) पु. चिड़िया, सुपेद चौरी, दाग़, इन्द्र-
कलश(स), पु. न. घट; (स्त्री) (शी) घटी ।
कलशि,(शी) स्त्री. ३४ सेर। दही विलोनेकी चाटी।
कलह, पु. न. युद्ध, झगड़ा (पु.) तलवारका मियान, पथ ।
कलहंस, पु. राजहंस, नृपश्रेष्ठ, परमात्मा, त्रयोदशाक्षर पाद छन्दोविशेष । [तानेवाली नायिका ।
कलहान्तरिता, स्त्री. नायकसे कलह करके पछ-
कला, स्त्री. चांदका १६ वां, हिस्सा, नृत्यगीत आदि ६४ विद्या, अंश, लेश, ज्योतिष शास्त्रमें राशिके तीसवें हिस्सेका ६० वां हिस्सा ।
कलाकल, पु. विष, ज़हर ।
कलाकेलि, पु. कामदेव ।
कलाङ्कुर, पु. सारस पक्षी, कंस राक्षस ।
कलाचिका, } स्त्री. प्रकोष्ठ; कोहनीसे पौंचे तक
कलाची, } हाथ ।
कलाद, पु. स्वर्णकार; सुनार ।
कलानिधि, पु. चन्द्र; चांद ।
कलानुनादिन्, पु. भौंरा, चिड़िया, पपीहा ।
कलान्तर, पु. सूद, नफ़ह, चांदका १६ वां हिस्सा ।
कलाप, पु. मोरकी पूंछ, तागड़ी, मजमा, तरकश, चांद, एक ख़ास संस्कृत सर्फ़की किताब, होशयार आदमी, ख़ास गांवका नाम ।
कलापक, पु. कलाप (न) एक क्रियान्वित चार श्लोक।
कलापिन्, पु. कोइल, मोर, पिलखनका पेड़ (स्त्री) (नी) नागरमुस्था, रात्रि ।

कलापूर्ण, पु. चन्द्र; चांद ।
कलाभृत्, पु. चन्द्र; चांद, शिव, शिल्पी ।
कलामक, पु. धानविशेष ।
कलायन, पु. नर्त्तक; नाचनेवाला ।
कलालाप, पु. भौंरा, मीठी बोल, कोइल । [वीन ।
कलावत, पु. चांद (त्रि) कलावाला, (स्त्री) (ती)
कलाविक, पु. कुक्कुट । मुर्ग़ ।
कलि(ली)(लिका), पु. ४ र्थ, युग, जंग, झगड़ा, बहादुर (स्त्री) गुंचह ।
कलिक, पु. कूंज पंछी (स्त्री) (का) । गुंचह ।
कलिङ्ग, पु. कुटज वृक्ष, शिरीष वृक्ष, पूति करञ्ज, प्लक्ष वृक्ष, देशविशेष, धूम्याट पक्षी (स्त्री) (ङ्गा) सुंदर नारी ।
कलिञ्ज, पु. कट; किड़ा, चटाई ।
कलित, त्रि. जाना हुआ, इकठाकिया हुआ, गिना हुआ, सींचा हुआ, बंधा हुआ, पकड़ा हुआ, देखा हुआ, जुदा किया ।
कलिन्द, पु. जहांसे जमना निकसी है वह पर्वत, आफ़ताव, बहेड़ेका दरख़्त ।
कलिन्दकन्या, कलिन्दनन्दिनी, कलिन्दजा, स्त्री. यमुना; जमना दर्या ।
कलिप्रिय, पु. नारदमुनि ।
कलियुग, न. कलि, कलियुग । कलह ।
कलिल, त्रि. गाढ़ा, जंगल, मिला हुआ ।
कलुष, न. पाप, (त्रि) पापी, अहंकारी, असमर्थ, पु. स. भैंसा ।
कलुषित, त्रि. दुष्ट, पापी ।
कलेवर, न. देह, शरीर ।
कल्क, पु. न. कानकी मैल, मैल, मोम, खल, गुनाह, त्रि. गुनाहगार, तलाई । [काढ़ा ।
कल्कन, न. मगरूरी, दग़ा, विवाद, कलह, दंभ,
कल्किन्, कल्कि, पु. विष्णुका दसवां अवतार । संभलपुरमें विष्णुयश ब्राह्मणके घर होगा ।
कल्प, पु. वेदाङ्ग पुस्तक वि०, विधि, प्रलय, देवयुगसहस्र, कल्प, कल्पवृक्ष, न्याय, शास्त्रविशेष, व्याकरणका प्रलय, शब्दके आगे हो तो उसजैसा।
कल्पक, पु. नापित, कर्चूर । हजाम, कचूर ।
कल्पतरु, पु. सुरद्रुम, दाता । देवताओंके बाग़का दरख़्त जिससे जो चाहो मिलजाता है । फ़याज़ ।
कल्पन, न. स्त्री.(ना) रचना, आरोप, मनन, सामर्थ्य, पर्याप्ति, छेदन, (ना) हस्तिसज्जा, (नी) कैंची ।
कल्पान्त, पु. प्रलय । [रोपित, निश्चित ।
कल्पित, त्रि. रचित, राजित, संपादित, दत्त, आ-
कल्मष, न. पाप, हस्तिपुच्छ, (पु) नरकविशेष, (त्रि) मैला, पापी ।
कल्माष, त्रि. चित्रवर्ण, कृष्णवर्ण युक्त (पु.) दैत्यविशेष, राक्षस, कालारंग, । दूधियारंग (स्त्री) (षी) जमदग्नीकी गाय ।
कल्माषकण्ठ, पु. शिव, मयूर । मोर ।
कल्य, न. प्रत्यूष, गत अनागत दिन (त्रि) सज्जित, निरामय, दक्ष, कल्याणवचन, गूंगा, बहिरा, (ल्या) शराब ।
कल्यजग्धि, स्त्री. प्रातर्भोजन । कलेवा ।
कल्याण, न. मङ्गल, स्वर्ण, स्वर्ग (त्रि) कुशली, सुखी, (स्त्री) (णी) चच्छी, माषपर्णीलता ।
कल्ल, त्रि. बधिर; बहिरा ।
कल्लोल, पु, महातरङ्ग, हर्ष, (त्रि) शत्रु ।
कवक, पु. छत्राक; खुंब ।
कवच, पु. न. संजो, मंत्रवि० वृक्षवि० ।
कवर, त्रि. केशविन्यास, चितकबरा (न.) लवन । स्त्री (रा) बबूईबूटी (री) गुत्त ।
कवर्ग, पु. क ख ग घ ङ ।
कवल, पु. ग्रास । लुगमा ।
कवलित, त्रि. ग्रस्त, भक्षित । निला हुआ ।
कवाट, त्रि. द्वारावरण । किवाड़ । [सूर्य ।
कवि, पु. काव्यकर्ता, पंडित, वाल्मीकि, शुक्र, ब्रह्मा,
कविक, न. स. (का) खब्बी, लग़ाम ।
कविता, स. कवित्व श्लोक । शायरी ।
कवोष्ण, न. तनक गरम ।
कव्य, न. पितरोंको देने योग्य अन्नादि ।
कशा, स्त्री. प्रतिष्क; चाबक, सुशाबू ।
कशि(सि), पु. रोटी, कपड़ा, बिस्तरा ।
कशिपु, पु. खुराक, कपड़ा, बिछौना, बिस्तरा ।
कशे(से)रु, न. पु. मेरुदंड; पीठकी हड्डी, कंगरोड़।
कशेरुक, न. कन्दविशेष (स्त्री) (का) कंगरोड़की हड्डी।
कश्मल, न. मूर्छा, पाप, (त्रि) मलिन, पापी ।

कर्व्व, पु. ख्वाहिश, मुहव्बत, मूसा।
कर्व्वट, पु. न. दोसौ गाओंमेंसे उत्तम स्थान, जहां पर आसपासके गाओंके लोक इकट्ठे होकर ख़रीद फ़रोख़ करते हैं पुर, नगर, ज़िलहमेंसे बड़ा शहर।
कर्व्वर, पु. व्याघ्र, राक्षस, (स्त्री) (रा) शिवा, हिङ्गुपत्री। चीता, गिदड़ी, हीङ्का पौदा।
कर्श्य, पु. कच्चूर; कचूर।
कर्शित, त्रि. दुर्वलीकृत। कमज़ोर किया हुआ।
कर्ष, पु. न. पोडश माप परिमाण; १६ सोलह मास्से।
कर्षक, त्रि. किसान, आकर्षणकर्त्ता। खेंचनेवाला।
कर्षण, न. कृपिकर्म्म, (स्त्री) (णी) असती स्त्री (पु) कसौटी, खेती। [पौदा।
कर्षफल, पु. वहेड़ेका फल (स्त्री) (ला) आवलीका
कर्षिन्, त्रि. खेंचनेवाला सुंदर (स्त्री) (णी) लगाम, खीरीका पौदा।
कर्षू, पु. उपलोंकी आग, तुखकी आग, जीविका, एक मुनिका नाम, (स्त्री) कूल, नदी।
कर्हि, व्य. कस्मिन् समये। किस वक्त, कव।
कर्हिचित्, व्य. कदाचित्; कवी भी। [अजीर्ण।
कल, पु. मीठी आवाज़, साल का पेड़, (न) शुक्र, (त्रि)
कलक, पु. शकुलमत्स्य। एक क़िसमकी मच्छी।
कलकण्ठ, पु. कोकिल; कोइल, कवूतर, हंस, (त्रि) सुंदर आवाज़वाला।
कलकल, पु. कोलाहल। ग़ौग़ा।
कलघोष, पु. कोकिल; कोइल।
कलङ्क, पु. चिन्ह, अपयश,। दाग़, वे इज़्ज़ती।
कलङ्कष, पु. सिंह (स्त्री) (षा) खटताल। शेर।
कलङ्कित, त्रि. वदनाम दाग़ी।
कलङ्किन्, त्रि. वदनाम, दाग़ी।
कलङ्कुर, पु. आवर्त, जलभ्रम। गिरदावर।
कलञ्ज, पु. ताम्रकूट (त्रि) विषास्त्रविद्ध मृग, पक्षी, ताम्रकूट, (तमाकू)। ज़हरी तीरसे विंधाहुआ मृग।
कलत्र, न. भार्य्या, नितम्ब, दुर्ग। अपनी औरत, चूतड़, क़िलअ।
कलधौत, न. सोना, चांदी, मीठी आवाज़।
कलध्वनि, पु. कवूतर, कोइल, मोर।
कलन, पु. वेतका पेड़ (न) दाग़, कसूर, जोड़ चगेर, वननेके पहिले शिकममें वचेकी शकल, (स्त्री) (ना) वशता, गिणती।
कलभ, पु. ३० तीस वरसका हाथीका वचा, धतूरेका पेड़ (स्त्री) (भी) चंचुवृक्ष।
कलम, पु. धान्यविशेष, लेखनी, चौर।
कलम्ब, पु. तीर, कदमका दरख़्त, (स्त्री) कलमीका शाक।
कलम्बिका, स्त्री. शाकविशेष।
कलम्बुट, न. हैयङ्गवीन, ताज़ह मक्खन।
कलरव, पु. कोकिल, पारावत, कलकलध्वनि। कोइल, कवूतर, अच्छी आवाज़।
कलल, पु. न. वच्चहदान, वचह।
कललज, पु. सर्जरस; राल। [जीका पेड़।
कलविङ्क, (ङ्ग) पु. चिड़िया, सुपेद चौरी, दाग़, इन्द्र-
कलश(स), पु. न. घट; (स्त्री) (शी) घटी।
कलशि,(शी) स्त्री. ३४ सेर। दही विलोनेकी चाटी।
कलह, पु. न. युद्ध, झगड़ा (पु.) तलवारका मियान, पथ।
कलहंस, पु. राजहंस, नृपश्रेष्ठ, परमात्मा, त्रयोदशाक्षर पाद छन्दोविशेष। [तानेवाली नायिका।
कलहान्तरिता, स्त्री. नायकसे कलह करके पछ-
कला, स्त्री. चांदका १६ वां, हिस्सा, नृत्यगीत आदि ६४ विद्या, अंश, लेश, ज्योतिष शास्त्रमें राशिके तीसवें हिस्सेका ६० वां हिस्सा।
कलाकल, पु. विष, ज़हर।
कलाकेलि, पु. कामदेव।
कलाङ्कुर, पु. सारस पक्षी, कंस राक्षस।
कलाचिका, कलाची, स्त्री. प्रकोष्ठ; कोहनीसे पौंचे तक हाथ।
कलाद, पु. स्वर्णकार; सुनार।
कलानिधि, पु. चन्द्र; चांद।
कलानुनादिन्, पु. भौंरा, चिड़िया; पपीहा।
कलान्तर, पु. सूद, नफ़ह, चांदका १६ वां हिस्सा।
कलाप, पु. मोरकी पूंछ, तागड़ी, मजमा, तरकश, चांद, एक ख़ास संस्कृत सर्फ़की किताव, होशयार आदमी, ख़ास गांवका नाम।
कलापक, पु. कलाप (न) एक क्रियान्वित चार श्लोक।
कलापिन्, पु. कोइल, मोर, पिलखनका पेड़ (स्त्री) (नी) नागरमुस्था, रात्रि।

काचकूपी, स्त्री. चोतल।

काचमल, न. काच, लवण, शोरा।

काचित्, व्य. कांचन; कोई एक स्त्री।

काचित, त्रि. शिक्योपरि स्थापितद्रव्य; छिकके-पर रक्खी हुई चीज़।

काञ्चन, पु. पुष्प वृक्षविशेष, चम्पक, कोविदार वृक्ष, उदुम्बर, धूस्तर, (न) स्वर्ण, धन, पद्मके-शर, नागकेशर, पुष्प, (त्रि) स्वर्णमय, (स्त्री) (ना) हरिद्रा, गोरोचना।

काञ्चन-कदली, स्त्री. सुवर्ण कदली। चापाकेला।

काञ्चन-गिरि, पु. सुमेरु पर्वत। [आवनूस।

काञ्चनाल, पु. कोविदार वृक्ष; कचनार। पहाड़ी

काञ्चनाह्वय, पु. नागकेशर वृक्ष। [पुरीविशेष।

काञ्ची(ञ्चि), स्त्री. चन्द्रहार, तागड़ी, वृक्षविशेष,

काञ्जिक, न. कांजी (स्त्री) (का) लताविं०।

काठ, पु. पाषाण, पत्थर, चटान।

काञ्चीपद, न. जघन। जांघ।

काञ्जिक, न. कांजी (स्त्री) (क्री) (ञ्जिका)।

काठिन्य, न. कठिनता। सख़ती।

काण, पु. काक, (त्रि) काना।

काणक, पु. काक; कौवा।

काण्ड, पु. दरख़तकी मोटी टहनी, जिस्मेंसे छोटी टहनियें निकलती हैं, गुच्छतीर, मौका, फ़ुरसत, फूल, पत्थर, मजमा, भीड़, नल, पानी, याव, तअरीफ़, चापलूसी, कमीनह, गुनाहगार।

काण्डकटुक, पु. कारवेल्ल; करेला।

काण्डकाण्डक, न. काशतृण; काही घास।

काण्डगोचर, पु. नाराच; लोहेका तीर।

काण्डपट, पु. स्त्री (टी) यवनिका; कानात्।

काण्डपृष्ठ, स्त्री. सिपाही, वेश्याका ख़ाविंद, व्याध, (त्रि) नियजीवी। [मजीठ।

काण्डीर, त्रि. तीरन्दाज़, अपुठकांटा, (स्त्री) (री)।

काण्व, पु. यजुर्वेदकी एक शाखा, कण्वकी औलाद।

कातर, त्रि. दुःखित, भीत, विवश, अधीर, (पु) मत्स्यविशेष।

कातृण, न. बुरी घास।

कातर्य्य, न. दुःख, भीरुता। परेशानी, खौफ़।

कातल, पु. मत्स्यविशेष। एक क़िस्म का बड़ा भारी मच्छ।

कात्यायन, न. मुनिविं०, वररुचि (स्त्री) (नी) (निका) दुर्गा, अर्द्धवृद्धा, विधवा, पचास वर्षकी सधवा, जिसने संन्यास ग्रहण किया हो।

कादम्ब(क), पु. कदम्ब वृक्ष, इक्षु, शर, (न) कदम्ब पुष्प। कदमका पेड़ गैंडा, तीर।

कादम्बर, स्त्री. दहीका रस (स्त्री) (री) सरस्वती, शारिका, कोकिला। शराब।

कादम्बिनी, स्त्री. मेघमाला।

कादाचित्क, न. कदाचिदुद्भव; कभी२ होनेवाला।

काद्रवेय, पु. नागविशेष; सांप।

कानन, न. वन, ब्रह्माका मुख, गृह।

काननारि, पु. शमी वृक्ष; जंडीका दरख़त। [कर्ण।

कानीन, त्रि क्वारी कन्याकी सन्तति, (पु) व्यास,

कान्त, पु. स्वामी, कृष्ण, चंद्र, लोह, वसन्तऋतु, न. कुङ्कुम, सुंदर (स्त्री) (न्ता) भार्य्या, सुन्दरी स्त्री, (त्रि) प्रिय, सुंदर।

कान्तपक्षिन्, पु. मयूर, मोर। [चुंबकपत्थर।

कान्तलोह, पु. अयस्कान्तमणि, अशोकवृक्ष।

कान्तार(क), पु. न. महारण्य, (पु) इक्षु, कोविदार। ख़राब सड़क, बड़ा जंगल, गढ़ा, (न.) पद्म, (पु.) पौंडा, आवनूस, कचनार।

कान्ति, स्त्री. ख़ूबसूरती, जलवा, ख्वाहिश, औरतोंकी ख़ूबसूरती।

कान्तिक, पु. लोहविशेष, स्त्री. (का) लताविं०।

कान्तिद, न. पित, (त्रि) शोभादायक। सुथरा, ख़ूबसूरती देनेवाला।

कान्तिभृत्, **कान्तिमत्**, } त्रि. चमकदार।

कान्दव, न. पक्वान्न; मिठाई।

कान्दिक, त्रि. हलवाई। [हुआ।

कान्दिशीक, त्रि. भयपलायित। खौफ़से भागा

कान्यकुब्ज, पु. कन्नौज देश, विप्रविशेष।

कापट्य, न. कपटता, शठता। दग़ा।

कापथ, पु. कुत्सितपथ। ख़राब सड़क।

कापाल, पु. कर्कटी, (न) कुष्ठविशेष। पेठा, एक किसमकी कोढ़ (स्त्री) (ली) वायविडंग।

कापालिक, पु. वामाचारी, शिवजीके पुजारे जो आधी खोपरीके पियाले मेंहि खाते पीते हैं।

कश्मीर, पु. खासदेश । [चाबकके लायक ।
कश्य, न. घोड़ेकी कमर, मांसकी शराब, (त्रि)
कश्यप, मरीचि मुनि भेद, मृगविशेष, मत्स्यभेद ।
कष, पु. कसौटी । [खुजली ।
कषण, त्रि. अपक्व, (न) घर्षण, कण्डूयन । कषा,
कषाकु, पु. सूर्य्य, अग्नि ।
कषाय, पु. न. कसैला, ज़ायकह, । काढ़ा, (त्रि) रंगाहुआ, खुशबूदार ।
कषायित, त्रि. रञ्जित; रंगा हुआ ।
कष्ट, न. क्लेश, यन्त्रणा (त्रि) क्लिष्ट, गहन, दुर्गम ।
कष्टि, स्त्री. कसौटी ।
कस्क, पु. कौन कौन ।
कसेरु, पु. शूकरप्रिय तृण, मूलविशेष, कसेरु । एक किसम का घास जिसकी जड़ सूकर खाते हैं ।
कस्तु(स्तू)री(रिका), स्त्री. मृगनाभि । कस्तूरी।
कह्लार, न. श्वेतोत्पल; सुपेद कमल ।
कह्लर, पु. चक पक्षी; बगुला ।
कांस्य, न. धातुवि० । कांसी ।
काक, पु. कौआ, लंगड़ा, एक खास माप, कौओंका मजमा, ढीठ, तिलक, कौड़ी, द्वीपविशेष ।
काककङ्गु, स्त्री. चीनक; चीना ।
काकघ्नी स्त्री. महाकरञ्ज; बड़ा करंजुआ ।
काकचिञ्चा, स्त्री. काकचिञ्ची, गुंजा । रत्ती ।
काकच्छद, काकच्छदि, } पु. खञ्जन पक्षी । ममोला ।
काकतालीय, न. न्यायविशेष, अवितर्कितसम्भव व्यापार, अचानक होजानेवाली बात ।
काकतिन्दुक, पु. काकपीलुक । कुचला ।
काकपद, न. लिखनेके वक्त पतित वर्णोंके ऊपर लगानेका नशान (पु.) रतिबन्धवि० ।
काकपीलु, पु. कुचला ।
काकपुच्छ(पुष्ट), पु. कोकिल; कोइल ।
काकपुष्प, न. गन्धिपर्ण वृक्ष । न्याग्रबू ।
काकफल, पु. निम्बफल; नीमका पेड़ ।
काकवंध्या, स्त्री. एकमात्र प्रसविनी । एकबारहि सूनेवाली स्त्री ।
काकभीरु, पु. पेचक; उल्लू ।
काकमद्गु, पु. दात्यूह पक्षी; पनकुकड़ी ।
काकल, न. काण्डमणि (पु) द्रोणकाक ।
काकलि(ली), स्त्री. बारीक मीठी और ना साफ़ आवाज़, खासमंत्र, खासरत्न । [दाख़ ।
काकलीद्राक्षा, स्त्री. द्राक्षाविशेष । एक क़िसमकी
काका, स्त्री. काकलता, काकजङ्घा वृक्ष, रक्तिकालता, मलपू वृक्ष, काकमाची वृक्ष ।
काकाक्षिगोलकन्याय, पु. जैसे काककी एक आंख दोनों गोलकमें फिर जाती है, वैसे जहां एक पदार्थका दोनोंसे संबंध हो वह दृष्टान्त ।
काकाङ्ग, काकाङ्गी, काकाञ्ची, } स्त्री. काकजङ्घा वृक्ष । एक क़िसमकी बूटी ।
काकारि, पु. पेचक; उल्लू ।
काकि(नी)णी, स्त्री. वराटिका दशकद्वय, मानदण्डविशेष, माष चतुर्थांश; २० बीस कौड़ी, हाथ भर, मासेका ४ था हिस्सह ।
काकी, स्त्री. कव्वी ।
काकु, स्त्री. भयशोकादिसे विकृतध्वनि, वक्रोक्ति, दैन्योक्ति । [चन्द्र ।
काकुत्स्थ(त्स्थ्य), पु. सूर्य्यवंशीय राजा, श्रीराम-
काकुद, न. तालु । [बोलना ।
काकूक्ति, स्त्री. कातरवाक्य, वक्रोक्ति । ख़ौफ़से
काकेक्षु, पु. काशतृण; सरकंडा घास ।
काकेन्दु, पु. कटु तिन्दुक; कुचला ।
काकेष्ट, पु. निम्ब वृक्ष; नीमका पेड़ ।
काकोदर, पु. सर्प ।
काकोदुम्बरिका, स्त्री. यज्ञोदुम्बर ।
काकोदर, पु. सर्प्प; सांप ।
काकोल, पु. काक, सर्प्पवि०, शूकर, कुलाल, (न) विष, (स्त्री) (ली) वायसी । [वैर ।
काकोलूकिका; स्त्री. कौए और उल्लूका क़ुदरती
काक्ष, त्रि. कुत्सितचक्षु, (न) कटाक्ष, (पु) वक्रदृष्टि।
कांक्षा, स्त्री. इच्छा, अभिलाषा । ख़ाहिश ।
काग, पु. काक, कौआ ।
कांक्षित, त्रि० इच्छित । चाहा हु०
कांच, पु. मणिविशेष, बालु और एक क़िसमकी खारसे उत्पन्न वस्तु, मोम, आंखकी बीमारी । खारानिमक ।

काचकूपी, स्त्री. बोतल ।
काचमल, न. काच, लवण, शोरा ।
काचित्, व्य. कांचन; कोई एक स्त्री ।
काचित, त्रि. शिक्योपरि स्थापितद्रव्य; छिक्केपर रक्खी हुई चीज़ ।
काञ्चन, पु. पुष्प वृक्षविशेष, चम्पक, कोविदार वृक्ष, उदुम्बर, धूस्तर, (न) स्वर्ण, धन, पद्मकेशर, नागकेशर, पुष्प, (त्रि) स्वर्णमय, (स्त्री) (ना) हरिद्रा, गोरोचना ।
काञ्चन-कदली, स्त्री. सुवर्ण कदली । चापाकेला ।
काञ्चन-गिरि, पु. सुमेरु पर्वत । [आबनूस ।
काञ्चनाल, पु. कोविदार वृक्ष; कचनार । पहाड़ी
काञ्चनाव्हय, पु. नागकेशर वृक्ष । [पुरीविशेष ।
काञ्ची(ञ्चि), स्त्री. चन्द्रहार, तागड़ी, वृक्षविशेष,
काञ्जिक, न. कांजी (स्त्री) (का) लतावि० ।
काठ, पु. पाषाण, पत्थर, चटान ।
काञ्चीपद, न. जघन । जांघ ।
काञ्जिक, न. कांजी (स्त्री) (ञ्जी) (ञ्जिका) ।
काठिन्य, न. कठिनता । सख़्ती ।
काण, पु. काक, (त्रि) काना ।
काणक, पु. काक; कौवा ।
काण्ड, पु. दरख़्तकी मोटी टहनी, जिसमेंसे छोटी टहनियें निकलती हैं, गुच्छतीर, मौक़ा, फ़ुरसत, फूल, पत्थर, मजमा, भीड़, नल, पानी, वाच, तअ़रीफ़, चापलूसी, कमीनह, गुनाहगार ।
काण्डकटुक, पु. कारवेल्ल; करेला ।
काण्डकाण्डक, न. काशतृण; काही घास ।
काण्डगोचर, पु. नाराच; लोहेका तीर ।
काण्डपट्ट, पु. स्त्री (टी) यवनिका; कानात् ।
काण्डपृष्ठ, स्त्री. सिपाही, वेश्याका ख़ाविंद, व्याध, (त्रि) निंद्यजीवी । [मजीठ ।
काण्डीर, त्रि. तीरन्दाज़, अपुठकांटा, (स्त्री) (री) ।
काण्व, पु. यजुर्वेदकी एक शाखा, कण्वकी औलाद ।
कातर, त्रि. दुःखित, भीत, विवश, अधीर, (पु) मत्स्यविशेष ।
कातृण, न. बुरी घास ।
कातर्य्य, न. दुःख, भीरुता । परेशानी, खौफ़ ।
कातल, पु. मत्स्यविशेष । एक क़िस्म का बड़ा भारी मच्छ ।

कात्यायन, न. मुनिवि०, वररुचि (स्त्री) (नी) (निका) दुर्गा, अर्द्धवृद्धा, विधवा, पचास वर्षकी सधवा, जिसने संन्यास ग्रहण किया हो ।
कादम्ब(क), पु. कदम्ब वृक्ष, इक्षु, शर, (न) कदम्ब पुष्प । कदमका पेड़ गंडा, तीर ।
कादम्बर, स्त्री. दहीका रस (स्त्री) (री) सरस्वती, शारिका, कोकिला । शराब ।
कादम्बिनी, स्त्री. मेघमाला ।
कादाचित्क, न. कदाचिदुद्भव; कभी२ होनेवाला ।
काद्रवेय, पु. नागविशेष; सांप ।
कानन, न. वन, ब्रह्माका मुख, गृह ।
काननारि, पु. शमी वृक्ष; जंडीका दरख़्त । [कर्ण ।
कानीन, त्रि क्वारी कन्याकी सन्तति, (पु) व्यास,
कान्त, पु. स्वामी, कृष्ण, चंद्र, लोह, वसन्तऋतु, न. कुङ्कम, सुंदर (स्त्री) (न्ता) भार्य्या, सुन्दरी स्त्री, (त्रि) प्रिय, सुंदर ।
कान्तपक्षिन्, पु. मयूर, मोर । [चुंबकपत्थर ।
कान्तलौह, पु अयस्कान्तमणि, अशोकवृक्ष ।
कान्तार(क), पु. न. महारण्य, (पु) इक्षु, कोविदार । ख़राब सड़क, बड़ा जंगल, गढ़ा, (न.) पद्म, (पु.) पौंडा, आबनूस, कचनार ।
कान्ति, स्त्री. ख़ूबसूरती, जलवा, ख्वाहिश, औरतोंकी ख़ूबसूरती ।
कान्तिक, पु. लोहविशेष, स्त्री. (का) लतावि० ।
कान्तिद, न. पित्त, (त्रि) शोभादायक । सुथरा, ख़ूबसूरती देनेवाला ।
कान्तिभृत्, **कान्तिमत्**, } त्रि. चमकदार ।
कान्दव, न. पक्वान्न; मिठाई ।
कान्दिक, त्रि. हलवाई । [हुआ ।
कान्दिशीक, त्रि. भयपलायित । ख़ौफ़से भागा
कान्यकुब्ज, पु. कन्नौज देश, विप्रविशेष ।
कापट्य, न. कपटता, शठता । दग़ा ।
कापथ, पु. कुत्सितपथ । ख़राब सड़क ।
कापाल, पु. कर्कटी, (न) कुष्ठविशेष । पेठा, एक क़िसमकी कोढ़ (स्त्री) (ली) वायडिंग ।
कापालिक, पु. वामाचारी, शिवजीके पुजारे जो आधी खोपरीके पियाले मेंहि खाते पीते हैं ।

कापिल, पु. सांख्य शास्त्रज्ञाता, उसपर चलनेवाला पीलेरंगका (न) उपपुराण वि० ।
कापिश, न. मद्यविशेष । एक क़िसमकी शराब ।
कापिशायन, पु. जटाधर, देवता, (न) मद्य, (स्त्री) (नी) द्राक्षा । शराब, दाख़ ।
कापुरुष, पु. असार व्यक्ति । हक़ीर आदमी ।
कापेय, त्रि. कपिसम्बन्धी; बंदरका ।
काप्यक(का)र, पु. स्वपापवक्ता । अपने क़सूर या गुनाहोंका इकरारी । [पूर्वक ।
काम, पु. बलराम, कन्दर्प्प, (न) शुक्र, (व्य) इच्छा-
कामकला, स्त्री. कामदेवपत्नी, चांदकी सोलवीं कला । [आज़ाद, मुहब्बत ।
कामकार, त्रि. यथेच्छाचारी, (पु) प्रेम । ज़नाहकार,
कामकूट, पु. वेश्याप्रिय । फ़ाहशाका आशना ।
कामकेलि, पु. उपपति, सुरतक्रिया । यार, सोहबत, जमा ।
कामगिरि, पु. पर्वतविशेष ।
कामचार, यथेच्छाचार, स्वतंत्रता । आज़ादी ।
कामचारिन्, त्रि. ख्वाहिशमंद, खुदरौ चिड़िया।
कामतिथि, स्त्री. त्रयोदशी तिथि । [कामधेनु ।
कामद, त्रि. अभीष्टद, (न) वनविशेष (स्त्री) (दा)
कामदुघा, **कामदुहा**, **कामधेनु**, (स्त्री) कामधेनु । मरज़ी माफ़िक देनेवाली, ख़ास एक जंगल, स्वर्गकी गाय स्त्री ।
कामन, त्रि. कामुक, (स्त्री) (ना) इच्छा । ख़्वाहिशमंद या शहवती, ख़ाहिश या मरज़ी ।
कामपाल, पु. बलराम; कृष्णजीका बड़ा भाई ।
कामपीठ, पु. कूएकी मन ।
कामम्, व्य. सम्मति, ईर्ष्या, प्रकाम, सम्यक्, यथेष्ट । राय, हसद, मरज़ीसे, खूब, काफ़ी ।
कामयमान, **कामयान**, **कामयितृ**, त्रि. कामुक । ख्वाहिशमंद ।
कामरूप, त्रि. सुन्दर, (पु) कामरू देश ।
कामरूपिन्, पु. विद्याधर, (त्रि) स्वेच्छारूपधारी (स्त्री) (णी) अश्वगन्धा वृक्ष । जैसी शकल चाहे बनजानेवाला ।
कामल, पु. वसन्तकाल, मरुभूमि, (त्रि) कामी (ला) रोगविशेष ।
कामवल्लभ, पु. चांदनी ।
कामसख, पु. वसन्तकाल ।
कामसुत, पु. अनिरुद्ध ।
कामाख्य, स्त्री. कामरूप देशमें देवीविशेष ।
कामावसायिता, स्त्री. आठ सिद्धियोंमेंसे सङ्कल्पकी सचाई ।
कामित, त्रि. इच्छित । चाहाहुआ ।
कामिन्, पु. चकवा, कबूतर, चिड़िया, चांद, स्त्री. (नी) लाजवंती औरत, (त्रि) जिनाहकार ।
कामुक, पु. अशोकवृक्ष, चटकपक्षी (त्रि) अभिलाषु (स्त्री) (का) (की) विलासिनी, मैथुनेच्छावती-
कामोदा, स्त्री. रागिनीविशेष ।
कम्पि(म्पी)लक, **काम्पिल्य(ल्ल)**, पु. उत्तर देशविशेष, सुगन्धवस्तुविशेष (स्त्री) (ला) लता वि०, कविता ।
काम्पील(क), पु. देशविशेष ।
काम्बोज, पु. काम्बोजदेशजात अश्व, यवन जाति वि०, पुन्नागवृक्ष, (स्त्री) (जा) (जी) खदिर, गुञ्जा।
काम्यकर्म, पु. ज्योतिष्टोमआदि यज्ञ । [दह काम।
काम्य, न. कमनीय कार्य्य (त्रि) सुंदर । पसंदी-
काम्यमान, त्रि. प्रार्थ्यमान । चाहाहुआ ।
काय, पु. शरीर, प्राजापत्य विवाह, लक्ष्य, स्वाभाविक अवस्था, समूह, गृह, मूल धन, ब्रह्मा, ब्रह्मतीर्थ (न) करतलस्थ कनिष्ठाङ्गुलि मूलदेश, मनुष्यतीर्थ ।
कायमान, न. आवसथ उपकार्य ।
कायस्थ, पु. आमा, शूद्राणीके पेटमें क्षत्रीकी औलाद, (स्त्री) (स्था) हरीतकी, आमलकी, काकोली, कायस्थपत्नी । [नकी वृद्धि विशेष ।
कायिक, त्रि. दैहिक । जिस्मानी (स्त्री) (का) ध-
कायान्ध, पु. घोइल, (त्रि) कामसे विचारहीन (स्त्री) न्धा कस्तूरी । [(स्त्री) (रा) दूती, बंदीखाना ।
कार, पु. कार्य, निश्चय, यत्न, हिमालय, (त्रि) कर्ता
कारक, त्रि. कर्मकर्ता (न) कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, और अधिकरण ।
कारक, त्रि. कर्ता, क्रियाजनक ।
कारण, न. हेतु, गीतविशेष, इन्द्रिय, देह, वाद्यविशेष, वध, कायस्थ जाति ।

कारणशरीर, न. सुषुप्ति; नींद की दशा।
कारणमाला, स्त्री. अलंकारविशेष।
कारणा, स्त्री. तीव्र यातना। बड़ी दर्द या तकलीफ़।
कारणिक, त्रि. परीक्षक। मुमृतहिन। [उत्तर देना।
कारणोत्तर, न. सत्य प्रतिज्ञा करके उसके प्रतिकूल
कारमिहिका, स्त्री. कर्प्पूर; काफूर।
कारव, पु. काक; कौवा।
कारवेल(क), पु. लताविशेष; करेला।
कारस्करादिका, स्त्री. कर्ण-जलौका; कनकोल।
कारा, स्त्री. बंधनगृह, दूती, वीणाधःस्थकाष्ठमयभाण्ड, सुवर्णकारिका, बंधन, पीड़ा। क़ैदखानह दूती या दल्ली, वीनके निचला तूंबा, सुनारिन, क़ैद, दर्द।
कारा-गार, न. बन्धनालय। जेलख़ानह।
कारा-गुप्त, त्रि. कारागारस्थ। क़ैदी।
कारापथ, पु. देशविशेष। [यातना, वृद्धि।
कारिका, स्त्री. नटकी स्त्री, विवरणश्लोक, शिल्प,
कारित, त्रि. कर्म्मप्रेरित। कराया हुआ।
कारिता, स्त्री. वृद्धिविशेष। सूद।
कारीरी, स्त्री. यज्ञविशेष।
कारीष, न. शुष्कगोमयराशि; उपलोंका ढेर।
कारु(क), त्रि. कारीगर, करनेवाला, वनानेवाला, (पु) विश्वकर्म्माका नाम, कारीगरी।
कारुकर्म, न. रसोईयेका काम।
कारुज, पु. हाथीका बच्चा, झाग, वल्मी, देहपरका चिन्ह, तिल।
कारुणिक, त्रि. दयालु। मेहरबान।
कारुण्डी, स्त्री. जलौका; जोंक।
कारुष, पु. सुधन्वाचार्य।
कारुण्य, न. दया। मेहरबानी। [संगदिली, बेरहमी।
कार्कश्य, न. काठिन्य, निष्ठुरता, क्रूरता। सख़्ती,
कार्त्तवीर्य्य, पु. चन्द्रवंशीय कृतवीर्यपुत्र नृपविशेष, अर्जुन, जैनराज चक्रवर्तिविशेष।
कार्त्तस्वर, न. सोना, धतूरा, पहाड़ी आवनूस।
कार्त्तान्तिक, पु. दैवज्ञ। नजूमी।
कार्तिक (किक), पु. स्वनामख्यात मास (स्त्री) (की) कार्तिकी पूर्णिमा। कार्तिकका महीना, कार्तिककी पूनो।

कार्तिकेय, पु. षडानन; शिवजीका पुत्र।
कार्तिकोत्सव, पु. कौमुदी; चांदनी।
कार्त्स्न्य, पु. सम्पूर्णता। तमाम।
कार्प्पट, पु. लाख। उमेदवार।
कार्प्पटिक, पु. उमेदवार, चीथड़ा पहिरे।
कार्प्पण्य, न. मुफ़लसी, हलीमी, कंजूसी।
कार्प्पास, न. तूल, (त्रि) कार्प्पासनिर्म्मित वस्त्रादि; रुई, सूती कपड़ा वगैरह, (स्त्री) (सी) कपासका पोदा।
कार्म्म, त्रि. कर्म्मशील। मेहनती। [तरमंतर चलाना।
कार्म्मण, त्रि. काममें होशियार, (न) जादू या जं-
कार्मिक, त्रि. निर्मित, विचित्र वस्त्रादि। बनाया हुआ।
कार्म्मुक, न. धनुष, (त्रि) कर्म्ममें दक्ष, (पु) बांस, निम्ब। [(स्त्री) (र्या) एक ख़ास पौदा।
कार्य्य, न. कर्म्म, प्रयोजन, हेतु, (त्रि) कर्तव्य।
कार्य्यकुशल, त्रि. कर्म्मठ। काममें चालाक।
कार्श्य, पु. क्षीणता। सालका दरख़्त, दुबलापन।
कार्ष, पु. कर्षक। किसान।
कार्षक, पु. कर्षक, किसान। [पण।
कार्षापण, पु. न. कृषक, (न) स्वर्ण, रौप्य, १६
कार्षि, स्त्री. कृषिवृत्ति; खेतीका काम।
कार्षिक, पु. पणचतुर्थभाग; २० कौड़ी।
कार्ष्ण, त्रि. स्याह, (पु) स्याहहिरण।
कार्ष्णि, पु. कामदेव, कृष्णसुत।
कार्ष्ण्य, न. कृष्णत्व। स्याही, कालापन।
काल, न. लोह, कनकोल (पु) समय, यम, मृत्यु, शिव, शनि, कोकिल, कृष्णवर्ण (स्त्री) (ला) नील का पोदा।
कालञ्जर, पु. पर्वतवि०, देशविशेष, योगीचक्र, मृत्युंजय।
कालज्ञ, पु. दैवज्ञ, कुक्कुट. त्रि. कालवित्।
कालधर्म, पु. मृत्यु। मौत।
कालना, स्त्री. चालना।
कालनेमि, पु. राक्षस वि०, दैत्यविशेष।
कालपुरुष, पु. पुरुषाकृति नक्षत्रव्यूह, यमका भृत्य।
कालयवन, पु. असुरविशेष।
कालक, पु. (कालका) लाख, पानीका सांप, साग, कलेजा। अरबेमें नामालूम अदद।

काल-कण्ठ, पु. शिवजी, मोर, ममोला अवाबील, पपीहा ।
कालकील(क), पु. कोलाहल। शोर ।
काल-कूट, पु. विषविशेष । [है इसका ज्ञाता।
कालक्ष, पु. कुक्कुट, त्रि. इस समय यह कर्तव्य
कालकृत्, पु. सूर्य ।
कालग्रन्थि, पु. वत्सर; वरस ।
कालघण्ट, पु. योगविशेष ।
कालञ्जर, पु. शिव, पर्वतविशेष, देशविशेष (स्त्री) (रा, री) पहाड़ी (बुंदेलखण्ड) चंडी ।
काल-धर्म्म, पु. मृत्यु, समयस्वभाव। मौत, मौसम।
काल-नियोग, पु. दैवज्ञ । किस्मत ।
काल-निर्य्यास, पु. गुग्गुलु; गूगल ।
कालनेमि, (मिन्) पु. राक्षसविशेष, हिरण्यकशिपुका पुत्र, दैत्य ।
कालनेमि-रिपु, कालनेमि-हन्, } पु. विष्णु ।
काल-पर्ण, पु. तगर-वृक्ष ।
काल-पुच्छ, पु. मृगविशेष । बारहसिंहा हरण ।
काल-पुरुष, पु. यम सहकारी पुरुषाकृति नक्षत्र-समूह । आसमानमें आदमी कीसी सूरतका जो सतारोंका मजमा नज़र आता है ।
काल-पृष्ठ, पु. काला हरण, बगला, (न) कर्णराजा की कमान्, कमान् ।
कालयुक्त, पु. वत्सर । साल ।
काल-रात्रि, स्त्री. भीमरथी, रात्रिविशेष, संहार रात्रि, कल्पान्त रात्रि, दुर्गाशक्तिविशेष । कयामतकी रात ।
काल-लौह, न. कृष्णायस; स्याह लोहा ।
कालवित्, पु. ज्योतिषी । नजूमी ।
काल-वेला, स्त्री. अशुभ समय विशेष । खराब सात । [काला धान ।
काल-शालि, पु. कृष्णशालि । एक क़िसमका
कालशे(से)य, न. कालासेय । मठा, छाछ ।
कालसर्प्प, पु. कृष्ण-सर्प्प; काला ज़हरी सांप ।
कालसार, पु. कालामृग ।[इक्कीस नरकोंमें से एक ।
काल-सूत्र, न. कुलालचक्र, सूत्रछेदनरूप नरक विशेष।
काल-स्कन्ध, पु. तमालवृक्ष, तिन्दुक वृक्ष, उडुम्बर, खदिर वृक्ष, जीरक वृक्ष ।

काला, स्त्री. कृष्णत्रिवृता, मञ्जिष्ठा, नीलिनी, कृष्णाजीरक, अश्वगंधा वृक्ष, पटोली वृक्ष । काली तिरवी, मजीठ, नील, काला ज़ीरा ।
कालाक्षरिक, पु. छात्र । तालिब इलम ।
काला-गुरु, न. कृष्णागुरुचन्दन । स्याह संदल ।
कालाग्नि, पु. प्रलयाग्नि । कियामतकी आग ।
कालानुसारिन्, कालानुसार्य, } पु. शैलेय, न. गंधद्रव्य, गंधद्रव्यवि० कालके मुताबिक ।
कालाप, पु. सर्प-भोग; कलाप व्याकरणवेत्ता, राक्षस । सांपकी फन, "कलाप" नाम संस्कृत सरफ़ नहवके बनानेवाला या जाननेवाला ।
कालापक, न. चार श्लोकका एकान्वय ।
कालायस, न. लौह; लोहा ।
कालाशौच, न. शुभकर्म व्याघातक अशौच ।
कालिक, पु. वकपक्षी, (न) कृष्णचन्दन, (त्रि) कालसम्भव, स्त्री (का) मेघमाला, कुज्झटिका, प्रतिमास देय व्याज, चण्डिकाकृष्णवर्ण, रोमाली, स्त्री. काकी, श्यामापक्षी, हरीतकी, मसी, वृश्चिकी, धूसरी ।
कालिङ्ग, पु. हाथी, सांप, एक क़िसमका लोहा, कलिंग देशका राजा । [कविविशेष ।
कालिदास, पु. विक्रमराजाका सभापंडित। प्रसिद्ध
कालिनी, स्त्री. आर्द्रा नक्षत्र; छटा नक्षत्र ।
कालिन्द, न. फलविशेष (स्त्री) (न्दी) जमना नदी ।
कालिन्दीकर्षण, कालिन्दीभेदन, } पु. बलदेव; कृष्ण का बड़ा भाई ।
कालिमन्, पु. कृष्णता, मलिनता । कालापन ।
कालिय, पु. सर्प्पविशेष, (त्रि) कालसंबंधीय ।
काली, स्त्री. व्यासजीकी मा, नये बादलोंकी माला, गाली, अंधेरी रात, आग का शोलह, बदनामी, शान्तनुराजाकी स्त्री ।
कालीक, पु. क्रौञ्च; बगुला ।
कालीची, स्त्री. यमविचारभूमि । यमका दरबार ।
कालीय, (क) न. चन्दन, कुकुम ।
कालुष, न. मलिनता । मैलापन ।
कालेय, पु. दैत्यभेद, दैत्य वि०, त्रि. कालि कालका।
काल्य(क), पु. निर्व्विसी । [निर्विसी ।
काल्य, न. प्रत्यूप, सुबह (त्रि) फूलका (स्त्री)(ल्या)

काल्या, स्त्री. गर्भधारणके कालपर पहुची हुई गौ। सांढ मिलानेके लायक गाय।
कावचिक, न. कवचधारीओंका समूह।
कावार, न. शेवाल, (स्त्री) (री) तृणादि छत्र। सर। छाल-पातका-छाता। [हरिद्रा।
कावेर, न. कुङ्कुम, (स्त्री) (री) नदीविशेष, वेश्या,
काव्य, पु. शुक्राचार्य्य, (न) कविता, रसयुक्तवाक्य (स्त्री) (व्या) बुद्धि, पूतना।
काव्यलिङ्ग, न. अर्थालंकार विशेष।
काशक, पु. काशाख्य तृणविशेष। काही घास।
कास(श), पु. प्रकाश, रोगविशेष०, केसूके फूल, शोभायमान।
काश्मीर, न. कुष्टकेशर, टङ्क, पु. स्वनामख्यातदेश, (स्त्री) गम्भारी लता (त्रि.) (बहु) काश्मीरवासी।
काश्मीरक(जन्मन्), न. कुंकुम। केसर।
काशि(शी)राज, पु. नृपवि०,दिवोदास, धन्वंतरी।
काशि(शी)(शिका) स्त्री. बनारस।
काशीश, पु.
काशीनाथ, पु.
काशीराज, पु. } शिव। काशीका राजा, विश्वेश्वर।
काशीश, न. धातुविशेष। हीरा कसीस।
काश्य, न. मद्य। शराब (पु) काशीराजा।
काश्यप, पु. कानादमुनि, मृगविशेष, मीनविशेष, गोत्रवि०, कश्यपात्मजमात्र (न) मांस।
काश्यपि, पु. सूर्यसारथी, गरुड़ (स्त्री) (पी) पृथिवी। सूर्य्यदेवताका गाड़ीवान, ज़मीन।
काश्यपेय, पु. सूर्य्य, गरुड़।
काषाय, त्रि. कषायरक्त; गेरूसे रंगा हुआ।
काष्ठ, न. काठ; लकड़ी।
काष्ठक, न. अगुरु। सीसम।
काष्ठकुट्ट, पु पक्षीविशेष। कठफोड़ा।
काष्ठकुद्दाल, पु. कुदाल, फौड़ा। [रखान।
काष्ठ-तक्ष(क), पु. वर्णसङ्कर जातिविशेष। त-
काष्ठ-मल, पु. शवयान; अर्थी। जनाज़ह।
काष्ठाम्बुवाहिनी, स्त्री. डोंगी, सेचनी। [दरख्त।
कास, पु. खांसीकी बीमारी, काही, सुहांजनेका
कास-कन्द, पु. कासालु। एक क़िसमका कंद।
कासघ्न, पु. औषधवि० (स्त्री) (घ्नी) कण्टकारी; कंड़यारी बूटी।
कासनाशिनी, स्त्री. कर्कटशृङ्गी, काकड़ासिंही।
कासर, पु. महिष। भैंसा।
कासहृन्, पु. खांसी हटानेवाला काढ़ा।
का-सार, पु. सरोवर, सपद्म निष्पन्द महा जलाशय। कौल फूलवाली झील।
कासारि, पु. कासमर्द, आलूक।
कासालु, पु. कोकानके आलू।
कासीस, न. हीरा कसीस।
कासू, स्त्री. मोहमिल कलाम, बोली, या ज़बान, बर्छी, बीमारी, समझने की ताक़त, रौशनी।
काहला, स्त्री. वाद्यविशेष। एक किसम का बाजा।
काहल, पु. कुक्कुट, बिल्ली, (न) आवाज़ बृहद्ढक्का, बड़ी गर्जना, (त्रि) सुखी, दुष्ट, जल्द (स्त्री) (ला) एक प्रकार का तबला, अप्सरावि०, (ली) जवान स्त्री।
काहलापुष्प, पु. धूस्तर; धतूरा। [वाह।
किंवदन्ति(न्ती), स्त्री. जनश्रुति, लोकोक्ति। अफ़-
किंवा, व्य. विकल्प। या।
किशारु, पु. धानके बाल, तीर, माहीख़ोर।
किंशुक, पु. पलाश वृक्ष, कङ्कपक्षी, (न) पलाशपुष्प। केसूफूल।
किंसख, पु. बुरा मित्र।
किंस्वित्, व्य. प्रश्न, वितर्क। सवाल, दलील। [लोमड़ी।
किखि, पु. कपि, (स्त्री) शिवा, बदर, गिदड़ी,
किङ्कर, पु. भृत्य, दास। चाकर।
किङ्कि(णि)णी, स्त्री. तगड़ी जिस्में छोटी २ घंटियें बंधी हुई होती हैं।
किङ्किर, पु. कोकिल, भ्रमर, घोटक, कन्दर्प। (स्त्री) (रा) रुधिर, (न) गजकुम्भ।
किङ्किरात, पु. रक्त अशोकवृक्ष, कामदेव, शुकःपक्षी, कोकिल, पुष्प वृक्षविशेष। अशोकका पेड़, तोता, कोइल, फूलदार दरख़्त।
किञ्च, व्य. आरम्भ, साकल्प, समुच्चय, औरभी, इन सब अर्थोंके जतानेवाला अव्यय।
किञ्चन,
किञ्चित्, } व्य. असाकल्प, अल्प। नातमाम, थोड़ा।
किञ्च(ञ्चु)लुक, पु. केंचुआ। [तिरियें।
किञ्जल्क, पु. कमलफूलके बीचकी निहायत बारीक
किटि, पु. शूकर; सूअर।

किटिभ, पु. केशकीट; जूं।
किट्ट, न. धातुमल; धातकी मैल; गूह।
किट्टाल, पु. तांबेकी गगरी, लोहेकी जंगाल, गूह।
किण, पु. फोड़ेका दाग़, मस्सा, लकड़ीका कीड़ा।
किण्व, पु. मद्य, मादकद्रव्य, न. पाप। शराब में नफ़ा देनेवाली चीज़ें। [वृक्ष।
कितव, पु. द्यूतकारक, वञ्चक, खल, मत्त, धूस्तर-
किन्तनु, पु. अष्टपाद; मकड़ी। [कोई।
किन्तमाम्, व्य. क्या, या, ख्वाह, बहुतोंमेंसे
किन्तराम्, व्य. क्या, या, ख्वाह, दोनोंमें से एक।
किन्तु, व्य. लेकिन, इलावा।
किन्धिन्, पु. अश्व; घोड़ा।
किन्नर, पु. स्वर्गके गायक, यक्ष जाति, बुरा आदमी।
किन्नरेश, **किन्नरेश्वर,** पु. कुवेर; दौलतका देवता।
किन्नु, व्य. क्या, शक, मुआफ़क़त, मेल, जगह इन अर्थोंका वोधक अव्यय।
किम्, व्य. प्रश्न, तर्क, निषेध (त्रि.) कौन, पु० निंदा।
किमपि, व्य. अकारण। कुछभी।
किमु, व्य. सम्भावना, विमर्ष। ख्वाह, शक।
किमुत, व्य. ख्वाह, शक, ज्यादती, क्या, किसतरह।
किम्पच(चा), त्रि. कृपण। कंजूस। [खण्ड।
किम्पु(म्पु)रुष, पु. देवगायक, जम्बूद्वीपका एक
किम्भूत, त्रि. कीदृश; कैसा।
कियत्, व्य. त्रि. कुतः; कितना, थोड़ासा।
कियाह, पु. रक्तवर्ण घोटक। सुरख़ घोड़ा।
किर, पु. शूकर अंतभाग। सूअर (त्रि.) फेंकनेवाला।
किरक, पु. लेखक; लिखारी। क़ातिब।
किरण, पु. अंशु, किरण। शुआ।
किरात, पु. भील, चरायता, वाउना, तप्तकुण्ड और रामक्षेत्रके वीचका देश, घोड़ोंका मुहाफ़िज़,(ता) (ति)(ती) देवी, वैकुंठकी गंगा, दूती, भीलनी।
किराताशिन्, पु. गरुड़, विष्णुकी असवारी।
किरि, पु. शूकर। सूअर।
किरीट, पु. न. ताज, शमला, पगड़ी।
किरीटिन्, पु. अर्जुन (त्रि) किरीट वाला। [पर।
किर्म्मी, स्त्री. पलाश वृक्ष, गृह। पलाश का दारख़्त,
किर्म्मीर, पु. नारङ्गका वृक्ष, वक राक्षसका भाई, कर्वुरवर्ण, (त्रि) तद्युक्त। चितकवरा।
किर्म्मीरजित्, **किर्म्मीरभिद्,** पु. भीमसेन; पांडुराजाका तीसरा बेटा।
किल, व्य. वात, सम्भावना, अनुनय, निश्चय, सत्य, हेतु, अलीक, तिरस्कार, अरुचि। इन अर्थोंका वोधक।
किल-किंचित्, न. युवतियों का विलास। [जेना।
किलकिला, स्त्री. वंदरोंकी किलकाट, सिंह की ग-
किलिम, न. देवदारु; दियार।
किल्किन, पु. घोटक; घोड़ा। असप।
किल्विष, न. अपराध, पाप, रोग। गुनाह, वीमारी।
किश(स)ल(य), पु. न. पल्लव, नूतन पत्र; नया पत्ता।
किशोर, पु. शिशु, सूर्य्य, तरुणावस्था प्राप्त वछंडा (स्त्री) (री) तरुणी स्त्री। [की गुफ़ा।
किष्किन्ध(न्ध्य), पर्वतवि०, (स्त्री) (न्ध्या) किष्किंधा
किष्कु, पु. स्त्री. हाथभर, बीनी, १२ अंगलीभर, (त्रि) ख़राब।
कीकट, पु. घोड़ा, विहारदेश, (त्रि) कृपण, निर्धन, विहारका। [र्य्यसे ब्राह्मणीके पेटमें से पैदा हो।
कीकश, पु. चाण्डाल। एक ज़ात, जो शूद्रके वी-
कीकस, पु. कृमिविशेष, (न) हड्डी, (त्रि) कड़ा।
कीकि, पु. चाष पक्षी।
कीचक, पु. दैत्यविशेष, वृक्षविशेष, केकय राजाका पुत्र, विराट राजाका साला, नल, सछिद्र वांस।
कीचक(जित्)(भिद्)निसूदन, पु. भीमसेन।
कीट(क) पु. कृमि; कीड़ा (त्रि.) कड़ा।
कीटघ्न, पु. गंधक (त्रि) कीडों के मारने वाला।
कीटज, न. रेशम (स्त्री) (जा) लाख।
कीटमणि, पु. खद्योत; टटहना, पटवीजना।
कीदक्ष, पु. कैसा।
कीदृ(क्ष)श, त्रि. कैसा।
कीनाश, पु. यम, एक वंदर (त्रि) कर्षक, छोटा, पशु नाशक। [(न) मांस।
कीर, पु. शुक, कश्मीर देश, (बहु.) काश्मीरवासी,
कीर्ण, त्रि. विक्षिप्त, निहत, आच्छन्न। फैला हुआ, मारा हु०, ढांपा हु०।

कीर्त्तन, न. कथन, वचन, ईश्वर के गुणों का गाना बजाना (स्त्री) (ना) यश गाना ।
कीर्त्तनीय, न. कीर्तन करनेके योग्य ।
कीर्त्ति, स्त्री. यश, ख्याति । नेकनामी, शोहरत ।
कीर्तित, त्रि. ख्यात, प्रसिद्ध ।
कीर्तिशेष, त्रि. मरा हुवा ।
कील, पु. अग्निशिखा, शङ्कु, स्तम्भ, लेश, कफोणि, शस्त्र । आगका शोलह, लोहेका कीला, खंबा, थोड़ा, कोहनी, हथियार ।
कीलक, पु. हैवानोंके बांधनेका खूंटा ।
कीलन, न. स्थिरीकरण । कायम करना ।
कीलाल, न. जल, मधु, रुधिर, अमृत, (पु) पशु ।
कीलालधि, पु. समुद्र । बहिर ।
कीलालप, पु. राक्षस (त्रि) खून पीनेवाला ।
कीलित, त्रि. बद्ध, न. बंधन । बंधा हुवा ।
कीश, पु. बंदर, सूरज, परिंदह, (त्रि.) नंगा ।
कु, व्य. पाप, निन्दा, ईषदर्थ, निवारण, स्त्री. पृथिवी ।
कुंशा(सा), स्त्री. शोभा ।
कुकुभ, पु. मद्य । शराब ।
कुकुद, पु. सत्कारपूर्वक अलंकृत कन्यादानकर्त्ता । बड़ी इज़तसे लिबास फ़ाखरा पहिना कर लड़की-का दान करदेनेवाला ।
कुकून्दर, न. द्वि० (रौ) चूतड़ों परके गोल गड्ढे ।
कुकूटी, स्त्री. शाल्मली वृक्ष; सिंवलका दरख़्त ।
कुकूल, पु. तुषानल, (न) शंकुनिर्म्मित गर्त । तुसकी आग, कीला ठोकने का गढ़ा ।
कुकुट, पु. रा. तिनकोंकी आग, (न) झूठा पर्दा ।
कुकुटक, पु. शूद्र और भीलनीसे उत्पन्न संतान ।
कुक्कुटव्रत, न. भाद्रसुदी सप्तमीको सन्तानार्थ स्त्रियोंका व्रत ।
कुक्कुर, पु. श्वा (स्त्री) री, शुनी, (न) ग्रंथपर्णी लता । कुत्ता, कुत्ती, एक ख़ास किसम नबातात, खुशबू ।
कुक्ष, पु. कुक्षि; कूख ।
कुक्षिम्भरि, त्रि. अपना ही पेट भरनेवाला ।
कुक्षिज, त्रि. औलाद (त्रि) कुक्षी से उत्पन्न ।
कुङ्कुम, न. काश्मीरदेश जात कुङ्कुम । केसर ।
कुङ्कुमाद्रि, पु. पर्वतविशेष ।
कुच, पु. स्तन । पिस्तान ।
कुचण्डिका, स्त्री. मूर्वालता ।
कुचफल, पु. दाड़िम्ब वृक्ष । अनारका दरख़्त ।
कुचर, त्रि. परदोषकथनशील । ऐब-जो ।
कुचाग्र, न. स्तनाग्रभाग, चूची । [समकी मछली ।
कुचिक, पु. स्त्री. मत्स्यविशेष (स्त्री) (का) । एक कि-
कुचेल, त्रि. कुत्सित वस्त्रपरिहित व्यक्ति, (स्त्री) (ली) एक पौधा, मयले कपड़े पहिननेवाला ।
कुज, पु. मङ्गलग्रह, नरकासुर, वृक्षविशेष, (स्त्री) (जा) कात्यायनी देवी । [ज़न ।
कुज(म्भ)(म्भिल)र, त्रि. कुजम्भल । नक़ब-
कुज्झटि(टी)(टिका), स्त्री. कुज्झटि । कुहासा, गुबार ।
कुज्झिश, पु. मत्स्यविशेष, एक प्रकारकी मछली ।
कुञ्चन, न. तिरछापन, समेटना, बेअदबी, आंखकी बीमारी । [मुट्ठीभर का पैमाना ।
कुञ्चि(ञ्ची)(का), पु. अष्टमुष्टि परिमाण, आठ
कुञ्चित, न. तगर-पुष्प, (त्रि) वक्र, निरादृत, सङ्कुचित । तिरछा, सुकुचा हुआ, बेइज़त कियाहु० ।
कुञ्ज, पु. हस्तिदन्त, (न) लतागृह; हाथी दांत, बेलोंके घर ।
कुञ्जर, पु. हस्ती, केश, देशविशेष, (स्त्री) (रा) हस्तिनी, धातकी । हाथी, बाल, खास मुल्कका नाम, हथिनी, धावेफूल ।
कुञ्जरा-राति, पु. शरभ । एक पशु कहते हैं कि इस्की आठ टांगे होती हैं ।
कुञ्जराशन, पु. पीपलका पेड़ ।
कुट, पु. दुर्ग, पर्वत, वृक्ष, शिलाकुट्ट वृक्ष, (पु. न.) कलस, गृह । क़िलअ, पहाड़, दरख़्त, हथौड़ा, कलसा, घर (स्त्री) (टी) कुटनी, झोंपड़ी ।
कुटङ्क, पु. लतागृह, गृहाच्छादन; बेलोंका घर, छोटा घर, छत । [चार्य, (स्त्री) (जा) छंदोवि० ।
कुटज, पु. इन्द्रयव, फल-वृक्ष, आगस्त्यमुनि, द्रोणा-
कुटर, न. मन्थनदण्ड, बन्धनस्तम्भ; मधानी बांधने-का खंबा ।
कुटरु, पु. वस्त्रगृह । तम्बु, कनात ।
कुटि, पु. वृक्ष, देह, जल । दरख़्त, जिसम, पानी ।
कुटि-चर, पु. संन्यासीवि०, जलशूकर । सुसमार ।
कुटि(टी)र, पु. क्षुद्रगृह; कुटिया । [नदी ।
कुटिल, त्रि. वक्र (न) तगरपुष्प, (स्त्री) (ला) सरस्वती

कुटिलग, त्रि. वक्रगामी, पु. सांप (स) (गा) नदी।
कुटीचक, पु. पुत्रान्नजीवी। बेटेकी कमाईपर गुजारा करनेवाला। [टियासे बाहर न जाय।
कुटीचर(क), पु. यतिविशेष। एक फकीर जो कु-
कुटुम्ब, पु. न. नातेदारी, बरादर, औलाद।
कुटुम्बिन्, पु. गृही, (त्रि) कृषक (स्त्री) (नी) गृहिनी; घरवाला, किसान, घरवाली।
कुटुम्बिता, स्त्री. नातेदारी। [छिदक, कूटनेवाला।
कुट्टक, पु. लीलावतीके प्रसिद्ध गणिताङ्कविशेष (त्रि.)
कुट्टन, न. छेदन, कुट्टन, प्रतापन, (स्त्री) (नी) दूती। काटना, कूटना, तपाना, दल्ली।
कुट्टमित, न. स्त्रियोंके दश प्रकारकी शृङ्गारचेष्टाओंके बीचकी एक चेष्टा। आशाके साथ मिलनेकी मरज़ी होनेपर भी इन्कारके लिये हाथका हिलाना। [वाला।
कुट्ट(ट्टा)क, पु. पर्वत, (न) केवल, त्रि. तोड़ने
कुट्टार, पु. पर्वत, (न) केवल। [दरख़्त।
कुट्टिम, पु. न. रत्नोंकी खान, कुटिया, अनारका
कुट्टिहारिका, स्त्री. दासी। लौंडी।
कुड्मल, पु. न. कली; गुञ्चह,(न) एक खास दोज़ख।
कुठ, पु. वृक्ष। दरख़्त। [नी बांधनेका खंभा।
कुठर, पु. दधिमन्थन दण्डबन्धनार्थ-स्तंभ। मथा-
कुठाकु, पु. खुटक बढ़ईया।
कुठाटङ्क, पु. कुठार; कुल्हाड़ी।
कुठार, पु. स्त्री. शस्त्रविशेष, (पु) वृक्ष। कुल्हाड़ा, (स्त्री) (री) कुल्हाड़ी, दरख़्त।
कुठि, पु. पर्वत, वृक्ष। पहाड़, दरख़्त। [आग।
कुठेर(क), पु. श्वेततुलसी, वन्हि। सुपेद तुलसी,
कुठेरु, पु. चामरवायु; चौरीकी हवा।
कुडप(व), पु. चार मुट्ठी। ३२ तोले, बुक्कभर।
कुडा(क), न. दिवार, लेपन, शौक।
कुडामत्स्य, पु. गृहगोधिका, (स्त्री) (त्सी) छिपकली।
कुडिश, पु. मत्सविशेष। एक खास मछली। [मयना।
कुड्य, न. दीवार; भीत।
कुणप, पु. मृत, मुरदा, बदबू, (स्त्री) (पी) बदबूदार,
कुणि, त्रि. बुरा काम करनेवाला (पु) तूतवृक्ष।
कुणिन्द, पु. शब्द। आवाज़।
कुण्ठ(क), त्रि. अकर्म्मण्य, मूर्ख। सुस्त, बेवकूफ़।
कुण्ठित, त्रि. मूर्ख, सुकड़ा हुआ। बेवकूफ़।
कुण्ड, पु. स्वाविंदके जीते हुए यारसे पैदा हुई २ औलाद, (न) पैमाना, चौबच्चा, होमकी आग रखनेका घर, (पु. स.) (डी) देकचा, लोटा।
कुण्डकीट, पु. नास्तिक, दोगला, जिसकी मा ब्राह्मणी और बाप छोटी ज़ातका हो, ख़ानगीबाज़।
कुण्ड-गोलक, पु. काञ्जिक; कांजी, मांड।
कुण्डपाय्य, पु. यज्ञविशेष।
कुण्डल, न. बाला, कड़ा, ज़ंजीरें-पा, स्त्री. (ली) गिलो, अबनूसका दरख़्त, एक क़िसमकी झाड़ी।
कुण्डलिन्, पु. सांप, पानीका देवता, मोर, चितकबराहिरण, (त्रि) जिस्से कुण्डल पहिरे हुए हों।
कुण्डिक, न. स्त्री. (का) कमण्डलु, स्थाली। लोटा, टोकनी, कूंडी। [श्वसुर।
कुण्डिन, पु. मुनिविशेष (न) विदर्भनगर, नलका
कुण्डीर, पु. मनुष्य, (त्रि) बलवान्। [वाला।
कुतनु, पु. कुवेर (त्रि) कुत्सित शरीर। बुरे जिसम
कुतप, पु. आफ़ताब, आतिश, मह्मान, बैल, भानजा, दोहता, (पु. न.) एक क़िसमका बाजा, कुशा, बनात, दिनके दूसरे पहिरकी आख़ीरी घड़ीसे तीसरे पहिरकी पहिली तक वक़्त।
कुतस्, व्य. प्रश्न, निन्हव; कहांसे।
कुतुक, न. कौतुक, खुशी। शौक़, या आरज़ू।
कुतु, स्त्री. चर्म्मनिर्म्मित स्नेहपात्र, (पु. न.) कुतुप, खास मकत, कुप्पा।
कुतुप, पु. चर्णमय स्नेहपात्र; कुप्पा।
कुतूहल, न. अपूर्व वस्तुदर्शने सातिशय चेष्टा (त्रि) प्रशस्त, अद्भुत। निहायत शौक।
कुतूहलिन्, त्रि. विनोदार्थी। शौक़ीन।
कुत्र, व्य. किस जगह, किस समय।
कुत्रचित्, व्य. कहीं।
कुत्रत्य, व्य. कहां का।
कुत्रापि, व्य. कहींभी। [हजो।
कुत्स, न. निन्दन (स्त्री) (त्सा) निन्दा। हजो करना,
कुत्सित, त्रि. निन्दित। हजो किया हुआ।
कुथ, पु. कुशा, दूब, (स्त्री) (था) कालीन। [नदी वि०
कुथ्य, पु. स्त्री. हाथीकी झूल, कुश घास, (कुशा)
कुद्दाल, पु. कुदाल; फौड़ा।
कुद्रव, पु. धान्यविशेष; कोदों अनाज।

कुभ्र, पु॰ पर्वत । पहाड़ । [तिल, धनियां ।
कुनट, पु॰ बुरानट (स्त्री) (टी) बुरी नटनी, मन-
कुन्त, पु॰ बाल, (स्त्री) (न्ति) युधिष्ठिर राजाकी माता, ब्राह्मणी, शक्की ।
कुन्तल, पु॰ बाल, पीनेका बर्तन, जौ, हाथ, हल, एक देशका नाम, त्रि॰ कुन्तल देशका वासी ।
कुन्द, पु॰ कुंदफूल, कुंद का पेड़, सुगंधि, खराद ।
कुन्दम, पु॰ विडाल । बिल्ला ।
कुन्दर, पु॰ तृणविशेष । एक प्रकार की घास ।
कुन्दिनी, स्त्री॰ पद्म समूह । बहुत से कमल ।
कुन्दरु, पु॰ देशविशेष ।
कुपति, पु॰ राजा; बुरा मालक ।
कुपथ, पु॰ ख़राब सड़क ।
कुपित, त्रि॰ क्रोधी । गज़बनाक ।
कुपिन्द, पु॰ तन्तुवाय; तांती ।
कुप्य, न॰ सोने चांदीको छोड़ और धातें ।
कुबे(वे)र, पु॰ यक्षराज । दौलतका देवता ।
कुबेराचल, पु॰ कैलाश ।
कुब्ज, पु॰ खण्डा, अपुठकंडा, (त्रि) कुबड़ा ।
कुब्र, न॰ जंगल, होमकी जा, बाला, डोरा, तागा, पनाह, छकड़ा ।
कुब्रह्म, पु॰ बुरा ब्राह्मण ।
कुमार, पु॰ कार्तिकेय, शुकदेव, सिन्धुनद, पचबरसका बालक, अर्हत्‌का उपासक (न) शुद्ध–स्वर्ण । स्त्री (री) कन्या, पार्वती ।
कुमार-जीव, पु॰ जीयेपोते का पेड़ ।
कुमार-भृत्या, स्त्री॰ बच्चोंका इलाज ।
कुमारसू, स्त्री॰ गङ्गा, दुर्गा ।
कुमारिका, स्त्री॰ १२ बरसकी क्वारी लड़की, मालतीका पौदा, मोटी इलायची, एक अन्तरीप, एक नदी ।
कुमुद्(द), न॰ सुपेद कमल, लाल कमल, चांदी (पु) वानरविशेष, काफ़ूर, नैऋत कोनका हाथी, कार्तिकमास ।
कुमुद-बांधव, पु॰ चांद, कापूर । [बहुतसे कमलफूल ।
कुमुद-वत्, त्रि॰ जिसमें कमल हों, (स्त्री) (ती)
कुमुदावास, पु॰ जहां बहुत कमल फूल हों ।
कुमेरी, पु॰ पृथीवी का दक्षिण प्रान्त ।
कुमोदक, पु॰ विष्णु ।

कुम्भ, पु॰ घट, हाथीका मस्तक, कुम्भकर्ण का पुत्र, ६४ सेर, ग्यारवीं राशि, गूगल, वेश्याका यार, दूसरेको विसाहनेवाली चेष्टा (स्त्री) (म्भी) कंचनी, घड़ी ।
कुम्भक, पु॰ प्राणायाम का एक अंग । अनामिका और अंगूठे से नासिकाओं को दबा कर प्राणों का रोकना ।
कुम्भकर्ण, पु॰ रावणका छोटा भाई ।
कुम्भकार, पु॰ जातिविशेष; कुम्हार ।
कुम्भयोनि, पु॰ } अगस्त्य मुनि, वशिष्ट मुनि,
कुम्भ-सम्भव, } द्रोणाचार्य्य, द्रोणपुष्पी वृक्ष ।
कुम्भदासी, स्त्री॰ छिनाल औरत । [कूष्माण्डी ।
कुम्भाण्ड, पु॰ पेठा, बाणासुरका मंत्री, (स्त्री) (ण्डि)
कुम्भिन्, पु॰ हाथी, घड़ियाल, गूगल । [चौर ।
कुम्भिल, पु॰ चौर, शालमत्स्य, श्याल, श्लोकार्थ-
कुम्भीनस, पु॰ क्रूर सर्प्प, (स्त्री) (सी) लवणासुरकी मा ।
कुम्भी(र)ल, पु॰ कुम्भीर; घड़ियाल ।
कुम्भीबीज, न॰ जयपाल; जमालगोटा ।
कुरङ्कर, पु॰ सारस पक्षी । लमढींग ।
कुरङ्ग(क), पु॰ हरिण । आहू ।
कुरङ्ग-नयना, स्त्री॰ मृगनयना स्त्री । खूबसूरत औरत जिस्की आंखें हरणकी आंखों के मानिंद हों ।
कुरण्ट, पु॰ चर्म्मकार; चमार, मोची । [बीमारी ।
कुरण्ड, पु॰ मुष्कवृद्धि–रोग, फोतोंके बढ़जानेकी
कुरर, पु॰ कूंज, (स) (री) कूंजकी मदीन; भेड़ी ।
कुर(रु)बक, पु॰ गुल्खैरा, खास एक बूटी, ख़राब आवाज़, (त्रि॰) जिस्की आवाज़ ख़राब हो ।
कुराह, पु॰ जिस्की स्याह टांगें हों ऐसा कुल्ला घोड़ा ।
कुरीर, न॰ मैथुन । सोहबत ।
कुरु, पु॰ चंद्रवंशी अग्नीध्र राजाका बेटा, हस्तिनापुर-से लेकर कुरुक्षेत्रके दक्खनमें जो देश है, कंड़िआरी बूटी, भात, या उबले हुए चावल ।
कुरु-क्षेत्र, न॰ कुरु पांडवोंकी युद्ध भूमी ।
कुरुण्टी, स्त्री॰ लकड़ीकी पुतली, ब्राह्मणकी जोरू ।
कुरुम्बिका, स्त्री॰ द्रोणपुष्पीलता । एक क़िस्मकी बेल ।
कुरुभाज, पु॰ दुर्य्योधन ।
कुरुल, पु॰ भालस्थित चूर्णकुन्तल । ज़ुल्फ़ ।

कुरु-वक, पु. रक्तझिण्डी, रक्ताम्लान, पीतझिण्डी।
कुरुविन्द, पु. मुथा, कुलथ, आईनह, सिंगरफ़, (न) मानक।
कुरु-विल्व, पु. पद्मरागमणि। मानक।
कुरु-विस्त, पु. पल, चार तोले सोना।
कुरु-वृद्ध, पु. भीष्मपितामह। कुरुओंका बड़ा।
कुर्कुर, पु. कुक्कुर; कुत्ता।
कुर्द्दन, न. क्रीड़ा। खेलना, कूदना।
कुर्पर, पु. जानु, घुटना, कोहनी। [हुआ।
कुर्वत्(वाण), त्रि. कर्मकर्ता, फलोन्मुख। करता
कुल, न. खान्दान, या नसल, आबादमुल्क।
कुलक, न. एक क़िसमका पौदा या उसका फल, चारसे ज्यादह ऐसे श्लोक जिन्का एक क्रिया-में अन्वय होता है, (पु) वरमी, मशहूर, कौमका, पु. कारीगर। [शक्तिविशेष।
कुलकुण्डि(लि)नी, स्त्री. मूलाधारस्थ सर्पाकृत
कुलगिरि, पु. हिन्दुस्तानके ख़ास २ पहाड़; महेन्द्र मलय वग़ैरह।
कुलङ्गी, स्त्री. कर्कटशृङ्गी। काकड़ासिंही।
कुलज, त्रि. सत्कुलोत्पन्न; कुलीन। [औरत।
कुलट, पु. दत्तक आदि पुत्र, (स्त्री) (टा) छिनाल
कुलतिथि, स्त्री. चतुर्थी, अष्टमी, द्वादशी, चतुर्दशी ये चार तिथियें।
कुल-नक्षत्र, न. भरणी, रोहिणी, पुष्य, मघा, उत्तराफाल्गुणी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, श्रवण, उत्तरभाद्रपद, ये ग्यारह नक्षत्र।
कुलनायिका, स्त्री. पञ्चमकार यज्ञमें शाक्त लोक जिस औरतकी पूजा करते हैं।
कुलनाश, पु. उष्ट्र (त्रि.) पतित। ऊंठ, गिराहुआ।
कुल-पति, पु. खान्दानका मालिक, जो मुनि दस हज़ार शिष्यको भोजन देवे और पढ़ावे,। सिपह सालार।
कुलपर्वत, पु. १ महेन्द्र २ मलय ३ सह्य ४ शुक्तिमान् ५ ऋक्ष ६ विंध्य ७ पारियात्र ८ हिमालय।
कुलभृत्या, स्त्री. गर्भिणी पर्य्युपासना। हामिला औरतकी खिदमत, दाई।
कुललक्षण, न. आचार, विनय, विद्या, प्रतिष्ठा, तीर्थदर्शन, निष्ठा, क्षान्ति, तप, दान।
कुलाकुल, त्रि. वर्ण-सङ्कर। दोग़ला।
कुलाकुलनक्षत्र, न आर्द्रा, मूल, अभिजित् और शतभिषा ये चार नक्षत्र।
कुलाङ्गार, पु. कुलमें नीच। कुल–घाती। [का फ़र्ज़।
कुला-चार, पु. कुलोचित धर्म्म। अपने ख़ान्दान-
कुलाचार्य्य, पु. कुलपुरोहित, पाधा।
कुलाट, पु. क्षुद्रमत्स्यविशेष; छोटीसी मछली।
कुलधारक, पु. पुत्र; बेटा।
कुलाय, पु. घोंसला, स्थानमात्र (न) देह।
कुलायस्थ, पु. पक्षी। परिंदह।
कुलायिका, स्त्री. चिड़िया खाना। [कुह्मार, कुह्मारी।
कुलाल, पु. कुम्भकार, (स्त्री)(ली) (न) नीलोत्पल,
कुलिङ्ग, पु. चटक, भृङ्ग, (स्त्री) (ङ्गी) कर्कटशृङ्गी। चिड़िया, भौंरा, काकड़ासिंही।
कुलिन्, पु. पर्व्वत; त्रि. ख़ान्दानी आदमी।
कुलि(ली)र, पु. कर्क्कट, बारह राशियोंमें ४ थी राशि। कछुआ, केकड़ा।
कुलिश, पु. न. वज्र, मत्स्यविशेष, अग्रगण्य।
कुलिशांकुशा, स्त्री. बौद्धोंकी देवी।
कुलिशासन, पु. शाक्य मुनि, बौद्धोंका सन्त।
कुलीन, त्रि. उत्तम कुलोंमेंउत्पन्न, (पु) श्रेष्ठ घोड़ा, शक्तिका उपासक।
कुलीनस, न. जल; पानी।
कुलीरशृङ्गी, स्त्री. कर्कटशृङ्गी। काकड़ासिंगी बूटी।
कुलुक, न. जिव्हामल। ज़बानपरकी मैल।
कुलेश्वर, पु. शिव, कुलपति।
कुलोद्वह, पु. कुलप्रधान। ख़ान्दानका सर्दार।
कुल्फ, पु. न. रोग, (पु) गुल्फ। बीमारी; टख़नह।
कुल्माष, पु. सूर्य्यके पारिपार्श्विक, अर्द्धखिन्न गोधूम चनकादि, कांजिक, उवटन, कुलथ, काश्मीरजात तुलसी, राजमाष, पाचित माषादि।
कुल्य, न. हड्डी, ३२ सेर, छाज, गोश्त, (त्रि) ख़ान्दान (पु) मानधारी, स्त्री.(ल्या) सती स्त्री, कूल।
कुवल, पु. बेरका दरख़्त, मोती, बेर, अनार, कमल।
कुवलयापीड, पु. कंसका दैत्य, हाथीके रूपका।
कुवलयाश्व, पु. धुंदुमार राजा।
कुवादिक, त्रि. झूठा। फ़रेबी,।
कुविन्द, पु. जातिवि०, राजाविशेष। तांती।
कुवेणी, स्त्री. मच्छीका कांटा, ख़राब गुतवाली।

कुबेर, पु. धनाधिप; धनका देवता।
कुबेराचल,
कुबेराद्रि, } पु. कैलासपर्वत।
कुश, पु. न. दूब, (न) पानी (पु) श्रीरामजीका बेटा, खारा टापू, (त्रि) पापी, मस्त, पतला (स्त्री) (शा) दूबघास।
कुशण्डिका, स्त्री. विवाहकालका धर्मकार्य विशेष।
कुशध्वज, पु. जनकका छोटा भाई।
कुशल, न. कल्याण, पुण्य (त्रि) शिक्षित, सुखी।
कुशलिन्, त्रि. सुखी, भाग्यवान्।
कुशाग्रीय, त्रि. विदग्ध। होशियार।
कुशारणि, पु. दुर्वासा मुनि, बोधी ऋषि।
कुशिक, पु. मुनिविशेष, गाधीका पिता।
कुशीद, न. वृद्धि, (स्त्री) (दी) कुक्षि, स. न. देशवि॰ (त्रि.) तनकश्वेत।
कुशीलव, पु. कवि, मंगला, भरतमुनि, कत्थकोंकी कौम, भाट पु॰ द्वि॰ रामजी के दोनो पुत्र।
कुशू(सू)ल, पु. तुषानल, धान्यागार। तुसकी आग, अनाजका कोठा, या खाता या भड़ोला।
कुशे-शय, न. पद्म, (पु) सारसपक्षी, कणेरका वृक्ष। (त्रि.) कुशापर सोनेवाला
कुश(षा)कु, पु. कपि, अग्नि, सूर्य्य, (त्रि) क्रूर।
कुशीनक, पु. खासपक्षी, एक नाम मुनिका।
कुषीद, न. कुसीद, (त्रि) जड़, निर्द्दय, निरपेक्ष।
कुष्ठ, न. कोहड़, (ष्ठा) चोंच।
कुष्ठिन्, त्रि. कुष्टी। कोहड़ी।
कुष्माण्ड, पु. फलविशेष, शिवगणविशेष, (स्त्री) (ण्डी) दुर्गा। पेठाफल, एक शिवजीके गणका नाम, देवी।
कुसित, पु. जनपद। आबाद मुल्क।
कुसितायी, (दायी) स्त्री. सूदखानेवाली।
कुसीद, *न. अर्थप्रयोग, व्याज, कुसीदिक त्रि, सूदखोरा।*
कुसुम, न. फल, पुष्प, स्त्रीरज, नेत्ररोगविशेष।
कुसुमाञ्जलि, पु. फूलोंका मुक, उदयनाचार्यकृत ग्रंथविशेष।
कुसुमाल, पु. तस्कर; चोर। दुज़द।
कुसुमायुध, पु. कंदर्प; काम।
कुसुमासव, न. मधु। फूलों का मद।
कुसुमित, त्रि. फूला हुआ।
कुसुमेषु, पु. कामदेव, (न) कामधनुः।
कुसुम्भ, न. स्वर्ण, पुष्पविशेष, (पु) कमण्डलु।
कुसूल, पु. कुशूलके अर्थ देखो।
कुसृति, स्त्री. शाठ्य, इन्द्रजाल। शरारत, जादू।
कुहक, पु. माया, इन्द्रजाल, (त्रि) धूर्त्त। छल, जादूगरी, शरीर।
कुहन, त्रि. ईर्ष्यालु (न) मट्टीका वर्तन, काचका वर्तन, पु. चोर, चूहा, सांप। हासिद स्त्री. (ना) (नि) दम्भचर्य्या। मकर।
कुहर, न. गव्हर, छिद्र, गल ध्वनि, (पु) नागविशेष। गड़ा, सुराख, गला, गलेकी आवाज़ एक किसमका सांप। [अवाज़।
कुहरित, त्रि. ध्वनित, पिकालाप। कोइलकी
कुहली, स्त्री. पूगपुष्पिका; पानका बीड़ा।
कुहुहू, स्त्री. नष्टेन्दुकला अमावस्या, कोकिल शब्द। कोइलकी आवाज़।
कुहूक,
कुहूकण्ठ, } पु. कोकिल; कोइल।
कूकुद, पु. सालंकार कन्याका दाता।
कूर्चिका,
कूर्चि, } स्त्री. नक्काशकी कलम।
कूजित, न. रुत, पक्षिध्वनि। परिंदों का बोलना।
कूट, पु. आगस्त्य मुनि, (न) गृह, (पु. न) ढेर, लोहमुद्गर, दंभ, पर्वतशृङ्ग, तुच्छ, हलका अवयव, यन्त्र, अनृत, कैतव, कदली, (त्रि) अधम।
कूटकृत्, त्रि. जाल बनानेवाला, पु. कायथ।
कूटतापस, त्रि. झूठातप करनेवाला।
कूटपाल(क), पु. हाथीवान्।
कूटता, स्त्री. छल। दग़ा।
कूट(वन्ध)यन्त्र, पु. न. बंधन। फांसी।
कूट-साक्षिन्, पु. मिथ्यासाक्षी। झूठा गवाह।
कूटस्थ, त्रि. सर्वदा एक प्रकारसे स्थित, स्थिर, (न) *व्याघ्रनखाख्य गन्धद्रव्य, आत्मा। [लनेका घर।*
कूटा-गार, पु. स्त्री. क्रीडागृह; औरतोंके साथ खे-
कूणि, त्रि. वक्रहस्त, नखरोगी।
कूणित, त्रि. संकोचित। संकोचा हुआ।
कूदर, पु. जातिविशेष, ब्राह्मणीके गर्भमें ऋषिके वीर्य्यसे ऋतुके प्रथम अवसरमें उत्पन्न सन्तान,
कूप, पु. कूआ, गड़ा (स्त्री) (पी) (पिका) छोटा कूआ पानी के मध्यमें का पत्थर का खंबा।

कूप-मण्डूक, पु. कूपस्थित भेक, जो मनुष्य कभी घरसे बाहर ना निकलाहो, कुए का मेंडक।
कूपार, पु. समुद्र; समुंदर।
कूपाङ्क, पु. रोमाञ्च। रोंगटे फूलने।
कूर, पु. अन्न, रिंधे हुए चावल।
कूर्च्च, पु. न. भवोंका मध्य, मोरपंखकी चौरी, कड़ी दाहडी, दगा, फ़रेब, मकर, (पु) सर (न) व्रत; चेतकी पुर्नो, खेल, कूद।
कूर्चिका, स्त्री. रुई, सूई, खुर्चन, कूची।
कूर्प्प, न. भ्रू-मध्य, भवों के बीचकी जगह।
कूर्द्दन, न. क्रीड़ा, (स्त्री) (नी) चैत्र पूर्णिमा।
कूर्प्पा-सक, पु. न. कञ्चुकी, अंगिया। [स्यवायुवि०।
कूर्म्म, पु. स्त्री. जलजन्तु; कछुआ, अवतारवि०, देह-
कूल, न. किनारा, फ़ौजकी पीठ, तालाव, ढेर।
कूल-ङ्कप, पु. समुद्र, स्रोत, (स्त्री) (पा) नदी। [बिडा।
कूवर, पु. न. युगन्धर (त्रि) रम्य; जोतरा (पु) (स्त्री) कु-
कूलमुद्रुज, त्रि. किनारे उखाड़नेवाला। [गिरगिट।
कृक-वाकु, पु. कुक्कुट, मयूर, सरट। मुर्ग़, मोर,
कृकलास(श), पु. सरट; गिरगिट।
कृकाटिकी, स्त्री. ग्रीवा; गर्दन।
कृच्छ्र, न. पीड़ा, तपस्या, यन्त्रणा, पाप, व्यामोह, (त्रि) पीड़ादेनेवाला, पापी, मूत्र बंद का रोग।
कृच्छ्रकर्मन्, न. तप, (त्रि) तपस्वी। मुश्कल काम करनेवाला। [हुई चीज़।
कृच्छ्र-लब्ध, त्रि. कष्टप्राप्त। मुश्किलसे मिली
कृच्छ्रातिकृच्छ्र, न. १२ दिनका व्रत।
कृच्छ्रकाल, पु. कठिन समय।
कृच्छ्रसान्तपन, न. गोवर, गोमूत्र, दूध, दही घी और कुशा का जलपीकर एकदिन उपवासव्रत।
कृच्छ्रेण, व्य. सकष्ट। बडी मुश्कलसे।
कृण्ड, पु. चित्रकर जाति, चितेरा, रंगसाज़।
कृत्, पु. धातु आगे लगा हुआ प्रत्यय।
कृत, न. पहिला जुग, कार्य, हिंसा (त्रि.) सत्ययुग, काम, पूरा, रचाहु०, पूरा कियाहु०, सीखाहु०, अभ्यास किया हुआ, मतलब।
कृत-कर्म्मन्, त्रि. कार्य्यक्षम, प्रवीण। होशयार।
कृत-कार्य्य, त्रि. समाप्त-कार्य्य। कामयाब।
कृत-कृत्य, त्रि. कृतार्थ। कामयाब।
कृत-कोप, त्रि. क्रुद्ध। गज़बनाक।
कृतघ्न, त्रि. कृतहन्ता। नाशुकेरा। [हुआ है
कृतचूड, पु. जिस का मुंडन या चूड़ा संस्कार
कृतज्ञ, त्रि. शुकर गुज़ार (पु) हरि। किये हुए उपकार के जानने वाला। [दारी।
कृतज्ञता, स्त्री. उपकारज्ञता। शुकरगुज़ारी, वफ़ा-
कृत-तीर्थ, पु. पुण्यक्षेत्र प्रदर्शक, कृतोपाय मन्त्री। जो तीर्थयात्रा कर चुका है, जिस ने उपाय सोचा है, सलाहकार।
कृतदार, पु. ऊढ; ब्याहा हुआ।
कृतधी, त्रि. धीमान। दाना, कायम मिज़ाज।
कृतनिर्णेजन, पु. पश्चात्तापी, पछतानेवाला।
कृत-लक्षण, त्रि. शौर्य्यादिगुणोंसे प्रसिद्ध।
कृतवर्मन्, पु. यादवविशेष।
कृतविद्य, त्रि. शिक्षित, सीखा हुआ।
कृतवीर्य, पु. ख़ास राजाका नाम है।
कृत-वेपथु, त्रि. कंपित; कांपता हुआ।
कृत-वेश, त्रि. सज्जित। लिवाससे सजा हुआ।
कृत-श्रम, त्रि. परिश्रमी। मेहनती।
कृतसापत्निका, स्त्री. अधिविन्ना।
कृतस्वर, पु. एक सोने की खान।
कृत-संज्ञ, त्रि. चिन्हित। निशान किया हुआ।
कृतसंधान, न. तव ज्जो (त्रि) तवज्जो वाला।
कृत-संसर्ग, त्रि. मिला हुआ; मिलापी।
कृतसम्बन्ध, त्रि. सम्पर्कसूचक, एकत्रकारी। मिला हुआ। रिश्ता किये हुए।
कृत-हस्त, त्रि. शरमोक्षणे सुशिक्षितयोधादि। हथचलाक, तीर चलानेमें होशयार।
कृतागस्, त्रि. कृतापराध। कसूरवार।
कृताङ्क, त्रि. अङ्कित। निशान किया हुआ।
कृताञ्जलि, पु. जुड़े हुए हाथ, ख़ास दवाईका नाम (त्रि)। जिसने हाथ जोड़े हुए है।
कृतात्मन्, त्रि. आत्मवश; सीखाहुआ।
कृतान्त, पु. सुगन्धिद्रव्य, मलिकुल मौत, फ़ैसला, क़िस्मत, शनीचर, खानेकी चीज़, खुशबू (त्रि०) जिसने सिद्धान्त जानाहुआ है।
कृतार्थ, त्रि. कृतप्रयोजन। कामयाब।
कृतार्थमन्य, त्रि. जो अपनेको कृतार्थ माने।
कृता-लय, पु. भेक, (त्रि) निवासी। मेंडक, रहने-वाला।

कृता-वस्थ, त्रि. कृताव्हान, साक्षात्कार, । बुलाया हुआ, हाज़िर किया हुआ, ठहराया हुआ ।
कृताशन, न. भक्षित । खाया हुआ त्रि. खाचुका ।
कृतास्त्र, त्रि. शस्त्रसीखा हुआ। [जिसने कर लिया है।
कृता-न्हिक, त्रि. कृतनित्यकृत्य । रोज़मर्रांका काम
कृति, स्त्री. काम, रचना, बराबरके दो अददोंकी ज़रब, ईज़ा, एक किसम का छंद २० अक्षर के पाद वाला। [कामयाब।
कृतिन्, त्रि. दाना, नेक, नेकबख़्त, ताक़तमंद,
कृते, व्य. होतो, लिये ।
कृत्त, त्रि. तोड़ा हुआ, काटा हुआ, चाहा हुआ । स्त्री. (त्ति) काले हरणका चमड़ा, छिलका, भोजपत्ता, ३ रा, नक्षत्र ।
कृत्तिक, त्रि. काटा हुआ, कतल किया हुआ, अश्विन्यादि सप्तविंशति नक्षत्रोंमें से तृतीय नक्षत्र । तोड़ा हुआ । [जिसके चमड़ेके कपड़े हैं ।
कृत्तिवास(स), पु. महादेव, (त्रि)चर्म्मवासधारी ।
कृत्य, न. कार्य्य, त्रि. करनेके योग्य (स्त्री) (त्या) देवताविº, क्रिया, जादू, कामदार ।
कृत्यक, पु. हिंसक, क्षतिकारक । ईज़ारसां ।
कृत्य-वर्त्मन्, न. सत्पथ । राहे रास्त ।
कृत्य-विद्, पु. ज्ञानी । दाना, या अक़्लमंद ।
कृत्रिम, त्रि. बनावटी (पु) मुतबन्ना, (न) एक किसमका निमक । [या सारा ।
कृत्स, न. जल, (त्रि) समुदाय, । पानी, सबूत
कृत्स्न, न. जल, सर्व, कुक्षि, (त्रि) अशेष । कुल ।
कृत्स्नशस्, व्य. सब तरहसे जो होवे ।
कृदन्त, त्रि. कृत्प्रत्ययान्त शब्द । [कतरनी ।
कृन्तन, न. छेदन; काटना (स्त्री) (नी) (निका) कैंची,
कृप, पु. कृपाचार्य्य, द्रोणाचार्य्यका साला, स्त्री. (पी) द्रोणकी स्त्री । [मुफ़्लिस, कमज़ोर ।
कृपण, पु. कृमि, कीड़ा, (त्रि) कञ्जूस, कमीनह,
कृपया, व्य. दयापूर्वक । मेहरबानीसे ।
कृपा, स्त्री. करुणा, दया ।
कृपाण,(क)(स्त्री)णी(णिका) पु. स्त्री. खड्ग, खण्डा । शमशेर, खंजर, कतरनी, छुरी ।
कृपालु, त्रि. दयालु । मेहरबान ।
कृपीट, न. पेट, पानी, जंगल, लकड़ी ।
कृपीट-पाल, पु. समुंदर, हवा, पतवार ।
कृपीट-योनि, पु. अग्नि, आग । आतिश ।
कृत्त, त्रि. रचा हुआ (स्त्री) (त्रि) रचना ।
कृमि, पु. कीड़ा ।
कृमि-कण्टक, न. उदुम्बर । गूलर ।
कृमिघ्न, पु. इसी नामसे मशहूर दवाई, प्याज, भिलावा, (त्रि) कीड़ोंके तबाह करनेवाला, (स्त्री) (घ्ना) हलदी । [लाख ।
कृमिज, न. अगुरु (त्रि) कीड़ोंसे उत्पन्न (स्त्री)(जा)
कृमिफल, पु. गूलरका फल ।
कृमिशैल, पु. वल्मी । बांबी ।
कृवि, पु. वापयन्त्र । बुननेकी कल ।
कृश, त्रि. दुर्बल; कमज़ोर ।
कृशता, स्त्री. क्षीणता; दुबलापन । [खिचड़ी ।
कृशर, पु. (स्त्री) (रा) द्विदलमिश्रितान्न, तिलचावली,
कृशला, स्त्री. बाल । ज़ुल्फ़ ।
कृशाक, पु. गरमी तकलीफ़ । [नीन, खासबेल ।
कृशाङ्ग, त्रि. क्षीणदेह; दुबला (स्त्री) (ङ्गी) नाज़-
कृशानु, पु. अग्नि, चित्रकवृक्ष । आग, चित्रा कापेड़ ।
कृशानुरेतस्, पु. शिव ।
कृषक, त्रि. खेंचनेवाला, (पु) फल, बैल, किसान ।
कृषि, स्त्री. वैश्यवृत्ति । ज़रात, कास्तकारी ।
कृषि(षी)बल, पु. जाट । किसान । [ज़मीन, जुती हुई ।
कृष्ट, त्रि. सील, वाहनेके लायक, या बाही हुई
कृष्ट-पच्य, त्रि. व्रीहिधान्य, धान आदि ।
कृष्टल, न. रत्ती, माप, तोल, कसौटी । [खेंचना ।
कृष्टि, पु. पण्डित, (स्त्री) कर्षण । दाना, हलचलाना,
कृष्ण, पु. भगवदवतारविशेष, व्यास, अर्जुन, कोकिल, काक, श्याम, (त्रि) तद्युक्त, (न) मरिच, लोह, नीलाञ्जन, स्त्री. (ष्णा) द्रौपदी, नीली ।
कृष्ण-कर्म्मन्, त्रि. कसूरवार, पापी ।
कृष्णागति, पु. अग्नि । आग ।
कृष्णता, स्त्री. कृष्णत्व । स्याही ।
कृष्णतार, पु. हरिण, स्त्री. (रा) आंखकी पुतली ।
कृष्णद्वैपायन, पु. वेदव्यास ।
कृष्णपक्ष, पु. जिसमें चंद्रकला क्षीण होती है ।
कृष्णपिंगला, स्त्री. दुर्गा, चंडी ।
कृष्णपिण्डीर, पु. वराह । सूकर ।
कृष्णमल्लिका, स्त्री. काली तुलसी ।
कृष्णमृत्तिका, स्त्री. काली मट्टी ।

कृष्णल, पु. गुञ्जा (स्त्री) (ला)। रत्ती, रत्तियोंका पौदा।
कृष्णलोह, न. अयस्कान्त। चुम्बक पत्थर।
कृष्णवर्त्मन्, पु. आग, (त्रि) दुष्ट।
कृष्णशा(सा)र, पु. मृगवि०, शीशमका पेड़।
कृष्णशिग, पु. शोभाञ्जन वृक्ष, सुहांजनेका पेड़।
कृष्णश्रित, पु. विष्णुभक्त।
कृष्णशृङ्ग, पु. महिष; भैंसा।
कृष्णसख, पु. अर्जुन। कृष्णजी का मित्र।
कृष्णसार, पु. हरिणभेद, शिंशपावृक्ष, खदिरवृक्ष, काला हिरण (स्त्री) (रा) शीशम।
कृष्णाजिन, न. काले हिरणका चर्म।
कृष्णाभ्र, त्रि. मेघजाल। बादलोंका सिलसिलह।
कृष्णार्चिस्, पु. अग्नि; आग।
कृष्णिका, स्त्री. कृष्णाल; राई।
कृष्णिमन्, पु. कृष्णवर्ण। स्याह रंग।
कृष्य, त्रि. कर्षणयोग्य। हल चलाने लाइक।
कृसर, पु. कृशर; तिलचावली (स्त्री) (रा) खिचड़ी।
केकय, पु. सूर्यवंशीय राजाविशेष (स्त्री) (यी) दशरथराजपत्नी। भरत की माता।
केकल, त्रि. नर्त्तक; नाचनेवाला।
केका, स्त्री. मयूरध्वनि; मोरकी आवाज़।
केकिन्, पु. मयूर; मोर।
केचन, व्य. कईएक।
केत, पु. आगार, घर; नया मंदिर। [केवड़ा।
केतक, पु. स्त्री (की) केतकीवृक्ष (न) केतकीफूल;
केतन, न. ध्वज, कार्य्य, निमन्त्रण, चिन्ह, गृह, स्थान; झंडा या निशान, काम, दावत, घर, जगह, निमंत्रण।
केतु, पु. नवग्रहोंमे से एक ग्रह, निशान, झंडा, बीमारी, नशान, चमक, बाउना, दुमदार सयारह।
केतुमाल, पु. जम्बुद्वीपका एक खंड।
केतु-वसन, पु. पताका, झंडा, निशान।
केदार, पु. क्षेत्र, पर्वतविशेष, शिव, थामला, कियारा, (स्त्री) (रिका) खेतका, कियारा।
केन, पु. उपनिषदविशेष।
केवती, स्त्री. रति। कुंभीनरक।
केनार, पु. कपोल, सन्धि, शीर्ष। कबूतर, सिर।
केन्द्र, न. मध्य, लग्न, लग्नका ४ था, ७ वा, और १० वां, स्थान, (पु) ब्रह्मा, इन्द्र, मेरु। मरकज़।
केयूर, न. अलङ्कारविशेष, (पु) रतिबन्ध। बाजूबंद।
केरल, पु. देशभेद, वेद यागानधिकारी, अन्नधारी, म्लेच्छविशेष, (स्त्री) ज्योतिषग्रंथ (त्रि) तद्देशवासी।
केलास, पु. स्फटिक; कांच, बिल्लौर।
केलि, पु. परिहास, (स्त्री) (की) पृथिवी।
केलिकला, स्त्री. कामदेवकी स्त्री, सरस्वतीजीकी बांसरी, ठट्ठेबाज़ी।
केलिकीर्ण, पु. उष्ट्र, ऊंट। शुतर।
केलिकुञ्चिका, स्त्री. साली। [कुहन।
केवल, त्रि. एकला, निःसहाय (न) निश्चय (पु)
केवलिन्, त्रि. एकाकी, ग्रन्थविशेष, (पु) जैनविशेष अकेला।
केश, पु. मजाजातोपधातुविशेष, चिकुर, बाल, वरुण, दैत्यविशेष, विष्णु, स्त्री. (शी) चोटी।
केश-कलाप, पु. केशपाश, बालोंका जूड़ा।
केशग्रह, पु. केशाकर्षण; बाल खेंचना।
केश(स)रिन्, पु. शेर, घोड़ा, खासबंदर, शब्दसे परे आवेतो श्रेष्ठ।
केश(स)र, पु. न. तुरी, घोड़ा वा शेरकी सटा।
केशव, पु. विष्णु, पुन्नागवृक्ष, (त्रि) उत्तम बालों वाला।
केश-बन्ध, न. कवरी, गुत्त।
केशवा-युध, पु. आम्रवृक्ष (न) वैष्णवास्त्र। आमका दरख़्त, विष्णुजीका हथियार।
केशरिन्, पु. सिंह, घोटक, (त्रि) केशी, बीजपूर वृक्ष, शेर, घोड़ा, बालदार, नारंगी।
केशाकेशि, न. परस्पर केशग्रहणरूप कलह। चोटी खोआ, चोटी उखाड़ना। [बालका सिरा।
केशान्त, पु. केशच्छेदनसंस्कार, बाल बनवाना,
केशावकर्षण, न. बालखेंचना।
केशि-हन्, पु. श्रीकृष्ण।
केशिन्, त्रि. प्रशस्त केशयुक्त, (पु) विष्णु, दैत्यभेद, सिंह, (स्त्री) (नी) चोलीवृक्ष।
केशिसूदन, } पु. कृष्णचन्द्रावतार।
केशिमथन, }
कैकय, पु. देशवि०, काश्मीर नृपवि०, (स्त्री) (यी) भरतमाता, दशरथपत्नी।
कैटभ, पुः दैत्यविशेष। मधुका छोटा भाई।

कैटभ-जित्, कैटभारि, कैटभद्विष्, } पु. विष्णु, परमात्मा, नारायण।
कैतक, न. केतकीका फूल। केवड़ा फूल।
कैतव, न. कपट, छल, जूआ, धोंगा।
कैमुतिक, न. न्यायवि०। क्या।
कैदारिक, न. क्षेत्रसमूह,बहुतसे खेत,(त्रि) खेतका।
कैरव, न. कुमुद, (वा) सुपेद कमलका फूल (पु) दुश्मन, शरीर, (स्त्री) (वा) चांदनी।
कैरविन्, पु. चांदनी, मेथी, चांद (स्त्री) (नी) कमलोंका समूह। [संदल, (पु) ज़ोरावर आदमी।
कैरात, न. बलवान् पुरुष, चिरायता, एक क़िसमका
कैराल, न. विडङ्ग। सुहागा। [रहते हैं।
कैलास, पु. पर्वत विशेष; जहां शिव और कुवेर
कैवर्त्त(क), पु. दास, धीवर, झींवर। माहीगीर।
कैवल्य, न. मुक्ति, उपनिषद्विशेष, (त्रि) एक।
कैशिक, केशसमूह, (पु) शृङ्गाररसविशेष (स्त्री) (की) नाटकवृत्तिविशेष। [की उमर।
कैशोर, न. किशोरावस्था। दससे पंद्रह वर्ष तक-
कैश्य, त्रि. केशसमूह। बालोंका जूड़ा।
कोक, पु. चकवा, भेड़िया, बाघ, छिपकली, खजूर का पेड़, मेंडक, पहिया, बैल, छिपकली।
कोक-नद, पु. रक्तपद्म; लाल कमल।
कोकनदच्छवि, त्रि. रक्त वर्ण। सुरख़ रंगवाला।
कोकबन्धु, पु. सूर्य। आफ़ताब।
कोकिल, पु. स्वनाम ख्यात पक्षी; कोइल।
कोकण, न. शस्त्रभेद, (पु) देशविशेष। कोकान-का मुल्क, ख़ास एक हथियार।
कोच, पु. नीचजाति विशेष। कर्सनके पेटमें झीवरकी बिंदसे पैदा हुई २ औलाद।
कोजागर, पु. आश्विनी पूर्णिमा। असूंसुदी-पूनो।
कोट, पु. किलअ, झोंपड़ी, कांटीलता।
कोटक, पु. गृहकारक। कुझारीके पेटमें राजकी बिंदसे पैदा हुआ, २; मिस्तरी।
कोटर, पु. न. वृक्षगड्ढर, (स्त्री) (री) दुर्गा;।
कोटि(टी), स्त्री. हथियारकी धार, कमानका गोशा, नोक, १००००००० किरोड़, वाअदा, वाज़ी।
कोटिज्या, स्त्री. मुसल्लसज़ावियाक़ायमेंका एक ज़िलह।
कोटिर, पु. इन्द्र, नेवला, इन्द्रगोपकीड़ा, बीचवहूटी
कोटिश, पु. लोष्ट्र, भङ्गसाधन, मुद्गर। ईंट पत्थर तोड़नेका मूसल।
कोटिशस्, व्य. कोटि २; करोड़हा।
कोटीर, पु. जटा, किरीट। जूड़ा, ताज।
कोट्ट, न. दुर्ग (पु) दुर्गपुर। क़िलअ, कोट राज-धानी विशेष।
कोट्टरी, स्त्री. दुर्गपुर, सती स्त्री, वाणासुरकी माता।
कोण, पु. लगुड़, मङ्गलग्रह, शनि, वीण वगैरहका तूंवां, हथियारकी धार, घरका एक गोशह, लकड़ी, जहां दो ख़त मिलें।
कोणकूण, पु. ऊकुण। खटमल।
कोणाघात, पु. एक वारहि हज़ारों नोवतों और हज़ारो ढोलोंका वजना। [दईजदह।
कोथ, पु. आंखकी बीमारी, बलोना, बलोया हुआ,
कोदण्ड, न. धनुः (पु) जनपदविशेष। कमान, ख़ास एक मुल्क, आब्रू।
कोद्रव, न. धान्यविशेष, कोदों धांन
कोप, पु. क्रोध। ग़ज़ब।
कोपतस्, व्य. क्रोधात्। गुस्सेसे।
कोपन, त्रि. क्रोधी (स्त्री) (ना) गुस्सेवाली स्त्री।
कोमल, त्रि. नरम, दिलचस्प, (न) पानी, ख़ास एक पौदा।
कोमलता, स्त्री. मृदुता, सरलता, नरमी।
कोयष्टिक, पु. टिट्टिभपक्षी। [मिलाप।
कोरक, पु. न. कारक, संयोग, गुंचह शगूफ़ह,
कोरङ्गी, स्त्री. सूक्ष्मैला, छोटी इलायची। [हुआ।
कोरित, त्रि. मुकुलित, चूर्णित। मीटा हुआ, पीसा-
कोल, न. बेर, तोलाभर, सूअर, बग़लगीरी, घर-नई, गोद, कलिङ्गदेश, ख़ास एक हथियार, म्लेछक़ौम।
कोलम्बक, पु. तन्त्रीचिन्ह; वीणका शब्द।
कोल-मूल, पु. पिप्पलीमूल। मघ।
कोलाञ्च, पु. देशविशेष, कलिङ्गका मुल्क।
कोलाविध्वंसिन्, पु. म्लेच्छ जातिविशेष।
कोला-हल, पु. कलकलशब्द। ग़ोग़ा, शोर।
कोलि (ली), पु. स्त्री. औषधिविशेष।
कोल्या, स्त्री. पिप्पली, मघ, पीपल।
कोविद, पु. पण्डित, चतुर।
कोविदार, पु. कांचनवृक्ष। कचनार।

कोश(प), पु. अण्ड, हिरण्य, अग्न्यादिद्वारा परीक्षा। पर्दा तलवार, म्यान, ख़ज़ानह, अभिधान, पिटारी, कमल, धनराशि, योनि (न) कोशकाव्य, वेजा (शी) जूती। [कर्ता।

कोश-कार, पु. इक्षु, पौंडा या गन्ना (त्रि) कोश

कोशवासिन्, पु. त्रि. कोशस्थ, (पु) शंबुक, तन्तु, कीट, स्फटिक। ख़ज़ानेमें रहनेवाला, (पु) घोंगा, कहुना, कीड़ा, बिल्लौर। [नगरी। अवध।

कोश(स)ल, पु. (स) (ला) राजाविशेष, अयोध्या-

कोशलिक, न. उत्कोच, घूंस, रिशवत। [डवामि।

कोशातक, पु. केश; वाल (स) (की) पटोली, वा-

कोषक, पु. अण्ड, अण्डकोष। बयजे।

कोष्ठ, पु. भड़ोला, घर का दरमियान, (स्त्री) (ष्ठी) (ष्ठिका) जन्मपत्री, पासाखेलानेकी नर्द।

कोष्ठपाल, पु. नगररक्षक, कोषाध्यक्ष। कोतवाल, ख़ज़ानची; निगहबान।

कोष्ठागार, पु. भाण्डार। खज़ानहका घर।

कोष्ण, न. ईषदुष्ण, (त्रि) तद्विशिष्ट। थोड़ी गरमी, थोड़ा गरम।

कोहल, पु. मद्यभेद, मुनिविशेष, वाद्यभेद, पछताव, नामुनासिब काम करना।

कौकुटिक, दाम्भिक, अदूरदर्शी, कपटी, या मक्कार, कीड़े मरनेके ख़ौफ़से जैनोंकेसाथ नीचे नज़र करके चलनेवाला।

कौक्ष, } त्रि. पेटुक; पेटू।
कौक्षेय, }

कौक्षेयक, पु. कुक्षिबद्ध खड्ग।

कौङ्क(ण), पु. देशविशेष। कोहकानका मुल्क।

कौञ्च, पु. हिमालय पर्वतविशेष।

कौट, पु. कुटज वृक्ष (त्रि) धूर्त्त, स्वतन्त्र (न) प्रतारण, असत्य। शरीर, आज़ाद, फ़रेब, झूठ।

कौटतक्ष, पु. स्वाधीन। आज़ाद।

कौटकिक, त्रि. मांस वेचनेवाला। [रेब।

कौटिल्य, पु. वात्स्यायन मुनि (न) कुटिलता। फ-

कौट(टि)लिक, पु. लोहकार, व्याध। लुहार, फंदक।

कौटिल्य, न. कुटिलता, टेढ़ापन, ख़राबी।

कौणप, पु. राक्षस; राच्छस।

कौणपदन्त, पु. भीष्म।

कौण्य, त्रि. विकलाङ्ग; लूला, पिंगुला।

कौतस्कुतस्, व्य. क्वचित्, कहींकहींसे।

कौतुक, न. चाह, खुशी, शादी, ठट्ठा, रागरंग, जमाअका वक़्, मखौल। [यिकाविशेष।

कौतुकिन्, त्रि. कौतकविशिष्ट (स्त्री) (नी) ना-

कौतूहल, न. (कौतुक) देखो।

कौनख्य, न. कुनखी रोग। एक बीमारी जिस्से नखून गिर पड़ते हैं या काले पड़जाते हैं।

कौन्तेय, पु. कुन्तीपुत्र, युधिष्ठिर आदि।

कौप, न. कूपोदक, कूएका पानी (त्रि.) कूएका।

कौपीन, न. कुपीन, खराब काम, गांड़, गुनाह।

कौमार, न. पांच वरसतककी उमर, (री) पांच वरसकी क्वारी लड़की, पहिली स्त्री, कार्तिकेय शक्ति। [उत्सव, आश्विनी कार्तिकी पूर्णिमा।

कौमुद, पु. कार्तिक मास, (स्त्री.) (दी) ज्योत्स्ना,

कौमोदकी, स्त्री. विष्णुमहाराजकी गदा।

कौरव (व्य), पु. कुरुकी सन्तान।

कौर्प, पु. वृश्चिकराशि ८ वी, राशी। [आचार।

कौल, त्रि. सत्कुलोद्भव, ब्रह्मज्ञानी (न) तन्त्रोक्त

कौलकेय, त्रि. सत्कुलोद्भव, (पु) जारज पुत्र। ख़ान्दान, यार की औलाद।

कौलटिनेय, पु. जारज। हरामका।

कौलटेय, } पु. स्त्री. "कौलकेय" देखो। जारका
कौलटेर, } पुत्र, असतीका पुत्र।

कौलत्थ, त्रि. कूलत्थ का।

कौलव, पु. "बव" आदि एकादश कर्णोंमेंसे ३ रा।

कौलालक, त्रि. कुलाल सम्बन्धीय (न) मृन्मयपात्र। कुह्मारका काम, मट्टीका वर्तन।

कौलिक, पु. जुलाहा, चरवाहा, (त्रि) ख़ान्दानी आदमी, वामाचारी।

कौलीन, न. गुह्यदेश, कुकर्म्म, कुलीनत्व, कौलेयक, लोकवाद, (पु) असतीपुत्र। गांड़ ख़राब काम, अफ़वाह, हरामज़ादह।

कौलीन्य, त्रि. सत्कुलजात (न) कुलीनत्व। ख़ान्दानका, ख़ान्दानी पन।

कौलेय, त्रि. कुलीन। ख़ान्दानका। [न्दानका।

कौलेयक, पु. कुक्कुर (त्रि) कुलीन। कुत्ता, ख़ान-

कौल्य, त्रि. कुलीन। ख़ान्दानका।

कौबेर, न. कुष्ठ (त्रि) कुबेरसम्बन्धीय (स्त्री) (री) उत्तरदिक्, कुबेरशक्ति मातृवि०।

कौश, न. कान्यकुब्ज देश, (त्रि) कौशेय । कनौजका मुल्क, रेशमी कपड़ा ।
कौशल, न. कुशलता, पटुता, उपाय, छल (स्त्री) (ली) कुशलप्रश्न । होशियारी, चतुराई, तदबीर, खैराफ़ीयत पूछना ।
कौशलिका, स्त्री. उपढौकन । नज़र ।
कौशल्य, न. निपुणता, (स्त्री) (ल्या) राममाता । होशयारी, रामचन्द्रकी मा ।
कौशाम्बी, स्त्री, वत्सराजा की नगरी ।
कौशिक, पु. इन्द्र, गुग्गुल, उल्लूक, नकुल, विश्वामित्र मुनि, (त्रि) कौशेय, अभिधानज्ञ (स्त्री) (की) नदीवि०, देवीवि०, नाट्यमें रचनाविशेष ।
कौशे(षे)य, त्रि. पट्टवस्त्र, (न) रेशम, रेशमी कपड़ा।
कौसीद, त्रि. वृद्धिजीवी । सूदखोरा ।
कौसीद्य, न. आलस्य । सूद । [री, नट ।
कौसृतिक, त्रि. मायाकार, ऐन्द्रजालिक । मदा-
कौस्तुभ, पु. विष्णुके वक्षस्थलकी मणि । [यारी ।
क्रकच, पु. न. करपत्र, ग्रन्थिल-पत्र । आरा, कंडि-
क्रकचच्छद, न. केतकीका पुष्प ।
क्रकण, पु. पक्षीविशेष । एक किसमका तीतर ।
क्रतु, पु. यज्ञ, पूजा, वैश्वदेव वि०, मुनिविशेष ।
क्रतुद्विष्, } पु. राक्षस, नास्तिक ।
क्रतुद्रुह, }
क्रतुद्रुह, पु. असुर । राच्छस । [हारा ।
क्रतु-ध्वंसिन्, पु. शिव, (त्रि) यज्ञके नाश करने
क्रतु-पुरुष, पु. विष्णु, (त्रि) यज्ञशील पुरुष ।
क्रतु-भुज्, पु. देवता ।
क्रतु-राज, } पु. राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ ।
क्रतूत्तम, } पु.
क्रथकैशिक, पु. विदर्भदेश ।
क्रथन, न. मारण, छेदन । मारना, काटना ।
क्रन्द, } न. रोदन, योधसंराव, आह्वान, (पु) विडाल । रोना, जंगमें ललकारना, बुलाना, बिल्ली ।
क्रन्दन, }
क्रन्दित, न. रोना, बुलाना ।
क्रम, पु. हिदायत, ताक़त, पांव, उलांघना, तरीका । झड़ाई ।
क्रमण, पु. चरण, (न) गमन, या, रफ़तार ।
क्रमतस्, व्य. क्रमश; सिलसिलहवार, दरजहवार ।
क्रमशस्, व्य. यथाक्रम । सिलसिलहवार ।
क्रमागत, त्रि. परम्परागत । बदस्तूर आया हुआ ।
क्रमात्, व्य. क्रमशः । आहिस्ते २, सहज २ ।
क्रमायात, त्रि. पुरुषपरंपरागत । पीढ़ियोंसे चली आई बात । [की बीमारी ।
क्रमि, पु. कृमि, रोगविशेष । कीड़ा, एक किसमी-
क्रमु, } गुवाक; सुपारीका दरख़त ।
क्रमुकी, }
क्रय, पु. क्रयण; मोल देकर वस्तु ख़रीदना ।
क्रयणीय, त्रि. क्रयार्ह । ख़रीदनेके लायक ।
क्रयलेख्य, न. भूम्यादि क्रयलिपि । क़बाला ।
क्रयरोह, पु. हट्ट । बाज़ार ।
क्रयविक्रय, } ख़रीद फ़रोख्त पु. वाणिआं । क्रेता, क्रयजीवी । पु. ख़रीदार, बनियां ।
क्रयिक, }
क्रायिन्, पु. क्रेता । ख़रीदार ।
क्रय्य, त्रि. क्रयणीय, हट्टी । ख़रीदनेके लायक ।
क्रव्य, न. मांस, आममांस । गोश्त, कच्चा गोश्त ।
क्रव्या(द), } पु. राक्षस, सिंह, श्येन, (त्रि) मांसभोजी । शेर, बाज, गोश्त खोर ।
क्रव्याशन, }
क्रशिष्ट, त्रि. } अति कृश । बहुत दुबला, पतला ।
क्रशीयस्, त्रि. }
क्रान्त, त्रि. आक्रान्त, विक्रान्त (पु.) अश्व, (स्त्री) (न्ति) आक्रमण, गति, अवरोहण, खगोलके बीच कुच्छ टेढ़ी गोल रेखा, जहांसे सूरज चलता है ।
क्रान्तिभाग, पु. अयनविशेष ।
क्रान्ति-ज्या, स्त्री. ग्रहोंके फिरनेका स्थान । [स्तह ।
क्रान्ति-मण्डल, न. राशिचक्र । आफ़ताबका रा-
क्रायक, पु. क्रेता, क्रयजीवी । ख़रीदार, व्योपारी ।
क्रिमि, पु. कीड़ा, लाख, एक ख़ास बीमारी ।
क्रिमिजा, स्त्री. लाक्षा, लाख, (पु) चलुएकी लकड़ी ।
क्रियमाण, त्रि. जो किया जा रहा है ।
क्रिया, स्त्री. गर्भाधानादि संस्कार, आरम्भ, निष्कृति, शिक्षा, पूजन, उपाय, कर्म्म, चेष्टा, चिकित्सा, कारण, श्राद्ध, शौच्य कार्य, (या) धात्वर्थ । शुरु, बदला, तालीम, परस्तिश, तजवीज़, तरद्दुत, काम, तिबाबत, सबब, पाकीज़गी, काम, फ़ेल ।
क्रियाकलाप, पु. कर्म्मसमूह; कई काम ।
क्रिया-पटु, पु. चतुर । दाना, होशियार ।

क्रिया-कार, पु. नवछात्र, (त्रि) कर्म्मकर्त्ता । नया तालिब इल्म, कारकुन ।
क्रिया-द्वेषिन्, पु. पञ्चविध साक्ष्यन्तर्गत साक्षीविशेष । पांच किसमके गवाहोंमेंसे एक ।
क्रिया-निर्देश, पु. साक्ष्य । गवाही ।
क्रिया-पर, त्रि. कर्म्मठ, महोद्यमी । चालाक, निहायत मेहनती ।
क्रियाभ्युपगम, पु. परस्पर क्रिया स्वीकार । खास शर्त या अहदो-पैमान । [वग़ैरह काम ।
क्रियायोग, पु. पूजादि क्रियारूप योग । पूजा पाठ
क्रियारूप, पु. न. धातुरूप । फ़ेलकी गिर्दान ।
क्रियावत्, त्रि. कर्म्मोद्यत । काममें मसरूफ़ ।
क्रियाविशेषण, न. अव्यय शब्द । इसमें ज़रफ़ ।
क्रियासमभिव्याहार, पु. क्रियाका पौनःपुन्य ।
क्रीडन, पु. परिहार (स्त्री) (डा) मस्खरी, खेलना ।
क्रीडत्, त्रि. खेलता हुआ ।
क्रीत, त्रि. खरीदा हुआ ।
क्रीता-नुशय, पु. खरीदकर पछताना ।
कुञ्च(ञ्च), पु. स्त्री (स्त्री) पनकुकड़ी, एक पहाड़का नाम वीण बाजा ।
क्रुद्ध, त्रि. क्रोधवान् । गज़बनाक ।
क्रुध्(धा), स्त्री. क्रोध । गज़ब ।
क्रुष्ट, न. रोदन, (त्रि) रोदित, आहूत; रोना चिल्लाना, रोया हुआ, बुलाया हुआ ।
क्रूर, त्रि. निर्द्दय, (पु) श्येनपक्षी, बक, रक्तकरवीर वृक्ष(स्त्री) (रा) रक्तपुनर्णवा । बेरहम, बाज, बगला, सुरख़ कनेरका दरख़्त् ।
क्रूरकर्मन्, पु. दुष्ट । बदमाश ।
क्रूरता, स्त्री. भयानकता, बेरहमी । [ज़ुहलसय्यारह
क्रूर-दृश्, त्रि. पिशुन, (पु) शनैश्चर । ज़ियांकार,
क्रेणि, पु. क्रयण । खरीद ।
क्रेतव्य, **क्रेय**, } त्रि. क्रयणीय । ख़रीदनेके लायक ।
क्रोञ्च, पु. पर्वतविशेष, एक पहाड़का नाम ।
क्रोञ्च-दारण, पु. कार्तिकेय, शिवजीका पुत्र ।
क्रोड, बाहुमध्यदेश, (पु) शनिग्रह, गोदी, शूकर, वाराहीकंद, (स्त्री) (डा) अश्वकी छाती ।
क्रोड-पाद, पु. कच्छप; कछुआ ।
क्रोडी-करण, न. आलिङ्गन । बग़लगिरी ।
क्रोडीकृत, त्रि. गोदमें लियाहुआ । छातीसे लगाया हुआ ।
क्रोथ, पु. हनन; मारन ।
क्रोध, पु. कोप । गुस्सह ।
क्रोधज, त्रि. अष्टविध व्यसन । पैशून्य, साहस, द्रोह, ईर्षा, असूया, अर्थदूषण, वाक्दण्ड, पारुष्य, क्रोध ।
क्रोधज, पु. मोह आदि आठ व्यसन । [भैरवविशेष ।
क्रोधन, त्रि. क्रोधी (स्त्री) (ना) कोपवती स्त्री (पु)
क्रोधित, त्रि. कुपित । गुस्सेसे जला हुआ ।
क्रोधिन्, त्रि. सकोप, (पु) महिष । गज़बनाक, भैंसा । [हाथ, कोस ।
क्रोश, पु. चतुःसहस्र हस्तपरिमाण, चार हज़ार
क्रोशताल, पु. ढक्का, ढोल ।
क्रोशिन्, त्रि. क्रन्दित, उच्चैस्वरकारी । चिल्लाहट, ऊंची आवाज़से चिल्लानेवाला ।
क्रोष्ट, पु. शिगाल, (स्त्री) (ष्ट्री) शिगाली ।
क्रौञ्च, पु. स्त्री. कूंज, खास टापू, पहाड़, राच्छस ।
क्रौञ्च-दारण, पु. कार्तिकेय । शिवजीका बेटा ।
क्रौञ्च-पदा, स्त्री. छन्दोविशेष । ख़ास बहर । जिसके एक २ चरण मे २५ अक्षर हैं ।
क्रौर्य्य, न. क्रूरता । बेरहमी ।
क्लम(थ), पु. श्रम । तकान ।
क्लमित, त्रि. क्लान्त; थका हुआ । [थकान ।
क्लान्त, त्रि. श्रान्त, म्लान (स्त्री) (न्ति) थका हुआ,
क्लिन्न, त्रि. आर्द्र; गीला ।
क्लिशित, त्रि. क्लिष्ट । मुसीबत ज़दह, मुश्किल ।
क्लिष्ट, त्रि. क्लेशयुक्त, (न) पूर्वापर विरुद्धवाक्य (स्त्री) (ष्टि) सेवा, क्लेश ।
क्लीब, पु. न. स्त्री पुरुष भिन्न (हिजड़ा) (त्रि) विक्रम हीन, निर्बल, अलस, जल (न) पाप ।
क्लीब-लिङ्ग, त्रि. नपुंसकलिङ्ग । मुख़न्नस । [याहुआ ।
क्लृप्त, त्रि. प्राप्त, लब्ध । पाया हुआ, हासिल कि-
क्लेद, पु. आर्द्रता, गीलापन, पूं आदि ।
क्लेदन, न. कफ; गीला करना ।
क्लेदु, पु. चन्द्र । माहताब ।
क्लेश, पु. दुःख, कोप, व्यवसाय, आयास, अविद्या २ आस्मिता ३ राग ४ द्वेष ५ अभिनिवेश यह पांच । तक्लीफ़, फ़िक्र ।

क्लैव्य, न. दौर्बल्य, क्लीवत्व, अपौरुषत्व । कमजोरी, मुखन्नसपन, नामर्दी ।
क्लोम(न), न. मूत्राधार; मसाना, फुंकना ।
क्व, व्य. कुत्र; कहां ।
क्वचन, व्य. क्वचित्; कहीं ।
क्वचित्, व्य. क्वापि, कुत्रचन; कहीं भी ।
क्वण, पु. शब्दविशेष । वीणकी आवाज़ ।
क्वणन, न. वीणकी आवाज, छोटी हंडिया, (पु.) हंडीका राक्षसीका पुत्र.
क्वणित, त्रि. नादित । बजाया हुआ (न) आवाज़ ।
क्वत्य, त्रि. किसी जगहका ।
क्वथन, निष्काथ । जुशांदा । [काढ़ा ।
क्वथित, त्रि. अभिश्रृत । जोश दिया हुआ (न)
क्वाण, पु. ध्वनि, आवाज़ ।
क्वाथ, पु. तक्लीफ़, वर्तन, जुशांदा, रस, मांड ।
क्वापि, व्य. क्वचित्, कहीं । [क्षित्रपाल, नाश ।
क्ष, पु. क्षत्रिय, राक्षस, नरसिंह, बिजली, स्वेत,
क्षण, न. उत्सव, थोड़ाकाल, अवकाश, पर्व ।
क्षणद, न. जल, (पु) गणक स्त्री (दा) रात्रि, रात ।
क्षणन, न. वध, कतल ।
क्षण-प्रभा, स्त्री. विद्युत् । वर्क़ ।
क्षण-भङ्गुर, त्रि. क्षणैकनाश्य । फ़ानी ।
क्षणिक, त्रि. क्षणमात्रस्थायी । एक दमका (स्त्री) (का) विद्युत्, बिजली । [(ति) नुकसान ।
क्षत, त्रि. हटाहुआ, जख्मी, (न.) घाओ (स्त्री)
क्षत्तृ, पु. (त्ता) सारथि, वैश्या वा क्षत्रियाके पेटमेंसे शूद्रकी सन्तान, गाड़ीवान्, दरवान्, गुलाम, दोगला, मछली (त्रि) मुकरर किया हुआ ।
क्षत्र, न. क्षत्रपन (पु) क्षत्रिय ।
क्षत्र-बन्धु, पु. निन्दित क्षत्रिय । खराब क्षत्रिय ।
क्षत्रिय, पु. द्वितीय वर्ण (स्त्री) (या) (यानी) क्षत्रियपत्नी; खतरानी ।
क्षन्त, त्रि. क्षमाशील । साबिर ।
क्षन्तव्य, त्रि. क्षमायोग्य । माफ़ीके योग्य ।
क्षपण, त्रि. निर्लज्ज, अपवित्र (न) त्याग (स्त्री) (णी) नौका का दण्ड ।
क्षपणक, पु. बौद्ध संन्यासी ।
क्षपा, स्त्री. रात्रि, हरिद्रा । शव, हलदी ।
क्षपा-कर, } चन्द्र, चांद । माहताब ।
क्षपानाथ, }

क्षपाचर, } पु. राक्षस ।
क्षपाट, }
क्षपित, त्रि. यापित, नाशित, दग्ध, उपयुक्त शक्त, हित, । गुज़ारा हुआ, तबाह किया, जला, मुनासिब, ताक़तवर, महबूब स्त्री ।
क्षम, न. मुनासिबत (त्रि) ताकतवर ।
क्षमता, स्त्री. योग्यता, सामर्थ्य । लियाकत, ताकत ।
क्षमिन्, त्रि. क्षमाशील । माफ़करनेवाला ।
क्षमित, त्रि. क्षमाशील । साबिर ।
क्षय, पु. कासरोगविशेष ।
क्षयथु, पु. कासरोग । दमेकी बीमारी ।
क्षयपक्ष, पु. कृष्णपक्ष; अंधेरा पाख ।
क्षय मास, पु. मलमास; लौंदका महिना ।
क्षय्य, न. क्षयणीय । तबाह करनेके लायक़ ।
क्षर, न. जल, (पु) मेघ, नश्वरवस्तु । फ़ानी, बादल, फ़ानी चीज ।
क्षरण, न. चूना, टपकना, बहना ।
क्षरित, त्रि. च्युत, स्रुत; गिराहुआ, बहाहुआ ।
क्षरिन्, त्रि. वर्षाकाल, (त्रि) क्षरणविशिष्ट । बरसात, टपकता हुआ । (स्त्री) (न्ति) सबर ।
क्षान्त, त्रि. सहनशील, निवृत्त । सहारेवाला, हटा
क्षान्तु, त्रि. क्षमाशील, (पु) पिता । साबिर, बाप ।
क्षाम, त्रि. क्षीण, दुर्बल, पतला, दुबला । [फरेब ।
क्षार, न. गुड़क्ष्वेड, जोंखार, खार, निमक, काच, खाक,
क्षारमृत्तिका, स्त्री. लवणमृत्तिका; सज्जी ।
क्षारिका, स्त्री. क्षुधा; भूख ।
क्षारित, त्रि. अभिवादित, स्रावित, दूषित, तोहमत दिया गया, चूआया हुआ ।
क्षालन, न. प्रक्षालन, धोना, पखालना ।
क्षालनीय, त्रि. प्रक्षालणीय, धोनेके लायक ।
क्षालित, त्रि. मृष्ट, धौत; धोया हुआ, मांजा हुआ ।
क्षि, स्त्री. वास, गमन, क्षय ।
क्षिण्ण, त्रि. दुःखित । तक्लीफ़ ज़दह ।
क्षित, त्रि. क्षयप्राप्त (स्त्री) (ति) पृथिवी ।
क्षितिकण, पु. धूलि; धूड़ ।
क्षितिज, न. खगोलमें आकाशके बीच नब्बे अंशके अन्तरमें तिर्य्यक वृत्त, (पु) भूभाग, मङ्गलग्रह, (त्रि) भूजात (स्त्री) (जा) सीता । [आ, शेषनाग ।
क्षितिधर, पु. पर्व्वत, कूर्म्म, वासुकी, पहाड़, कछु-
क्षितिनाथ, पु. राजा, विष्णु । बादशाह ।

क्षितिप(पति), पु. राजा ।
क्षितिभृत्, पु. पर्वत, राजा, अनन्त देव ।
क्षितिरुह्, पु. वृक्ष । दरख़्त ।
क्षितिक्षम, पु. खदिर वृक्ष, खैरेका पेड़ ।
क्षितिवर्द्धक, पु. शव । मुर्दा ।
क्षितीश्वर, पु. राजा । पादशाह ।
क्षित्वन्, पु. वायु । हवा । [ताव, सींग ।
क्षिद्र, पु. रोग, सूर्य्य, विषाण । बीमारी, आफ़-
क्षिप, त्रि. क्षपक । फेंकनेवाला (पा) फेंकना ।
क्षिपक, पु. योद्धा । जंगी । [मन्त्र, अध्वर्यु ।
क्षिपणि, पु. अस्त्र, (स्त्री) नौकादण्ड, जालविशेष,
क्षिपण्ड, पु. वायु । हवा । [द्दार जिसम, खुशबू ।
क्षिपण्यु, पु. वसन्तकाल, देह (नि.) सुरभिगंध । व-
क्षिप्त, त्रि. फेका हुआ, बीजा हुआ, व खेरा हुआ ।
क्षिप्नुभि, फेंकनेवाला मारा हु० उन्मत्त ।
क्षिप्र, न. शीघ्र, (त्रि) तद्युक्त । जल्दी, जल्दबाज़ ।
क्षिप्रकर्मिन्, त्रि. शीघ्र करनेवाला ।
क्षीण, त्रि. दुर्बल (स्त्री)(णा) नदीवि०; सूक्ष्म, दुर्बल, पतला, मक्षिका, वेश्या, नटी, कंटकारी, कमजोर।
क्षीच,(व) त्रि. मस्त, नशाई, मतवाला ।
क्षीवता, स्त्री. मत्तता । मस्ती ।
क्षीयमाण, त्रि. तबाह होते हुए ।
क्षीर, न. जल, दुग्ध, सरलद्रुम, स्त्री (रा) । पानी, दूध, सीधा दरख़्त, काकोली बूटी ।
क्षीरकण्ठ, पु. दूध पीनेवाला बालक ।
क्षीरनीर, न. आलिङ्गन, दूध और पानी ।
क्षीरपाण, न. दुग्धपान, (त्रि) क्षीरपाणदेश । दूध पीना, खास मुल्क ।
क्षीरपायिन्, त्रि. दुग्धपान कर्ता; दूध पीनेवाला ।
क्षीरवृक्ष, पु. अश्वत्थ, उदुम्बर; पीपल, गूलर ।
क्षीरशर, पु. दधियोगेन पक्कोष्ण दुग्ध जातामिक्षा। उबलते हुए दूधमें दहिं डाल देनेसे जो फुटके से हो जाते हैं, मलाई ।
क्षीरशुक्र, पु. जलकण्टक, राजादनी । सिंघाड़ा, एक ख़ास पोदेका नाम है ।
क्षीराब्धि, पु. क्षीरसमुद्र; दूधका समुंदर ।
क्षीराब्धिज, पु. चन्द्र, (न) मौक्तिक ।
क्षीराब्धितनया, स्त्री. लक्ष्मी । [रीर ।
क्षीरिका, स्त्री. क्षीरी-वृक्ष, पिण्डखजूरका पेड़, श-
क्षीरिन्, पु. क्षीरवृक्ष, दूधवाले पेड़ (स्त्री)(नी) दूधवाली गौ ।
क्षीरोद, पु. दुग्धसमुद्र; दूधका समुद्र ।
क्षीरोदतनया, स्त्री. कमला, विष्णुजीकी औरत ।
क्षु, पु. सिंह । शेर । [हुआ ।
क्षुण्ण, त्रि. प्रहत, चूर्णीकृत, मारा हुआ, पीसा
क्षुत,(त्) न. नासिकाभिघातजन्य समशब्द वायु निस्सरण । छींक मूख ।
क्षुतक, पु. राजिका, राई ।
क्षुताभिजनन, पु. कृष्णसर्षप; स्याह सरसों ।
क्षुद्र, पु. तण्डुलावयव, (त्रि) कृपण, अधम, क्रूर, अल्प, दरिद्र, (स्त्री) (द्रा), मक्षिका, वेश्या, नटी, कंटकारी ।
क्षुध्(धा), स्त्री. क्षुधा; भूख ।
क्षुधार्त, त्रि. क्षुत्पीडित; भूकसे हैरान ।
क्षुधित, त्रि. क्षुधान्वित; भूखा ।
क्षुप, पु. क्षुद्रवृक्ष, कृष्णजीके वीर्यसे सत्यभामाके गर्भमें पैदा हुई २ औलाद, इक्ष्वाकुका पिता, द्वारकाके पश्चिमी ओरका पहाड़ ।
क्षुब्ध, पु. मन्थानदण्ड,(त्रि) क्षोभविशिष्ट । मथनीकी लकड़ी, मुतहर्रक । [चला हुआ, गुस्से हुआ २ ।
क्षुभित, त्रि. भीत, सञ्चलित, क्रुद्ध । डरा हुआ,
क्षुमा, स्त्री. अतसीवृक्ष, शणवृक्ष नीलिका लता, अलसी, सन, नीलका पैधा । [पाया(स्त्री)(री) छुरी ।
क्षुर, पु. चाकू, उस्तरा, तीर, हैवानका खुर, खाटका
क्षुरक, पु. तिलकवृक्ष, कोकिलाख्य, भूताङ्कुश ।
क्षुरधान, न. (स्त्री) (नी) क्षुरभाण्ड, रछानी ।
क्षुरप्र, पु. शर, घास छेदनास्त्र; तीर, खुरपा ।
क्षुरमर्द्दिन्, पु. नापित । हज्जाम । [नायिन ।
क्षुरिन्, पु. नार (त्रि) खुरवाला (स्त्री) । रतालू ।
क्षुरधार, पु. नरकविशेष ।
क्षुरपत्र, पु. वाण (त्रि) उस्तरे आदि० ।
क्षुल्ल, त्रि. लघु, क्षुद्र अस्त्र । हलका छोटा की धार ।
क्षुल्लक, त्रि. छोटा, ज़रा, नीच, कनिष्ठ, दरिद्र, पामर, दुःखिआ, खस, (पु) क्षुद्रत्व ।
क्षुल्लतात(क), पु. कनिष्ठ, पितृव्य, चचा ।
क्षेत्र, न. भूमि, शरीर इंद्रिय, मन, सिद्धस्थान, कलत्र, गृह, नगर ज्यामितिमे भूम्याकृति घर, खेत, शहर ।

क्षेत्रज, पु. पुत्रविशेष, अपनी औरतमें दूसरेकी विन्दसे पैदा हुआ २ बेटा, (स्त्री) (जा) सुपेद कंडियारी (त्रि) क्षेत्रमें उत्पन्न ।

क्षेत्रज्ञ, पु. आत्मा, ईश्वर, प्रधान, वटुक-भैरव, विदग्ध, कृषक, (त्रि) हृदयज्ञ ।

क्षेत्रपति, पु. रुद्र । क्षेत्रपाल ।

क्षेत्राजीव, पु. कृषक । किसान ।

क्षेत्रिक, पु. क्षेत्रस्वामी, कलत्रस्वामी, क्षेत्रसम्बन्धीय । खेतका मालिक, औरतका खाविन्द, खेतका ।

क्षेत्रिय, न. क्षेत्रजाततृण, परदेहचिकित्सा, (पु) असाध्य रोग (त्रि) क्षेत्रसम्बन्धीय । खेतकी पैदाश, दूसरे की बीमारी का इलाज, ला इलाज बीमारी, खेतका । [विंद ।

क्षेत्रिन्, त्रि. क्षेत्रविशिष्ट, स्वामी । किसान, खा-

क्षेप, पु. निन्दा, विक्षेप, लेपन, गर्व, प्रेरण, विलम्ब, हेला, गुच्छ । बदनामी, गरूर, भेजना, देरी, हिकारत, गुलदस्ता, गाली, वक्त खोना ।

क्षेपक, पु. प्रथमें दूसरेका डाला हुआ । अंकविशेष, (त्रि) डालने वाला ।

क्षेपण, न. प्रेरण, फेंकना, भेजना, गाली देना, वक्त खोना, स्त्री. (णि) (णी) (णिका) नौकादण्ड, जालविशेष, घुपानी । [चलनेवाला ।

क्षेपणीय, त्रि. फेंकनेके योग्य (न) खड्ग, वाण

क्षेपिष्ठ, **क्षेपीयस्**, } त्रि अति शीघ्रगामी । जल्दतर चलनेवाला ।

क्षेप्तृ, त्रि. क्षेपणकर्ता । फेंकनेवाला ।

क्षेम, पु. न. कुशल, (त्रि) कुशली, मोक्ष, कलिङ्गराज, स्त्री. (मा) कात्यायनी ।

क्षेमाधि, पु. मिथिलादेशस्थ सूर्य्यवंशीय राजावि० ।

क्षेम्य, त्रि. क्षेमयोग्य । खुशीके लायक ।

क्षैत्र, न. क्षेत्रसमूह । बहुतसे खेत ।

क्षोड, पु. आलान, हाथी बांधनेका खूंटा ।

क्षोणि(णी), स्त्री. पृथिवी, जमीन ।

क्षोद, पु. चूर्ण, पेषण; चूरा, ओखली, कुंडी ।

क्षोदक्षम, त्रि. पेषण योग्य । पिसने लायक ।

क्षोदिमन्, पु. } अतिक्षुद्रता; बहुत बारीकी ।
क्षोदिष्ठ, त्रि. } अति क्षुद्र; बहुत छोटा ।
क्षोदियस्, (त्रि) }

क्षोभ, पु. क्षोभन, बाधा, घर्षण, आघात, चित्तचाञ्चल्य । खलबली, रोक, घिसना, चोट, दिलकी घबराहट ।

क्षोभण, पु. कामबाण वि०, सांख्यपुरुष, क्षोभजनक (पु) वटुकभैरव । हरकत पैदा-करनेवाला ।

क्षोभित, त्रि. धर्षित, त्रसित, चालित, आलोडित ।

क्षौद्र, न. मधु, जल, (पु) चम्पकपुष्प वृक्ष, वर्णसङ्कर । शहद, पानी, चम्बेका दरख्त, दोगला ।

क्षौम, (न) पट्टवस्त्र, दुकूल (स्त्री) (मा) अटारी । रेशमी कपड़ा, चादर या दुपट्टा (स्त्री) (मी) सन ।

क्षौमी, स्त्री. अतसी, क्षुमानिर्म्मित, सन या रेशमकी बनी धोती ।

क्षौर, त्रि. क्षुरकर्म्म (स्त्री) (री) हजामत, उस्तरा ।

क्षौरिक, पु. नापित; नाई ।

क्ष्मण, त्रि. शाणित । तेज़किया हुआ ।

क्ष्मा, स्त्री. पृथिवी । ज़मीन ।

क्ष्माज, पु. मङ्गल ग्रह ।

क्ष्मातल, न. भूतल । सतह-ज़मीन ।

क्ष्माधर(भृत्), पु. पर्वत, राजा, अनन्त ।

क्ष्मायित, त्रि. कम्पित; कांपा हुआ ।

क्ष्विण्ण, त्रि. मुक्त, स्निग्ध; छूटा हुआ, चिकना ।

क्ष्वेड, न. लोहित अर्कपर्ण फल, घोपा पुष्प, (पुन) ध्वनि, कर्ण-रोग, विष (त्रि) कुटिल (स्त्री) (डा) वंश शलाका, सिंहनाद, कोपातकी ।

क्ष्वेडित, त्रि. वीरोंका सिंहनाद । ऊंची ललकार ।

क्ष्वेला(ली), खेल, हिलाना ।

क्ष्वेलन, न. चालन । सरकाना ।

क्ष्वेलित, त्रि. चालित । हिलाया हुआ ।

क्ष्वेलिका, **क्ष्वेली**, } स्त्री. क्रीड़ा; खेल ।

ख.

ख, न. इन्द्रिय, पुर, क्षेत्र, शून्य, विन्दु, आकाश, संवेदन, देवलोक, कर्म्म, लग्नसे दसवीं राशि, सुख, अभ्रक, (पु) सूर्य्य, २ य, व्यंजन, ब्रह्म ।

खकुन्तल, पु. व्योमकेश, शिव ।

खखोल्क, पु. सूर्य्य । आफ़ताब ।

खग, पु. बाण, सूर्य्य, ग्रह, देव, वायु, शलभ ।

खगति, स्त्री. आकाश गमन । आसमान मे उड़ना ।

खगपति, पु. गरुड़ ।

खगम, पु. पक्षी । परिंदह ।

खगान्तिक, पु. श्येन । बाज ।
खगेन्द्र, पु. गरुड़ ।
खगेन्द्रध्वज, पु. गरुड़ । [कुरा आसमान ।
खगोल, पु. आकाशमण्डल, तत्प्रतिरूप दर्शक ।
खचमस, पु. इन्द्र । महाताप ।
खचर, पु. मेघ, वायु, राक्षस, सूर्य्य, रूपकभेद, पक्षी, भूत, (त्रि) आकाश गामी ।
खचित, त्रि. संयुक्त, जडित, सम्पृक्त । आमेज़, जड़ा हुआ, मिला हुआ ।
खज, **खजाक**, } पु. दर्व्वी; चमचा, कड़छी ।
खजप, न. घृत, घी ।
खजल, न. आकाशवारि, नीहार, पाला, ओस ।
खञ्ज(क), त्रि. गति-विकल (स्त्री) (ञ्जा) कवितापथविशेष । लुञ्जा, लंगड़ा ।
खञ्जखेट, पु. ममोला । [(स्त्री) (ना) सर्पपी ।
खञ्जन, न. गमन, (पु) खञ्जरीट; जाना, ममोला,
खञ्जरीट, पु. खञ्जनपक्षी;ममोला । [लाङ्गल,कतृण।
खट, पु. अन्धेराकूआ, कफ़, प्रहारविशेष, टङ्क, तृण,
खटिक, पु. मुक्ता, वकहस्त, (स्त्री) (का) लेखन द्रव्य, कर्णकुहर । खड़िया मट्टी, कानका सुराख़ ।
खटिनी, स्त्री. खड़िया मिट्टी ।
खटीखदन, त्रि. खर्व्व । पस्तकद । [घास ।
खट्टा, स्त्री. खट्वा; खाट, पलंग, एक क़िसमका
खट्टि(ट्टी), पु. शवयान; जनाज़ह, तखाट ।
खट्टिक, पु. शाकुनिक, व्याध, (स्त्री) खट्वा, शवयान। शिकारी, खाट, जनाज़ह ।
खट्वा, स्त्री. काष्ठादिरचित शय्याधार; खाट ।
खट्वाङ्ग, न. शिवजीका अस्त्र, (पु) सूर्य्यवंशी राजा, खाटका पाया आदि ।
खट्वाङ्गभृत्, **खट्वाङ्गिन्**, } पु. शिव, महादेव । [शरीर ।
खट्वारूढ, त्रि. खाटपर चढ़ा हुआ (पु) धूर्त
खडिका(खडी), स्त्री. कठिनी, खड़िया मट्टी ।
खड्ग, न. लोह, (पु) खण्डक, खण्डा बुद्धभेद, रोचकनाम गन्धद्रव्य । लोहा, गैंड़ा, गेंडेका सींघ ।
खड्, पु. भङ्ग (न) तृणवि०, स्त्री (डी) खर्ड़ ।
खडकी(क्किका), खिड़की कीराह ।
खड्गकोष, पु. मियान ।
खड्गधेनुका, स्त्री. छुरी, गण्डारी ।
खड्गपिधान(क), न. मियान, परिवार, कोष ।
खड्गधर, पु. शस्त्रधारी; सिपाही ।
खड्गपत्र, न. असिपत्र (पु) ईख ।
खड्गरीट, त्रि. फलक; ढाल ।
खड्गिक, पु. महिषीक्षीरफेण, शौणिक, भैंसके दूधकी झाग, मांस वेचनेवाला ।
खड्गिन्, पु. जन्तुविशेष, (त्रि) खड्गधारी । गैंण्डा, जिसने तरवार पकड़ी हो ।
खण्डज, पु. गुड़ ।
खणखणायमाण, त्रि. क्वणित, खनकता हुआ ।
खण्ड, न. विड्लवण, गुड़, खांड़ इक्षु (न) टुकड़ा, अध्याय ।
खण्डज, पु. सिता, चीनी । मिसरी ।
खण्डकाव्य, न. एकविषयताक काव्य, चम्पू । नज़्म और नसरमें तसनीफ़ की हुई किताव ।
खण्डधारा, स्त्री. कर्त्तनी, कैंची, मिकराज ।
खण्डन, न. तोड़ना, रद्द करना, हटाना ।
खण्डनीय, त्रि. भेद्य, तोड़नेके लायक़, तवाह होनेके लायक़, रद्द करनेके लायक । [हाथी ।
खण्डपर्शु, पु. परशुराम, शिव, राहु, दांतटूटा
खण्ड-पाल, पु. मोदक, लड्डआ, मिठाई, हलवा, मुरब्बा ।
खण्ड-प्रलय, पु. प्राय प्रलय, विवाद, सुहृद्भेद, ध्वंस, नाशक, दुनियाके किसी एक हिस्सहका ग़र्क़ होना, झगड़ा, गिरना, तवाह करनेवाला।
खण्डलवण, न. विड्लवण; स्याह निमक ।
खण्डशस्, व्य. खण्ड २; टुकड़ा २ ।
खण्डाली, स्त्री. तैलपरिमाण, पुष्करिणी, लम्पटपुरुष संसर्गा स्त्री; तेलका माप, तालाव, अय्याश आदमीसे परची हुई औरत ।
खण्डित, त्रि. छिन्न, कटा हुआ, टूटा हुआ । रद्द किया हुआ (स्त्री) (ता) स्त्रीयादि नायकान्तर्गत नायिकाभेद; वह औरत जिसका खाविंद परस्त्रीरत है ।
खण्डिन्, त्रि. वनमुद्ग (त्रि) भग्न (स्त्री) (नी) पृथवी । जंगली अनाज, टूटा हुआ ।
खण्डीर, पु. पीतमुद्ग; मूंगी ।

खपुर, त्रि. [illegible]

खटिका, स्त्री. [illegible]

खदिर, पु. [illegible] वृक्ष, [illegible] विशेष। [illegible]

खदिरपत्री,
खदिरपत्रा, } स्त्री. [illegible]
खदिरा,

खदिरिका, स्त्री. [illegible]

खदूरक, न. [illegible]

खद्योत, पु. सूर्य, [illegible]

खधूप, पु. [illegible]

खनक, पु. [illegible] (त्रि) [illegible]

खनन, न. [illegible]

खनि(नी) स्त्री. [illegible]

खनित्र, न. [illegible]

ख-पुर, पु. [illegible] (त्रि) [illegible]

ख-भ्रान्ति, पु. [illegible]।

ख-मणि, पु. सूर्य। [illegible]।

खमीलन, न. तन्द्रा। [illegible]।

ख-मूर्ति, स्त्री. [illegible]।

खर, पु. गर्दभ, [illegible] [illegible] (त्रि) [illegible] कठोर (स्त्री) (पुं) [illegible]।

खरणस्, (त्रि) घोड़े के [illegible]।

खरकुटी, स्त्री. नापितशाला।

खर-चर, त्रि. [illegible]।

खर-दूषण, पु. धतूर, खर और दूषण नाम के [illegible] राक्षस; धतूरा।

खर-ध्वंसिन्, पु. श्रीराम। [illegible]।

खरा, स्त्री. देवदारु वृक्ष।

खरांशु, पु. सूर्य। [illegible]।

खराश्वा, स्त्री. मयूरशिखा, [illegible]

खरिका, स्त्री. कस्तूरी विशेष।

खरु, पु. शिव, हय, दर्प, दन्त, कामदेव, [illegible] (त्रि) श्वेत, निर्बोध, क्रूर, तीक्ष्ण (स्त्री) पतीश्वरा कन्या।

खर्जु(जू), स्त्री. कण्डु, कीट। खारिश, कीड़ा, खजूर।

[illegible]

खलूरिका, स्त्री. [illegible]

[illegible]

खेटकपोत, [illegible]

[illegible]

[illegible], पु. [illegible], (स्त्री) (स्त्री) [illegible] विशेष।

[illegible], त्रि. [illegible]।

[illegible], पु. [illegible] विशेष, [illegible] विशेष। [illegible]।

का नाम, खाल फाँसका नाम, (र्सा) (रा) दक्षकी बेटी, "मुरा" नाम खुशबूदार चीज (सा) राक्षसोंकी माता ।
खाजिक, पु. लाजा; खील । [तावूत ।
खाट(टि)(टिका), पु. स्त्री. शववान । जनाज़ह ।
खाण्डव, न. इन्द्रवन, (स्त्री) (वी) चन्द्रवंशीय सुदर्शन राजपुरी ।
खाण्डिक, पु. खाण्डपाल । हलवाई ।
खात, न. चौबचा, गडा, कूआ (त्रि) खोदा हुआ ।
खातक, न. परिखा, (पु) अधमर्ण, (त्रि) खननकारी । खाई, कर्ज़दार, खोदनेवाला ।
खातभू, स्त्री. परिखा; खाई ।
खात्र, न. खात, खनित्र, दारुण, वण, सूत्र; गढ़ा, तलाव, कुदाल, वद, जंगल, डोरा ।
खादक, त्रि. ऋणग्रहीता, भक्षक । कर्ज़दार, पर्वरिश करनेवाला, खानेवाला । [खुराक ।
खादन, न. भक्षण, खाद्य (पु) दन्त; खाना, दांत,
खादित, त्रि. भक्षित; खाया हुआ ।
खादितव्य, त्रि. भक्षणीय; खानेके लायक ।
खादिर, त्रि. खदिर निर्मित, न. खदिरवृक्ष ।
खाद्य, त्रि. भक्षणीय । खानेके लायक ।
खान, पु. म्लेच्छ जातिविशेष स्त्री. खानि ।कान।
खानिव्य, न. गर्त; गढ़ा ।
खानिल, त्रि. भित्तिचौर । नकबज़न, चोर ।
खानोदय, पु. नारियल ।
खापगा, स्त्री. गङ्गा ।
खारि(री), पु. स्त्री. परिमाणविशेष, षोडश द्रोण, चिन्ह । ५१२ पांच सौ बारह सेर, दाग़ ।
खार्कार, पु. खरनाद; गधेका हींगना ।
खिखि, स्त्री. उल्कामुखी; लोमड़ी ।
खिद्दिर, पु. चन्द्र, दीन, तपस्वी ।
खिद्यमान, त्रि. खेदयुक्त । मुसीबत ज़दह ।
खिद्र, पु. रोग, दरिद्र ।
खिन्न, त्रि. दैन्य-ग्रस्त, खेदयुक्त, अलस ।
खिल, अप्रहत, दुर्गम, उत्सन्न, हलादिद्वारा अकृष्ट भूमि, परिशिष्ट (पु) विष्णु (न) सारसंग्रह ।
खिलीकृत, त्रि. निरुद्ध; रोका हुआ ।
खुर, पु. सुम, उस्तरा, चारपाईका पाया ।
खुरक, पु. तिलोंका पौदा ।
खुरप्र, पु. अर्धचन्द्र बाण,अस्त्रविशेष। एक किसमका तीर, जिसका सिरा आधे चांदकी तरह हो, खुरपा ।
खुरली, स्त्री. शराभ्यासस्थान । चांदमारी ।
खुरालिक, पु. नाराच, उपधान; तीर ।
खुल(क), त्रि. क्षुद्र, (न) नखी नाम गन्धद्रव्य। छोटा, अदना, मुफ़लिस,थोड़ा, कठोर, वद, एक किसमकी खुशबूदार चीज़ ।
खेचर, पु. शिव, विद्याधर, पारद, (त्रि) आकाशचारी (स्त्री) (री) मुद्राविशेष । नाम शिवका, पारा, आसमानमें फिरनेवाला, परिंदह ।
खेचरान्न, न. द्विदलादिसहित तण्डुलान्न; खिचड़ी ।
खेट, पु. सूर्यादि ग्रह, ग्रामवि०, धक, (न) तृण, (त्रि) शस्त्री, यष्टि, (पु.न) मृगया, कफ, चर्म्म ।
खेटक, पु. बलरामकी गदा, गांवकी गिर्द नवाई, ढाल, सूदखोर ।
खेटिन्, पु. नागर, कामी, वदकार । शहरिया ।
खेद, पु. शोक, दुःखापनय, ग़म, पछतावा, तकान।
खेदन, न. तापन, तपाना या सताना ।
खेदित, त्रि. दुःखित, ताडित । सताया हुआ, ताड़ा हुआ । [के लायक ।
खेय, न. परिखा, (त्रि) खननीय, खाई; खोदने
खेलन, } न.
खेला, } स्त्री. क्रीड़ा, खेलना ।
खेलि, स्त्री. गीत, वाण, सूर्य्य, पक्षी, जन्तु ।
खेसर, पु. जन्तुविशेष, खच्चर या अस्तर ।
खोङ्गाह, पु. श्वेतपिङ्गलाश्व । एक किसमका घोड़ा।
खोटि(टी), स्त्री. चतुरास्त्री; पालकी ।
खोल(क), त्रि. एक वस्त्र जिससे सब शरीर ढंका जाय, भीतर, वल्मीक ।
खोल्क, पु. मृदंग, उल्का; जलती हुई लकड़ी ।
ख्यात, त्रि. प्रसिद्ध (स्त्री) (ति) यश, ज्ञान, कथन । मशहूर, मशहूरी ।
ख्यातव्य, त्रि. प्रतिग्राह्य । मशहूरीके लायक ।
ख्यापक, त्रि. प्रकाशक । मशहूर करनेवाला ।
ख्यापन, न. प्रचार, विज्ञापन। रोशनक०, ज़ाहिर करना, इश्तिहार ।
ख्यापित, त्रि. प्रकाशित । ज़ाहिर किया हुआ ।

ग.

तीसरा व्यञ्जन ।

ग, न. गीत, (पु.) गणेश, गायक, (त्रि.) गन्ता, गुरु-स्वरवर्ण, सुमेरु, स्वर्ग ।

गगन, न. आकाश । आसमान, बेअन्त ।

गगन-कुसुम, पु. अप्रसिद्ध । नामुमकिन ।

गगन-ध्वज, पु. मेघ, सूर्य्य, बादल । आफ़ताब ।

गगनाङ्गन, न. मात्रावृत्तभेद ।

गङ्गका, स्त्री. गङ्गानदी, भगीरथी ।

गङ्गा, **गङ्गाका**, } स्त्री. स्वनामख्यातानदी, दुर्गा ।

गङ्गागर्भ, पु. स्वामि कार्तिक ।

गङ्गज, पु. भीष्म, कार्तिकेय ।

गङ्गा-धर, पु. शिव, समुद्र । [वि० ।

गङ्गापुत्र, पु. भीष्मपितामह, वर्णसंस्कार जाति-

गच्छ, पु. वृक्ष । दरख़्त ।

गज, पु. हस्ती, मापनेका गज़, ऊंची ज़मीन, वानरवि०।

गज-च्छाया, स्त्री. असोज महीनेमें मघा नक्षत्र युक्त त्रयोदशी तिथि, जिस्मे श्राद्ध करनेका बड़ा पुण्य होता है ।

गजता, स्त्री. गजसमूह; हाथियोंका झुंड ।

गज-द्घ्न, **गजद्वयस्**, } त्रि. गजपरिमाण; हाथी जितना ।

गज-दन्त, पु. गणेश, हस्तिदन्त; हाथींदांत ।

गज-दान, न. हस्तीमद; हाथीके गण्डसे जो पानीसा निकलता है ।

गजनिर्मीलित, न. हाथीका आंखमींचना ।

गज-पित्त, पु. हस्तीश्वर, वृहद्धस्ती, राजा; हाथियोंका राजा, बड़ा हाथी, पादशाह ।

गजमाचल, पु. सिंह । शेर ।

गजमुक्ता, स्त्री. हस्तीमस्तकस्थ मुक्ता विशेष । वह मोती जो हाथीके माथेमेंसे निकलता है।

गज-मोटन, पु. सिंह । शेर । [धानी।

गजसाह्वय, न. हस्तिनापुर, राजा कुरुकी राज-

गजाजीव, पु. हस्तिजीवी ।

गजानन, पु. गणेश, हस्तिमुख; हाथीका मुह ।

गजारि, पु. सिंह, वृक्षविशेष । शेर, ख़ास पेड़ ।

गजास्य, पु. गणेश, हस्तिमुख । [पीपल ।

गजाह्व(य), पु. हस्तिनापुर, (स्त्री) (ह्वा) (या) गज-

गञ्ज, पु. न. भाण्डागार, (पु) अवज्ञा, खनि, विपणि, गोष्ठागार, (स्त्री) (आ) मद्यशाला, कानू नीचकी दुकान। वर्तनोंका घर, बेअदबी, कान, दुकान, या बाज़ार, गाय बांधनेका घर, शराबख़ानह ।

गडयन्त, पु. मेघ; बादल ।

गड़लवण, न. साम्बरलवण ।

गड, पु. परिखा, बाधा, पर्दा, एक खास मछली ।

गडि, त्रि. वत्सतर; बच्छा, आलस ।

गडु, पु. गलगण्डआदि, गांठ (त्रि) कुब्ज ।

गडक, न. जलपात्र, (स्त्री) अङ्गुली, पानी धरनेका बर्तन, अंगुठी ।

गडुर(ल), त्रि. कुब्ज; कुबड़ा । पु. मेघ; बादल ।

गडोल, पु. गुड़, ग्रास । लुक़मह ।

गड्डरि(लि)का, स्त्री. मेषयूथानुगम्यमानमेषी । भेड़ियोंके पीछे चलती हुई भेड़, भेड़ियोंका गल्ला ।

गण, पु. समूह, प्रमथ, सेनासंख्याविशेष, यथा–२१ रथ, २७ गज, ८१ अश्व, १३५ पैदल सब मिलकर २७०, गिणती, अश्विनी आदि नक्षत्रोंकी देवता मनुष्य और राक्षससंज्ञा, धातुसमूह, यथा–१ भ्वादि, २ अदादि ३ जुहोत्यादि, ४ दिवादि, ५ स्वादि, ६ तुदादि, ७ रुधादि, ८ तनादि, ९ चुरादि, १० क्र्यादि ।

गणक, पु. ज्योतिर्वित्, वर्णसङ्कर–जाति । नजुमी, स्त्री. (की) देवलकी विंदसे वैद्यानीके पेटमें पैदा हुई २ औलाद ।

गणता, स्त्री. समूहत्व, पक्षपातित्व, गणितविद्या । इजतिमा, तरफ़दारी, हिसाबका इलम ।

गणदेवता, स्त्री. संहत देवताविशेष, जैसे–१२ आदित्य, १० विश्वेदेवा, ८ वसु, ३६ तुषित, ६४ आभास्वर, ४९ अनिल २२० महाराजिक, १२ साध्य, ११ रुद्र । [नना, शुमार ।

गणन, न. सङ्ख्याकरण, (स्त्री) (ना) संख्या, गि-

गण(नाथ)(पति)(नायक), पु. शिव, गणेश ।

गणनीय, त्रि. गिनने योग्य ।

गण-रात्र, न. रात्रिसमूह । मबहा ।

गण-रूप, पु. अर्कवृक्ष, आकका दरख़्त ।

गणशस्, व्य. वृ. हुआ; दल २ प्रति ।

गणाग्रणी, पु. गणेश । सब गणोंका सर्दार ।

गणान्न, न. बहुस्वामिक अन्न, बहुतोंका अन्न ।

गणिका, स्त्री. वेश्या, हस्तिनी, गणना, यूथिका ।
गणिकारिका, स्त्री. औषधिविशेष ।
गणित, त्रि. सङ्ख्यात, (न) गणित विद्या; गिना हुआ, हिसाबका इलम ।
गणित्र, न. जपमाला । तसवीर । [लायक ।
गणिम, त्रि. गणना द्वाराविक्रेय । गिनकर वेचने
गणेय, त्रि. संख्येय । गिणनेके लायक ।
गणेरु(क), पु. कर्णिकार-वृक्ष, (स्त्री) (का) वेश्या, हस्तिनी, (स्त्री) (का) कुट्टनी ।
गणेश, पु. शिव, शिवपुत्र । [करवीरके फूल ।
गणेश-कुसुम, पु. रक्तकरवीर पुष्प, सुरख़
गण्ड(क), पु. १० म, योग, गाल, हाथीका गण्ड, गेंड़ा, सन्दूक़ची, निशान, बहादुर, बुलबुला, फोड़ा, गांठ, दुनियावी जेवाइश ।
गण्डक, पु. खड्गी, संख्याविशेष, अवच्छेद । गेंडा, रोक, चौकडी, नजूमका इलम (स्त्री)(की) नदीवि० ।
गण्ड-ग्राम, पु. प्रधान ग्राम । क़सवह ।
गण्डदेश, **गण्डफलक**, } पु. कपोल, गाल, रुख़सारह ।
गण्डभित्ति, स्त्री. कपोल । रुख़सारा । [मारी ।
गण्ड-माला, स्त्री. गलरोगविशेष; हजीरां की बी-
गण्ड-मूर्ख, त्रि. माहामूर्ख । बड़ा बेवकूफ़ ।
गण्डलेखा, स्त्री. कपोल । रुख़सारा ।
गण्डशैल, पु. छोटा पर्वत ।
गण्डाङ्ग(गण्डार), पु. खड्गी; गेंडा ।
गण्डाली, स्त्री. श्वेत दूर्वा, सर्प्पाक्षी, खण्डदूर्वा ।
गण्डारि, पु. कोविदार वृक्ष ।
गण्डु, पु. उपधान, (स्त्री) ग्रन्थि । तकिया, गांठ ।
गण्डु-पद, पु. किञ्जुलुक; केंचुआ ।
गण्डूष, पु. मुखपूरण, जलाञ्जलि, मुखक्षालन, हस्तीशुण्डाग्रभाग, प्रसृति परिमित, (स्त्री) (षा) मुखपूर्ण । मुहभर पानी, चुक भर-पानी, चुली, हाथीकी सूंडका अगला हिस्सह, चुलूभर ।
गण्डोपल, पु. करका; ओला । [धरनेके लायक ।
गण्य, त्रि. गणनीय, धर्तव्य; गिननेके लायक,
गत, त्रि. जाना हुआ, गया हुआ, गुज़रा हुआ, तबाह किया हुआ, मरा हुआ, (न) जाना, हरकत ।
गतागत, न. गमनागमन, पक्षीकी विशेष गति । जाना आना ।
गत-कलुष(गतकल्मष), त्रि. निष्पाप । बेगुनाह ।
गत-चेतन, त्रि. मूर्छित । बेहोश । [बेफ़िकर ।
गत-ज्वर, त्रि. आरोग्य, चिन्तामुक्त । तनदुरुस्त,
गतनासिक, त्रि. नासिका रहित । नककटा ।
गतबुद्धि, त्रि. ज्ञानशून्य । बेवकूफ़ ।
गतत्रप, त्रि. निर्लज्ज । बेशरम ।
गत-भी, त्रि. निस्साध्वस । बेख़ौफ़ ।
गत-माय, त्रि. सरल, निष्ठुर । सीधा, बेहरम ।
गत-लज्ज, त्रि. निर्लज । बेशरम ।
गत-वत्, त्रि. गामी, प्राप्त, भ्रंश, चेतक; जाने वाला, पाया हुआ, गिराहु०, माअलूम करनेवाला ।
गत-सत्व, त्रि. निर्गुण, प्रेतीभूत, मृत । कमीना, बेहुनर, मुर्दह । [मद नहिं चूता ।
गत-सन्नक, पु. निर्म्मद हस्ती; जिसके गंड से
गत-साध्वस, त्रि. भीत, डरा हुआ । ख़ौफ़ ज़दह ।
गताधि, त्रि. सुखी । राज़ी ।
गतानुगतिक, पु. न्यायवि० । लकीर की फकीरी ।
गतार्तवा, स्त्री. वृद्धा, वन्ध्या; बूढ़ी, बांझ ।
गतायुस्, त्रि. मृत, मृतप्राय । मरनेपर । [हवास ।
गतार्थ, त्रि. गत-विभव, ज्ञानहीन । ग़रीब । बे-
गतासु, त्रि. गतप्राण, मरा हुआ । मुर्दह ।
गति, स्त्री. मार्ग, दशा, यात्रा, ज्ञान, उपाय, नाड़ी, वृंहण, सरणी, उपाय, धारा, अवस्था, आश्रय । वाट, हालत, सफ़र, इलम, तदबीर, रग ।
गतिला, स्त्री. नदीविशेष ।
गत्वर, त्रि. गमनशील; जानेवाला ।
गत्वरता, स्त्री. चापल्य । तलव्वन मिज़ाजी ।
गद, न. विष, (पु) रोग, श्रीकृष्णका छोटा भाई, भाषण, (स्त्री) गदा, लोहेका मुद्गर ।
गदन, न. कथन; कहना ।
गदयित्नु, पु. कन्दर्प्प, (त्रि) वावदूक । कामुक, कामदेवका नाम, बकवाजी, अय्याश,
गदाग्रज, **गदाधर**, **गदाभृत्**, } पु. श्रीकृष्णदेव, हरि ।
गदित, त्रि. उक्त, (न) वाक्य । कहा हुआ । [वाली ।
गदिन्, पु. विष्णु, (त्रि) रोगी (स्त्री) (नी) गदा-
गद्गद, त्रि. अत्यंत स्पष्टवक्ता (न.) अस्पष्टध्वनि । न साफ़ बोलनेवाला, वेमा अनी आवाज़ ।

गद्गद-ध्वनि, पु. हर्षशोकादि द्वारा अस्पष्ट शब्द। खुशी या ग़मसे अस्पष्ट अवाज़।

गद्य, न. ठट्ठा, नसर, (त्रि) कहने योग्य।

गद्यानक, न. ४८ रत्ती भर।

गन्तव्य, त्रि. गमनयोग्य। जानेके लायक़।

गन्तु, पु. पथिक। मुसाफ़िर। [गाड़ी।

गन्तृ, त्रि. गमनकर्त्ता; जानेवाला (स्त्री) (न्त्री) बैल-

गन्त्री रथ, पु. शकट, गाड़ी, छकड़ा।

गन्ध, } पु. ज़रासा, रिश्तह, गन्धक, गर्व,
गन्धद्रव्य, } सुहांजना, घिसा हुआ संदल, खुशबुई।

गन्धक, पु. शोभाञ्जन वृक्ष, उपधातुविशेष; सुहांजनेका पेड़, गंधक धात। [रिका।

गन्धकारिका, स्त्री. परगृहस्था स्वाधीनशिल्पका-दूसरेके घरमें रही हुई आज़ाद कारीगर औरत।

गन्धकालिका, } स्त्री. व्यासमाता; व्यासदेवकी
गन्धकालि, } मां। [खुशबूदार चीज़का नाम।

गन्ध-कुटी, स्त्री. मुरा नाम गन्धद्रव्य। एक खास खु-

गन्धकेलिमा, स्त्री. गणिकारी बूटी। [खस्स।

गन्धखेड, न. गन्धवीरण। एक क़िसम का घास,

गन्धचूल, पु. बारूद।

गन्धचेलिका, स्त्री. मृगनाभि; कस्तूरी।

गन्ध-जात, न. तेजपत्र।

गन्धज्ञा, स्त्री. नासिका। नास।

गन्ध-दला, स्त्री. अजमोदा दवाई।

गन्ध-द्विप, पु. उत्तमहस्ती। उमदह हाथी।

गन्ध धूलि, स्त्री. मृगनाभि। कस्तूरी।

गन्धन, न. लगातार मेहनत, ज़हर, जताना, नुकसान पहुंचाना, खानेकी चीज़।

गन्धनकुल, पु. छछूंदर।

गन्धनाकुली, स्त्री. रास्ना, कन्दविशेष।

गन्ध नामन, पु. रक्ततुलसी। सुरख़ तुलसी।

गन्ध-पलाशिका, स्त्री. हरिद्रा; हलदी।

गन्ध-पाषाण, पु. गन्धक।

गन्धपुष्प, पु. वेतका वृक्ष, अशोकवृक्ष, स्त्री. (ष्पा) नीली, केतकी, गणिकारी, (न) चन्दन, पुष्प, नील।

गन्ध फल, पु. कपित्थ-फल, बिल्व, (स्त्री) (ला) (ली) प्रियुंगू वृक्ष, मेथिका, विदारी, शल्की, चम्पक कलिका। कैंतबेल, बिल्व, मालकंगुनी, मेथी, सही, चंबे की कली।

गन्ध-भद्रा, स्त्री. लताविशेष। एक क़िसमकी बेल।

गन्ध-माता, स्त्री. पृथिवी। ज़मीन।

गन्ध-मादन, पु. न. पर्वत विशेष, भ्रमर, वानरविशेष, गन्धक, (स्त्री) (नी) मदिरा, इलावृत्त और भद्राश्ववर्षकी हद्द।

गन्ध-मूल, पु. कुलञ्जनवृक्ष। कुलंजका दरख़्त।

गन्ध मृग, पु. कस्तूरीमृग।

गन्ध-मैथुन, पु. वृष; बैल।

गन्ध-रस, पु. उपधातुविशेष, कली।

गन्ध-राज, न. चन्दन, स्वनामख्यात श्वेतवर्ण पुष्प (स्त्री) (जी) नखीनाम गंधद्रव्य।

गन्धर्व, पु. स्वर्गगायक, घोटक, कस्तूरीमृग, पुंस्कोकिल, गायनमात्र, सूर्य्य, विवाहविशेष, नृपवि०, कोकिल। [वि०।

गन्धवती, स्त्री. पृथिवी, मत्स्यगन्धा, सुरा, पुरी-

गन्धव(वा)ह, पु. वायु (स्त्री) (हा) नासिका।

गन्धशालि, पु. सुगंधिधान्य। बेगमी चावल।

गन्धक्षार, पु. चन्दनवृक्ष।

गन्धहस्तिन्, पु. जिसके पसीने और मूत्र आदिको सूंघकर और सब हाथी मस्त हो जाय।

गन्धवणिज्, पु. स्त्री. गांधी।

गन्धर्वतैल, पु. एरण्डतैल; एरण्डीका तेल।

गन्धर्वनगर, पु. गंधर्वों का नगर।

गन्धर्वविद्या, स्त्री. गीतवाद्यनृत्यादि; बजाने, गाने, नाचने वगैरहका इलम।

गन्धा, स्त्री. चम्पककलिका; चंपेकी कली। [लता।

गन्धाली(लिका), स्त्री. प्रसारिणी लता, भद्रपर्णी

गन्धाखु, पु. छछूंदर।

गन्धाश्मन्, पु. गन्धक धातु।

गन्धाढ्य, न. यवादि नाम गंधद्रव्य, चन्दन, (त्रि) गन्धयुक्त, (पु) नारङ्ग वृक्ष (स्त्री) (ढ्या) गंधपत्रा लता।

गन्धार, पु. राग, सिंधूर, स्वरविशेष।

गन्धालीगर्भ, पु. सूक्ष्मैला; छोटी इलायची।

गन्धाष्टक, न. पञ्च देवताओंकेलिये आठ प्रकारका गन्ध; यथा—चंदन, अगुरु, कर्पूर, कचोर, कुंकुम, रोचना, जटा—मांसी, कपियुत, ये सब।

गन्धिन्, पु. वृहत् वृक्षविशेष, (त्रि) गंधविशिष्ट। बूदार। [खटमल।
गन्ध्य, त्रि. गन्धविशिष्ट, (पु) तल्पकीट; बूदार,
गभस्ति, पु. किरण, सूर्य्य, (स्त्री) (स्ती) स्वाहा। शुआ, आफ़ताब, अग्निदेवताकी जोरू।
गभस्तिमत् (गभस्तिहस्त), पु. सूर्य्य, (न) नरक विशेष। [जगह, अथाह, गहरा।
गभीर, त्रि. नीच-स्थान, अगाध, गहन। नीची
गभीरिका, स्त्री. बृहद्ढक्का; बड़ा ढोल।
गभोलिक, पु. मसूरधान; मसरोंकी दाल।
गम, पु. जिगीषोर्गमण, द्यूतभेद, अपर्यालोचित, अध्वा, गमन। हमला, एक क़िसमका जूआ, वेसोचा, सड़क, जाना।
गमक, त्रि. बोधक, गमयिता; जतानेवाला।
गमथ, पु. पंथा, (त्रि) पथिक। सड़क, मुसाफ़िर।
गमन, न. यात्रा, पञ्चविधकर्म्मान्तर्गत कर्म्म विशेष। सफ़र, पांच तरहके कर्म्मोंमेंसे एक कर्म्म, जाना।
गमागम, पु. चराचर; जाना आना।
गमिन्, त्रि. गमनकर्ता; जानेवाला।
गम्भीर, त्रि. गंभीर, अगाध, निविड़, उदार, पूर्ण, (स्त्री.) (रा) नदी विशेष।
गम्भीरता, स्त्री. गभीरता; गहराई। संजीदगी।
गम्भीरवेदित्, } पु. मत्तहस्ती। [पोशीदह बात।
गम्भीरवेदिन्, }
गम्भीरार्थ, न. दुर्ज्ञेय, रहस्य; वड़े गूढ़े मअने,
गम्य, त्रि. प्राप्तव्य, गमनयोग्य, भोग्य, उह्य, मणयितव्य, ज्ञेय, साध्य, (स्त्री) (म्या) वेश्यापत्नी।
गम्यमान, त्रि. अनुमीयमान, ज्ञायमान; जाना-हुआ। मअलूम किया हुआ।
गय, पु. वानरभेद, राजर्षिभेद, असुरभेद, (स्त्री) (या) पुरीविशेष। ख़ास एक बंदर, ख़ास एक राजर्षि, नाम एक राक्षसका, राजा गयकी पुरी।
गर, न. ववाद्येकादश करणान्तर्गत करण, वि० विष, रोग। ज़हर, बीमारी, ज़हरमोहरा, (स्त्री) (रा) निगल जाना।
गरद, त्रि. विषदाता (न.) विष देने वाला।
गरल, न. विष, पन्नगविष, परिमाण, तृणपूलक। ज़हर, सांपकी ज़हर, माप, घासका पूला।
गरिमन्, त्रि. गुरुता, अहङ्कार। गरूर, वज़न।
गरिष्ठ, } त्रि. अति गुरु, मान्य, वड़ा भारी।
गरीयस्, } मुअज़्ज़िज़ (स्त्री) (सी) बड़ीभारी,।
गरुड, पु. स्वनामख्यात पक्षी।
गरुड-ध्वज, पु. विष्णुमहाराज।
गरुडा-ग्रज, पु. अरुण; सूर्य्यका गाड़ीवान्।
गरुडा-श्मन्, पु. मरकत मणि; पन्ना।
गरुत्, पु. पक्ष; पंख।
गरुत्मान्, पु. गरुड पक्षी।
गर्ग, पु. मुनिविशेष, ब्रह्मपुत्र, वाद्ययन्त्र, तालविशेष, (स्त्री) गार्गी। ब्रह्माका वेटा, वाजेका ताल, गर्ग मुनिकी जोरू। [(री) मन्थनी, गागर; मथानी।
गर्गर, पु. मत्स्यभेद; एक क़िसमकी मछली, स्त्री.
गर्ज्ज, पु. मेघादिका शब्द।
गर्जन, हाथी की चिंघाड़, झिड़कन, धमकान।
गर्जित, न. गाजना, पु. मत्तहाथी, (त्रि) शब्दित; गर्जाहुआ।
गर्ज्जर, न. मूलविशेष; गाजर।
गर्ज्य, त्रि. गर्जनकारी, बोलनेवाला, गाजनेवाला।
गर्त्त, पु. बिल, गढ़ा, मुल्क, पंजाबका हिस्सह, ख़ास बीमारी।
गर्त्तिक, त्रि गर्त्तसमूह, गर्त्तसम्बन्धीय, (स्त्री)(का) तन्तुशाला। गढ़े, गढ़ेका, तांती की दुकान्।
गर्द्दभ, पु. स्त्री. गधा (न) श्वेतकुमुद, विडंक, (स्त्री) (भी) गधी, बू, सुपेद कमलका फूल।
गर्द्द, पु. लोभ, स्पृहा। लालच।
गर्द्दभाण्ड, पु. वृक्षविशेष; पिलखनका दरख़्त्।
गर्द्दभाह्वय, पु. श्वेतकुमुद; सुपेद कमल।
गर्द्दभिका, स्त्री. क्षुद्र-रोगविशेष, गर्द्दभ स्त्री। एक बीमारी, गधी। [गर्मी, दरख़्तका नाम।
गर्द्ध, पु. स्पृहा, गर्द्दभाण्ड वृक्ष। आर्ज़ू, या सर-
गर्द्धन, त्रि. लुब्ध, बुभुक्षु; लालची, भूखा।
गर्द्धिन्, त्रि. लुब्ध, बव्हाशी; लालची, पेटू।
गर्व, पु. अहंकार, गरिमा। ग़रूर।
गर्वित, त्रि. गर्व्वयुक्त। मग़रूर।
गर्भ, पु. भ्रूण, शिशु, कुक्षि, अग्नि, नदीगर्भ, मत्स्य, सूतिकागृह, गङ्गादि जल सन्निहितदेश, अन्तः-पुर, अन्तर, उदर, नाट्यकर्मे-सन्धिवि०।

गर्भक, पु. केशमध्यस्थितमाल्य, रजनी द्वन्द्व, स-
र्प धरी हुई फूलमाला, एक दिन और दो रात।
गर्भ-कोष, पु. गर्भाशय, जरायु । हमल ।
गर्भगृह, न. सूतिकागृह ।
गर्भ-धारिणी, स्त्री. माता, गर्भवती ।
गर्भपात, पु. गर्भस्राव । इसकात हमल ।
गर्भरूप, त्रि. शिशु, युवा । बच्चा, जवान ।
गर्भ वती, स्त्री. अन्तरापत्या । हामिलह ।
गर्भ-शय्या, स्त्री. गर्भोत्पत्तिस्थान । बचा जननेकी जगह । [महीनेतक हि गिरजाना ।
गर्भ-श्रा(स्रा)व, पु. गर्भपात । हमलका चौथे
गर्भस्राविन्, पु. हिन्ताल वृक्ष (त्रि.) गर्भघाती । हमल निकलवा देनेवाला ।
गर्भागार, न. वासगृह, अन्तर्गृह, सूतिकागृह । जिस घरमें बचा जना गया है ।
गर्भाधान, न. निषेकक्रियासंस्कारविशेष ।
गर्भा-शय, पु. जरायु, पेट । बच्चहदान ।
गर्भिणी, स्त्री, गर्भवती । हामिलह ।
गर्भित, त्रि. अन्तर्गत गर्भयुक्त । मगरूर ।
गर्भिण्यवेक्षण, न. कुमारभृत्या, प्रसवकरणीया विद्या । हामिलहकी खिदमत, दाईगरीका इलम।
गर्मुत्, स्त्री. तृणधान्यविशेष, स्वर्ण, नड़ । मैणा घास, सोना, नली । [बलआदिसे जो उत्पन्न गरूर है।
गर्व, पु. दर्प, दौलत रूप जवानी कुल विद्या और
गर्वित, त्रि. अहंकारी । मगरूर ।
गर्हण, न. निंदा । बदनामी ।
गर्हणीय, त्रि निन्द्य । बदनामीके लायक। हकीर ।
गर्हा, स्त्री. निन्दा; तिरस्कार । बदनामी, मलामत् ।
गर्हित, त्रि. निंदित । मलामती ।
गर्ह्य, त्रि. अधम, दोषी, अपराधी । नीच, कसूरवार ।
गल, पु. कण्ठ, सर्जरस, वाद्यभेद, मत्स्यविशेष, रज्जु । गला, राल, एक किसम का बाजा, खास मछली, रस्सी, बंसरी । [लटकता रहता है । गलगब ।
गलकम्बल, पु. गाय सांढ के गले में जो मांस
गलगण्ड, पु. रोगविशेष । हजीरकी बीमारी ।
गल-ग्रह, पु. व्यञ्जनविशेष, स्वयमुत्थापिता परिहार्य्य आपद, मत्स्यघण्ट । तरकारी, आप सहेड़ीहुई अमिट मुसीबत, मच्छी की चटनी ।
गलत्, त्रि. गिरताहुआ । बहताहुआ ।
गलन, (न) नम्रकरण, स्रवण; गालना, पिघलाना, बहाना ।
गलमेखला, स्त्री. गलेका ज़ेवर ।
गल-स्तनी, स्त्री. छागी; बकरी ।
गलहस्त पु. गलहत्था ।
गलि, पु. दुष्ट—वृष; खराब सांड़ ।
गलित, त्रि. पतित; गला हुआ, गिरा हुआ ।
गलित-कुष्ठ, न. महा-व्याधि; गला हुआ, ला इलाज कोढ़, सख्त बीमारी ।
गल्द, पु. मणिविशेष । किसमें जवाहर ।
गल्भ, त्रि. अहङ्कारी, साहसी । मगरूर, दिलावर ।
गल्ल (क), गण्ड; गाल । रुखसारा, मद्यपीनेका बर्तन ।
गवय, पु. गलकम्बल शून्य गोसदृश पशु, वानरविशेष । बनगाय, खास बंदर, (स्त्री)(यी) बनगाय ।
गवल, पु. वनमहिष, (न) महिषशृङ्ग । जंगली भैंसा, भैंसे का सींघ । [(क्षी) इन्द्रवारुणी बूटी ।
गवाक्ष, न. झरना, पु. झरोखा, वानरविशेष (स्त्री)
गवादन, पु. तृण, पत्र, (स्त्री) (नी) तृण—राशि । घास, पत्ता, घास का ढेर ।
गवाल्हक, पु. गवय; वन का बैल ।
गविष्ठ, त्रि. भूमिस्थ । पड़ा हुआ ।
गवी, स्त्री. धेनु, वाणी । गाय, कलाम ।
गवीश्वर, पु. गोस्वामी । गायका मालिक ।
गवेडु(डुका), गवेधू (धुका), } मेघ, (स्त्री) धान्यविशेष बादल, । गड़गड़ी—धान ।
गवेषण(णा), न. स्त्री. अन्वेषण । तलाश ।
गवेषित, त्रि. अन्वेषित । तलाश किया हुआ ।
गव्य, त्रि. गोसम्बन्धीय. गोहित, (न) पीतवर्ण; दूध घी दही गोबर गोमूत्र, गायके वास्ते मुफीद, जर्द रंग (स्त्री) (व्या) गोसमूह । दो कोस, चिल्लह, बहुत गायें, गोरोचना । [युग; दो कोस ।
गव्यूत, न. क्रोश; पक्का कोस (स्त्री) (ति) (ती) क्रोश-
गह्वर, न. गुहा, दम्भ, वन, रोदन (पु) निकुञ्ज । स्त्री (री), गार, तकब्बर, जंगल, रोना, जंगलके बीचकीराह ।
गहन, त्रि. दुर्गम, गव्हर, (न) वन, दुःख । बेगुज़र, गार, जंगल, तकलीफ़ (स्त्री) (ना) जेवर ।
गा, स्त्री. गाथा, कविता, छन्द । कहानी, शाअरी, बहर का वज़न ।

गाङ्ग, **गाङ्गायनि,** **गाङ्गेय,** त्रि. गङ्गा-सम्भूत, (पु) भीष्म, कार्तिकेय, मत्स्यवि. (न) स्वर्ण, केसर, मुथरां, दधूरा।

गाढ़, न. घन, अति दृढ़,(त्रि.) तद्युक्त। घना, गाढ़ा।

गाढ़-मुष्टि, पु. खड्ग, (त्रि) दृढमुष्टि, कृपण।

गाणपत, त्रि. गणेशका, सैन्याध्यक्षका।

गाणपत्य, त्रि. गणेशका उपासक, (न) दलाधिपति सवन्धीय, गणेशपन।

गाण्डि, पु. ग्रंथी; गांठ।

गाण्डि(ण्डी)व, पु. न. अर्जुनधनुः, कार्म्मुक। अर्जुनकी कमान, कमान।

गाण्डीविन्, पु. अर्जुन, धनुपका।

गातृ, पु. गाता। गवैया। [अगला भाग।

गात्र, न. देह, अङ्ग, हाथीकी अगली जंघाओंका

गाथा, स्त्री. श्लोक, प्राकृत भाषा, गीत, आर्य वृत्त। फेअर, देसी जवान, राग, कहानी।

गाथाकार(गाथिक), पु. गायक; गवैया। [गहिरा।

गाध, पु. तलस्पर्श स्थान, (त्रि) अगभीर। नबहुत.

गाधि, पु. राजाविशेष; विश्वामित्रजी का वाप।

गाधिज(सुत) पु. विश्वामित्र।

गाधेय, पु. विश्वामित्र मुनि।

गान, न. गीत, ध्वनि। राग, आवाज़।

गान्त्री, स्त्री. वृषवाह्य शकट; बैलगाड़ी।

गान्दिनी, स्त्री. गङ्गा, अक्रूर की माता।

गान्दिनी-सुत, पु. भीष्म, अक्रूर।

गान्धर्व, पु. गन्धर्व, (न) आठ प्रकार के विवाहोंमें से एक विवाह, गान, (त्रि) गन्धर्व से जो इलाक़ह रक्खे।

गान्धर्व-विवाह, पु. वर और कन्याकी इच्छानुसार विवाह, जिस्में कोई रीत रसम नहीं होती।

गान्धार, पु. देशवि०, स्वरवि०, रागवि० (न) सिंधूर, गंधक, स्त्री. (री) दुर्योधनकी मां।

गान्धिक, पु. लेखक, गंधी, कीटविशेष।

गाम्भीर्य, न. गभीरता, अचांचल्य। खुशी और गमी के चिन्ह, जिस के चेहरे और गतिसे न प्रतीतहों उसे गंभीर कहते हैं।

गामिन्, त्रि. गमनशील; जानेवाला, स्त्री. (नी)।

गामुक, त्रि. गन्ता; जानेवाला।

गायक, त्रि. **गायन्,** त्रि. गानकर्त्ता; गानेवाला।

गायत्री, स्त्री. त्रिपाद मन्त्रवि०, खदिरवृक्ष, (स्त्री) षडक्षर छन्दोविशेष, दुर्गा, त्रिपदा देवी, वेदमाता।

गारित्र, पु. ओदन; अन्न; उवले हुए चावल।

गारुड़, पु. मरकत मणि, अष्टादश पुराणान्तर्गत १६ वां पुराण, स्वर्ण, विष-मन्त्र, सर्प-मन्त्र।

गारुत्मत, न. मरकत मणि, (पु) गरुड़ पक्षी।

गार्गि, पु. गर्गसंतान।

गार्द्ध, पु. **गार्द्ध्य,** न. स्पृहा, शर (त्रि) गृध्रसम्बन्धीय। बहुतत्वहिश, तीर, गीद्ध का, पेटू।

गार्द्धपक्ष, पु. वाणविशेष। एक किसम का तीर।

गार्भिण(ण्य) न. गर्भिणीसमूह। हामिलह औरतों का मजमह।

गार्ह-पत्य, पु. यज्ञाग्निविशेष, गार्हस्थ। एक आग जो होम के लिये सदा जलती रहती है, और सब संस्कारों के काम आती है।

गार्हस्थ(स्थ्य) त्रि. गृहस्थका (न) गृहकर्म।

गालव, पु. मुनिविशेष, लोध्र पुष्प, केन्दुक वृक्ष। गलव का वेटा, लोध्र का फूल। [बद हुआ।

गालि(ली) स्त्री. कटु वाक्य, शाप; बुरा बोलना।

गालित, त्रि. द्रवीकृत; पिघलाया हुआ।

गालोडन, न. उन्माद, राग, मूर्खत्व। मस्ती, बीमारी, बेवकूफ़ी।

गालोड्य, न. पद्मबीज; कमलफूल के बीज।

गिर(रा) स्त्री. वाक्य, सरस्वती।

गिरण, न. ग्रसन; निगल जाना।

गिरि, पु. संन्यासीवि०, चक्षुरोगविशेष, स्त्री० क्षुद्रमूषक। दशविध संन्यासियोंमेंसे एक, आंख की बीमारी, छोटी चूही।

गिरिकदम्ब, पु. नीप, धाराकदम्ब। लद्॰ यह दरख़त जंबू के आस पास होता है।

गिरिकर्णिका, स्त्री. श्वेत अपराजिता, गिरिका, छोटीचूही।

गिरिज, पु. वृक्षविशेष, (न) शिलाजीत, अभ्रक, लोह, गैरिक, (त्रि.) पर्वतसे उत्पन्न, (स्त्री) (जा) पार्वती, मातुलङ्गी, त्रायमाणा लता, गिरिकदली।

गिरिजामल, न. आभ्रक; अभरक।

गिरित, त्रि. गिलित, भक्षित । निगला हुआ, खाया हुआ ।
गिरित्र, पु. शिव ।
गिरिदुर्ग, पु. पर्वत-पृष्ठ । पहाड़की चोटी ।
गिरिधातु, पु. गैरिक; गेरी मट्टी ।
गिरिनदी, स्त्री. पर्वत-नदी ।
गिरिपुष्पक, न. शैलेय । शिलाजीत ।
गिरिपृष्ठ, त्रि. गिरिशेखर; पहाड़ की चोटी ।
गिरिप्रिय, त्रि. पर्वतप्रिय, (स्त्री) (या) चमरी । पहाड़ों का मुश्ताक, मुरह गाय ।
गिरिभू, त्रि. शैलज, (पु) लघु प्रस्तर (स्त्री) पार्वती; पहाड़ी चीज़, छोटा पत्थर ।
गिरियक, **गिरियाक**, पु. गेण्डक; खेलनेकी गेंद ।
गिरिवासिन्, त्रि. शैलनिवासी, (पु) हस्तीकन्द । पहाड़ पर रहनेवाला, हाथी पिच ।
गिरिश, पु. शिव; महादेव । [की चोटी ।
गिरिशृङ्ग, पु. गणेश (न) पर्वत-कर्णिक । पहाड़
गिरिसार, पु. लोहा, राङ्गा, मलयाचल ।
गिरिसुता, स्त्री. पार्वती (पु.) मैनाकपर्वत ।
गिरीश, पु. शिव, हिमालय पर्वत, बृहस्पति ।
गिल, त्रि. ग्रासक (न.) गिलन । निगल जानेवाला, निगल जाना ।
गिलग्राह, पु. नक्र; एक क़िसम की मछली या तेंदुआ ।
गिलित, त्रि. निगला हुआ ।
गीत, न. गान, (त्रि) शब्दित, (स्त्री) (ता) पुस्त-कवि०, स्त्री (ति) छन्दोवि०, गाना ।
गीतमोदिन्, पु. किन्नर । बहिश्त का गवैया ।
गीतिमार्ग, पु. दशपांव चलना ।
गीरथ, पु. बृहस्पति । [कहाहुआ ।
गीर्ण, त्रि. प्रशंसित, गिलित, । ताअरीफ़ कियाहुआ,
गीर्णि, स्त्री. निगिलन । निगलना, नेकनामी ।
गीर्देवी, स्त्री. सरस्वती ।
गीर्प्पति-गीःपति, **गीष्पति**, पु. बृहस्पति; देवताओं का गुरु ।
गीर्व्वाण, पु. देवता ।
गीर्व्वाण-कुसुम, न. लवङ्ग; लौंग ।
गु, पु. विष्ठा; गूंह । [का पेड़ ।
गुग्गुल(लु), पु. रक्ताशोभाजन वृक्ष । गूगल-
गुच्छ, पु. गुलदस्ता, बाइस लड़ियों का हार, मोरपंख, मोतियों का हार ।
गुच्छक, न. ग्रन्थिपर्ण, (पु.) स्तवक । गुलदस्तह ।
गुच्छपत्र, पु ताल वृक्ष । ताल का दरख़्त ।
गुच्छाल, पु. भूतृण । एक क़िसम का घास ।
गुञ्जकृत्, पु. भ्रमर; भौंरा ।
गुञ्जन, न. भ्रमरादिशब्द, कलरव । भौंरे की गुंजार, बारीक आवाज़ ।
गुञ्ज, पु. गुच्छा, तीन जौं भर, चार धान भर, नक़ारह, छोटी आवाज़, शराब का घर, परिस्तिश, स्त्री. (ञ्जा) रत्ती ।
गुञ्जित, न. गुञ्जन; भिनभिनाना, (त्रि) भिनभिनाता हुआ ।
गुटिका, स्त्री. वटिका, मूर्त्ति, गोटिका । दवाई की गोली, तसवीर, शतरञ्ज की नर्द । [गुड़ ।
गुड़, पु. गोला, हाथी का फंदह, लुक़मह, कपास,
गुड़क, पु. गुड़द्वारा पक्वौषधिविशेष, (न) गुड़, गुड़ से पकी हुई चीज़ ।
गुडत्वचू(च) न. दालचीनी, जाविश्री ।
गुड़तृण; न. इक्षु; गंडा पौंडा ।
गुड़ल, न. "रस" नाम शराब ।
गुड़ाका, स्त्री. निद्रा, नींद । सुस्ती ।
गुड़ाकेश, पु. शिव, अर्ज्जुन ।
गुडाशय, पु. पर्वत । पहाड़ ।
गुडिका, स्त्री. दवाई की गोली ।
गुडूची, स्त्री. लताविशेष; गिलोकी बेल ।
गुडेर, पु. ग्रास, गुड़क । लुक़मह, गुड़ ।
गुण, पु. षट् प्रकार राजनीतिविशेष । १ सन्धि, २ विग्रह, ३ यान, ४ आसन, ५ द्वैध, ६ आश्रय, छय धनुराकर्षणरज्जु, सत्व रजस्तम, शुक्र कृष्ण रक्त पीतादि, २४ चौबीश, इन्द्रिय, भीमसेन, तन्तु, व्याकरणोक्त संज्ञाविशेष, विशेषण, निपुणता, फल, पूरक । चिल्लह, स्याह सुपेद वग़ैरह सिफ़तें, हवास, डोरा, (ए ओ अर् अल्), इसमें लिफ्त, (स्त्री) (णा) दूब, मांस, रोहिणी लता ।
गुणक, पु. गणक, पूरक, । मज़रूफ़ीह, यह अदद जिस्के साथ ज़रब दी जाती है ।
गुणकार, पु. भीमसेन, (त्रि) गुणकारक, गुणज्ञ । मुफ़ीद । मज़रूफ़ीह ।

गुणगान, न. स्तोत्र । तअरीफ़ गाना ।
गुणगृध्नु, त्रि. सद्गुणाभिलाषी । सिफ़तख़ाह ।
गुणघातिन्, त्रि. अभ्यसूयक । ऐब जो ।
गुणज्ञ, त्रि. गुणवेत्ता । क़दरदां ।
गुणता, स्त्री उत्तमता, कौशल, सारत्व, पूरण । बड़ाई, जरब । [हालतें ।
गुणत्रय, न. सत्वरजस्तम । रास्ती, दिल की तीन
गुणद, त्रि. शिक्षक । उस्ताद । [तिहान ।
गुणदोषपरीक्षण, न. ऐब और हुनरका इम्-
गुणन, न. पूरण । ज़र्ब देना । [पाठनिश्चय, माला ।
गुणनिका, स्त्री. दुहराव, अभ्यास, नृत्य, शून्याङ्क
गुणनीय, त्रि. गुणने लायक, उपदेशके लायक, नसीहतके लायक, शुमार के लायक ।
गुणप्रकाश, पु. बड़ी शोहरत ।
गुणप्रवाह, पु. प्रचय, संसार ।
गुणप्रवृद्ध, पु. संसारवृक्ष । दुनियां ।
गुणभोक्तृ, न. ब्रह्म, परमात्मा ।
गुणमय, त्रि. उत्तम गुण वाला ।
गुणलयणिका, **गुणलयणी**, } स्त्री. तंबू । खेमा ।
गुणलुब्ध, त्रि. प्रिय, प्रशंसार्ह, धनुः । प्यारा, लायक तअरीफ़, कमान् ।
गुणवत्, त्रि. गुणयुक्त, गुणी ।
गुणवत्तम, **गुणवत्तर**, } त्रि. गुणवान्, जिस में उमदह ख़सलतें हों ।
गुणवत्ता, स्त्री. प्रशस्ति । उमदहपन ।
गुणवाचक, न. शब्दविशेष । इसमें सिफ्त ।
गुणवृक्ष, पु. जहाजादि का मस्तूल ।
गुणश्लाघा, स्त्री. गुणगान । तअरीफ़ ।
गुणसागर, पु. ब्रह्मा, बुद्धवि० (त्रि) गुणयुक्त । बहरे सफ़ात ।
गुणाकर, पु. बुद्ध, (त्रि) गुणी ।
गुणागुण, पु. दोषादोष । ऐब औ हुनर ।
गुणातीत, त्रि. निर्गुण । बेसिफ्त (न.) ब्रह्म ।
गुणानुरोध, पु. गुणोपयुक्त । सिफ्त के लायक़ ।
गुणान्वित, त्रि. गुणी । हुनरमंद ।
गुणापवाद, पु. परदोषाभिधान । ऐबगोई ।
गुणाश्रय, त्रि. उत्तमगुणविशिष्ट । नेकोओं साफ़ ।
गुणिगण, पु. सज्जन समूह । नेक आदमियोंका मजमह ।
गुणित, त्रि. पूरित, पण्डित । मज़रूब, मजमह ।
गुणिन्, पु धनु, (त्रि) गुणवान् ।
गुणीभूत, त्रि. अप्रधानीभूत । [पहाड़, बावसफ़ ।
गुणेश्वर, पु. चित्रकूट-पर्वत, (त्रि) गुणी । ख़ास
गुणोत्कीर्तन, न. गुणोंका कथन; विरहके समय प्रियाके गुणोंका कहना । तअरीफ़ ।
गुण्ठन, न. वेष्टन, आवरण । लपेट, घुंगट ।
गुण्ठित, त्रि. वेष्टित, गुण्ठित, रूषित । लपेटा हुआ, छिपाया हु० ।
गुण्ड, पु. तृणभेद । एक क़िसमका ख़ुशबूदार घास ।
गुण्ड(क), पु. मैला, मुर्दा, कुप्पा, बारीक आवाज़ ।
गुण्डित, त्रि. चूर्णित; पिसाहुआ ।
गुण्य, त्रि. जिस अंकको गुणाजाय । मज़रूब ।
गुत्स, पु. गुलदस्तह या गुच्छा, बहुलड़ाहार, एक ख़ुशबूदार पौदा ।
गुद, न. मलत्यागद्वार; गांड । [की बीमारी ।
गुदकील(क), पु. अर्शरोग; बवासीर या कब्ज़
गुधेर, त्रि. रक्षक । हिफ़ाज़त कुनिन्दह ।
गुन्द्र, पु. शरतृण; पटेरघास, स्त्री. (न्द्रा)भद्रमुस्तक, घासविशेष ।
गुप्त, त्रि. रक्षित, (पु) वैश्यजाति की पदवी । हिफ़ाज़त किया हुआ या छिपाया हुआ, वैश्यजाति का ख़िताब, (स्त्री) (प्ति) पोशीदह आशना रखनेवाली औरत, अरूड़ी, जेलख़ाना, गढ़े के लिये धरती खोदना ।
गुम्फ, पु. बाहलङ्कार, श्मश्रु । बाजूबंद, दाढ़ी, मूछ ।
गुम्फन, न. ग्रंथन । गांठना ।
गुम्फित, त्रि. ग्रन्थित; गांठा हुआ ।
गुरण, न. उद्यम । कोशिश ।
गुरु, पु. आचार्य, अध्यापक, धर्मोपदेष्टा, मन्त्रदाता, बृहस्पति, द्रोणाचार्य, पिता आदि, दीर्घस्वर वर्ण, (त्रि.) पूज्य, उत्कृष्ट, महत्, दुस्तर, कठिन, प्रयोजनीय । [रसों, मुर्शिद का क़ातिल ।
गुरुघ्न, पु. गौर सर्षप, (त्रि) गुरुहन्ता । सुपेदस-
गुरुतर, त्रि. बहुतबड़ा ।
गुरुजन, पु. ज्येष्ठ । बुज़ुर्ग । [हालत ।
गुरुत्व, न. बड़ाई, भारीपन । वज़न, तक्लीफ़ की

गुरुता, स्त्री. भारीपन ।
गुरुसारा, स्त्री. शिंशपा भेद । किस मे शीशम ।
गुर्जर, पु. गुजरात देश, बहु० वहांके निवासी, स्त्री. (री) रागिनीविशेष, गुजरातन, गूजरी ।
गुर्वादित्य, पु. योगवि०, सूर्य और जीवका एक राशिस्थ होना ।
गुर्ण, त्रि. वेष्टित; लपेटा हुआ ।
गुर्विणी, स्त्री. गर्भिणी । हामिलह । [भारी ।
गुर्वी, स्त्री. गुरुपत्नी, गर्भवती । उस्तादनी, हामिलह,
गुल, पु. ऐक्षव, (स्त्री) (ला) खास एक पौदा, (ली) (लिका) दवाई की गोली, चेचक की बीमारी ।
गुलुञ्छ, पु. गुच्छ; गुच्छा ।
गुल्फ, न. पादग्रन्थि; गिट्टा । टखना ।
गुल्म, पु. प्लीहा, रोगविशेष, सेना संख्या । पेट की बीमारी, घाट, हाथी ९, रथ ९, अश्व २७, पैदल ४५, कुल ९०, क़िलअ, क़वायद, (स्त्री) (ल्मी) तम्बू, इलायची की बेल ।
गुल्मशूल, न. आर्द्रक; अदरक ।
गुल्मिनी, स्त्री. विस्तृतलता, प्लीहारोग, (पु) दलपति । फैली हुई बेल, तिल्ली का रोग, सिपहसालार ।
गुल्य, पु. मधुर, स्वादु; मीठा, मज़ेदार ।
गु(गू)वाक, पु. पूग; सुपारीका पेड़ ।
गुह, पु. कार्तिकेय, विष्णु, घोटक, श्रीरामसखा, (स्त्री) (हा) गर्त, गुहा । कायस्थोंका खिताब ।
गुहाशय, पु. व्याघ्र, विष्णु; जीवात्मा, अज्ञान, (त्रि.) गुहाशायी, गुहास्थ । गुफ़ा में रहने वाला ।
गुहिन, न. वण; जंगल ।
गुहिल, न. धन । दौलत ।
गुह्य, न. निर्जनस्थान, उपस्थ, (त्रि) रहस, (पु) कमठ, दंभ, विष्णु, (स्त्री) मलद्वार । तनहा जगह, फेर, राज़, कछुआ, छल, कुन ।
गुह्यक, पु. देवयोनिविशेष, कुबेरानुचर ।
गुह्यकेश्वर, पु. कुबेर ।
गू, स्त्री. विष्ठा; गूंह ।
गूढ, न. रह; गुप्तस्थ (त्रि) कठिनार्थ, संवृत । पोशीदह जगह, भेद, मुश्किल माने, ढपा हुआ ।
गूढचार (रिन्), पु. गूढपुरुष । जासूस ।
गूढज, त्रि. पुत्रवि०, गूढोत्पन्न ।
गूढपथ, पु. अन्तःकरण । दिल ।
गूढपुरुष, पु. गुप्तचर । जासूस ।
गूढपाद, (द) सांप, कछुआ ।
गूढमैथुन, पु. कौवा, कव्वा ।
गूढसाक्षिन्, त्रि. ऐसा गवाह कि जिसको मुद्दई से पोशीदह मुद्दालय के इज़हार सुनाए जाते हैं ।
गूढाङ्ग, पु. कच्छप; कछुआ ।
गूढाङ्घ्रि, पु. सर्प; सांप ।
गूढोत्पन्न, पु. जारज पुत्रविशेष । यार से पैदा हुआ २ एक क़िसमका बेटा ।
गूथ, पु. न. मल; गूंह ।
गून, त्रि. त्यक्त; तजा हुआ ।
गूरण, न. उद्यम, उत्तोलन । कोशिश, उठाना ।
गूपण, स्त्री. मयूरचन्द्रक; मोर का चांद ।
गृञ्जन, न. विषदग्ध-पशुमांस, मूलविशेष । ज़हरदार हैवान का गोश्त, गाजर, शलगम, पियाज़, गांजा ।
गृत्स, पु. कन्दर्प, कामदेव ।
गृत्समद, पु. सूर्यवंशीय राजा ।
गृधि, स्त्री. बड़ी अभिलाषा । हिरस ।
गृधु, पु. कामदेव, अभिलाषुक । ख़ाहिशमंद ।
गृध्नु, त्रि. लुब्ध; लालची ।
गृध्र, पु. पक्षीविशेष (त्रि) लोभी । गिद्ध, लालची ।
गृध्रराज, पु. जटायुपक्षी; गरुड़ । [बदरी, कादमरी ।
गृष्टि, स्त्री. एकवार प्रसूता गौ; रतालु, ज़मीकन्द,
गृह, न. इष्टकादिरचित वास गृह; घर, स्त्री, राशि ।
गृहकच्छप, पु. गंधआदि पीसने की शिला ।
गृह-पति, पु. गृहस्थ, मन्त्री, धर्म्म । घर का मालिक, वज़ीर, ईमान ।
गृहगोधा(धिका), छिपकली ।
गृहपाल, पु. कुक्कुर; कुत्ता । [कौआ, बगुला ।
गृहबलिभुज्, पु. चटक, काक, बक । चिड़िया,
गृहभेदिन्, भित्तिचौर । नक़बज़न ।
गृहमणि, पु. प्रदीप; दीया ।
गृहमाचिका, स्त्री. चर्म चटिका; चमगीदड़ ।
गृहमृग, पु. कुत्ता ।

गोधूमचूर्ण, न. पीसी हुई गेहूं, आटा वगैरह ।
गोधूलि(ली), स्त्री. कालविशेष । आफ़ताबके ग़रूब होने का वक़्त ।
गोधेनु, स्त्री. दुग्धवती–गाभी; दूध देनेवाली गाय।
गोनर्द, न. कैवर्त्तीमुस्तक, (पु) सारस पक्षी;मुथांघास, देशवि०, काश्मीर देशीय राजा वि० ।
गोनर्दीय, पु. पतञ्जलि मुनि ।
गोनस, पु. बृहत् सर्प्पविशेष, रत्नविशेष ।
गोनाथ, पु. अनड्वान्, गोपाल; बैल, ग्वाला।
गोप, पु. अहीर, पादशाह । हाफ़िज़, (त्रि.) मुहाफ़िज़, मेहरबान (स्त्री) (पी) ग्वालन (पा) श्यामालता, अहीरी ।
गोपकन्या, स्त्री. शारीरौपधि, गोपिका ।
गोपति, पु. शिव, सूर्य्य, वृष, राजा, ऋषभनाम औषधि, पृथ्वीपति, इन्द्र ।
गोपन, न. आच्छादन, कुत्सन, रक्षा, व्याकुलत्व, दीप्ति, तमालपत्र । छिपाना, गाली देना, हिफ़ाज़त करना, बेकरारी, चमक, तमालका पत्ता ।
गोपनार्ह, त्रि. गोपनीय; छिपाने के लायक ।
गोपवधू, स्त्री. गोपभार्य्या; अहीरी ।
गोपानसी, स्त्री. बड़ भी; घरों के अग्र भाग के ऊपर की तिरछी लकड़ी, छज्जा ।
गोपायक, त्रि. रक्षणकारी । मुहाफ़िज़ ।
गोपायित; त्रि. रक्षित । हिफ़ाज़त किया हुआ, छिपाया हुआ ।
गोपायितृ, त्रि. रक्षक ।
गोपाल, पु. गोरक्षक, राजा, नन्दनन्दन । ग्वाला, पादशाह, नन्दराज का बेटा ।
गोपालिका, स्त्री. गोपालपत्नी, कीटविशेष; अहीरी । एक किसम का कीड़ा ।
गोपिका, स्त्री गोपी, रक्षित्री; अहीरी, मुहाफ़िज़ह।
गोपित, त्रि. रक्षित, पालित, गुप्त । छिपाया हुआ ।
गोपितृ, त्रि. गोप्ता । हिफ़ाज़त करने वाला ।
गोपीथ, पु. रक्षण, (न) तीर्थस्थान ।
गोपुटा, स्त्री. स्थूलैला; मोटी इलायची ।
गोपुर, न. नगरद्वार, द्वार । शहर का दरवाज़ा, ।
गोपुरीप, पु. गोमय; गोबर ।
गोपेन्द्र, पु. विष्णु, नन्द । [वाला, छिपानेवाला ।
गोप्तृ, पु. रक्षक, अप्रकाशक । हिफ़ाज़त करने

गोप्य, त्रि. रक्षणीय, गोपनीय, गोपीसमूह, (पु) दास, दासी–पुत्र ।
गोप्याधि, पु. बन्धकविशेष; जो रुपैया महाजन के पास सिरफ़ हिफ़ाज़त के लिये रक्खा जावे ।
गोप्रचार, पु. गोचारण स्थान । चरागाह ।
गोप्रतर, पु. तीर्थविशेष । [सूत्र बनाने वाला ।
गोभिल, पु. मुनिविशेष; सामवेदीय संध्या का
गोमतल्लिका, स्त्री. सुशीलागो । हलीम गाय।
गोमत्, त्रि. गौशाली (स्त्री) (ती) स्वनामख्याता नदी, वैदिक मन्त्रभेद, मृतगोनिक्षेपणीया-भूमि ।
गोमय, न. पु. जंगल, गोस्वरूप । गाय जैसा ।
गोमायु, पु. शृगाल, गन्धर्व्वविशेष, (न) गोपित्त । गीदड़, नाम एक गंधर्व का । [भिक्षुशिष्य।
गोमिन्, त्रि. गोमान्, उपासक, (पु) शृगाल, बुद्ध
गो-मुख, कुटिलाकार गृह, कुटिल वाद्यभाण्ड, शृंगादि, (पु) प्रमथवि०, यज्ञवि०, स्त्री (खी) गंगापात गुहा, नदीवि०, न. स्त्री. जपमाला का मेरु।
गोमूत्रिका, स्त्री. चित्रकाव्यका बंधवि० ।
गोमूत्र, न. गोजल स्त्री (त्रिका) तृणवि०, चित्रकाव्यविशेष । गौका पेशाब ।
गो-मेद, पु. राहुरत्न; गोमेद, जवाहर, द्वीपवि० ।
गो-मेध, पु. यज्ञविशेष ।
गोयुग, न. गोद्वय । [(स्त्री) खास एक पौदा।
गोरक्ष, पु. नारंग (त्रि) गौकी रक्षा करने वाला
गो-रण, न. उद्यम । कोशिश ।
गो-रस, पु. न. दुग्ध, दधि, तक्र; दूध दही, छाछ।
गोराटी, **गोराण्टिका**, **गोरिका**, } स्त्री. शारिका पक्षी । सारी चिड़िया ।
गोरुत, न. गायकी आवाज, दो कोस ।
गोरोचन(ना) न. स्त्री स्वनाम ख्यात द्रव्य; गायके माथे में से निकली हुई पीतवर्णवस्तु ।
गोल, पु. वर्तुल, मण्डल, अलिंजर, विधवा-संतान, एकराशिस्थपड्ग्रहयोग (ला) स्त्री. दुर्गा, गोदावरी नदी । सखी । [(न) मंडल ।
गोलक, पु. जार से उत्पन्न विधवाकी संतान,
गोलांगूल, पु. कृष्णमुख कपि विशेष, न्यायविशेष, (न) गायकी पूंछ ।
गोलोक, पु. स्वर्ग विशेष । वैकुण्ठ ।

गृहमेधिन्, पु. गृहस्थी । घर का मालिक ।

गृहमेधीय, त्रि. गृहस्थ सम्बन्धीय । घर बाहिरके मुतल्लिक ।

गृहयालु, पु. ग्रहीता; लेने वाला ।

गृहवाटिका, स्त्री. घरमेका बाग़ ।

गृहस्थ, पु. द्वितीयाश्रमी; बालबच्चेदार ।

गृह, पु. गृह (स्त्री) (हा) दारा; घर, औरत ।

गृहागत, पु. अतिथि । महमान, या पाहुना ।

गृहायनिक, पु. गृहस्थ । कुवीलदार ।

गृहाराम, पु. घरका बाग़ ।

गृहावग्रहणी, स्त्री. चौखट ।

गृहाशया, स्त्री. ताम्बूली; पान का पौदा । [सिल ।

गृहाश्मन्, पु. पेषणशिला; पीठीआदि पीसने की

गृहिन्, पु. गृहस्थ, (स्त्री) (णी) जोरू ।

गृहीत, त्रि. स्वीकृत, प्राप्त, धृत । मनजूर किया हुआ, हासिल किया हुआ, पकड़ा हुआ ।

गृहीतव्य, त्रि. ग्रहणीय; लेने के लायक़ ।

गृहीतृ, त्रि. गृहीता; लेने वाला ।

गृह्य, त्रि. अधीन, गृहोत्पन्न, ग्रहणीय, (पु) गृहासक्त मृगादि, (न) गुद, ग्रन्थभेद ।

गृह्यदेवता, स्त्री. कुलदेवता ।

गेय, न. गीत, (त्रि) गातव्य । गीत, गाने के लायक ।

गेह, न. गृह; घर ।

गेहिन्, त्रि. गृही । घरबारी ।

गेहनर्दिन्, त्रि. अपने घरमेंहि गर्जनेवाला ।

गैरिक, न. रक्तवर्ण मृत्तिका; गेरु मट्टी ।

गो, पु. स्वर्ग, खण्ड, सूर्य्यरश्मि, वज्र, चन्द्र, वृष, सूर्य्य, गोमेध-यज्ञ, (स्त्री) गौ, चक्षु, बाण, दिक्, वाक्, भू, (पु-न) लोम, जल ।

गोकर्ण, पु. परिमाणविशेष, मृगभेद, अश्वतर, सर्पभेद, तीर्थविशेष, (स्त्री) (र्णा) बालिश्त, एक किसम का हरण, खच्चर, बछेरह, एक किसम का सांप ।

गोकिल-गोकील, पु. मूषल; मूसल, हल ।

गोकुल, न. गोसमूह, यमुना के पास नंद राजा के रहने का गांव । गाइयों का झुंड या बांधनेकी जगह ।

गोकृत, न. गोमय; गोबर ।

गोयुग, न. गोद्वय; दो बैल ।

गोगोष्ठ, न. गो स्थान; गाय बांधने की जगह ।

गोगृष्टि, स्त्री. सकृत्प्रसूता गौ; पहलन गाय ।

गोग्रन्थि, पु. करीष, गोशाला; सूका गोबर, उपला ।

गोघ्न, पु. अतिथि, (त्रि) गोहत्याकारी ।

गोचर, पु. इन्द्रियार्थ, गृह, गोचारण-क्षेत्र (त्रि.) स्थित । रूप रस गंध शब्द, और स्पर्श, चरगाह, कायम । [३ गज़ चौड़ा ।

गोचर्म्मन्, न. गाय की खाल, १०० गज़ लम्बा

गोछाल, पु. करतल; हाथ की तली ।

गोजा, स्त्री. गोलोमिका वृक्ष ।

गोडु, पु. गोण्ड; नाभि पर बढ़ा हुआ मांस ।

गोडुम्ब, पु. शीर्णवृन्त, (स्त्री) (म्बा) तरबूज़, खीरा ।

गोणी, स्त्री. प्राचीन वस्त्र; पुराना कपड़ा, बस्ता, थैला ।

गोण्ड, पु. जातिवि०, चढ़ी हुई नाक ।

गोतम, पु. ब्रह्मा का पुत्र, न्यायशास्त्रप्रणेता, श्रेष्ठ गौ ।

गोतल्लज, पु. उत्तम गौ; अच्छी गाय ।

गोत्र, न. कुल, क्षेत्र, वर्त्म, छत्र, संघ, गोगृह, वृद्धि, वित्त, (पु) पर्वत, उत्थित (स्त्री) (त्रा) पृथिवी ।

गोत्रज, त्रि. वंशीय । खान्दानी ।

गोत्रभिद्, पु. इन्द्र । [दान करने वाला ।

गोद, पु. मस्तकस्नेह, (त्रि) गौदाता । मगज़, गौ-

गोदन्त, पु. हरिताल, गाय का दांत, खास निमक ।

गोदान, न. केशान्त संस्कार ।

गोदारण, न. लांगल, कुदाल ।

गोदा, **गोदावरी**, } स्त्री. नदीविशेष ।

गोदोहिनी, स्त्री. दोहनेका पात्र ।

गोद्रव, पु. गोमूत्र । गायका पेशाब ।

गोधन, न. गोसमूह, (पु.) स्थूलाग्रबाण । गाईयों का गल्लह, तुक्कह ।

गोधा(धिका), स्त्री. ज्याघात-वारणा, जन्तुविशेष । खाल की एक बांह जो तीरन्दाज़ चिल्ले की चोट से बचने के लिये बांई ओर पहरते हैं । गोह सांप या घड़ियाल ।

गोधि, पु. ललाट, गोधिका; माथा, घड़ियाल ।

गोधूम, पु. गेहूं अनाज ।

गोधूमचूर्ण, न. पीसी हुई गेहूं, आटा वग़ैरह ।
गोधूलि(ली), स्त्री. कालविशेष । आफ़ताबके ग़रूब होने का वक़्त ।
गोधेनु, स्त्री. दुग्धवती-गाभी; दूध देनेवाली गाय।
गोनर्द, न. कैवर्त्तीमुस्तक, (पु) सारस पक्षी; मुथां-घास, देशवि०, काश्मीर देशीय राजा वि० ।
गोनर्दीय, पु. पतञ्जलि मुनि ।
गोनस, पु. वृहत् सर्प्पविशेष, रत्नविशेष ।
गोनाथ, पु. अनड्वान्, गोपाल; बैल, ग्वाला ।
गोप, पु. अहीर, पादशाह । हाफ़िज़, (त्रि.) मुहाफ़िज़, मेहरबान (स्त्री) (पी) ग्वालन (पा) श्यामालता, अहीरी ।
गोपकन्या, स्त्री. शारीरौषधि, गोपिका ।
गोपति, पु. शिव, सूर्य्य, वृष, राजा, ऋषभनाम औषधि, पृथ्वीपति, इन्द्र ।
गोपन, न. आच्छादन, कुत्सन, रक्षा, व्याकुलत्व, दीप्ति, तमालपत्र । छिपाना, गाली देना, हिफ़ाज़त करना, बेकरारी, चमक, तमालका पत्ता ।
गोपनार्ह, त्रि. गोपनीय; छिपाने के लायक ।
गोपवधू, स्त्री. गोपभार्य्या; अहीरी ।
गोपानसी, स्त्री. बड़ भी; घरों के अग्र भाग के ऊपर की तिरछी लकड़ी, छप्पा ।
गोपायक, त्रि. रक्षणकारी । मुहाफ़िज़ ।
गोपायित; त्रि. रक्षित । हिफ़ाज़त किया हुआ, छिपाया हुआ ।
गोपायितृ, त्रि. रक्षक ।
गोपाल, पु. गोरक्षक, राजा, नन्दनन्दन । ग्वाला, पादशाह, नन्दराज का बेटा ।
गोपालिका, स्त्री. गोपालपत्नी, कीटविशेष; अहीरी । एक किसम का कीड़ा ।
गोपिका, स्त्री गोपी, रक्षित्री; अहीरी, मुहाफ़िज़ह।
गोपित, त्रि. रक्षित, पालित, गुप्त । छिपाया हुआ ।
गोपितृ, त्रि. गोप्ता । हिफ़ाज़त करने वाला ।
गोपीथ, पु. रक्षण, (न) तीर्थस्थान ।
गोपुटा, स्त्री. स्थूलैला; मोटी इलायची ।
गोपुर, न. नगरद्वार, द्वार । शहर का दरवाज़ा, ।
गोपुरीष, पु. गोमय; गोवर ।
गोपेन्द्र, पु. विष्णु, नन्द । [वाला, छिपानेवाला ।
गोप्तृ, पु. रक्षक, अप्रकाशक । हिफ़ाज़त करने

गोप्य, त्रि. रक्षणीय, गोपनीय, गोपीसमूह, (पु) दास, दासी-पुत्र ।
गोप्याधि, पु. बन्धकविशेष; जो रुपैया महाजन के पास सिरफ़ हिफ़ाज़त के लिये रक्खा जावे ।
गोप्रचार, पु. गोचारण स्थान । च रागाह ।
गोप्रतर, पु. तीर्थविशेष । [सूत्र बनाने वाला ।
गोभिल, पु. मुनिविशेष; सामवेदीय संध्या का
गोमतल्लिका, स्त्री. सुशीलागौ । हलीम गाय ।
गोमत्, त्रि. गोशाली (स्त्री) (ती) स्वनामख्याता नदी, वैदिक मन्त्रभेद, मृतगोनिक्षेपणीया-भूमि ।
गोमय, न. पु. जंगल, गोस्वरूप । गाय जैसा ।
गोमायु, पु. शृगाल, गन्धर्व्वविशेष, (न) गोपित्त । गीदड़, नाम एक गंधर्व का । [भिक्षुशिष्य ।
गोमिन्, त्रि. गोमान्, उपासक, (पु) शृगाल, बुद्ध
गो-मुख, कुटिलाकार गृह, कुटिल वाद्यभाण्ड, शृंगादि, (पु) प्रमथवि०, यज्ञवि०, स्त्री (खी) गंगापात गुहा, नदीवि०, न. स्त्री. जपमाला का गेह।
गोमूत्रिका, स्त्री. चित्रकाव्यका बंधवि० ।
गोमूत्र, न. गोजल स्त्री (त्रिका) तृणवि०, चित्रकाव्यविशेष । गौका पेशाब ।
गो-मेद, पु. राहुरत्न; गोमेद, जवाहर, द्वीपवि० ।
गो-मेध, पु. यज्ञविशेष ।
गोयुग, न. गोद्वय । [(स्त्री) खास एक पोदा।
गोरक्ष, पु. नारंग (त्रि) गौकी रक्षा करने वाला
गो-रण, न. उद्यम । कोशिश ।
गो-रस, पु. न. दुग्ध, दधि, तक्र; दूध दही, छाछ।
गोराटी, **गोराष्टिका**, **गोरिका**, } स्त्री. शारिका पक्षी । सारी चिड़िया ।
गोरुत, न. गायकी आवाज, दो कोस ।
गोरोचन(ना) न. स्त्री स्वनाम ख्यात द्रव्य; गायके माथे में से निकली हुई पीतवर्णवस्तु ।
गोल, पु. वर्तुल, मण्डल, अलिंजर, विधवा-संतान, एकराशिस्थषड्ग्रहयोग (ला) स्त्री. दुर्गा, गोदावरी नदी । सखी । [(न) मंडल ।
गोलक, पु. जार से उत्पन्न विधवाकी संतान,
गोलांगूल, पु. कृष्णमुख कपि विशेष, न्यायविशेष, (न) गायकी पूंछ ।
गोलोक, पु. स्वर्ग विशेष । वैकुण्ठ ।

गोवर्द्धन, पु. वृंदावनस्थ पर्वतविशेष ।
गोवर्द्धनधर, पु. श्रीकृष्णदेव ।
गोवशा, स्त्री. बांझ गाय ।
गोविंद, पु. श्रीकृष्ण, बृहस्पति (त्रि) गौवों का स्वामी ।
गो-विष्ट, स्त्री. गाय का गोबर ।
गो-वीथी, स्त्री. नक्षत्रों की संज्ञा ।
गो-वृन्द, न. गौवों का समूह ।
गोशाल, न. गौवों के रहने का स्थान, स्त्री. (ला) ।
गोशीर्ष, न. चंदन, । गायका माथा । [मजलस ।
गोष्ठ, पु. न. गौवोंके रहनेका स्थान, स्त्री. (ष्ठी) सभा ।
गोष्ठ (ष्ठ्या), त्रि. निंदक, परहिंसक,
गोष्पद, न. गाईयोंके फिरनेकी जगह, गायका खुर, गायके खुरसमान ।
गोस, पु. गोल, प्रातःकाल । सुबह । [निवाला ।
गोसंख्य, पु. ग्वाला (त्रि) गौवो की संख्या कर-
गोसर्प, पु. गोहसांप ।
गोसर्पिका, स्त्री. वेश्या, गोह सांपिनी ।
गोसगृह, न. सोनेका घर, शयनागार ।
गो-सव, पु. गोमेध यज्ञ ।
गोस्तन, पु. चार से चौंतीस लड़ीतक का हार । गाय का स्तन स्त्री. (ना)(नी) दाखका गुच्छा ।
गो-स्वामिन्, पु. गौवों का मालिक, वाणीपति । उपाधिविशेष ।
गो-हित, पु. बिल्व, (त्रि) गोवों का हितकारी ।
गो-हिर, न. पादमूल; टखना, गिट्टा ।
गौ, पु. प्रसिद्ध पशु; बैल (स्त्री) गाय ।
गौं-जिक, पु. स्वर्णकार; सुनार ।
गौड, पु. देश विशेष । बहु० गौड़देशनिवासी । स्त्री. (डी) मद्यविशेष, काव्यकी रीतिविशेष, एकरागिनी ।
गौडिक, त्रि. मद्यविशेष; गुड़का । [वृत्तिविशेष ।
गौण, त्रि. अप्रधान, गुणयुक्त, स्त्री. (णी) शब्द-
गौतम, पु. मुनिविशेष स्त्री० (मी) राक्षसी-वि०, गोदावरीनदी, गोरोचना, कृपी, (त्रि) गौ-तम वंशका ।
गौधार, **-धेय**, **-धेर**, पु. गोह, गिरगिट ।
गौर, न. पद्म केशर, कुंकुम, स्वर्ण, श्वेतसर्षप, चंद, धववृक्ष, स्त्री. (री) दुर्गा, पृथ्वी, अष्टवर्षाकन्या, हरिद्रा, नदीविशेष, वरुणपत्नी, रागिणीविशेष ।
गौरव, न. गुरुत्व, प्रभाव, समादर, (त्रि) गुरुसंबंधी । बड़ाई, भारीपन, इज़त, गुरु का ।
गौरवित, त्रि. प्रतिष्ठित, मानी । मुभज़िज़ ।
गौरसर्षप, पु. सेती सरसों ।
गौरिका, स्त्री. अष्टवर्षाकन्या; आठ बरस की कन्या ।
गौरिल, पु. लोहचूर्ण, सुफेद सरसों ।
गौरीज, न. अभरक, पु. स्वामिकार्तिक, गणेश ।
गौरीपट (पाट्ट) पु. शिवलिङ्गकी पीठ; जलहरी ।
गौरीशिखर, न. हिमालयकी एक चोटी ।
गौष्ठीन, न. जहां कभी गाय बांधी जातीथीं ।
ग्रथित, त्रि. गांठा हुआ, पिरोया हुआ । [गांठ, मिलाप ।
ग्रन्थ, पु. ३२ अक्षर का श्लोक, पुस्तक, स्त्री. (न्थी)
ग्रन्थक, पु. ग्रन्थके बनानेवाला, लिखारी, मालाका डोरा । [(ना) रचना ।
ग्रन्थन, न. गांठना, जमाकरना, इकट्ठाकरना, स्त्री.
ग्रन्थि, पु. बांस आदिमें की गांठ, देहके जोड़, गांठ ।
ग्रन्थिक, न. पिप्पलीमूल, (पु.) दैवज्ञ, सहदेव ।
ग्रन्थित, त्रि. बंधाहुआ, रचाहुआ, तसनीफ़ किया हुआ, गांठा हुआ ।
ग्रन्थिमत्, **ग्रन्थिल**, त्रि. गांठदार । गंठीला ।
ग्रन्थिमूल, न. गृंजन, लस्सन ।
ग्रसन, न. खाना । निगलना ।
ग्रसमान, त्रि. भक्षमाण; खाता हुआ ।
ग्रसिष्णु, त्रि. भक्षक; खानेवाला, खाऊ ।
ग्रस्त, त्रि. लुप्तवर्णपदवाक्य, भुक्त, आच्छादित । पकड़ाहुआ, खाया हुआ ढंकाहुआ, निगला हुआ ।
ग्रह, पु. सूर्य आदि नव, पूतना आदि, ग्रहण. रणका उद्यम, साहस, हठ, बोध, ज्ञान ।
ग्रहण, न. स्वीकार, आदर, वशीकरण, बंधन, लाभ, उपराग, इन्द्रिय, शब्द ।
ग्रहणि(णी), स्त्री. रोगवि० । अतीसार ।
ग्रहणीहर, न. लवङ्ग; लौंग ।
ग्रहनायक, पु. शनि, सूर्य ।
ग्रहनेमि, चन्द्र; चांद ।
ग्रह-पति, पु. सूर्य्य । आफ़ताब ।
ग्रह-राज, पु. सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति ।

ग्रह-वन्हि, पु. ग्रहोंकी नव अग्नियें १ कपिल २ पिंगल ३ धूमकेतु ४ जठराग्नि ५ शिखी ६ हाटक ७ महातेजा ८ हुताशन ९ हुताग्नि ।
ग्रहविप्र, पु. ज्योतिषी; ग्रहपूजा करानेवाला ।
ग्रहामय, पु. आवेश; मृगीका रोग ।
ग्रहिल, त्रि. आग्रही; हठी ।
ग्रहीतृ, त्रि. ग्राहक; लेनेवाला ।
ग्राम, पु. गांओ, मजमा, षड्ज मध्यम और गांधार स्वरमें रागका आलाप ।
ग्रामकट, पु. शूद्र, ४ थं; वर्ण ।
ग्रामगृह्य, त्रि. ग्रामवहिर्भूत । [वाहर हुआ २ ।
ग्राम (टिका)(टी), स्त्री. छोटासा गांओं । गांओंसे
ग्रामणी, त्रि. गांओंमें प्रधान पुरुष, सर्दार (पु) नाई, (स्त्री) कंचनी, छिनाल औरत ।
ग्रामतस्, व्य. गांओंसे ।
ग्रामता, स्त्री. वहुतसे गांओं ।
ग्राममुख, पु. हाट, वाज़ार, मेला ।
ग्रामस्थ, त्रि. ग्रामीण । देहाती ।
ग्रामान्त, पु. गाओंकी हद्द ।
ग्रामीण, त्रि. गांओंका, पु० कुत्ता, विल्ली, कौआ ।
ग्राम्य, त्रि. गांओका, छोटा, नीच । फ़ोश ।
ग्राम्य-धर्म, पु. स्त्री-मैथुन । जमा । [गधा ।
ग्राम्य-पशु, पु. गाय, भैंस, वकरी, घोड़ा, कचर,
ग्राम्यमृग, पु. कुकर; कुत्ता । [कुम्भ, वृष, मेष ।
ग्राम्यराशि, स्त्री. मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन,
ग्राम्याश्व, पु. गर्दभ; गधा ।
ग्रावन्, पु. पत्थर, पहाड़ वादल (त्रि) मजबूत ।
ग्रास, पु. कवल । लुकमा ।
ग्रासाच्छादन, न. अन्नवस्त्र । नानपार्चा । [नना ।
ग्राह, पु. हांगर, जलहस्ती, घड़ियाल (न) लेना, जा-
ग्राहक, पु. घड़ियाल (त्रि) लेनेवाला ।
ग्राहित, त्रि. स्वीकारित । मनजूर कराया हुआ, पकड़ाया हुआ । [वाला, मंचनेवाला ।
ग्राहिन्, पु. कपित्थ, (त्रि) लेनेवाला, पकड़ने-
ग्राह्य, त्रि. लेनेके लायक, जीतनेयोग्य ।
ग्रीवा, स्त्री. कन्धरा । गर्दन, गलदेश ।
ग्रीविन्, पु. उष्ट्र (त्रि) प्रशस्तग्रीवी । ऊंट, उमदी गर्दनवाला । [स्त्री (ष्मी) मालती ।
ग्रीष्म, पु. ऋतुविशेष (त्रि) ऊष्म । मौसिम गरमा,
ग्रीष्महास, न. आकका फल फूल ।
ग्रैव, } न. ग्रीवाभूषण, हार, कंठा, हाथीका
ग्रैवेय(क), } संगल ।
ग्रैष्म, त्रि. गरम मौसमका (स्त्री) (ष्मी) मालतीफ़ूल ।
ग्लपित, त्रि. क्लान्त, थकाहु०, मुरझाया हुआ । जला हुआ ।
ग्लस्त, त्रि. भक्षित, खायाहु०, ग्रसा हुआ ।
ग्लह, पु. जूआ । बाज़ी ।
ग्लान, } त्रि. ग्लानियुत, रोगसे दुवला, वी-
ग्लास्नु, } मार (स्त्री) (नि) रोग, नफ़रत ।
ग्लौ, पु. चंद्र, कर्पूर । चांद, काफ़ूर ।

घ.

चतुर्थ व्यञ्जन कण्ठ्य है । [चोट ।
घ, पु. घंटा, घर्घरशब्द, वर्ष, (स्त्री) (घा) तागड़ी,
घट, पु. कलश, ११ वी, राशि, हाथीका माथा, ३२ सेर वज़न (स्त्री) (टा) सभा, समूह, वादल, (टी) कलसी, घड़ी । [भाट ।
घट, पु. विनाफ़ूल फलनेवाला, कटार, कुलपुरोहित,
घटकर्पर, न. घड़ेका कपाल, (पु) कविविशेष; भोजराजकी सभाका पण्डित, काव्यविशेष ।
घटन, न. योजन (स्त्री) (ना) । योजना । वार्दात ।
घटयोनि, पु. अगस्तमुनि ।
घटिक, न. नितंब (पु) मल्लाह (स्त्री) (का) एक घड़ी ।
घटित, त्रि. रचाहुआ, बनायाहुआ ।
घटिन्धम, पु. कुम्हार ।
घटीयन्त्र, न. वकत जाननेकी घड़ी, अरहट ।
घटोत्कच, पु. राक्षस, हिडिंवाके गर्भसे भीमसेन-का पुत्र ।
घट्ट, पु. घाट ।
घट्टन, न. घर्षण, घिसना, (स्त्री) (नी) घोटनी ।
घट्टित, त्रि. घड़ा हुआ, चलाया हुआ ।
घण्ट, पु. भाजी, तर्कारी, (स्त्री) (ण्टा) टल्ल । [ण्डित ।
घण्टाकर्ण, पु. शिवका एक अनुचर; एक खास प-
घण्टापथ, पु. शाह सड़क ।
घण्टी(ण्टिका), स्त्री. घंटी, टल्ली, घुंगरु ।
घण्टेश्वर, पु. शिव, भौमपुत्र ।
घण्ड, पु. भ्रमर; भौंरा ।
घन, पु. मेघ, मुस्ता, ओघ, दृढता, लोहेका मोहला, कफ, अभ्रक, मुकाव (न) कंसी, ढना,

चिल्लाभ, पु. प्रसह्य चोर; धाड़वी।
चिबु(क), पु. दाढ़ी, ठोडी।
चिन्ह, न. नशान, दाग़, झंडा।
चिन्हित, त्रि. चिन्ह किया हुआ।
चि(ची)त्कार, पु. चीख़।
चीन, न. पताका, सीसक, देशविशेष, अङ्कुशविशेष, धान्यविशेष, मृगविशेष, तन्तु।
चीर, न. पेड़ोंका छिलका, चीथड़ा, गायके थन, पेटी, सीसा, झींगर, कपड़ेका किनारा (स्त्री) (री) झिल्ली।
चीरभृत्, } स्त्री. चीथड़े पहिरे हुए, तपस्वी।
चीरिन्, } पु.
चीर्ण, त्रि. कृत, संचित, शिक्षित, भेदित। किया, इकट्ठा किया, सीखा हुआ, तोड़ा हुआ, फटा हुआ।
चीवर, न. कुपीन।
चुक्कार, पु. सिंहका गर्जन। शेरकी दहाड़।
चुक्र, न. खट्टी वस्तु, स्त्री. (क्रा) इमली, लूनक शाक।
चु(चू)चक, पु. चूची। [स्तानकी गोलायता।
चुञ्चुक, न. कुचाग्र, (पु.) स्तनवृत्त। फ़ितनी, पि-
चुण्डा, स्त्री. कूआ (ण्टी) चौबच्चा।
चु(चू)त(ति), पु. गुदाद्वार; गांट, कुस।
चुब्र, न. वदन। चेहरा।
चुम्ब, पु. मुहसे मुंह मिलाना; चूमा।
चुम्बक, पु. अयस्कान्त। मिकनातीस।
चुम्बन, न. मुखसंयोग; चूमना।
चुरा, स्त्री. चौर्य; चोरी।
चुलुक, पु. गण्डूष (न) कीचड़, छोटी हंडिया, चुल्ली।
चूडक, पु. कूप; कूआ।
चूडा(ला), स्त्री. मोरकी चोटी, चोटी, शंख, संस्कारविशेष,। माथा, शिर का भूषण, बाजूबंध।
चूडाकरण, } न. दस संस्कारों मे से एक;
चूडाकर्म, } पु. मूंडन।
चूडान्त, पु. न. सिद्धान्त। फ़ैसला। [चुड़ाल घास।
चूडाल, न. मस्तक, (त्रि) चूड़ावाला, (स्त्री) (ला)
चूत, पु. आमका पेड़ (न) आमका फल।
चूर्ण, पु. न. चूरा, (स्त्री) (र्णि) (र्णी) महाभाष्यकी व्याख्या, धूलि, सत्तू, चूरन। [सत्तू, चूरन।
चूर्णक, न. गद्य भाषा में लिखे हुए ग्रन्थ, (पु)
चूर्णकार, पु. जाति विशेष। चूनारि।
चूर्ण कुन्तल, पु. अलक। ज़ुलफ़।
चूर्णपद, न. एक प्रकारकी नृत्य; पांओंके अगले पीछेकी ओर मुड़कर नाचना। [कौड़ियें।
चूर्णि(र्णी), स्त्री. पातञ्जल भाष्य, नदी विशेष, सौ
चूर्णित, त्रि. पिसा हुआ। [का एक अङ्क।
चूलिका, स्त्री. हाथीकी कनपटीका अन्त, । नाट्य
चूषा, स्त्री चूसना, हाथीकी कक्षा बांधनेका रस्सा।
चूषित, त्रि. निपीत; चूसा हुआ।
चूष्य, त्रि. चोषणीय; चूसने योग्य।
चेट(ड), पु. दास (स्त्री) (टी) (डी) दासी।
चेडिका(चेडी), स्त्री. दासी।
चेत्, अ. यदि। अगरचे।
चेतन, न. आत्मा, जीव (न) चित्त (त्रि) प्राणी।
चेतस्, न. मन, दिल। ख़याल।
चेतकी, स्त्री. हरीतकी; हरीड़।
चेतव्य, त्रि. चयनीय; चुनने योग्य।
चेदार, पु. ज्येष्ठिक; गिरगिट।
चेदि, पु. देशविशेष चंदेरीका मुलक।
चेदिपति } पु. शिशुपाल राजा।
चेदिराज }
चेय, त्रि. चुनने योग्य। [अधम (स्त्री) (ला) अधमा।
चेल, न. वस्त्र, पोशाक (पु) फललता विशेष, (त्रि)
चेलिका, स्त्री. कंचुकी; अंगिया। [मिहनती।
चेष्टक, पु. रतिबन्ध विशेष, (त्रि) चेष्टाकारी।
चेष्टन, न. यत्नकरना। कोशिशकरना।
चेष्टा, स्त्री. कोशिश, तलाश, हर्कत।
चेष्टित, न. गति, चेष्टा, यत्न, कर्म, (त्रि) चेष्टाकारी। हर्कत, कोशिश।
चैतन्य, न. चेतना, ब्रह्म, पु. चैतन्यदेव। ज़िंदगी, काम, हर्कत किया हुआ, कोशिश की हुई।
चैत्य, न. पूजायतन, चिता, (पु) बौद्धोंका मठ, बौद्धोंकापूज्यवृक्ष, (त्रि) चिताका। पूजाका घर, चिता। [नक्षत्र वालीपुन्या।
चैत्र(त्रि)क, पु. चैतका महीना, स्त्री. (त्री) चित्रा
चैद्य, पु. चंदेरीका राजा।
चोदना, स्त्री. प्रेरणा। उकसाना।
चोदयितृ, (त्रि) प्रेरक। उकसानेवाला।
चोदित, त्रि. प्रेरित; भेजा हुआ।

चोद्य, त्रि. भेजने योग्य, न. अजीब सवाल ।
चोयन, न. मौन (त्रि) शनैर्गामी ।
चोर, पु. चोर, कविविशेष, (स्त्री) (री) लताविशेष ।
चोल (क) न. स्त्री. (लिका) चोली, पिसवाज (पु) देशविशेष
चौरतम्, व्य. चोरीसे.
चौर्य, न. चोरी ।
च्यवन, न. चूना, सीमना, (पु) ऋषिविशेष ।
च्युत, त्रि. क्षरित, दरित (स्त्री) (ति) क्षरण; गिरा हुआ, चुआ हुआ, फ़िसला हुआ ।
च्युताचार, पु. अपने धर्मसे गिरा हुआ ।[त्थर ।
च्युतोपल, पु. भ्रष्टरत्न । गिराहुआ जवाहर या प-
च्योतत्, त्रि. चूता हुआ ।

छ.

छ, पु. काटना, घर, रसोई, (त्रि) निर्मल, तरल, छेदक (स्त्री) (छी) छाछ ।
छग, पु. छाग (स्त्री) (गी) बकरा, बकरी ।
छगण, पु. न. करीष; सूकागोबर । [ख़ासफूल, बकरी।
छगल, पु. छाग (न) नीलावस्त्र (स्त्री) (ली) एक-
छटा, स्त्री. दीप्ति, शोभा, समूह, सूची, रेखा । चमक, शान, मजमा, सूई, लकीर ।
छटाभा, स्त्री. विद्युत् । बिजली ।
छत्र, न. छाता, (स्त्री) (त्रा) खुंब, सोयासाग, सौंफ ।
छत्रक, पु. मत्सरंगपक्षी । एककिसम् का परिंद ।
छत्रध(धा)र, (त्रि) छायाकर, छातावरदार ।
छत्रधारिन्, पु. राजाविशेष (त्रि) छातावरदार ।
छत्रपति, पु. अधीश्वर । पादशाह । [वेबादशाही ।
छत्रभङ्ग, पु. वैधव्य, स्वतन्त्रता, राज्यनाश, राजभंग ।
छत्राक, न. शिलींध्र (स्त्री) (की) गवगव ।
छत्रिन्, पु. नाई, (त्रि) छत्रधारी । छातावरदार ।
छत्वर, पु. गृह, कुञ्ज; घर, गली । [कालेफूलहोतेहैं।
छद, पु. पत्ता, पर, एकप्रकारका पोदा जिसके
छदन, न. पत्ता, पर, ढकना, तमालपत्र, तेजपत्र ।
छद्पत्र, पु. भोजपत्रका पेड़ ।
छदि, स्त्री. आच्छादन; ढंकना ।
छद्मन् न. फरेब, छल, कपट ।
छदित्रका, स्त्री. गडूची; गिलो । [वहिरका यज़न ।
छन्द (स) पु. मद, वेद, अपनी मरज़ी, मरज़ी,
छन्दस्तुत्, पु. गरुड़पक्षी ।
छन्दस्य, त्रि. यथाकाम; जैसी मरज़ी ।
छन्दोग, पु. सामवेद गानेवाला ।
छन्दोगपरिशिष्ट, न. कात्यायनमुनिकृत सामवेदियोंके कर्मबोधक स्थान ।
छन्न, न. निर्जनस्थान । तनहाई (त्रि) ढंका हुआ ।
छपण्ड, पु. मृतपितृक । यतीम ।
छर्द, पु. वमन (स्त्री) (र्दा) (र्दिस्) कै ।
छर्दन, न. वमन (पु) अलंबुष । कैकरना
छर्दि(र्दी), स्त्री. राक्षस, निंबवृक्ष, योगविशेष ।
छल, न. फ़रेब, शरारत ।
छलन, न. स्त्री (ना) प्रतारणा, फ़रेब ।
छलिन्, पु. वंचक, धूर्त । फ़रेबी, शरीर ।
छ(लि)ल्ली, स्त्री. वीरुत, सन्तान, पेड़का छिलका, एक ख़ासफल ।
छवि, स्त्री. शोभा । ख़ूबसूरती । [एलफूल, बकरी ।
छागल, पु. अत्रिऋषि, बकरा (स्त्री) (गी) (ली)
छाग (रथ) वाहन, पु. अग्नि ।
छात, त्रि. दुबला, पतला, काटाहुआ ।
छात्र, पु. शिष्य, (न.) छत्तेसे उत्पन्नमधु । [दिखना।
छात्रदर्शन, न. नवनीत; ताज़ामाखन, शागिर्दका
छादन, न. पाटल, छत । ढंकना पर्दा ।
छादित, त्रि. ढांपाहुआ, लपेटाहुआ ।
छाद्य, त्रि. गोप्य; छिपाने योग्य ।
छाद्मिक, त्रि. कपटी, छलिया । फ़रेबी ।
छान्दस, पु. वेदाध्येता, वेदाध्यापक (त्रि) वेदका ।
छान्दोग्य, न. सामवेदका उपनिषद ।
छाया, स्त्री. छांओं, प्रतिबिंब, कांति, दीप्ति, सूर्यप्रिया, श्रेणि, छन्दोवि॰, देवी ।
छायातनय, **छायात्मज**, **छायासुत**, } पु. शनिग्रह; शनीचर ।
छायापथ, पु. आकाश । आसमान ।
छायापुरुष, पु. आकाशमें छायारूप पुरुषाकार ।
छायाभृत, पु. चन्द्रमा; चांद ।
छिक्कक, नवसार (स्त्री) (क्का) छींक ।
छित, पु. "छात" देखो ।
छित्वर, त्रि. धूर्त, वैरी, छेदक । काटने वाला ।

चिल्लाभ, पु. प्रसह्य चोर; धाड़वी ।
चिबु(क), पु. दाढ़ी, ठोडी ।
चिन्ह, न. नशान, दाग़, झंडा ।
चिन्हित, त्रि. चिन्ह किया हुआ ।
चि(ची)त्कार, पु. चीख़ ।
चीन, न. पताका, सीसक, देशविशेष, अङ्कुशविशेष, धान्यविशेष, मृगविशेष, तन्तु ।
चीर, न. पेड़ोंका छिलका, चीथड़ा, गायके थन, पेटी, सीसा, शीगर. कपड़ेका किनारा (स्त्री) (री) झिल्ली ।
चीरभृत्, } स्त्री. चीथड़े पहिरे हुए, तपस्वी ।
चीरिन्, } पु.
चीर्ण, त्रि. कृत, संचित, शिक्षित, भेदित । किया, इकट्ठा किया. सीखा हुआ,तोड़ा हुआ,फटा हुआ।
चीवर, न. कुपीन ।
चुकार, पु. सिंहका गर्जन । शेरकी दहाड़ ।
चुक्र, न. खट्टी वस्तु, स्त्री. (क्रा) इमली, लूनक शाक।
चु(चू)चक, पु. चूची । [स्तनकी गोलायश।
चुञ्चुक, न. कुचाग्र, (पु.) स्तनवृत्त । कितनी, पि-
चुण्डा, स्त्री. कूआ (ण्डी) चौवचा ।
चु(चू)त(ति), पु. गुदाद्वार; गांड, कुश ।
चुम्र, न. वदन । चेहरा ।
चुम्ब, पु. मुहसे मुंह मिलाना; चूमा ।
चुम्बक, पु. अयस्कान्त । मिकनातीस ।
चुम्बन, न. मुखसंयोग; चूमना ।
चुरा, स्त्री. चौर्य; चोरी ।
चुलुक, पु. गण्डूष (न) कीचड़,छोटी हंडिया,चुल्ली।
चूडक, पु. कूप; कूआ ।
चूडा(ला), स्त्री. मोरकी चोटी, चोटी, शंख, संस्कारविशेष, । माथा, शिर का भूषण, बाजूबंध ।
चूडाकरण, } न. दश संस्कारों मे से एक;
चूडाकर्म, } पु. मूंडन ।
चूडान्त, पु. न. सिद्धान्त । फैसला ।[चुड़ाल घास।
चूडाल, न. मस्तक, (त्रि) चूड़ावाला, (स्त्री) (ला)
चूत, पु. आमका पेड़ (न) आमका फल ।
चूर्ण, पु. न. चूरा, (स्त्री) (र्णि) (र्णी) महाभाष्यकी व्याख्या, धूलि, सत्तू, चूरन । [सत्तू, चूरन ।
चूर्णक, न. गद्य भाषा में लिखे हुए ग्रन्थ, (पु)
चूर्णकार, पु. जाति विशेष । चूनारि ।
चूर्ण कुन्तल, पु. अलक । जुल्फ़ ।
चूर्णपद, न. एक प्रकारकी नृत्य; पांओंके अगले पीछेकी ओर मुड़कर नाचना । [कौड़ीयें ।
चूर्णि(र्णी), स्त्री. पातञ्जल भाष्य, नदी विशेष; सौ
चूर्णित, त्रि. पिसा हुआ । [का एक अङ्ग ।
चूलिका, स्त्री. हाथीकी कनपटीका अन्त, । नाटक
चूषा, स्त्री चूसना, हाथीकी कक्षा बांधनेका रस्सा।
चूषित, त्रि. निपीत; चूसा हुआ ।
चूष्य, त्रि. चोष्यणीय; चूसने योग्य ।
चेट(ड), पु. दास (स्त्री) (टी) (डी) दासी ।
चेडिका(चेडी), स्त्री. दासी ।
चेत्, अ. यदि । अगरचे ।
चेतन, न. आत्मा, जीव (न) चित्त (त्रि) प्राणी ।
चेतस्, न. मन, दिल । ख़याल ।
चेतकी, स्त्री. हरीतकी; हरीड़ ।
चेतव्य, त्रि. चयनीय; चुनने योग्य ।
चेदार, पु. ज्येष्ठिक; गिरगिट ।
चेदि, पु. देशविशेष चंदेरीका मुलक ।
चेदिपति } पु. शिशुपाल राजा ।
चेदिराज }
चेय, त्रि. चुनने योग्य । [अधम (स्त्री) (ला) अधमा ।
चेल, न. वस्त्र, पोशाक (पु) फललता विशेष, (त्रि)
चेलिका, स्त्री. कंचुकी; अंगिया । [मेहनती।
चेष्टक,पु. रतिबन्ध विशेष, (त्रि) चेष्टाकारी ।
चेष्टन, न. यत्नकरना । कोशिशकरना ।
चेष्टा, स्त्री. कोशिश, तलाश, हर्कत ।
चेष्टित, न. गति, चेष्टा, यत्न, कर्म, (त्रि) चेष्टाकारी । हर्कत, कोशिश ।
चैतन्य, न. चेतना, ब्रह्म, पु. चैतन्यदेव । ज़िंदगी, काम, हर्कत किया हुआ, कोशिश की हुई ।
चैत्य, न. पूजायतन, चिता, (पु) बौद्धोंका मठ, बौद्धोंकापूज्यवृक्ष, (त्रि) चिताका । पूजाका घर, चिता । [नक्षत्र वालीपुन्या ।
चैत्र(त्रि)क, पु. चेतका महीना, स्त्री. (त्री) चित्रा
चैद्य, पु. चंदेरीका राजा ।
चोदना, स्त्री. प्रेरणा । उकसाना ।
चोदयितृ, (त्रि) प्रेरक । उकसानेवाला ।
चोदित, त्रि. प्रेरित; भेजा हुआ ।

चोद्य, त्रि. भेजने योग्य; न. अजीव सवाल ।
चोयन, न. मौन (त्रि) शनैर्गामी ।
चौर, पु. चोर, कविविशेष, (स्त्री) (री) लताविशेष ।
चोल (क) न. स्त्री. (लिका) चोली, पिसवाज (पु) देशविशेष
चौरतम्, व्य. चोरीसे.
चौर्य, न. चोरी ।
च्यवन, न. चूना, सीमना, (पु) ऋपिविशेष ।
च्युत, त्रि. क्षरित, दरित (स्त्री) (ति) क्षरण; गिरा हुआ, चुआ हुआ, फ़िसला हुआ ।
च्युताचार, पु. अपने धर्मसे गिरा हुआ ।[त्थर ।
च्युतोपल, पु. भ्रष्टरत्न । गिराहुआ जवाहर या प-
च्योतत्, त्रि. चूता हुआ ।

छ.

छ, पु. काटना, घर, रसोई, (त्रि) निर्मल, तरल, छेदक (स्त्री) (छी) छाछ ।
छग, पु. छाग (स्त्री) (गी) वकरा, वकरी ।
छगण, पु. न. करीष; सूकागोवर । [ख़ासफूल, वकरी।
छगल, पु. छाग (न) नीलावस्त्र (स्त्री) (ली) एक-
छटा, स्त्री. दीप्ति, शोभा, समूह, सूची, रेखा । चमक, शान, मजमा, सूई, लकीर ।
छटाभा, स्त्री. विद्युत् । बिजली ।
छत्र, न. छाता, (स्त्री) (त्रा) खुंब, सोयासाग, सौंफ ।
छत्रक, पु. मत्सरंगपक्षी । एककिसम का परिंद ।
छत्रधं(धा)र, (त्रि) छायाकर, छातावरदार ।
छत्रधारिन्, पु. राजाविशेष (त्रि) छातावरदार ।
छत्रपति, पु. अधीश्वर । पादशाह । [वेवादशाही ।
छत्रभङ्ग, पु. वैधव्य, स्वतन्त्रता, राज्यनाश, राजभंग ।
छत्राक, न. शिलींन्ध्र (स्त्री) (की) गयगव ।
छत्रिन्, पु. नाई, (त्रि) छत्रधारी । छातावरदार ।
छत्वर, पु. गृह, कुञ्ज; घर, गली । [कालेफूल होतेहैं।
छद, पु. पत्ता, पर, एकप्रकारका पोदा जिसके
छदन, न. पत्ता, पर, ढकना, तमालपत्र, तेजपत्र ।
छदपत्र, पु. भोजपत्रका पेड़ ।
छदि, स्त्री. आच्छादन; ढंकना ।
छद्मन् न. फरेब, छल, कपट ।
छद्मिका, स्त्री. गडूची; गिलो । [वहिरका वज़न ।
छन्द (स्) पु. मद, वेद, अपनी मरज़ी, मरज़ी,
छन्दस्तुत्, पु. गरुड़पक्षी ।
छन्दस्य, त्रि. यथाकाम; जैसी मरज़ी ।
छन्दोग, पु. सामवेद गानेवाला ।
छन्दोगपरिशिष्ट, न. कात्यायनमुनिकृत साम-वेदियोंके कर्मबोधक स्थान ।
छन्न, न. निर्जनस्थान । तनहाई (त्रि) ढंका हुआ ।
छपण्ड, पु. मृतपितृक । यतीम ।
छर्द, छर्दन, छर्दि(र्दी), } पु. वमन (स्त्री) (र्दी) (र्दिस्) कै । न. वमन (पु) अलंवुप । कैकरना स्त्री. राक्षस, निंवृक्ष, योगविशेष ।
छल, न. फ़रेब, शरारत ।
छलन, न. स्त्री (ना) प्रतारणा, फ़रेब ।
छलिन्, पु. वंचक, धूर्त । फ़रेबी, शरीर ।
छ(लि)ल्ली, स्त्री. वीरुत, सन्तान, पेड़का छिलका, एक ख़ासफल ।
छवि, स्त्री. शोभा । खूबसूरती । [एलफूल, वकरी ।
छागल, पु. अग्निऋषि, वकरा (स्त्री) (गी) (ली)
छाग (रथ) वाहन, पु. अग्नि ।
छात, त्रि. दुवला, पतला, काटाहुआ ।
छात्र, पु. शिष्य, (न.) छत्तेसे उत्पन्नमधु । [दिखनां।
छात्रदर्शन, न. नवनीत; ताज़ामाखन, शागिर्दका
छादन, न. पाटल, छत । ढंकना पर्दा ।
छादित, त्रि. ढांपाहुआ, लपेटाहुआ ।
छाद्य, त्रि. गोप्य; छिपाने योग्य ।
छाद्मिक, त्रि. कपटी, छलिया । फ़रेबी ।
छान्दस, पु. वेदाध्येता, वेदाध्यापक (त्रि) वेदका ।
छान्दोग्य, न. सामवेदका उपनिषद ।
छाया, स्त्री. छांओं, प्रतिविंव, कांति, दीप्ति, सूर्य-प्रिया, श्रेणि, छन्दोवि०, देवी ।
छायातनय, छायात्मज, छायासुत, } पु. शनिग्रह; शनीचर ।
छायापथ, पु. आकाश । आसमान ।
छायापुरुष, पु. आकाशमें छायारूप पुरुषाकार ।
छायाभृत, पु. चन्द्रमा; चांद ।
छिक्कक, नवसार (स्त्री) (का) छींक ।
छित, पु. "छात" देखो ।
छित्वर, त्रि. धूर्त, वैरी, छेदक । काटने वाला ।

छिदि, स्त्री. कुठार; कुल्हाड़ी ।
छिदिर, पु. आग, रस्सी, कुल्हाड़ी ।
छिदुर, त्रि. काटनेवाला, शरीर, वैरी ।
छिद्र, न. छेद, स्पेस, ऐब, फुरसत ।
छिन्न, त्रि. कटाहुआ, (स्त्री) (न्ना) छिनाल औरत् ।
छिन्नद्वैध, त्रि. जिनके सब संशयमिटे हैं । [गया हो।
छिन्नधन्वन्, पु. जिस योधेका धनुष रणमें टूट-
छिन्नभिन्न, त्रि. बिखराहुआ, टूटाफूटा, फैला हुआ । [(पु) सिर कटा पुरुष।
छिन्नमस्ता, स्त्री. दश महाविद्याओंमेंसे एक,
छिन्नरुहा, स्त्री. गड़ूची; गिलो, पीलीकेतकी, सही ।
छुरल, न. लेपन; लिपना ।
छुरा, स्त्री. चूरा, अमृत, चूना ।
छुरि(री)का, स्त्री. छुरी ।
छूरिका, स्त्री. बांझ गाय ।
छुरित, त्रि. छिन्न, क्षिप्त, व्याप्त, कल्पित ।
छेक, त्रि. चतुर, पालतूपक्षी, पशु, मृग, नगरका, (स्त्री) (का) मत्त स्त्री ।
छेकोक्ति, स्त्री. पेचीदाकलाम, ताम्राज़नी ।
छेतव्य, त्रि. काटने के योग्य ।
छेतृ, पु. (त्ता) काटनेवाला । [नसवनुमा ।
छेद, पु. खण्ड, भग्नांश, हर; टुकड़ा, टूटा हिस्सा,
छेदन, न. काटना, टुकड़ा करना ।
छेदित, त्रि. काटा हुआ, टुकड़ा कियाहु० ।
छेद्य, त्रि. काटनेके लायक ।
छोरण, न. परित्याग; छोड़ना ।
छोलङ्ग, न. जम्बीर, नींबू, गिलगिल, चकोदरा ।

ज

आठवां व्यञ्जन, तालव्य है ।
ज, पु. शिव, विष्णु, जन्म, विष, भुक्ति, तेज, पिशाच, गणवि० । ऽ । गुरु मध्य तीनवर्ण, (त्रि) जीता हुआ ।
जक्षिवस्, त्रि. भोजक; खानेवाला ।
जगच्चक्षुस्, पु. सूर्य । आफ़ताब ।
जगत्, न. विश्व, (पु) वायु (त्रि) जङ्गम, अस्थायी, (स्त्री) (ती) पृथिवी, द्वादशाक्षर छन्दोवि० ।
जगत्कर्तृ, पु. ब्रह्मा ।
जगत्पति, पु. परमेश्वर ।
जगत्प्रभु, पु. नारायण, बुद्ध ।
जगत्प्राण, पु. वायु । हवा ।
जगत्साक्षिन्, पु. सूर्य । आफ़ताब ।
जगदम्बा, स्त्री. गौरी, पार्वती ।
जगदात्मन्, पु. काल, वायु, परब्रह्म ।
जगदीश(श्वर), पु. विष्णु, भगवान् ।
जगद्गौरी, स्त्री. मनसादेवी । [पृथ्वी ।
जगद्योनि, पु. शिव, विष्णु, ब्रह्मा (स्त्री) (नी)
जगन्नाथ, पु. विष्णु, पुरुषोत्तम, भैरवविशेष ।
जगनु(न्नु), पु. आग, जुगनू पक्षी ।
जगर, पु. कवच । बख्तर ।
जगल, पु. सुराकल्प, मदनवृक्ष, पिष्टमद्य, कवच, वर्म, (त्रि) धूर्त, (न) गोबर । [हुआ, खाना, ख़ुराक ।
जग्ध, त्रि. भक्षित (न) भोजन, (स्त्री) (ग्धि) खाया
जघन, न. कटिदेश, स्त्रीजंघा, स्त्रियोंकेपाट, चूतड़।
जघन्य, त्रि. नीच, (न) उपस्थ (पु) शूद्रजाति ।
जघ्नि, पु. मारडालनेवालाशस्त्र ।
जघ्नु, पु. हन्ता; मारनेवाला ।
जङ्गम, त्रि. अस्थावर, चर । मनकूला ।
जङ्गल, न. लहू, (पु. न.) मांस, पु. जंगल ।
जङ्गाल, पु. सेतु; बंद, जंगला ।
जङ्गुल, न. विष । ज़हर । [भाग, सक्थि, पिंडी ।
जङ्घा, स्त्री. घुटनेसेनीचे टखनेसे ऊपरतक का
जङ्घाल, **जङ्घिक**, } त्रि. अति वेगवान्, धावक; बहुत दौड़नेवाला (पु) मृग, हरिण ।
जञ्जपूक, त्रि. वाचाल, बुरा जप करनेवाला (पु) तपस्वी, बहुत जप करनेवाला ।
जट, पु. संहतकेश, (स्त्री)(टि)(टा) मूल, जटामांसी, रुद्रजटा, शतावरी, कपिकच्छु, वेदपाठवि० ।
जटाधर, पु. शिव, (त्रि) जटावाला ।
जटायु, पु. पक्षिविशेष; रावण के साथ युद्धकरके सीताहरणसमय मरजानेवाला पक्षी ।
जटाल, **जटिन्**, **जटिल** } पु. कचूर, बड़, गुग्गल, त्रि. जटाधारी ।
जटूल, पु. देहपरका एक निशान । [बंधाहुआ ।
जठर, पु. न. कुक्षी, उदर (त्रि) पेट, कुक्खी,
जाठरामय, पु. जलोदरका रोग ।

जड, न. जल, सीसक, (त्रि) हिमग्रस्त; गूंगा, मूरख, प्रकृति, आदिकारण।
जडता, स्त्री. सर्दी; मूर्खपन।
जडिमन्, पु. अचेतनता, मूर्खता, जमाओ।
जडुल, पु. देह का तिल। निशान।
जतु, न. लाख।
जतुक(का), पु. स्त्री. लाख, हींङ्, चामचिड़ी।
जत्रु, न. गलेके दोनों ओरकी हड्डीयें।
जन, पु. मनुष्य, ऊपरका ५ वां लोक, जनक, पु. पिता, सीताका पिता, (त्रि) पैदा करनेवाला।
जनकसुता, स्त्री. सीता, जानकी। [यूथी, जटामांसी।
जननी, स्त्री. माता, मां, दया, चामचिड़ी, मजीठ,
जनपद, पु. देश, लोक। मुल्क।
जनपदिन्, पु. देशका स्वामी।
जनमेजय, } पु. परीक्षित राजाका पुत्र, पुरूरवा
जन्मेजय, } राजाका पुत्र।
जनयितृ(ता), पु. पिता (स्त्री) (त्री) मां।
जनरव } पु. किम्वदन्ती। गौगा, अफ़-
जनश्रुति, } स्त्री. वाह।
जनान्तिक, न. तनहाई।
जनार्दन, पु. विष्णु, नारायण।
जनाश्रय, पु. मण्डप; मंडवा, किसी प्रयोजनके वास्ते सांझा बना हुआ घर। [द्रव्य।
जनि, स्त्री. उत्पत्ति, नारी, मां, वहू, जनी नामगंध-
जनित, त्रि. उत्पादित; पैदाकिया हुआ।
जनितृ(ता) पु. पिता, (स्त्री.) (त्री) माता।
जनु(नू), स्त्री. उत्पत्ति। पैदाश।
जन्तु, पु. जन्यशील। जानवर।
जन्मन्, न. पैदाश, संसार, लोक।
जन्मान्तर, न. परलोक; दूसरा जन्म।
जन्मान्ध, त्रि. जन्मसे अंधा।
जन्माष्टमी, स्त्री. भादोंवदी अष्टमी।
जन्मवत्, } त्रि. जीव, प्राणी। जानवर पु. जमने-
जन्मिन्, } योग्य, नवोढाका भृत्य, (स्त्री) (जन्या)
जन्य, } मांकी सखी (त्रि) लोक हितकारी।
जन्यु, पु. प्राणी, आग, विधाता। [जपाफूल।
जप, पु. मंत्रको वार २ पढ़ना, एक पौदा, स्त्री (पा)
जमदग्नी, पु. परशुरामका पिता।
जम्पती, पु. द्वि० स्त्रीपुरुष।

जम्बाल, पु. कर्दम, शैवाल, केतकीका वृक्ष।
जम्बालिनी, स्त्री. नदीविशेष।
जम्बीर, पु. लैंबू, आनारगी।
जम्बु(म्बू), स्त्री. जंबुद्वीप, जामन वृक्ष, सुमेरु पर्वतपरकी एक नदी, (न) जामनफल।
जम्बुक, पु. शृगाल, वरुण, वृक्षविशेष, (त्रि) नीच।
जम्बूल, पु. केतकीवृक्ष। [(म्भा) जिझाई।
जम्भ, पु. दैत्यविशेष, जंबीर, तृणदन्त, हनू, (स्त्री)
जम्भका, स्त्री. जिझाई (न) जंबीर।
जम्भग, पु. राक्षसविशेष।
जम्भन, न. मैथुन। जभा।
जम्भभेद(दि)न् }
जम्भरिपु } पु. इन्द्र, जम्भासुरकापुत्र।
जम्भाराति, }
जम्भार, पु. जंभीर (स्त्री) (रा) (ला) राक्षसीविशेष।
जम्भारि, पु. आग, वज्र, इन्द्र।
जय, पु. विष्णुपार्षद, जीत, विराटराजाके घरमें युधिष्ठिर (स्त्री) (या) दुर्गाध्वजा, तिथिविशेष, ३ या, ८ अष्टमी, त्रयोदशी।
जयढक्का, पु. जयसूचक ढक्का का शब्द।
जयदन्त, पु. इन्द्रपुत्र, इन्द्रका वेटा।
जयद्रथ, पु. दुर्योधनका वहनोई।
जयद्रथ, पु. दुर्योधनकी सेनाका स्वामी।
जयन, न. जीत (स्त्री) (नी) इन्द्रकी कन्या।
जयन्त, पु. इन्द्रका पुत्र, शिव, भीम, चन्द्रमा (स्त्री) (न्ती) दुर्गा, पताका, व्रतवि०, योगविशेष।
जयन्तिका, स्त्री. हरिद्रा; हल्दी।
जयपत्र, न. अश्वमेधयज्ञके घोड़ेके माथेपर वंधी हुई चिठ्ठी, डिगरीपत्र। [जमालगोटेकापेड़।
जयपाल, पु. विधि, विष्णु, राजावि०, वृक्षविशेष,
जयिन्, त्रि. विजयी। फ़तामंद।
जय्य, त्रि. जेतुंशक्य; जो जीताजासके।
जरठ, त्रि. कर्कश, ज़र्द, सख़्त, टूटाफूटा, बुढ़ापा।
जरण, न. हींङ्, कुठ (पु.) ज़ीरा, सौंचलनून, (त्रि) पचन (स्त्री) (ण्डा) कालाज़ीरा।
जरण्ड, त्रि. जीर्ण। शकस्त।
जरत्, त्रि. वृद्ध, प्राचीन (स्त्री) (ती) वृद्धास्त्री। [शेष।
जरत्कारू, स्त्री. मनसादेवी (पु) मनसापतिमुनिवि-
जरन्त, पु. भैंसा (त्रि) बूढ़ा वैल।

जरा, स्त्री. राक्षसीविशेष; बुढ़ापा ।
जरातुर, पु. बूढ़ा ।
जरायुस, पु. गर्भाशय । वच्चादान, जटायु-पक्षी ।
जरासन्ध, पु. मगधदेशका राजा ।
जरूथ, पु. न. ढीला मांस ।
जर्जर, पु. शिलाजीत, इन्द्रकी ध्वजा, (त्रि) बुढ़ापेसे लाचार, टूटाफूटा, तवाह, छिद्रवाला ।
जर्जरित, त्रि. विदीर्ण । शकस्त ।
जर्जरीक, पु. वृद्ध; बूढ़ा ।
जर्तु, पु. योनि, हाथी ।
जल, न. पंचभूतोंमेंसे एक, (त्रि) जड़, मूर्ख, पानी ।
जलकण्टक, पु. घड़ियाल, सिंघाड़ा ।
जलकपि, पु. शिशुमार; घड़ियाल ।
जलकरङ्क, पु. नारियल, कमल, शंख, मेघ, तरङ्ग ।
जलकाक, पु. पानीकी कुकड़ी, पनडुव्वी ।
जलकल्क, पु. पङ्क, कीचड़, दलदल ।
जल-कुन्तल, पु. शैवाल; सिवाल ।
जलगत, त्रि. जलमेंका; पानीका ।
जलगुल्म, पु. जलकी घुंवर, कछुआ, तालाव, झील ।
जलचर, त्रि. पानीका जीव, (स्त्री) (री) मछली ।
जलज, न. कमल, शङ्ख (त्रि) जलसे उत्पन्न, मच्छी कच्छु आदि, जल का पेड़, कर्क मीन कुम्भ और मकर राशिका पश्चार्द्ध ।
जलद, पु. मेघ, मुथ्रा, समुद्र, (त्रि) जल दाता,
जलागम, पु. वर्षाऋतु; वरसात ।
जलधर, पु. मेघ, मुस्तक, समुद्र, तिलशवृक्ष ।
जलधि, पु. समुद्र, दशशंकु १०० किरोड़ ।
जलधिजा, स्त्री. रमा, लक्ष्मी ।
जलनिधि, पु. समुद्र । वहिर ।
जलनिर्गत, पु. पानीका सोत ।
जलनिवह, पु. जलसमूह, जलपरिमाण ।
जल-नीती (लिका) स्त्री. शैवाल, सिवाल ।
जलन्धर, पु. असुरविशेष ।
जलपटल, पु. मेघ, मेघोंका सिलसिला ।
जलपति, पु. वरुण, समुद्र ।
जलप्राय, न. पानीकी जगह ।
जलफल, न. शृंगाटक; सिंघाड़ा ।
जलवन्धु, पु. मत्स्य; मछली ।
जलमार्जार, पु. ऊदविलाओ ।
जलमुच्, पु. मेघ । वादल ।
जलमोद, न. उशीर । खस्स ।
जलयन्त्र, न. जल निकालनेकी कल, घिरनी, रहट ।
जलरङ्क, पु. लगलग, वगुला, पपीहा ।
जलरुण्ड, पु. घुंवर, कतरह, सांप ।
जलरुह, पु. पद्म, (त्रि) जलकी पैदाश ।
जलत्न, स्त्री. वीचि; ढेऊ ।
जलवाह(क), त्रि. मेघ, वादल, भिशती, कहार ।
जलव्याल, पु. अजदहा ।
जलशायिन्, त्रि. नारायण, विष्णु (त्रि) जलमें [सोने वाला ।
जलविषुव, न. कार्तिक संक्रांति ।
जलशुक्ति, स्त्री. शंबुक; घोंगा, सीप ।
जलशूल, पु. कुंभीर ।
जलसत्र, न. जलपिलानेका स्थान; प्याऊ ।
जलसर्पिणी, स्त्री. जलौका; जोंक ।
जलरुचि, पु. एक प्रकारकी मछली, वगुला, सिंघाड़ा, घड़ियाल, (स्त्री) जोंक ।
जलहस्तिक, पु. स. घड़ियाल ।
जलहरी, स्त्री. तलैड़ी, जलाशय, खात ।
जलाञ्जलि, पु. करपुटमें लिया हुआ पानी ।
जलाधार, पु. जलाशय, समुद्र, (त्रि) जलस्थित ।
जलाटन, पु. कंकपक्षी, (स्त्री) (नी) जोंक (त्रि) पानीमें रहने या फिरनेवाला ।
जलाढ्य, त्रि. जलसे भरा, जलवाला ।
जलाधार, पु. जलाशय, जलका पात्र, झील ।
जलाबुका, स्त्री. जोंक ।
जलाभिषेक, पु. जलसिंचन; पानी सींचना ।
जलायूका, स्त्री. जलौका; जोंक ।
जलाल्रूक, न. पद्मकन्द (स्त्री) (का) भिस, जोंक ।
जलावर्त, पु. पानीका घूमना, भंवर ।
जलाशय, पु. जलाधार, समुद्र, सिंघाडा (न) खस्स, एक पोदा, (त्रि) मूर्ख, जड़ ।
जलाष्ठीला, स्त्री. झील, वड़ा ताल ।
जलि(लू)का, स्त्री. जोंक ।
जलेचर, पु. हंस, वगुला आदिक जलमें रहनेवाले पंछी ।
जलौकस } त्रि. जलवासी, पानीमें रहनेवाले ।
जलौका, } स्त्री. जोंक ।
जलौघ, पु. जलसमूह; जलकी धार ।

जल्प, पु. जय चाहनेवालेकी कथा परमतके खण्डन और निजमतके स्थापनकी कथा, गल्प; गप्प।
जल्पन, न. कथन (स्त्री) (ना) वाचालता, कहना, बकबककरना। [फक्कड़।
जल्प(ल्पा)क, पु. कुभाषी, वाचाल, बकवादी,
जल्पित, त्रि. कहा हुआ (न) कहना। [वा वृक्ष।
जव, पु. वेग, (त्रि) वेगवान् (स्त्री) (वा) जवाफूल,
जवन, न. वेग (पु) वेगवाला, यूनानी घोड़ा, म्लेच्छ जाति, (त्रि) तेजस्वी।
जवनक, पु. पड़दा (स्त्री) (का) कनात्।
जवस, पु. न. तृण; घास।
जविन्, त्रि. वेगवाला (पु) अश्व, उष्ट्र।
जहु, पु. अपत्य। औलाद।
जहत्स्वार्था, स्त्री. लक्षण-लक्षणा; जहां पद अपने अर्थको छोड़ और हि अर्थको कहें।
जन्हु, पु. विष्णु, चन्द्रवंशी गंगाजीके पी जानेवाला राजर्षि विशेष, राजा कुरुका पुत्र।
जन्हु(कन्या)तनया, स्त्री. गङ्गानदी।
जन्हुसप्तमी, स्त्री. वैशाख सुदी नवमी।
जागर, पु. जागना।
जागरित, त्रि. निद्रोत्थित; नींदसे उठा हुआ।
जागरूक, त्रि. जागता हुआ।
जागर्ति, स्त्री. जागना। होशियारी।
जागर्या, स्त्री. जागरणन, सावधानता।
जागुड़, न. कुंकुम, केसर, रोली।
जागृवि, पु. आग।
जाग्रत, त्रि. जागा हुआ। [जंगलका।
जाङ्गल, पु. तीतर, देशविशेष, न. मांस, (त्रि)
जाङ्गलि(क), पु. विषवैद्य, मदारी (त्रि) जंगलका।
जाङ्घिक, त्रि. जङ्घाजीवी (पु) ऊंठ। हलकारा।
जाज्वल्यमान, त्रि. अत्युज्वल, प्रकाशित, चमकीला, उज्वल।
जाड्य, न. जडता, मूर्खता, आलस। सुस्ती।
जात, न. जन्म, (त्रि) उत्पन्न शिशु, प्रशस्त, व्यक्त। पैदा हुआ २। [ग्रंथ, जातकर्म, (त्रि) पैदा हुआ।
जातक, न. जात बालक का शुभाशुभ निर्णायक
जातकर्मन्, न. संस्कारविशेष। जन्मके समय मे करने योग्य रीत रसम।
जातरूप, न. स्वर्ण, दधूरा, (त्रि) उत्पन्नरूप।
जातवेदस्, पु. अग्नि, चित्रक वृक्ष।
जाति, स्त्री. गोत्र, प्रकार, वैश्य ब्राह्मण आदि वर्ण, नित्य और अनेक समवेत धर्म, "घटत्व" आदि। मालतीका फूल, अलंकारविशेष, छन्दोविशेष, खड्ज आदि स्वर, चुल्ही।
जातिफल, पु. जायफलका पेड़, (न) फल।
जातिब्राह्मण, पु. तप और आचाररहित ब्राह्मण।
जातुधान, पु. राक्षस।
जातुष, त्रि. लाखका बना हुआ घर। [विकी मां।
जातूकर्ण, पु. मुनिविशेष, (स्त्री) (र्णी) भवभूतिक-
जातेष्टि, पु. पुत्रजन्मके समय नालछेदनके पहिले पितृयाग।
जातोक्ष, पु. युवा वृष; जवान सांढ।
जात्य, त्रि. कुलीन, प्रधान, कान्त, समकोन।
जातान्ध, त्रि. जन्मान्ध; जन्मका अन्धा।
जानपद, पु. देश, देशान्तरसे आया हुआ।
जानु, पु. न. अष्ठीवत्; घुटना।
जाप, पु. मन २ में हांले २ देवताका नाम लेना।
जापक, त्रि. जप करनेवाला।
जावाल, पु. आज्ञापाल। कोतवाल। [शुराम।
जावालि, पु. मुनिविशेष, जमदग्निका पुत्र, पर-
जामातृ, पु. (ता) कन्यापति; जमाई, मित्र। [रत।
जामि(मी), स्त्री. वहिन, सुषा, पुत्रकी बहू, नेकऔ-
जामित्र, न. सप्तम लग्न, जन्म लग्नसे ७ वां, लग्न।
जाम्बव, न. जामनका फल, सोना, (पु) जांबवान्।
जाम्बवत्, पु. ऋक्षराज (स्त्री) (ती) कृष्णपत्नी।
जाम्बूनद, न. स्वर्ण; सोना।
जाया, स्त्री. भार्या; जोरू।
जायाजीव, जायानुजीविन्, } पु. नट, वाजीगर, मदारी।
जायापति, पु. स्त्री-पुरुष। खाविंद जोरू।
जायु, पु. औषध। दवाई।
जार, पु. उपपति (स्त्री) (री) औषधिविशेष। यार।
जारज, त्रि. कुण्ड, गोलक। यारदी औलाद। [जीरा।
जारण, न. जीर्ण करना, (स्त्री) (णी) पचाना, मोटा
जाल, न. फाही, फरेब, हथनाटकी, बनावट, कदम का पेड़, झरोखा (स्त्री) (ली) औषधिविशेष।
जालक, न. जाल, कली, दम्भ, घोंसला, समूह, (न. स) मोचकफल पु. झरोखा। [बनानेवाला।

जालकारक, पु. लूतातंतु, मकड़ी (त्रि) जाल बनानेवाला।
जालकिनी, स्त्री. मेथी, भेंड़ी, दुंबी। [लोनेकी चाटी।
जालगोणिका, स्त्री. दधिमंथन भांड, दही वि-
जलपाद(द), पु. हंस, मैना पक्षी।
जालिक, पु. मकड़ी, झींवर, फंदक, फ़रेबी, (स्त्री, (का) वस्त्रविशेष, जोंक, विधवा।
जालिन्, पु. झींवर, व्याध, मदारी।
जाल्म, त्रि. असमीक्षकारी, पामर, क्रूर।
जाबाल, पु. सत्यकाम मुनि। [जोंक।
जाहक, पु. मार्जार, खट्वा, जलौका; बिल्ली, खाट,
जान्हवी. स्त्री. जन्हुकन्या; गंगानदी।
जिगमिषु, त्रि. जानेकी इच्छावाला।
जिगमिषा, स्त्री. जाने की इच्छा।
जिगीषत, त्रि. जयेच्छु; जीतनेवाला।
जिगीषा, स्त्री. जीननेकी इच्छा, उद्यम, बड़ाई।
जिघत्सा, स्त्री. भूख; खानेकी इच्छा।
जिघत्सु, त्रि. क्षुधित; भूखा।
जिघांसक, त्रि. हननेच्छुक; मारना चाहनेवाला।
जिघांसु, पु. शत्रु। दुश्मन।
जिघृक्षा, स्त्री. ग्रहणेच्छा; लेनेकी मरज़ी।
जिघृक्षु, पु. ग्रहनेच्छु; पकड़नेवाला।
जिघ्र, त्रि. सूंघनेवाला।
जिज्ञासमान, त्रि. जो जानना चाहे।
जिज्ञासा, स्त्री. प्रश्न; जाननेकी इच्छा। [सवाली।
जिज्ञासु, पु. त्रि. आत्मज्ञानका इच्छु; पूछनेवाला,
जिज्ञास्य, त्रि. जिज्ञासितव्य; जाननेके लायक।
जिजीविषा, स्त्री. जीवनकी इच्छा।
जिजीविषु, पु. जीया चाहनेवाला।
जित, त्रि. पराजित; हाराहुआ।
जितात्मन्, पु. जिसने अपने आपकों जीताहै।
जितामित्र, पु. विष्णु (त्रि) जिसने दुश्मन जीता है।
जितेन्द्रिय, पु. वशीकृतेन्द्रिय। जिसने हवास काबू किये हैं। [तहयाव।
जित्तम, पु. मिथुनराशि, (त्रि) सबसे बढ़ कर फ़-
जित्य, पु. कोटिश, (त्रि) जीतने योग्य, (स्त्री) (त्या) हल का फाला। [शीपुरी।
जित्वर, त्रि. जेता, जीतनेवाला (स्त्री) (री) का-
जिन, पु. अर्हण, बुद्ध, विष्णु (त्रि) जीतनेवाला।
जिष्णु, अर्जुन, इन्द्र, (त्रि) जयशील।
जिनसुत, पु. बुद्ध देव।
जिहाना, त्रि. जानेवाला, छोड़ाहुआ, पाना।
जिहीर्षा, स्त्री. ग्रहण करनेकी इच्छा, छीननेकी इच्छा।
जिहीर्षु, त्रि. हरणेच्छु; हर लेनेकी इच्छावाला।
जिह्म, त्रि. वक्र, मन्द, (न.) ताड़वृक्ष; टेढ़ा, तिरछा, सुस्त।
जिह्मग, पु. सर्प (त्रि) तिरछा चलनेवाला।
जिह्मित, त्रि. झुकाया हुआ, तिरछा किया हुआ।
जिव्ह, पु. तगरमूल (स्त्री) (व्हा) ज़ुबान।
जिव्हल, त्रि. लुब्ध; लोभी, लालची।
जिव्हाय, पु. कुत्ता, बाघ, बिल्ली।
जीन, त्रि. जीर्ण, वृद्ध; पुराना, बुड्ढा (पु) मेघ, पर्वत, इन्द्र। [पण्डित।
जीमूतवाहन, पु, इन्द्र, दायभाग ग्रंथका कर्ता
जीर(क), पु. ज़ीरा, खड्ग, कंड्नी।
जीरण, पु. जीरक; ज़ीरा।
जीर्ण, त्रि. जर्जरित; पुराना (त्रि) बुड्ढा, (पु) ज़ीरा, (स्त्री) (र्णा) मोटा ज़ीरा, बूढ़ी औरत।
जीर्णि, स्त्री. जरा; बुढ़ापा।
जीर्णोद्धार, पु. संस्करण। मुरम्मत। [हस्पति। रूह।
जीव, पु. देहावच्छिन्न आत्मा, प्राणी, प्राण, बृ-
जीवक, पु. औषधिविशेष, निर्लज्ज, नौकर, जीया पोताका पेड़, सपादा।
जीवजीव, पु. चकोरपक्षी।
जीवथ, पु. प्राण, कछुआ, मोर, मेघ, धर्म, (त्रि) धर्मी, चिरंजीवी। [दिनेवाला।
जीवद, पु. वैद्य, शत्रु (त्रि) जान बचानेवाला या
जीवन, न. वृत्ति जल, प्राणधारण, जीविका। जन्म और मृत्युके बीचका काल (पु) काढ़ी, वृक्षवि०, पुत्र, (स्त्री) (नी) जयंती वृक्ष।
जीवनक, न. अन्न, (की) हरीड़।
जीवन्त, पु. औषधि, प्राण, (त्रि) जीता जागता, (स्त्री) (न्ती) लताविशेष, गिलो, शीशम, कौड़।
जीवन्मुक्त, त्रि. जीवत् दशामें ब्रह्मका साक्षात् कार होनेसे बंधनोसे छूट परमानंदको प्राप्त पुरुष (स्त्री) (क्ति) नजात।
जीवपुत्र, पु. हिंगोटका पेड़।
जीवप्रिया, स्त्री. हरीतकी; हरड़।

जीव-मन्दिर, न. देह । जिसम ।
जीवा, स्त्री. एक खासबेल, चिल्ला, वच, धरती, ज़ेवर।
जीवातु, पु. न. अन्न, प्राण । खुराक ।
जीवात्मन्, पु. देही । रूह ।
जीवा-धार, पु. क्षेत्र, पृथिवी, शरीर, देह ।
जीवा-न्तक, पु. जीवनके लिये पक्षियोंके मारनेवाला। कातिल ।
जुकुट, पु. मलय पर्वत, कुक्कुर (पु) सनका पौदा ।
जुगुप्सा, स्त्री. कुत्सा, निन्दा । बदनामी, हजो ।
जुगुप्सित, त्रि. निन्दित । बदनाम, बुरा ।
जुङ्गित, त्रि. त्यक्त, जातिसे बाहर निकाला हुआ तर्क किया हुआ ।
जुटिका, स्त्री. बालोंका जूड़ा, जूड़ी ।
जुष, त्रि. सेवक, सहाय, प्रणयी ।
जुष्ट, न. उच्छिष्ट (त्रि) सेवित; जूठा, वर्ता हुआ ।
जुष्य, त्रि. सेव्य; सेवाके योग्य ।
जुहुवान, पु. अग्नि, चन्द्र, होता, अध्वर्यु ।
जु(हु)हू, स्त्री. पलाशकी लकड़ीसे बना, अर्द्ध चन्द्रकी भांत यज्ञपात्र, चिप्पी ।
जू, स्त्री. आकाश, सरस्वती, पिशाची, शीघ्रगमन ।
जूट(क), पु. न. केशबंध; जूड़ा ।
जूटी(टिका), स्त्री. जूड़ा ।
जूर्णि, स्त्री. वेग, देह, ब्रह्मा, ज्वर, सूर्य ।
जूर्ति, स्त्री. ज्वररोग । बुखारका रोग ।
जूषण, न. वृक्षविशेष । धावेका दरख़्त ।
जूष, पु. न. क्काथ; काढ़ा । [ज्ञाई ।
जृम्भ, पु. जृम्भण (स्त्री) (म्भा) जिह्माई लेना; जि-
जृम्भकास्त्र, न. शस्त्रविशेष, जिस से दुश्मनको नींद आने लगे । [हुआ, बढ़ा हुआ, खिला हुआ ।
जृम्भित, त्रि. चेष्टित, वृद्ध, स्फुटित। हर्कत किया
जेतव्य, त्रि. जयनीय; जीतनेके के योग्य ।
जेतृ, त्रि. जयशील; जीतनेवाला ।
जेय, त्रि. जययोग्य; जीतने योग्य ।
जैत्र, न. धनुष, औषधि वि०, (त्रि) जीतनेवाला (पु) पारा (स्त्री) (त्री) जयन्ती लता ।
जैन, पु. बौद्धोंकी एक शाखा; जिनके माननेवाले ।
जैत्ररथ, पु. जयशील । बहादुर ।

जैपाल, पु. जयपाल; जमालगोटा ।
जैमिनी, पु. मुनिविशेष; वेदव्यासजीका शिष्य, उत्तरमीमांसा का कर्ता ।
जैवातृक, पु. चन्द्र, कर्पूर, (त्रि) दीर्घायु, कृश; चांद, काफूर उमर दराज़, पतला दुबला ।
जोष, न. आनन्द, सुख, सन्तोष (स्त्री) (षा) स्त्री । व्य (षम्) चुपहो रहना, भलीभांतसे ।
जोषित्, (ता) स्त्री, नारी; औरत ।
जोष्य, त्रि. प्रियविषय; सेवनयोग्य विषय ।
ज्ञ, पु. ब्रह्मा, बुध, पण्डित, चन्द्रमा, मंगल (त्रि) जाननेवाला । [कियाहुआ, जताया गया ।
ज्ञपित, त्रि. जता दिया गया, प्रसन्नकियागया, तेज़
ज्ञप्त, त्रि. समझायाहुआ, (स्त्री) (प्ति) बुद्धि, समझ ।
ज्ञात, त्रि. जाना हुआ ।
ज्ञातव्य, त्रि. जाननेके योग्य ।
ज्ञाति, स्त्री. जाति, गोत्री, जातका ।
ज्ञातृ(ता), पु. विदुर, ब्रह्म (त्रि) जाननेवाला ।
ज्ञातेय, न. जातका, जातिका धर्म ।
ज्ञान, न. चैतन्य, बुद्धि, बोध । अकल, इलम ।
ज्ञान-काण्ड, पु. वेदका अन्तिम भाग, जिसमें रूहानी विद्याका बयान है ।
ज्ञान-गम्य, न. ब्रह्म, परमेश्वर ।
ज्ञान-चक्षुस्, त्रि. ज्ञानहि जिसके नेत्र हैं ।
ज्ञान-तस्, व्य. ज्ञानपूर्वक; जान बूझ कर ।
ज्ञान-मय, त्रि. ज्ञानवाला, (पु) शिव ।
ज्ञानयज्ञ, पु. न्यायसे वेदविचार ।
ज्ञान-योग, पु. ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिका उपाय ।
ज्ञान-लक्षणा, स्त्री. वस्तु-ज्ञानके लिये पदार्थके साथ इन्द्रिय का संबंध ।
ज्ञान-वापी, स्त्री. बनारसमें एक तीर्थविशेष ।
ज्ञान-साधन, न. इन्द्रिय । हवास ख़मसा ।
ज्ञाना-पोह, पु. विस्मरण; भूल ।
ज्ञाना-भ्यास, पु. जाननेके लिये वारंवार सोच ।
ज्ञानिन्, पु. दैवज्ञ, महाप्राज्ञ (त्रि) ज्ञानवान् ।
ज्ञानेन्द्रिय, न. बुद्धीन्द्रिय । हवासख़मसह । १ आंख २ कान ३ नाक ४ जुबान ५ खाल ।
ज्ञापक, त्रि. बोधकारक (पु) आज्ञाप्रद । अकल देनेवाला, जता देने वाला ।

ज्ञापन, न. जताना। इश्तहार देना।
ज्ञापित, त्रि. विज्ञप्त; जताया हुआ। मुश्तहिर।
ज्ञेय, त्रि. ज्ञातव्य; जाननेके योग्य।
ज्या, स्त्री. धनुषका चिल्ला, माता, पृथिवी।
ज्या-कणित, } न. विस्फार; चिल्लेकी आवाज़।
ज्या-घोष, } पु.
ज्यानि, स्त्री. बुढ़ापा। ज़वाल, दर्या, तर्क करना।
ज्यायस्, त्रि. बहुत बूढ़ा, उत्तम, बड़ाभाई।
ज्येष्ठ, त्रि. बहुत बूढ़ा, श्रेष्ठ, (पु) जेठ-मास, बड़ाभाई, अपनेसे उमरमें बड़ा, (स्त्री) (ष्ठा) नक्षत्र विशेष, मंझली उंगली, गङ्गा, एक प्रकारकी नायिका, छिपकली, (ष्ठी) ज्येष्ठा नक्षत्रवाली पूर्णिमा तिथि।
ज्येष्ठ-तात, पु. पिताका बड़ाभाई; ताऊ।
ज्येष्ठा-श्रम, पु. गृहस्थाश्रम।
ज्येष्ठा-श्रमिन्, पु. गृहस्थी।
ज्यैष्ठ, पु. २ य, मास, शुक्र।
ज्यैष्ठ्य, न. ज्येष्ठता। उमरमें ज्यादती।
ज्योक्, व्य. त्वरित। जलदीसे।
ज्योतिरिङ्ग(न), पु. खद्योत; पटबीजना।
ज्योतिर्विद्, } पु. ज्योतिषी।
ज्योतिर्वेत्तृ, } पु. नजूमी।
ज्योतिश्चक्र, न. राशिचक्र। [मका इल्म।
ज्योतिष(ज्यौतिष), न. ज्योतिष शास्त्र। न जू-
ज्योतिषिक (ज्यौतिषिक), पु. न. शास्त्रविशेष (पु) (त्रि) नक्षत्राजीवी। इल्म हैत, नजूमी।
ज्योतिष्क, पु. चांद, सूरज, ग्रह, नक्षत्र, तारे (स्त्री) (ष्का) एक बेल जिसके पत्तोंको आपसमें घिसें तो आग निकलती है। [होते हैं।
ज्योतिष्टोम, न. यज्ञविशेष, इसमें १६ ऋत्विक्
ज्योतिष्पथ, न. आकाश। आसमान्।
ज्योतिष्मत्, त्रि. प्रकाशयुत, (पु.) सूर्य, कुशद्वीपका राजा, (स्त्री) (ती) लता, चित्तवृत्तिविशेष, रौशन, रात।
ज्योतिस्, न. तेज, नक्षत्र, चैतन्य, चक्षु, शास्त्रविशेष, सूर्य, अग्नि (स्त्री) पृथिवी, प्रकाश, चमक, लाट।
ज्योत्स्ना, स्त्री. प्रकाश, चांदनी (स्त्री) पटोलिका, चांदिनीरात, रेणुकानाम गन्ध द्रव्य।

ज्वर, पु. तप, बुखार (स्त्री) (रा) बीमारी।
ज्वरघ्न, } पु. गिलो, (त्रि) ज्वरनाशक।
ज्वरान्तिक, }
ज्वरित, त्रि. ज्वरवाला, बुखारवाला।
ज्वरारि, पु. ज्वरका शत्रु, औषधिविशेष।
ज्वलन, न. जलन, शोल्हा, (त्रि) रौशन (पु) आग।
ज्वलित, त्रि. दग्ध, तप्त, उज्वल (न) जलन; जलाहुआ, तपाहुआ, उजला।
ज्वाल, त्रि. दीप्तिमान्, रौशन (पु) आगकी लाट (स्त्री) (ला) शोल्हा।
ज्वालामुखी, स्त्री. तीर्थविशेष।

झ..

नावां व्यञ्जन तालव्य।

झ, पु. झक्खड़, नष्ट, जलवर्षण, देवताओंका गुरु, दैत्यविशेष, शब्द, आंधी, (त्रि) सोया हुआ।
झङ्कार, पु. भौंरा आदिका शब्द; गूंजन।
झञ्जन, न. अव्यक्त शब्द, शिञ्जित; झनझनाना।
झञ्झा, } स्त्री. झड़, वर्षा, ध्वनिविशेष, प्रचण्ड
झञ्झावात, } पु. पवन।
झञ्झामारुत, } पु. प्रचण्ड पवन। आंधी, झक्खड़।
झञ्झानिल, } पु.
झटिति, व्य. द्रुत, शीघ्र; जल्दीसे।
झम्प, पु. लम्फ (स्त्री) (म्पा) कूद, छाल।
झम्पिन्, पु. बानर (त्रि) कूदनेवाला।
झर, पु. निर्झर, पर्वतसे उतरता हुआ जलका प्रवाह (स्त्री) (री) नदी।
झर्झर, पु. खास बाजा, भाण्ड, शब्दविशेष, (स्त्री) (रा) वेश्या, (री) मदिरा।
झर्झरीक, पु. देह, चित्र।
झला, स्त्री. कन्या, किरण, ऊर्म्मि, झिल्लिका।
झल्ल, पु. वर्णसङ्कर जाति; दोगला, भांड, पहिलवान्।
झल्लक, न. कांस्यनिर्मित करतालकादि; मंजीरा, कैंसी, छैना।
झल्लकण्ठ, पु. पारावत; कबूतर।
झल्लरी, स्त्री. एक प्रकारका बाजा।
झष, पु. मछली, ताप, मीनराशि (न) वन (स्त्री) (षा) नागबला बूटी।
झष-केतन, } न. कन्दर्प, कामदेव।
झष-केतु, } पु.

झट, पु. निकुंज, कान्तार, व्रण आदिका धोना (स्त्री) (टा) निमोली, यूथिका।
झटास्त्वच, पु. तरम्बुज; तरबूज़।
झमक, न. झामां, झाम।
झर्झर, पु. खंजरी बजाने वाला।
झारु(क), पु. झारु का पोदा।
झालरी, स्त्री. भेरी, मृदङ्ग, पटह, नौबत।
झिरि(लि)का, झिरी, झिरुका, } स्त्री. झींगर; झिल्ली।
झुण्ट, पु. स्तम्भ, गुल्म। सतून, गुच्छी।

ञ.

चवर्गका ५ म, अक्षर, आनुनासिक्य।
ञ, पु. बैल, शुक्राचार्य, क्रूर, निजधर्मसे पतित, घर्घर शब्द।

ट. [थिवी।

ट, पु. वामन, टंकार, करंक, शिव, (स्त्री) (टा) पृ-
टङ्क, पु. पत्थर तोड़नेका अस्त्र, खड्ग, टुटाहुआ पत्थर, मियान, स्त्री (ङ्का) टाङ्।
टङ्कन, न. पहाड़ी घोड़ा, सुहागा।
टङ्कशाला, स्त्री. टंकसाल।
टङ्कार, पु. धनुषका शब्द, विस्मय, प्रसिद्ध।
टङ्कित, त्रि. लिखित, लिखा हुआ, बंधा हुआ।
टङ्ग, पु. न. कुदाल, टांग्।
टल(न), पु. न. खिसलना।
टिटि(ट्टि)भ, पु. टटीरा पंछी।
टिप्पनी, स्त्री. टीका। शरा।
टीका, स्त्री. विवृति। शरा, तशरीह।
टेर,(क) पु. टीरा; भेंगा।

ठ.

१२ वां व्यञ्जन मूर्धन्य.

ठ, पु. शिव, महाध्वनि, चन्द्रमण्डल, मण्डल, शून्य, इन्द्रियगोचर, प्रतिमा, देवता।
ठकु(क्कु)र, पु. देवता, ठाकुर, पदवीविशेष।
ठगण, पु. छन्दःशास्त्रीय गण-विशेष (ISS) १ भ, लघु दो गुरु।

ड.

१३ वां व्यञ्जन मूर्धन्य।

ड, पु. शब्द, त्राण, बाडवाग्नि, (स्त्री) (डा) पक्षीविशेष(डी) पिशाची, डाकिनी।
डम, पु. वर्णसंकर नीचजाति, डूम; डुमड़ा।
डमर, पु. आक्रमण, विस्मय। धौंकसे भागना, हैरानी।
डमरु, पु. वाद्यविशेष; डौरुबाजा।
डमरूमध्य, पु. दो द्वीपोंके मिलानेवाला धरणीका टुकड़ा। खाकनाय।
डम्बर, पु. ऊंचाई, विलास (त्रि) उद्धत, विख्यात। मगरूर, मशहूर।
डयन, न. नभोगमन; उंची उडारी।
डल्लक, न. बांसका बना वर्तन; डल्ल।
डवित्थ, पु. लकडी का हिरण, हाथी।
डहु, पु. लकुच।
डालिम, पु. दालिम. अनारका पोदा (स्त्री) (मी) अनारगी।
डाहल, पु. त्रिपुरदेश।
डाहुक, पु. दात्यूहपक्षी, हृष्टपुष्टाङ्ग भृत्य, छल, कपट। पपैहा, मोटा डटा नौकर।
डिङ्गर, पु. धूर्त, नीच, (स्त्री) (री) युवास्त्री।
डिण्डिम, पु. वाद्ययन्त्र विशेष, डौंडी, करौंदा।
डिण्डि(ण्डी)र, पु. समुंदरी झाग।
डित्थ, पु. काष्टगज; लकड़ीका हाथी।
डिम, पु. नाटकका रूपक विशेष।
डिम्ब(म्भ), पु. बालक, मूर्ख, आंडा, पशुका बचा।
डिम्बाहव, पु. राजरहित युद्ध।
डिम्भक, पु. बाल, लड़का।
डिम्भचक्र, न. स्वरोदयमें कहेहुए मनुष्योंके शुभाशुभ निर्णायक ग्रंथ।
डीत, त्रि. आकाशगामी; आसमानमें उड़नेवाला।
डीन, न. पक्षीगति; उड़ना।
डुडुम, पु. खचरा, चीता।
डुण्डुल, पु. उल्लुका बचा।
डोर(क), पु. बाहु आदिमें बांधनेका कङ्कन।

ढ.

१४ वां व्यञ्जन, मूर्धन्य।

ढ, पु. ढक्का, कुक्कुर, कुत्तेकी पूंछ, शब्द, सर्प, (त्रि) निर्गुण।
ढक्का, पु. देशविशेष, आवरण, (स्त्री)(क्का) वाद्य; ढाका देश, ढोल।
ढक्कारी, स्त्री. तारणी देवी।

ढामरा, स्त्री. हंसी ।
ढुण्डन, न. अन्वेषण । तलाश ।
ढुण्डी, पु. काशी स्थ गणेशजी ।
ढुण्डित, त्रि. अन्वेषित । तलाशकिया हुआ ।
ढोल, पु. वाद्य । बाजा ।
ढौकन, न. उत्कोच, घूंस । रिशवत ।

ण.

१५ वां व्यञ्जन, मूर्धन्य ।

ण, त्रि. निर्गुण, (पु) निर्णय, ज्ञान, भूषण, जलाशय।

त.

१६. वां, व्यञ्जन, दन्त्य ।

त, न. स्त्री. पुण्य, तक (पु) चोर, अमृत, पूंछ, गोद, म्लेच्छ, गर्भ, शठ, रत्न, वृक्ष, दहीकी मलाई, छाछ.डालकर फिटाया हुआ दूध ।
तकिल, पु. धूर्त, स्त्री. (ला) औषधिविशेष ।
तक्र, न. छाछ; मठा दहीका ।
तक्रकूर्चिका, स्त्री. आमिक्षा; फटा हुआ दूध ।
तक्राट, पु. मन्थनदण्ड; मथानी ।
तक्षक, पु. सर्पराज, तखान, बढ़ई ।
तक्षण, न. तराशना, छीलना (स्त्री)(णी) तेशह ।
तक्षत, पु. विश्वकर्म्मा, सूत्रधार; मिस्तरी, चित्रा नक्षत्र ।
तक्षशिला, स्त्री. एक पुरी ।
तक्षन्, पु. त्वष्टा; बढ़ई । [फूल ।
तगर, पु. पुष्पवृक्ष विशेष, मदन वृक्ष, (न) इनके
तङ्क, पु. न. कुदाल, कुल्हाडी, जुदाईका रंज ।
तङ्कन, न. दुःख–जीवन । तक्लीफ़की ज़िन्दगी ।
तच्छील, त्रि. उसी स्वभावका ।
तज्ज, त्रि. तदुद्भव; उससे उत्पन्न ।
तज्ज्ञ, त्रि. उसके जाननेवाला ।
तट, त्रि. किनारा, (न) खेत (स्त्री) (टी) किनारा ।
तटस्थ, त्रि. किनारेका, उदासीन । सालिस ।
तटाक,(ग) पु. न. तालाब, सरोवर ।
तटाघात, पु. वप्रक्रीड़ा; हाथियोंमें खेलते समय किनारोंका तोड़ना ।
तटिनी, स्त्री. नदी ।
तडित्, स्त्री. विद्युत; बिजली । वर्क ।
तडिद्वत्, पु. मेघ, मुस्थां (त्रि) बिजुलीवाला ।
तण्ड,(ण्डु) पु. शिवजी का द्वारपाल ।
तण्डक, पु. समोला, झाग, पेटकातन्हा, समास बहुलवाक्य, गृह दारु विशेष (त्रि) बहुरूपी (पु. न.) तैयारी ।
तण्डुल, पु. विडङ्ग, चावल ।
तण्डुलीयपाक, धान्यादि निकर, चावल ।
तत्, व्य. तन्निमित्त; इसकारण ।
तत, न. वीणावाद्य, (त्रि) विस्तृत, (पु) वायु । वीनकी आवाज़, फैला हुआ, हवा ।
ततस्, व्य. तदनन्तर; इसके बाद ।
ततःप्रभृति, व्य. तदारभ्य; तब या वहांसे लेकर।
ततस्थ, त्रि. तदागत, तज्जात; वहांका ।
ततम, त्रि. अनेकोंमेंसे एक ।
ततर, त्रि. दोनोमेंसे एक ।
तत्काल, पु. वर्त्तमानकाल । हाल ।
तत्कालधी, त्रि. प्रत्युत्पन्नमति । हाज़र जवाब ।
तत्क्रिय, त्रि. वही काम करनेवाला, विना तनख़ाह काम करनेवाला ।
तत्क्षण, पु. उसी समय । [तार; जमात ।
तति, त्रि. तत्परिमाण, (स्त्री) श्रेणी, वितना, क-
तत्काले, व्य. उसी समयमें ।
तत्त्व, न. स्वरूप, परमात्मा, विलम्बित-नृत्य, सांख्यशास्त्रोक्त प्रकृति, महत् अहंकार मनः, पंचभूत, पंचतन्मात्र, पंच ज्ञानेंद्रिय और पंचकर्मेंद्रिय ये २४ स पदार्थ । असलीयत, खुदा, एकनाच, अनासर, रूप रस आदि ।
तत्त्वज्ञान, न. ब्रह्मज्ञान, यथार्थज्ञान । रूहानी इल्म।
तत्वतस्, व्य. यथार्थ; ठीक २ । [खनेवाला ।
तत्व-दर्शिन्, त्रि. ब्रह्मज्ञानी । असलीयतके दे-
तत्पर, त्रि. निपुण, श्रमी । होशियार, मेहनती ।
तत्परायण, त्रि. तदासक्त, तत्प्रधान, तदाश्रित ।
तत्पुरुष, पु. समासविशेष ।
तत्र, व्य. उस स्थानमें ।
तत्रत्य, त्रि. तत्रभव; वहांका, वहां जन्मा हुआ ।
तत्रभवत्, त्रि. मान्य, पूज्य । मुअज्ज़िज़ ।
तत्रापि, व्य. वहांभी ।
तत्व-वादिन्, त्रि. सच २ कहनेवाला । सच्चा ।
तत्वविद्, त्रि. सचके जाननेवाला । असलीयतके जाननेवाला ।
तत्ववेत्तृ, पु. ब्रह्मज्ञानी । रूहानी आलिम ।

तथा, व्य. उसीतरह; वैसेही। [आयाहुआ।
तथागत, पु. बुद्ध, (त्रि) तथाभूत; उसीतरह
तथाच, व्य. तत्रापि; वैसेहि, तिसपरभी।
तथास्तु, व्य. एवमस्तु; वैसेहि हो।
तथाहि, व्य. निदर्शन, समर्थ, प्रसिद्ध।
तथेति, व्य. एतादृश; ऐसा।
तथैव, व्य. वैसे हि।
तथ्य, न. सत्य (त्रि) सच, सच्चा।
तद्, त्रि. वह (न.) ब्रह्म।
तदनन्तर, व्य. तत्पश्चात्। बादअज़ां।
तदनुरूप, त्रि. तादृग्; वैसेहि। [तक।
तदन्त, व्य. सीमा (पु) उद्देश्य। हद्द, मुद्दा, वहां-
तदन्तःपातिन्, त्रि. मध्यवर्ती; बीचका।
तदपि, व्य. तथापि; तौभी।
तदवधि, व्य. तत्पर्यन्त; तबसे, वहांतक।
तदवस्थ, त्रि. एकदशापन्न; वैसेका वैसा।
तदर्थे, व्य. तन्निमित्त (त्रि) तदभिप्राय; उसी लिये, उसी मनशाका।
तदा, व्य. तस्मिन् काले; उसी समय।
तदादि, व्य. तबसे; अन्तसे पहिला।
तदानीम्, व्य. तस्मिन् काले; उसी समयमें, तब।
तदाप्रभृति, व्य. तबसे।
तदीय, त्रि. उसका।
तदुपरि, व्य. उसपर।
तदेव, व्य. अनन्य; वही।
तद्धन, त्रि. कृपण। बख़ील।
तद्वत्, व्य. तद्रूप, वैसेहि; उसी माफ़िक।
तनय, पु. पुत्र (स्त्री) (या) कन्या। बेटा, बेटी।
तनिका, स्त्री. रज्जू, पाश, रस्सी, फांसी।
तनिमत्, पु. सूक्ष्मत्व, कृशत्व। बारीकी, दुबलापन
तनिष्ठ, तनीयस्, } त्रि. अत्यल्प। बहुत बारीक, बहुत थोड़ा।
तनु(नू), पु. स्त्री. शरीर, देह, त्वचा (त्रि) अल्प, सूक्ष्म, विरल, कृश। जिसम, खाल, थोड़ा, बारीक, विरला, दुबला।
तनुच्छद्, पु. कवच, परिच्छद। संजोह, पौशाक।
तनु(नू)ज, पु. पुत्र (स्त्री) (जा) पुत्री (त्रि) देहसे उत्पन्न।
तनुत्र, तनुत्राण, } न. वर्म, कवच, संजोह (त्रि) जो पु. देह को बचाए। संजोह, ज़रा, बख़्तर।
तनुत्याग, पु. मृत्यु (त्रि) थोड़ा देने वाला, तंगदिल।
तनुभृत्, पु. देही, जीव। रूह। [कमर वाली।
तनुमध्या, स्त्री. सूक्ष्मकटिमती, छन्दोविशेष। पतली
तनु(नू)रुह, न. रोम; रोंग्टे, पक्षिका घोंसला।
तनुल, त्रि. विस्तृत; फैला हुआ।
तनुवार, पु. कवच; ज़रा।
तनूस्, न. तनू, स्त्री. } देह; जिसम।
तनून, पु. वायु। हवा।
तनूनप, न. घृत; घी।
तनूनपाद्(त्), पु. अग्नि, चित्रकवृक्ष। आतिश।
तन्ति, पु. तन्तुवाय; तांती, जुलाहा। [लाद।
तन्तु, पु. सूत्र, ग्राह, सन्तति; सूत, हांगर, औ-
तन्तुक, पु. सर्षप (स्त्री) (की) सरसों; रग।
तन्तुपर्वन्, न. श्रावणी पूर्णिमा; सौनहुदीपूनो।
तन्तुभ, पु. सर्षप, वत्स; सरसों, बछड़ा।
तन्त(र)ल, न. मृणाल; भिस।
तन्तुवाय, पु. तांती, मकड़ी। कैहना।
तन्तुशाला, स्त्री. तंतु वपन गृह; तांतीका कारखाना, एक शस्त्र, वेदकी एक शाखा वि०।
तन्त्र, न. सिद्धान्त, ओषधि, प्रधान, तन्तु, परिच्छद, हेतु, इति-कर्तव्यता, राज्यचिन्ता, शास्त्र वि०, शपथ, प्रबन्ध, धन, गृह, स्त्री. (त्री) वीनबाजेकी तांत, रस्सी, नदीविशेष।
तन्त्रक, न. नवीन वस्त्र; कोरा कपड़ा।
तन्त्रता, स्त्री. अनेक कर्मोंके लिये एक बार प्रवृत्ति, अधीनता। ताबेदारी।
तन्त्रवाय, पु. वर्णसङ्कर जाति विशेष, तांती।
तन्त्रिका, स्त्री. गडूची; गिलो।
तन्द्रा, स्त्री. ईषन्निद्रा, आलस्य; ऊंघ, सुस्ती।
तन्द्रालु, पु. निद्रालु; नींदवाला, सुस्त।
तन्द्री(न्द्रि)का, स्त्री. निद्रा, आलस्य, मूर्छा, कान्ति। नींद, सुस्ती, तकान ग़श, चमक।
तन्द्रित, त्रि. निद्रित; नींदावाला।
तन्न, व्य. वह नहीं।
तन्मय, त्रि. तदात्मक, तत्स्वरूप; उसीका रूप।
तन्मात्र, न. सांख्य मतमें अमिश्र पंचभूत (त्रि) तदात्मक, व्य. तदेव। वही रूप, रस, शब्द आदि, उतनाहि,

तन्वी, स्त्री. सूक्ष्माङ्गी। नाज़नीन, शालपर्णी वेल, छन्दोविशेष।
तप, पु. ग्रीष्मऋतु। मौसिम-गरमा।
तपत्, त्रि. तपता हुआ, प्रकाशमान (स्त्री) सूर्यपत्नी, सूर्यकन्या, यमुना नदी।
तपन, पु. सूर्य, ग्रीष्मऋतु, सूर्यकान्तमणि, नरक विशेष, अर्कवृक्ष (त्रि) मौसिम-गरमा, आतिशी शीशा, तपानेवाला (स्त्री) (नी) गोदावरी नदी।
तपनतनय, पु. यम, शनि, कर्ण, स्त्री (या) यमुना, शमीलता।
तपनीय,(क) न. पु. स्वर्ण; सोना।
तपनेष्ट, न. ताम्र; तांवा, आतिशी शीशा।
तपस्, न. तपस्या, चान्द्रायण आदि व्रत, अदृष्ट, धर्म, आचरण, आलोचन (पु.) माघमास, ग्रीष्मऋतु।
तपस्क, पु. तपस्वी, योगी।
तपस्तक्ष, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।
तपस्य, न. कुन्दपुष्प (पु) फाल्गुणमास, (त्रि) तपस्वी (स्त्री) (स्या) तपकरण, व्रतादि करण।
तपस्विन्, त्रि. तापस, धार्मिक, अनुकम्प्य, दीन, निर्दोष। फ़कीर, ईमानदार, कावले रहम, आजिज़, वे ऐव
तपात्यय, पु. वर्षाकाल; वरसात।
तपोधन, **तपोनिधि**, } पु. तपस्वी, तापस। फ़कीर
तपोवट, पु. ब्रह्मावर्त देश।
तपोवन, न. तपयोग्य वन। [आजुर्दा।
तप्त, त्रि. तपाहुआ, दुखिया, खिन्न । जला हुआ,
तप्तकृच्छ्र, पु. व्रत विशेष, प्रायश्चित्तविशेष; तीन दिनका व्रत १ म, दिन, गरम जल, २ य, दिन दुग्ध, ३ य, दिन घृतपीना होता है।
तम, पु. तमोगुण, न. अंधेरा, राहु, (त्रि) थकामांदा, (व्या.) वहुतोंमेंसे एककी वड़ाई वताने वाला प्रत्यय (स्त्री) (मा) (मी) रात्रि। [(पु.न.) राहु।
तमस्, न. अन्धेरा, तमोगुण, शोक, मोह, पाप,
तमस, न. अंधेरा (स्त्री)सा, सरयू नदी।
तमस्तति, स्त्री. घोरान्धकार; वड़ा अंधेरा।
तमस्विन्, त्रि. अन्धेरे वाला (स्त्री) (नी) रात्रि, हल्दी।

तमाल, पु. वृक्षविशेष, तिलक, खड्ग।
तमालपत्र, न. तिलक; टीका।
तमिस्त्र, न. अंधेरा, क्रोध, अज्ञान (स्त्री) (स्रा) अमावसकी रात (त्रि) अंधेरेवाला।
तमोघ्न, **तमोनुद्**(द), **तमापह**, } पु. सूर्य, चन्द्र, अग्नि, बुद्ध, केशव, दीपक (न) ज्ञान।
तमोलि, पु. खद्योत; जुगनू।
तर, पु. पारगमन, सन्तरण, गत, पथ, (त्रि) पारगामी, दोनोंमेंसे एककी अधिकताबोधक तद्धित प्रत्यय।
तरक्ष(क्षु)क, पु. क्षुद्र काय व्याघ्रविशेष। तरख।
तरङ्ग, पु. ऊर्मि, भङ्गि, कास। लहर, इशारह, कांपना।
तरङ्गित, त्रि. तरंगयुत, तरंगवाला। लहरानेवाला।
तरङ्गिन्, त्रि. तरङ्गित (स्त्री)(नी) नदी।
तरण, न. पारजाना, तैरना, (पु) तुला, स्वर्ग (स्त्री (णी) नाओ।
तरणि, पु. सूर्य, किरण, तुला (स्त्री) (णी) नाओ।
तरण्ड, पु. न. तुला, देशविशेष, मच्छी पकड़नेका डोरा (स्त्री) (ण्डी) नाओ।
तरतम, त्रि. न्यूनाधिक। कमज्यादा।
तरपण्य, न. भाड़ा। मीर वहरी।
तरम्वुज, पु. फलविशेष; तरवूज़।
तरल, कांपता हुआ, हिलता हुआ, पिघला हुआ, (पु) हार, यार, चमकीला, (स्त्री) (ली) यवागू, मधुमक्खी।
तरलायित, त्रि. जाततारल्य; पिघलाया हुआ, (पु) वेकरारी। [हुआ।
तरलित, त्रि. कंपित । पिघला हुआ, फैलाया
तरवारि, पु. खड्ग; तरवार। [तरसों।
तरश्व, पु. गत वा आगामी दिनका पूर्वदिन;
तरस्(स), न. मांस, (स्त्री) शीघ्र। जल्दी।
तरस्वत्, त्रि. शूर, वलवान्। ज़ोरावर।
तरस्विन्, त्रि. शूर (पु) गरुड़, वायु, दूत।
तरि,(री) स्त्री. नाओ, कपड़ेकी दस्सी, अञ्चल, गठरी, (त्रि) पार जाने वाला।
तरु, पु. रक्त खून, दरख्त।
तरुण, पु. युवा (स्त्री) (णी) युवती (त्रि) नया।

तर्क, पु. वादानुवाद, विचार । दलील ।
तर्कक, पु. याचक, आकांक्षी, नैयायक । भिखारी, ख़ाहिशमन्द, मन्तकी ।
तर्कविद्या, स्त्री. आन्वीक्षिकी । इलमेदलील ।
तर्कशास्त्र, न. दर्शनशास्त्र विशेष । इलमेमन्तिक ।
तर्कित, त्रि. विवेचित; सोचाहुआ। दलीलमें लाया हुआ ।
तर्किन्, पु. तर्कवाला । मन्तिकी ।
तर्कु, स्त्री. सूत्रनिर्माण यन्त्रविशेष। चर्खा, तकुला ।
तर्कुट, न. सूत्र कर्तनयन्त्र । चर्खा, तकुला ।
तर्कुलासक, न. चरखा कातने का ।
तर्जन, न. भर्त्सन, भयदिखाना, (स्त्री) (नी) अंगुष्ठके पासवाली अंगुली, झिड़कना, खौफ़ दिखाना।
तर्जित, त्रि. झिड़काहुआ; डराया हुआ । [बालक ।
तर्ण(क), पु. गायका बछड़ा, अभी जन्मा हुआ
तर्तरीक, न. वहित्र, पोत । जहाज़ ।
तर्दू, स्त्री. ताड़ा ।
तर्पण, न. तृप्ति, प्रसन्नता, रक्षण, पितृ यज्ञ; देव ऋषि तथा पितरोंको जल देकर तृप्त करना ।
तर्पणेच्छु, त्रि. तृप्त करनेवाला, सुख देनेवाला, (पु) भीष्म, शान्तनव । [अगला भाग ।
तर्मन्, न. यूप का अग्र भाग; यज्ञके खंबेका
तर्ष, पु. अभिलाष, तृष्णा, समुद्र । ख़ाहिश, हिरस, बहिर ।
तर्षण, न. पिपासा; प्यास ।
तर्षित, त्रि. तृषित; प्यासा ।
तर्हि, व्य. तदा; तब ।
तल, पु. न. अधोभाग, तल, पाताल, पीठ, स्वरूप, (न) वन, कार्य बीज, ज्याघात वारण, पु. करतल, चपेट, तलवारकी मुट्ठी, तालका पेड़ (स्त्री) (ला) गोह, चिल्लेकी आवाज़ ।
तल-प्रहार, पु. चपेड़की मार ।
तलातल, न. रसातल, ४ था, पताल ।
तलिका, स्त्री. तली । फेरिस्त ।
तलित, त्रि. तला हुआ (न) भुजा हुआ मांस ।
तलिन, न. शय्या, (त्रि) दुर्बल, अल्प, निर्मल, विरल । बिस्तरा, दुबला, थोड़ा, साफ़ ।
तलुन, पु. पवन (स्त्री) (नी) जुवान ।
तलेक्षण, पु. शूकर । सूअर ।
तलोदरी, स्त्री. भार्या । जोरू ।
तलोदा, स्त्री. नदी, जलाशय । कूंआ वग़ैरह ।
तल्क, न. अरण्य । जंगल ।
तल्प, पु. न. शय्या, गृह (स्त्री) दारा । जोरू ।
तल्लज, पु. उत्तम ता वाचक (शब्दके उत्तर लगाया हुआ) आनंद, कमलफूल ।
तल्लिका, स्त्री. कुञ्चिका; चाबी ।
तष्ट, त्रि. कृशीकृत । तराशा हुआ ।
तष्ट, पु. विश्वकर्मा; बढ़ई, सूत्रधार ।
तस्कर, पु. स. चौर; चोर ।
तस्करता, स्त्री. चौर्य; चोरी ।
तस्थिवस्, त्रि. स्थित; ठहरा हुआ ।
ताच्छील्य, न. तत्स्वभावता; वैसीही आदत ।
ताट(ड)ङ्क, पु. कर्ण-भूषण, ढेंडी, तंदोड़ा, कान-फूल।
ताटस्थ्य, न. औदासीन्य, निकटता, सालसी, नज़दीकी ।
ताड़, पु. चोट, शब्द, पु. स. ताल वृक्ष ।
ताड(ट)का, स्त्री. राक्षसी विशेष; सुकेतुकी बेटी ।
ताडन, न. प्रहार, स्त्री. (नी) चाबुक; कोड़ा, मारनेकी छड़ी ।
ताडपत्र, न. कर्णभूषण विशेष, तंदोड़ा, कान-फूल।
ताडित, त्रि. आहत, विद्ध, वैद्युत; ताड़ा हुआ, बिंधा हुआ, बिजलीका ।
ताड्यमान, त्रि. ताड़ा हुआ, (स)(ना) ढका, ढोल।
ताण्डव, पु. न. उद्धतनृत्य; निर्तकारी, एक घास ।
तात, पु. पिता, पूज्य, प्रेम पात्र, पुत्र; प्यारा । अज़ीज़ ।
ताति, पु. पुत्र; बेटा ।
तात्कालिक, त्रि. उसी समयका ।
तात्पर्य, न. अभिप्राय; मर्म । मतलब ।
तादर्थ्य, न. तदुद्देश्य, उसीके अर्थ । [करूप ।
तादात्म्य, न. अभेद, तत्स्वरूपता; वहीरूप, ए-
तादृश(श) } त्रि. वैसा हि ।
तादृक्ष }
तान, पु. गानका अङ्ग स्वरविशेष, विस्तार, (न.) ज्ञानका विषय । स्वर को चक्कर देकर तालपर लाना । फैलाव ।
तान्त, त्रि. म्लान, क्लान्त, मैला; थकामांदा ।
तान्तव, न. तांतका बुना ।

तान्त्रिक, त्रि. तन्त्रमतका, तन्त्रविद्याके जाननेवाला, सिद्धान्तके जाननेवाला ।
ताप, पु. ज्वर, गरमी, आध्यात्मिक, आधिदैविक और अधिभौतिक तीनों दुःख (स्त्री) (पी) नदीविशेष ।
तापन, न. सूर्य, किरण, (त्रि) तपानेवाला ।
तापस, त्रि. तपस्वी; तप करनेवाला ।
तापस-तरु, पु. इङ्गुदी वृक्ष; हिंगोटका पेड़ ।
तापिच्छ(ञ्छ), पु. तमालवृक्ष ।
तापित, त्रि. तपाया हु०, दुखाया हु० ।
तापिन्, त्रि. तपानेवाला ।
ताम, पु. पाप, दुःख, इच्छा, भय का कारण, घृत ।
तामर, न. जल; पानी ।
तामरस, न. पद्म, तांमा, सोना, दधूरा, १२ अक्षरके चर्णवाला एक छंद ।
तामस, पु. सांप, दुष्ट, उल्लू, ४ र्थ, मनु, स्त्री. (सी) अंधेरी रात, काली ।
तामिस्र, पु. निशाचर, अज्ञान विशेष, (न) नरक वि० (त्रि) तमोगुणी, अंधेरा ।
ताम्यत्, त्रि. क्लेश करता हु०, चाहता हुआ ।.
ताम्र, न. धातुवि०, तांमा, (पु) कोढ़, (त्रि) लालरंग, (स्त्री) (म्रा) (म्रिका) पनघड़ी ।
ताम्रकर्णी, स्त्री. दक्षिण दिशाकी हथिनी ।
ताम्रकार, पु. कसेरा, ठठेरा ।
ताम्रकूट, पु. तंबाकू ।
ताम्रचूड, पु. कुक्कुट । मुर्गं ।
ताम्रपट्ट(पत्र), न. तामेका पत्र ।
ताम्रपर्णी, स्त्री. नदीविशेष, लंका ।
ताम्र-सर्द, पु. रक्तचंदन वृत्त ।
ताम्रिक, पु. कसेरा, (त्रि) तांबेका ।
ताम्रशिखिन्, पु. कुक्कुट । मुर्गं ।
ताम्बूल, न. स. पान, नागवेल ।
ताम्बूल-करङ्क, पु. पान रखनेका डिब्बा ।
ताम्बूलिक, } त्रि. वर्णसङ्कर जाति; वंतोली ।
ताम्बूलिन्, }
तायन, न. वृद्धि । तरक्की ।
तार, पु. तराई, मलाही, हारके मध्यकी मणि, ऊंची स्वर, वंदरविशेष, रस्सी, प्रणव, (न.) चांदी (पु.) आंखकी पुतली, (त्रि) वड़ा ऊंचा अवाज़, साफ़, चमकीला, मोटा, (स्त्री) (रा) दुर्गा, बुद्धदेवी, वृहस्पतिकी स्त्री, पु. स. सुपेद मोती ।
तारक, पु. स्त्री आंखकी पुतली, नक्षत्र (पु) मल्लाह, तारकासुर, पु. न. तुल्हा, (त्रि) रक्षक ।
तारकजित्, }
तारकहन्, } पु. स्वामि कार्तिक; शिवजीका पुत्र
तारकारि, }
तारकित, त्रि. तारकयुत; तारेवाला ।
तारण, पु. भेलक; तुला ।
तारतम्य, न. न्यूनाधिक्य, । इतर, सिलसिलेवार ।
तारल्य, न. तरलता, पतलापन । रक़ीकपन ।
तारा-पति, पु. शिव, चन्द्र, गुरु, वृहस्पति, वाली, सुग्रीव ।
तारा-पथ, पु. आकाश । आसमान ।
तारापीड, पु. चन्द्रमा, एक राजाका नाम ।
तारिणी, स्त्री. दुर्गा, बचानेवाली ।
तारुण्य, न. यौवन । जवानी ।
तार्किक, त्रि. तर्कशास्त्रका ज्ञाता । मुदल्लिल, मन्तकी ।
तार्क्ष, पु. कश्यप मुनि, गरुड़ । [विशेष ।
तार्क्ष्य, पु. गरुड़, अरुण, सर्प, अश्व, रथ, वृक्ष-
तार्तीयीक, त्रि. तृतीय; तीसरा ।
ताल, पु. गानेवजानेमें काल की क्रियाका परिमाण, कालका माप, वालिश्त, ताली, हथेली, पड़ताल, (न) हरिताल, (स्त्री) (ली) प्रसिद्ध वृक्ष ।
तालक, पु. ताला, हड़ताल ।
तालध्वज, पु. वलदेव, श्रीकृष्णका भ्राता ।
तालनवमी, स्त्री. भादों सुदी ९ मी ।
तालवृन्त, न. ताड़पत्रका पंखा ।
तालव्य, त्रि. तालुसे निकला हुआ ।
ताल-लक्ष्मन्, त्रि. वलदेव, वलराम ।
तालाङ्क, पु. वलदेव, करपत्र, शाकविशेष, महालक्षण संपूर्ण पुरुष, पुस्तक, हर । [हाथ ।
तालिक, पु. स्त्री. (का) फैहरिस्त, फैलाया हुआ,
तालिश, पु. पर्वत, पहाड़ ।
तालु, न. टोकरा ।
तावकीन, त्रि. तुम्हारा ।
तावत्, व्य. साकल्य, अवधि, परिमाण, परिच्छेद, तत्क्षण, अवधारण, वाक्यालंकार वि० । कुल, हद्द, हिस्सा, उसीदम, यक़ीन दिलाना, फिकरे की जेबायश इन अर्थोंमें आता है ।

तिक्त, न. औषधि वि०, (पु) रसविशेष, कुटजवृक्ष, वरुणवृक्ष। स्याहमरिच, तीखाजायका, कौड़।
तिक्तक, पु. चिरायता, नीम, पटोल, कालाखदिर, हिंगोट।
तिक्त-दुग्ध, स्त्री. क्षीरिणी, जलशृङ्गी।
तिग्म, न. तीखापन, कड़वापन (त्रि) तीखा, कड़वा।
तिग्मरश्मि, तिग्मांशु, } पु. सूर्य। अफ़ताब।
तिङ्गद, पु. इङ्गुदी वृक्ष; हिंगोटका पेट।
तिजिल, पु. चांद, राक्षस। [नेकी इच्छा, क्षमा।
तितिक्षा, स्त्री. क्षान्ति, शीत उष्णता आदि सहार-
तितिभ, पु. इन्द्रगोप कीड़ा; चीचवहूटी।
तितिक्षित, तितिक्षु, } त्रि. क्षमा-शील, सहिष्णु; सहारेवाला। बर्दाश्त करनेवाला।
तितीर्षु, त्रि. तैरनेकी इच्छावाला।
तित्ति(र)रि, पु. तित्तर पक्षी, मुनिविशेष, तैत्तरीय शाखा यजुर्वेदकी।
तिथ, पु. अग्नि, काम, काल, प्रावृट्काल (स्त्री) (थि थी) प्रतिपदाआदि १५ पंद्रह। [होना।
तिथि-क्षय, पु. अमावस्या; एक दिनमें तीन तिथोंका
तिथि-प्रणी, स्त्री. चन्द्र; चांद।
तिनिश, पु. वृक्षविशेष; सुर्पदा, शीशम।
तिन्तिडी(ली), स्त्री. वृक्षविशेष, इमली (त्रि) तुरश ज़ायक़ा।
तिन्दु, पु. वृक्षविशेष। आबनूसका पेड़।
तिन्दुक, न. कर्ष परिमाण (पु) वृक्षविशेष, (स्त्री) (की) १६ मासे, आबनूसका पेड़, आबनूसका फल।
तिमि, पु. एक मछली, लिखा है कि ४०० मील लंबी है।
तिमिकोष,(श) समुद्र; समुंदर।
तिमिङ्गिल, पु. मत्स्यविशेष, इतनी बड़ी मछली जो तिमिकोभी निगल जाती है।
तिमिङ्गिलगिल, पु. मत्स्यविशेष, दैत्यविशेष, तिमिङ्गलकोभी निकल जानेवाली मच्छी।
तिमित, त्रि. निश्चल, क्लिन्न। क़ायम, गीला।
तिमिर, न. अंधेरा, अज्ञान, आंखका रोग।
तिमिर-रिपु, पु. सूर्य; आफ़ताब।
तिमिस्र, पु. ग्राम्यकर्कटी; कड़वा तरबूज़।
तिरस, व्य. अन्तर्द्धान, छिपाव, तिरछेपनसे।

तिरश्चीन, त्रि. वक्र; तिरछा। [तिरछेपनसे।
तिरस्, व्य. अन्तर्द्धान, अवज्ञा, वक्र, छुपकर,
तिरस्क(र)रिणी, स्त्री. कनात्। पर्दा, बुर्का, छुपा लेनेका इलम।
तिरस्कार, तिरस्क्रिया, } पु. निरादर, निन्दा, नाफ़ुरमानी। स. अंगरक्खा।
तिरस्कृत, त्रि. अनादृत। मलामत किया हुआ, ढपा हुआ। बेइज़्ज़त किया हुआ।
तिरोधान, त्रि. अन्तर्द्धान (न) आच्छादन वस्त्रादि। छिपा हुआ, बुर्का वग़ैरह।
तिरोहित, त्रि. अन्तर्हित; छिपाया हुआ, ढांपा हुआ।
तिर्यक्, व्य. वक्र, निरुद्ध; तिरछा, रुका हुआ।
तिर्यच्(ञ्च) त्रि. तिरछा चलनेवाला, पशु, पूंछी।
तिल, पु. शस्यविशेष, तदाकार देहस्थचिन्ह।
तिलक, पु. न. कांठा, टीका, (पु) तिलवृक्ष, (त्रि) श्रेष्ठ, तिलवाला।
तिल-कट, पु. तिलोंकी मट्टी।
तिल-कल्क, पु. न. खली, तिलोंका फोक।
तिल-तैल, न. तिलोंका तेल।
तिलोत्तमा, स्त्री. स्वर्गवेश्याविशेष। खास हूर।
तिष्य, पु. पुष्यनक्षत्र, पौषमास, कलियुग; (ष्या) आमलेका पेड़।
तीक्ष्ण, न. उग्रता, विष, युद्ध, लोहा, शस्त्र, सैन्धव, नमक, शीघ्र, (त्रि) उष्ण, शीघ्र करनेवाला, तेज़किया हुआ।
तीक्ष्णायस, न. इस्पात, फ़ुलाद।
तीर, न. नदीका किनारा।
तीरभुक्ति, स्त्री. त्रिहुत देश।
तीर्थ, पु. न. पुण्यक्षेत्र, घाट, कुंआं, उत्पत्तिस्थान, ऋषिसेवित-स्थान, सत्पात्र, यज्ञ, दर्शन-शास्त्र, उपाध्याय, स्त्रीका रज, उपाय, मन्त्री आदि १८ प्रकार, अङ्गुलीका अग्रभाग, देवतीर्थ, कनिष्ठाका मूल कायतीर्थ, तर्जनीमूल पितृतीर्थ, अंगूठेका मूल ब्राह्मतीर्थ, सत्य क्षमा दम दान इन्द्रियनिग्रह सरलता सन्तोष, ब्रह्मचर्य मिष्ट वाक्य, ज्ञान धैर्य पुण्य, मनःशुद्धि यह मानसिक तीर्थ।
तीर्थक(ङ्क)र, पु. शास्त्रकार, जिन, तीर्थंकृत्।
तीवर, पु. समुद्र, पु. स. धीवरजाति, व्याध। झींवर, फंदक।

तीव्र, न. अतिशय, तीक्ष्णता, टीन, कोप, लोहा (त्रि) अति उष्ण, कड़वा, (पु) शिव, (स्त्री) (व्रा) तुलसी, नदीविशेष, दूर्वा, राई।
तु, व्य. पाद-पूरण, परन्तु, अवधारण, समुच्चय, पक्षान्तर, नियोग स्तुति इन अर्थोंमें आता है।
तुङ्ग, त्रि. ऊंचा, बड़ा, श्रेष्ठ, (पु) पर्वत, नरियेलका पेड़, मेष आदि राशिविशेष।
तुङ्ग-भद्र, पु. मस्तहाथी, स्त्री. (द्रा) नदीविशेष।
तुच्छ, त्रि. शून्य। नाचीज़।
तुण्ड, न. मुख; थूथनी।
तुण्डि, पु. मुख, चोंच (स्त्री) (तुण्डी) नाफ़।
तुत्थ, पु. अग्नि, (स्त्री) (त्था) नीलका पौदा।
तुन्द, (न्दि) पु. उदर (स्त्री) नाभि। तोंद, नाफ़।
तुन्दिभ(ल), त्रि. स्थूलोदर; गोगड़िया।
तुन्दिलित, त्रि. छिन्न (पु) तुन्दवृक्ष।
तुन्न, त्रि. व्यथित, पीडित। आज़ुर्दा, दुखिया।
तुन्नवाय, पु. मोची, दर्ज़ी,।
तुमुर(ल), त्रि. बड़ायुद्ध, (पु) व्याकुल। हैरान।
तुम्ब(क) पु. अलाबू, कद्दू; तूंबा।
तुम्बा(म्बी)
तुम्बिका } स्त्री. तूंबी।
तुम्बरु, पु. गन्धर्वविशेष, ऋषिविशेष, जिनविशेष, (पु. न.) फल वृक्षविशेष।
तुर, (त्रि) वेगवान् (न) शीघ्र, (स्त्री) (रा) वेग, त्वरा। जल्द, जल्दबाज़ी।
तुरग(तुरङ्ग) पु. चित्त, घोड़ा, (स्त्री)(गी) घोड़ी।
तुरगिन्, पु. अश्वारोही; घुड़चड़ा। असवार।
तुरा-साह्, पु. इन्द्र, देवताओंका राजा।
तुरि(री) स्त्री. तांतीके कपड़ा वुवनेकी नाल।
तुरीय, न. ब्रह्म, (त्रि) ४ था,। [किस्तान।
तुरुष्क, पु. गन्धद्रव्यविशेष, तुरुकजाति, तु-
तुर्य, त्रि. चतुर्थ; चौथा।
तुर्वसु, पु. ययाति राजाका पुत्र।
तुलना, स्त्री. सादृश्य, परिमाण। मिसाल, बराबरी
तुलसी, स्त्री. वृक्षविशेष, तुलसी।
तुला, स्त्री. ताकड़ी, बारा राशियोंमेंसे ७मी राशि, परिमाणविशेष। [डण्डीकी नोक।
तुला-कोटि(टी) स्त्री. नूपुर, झांजर, तराज़ूकी
तुला-धर, पु. सूर्य। आफ़ताब, बनियां।
तुला-धार, त्रि. धड़वाई, तकड़ी तोलनेवाला।
तुला-पुरुष, पु. महादानविशेष। [हुआ।
तुलित, त्रि. उछालाहुआ, मापाहुआ, उपमादिया
तुलिम, त्रि. तोलकर वेचने योग्य वस्तु।
तुल्य, त्रि. सदृश। बराबर।
तुल्य-योगिता, स्त्री. काव्यमें एक अलङ्कार।
तुष, (न) धानका छिलका; तुस।
तुषसार, पु. अग्नि; आग।
तुषानल, पु. तुस की आग।
तुषार, पु. हिम, देशविशेष, शीकर, (त्रि) शीतल, नीहार। बरफ़ कुहर, सर्द।
तुषाराद्रि, पु. हिमालय पहाड़।
तुषित, त्रि. गणदेवता विशेष, ३६ छत्तीस।
तुष्ट, त्रि. प्रसन्न। खुश (स्त्री)(ष्टि) खुशी।
तुस, न. धूलि; धूड़। ख़ाक।
तुहिन, न. हिम, ज्योत्स्ना, (त्रि) शीतल। बरफ़, चांदनी, सरद।
तुहिन-रश्मि
तुहिनांशु } पु. चांद, काफ़ूर।
तूण, न. तरकश (स्त्री)(णी) संकोच। [वाला।
तूणिन्, पु. तिन्दीवृक्ष, (त्रि) तूणयुक्त। तरकश
तूणिक, न. १३ अक्षरका एक छन्दोविशेष।
तूणीर, पु. शरधि। तरकश।
तूरी, स्त्री, वाद्यविशेष, तुर्य। तुरम।
तूर्ण, न. शीघ्र, (त्रि) जल्दबाज़।
तूर्य, न. वाद्ययंत्रविशेष; बाजा।
तूल, पु. न. कपास, सिंवलकी रुई, (न) आकाश।
तूष्णीक, त्रि. चुप किये हुए।
तूष्णीम्, व्य. नीरव, चुप चाप।
तूस्त, न. रेणु; धूड़।
तृण, न. घास; तिनका।
तृणधान्य, न. नीवार, श्यामाक आदि।
तृणविन्दु, पु. मुनिविशेष।
तृण्या, स्त्री. तृणसमूह, तृणराशि; घासका ढेर।
तृतीय, त्रि. तीन संख्याका पूरक; तीसरा।
तृतीय-प्रकृति, स्त्री. नपुंसक; मुखन्नस।
तृप्त, त्रि. सन्तुष्ट, हृष्ट, पूर्णकाम, (स्त्री) (प्ति) सन्तोष, हर्ष। [पुत्री।
तृष(षा)(ष्णा) स्त्री. प्यास, इच्छा, लोभ, काम-

तृपित, त्रि. प्यासा, लोभी ।
तृष्णज्, त्रि. तृष्णार्त । लालची ।
तेजस्, न. चमक, तेजी, प्रताप, हिम्मत, ज़ोर, अपमान का न सहारना, वीर्य, स्वर्ण आदि, अग्नि, सूर्य आदि, घृत, मज्जा ।
तेजस्कर, त्रि. शक्तिकारक, दीप्तिजनक । तेज़ करनेवाला, चमकनेवाला ।
तेजस्वत् / **तेजस्विन्** } त्रि. प्रभावशाली, बलवान् । ज़ोरावर, रोबदार ।
तेजित, त्रि. शाणित, मार्जित, उत्तोलित । तेज़ किया हुआ, माजा हुआ, उछाला हुआ ।
तेजिष्ठ, तेजीयस, तेजस्विन्, त्रि. अति बलवान् । निहायत ज़ोरावर ।
तेजोमय, त्रि. ज्योतिर्मय, दीप्तिशील । चमकीला, रोशन ।
तेन, व्य. इसी से ।
तेम(न) व्य. आर्द्रीभाव, आर्द्र करण; गीलापन, गीला करना ।
तेमनी, स्त्री. धूमनिर्गममार्ग; चिमनी ।
तैक्ष्ण्य, न. तीखापन । तेज़ी ।
तैजस, त्रि. तेजोविकार, न. धातुद्रव्य, घृत ।
तैतिल, पु. गण्डार, न. करणविशेष; गंडारा ।
तैत्तिरीय, त्रि. तित्तरी सम्बन्धीय (स्त्री)(या) यजुर्वेदकी एक शाखा ।
तैल, न. तिलों का तेल ।
तैलङ्ग, पु. देशविशेष (बहु०) तिलंग के लोग ।
तैल-प, त्रि. तैल पीनेवाला ।
तैलिक / **तैलिन्** } पु. तेली, (त्रि) तेलका ।
तैष, पु. पौष मास (स्त्री)(षी) पुष्य नक्षत्रवाली पूर्णा ।
तोक, पु. शिशु, अपत्य । बच्चा, औलाद ।
तोटक, न. १२ अक्षरका छन्दोविशेष ।
तोत्र, न. प्राजनदण्ड; छड़ी ।
तोदन, न. व्यथा, तोत्र । तकलीफ़, छड़ी ।
तोमर, पु. न. अस्त्रविशेष; बर्छा ।
तोय, न. जल; पानी ।
तोयद, पु. मेघ (त्रि) जलदाता । बादल, पानी देनेवाला ।
तोयदागम, पु. वर्षाकाल; बरसात ।
तोयधि(निधि) पु. समुद्र । बहर ।
तोरण, न. बहिर्द्वार । बाहरका दरवाज़ा, (न)गर्दन ।
तोरि, पु. एक तोला, १६ मासे, स्त्री. (री) वज़न ।
तोलन, न. तोलना । वज़न करना ।
तोष, पु. सन्तोष, हर्ष । सबर, कनायत ।
तोषणीय / **तोषयितव्य** } त्रि. प्रसन्न करनेके योग्य ।
तौर्यत्रिक, न. नाचना, गाना, बजाना ।
तौलिक, पु. मड़वाई, चितेरा ।
त्यक्त, त्रि. वर्जित, विसृष्ट, दत्त, क्षिप्त । तज़ाहुआ, दिया, फेंका ।
त्यक्तव्य, त्रि. छोड़नेके योग्य । तजनेलायक ।
त्यक्तलज्ज, त्रि. निस्त्रप, निर्लज्ज । बेशरम ।
त्यजन, न. छोड़देना ।
त्याग, न. दान, विसर्जन, विराग । खैरात, तजना ।
त्यागिन् त्रि. दाता, वीर, विरागी ।
त्यागिम, त्रि. छोड़नेवाला । तर्क करनेवाला ।
त्याज्य, त्रि. तजनेके योग्य । तर्क करने लायक ।
त्रप, न. सीसा, टीन, (स्त्री)(पा) लज्जा । शरम ।
त्रपाक, पु. म्लेच्छ जाति ।
त्रपित, त्रि. लज्जान्वित । शरमिन्दा ।
त्रपिष्ठ / **त्रपीयस्** } त्रि. अतिलज्जित; बहुत शरमिन्दा ।
त्रप्स्य, न. पतला दही; मठा ।
त्रय, न. जिसके तीन अवयव हैं. (पु) तीन (त्रि) तीन संख्या वाला (स्त्री)(यी) ऋक् यजुः सामवेद, सोमराजी लता, दुर्गा, पुरन्ध्री ।
त्रयी-तनु, पु. सूर्य । आफ़ताब ।
त्रयी-धर्म, पु. वेदोक्तधर्म । तीनों वेद का कहा धर्म ।
त्रयोदश, त्रि. संख्याविशेष, १३ तेरह (स्त्री)(शी) १३ तेरवीं तिथि ।
त्रयोदशन्, त्रि. तेरह ।
त्रस, न. वन, (त्रि) जङ्गल ।
त्रसरेणु, पु. स. छयपरिमाणु, झरोखेमें सूरजकी किरणसे जो रजकन दीखते हैं ।
त्रसुर, पु. भीरुक । खौफ़नाक ।
त्रस्त, त्रि. भीत, (न) शीघ्र; डराहुआ, जल्दी ।
त्रस्नु, त्रि. त्रासशील; डरपोक ।
त्राण, न. रक्षण, मोक्ष, (त्रि) रक्षाकारक ।
त्रात, त्रि. बचाया हुआ, (न) बचाना ।
त्रायमाण, त्रि. बचाया हुआ ।
त्रास, पु. भय, मणिमें का दोष ।
त्रासित, त्रि. भीत; डराया हुआ ।

तीव्र, न. अतिशय, तीक्ष्णता, टीन, कोप, लोहा (त्रि) अति उष्ण, कड़वा, (पु) शिव, (स्त्री) (व्रा) तुलसी, नदीविशेष, दूर्वा, राई।

तु, व्य. पाद-पूरण, परन्तु, अवधारण, समुच्चय, पक्षान्तर, नियोग स्तुति इन अर्थोंमें आता है।

तुङ्ग, त्रि. ऊंचा, बड़ा, श्रेष्ठ, (पु) पर्वत, नारियेलका पेड़, मेष आदि राशिविशेष।

तुङ्ग-भद्र, पु. मत्तहाथी, स्त्री. (द्रा) नदीविशेष।

तुच्छ, त्रि. शून्य। नाचीज।

तुण्ड, न. मुख; थूथनी।

तुण्डि, पु. मुख, चोंच (स्त्री) (तुण्डी) नाफ़।

तुत्थ, पु. अग्नि, (स्त्री) (त्था) नीलका पौदा।

तुन्द, (न्दि) पु. उदर (स्त्री) नाभि। तोंद, नाफ़।

तुन्दिभ(ल), त्रि. स्थूलोदर; गोगड़िया।

तुन्दिलित, त्रि. छिन्न (पु) तुन्दवृक्ष।

तुन्न, त्रि. व्यथित, पीडित। आजुर्दा, दुखिया।

तुन्नवाय, पु. मोची, दर्जी,।

तुमुर(ल), त्रि. बड़ायुद्ध, (पु) व्याकुल। हैरान।

तुम्ब(क) पु. अलावू, कद्दू; तूंबा।

तुम्बा(म्बी), **तुम्बिका** } स्त्री. तूंबी।

तुम्बरु, पु. गन्धर्वविशेष, ऋषिविशेष, जिनविशेष, (पु. न.) फल वृक्षविशेष।

तुर, (त्रि) वेगवान् (न) शीघ्र, (स्त्री) (रा) वेग, त्वरा। जल्द, जल्दबाज़ी।

तुरग(तुरङ्ग) पु. चित्त, घोड़ा, (स्त्री)(गी) घोड़ी।

तुरगिन्, पु. अश्वारोही; घुड़चड़ा। असवार।

तुरा-साह्, पु. इन्द्र, देवताओंका राजा।

तुरि(री) स्त्री. तांतीके कपड़ा बुननेकी नाल।

तुरीय, न. ब्रह्म, (त्रि) ४ था,।

तुरुष्क, पु. गन्धद्रव्यविशेष, तुरुकजाति, तुर्किस्तान।

तुर्य, त्रि. चतुर्थ; चौथा।

तुर्वसु, पु. ययाति राजाका पुत्र।

तुलना, स्त्री. सादृश्य, परिमाण। मिसाल, बराबरी

तुलसी, स्त्री. वृक्षविशेष, तुलसी।

तुला, स्त्री. ताकड़ी, बारा राशियोंमेंसे ७ मी राशि, परिमाणविशेष।

तुला-कोटि(टी) स्त्री. नूपुर, झांजर, तराजूकी डण्डीकी नोक।

तुला-धर, पु. सूर्य। आफताब, बनियां।

तुला-धार, त्रि. धड़वाई, तकड़ी तोलनेवाला।

तुला-पुरुष, पु. महादानविशेष।

तुलित, त्रि. उछालाहुआ, मापाहुआ, उपमादिया हुआ।

तुलिम, त्रि. तोलकर बेचने योग्य वस्तु।

तुल्य, त्रि. सदृश। बराबर।

तुल्य-योगिता, स्त्री. काव्यमें एक अलङ्कार।

तुष, (न) धानका छिलका; तुस।

तुषसार, पु. अग्नि; आग।

तुषानल, पु. तुस की आग।

तुषार, पु. हिम, देशविशेष, शीकर, (त्रि) शीतल, नीहार। बरफ़ कुहर, सर्द।

तुषाराद्रि, पु. हिमालय पहाड़।

तुषित, त्रि. गणदेवता विशेष, ३६ छत्तीस।

तुष्ट, त्रि. प्रसन्न। खुश (स्त्री)(ष्टि) खुशी।

तुस, न. धूलि; धूड़। ख़ाक।

तुहिन, न. हिम, ज्योत्स्ना, (त्रि) शीतल। बरफ़, चांदनी, सरद।

तुहिन-रश्मि, **तुहिनांशु** } पु. चांद, काफ़ूर।

तूण, न. तरकश (स्त्री)(णी) संकोच।

तूणिन्, पु. तिन्दीवृक्ष, (त्रि) तूणयुक्त। तरकशवाला।

तूणिक, न. १३ अक्षरका एक छन्दोविशेष।

तूणीर, पु. शरधि। तरकश।

तूरी, स्त्री, वाद्यविशेष, तुर्य। तुरम।

तूर्ण, न. शीघ्र, (त्रि) जल्दबाज़।

तूर्य, न. वाद्ययंत्रविशेष; वाजा।

तूल, पु. न. कपास, सिंबलकी रुई, (न) आकाश।

तूष्णीक, त्रि. चुप किये हुए।

तूष्णीम्, व्य. नीरव, चुप चाप।

तूस्त, न. रेणु; धूड़।

तृण, न. घास; तिनका।

तृणधान्य, न. नीवार, श्यामाक आदि।

तृणबिन्दु, पु. मुनिविशेष।

तृण्या, स्त्री. तृणसमूह, तृणराशि; घासका ढेर।

तृतीय, त्रि. तीन संख्याका पूरक; तीसरा।

तृतीय-प्रकृति, स्त्री. नपुंसक; मुखन्नस।

तृप्त, त्रि. सन्तुष्ट, हृष्ट, पूर्णकाम, (स्त्री) (प्ति) सन्तोष, हर्ष। [पुत्री।

तृष(षा)(ष्णा) स्त्री. प्यास, इच्छा, लोभ, काम-

तृषित, त्रि. प्यासा, लोभी।
तृष्णज्, त्रि. तृष्णार्त। लालची।
तेजस्, न. चमक, तेज़ी, प्रताप, हिम्मत, ज़ोर, अपमान का न सहारना, वीर्य, स्वर्ण आदि, अग्नि, सूर्य आदि, घृत, मज्जा।
तेजस्कर, त्रि. शक्तिकारक, दीप्तिजनक। तेज़ करनेवाला, चमकनेवाला।
तेजस्वत् / **तेजस्विन्** } त्रि. प्रभावशाली, बलवान्। ज़ोरावर, रोबदार।
तेजित, त्रि. शाणित, मार्जित, उत्तोलित। तेज़ किया हुआ, माजा हुआ, उछाला हुआ।
तेजिष्ठ, तेजीयस, तेजस्विन्, त्रि. अति बलवान्। निहायत ज़ोरावर। [रौशन।
तेजोमय, त्रि. ज्योतिर्मय, दीप्तिशील। चमकीला,
तेन, व्य. इसी से। [गीला करना।
तेम(न) व्य. आर्द्रीभाव, आर्द्र करण; गीलापन,
तेमनी, स्त्री. धूमनिर्गममार्ग; चिमनी।
तैक्ष्ण्य, न. तीखापन। तेज़ी।
तैजस, त्रि. तेजोविकार, न. धातुद्रव्य, घृत।
तैतिल, पु. गण्डार, न. करणविशेष; गंडासा।
तैत्तिरीय, त्रि. तित्तरी सम्बन्धीय (स्त्री)(या) यजुर्वेदकी एक शाखा।
तैल, न. तिलों का तेल।
तैलङ्ग, पु. देशविशेष (बहु०) तिलंग के लोग।
तैल-प, त्रि. तेल पीनेवाला।
तैलिक / **तैलिन्** } पु. तेली, (त्रि) तेलका।
तैष, पु. पौष मास (स्त्री)(षी) पुष्य नक्षत्रवाली पूर्णा।
तोक, पु. शिशु, अपत्य। बच्चा, औलाद।
तोटक, न. १२ अक्षरका छन्दोविशेष।
तोत्र, न. प्राजनदण्ड; छड़ी।
तोदन, न. व्यथा, तोत्र। तकलीफ़, छड़ी।
तोमर, पु. न. अस्त्रविशेष; बर्छी।
तोय, न. जल; पानी। [देनेवाला।
तोय-द, पु. मेघ (त्रि) जलदाता। बादल, पानी
तोयदा-गम, पु. वर्षाकाल; बरसात।
तोय-धि(निधि) पु. समुद्र। बहर।
तोरण, न. बहिर्द्वार। बाहरका दरवाज़ा, (न) गर्दन।
तोरि, पु. एक तोला, १६ मासे, स्त्री. (री) वज़न।
तोलन, न. तोलना। वज़न करना।
तोष, पु. सन्तोष, हर्ष। सबर, कनायत।
तोषणीय / **तोषयितव्य** } त्रि. प्रसन्न करनेके योग्य।
तौर्यत्रिक, न. नाचना, गाना, बजाना।
तौलिक, पु. घड़वाई, चितेरा। [दिया, फेंका।
त्यक्त, त्रि. वर्जित, विसृष्ट, दत्त, क्षिप्त। तज़ाहुआ,
त्यक्तव्य, त्रि. छोड़नेके योग्य। तजनेलायक।
त्यक्तलज्ज, त्रि. निस्त्रप, निर्लज्ज। बेशरम।
त्यजन, न. छोड़देना।
त्याग, न. दान, विसर्जन, विराग। ख़ैरात, तजना।
त्यागिन् त्रि. दाता, वीर, विरागी।
त्यागिम, त्रि. छोड़नेवाला। तर्क करनेवाला।
त्याज्य, त्रि. तजनेके योग्य। तर्क करने लायक।
त्रप, न. सीसा, टीन, (स्त्री)(पा) लज्जा। शरम।
त्रपाक, पु. म्लेच्छ जाति।
त्रपित, त्रि. लज्जान्वित। शरमिन्दा।
त्रपिष्ठ / **त्रपीयस्** } त्रि. अतिलज्जित; बहुत शरमिन्दा।
त्रप्स्य, न. पतला दही; मठा।
त्रय, न. जिसके तीन अवयव हैं. (पु) तीन (त्रि) तीन संख्या वाला (स्त्री)(यी) ऋक् यजुः सामवेद, सोमराजी लता, दुर्गा, पुरन्ध्री।
त्रयी-तनु, पु. सूर्य। आफ़ताब। [धर्म।
त्रयी-धर्म, पु. वेदोक्तधर्म। तीनों वेद का कहा
त्रयोदश, त्रि. संख्याविशेष, १३ तेरह (स्त्री) (शी) १३ तेरवीं तिथि।
त्रयोदशन्, त्रि. तेरह।
त्रस, न. वन, (त्रि) जङ्गल।
त्रसरेणु, पु. स. छयपरिमाणु, झरोखेमें सूरजकी किरणसे जो रजकन दीखते हैं।
त्रसुर, पु. भीरुक। खौफ़नाक।
त्रस्त, त्रि. भीत, (न) शीघ्र; डराहुआ, जल्दी,।
त्रस्नु, त्रि. त्रासशील; डरपोक।
त्राण, न. रक्षण, मोक्ष, (त्रि) रक्षाकारक।
त्रात, त्रि. बचाया हुआ, (न) बचाना।
त्रायमाण, त्रि. बचाया हुआ।
त्रास, पु. भय, मणिमें का दोष।
त्रासित, त्रि. भीत; डराया हुआ।

त्रासिन्, त्रि. डरानेवाला ।
त्राहि, व्य. रक्ष; बचाओ ।
त्रिंश, त्रि. तीसवां ।
त्रिंशत्, स्त्री. संख्याविशेष; तीस ।
त्रिंशत्तम, त्रि. तीसवां ।
त्रिक, न. पीठकी हड्डीका निचला भाग, हिस्सा, तीन, जहां तीन राह इकट्ठे हों, (हरड़, बहेड़ा, आमला) ।
त्रि-ककुद्, पु. सोंठ पीपल और मध, विद्या अवस्था और धन, त्रिकूट पर्वत ।
त्रि-कूट, न. सोंठ पीपल मरच । [(त्रि)तिकोन ।
त्रि-कोण, न. योनि, लग्नसे ९ म, ५ म, राशि,
त्रि-गण, पु. धर्म अर्थ काम ।
त्रि-गर्त, पु. लाहोरका ज़िलअ, गणित वि०, (स्त्री) (र्ती) कामदेवकी स्त्री ।
त्रि-गुण, त्रि. सत्व रज तम (त्रि) तिगुन किया हुआ ।
त्रि-गुणात्मक, त्रि. सत्व रज और तमोमय ।
त्रि-जटा, स्त्री. राक्षसीविशेष ।
त्रिजातक, न. जावित्री, इलायची, तेजपत्रा ।
त्रिज्या, स्त्री. व्यासार्द्ध । निसफ़ कुतर ।
त्रितय, न. तीन (स्त्री) (यी) तीसरी ।
त्रि-दण्ड, न. वाङ्मनःकायदण्ड । मन वाणी और देहकी सज़ा ।
त्रिदश, पु. देवता, उत्पत्ति स्थिति नाश, बाल युवा और जरा अवस्थावाला, १३ तेरह, ३३ संख्या-वाला, १२ आदित्य ११ रुद्र, ८ वसु १ विश्वेदेव ।
त्रिदश-गोप, पु. इन्द्रगोप । बीचबहूटी ।
त्रिदशा-धिप, पु. इन्द्र । देवताओंकाराजा ।
त्रिदशा-लय, पु. स्वर्ग । देवताओंकाघर ।
त्रिदिव, पु. न. स्वर्ग, आकाश,
त्रि-दिवेश, / **त्रि-दिवौकस्,** } पु. देवता ।
त्रि-दोष, पु. वात पित्त और कफका दोष ।
त्रिधा, व्य. तीन प्रकारसे । [सफ़र ।
त्रि-धात, पु. वात पित्त कफ़ । बादी २ बल्गम ३
त्रिधामन्, पु. शिव विष्णु अग्नि ।
त्रि-नयन / **त्रि-नेत्र** } पु. शिव, (स्त्री) (ना) भगवती, दुर्गा ।
त्रि-पताक, त्रि. तीन पताकावाला, (न. माथा (पु) बालिश ।
त्रिपथगा,(मिनी) स्त्री. गङ्गा ।
त्रिपद्, / **त्रिपाद्,** } पु. विष्णु, ज्वर, बुख़ार ।
त्रिपिष्टप, पु. स्वर्ग, त्रिभुवन । बहिश्त ।
त्रि-पुण्ड्र, पु. माथेपर आड़ी तीन रेखारूप तिलक ।
त्रि-पुर, पु. असुरविशेष; तीन पुर ।
त्रिपुर-दहन / **त्रिपुरा-न्तक** / **त्रिपुरारि** } पु. शिव, महादेव ।
त्रिफला, स्त्री. हरिड़ बहेड़ा आमला ।
त्रि-वलि(ली) स्त्री. पेट और गलेमें मासके संकोचसे तीन लकीरें ।
त्रि-भुज, न. त्रिकोन क्षेत्र; मुसल्लस ।
त्रि-भुवन, न. स्वर्ग मर्त्य पाताल । [अंश ।
त्रि-मधु, न. घी चीनी मधु (पु) ऋग्वेदका एक
त्रि-मार्गगा, स्त्री. गङ्गा ।
त्रि-मूर्ति, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।
त्रि-यामा, स्त्री. आद अन्तका आधा २ पहिर छोड़कर बीचके तीन पहिरवाली रात ।
त्रि-रात्र, न. तीन रात; एक रात सारादिन और अगली रात ।
त्रि-लोकी, स्त्री. स्वर्ग मर्त्य पाताल ।
त्रि-लोकेश, पु. शिव विष्णु सूर्य ।
त्रि-लोचन, पु. शिव स्त्री. (ना) दुर्गा ।
त्रि-वर्ग, पु. धर्म अर्थ और काम, सत्व रज, और तम, आय व्यय वृद्धि, त्रिफला, त्रिकुटा । [फला ।
त्रि-वर्णक, न. ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य, त्रिकुटा, त्रि-
त्रि-वर्षिका, स्त्री. तीन बरसकी गाय ।
त्रि-विक्रम, पु. विष्णु वामन रूपी ।
त्रि-विद्या, स्त्री. ऋक् यजुः साम, यह तीन ।
त्रि-विध, त्रि. तीन प्रकारका ।
त्रि-वृत्, पु. तेउड़ी, तिलड़ी । [गङ्गा ।
त्रि-वेणी, स्त्री. यमुना और सरस्वतीसे मिली हुई
त्रि-वेदिन्, पु. त्रिवेदाध्यायी; तीन वेदका जानने-वाला, या पढ़नेवाला ।
त्रि-शङ्कु, पु. स्वनाम ख्यात राजा ।
त्रि-शिख, पु. राक्षस विशेष (न) त्रिशूल (त्रि) तीन शिखावाला ।
त्रि-शिरस् पु. राक्षस विशेष, ज्वर, कुबेर ।

त्रि-शीर्ष / त्रि-शूल } न. तीन शाख या सूलवाला अस्त्र।
त्रिशूलिन्, पु. शिव, (त्रि) त्रिशूलधारी।
त्रिष्टुभ्, स्त्री. ११ अक्षरका एक छन्द।
त्रि-सन्ध्य, न. प्रान्ह मध्यान्ह, और अपरान्ह।
त्रि-सवन, त्रि. त्रैकालिक स्नान, तीन कालका स्नान।
त्रि-स्रोतस्, स्त्री. गङ्गा, भागीरथी।
त्रि-हायणी, स्त्री. तीन वर्षकी गाय।
त्रुटि(टी) स्त्री. हानी, कमी, संशय, टूक, छोटी इलायची, दोघड़ी।
त्रुटित, त्रि. खण्डित, क्षत; टूटा हुआ, जख्मी।
त्रेता, स्त्री. त्रय, युग, यज्ञकी तीनों अग्नियें, यथा दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय, जूएमें तीनों दलोंका एक प्रकार गिरना।
त्रेधा, / त्रेधास् } व्य. तीन तरहसे; तीन बार।
त्रैगुणिक, त्रि. तीन गुणवाला; तीन गुणोंका आ- [इक।
त्रैगुण्य, न. सत्व रज तम यह तीन, संसार।
त्रैध, व्य. तीन भांतसे।
त्रै-मातुर, त्रि. तीन मांका पुत्र।
त्रै-राशिक, पु. अङ्क क्रिया विशेष, अरवा।
त्रै-लोक्य, न. त्रिलोकी, स्वर्ग मर्त्य पाताल। [का।
त्रै-वार्षिक, त्रि. तीन बरसमें होनेवाला, तीन वर्ष-
त्रै-विद्य, पु. वेदत्रयीके जाननेवाला, (न) तीनों वेद।
त्रैविध्य, न. तीन प्रकारका।
त्रोटक, न. दृश्य काव्य विशेष, रुष्ट वाक्य, नाटक विशेष (स्त्री)(की) रागिनीविशेष।
त्रोटि(टी) स्त्री. एक पक्षी, एक मछली।
त्र्य-क्ष, पु. शिव (त्रि) त्रिनेत्र।
त्र्यङ्कट, पु. ईश्वर।
त्र्यनीका, स्त्री. सेनाविशेष. फ़ौजकी तादाद।
त्र्यमृतयोग, तिथि वार नक्षत्रात्मक योग।
त्र्यम्बक, पु. शिव, चन्द्रशेखरका पुत्र(का)दुर्गा।
त्र्यम्बक-सख, पु. कुबेर देवता।
त्र्यशीत(ति) त्रि. स्त्री. तिरासी।
त्र्यस्र, न. तिकोन।
त्र्यस्पर्श, पु. एक दिनमें तीन तिथियोंका स्पर्श; एक तिथिका तीन दिन होना।
त्र्यहिक, त्रि. दिन त्रयान्तरित; तीन दिन पीछे।
त्व, त्रि. भिन्न, अन्य।
त्वक्सार, पु. बांस, दारचीनी। [छाल।
त्वच(च्)(चा) न. स्त्री. वकुला, छाल, चमड़ा,
त्वत्, त्रि. अन्य, भिन्न; दूसरा, जुदा।
त्वत्क, त्रि. त्वदीय; तेरा।
त्वरा, स्त्री. वेग, देरी न करना।
त्वरित, त्रि. सत्वर, शीघ्र, (न) त्वरा।
त्वष्टृ, पु. विश्वकर्मा, सूत्रधार; खाती।
त्वादृश्(श)(क्ष) त्रि. तुमारे तुल्य। [सूर्यका।
त्वाष्ट्र, पु. वृत्रासुर (स्त्री) (ष्ट्री) सूर्यपत्नी (त्रि)
त्विष्(षा) स्त्री. तेजः, कान्ति। चमक दमक।
त्विषां-पति, पु. सूर्य; आफ़ताब।
त्सरु, पु. तलवार आदिकी मुट्ठी, दस्ता, हैण्डल।

थ

त वर्गका २ य, १७ वां, व्यञ्जन दन्त्य अक्षर।
थ, पु. पर्वत, भयरक्षक, रोगविशेष, (न) रक्षण, मङ्गल, भय।
थुत्कार, पु. निष्ठीवन; थूक।
थुर्ण, त्रि. विनाशित; नाश किया हुआ।

द

द, त वर्गका ३य, दन्त्य अक्षर, १८ वां, व्यञ्जन।
द, पु. पर्वत, छेद, दांत, (न) कलत्र, खण्डन, (स्त्री) रक्षा, पवित्रक०, सन्ताप, (त्रि) दान करनेवाला, शुद्ध। [ण्डन, सन।
दंश, पु. स्त्री. वनकी मक्खी, मच्छर, सोज, ख-
दंशक, त्रि. डसनेवाला (पु) डंक।
दंशन, न. वर्म, डसना।
दंष्ट्रा, स्त्री. दन्तविशेष; डाढ़।
दंष्ट्रिका, स्त्री. डाढ़।
दंष्ट्रिन्, पु. सूअर, सांप, (त्रि) डाढ़वाला।
दक, न. जल; पानी।
दक्ष, पु. ब्रह्माका पुत्र, वृक्षविशेष, मुनिविशेष, शिवजीका बैल, अग्नि, शिव, प्रिय, (त्रि) समर्थ, (स्त्री)(क्षा) दक्ष प्रजापतिकी बेटी, पृथिवी।
दक्ष-जा, स्त्री. दक्षकी बेटी, सती, दुर्गा, अश्विनी आदि २७ सताईस नक्षत्र।
दक्षिण, त्रि. अनुकूल, मुताबिक।
दक्षिणतस्, व्य. दक्खनकी तर्फ़से, या देशसे।
दक्षिण-पथ, न. दक्षिण दिशा। जनूब।
दक्षिण-पूर्वा, स्त्री. पूर्व दक्षिण कोन, गोशा जनूबो मग़रब।

दक्षिण-प्राची, स्त्री. अग्नि-कोन। जनूबो भगरब।
दक्षिण-प्रवण, त्रि. दक्षिणाभिमुख; दक्खनकी ओर मुंहवाला।
दक्षिणा, स्त्री. दक्षिण-दिशा, यज्ञपत्नी, कर्मकी पूर्णताके अर्थ देने योग्य द्रव्य, एक प्रकारकी नायिका, प्रतिष्ठा।
दक्षिणा-यन, न. क्रान्तिसे सूर्यका दक्षिणकी ओर जाना, आषाढ़से छय मास।
दक्षिणा-चल, पु. पर्वतविशेष।
दक्षिणा(हि), **दक्षिणेन**, **दक्षिणात्** व्य. दक्षिणकी ओर, दक्षिणका।
दक्षिणा-चार, त्रि. श्रेष्ठाचारी, नेक चलन।
दाक्षिणात्य, त्रि. दक्षिणका रहिनेवाला।
दक्षिणा-पथ, पु. दक्षिण देश।
दक्षिणा-वर्त्त, पु. दक्षिणकी ओरसे घूमना।
दक्षिणेर्मन् पु. व्याधद्वारा दक्षिण की ओर विंधा हुआ मृग।
दक्षिण्य, **दक्षिणीय** त्रि. दक्षिणा प्राप्त करनेके योग्य।
दग्ध, त्रि. भस्मीकृत; जलाया हुआ, तपाया हुआ, (स्त्री)(ग्धा) तिथिविशेष।
दण्ड, पु. न. लकड़ी, लाठी, (पु.) दमन, युद्ध, व्यूह-विशेष, अश्वविशेष, सैन्य, ८ हाथ परिमाण, कोन, सन्तान, ६० पल, सूर्यका अनुचर, यम, नृपविशेष।
दण्डक, पु. न. छन्दोविशेष, काम्यकर्म, (पु. स.) जनस्थान, दण्डक वन, वेदका एक ग्रंथ।
दण्ड-धर, **दण्ड-धार** पु. राजा, कुम्हार, (त्रि) जिसके हाथ दण्ड हो।
दण्डन, न. दण्डदेना। सज़ा देना।
दण्ड-नायक, पु. सैन्याध्यक्ष। जज, कोतवाल।
दण्ड-नीति, स्त्री. राजनीतिशास्त्र। कानून।
दण्डनीय, त्रि. दण्डयोग्य। सजाके लायक।
दण्ड-पाणि, पु. यम, शिवका अनुचर।
दण्ड-पद, पु. हठसे ऊंचे पांव किये हुए।
दण्ड-पारुष्य, न. विवादविशेष। एक खासकिस-मका मुकद्दमा।
दण्ड-पाल, पु. मत्स्यविशेष। दरवान।
दण्ड-प्रणयन, न. दण्डदान। सज़ा देना।
दण्ड-भीति, स्त्री. दण्डका भय। सज़ाका डर।
दण्ड-भृत्, पु. दण्डधारी जज; दरवान।
दण्ड-यात्रा, स्त्री. दण्डदेनेके लिये चलना।
दण्डवत्, त्रि. दण्डी साधु, डण्डौत।
दण्ड-वादिन्, त्रि. दण्ड कहनेवाला। सज़ाका हुकम देनेवाला।
दण्ड-विधि, पु. शरीरोंके काबू रखनेके क़ायदे।
दण्ड-विष्कम्भ, पु. जुरमानेके पैसे।
दण्डा-जिन, पु. दण्ड और मृग चर्म।
दण्डा-दण्डी, व्य. परस्पर दण्डयुद्ध; लाठमलाठी।
दण्डायमान, त्रि. सीधा खड़ा हुआ २।
दण्डार, पु. शकटविशेष, मत्त-हाथी, कुम्हार का चक, धनुष।
दण्डा-श्रमिन्, त्रि. दण्डी सन्यासी, ४र्थ, आश्रमी।
दण्डा-हत, त्रि. दण्डसे माराहुआ।
दण्डिक, त्रि. दण्डधारी। दरवान, डंडा बरदार।
दण्डित, त्रि. शासित। सज़ायाव।
दण्डिन्, पु. यम, नृपविशेष, द्वारपाल, पण्डित विशेष, संन्यासी (त्रि) छड़ीबर्दार।
दण्ड्य, त्रि. दण्डार्ह। सज़ाके लायक।
दत्, पु. दन्त; दांत।
दत्त, त्रि. दिया हुआ। एक जाति।
दत्तक, पु. पोष्यपुत्र, १२ तरहके पुत्रोंमेंसे एकप्र-कारका पुत्र।
दत्तात्मन्, पु. स्वयं दत्त पुत्र। खुदादिया हुआ पुत्र।
दत्तात्रेय, पु. अत्रिका पुत्र ऋषिविशेष।
दत्ताप्रदानिक, न. एक खास झगड़ा; दी हुई वस्तु फेर लेनी और उसपर झगड़ा।
दत्ति, स्त्री. दान। वख़शश।
दत्रिम, पु. दत्तकपुत्र, (त्रि) दाननिर्वृत।
ददत्(ददान) त्रि. दानकर्त्ता; देनेवाला।
दद्रु(द्रू) पु. रोगविशेष; दाद की बीमारी।
दद्रुल, त्रि. दद्रुयुत; दादकी बीमारीवाला।
दधत्(दधान) त्रि. धारण करनेवाला।
दधि, न. दुग्धविकार विशेष; दही।
दधि-कूर्चिका, स्त्री. दहीकी मलाई।
दधि-चार, पु. मठा, आध विलोया दही।
दधि-मण्ड, पु. दहीका मठा।
दधि-मण्डोद, पु. दही मथी हुईका समुद्र।

दधिमुख, त्रि. वानरविशेष । सुपेद मुख वाला वन्दर ।
दधि-शोन, पु. दहीकी मलाई ।
दधि-सक्तव, पु. दही और सत्तू ।
दधिस(सा)र, पु. मठा, छाछ ।
दधि(धी)च(चि) पु. मुनिविशेष ।
दधीच्य-स्थि, पु. दधीचि ऋषिकी हड्डिऐं ।
दधृष्, पु. धृष्ट; डीठ ।
दध्र, पु. यम विशेष ।
दनु, स्त्री. कश्यप की एक स्त्री ।
दनु-ज, पु. दानव, राक्षस ।
दनु-द्विष् }
दनुजारि } पु. विष्णु भगवान् ।
दन्त, पु. दांत, कुञ्ज, चोटी, पर्वतके आगेकी पृथिवी ।
दन्तक, पु. नागदन्तक; खूंटी ।
दन्त-च्छद, पु. ओष्ट; ओंठ । [(न) दांत धोना ।
दन्त-धावन, पु. खिदर वृक्ष; खैरेका पेड़ दातुन,
दन्तपत्र(त्रिका) न. स्त्री. कर्णभूषण विशेष । कानका जेवर ।
दन्त-चक्र, पु. राजा विशेष ।
दन्ता-वासस्, पु. ओष्ठ; ओंठ ।
दन्तालि(लिका)(ली), स्त्री. दांतों की पाल, लगाम ।
दन्ता-वलि, पु. दांतों की पाल ।
दन्तावल, पु. हस्ती; हाथी ।
दन्तिन्, पु. हाथी, पर्वत (त्रि) दांतवाला ।
दन्तुर, त्रि. ऊंचे दांतवाला, कुटिल । [हितकारी ।
दन्त्य, त्रि. दातोंसे उच्चरित अक्षर, दांतका-
दन्द-शूक, पु. सांप, राक्षस, दरिद्री ।
दभ्र, पु. अल्प; थोडा ।
दम, पु. दमन, दण्ड, इन्द्रियनिग्रह; इन्द्रियोंको का वूररखना, मनकी कायमी, बुरेकामोसे मनकी रोक, कीचड़ ।
दमक, पु. दमन करनेवाला । इन्द्रिय रोकनेवाला ।
दम-घोष, पु. शिशुपालका पिता ।
दमथ(थु) पु. दमन, दण्ड, रोक । सज़ा ।
दमन, पु. मुनिविशेष, वीर, पुष्पविशेष, शत्रु, न. निग्रह, सज़ा । [नलकी स्त्री ।
दमयन्ती, स्त्री. दमन ऋषिके वरसे उत्पन्न, भैमी,
दमित, त्रि. शासित; सिखायाहुआ, सज़ा दिया हुआ । [सके रोकनेवाला ।
दमिन्, त्रि. दमनशील, जितेन्द्रिय । रोकना, हवा-
दमुनस्, पु. अग्नि, शुक्र । आग, नुतफ़ा ।
दम्पती, पु. द्वि. स्त्रीपुरुष । खाविंद जोरू ।
दम्भ, पु. शठता, छल, अहङ्कार, कल्क, दिखावा, फ़रेब, ग़रूर ।
दम्भिन्, त्रि. छलिया । मग़रूर, पाखण्डी ।
दम्भोलि, पु. वज्र । [दमन करनेके योग्य ।
दम्य, पु. सांड, भार उठानेके योग्य वछड़ा, (त्रि)
दया, स्त्री. कृपा; दूसरेके दुःख हटानेकी मरज़ी ।
दयालु, पु. दयावान् । रहीम ।
दयित, त्रि. प्रिय, रमणीय, पु. पति (स्त्री)(ता)प्रिया ।
दर, पु. न. भय । खौफ़ ।
दरद, पु. जातिविशेष, देशविशेष, (त्रि) भय-दाता । खौफ़ देनेवाला । [भय, हृदय ।
दरित, स्त्री. प्रयात, पर्वत, म्लेच्छजातिविशेष ।
दरि(री) स्त्री. कन्दरा । ग़ार । [रावना ।
दरित, त्रि. डराहु०, कांपाहु०, फटाहु० । (त्रि) ड-
दरिद्र, त्रि. निर्धन, दीन, क्षीण । मुफ़लिस, आजिज़ । कमज़ोर ।
दरिद्रता, स्त्री. ग़रीबी । मुफ़लिसी ।
दरिद्रित, त्रि. निर्धन कियाहु० । ग़रीब हुआ २ मुफ़लिस हुआ २ ।
दरोदर, न. जूएकी खेल ।
दर्रि, त्रि. सकम्प; कांपता हुआ ।
दर्दुर, पु. मेंडक, बादल, पर्वतविशेष, वाद्यभांड (स्त्री)(रा) दुर्गा ।
दर्प, पु. गर्व, अहङ्कार, ताप, कस्तूरीमृग । ग़रूर, बुखार, कस्तूराहिरण ।
दर्पक, पु. मदन, कामदेव । [आंख ।
दर्पण, न. आदर्श, आरसी (न) नयन । आईना,
दर्पित, त्रि. }
दर्पिन, त्रि. } अहङ्कारी । मग़रूर ।
दर्भ, पु. दूब, खाक, कुश, कांस, मूंज और वलल यह छय घास ।
दर्वि(र्वी) स्त्री. करछी, डोई, सांपका फण ।
दर्वि-कर, पु. सर्प, फणधारी ।
दर्श, पु. अमावस, दर्शन । दीदार ।

दर्शक, त्रि. देखनेवाला, दिखानेवाला, द्वारपाल।
दर्शन, न. अवलोकन, देखना, जानना, सोना, धर्म, नियम, आकृति, नेत्र, दर्पण, १ सांख्य २ योग ३ न्याय ४ वैशेपिक ५ मीमांसा ६ वेदान्त यह छय शास्त्र, ज्ञानशास्त्र।
दर्श-नीय, स्त्री. सुन्दर। देखनेके लायक़।
दर्शयितृ, त्रि. द्वारपाल, प्रदर्शक; दिखानेवाला।
दर्शात्यय, पु. सुदी पड़वा तिथि।
दर्शित, त्रि. दिखाया हुआ, प्रकाश किया हुआ।
दर्शिन्, त्रि. देखनेवाला।
दल, न. पत्र, दण्ड, समूह, अस्त्र, फलक; पत्ता, छड़ी मजमह, हथियार, ढाल। [फोडना।
दलन, न. मलडालना, कुचलडालना, तोड़ना,
दलित, त्रि. मसाहुआ, तोड़ाहुआ, खोलाहुआ।
दलप, पु. सोना, जमातका सर्दार।
दलाढक, पु. जंगली तिल, एड़ी, गेरूमटी, राग, रीत, सिरीस का फूल।
दला-ढ्य, पु. दर्याके किनारोंका कीचड़।
दलि, पु. ढेला, डली।
दलिक, पु. काष्ट; लकड़ी।
दल्भ, पु. प्रतारणा, पाप, एक मुनिका नाम, चक्र।
दल्भि, पु. चांद, वज्र।
दव, पु. वन, वनाग्नि, सन्ताप। जङ्गल, जंगलकी आग, तपश। [ताओ, तेज़ी।
दवथु, पु. सन्ताप, परिताप, उद्वेग। तपश, पछ-
दवयत्, त्रि. सतायाहुआ, घवरायाहुआ।
दवा-ग्नि, पु. वनाग्नि; वनकी आग।
दविष्ठ, **दवीयस्** } त्रि. अति दूरवर्ती; वहुत दूरका।
दशक, न. दश संख्या, १० दस।
दश-कण्ठ, दश-कन्धर, दश-ग्रीव, दशमुख } पु. रावण राक्षस।
दशति, त्रि. शत संख्या, १००।
दशती, स्त्री. सामवेद का अंश।
दशधा, व्य. दश प्रकार, दशवार।
दश-वल, पु. बुद्ध देव,।
दश-भुजा, स्त्री. दुर्गादेवी।
दशन्, त्रि. वहु० १० दश संख्या।
दशन-च्छद, न. ओष्ठ; ओठ।
दश-पुर, न. नगरविशेप।
दशम, त्रि. दश संख्या पूरक, १० वां (स्त्री) (मी) तिथिविशेप, जीवन की वाल्य अवस्था।
दशमिन्, त्रि. अतिवृद्ध; वहुत बूढ़ा।
दश-मूल, न. पाचन विशेप।
दश-रथ, पु. श्रीरामजीका पिता, अयोध्याका राजा।
दश-शतांशु, पु. सूर्य; सूरज।
दश-हरा, स्त्री. पर्वविशेप, गङ्गाजन्मदिन। आपाढ़ सुदी १० मी।
दशा, स्त्री. अवस्था, वाल्यादि, इच्छा, चिन्ता, स्मृति, गुण-कीर्तन, उद्वेग, विलाप, उन्माद, व्याधि, जडता, मरण, यह दस, दस्सी, दीवेकी वत्ती।
दशा-कर्प, पु. दीपक, कपड़ेका अंचल, ग्रहण,। चराग़।
दशा-ङ्गुल, न. फलविशेप। खरबूज़ा।
दशा-तनु, पु. दशावतार।
दशा-नन, पु. रावण राक्षस।
दशार्ण, पु. देशविशेप (स्त्री)(र्णा) नदीविशेप।
दशा-र्ह, पु. देशविशेप।
दशा-वतार, पु. विष्णु १ मत्स्य २ कूर्म, ३ वराह ४ नृसिंह ५ वामन, ६ पर्शुराम ७ रामचंद्र ८ कृष्ण ९ बुद्ध १० कल्कि।
दशा-श्व, पु. चन्द्रमा। माहताव।
दशा-ह, पु. दश दिन।
दशेर, पु. श्वापद। दरिन्दा।
दशेरक, पु. मरुभूमि, देवस्थान। रेगस्थान।
दष्ट, त्रि. डसाहुआ।
दसन, न. उत्क्षेपण, प्रस्थापन; उछालना, भेजना।
दस्त, त्रि. प्रक्षिप्त, प्रेरित, नष्ट, फेंकाहुआ, भेजाहुआ, खोयाहुआ।
दस्य, पु. यजमान, चोर, अग्नि, दुष्ट।
दस्यु, पु. शत्रु, चोर, डाकू, धर्म-च्युत।
दस्र, पु. द्वि० अश्विनीकुमार द्वय, पु., गधा।
दहन, न. अग्नि, दुष्ट लोक, चिते का पेड़, (त्रि) जलानेवाला, हटानेवाला; (न) जलाना।
दहन-केतन, पु. धूम; धूआं।
दहनीय, त्रि. दाह्य; जलानेके लायक।
दहर, पु. मूसा, अल्प, वाल, सूक्ष्म, हृदयाकाश।
दह्र, पु. वनकी आग।

दा, स्त्री. दान, पालन, रक्षण, शोधन, छेदन, उपताप। खैरात, परवरिश, हिफ़ाज़त, काटना, पछतावा। [तारे।

दाक्षायणी, स्त्री. दक्ष की कन्या, सती, बहु (ण्यः)

दाक्षिणात्य, त्रि. दक्खन दिशा का।

दाक्षिण्य, न. आनुकूल्य, परच्छन्दानुवृत्ति। मुताबकत, दूसरेकी मरज़ीके मुताबिक, होशियारी (त्रि) दक्षिणाके योग्य।

दाक्षी, स्त्री. पाणिनी मुनि की माता।

दाक्षी-सुत, पु. पाणिनी मुनि।

दाडिम्ब, पु. अनारका पौदा, (न.) अनार।

दाढा(ढि)(ढिका) स्त्री. दंष्ट्रा, दाढ़, लंबा सांप।

दात, त्रि. पूत, कर्तित; काटाहुआ।

दातव्य, त्रि. देने योग्य; देनेके लायक।

दातृ, त्रि. दानशील, दान-कर्ता; देनेवाला।

दात्यूह, पु. पपीहा पंछी।

दात्यौह, पु. चातक पक्षी; पपीहा। [औरत।

दात्र, न. अस्त्रविशेष, दातरा (स्त्री) (त्री) फ़याज़

दाधिक, न. दधिसे संस्कृत वस्तु; रायता।

दान, न. देना, यह तीन प्रकारका है, हाथीकी मस्ती, काटना, पालना, देवता या ब्राह्मणके लिये देना।

दान-पात्र, न. दान देनेके योग्य ब्राह्मण।

दानव, पु. दैत्य। [जल।

दान-वारि, पु. देवता, विष्णु (न) हाथीके मद का

दान-वीर, **दान-शील**, **दान-शौण्ड** } त्रि. अति-दाता। फ़याज़।

दानीय, त्रि. देय, दानका पात्र(न)दान। खैरात।

दान्त, त्रि. वशीकृत, दमित, तपःक्लेशसहित, जितेन्द्रिय, शान्त, सौम्य, दन्तसम्बन्धीय। वस कियाहु०, दबायाहु०, तकलीफ़ोंके सहनेवाला, इन्द्रिय जीतनेवाला, दांतका।

दापित, त्रि. वश कियाहुआ, सज़ा दियाहुआ, दिलवायाहुआ।

दाप्य, त्रि. दिलवाने के योग्य।

दामन्, न. स्त्री. रज्जू, सूत्र, माल्य (स्त्री) (नी) पशुबन्धन रज्जू। रस्सी, डोरी, माला, मवेशी बांधनेका रस्सा। [वग़ैरहकी पिछाड़ी।

दामाञ्चल(न) न. पश्वादि पादबन्धन रज्जु; घोड़े;

दामो-दर, पु. कृष्णदेव, जैन।

दाम्पत्य, न. परिणयावस्था; विवाहकी रीत।

दाम्भिक, त्रि. धूर्त; शरीर, (पु) बगुला।

दाय, पु. पैतृकधन। वरासत, दहेज, तकसीम होनेके लायक चीज़ (त्रि) दाता।

दायक, त्रि. दाता, क्षतिपूरक, दायी; देनेवाला, कमी पूरी करनेवाला, वारिस।

दाय-भाग, पु. वरासतकी तक़सीम, विरसा बांटनेकी रीत, व किताब।

दाया-द, पु. पुत्र, जाति, सपिण्ड(पु.स)धन-भागी। बेटा, शरीक, वारिस।

दायिन्, त्रि. दाता, क्षतिपूरक, प्रतिवादी, प्रतिभू। देनेवाला, कमीपूरी करनेवाला, मुद्दआलय, ज़ामन।

दार, पु. बहु० पत्नी (पु) काम। जोरू।

दारक, पु. पुत्र विष्णु का सारथी (स्त्री)(रिका) कन्या, (त्रि) फ़ाड़नेवाला।

दार-कर्मन्, न. विवाह। शादी।

दारण, न. विदारण, तत्साधन, (त्रि) विदारक। फ़ाड़ना, फाड़नेका आला, फाड़नेवाला।

दारद, पु. पारा, हींग, विष, (त्रि) दरदका।

दारित, त्रि. विदारित; फ़ाड़ाहुआ।

दारिद्र्य, न. अकिञ्चनत्व। मुफ़लसी।

दारु, पु. न. काष्ठ, दियार, पित्तल, (त्रि) काटनेवाला, कारीगर। [लकड़ीकी पुतली।

दारुक, पु. श्रीकृष्णसारथि, (न) दियार, (स्त्री)(का)

दारुण, पु. चिरायता, काव्यके छय रसोंमेंसे एक (त्रि) भयङ्कर, (स्त्री)(णा) एक ख़ासरात।

दार्ढ्य, न. दृढ़ता। कायमी, मज़बूती।

दार्तेय, त्रि. चमड़ेका बनाहुआ।

दार्दुर, न. दक्षिणावर्त शंख, लाख, जस(त्रि) मेंडक का, बादलका।

दार्वट, न. चिन्ताघर, विचारघर, कचहरी।

दार्वण्ड, पु. मयूर; मोर।

दार्वद, त्रि. पाषाणका बना, पत्थरका।

दाल, पु. दलन, कोदों, एक प्रकारका शहद।

दाव, पु. वन, वनकी आग, ताप।

दावा-ग्नि, पु. वनकी आग।

दाश, पु. धीवर, माहीगीर, नौकर, ग़ुलाम।

दाशरथ(थि) पु. दशरथ राजाका पुत्र, राम।
दाशार्ह, त्रि. दशार्हदेशीय (पु) कृष्ण, यादव।
दाश्वत्, त्रि. जिसने दान किया है। दिहिंदा।
दास, पु. भृत्य, धीवर, शूद्र, (स्त्री) (सी) (सिका) शूद्रा, झीवरी, लौंडी।
दासेर(क) पु. दासीका पुत्र, ऊंठ।
दास्य, न. दासत्व, चाकरी। गुलामी।
दाह, पु. दहन, भस्मीकरण, गरमी, जलाना।
दाहक, पु. चित्रक (त्रि) दाहकारी; जलानेवाला।
दाहन, न. भस्मीकरण; जलाना।
दाहनीय, त्रि. दाह्य। जलानेलायक।
दाहसरि, पु. श्मशान; मरघट।
दाहार्ह, } त्रि. दाह करनेके योग्य।
दाह्य, }
दिक्कर, पु. युवा-पुरुष (स्त्री)(री) युवती स्त्री।
दिग्पति } पु. दिशाओंके स्वामी देवता, पूर्वका
दिग्पाल } इन्द्र, अग्निकोणका अग्नि, दक्षिणका यम, प्रतीचीका वरुण, वायुका पवन, उत्तरका कुवेर, ईशानका शिव, ऊर्ध्वका ब्रह्मा, अधोदिक्का अनन्त। सूर्य, शुक्र, भौम, राहु, शनि, सोम, बुध, पूर्व आदि दिशाओंके क्रमसे देवता।
दिग्शूल, न. दिग् विशेष गमने निषिद्ध वारादि, दिशाशूल। खास २ तर्फ़ जानेमें मनह कियेहुए वाद घड़ी वगैरह।
दिगन्त, पु. दिङ्मण्डल। उफक।
दिगन्तर, पु. आकाश। आसमान।
दिगम्बर } पु. शिव, क्षपणक, (त्रि) नंगा, अं-
दिग्वासस् } धेरा (स्त्री) (री) दुर्गा, नंगी।
दिग्ध, पु. विष भरे वाण, स्नेह, आग, प्रवन्ध (त्रि) लिबड़ाहुआ। [ज़रासा।
दिङ्मात्र, न. एक देश, (त्रि) अल्पमात्र; तनक,
दित, त्रि. छिन्न; कटाहुआ (स्त्री) (ति) दैत्योंकी मा, (न) तोडना।
दिति-ज, } पु. दैत्य, असुर। दितिके वेटे।
दिति-सुत, }
दित्सा, स्त्री. दानेच्छा; देनेकी इच्छा।
दिदृक्षा, स्त्री. दर्शनेच्छा। देखनेकी मरज़ी।
दिदृक्षमान, त्रि. दर्शनेच्छुक। देखनेकी इच्छा करता हुआ।
दिदृक्षु, त्रि. दर्शनेच्छुक। देखने की इच्छावाला।
दिधक्षा, स्त्री. दाहेच्छा। जलानेकी मरज़ी।
दिधि, पु. दैर्घ्य; लंवाई।
दिधिषु, (षू) स्त्री. पुनर्भू, छोटी का पहिले वि-वाह होनेपर अविवाहिता वड़ी वहिन (पु) पु-नर्भू का पति।
दिन, पु. न. दिवा भाग, दिवस। रोज़।
दिन-कर, (कृत्) } पु. सूर्य। आफ़ताव।
दिन-मणि }
दिन-करा-त्मज, पु. शनि, यम, कर्ण, मनु (स्त्री) (जा) यमुना नदी।
दिन-यापन, पु. दिनविताना।
दिना-दि, पु, प्रातःकाल। सुवह।
दिना-न्त, पु. सायंकाल। शाम।
दिलीप, पु. रघुराजा का पिता।
दिव्, स्त्री. } स्वर्ग, आकाश।
दिव, न. }
दिवस, पु. न. दिन। रोज़।
दिवस्पति, पु. इन्द्र, देवराज, सूर्य।
दिवस्पृथिव्यौ, स्त्री. द्वि. स्वर्ग और पृथिवी। आसमान और ज़मीन।
दिवा, व्य. दिनमे, (पु)दिन। रोज़।
दिवा-कर, पु. सूर्य, अर्कवृक्ष, काक, पुष्प विशेष।
दिवा-कीर्ति, पु. नाई, चाण्डाल, उल्लू।
दिवा-तन, दिनका।
दिवा-निशि, न. अहोरात्र; दिनरात।
दिवान्ध, पु. पेचक; उल्लू।
दिवा-भीत, पु. उल्लू, सुपेद–कमल, चोर, (त्रि) दिनसे डराहुआ।
दिवा-मणि, पु. सूर्य। आफ़ताव।
दिवा-शय, त्रि. दिनमें सोने वाला।
दिवि, पु. पक्षि विशेष।
दिविषद् }
दिवोकस् } पु. स्वर्गवासी, देवता, पपीहा; मृग,
दिवौकस् } शहदकी मक्खी, हाथी।
दिवोदास, पु. काशी-राज।
दिव्य, त्रि. स्वर्गीय; स्वर्गका, मनोहर (न) चन्दन, लौंग, कसम (स्त्री) (व्या), हरड़, आवली, शता-वरी, महामोदा, ब्राह्मी, ज़ीरा, सुपेद दूव, एक खास नायिका। [(पु) कृष्ण; अन्ध।
दिव्य-चक्षुस्, त्रि. अतीन्द्रियार्थदर्शी, सुनयन,

दिव्य-रक्त, न. महामणि, चिन्तामणि। [का क्षत।
दिश्(शा) स्त्री. पूर्व आदि दिक्, रीति, दांत-
दिश्य, त्रि. दिग्भव, दिगातीत। दिशाका, दिशाओंसे परे।
दिष्ट, न. भाग्य (पु) काल (त्रि) दिष्ट, उपदिष्ट, दत्त, प्रदर्शित। किसमत, वकत, हुकम दिया हुआ, दियाहूआ दिखाया हुआ।
दिष्टान्त, पु. मृत्यु; मौत।
दिष्टि, स्त्री. परिमाण, भाग्य, उत्सव, हर्ष।
दिष्ट्या, व्य. आनन्दसे, भाग्यसे। किस्मतसे।
दीक्षा, स्त्री. अपने गुरुके मुखसे मन्त्र ग्रहण, उपदेश, संस्कार, यज्ञ, काम का नियम।
दीक्षागुरु, पु. उपदेष्टा, मन्त्रोपदेष्टा। हादी, नेक अमल सिखानेवाला।
दीक्षान्त, पु. यज्ञका शेष। वड़े यज्ञकी पूर्णताके लिये एक छोटा याग।
दीक्षित, त्रि. यज्ञ आदि कर्ममें संकल्प करके संयम करनेवाला, गुरुके मुखसे जिसने मंत्र सुना है, संस्कृत, उपदिष्ट, कापिल नगरवासी-यज्ञदत्तनाम ब्राह्मण।
दीधिति, स्त्री. किरण। शुआ।
दीधितिमत्, पु. सूर्य। आफ़ताव।
दीन(क), त्रि. दुःखित, शोच्य, कातर, हीन (स्त्री) (ना) मूषिका (न) तगर पुष्प, दुखिया; अफ़सोसके लायक, हैरान, आजज़, चूही।
दीनता, स्त्री. दारिद्य। मुफ़लिसी, ग़रीबी। [सोना।
दीनार, पु. स्वर्णभूषण, सोनेका सिक्का, ३२ रत्ती
दीप, पु. दीपक, दीया। चराग़।
दीपक, न. काव्य मे एक अलंकार, केसर, रोली (पु) चराग़, रागविशेष, (त्रि) प्रकाश करनेवाला।
दीपन, त्रि. उद्दीपक, पाचक (न) कुंकुम, उद्दीपन (स्त्री) (नी) मेथी, अजवेन, (पु) मोरकी कलगी, प्याज़।
दीप-माला } **दीपाली** } स्त्री. दीपान्विता अमावस्या; कार्तिक वदी अमावस, दिवाली। [किया।
दीपित, त्रि. चमकीला, उजाला किया, ज़ाहिर
दीप्त, न. हींङ्, सोना, (त्रि) जलाहुआ, चमकाहुआ (पु) सिंह (स्त्री) (प्ति) तेज, प्रभा, शोभा, कान्ति।
दीप्ताग्नि, पु. अगस्त्य मुनि, जलती आग, (त्रि) जिसका हाज़मा तेज़है।
दीप्ताक्ष, पु. मयूर; मोर,
दीप्य (क) पु. अजवेन, ज़ीरा, मोरकी कलगी, रुद्र जटावेल (त्रि) जलानेके योग्य।
दीप्त, त्रि. प्रकाशवान्, तीक्ष्ण। रौशन, तेज़।
दीर्घ, पु. द्विमात्र स्वरवर्ण, शालवृक्ष। ऊंठ, रामशर, सिंह कन्या तुला औ वृश्चिक (त्रि) लम्बा, ऊंचा।
दीर्घ-कण्ठ } **दीर्घ-कन्धर** } पु. वक; वगुला (त्रि) लंबी गर्दनवाला।
दीर्घ-कन्द, न. मूलक; मूली।
दीर्घ-कर्ण, पु. बकरा (त्रि) लंबे कानवाला।
दीर्घ-ग्रीव, पु. ऊंठ, वगुला, (त्रि) लंबी गर्दनवाला।
दीर्घ-जङ्घ, पु. ऊंठ, वगुला (त्रि) लंबी जाङ्घवाला।
दीर्घ-जिव्ह, पु. सांप (त्रि) लंबी ज़ुवान वाला।
दीर्घ-तपस्, पु. गोतम ऋषि।
दीर्घ-दर्शिन्, त्रि. दूरदर्शी। दूर देश (पु) गिद्ध, चील।
दीर्घ-दृष्टि(त्रि) पण्डित, स्त्री. दूर वीन।
दीर्घ-नाद, पु. शङ्ख (त्रि) लंबी अवाज़ वाला।
दीर्घ-निद्र, त्रि. देरतक सोने वाला (स्त्री) (द्रा) लंवी नींद।
दीर्घ-पृष्ठ, पु. सर्प; सांप।
दीर्घ-पाद, पु. वगुला पक्षी।
दीर्घ-मारुत, पु. हस्ती; हाथी।
दीर्घ-रागा, स्त्री. हरिद्रा; हल्दी।
दीर्घ-रात्र, न. बहु काल (पु) लंबीरात। चिरकाल।
दीर्घ-रोमन्, पु. भल्लूक; भालू (त्रि) जिसके रोम लंबे हों। [(त्रि) ऐसे यज्ञके करनेहारा।
दीर्घ-सत्र, न. बहुत चिर काल तकका यज्ञ, तीर्थवि०
दीर्घ-सूत्र } **दीर्घ-सूत्रिन्** } त्रि. ढीले काम करनेवाला। सुस्त।
दीर्घा-युस्, पु. मार्कण्डेय, काक, सिंवल का पेड़, (त्रि) उमरदराज़।
दीर्घिका, स्त्री. दीघी; वड़ा तालाब।
दीर्ण, त्रि. फाड़ाहु०, तोड़ाहु०, डराहु० (न) फाड़ना, चीरना।

दीव्य-मान, त्रि. जूएमें पासा फेंकनेवाला ।
दुःख, न. संसार, तकलीफ़, (त्रि) तकलीफ़ देह ।
दुःख-त्रय, न. आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक ।
दुःखित, त्रि. दुखिया । तकलीफ़ ज़दा ।
दुःशास, त्रि. दुर्दम्य । बेकाबू ।
दुःशील, त्रि. बदमिज़ाज ।
दुःशासन, पु. दुर्योधनका मंझलाभाई (त्रि) बड़े मुश्कल सें काबूके योग्य, ना फर्मावरदार ।
दुःसूति, पु. कुपुत्र । बुरी औलाद ।
दुःसह, त्रि. निन्दनीय, कष्टसह्य । हजो के लायक, दुःखसे सहनेलायक ।
दुःसाध्य, त्रि. दुष्कर । मुष्कलसे होनेवाला ।
दुःसाहस, न. अनुचित साहस । नामुनासि व हौसला । [दरिद्र, मूर्ख ।
दुःस्थ,(दुस्थ) त्रि. मुफ़लिस, बद किसमत,
दुःस्थिति, स्त्री. दुरवस्था, अस्थिरता । बुरी हालत, नाकायमी । [कंडियारी, आकाशवेल ।
दुःस्पर्श, त्रि. दुःखसे छूनेयोग्य (स्त्री) (र्शा)
दुकूल, न. रेशमी वस्त्र, बारीक कपड़ा, सुपेद कपड़ा । [जाता है (त्रि) दोहाहुआ (न) दोहना ।
दुग्ध, न. क्षीर; दूध (स्त्री) (ग्धा) जिसे दोहा
दुग्धिका, स्त्री. दोधक बूटी ।
दुग्धाब्धि, पु. दूधका समुद्र । [वाला ।
दुद्युषु, त्रि. क्रीड़नेच्छु; जूआ खेलनेकी इच्छा-
दुन्दुभि, पु. बड़ाढोल, नक्कारा, दैत्यवि०, राक्षसवि०; वरुण, (स्त्री) पासा ।
दुन्वत्, त्रि. पीड़ा देनेवाला ।
दुर(स्) व्य. दुष्ट, निन्दित, निषिद्ध, दुःख ।
दुर-क्ष, पु. कपटका पासा; जूआ ।
दुरतिक्रम, त्रि. दुर्लङ्घ्य, दुर्जय, दुस्तर ।
दुरत्यय, त्रि. दुर्विनाश्य, दुस्तर, दुरतिक्रम ।
दुरदृष्ट, न. दुर्भाग्य, पाप । बदकिसमती, गुनाह ।
दुरधिगम, त्रि. दुष्प्राप्य, दुर्गम, दुर्ज्ञेय । नायाब, बे पहुंच, मुश्कलसे जाननेलायक ।
दुरध्वन्, पु. दुष्टपथ, । खराबरास्तह । [मुश्कल ।
दुरन्त, त्रि. बुरा, जिसका तीजा है, गहिरा,
दुरा-ग्रह, पु. बुराहठ, (त्रि) बुरे-हठवाला ।
दुरा-चार, पु. बुरा चलन (त्रि) बदचलन ।
दुरा-त्मन्, त्रि. दुष्ट चित्त, दुष्ट स्वभाव, निर्दय । पाजी, गुनाहगार, बेरहम । [सरसों ।
दुरा-धर्ष, त्रि. अक्षोभ्य । बेडर, बे खौफ़ (पु) गौरी
दुरा-नम, त्रि. जिसको निवाया नहीं जाता ।
दुरा-प, त्रि. दुष्प्राप्य, दुर्लभ । कमयाब ।
दुरा-रोह, त्रि. बहुत ऊंचा, जिसपर मुश्कलसे चढ़ा जाय (स्त्री) खजूरका पेड़ ।
दुरा-लभ, त्रि. दुर्लभ, (स्त्री) (भा) वृक्षविशेष ।
दुरा-लाप, बुरा वचन (त्रि) बुरा बोलनेवाला ।
दुरा-शय, त्रि. दुष्टमन । बद खयाल, काला ।
दुरा-शा, स्त्री. दुष्ट आशा । बुरी उमीद, नाउमेदी ।
दुरा-सद, त्रि. दुष्प्राप्य, दुर्द्धर्ष, दुस्सह ।
दुरित, न. पाप, अनिष्ट (त्रि) पापी । [नज़र ।
दुरी-षणा, स्त्री. शाप, कुदृष्टि । बददुआ, बुरी
दुरुक्त, न. दुर्वाक्य । गाली, बदहुआ ।
दुरु-च्छेद, त्रि. दुर्निवार, दुरपनेय । जो मुश्कलसे हटायाजाय । [न जासके, लाजवाब ।
दुरु-त्तर, त्रि. जिसमेंसे तैरा नजाय; जो तोड़ा
दुरु-धरा, स्त्री. ग्रहोंके बीचमें चन्द्रमाकी स्थिति ।
दुरुपसद, त्रि. दुर्गम, दुष्प्राप्य, दुस्सह । बेगुज़र, कमयाब, बे दर्दास्त ।
दुरुपचार, पु. असाध्य । नाइलाज ।
दुरुपस्थान, न. दुरभिलाप्य, दुर्जय । [न आवे ।
दुरूह, त्रि. दुर्ज्ञेय, दुस्तर्क्य । मुश्कल, जो समझमे
दुरोदर, पु. जुआरिया, दाओ, पासा (न) जूआ ।
दुर्ग, न. गढ़ (पु) असुरवि०, महाविघ्न, भवबन्ध, कुकर्म, शोक, दुःख, नरक, यम, दण्ड, जन्म, महाभय, अतिरोग, (त्रि) दुर्गुण, अगम्य ।
दुर्गत, त्रि. दरिद्र, दुर्दशाग्रस्त (स्त्री)(ति) दरिद्रता । मुफ़लिस, बदहाल, गरीबी ।
दुर्गन्ध, न. सौंचल नमक, (पु) बदबू, आमका पेड़, पियाज (त्रि) बदबूदार ।
दुर्गम, त्रि. दुष्प्रवेश, दुर्बोध (पु) असुरविशेष । जहां दखल न होसके, औखा, मुश्कल ।
दुर्ग-सञ्चय, पु. सेतु, राह, पुल ।
दुर्गा-नवमी, स्त्री. कार्तिक शुदी ९ मी, जग-द्धात्री पूजाकी तिथि, त्रेतायुग की १ म, तिथि ।
दुर्घट, त्रि. जो बड़ी मुश्कलसे बनसके ।
दुर्घटन, न. बुरी वार्दात (स्त्री)(ना) खराबी ।

दुर्घोष, पु. रीछ, (त्रि) खराब अवाज़वाला।
दुर्जन, पु. निष्ठुर, दुष्टलोक। खराब, बदचलन।
दुर्जय, पु. कार्तवीर्य वंशमें अनंत पुत्र (त्रि) ग़ैर मग़लूब।
दुर्जात, न. दुर्भाग्य, व्यसन, (त्रि) असम्यक् जात। बद किसमती, ऐब, बुरी तरह पैदाहुआ २
दुर्दम्य, } त्रि. अशान्त, दुरन्त (पु) वत्सतर।
दुर्दान्त, } चपल, बेकाबू, सांड।
दुर्दशा, स्त्री. दुरवस्था। बुरी हालत।
दुर्दर्श, त्रि. दुःखसे जो दिखाई दे। बद शकल।
दुर्दिन, न. मेघाच्छन्न दिन, वर्षण। झड़ का दिन, बरसना।
दुर्दुरूढ, पु. नास्तिक। मुलहिद।
दुर्धर, त्रि. दुःसह, दुर्धर्ष, (पु०) दैत्यविशेष, नरकविशेष। बेकाबू।
दुर्धर्ष, त्रि. अक्षोभ्य, अधर्षणीय। बेडर, बेख़ौफ़।
दुर्नाम(मन्) पु. बदनाम।
दुर्बल, त्रि. बलशून्य; दुबला। कमज़ोर।
दुर्बुद्धि, त्रि. कुबुद्धि शाली (स्त्री) दुष्ट-बुद्धि। बे अकल, बुरी अकल।
दुर्भक्ष्य, व्य. भक्ष्याभाव, (त्रि) दुःखेन भक्षणीय। बुरीखुराक, बुरीतरह खानेकेलायक।
दुर्भग, त्रि. भाग्यहीन, अप्रिय; अभागा, नाप्यारा।
दुर्भर, त्रि. दुःसह, दुर्वह, गुरु। बड़ा भारी।
दुर्भाग्य, न. दुर-दृष्ट, पाप, (त्रि) मन्दभाग्य। बदकिसमती, गुनाह, बदकिसमत।
दुर्भिक्ष, न. अकाल। कहत।
दुर्मति, स्त्री. बुरी अकल (त्रि) बदअकल।
दुर्मद, त्रि. अतिमत्त। मस्त। [दुखिया।
दुर्मनस्, त्रि. उद्विग्न-चित्त, दुःखित। आज़ुर्दादिल,
दुर्मुख, त्रि. कटुभाषी, अप्रियवादी (पु) अशिक्षित-अश्व, वानरविशेष, नागविशेष, दैत्यविशेष।
दुर्मूल्य, त्रि. महार्घ; महामोल।
दुर्मेधस्, त्रि. मन्दबुद्धि। बेअकल।
दुर्योग, पु. दुर्दिन, दुष्टयोग। झड़, बुरायोग।
दुर्योध, त्रि. दुःखसे जिसके संग लड़ा जाय।
दुर्योधन, पु. धृतराष्ट्रका बड़ा पुत्र, (त्रि) दुःखसे युद्ध करनेकेयोग्य।

दुर्लभ, } त्रि. बहु मोल। नायाब।
दुर्लभ्य, }
दुर्ललित, न. दुश्चरित्र। बदचलन।
दुर्वचस्, न. निन्दावाक्य। बद कलाम।
दुर्वर्ण, न. रजित, (त्रि) मलिन। सेम, मैला।
दुर्वह, त्रि. अति भार, दुःसह। भारी, बेबरदाश्त।
दुर्वार, त्रि. अनिवार्य। जो वारण न किया जासके।
दुर्वासस्, पु. मुनिविशेष (त्रि) मन्द वस्त्रधारी।
दुर्विध, त्रि. दरिद्र, खल, मूर्ख। ग़रीब, खराब, बेवकूफ़।
दुर्विदग्ध, दुर्विनीत (त्रि) उद्धत। मग़रूर।
दुर्विभाव(व्य), त्रि. दुर्बोध। बेवकूफ़।
दुर्विषह, त्रि. अति असह्य, दुर्वह। बे बरदाश्त, बड़ा भारी।
दुर्वृत्त, त्रि. दुश्चरित्र, उद्धत। बदचलन, शरीर।
दुर्हृद(य), पु. शत्रु, अमित्र। दुश्मन, (त्रि) खराब दिलवाला।
दुश्चरित्र, त्रि. बदचलन।
दुलि, पु. मुनि विशेष (ली) (कछुई)।
दुश्चर, त्रि. दुःखसे आचरणीय, दुर्गम।
दुश्चेष्टित, न. बुरा आचरण। बद चलनी (त्रि) बदचलन।
दुश्च्यावन, पु. इन्द्र, देवराज।
दुष्कर, त्रि. कठिन; जो दुःखसे करने योग्य है।
दुष्कर्मन्, न. पाप (त्रि) पापी। [नसल का।
दुष्कुल, न. असत्कुल। बुरी नसल (त्रि) बुरी
दुष्कृत, न. कुकर्म, (त्रि) कुकर्मा। बदफेली, बदफ़ेल। [बदकार।
दुष्कृतिन्, पु. त्रि. पापी, कुकर्मी। गुनाहगार,
दुष्ट, व्य. मन्द, कुत्सित। बदचलन (स्त्री) (ष्टा) छिनाल औरत।
दुष्प्रधर्ष, त्रि. अधर्षणीय। बेडर।
दुष्प्रवेश, त्रि. जहां प्रवेश करना कठिन है।
दुष्प्रसह, त्रि. अति दुःसह। बहुत हि ना बरदाश्त।
दुष्प्राप(प्य), त्रि. दुर्लभ। जो मुश्कलसे मिले।
दुष्म(ष्य)न्त, पु. भरत राजाका पिता, शकुन्तला का पति।
दुस्तर, त्रि. अतरणीय। जो तैरा न जासके।

दुस्थित, त्रि. दुःखित देखो ।
दुहितृ, स्त्री. (ता) कन्या; लड़की ।
दुह्य, त्रि. दोहनीय; दोहनेके योग्य ।
दू, स्त्री. दुःख । तकलीफ़ ।
दूत, पु. चर, (स्त्री) (ति) (ती) कुट्टिनी; यह तीन प्रकारकी होती है १ निसृष्टार्था २ मितार्था, शासनहारिका । जासूल, छिनाल औरत ।
दूत्य, न. दूत, वा दूतीका काम वा धर्म ।
दूद, त्रि. दुःखित; दुखिया ।
दून, त्रि. क्लिष्ट, श्रान्त । तकलीफ़ ज़दा, थकाहुआ ।
दूर, त्रि. असन्निकृष्ट । दूरका ।
दूरतस्, व्य. दूरसे ।
दूर-दर्शिन्, पु. गृध्र, परिणामदर्शी, पण्डित । अंजाम देखनेवाला गिद्ध । त्रि दूरसे देखनेवाला ।
दूरी-भूत, त्रि. दूरवर्ती; दूरका ।
दूर्वा, स्त्री. प्रसिद्ध तृण; दूबघास ।
दूर्वाष्टमी, स्त्री. भाद्रशुक्लाष्टमी; भादों सुदी अष्टमी ।
दूषक, त्रि. दूषयिता; दूषणदेनेवाला । [ऐब ।
दूषण, पु. राक्षसविशेष (त्रि) दूषयिता (न) दोष ।
दूषयितृ, त्रि. दूषक; दोष देनेवाला ।
दूषित, त्रि. उपहत, निन्दित, सदोषीकृत । तबाह, बदनाम, ऐबीबनायागया ।
दूष्य, त्रि. त्याज्य, (न) पटमण्डप । तज देने लायक, रेशमी मंडवा ।
दृक्कर्ण, पु. सर्प; सांप
दृक्पात, न. अवलोकन । दीदार । [लोहा ।
दृढ, त्रि. कठिन, समर्थ । करड़ा, ताकत वर (न)
दृढ, त्रि. फलप्राप्तितक कर्म करनेवाला । मज़बूत ।
दृढ मुष्टि, त्रि. कृपण (पु) खड्ग । कंजूस, तलवार ।
दृढ-लोमन्, पु. शूकर; सूअर (त्रि) जिसके लोम मोटे हों । [ढाल, धोंकनी, एक मछली ।
दृति, स्त्री. चर्म, धोंकनी, (पु) भिश्ती, मत्स्यविशेष ।
दृति-हर(रि), पु. कुक्कुर; कुत्ता ।
दृण, व्य. हिंसा । कतल ।
दृण-भू, पु. वज्र, सर्प, सूर्य, चक्र, नृप, यम ।
दृप्त, त्रि. गर्वित, उद्धत, दुष्ट । मगरूर, ऐबी ।
दृश्(शा), स्त्री. दर्शन, ज्ञान, नेत्र (त्रि) दर्शक, साक्षी, ज्ञाता । नज़र, इल्म, आंख, देखनेवाला, गवाह, जानने वाला ।
दृष(श)द्, स्त्री. प्रस्तर, शिला । पत्थर, चटान ।
दृ(श)षद्वती, स्त्री. नदीविशेष, देवीविशेष ।
दृशान, न. ज्योतिः । रोशनी पु. राक्षसविशेष, योधा, किरण ।
दृश्य, त्रि. रूपवान्, सुश्री । खूबसूरत, नजारा ।
दृश्वन्, त्रि. द्रष्टा । देखनेवाला ।
दृष्ट, त्रि. वीक्षित, ज्ञात, लौकिक (न) दर्शन, ज्ञान । देखाहु०, जानाहु०, नज़ारा, इलम ।
दृष्ट-कूट, न. पहेली ।
दृष्ट-रजस्, स्त्री. नवयुवती । नौ जवान औरत ।
दृष्टान्त, पु. उदाहरण, निदर्शन, उपमान, शास्त्र, मृत्यु, काव्यालङ्कार विशेष । मिसाल, तशबीह, इलम, मौत, कवितामें एक सुहप्पन । [इलम ।
दृष्टि, स्त्री. लोचन, दर्शन, ज्ञान । नज़र दीदार,
दृष्टि-विष, पु. सर्पविशेष ।
देदीप्यमान, त्रि. शोभमान, प्रकाशमान । निहायत चमकीला, रौशन ।
देय, स्त्री. दान-योग्य । देनेलायक ।
देव, पु. ईश्वर, देवता, मेघ, राजा, जिगीषु, ब्राह्मण, पारा, देवर, (न) इन्द्रिय, दीप्ति (स्त्री) (वी) स्त्रीदेवता, दुर्गा, ब्राह्मणी, राजाकी पटरानी, हरड़, एरंड, नागरमुस्था । [माता ।
देवक, पु. श्रीकृष्णका नाना (स्त्री) (की) श्रीकृष्णकी
देवकीनन्दन, } पु. कृष्णदेव । देवकीका बेटा ।
देवकीसूनु, }
देव-कुल, पु. देवमन्दिर; देवता का मंदिर ।
देव-कुल्या, स्त्री. नदीविशेष ।
देव-कुसुम, पु. लवङ्ग; लौंग ।
देव-खात, न. स्वाभाविक खात, न्हद । झील ।
देव-गान्धारी, स्त्री. रागिनीबसंतराग की ।
देव-गायन, पु. गन्धर्व जाति ।
देव-गिरि, पु. पर्वतविशेष ।
देव-गुरु, पु. बृहस्पति, देवताओं का गुरु ।
देव-तरु, पु. १ मन्दार २ पारिजात ३ सन्तान ४ कल्प ५ हरिचन्दन यह पांच ।
देवता, स्त्री. अमर ।
देवताड, पु. अग्नि, राहु, मेघ, वृक्षविशेष ।
देवत्व, न. देवतापन । [लिये धरती ।
देवत्र, त्रि. देवसेवार्थ भूमि । देवताकी सेवाके

देव-दत्त, त्रि. देवताको दिया हुआ, देवता का दिया, (पु) शङ्ख, बुद्धका अनुज, अर्जुनका शङ्ख, शरीरकी पांच पवनोंमेंसे एक ।

देव-दारु, पु. प्रसिद्धवृक्ष; दियार का पेड़ ।

देव-देव, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव ।

देवन, न. क्रीड़ा, स्तुति, दीप्ति, दुःख, जिगीषा, क्रीडास्थान, (पु) पासा, (स्त्री) (ना) क्रीड़ा, अनुताप ।

देव-नन्दिन, पु. इन्द्रका द्वारपाल ।

देव-निकाय, पु. स्वर्ग । बहिश्त ।

देव-नदी, स्त्री. सुरसरित्, गङ्गा ।

देव-पथ, पु. आकाश, छाया-पथ । कैकशां ।

देव-पुरी, स्त्री. अमरावती ।

देव-भूति, स्त्री. मंदाकिनी ।

देव-भूय, न. देवत्व, देवभाव; देवतापन । [शिव ।

देव-मणि, पु. घोड़ेके गलेमें रोमावर्त, कौस्तुभ,

देव-मातृ, स्त्री. अदिति; देवताओंकी माता ।

देव-मातृक, पु. वर्षाके जलसे जहां धान पकें वह देश ।

देव-यजि, पु. देव-पूजक, मुन्यादि ।

देव-यजन, न. कुरुक्षेत्र ।

देव-यान, न. देव-पथ, विमान । आसमान (स्त्री) (नी) राजा ययातीकी जोरू ।

देव योनि, पु. उपदेवता; विद्याधर अप्सर यक्ष गन्धर्व राक्षस किन्नर पिशाच गुह्यक सिद्ध भूत । किन्नर ।

देवर, पु. पतिका छोटा भाई ।

देव-रथ, पु. देवताओंका रथ; विमान ।

देव-राज्, } पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।
देव-राज, }

देव-रात, त्रि. देव-दत्त (पु) परीक्षित् राजा, सारस पक्षी ।

देवर्षि, पु. नारद आदि मुनि ।

देवल, देवपूजोपजीवी, पुजारी, मुनिविशेष अप्सराके शापसे जिसका नाम अष्टावक्र हुआ ।

देव-लोक, पु. स्वर्ग, उपरके लोक; न भुवः स्वर मह जन तप ।

देव-व्रत, पु. भीष्म-पितामह ।

देव-श्रुत, पु. शास्त्र, ईश्वर, नारद ।

देव-सभा, स्त्री. सुधर्मा; देवताओंकी सभा ।

देवसात्, व्य. देवताको देने योग्य ।

देव सायुज्य, न. देवसादृश्य, देवताकी समीपता ।

देव-सेना, स्त्री. इन्द्र की कन्या, कार्तिक की पत्नी, देवताओं की फौज ।

देव-स्व, न. याज्ञिक का धन, देवता का धन ।

देव-स्थ, न. देवपूजाके लिये धरी हुई सामग्री ।

देव-हूति, स्त्री. स्वयम्भुव मनुकी कन्या ।

देव-जीव, पु. पुजारी, देवल ।

देवाद्, पु. हरिहरक्षेत्र ।

देवात्मन्, पु. पीपलका पेड़ (त्रि) देवतास्वरूप ।

देवापि, पु. नृपविशेष; प्रतीपराजाका पुत्र, एक असुरका नाम ।

देवा युध, न. देवधनु । कौसेकज़ा ।

देवा-राति, पु. देवताओंका शत्रु । दैत्य ।

देवा-वास, पु. पीपलका पेड़ ।

देवा-लय, पु. देवमन्दिर । देवताका घर, स्वर्ग ।

देविक, पु. दधूरा, (स्त्री) (का) नदीविशेष ।

देवृ, पु. (वा) देवर. पतिका छोटा भाई ।

देवेज्य, पु. वृहस्पति; देव-गुरु ।

देवे-श, पु. शिव, (स्त्री) (शी) दुर्गा ।

देवे-ष्ट, पु. गुग्गल, स्त्री. (ष्टा) वनका अनार (त्रि) देवताको प्यारी वस्तु ।

देश, पु. स्थान, धरतीका एक भाग ।

देशान्तर, न. अन्यदेश, दूरदेश । दिसावर ।

देशिक, त्रि. पथिक । मुसाफ़िर ।

देशिन्, त्रि. देशजात; देसी ।

देशीय, } त्रि. देशोत्पन्न । देशकी पैदायश; देशकी ।
देश्य, }

देष्णु, त्रि. दाता (पु) धोबी ।

देह, पु. न. शरीर, पु. लेपन । जिसम ।

देह-भृत्, पु. आत्मा, जीव, प्राणी । जिसम ।

देह यात्रा, स्त्री. जीवन यापन । गुज़ारा । [दहलीज़ ।

देहलि(ली), स्त्री. चौकाठके नीचेकी लकड़ी । द-

देहात्म वादिन्, पु. चार्वाक, बौद्धविशेष; देहसे अलग रूहके न माननेवाला । [समका ।

देहिन्, पु. प्राणी, आत्मा, जीव । रूह (त्रि) जि-

दैर्घ्य, पु. लंबाई ।

दुस्थित, त्रि. दुःखित देखो ।
दुहितृ, स्त्री. (ता) कन्या; लड़की ।
दुह्य, त्रि. दोहनीय; दोहनेके योग्य ।
दू, स्त्री. दुःख । तकलीफ़ ।
दूत, पु. चर, (स्त्री) (ति) (ती) कुट्टिनी; यह तीन प्रकारकी होती है १ निसृष्टार्था २ मितार्था, शासनहारिका । जासूल, छिनाल औरत ।
दूत्य, न. दूत, वा दूतीका काम वा धर्म ।
दून, त्रि. दुःखित; दुखिया ।
दून, त्रि. क्लिष्ट, श्रान्त । तकलीफ़ ज़दा, थकाहुआ ।
दूर, त्रि. असन्निकृष्ट । दूरका ।
दूरतस्, व्य. दूरसे ।
दूर-दर्शिन्, पु. गृध्र, परिणामदर्शी, पण्डित । अंजाम देखनेवाला गिद्ध । त्रि दूरसे देखनेवाला ।
दूरी-भूत, त्रि. दूरवर्ती; दूरका ।
दूर्वा, स्त्री. प्रसिद्ध तृण; दूबघास ।
दूर्वाष्टमी, स्त्री. भाद्रशुक्लाष्टमी; भादों सुदी अष्टमी ।
दूषक, त्रि. दूषयिता; दूषणदेनेवाला । [ऐब ।
दूषण, पु. राक्षसविशेष (त्रि) दूषयिता (न) दोष ।
दूषयितृ, त्रि. दूषक; दोष देनेवाला ।
दूषित, त्रि. उपहत, निन्दित, सदोषीकृत । तबाह, बदनाम, ऐबीबनायागया ।
दूष्य, त्रि. त्याज्य, (न) पटमण्डप । तज देने लायक, रेशमी मंडवा ।
दृक्कर्ण, पु. सर्प; सांप
दृक्पात, न. अवलोकन । दीदार । [लोहा ।
दृढ, त्रि. कठिन, समर्थ । करड़ा, ताकत वर (न)
दृढ, त्रि. फलप्राप्तितक कर्म करनेवाला । मज़बूत ।
दृढ-मुष्टि, त्रि. कृपण (पु) खड्ग । कंजूस, तलवार ।
दृढ-लोमन्, पु. शूकर; सूअर (त्रि) जिसके लोम मोटे हों । [ढाल, धोंकनी, एक मछली ।
दृति, स्त्री. चर्म, धोंकती, (पु) भिश्ती, मत्स्यविशेष ।
दृति-हर(रि), पु. कुक्कुट; कुत्ता ।
दृण, व्य. हिंसा । कतल ।
दृण-भू, पु. वज्र, सर्प, सूर्य, चक्र, नृप, यम ।
दृप्त, त्रि. गर्वित, उद्धत, दुष्ट । मगरूर, ऐबी ।
दृश्(शा), स्त्री. दर्शण, ज्ञान; नेत्र (त्रि) दर्शक, साक्षी, ज्ञाता । नज़र, इल्म, आंख, देखनेवाला, गवाह, जानने वाला ।
दृष(श)द्, स्त्री. प्रस्तर, शिला । पत्थर, चटान ।
दृ(श)षद्वती, स्त्री. नदीविशेष, देवीविशेष ।
दृशान, न. ज्योतिः । रोशनी पु. राक्षसविशेष, योधा, किरण ।
दृश्य, त्रि. रूपवान्, सुश्री । खूबसूरत, नजारा ।
दृश्वन्, त्रि. द्रष्टा । देखनेवाला ।
दृष्ट, त्रि. वीक्षित, ज्ञात, लौकिक (न) दर्शन, ज्ञान । देखाहु०, जानाहु०, नज़ारा, इलम ।
दृष्ट-कूट, न. पहेली ।
दृष्ट-रजस्, स्त्री. नवयुवती । नौ जवान औरत ।
दृष्टान्त, पु. उदाहरण, निदर्शन, उपमान, शास्त्र, मृत्यु, काव्यालङ्कार विशेष । मिसाल, तशबीह, इलम, मौत, कवितामें एक सुहप्पन । [इलम ।
दृष्टि, स्त्री. लोचन, दर्शन, ज्ञान । नज़र दीदार,
दृष्टि-विष, पु. सर्पविशेष ।
देदीप्यमान, त्रि. शोभमान, प्रकाशमान । निहायत चमकीला, रौशन ।
देय, स्त्री. दान-योग्य । देनेलायक ।
देव, पु. ईश्वर, देवता, मेघ, राजा, जिगीषु, ब्राह्मण, पारा, देवर, (न) इन्द्रिय, दीप्ति (स्त्री) (वी) स्त्रीदेवता, दुर्गा, ब्राह्मणी, राजाकी पटरानी, हरड़, एरंड, नागरमुत्था । [माता ।
देवक, पु. श्रीकृष्णका नाना (स्त्री) (की) श्रीकृष्णकी
देवकीनन्दन, } पु. कृष्णदेव । देवकीका बेटा ।
देवकीसूनु, }
देव-कुल, पु. देवमन्दिर; देवता का मंदिर ।
देव-कुल्या, स्त्री. नदीविशेष ।
देव-कुसुम, पु. लवङ्ग; लौंग ।
देव-खात, न. स्वाभाविक खात, ह्रद । झील ।
देव-गान्धारी, स्त्री. रागिनीवसंतराग की ।
देव-गायन, पु. गन्धर्व जाति ।
देव-गिरि, पु. पर्वतविशेष ।
देव-गुरु, पु. बृहस्पति, देवताओं का गुरु ।
देव-तरु, पु. १ मन्दार २ पारिजात ३ सन्तान ४ कल्प ५ हरिचन्दन यह पांच ।
देवता, स्त्री. अमर ।
देवताड, पु. अग्नि, राहु, मेघ, वृक्षविशेष ।
देवत्व, न. देवतापन । [लिये धरती ।
देवत्र, त्रि. देवसेवार्थ भूमि । देवताकी सेवाके

देव-दत्त, त्रि. देवताको दिया हुआ, देवता का दिया, (पु) शख्स, बुद्धका अनुज, अर्जुनका शङ्ख, शरीरकी पांच पवनोंमेंसे एक।
देव-दारु, पु. प्रसिद्धवृक्ष; दियार का पेड़।
देव-देव, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
देवन, न. क्रीड़ा, स्तुति, दीप्ति, दुःख, जिगीषा, क्रीडास्थान, (पु) पासा, (स्त्री) (ना) क्रीड़ा, अनुताप।
देव-नन्दिन, पु. इन्द्रका द्वारपाल।
देव-निकाय, पु. स्वर्ग। वहिश्त।
देव-नदी, स्त्री. सुरसरित्, गङ्गा।
देव-पथ, पु. आकाश, छाया-पथ। कैकशां।
देव-पुरी, स्त्री. अमरावती।
देव-भूति, स्त्री. मंदाकिनी।
देव-भूय, न. देवत्व, देवभाव; देवतापन। [शिव।
देव-मणि, पु. घोड़ेके गलेमें रोमावर्त, कौस्तुभ,
देव-मातृ, स्त्री. अदिति; देवताओंकी माता।
देव-मातृक, पु. वर्षाके जलसे जहां धान पकें वह देश।
देव-यजि, पु. देव-पूजक, मुन्यादि।
देव-यजन, न. कुरुक्षेत्र।
देव-यान, न. देव-पथ, विमान। आसमान (स्त्री) (नी) राजा ययातीकी जोरू।
देव-योनि, पु. उपदेवता; विद्याधर अप्सर यक्ष गन्धर्व राक्षस किन्नर पिशाच गुह्यक सिद्ध भूत। किन्नर।
देवर, पु. पतिका छोटा भाई।
देव-रथ, पु. देवताओंका रथ; विमान।
देव-राज्, }
देव-राज, } पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।
देव-रात, त्रि. देव-दत्त (पु) परीक्षित् राजा, सारस पक्षी।
देवर्षि, पु. नारद आदि मुनि।
देवल, देवपूजोपजीवी, पुजारी, मुनिविशेष अप्सराके शापसे जिसका नाम अष्टावक्र हुआ।
देव-लोक, पु. स्वर्ग, उपरके लोक; न भुवः स्वर मह जन तप।
देव-व्रत, पु. भीष्म–पितामह।
देव-श्रुत, पु. शास्त्र, ईश्वर, नारद।
देव-सभा, स्त्री. सुधर्मा; देवताओंकी सभा।
देवसात्, व्य. देवताकों देने योग्य।
देव सायुज्य, न. देवसादृश्य, देवताकी समीपता।
देव-सेना, स्त्री. इन्द्र-की कन्या, कार्तिक की पत्नी, देवताओं की फौज।
देव-स्व, न. याज्ञिक का धन, देवता का धन।
देव-स्थ, न. देवपूजाके लिये धरी हुई सामग्री।
देव-हूति, स्त्री. स्वयम्भुव मनुकी कन्या।
देव-जीव, पु. पुजारी, देवल।
देवाट्, पु. हरिहरक्षेत्र।
देवात्मन्, पु. पीपलका पेड़ (त्रि) देवतास्वरूप।
देवापि, पु. नृपविशेष; प्रतीपराजाका पुत्र, एक असुरका नाम।
देवा युध, न. देवधनु। कौसेकज़ा।
देवा-राति, पु. देवताओंका शत्रु। दैत्य।
देवा-वास, पु. पीपलका पेड़।
देवा-लय, पु. देवमन्दिर। देवताका घर, स्वर्ग।
देविक, पु. दधूरा, (स्त्री) (का) नदीविशेष।
देवृ, पु. (वा) देवर. पतिका छोटा भाई।
देवेज्य, पु. बृहस्पति; देव-गुरु।
देवेश, पु. शिव, (स्त्री) (शी) दुर्गा।
देवेष्ट, पु. गुग्गल, स्त्री. (ष्टा) वनका अनार (त्रि) देवताको प्यारी वस्तु।
देश, पु. स्थान, धरतीका एक भाग।
देशान्तर, न. अन्यदेश, दूरदेश। दिसावर।
देशिक, त्रि. पथिक। मुसाफ़िर।
देशिन्, त्रि. देशजात; देसी।
देशीय, } त्रि. देशोत्पन्न। देशकी पैदायश; दे-
देश्य, } सकी।
देष्णु, त्रि. दाता (पु) धोबी।
देह, पु..न. शरीर, पु. लेपन। जिसम।
देह-भृत्, पु. आत्मा, जीव, प्राणी। जिसम।
देह-यात्रा, स्त्री. जीवन यापन। गुज़ारा। [दहलीज़।
देहलि(ली), स्त्री. चौकाठके नीचेकी लकड़ी। द-
देहात्म-वादिन्, पु. चार्वाक, बौद्धविशेष; देहसे अलग रूहके न माननेवाला। [समका।
देहिन्, पु. प्राणी, आत्मा, जीव। रूह (त्रि) जि-
दैर्घ्य, पु. लंबाई।

दैतेय, } पु. असुर, राक्षस (त्रि) दितिकी सन्तान ।
दैत्य, }
दैत्य-गुरु, पु. शुक्राचार्य; दैत्यों का गुरु ।
दैत्य-विसूदन, } पु. विष्णु भगवान् (त्रि) दैत्यों का शत्रु ।
दैत्यारि, }
दैत्य-देव, पु. वरुण, वायु ।
दैत्य मातृ, स्त्री दिती, कश्यपकी स्त्री । [आजज़ी ।
दैन, त्रि. दिन-भव, दैनिक (न) दैन्य । दिनका,
दैनन्दिन, त्रि. प्रात्याहिक । रोज़मररा का ।
दैन्य, न. दारिद्र्य, कार्पण्य, शोचनीयदशा । मुफ़्लिसी, कंजूसी, अफ़सोसकी हालत ।
दैर्घ्य, न. दीर्घता; लंबाई ।
दैव, पु. न. अदृष्ट, भाग्य (पु) विधाता, (त्रि) ऐश्वरिक(न) अंगुलीका अग्रभाग, देवतीर्थ, पु. विवाहविशेष ।
दैवज्ञ, पु. गणक, भाग्य-कथयिता । नजूमी, हिसावदां । [ताका ।
दैवत, पु न. देवता, (न) देव-सूमूह, (त्रि) देव-
दैव-दुर्विपाक, पु. वद किसमती ।
दैव-युग, पु. देवताओंका १२ हज़ार वर्ष ।
दैवा कारी, पु. शनि, यम (स्त्री) यमुना ।
दैवात्, व्य. हठात् । अचानक ।
दैविक, त्रि. देव सम्बन्धीय । देवताका ।
दैवोपहत, त्रि. हत-भाग्य । वदकिस्मत ।
दैव्य, पु. भाग्य । किसमत ।
दैशिक, त्रि. देशका । [समतसे जोहो ।
दैष्टिक, त्रि. भाग्यपर भरोसा करनेवाला (पु) कि-
दैहिक, त्रि. शारीरिक । जिस मानी ।
दोग्धृ, पु. वत्स; वछड़ा, ग्वाला, (त्रि)दोहनेवाला, (स्त्री)(ग्ध्री) दूधवाली गाय ।
दोधक, पु. छन्दोविशेष । [पनेवाला ।
दोधूयमान, त्रि. पुनः २ कांपनेवाला, वहुत कां-
दोर्द-ण्ड, पु. वाहुदण्ड । वाजू ।
दोर्मूल, न. वाहुमूल; कंधा ।
दोल, पु. स. डोला, डोली, असुरविशेष ।
दोष(स्) पाप, अपराध, अनिष्ट, कुकर्म्म, त्रुटि, काव्यका अपकर्षक गुण विशेष, न्यायशास्त्रमें रागद्वेष, मोह ।
दोष-ग्राहिन्, त्रि. दुर्जन । ऐवजो ।
दोष-ज्ञ, पु. पाण्डित, चिकित्सक (त्रि) दोषवेत्ता । आलिम, तबीव, ऐव जाननेवाला । [गम ।
दोष-त्रय, न. वात पित्त कफ । वाई, सफ़रा, वल-
दोषा, व्य. रात (स्त्री) वाजू ।
दोषा-कर, पु. निशाकर; चांद, दोषोंकी कान ।
दोषा-तन, त्रि. रात्रिकालीन । रातका ।
दोषिन्, त्रि. दोषयुक्त । ऐवी ।
दोषैक-दृश्, त्रि. केवल दोषदर्शी । सिर्फ़ ऐवजो ।
दोह, पु. दोहन, तृप्ति, दोहन-पात्र, दुग्ध, (स्त्री) (हा) मात्रा वृत्त विशेष ।
दोह-द, न. गर्भ लक्षण, गर्भणी की इच्छा, साधु-इच्छा, चिन्ह, वृक्ष आदिके पोषण करनेवाली दवाई ।
दोहद-वती, स्त्री. गर्भिणी । हामिला ।
दोहदिन्, त्रि. कामी । ऐय्याश ।
दोहन, न. दुग्धाकर्षण, संग्रहकरण, (स्त्री) (नी) दोहनपात्री । दोहना, जमा करना, दोहनी ।
दौत्य, न. दूत-कर्म । जासूस का काम । [पन ।
दौरात्म्य, न. अत्याचार, नैष्ठुर्य्य । खरावी, ढीठ-
दौर्भागिनेय, पु. स्त्री. दुर्भगाकी संतान । [फ़िकर ।
दौर्मनस्य, न. दुःख, उद्वेग, मनःक्षोभ । तकलीफ़,
दौर्हृद, न. गर्भ, गर्भिणीकी इच्छा । हमल, हामिलाकी ख़ाहिश । [रवानन ।
दौवारिक, पु. द्वारपाल । दरवान (स्त्री) (का) द-
दौष्कुलेय, त्रि. दुष्टकुलका, वर्णसङ्कर । दोगला ।
दौ(ष्य)ष्मन्ति, पु. दुष्यन्तराजाका पुत्र, वर्षोंके वांटने वाला भरत । [दोहती ।
दौहित्र, पु. स. दुहिताके पुत्र कन्या; दोहता,
द्यावापृथिवी(द्यावाभूमि), स्त्री. द्वि. पृथिवी और स्वर्ग दोनों । ज़मीन आसमान ।
द्यु, न. दिन, आकाश, स्वर्ग, (पु) अग्नि, सूर्य ।
द्युति, स्त्री. दीप्ति, प्रकाश, शोभा । चमक रौशनी, सजावट । [चमकीला ।
द्युतिमत्, पु. क्रौंच द्वीप पति, (त्रि) दीप्तिशाली ।
द्यु-पति, पु. सूर्य, इन्द्र ।
द्यु-मणि, पु. सूर्य । आफ़ताव । [ताकत ।
द्युम्न, न. हिरण्य, धन, सामर्थ्य । सोना, दौलत,
द्यु-पद्, पु. देवता, ग्रह ।
द्यूत, पु. न. पाशक्रीड़ा । जूआ, जूआ खेलना ।

धूत-कर(कार)(कृत्), पु. पाशक्रीडक; जुआरीया। [जूआ।
धूत-क्रीडा, स्त्री. दाओ लगाके पासा खेलना;
धूत-प्रतिपद्, स्त्री. कार्तिकशुदी पड़वा।
द्यो, स्त्री. स्वर्ग, आकाश। बहिश्त, आसमान।
द्योत, दीप्ति, प्रकाश, आतप। चमक, रौशनी, धूप।
द्योतन, न. दर्शन, प्रकाशन, प्रदीप। [रौशन।
द्यो(त्)तित, त्रि. दीपित, प्रकाशित। चमकीला,
द्रढिमन्, पु. दार्ढ्य, काठिन्य, स्थैर्य। मज़बूती, सख़्ती, कायमी।
द्रढिष्ठ, **द्रढीयस्**, } त्रि. अति-दृढ। बड़ा मज़बूत।
द्रप्स, न. मठा; छाछ। [१६ पणकाद्रम्म।
द्रम्म, पु २० कोड़ीकी काकिनी ४ काकिनीका पण,
द्रव, पु. अतिपलायण; बहुत दौड़ना, वेग, मन, परिहास, (त्रि) तरल।
द्रवण, न. क्षरण, गति। बहजाना, चूजाना।
द्रवत्व, न. तरलत्व गुण। रक़ीकपन।
द्रवन्ती, स्त्री. नदी। दर्या
द्रविड़, पु. म्लेच्छ—जातिविशेष, देशविशेष, (स्त्री) (डी) एक रागिनी। [ज़ोर।
द्रविण, न. वित्त, काञ्चन, पराक्रम। दौलत, सोना,
द्रवी-भूत, न. पिघलाहुआ।
द्रव्य, न. वस्त्र, वित्त, पित्तल, चीज़, दवाई, पृथिवी, जल, लाख, तेज, वायु, काल, दिशा आत्मा, मन (त्रि) वृक्षका।
द्रष्टृ, त्रि. दर्शक; देखनेवाला।
द्राक्, व्य. झटिति, शीघ्र। जल्दी।
द्राक्षा, स्त्री. किशमिश, मुनक्का, अङ्गूर, दाख।
द्राघिमत्, **द्राघिष्ठ**, } पु. दैर्घ्य; लंबाई।
द्राघीयस्, त्रि. अति दीर्घ; बहुत लंबा।
द्राव, पु. पलायन, गति, द्रवण। भागना, चलना, बहना।
द्रावक, पु. लंपट, चोर, चन्द्रकान्त मणि, रसविशेष, (त्रि) पिघलानेवाला।
द्रावण, पु. पिघलाना, मारना, भगाना।
द्राविड, पु. देशविशेष, (त्रि) द्रविड़ देशका।
द्रु, पु. वृक्ष, वृक्षावयव। दरख़्त, दरख़्तकी जुज़।
द्रुघण, पु. मुद्गर, कुठार, ब्रह्मा।
द्रुणस, त्रि. दीर्घ नास। लंबी नाक वाला।
द्रुणि(णी), स्त्री. द्रोली; डोंगी।
द्रुत, न. शीघ्रता (त्रि) द्रवीभूत; पिघलाहुआ, जल्दी, भीगा हुआ, (स्त्री)(ति) दौड़, पिघलाओ।
द्रुपद, पु. नृपविशेष; एकराजाका नाम।
द्रुत-विलम्बित, त्रि. ३२ अक्षरका छन्द।
द्रुम, पु. पारिजात वृक्ष, कुबेर। दरख़्त।
द्रुह, पु. पुत्र।
द्रुहिण, पु. ब्रह्मा, प्रजापति।
द्रुह्यत्, त्रि. अनिष्टकारी; द्रोह करनेवाला।
द्रोण, पु. न. आढक, ३४ सेर ४ आढक, (पु) कुरुवंश का गुरु, जलाशय विशेष, मेघविशेष, शाल्मलि द्वीपका पर्वत, कौआ।
द्रोणि(णी), स्त्री. डोंगी, डोंगा, गमला, गौंका गवगव, दो पहाडोंके बीचकी बाट।
द्रोणी-दल, पु. केतकीवृक्ष(न) केतकीका फूल।
द्रोह, पु. अनिष्ट चिन्ता, अनिष्टाचरण, अभिभव। दूसरेका बुरा सोचना, या करना।
द्रोहिन्, त्रि. अनिष्टकारी। बुरा करनेवाला।
द्रोणायण, } पु. द्रोण पुत्र; अश्वत्थामा।
द्रौणि, } पु.
द्रौपदी, स्त्री. द्रुपद राजाकी बेटी।
द्वन्द्व, न. युग्म, स्त्री. पुरुष—मिथुन, शीतोष्ण, सुख दुःख, रागद्वेष, रहस, कलह, युद्ध, (पु) समासविशेष।
द्वन्द्व-चर, **द्वन्द्व-चारिन्**, } पु. चक्रवाक पक्षी; चकवा।
द्वय, न. स्त्री. द्वित्व संख्या, युग्म, (त्रि) द्वित्वसंख्या युक्त। जोड़ा, दो।
द्वाःस्थ, द्वास्थ, **द्वाःस्थित, द्वास्थित**, } पु. द्वारपाल। दरवान (त्रि) दरवाजे पर खड़ा रहनेवाला।
द्वाचत्वारिंशत्, स्त्री. ४२ बयालीस।
द्वात्रिंशत्, स्त्री. ३२ बत्तीस संख्या।
द्वादश, त्रि. बारह संख्याका पूरक; बारवां (स्त्री) (शी) १२ वीं, तिथि।
द्वादशन्, त्रि. बहु० १२ संख्या; बारह।
द्वादशाङ्गुल, पु. वितस्ति मात्र; १२ अंगुलीका।
द्वादशात्मन्, पु. १ सूर्य, २ विवस्वान्, ३ अ-

यमा, ३ पूषा, ५ चेष्टा ६ सविता ७ भग ८ धाता ९ विधाता १० वरुणमित्र ११ शक्र १२ अरुक्रम इन बारह नाम वाला सूर्य ।

द्वापर, पु. ३ य, युग । तीसरा जुग ।

द्वार, स्त्री. } **द्वारे,** पु. } द्वार, उपाय, सन्मुख । जरीया, दरवाज़ा, सामने ।

द्वार(रा)वती, } **द्वारिका,** } स्त्री. द्वारका नगरी ।

द्वारिक(द्वारिन्), त्रि. द्वारपाल । दरबान ।

द्वा-विंशति, स्त्री. द्वि अधिकविंशति २२ बाईस ।

द्वा-षष्टि, स्त्री. द्व्यधिकषष्ठी; ६२ बासठ ।

द्वा-सप्तति, स्त्री.द्व्यधिक सप्तति; बहत्तर ।

द्वि, त्रि. द्वि० द्वित्व संख्यान्वित; दो ।

द्वि-क, पु. काक आदि (न) दो ।

द्वि-ककार, पु. कौआ, कोइल ।

द्वि-ककुद्, पु. उष्ट; ऊंट ।

द्विगु, पु. समासविशेष; संख्या वाचकशब्द जिसके पूर्वहो, ऐसा तत्पुरुष ।

द्वि-गुण, त्रि. दुगुना ।

द्वि-गुणोत्कृत, त्रि. दोवारहल चलाया हुआखेत ।

द्विज-जन्मन् } **द्विजाति,** } त्रि. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, दन्त, अण्डज, पक्षी ।

द्विज(वर)(र्य) } **द्विज-सत्तम** } **द्विजोत्तम,** } पु. श्रेष्ठ ब्राह्मण । उत्तम ब्राह्मण;षट्कर्म करनेवाला ।

द्विजन्मन्(द्विजाति) पु. ब्राह्मण आदि ३ वर्ण ।

द्विज-पति, } **द्विज-राज,** } पु. चांद, कापूर, गरुड़ ।

द्विज-वर्य, } **द्विजोत्तम,** } पु. उत्तम ब्राह्मण ।

द्विजिव्ह, पु. सांप, खल, सूचक, चौर ।

द्वितय, न. दो (स्त्री) (यी) (त्रि) द्वित्व संख्यायुत, दूसरा, (या) पत्नी, ।

द्वितीय, त्रि. दूसरा, स्त्री. (या) दूसरी ।

द्वि-देह, पु. गणेश जी ।

द्वि-दैवत्या, स्त्री. विशाखा नक्षत्र । १३ वां, नक्षत्र ।

द्विधा, व्य. द्विविध; दो प्रकारसे ।

द्विप,द्विपायिन् पु. हस्ती; हाथी ।

द्वि-पद्, पु. मनुष्य, देवता, पक्षी, सलस (स्त्री) (दी) छन्दोविशेष ।

द्वि-पञ्चाशत, स्त्री.५२ द्विअधिक पञ्चाशत्; बावन ।

द्विपद-राशि, पु. मिथुन, तुला, कुंभ, कन्या, धनु-का पूर्वभाग ।

द्वि-पाद्, त्रि. दो पैरवाला; दुपाया ।

द्वि-मातृक, पु. गणेश (त्रि) दो माता जिसकी हों ।

द्वि-मुख, पु. राजसर्प (त्रि) दो मुखवाला ।

द्विमूर्द्ध, त्रि. द्विशिरा; दो सिरवाला ।

द्वि-रद, } **द्विरश,** } पु. हस्ती; हाथी ।

द्विरागमन, न. स्त्रीका पतिके घरमें दूसरी वार आना; गौना ।

द्विरुक्त, त्रि. दुवारा कहाहुआ(व्या) अभ्यस्त ।

द्विरूढा, स्त्री. पुनर्भू । दुवारा व्याही हुई ।

द्वि-रेफ, पु. भ्रमर; भौंरा (त्रि) मूर्ख ।

द्वि-वचन, न. व्या. द्वित्वबोधक विभक्ति ।

द्वि-वर्षा, स्त्री. दो वर्षकी गाय । दो वरसकी ।

द्वि-वार्षिक, त्रि. द्विवत्संरोत्पन्न (धान्यादि) दुसाला ।

द्वि-विध, त्रि. दो प्रकारका ।

द्वि-शफ, पु. दो खुरवाला पशु । गो, भैंस आदि ।

द्विशस्, व्य. दो दो आदमी प्रति ।

द्विष्(द्विषत्), त्रि. द्वेषकारी । दुश्मनी करनेवाला ।

द्विषन्तप, त्रि. शत्रुतापन । दुशमनके तपानेवाला, दुश्मन ।

द्विष्ट(ष्ठ), त्रि. द्वेषके समय उभयस्थ । सालिस ।

द्विस्, व्य. दो वार; दो प्रकार ।

द्विसप्तति, स्त्री. एक० ७२ संख्या ।

द्वि-हायनी, स्त्री. द्विवर्षा गौ; दो वर्षकी गाय ।

द्वि-हृदया, स्त्री. अन्तःसत्वा । हामिला ।

द्वीप, पु. जलवेष्ठित स्थल जज़ीरह । ९ नव–यथा–१ महाद्वीप, २ जम्बू, ३ प्लक्ष, ४ शाल्मली, ५ कुश, ६ क्रौञ्च, ७ शाक, ८ पुष्कर; ११ उपद्वीप । १ कुरु, २ चन्द्र, ३ वरुण, ४ सौम्य, ५ नग, ६ कुमारिल, ७ गभस्तिमान्, ८ रूमएवान्, ९ ताम्रपर्ण, १० कशेरु, ११ इन्द्र, यह, द्विवर्णचर्म ।

द्वीपिन्, पु. व्याघ्र, समुद्र । चीता, समुंदर ।

द्वेधा, व्य. द्विविध; दो तरहसे ।

द्वेष, पु. शत्रुता । दुश्मनी । हसद, गुस्सा ।

द्वेषण, पु. शत्रु(न) द्वेष । दुश्मन, दुश्मनी ।

द्वेषिन्, त्रि, विद्वेषकर्ता । दुश्मनी करनेवाला ।
द्वेष्टृ, त्रि. द्वेषी । दुश्मन ।
द्वेष्य, त्रि. द्वेषका विषय, शत्रु ।
द्वै, व्य. वितर्क; क्या ।
द्वैत, न. विविधत्व, द्वितीयत्व (त्रि) द्वैधवादी ।
द्वैत-वन, न. शोक मोहरहित वन ।
द्वैतवादिन्, त्रि. जीवात्मा और परमात्माको भिन्न २ माननेवाला ।
द्वैतीयक, त्रि. द्वितीय; दूसरा । [होना ।
द्वैधम्, व्य. द्विधा; दो प्रकार से, प्रबल शत्रूकी शरण
द्वैप, त्रि. द्वीपसम्बन्धीय (न) व्याघ्रचर्म, पु. व्याघ्रचर्मसे मढ़ा ढोल ।
द्वैपायण, पु. व्यासदेव । पुरानोंका मुसन्निफ़ ।
द्वैप्य, त्रि. द्वीपका । जजीरेका ।
द्वैमातुर, **द्वैमातृक**, } पु. गणेश, जरासन्ध, (त्रि) दो मांकी सन्तान ।
द्वैरथ्य, न. दो रथियोंका युद्ध ।
द्वैविध्य, न. द्वि प्रकारता; दोभांती ।
द्व्यञ्जल(लि), दो चुक परिमाण ।
द्व्यणुक, न. दो परमाणुओंकी सृष्टि ।
द्व्यर्थ, त्रि. दो अर्थवाला । दुमअनी कलाम ।
द्व्यष्ट, न. ताम्र; तम्वा । [पुत्र ।
द्व्यामुष्यायण, पु. जनक और गृहीता दोनोंका
द्व्याहिक, त्रि. दो दिनके फ़रकमें ।

ध

तवर्गका ४ र्थ, दन्त्य अक्षर २४ वां व्यंजन ।
ध, पु. कुबेर, विधाता, धारक (न) धन । [किसम ।
धट, पु. तुल, तुलादिव्य; धड़ा, तराजू, तोलकी
धटक, पु. परिमाणविशेष; धड़ी ।
धन, न. वित्त, सम्पदा गौ धान्य आदि, स्नेह, प्रिय वस्तु, धनिष्ठा नक्षत्र, योगविशेष ।
धनञ्जय, पु. अग्नि, अर्जुन, सर्प, देहमें व्याप्त एक पवन, ककुभवृक्ष ।
धन-द, पु. कुबेर (त्रि.) धन दाता ।
धनदानुचर, पु. कुबेरका नौकर यक्ष ।
धनदानुज, पु. कुबेरका छोटा भाई ।
धन-पति, पु. कुबेर ।
धनाधिप, पु. कुबेर (त्रि.) धनी, दौलतमंद ।
धनवत्, धनिन्, त्रि. ऐश्वर्यवान् । दौलतमन्द ।
धनिक, पु. धनियां (त्रि) उत्तमर्ण, धन कर्जदेनेवाला (का) धनीकी जोरू ।
धनिष्ठा, स्त्री. नक्षत्रविशेष । २३ तेईसवां नक्षत्र ।
धनुर्गुण, पु. मौर्वी; चिल्ला । [तीरंदाज़ ।
धनुर्धर, धनुर्भृत् (त्रि.) धानुष्क, धनुर्द्धारी धन्वी ।
धनुष्मत्, **धनुर्वेद**, } पु. शस्त्रविद्या, धनुर्विद्या । फनेजङ्ग ।
धनु, **धनुस्**, } पु. धनुष्, ९ म, राशि, चार हाथका दण्ड, (पु) पियाल वृक्ष ।
धनेश्वर, पु. कुबेर (त्रि) धनस्वामी; धनका स्वामी ।
धन्य, त्रि. श्लाघ्य, भाग्यवान्, कृतार्थ, (स्त्री)(न्या) धनीयां । लायक तारीफ, किसमत मंद, काम याब ।
धन्याक, न. धनीयां ।
धन्व, धन्वत् न. धनुष् (पु.) मरुभूमि । रेगिस्तान ।
धन्वन्तरि, पु. देवचिकित्सक, पण्डितविशेष । देवताओंका तबीब ।
धन्विन्, त्रि. धनुर्द्धारी, (पु) अर्जुन । तीरन्दाज़ ।
धमन, पु. नल, चोंगा, (त्रि) भस्त्रा चालक, क्रूर । लुहार, बेरहिम । [हल्दी । रग ।
धमनि(नी), स्त्री. नाड़ी, शिरा, हट्टविलासिनी,
धम्मिल्ल, पु. वालोंकी बनावट, संयत वा संहत केश ।
धर, पु. पर्वत, कूर्मराज, (त्रि) धारणकर्ता (स्त्री.) (रा) पृथिवी, नाड़ी वि०, जरायू, मज्जा । पहाड़, बड़ा कछुआ, उठानेवाला, धरती, रग, ज़ेर, चर्बी ।
धरण, न. धारण परिमाणविशेष, २४ रत्ती, (पु.) पर्वत, लोक, स्तन, धान्य, दिवाकर ।
धरणि(णी), स्त्री. पृथिवी । ज़मीन ।
धरणि(णी)धर, **धराधर**, } पु. पर्वत, अनन्त, कूर्म-राज । पहाड़, शेषनाग ।
धरावन्ध, पु. तड़ाग; तालाब ।
धरामर, पु. ब्राह्मण, विप्र, भूदेव ।
धरा, स्त्री. पृथिवी, गर्भाशय, महादानविशेष ।
धरित्री, स्त्री. पृथिवी । ज़मीन ।
धरुण, पु. ब्रह्मा, स्वर्ग, नीर ।
धर्तृ, त्रि. धारण-कर्ता । पनाहगीर ।
धर्त, न. यज्ञ, क्रतु, धर्म ।
धर्म, पु. न. शुभादृष्ट, पुण्य, शास्त्रानुयायी आचार, सत्कर्म, यश, स्वभाव, गुण, रीति, अहिंसा, उपनिषद्, सादृश्य, (पु.) यम, धनुष्, सोमपायी

ब्राह्मण । नेक किसमत, सवाब, शास्त्रानुसार काम, नेकचलन, नेककाम, नेकनामी, आदत, सिफ़, तरकीब, नईज़ा ।
धर्म-क्षेत्र, न. धर्मस्थान, कुरुक्षेत्र ।
धर्म-घट, पु. वैशाख महिनेमें देने योग्य घट; धर्म रजाके लिये घड़ा ।
धर्म-चारिन्, त्रि. धार्मिक (स्त्री) (णी) धर्मपत्नी । इमान्दार, विवाही हुई जोरू ।
धर्मदान, न. केवल धर्मार्थ दान ।
धर्म-द्रवी, स्त्री. गङ्गा ।
धर्म-ध्वजिन्, पु. जीविकार्थ जटादिधारी । मक्कार ।
धर्म-पत्नी, स्त्री. विवाहिता स्त्री । शास्त्रकी रीतिसे व्याही हुई स्त्री, दक्षप्रजापतिकी कन्या ।
धर्म-पुत्र, पु. युधिष्ठिर, धर्मका बेटा, नरनारायण ऋषि ।
धर्म-युक्, त्रि. धर्मी । ईमान्दार ।
धर्म-राज, पु. यम, युधिष्ठिर, बुद्ध, नृप ।
धर्म-लक्षण, न. धृति क्षमा दम अस्तेय शौच इन्द्रियनिग्रह, धीः विद्या, सत्य अक्रोध यह दश।
धर्म-शाला, स्त्री. विचारालय । कचहरी, धर्म करनेका घर ।
धर्मशास्त्र / **धर्मसंहिता**, } न. स्मृतिशास्त्र १, मनु २, अत्रि ३, विष्णु ४, हारीत ५, याज्ञवल्क्य ६, उशना ७, अङ्गिरा ८, यम ९, आपस्तम्भ ११, संवर्त १२, कात्यायन १३, वृहस्पति १४, दक्ष १५, शातातप १६, शाङ्ख १७, लिखित.
धर्म-सभा, स्त्री. धर्म रक्षाके निमित्त सभा, देवसभा ।
धर्म-शील / **धर्मात्मन्**, } त्रि. धार्मिक । ईमान्दार ।
धर्माऽधिकरण, न. धर्मस्थान । अदालत (पु.) अदालती । शत्रु और मित्रमें यकसां, धर्मशास्त्रके जाननेहारा मुख्य ब्राह्मण और कुलीन धर्माधिकारी कहलाता है ।
धर्माध्यक्ष, पु. प्राड्विवाक । अदालती, जज ।
धर्मा-भास, पु. अप्रशस्त धर्म; दिखावेका धर्म ।
धर्मा-रण्य, न. तपोवन ।
धर्मा-सन, न. विचारासन । कचहरी ।
धर्मिन्, त्रि. धार्मिक; धर्मी । ईमान्दार ।
धर्मिष्ठ, त्रि. अतिधार्मिक; बड़ा धर्मी ।
धर्म्य, त्रि. धर्मयुक्त; धर्मी ।
धर्ष(ण) पु. न. पराभव, अवज्ञा, अपवाद, अमर्ष, प्रागल्भ्य, (स्त्री.) (णी) असती स्त्री । बेइज़्ज़ती, नाफ़रमानी, हजो, गुरूर, छिनाल औरत ।
धर्षित, त्रि. पराभूत, अवज्ञात, तिरस्कृत, (स्त्री.) (ता) असती स्त्री, (न.) रमण । बेइज़्ज़त, मलामत कि०, छिनाल, दोस्त । [शरीर, धावेका पेड़ ।
धव, पु. पति, धूर्त, वृक्षविशेष, कल्प । खाविंद,
धवल, पु. श्वेतवर्ण, श्रेष्ठवृष, कर्पूरविशेष, (स्त्री.) (ला) (ली) शुक्लवर्ण धेनु । सुपेदरंग, धावेका पेड़, काफ़ूर, सुपेद गाय (त्रि.) सुपेद ।
धवल-पक्ष, पु. शुक्लपक्ष, सुदी ।
धवलमृत्तिका, स्त्री. खड़िया मट्टी ।
धवलित, त्रि. शुभ्रीकृत; सुपेद किया हुआ ।
धवित्र, न. मृगचर्म रचित व्यजन (त्रि) श्रमापनयनकारी । मृगचर्मका बनाहुआ पंखा, लेभागू ।
धातु, पु. बाई बलग़म, सफ़रा. रस, लहू, मिज्ज़, शुक्र, मांस, हड्डी, इन्द्रिय, स्वर्ण, रूप्य, कांस्य, पित्तल, तांबा, सीसा, रांगा, लोहा यह आठ । तैजस, पारद, हिंङ्गु, हरिताल, गन्धक, अभ्रक, गैरिक, मनःशिल, परमेश्वर, पञ्चमहाभूत (व्या.) भू. स्था, गम आदि ।
धातु-काशी, न. हीरा कसीस ।
धातु नाशन, न. कांजी ।
धातु-वल्लभ, पु. टंकन । सुहागा । [पर्वत ।
धतु-भृत, त्रि. धांत पुष्ट करनेवाली दवाई (पु)
धातु-साम्य, न. स्वस्थता । चैन ।
धातृ, पु. विधाता, विष्णु, पिता, (त्रि) धारन वाला, रखनेवाला, बनानेवाला, जार, (स्त्री.) (त्री) माता, दाई, पृथिवी, आमलकी ।
धात्रेयी / **धात्रेयिका**, } स्त्री. उपमाता; दाई ।
धान, न. स. (नी) (निका) निधान, स्थान, आधार (स्त्री.) (बहु) (ना) भुजेजों, (ना.) धनियां, धाना, अङ्कुर । [का पेड़ ।
धानुष्क, त्रि. धनुर्धर । तीरन्दाज, अपुठकंडे-
धानुष्य, न. वंश; बांस । [धांई, झोना ।
धान्य, न. शस्य; अनाज । चार तिलभर वज़न,
धान्य-चमस, पु. चिड़वा ।

धामन्, न. स्थान, शरीर, तेज, किरण, प्रभाव, जन्म (स्त्री.) (म्नी) नाड़ी ।

धाम-निधि, पु. सूर्य, तेजस्वी । रोबदार । [मन्त्र ।

धाय्य, पु. ऋत्विक् (स्त्री.) (य्या) आग सुलगानेका

धाय(स्), त्रि. पोषक । परवरिश करनेवाला ।

धाय्य, पु. पुरोहित स्त्री(य्या) यज्ञार्थ अग्नि प्रज्वालनके मन्त्र । [पानी ।

धार, पु. ऋण, प्रान्त, (न.) धारमें गिरताहुआ

धारक, त्रि. धारणकर्ता (पु) पात्र, वर्तन ।

धारण, न. ग्रहण, अवलम्बन, वहन, स्थापन, रक्षण, (स्त्री.) (णी) नाड़ी, मन्त्रवि०, श्रेणी । पकड़ना, पनाहलेना, उठाना, रखना ।

धारणा, स्त्री. स्थिरता, निश्चय, चित्तैकाग्र्य, यमादि गुण युक्त आत्मामें मनःसमर्पण, मेधा । समझ ।

धारा, स्त्री. धार, वारिश, घड़े आदिका छेद, तलवार आदिकी तीखी सान, उत्कर्ष, रीति, जमात, सेनाका अगला स्कन्ध, समूह, प्राकार, नगरीविशेष, घोड़ेकी पांच चालें ।

धाराट, पु. अश्व, चातक, मेघ, मत्त-हस्ती ।

धारा-धर, पु. मेघ, अस्त्र । बादल, हथियार ।

धारा-पथ, न. फोहारा, गुलाबपाशी ।

धारावाहिक } त्रि. अविरत ज्ञान, अविच्छिन्न
धारावाहिन्, } ज्ञान । लगातार समझ । [धार ।

धारा-सम्पात, पु. अतिवृष्टि; बड़ी वारिश मूसल-

धारित, त्रि. ग्राहित; पकड़ायाहुआ ।

धारिन्, त्रि. धारणकर्ता, (णी) धरती उठानेवाला कर्जलेनेवाला ।

धारु, त्रि. पानकर्ता; पीनेवाला ।

धार्त-राष्ट्र, पु. कृष्णवर्ण चोंच और चरणवाला श्वेतहंस, धृतराष्ट्रकी सन्तान, सर्पविशेष ।

धार्मिक, त्रि. धर्मशील; जो सब जीवोंको अपने-तुल्य देखे, धर्मी । [लायक ।

धार्य्य, त्रि. धारणीय, ग्राह्य, स्थिरीकार्य । धारने-

धार्ष्ट्य, न. धृष्टता, प्रगल्भता, निर्लज्जता । ढीठपन, बेशर्मी । [वाला ।

धावक, पु. धोबा, कविविशेष (त्रि.) शीघ्रदौड़ने

धावन, न. धोना, दौड़ना । [दौड़ताहुआ ।

धावित, त्रि. अनुसृत, धौत, द्रुतगत । धुलवाया

धिक्, अ. निन्दा । मलामत ।

धिक्कार, धिक्क्रिया, पु. स. धिक्-करण । मलामत ।

धिक्कृत, त्रि. मलामत कियाहुआ, विलोया हु०, (न) निन्दा ।

धिषण, पु. बृहस्पति (णा) बुद्धि । अक़ल ।

धिष्ण्य, } न. स्थान, आसन, गृह, नक्षत्र, (पु.)
धिष्ण्य, } शुक्राचार्य, अग्नि ।

धी, स्त्री. बुद्धि, ज्ञान । अकल, इल्म ।

धीत, त्रि. पीत; पीयाहुआ ।

धी-गुण, पु. शुश्रूषा, तर्क, वितर्क, अर्थबोध, और तत्वज्ञान, यह आठ बुद्धिके गुण ।

धीमत्, त्रि. बुद्धिमान् (पु) बृहस्पति । अकलमन्द, देवता ओंका गुरु ।

धीर, त्रि. धैर्यशाली, पण्डित, बुद्धिमान्, गम्भीर, स्थिरोन्नत चित्त, सामर्थ्यवान्, सारवान्, मनोहर, संजीदह, धीमा, दाता, अकलमंद, गहरा, मुस्तकिल मिज़ाज, ताकतवर, ज़ोरावर, दिलरुबा (स्त्री) (रा) एक किसमकी नायिका ।

धीरता, स्त्री. धैर्य; धीरज । संजीदगी ।

धीरत्व, न. धीमापन । संजीदगी ।

धीर-प्रशान्त, पु. नायकविशेष । नायकके गुण पूरे जिसमें होंको मलचित्त सरलस्वभाव वे फिकर पुरुष । जो निज,बड़ाई नहीं करता,क्षमाकी स्वभावाला बहुत गंभीर मर्यादा वाला पुरुष है

धीरललित, पु. नायकविशेष ।

धीराधीरा, स्त्री. नायिकाविशेष ।

धीरोदात्त, पु. नायकविशेष ।

धीरोद्धत, पु. नायकविशेष । मग़रूर क्रोधी खुद पसंद पुरुष ।

धीवन्, पु. धीवर; झीवर ।

धीवर, पु. झीवर ।

धी-सचिव, पु. मन्त्री । वज़ीर ।

धुनन, न. कांपना (स्त्री.) (नि) (नी) नदी ।

धूत, त्रि. त्यक्त, कम्पित । तजाहुआ, कांपाहुआ (स्त्री.) (ति) कंप त्याग, परिहास ।

धूनान, त्रि. कांपाता हुआ ।

धूनि(नी), नदी । दर्या ।

धुन्दुमार, पु. कुवलयाश्व राजा, इन्द्रगोप कीट ।

धुन्वत् } त्रि. जो कांपता है ।
धुन्वान, }

ब्राह्मण । नेक किसमत, सवाव, शास्त्रानुसार काम, नेकचलन, नेककाम, नेकनामी, आदत, सिफ़, तरकीव, नईज़ा ।
धर्म-क्षेत्र, न. धर्मस्थान, कुरुक्षेत्र ।
धर्म-घट, पु. वैशाख महिनेमें देने योग्य घट; धर्म रजाके लिये घड़ा ।
धर्म-चारिन्, त्रि. धार्मिक (स्त्री) (णी) धर्मपत्नी । इमान्दार, विवाही हुई जोरू ।
धर्मदान, न. केवल धर्मार्थ दान ।
धर्म-द्रवी, स्त्री. गङ्गा ।
धर्म-ध्वजिन्, पु. जीविकार्थ जटादिधारी । मक्कार ।
धर्म-पत्नी, स्त्री. विवाहिता स्त्री । शास्त्रकी रीतिसे व्याही हुई स्त्री, दक्षप्रजापतिकी कन्या ।
धर्म-पुत्र, पु. युधिष्ठिर, धर्मका बेटा, नरनारायण ऋषि ।
धर्म-युक्, त्रि. धर्मी । ईमान्दार ।
धर्म-राज, पु. यम, युधिष्ठिर, बुद्ध, नृप ।
धर्म-लक्षण, न. धृति क्षमा दम अस्तेय शौच इन्द्रियनिग्रह, धीः विद्या, सत्य अक्रोध यह दश ।
धर्म-शाला, स्त्री. विचारालय । कचहरी, धर्म करनेका घर ।
धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता, न. स्मृतिशास्त्र १, मनु २, अत्रि ३, विष्णु ४, हारीत ५, याज्ञवल्क्य ६, उशना ७, अङ्गिरा ८, यम ९, आपस्तम्भ ११, संवर्त १२, कात्यायन १३, वृहस्पति १४, दक्ष १५, शातातप १६, शङ्ख १७, लिखित.
धर्म-सभा, स्त्री. धर्म रक्षाके निमित्त सभा, देवसभा ।
धर्म-शील, धर्मात्मन्, त्रि. धार्मिक । ईमान्दार ।
धर्माऽधिकरण, न. धर्मस्थान । अदालत (पु.) अदालती । शत्रु और मित्रमें यकसां, धर्मशास्त्रके जाननेहारा मुख्य ब्राह्मण और कुलीन धर्माधिकारी कहलाता है ।
धर्माध्यक्ष, पु. प्राड्विवाक । अदालती, जज ।
धर्मा-भास, पु. अप्रशस्त धर्म; दिखावेका धर्म ।
धर्मा-रण्य, न. तपोवन ।
धर्मा-सन, न. विचारासन । कचहरी ।
धर्मिन्, त्रि. धार्मिक; धर्मी । ईमान्दार ।
धर्मिष्ठ, त्रि. अतिधार्मिक; वड़ा धर्मी ।
धर्म्य, त्रि. धर्मयुक्त; धर्मी ।
धर्ष(ण) पु. न. पराभव, अवज्ञा, अपवाद, अमर्ष, प्रागल्भ्य, (स्त्री.) (णी) असती स्त्री । वेइज़ती, नाफ़रमानी, हजो, गुरूर, छिनाल औरत ।
धर्षित, त्रि. पराभूत, अवज्ञात, तिरस्कृत, (स्त्री.) (ता) असती स्त्री, (न.) रमण । वेइज़त, मलामत कि०, छिनाल, दोस्त । [शरीर, धावेका पेड़ ।
धव, पु. पति, धूर्त, वृक्षविशेष, कल्प । खाविंद,
धवल, पु. श्वेतवर्ण, श्रेष्ठवृष, कर्पूरविशेष, (स्त्री.) (ला) (ली) शुक्लवर्ण धेनु । सुपेदरंग, धावेका पेड़, काफ़ूर, सुपेद गाय (त्रि.) सुपेद ।
धवल-पक्ष, पु. शुक्लपक्ष, सुदी ।
धवलमृत्तिका, स्त्री. खड़िया मट्टी ।
धवलित, त्रि. शुभ्रीकृत; सुपेद किया हुआ ।
धवित्र, न. मृगचर्म रचित व्यजन (त्रि) अपनयनकारी । मृगचर्मका वनाहुआ पंखा, लेभागू ।
धातु, पु. वाई वलगम, सफ़रा. रस, लहू, मिज्झ, शुक्र, मांस, हड्डी, इन्द्रिय, स्वर्ण, रूप्य, कास्य, पित्तल, तांवा, सीसा, रांगा, लोहा यह आठ । तैजस, पारद, हिंङ्गू, हरिताल, गन्धक, अभ्रक, गैरिक, मनःशिल, परमेश्वर, पञ्चमहाभूत (व्या.) भू. स्था, गम आदि ।
धातु-काशी, न. हीरा कसीस ।
धातु नाशन, न. कांजी ।
धातु-वल्लभ, पु. टंकन । सुहागा । [पर्वत ।
धतु-भृत, त्रि. धांत पुष्ट करनेवाली दवाई (पु)
धातु-साम्य, न. स्वस्थता । चैन ।
धातृ, पु. विधाता, विष्णु, पिता, (त्रि) धारन वाला, रखनेवाला, बनानेवाला, जार, (स्त्री.) (त्री) माता, दाई, पृथिवी, आमलकी ।
धात्रेयी, धात्रेयिका, स्त्री. उपमाता; दाई ।
धान, न. स. (नी) (निका) निधान, स्थान, आधार (स्त्री.) (वहु) (ना) भुजेजों, (ना.) धनियां, धानां, अङ्कुर । [का पेड़ ।
धानुष्क, त्रि. धनुर्धर । तीरन्दाज, अपुठकंडे-
धानुष्य, न. वंश; वांस । [धांई, झोना ।
धान्य, न. शस्य; अनाज । चार तिलभर वज़न,
धान्य-चमस, पु. चिड़वा ।

धुर(रा), स्त्री भार, चिन्ता, सन्मुख, अग्रभाग, शकट आदिका अगला भाग ।
धुरन्धर, धुरीण, धुर्य, त्रि. भार उठानेवाला, मुखिया ।
धुवर, न. कम्पन; कांपना ।
धुवित्र, न. व्यजन; पंखा ।
धूस्तर, धूस्थर, पु. दधूरेका पेड़ । (न) उसीकाफल ।
धूक, पु. देह, दोहना, वकत ।
धूत, त्रि. कम्पित, निरस्त, भर्त्सित, तर्कित। कांपा, हु०, झिड़का, हु० सोचाहु० (स्त्री.) (ता) जोरू ।
धूतक, पु. धूना । राल ।
धूनन, न. चालन, कम्पन । कांपना, चलाना ।
धूप, पु. गन्धद्रव्यविशेष ।
धूपन, न. धूपद्वारा वासित करण ।
धूपायित, धूपित, त्रि. धूप दिया हुआ तपाया हुआ ।
धूपिका, स्त्री. कुहासा । कुहरा ।
धूम, पु. धूंआ ।
धूमकेतन, धूमकेतु, धूमध्वज, पु. अग्नि, धूमकेतु, उत्पातविशेष । आग, दुमदार सतारा, खास खराबी ।
धूम-योनि, स्त्री. अग्नि; आग, बादल, मुत्थां ।
धूमल, धूमाभ, पु. कृष्ण लोहित वर्ण (त्रि.) तद्वर्णयुत । लाखारंग, लाखा ।
धूमा-वती, स्त्री. महाविद्या, देवीविशेष ।
धूमीका, स्त्री. कुहासा । कुहर ।
धूम्या, स्त्री. धूमसमूह; बहुत धूंआं ।
धूम्याट, पु. पक्षीविशेष । एक खास पांरद ।
धूम्र, पु. धूमल-वर्ण (त्रि.) धूंऐंरंग, धूंऐंरंगा ।
धूम्रक, पु. उष्ट्र; ऊंट ।
धूम्र-लोचन, धुंदली आंखवाला पु. असुरविशेष, कपोत । कबूतर ।
धूर्जटि, पु. शिवजी ।
धूर्त, त्रि. शठ, वञ्चक । शरीर, ठग, शिगाल ।
धूर्वह, त्रि. भारवाही । बोझ उठानेवाला ।
धूलि, पु. (स्त्री) (ली) धूड़ ।
धूलि-ध्वज, पु. वायु । हवा ।
धूलि-पुष्पिका, स्त्री. केतकी ।
धूसर, पु. ईषत् पाण्डु वर्ण, गर्द्धप, उष्ट्र, कपोत (त्रि.) तद्वर्णयुत । धुंदलारंग, गधा, ऊंट, कबूतर, धुंदला ।
धूसरिमन्, पु. धूसरत्व । ख़ाकीरंग ।
धूसरी, स्त्री. किन्नरी । कंजरी ।
धृत, त्रि. अवलम्बित, गृहीत, स्थापित, स्थित । पकड़ाहुआ, रक्खाहुआ, ठहराहुआ ।
धृत-राष्ट्र, पु. पांडुराजका बड़ाभाई, हंसविशेष, सर्पवि० (स्त्री.) (ष्ट्री) हंसी ।
धृति, स्त्री. धारण, उद्धार, सार, धैर्य, स्थिति, इच्छा, सर्वत्र प्रीति, सन्तोष, सुख, उत्साह, मातृकावि०, योगवि, १८ अक्षरका छन्दोविशेष, (पु) याग ।
धृतिमत्, त्रि. धृतिशाली; धीरजवाला । संजीदा ।
धृष्ट, त्रि. प्रगल्भ, उद्धत, निर्लज्ज, लम्पट । होशियार, मग़रूर, वेशरम, अय्याश ।
धृष्टद्युम्न, पु. राजा द्रुपदका पुत्र ।
धृष्णज, धृष्णु, त्रि. घर्षणशील । धमकनेवाला ।
धृष्णि, पु. किरण । झुआ ।
धेनु, स्त्री. नई सूई हुई गाय । [हैवानकी जोरू ।
धेनुक, पु. असुरवि०, (स्त्री) (का) गाय, हथिनी,
धेय, त्रि. ग्रहणीय, पकड़नेकेलायक ।
धैर्य, न. धीरत्व । सबर । संजीदगी ।
धैवत, पु. स्वरविशेष । ६ ठी, स्वर ।
धोरण, न. हस्ती आदि सवारी ।
धोरणि(णि), परम्परा । सिलसिला ।
धौत, त्रि. क्षालित; धोयाहुआ, मांजाहु०, सुपेद, (न) सेम ।
धौरतिक, न. घोड़ेकी दुलकी चाल ।
धौरेय, त्रि. भारवाहक, अग्रवर्ती; अगुआ, भार उठाने वाला ।
ध्वाङ्क्ष, पु. काक; कौआ, बगुला, मछली खानेवाला पंछी, भिखारी ।
ध्मात, त्रि. सन्धुक्षित, दग्ध, शब्दित । भखायाहुआ, जलाहुआ, बोलताहुआ । [कियाहुआ ।
ध्यात, त्रि. चिन्तित, स्मृत । सोचाहुआ, याद
ध्यान, न. चिन्ता, स्मृति । खयाल, याद, एक तरफ़ दिल की लगाओ ।

नमेरु, पु. रुद्राक्ष । पुन्नाग वृक्ष ।
नम्य, त्रि. नमनीय; झुकनेलायक ।
नम्र, त्रि. प्रणत, विनीत । झुकाहुआ, मुत हम्मिल।
नम्रता, स्त्री. नति, विनय । हलीमी, सजदा ।
नय, पु. नीति । इख़लाक । [गवाना ।
नयन, न. नेत्र, प्रापण, थापन । आंख, हसूल,
नय-विद्, त्रि. नीतिशास्त्रज्ञ । इलम इख़लाकका जाननेवाला ।
नर, पु. पुरुष, ऋषिवि०, अर्जुन, विष्णु, परमात्मा ।
नर-क, पु. दुःख भोगनेका स्थान, दैन्य, नर । दोज़ख़ ।
नरक-जित्, नरकान्तक, पु. दैत्यारि, विष्णु भगवान् ।
नर-देव, पु. ब्राह्मण । राजा ।
नर-नारायण, पु. द्वि. बदरिकाश्रममें दो ऋषि ।
नर-पति, पु. राजा । पादशाह ।
नर-पुङ्गव, पु. नर-श्रेष्ठ; नरोंमें उत्तम ।
नर-मेध, पु. मनुष्यमांससे यज्ञ । [नर उठातेहैं ।
नर वाहन, पु. कुबेर (न.) पालकी-सवारी, जिसे
नर-सिंह, नर-हरि, पु. नृसिंह अवतार । नरोंमें बहादुर ।
नरा-ङ्कित, नरेङ्कित, पु. न्यायविशेष ।
नरे-न्द्र, पु. राजा, विष झाड़नेवाला ।
नरोत्तम, पु. नारायण । मनुष्योंमें श्रेष्ठ । [वाला ।
नर्तक, पु. नट. स्त्री. (की) नटनी (त्रि.) नाचने-
नर्तन, न. नृत्य; नाच ।
नर्तित, त्रि. नाचा (न) नाच ।
नर्दटक, न. १९ अक्षर छन्दोविशेष ।
नर्दित, त्रि. शब्दित, स्तुत (न) शब्दकरण । आवाज़ तअरीफ़ कियाहु०, बोलना ।
नर्दिन्, त्रि. तअरीफ़ करनेवाला, बोलनेवाला ।
नर्मठ, त्रि. क्रीड़ामें लगाहुआ (पु.) आम्यदा ।
नर्मद, त्रि. मसख़रिया, ठट्ठेबाज़ (दा) रेवा नदी ।
नर्मन्, न. परिहास; ठट्ठा, मसख़री । [साथी ।
नर्म-सचिव, पु. क्रीड़ा सहचर । ठट्ठे मसख़रीमें
नल, पु. काना, तीर, निषध देश कोराजा, एक ख़ास वानर, पितरोंका लोकवि०, दैत्यवि०, (न) पद्मपुष्प ।
नलक, न. नड़, सुराख़दार हड्डी ।

नलकिनी, स्त्री. जानु-संधि; घुटनेका जोड़ ।
नलकूबर, पु. द्वि. कुबेरके पुत्र ।
नलद, न. उशीर, पुष्प-रस, (त्रि.) नल दाता । रास्स, फूलोंका रस ।
नलिका, नली, स्त्री. नड़, तृण, नाड़ी, सुगन्धि-द्रव्य-विशेष ।
नलित, पु. स्त्री. एक प्रकारका साग ।
नलिन, न. पद्म, जल, (नी) पद्मिनी, स्वर्णदी । कौल फूल, पानी, नीलोफर, अकाश गंगा ।
नल्व, पु. ८०० आठसौ हाथ परिमाण ।
नव, त्रि. नूतन, (पु.) स्तुति । नया, नौ, तअरीफ़ ।
नव-ग्रह, पु. बहु० सूर्य आदि नौ । सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ।
नवति, स्त्री. ९०नब्बे संख्या ।
नव-दुर्गा, स्त्री. १ पार्वती, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्रघण्टा, ४ कूष्माण्डा, ५ स्कन्धमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्रि, ८ महागौरी, ९ औरसिद्धिदा ।
नव-द्वार, न. दो कान, दो आंख, दो नासा, मुख, गुद, लिंग ।
नवधा, व्य. नौ प्रकारसे । नौ तरहसे ।
नवन्, त्रि. ९ नौ संख्या ।
नवनीत, पु. न. ताज़ा माखन ।
नव-पत्रिका, स्त्री. १ कदली, २ दाड़िमी, ३ धान्य, ४ हरिद्रा, मान, कचु, बिल्व, अशोक, जयन्ती यह नव पत्रवाली स्त्री मूर्ति ।
नव-म, पु. नावां, स्त्री. (मी) ९ नौमी तिथि ।
नव-मल्लिका, नव-मालिका, स्त्री. पुष्पविशेष, लताविशेष ।
नव-वधू, स्त्री. नयी ब्याही स्त्री ।
नव-रत्न, न. मुक्ता, माणिक्य, वैदूर्य, गोमेद, वज्र, विद्रुम, पद्मराग, मरकत, नीलकान्त यह नव । विक्रमादित्यकी सभाके ९ पण्डित । १ धन्वन्तरि, २ क्षपणक, ३ अमरसिंह, ४ शङ्कु, ५ वेतालभट्ट, ६ घटखर्पर, ७ कालिदास, और ८ वराहमिहिर । [९मी, तक तिथियें ।
नव-रात्र, न. आश्विन शुक्लपक्षकी पड़वासे लेकर
नवशस्, व्य. नौ २ करके ।
नव-शायक, पु. १ गोप, २ माली, ३ तेली, ४ तांती, ५ मोदक, ६ बारुनी, ७ कुलाल, ८ कुलाल, ९ कुम्हार और नाई यह नौ जातियें ।

नटनारायण, पु. रागविशेष; मेघरागका ३ पुत्र ।
नटन, न. नृत्य (स्त्री) (नी.) वेश्या । नाच, नटकी स्त्री, कंचनी ।
नड़, पु. तृणविशेष । नड़ प्रसिद्ध है ।
नड़कीय, **नड़प्राय**, **नड़्वत् (ल्)** } पु.नड़वान् देश; जहां बहुतसे नड़ हो.
नड्वा, स्त्री. नड़समूह ; नडोंका वन ।
नत, त्रि. प्रणत, निम्र, कुटिल (स्त्री.) (ति) नमन । झुकाहुआ, नीचा, तिरछा, झुकाव ।
नता-ङ्गी, स्त्री. संयताङ्गी स्त्री; । गठे हुए जिसमवाली. मुतहम्भिला ।
नद, पु. ब्रह्मपुत्र, शोण, शतद्रु आदि (स्त्री.) (दी) गङ्गा, यमुना, आदि ४ कोससे दूर तक वहनेवाला प्रवाह ।
नदी-कान्त, पु. समुद्र नदीपति । बहर ।
नदी-ज, पु. गङ्गापुत्र, भीष्म (त्रि) नदीसे उत्पन्न ।
नदीन, पु समुद्र, वरुण, (त्रि.) जो दीन नहीं ।
नदी-मातृक, पु. वह देश जहां केवल नदीके जलसे खेतियें पकती हैं ।
नदीष्ण, त्रि. नदीस्नायी; नदीमें न्हानेवाला; तैराक ।
नद्ध, त्रि. व्याप्त, संयुक्त; बंधाहुआ, जुड़ाहुआ ।
नद्ध्री, स्त्री चर्म-रज्जु । तसमा, चमड़ेकी रस्सी ।
नन(ना)न्दृ, स्त्री. भर्तृभगिनी; ननद ।
ननु, व्य. प्रश्न, वाक्यारम्भ, अवधारण, स्वीकार, सम्मति, आक्षेप, प्रत्युक्ति, अनुज्ञा, अनुभव, आमन्त्रण, सन्देह, सम्भाषण, विरोध आदि का बोधक अव्यय ।
नन्द, पु. कृष्ण-पिता, नृपविशेष, कुबेरकी निधि-विशेष, (पु.स्त्री.) (न्दी) आनन्द, पुरवि०, इन्द्रका उपवन ।
नन्दक, पु. विष्णुका खड्ग, मेंडक, (त्रि,) हर्षेल, कुलपालक कृष्णपिता (त्रि) आनन्दजनक ।
नन्दकिन्, पु. विष्णु ।
नन्दथु, पु. आनन्द । खुशी ।
नन्दन, पु. पुत्र, न. इन्द्रका बाग़ ।
नन्द-नन्दन, पु. नन्दका पुत्र, कृष्ण ।
नन्दा, स्त्री. ननद, दुर्गा, पड़वा, षष्ठी, एकादशी यह तीन तिथियें, (नन्दी) इन्द्रका बाग़ ।
नन्दि, पु. न. आनन्द, द्यूताङ्गवि०, (पु.) नन्दीगण, जमाई मित्र, (त्रि.) सुख-दाता । [न्दिगण
नन्दिकेश्वर, पु. शिवजीका प्रधान अनुचर । न-
नन्दिघोष, पु. अर्जुनका रथ । [हुआ । खुश ।
नन्दित, त्रि. आनन्दित, तोषित । खुश किया
नन्दिन्, पु. शिवजीका प्रधान गण, (स्त्री.) (नी) दुर्गा, गंगा, अयोध्या, वशिष्ठकी गाय, कोशकार व्याडीकी माता । [नन्द बढ़ानेवाला ।
नन्दि-वर्धन, पु. शिव, पुत्र, पक्षान्त (त्रि.) आ-
नन्दीश, पु. शिव, नन्दिकेश्वर । नंदीगन ।
नन्द्या-वर्त, पु. गृहविशेष, मत्स्यविशेष ।
नपुंसक, पु. न. क्लीव; हिजड़ा ।
नप्तृ, पु. पोता, दोहता (स्त्री.) पोती, दोहती ।
नभ, पु. श्रावणमास, न. आकाश ।
नभःसद, पु. देवता ।
नभश्चर, पु. पक्षी, वायु, मेघ, सूर्य आदि ग्रह, राक्षस, विद्याधर आदि । त्रि. आकाशमे फिरने वाला ।
नभस्, न. गगन । आसमान् ।
नभसङ्गम, पु. स्त्री. पक्षी । परिन्द ।
नभस्य, पु. भाद्रमास; भादों महीना ।
नभस्वत्, पु. वायु । हवा । [वाला ।
न-भोग, पु. देवता, मेघ (त्रि) आकाशमें जाने-
नभो-मणि, पु. सूर्य । आफ़ताब ।
नभो(रजस्), रेणु, न. पु. कुज्झटिका, अन्धकार; कोहर, अंधेरा ।
नमन, न. नत होना; झुकना । [सजदहकेलायक ।
नमनीय, त्रि. नमनेके योग्य । झुकनेके योग्य ।
नमस्, व्य. नमस्कार । सजदा ।
नमस्कार, पु. प्रणाम । सजदा ।
नमस्कृत, त्रि. अभिवादित; प्रणाम किया गया । सज्दह किया हुआ ।
नमस्य, त्रि. प्रणम्य, पूजनीय । सलामके लायक, (स्त्री.) (स्या) पूजा, नमस्कार । सजदह ।
नमित, त्रि. वक्रीकृत; झुकायाहुआ । ज़ेर किया-हुआ ।
नमुचि, पु. दैत्यविशेष, कामदेव ।
नमुचि-द्विष्, **नमुचि-सूदन**, } पु. इन्द्र, शिव ।

नमेरु, पु. रुद्राक्ष । पुनाग वृक्ष ।
नम्य, त्रि. नमनीय; झुकनेलायक ।
नम्र, त्रि. प्रणत, विनीत । झुकाहुआ, मुत हम्मिल ।
नम्रता, स्त्री. नति, विनय । हलीमी, सजदा ।
नय, पु. नीति । इख़लाक । [गवाना ।
नयन, न. नेत्र, प्रापण, यापन । आंख, हसूल,
नय-विद्, त्रि. नीतिशास्त्रज्ञ । इल्म इख़लाकका जाननेवाला ।
नर, पु. पुरुष, ऋषिवि०, अर्जुन, विष्णु, परमात्मा ।
नरक, पु. दुःख भोगनेका स्थान, दैन्य, नर । दोज़ख़ ।
नरक-जित्, **नरका-न्तक**, पु. दैत्यारि, विष्णु भगवान् ।
नर-देव, पु. ब्राह्मण । राजा ।
नर-नारायण, पु. द्वि. बदरिकाश्रममें दो ऋषि ।
नर-पति, पु. राजा । पादशाह ।
नर-पुङ्गव, पु. नर-श्रेष्ठ; नरोंमे उत्तम ।
नर-मेध, पु. मनुष्यमांससे यज्ञ । [नर उठातेहैं ।
नर-वाहन, पु. कुबेर (न.) पालकी-सवारी, जिसे
नर-सिंह, **नर-हरि**, पु. नृसिंह अवतार । नरोंमें बहादुर ।
नरा-ङ्कित, नरेङ्गित, पु. न्यायविशेष ।
नरेन्द्र, पु. राजा, विष झाड़नेवाला ।
नरोत्तम, पु. नारायण । मनुष्योंमें श्रेष्ठ । [वाला ।
नर्तक, पु. नट. स्त्री. (की) नटनी (त्रि.) नाचने-
नर्तन, न. नृत्य; नाच ।
नर्तित, त्रि. नाचा (न) नाच ।
नर्दटक, न. १९ अक्षर छन्दोविशेष ।
नर्दित, त्रि. शब्दित, स्तुत (न) शब्दकरण । आवाज़ तअरीफ़ कियाहु०, बोलना ।
नर्दिन्, त्रि. तअरीफ़ करनेवाला, बोलनेवाला ।
नर्मठ, त्रि. क्रीड़ामे लगाहुआ (पु.) आम्यदा ।
नर्मद, त्रि. मखौलिया, ठट्ठेबाज़ (दा) रेवा नदी ।
नर्मन्, न. परिहास; ठट्ठा, मस्खरी । [साथी ।
नर्म-सचिव, पु. क्रीड़ा सहचर । ठट्ठे मस्खरीमें
नल, पु. काना, तीर, निषध देश काराजा, एक ख़ास वानर, पितरोंका लोकवि०, दैत्यवि०, (न) पद्मपुष्प ।
नलक, न. नड़, सुराख़दार हड्डी ।

नलकिनी, स्त्री. जानु-संधि; घुटनेका जोड़ ।
नलकूबर, पु. द्वि. कुबेरके पुत्र ।
नलद, न. उशीर, पुष्प-रस, (त्रि.) नल दाता । खस्स, फूलोंका रस ।
नलिका, **नली**, स्त्री. नड़, तृण, नाड़ी, सुगन्धि-द्रव्य-विशेष ।
नलित, पु. स्त्री. एक प्रकारका साग ।
नलिन, न. पद्म, जल, (नी) पद्मिनी, स्वर्णदी । कौल फूल, पानी, नीलोफर, अकाश गंगा ।
नल्व, पु. ८०० आठसौ हाथ परिमाण ।
नव, त्रि. नूतन, (पु.) स्तुति । नया, नौ, तअरीफ़ ।
नव-ग्रह, पु. बहु० सूर्य आदि नौ । सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ।
नवति, स्त्री. ९० नव्वे संख्या ।
नव-दुर्गा, स्त्री. १ पार्वती, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्रघण्टा, ४ कूष्मांडा, ५ स्कन्धमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्रि, ८ महागौरी, ९ औरसिद्धिदा ।
नव-द्वार, न. दो कान, दो आंख, दो नासा, मुख, गुद, लिंग ।
नवधा, व्य. नौ प्रकारसे । नौ तरहसे ।
नवन्, त्रि. ९ नौ संख्या ।
नवनीत, पु. न. ताज़ा माखन ।
नव-पत्रिका, स्त्री. १ कदली, २ दाड़िमी, ३ धान्य, ४ हरिद्रा, मान, कचु, बिल्व, अशोक, जटन्ती यह नव पत्रवाली स्त्री मूर्ति ।
नव-म, पु. नावां, स्त्री. (मी) ९ नौमी तिथि ।
नव-मल्लिका, **नव-मालिका**, स्त्री. पुष्पविशेष, लताविशेष ।
नव-वधू, स्त्री. नयी व्याही स्त्री ।
नव-रत्न, न. मुक्ता, माणिक्य, वैडूर्य, गोमेद, वज्र, विद्रुम, पद्मराग, मरकत, नीलकान्त यह नव । विक्रमादित्यकी सभाके ९ पण्डित । १ धन्वन्तरि, २ क्षपणक, ३ अमरसिंह, ४ शङ्कु, ५ वेतालभट्ट, ६ घटखर्पर, ७ कालिदास, और ८ वराहमिहिर । [९मी, तक तिथियें ।
नव-रात्र, न. आश्विन शुक्लपक्षकी पड़वासे लेकर
नवशस्, व्य. नौ २ करके ।
नव-शायक, पु. १ गोप, २ माली, ३ तेली, ४ तांती, ५ मोदक, ६ बारुनी, ७ कलाल, ८ कुलाल, ९ कुह्मार और नाई यह नौ जातियें ।

नटनारायण, पु. रागविशेष; मेघरागका ३ पुत्र ।
नटन, न. नृत्य (स्त्री) (नी.) वेश्या । नाच, नटकी स्त्री, कंचनी ।
नड, पु. तृणविशेष । नड़ प्रसिद्ध है ।
नड़कीय, **नड़प्राय**, **नड्वत् (ल)** } पु. नड़वान् देश; जहां बहुतसे नड़ हो.
नड्या, स्त्री. नड़समूह ; नडोंका वन ।
नत, त्रि. प्रणत, निम्न, कुटिल (स्त्री.) (ति) नमन । झुकाहुआ, नीचा, तिरछा, झुकाव ।
नता-ङ्गी, स्त्री. संयताङ्गी स्त्री; । गठे हुए जिसमवाली. सुतहम्भिला ।
नद, पु. ब्रह्मपुत्र, शोण, शतद्रु आदि (स्त्री.) (दी) गङ्गा, यमुना, आदि ४ कोससे दूर तक वहनेवाला प्रवाह ।
नदी-कान्त, पु. समुद्र नदीपति । वहर ।
नदी-ज, पु. गङ्गापुत्र, भीष्म (त्रि) नदीसे उत्पन्न ।
नदीन, पु. समुद्र, वरुण, (त्रि.) जो दीन नहीं ।
नदी-मातृक, पु. वह देश जहां केवल नदीके जलसे खेतियें पकती हैं ।
नदीष्ण, त्रि. नदीस्नायी; नदीमें न्हानेवाला; तैराक ।
नद्ध, त्रि. व्याप्त, संयुक्त; बंधाहुआ, जुड़ाहुआ ।
नद्ध्री, स्त्री चर्म-रज्जु । तसमा, चमड़ेकी रस्सी ।
नन(ना)न्दृ, स्त्री. भर्तृभगिनी; ननद ।
ननु, व्य. प्रश्न, वाक्यारम्भ, अवधारण, स्वीकार, सम्मति, आक्षेप, प्रत्युक्ति, अनुज्ञा, अनुभव, आमन्त्रण, सन्देह, सम्भाषण, विरोध आदि का बोधक अव्यय ।
नन्द, पु. कृष्ण-पिता, नृपविशेष, कुवेरकी निधिविशेष, (पु.स्त्री.) (न्दी) आनन्द, पुरवि०, इन्द्रका उपवन ।
नन्दक, पु. विष्णुका खड्ग, मेंडक, (त्रि,) हर्षेल, कुलपालक कृष्णपिता (त्रि) आनन्दजनक ।
नन्दकिन्, पु. विष्णु ।
नन्दथु, पु. आनन्द । खुशी ।
नन्दन, पु. पुत्र, न. इन्द्रका वाग़ ।
नन्द-नन्दन, पु. नन्दका पुत्र, कृष्ण ।
नन्दा, स्त्री. ननद, दुर्गा, पड़वा, षष्ठी, एकादशी यह तीन तिथियें, (नन्दी) इन्द्रका वाग़।
नन्दि, पु. न. आनन्द, द्यूताहवि०, (पु.) नन्दीगण, जमाई मित्र, (त्रि.) सुख-दाता । [न्दिगण
नन्दिकेश्वर, पु. शिवजीका प्रधान अनुचर । न.
नन्दिघोष, पु. अर्जुनका रथ । [हुआ । खुश ।
नन्दित, त्रि. आनन्दित, तोषित । खुश किया
नन्दिन्, पु. शिवजीका प्रधान गण, (स्त्री.) (नी) दुर्गा, गंगा, अयोध्या, वशिष्ठकी गाय, कोशकार व्याडीकी माता । [नन्द बढ़ानेवाला ।
नन्दि-वर्धन, पु. शिव, पुत्र, पक्षान्त (त्रि.) आ-
नन्दीश, पु. शिव, नन्दिकेश्वर । नंदीगन ।
नन्द्या-वर्त, पु. गृहविशेष, मत्स्यविशेष ।
नपुंसक, पु. न. क्लीव; हिजड़ा ।
नप्तृ, पु. पोता, दोहता (स्त्री.) पोती, दोहती ।
नभ, पु. श्रावणमास, न. आकाश ।
नभःसद, पु. देवता ।
नभश्चर, पु. पक्षी, वायु, मेघ, सूर्य आदि ग्रह, राक्षस, विद्याधर आदि । त्रि. आकाशमे फिरनेवाला ।
नभस्, न. गगन । आसमान् ।
नभसङ्गम, पु. स्त्री. पक्षी । परिन्द ।
नभस्य, पु. भाद्रमास; भादों महीना ।
नभस्वत्, पु. वायु । हवा । [वाला ।
न-भोग, पु. देवता, मेघ (त्रि) आकाशमें जाने-
नभो-मणि, पु. सूर्य । आफ़ताव ।
नभो(रजस्), रेणु, न. पु. कुज्झटिका, अन्धकार; कोहर, अंधेरा ।
नमन, न. नत होना; झुकना । [सजदहकेलायक ।
नमनीय, त्रि. नमनेके योग्य । झुकनेके योग्य ।
नमस्, व्य. नमस्कार । सजदा ।
नमस्कार, पु. प्रणाम । सजदा ।
नमस्कृत, त्रि. अभिवादित; प्रणाम किया गया । सजदह किया हुआ ।
नमस्य, त्रि. प्रणम्य, पूजनीय । सलामके लायक, (स्त्री.) (स्या) पूजा, नमस्कार । सजदह ।
नमित, त्रि. वक्रीकृत; झुकायाहुआ । ज़ेर किया-हुआ ।
नमुचि, पु. दैत्यविशेष, कामदेव ।
नमुचि-द्विष्, **नमुचि-सूदन**, } पु. इन्द्र, शिव ।

नमेरु, पु. रुद्राक्ष । पुन्नाग वृक्ष ।
नम्य, त्रि. नमनीय; झुकनेलायक ।
नम्र, त्रि. प्रणत, विनीत । झुकाहुआ, मुतहम्मिल ।
नम्रता, स्त्री. नति, विनय । हलीमी, सजदा ।
नय, पु. नीति । इख़लाक । [गवाना ।
नयन, न. नेत्र, प्रापण, यापन । आंख, हसूल,
नय-विद्, त्रि. नीतिशास्त्रज्ञ । इलम इख़लाकका जाननेवाला ।
नर, पु. पुरुष, ऋषिवि०, अर्जुन, विष्णु, परमात्मा ।
नर-क, पु. दुःख भोगनेका स्थान, दैन्य, नर । दोज़ख़ ।
नरक-जित्, **नरका-न्तक**, पु. दैत्यारि, विष्णु भगवान् ।
नर-देव, पु. ब्राह्मण । राजा ।
नर-नारायण, पु. द्वि. बदरिकाश्रममें दो ऋषि ।
नर-पति, पु. राजा । पादशाह ।
नर-पुङ्गव, पु. नर-श्रेष्ठ; नरोंसे उत्तम ।
नर-मेध, पु. मनुष्यमांससे यज्ञ । [नर उठातेहैं ।
नर वाहन, पु. कुबेर (न.) पालकी-सवारी, जिसे
नर-सिंह, **नर-हरि**, पु. नृसिंह अवतार । नरोंमें बहादुर ।
नरा-ङ्कित, नरेङ्गित, पु. न्यायविशेष ।
नरे-न्द्र, पु. राजा, विष झाड़नेवाला ।
नरोत्तम, पु. नारायण । मनुष्योंमें श्रेष्ठ । [वाला ।
नर्तक, पु. नट. स्त्री. (की) नटनी (त्रि.) नाचने-
नर्तन, न. नृत्य; नाच ।
नर्तित, त्रि. नाचा (न) नाच ।
नर्दटक, न. १९ अक्षर छन्दोविशेष ।
नर्दित, त्रि. शब्दित, स्तुत (न) शब्दकरण । आवाज़ तअरीफ़ कियाहु०, बोलना ।
नर्दिन्, त्रि. तअरीफ़ करनेवाला, बोलनेवाला ।
नर्मठ, त्रि. क्रीड़ामें लगाहुआ (पु.) आम्यश ।
नर्मद, त्रि. मखौलिया, ठठेबाज़ (दा) रेवा नदी ।
नर्मन्, न. परिहास; ठट्ठा, मस्ख़री । [साथी ।
नर्म-सचिव, पु. क्रीड़ा सहचर । ठट्ठे मस्ख़रीमें
नल, पु. काना, तीर, निषध देशकाराजा, एक ख़ास वानर, पितरोंका लोकवि०, दैत्यवि०, (न) पद्मपुष्प ।
नलक, न. नड़, सुराख़दार हड्डी ।
नलकिनी, स्त्री. जानु-संधि; घुटनेका जोड़ ।
नलकूवर, पु. द्वि. कुबेरके पुत्र ।
नलद, न. उशीर, पुष्प-रस, (त्रि.) नल दाता । ख़स्स, फूलोंका रस ।
नलिका, **नली**, स्त्री. नड़, तृण, नाड़ी, सुगन्धि-द्रव्य-विशेष ।
नलित, पु. स्त्री. एक प्रकारका साग ।
नलिन, न. पद्म, जल, (नी) पद्मिनी, स्वर्णदी । कौल फूल, पानी, नीलोफ़र, अकाश गंगा ।
नल्व, पु. ८०० आठसौ हाथ परिमाण ।
नव, त्रि. नूतन, (पु.) स्तुति । नया, नौ, तअरीफ़ ।
नव-ग्रह, पु. बहु० सूर्य आदि नौ । सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु ।
नवति, स्त्री. ९०नव्वे संख्या ।
नव-दुर्गा, स्त्री. १ पार्वती, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्र-घण्टा, ४ कूष्मांडा, ५ स्कन्धमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्रि, ८ महागौरी, ९ औरसिद्धिदा ।
नव-द्वार, न. दो कान, दो आंख, दो नासा, मुख, गुद, लिंग ।
नवधा, व्य. नौ प्रकारसे । नौ तरहसे ।
नवन्, त्रि. ९ नौ संख्या ।
नवनीत, पु. न. ताज़ा माखन ।
नव-पत्रिका, स्त्री. १ कदली, २ दाड़िमी, ३ धान्य, ४ हरिद्रा, मान, कचु, बिल्व, अशोक, जटन्ती यह नव पत्रवाली स्त्री मूर्ति ।
नव-म, पु. नावां, स्त्री. (मी) ९ नौमी तिथि ।
नव-मल्लिका, **नव-मालिका**, स्त्री. पुष्पविशेष, लताविशेष ।
नव-वधू, स्त्री. नयी व्याही स्त्री ।
नव-रत्न, न. मुक्ता, माणिक्य, वैडूर्य, गोमेद, वज्र, विद्रुम, पद्मराग, मरकत, नीलकान्त यह नव । विक्रमादित्यकी सभाके ९ पण्डित । १ धन्वन्तरि, २ क्षपणक, ३ अमरसिंह, ४ शङ्कु, ५ वेतालभट्ट, ६ घटखर्पर, ७ कालिदास, और ८ वराहमिहिर । [९मी, तक तिथियें ।
नव-रात्र, न. आश्विन शुक्लपक्षकी पड़वासे लेकर
नवशस्, व्य. नौ २ करके ।
नव-शायक, पु. १ गोप, २ माली, ३ तेली, ४ तांती, ५ मोदक, ६ वारुनी, ७ कलाल, ८ कुलाल, ९ कुम्हार और नाई यह नौ जातियें ।

नवान्न, न. नया अन्न ।
नवाम्बिका, स्त्री. १ ब्रह्माणी, २ माहेशी, ३ कौमारी, ४ वैष्णवी, ५ वाराही, ६ नारसिंही, ७ माहेन्द्री, ८ चण्डिका और ९ महालक्ष्मी भगवतीकी यह नौ मूर्तियें ।
नवीन, त्रि. नूतन; नया ।
नवोढा, स्त्री. नई व्याही स्त्री ।
नव्य, त्रि. नवीन; नया ।
नश्वर, त्रि. नाश होनेवाला, अनित्य । फ़ानी ।
नष्ट, त्रि. गयाआया, छिपाहुआ, भागाहु०, दोषवाला मराहु०, दुष्ट, (स्त्री.) (ष्टा) छिनाल औरत ।
नष्ट-चन्द्र, पु. चौथका चांद ।
नष्टेन्दु-कला, स्त्री. कुहू; अमावस ।
नस्(सा), स्त्री. नाक; नास ।
नस्य, न. नरावार, घोड़े आदिके नाककी रस्सी ।
नस्योत, पु. नाकमें नथेले हुए पशु । [रस्सी ।
नहन, न. बन्धन, बन्धनरज्जु । बान्धना, बांधनेकी
नहि, व्य. ना ।
नहुष, पु. सर्पविशेष; ययाति राजाका पिता ।
नाक, पु. स्वर्ग, आकाश ।
नाकम्
नाकिम् } पु. स्वर्ग; देवता ।
नाकु, पु. मुनिविशेष । वल्मीक, पर्वत ।
नाग, पु. सर्प, हाथी, मेघ, नागदन्त, पुन्नागवृक्ष, नागकेशरवृक्ष, मुस्तक, देहस्थ वायुविशेष, (न) सीसक, रांगा, करणवि०, स्त्री (गी) सांपनी, हथिनी, मोटी स्त्री ।
नाग-केशर, पु. पुष्पवृक्षविशेष ।
नाग-दन्त
नाग-निर्व्यूह } पु. हाथीदान्त; खूंटी, कीली ।
नाग-पाश, पु. कुबेरका अस्त्र, एक तरहकी गांठ ।
नाग-पुर, न. नगरविशेष, हस्तिनापुर, पाताल ।
नागर, त्रि. नगरका, चतुर (न) देवनागर अक्षर ।
नागरक, पु. चोर । दुज़्द ।
नाग-रङ्ग, पु. लेंबू । नारंगी ।
नाग-राज, पु. अनन्तदेव, ऐरावत ।
नाग-लोक, पाताळ । ६ ठा, पताल ।
नाग-वल्लरी,
नाग-वल्ली, } स्त्री. पानकी जड़ ।
नाग-सम्भव, न. सिन्दूर ।
नागा-धिप, पु. ऐरावत (स्त्री.) (पा) मनसा देवी ।
नागा-शन,
नागा-न्तक,
नागा-राति, } पु. गरुड़ । पंछियोंका राजा ।
नागाव्ह(य), न. हस्तिनापुर । नगर ।
नाचि-केतु(तस्), पु. आग, मुनिविशेष ।
नाट, पु. नृत्य; नाच ।
नाटक, न. दृश्य-काव्य, अभिनयग्रंथ, (त्रि.) नर्तक, पु. पर्वतविशेष (स्त्री.) इन्द्र-सभा ।
नाटार
नाटेर
नाटेर, } पु. नटीका पुत्र ।
नाटिका, स्त्री. क्षुद्र नाटक ग्रन्थविशेष ।
नाडि(डी)न्धम, पु. स्वर्णकार, नाड़ीमें शब्दकारी, सुनार ।
नाडी-चक्र, न. नाभि स्थ नाड़ी मूल । नाफ़मे नाड़ीयों का चक । इडाच पिंगला चैव सुषुम्ना परमामता । गान्धारी हस्तिजिव्हा च पूषा च सुयशा तथा । अलम्बुषा कुहूश्चैव, शांखिनी दशमी मता । लोलजिव्हेभजिव्हा च विजया कामदापरा । अमृता बहुला नाम नाड्यो वायुसमीरिताः । यह १६
नाडी-चञ्चु, पु. कौआ, बगुला, एक मुनिका नाम ।
नाणक, न. मुद्रा मोहर आदि । वेदी वंशमें एक धर्मप्रचारक क्षत्रिय ।
नाथ, पु. स्वामी, प्रभु, नासमें पिरोई हुई रस्सी ।
नाथन, न. प्रार्थना; मांगना ।
नाथ-वत्, त्रि. पराधीन । न आज़ाद ।
नाथ-हरि, पु. पशु । हैवान् ।
नाद, पु. ध्वनि । आवाज ।
नादिन्, त्रि. शब्दायमान; बोलताहुआ ।
नादेय, त्रि. नदीजात (न) सेंधानिमक ।
नाना, व्य. कई तरहसे ।
नानार्थ, त्रि. अनेकार्थ; बहुमाअनी कलाम ।
नाना-विध, त्रि. नानाप्रकार; कई तरहका ।
नान्तरीयक, त्रि. व्याप्त, अवश्य भावी । होनहार ।
नान्दी, स्त्री. समृद्धि, अभ्युदय, नाटकके आरम्भमें कर्तव्य मङ्गल पाठ ।
नान्दी-मुख, त्रि. वृद्धिश्राद्धके भोक्ता माता पिता

आदि (न) श्राद्धविशेष (स्त्री.) (खी) १८ अक्षरोंके चरणवाला एक छन्द ।

नापित, पु. जातिविशेष; नाई ।

नाभि, पु. प्रधान, क्षत्रिय, सम्राट् चक्रके मध्यकी लकडी स्त्री. (भि भी) कस्तूरी (पु. न) नाफ़।

नाभि ज(जन्मन्), पु. ब्रह्मा ।

नाम, व्य. सम्भावना, वितर्क, निश्चय, विसय, स्मरण, स्वीकार, अलीक, कोप, निन्दा, प्रसिद्धि-इन् अर्थोंका बोधक ।

नाम-करण, न. संस्कारविशेष । सूतकके अन्त-दिन शास्त्ररीतिसे वालकका नाम रखना ।

नामधेय, **नामन्**, } न. आख्या, वाचक शब्द । इसम ।

नाम-शेष, पु. मृत्यु (त्रि) मृत । मौत, मरा हुआ।

नामाऽभिहार, पु. नामान्तर । नाम बदलना ।

नाय, पु. नीति । इखलाक ।

नायक, पु. ग्रन्थमें वर्णनीय पुरुष । धीरोदात्त, धीरप्रशान्त, धीरललित, और धीरोद्धत ।

नायिका, स्त्री. ग्रंथमें प्रधान वर्णन करनेके योग्य स्त्री, प्यारवाली स्त्री, देवीविशेष ।

नार, पु. वत्स, (न) नरसमूह (त्रि.) बचा, प्यारा, आदमियोंका मजमह ।

नारक, पु. नरक (त्रि) नरकका ।

नारकिन्, त्रि. नरक भोगनेवाला ।

नारङ्ग, पु. नारंगी, लेंमू, पिप्पलीका रस ।

नारद, पु. देवर्षि (न) उपपुराणविशेष ।

नारदीय, न. पुराणविशेष । १८ में से एक ।

नाराच, पु. लोहेका बाण; तीर ।

नारायण, पु. विष्णु (स्त्री) (णी) लक्ष्मी, दुर्गा, गंगा।

नारायण-क्षेत्र, न. गंगाके प्रवाहसे आठ हाथ दूरका तीर्थ ।

नारि(री)केल, **नालि-केर(ल)**, } पु. प्रसिद्ध वृक्ष (न) उसका फल। नारियलका पेड़, नरियेल ।

नाल, न. नाड़ (ला) शिरा, डंडी । कमलकी डंडी ।

नालीक, पु. तीर, शल्य, अंग, (न) पद्मसमूह ।

नाली-व्रण, पु. नाली का खोल ।

नाविक, पु. कर्णधार (त्रि) नाओ का । मल्लाह ।

नाव्य, त्रि. नाओद्वारा तरणीय (न) नयापन ।

नाश, पु. ध्वंस, पलायन, अदर्शन । तबाही, भागना, छुपण ।

नाशक, त्रि. नाशकारी । तबाह करनेवाला ।

नाशन, न. तबाह करना ।

नाशिन्, त्रि. नाश करनेवाला । तबाह करनेवाला।

नाष्टिक, त्रि. नष्ट द्रव्यका स्वामी, गई वस्तु का मालिक ।

नासत्य, पु. द्वि. अश्विनीकुमारद्वय ।

नासा, स्त्री. ज्ञानेन्द्रिय; नाक ।

नासा-दारु, न. दरवाज़ेके ऊपरकी लकड़ी ।

नासिक्य, न. नासासे उत्पन्न, (द्वि) अश्विनीके दो कुमार, सूर्यके तेजको न सह सकती हुई "सञ्ज्ञा" उत्तर कुरु देशोंमें घोड़ीकी सूरत बन जब तपकर रहीथी, सूर्य देवता घोड़ा बन उसके पास आया, परन्तु अश्विनीने सूर्यके वीर्यको नासाओंसे निकाल दिया, जिससे दो बालक उत्पन्न हुए।

नास्ति, व्य. अविद्यमानता; नहिं है । नामौजूद ।

नास्तिक, पु. पाखण्डी; नरक स्वर्ग और ईश्वरके नमाननेवाला । चार्वाक वग़ैरह, मुलहिद ।

नास्तिकता, स्त्री. **नास्तिक्य**, न. } मिथ्यादृष्टि । मुलहिदपन ।

नाह, पु. बन्धन; रस्सी ।

नि, व्य. विशेष, भृश, निरन्तर, नित्य, संशय, कौशल, लोभ, उपराम, सामीप्य, आदर, अन्तर्धान, मोक्ष, विश्वास, निश्चय, निषेध इत्यादि अर्थोंका बोधक अव्यय ।

निःशङ्क, त्रि. निर्भय । बेख़ौफ़ ।

निःशेष, त्रि. अखिल । तमाम ।

निःश्रयणी, **निःश्रेणी(णि)**, } स्त्री. बांसकी पौड़ी । लकड़ीकी सीढ़ी ।

निःश्रेयस्, न. मोक्ष, शुभ, विद्या, भक्ति (पु) शङ्कर । नजात, भलाई, इल्म, इबादत ।

निःश्वसन, न. निश्वास; सांसलेना । सांस, दम ।

निःश्वास, पु. मुख नासिकासे निकली हुई वायु ।

निःसङ्ग, त्रि. सङ्गरहित । तनहा ।

निःसंज्ञ, त्रि. अचेतन । बेहोश ।

निःसत्व, त्रि. बलशून्य । कमज़ोर, बेहौसला ।

निःसंपात, पु. जिस समय जाना आना न हो सके ।

निःसरण, न. निकलना, मौत, दरवाज़ा ।

निःसह, त्रि. जो सह न सके ।

निःसार, त्रि. सारहीन (पु) निकलनेका रास्ता।
निःसारण, न. निर्वासन; निकालना।
निःसारित, त्रि. बहिष्कृत; बाहर निकाला हुआ।
निःसृत, त्रि. निकसा हुआ। [चंद्रमा।
निःस्र(स्रा)व, पु. क्षरण; बह जाना, सोत।
निःस्व, त्रि. निर्द्धन, दरिद्र। मुफ़लिस।
निकट, न. समीप। नज़दीक।
निकर, पु. समूह, सार, वित्त, निधि। मजमह, खुलासा, दौलत "निधि" देखो।
निकाम, पु. मरज़ी माफ़िक, ज्यादहतर, रूहकुद्दस।
निकाय, पु. लक्ष्य, समूह, गृह, समान धर्म प्राणि-समूह, परब्रह्म। नशाना, घर, एक धर्मियोंका मजमह।
निकाय्य, न. निवास-गृह; रहनेका घर।
निकार, पु. परिभव, अपकार, तिरस्कार, धान्यादेरूर्ध्वक्षेपण। बेइज़्ज़ती, बुराई, निरादरी, धान बग़ैरहका उछालना।
निकारण, न. मारण, वध। कतल।
निकुञ्ज, न. लतादिपिहितस्थल; लताओंसे घिरी हुई जगह। [विशेष।
निकुम्भ, पु. कर्णका पुत्र (स्त्री) (म्भा)। राक्षसी
निकुम्भिला, स्त्री. लंकामेंकी एक गुफ़ा।
निकृत, त्रि. खल, धूर्त, नीच, प्रतारित, पदच्युत। खराब, शरीर, कमीना, फ़रेब दिया हु०, ओहदेसे गिरा हुआ।
निकृति, स्त्री. झिड़कन, निन्दा। शरारत, ख़राबी, आजर्ज़ी, ग़रीबी, मुफ़लसी।
निकृष्ट, त्रि. अपकृष्ट; जातिमें छोटा। अदना।
निकेत(क), पु. गृह; घर।
निकेतन, न. घर, पु. पलाण्डु; प्याज़।
निक्वण, न. वीनकी आवाज़।
निक्वाणन, न. वीन बजाना।
निक्षेप, पु. अन्यार्पित वस्तु, शिल्पिहस्ते संस्कारार्थ दत्त। अमानत, कारीगरको सुधारके लिये दी हुई।
निखर्व, पु. संख्याविशेष, (त्रि) वामन। १०००००००००००० इतनी तादाद, पस्तकद।
निखात, त्रि. गर्त, परिखा; गढ़ा, खाई।
निखिल, त्रि. सम्पूर्ण। कुल।
निगड, पु. संगल, हथकड़ी। [हुआ, जकड़ाहु०
निगडित, त्रि. बद्ध; संगल से बंधा हुआ, बंधा-
निगद, पु. भाषण, शब्द। तकरीर, आवाज़।
निगदित, त्रि. कथित; कहाहुआ।
निगम, पु. वाणिज्य, वेद, वेदशाखा, शास्त्रपंथा। वणिक्पथ, निश्चय, अध्वा, प्रतिज्ञाआदिन्यायके पांच अवयवोंमेंसे एक।
निग(गा)र, पु. } खुराक। निगलना।
निगरण, न. }
निगाल, पु. घोड़ेका गला।
निगूढ, पु. वनके मूंग, (त्रि) छिपा हुआ।
निग्रह, पु. अनुग्रहाभाव, बन्धन, भर्त्सन, सीमा, प्रहार, ताडना, यन्त्रणा। सज़ा, झिड़कन, हद्द, चोट। [१६ पदार्थोंमेंसे आख़री।
निग्रह-स्थान, न. वादीके हारनेकी जगह, गौतमके
निग्राह, पु. शाप। बद दुआ।
निघ, पु. समन्तात्, सदृश। चारोंतरफ़, एकसा।
निघण्टु, पु. कोश आदि ग्रंथ। वैदिक शब्दोंकी लुग़त।
निघस, पु. आहार। खुराक। [दियाहुआ, नेक।
निघ्न, त्रि. वशीभूत, गुणित, शिष्ट। तावेदार, ज़र्ब
निचय, पु. समूह, निश्चय, अवयवापचित पदार्थ। मजमह वाढेर, यक़ीन, हद्दसे बाहिर बढ़ाहुआ।
निचित, त्रि. व्याप्त, पूरित, आकीर्ण, निर्मित। मुहीत, भराहुआ, फैलाहु०, बनाहुआ।
निचुल, पु. हिज्जल-वृक्ष, बेतका पेड़।
निचोल, पु. डोलीका पर्दा, बुर्का, दुपट्टा, चादर, औरतोंका घागरा।
निज, न. अपना, क़ुदरती, इलाही, हमेशा।
निटल, न. कपाल; खोपरी, माथा।
निडीन, न पक्षी गतिविशेष; परिंदोंका शनैः२उड़ना।
नितम्ब, पु. कटितट, स्कन्ध, कूल, कट्यधोभाग, कटक, कटि। चूतड़, कंधा, किनारा, कमर।
नितम्बिनी, स्त्री. प्रशस्त नितम्बवती। उमदह कमरवाली स्त्री।
नितराम्, व्य. अत्यन्त, अवश्य, सदैव। निहायत, ज़रूर, हमेशा, ख़ास करके।
नितल, न. सातों पातालोंमेंसे २य, पाताल। जहन्नम।
नितान्त, त्रि. अधिक(न)। बहुतही, ज़रूर।

नित्य, न. सतत, प्रतिदिन, (त्रि) तीन काल व्यापी, पु. समुद्र, सनातन, (स्त्री) (त्या) दुर्गा, पार्वती ।
नित्य-कर्मन्, न. अकरनमें प्रत्यवायसाधक धर्म-संध्यावन्दन आदि । जिसके न करनेमें पाप है जैसे संध्या उपासन आदि । रोज मरा का फ़र्ज़ ।
नित्यदा, व्य. सातत्य । हमेशहसे ।
नित्यशस्, व्य. सदा । हमेशह ।
निदर्शन, न. उदाहरण, चिन्ह, (स्त्री) (ना) काव्यालङ्कारविशेष । मिसाल, निशान, उपमेय और उपमान वाक्यार्थोंका अभेद ।
निदाघ, पु. ग्रीष्म-काल । मौसिम, गरमा, गरमी, घाम, पसीना, (त्रि) गरम, जलाहुआ ।
निदान, न. आदिकारण, कारण, रोगनिर्णयकारी ग्रंथ, अन्त, तपःफल । ख़ास सबब, बीमारीकी पहिचान करानेवाली पुस्तक, आख़ीर, तप स्याका फल, बछड़ा बांधनेकी रस्सी ।
निदग्ध, उपचित, लेपवर्द्धित, (स्त्री.) (ग्धा) एला । बढ़ाहु०, फूलाहु०, इलायची ।
निदिध्यासन, न. गुरुमुखसे सुनेहुएपर खूब ग़ौर करना, ख़याल करना ।
निदेश, पु. हुकम, सिखाना, नज़दीक, वर्तन ।
निदेशवर्तिन्, त्रि. आज्ञाकारी । फ़र्माबरदार ।
निद्रा, स्त्री. सुषुप्ति दशा; मेध्या नाड़ीमे मनका प्रवेश; नींद ।
निद्राण, त्रि. सोया हुआ ।
निद्रालु, पु. नींदवाला । उनींदा ।
निद्रित, त्रि. सोया हुआ, नींदसे ग़लतान ।
निधन, पु. न. मरण, नाश, लग्नसे आठवां घर, कुल, (पु) कुलमें प्रधान (त्रि) निर्धन, दरिद्र ।
निधान, न. आधार, भांडार, स्थापन, अर्पण, तिरोधान । पनाह, कामका अंजाम, खज़ाना, छुपना, रखना, सौंपना ।
निधि, पु. कुबेरकी संपदा; जैसे पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद नील, खर्व, नलीनाम खुशबू, अमानत, दबाहुआ पदार्थ, समुंदर ।
निधीश, पु. कुबेर; धनका देवता ।
निधुवन, न. मैथुन, नर्म । जमा, खेल, ठट्ठा ।
निध्वान, न. दर्शन (पु) ध्वनि । दीदार, आवाज़ ।
निनंक्षु, त्रि. नाशेच्छुक । नाश चाहनेवाला ।
निन्दक, त्रि. दूषक । हजो करनेवाला ।
निन्दनीय, **निन्द्य**, त्रि. दूषणीय । निन्दाके योग्य ।
निन्दा, स्त्री. अपवाद । हजो ।
निन्दित, त्रि. निन्दा-युत । हजोकेलायक, बदनाम ।
निन्दु, स्त्री. मृतवत्सा । जिसके बचे मर जांय ।
निप, पु. न. कलश; कलसा ।
निपतित, त्रि. खूब गिरा हुआ, गिरा हुआ ।
निपत्या, स्त्री. युद्धभूमि । मैदान जङ्ग ।
निपात, पु. पतन, मौत (व्या) च, प्र, एवं, आदिक शब्द ।
निपातन, न. अधः क्षेपण; नीचे गिराना ।
निपातित, त्रि. नीचे फैंका हुआ ।
निपान, न. कूएका चौंबचा । जोड़ देने ।
निपीडन, न. निचोड़ना, पाओंसें मलना, हाथ
निपीडित, त्रि. निचोडा हुआ. तकलीफ़ दिया हुआ ।
निपीत, त्रि. समग्र-पीत । तमाम पीलिया हुआ ।
निपुण, त्रि. होशियार, काम निकालनेमे चतुर ।
निफला, स्त्री. औषधिविशेष; एक बूटी जो रातको चमकती है ।
निबद्ध, त्रि. बंधा हुआ, रचा हुआ । पिट ।
निबन्ध, न. बन्धन, कायमी. एक बीमारी, नीमका
निबन्धन, न. सबब, बंधन (पु) बीन बाजेके ऊपरका हिस्सा । न्दह ।
निबन्धृ, पु. ग्रन्थकर्ता । मुसन्निफ़, तशरीह कुनि-
निभ, पु. व्याज (त्रि) शब्दके आगे आय तो सदृश समान (स्त्री) प्रकाश । बहाना, मानिंद, रौशनी ।
निभृत, त्रि. निर्जन, विनीत, गुप्त । तनहा, हलीम, पोशीदह, एक तरफ़ ।
निमग्न, त्रि. डूबा हुआ, पानीमें ग़ोता लगाये हुए ।
निमज्जन, **निमज्जथु**, न अवगाहण, स्नान अर्न्तानिवेश; पु. न्हाना ।
निमन्त्रण, न. घरमें भोजनके लिये किसीको बुलाना, बुलाना ।
निमान, न. मूल्य; मोल । कीमत । एक पुत्र ।
निमि, पु. चन्द्रवंशीय एक राजा, इक्ष्वाकु राजाका
निमित, त्रि. प्रक्षिप्त, उत् क्षिप्त । फेंका हु०, उछाला हुआ ।

निमित्त, न. कारण, चिन्ह । शकून, सबब, नशान।
निमित्त-कारण, न. न्यायशास्त्रोक्त समवाय्य समवायी कारणसे भिन्न कारण; जैसे घटका मृदादि समवायी, कपालद्वयसंयोग, असमवायी और कुलाल का चक्र दण्ड आदि निमित्त कारण हैं।
निमि(मे)ष, पु. काल विशेष, विष्णु । लहमा ।
निमील, पु. निमीलन, न. मुद्रण। मीचन, सकोचना, मरण, मोह । [मरना, मुकुचना, झपकना ।
निमीलन, न. मरण, संकोचन । आंख बंद करना।
निम्न, त्रि. गहरा, नीचा ।
निम्न-ग, त्रि. अधोगतिक नीचे जानेवाला (स्त्री) (गा) नदी-मात्र । दर्या ।
निम्नो-न्नत, त्रि. ऊंचा नीचा ।
निम्ब, पु. नीमका पेड़ ।
नियत, त्रि. निश्चित, नित्य, दमित, बद्ध, शासित, वशीकृत, अवश्य भावी (न) नित्य-कर्म। यकीनी, हमेशह, मग़लूब, बंधाहु०, सिखाया हु०, रोज़का काम (स्त्री) (ति) भाग्य, पुण्य, कायदा (ती) देवी, (भगवती)
नियन्तृ, पु. सारथि, प्रभु, (त्रि) शास्ता । गाड़ीवान् मालिक, सज़ा देनेवाला । [हुआ ।
नियन्त्रित, त्रि. बद्ध, दमित; बंधा हुआ, जकड़ा
नियम, पु. क़ायदा, रोक, इकरार, यकीन, मनज़ूर, फ़ाकह, मीमांसा शास्त्र का एक विशेष नियम, व्रत शौच सन्तोष तप स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान।
नियमन, न. दमन, बन्धन, व्यवस्थापन, बांधना, रोकना, [किया हुआ, खेंचा हुआ।
नियमित, त्रि. रोका हुआ, बांधा हुआ, निश्चय
नियम्य, त्रि. सिखाने लायक ।
नियामक, त्रि. नियन्ता । यकीन करानेवाला ।
नियुत, न. दसलाख १०,००,००० संख्या ।
नियोक्तृ, त्रि. प्रभु । हाकम ।
नियोग, पु. आज्ञा, नौकरोंको काममें लगाना, काम, हिदायत, यकीन, इख़्यार ।
नियोजन, न. आज्ञा, मेलन । हुकम, मिलना ।
नियोजित, त्रि. आज्ञप्त; आज्ञा दिया हुआ ।
नियोज्य, त्रि. भृत्य, प्रेष्य । नौकर, चाकर ।
निर्, व्य. निश्चय, निषेध, निश्शेष । यकीन, नहीं, तमाम, समग्र, बहिष्करणआदि अर्थबोधक शब्द।

निरक्ष, पु. विषुव संक्रम ।
निरंश, त्रि. अंशहीन, (पु) संक्रान्ति ।
निरङ्कुश, त्रि. स्वेच्छाचारी । आज़ाद ।
निरञ्जन, त्रि. साफ़, चमकीला, रौशन (न) परमात्मा।
निरत, त्रि. आसक्त व्यापृत । मसरूफ ।
निरतिशय, त्रि. अत्यधिक । ज़्यादहतर ।
निरत्यय, त्रि. अविनाशी, निर्बोध, निर्दोष ।
निरन्तर, त्रि. निविड, निश्छिद्र । लगातार, गाढ़ा।
निरपत्रप, त्रि. निर्लज्ज । बेशरम ।
निरपराध, त्रि. निर्दोष । बेकसूर ।
निरपेक्ष, त्रि. अपेक्षारहित, स्वतन्त्र । आज़ाद ।
निरय, पु. नरक, दुःख । दोज़ख ।
निरर्गल, त्रि. अबाध । बेरोक, बेडर ।
निरर्थक, त्रि. व्यर्थ, निष्प्रयोजन । बेफ़ायदह ।
निरस, न. रसहीन । बेज़ायकह ।
निरसन, न. फेंकना, मारना, कतल करना ।
निरस्त, त्रि. छोड़ाहुआ, हटाया हुआ, छिड़का हुआ, मारा हुआ, जल्दीसे कहा हुआ ।
निरहंकार, त्रि. गर्व-शून्य । ना मग़रूर ।
निराकरण, न. हटाना, दूरकरना, इनकार करना ।
निराकरिष्णु, त्रि. निवारणशील । निकालनेवाला, इनकार करनेवाला ।
निराकार, त्रि. आकाररहित (पु) आकाश, काल, दिक्, आत्मा, और मन । बेवजूद ।
निराकृत, त्रि. हटायाहु०, इन्कारकियाहु० (स्त्री) (ति) हटाना (बेवजूद ।)
निराबाध, त्रि. बाधारहित । बेरोक ।
निरामय, पु. जंगली बकरा, सूअर (त्रि) तनदरुस्त।
निरालम्ब, त्रि. निराश्रय । बेपनाह ।
निराश, त्रि. आशारहित । ना उमीद ।
निराश्रय, त्रि. अशरण । बेपनाह ।
निरिन्द्रिय, त्रि. इन्द्रियरहित । बेहिस्स ।
निरीक्षण, त्रि. दर्शन-हीन; अंधा (न) देखना ।
निरीक्षा, स्त्री. देखना । दीदार । [दीदार ।
निरीक्षित, त्रि. दृष्ट (पु.) दर्शन । देखा हु०,
निरीति, त्रि. ईतिशून्य । बाअमन ।
निरीह, त्रि. निस्पृह, निश्चेष्ट । बेख़्वाहिश, बेहर्कत ।
निरुक्त, न. वेदाङ्ग ग्रंथ, वेदका निघण्टु व्याकरण ।
वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ,

धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् (त्रि) कहाहु० (स्त्री) (क्ति) पूरी २ व्याख्या।

निरूढ, पु. रूढ़ी लक्षणासे अर्थका बोधक शब्द । (त्रि) उत्पन्न, प्रसिद्ध, (स्त्री) (ढा) लक्षणाविशेष।

निरूढि, स्त्री. प्रसिद्धि । मशहूरी ।

निरूपण, न. निर्णय, निश्चय । खूब ग़ौरसे एक बातको सोचना, बतलाना, मुकर करना ।

निरोध, पु. नाश, निग्रह । तबाही, रोक ।

निरोधन, न. रुद्धकरण; रोकना ।

निर्गत, त्रि. बहिर्गत, अपगत; निकला हुआ ।

निर्गम, पु. निर्गमन, न. अपगम, बहिर्गमन । निकल जाना, बाहर जाना ।

निर्गुण, त्रि. गुण-हीन (न) परमात्मा । बेसिफ़त ।

निर्गुण्डी, स्त्री. सिन्धुवार वृक्ष, कमलकी जड़ ।

निर्गन्थ, पु. क्षपणक, दिगन्तर, वृतकार, निष्फल, मुनिविशेष, (त्रि) मूर्ख, निस्सहाय, वस्त्ररहित । नास्तिक जुआरिया, बेफ़ायदा, ख़ास मुनि, बेवकूफ़, बेमदद, नंगा ।

निर्गन्थन, न. हनन, वध । कतल ।

निर्घन्ट, पु. अणुक्रमणिका. [वज्र ।

निर्घात, पु. आवाज़, हवाके टकरानेकी आवाज़,

निर्घृण, त्रि. निर्दय । बेरहम, बेशरम ।

निर्घोष, पु. शब्द । आवाज़ ।

निर्जन, त्रि. विजन । तनहाई ।

निर्जय, पु. देवता, (त्रि) जो जीता न जाय ।

निर्जर, पु. देवता (न) अमृत (त्रि) अविनाशी । (स्त्री) (रा) गिलो, तालपर्णी बूटी ।

निर्झर, पु. झरना (स्त्री) (री) (णी) नदी ।

निर्णय, पु. निश्चय, ज्ञान, सन्देह, विरोध, परिहार, मीमांसोक्त पञ्च अवयवोंमेंसे अन्तिम, अर्थका निश्चय । फ़ैसला ।

निर्णिक्त, त्रि. शोधित, अपगतमल (स्त्री) (क्ति) शुक्ति । साफ़ किया हु०, धोया हुआ, धोना, न जात ।

निर्णीत, त्रि. अवधारित; निर्णय किया हुआ ।

निर्णेजक, पु. रजक; धोबी (त्रि) साफ़ करने वाला।

निर्दय, त्रि. निष्ठुर । बेरहिम । [तरह जलना ।

निर्दहन, पु. भिलावा (स्त्री) मूर्वालता (न) अच्छी

निर्दिष्ट, त्रि. उपदिष्ट, उल्लिखित, कथित । सिखाया हुआ, कहा हु०, लिखा हुआ, दिखाया हुआ ।

निर्देश, पु. सिखाना, हुकम, हिदायत, दिखाना ।

निर्धन, पु. जरद्गव (त्रि) धनरहित । मुफ़लिस ।

निर्धारण, पु. न. ज़ात, सिफ़त या कामके सबब बहुतोंमेंसे एकको अलग कर दिखाना । जैसे–आदमियोंमें ब्राह्मण, बैलोंमेंसे काला आदि ।

निर्धारित, त्रि. कृतनिश्चय । यक़ीन किया हुआ । दर्याफ़्त किया हुआ ।

निर्धूत, त्रि. तजा हुआ, हटाया हुआ ।

निर्धौत, त्रि. धोया हुआ ।

निर्बुद्धि, पु. अज्ञ । बेवकूफ़, बेअकल ।

निर्बोध, त्रि. ज्ञानरहित; मूर्ख ।

निर्भय, त्रि. भयरहित, (पु) हयश्रेष्ठ । बेख़ौफ़, उत्तम घोड़ा । [बहुतही, भरोसा ।

निर्भर, न. अतिमात्र (त्रि) आत्यन्तिक, आशा ।

निर्भर्त्सन, न. निन्दा । हजो । [नहीं । बेपरवाह।

निर्मम, त्रि. ममता-शून्य; जिसको किसीमे ममता

निर्मल, त्रि. मलरहित । साफ़, सुथरा ।

निर्माण, न. गांठना, रचना । दस्तकारी ।

निर्माल्य, न. देवताकी उच्छिष्ट (स्त्री) (ल्या) फलविशेष जिससे जल साफ़ होता है, देवताके आगेचढ़ा हुआ पदार्थ ।

निर्मित, त्रि. रचित । तैयार ।

निर्मुक्त, त्रि. आज़ाद, वह सांप जिसने केंचली उतारी है । [छुड़ाना ।

निर्मोक, पु. सांपकी केंचली, बक्तर, आसमान,

निर्यात, त्रि. निकला हुआ । [कतल, ख़ैरात ।

निर्यातन, न. निग्रह, वध, दान, प्रतिदान । रोक,

निर्यास, पु. अर्क, काढ़ा, दुसांदा ।

निर्यूह, पु. खूंटी, ताज, गूंद ।

निर्लज्ज, त्रि. लज्जाहीन । बेशरम ।

निर्लेप, त्रि. लेपरहित । आज़ाद ।

निर्लोडित, त्रि. आलोडित, विचारित । विलोया हुआ, विचारा हुआ ।

निर्वचन, न. निरुक्त, खोलकर कहना । [बोना ।

निर्वपण, न. पितरोंके निमित्त देना, देना, बीज

निर्वहण, न. नाटकमें प्रकृत कथा पूरी होनेपर प्रकृत अभिनयका निर्वाह, नाटककी पांच सन्धियें, गुज़ारा ।

निर्वाण, न. मोक्ष, हटना, तबाही, हाथीका

न्हाना, कीचड़, मौत (त्रि) मुक्त, मरा हुआ, थका हुआ, नाश हुआ २ ।

निर्वाद, पु. बदनामी, शोहरत, गौगा ।

निर्वाप, पु. निर्वापण (न) दान, वध । बुझना, खैरात, कतल ।

निर्वापण, न मारण, कतल, दान, त्याग। [निवाला।

निर्वार्य्य, त्रि. बे खौफ़ काम करनेवाला, न रुक-

निर्वासन, न. देसनिकाला देना, कतल ।

निर्वासित, त्रि. बाहर निकाला हु०, निकासाहुआ।

निर्वाह, पु. कामका सरंजाम, गुज़ारा ।

निर्विकल्प, पु. समाधिविशेष; जिसमे ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान यह ज्ञान नहिं (न) अखण्ड ज्ञान, (त्रि) विकल्परहित । [कार नहिं ।

निर्विकार, पु. परमात्मा (त्रि) जिसमें कोई वि-

निर्विघ्न, न. विघ्नका न होना (त्रि) विघ्न रहित काम ।

निर्विद, } **निर्विण्ण,** } त्रि. भय शोक आदिसे कातर, खिन्न ।

निर्विन्ध्या, स्त्री. विंध्याचलसे निकली हुई एक नदी ।

निर्विशंक, त्रि. निर्भय । बेखौफ़ ।

निर्विशेष, त्रि. अभिन्न । यकसां ।

निर्विष्ट, त्रि. उपभुक्त, लब्ध, पुष्ट, ऊढ़ ।

निर्वीज, त्रि. बीजरहित, पुरुषार्थहीन । बेतुख़्म, बेहिम्मत ।

निर्वीर, त्रि. वीर शून्य (स्त्री) (रा) अवीरा ।

निर्वृत, त्रि. सन्तुष्ट, सुखी (स्त्री) (ति) शांति, मुक्ति, अभय, मृत्यु, सुख ।

निर्वृत्त, त्रि. निष्पन्न, सुसिद्ध, ज्ञात ।

निर्वृष्ट, त्रि. निश्शेष वृष्ट; पूरा २ बरसा हुआ ।

निर्वेद, पु. स्वावमानन, परवैराग्य, वैराग्य। पछताओ, खाकसारी, दुनियावी ख्वाहिशोंकी तरक ।

निर्वेश, पु. भोग, वेतन, मूर्छन, विवाह, प्राप्ति । ऐश, मज़दूरी ग़श, हसूल ।

निर्व्यथन, न. छिद्र, दुःख । सुराख, तकलीफ़ ।

निर्व्यपेक्ष, त्रि. निरपेक्ष । बेपरवाह ।

निर्व्यूढ, त्रि. निश्चित, प्रमाणोंसे निश्चय किया हुआ, ठीक, पूरा, खतम, तर्क किया हुआ ।

निर्हरण, न. } **निर्हार,** पु. } जलानेको शव का बाहर निकालना, खेंचना, मलमूत्र का तजना, तीर आदिका देहमेंसे खेंचकर बाहर करना ।

निर्हारिन्, त्रि. निर्हरण करनेवाला, बहुत फैला हुआ, दूरगामी गन्ध ।

निर्ह्राद, पु. शब्द । आवाज़ ।

निलय, पु. आलय, गृह, वासस्थान । रहनेका घर।

निलिम्प, पु. देवता, (स्त्री) (म्पा) गौ ।

निलीन, त्रि. अवस्थित, लग्न, निमग्न, वेष्टित, विलीन । रक्खा हुआ, लगा हुआ, डूबा हुआ, लपेटा हुआ, छिपा हुआ ।

निवपन, न. पितरोंके उद्देश्य दान । जगात ।

निवर्तन, न. निवृत्ति, निवारण । हटना, लौटना, । २० बांस लंबा खेत ।

निवर्तित, त्रि. निवारित; हटाया हुआ ।

निवर्हण, निर्हरण देखो ।

नि-वसति, स्त्री. निवास गृह । रिहाशका घर ।

निवसथ, पु. गांओं, देश । [एक, मज़मह ।

निवह, पु. वायु विशेष, समूह। ७ सात पवनोमेसे

निवात, पु. दृढ़, कवच (त्रि) वातशून्य स्थान । मज़बूत, ज़िरा, बे हवा जगह । [एक दैत्य ।

निवात-कवच, पु. समुद्रके किनारे रहनेवाला

निवाप, पु. पित्रोद्देश्य दान । पितरोंकेवास्ते देना, । खैरात, श्राद्ध तर्पण आदि ।

निवार(ण), पु. न. निषेध । इनकार ।

निवास, पु. गृह, आश्रय; घर, रहनेकी जा ।

निबिड, त्रि. सान्द्र, घन, नीरन्ध्र, उच्च नासिक । गीला, घना, बे सुराख़ ऊंची नाकवाला ।

निविष्ट, त्रि. प्रविष्ट, प्राप्त; बैठा हुआ, दाखल हुआ, हासिल ।

निवीत, न. जनेऊ, दुपट्टा (त्रि) ढंपाहुआ ।

नि-वृत, न. उत्तरीय-वस्त्र (त्रि) आवृत । दुपट्टा, ढंका हुआ ।

नि-वृत्त, त्रि. विरत, प्रत्यावृत्त, (न) निवृत्ति । हटा हुआ, लौटाहु०, लौटाव स्त्री० (त्ति) विरति, विश्राम ।

नि-वेद(न), पु. न. ज्ञापन, समर्पण, वर्णन। जताना, सौंपना, बयान करना, दर्खास्त ।

नि-वेदित, त्रि. ज्ञापित, सूचित, दत्त, जताया हु० दियाहुआ, मुशतहिर कियाहु० ।

नि-वेश, पु. शिविर, स्थान, युद्ध, विवाह, सैन्य-विन्यास, उपवेशन, प्रवेश। छावनी, जगह, लड़ाई; फौजका तरतीब से ठहराना ।

नि-वेशन, न. घर, जगह, ठहराना, उलांघना ।
नि-वेशित, त्रि. ठहरायाहुआ, रक्खाहुआ, उलांघाहुआ ।
निश्(शा), स्त्री. रात, हल्दी, अन्त, बाकी ।
निशमन, निशामन, न. दर्शन, श्रवण; देखना, सुनना ।
निशा-कर, पु. चांद, मुर्ग़ ।
निशा-चर, पु. राक्षस, सिआर, उल्लू, सांप, चकवा भूत, चोर (त्रि) रातको फिरनेवाला ।
निशात, त्रि. शाणित; सांन पै चढ़ायाहुआ ।
निशान, तीक्ष्णी-करण । तेज़ करना । [चाप ।
निशान्त, न. घर, रातका अन्त, बहुतही चुप-
निशा-पति, पु. चन्द्रमा; चांद ।
निशारण, न. रातका युद्ध, हनन । कतल ।
निशित, त्रि. तीखा, तेज़ किया हु० (न) लोहा ।
निशीथ, पु. आधी रात, रात । शव ।
निशीथिनी, स्त्री. रात्रि; रात । शब । [तल, कै ।
निशुम्भ, पु. शुंभ दैत्यका छोटाभाई, मलना, क-
निश्चय, पु, निर्णय, सिद्धान्त । यकीन, फैसला ।
निश्चल, त्रि. अचल, पर्वत, वृक्ष, स्थावर—वस्तु (स्त्री) (ला) पृथिवी ।
निश्चायक, त्रि. निर्णय करानेवाला ।
निश्वसन, न. **निश्वसित**, त्रि. नासागत वायु; सांस । दम ।
निश्वास, पु. प्राण-वायु; सांस । दम । [हुआ ।
निषक्त, त्रि. संसक्त, लग्न । जुड़ा हु०, लगा
निषङ्ग, पु. तूणीर; तरकश ।
निषङ्गिन्, त्रि. तूण-धारी । तर्कश बांधनेवाला ।
निषद्य, त्रि. आधार, (स्त्री) (द्या) पण्यवीथिका, खट्वा । बाज़ार, दुकान, खटोल ।
निषध, पु. खास पहाड़, देश विशेष, राजा वि०, कठिन, निषादस्वर । [पनाह लेनेवाला ।
निषण्ण, त्रि. बैठा हुआ, सोया हुआ, ठहरा हु०,
निषा(षा)द, पु. चाण्डाल, धीवर, स्वरविशेष, (दी) चांडाली । [वाला ।
निषादिन्, पु. महावत, हाथीका सवार (त्रि) बैठने-
निषिक्त, त्रि. सिंचा हुआ, चूआ हुआ ।
निषिद्ध, त्रि. निवारित, बाधित । हटाया हुआ, रोका हुआ ।
निषूदन, न. वध, निषेध, (त्रि) विनाशक । कतल इनकार तबाह करनेवाला ।
निषेक, पु. सेचन, आधान, गर्भाधान । सींचना, डालना, हमल डालना ।
निषेदिवस्, त्रि. निषण्ण; बैठाहुआ ।
निषेध, पु. निवारण । हटाना, इनकार ।
निषेवित, त्रि. सेवित, अनुसृत । सेवाकिया हुआ, पैरवी किया हुआ ।
निष्क, पु. न. मुद्रा, मोहर, सुवर्ण, ३२ रत्ती स्वर्ण, १०८ स्वर्ण परिमाण, उरोभूषण । हार, माला ।
निष्कण्टक, त्रि. कण्टकशून्य, शत्रू शून्य । बे खटके । बग़ैर दुश्मन ।
निष्कर्मन्, त्रि. निर्व्यापार, अलस । निकम्मा ।
निष्करुण, त्रि. निर्दय । बेरहम ।
निष्कर्ष, पु. निश्चय । यक़ीन ।
निष्कर्षण, न. अपनयन, उद्धरण, निष्कासन । दूर करना, निकासना,
निष्कल, त्रि. वन्ध्य, नष्ट-वीर्य, वृद्ध, (स्त्री) (ला) विगतार्तवा नारी (न.) परब्रह्म ।
निष्काशि(सि)त, त्रि. निकाला हु०, दूर कियाहु०, झुकाया हुआ । [खेत ।
निष्कुट, पु. घरमेंका बाग, हवा, रनवासा, खास-
निष्कुषित, त्रि. निकाला हुआ, त्वचा उतारे हुए, तोड़ा हुआ ।
निष्कुह, पु. वृक्षकी खोल । [पल्टा, नजात ।
निष्कृति, स्त्री. निस्तार, उद्धार, मुक्ति । बदला,
निष्कृष्ट, त्रि. निर्गलित, निष्पीडित, सारभूत । निकला हु०, निचोड़ा हु०, (पु.) निचोड़, न बीजा ।
निष्क्रम, पु. बुद्धि, शक्ति, निर्गम, दुष्कुल ।
निष्क्रमण, न. बाहर निकलना, ४ थे महीने नव जन्म बालकको घरसे बाहर लेजानारूप एक संस्कार ।
निष्क्रय, पु. वेतन, मूल्य । भाड़ा, कीमत ।
निष्क्रापण, न. बहिर्निस्सारण । बाहर निकालना ।
निष्ठ, त्रि. ठहराहुआ (स्त्री) (ष्ठा) निष्पत्ति, नाश, अन्त, याचा, भक्ति, बड़ाई, व्यवस्था, क्लेश, व्रत, गुरु-सेवा, धर्ममें श्रद्धा, नाट्यमें प्रस्तुत कथाकी समाप्ति (व्या०) क्त क्तवतु-प्रत्यय ।
निष्ठान, न. तरकारी, व्यंजन ।

नीरस, पु. दाडिम वृक्ष, (त्रि) रस-हीन। अनारका दरख्त, बे मज़ा।

नीराजन, न. स्त्री. (ना) आरात्रिक; आरती। देवताको १ दीपक दिखाना २ शंखमें जल दिखाना, ३ शुद्ध वस्त्र दिखाना, ४ आम वा पीपलके पत्तेसे जल सींचना ५ दण्डवत प्रणाम करना, आश्विन मासमें घोड़े और अस्त्र शस्त्र आदिका पूजन करना।

नीरुज् (ज), स्त्री. स्वास्थ्य, (त्रि) नीरोग। तन दरुस्ती, तनदरुस्त।

नील, पु. इलावृतवर्षके उत्तर रम्यक वर्षकी मर्यादा पर्वतविशेष। मणि विशेष, वानरविशेष, निधिविशेष. अजमीढ राजाका पुत्र, (न) नीला-रंग, (त्रि) नीला, काला, स्त्री. (ली) नीलका पौदा।

नील-कण्ठ, पु. महादेव, मयूर, पीतसार, दात्यूह, ग्रामकी चिड़िया, खञ्जन, (न) मूलक।

नील-कान्त, पु. इंद्रनील मणि।

नील-लोहित, पु. शिव, (त्रि) नीले और लाखे रंगका, बैंगनी रंग।

नीलाम्बर, पु. बलदेव, राक्षस, शनिग्रह (न) नील वस्त्र। [सौसन।

नीलाम्बुज, (जन्मन्), न. कमलफूल। गुले

नीलिमन्, पु. नीलापन, कालापन।

नीलो-त्पल, न. नीलवर्ण उत्पल; नीलोफ़र।

नीवार, पु. तृणधान्यविशेष; सुआंकके चावल।

नीवि(वी), स्त्री. मूल-धन, कटिबन्धन कटि वस्त्र ग्रंथी। शूद्रकृत पितृश्राद्धमें मोटकबंधन। पूंजी, धोती।

नीवृत, पु. स्त्री. देश। मुल्क।

नीशार, पु. प्रावरण; पर्दा, कनात, बर्फ़की सर्दी।

नीहार, पु. घनीभूत शिशिर। बर्फ़, ओला।

नु, व्य. विकल्प, प्रश्न, हेतु, वितर्क, अपमान, अनुताप, संशय, छल, सम्मान, इन अर्थोंका बोधक अव्यय। [स्तुति। तअरीफ।

नुत, त्रि. स्तुत। तअरीफ़ किया गया, स्त्री. (ति)

नुत्त(न्न), त्रि. प्रेरित; भेजा हुआ।

नूत्न, त्रि. नवीन; नया।

नूद, पु. शतूत का पेड़।

नूनम्, व्य. तर्क, निश्चय, स्मरण, वाक्य-पूरण। इन अर्थोंका बोधक अव्यय।

नूपुर, पु. न. पादाङ्गद; पांवटा, पांयजेब।

नृ, पु. मनुष्य। आदमी।

नृग, पु. राजा इक्ष्वाकुका बेटा।

नृ-चक्षस्, पु. राक्षस।

नृ-जग्ध, त्रि. नर भक्षक। आदमखोर।

नृत्त, त्रि. नाचा (न) नाच।

नृत्त(त्य), न. ताण्डव, नाट्य; तालल्य और बतानेके साथ नाच।

नृत्यत्, त्रि. नाचता हुआ, नाचने वाला।

नृप, नृपति, पु. भूपाल। पादशाह।

नृप-कन्द, पु. राज-पलाण्डु; बड़ा प्याज़।

नृप-सभ, न. राजसभा। राजदर्बार।

नृपांश, पु. राज-कर। खिराज।

नृ-यज्ञ, पु. अतिथिपूजा। मेहिमान निवाज़ी।

नृ-शंस, त्रि. घातक, क्रूर, परद्रोही। पापी, जल्लाद, चुग़ल। [मनुष्योत्तम।

नृ-सिंह, पु. १० वां, औतार नरसिंह, हरि विष्णु,

नृ-सेन, न. मनुष्योंकी सेना। पैदल-फ़ौज।

नृ-सोम, पु. नरश्रेष्ठ, नरचन्द्र। नेक आदमी।

नेजक, पु. धोबी (त्रि) धोनेवाला।

ने-जन, न. शोधन; धोना। [राहनुमा।

नेतृ, त्रि. प्रभु, निर्वाहक, नायक। आक़ा, उस्ताद,

नेत्र, न. मथानीकी रस्सी, वस्त्रविशेष, पेड़की जड़, रथ, जटा, नाड़ी, सलाई, आंख, पहुंचानेवाला, पहुंचाने का वसीला, (त्रि) उकसानेवाला (स्त्री) (त्री) लक्ष्मी, नदी।

नेत्र-छद, पु. पपोटे।

नेत्र-रञ्जन, न. कज्जल; सुरमा, काजल।

नेत्रा-म्बु, न. आंसू।

नेदिष्ट, नेदीयस्, त्रि. बहुत नेड़ेका, चतुर, (पु) एक वृक्षका नाम, (अंकोड)

नेपथ्य, न. वेश-स्थान। लिबास पहिरनेका घर, ज़ेवरात, खेलने का दंगल।

नेपाल, पु. नेपालका मुल्क.

नेम, पु. काल, अवधि, खण्ड, प्राकार, कैतव,

अर्द्ध, गर्त, नाव्य आदि, कील, मूल्य, अर्द्ध। वक़्, हद्द, टुकड़ा, फसील, छल, निसफ़, गड़ा, नाच वगैरह, मोल।

नेमि (मी), स्त्री. चक्रपरिधि । पहियेका दायरा, कूएके ऊपरकी मंडेर, (पु) एक जिन का नाम, इमलीका पेड़। [मुनि।

नैकटिक, पु. गांओंके समीप जिसका आश्रम है वह

नैकृतिक, त्रि. निष्ठुर, कटुभाषी । कठोर, कड़वा बोलनेवाला। [बणियां। शाहरिया।

नैगम, पु. उपनिषद, वेदान्त, नीतिशास्त्र, (त्रि)

नैचिकी, स्त्री. उत्तम गौ। उत्तम गाय।

नैत्यिक, त्रि. नित्यका। रोज़ मर्राका।

नैपुण (ण्य), न. दक्षता। होशियारी।

नैमित्तिक, त्रि. निमित्तसे बना हुआ किसी प्रयोजनसे किया हुआ काम। [का।

नैमिष, न. क्षेत्रविशेष, वनविशेष (त्रि) लहमे भर

नैयग्रोध, न. वट-फल; वड़का फल (पु) बड़का पेड.।

नैयायिक, त्रि. न्यायशास्त्रका जाननेवाला या पढ़नेवाला।

नैरन्तर्य, न. सतत। लगातार।

नैरपेक्ष्य, न. अपेक्षाराहित्य। बेपरवाही।

नैराश्य, न. आशाराहित्य। न उमेदी।

नैर्ऋति, पु. राक्षस। दक्खन पच्छम कोन का देवता, विपर्योसे विराग (स्त्री) कोन।

नैर्गुण्य, न. गुणहीनत्व। बेसिफ़्गी।

नैर्मल्य, न. निर्मलत्व। सफ़ाई।

नैवेद्य, न. देव-निवेदनीय द्रव्य; देवताकी चढ़त।

नैश, त्रि. रात्रि-कालीन; रातका।

नैषध, पु. राजा नल, न. काव्यविशेष । जिसमें नल की कथा है (त्रि) नल राजा का।

नैष्कर्म्य, न. सब कर्मोका त्याग, आलस, मुक्ति।

नैष्किक, पु. कोशाध्यक्ष, टङ्कशालाध्यक्ष । खजांची, टकसालिया, निष्कसे खदीदी हुई वस्तु।

नैष्ठिक, पु. ब्रह्मचारीविशेष; ब्रह्मचारी होकर जीवनभर गुरु घरमें रहकर विद्याभ्यास करनेवाला (त्रि) आखीरी, ठहरनेवाला।

नैष्ठुर्य, न. कठोरता। संगदिली।

नैसर्गिक, त्रि. स्वाभाविक। कुदरती। [शाहादूर।

नैस्त्रिंशिक, पु. खड्गधारी योद्धा। शमशेर बरदार।

नो, व्य. अभाव;। ना, नहीं।

नो चेत्, व्य. नहीं तो। वरनह।

नोदन, न. प्रेरण, अपसारण; भेजना, निकाल देना।

नोदित, त्रि. प्रेरित; भेजाहुआ, उक्साया हुआ।

नोपस्थाता, पु. दूरवर्ती, दुष्टवादी । दूरका, बद कलाम।

नौ, स्त्री. तरणि; नाओ।

नौका, स्त्री. नाओ, किशती।

नौका-दण्ड, पु. क्षेपणी; चप्पा।

न्यक्, व्य. नीच घृण्य, अदना,। मुजनफिर।

न्यक्कार, पु. तिरस्करण। मलामत। नफ़रत।

न्यक्ष, त्रि. निकृष्ट, (न) साकल्य। नीच, तमाम। गूल्हर।

न्यग्रोध, पु. वड़का पेड़, शमीका पेड, व्याम, विष्णु (स्त्री) (धी) मूसा कन्नी बूटी नायका विशेष; जिसके स्तनकड़े चूतड़ मोटे और पतली कमरहो। [हिरण।

न्यङ्कु, पु. मुनिविशेष, मृगविशेष; बारह सींहा

न्यञ्च, वि. नीच, निम्न, क्षुद्र। झुकाहु०, नीचा, अदना।

न्यञ्चत्, त्रि. अधःस्थ, नीच। नीचेका।

न्यस्त, त्रि. क्षिप्त, त्यक्त, विकृष्ट, निहित। फेंका, हु०, तजा, हु०, छोड़ा, हु०, रक्खा हुआ।

न्याद, पु. भोजन। खुराक।

न्याय, पु. उचित, गौतमशास्त्र, प्रतिज्ञा हेतु उदाहरणा, उपनय, और निगमन जिसके यह पांच अवयव हैं ऐसा वाक्य, युक्ति, युक्तिसे मिला-हुआ दृष्टान्त।

न्याय्य, त्रि. मुनासिब, ठीक, वादलौल।

न्यास, पु. अमानत, छोड़ना, एक पुस्तक, व्या० सूत्रकी तवदीती।

न्युङ्ख, पु. सामवेदका अङ्ग, षट् प्रणवउच्चारण (त्रि) सुन्दर, अति प्यारा।

न्युप्त, त्रि. दत्त; दिया हुआ।

न्युब्ज, त्रि. अधोमुख कुब्ज, यज्ञ-पात्रविशेष, कुशा, सुवा, कुबड़ा, उलटा।

न्यून, त्रि. गर्ह्य, ऊन। निंदाके योग्य, कम।

अस्थि-मालिन्, पु. शिव (त्रि) मनुष्यकी हड्डियोंकी जिसने माला पहिरी हो ।

न्वै, व्य. वितर्क । दलील, था ।

प

इक्कीसवां व्यञ्जन । ओष्ठ्य ।

प, पु. अङ्गदेशका राजा, हवा, पत्ता, पीना ।

पक्ति, स्त्री. पाक; रसोई ।

प (क्व) (क्ब), त्रि. पका हुआ । पुख्तह ।

पक्ष, पु. मासार्द्ध; पन्द्रहदिन, पंख, पर, पूंछ, तीरका पर, पास, पासका घर, सहाय, मित्र, जोड़ा, सैना, राजहस्ती, चूल्हे का पासा ।

पक्षक, पु. पार्श्व-द्वार, पक्षपाती; खिड़की, तर्फ़दार ।

पक्ष-चर, पु. स. चक्रवाक; चकवा (पु) चांद ।

पक्षता, स्त्री. अनुमित्साविरहविशिष्टसिद्ध्यभाव । तर्फ़दारी । [रकी जड़ ।

पक्षति, स्त्री. पक्षारम्भ, प्रतिपद तिथि। पड़वा, प-

पक्ष-पात, पु. अन्याय-साहाय्य । तरफ़दारी (न) पंख गिरना ।

पक्ष-पातिन्, त्रि. अनुग्राहक । तरफ़दार ।

पक्षान्त, पु. अमावस, पूर्णिमा ।

पक्षान्तर, न. औरपक्ष । दूसरी तर्फ़ ।

पक्षा-घात, पु. लकवेकी बीमारी ।

पक्षिणी, स्त्री. आगामि वर्तमान दिनयुता रात्रि. । मौजूदा दिन और आनेवाला दिन एक रात, परिंदोंका मजमह ।

पक्षिल, त्रि. साहाय्यकारक (पु) न्यायभाष्यकार वात्स्यायन मुनि । तरफ़दार, न्याय सूत्रोंपर भाष्यकार ।

पक्षिन्, पु. बाण, विहङ्गम । तीर, परिंदह ।

पक्षि-राज, पु. गरुड़, (त्रि) परिन्दोंका राजा ।

पक्ष्मन्, न. नेत्रोंका परदा; पपोटे, पलक, रोंआं, कमलफूल, फूलकी तिरी, परिंदका पर ।

पङ्क, पु. न. कर्दम, पाप; कीचड़, गुनाह ।

पङ्क-ज, न. पद्म, सारस । कमल फूल । (त्रि) कीचड़या पानीमे जो पैदा हो ।

पङ्क-जन्मन्, न. } पद्मिनी,
पङ्क-जिनी, स्त्री. } पुष्करिणी ।

पङ्कार, पु. शिवाल, पुल, सीढ़ी, बंद । [ब्राह्मण ।

पङ्क्ति-पावन, पु. सारी पङ्क्तिको पवित्र करनेवाला

पङ्किल, त्रि. कीचड़वाला, पु. नाओ, कीचवाली जगह ।

पङ्केरुह, त्रि. कमल, सारस । [पृथिवी, गौरव ।

पङ्क्ति, स्त्री. पाल, एक छन्दका नाम, दश संख्या,

पङ्क्ति-चर, पु. कुरर पक्षी; कूंज । कुलंग ।

पङ्क्ति-दूषण, पु. अपाङ्क्तेय; पङ्क्तिमें बैठनेके अयोग्य।

पङ्क्ति-पावन, त्रि. पंगत की शोभा देनेवाला ब्राह्मण।

पङ्ग, पु. पतंग । परवाना ।

पङ्गु, पु. शनीचर-ग्रह, (त्रि) लुंजा । [रसोईन ।

पच, त्रि. पाक-कर्ता (स्त्री) (चा) पाचिका रसोईया,

पचन्, पु. सूर्य, अग्नि, इन्द्र, देवराज ।

पचन, न. पकाना, रींधना । [हुआ ।

पच-मान, त्रि. पाक-कर्ता; पकानेवाला, पकाता

पचम्पचा, स्त्री. दारु-हरिद्रा; हल्दी ।

पचेलिम, पु. सूर्य, अग्नि (त्रि) स्वयं पक्व । सूरज, आग, खुदपका हुआ ।

पच्छस, व्य. पाद २ से, क्रम २ से, रफ्त हर? ।

पच्य, त्रि. पाकयोग्य । पकाने लायक ।

पञ्च, त्रि. संख्याविशेष; पांच ।

पञ्चक, पु. पांचोंसे खरीदाहुआ, पांचोंका, आधी धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद उत्तर भाद्रपद, और रेवती यह पांच नक्षत्र (न) जंगका मैदान।

पञ्च-कषाय, पु. पांच तरहकी कसैली वस्तु । जामन, सिंवल, चटवाल, चकुल और बदर ।

पञ्च-कोल, न. चित्रा चिरायता पिप्पली पीपल मूल, और सोंठ, पांच ।

पञ्च-गङ्गा, स्त्री. भागीरथी स्रोतमूला कृष्णवेणी, पिनाकिनी, अखंडा और कावेरी ।

पञ्च-जन, न. पुरुषविशेष, दैत्यविशेष; जिसकी हड्डीसे श्रीकृष्णजीका शङ्ख बना है (स्त्री) (नी) पांच शख़्स । [जनोंका मालक ।

पञ्च-जनीन, पु. भांड, (त्रि) पांच जनोंका, पांच

पञ्च-तत्त्व, न. पृथिव्यादि पञ्च; १ पृथिवी २ जल ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ।

पञ्च-तपस्, पु. पंचाग्नि तपनेवाला तपस्वी ।

पञ्चता, स्त्री. } स्त्री. पांच तरह, पांचोंका होना, मौत ।
पञ्चत्व, न. }

अर्द्ध, गर्त, नाट्य आदि, कील, मूल्य, अर्द्ध। वक़्त, हद्द, टुकड़ा, फसील, छल, निसफ़, गढ़ा, नाच वग़ैरह, मोल।

नेमि (मी), स्त्री. चक्रपरिधि। पहियेका दायरा, कूएके ऊपरकी मंडेर, (पु) एक जिन का नाम, इमलीका पेड़। [मुनि।

नैकटिक, पु. गांओंके समीप जिसका आश्रम है वह

नैकृतिक, त्रि. निष्ठुर, कटुभाषी। कठोर, कड़वा बोलनेवाला। [वणियां। शाह्रिया।

नैगम, पु. उपनिषद, वेदान्त, नीतिशास्त्र, (त्रि)

नैचिकी, स्त्री. उत्तम गौ। उत्तम गाय।

नैत्यिक, त्रि. नित्यका। रोज़ मर्राका।

नैपुण (ण्य), न. दक्षता। होशियारी।

नैमित्तिक, त्रि. निमित्तसे बना हुआ किसी प्रयोजनसे किया हुआ काम। [का।

नैमिष, न. क्षेत्रविशेष, वनविशेष (त्रि) लहमे भर

नैयग्रोध, न. वट-फल; वड़का फल (पु) वड़का पेड.।

नैयायिक, त्रि. न्यायशास्त्रका जाननेवाला वा पढ़नेवाला।

नैरन्तर्य, न. सतत। लगातार।

नैरपेक्ष्य, न. अपेक्षाराहित्य। बेपरवाही।

नैराश्य, न. आशाराहित्य। न उमेदी।

नैर्ऋति, पु. राक्षस। दक्खन पच्छम कोन का देवता, विपर्योसे विराग (स्त्री) कोन।

नैर्गुण्य, न. गुणहीनत्व। बेसिफ़ागी।

नैर्मल्य, न. निर्मलत्व। सफ़ाई।

नैवेद्य, न. देव-निवेदनीय द्रव्य; देवताकी चढ़त।

नैश, त्रि. रात्रि-कालीन; रातका।

नैषध, पु. राजा नल, न. काव्यविशेष। जिसमें नल की कथा है (त्रि) नल राजा का।

नैष्कर्म्य, न. सब कर्मोका त्याग, आलस, मुक्ति।

नैष्किक, पु. कोशाध्यक्ष, टङ्कशालाध्यक्ष। खज़ांची, टकसालिया, निष्कसे खरीदी हुई वस्तु।

नैष्ठिक, पु. ब्रह्मचारीविशेष; ब्रह्मचारी होकर जीवनभर गुरु घरमें रहकर विद्याभ्यास करनेवाला (त्रि) आखीरी, ठहरनेवाला।

नैष्ठुर्य, न. कठोरता। संगदिली।

नैसर्गिक, त्रि. स्वाभाविक। कुदरती। [शाहादूर।

नैस्त्रिंशक, पु. खड्गधारी योद्धा। शमशेर वरदार।

नो, व्य. अभाव;। ना, नहीं।

नो चेत्, व्य. नहीं तो। वरनह।

नोदन, न. प्रेरण, अपसारण; भेजना, निकाल देना।

नोदित, त्रि. प्रेरित; भेजाहुआ, उक्साया हुआ।

नोपस्थातृ, पु. दूरवर्ती, दुष्टवादी। दूरका, बद कलाम।

नौ, स्त्री. तरणि; नाओ।

नौका, स्त्री. नाओ, किशती।

नौका-दण्ड, पु. क्षेपणी; चप्पा।

न्यक्, व्य. नीच घृण्य, अदना,। मुजनफिर।

न्यक्कार, पु. तिरस्करण। मलामत। नफ़रत।

न्यक्ष, त्रि. निकृष्ट, (न) साकल्य। नीच, तमाम। गूल्हर।

न्यग्रोध, पु. बड़का पेड़, शमीका पेड, व्याम, विष्णु (स्त्री) (धी) मूसा कन्नी बूटी नायका विशेष; जिसके स्तनकड़े चूतड़ मोटे और पतली कमरहो। [हिरण।

न्यङ्कु, पु. मुनिविशेष, मृगविशेष; बारह सींहा

न्यञ्च, वि. नीच, निम्न, क्षुद्र। झुकाहु०, नीचा, अदना।

न्यञ्चत्, त्रि. अधःस्थ, नीच। नीचेका।

न्यस्त, त्रि. क्षिप्त, त्यक्त, विकृष्ट, निहित। फेंका, हु०, तजा, हु०, छोड़ा, हु०, रक्खा हुआ।

न्याद, पु. भोजन। खुराक।

न्याय, पु. उचित, गौतमशास्त्र, प्रतिज्ञा हेतु उदाहरणा, उपनय, और निगमन जिसके यह पांच अवयव हैं ऐसा वाक्य, युक्ति, युक्तिसे मिला- हुआ दृष्टान्त।

न्याय्य, त्रि. मुनासिब, ठीक, बादलील।

न्यास, पु. अमानत, छोड़ना, एक पुस्तक, व्या० सूत्रकी तवदीती।

न्युङ्ख, पु. सामवेदका अङ्ग, षट्ट प्रणवउच्चारण (त्रि) सुन्दर, अति प्यारा।

न्युप्त, त्रि. दत्त; दिया हुआ।

न्युब्ज, त्रि. अधोमुख कुब्ज, यज्ञ-पात्रविशेष, कुशा, स्रुवा, कुबड़ा, उलटा।

न्यून, त्रि. गर्ह्य, ऊन। निंदाके योग्य, कम।

ग्रस्थि-मालिन्, पु. शिव (त्रि) मनुष्यकी हड्डियोंकी जिसने माला पहिरी हो ।
न्वे, व्य. वितर्क । दलील, या ।

प

इक्कीसवां व्यञ्जन । ओष्ठ्य ।

प, पु. अङ्गदेशका राजा, हवा, पत्ता, पीना ।
पक्ति, स्त्री. पाक; रसोई ।
प (क्व) (क्क), त्रि. पका हुआ । पुख्तह ।
पक्ष, पु. मासार्द्ध; पन्द्रहदिन, पंख, पर, पूंछ, तीरका पर, पास, पासका घर, सहाय, मित्र, जोड़ा, सैना, राजहस्ती, चूल्हे का पाखा ।
पक्षक, पु. पार्श्व-द्वार, पक्षपाती; खिड़की, तर्फ़दार ।
पक्ष-चर, पु. स. चक्रवाक; चकवा (पु) चांद ।
पक्षता, स्त्री. अनुमित्साविरहविशिष्टसिद्ध्यभाव । तर्फ़दारी । [रकी जड़ ।
पक्षति, स्त्री. पक्षारम्भ, प्रतिपद तिथि । पड़वा, प-
पक्ष-पात, पु. अन्याय-साहाय्य । तरफ़दारी (न) पंख गिरना ।
पक्ष-पातिन्, त्रि. अनुग्राहक । तरफ़दार ।
पक्षा-न्त, पु. अमावस, पूर्णिमा ।
पक्षा-न्तर, न. औरपक्ष । दूसरी तर्फ़ ।
पक्षा-घात, पु. लकवेकी बीमारी ।
पक्षिणी, स्त्री. आगामि वर्तमान दिनयुता रात्रि. । मौजूदा दिन और आनेवाला दिन एक रात, परिंदोंका मजमह ।
पक्षिल, त्रि. साहाय्यकारक (पु) न्यायभाष्यकार वात्स्यायन मुनि । तरफ़दार, न्याय सूत्रोंपर भाष्यकार ।
पक्षिन्, पु. वाण, विहङ्गम । तीर, परिंदह ।
पक्षि-राज, पु. गरुड़, (त्रि) परिन्दोंका राजा ।
पक्ष्मन्, न. नेत्रोंका परदा; पपोटे, पलक, रोंआं, कमलफूल, फूलकी तिरी, परिंदका पर ।
पङ्क, पु. न. कर्दम, पाप; कीचड़, गुनाह ।
पङ्क-ज, न. पद्म, सारस । कमल फूल । (त्रि) कीचड़या पानीमे जो पैदा हो ।
पङ्क-जन्मन्, न. } पद्मिनी,
पङ्क-जिनी, स्त्री. } पुष्करिणी ।
पङ्कार, पु. शिवाल, पुल, सीढ़ी, बंद । [ब्राह्मण ।
पङ्क्ति-पावन, पु. सारी पङ्क्तिको पवित्र करनेवाला
पङ्किल, त्रि. कीचड़वाला, पु. नाओ, कीचवाली जगह ।
पङ्केरुह, त्रि. कमल, सारस । [पृथिवी, गौरव ।
पङ्क्ति, स्त्री. पाल, एक छन्दका नाम, दश संख्या,
पङ्क्ति-चर, पु. कुरर पक्षी; कूंज । कुलंग ।
पङ्क्ति-दूषण, पु. अपाङ्क्तेय; पङ्क्तिमें बैठनेके अयोग्य।
पङ्क्ति-पावन, त्रि. पंगत की शोभा देनेवाला ब्राह्मण ।
पङ्ग, पु. पतंग । परवाना ।
पङ्गु, पु. शनीचर-ग्रह, (त्रि) लुंजा । [रसोइन ।
पच, त्रि. पाक-कर्ता (स्त्री) (चा) पाचिका रसोइया,
पचन्, पु. सूर्य, अग्नि, इन्द्र, देवराज ।
पचन, न. पकाना, रांधना । [हुआ ।
पच-मान, त्रि. पाक-कर्ता; पकानेवाला, पकाता
पचम्पचा, स्त्री. दारु-हरिद्रा; हल्दी ।
पचेलिम, पु. सूर्य, अग्नि (त्रि) स्वयं पक्व । सूरज, आग, खुदपका हुआ ।
पच्छस, व्य. पाद २ से, क्रम २ से, रक्त हर? ।
पच्य, त्रि. पाकयोग्य । पकाने लायक ।
पञ्च, त्रि. संख्याविशेष; पांच ।
पञ्चक, पु. पांचोंसे ख़रीदाहुआ, पांचोंका, आधी धनिष्ठा शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद उत्तर भाद्रपद, और रेवती यह पांच नक्षत्र (न) जंगका मैदान।
पञ्च-कषाय, पु. पांच तरहकी कसैली वस्तु । जामन, सिंबल, वटवाल, बकुल और बदर ।
पञ्च-कोल, न. चित्रा चिरायता पिप्पली पीपल मूळ, और सोंठ, पांच ।
पञ्च-गङ्गा, स्त्री. भागीरथी स्रोतमूला कृष्णवेणी, पिनाकिनी, अखंडा और कावेरी ।
पञ्च-जन, न. पुरुषविशेष, दैत्यविशेष; जिसकी हड्डीसे श्रीकृष्णजीका शङ्ख बना है (स्त्री) (नी) पांच शख्स । [जनोंका मालक ।
पञ्च-जनीन, पु. भांड, (त्रि) पांच जनोंका, पांच
पञ्च-तत्व, न. पृथिव्यादि पञ्च; १ पृथिवी २ जल ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ।
पञ्च-तपस्, पु. पंचाग्नि तपनेवाला तपस्वी ।
पञ्चता, स्त्री. } स्त्री. पांच तरह, पांचोंका होना, मौत।
पञ्चत्व, न. }

पञ्च-दश, त्रि. पन्द्रह (स्त्री) (शी) पूर्णिमा, वेदान्तका एक ग्रंथ।

पञ्च-दशन्, त्रि. १५ संख्या। [गूल्हर।

पञ्च-पल्लव, न. आम्र, पिलखन, पीपल, वड़;

पञ्च-पाण्डव, पु. पाण्डु राजाके पांच पुत्र; युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, अर्जुन।

पञ्च-पात्र, न. पांच पात्रोंका समूह, श्राद्धविशेष। दो देवपक्ष और तीन पितृपक्ष।

पञ्चधा, व्य. पांच प्रकार, पांच वार।

पञ्चन्, त्रि. पांच।

पञ्च-नख, पु. हाथी, बाघ, (त्रि) पांच नखवाला। शशक, शलकी गोधा, गण्डार, कूर।

पञ्च-नद, पु. पञ्जावका मुलक (न) किरणा, धूतपापा, सरस्वती, यमुना, गङ्गा यह पांच।

पञ्च-प्राण, पु. (वहु) प्राणादि पंच वायु। १ प्राण २ अपान, ३ समान ४ उदान ५ व्यान।

पञ्च-प्रासाद, पु. देवगृहविशेष। पञ्चरत्न।

पञ्च-भद्र, पु. अश्वविशेष; जिस घोड़ेके छाती पीठ दोनोंपासे और मुखपर रोंमोंके आवर्त हों।

पञ्चम, त्रि. पांचवां, बहुत ऊंचा स्वर, स्त्री. (मी) तिथिवि०, द्रौपदी।

पञ्चा-ङ्गुल, पु. एरण्डवृक्ष (त्रि) पांच उंगलीभर।

पञ्च-शस्य, न. १ धान २ मोंग ३ माष ४ जो ५ कोदो यह पांच अनाज।

पञ्च-शाख, पु. हाथ (त्रि) पांच शाखावाला।

पञ्च-सूना, स्त्री. पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्कर:। कण्डनी चोदकुम्भश्च। १ चूल्हा २ चक्की ३ झाड़ू ४ ऊषल ५ घड़ोंजी।

पञ्चा-ङ्ग, न. पेड़का छिलका २ पत्ता ३ फल ४ फूल ५ जड़। तिथि वार नक्षत्र योग करण यह पांच। प्रयोगमे १ जप २ होम ३ तर्पण ४ अभिषेक ५ ब्राह्मणभोजन यह पांच, एक प्रकारका घोड़ा। राज्यमे साध्यसानधके उपाय; काल देशवि०, प्रेम, आपत्प्रतीकार।

पञ्चा-ग्नि, पु. (वहु) चार पासे चार अग्नियें. और ऊपर सूर्य, १ दक्षिण २ गार्हपत्य ३ आवसथ्य ४ सभ्य ५ आहवनीय।

पञ्चाङ्ग, पु. १ सहाय २ साधनोपाय ३ देशकालज्ञान, ४ विपदाप्रतीकार ५ सिद्धि १ पत्ता २ फूल ३ फल ४ त्वचा ५ जड़ यह, १ तिथि २ वार ३ नक्षत्र ४ योग। ५ करण। जप होम तर्पण स्नान ब्रह्म भोज यह। पु. कछुआ।

पञ्चाङ्गुल, पु. एरण्ड वृक्ष (त्रि) पांच उंगली भर।

पञ्चा-मृत, न. १ दुग्धं च २ शर्करा चैव धृतं दधि तथामधु; दूध, खंड, घी दही, और शहद यह पांच। [रागिनी।

पञ्चाली, पु. देशविशेष (स्त्री) (ली) (लिका) पुतली,

पञ्चा-शत, त्रि. संख्याविशेष; पचास।

पञ्चास्य, पु. शिव, सिंह।

पञ्चे-न्द्रिय, न. श्रोत्र त्वक् चक्षु जिव्हा घ्राण। वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ। हवास नातका, हवास खमसा।

पञ्चेषु, पु. कन्दर्प। कामदेव।

प (पि)ञ्जर, पु. न. शरीरास्थिवृन्द।

पञ्जि (ञ्जी), स्त्री. सूत्र साधन तालिका, पत्रिका; सूतकीअट्टी, या गोली, ऊरी, अटेरणी, जन्तरी।

पट, त्रि. वस्त्र (टी) कनात।

पट-कार, पु, तन्तुवाय; तांती।

पट-कुटी, स्त्री. पटमय गृह। खेमा।

पट-च्चर, न. जीर्ण वस्त्र (पु) चोर।

पट-मण्डप, पु. तंबू।

पटल, न. छदि, नेत्ररोग, पिटक, परिच्छद, तिलक, फलवि०, (न. स.) समूह, (पु) ग्रन्थ, वृक्ष, वृत्त। पर्दा, आंखकी बीमारी, पिटारी, पौशाक, टीका, मजमह पोथी, दरखत, दायरा।

पट्टिश (श), पु. एक प्रकारका अस्त्र। जबर।

पण्डित, पु. विद्वान्, निपुण, शास्त्रज्ञ। आलिम, समजदार।

पण्डितं-मन्य, } त्रि. पडिताभिमानी। जो हकीकतमें पण्डित नहीं और
पण्डित-मानिन्, }
मान बैठा है। [बैठे।

पण्डितायमान, त्रि. जो पण्डित नहीं और मान

पण्य, त्रि. विक्रेय। वेचनेके योग्य।

पण्यवीथिका, } स्त्री. विपणि; हाट, दुकान।
पण्य-वीथी, }

पण्य-स्त्री, स्त्री. वाराङ्गना, वेश्या। कंचनी।

पण्या-जीव, पु. वणियां, पक्षी।

पत-ग, पतङ्ग, पतङ्गम, पु. शलभ, सूर्य, पक्षी, शर, शालिविशेष । मकड़ी, तीर, एक किसमके धान ।

पतङ्गिका, स्त्री. मधुमक्षिका । शहदकी मक्खी ।

पतञ्जलि, पु. व्याकरण भाष्यकर्ता, योग शास्त्रकर्ता मुनि ।

पतत्, पु. पक्षी (त्रि) गिरनेवाला ।

पतत्र, न. पक्षीका पर ।

पतत्रि, पतत्रिन्, पु. पक्षी । परिन्द ।

पतन, न. चलन, स्खलन, भ्रंश, पातित्य । गिरना, खिसलना, पाप ।

पतयालु, पु. पतन-शील । गिरनेवाला । [विशेष ।

पताका, स्त्री. ध्वजा, सौभाग्य, चिन्ह, नाटकाङ्ग-

पताकिन्, त्रि. पताकाधारी (पु) रथ (स्त्री) सेना । झंडा वरदार ।

पतापन, त्रि. वारंवार गिरनेवाला ।

पति, पु. भर्ता, रक्षक, प्रभु, नायक । खाविंद, मालक, लीडर । [नेवाली ।

पतिघ्नी, स्त्री. पतिघातिनी स्त्री । खाविंदके मार-

पतित, त्रि. धर्म-भ्रष्ट; गलाहुआ, गिराहुआ ।

पतितोत्पन्न, त्रि. धर्मभ्रष्ट की सन्तान ।

पति-देवता, पतिप्राणा, पतिव्रता, स्त्री. सिवा पतिके और किसीको न माननेवाली ।

पति-बान्धव, पु. सास, सुसर, देवर, ननद, आदि।

पतिम्वरा, स्त्री. इच्छितभर्ता चाहनेवाली कन्या ।

पति-वत्नी, स्त्री. सधवा । सुहागन ।

पति-व्रता, स्त्री. पतिपरायणा, सती, पतिके दुःखमें दुःखिनी सुखमें सुखिनी, परदेश जानेपर मैली कुचैली, मरने पर मर जानेवाली ।

पतीयन्ती, स्त्री. पतिकामा । पति चाहनेवाली ।

पत्-कापिन्, त्रि. पादचारी । पैदल ।

पत्तन, पु. नगर। शहर ।

पत्ति, पु. पैदल (स्त्री) १ हाथी १ रथ ३ घोड़ा, ५ पैदल इतना । संख्या बलीसेता ।

पत्नी, स्त्री. भार्या । जोरू ।

पत्र, न. पाता, वाहन, शकट, पक्ष, तीरका पर, (त्री) (त्री) चिट्ठी, असवारी ।

पत्र-दारक, पु. करपत्र । आरा ।

पत्र-रथ, पु. पक्षी, बाण । परिंदा, तीर ।

पत्र-पुष्प, पु. रक्ततुलसी ।

पत्र-लता, स्त्री. पत्रावलीरचना, तिलक आदि ।

पत्र वेष्ट, पु. ताटङ्क, भूषणविशेष । कानका तंदौड़ा । [रक्तसन्दल ।

पत्रा-ङ्ग, पु. भूर्ज-पत्र, रक्तचन्दन । भोजपत्ता, सु-

पत्रिन्, पु. पक्षी, बाण, पर्वत, रथ, तालवृक्ष (त्रि) पत्रविशिष्ट । परिन्द, तीर, पहाड़ ।

पत्री (त्रिका), स्त्री. लिपि; चिट्ठी ।

पत्रोर्ण, न. रेशमी वस्त्र, पु. वृक्षविशेष ।

पथ, पु. रास्ता, उपाय । तरीका, तजवीज़ ।

पथिक, त्रि. घूमनेवाला, पु. मुसाफर, परदेसी ।

पथिन्, पु. पथ, स्वभाव, उपाय रीति ।

पथ्य, त्रि. हित, योग्य, रोगीको हितकर भोजन (स्त्री) (थ्या) हरड़ ।

पद, न. चरणचिन्ह, चिन्ह, वाचक शब्द, आधिपत्य, छल, व्यवसाय, वस्तु, अवकाश स्थान, पाद, चतुर्थांश, त्राण, पु. किरण (व्या) सुप्तिङन्त शब्द । पैरका निशान, निशान ।

पद-ग, पु. पदाति, पैदल ।

पदवि (वी), स्त्री. पथ, व्यवसाय, उपनाम । वाट, मेहनत, खिताव, दरजा ।

पदाजि, पदाति, पु. पादचारी, सैनिक । पैदल, सिपाही।

पदार्थ, पु. द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय और अभाव, यह सात, पदका अभिधेय । लफ़्ज़के मअने ।

पदिक, पदू-ग, पु. पदाति । पैदल ।

पद्धति (ती), स्त्री. पथ; श्रेणि, रेरवा, प्रवाह, रीति, आचार, ग्रंथरचना, पदवी, । तरीकह ।

पद्म, पु. न. कमल, निधिविशेष, संख्याविशेष, व्यूहविशेष, हाथीके माथे और सूंडपके श्वेत चिन्ह, तन्त्रशास्त्रमे देहमेका एक चक्र (पु) सर्पविशेष ।

पद्मक, न. हाथीके माथे परके चित्र, बिंदु, चिन्ह ।

पद्म-नाभ, पु. विष्णु ।

पद्म-बन्ध, पु. शब्दालङ्कारविशेष ।

पद्म-बन्धु, पु. सूर्य, भ्रमर । आफ़ताब, भारा ।

पद्म-भू, **पद्म-योनि**, पु. ब्रह्मा । कमल फूलसे उत्पन्न ।

पद्म-राग, पु. रक्तवर्ण मणिविशेष । चूनी, पुख-राज, पद्मा ।

पद्म-लाञ्छन, पु. राजा, ब्रह्मा, सूर्य, कुबेर, (स्त्री) (ना) लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा ।

पद्म-वासा, स्त्री. लक्ष्मी । दौलतकी देवी ।

पद्मा, स्त्री. लक्ष्मी, मनसादेवी, नदीविशेष ।

पद्मालया, स्त्री. लक्ष्मी ।

पद्मावती, स्त्री. मनसादेवी, नदीविशेष ।

पद्मा-सन, न. आसनविशेष, योगका एक आसन ।

पद्मिन्, पु. हस्ती, (त्रि) पद्मवाला, (स्त्री) (नी) कमलिनी, सुलक्षणवाली स्त्री ।

पद्मिनी-कान्त, **पद्मिनी-वल्लभ**, पु. सूर्य । आफ़ताब ।

पद्मेशय, पु. विष्णु, भगवान् ।

पद्मोद्भव, पु. ब्रह्मा, पितामह ।

पद्य, न. छन्दयुक्त चतुष्पाद वाक्य, श्लोक (पु) शूद्र, (स्त्री) (या) रोगविशेष ।

पनस, पु. स कपिविशेष, (पु) वृक्षवि०, कांटा, (न) पनसका फल, (स्त्री) एक रोग ।

पनायित (पनित), त्रि. स्तुत, वर्णित । तअरीफ़ किया हुआ, बयान किया हुआ ।

पन्न, त्रि. च्युत, गलित, अधोमुख । गिरा हुआ, गला हुआ, नीचे मुखवाला ।

पन्न-ग, पु. सर्प, (स्त्री) (गी) सांपनी ।

पन्नगारि, **पन्न-गाशन**, पु. गरुड़ (त्रि) जो सांपको खा-जाय ।

पम्पा, स्त्री. नदीविशेष, सरोवरविशेष । सरयू ।

पयस्, न. दुग्ध, जल । दूद, पानी । [भिक्षा ।

पयस्य, त्रि. दुग्ध से बनी हुई (स्त्री) (स्या) आ-

पयस्विनी, स्त्री. दुग्धवती गौः दूद देनेवाली गाय ।

पयो-ज, न. पद्मपुष्प; कमलफूल ।

पयो-द, पु. मेघ; बादल ।

पयो-धर, पु. मेघ, स्त्रीके स्तन, नारियेल ।

पयोधि, **पयो-निधि**, पु. समुद्र । बहर ।

पयो-मुच्, पु. मेघ; बादल ।

पर, त्रि. अन्य, भिन्न । दूसरा, दूर, उत्तम, प्रधान, अच्छा, अधिक, (न) मोक्ष, पु. परमात्मा, शत्रु ।

परःशत, त्रि. शताधिक संख्यक (न) शताधिक संख्या । सौसे ज्यादह । सौसे ज्यादह तादाद ।

परःश्वस्, व्य. आगामी दिनसे परला दिनपरसों ।

परःसहस्र, त्रि. सहस्राधिकसंख्य, (न) सहस्रा-धिक संख्या, हज़ारसे ज्यादह । हज़ारसे ज्यादह तादाद ।

परकीय, त्रि. परसम्बन्धीय (स्त्री) (या) स्वानूढा, स्वानुरक्ता स्त्री; पराया, दूसरेमें मुहब्बत रखने-वाली स्त्री ।

पर-छन्द, **पर-छन्दानु-वर्तिन्**, **पर-तन्त्र**, त्रि. पराधीन । मातहत । [जहानमे ।

पर-त्र, व्य. पर काले, परलोके । और वकत, दूसरे

परत्व, न. गुणविशेष । न्यायके २४ गुणोंमे से १०वां ।

पर-न्तप, त्रि. शत्रु-तापन । दुश्मनके सतानेवाला ।

परन्तु, व्य. किन्तु, अपरञ्च । लेकिन, औरभी ।

पर-पिण्डाद, त्रि. परान्न-भोजी; पराये अन्नपर गुज़ारा करनेवाला ।

पर-पुष्ट, त्रि. अन्यपुष्ट (पु. स.) (ष्टा) कोकिल (स्त्री) वेश्या । दूसरोंसे परवरिश याफ़्तह ।

पर-पूर्वा, स्त्री. एक पति मरजाने पीछे दूसरा पति लेनेवाली स्त्री । [भाग, दुश्मनका भाग ।

पर-भाग, पु. बड़ाई, सिफ़त बड़ाई, उत्तम

पर-भृत्, पु. **परभृत**, स्त्री. काक; कोकिल; कोइल ।

परम्, व्य. केवल. अनन्तर, निश्चय, किन्तु । सि-रफ़, बाअद, यकीन, या ।

परम, त्रि. श्रेष्ठ, प्रधान, अत्यन्त, महत्, आद्य, शेष, अकृत । नेक, सर्दार, निहायत, बड़ा, पहिला, आखरी, असली । [बारीक चीज़ ।

परमाणु, पु. अतिसूक्ष्म पदार्थ । ज़रो (त्रि) बहुत

परमात्मन्, पु. परमेश्वर । खुदा ।

परमान्न, न. [illegible], खीर [illegible] सौवर्ण [illegible]

परमार्थ, [illegible]
ठीक २, [illegible]

परमार्थ-विन्द, त्रि. तत्वज्ञानी, ब्रह्म-ज्ञानी । बहुत धन कमानेवाला ।
परमेष्ठिन्, पु. ब्रह्मा, शालग्राम । [शिला ।
परम्परा, स्त्री. धारा, सन्तति, अनुक्रम । सिल-
परम्परीण, त्रि. क्रमागत । सिलसिलेवार ।
पर-लोक, पु. परकाल, मृत्यु । दूसरी दुनिया, मौत ।
पर-वत्, पर-वश, पु. पराधीन । मातहत, बे इख़तयार ।
पर-वाणि, पु. धर्माध्यक्ष, वत्सर, कार्तिकेयका मयूर । अदालती, वरस, स्वामिकार्तिकका मोर ।
परशु, पु. कुठार; कुल्हाड़ा ।
परशु-राम, पु. परशुधारी राम, जमदग्निका बेटा ।
परश्व (स्व) ध, पु. परशु; कुल्हाड़ा । [रसों ।
पर-श्वस्, व्य. आगामी दिनसे अगलादिन, प-
परस्तात्, व्य. पर, पश्चात्; पीछेसे ।
परस्पर, त्रि. इतरेतर; आपसमें ।
परस्मैपद, न. धातुके आगे परोद्देश्यक विभक्ति । ति तः अन्ति आदि ।
परा, व्य. प्राधान्य, आभिमुख्य, अत्यन्त, विक्रम, प्रातिकूल्य, घर्षण, अनादर, विमोचन, गति, प्रत्यावृत्ति, वध, भङ्ग ।
पराक, पु. १२ दिनका उपवास व्रत । [तजागया ।
पराकृत, त्रि. न्यक्कृत, त्यक्त । हिकारत कियागया,
पराक्रम, त्रि. विक्रम, पुरुषकार । ज़ोर, ताक़त ।
पराग, पु. धूलि, पुष्परेणु, स्नानीयगन्ध चूर्ण, चन्दन, पर्वतवि०, ख्याति, उपराग ।
परागत, त्रि. युक्त, व्याप्त, विकसित, प्रत्यागत । मिला हु०, फैला हु०, खिला, हु०, लौटा हु० ।
पराङ्मुख, त्रि. विमुख, प्रतिकूल, निवृत्त, विरक्त । [हुए, दुर्मन ।
पराच्, (श्च) त्रि. विमुख, पराङ्मुख । मुंह मोड़े
पराचित, त्रि. परपालित, सम्यक् व्याप्त । दूसरेसे परवरिश पायाहुआ, फैलाहुआ । [रक्त ।
परा-चीन, त्रि. प्राचीन, पराङ्मुख । पुराना, वि-
परा-जय, पु. पराभव, असहन । हार, शकस्त ।
परा-जित, त्रि. जित । हारा हुआ ।
परा-धीन, त्रि. परतन्त्र, परवश । दूसरेके मातहत । बे इख़तियार ।
परान्न, त्रि. परपिण्डभोजी, (न) परकीय अन्न । दूसरेसे परवरिश पाया हुआ, दूसरेका अन्न ।

परा-भव, पु. पराजय, तिरस्कार । शकस्त; मलामत । [हुआ, हारा हुआ ।
परा-भूत, त्रि. तिरस्कृत, पराजित । मलामत किया
परा-मर्श, पु. मन्त्रणा, युक्ति, विवेचना, स्पर्श, व्याप्तिविशिष्ट पक्षधर्मता ज्ञान । सलाह, मशवरा, दलील, सोच,
परा-मर्ष, पु. सहन । बरदाश्तगी ।
परायण, त्रि. अत्यासक्त, तत्पर, (न) श्रेष्ठाश्रय ।
परारि, व्य. पहिले वर्षमें.
परा-र्द्ध, न. शेषार्द्ध, अत्यधिक संख्या १००००००००००००००००० ।
परा-र्द्ध्य, त्रि. श्रेष्ठ (पु.) स्वर्लोक (न) परार्द्ध ।
परावर्त, पु. परावृत्ति (स्त्री) प्रत्यावृति । दुहराव, उलटाव ।
परावह, पु. वायुविशेष । सबसे ऊपरकी हवा ।
पराशर, पु. व्यासदेवका पिता, कलिके धर्मशास्त्र बनानेवाला मुनि ।
परासन, न. हत्या । कतल ।
परासु, त्रि. मृत; मरा हुआ ।
परासुता, स्त्री. मृत्यु; मौत ।
परास्कन्दिन्, पु. चोर, दस्यु ।
परास्त, त्रि. पराजित । हारा हुआ ।
पराह, पु. परदिन; औरदिन ।
परा-हत, त्रि. पराभूत, तिरस्कृत, व्याहत । हारा हु०, मलामत किया हु०, मारा हु० ।
पराह्न, पु. अपराह्न; तीसरा पहिर ।
परि, व्य. सब ओर, वर्जन, व्याप्ति, शेष, इत्थम्भाव, वीप्सा, आख्यान, दोषकथन, भाग, आलिङ्गन, चिन्ह, भूषण, निरास, पूजा, व्याप्ति, शोक इन अर्थोंका बोधक अव्यय ।
परि-कर, पु. परिवाद, सहचर समूह, आरम्भ, विवेक, निष्पत्ति, पर्यङ्क, कटिबद्ध, हस्त्यश्वादि उपकरण, नाट्यमुख सन्धिका अङ्गविशेष, काव्यालङ्कारविशेष । धार, साथी, मजमा, शुरु, समझ, फैसला, पलंग, कमरवस्ता, हाथी घोड़ा आदि सामान.
परि-कर्मन्, न. प्रसाधन, संस्करण; सजाना । अरास्तह करना (पु) सेवक ।
परि-कर्मिन्, पु. स्त्री. सेवक, खिदमतगार ।

परि-कल्पित, त्रि. अनुष्ठित, सज्जित, निर्दिष्ट । कहा हुआ, सजाया हुआ, दिखाया हुआ ।
परि-कीर्ण, त्रि. व्याप्त, विस्तृत । भरा हुआ, फैला हुआ । [हुआ ।
परि-कीर्तित, त्रि. कथित, भीत। कहा हुआ, गाया
परि-क्रम, पु. इतस्ततः पादचालन । इधर उधर पाओं फैलाना । प्रदक्षिणा करनी ।
परि-क्रय, पु. वेची वस्तुका फिर खरीदना (या) खाईसे घेर लेना, सुधारना ।
परि-क्लिष्ट, त्रि. परिक्षिप्त, उत्त्यक्त; फेंका हुआ, छोड़ दिया । [बड़ा जख़मी ।
परि-क्षत, त्रि. भ्रष्ट, सम्यक्क्षतदेह । गिरा हुआ
परि-क्षित् (त), पु. अर्जुनका पौत्र ।
परि-क्षिप्त, त्रि. वेष्टित, प्रक्षिप्त ।लपेटा हुआ, फेंका हुआ, बीचमें डाला हुआ ।
परि-क्षीण, त्रि. रफ़ता २ घटा हुआ ।
परिक्षेप, पु वेष्टन, प्रक्षेपण । लपेटना, फेंकना ।
परिखा, स्त्री. खाई, गडखाई ।
परि-खेद, पु. क्लेश, श्रम । तकलीफ, भूल ।
परि-गणित, त्रि. संख्यात । गिना हुआ ।
परिगत, त्रि. प्राप्त । हासल ।
परि-गमित, त्रि. अति वाहित, चालित; उठाया, हु०, हिलाया हुआ । [मनजूर किया हुआ ।
परि-गृहीत, त्रि. उपात्त, स्वीकृत । लिया हुआ
परि-ग्रह (ग्राह), पु. पत्नी, परिजन, मूल, शाप, सैन्य पश्चाद्भाग, स्वीकार । जोरू, कुनवा, वद-दुआ, फौजका पिछला हिस्सा, मनजूर ।
परिघ, पु. लौह मुख मुद्गर, शूल, योगवि०, तोरण, द्वार, जलपात्र, आघात । [घिसा हुआ ।
परिघट्टित, त्रि. सम्यक् घर्षित । अच्छी तरह
परिघात, पु. लोहा लगी मोहली, हुटका, चोट ।
परिचय, पु. अभ्यास, प्रणय, संस्तव । मेहनत, हलीमी, तअरीफ़, वाकफ़ी ।
परि-चर, पु. परिचारक, अनुचर । दास, नौकर ।
परिचर्या, स्त्री. सेवा । ख़िदमत ।
परि-चाय्य, पु. यज्ञाग्नि, यज्ञाग्नि-कुण्ड । यज्ञकी आग, यज्ञ का कुण्ड ।
परि-चारक, पु. दास (स्त्री) (का) दासी । नौकर, नौकरानी ।
परि-च्छद, पु. लिबास, पोशाक ।
परि-च्छन्न, त्रि. सज्जित, भूषित, आच्छन्न । सजा हुआ, ढांपा हुआ । [हुआ, बांटा हुआ ।
परिच्छिन्न, निर्णीत । निर्णय किया हुआ, मापा
परिच्छेद, पु. हिस्सा, मापाहुआ, तमीज़ ।
परि-च्छेद्य, त्रि. निर्णेय, विभाज्य । तमीज़के लायक, तकसीमके योग्य ।
परि-जन, पु. परिवार, परिचारक। कुनवा, नौकर।
परिणत, त्रि. पक्व, अवस्थान्तर प्राप्त, नत, (स्त्री) (ति) अवनति, परिपाक, वार्द्धक्य । दूसरी उमर या हालतमें पहुंचा हुआ, गुकाहु०; बेइज़ती, बुढ़ापा ।
परिणद्ध, त्रि. बंधाहुआ, पहिरा हुआ, पका हुआ।
परिण (न) य, परि (न) णयन, } पु. विवाह। व्याह।
परिणाम, पु. परिपाक, अवस्थान्तर प्राप्ति, फोप, वार्द्धक्य, सूर्य मण्डल; वृत्तकी चारों ओरकी रेखा । नतीजा, दूसरी हालत, अंजाम, बुढाया,
परिणायक, पु. सेनापति, स्वामी ।
परिणाय, पु. पासे फेंककर नर्द चलाना ।
परि(री)णाह, पु. विशालता, विस्तार । फैलाओ ।
परिणाहिन्, त्रि. विशाल, विपुल । फैला हुआ ।
परिणीत, त्रि. ऊढ; व्याहाहुआ ।
परिणेतृ, पु. विवाह-कर्ता, भर्ता । व्याह करनेवाला, ख़ाविंद ।
परितस्, व्य. चारों ओर, सब ओरसे ।
परि (री) ताप, पु. उत्ताप, शोक दुःख, नरक-विशेष । पछताव, चिंता, फ़िकर ।
परि-तुष्ट, त्रि. तुष्ट, सन्तुष्ट । खुश । साविर ।
परि-तोष, पु. सन्तोष, तृप्ति । सबर, सेरी ।
परि-त्यक्त, त्रि. सम्यक्-वर्जित । अच्छी तरह छोड़ दिया हुआ ।
परित्यजन, न. परित्याग, पु. } वर्जन, त्याग । छोड़ना, जाना ।
परित्राण, न. रक्षा, उद्धार । बचाओ ।
परि-दान, न. प्रतिदान । दियेके इवज़ देना ।
परि-देवन, न. स्त्री (ना) पछताव, गिरयो ज़ारी ।
परि-देवित्त, त्रि. खेदोक्ति, अनुताप । पछतावा, गिरियोज़ारी ।

परि-देविन्, त्रि. विलपनशील । विलपनेवाला ।
परिधान, न. परिधेय वस्त्र; पहिरनेके कपड़े ।
परिधारण, न. स्त्री. (णा) प्रतिबन्ध। घेर रखना ।
परिधि, पु. चन्द्र सूर्यका मण्डल, परिवेष्टन, वृत्तकी चार ओर रेखा । दायरा । [मतगार, दायरा] ।
परिधिस्थ, त्रि. परिचारक, चतुःपार्श्वस्थ । खिद-
परिनिर्वपण, न. दान । बख्शश ।
परिनिर्विण्णा, स्त्री. दानेच्छा; दानकी ख्वाहिश ।
परि-न्यास, पु. विन्यास; नाट्यमें मुख सन्धिका अङ्गविशेष ।
परिपण, पु. न. मूलधन, मूल्य । पूंजी, मोल ।
परि-पन्थिन्, त्रि. शत्रु, प्रतिकूल ।दुश्मन, वरक्स।
परि (री) पाक, पु. परिणाम, नैपुण्य, शेषावस्था, उत्तम पाक, पक्वता, उत्कर्ष । अञ्जाम, नतीजा, होशियारी, आखरी हालत, पुख्तगी, बड़ाई ।
परि (री) पाटि (टी), स्त्री. क्रम, सुशृङ्खला । तरीक, उम्दहतरीका ।
परि-पूत, त्रि. शुद्ध पवित्र ।साफ़ सुथरा। [हुआ।
परि-पूर्ण, त्रि. सम्पूर्ण, व्याप्त; भरा हुआ, फैला
परि-प्लव, त्रि. चञ्चल, कम्पमान, व्याकुल, (पु) प्लावन, उपद्रव । हिलनेवाला, कांपनेवाला, हैरान, ख़राबी । [(स्त्री) (ति) मुतलव्विन पन ।
परि-प्लुत, त्रि. डूबा हुआ, कांपताहु०, मुतलव्विन,
परि-वर्ह, पु. परिच्छद, राज-योग्य परिच्छद, गृहद्रव्यादि। पोशाक, दुपट्टा, शाही पोशाक, घरका असबाब ।
परि (री) भव, पु. पराभव, अवज्ञा, तिरस्कार,
परि (री) भाव, दर्शन। निरादरी,मलामत,दीदार।
परि-भाविन्, त्रि. अभिक्रमी, निरादर करनेवाला।
परि-भाषण, न. निन्दा वाक्य, कथोपकथन । हजो करना, बातचीत ।
परिभाषा, स्त्री. संख्येयार्थ सङ्केतविशेष, संज्ञाविशेष । अनियममें नियमबतानेवाला संकेत ।
परि-भाषिन्, त्रि. अतिक्रमी, अवज्ञाकारी, तिरस्कारी । उलांघनेवाला, नाफ़रमानी करनेवाला, मलामत करनेवाला ।
परिभाषण, न. निन्दा वाक्य । हजोकी कलाम ।
परि-भूत, त्रि. बेइज़त कियाहुआ, मलामत किया हुआ ।

परि-भोग, पु. सम्भोग, सम्भोग चिन्ह ।
परि-भ्राम, पु. परिभ्रमण, न० समन्तात् विचरण । फिरना, चारों तरफ़ फिरना ।
परि-मल, पु. मर्दनसे जो उत्पन्न गन्ध, अच्छे लोगोंका मजमा । [गिनना, लंबाई ।
परि-माण, न. गज़ वगैरहसे मापना । माप, वज़न
परिमित, त्रि. परिच्छिन्न; मापा हुआ, गिना हुआ । [मांजाहुआ जुदा हु० ।
परि-मृष्ट, परिमृदित, त्रि. आश्लिष्ट। मला हुआ,
परिमेय, त्रि. परिमाण योग्य; मापनेके योग्य ।
परिमोक्ष, पु. मोचन, भङ्ग, परिमित छोतना तोड़न, मापन ।
परिमोहिन्, त्रि. मुग्धकर।फरेफ़्तह करनेवाला ।
परिम्लान, त्रि. सम्यक् म्लान; बड़ा मैला ।
परि-रक्षण, न. रक्षा, अपेक्षा । हिफ़ाजत, बचाओ।
परि(री)रम्भ, पु. परिरम्भन (न) आलिङ्गन । चूमना, बग़लगीरी । [इच्छावाला ।
परिरिप्सु, त्रि. आलिङ्गन चाहनेवाला, रमणकी
परि-वत्सर, पु. संवत्सर; बरस ।
परि-वर्जन, न. त्याग, वध । तर्क, कतल ।
परि-वत्सर, संवत्सर; वरस । साल ।
परि(री)वर्त, पु. } विनिमय, निवृत्ति, लुण्ठन; ब-
परि-वर्तन, न. } दला, फिरना, युगका अन्त ।
परि-वर्द्धक, त्रि. पालक । परवरिश कुनिंदा । बढ़ानेवाला ।
परि-वह, पु. वायुविशेष । [अंग ।
परि(री)वाद, पु. अपवाद; निंदा, वीन बाजेका एक.
परि-वादिन्, त्रि. निन्दक (स्त्री) (नी) सप्ततंत्रीयुतवीणा । सात तारवाली वीन ।
परि(री)वाप, } पु. मुण्डन, वपन । हजामत ।
परि(री)वनप, } न. [ब्याहित बड़ा भाई ।
परिवित्ति, } पु. छोटेके ब्याहा जानेपर अवि-
परिविण्ण(न्न), } स्त्री. (न्ना) वैसी बहिन ।
परि-वीत, } त्रि. वेष्टित, आच्छादित । लपेटा
परि-वृत, } हुआ, ढंपा हुआ ।
परि-वृढ, पु. प्रभु, समर्थ । ताकतवर, मालक ।
परि-वृति, स्त्री. आवरण; पड़दा ।
परि-वृत्ति, स्त्री. परिवर्त; बदल, अर्थालङ्कारविशेष
परि-वेत्तृ, पु. ज्येष्ठके न विवाह होते विवाहा हुआ कनिष्ठ ।

पर्ण-लता, स्त्री. पानकी बेल।
पर्ण-शाला, स्त्री. पत्तोंका घर।
पर्णा-शन, न. मेघ (त्रि) पत्तेखानेवाला।
पर्द्दन, न अपान वायुनिस्सरण; पादना।
पर्पटी, स्त्री. औषधविशेष।
पर्यङ्क, पु. पलंग, खाट, पीढ़ा।
पर्यङ्क-बन्ध, पु. कपड़े आदिसे पीठ और घुटनोंका बांधना, वीरासन।
पर्यटन, न. इतस्ततः भ्रमण; इधर उधर घूमना।
पर्यनुयोग, पु. दूषणार्थ प्रश्न, प्रश्न। सवाल।
पर्यन्त, पु. पास, नज़दीक, तक, हद्द, आखीर।
पर्यवसित, त्रि. परिणत, समाप्त। खतम।
पर्यवस्था, } स्त्री. अवरोध, विरोध। रोक।
पर्यवस्थान, } न. पड़दा करना, ठहरना।
पर्यवस्थातृ, त्रि. प्रतिकूल, व्याघातक, शत्रु। बरक्स, मुखालिफ़, दुश्मन, रोकनेवाला।
पर्यवेक्षण, न. निरीक्षण, तत्वावधान। देखना, असलीयत देखना।
पर्यस्त, त्रि. पतित, विक्षिप्त, दूरीकृत, हत। गिरा हुआ, पगला, हटाया हु०, मारा हुआ।
पर्यस्तिका, स्त्री. शय्या, केदारा। विस्तरा, कियारा।
पर्याकुल, त्रि. व्याकुल। हैरान।
पर्यागलत्, त्रि. चूताहुआ, बहता हुआ।
पर्याण, न. पशुका पृष्ठासन, पलायन। भागना।
पर्याप्त, त्रि. परिमित, प्रचुर, समर्थ, सम्पन्न (न) प्राचुर्य, सामर्थ्य। बमिकदार, काफ़ी, ताकतवर, दौलतमन्द, काफ़ी होना, ताकत (स्त्री) (प्ति) माप, बहुतायत।
पर्याय, पु. अनुक्रम, प्रकार, सुयोग, प्राचुर्य, समानार्थबोधक शब्द, अर्थालङ्कारविशेष। सिलसिला, तरह, मौका।
पर्यायोक्त, न. अर्थालङ्कार विशेष; जहां उपमान और उपमेयको बार २ कहा जाय।
पर्यालोचन, न. अनुशीलन, विचार। खूब तवज्जो।
पर्यास, पु. परिवर्तन, विस्तार, विनाश। तबदीली, फैलाओ, तबाही।
पर्युत्सुक, त्रि. उत्कण्ठित, अनुरक्त। ख़ाहिशमन्द।
पर्युदञ्चन, न. ऋण। कर्ज़। [मनह किया हुआ।
पर्युदस्त, त्रि. निवारित, निषिद्ध। हटाया हुआ,
पर्युदास, पु. निवारण, निषेध। हटाना, मना करना।
पर्युषित, त्रि. पूर्व दिवसीय; बासी।
पर्येषणा, स्त्री. अन्वेषण, अनुसन्धान। तलाश।
पर्वत, पु. पहाड़, देवर्षिका नाम, एक मछलीका नाम।
पर्वत-जा, स्त्री. नदी, पार्वती।
पर्वतारि, पु. इन्द्र, देवराज। [पहाड़का।
पर्वतीय, त्रि. पर्वतसम्बन्धीय, पर्वतवासी।
पर्वन्, न. गांठ, मेल, उत्सव, प्रस्ताव, अध्याय, लक्षणविशेष, अष्टमी चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस और संक्रान्ति, विषुव। [काल।
पर्व-सन्धि, पु. पूर्णिमा और प्रतिपदाके मध्यका
पर्शु, पु. परशु; कुल्हाड़ा।
पर्शुका(पर्शू) स्त्री. पार्श्वास्थि; हड्डीका पिंजरा।
पार्षद्, स्त्री. सभा। मजलिस।
पल, न. चार तोलेभर, मांस, छलना, (पु) सूक्ष्म काल, घड़ीका ६० वां हिस्सा। [राक्षस।
पलल, न. मांस, कीचड़, कूटे हुए तिल, (पु)
पलाण्डु, पु. पियाज़।
पलाद्(द), पु. राक्षस, मांसाशी। गोश्तखोर।
पलान्न, न. मांसान्न; पुलाओ।
पलायन, न. खौफ़ वग़ैरहसे भागना।
पलायित, त्रि. भागा हुआ।
पलाल, पु. घासविशेष, धानके छिलके।
पलाव, पु. बडिश; कुंडी। [राक्षसी।
पलाश, न. पत्र (पु) केसूका वृक्ष, (स्त्री) (शा)
पलाशिन्, पु. वृक्ष, पु. स. राक्षस।
पलिक्नी, स्त्री. बूढ़ी सुपेद बालवाली औरत।
पलित, न. बुढ़ापेके कारण बालोंकी सुपेदी, ताप, कीचड़, (त्रि) बूढ़ा।
पल्यङ्क, पु. खाट, मञ्जी, पलंघ। [पलाकी मारना।
पल्ययन, न. घोड़ेकी पीठपर आसन जमाना,
पल्ल, पु. शस्यरक्षास्थान। भड़ोला, कोठी।
पल्लव, पु. न. नयापत्ता, छोटी डाल, बन, शृङ्गार, विस्तार, पु. स. खड्ग।
पल्लविक, पु. स्त्री. कामुक। अय्याश।
पल्लवित, त्रि. पत्तेदार, लाखसे रंगा हुआ, इकट्ठा किया हुआ।
पल्लि(ल्ली), स्त्री. ग्राम, पाड़ा; छोटा गांओ।

परि-वदेन, न. बड़े भाईके विवाह न होने पर छोटेका विवाह, लाभ, (स्त्री) (ना) बुद्धि, विवेचना, सम्यक् व्यथा (नी) परिवेत्ताकी पत्नी।
परि-वेश(ष), पु. परिधि, चन्द्रमण्डल, सूर्यमण्डल।
परिवेषण, न. परोसना, खानेकी वस्तुका बांटकर देना।
परिवेष्टित, त्रि. चारोंओर लपेटा हुआ।
परिव्रज्या, स्त्री. सन्यास धर्म।
परिव्राज्(ज), **परिव्राजक**, पु. भिक्षु, संन्यासी, साधु (स्त्री) (जिका) सन्यासन।
परि-शिष्ट, त्रि. अवशिष्ट; बाकी।
परि-शीलन, न. अनुशीलन, आलिङ्गन, अवगाहन। विचारना, गलेलगाना, आबूर करना।
परि-शुद्ध, त्रि. परिष्कृत, निश्चित, शुद्ध। साफ़, यकीनन।
परि-शोध, पु. ऋणापनयन। कर्ज़ अदाई।
परिश्रम, पु. श्रान्ति, आयास। तकान, तकलीफ़।
परिश्रय, **परिषद्**, स्त्री. सभा, संसद्। मजलस।
परिषद्बल(पर्षद्बल), त्रि. सभासद; मेंबर।
परिष्क(स्क)न्द, **परिष्क(स्क)न्न**, त्रि. पाला हुआ, रणवासका मुहाफ़िज़।
परिष्कार, पु. निर्मलीकरण, शोधन, सज्जितकरण, शोभा। साफ़ करना, सोधना, सजाना, ज़ेवाश।
परिष्कृत, त्रि. निर्मल; साफ़। शफ़ाफ़।
परि-ष्वङ्ग, पु. आलिङ्गन। बग़लगीरी।
परि-संख्या, स्त्री. संख्या, गणना, तादृश अन्यका प्रतिषेध, अर्थालंकारवि०।
परि-सर, पु. प्रदेश, पर्यन्तभूमि, विस्तार, मृत्यु। घेरा, हद, छोटा टुकड़ा, फैलाव मौत।
परि-सरण, न. पराभव, मृत्यु। निरादरी, मौत।
परि-सर्य, पु. सब ओर चलना।
परि-सर्या, स्त्री.
परिसीमन्(ना), स्त्री. पर्यन्त; तक।
परिस्तो(ष्टो)म, पु. हाथीकी पीठपरकी झूल।
परिस्पन्द, पु. स्पन्दन, परिजन, पत्रावली रचना। बहना, कुनबा, पत्तल बनाना।
परिस्फुरत्, त्रि. विकसित, विचलित। खिलता हुआ, खिलाहुआ।
परि (री) स्रुत् (ता), स्त्री. मदिरा। शराब।
परि-हानि, स्त्री. क्षीणता, हानि। दुबलपन, नुकसान।
परि (री) हार, पु. त्याग, दोषापनय, उपेक्षा। छोड़ना, दोष दूर करना, वेपरवाही।
परिहार-परिकर, पु. भ्रान्त-दूषण।
परि(री)हास, पु. केलि, कौतुक। तमाशा, मखौल।
परिहित, त्रि. आच्छादित, आमुक्त। ढांपा हुआ पहिरा हुआ तजा हु०।
परिहीन, त्रि. क्षय-प्राप्त, परित्यक्त, वञ्चित। मराहुआ, तजा हुआ, ठगा हुआ।
परीक्षक, त्रि. परीक्षाकारक। मुम्तहिन।
परीक्षण न., **परीक्षा** स., गुणदोषविचार। इमतहान करना।
परीक्षित, त्रि. परीक्षा कियागया। इमतहान किया गया।
परीत, त्रि. परिवृत; घिरा हुआ।
परीतत्, त्रि. सर्वतो विस्तृत; सब ओर फैला हुआ।
परीष्टि, स्त्री. अन्वेषण। तलाश।
परुत्, व्य. पहिले वर्ष।
परुत्न, त्रि. गतवर्षीय। गुज़श्तह बरसका।
परुष, न. कार्कश्य, (त्रि) कर्कश, निष्ठुर, उद्धत, नानावर्ण। कठोरपन, कठोर, सख़्त।
परुत, पु. ग्रन्थि, पर्व; गांठ।
परेत, त्रि. मराहुआ, पु. प्रेत, भूतोंकी किसम।
परेतर, त्रि. आत्मीय; अपना।
परेतराज्(ज) पु. यम। मलिकुल मौत।
परे-द्यवि, **परे-द्युस्**, व्य. अगले दिन।
परेष्टुका, स्त्री. (बहु.) प्रसविनी गौ। सूनेवाली गाय।
परैधित, त्रि. परपालित, पु. स. दूसरोंसे परवरिश पायाहुआ, कोइल।
परो-क्ष, त्रि. न. व्य. अप्रत्यक्ष। आंखसे परे।
परो-पकार, पु. दूसरेका भला करना।
परोरजस्, त्रि. रजोगुणसे परे।
परोष्णी, स्त्री. तैलपायिका। तपे तेलकी कड़ाही।
पर्कटि(टी), **पर्कटिन्**, पु. पाकड़का पेड़।
पर्जन्य, पु. मेघ, इन्द्र। बादल।
पर्ण, न. पत्र, पक्ष। पत्ता, पंख।

पाठी(ठी), न. पु. बोआल मच्छी।
पाठ्य, त्रि. पठनीय। पढ़ने योग्य।
पाणि, पु. हाथ, (स्त्री) (णि) (णी) दुकान, हट्टी।
पाणि-गृहीती, स्त्री. पत्नी। औरत।
पाणि-ग्रहण,
पाणि-पीडन, } न. विवाह।
पाणि-न्द, त्रि. पाणिवादक; ढोली।
पाणिनि, पु. व्याकरण सूत्रोंका बनानेवाला मुनि।
पाणिनीय, त्रि. पाणिनिप्रोक्त, पाणिनीय ग्रन्थ-पाठक। पाणिनि मुनिका कहाहुआ ग्रंथ।
पाणिसर्ग्या, स्त्री. रज्जू; रस्सी।
पाणौ, व्य. हस्ते; हाथमे।
पाण्डुर, पु. शुक्लवर्ण; सुपेद रंग।
पाण्डव,
पाण्डवेय, } पु. पाण्डु राजाका पुत्र।
पाण्डित्य, न. पण्डितका भाव वा कर्म। दानाई।
पाण्डु, पु. चन्द्रवंशीय राजाविशेष। श्वेतपीतवर्ण, श्वेतवर्ण, रोगविशेष, श्वेतहस्ती,।
पाण्डुर, पु. सुपेद रंग, कच्चा वसंती रंग, यर्कानकी बीमारी, मौहेका पेड़, (त्रि) इसके रंगका।
पाण्डु-लिपि, स्त्री. शुद्ध-लिखत, पहिला खड़्ड़ा।
पात, पु. पतन, गमन, नाश, आघात, राहुग्रह (त्रि) रक्षित।
पातक, न. पतन साधन, पाप। गुनाह।
पातकिन्, त्रि. पापी। गुनाहगार।
पातञ्जल, त्रि. पतञ्जलि मुनिका शास्त्र।
पातन, न. अधःक्षेपण, विनाशन। नीचे गिराना, तबाह करना। [लमसे ४ थं, घर।
पाताल, पु. अधोभुवन; नीचेका ७ वां, लोग।
पाताल-निलय,
पाताल-निवास, } त्रि. पतालनिवासी, पु. दैत्य, सर्प।
पातालौकस्, [गिराया हुआ।
पातित, त्रि. निक्षिप्त, अधःकृत। फैंका हुआ,
पातित्य, न. पतितका धर्म।
पातिन्, त्रि. पातनशील। गिरानेवाला।
पातुक, त्रि. पातनशील; गिरानेवाला, पर्वत आदिकी ढुलवान्।
पातृ, त्रि. रक्षक, पानकर्ता। मुहाफ़िज़, पीनेवाला।
पात्र, न. वर, श्रेष्ठ, योग्य-व्यक्ति, स्रुवादि यज्ञपात्र, मन्त्री, दोनों किनारोंके बीच जलका आधार, अभिनयके योग्य नायक आदि, देह, न. स्त्री. (त्री) भाजन (स्त्री) कन्या, न. पत्रोंका समूह, (त्रि) पत्तोंका बनाहुआ।
पात्रता, स्त्री. उपयुक्तता, गौरव। मुनासिबत, बड़ाई।
पात्रीय, त्रि. पात्र-सम्बन्धीय; पात्रोंका।
पात्रेसमित, त्रि. केवल भोजन समेमें मिलनेवाला।
पाथ, पु. अग्नि, सूर्य (न) जल।
पाथस्, न. जल; पानी।
पाथेय, त्रि. पथका सम्बल। तोशा।
पाथोद,
पाथोधर, } पु. मेघ, जलधर।
पाथोधि,
पाथोनिधि, } पु. जलधि, समुद्र। बहर।
पाथोरुह्(ह), पु. जलज, कमल। गुले सौसन।
पाद्, पु. चरण; पा।
पाद, पु. चरण, वृक्षकी जड़, चौथाई, श्लोककी चौथाई, पहाड़का अन्त, किरण।
पादकटक, पु. नूपुर; पांओंटा।
पाद-ग्रहण, न. अभिवादन; पांओं पड़ना। [गति।
पाद-चार, पु. पैदल चलना, ग्रह आदिकी दैनिक
पाद-चारिन्, पु. पदाति, (त्रि) पादगामी। पैदल।
पाद-ज, पु. शूद्र जाति (त्रि) पांओंकी पैदाश।
पाद-त्राण, न. मौज़ा, जूता, खड़ाओं।
पाद-प, पु. वृक्ष, पाद-पीठ।
पादरथ, पु. पादुका; खड़ाओं।
पादविक, त्रि. पथिक, भ्रमणकारी। मुसाफ़िर।
पादशस्, व्य. पादेपादे; पादपादमें।
पाद-स्फोट, पु. पादरोगविशेष। पांओंका फोड़ा।
पाद-हारक, त्रि. पाओंसे निकाला हुआ।
पादा-ङ्गद, न. नूपुर। पायज़ेब।
पादात, पु. पदाति; पैदल (न) पैदलोंका समूह।
पादाति(क), पु. पदाति सैन्य। रजमट।
पादिक, त्रि. चतुर्थ; चौथा।
पादुक, त्रि. पादकर्मपटु, अधोगित पाद।
पादुका(पादू), स्त्री. उपानत्; जूता, खड़ांव।
पादूकाकृत्, स्त्री. चर्मकार; चमार। [पानी।
पाद्य, त्रि. पादप्रक्षालनका जल। पाओं धोनेका
पान, न. पीना, मद्यपीना, रक्षण, सानपर लिखना, पीनेका वर्तन। [सभा।
पानगोष्ठी(ष्ठिका), स्त्री. भैरवी चक्र, मद्यपीनेकी

पल्वल, पु क्षुद्र जलाशय; पोखरा, टोंचा ।

पव, पु. धान्यादिशोधन, (न) गोमय, (पु) वायु । धानोंका साफ़ करना, गोबर, हवा ।

पवन, पु. वायु, (त्रि) पवित्र, (न) घुमारका चक्र । धान छड़ना, उड़ाना ।

पवन-व्याधि, पु. उद्धव ।

पवना-ङ्गज, **पवना-त्मज,** पु. हनूमान्, भीम, वह्नि ।

पवना-श(न), पु. सर्प, (त्रि) वायुभक्षक । सांप, हवाखोरा ।

पवनाशनाश, पु. मयूर; मोर ।

पवमान, पु. वायु, अग्नि, (त्रि) पवित्रकारी । हवा, आग, पाककरनेवाला ।

पवि, पु. वज्र; इन्द्रदेवताका गुर्ज ।

पवित, त्रि. पूत, शुद्ध । साफ़, पाक ।

पवित्र, त्रि. विशुद्ध, (न. स.) (त्रा) आगर्भसाग्र कुश, (न) तांवा, वरसना । जल, घृत, मधु, अर्घपात्र, उपवीत, वेदमन्त्र, (स्त्री) (त्रा) तुलसी ।

पवित्ररोपण, **पवित्रारोहण,** न. श्रावण शुदि द्वादशीको श्रीकृष्णमूर्तिपर जनेऊ छड़ानेका उत्सव।

पवित्रित, त्रि. शोधित, परिष्कृत । पाकक्रिया हु०, साफ़ किया हुआ ।

पशव्य, त्रि. पशुके योग्य, पशुका ।

पशु, पु. छाग; वकरा, मूर्ख, देवयोनि (व्य) दर्शन ।

पशु-पति, पु. शिव, महादेव ।

पशु-राज, पु. सिंह, मृगेन्द्र । बवर शेर ।

पश्चात्, व्य. पीछे ।

पश्चात्ताप, पु. अनुताप; पछतावा ।

पश्चार्द्ध, पु. पिछला आधा, पांओंसे नाभितक ।

पश्चिम, त्रि. चरम, शेष, अनन्तर, (न) पीठ, (स) (मा) मग़रव, पच्छम ।

पश्यत्, त्रि. दर्शनकारी; देखनेवाला ।

पश्यतोहर, पु. सुनार, चोर ।

पश्वाचार, पु. तन्त्रोक्त वेदविहित आचार ।

पन्हव, पु. अधःकृत जातिविशेष ।

पस्पश, पु. व्याकरणका एक भाष्य ।

पा, स्त्री. पीना, रक्षाकरना ।

पाङ्क्तेय, पु. पंक्तिमें भोजनके योग्य ।

पांशव, त्रि. धूलि सम्वन्धीय; मट्टीका ।

पांशु(सु), पु. धूलि; धूंड़ । गोवरकी पुरानी अरूड़ी, पाप, स्थावर जायदात । [जोरू, धरती।

पांशुल, त्रि. मैला, पापी, पु. शिव, (ला) छिनाल

पांसन, त्रि. दूषक, पापी । गुनाहग़ार ।

पाक, पु. रन्धन, परिणति रींधना, अंजाम, वालोंकी सुपेदी, फल, धान, असुर वि०, वच्चा ।

पाकल, पु. हाथीका ज्वर, न. औषधविशेष ।

पाक-शाला, स्त्री. रन्धनालय; रसोई । वावरची ख़ाना ।

पाक-शासन, पु. पाकासुरका वैरी, इन्द्र ।

पाक-शासनि, पु. इन्द्रका पुत्र जयन्त, अर्जुन ।

पाकिम, त्रि. पाकनिष्पन्न, पाकोन्मुख । पकचुका, पकनेपर आयाहुआ । [पक्षका, परिन्दोंका ।

पाक्षिक, त्रि. पक्षसम्वन्धीय, पक्षिसम्वन्धीय ।

पाचक, त्रि. पाककर्ता, जीर्ण-कारक (पु) अग्नि (न) उदरस्थ रसविशेष । रसोईया, हज़म करनेवाला, आग, पेटमेका एक रस । [दवाई ।

पाचन, न. क्वाथविशेष (पु) आग, (त्रि) हाज़महकी

पाञ्च-जन्य, पु. विष्णु, शङ्ख, अग्नि ।

पाञ्च-भौतिक, त्रि. पञ्चभूतमय; पांच भूतोंका ।

पाञ्चाल, त्रि. पंचाल देशका (पु.) पंचालका राजा, (स्त्री) (ली) द्रौपदी, काठकी पुतली ।

पाटच्चर, पु. चोर ।

पाटन, न. विदारण; फाड़ना ।

पाटल, पु. श्वेतरक्तवर्ण (त्रि) तद्वर्णयुत (स्त्री) (ला) (लि) (ली) वृक्षविशेष (न) तत्पुष्प । गुलाबी रंग, गुलाबी रंगका एक पोदा, पाटलीफूल ।

पाटलित, त्रि. गुलावी रंगका ।

पाटलि-पुत्र, न. पटना नगर । [चुस्ती, सेहत ।

पाटव, त्रि. पटुता, नैपुण्य, आरोग्य । होशियारी,

पाटित, त्रि. विदीर्ण, भग्न, क्षत । फाड़ाहुआ, उखाड़ा हुआ, ज़ख़मी । [श्रेणि । सिलसिला ।

पाटी, स्त्री. शृङ्खला, धारा, प्रणाली, एक जातीय

पाटु-पट, त्रि. अति पटु । वहुत होशियार ।

पाठ, पु. आवृत्ति, अध्ययन, पाठ्य अंश । सवक़, पढ़नेके योग्य हिस्सा । [उस्ताद।

पाठक, त्रि. पाठ-कर्ता । पढ़नेवाला, विद्यार्थी, उ-

पाठ-शाला, स्त्री. विद्यालय । मदर्सा ।

पाठिन्, त्रि. पाठक; पढ़नेवाला ।

पाठी(टी), न. पु. बोआल मच्छी ।
पाठ्य, त्रि. पठनीय । पढ़ने योग्य ।
पाणि, पु. हाथ, (स्त्री) (णि) (णी) दुकान, हट्टी ।
पाणि-गृहीती, स्त्री. पत्नी । औरत ।
पाणि-ग्रहण, } न. विवाह ।
पाणि-पीडन, }
पाणि-न्द, त्रि. पाणिवादक; ढोली ।
पाणिनि, पु. व्याकरण सूत्रोंका बनानेवाला मुनि ।
पाणिनीय, त्रि. पाणिनिप्रोक्त, पाणिनीय ग्रन्थ-पाठक । पाणिनि मुनिका कहाहुआ ग्रंथ ।
पाणिसर्ग्या, स्त्री. रज्जू; रस्सी ।
पाणौ, व्य. हस्ते; हाथमे ।
पाण्डुर, पु. शुक्लवर्ण; सुपेद रंग ।
पाण्डव, } पु. पाण्डु राजाका पुत्र ।
पाण्डवेय, }
पाण्डित्य, न. पण्डितका भाव वा कर्म । दानाई ।
पाण्डु, पु. चन्द्रवंशीय राजाविशेष । श्वेतपीतवर्ण, श्वेतवर्ण, रोगविशेष, श्वेतहस्ती, ।
पाण्डुर, पु. सुपेद रंग, कच्चा वसंती रंग, यर्कानकी बीमारी, मौहेका पेड़, (त्रि) इसके रंगका ।
पाण्डु-लिपि, स्त्री. शुद्ध-लिखत, पहिला खड़ड़ा ।
पात, पु. पतन, गमन, नाश, आघात, राहुग्रह (त्रि) रक्षित ।
पातक, न. पतन साधन, पाप । गुनाह ।
पातकिन्, त्रि. पापी । गुनाहगार ।
पातञ्जल, त्रि. पतञ्जलि मुनिका शास्त्र ।
पातन, न. अधःक्षेपण, विनाशन । नीचे गिराना, तवाह करना । [लमसे ४ थं, घर ।
पाताल, पु. अधोभुवन; नीचेका ७ वां, लोग ।
पाताल-निलय, } त्रि. पतालनिवासी, पु. दैत्य,
पाताल-निवास, } सर्प ।
पातालौकस्, } [गिराया हुआ ।
पातित, त्रि. निक्षिप्त, अधःकृत । फैंका हुआ,
पातित्य, न. पतितका धर्म ।
पातिन्, त्रि. पातनशील । गिरानेवाला ।
पातुक, त्रि. पातनशील; गिरानेवाला, पर्वत आदिकी ढुलवान् ।
पातृ, त्रि. रक्षक, पानकर्ता । मुहाफ़िज़, पीनेवाला।
पात्र, न. वर, श्रेष्ठ, योग्य-व्यक्ति, स्रुवादि यज्ञपात्र, मन्त्री, दोनों किनारोके बीच जलका आधार, अभिनयके योग्य नायक आदि, देह, न. स्त्री. (त्री) भाजन (स्त्री) कन्या, न. पत्रोंका समूह, (त्रि) पत्तोंका बनाहुआ ।
पात्रता, स्त्री. उपयुक्तता, गौरव । मुनासिबत, बड़ाई।
पात्रीय, त्रि. पात्र-सम्बन्धीय; पात्रोंका ।
पात्रेसमित, त्रि. केवल भोजन समेमें मिलनेवाला ।
पाथ, पु. अग्नि, सूर्य (न) जल ।
पाथस्, न. जल; पानी ।
पाथेय, त्रि. पथका सम्बल । तोशा ।
पाथोद, } पु. मेघ, जलधर ।
पाथोधर, }
पाथोधि, } पु. जलधि, समुद्र । बहर ।
पाथोनिधि, }
पाथोरुह्(ह), पु. जलज, कमल । गुले सौसन ।
पाद्, पु. चरण; पा ।
पाद, पु. चरण, वृक्षकी जड़, चौथाई, श्लोककी चौथाई, पहाड़का अन्त, किरण ।
पादकटक, पु. नूपुर; पांओंटा ।
पाद-ग्रहण, न. अभिवादन; पांओं पड़ना । [गति ।
पाद-चार, पु. पैदल चलना, ग्रह आदिकी दैनिक
पाद-चारिन्, पु. पदाति, (त्रि) पादगामी । पैदल ।
पाद-ज, पु. शूद्र जाति (त्रि) पांओंकी पैदाश ।
पाद-त्राण, न. मौजा, जूता, खड़ाओं ।
पाद-प, पु. वृक्ष, पाद-पीठ ।
पादरथ, पु. पादुका; खड़ाओं ।
पादविक, त्रि. पथिक, भ्रमणकारी । मुसाफ़िर ।
पादशस्, व्य. पादेपादे; पादपादमें ।
पाद-स्फोट, पु. पादरोगविशेष । पांओंका फोड़ा ।
पाद-हारक, त्रि. पाओंसे निकाला हुआ ।
पादा-ङ्गद, न. नूपुर । पायज़ेब ।
पादात, पु. पदाति; पैदल (न) पैदलोंका समूह ।
पादाति(क), पु. पदाति सैन्य । रजमट ।
पादिक, त्रि. चतुर्थ; चौथा ।
पादुक, त्रि. पादकर्मपटु, अश्रेणिगत पाद ।
पादुका(पादू), स्त्री. उपानत्; जूता, खड़ांव ।
पादूकाकृत्, स्त्री. चर्मकार; चमार । [पानी ।
पाद्य, त्रि. पादप्रक्षालनका जल । पाओं धोनेका
पान, न. पीना, मद्यपीना, रक्षण, सानपर लिराना, पीनेका वर्तन । [सभा ।
पानगोष्ठी(ष्ठिका), स्त्री. भैरवी चक्र, मद्यपीनेकी

पल्वल, पु. क्षुद्र जलाशय; पोखरा, टोंबा ।
पव, पु. धान्यादिशोधन, (न) गोमय, (पु) वायु । धानोंका साफ करना, गोबर, हवा ।
पवन, पु. वायु, (त्रि) पवित्र, (न) घुमारका चक्र । धान छड़ना, उड़ाना ।
पवन-व्याधि, पु. उद्धव ।
पवना-ङ्गज, } पु. हनूमान्, भीम, वह्नि ।
पवना-त्मज, }
पवना-श(न), पु. सर्प, (त्रि) वायुभक्षक । सांप, हवाखोरा ।
पवनाशनाश, पु. मयूर; मोर ।
पवमान, पु. वायु, अग्नि, (त्रि) पवित्रकारी । हवा, आग, पाककरनेवाला ।
पवि, पु. वज्र; इन्द्रदेवताका गुर्ज ।
पवित, त्रि. पूत, शुद्ध । साफ, पाक ।
पवित्र, त्रि. विशुद्ध, (न. स.) (त्रा) आगर्भसाग्र कुश, (न) तांवा, वरसना । जल, घृत, मधु, अर्घपात्र, उपवीत, वेदमन्त्र, (स्त्री) (त्रा) तुलसी ।
पवित्ररोपण, } न. श्रावण शुदि द्वादशीको श्रीकृ-
पवित्रारोहण, } ष्णमूर्तिपर जनेऊ झड़ानेका उत्सव।
पवित्रित, त्रि. शोधित, परिष्कृत । पाककिया हु०, साफ किया हुआ ।
पशव्य, त्रि. पशुके योग्य, पशुका ।
पशु, पु. छाग; बकरा, मूर्ख, देवयोनि (व्य) दर्शन ।
पशु-पति, पु. शिव, महादेव ।
पशु-राज, पु. सिंह, मृगेन्द्र । बबर शेर ।
पश्चात्, व्य. पीछे ।
पश्चात्ताप, पु. अनुताप; पछतावा ।
पश्चार्द्ध, पु. पिछला आधा, पांओंसे नाभितक ।
पश्चिम, त्रि. चरम, शेष, अनन्तर, (न) पीठ, (स) (मा) मगरब, पच्छम ।
पश्यत्, त्रि. दर्शनकारी; देखनेवाला ।
पश्यतोहर, पु. सुनार, चोर ।
पश्वाचार, पु. तन्त्रोक्त वेदविहित आचार ।
पन्हव, पु. अधःकृत जातिविशेष ।
पस्पश, पु. व्याकरणका एक भाष्य ।
पा, स्त्री. पीना, रक्षाकरना ।
पाङ्क्तेय, पु. पंक्तिमें भोजनके योग्य ।
पांशव, त्रि. धूलि सम्बन्धीय; मट्टीका ।
पांशु(सु), पु. धूलि; धूंड़ । गोवरकी पुरानी अ-रूड़ी, पाप, स्थावर जायदात । [जोरू, धरती।
पांशुल, त्रि. मैला, पापी, पु. शिव, (ला) छिनाल
पांसन, त्रि. दूषक, पापी । गुनाहगार ।
पाक, पु. रन्धन, परिणति रींधना, अंजाम, वा-लोंकी सुपेदी, फल, धान, असुर वि०, बच्चा ।
पाकल, पु. हाथीका ज्वर, न. औषधविशेष ।
पाक-शाला, स्त्री. रन्धनालय; रसोई । बावरची खाना ।
पाक-शासन, पु. पाकासुरका वैरी, इन्द्र ।
पाक-शासनि, पु. इन्द्रका पुत्र जयन्त, अर्जुन ।
पाकिम, त्रि. पाकनिष्पन्न, पाकोन्मुख । पकचुका, पकनेपर आयाहुआ । [पक्षका, परिन्दोंका ।
पाक्षिक, त्रि. पक्षसम्बन्धीय, पक्षिसम्बन्धीय ।
पाचक, त्रि. पाककर्ता, जीर्ण-कारक (पु) अग्नि (न) उदरस्थ रसविशेष । रसोईया, हज़म करनेवाला, आग, पेटमेका एक रस । [दवाई ।
पाचन, न. क्वाथविशेष (पु) आग, (त्रि) हाज़महकी
पाञ्च-जन्य, पु. विष्णु, शङ्ख, अग्नि ।
पाञ्च-भौतिक, त्रि. पञ्चभूतमय; पांच भूतोंका ।
पाञ्चाल, त्रि. पंचाल देशका (पु.) पंचालका राजा, (स्त्री) (ली) द्रौपदी, काठकी पुतली ।
पाटच्चर, पु. चोर ।
पाटन, न. विदारण; फाड़ना ।
पाटल, पु. श्वेतरक्तवर्ण (त्रि) तद्वर्णयुत (स्त्री) (ला) (लि) (ली) वृक्षविशेष (न) तत्पुष्प । गुलाबी रंग, गुलाबी रंगका एक पोदा, पाटलीफूल ।
पाटलित, त्रि. गुलाबी रंगका ।
पाटलि-पुत्र, न. पटना नगर । [चुस्ती, सेहत ।
पाटव, त्रि. पटुता, नैपुण्य, आरोग्य । होशियारी,
पाटित, त्रि. विदीर्ण, भग्न, क्षत । फाड़ाहुआ, उ-खाड़ा हुआ, ज़खमी । [श्रेणि । सिलसिला ।
पाटी, स्त्री. शृङ्खला, धारा, प्रणाली, एक जातीय
पाटु-पट, त्रि. अति पटु । बहुत होशियार ।
पाठ, पु. आवृत्ति, अध्ययन, पाठ्य अंश । सबक, पढ़नेके योग्य हिस्सा । [स्वाद।
पाठक, त्रि. पाठ-कर्ता । पढ़नेवाला, विद्यार्थी, उ-
पाठ-शाला, स्त्री. विद्यालय । मदर्सा ।
पाठिन्, त्रि. पाठक; पढ़नेवाला ।

पारि-माण्डल्य, न. अणु परिमाण । ज़र्रा ।
पारि-यात्र, पु. एक पर्वत, एक राजा ।
पारि-षद, त्रि. सभासद, सभ्य । मजलसी ।
पारि-हार्य, पु. वलय, अलंकारविशेष; कड़ा ।
पारी, स्त्री. दोहन-पात्र, हस्तिबंधनी, पुर, तीर । दोहनेका बर्तन, हाथी बांधनेका खूंटा ।
पारीक्षित्, पु. परीक्षितका पुत्र, जनमेजय ।
पारीण, त्रि. पारगत; पार पहुंचा हुआ ।
पारी(रि)न्द्र, पु. सिंह, अजगर सर्प ।
पारुष्य, न. कार्कश्य, विवादविशेष । कड़ापन, एक झगड़ा ।
पार्थ, पु. युधिष्ठिर आदि राजा, गन्धर्वविशेष ।
पार्थक्य, न. पृथक्त्व, विभिन्नता । अलहदगी ।
पार्थिव, पु. राजा, (स्त्री) (वी) सीता (त्रि) धरतीका ।
पार्वण, न. अमावस आदि पर्वोंमें करने योग्य षट् पुरुष श्राद्ध ।
पार्वत, त्रि. पहाड़का, (स्त्री) (ती) गिरिजा ।
पार्वतीय, त्रि. पर्वतका, पर्वतवासी । पाणिनिके मतमें (पर्वतीय) ।
पार्श्व, पु. न. प्रान्त, एकदेश, समीप, वृक्षका अधःस्थान, (न) पर्शु ओं का समूह । कोना, खित्ता, नज़दीक, बगलका नीचा, कुल्हाड़े ।
पार्श्व-ग, त्रि. पासका; नौकर ।
पार्श्व-परिवर्तन, न. पासा फेरना, भाद्र शुक्ल द्वादशीको हरिके पासा फेरनेका उत्सव ।
पार्श्वास्थि, न. देहका पंजर ।
पार्षद, पु. सभ्य; सभाका ।
पार्ष्णि, पु. स. एड़ी, फौजका पिछला भाग, पीठ ।
पार्ष्णि-ग्राह, पु. वह राजा जिसके पीछे २ शत्रु चला आता हो, फौजके पीछे २ दौड़नेवाला ।
पाल(क), त्रि. रक्षक, पालक; रक्षा करनेवाला, पालन करने वाला ।
पालन, न. रक्षा, पोषण । परवरिश, हिफ़ाज़त ।
पालाश, त्रि. पलाश सम्बन्धीय; पलाशका ।
पालि(ली), स्त्री. कतार, ढेर, जमात, तलवारकी धार, कोन, गोदी, पुल, वज़ीफा, दाढ़ीवाली स्त्री, कल्पित भोजन । [परिश कियाहुआ ।
पालित, त्रि. रक्षित, पोषित । बचाया हुआ, पर
पावक, पु. आग, नेक-चलन ।
पावकि, पु. कार्तिकेय । शिवजीका पुत्र ।
पावन, त्रि. शोधक, पवित्रकारक (न) जल, गोमय, प्रायश्चित्त, (पु) अग्नि, व्यास (स्त्री) (नी) गंगा, तुलसी, गौ, हरड़ । पाक कुनिन्दा, आब, गोबर, कफारा, आग, ।
पाश, पु. रज्जु; फांसी, (केशवाची शब्दके आगे लगे तो) गुच्छ; कर्णवाची शब्दके आगे होतो । सुन्दर; छत्र वाची शब्दके परेहो कुत्सित ।
पाशक, पु. पासा ।
पाश-पाणि, } पु. वरुण देवता ।
पाश-भृत्, }
पाशिन्, } [अस्त्रविशेष ।
पाशुपत, त्रि. शैव, शिवका, पु. बकवृक्ष, (न)
पाश्चात्य, त्रि. पश्चिमदेशका; पीछेका ।
पाषण्ड, } पु. नास्तिक । मुलहिद, बद चलन ।
पाषण्डिन्, }
पाषाण, पु. प्रस्तर, (स्त्री) पत्थर, चटान ।
पाषाण-दारक, पु. } टङ्क, अस्त्रविशेष (न) टूटाहुआ पत्थर तोड़नेका हथियार ।
पाषाण-दारण, न. }
पिक, पु. (स्त्री) (की) कोकिल; कोयल ।
पिङ्ग, पु. नीला पीला मिलाहुआ रंग, (त्रि) सबज़ स्त्री. (ङ्गा) गोरोचन, हल्दी, दुर्गा, हींङ् (ङ्गी) शमीवृक्ष, (न) खुशबूदार वस्तु ।
पिङ्गल, पु. सबज़ रंग, नागवि०, मुनिवि०, निधिवि०, वानर, अग्नि, रुद्र, सूर्य पारिपार्श्विक, मङ्गलग्रह, वत्सरविशेष, (त्रि) बसन्ती कपड़ेवाला, (स्त्री) (ला) दक्षिणदिशाके हाथीकी हाथिनी, एक नाड़ी, धर्ममें स्थिति, एक वेश्याका नाम ।
पिङ्गाक्ष, पु. शिव, (त्रि) पिङ्गल नेत्रवाला ।
पिच(चि)ण्ड, पु. उदर; पेट ।
पिच(चि)ण्डिल, त्रि. गोगड़िया, तोंदवाला ।
पिचु, पु. कर्पास; कपास ।
पिचुल, पु. झाऊका पोदा ।
पिच्छ, न. मोरकी पूंछ, (पु) पूंछ (स्त्री) (च्छा) (च्छिका) लौंगकी छड़ी, सिंबलका पेड़, चावलोंकी मांड, पाल, कतार, घोड़ेके पांवोंकी बीमारी ।
पिच्चट, न. नेत्ररोग विशेष । आंखकी बीमारी ।
पच्छ(च्छि)ल, त्रि. मांडवाला । [रुई, हल्दी ।
पिञ्ज, पु. वध, न. व्याकुल, (स्त्री) (ञ्जा) (ञ्जिका)
पिञ्जट, पु. नेत्र-मल; गिड्ड ।

पान-शौण्ड, त्रि. प्रचुर—मद्यप; बहुतसी शराब पीनेवाला। [नेलायक, बचानेलायक।
पानीय, न. जल (त्रि) पानयोग्य, रक्षायोग्य। पी·
पानीय-फल, न. शृङ्गाटक; सिंघाड़ा।
पान्थ, पु. पथिक। मुसाफ़िर।
पाप, न. दुष्कृत, (त्रि) पापिष्ठ, पाप-जनक। बुराई, पापी, पाप पैदा करनेवाला।
पाप-कृत्, } **पाप-भाज्**, } त्रि. पापकारी। गुनाह करनेवाला।
पाप-घ्न, त्रि. पाप-नाशक (पु.) तिल। पाप दूर करनेवाला। [नेवाला।
पापति, त्रि. पुनः पुनः पतनशील; फिर २ गिर-
पाप-(पु)(पू)रुष, पु. पुरुषाकृति पाप। पापी आदमी।
पापा-त्मन्, } **पापा-शय**, } त्रि. पापिष्ठ-चित्त; पापीमनवाला।
पापिन्, त्रि. पापयुक्त; पापी। गुनाहगार।
पापिष्ठ, त्रि. } **पापीयस्**, } पापी। गुनाहगार।
पाप्मन्, पु. पाप। गुनाह। [कचूर।
पामन, त्रि. पामरोगी; खुजलीकी बीमारीवाला (पु)
पामर, त्रि. खल, मूर्ख। कमीना, बेवकूफ़।
पायस, पु. न. दुग्धद्वारा संस्कृतान्न; खीर, (त्रि) दूधमें पका हुआ, पेड़ाआदि।
पायु, पु. मलद्वार; गुदा, गांड।
पाय्य, न. परिमाण, पीनेका जल।
पार, न. नदीका परपार, उद्धार, पु. न. प्रान्त, (पु) पारा (स्त्री) (रा) नदीविशेष।
पारक, त्रि. समर्थ। ताकतवर।
पारक्य, न. परकीयत्व, पराधीनत्व, (त्रि) परलोक-संबन्धीय, शत्रुसम्बन्धीय, परकीय (न) सामर्थ्य, परलोक सुखद आचरण। पराया, पत, मातहती, दूसरे जहानका, दुश्मनका, पराया, ताकत, परलोकमें सुखदायी काम।
पार-ग, त्रि. पारगामी, समर्थ। पारपहुंचनेवाला, ताकतवर। [वाला दुश्मन।
पार-ग्रामिक, त्रि. पराये नगरपर हमला करने-
पारण, न. स्त्री. (णा) व्रतके पीछे भोजन (पु) मेघ।
पारतन्त्र्य, न. पराधीनता। मातहती।

पारत्रिक, त्रि. पारलौकिक; परलोकका।
पारत(द), पु. पारा, पराई स्त्री भोगनेवाला।
पार-दर्शिन्, } **पार-दृश्वन्**, } त्रि. परिणामदर्शी, पर्यान्तदर्शी, विज्ञ। अंजाम सोचनेवाला।
पार-दारिक, पु. परस्त्री गामी; पराई स्त्री भोगनेवाला।
पार-दार्य, न. परस्त्री गमन; परस्त्री भोग।
पारमार्थिक, त्रि. मङ्गल-जनक, अभीष्ट। परलोकको बात, मोक्षकी बात। [तरीका।
पार-म्पर्य, न. परम्परागति, अनुक्रम। सिलसिला,
पार-लौकिक, त्रि. परलोकका।
पारशव, पु. शूद्रीसे ब्राह्मणकी सन्तान, परस्त्रीसे सन्तान, गंडासा, लोहा, (त्रि) कुल्हाड़ेया गंडासेका। [(त्रि) पारसका वाशिन्दा।
पारशी(सी)क, पारस देशका घोड़ा, पारस देश,
पारश्वध, } **पारश्वधिक**, } पु. कुल्हाड़ेसे युद्ध करनेवाला।
पारस्त्रैणेय, पु. पराई स्त्रीसे पुत्र।
पारापत, } **पारावत**, } पु. कपोत; कबूतर।
पारा-पात, } **पारा-वात**, } पु. समुद्र (न) दोनों किनारे।
पारायण, न. सम्पूर्णता, नियमित समयके बीच ग्रंथकी समाप्ति, बहुत अच्छा स्थान।
पारावारीण, त्रि. पारगामी। पार पहुंचनेवाला।
पारा-शर, } **पाराशर्य**, } पु. पराशर ऋषिका पुत्र, व्यासदेव, (त्रि) पराशरका। [चीज़।
पारिजात, पु. एक स्वर्गीय वृक्ष, एक खुशबूदार
पारिणाय्य, त्रि. विवाहकालमें प्राप्त पदार्थ।
पारितोषिक, त्रि. परितोष हेतुपुरस्कार। इनाम।
पारिन्, पु. समुद्र। बहर।
पारि-पन्थिक, पु. चौर; चोर।
पारिपाट्य, न. परिपाटी, शृङ्खला। सिलसिला।
पारि-पार्श्विक, पु. सूत्रधारके पासका नट (त्रि) सहचर, सेवक। साथी, खिदमतगार।
पारि-प्लव, त्रि. चञ्चल, कम्पमान। हिलनेवाला, कांपनेवाला।
पारि-भद्रक, पु. देवदारु वृक्ष; दियारका पेड़।
पारि-भाषिक, त्रि. परिभाषासम्बन्धीय। मान लियाहुआ।

पीडन, न. दुःख-दान, निपीडन, अभिभव । तकलीफ़ देना, निचोड़ना, निरादर ।
पीडा, न. व्यथा; दुःख, रोग, शिरोमाला । तकलीफ़
पीडित, त्रि. व्यथित, रुग्ण, उच्छिन्न । दुखिया, रोगी, उखड़ा हुआ ।
पीड्यमान, त्रि. व्यथ्यमान, दुःखी हुआ २ ।
पीत, पु. हरिद्रावर्ण; पीला रंग (त्रि) पीला, पीया हुआ, स्त्री (ता) हल्दी (न) पीना ।
पीत-वासस्, **पीता-म्बर**, पु. कृष्णदेव (त्रि) जिसके पीले वस्त्र हैं ।
पीत-सार, न. चन्दन, हरिचन्दन ।
पीति, स्त्री. पान, शुण्डिकालय, (पु) अश्व । शराब, कलालकी दुकान, घोड़ा ।
पीतिन्, पु. घोटक; घोड़ा । [लतमंद ।
पीन, त्रि. स्थूल, वृद्ध, सम्पन्न । मोटा, बूढा, दौ-
पीनस, पु. नासिका रोग विशेष । जुकाम ।
पीनोध्नी, स्त्री. स्थूलस्तनी गवी; मोटे लेवेवाली गाय ।
पीयूष, न. अमृत, पु. न. ताज़ा गायका दूध ।
पीलु, पु. परमाणु, पुष्प, बाण, हस्ती, अस्थि-खण्ड, वृक्षविशेष, तालकाण्ड, कृमिविशेष, अरस, फूल, तीर, हाथी, हड्डीका टूक । [लवान ।
पीवत्, पु. वायु (त्रि) स्थूल, बलिष्ठ । मोटा, ब-
पीवर, त्रि. स्थूल, बलिष्ठ । मोटा, ज़ोरावर ।
पुं-योग, पु. पुरुषसङ्ग । सोहबत ।
पुं-लिङ्ग, पु. पुरुषवाचक शब्द । मुज़क्कर ।
पुंश्चली, स्त्री. असती । छिनाल औरत ।
पुं-सवन, न. गर्भिणीका एक संस्कार ।
पुंस्त्व, न. पुरुषत्व, वीर्य; हिम्मत, ज़ोर ।
पुक्कश(स), पु. चाण्डाल, (त्रि) नीच ।
पुङ्ख, पु. बाणमूल । तीरके पर ।
पुङ्गव, पु. वृष (शब्दके अन्तमें लगे तो) श्रेष्ठ ।
पुच्छ, पु. न. लाङ्गुल; पूंछ ।
पुञ्ज, पु. राशि; ढेर ।
पुञ्जित, त्रि. राशीकृत; इकट्ठा कियाहुआ ।
पुट, त्रि. आवरण, पत्तोंका दोना, वृक्ष, पर्दा ।
पुटक, न. पद्म, दोना (स्त्री) (की) (टिका) ।
पुटकिनी, स्त्री. पद्मिनी, कमलिनी ।
पुट-पाक, पु. भस्ते उपलोंमें दवाई पकाना ।
पुट-भेद, पु. नगर, पुर, क्षीन, नदीकी टेढ़ ।
पुट-भेदन, न. नगर, पुर । शहर ।
पुटित, त्रि. ग्रथित, आवृत, (न) अञ्जलि । गांठा हुआ, ढांपा हुआ, हाथ जुड़ेहुए ।
पुण्डरीक, पु. अग्नि कोण का हाथी, व्याघ्रविशेष, सर्पवि०, (न) श्वेत-पद्म, श्वेत-छत्र, औषधवि० ।
पुण्डरीका-क्ष, पु. विष्णु ।
पुण्ड्र, पु. तिलक, इक्षुविशेष, दैत्यविशेष, माधवीलता, देशविशेष, (बहु) पुण्ड्र देशके लोग ।
पुण्य, न. धर्म, (त्रि) पुण्यवान्, पवित्र, निर्मल, योग्य । सवाब, धर्मी, पाक, साफ, लायक़ ।
पुण्य-कृत्, त्रि. पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।
पुण्य-जन, पु. धार्मिक, यक्ष, राक्षस ।
पुण्य-जनेश्वर, पु. कुबेर ।
पुण्य-भाज्, (भाज) त्रि. पुण्य करनेवाला, धर्मात्मा ।
पुण्य-भू (पुण्य-भूमि) स्त्री. आर्यावर्त । विंध्य और हिमालयके बीचका भाग । [तालेवर ।
पुण्य-वत्, त्रि. धार्मिक, भाग्यवान् । इमान्दार,
पुण्य-श्लोक, त्रि. पवित्र जिसके काम हों १ नल, युधिष्ठिर, सीताजी, विष्णु ।
पुण्या-ह, न. पवित्र दिन । पाक रोज़ ।
पुत्, पु. नरकविशेष ।
पुत्तलि,(ली)(लिका), स्त्री. पुतली, खिलौना ।
पुत्तिका, स्त्री. पतङ्गविशेष; वल्मी ।
पुत्र, पु. औरसादि बारह तरहके बेटे–१ औरस २ क्षेत्रज ३ दत्त ४ कृत्रिम ५ गूढोत्पन्न ६ अपविद्ध ७ कानीन ८ सहोढ ९ क्रीत १० पौनर्भव ११ स्वयन्दत्त १२ शौद्र (स्त्री) (त्री) कन्या (द्वि०) (त्रौ) पुत्र कन्या ।
पुत्रक, पु. पुत्र, स्नेह-पात्र, शरण, धूर्त, वृक्षविशेष, शैलविशेष, (स्त्री) (त्रिका) कन्या, पुतली ।
पुत्रिका-पुत्र, पु. दौहित्र; दोहता ।
पुत्रिन्, त्रि. पुत्रवान् ।
पुत्रीय, त्रि. पुत्र सम्बन्धीय; पुत्रका, पुत्रके लिये ।
पुत्री-वत्, त्रि. आत्मपुत्रेच्छु । पुत्र चाहनेवाला ।
पुत्रेष्टि(ष्टिका), स्त्री. पुत्र उत्पत्तिके लिये एक यज्ञ ।
पुद्गल, पु. आत्मा, देह (त्रि) सुन्दर । रूह, जिसम, खूबसूरत ।
पुनःपुनर्, व्य. मुहुर्मुहु; बार २ ।
पुनःपुना, स्त्री. गयाजीमें एक नदी ।

पिञ्जर, पु. पिङ्गल-वर्ण, पीत रक्तवर्ण, पीतवर्ण अश्ववि०, (न) स्वर्ण; पीला रंग, नारंगी रंग, पिंजरा, हड़ताल, देहका पिंजर, (त्रि) पिस्ताकी रंगका। [सेना (त्रि) व्याकुल।
पिञ्जल, न. हरिताल, कुशाका पत्र, (पु) व्याकुल
पिट(क), पु. पिटार आदि, धान रखनेका भड़ोला (त्रि) विस्फोटक; फोड़ा।
पिठर, पु. स्त्री. (री) टोकनी (पु) डेकचा, पिटारा।
पिण्ड, पु. पितरोंको देने योग्य गोल बनी हुई खानेकी वस्तु, ग्रास, गोल वस्तु, ढेला, हाथीके कुंभ, देह, देहका कोईसा भाग, घरका एक हिस्सा, गुजारा, लोहा, (त्रि) संघना, गीला।
पिण्ड-द, त्रि. अन्नदाता। खाना देनेवाला।
पिण्डि(ण्डी)(ण्डिका), स्त्री. पहिचेका मध्य, वक्खी या घुटनेके नीचेका मास, खजूरका पेड़, पेठा, खानेके योग्य।
पिण्डित, त्रि. संहत, गुणित; इकट्ठा कियाहु०, गुणाहु०, गोल कियाहुआ। [दिल, खाऊ।
पिण्डी-शूर, पु. का पुरुष, भक्षण-शील। बुज़-
पिण्याक, पु. न. तिल-कल्क, कल्क, हिङ्गु। भुग्गा, मीठी खल, खल, हींङ्।
पिता-मह, पु. ब्रह्मा, दादा (स्त्री) (ही) दादी।
पितृ, पु. जनक; वाप (द्वि) (रौ) मा बाप, (बहु०) (र;) अग्निष्वात्त, बर्हिषद् सुभास्वर, आज्य-प, उपहूत, क्रव्याद सुकालिन् येह सात पितृलोक।
पितृ-कानन, न. श्मशान; मरघट।
पितृ-क्रिया, स्त्री. श्राद्ध तर्पणादि।
पितृ-गण, पु. अग्निष्वात्ता आदि सात।
पितृ-तिथि, स्त्री. अमावस्या; अमावस।
पितृ-तीर्थ, न. गयाधाम, अंगूठा और तर्जनीका मध्यस्थान।
पितृ-दान, न. निवाप, श्राद्ध तर्पण आदि।
पितृ-पति, पु. यम, । मलिकुल मौत।
पितृ-प्रसू, स्त्री. संध्याकाल, दादी।
पितृ-बन्धु(बान्धव), पु. पितुः पितुः स्वसुः पुत्राः पितुर्भ्रातुः स्वसुः सुताः, पितुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः। पितुर्माता पिता भ्राता पितुर्भ्रातुः स्वसुः सुताः। पितुः पितुः सोदराश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः।
पितृ-यज्ञ, पु. श्राद्ध, तर्पण।
पितृ-लोक, पु. चन्द्रलोकमें एक स्थान।
पितृव्य, पु. पितृ-भ्राता; चचा, ताऊ।
पितृ-स्वसृ, स्त्री. पिताकी बहिन; भूआ।
पितृ-स्वस्रीय, पु. (स्त्री) (या) भूआकी संतान।
पित्त, न. शरीरका एक धातु। गरमी, सफ़रा।
पित्तल, न. धातुविशेष; पीतल। [तीर्थ।
पित्र्य, त्रि. पिताका, पितासे आयाहुआ, (न) पितृ-
पित्सत्, त्रि. पतनेच्छु; जो गिरा चाहे।
पिधान, न. आच्छादन; पर्दा।
पिनद्ध, त्रि. परिहित, आवृत; पहिराहु०, ढांपाहु०
पिनाक, पु. न. शिव-धनुः, त्रिशूल, धूलि-वृष्टि।
पिपासा, स्त्री. पानेच्छा; प्यास।
पिपासित, } त्रि.
पिपासु, } पु. पानेच्छु; प्यासा।
पिपीनक, पु. विप्रविशेष। एक किसमका ब्राह्मण।
पिपील(क), पु. स्त्री (का) चिउंटा, चिऊंटी।
पिप्पल, पु. अश्वत्थ वृक्ष; पीपल, खुला पंछी, (न) जल; चीथड़ा, (स्त्री) (लि) (ली) पीपली।
पियाल, पु. राजादन वृक्ष।
पिव, त्रि. पानकर्ता; पीनेवाला।
पिशङ्ग, पु. भूरा रंग, (त्रि) भूरे रंगका।
पिशाच, पु. स्त्री (ची) देवताओंकी एक योनि।
पिशित, न. मांस; मास।
पिशिताशन, } पु. राक्षस (त्रि) मांसभोजी।
पिशिताशिन्, } त्रि. गोश्तखोर।
पिशुन, त्रि. खल, क्रूर, सूचक, चरविशेष, (पु) काक, नारद (न) कुङ्कुम। खराब, बेरहम, चुग़ल, जासूस, कौआ, केसर।
पिष्ट, त्रि. मर्दित, चूर्णित, (न) सीसक। पीसाहुआ चूरा कियाहु०, सीसा।
पिष्टक, पु. न. बड़ा, पूड़ा आदिक मिठाई।
पिष्ट-प, पु. न. जगत्, भुवन। दुनियां।
पिष्टात(क), पु. गन्धचूर्ण, पिटारी।
पिहित, त्रि. आच्छादित; तिरोहित, वृक्ष। ढंपाहु०, छिपायाहु०, बढ़ाहुआ।
पीठ, त्रि. बैठनेकी चौकी, पीढ़ी।
पीठ-स्थान, न. जहां पर सतीका देह दग्धहुआ। बहुत चिरके देवमन्दिर।

पीडन, न. दुःख-दान, निपीडन, अभिभव । तकलीफ़ देना, निचोड़ना, निरादर ।
पीडा, न. व्यथा, दुःख, रोग, शिरोमाला । तकलीफ़
पीडित, त्रि. व्यथित, रुग्न, उच्छिन्न । दुखिया, रोगी, उखड़ा हुआ ।
पीड्यमान, त्रि. व्यथ्यमान, दुःखी हुआ २ ।
पीत, पु. हरिद्रावर्ण; पीला रंग (त्रि) पीला, पीया हुआ, स्त्री (ता) हल्दी (न) पीना ।
पीत-वासस्, पीता-म्बर, पु. कृष्णदेव (त्रि) जिसके पीले वस्त्र हैं ।
पीत-सार, न. चन्दन, हरिचन्दन ।
पीति, स्त्री. पान, शुण्डिकालय, (पु) अश्व । शराब, कलालकी दुकान, घोड़ा ।
पीतिन्, पु. घोटक; घोड़ा । [लतमंद ।
पीन, त्रि. स्थूल, वृद्ध, सम्पन्न । मोटा, बूढा, दौ-
पीनस, पु. नासिका रोग विशेष । ज़ुकाम ।
पीनोध्नी, स्त्री. स्थूलस्तनी गवी; मोटे लेवेवाली गाय ।
पीयूष, न. अमृत, पु. न. ताज़ा गायका दूध ।
पीलु, पु. परमाणु, पुष्प, बाण, हस्ती, अस्थि-खण्ड, वृक्षविशेष, तालकाण्ड, कृमिविशेष, अरस, फूल, तीर, हाथी, हड्डीका टूक । [लवान ।
पीवत्, पु. वायु (त्रि) स्थूल, बलिष्ठ । मोटा, ब-
पीवर, त्रि. स्थूल, बलिष्ठ । मोटा, ज़ोरावर ।
पुं-योग, पु. पुरुषसङ्ग । सोहबत ।
पुं-लिङ्ग, पु. पुरुषवाचक शब्द । मुज़कर ।
पुंश्चली, स्त्री. भ्रष्टास्त्री । छिनाल औरत ।
पुं-सवन, न. गर्भिणीका एक संस्कार ।
पुंस्त्व, न. पुरुषत्व, वीर्य; हिम्मत, ज़ोर ।
पुकश(स), पु. चाण्डाल, (त्रि) नीच ।
पुङ्ख, पु. बाणमूल । तीरके पर ।
पुङ्गव, पु. वृष (शब्दके अन्तमें लगे तो) श्रेष्ठ ।
पुच्छ, पु. न. लाङ्गुल; पूंछ ।
पुञ्ज, पु. राशि; ढेर ।
पुञ्जित, त्रि. राशीकृत; इकट्ठा कियाहुआ ।
पुट, त्रि. आवरण, पत्तोंका दोना, वुक, पर्दा ।
पुटक, न. पद्म, दोना (स्त्री) (की) (टिका) ।
पुटकिनी, स्त्री. पद्मिनी, कमलिनी ।
पुट-पाक, पु. मसले उपलोंमें दवाई पकाना ।
पुट-भेद, पु. नगर, पुर, मीन, नदीकी टेढ़ ।
पुट-भेदन, न. नगर, पुर । शहर ।
पुटित, त्रि. ग्रथित, आवृत, (न) अञ्जलि । गांठा हुआ, ढांपा हुआ, हाथ जुड़ेहुए ।
पुण्डरीक, पु. अग्नि कोण का हाथी, व्याघ्रविशेष, सर्पवि०, (न) श्वेत-पद्म, श्वेत-छत्र, औषधवि० ।
पुण्डरीका-क्ष, पु. विष्णु ।
पुण्ड्र, पु. तिलक, इक्षुविशेष, दैत्यविशेष, माधवीलता, देशविशेष, (बहु) पुण्ड्र देशके लोग ।
पुण्य, न. धर्म, (त्रि) पुण्यवान्, पवित्र, निर्मल, योग्य । सवाब, धर्मी, पाक, साफ, लायक़ ।
पुण्य-कृत्, त्रि. पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।
पुण्य-जन, पु. धार्मिक, यक्ष, राक्षस ।
पुण्य-जनेश्वर, पु. कुबेर ।
पुण्य-भाज्, (भाज) त्रि. पुण्य करनेवाला, धर्मात्मा ।
पुण्य-भू (पुण्य-भूमि) स्त्री. आर्यावर्त । विंध्य और हिमालयके बीचका भाग । [तालेवर ।
पुण्य-वत्, त्रि. धार्मिक, भाग्यवान् । इमान्दार,
पुण्य-श्लोक, त्रि. पवित्र जिसके काम हों १ नल, युधिष्टिर, सीताजी, विष्णु ।
पुण्या-ह, न. पवित्र दिन । पाक रोज़ ।
पुत्, पु. नरकविशेष ।
पुत्तलि,(ली)(लिका), स्त्री. पुतली, खिलौना ।
पुत्तिका, स्त्री. पतङ्गविशेष; वल्मी ।
पुत्र, पु. औरसादि बारह तरहके बेटे–१ औरस २ क्षेत्रज ३ दत्त ४ कृत्रिम ५ गूढोत्पन्न ६ अपविद्ध ७ कानीन ८ सहोढ ९ क्रीत १० पौनर्भव ११ स्वयन्दत्त १२ शौद्र (स्त्री) (त्री) कन्या (द्वि०) (त्रौ) पुत्र कन्या ।
पुत्रक, पु. पुत्र, स्नेह-पात्र, शरण, धूर्त, वृक्षविशेष, शैलविशेष, (स्त्री) (त्रिका) कन्या, पुतली ।
पुत्रिका-पुत्र, पु. दौहित्र; दोहता ।
पुत्रिन्, त्रि. पुत्रवान् ।
पुत्रीय, त्रि. पुत्र सम्बन्धीय; पुत्रका, पुत्रके लिये ।
पुत्री-वत्, त्रि. आत्मपुत्रेच्छु । पुत्र चाहनेवाला ।
पुत्रेष्टि(ष्टिका), स्त्री. पुत्र उत्पत्तिके लिये एक यज्ञ ।
पुद्गल, पु. आत्मा, देह (त्रि) सुन्दर । रूह, जिसम, खूबसूरत ।
पुनःपुनर्, व्य. मुहुर्मुहुः वार २ ।
पुनःपुना, स्त्री. गयाजीमें एक नदी ।

पुनर्, व्य. द्वितीयवार, पक्षान्तर, भेद, अवधारण, अधिकार। फिर, दूसरी बार, फ़िर, फर्क, यकीन, इख़्तियार।
पुनरुक्त-वदाभास, पु. शब्दालङ्कारविशेष।
पुन-रुक्ति, स्त्री. कहेका फिर कहना।
पुनर्णव, पु. नख, (स्त्री) (वा) एक शाक।
पुन-र्भव, पु. नख, फिर जन्म। [पैदा।
पुन-र्भू, स्त्री. दो बार व्याही हुई स्त्री, (त्रि) फिर
पुनर्वसू, पु. विष्णु, शिव, ७ म, नक्षत्र।
पुनान, त्रि. पवित्रकारक। पाक करनेवाला।
पुन्नाग, पु. नागकेशरका पेड़, सुपेद कमल, सुपेद हाथी, नरोंमें उत्तम।
पुमस्, पु. पुरुष। आदमी।
पुर्, स्त्री. नगरी, पुरी।
पुरःसर, त्रि. अग्रसर; अगुआ।
पुर, न. घर, घरके ऊपरकी छत, देह, नगर, पटना, फूलका मध्य, पु. गुग्गल।
पुरञ्जय, पु. शिव, राजावि०, (त्रि) पुर जीतनेवाला।
पुर-तटी, स्त्री. हट्ट, छोटा गांओं।
पुरतस्, व्य. आगे, सामने।
पुर-द्विष्, पु. शिव, महादेव।
पुर-न्दर, पु. इन्द्र, चोर, (स्त्री) (रा) इन्द्राणी।
पुरन्ध्रि(न्ध्री), स्त्री. पतिपुत्रवती स्त्री। खाविंद और बेटा जिसका हो। [वा कालमें।
पुरस्, व्य. आगे, सामने, पहिले, पूर्वदिशा, देश
पुरस्कार, पु. }
पुरस्क्रिया, स. } पूजा, मान, इनाम, आगे करना।
पुरस्कृत, त्रि. पूजित, सम्मानित, सम्मुखे स्थापित, अपवादित, शत्रुग्रस्त, अङ्गीकृत, अभिषिक्त, प्रस्तुत। पूजाहुआ, इज़्ज़त कियाहु०, सामने बैठायाहु०, दुश्मनोंसे घिराहु०, मनजूर कियाहु०, राजतिलक दियाहु०, तैयार कियाहुआ।
पुरस्तात्, व्य. पूर्वदिशा, देश वा कालविषे, सामने, पहिले।
पुरा, व्य. निकटमे, भविष्यत्मे, अतीत कालमें, पहिले, पीछे, इतिहास, पुराण।
पुराण, त्रि. प्राचीन, अनादि, न. वेदव्यासप्रणीत पञ्चलक्षणयुक्त ग्रन्थविशेष। सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥ पुराण अठारह हैं यथा—१ ब्राह्म २ वैष्णव ३ शैव ४ शाक्त ५ भागवत ६ नारदीय ७ मार्कण्डेय ८ आग्नेय ९ भविष्य १० ब्रह्मवैवर्त ११ लैङ्ग १२ वाराह १३ स्कान्द १४ वामन १५ कौर्म १६ मात्स्य १७ गारुड़ १८ ब्रह्माण्ड।
पुराण-पुरुष, पु. विष्णु, वृद्ध। [आदि नाहिं।
पुरा-तन, त्रि. प्राचीन, अनादि। पुराना, जिसका
पुरारि, पु. शिव, महादेव। [मुअरिख़।
पुरा-विद्, पु. पूर्वज्ञ, पूर्वदर्शी, पण्डित। दाना,
पुरा-वृत्त, न. पूर्व वृत्तान्त, इतिहास। तारीख़।
पुरी, स्त्री. नगरी, देह। शहर, जिसम।
पुरीतत्, पु. न. अन्त्र; आंतड़ी।
पुरीष, न. मल, विष्ठा; गूंह।
पुरु, पु. प्रचुर, ययातिका कनिष्ठ पुत्र, देवलोक, दैत्यविशेष, पराग, फूलकी तिरी।
पुरुदंशस्, पु. इन्द्र, देव-राज।
पुरुष, पु. पुंजातीय, विष्णु, आत्मा, ईश्वर, घोड़ेकी एक चाल (पिछले पांओंपर भारदेकर खड़े होकर चलना)।
पुरुष-कार, पु. उद्यम, उत्साह। कोशिश, हौंसला।
पुरुषत्व, न. मनुष्यत्व। इनसानीयत, मर्दानगी।
पुरुष-द्वय, }
पुरुष-द्वयस, } पु. नरश्रेष्ठ। नेकमर्द।
पुरुष-मात्र, }
पुरुषा-युष, न. पुरुषका जीवन-काल। उमर।
पुरुष-पुङ्गव, }
पुरुष-व्याघ्र, } पु. पुरुष-श्रेष्ठ। नेक आदमी, जवांमर्द।
पुरुष-शार्दूल, }
पुरुष-सिंह, } [प्रयोजन।
पुरु-षार्थ, पु. धर्म अर्थ काम और मोक्ष, पुरुषका
पुरुषो-त्तम, पु. विष्णु, जगन्नाथ, श्रेष्ठ-पुरुष।
पुरु-हूत, पु. इन्द्र, देव-राज। [राजा।
पुरूरवस्, पु. नृपविशेष। चन्द्र वंशमें १ म,
पुरो-ग, }
पुरो-गम, } त्रि. आगे चलनेवाला, प्रधान। अड़दली, अगुआ।
पुरो-गामिन्, }
पुरोडास(श), पु. यज्ञ का घी, यज्ञके पशुका कोई अङ्ग, यज्ञमें कछुए की भांत पीठीकी रोटी।
पुरोधस्, पु. पुरोहित।

पुरो-भागिन्, त्रि. दोष-दर्शी । ऐब जो ।
पुरो-हित, पु. श्राद्ध आदि करानेवाले ब्राह्मण ।
पुल(क), पु. रोमाञ्च, किवाड़की चूथी (त्रि) वृहत्।
पुलकित, त्रि. रोमाञ्चित; फूलाहुआ, रोंगटे जिसके खड़े हुए हैं ।
पुलकिन्, त्रि. पुलक-युक्त (पु) कदम्ब वृक्षवि० । रोंकटे जिसके खड़े हुए २ हैं, कदमका पेड़ ।
पुलस्ति(स्त्य), पु. सप्त ऋषियोंमेसे एक ।
पुलह, पु. सात ऋषियोंमेसे एक ।
पुलाक, पु. तुच्छ धान्य; निकम्मे धान ।
पुलायित, न. घोड़ेकी एक चाल; दुल्की ।
पुलिन, न. तोयोत्थित सैकत तट ।पानीसे निकला हुआ रेतला किनारा ।
पुलिन्द, पु. उत्कल पर्वतवासी म्लेच्छ जाति ।
पुलोम-जा, स्त्री. शची, इन्द्राणी । [का सुसुर ।
पुलोमन्, पु. शचीपिता ऋषिविशेष । इन्द्रदेवता
पुषित, त्रि. पालित; पालाहुआ ।
पुष्कर, न. पद्म, पद्म-कोष, जल, आकाश, तीर्थवि०, द्वीपवि०, औषधिवि०, बाण, युद्ध, हाथीके सूंढकी नोक, तबलेके भाण्डेका मुंह, (पु) बादल, एक हाथी, एक राजाका नाम, एक रागका नाम, सारस-पक्षी, नल राजाका भाई, वरुणका पुत्र ।
पुष्करिन्, पु. हाथी, (स्त्री) (णी) छोटासा तालाब, हथिनी, कमलनी ।
पुष्कल, त्रि. श्रेष्ठ, अधिक, पूर्ण (न) पशुवि०, ६४ मुट्ठीपरिमाण (पु) भरतका पुत्र ।
पुष्ट, त्रि. पालित (स्त्री) (ष्टि) पालन, वृद्धि, मातृकावि० । परवरिश किया हु०, परवरिश । तरक्की, १६ देवियोंमेंसे १४ वीं, देवी ।
पुष्प, न. फूल, स्त्रीका रज, चांदना, कुबेरका रथ, आंखकी एक बीमारी । [मट्टीकी गाड़ी ।
पुष्पक, न. कुबेरका रथ, रत्नजड़ा कंकन, पीतल,
पुष्प-केतन, } पु. कन्दर्प; कामदेव ।
पुष्प-केतु,
पुष्प-चाप,
पुष्प-दन्त, पु. वायुकोनका हाथी, विद्याधरवि०, गन्धर्ववि०, नागविशेष ।
पुष्प-धन्वन्, पु. कन्दर्प; कामदेव ।
पुष्प-पुर, न. पाटलिपुत्र नगर ।
पुष्प-रस, पु. मकरन्द ।
पुष्प-राग, पु. पद्मरागमणि; पन्ना ।
पुष्प-लिह्(ह), पु. भ्रमर; भौरा ।
पुष्प-वत्, पु. द्वि. सूर्य्य चन्द्र (त्रि) पुष्पयुत, (स्त्री) (ती) ऋतुमती स्त्री ।
पुष्प-वाटी(टिका), स्त्री. कुसुमोद्यान; फुलवाड़ी ।
पुष्प-बाण, पु. कन्दर्प, कामदेव । शहवत का देवता ।
पुष्प-समय, पु. वसन्त-काल ।
पुष्प-सार, पु. मकरन्द । फूलके मध्य की तिरी ।
पुष्पा-जीव, पु. मालाकार; माली ।
पुष्पा-ञ्जलि, पु. फूलोंका चुक्क ।
पुष्पिका, स्त्री. पुस्तकके अन्तमें वा अध्यायके अन्तमें ग्रन्थकार जो अपना नाम आदि लिखके ग्रंथको समाप्त करता है, झिल्लीविशेष ।
पुष्पित, त्रि. चमकता, फूलाहु०, (ता) हैज़वाली स्त्री।
पुष्पिताग्रा, स्त्री. अर्द्धसम वृत्तविशेष ।
पुष्पे-षु, पु. कन्दर्प । कामदेव । [माहकी पुष्या ।
पुष्य, पु. (स्त्री) (ष्या) नक्षत्रविशेष, पौषमास । पौष
पुष्प-रथ, पु. क्रीड़ारथ । फूलोंका रथ ।
पुष्पलक, पु. कस्तूरीमृग ।
पुस्त(क), न. स्त्री. (का) ग्रंथ; किताब, (त्रि) बद्ध (न) लिपि लेपन आदि शिल्प कर्म ।
पूग, पु. गुवाकवृक्ष, (न) सुपारी ।
पूजक, त्रि. पूजाकारक; पूजाकरनेवाला ।
पूजन, न. पूजा । परस्तिश ।
पूजनीय, त्रि. पूजाके योग्य । मुतबरक, मुअज्जिज।
पूजा, स्त्री. अर्चना, उपासना, प्रशंसा । देवता पर गन्ध आदि का चढ़ाना । परिस्तिश ।
पूजा-र्ह, त्रि. पूजाके योग्य ।
पूजित, त्रि. अर्चित; पूजाहुआ ।
पूज्य, त्रि. पूजनीय; पूजाके योग्य ।
पूत, त्रि. पवित्र, परिष्कृत, सत्य (पु) शङ्ख, दुर्गन्धयुत । पाक, साफ़, सच, बदबूदार ।
पूत-क्रतायी, स्त्री. शची; इन्द्र की पत्नी ।
पूत-क्रतु, पु. इन्द्र, देवराज ।
पूतना, स्त्री बकासुरकी बहिन । हरड़, एक बीमारी।
पूतना-रि, पु. कृष्ण ।
पूति, स्त्री. पवित्रता, दुर्गन्ध (त्रि) दुर्गन्धयुत । पाकीज़गी, बदबू, बदबूदार ।

पेशि(शी) स्त्री. डिम्बज, शरीरके मांसका पिण्ड, मियान, एक नदी, पिशाचीविशेष, राक्षसीविशेष। अंडा, धेज़ा।
पेषण, न. पिसना, चूरा करना, मलना, पिसनेका वर्तन, (स्त्री) (णि) (णी) चक्की आदि।
पेठर, (त्रि) स्थाली पक्व; मांस वगैरह।
पैठीनसि, पु. मुनिविशेष।
पैतामह, त्रि. पितामहागत। बाप दादाका।
पैतृक, त्रि. पितासे, पिताका। [भानूजी।
पैतृ-ष्वस्रीय, पु. स्त्री. (स्रेयी) पिताका भांनजा,
पैत्तिक, त्रि. पित्त-प्रधान। सफ़रावी।
पैत्र(त्र्य)(त्रिक), पितृ-सम्बन्धीय; पिताका (न) तर्जनी और अंगूठेका मध्य।
पैल, पु. ऋग्वेद-प्रयोक्ता एक ऋषि।
पैशाच, त्रि. पिशाचका (पु.) विवाहविशेष।
पैशुन्य, न. पिशुनता। चुग़ली। [बहुत सीमा।
पैष्टिक, त्रि. पिसेहुएका, सीसेका (न) बहुत चूरा,
पैष्टी, स्त्री. पिष्टकी शराब, मस्ती। [बालक।
पोगण्ड, त्रि. ५ म, वर्षसे १० श वर्षतकका
पोट, पु. स्पर्श, मिलन (स्त्री) (टा) दाढ़ीवाली स्त्री, पुरुषके चिह्नवाली स्त्री।
पोत, पु. शिशु, दशवर्षका हाथी, नाओ आदि सवारी, घर, पोता।
पोत-वणिज्, पु. जल पथसे व्योपार करनेवाला।
पोत-वाह, पु. नाविक; मांझी। मल्लाह।
पोता-धान, न. }वानर; बन्दर।
पोता-श्रम, पु. }
पोतृ, पु. पुरोहितविशेष।
पोत्र, न. सूअरकी थूथनी, हलका फाला, वज्र।
पोत्रिन्, पु. शूकर। सूअर। [करना।
पोष, पु. }
पोषण, न. }पालना, बढ़ाना। परवरिश, परवरिश
पोष्टृ, पु. पालक। परवरिश कुनिंदा।
पोष्य, त्रि. प्रतिपालनीय। परवरिशके लायक, नौकर, पुत्रआदिक।
पौंस्न, त्रि. पुरुषका, पुरुषके लायक (पु) हितकारी, (न) पुरुषपन, बहुत पुरुष।
पौण्ड्र, पु. देशविशेष। [पूजने वाला।
पौत्तलिक, त्रि. मूर्तिपूजक। मूर्तिमें परमेश्वर जान
पौत्र, पु. स्त्री. (त्री) पोता, पोती।
पौत्रिन्, त्रि. पौत्रवान्; पोतेवाला।
पौनःपुनिक, त्रि. फिर २ पैदा हुआ।
पौनःपुन्य, न. वारंवार; फ़िर फ़िर। [कहना।
पौनरुक्त(क्त्य), न. पुनः कथन, द्वैगुण्य। दुबारा
पौन-र्भव, पु. पुनर्भू-पुत्र; दुबारह ब्याही हुईका पुत्र।
पौर, त्रि. पुरवासी, पुरका। शहरीया।
पौरव, त्रि. पुरु-वंशीय; पुरुवंशका।
पौरस्त्य, त्रि. पूर्वदेशका, पहिलेका। [बात।
पौराणिक, पु. पुराण जाननेवाला, (त्रि) पुरानकी
पौरुष, न. पुरुषत्व, पराक्रम, तेजः, रेतः, साहस, उद्यम (त्रि) ऊर्द्ध्व पाणि पुरुष-प्रमाण। हिम्मत, ज़ोर, रोब, नुतफ़ा, हौसला, कोशिश, ऊंचे हाथ खड़े हुए पुरुष जितना ऊंचा।
पौरुषेय, त्रि. पुरुषकृत (न) पुरुषसमूह। इन्सानका, बहुत से इनसान। [ख़तार।
पौरोगव, पु. पाकशालाध्यक्ष। रसोईघरका मु-
पौरो-भाग्य, न. सिरफ़ ऐब जोई।
पौरो-हित्य, न. पुरोहितका काम, वा धर्म।
पौर्ण-मास, पु. पूर्णिमाको करने योग्य यज्ञविशेष। (स्त्री) (सी) पूर्णमासी तिथि।
पौर्वा-पर्य, न. अनुक्रम, कारण, फल। सिलसिल, आगापीछा, सबब, अंजाम।
पौलस्त्य, पु. पुलस्तकी सन्तान, कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, (स्त्री) (स्ती) सूपनखा।
पौलोमी, स्त्री. शची, इन्द्राणी। इन्द्र देवताकी जोरू। [पूसकी पूनो।
पौष, पु. मासविशेष; पूसका महीना (स्त्री) (षी)
पौष्टिक, त्रि. पुष्टिकारक (न) चूड़ाकरण कालमें पिनद्ध वस्त्र। कुव्वत देनेवाला, मूंडनके वक्तजो पोशाक बालकको पहिरावे हैं।
पौष्प, त्रि. फूलोंका, स्त्री. (ष्पी) पटना नगर।
प्र, व्य. उत्कर्ष, गति, आरम्भ सर्वतो भाव, ख्याति, प्रकट, इन अर्थोंका बोधक अव्यय शब्द।
प्रकट, त्रि. व्यक्त, स्पष्ट। ज़ाहिर, साफ़।
प्रकटित, त्रि. प्रकाशित। ज़ाहर किया हुआ।
प्रकटी-कृत, त्रि. ज़ाहिर किया हुआ, तशरीह किया हुआ। [(न) कांपनी।
प्रकम्पन, त्रि. कांपता हुआ, (पु) दैत्यविशेष।

पूतिक, न. विष्ठा (स्त्री) (का) पूई शाक ।
पूति-गन्ध, पु. दुर्गन्ध । बदबू ।
पूति-गन्धि, त्रि. दुर्गन्धयुक्त । बदबूदार ।
पूप, पु. पिष्टक; पूड़ा । [पिष्टकद्वारा श्राद्ध ।
पूपा-ष्टका, स्त्री. अग्रहायण महीनेमें कृष्णाष्टमीको ।
पूय, न. विकृत रक्त; पूं ।
पूर, पु. जल-राशि । बहुत पानी ।
पूरक, त्रि. पूर्ण-कारक; भरनेवाला, १ ला, प्राणायाम, बांई नास से प्राणको ऊपर खेंचना ।
पूरण, न. पूर्ण होना, वृद्धि, गुणन, बुननेकी तांत ।
पूरित, त्रि. गुणित, भरित, पूर्ण । ज़र्बदिया, भराहु०, पूराहुआ ।
पूरु, पु. राजा ययातिका एक पुत्र ।
पूरुष, पु. पुरुष । आदमी ।
पूर्ण, त्रि. सम्पूर्ण, सकल, समर्थ, (स्त्री) (र्णा) ५ मी, १० मी, और २ पूर्णिमातिथि । पूरा, सारा, ताकतवर ।
पूर्ण-पात्र, न. पुत्र जन्म आदिक उत्सवोंमें पारितोषिक वस्त्र आदि, वस्तुसे भराहुआ पात्र, आधा मनभर चावल आदि । [(सी) पूनो तिथि ।
पूर्ण-मास, पु. पूर्णिमाको करने योग्य यज्ञ, (स्त्री)
पूर्णि, स्त्री. पूरण ।
पूर्णिमा, स्त्री. शुक्लपक्षकी पंदरवीं तिथि ।
पूर्त, न. सबके उपकारके अर्थ कूएताल आदिका लगाना, (स्त्री.) (र्ति) पूरण ।
पूर्तिन्, त्रि. इच्छापूरक, तृप्ति-प्रद । पूरा करने वाला, रजा देना वाला ।
पूर्व, त्रि. प्रथम, ज्येष्ठ, पुरा कालीन, प्राच्यदेशीय, पश्चाद्वर्ती, (न) कारण, इतिवृत्त । १ ला, बड़ा, पहिलेका, पूर्वदेशका, पीछेका, सबब, तारीख़ ।
पूर्व-काय, पु. नभिके पूर्व देह का भाग । नाफ के ऊपर २ देह का हिस्सा ।
पूर्व-ज, } पु. ज्येष्ठ-भ्राता; बड़ा भाई (स्त्री)
पूर्व-जन्मन्, } (जा) बड़ी बहिन ।
पूर्व-देव, पु. असुर ।
पूर्व-पक्ष, पु. प्रश्न, अभियोग । सवाल, दावा ।
पूर्व-फाल्गुणी, स्त्री. २१ वां, नक्षत्र । [आदि ।
पूर्व-रङ्ग, पु. नाट्य क्रियाके उपक्रममें सङ्गीत
पूर्व-राग, पु. प्रथमानुराग । पहिली मुहब्बत ।
पूर्व-रात्र, पु. १ म, रात्रि, रातका आरम्भ ।
पूर्व-रूप, न. भविष्यत् १ म, चिह्न ।
पूर्व-वादिन्, त्रि. वादी । मुद्दई ।
पूर्वा-षाढा, स्त्री. बीसवां नक्षत्र ।
पूर्वाह्ण, पु. दिनका १ म, भाग, १० घड़ी ।
पूर्वेण, व्य. पूर्वदिशा देश वा कालमें ।
पूर्वेद्युस्, व्य. पहिले दिन ।
पूल, पु. स्त्री. (ली, लिका) पूरी, मजमा, एक वर्तन ।
पूषन्, पु. सूर्य्य । आफ़ताब ।
पृक्त, त्रि. मिश्रित; मिलाहुआ ।
पृच्छा, स्त्री. जिज्ञासा, प्रश्न । पूछना, सवाल ।
पृतना, स्त्री. २४३ हाथी, २४३ रथ, १२८ घोड़े, १२१५ पैदल इतनी सेना ।
पृथक्, व्य. भिन्न, इतर । जुदा, अलग ।
पृथगात्मता, स्त्री. भेद, विशेष । फ़र्क ।
पृथक्-जन, पु. मूर्ख, नीच । बेवकूफ़, अदना ।
पृथक्-विध, त्रि. तरह २ का, और तरहका ।
पृथा, स्त्री. कुन्ती, ब्राह्मणीविशेष, घड़ी ।
पृथा-ज, } पु. कुन्तीपुत्र, युधिष्ठिर आदि पांच ।
पृथा-सुत, }
पृथिवी, स्त्री. भूमि, धरा । ज़मीन ।
पृथिवी-पति, } पु. भूपति, राजा । बादशाह ।
पृथिवी-पाल, }
पृथिवी-रुह, पु. भूरुह, वृक्ष । दरख़्त ।
पृथु, पु. वेण राजाका पुत्र (त्रि) फैला, बड़ा, मोटा ।
पृथुक, पु. स्त्री. (का) स्त्री. शिशु, पु. न. चिड़वा ।
पृथ्वी, स्त्री. पृथिवी । ज़मीन ।
पृश्नि, (स्त्री) देवकीका नाम, किरण, पृथिवी, (न) छोटा, बारीक, दुबला ।
पृश्नि-गर्भ, पु. देवकीसूनु, कृष्ण । [चकवाला ।
पेचकिन्, पु. गज (त्रि) पेचक-युक्त । हाथी, पे-
पेट, पु. स्त्री. (टी) } पिटार, पिटारी,
पेटक, पु. त्रि. (स्त्री) (टिका) } सन्दूकची ।
पेय, त्रि. पीनेके योग्य, (न) दूध, जल ।
पेल, न. मुष्क; नल ।
पेलव, त्रि. कोमल, विरल, सूक्ष्म, भङ्गुर, लघु । नरम, विरला, बारीक, भुरभुरा, हलका ।
पेप(श)(स)ल, त्रि. सुन्दर, मृदु, कोमल, दक्ष, चतुर । खूब सूरत, मुलायम, नरम, होशियार, चतुर ।

पेशि(शी) स्त्री. डिम्बज, शरीरके मांसका पिण्ड, मियान, एक नदी, पिशाचीविशेष, राक्षसीविशेष। अंडा, पैज़ा।
पेषण, न. पिसना, चूरा करना, मलना, पिसनेका वर्तन, (स्त्री) (णि) (णी) चक्की आदि।
पैठर, (त्रि) स्थाली पक्व; मांस वग़ैरह।
पैठीनसि, पु. मुनिविशेष।
पैतामह, त्रि. पितामहागत। बाप दादाका।
पैतृक, त्रि. पितासे, पिताका। [भान्जी।
पैतृ-ष्वस्रीय, पु. स्त्री. (सेयी) पिताका भांनजा,
पैत्तिक, त्रि. पित्त-प्रधान। सफ़रावी।
पैत्र(त्र्य)(त्रिक), पितृ-सम्बन्धीय; पिताका (न) तर्जनी और अंगूठेका मध्य।
पैल, पु. ऋग्वेद-प्रयोक्ता एक ऋषि।
पैशाच, त्रि. पिशाचका (पु.) विवाहविशेष।
पैशुन्य, न. पिशुनता। चुगली। [बहुत सीसा।
पैष्टिक, त्रि. पिसेहुएका, सीसेका (न) बहुत चूरा,
पैष्टी, स्त्री. पिष्टकी शराब, मस्ती। [बालक।
पोगण्ड, त्रि. ५ म, वर्षसे १० श वर्षतकका
पोट, पु. स्पर्श, मिलन (स्त्री) (टा) दाढ़ीवाली स्त्री, पुरुषके चिह्नवाली स्त्री।
पोत, पु. शिशु, दशवर्षका हाथी, नाओ आदि सवारी, घर, पोता।
पोत-वणिज्, पु. जल पथसे व्योपार करनेवाला।
पोत-वाह, पु. नाविक; मांझी। मल्लाह।
पोता-धान, न. } वानर; वन्दर।
पोता-श्रम, पु. }
पोतृ, पु. पुरोहितविशेष।
पोत्र, न. सूअरकी थूथनी, हलका फाला, वज्र।
पोत्रिन्, पु. शूकर। सूअर। [करना।
पोष, पु. } पालना, बढ़ाना। परवरिश, परवरिश
पोषण, न. }
पोष्टृ, पु. पालक। परवरिश कुनिंदा।
पोष्य, त्रि. प्रतिपालनीय। परवरिशके लायक, नौकर, पुत्रआदिक।
पौंस्न, त्रि. पुरुषका, पुरुषके लायक (पु) हितकारी, (न) पुरुषपन, बहुत पुरुष।
पौण्ड्र, पु. देशविशेष। [पूजने वाला।
पौत्तलिक, त्रि. मूर्तिपूजक। मूर्तिमें परमेश्वर जान
पौत्र, पु. स्त्री. (त्री) पोता, पोती।
पौत्रिन्, त्रि. पौत्रवान्; पोतेवाला।
पौनःपुनिक, त्रि. फिर २ पैदा हुआ।
पौनःपुन्य, न. वारंवार; फिर फिर। [कहना।
पौनरुक्त(क्त्य), न. पुनः कथन, द्वैगुण्य। दुबारा
पौन-र्भव, पु. पुनर्भू-पुत्र; दुबारह व्याही हुईका पुत्र।
पौर, त्रि. पुरवासी, पुरका। शहरीया।
पौरव, त्रि. पुरु-वंशीय; पुरुवंशका।
पौरस्त्य, त्रि. पूर्वदेशका, पहिलेका। [बात।
पौराणिक, पु. पुराण जाननेवाला, (त्रि) पुरानकी
पौरुष, न. पुरुषत्व, पराक्रम, तेजः, रेतः, साहस, उद्यम (त्रि) ऊर्द्ध पाणि पुरुष-प्रमाण। हिम्मत, ज़ोर, रोब, नुतफ़ा, हौसला, कोशिश, ऊंचे हाथ खड़े हुए पुरुष जितना ऊंचा।
पौरुषेय, त्रि. पुरुषकृत (न) पुरुषसमूह। इन्सानका, बहुत से इनसान। [खुतार।
पौरोगव, पु. पाकशालाध्यक्ष। रसोईघरका मु-
पौरो-भाग्य, न. सिरफ़ ऐब जोई।
पौरो-हित्य, न. पुरोहितका काम, वा धर्म।
पौर्ण-मास, पु. पूर्णिमाको करने योग्य यज्ञविशेष। (स्त्री) (सी) पूर्णमासी तिथि।
पौर्वा-पर्य, न. अनुक्रम, कारण, फल। सिलसिल, आगापीछा, सबब, अंजाम।
पौलस्त्य, पु. पुलस्तकी सन्तान, कुवेर, रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण, (स्त्री) (स्ती) सूपनखा।
पौलोमी, स्त्री. शची, इन्द्राणी। इन्द्र देवताकी जोरू। [पूसकी पूनो।
पौष, पु. मासविशेष; पूसका महीना (स्त्री) (षी)
पौष्टिक, त्रि. पुष्टिकारक (न) चूड़ाकरण कालमें पिनद्ध वस्त्र। कुव्वत देनेवाला, मूंडनके वक्तजो पौशाक बालकको पहिराते हैं।
पौष्प, त्रि. फूलोंका, स्त्री. (ष्पी) पटना नगर।
प्र, व्य. उत्कर्ष, गति, आरम्भ सर्वतो भाव, ख्याति, प्रकट, इन अर्थोंका बोधक अव्यय शब्द।
प्रकट, त्रि. व्यक्त, स्पष्ट। ज़ाहिर, साफ़।
प्रकटित, त्रि. प्रकाशित। ज़ाहर किया हुआ।
प्रकटी-कृत, त्रि. ज़ाहिर किया हुआ, तशरीह किया हुआ। [(न) कांपनी।
प्रकम्पन, त्रि. कांपता हुआ, (पु) दैत्यविशेष।

प्रकर, पु. समूह, स्तवक, साहाय्य, अधिकार, प्रकीर्णपुष्पादि (त्रि) कर्म-पट्ट (स्त्री) (री) नाट्याङ्गवि०, त्रि. चत्वर-भूमि । मजमा, गुच्छा, मदद, इख़तियार, विखरे हुए फूल वग़ैरह, १ काममें होशियार, नटविद्याका एक हिस्सा, चौरास्ता ।

प्रकरण, न. प्रकार, प्रस्ताव, ग्रंथांश, नाट्यविशेष । तरह, मज़मून, कितावका हिस्सा, एक खेल ।

प्र-कर्ष, पु. उत्कर्ष, आधिक्य । बड़ाई, ज्यादती ।

प्र-काण्ड, पु. न. वृक्षका तनह । शब्दके परे लगे तो उत्तम ।

प्र-काम, त्रि. न. पर्याप्त; पूरा । काफ़ी ।

प्र-कार, पु. प्रभेद, सादृश्य, जाति, रीति । तरह, वैसा, तरीक ।

प्र-कारान्तर, न. अन्य प्रकार । और तरहँसे ।

प्र-काश, पु. दीप्ति, आलोक, आतप, विस्तार, प्रकटन, चमक । रौशनी, धूप, फैलाव, ज़हूरा ।

प्र-काशक, त्रि. प्रकाश-कारी । ज़ाहिर करनेवाला । रौशन करने वाला ।

प्र-काशित, त्रि. शोभित । ज़ाहर किया, सजाया हुआ, प्रगट किया हुआ ।

प्र-कीर्ण, त्रि. विक्षिप्त, प्रसारित । बखेराहु०, फैलायाहु०, ज़ाहिर किया हु०, मिलाया हु०, सिलसिलेसे वाहर, बदराहमे जाता हुआ ।

प्रकीर्णक, न. चामर, विस्तार, ग्रंथपरिच्छेद, (पु.) अश्ववि०, चंवर, फैलाव, कितावका एक बाव, घोड़ा।

प्र-कीर्तित, त्रि. कथित; कहाहुआ, अच्छीतरह वयान किया हुआ ।

प्र-कृत, त्रि. निर्मित, प्रस्तावित अधिकृत, आरब्ध, वास्तविक । बनाया, वयान किया, शुरुकिया, ठीक २ (स्त्री) (ति) जगतका मूलकारण, सांख्यमतमें सत्व रज तमकी साम्य अवस्था, अज्ञान, कारण, स्वभाव, राजा वज़ीर दोस्त खज़ाना मुल्क, किला, फ़ौज, यह सात राजके अङ्ग, ताकत, (स्त्री) पञ्चभूत, परमात्मा, जीवात्मा, २१ अक्षरावृत्ति छन्द, (व्या.) शब्द, धातु, शिश्न, प्रजा, पांचभौतिक देह ।

प्रकृति-स्थ, त्रि. स्वीयभावापन्न, स्वाभाविक । होश हवासमे कायम, क़ुदरती । [लायक़ ।

प्रकृष्ट, त्रि. प्रशस्त, श्रेष्ठ । उमदह, तअरीफ़के

प्रकॢप्त, त्रि. रचित, सम्भूत । तैयार कियाहु० ।

प्र-कोप, पु. अति कोप; ज्वरादिकी उत्कटता । बड़ा गुस्सा, बुख़ार आदिका बढ़ाव ।

प्र-कोपण(न), न. वर्द्धन; बढ़ाना, उक्साना ।

प्र-कोष्ठ, पु. कोहनीसे मणिबन्धतक बाहुका भाग, दरवाज़ेके साथका घर, महल्ल ।

प्र-क्रम, पु. आरम्भ, गमन, अवसर, अतिक्रम । शुरु, रफ़्तार, मौका, छलांग ।

प्र-क्रान्त, त्रि. आरब्ध, गत, अवसृत । शुरु किया, गुज़रा, सरकगया । [तदबीर ।

प्र-क्रिया, स्त्री. प्रकरण, अनुष्ठान, प्रयोग । तरीका ।

प्र-क्व(क्वा)ण, न. बीनकी आवाज़ ।

प्र-क्षालण, न. धौतकरण; धोना ।

प्र-क्षालित, त्रि. धौत; धोयाहुआ ।

प्र-क्षिप्त, त्रि. निक्षिप्त, अन्तर्निवेशित; फैंकाहुआ, बीचमें डाला हुआ ।

प्रक्ष्वेडन, पु. नाराच अस्त्र । एक तरहका तीर ।

प्र-क्षेप, पु. } विन्यास, विक्षेप । फैंक डालना ।
प्र-क्षेपण, न. }

प्र-खर, त्रि. बड़ा गरम, तीखा, तेज़, पु. खचरा, कुत्ता ।

प्रख्य, त्रि. तुल्य, ख्यात, (स्त्री) (ख्या) सादृश्य, ख्याति । यकसां, मशहूर, बराबरी, मशहूरी ।

प्र-ख्यात, त्रि. प्रसिद्ध । मशहूर ।

प्रगल्भ, त्रि. उद्धत, निर्लज्ज, प्रत्युत्पन्नमति, साहसी, निर्भय, (पु) गर्व । मग़रूर, बेशरम, हाज़र जवाब, हिम्मती, बेख़ौफ़, ग़रूर ।

प्र-गाढ, त्रि. अधिक । ज्यादह ।

प्र-गुण, त्रि. प्रकृष्टगुणवान्; हमसिफ्त ।

प्र-गृह्य, पु. न. ईकारान्त ऊकारान्त द्विवचन, अन्यादि स्वरसन्धिके अयोग्य पद ।

प्रगे, व्य. प्रत्यूप; प्रभात । सुबह ।

प्रगेतन, त्रि. प्रभातका । सुबहकी ।

प्र-ग्र(ग्रा)ह, पु. घोड़े आदिकी लग़ाम, रस्सी, रुईका सूत, किरण, भुजा, ग्रहण, बन्धन, बन्दी ।

प्र-ग्रीव(क), पु. न. गवाक्ष; झरोखा ।

प्र-घ(घा)ण, पु. दरवाज़ेके बाहरका घर, बरामदा ।

प्रघस, पु. भोजन, राक्षस, (त्रि) भक्षक; खुराक, खाऊ, पेटू ।

प्र-चक्र, न. प्रचलत् सैन्य; चलती हुई फ़ौज ।

प्र-चण्ड, त्रि. तेज, बेडर, गुस्सेवाला, ज़ोरावर, रोबदार (स्त्री) (ण्डी) एक देवी ।
प्र-च्चय, पु. राशि, उपचय । ढेर, जमा ।
प्र-च(चा)र, पु. पथ । राह, रफ़तार, रिवाज ।
प्रचलाक, पु. मयूर-पुच्छ; मोरकी पूंछ ।
प्रचलाकिन्, पु. मयूर, सर्प । मोर, सांप ।
प्र-चलित, त्रि. ज्ञात । जाना हुआ, मुरव्विज ।
प्रचीयमान, त्रि. पुष्यमाण, वृद्धिशील । बढ़ता हुआ, बढ़ने वाला ।
प्रचुर, त्रि. प्रभूत; बहुत ।
प्रचेतस्, पु. वरुण, प्रजापतिविशेष ।
प्र-चेतित, त्रि. ज्ञात, जानाहुआ ।
प्रचेय, त्रि. वर्द्धनीय, बढ़ाने लायक़ ।
प्र-चोदित, त्रि. प्रणोदित । उक्सायाहुआ ।
प्रच्छद, पु. ओढ़नेकी चादर, बिछानेकी चादर ।
प्रच्छन्न, त्रि. गुप्त, आच्छन्न, (न) अन्तर्द्वार । छिपाहुआ, ढांपाहुआ, भीतरका दरवाज़ा ।
प्रच्छर्दिका, स्त्री. वमन रोग । कैकी बीमारी ।
प्र-च्छादन, न. आच्छादन, उत्तरीयवस्त्र । ढकना, दुपट्टा ।
प्रछाय, न. प्रकृष्टछाया । उमदह साया ।
प्रजन, पु. गौआदिका गर्भग्रहण कराना; बच्चा जनना ।
प्र-जव, पु. प्रकृष्ट वेग; बहुत तेज़ी ।
प्र-जविन्, त्रि वेगवान् । तेज़ रफ़तारवाला ।
प्रजा, स्त्री. सन्तति, अधिकारस्थ जन । औलाद, रियाया । [हुआ, बच्चा ।
प्र-जात, त्रि. उत्पन्न (स्त्री) प्रजाता, प्रसूता । पैदा
प्रजान्तक, पु. यम । मलिकुल मौत ।
प्रजा-पति, पु. ब्रह्मा, विश्वकर्मा । मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, दक्ष, वशिष्ठ, भृगु, नारद येह दश राजा ।
प्रजा-पाल, पु. राजा, प्रजापति । पादशाह ।
प्रजा-वती, स्त्री. भ्रातृजाया, सन्तानवती । भौजाई, औलादवाली ।
प्रजा-सृज, पु. विधाता, पिता, परमेश्वर, ब्रह्मा ।
प्रजेश(श्वर), पु. राजा । पादशाह । [स्ती ।
प्रज्ञ, त्रि. ज्ञानी, पण्डित (स्त्री) (ज्ञा) बुद्धि, सर-
प्रज्ञा-चक्षुस्, पु. धृतराष्ट्र । दुर्योधनका पिता ।

प्र-ज्ञान, न. बुद्धि, सङ्केत, चिह्न । अक़ल, इशारह, नशान ।
प्रज्ञु, त्रि. प्रगत जानु । लुंजा ।
प्र-ज्वलित, त्रि. जलताहुआ । चमकताहुआ ।
प्र-डीन, न. पक्षिगतिविशेष; उडारी ।
प्र-णत, त्रि. नम्र; झुकाहुआ, नमस्कार किये हुए । (स्त्री) (ति) प्रणाम, नम्रता । तहज़ीम ।
प्रणय, पु. प्रीति, प्रेम श्रद्धा, विश्वास । मुहब्बत, एतक़ाद । [गानेके मन्त्र ।
प्रणयन, न. रचना; बनावट, हवनमें आग सुल-
प्रणयिन, पु. अनुरक्तनायक (स्त्री) (णी) अनुरागवती (त्रि) अनुरागयुत । आशक, मुहब्बतवाला ।
प्रणव, पु. ॐकार, बीजमन्त्र । [एक बीमारी ।
प्रणाद, पु. अति-उच्च आनन्द-ध्वनि । कानकी
प्रणाम, पु. प्रणति । सजदा ।
प्रणाय्य, त्रि. असम्मत, प्रिय, न्यायवान् ।
प्रणाल, पु. स्त्री. (ली) जलनिर्गमपथ, द्वार, रीति, धारा, श्रेणि । पनाला, दरवाज़ा, तरीक़ा, धार, जमात ।
प्रणाश, पु. मौत, भागना । तबाही ।
प्रणिधान, न. मनोनिवेश, चित्तैकाग्रता, ध्यान, यत्न, अर्पण । दिल लगाना, दिलकी तवजो, ख़ियाल, कोशिश, भेट ।
प्रणिधि, पु. दूत, चर, प्रार्थना, अवधान । जासूस, दर्खास्त, डंडौत, तवजो ।
प्रणिहित, त्रि. अर्पित, समाहित, स्थिरीकृत, प्रसारित, प्राप्त । सौंपा हु०, दिललगाये, कायम किया हु०, फैलाया हु०, हासल किया हुआ ।
प्रणीत, त्रि. रचाहु०, कहाहु०, भेजाहु०, फैंकाहु०, पकाया, दाख़ल किया हु०, पु. संस्कारकी हुई अग्नि, (स्त्री) (ता) यज्ञपात्रविशेष, ।
प्रणुन्न, त्रि. कांपताहु०, भेजाहु०, काममें लगाया हु० ।
प्रणेय, त्रि. अधीन । मातहत । [भेजा हुआ ।
प्रणो-दित, त्रि. लगायाहुआ, उक्सायाहुआ,
प्र-तति, स्त्री. विस्तार, (ति-ती) विस्तीर्णलता ।
प्रतन, त्रि, पुरातन; पुराना । [ताहुआ ।
प्र-तप्त, त्रि. तापित, उत्तप्त । तपायाहुआ, जल-

प्रकर, पु. समूह,
कीर्णपुष्पादि
वि०, त्रि. ...
इख़तियार, वि...
होशियार, ...

प्रकरण, न. प्रकार, ...
तरह, मज़मून, कि...

प्र-कर्ष, पु. उत्कर्ष, आ...

प्र-काण्ड, पु. न. वृक्षका...
तो उत्तम ।

प्र-काम, त्रि. न. पर्याप्त; पू...

प्र-कार, पु. प्रभेद, सादृश्य, ...
वैसा, तरीक ।

प्र-कारान्तर, न. अन्य प्रकार ।

प्र-काश, पु. दीप्ति, आलोक, आत...
कटन, चमक । रौशनी, धूप, फैल...

प्र-काशक, त्रि. प्रकाश-कारी। ज़ाहिर
रौशन करने वाला ।

प्र-काशित, त्रि. शोभित । ज़ाहर किया,
हुआ, प्रगट किया हुआ ।

प्र-कीर्ण, त्रि. विक्षिप्त, प्रसारित । बखेराहु॰
लायाहु॰, ज़ाहिर किया हु॰, मिलाया हु॰,
लसिलेसे बाहर, वदराहमे जाता हुआ ।

प्रकीर्णक, न. चामर, विस्तार, ग्रंथपरिच्छेद, (पु.)
अश्ववि॰, चंवर, फैलाव, कितावका एक बाब, घोड़ा।

प्र-कीर्तित, त्रि. कथित; कहाहुआ, अच्छीतरह
वयान किया हुआ ।

प्र-कृत, त्रि. निर्मित, प्रस्तावित अधिकृत, आरब्ध,
वास्तविक । बनाया, वयान किया, शुरुकिया,
ठीक २ (स्त्री) (ति) जगतका मूलकारण, सांख्य॰
मतमें सत्व रज तमकी साम्य अवस्था, अज्ञान,
कारण, स्वभाव, राजा वज़ीर दोस्त खज़ाना
मुल्क, किला, फ़ौज, यह सात राजके अङ्ग, ताकत,
(स्त्री) पञ्चभूत, परमात्मा, जीवात्मा, २१ अक्षरा-
वृत्ति छन्द, (व्या.) शब्द, धातु, शिश्न, प्रजा,
पांचभौतिक देह ।

प्रकृति-स्थ, त्रि. स्त्रीयभावापन्न, स्वाभाविक। होश
हवासमे क़ायम, क़ुदरती । [लायक़ ।

प्रकृष्ट, त्रि. प्रशस्त, श्रेष्ठ । उमदह, तअरीफ़के

प्र
प्र-...
प्र-गृ...
...
प्रगे, अव्य...
प्रगेतन, ...
प्र-ग्र(ग्रा)ह...
ईका सूत, ...
प्र-ग्रीव(क), ...
प्र-घ(घा)ण, पु ...
प्रघस, पु. भोजन...
खाऊ, पेटू। ...
प्र-चक्र, न. प्रचलत् ...

प्रति-फलन, न. प्रतिबिम्बन अक्स करना।
प्रति-फलित, त्रि. प्रतिबिम्बित। अक्सी।
प्रति-बद्ध, त्रि. व्याहत, बाधित। रोकाहु०, बांधाहु०
प्रति-बन्ध, पु. विघ्न, व्याघात। रोक, हर्ज।
प्रति-बन्धक, त्रि. व्याघातक। रोकनेवाला।
प्रति-बन्धि, पु. व्याघात, अनिष्टार्थप्रसञ्जक वाक्य। रोक, खराबी जतानेवाली बात।
प्रति-बन्धिन्, त्रि. प्रति-बन्धविशिष्ट। रोकनेवाला।
प्रति-बन्धु, त्रि. प्रतिकूल। वर अक्स।
प्रति-बल, त्रि. समर्थ (पु) शत्रु (न) विपक्ष–सैन्य। ताकतवर, दुश्मन, दुश्मन की फौज।
प्रति-बोध, पु. जागरण, प्रबोध, स्फुरन। जाग, समझ, खिल न।
प्रति-बोधित, त्रि. जगाया हुआ, समझायाहुआ।
प्रति-भट, पु. सदृश, प्रतिद्वन्द्वी। मुकाबलेका सिपाही।
प्रति-भय, त्रि. खौफ़नाक, खौफ़का बायस।
प्रति-भा, स्त्री. बुद्धि, प्रभा, सादृश्य। अकल, फ़ौरण जवाब समझनेवाली अकल, बराबरी।
प्रति-भान, न. बुद्ध, प्रभा। रोशनी।
प्रति-भू, पु. ज़ामन।
प्रति-म, त्रि. (शब्दके परे लगे तो) बराबर, (स्त्री) (मा) हाथीके दोनों दातोंका बीच, प्रति-मूर्ति, प्रतिबिम्ब, सादृश्य।
प्रति-मान, न. प्रतिमा देखो।
प्रति-मानना, स्त्री. पूजा, सम्मान। इज़त।
प्रति-मुक्त, त्रि. परिहित, पिनद्ध, लक्त, बन्धनमुक्त। पहिराहु०, ढांकाहु०, तजाहु०, छूटाहु०।
प्रति-मुख, त्रि. सम्मुख; सामने।
प्रति-मूर्ति, स्त्री. प्रतिकृति। नकल।
प्रति-यत्न, पु. गुणान्तराधान, संस्कार, लिप्सा, प्रतिग्रह दैव, सम्यक्, यत्न, प्रतिशोध। सुधार, लालच, खैरात लेनेकी मर्ज़ी, खूब कोशिश, बदला।
प्रति-यात, त्रि. प्रतिनिवृत्त; लौट आया हुआ।
प्रति-यातना, स्त्री. प्रति-कृति। नकल, बदला।
प्रति-योगिन्, त्रि. सदृश, समान, प्रतिपक्ष। वैसा, इज़त, दुश्मन।
प्रति-रुद्ध, त्रि. निवारित; रोकाहुआ।
प्रति-रूप, न. सादृश्य; प्रतिमूर्ति (त्रि) सदृश। बराबर, नकल, यकसां।
प्रति-रोध, पु. निवारण, प्रतिबंध, तिरस्कार, चौर्य। इनकार, रोक, बे इज़ती, चोरी।
प्रति-लोम, त्रि. प्रति-कूल, वाम; उलटा।
प्रति-लोमज, त्रि. उत्तम वर्णकी स्त्रीमेंसे अधम वर्णसे उत्पन्न सन्तान।
प्रति-वचन, **प्रति-वचस्**, **प्रति-वाक्य**, **प्रति-वाचिक**, न. प्रत्युत्तर, प्रतिकूल वाक्य, प्रतिध्वनि। जवाबका जवाब, बरअक्स बात।
प्रति-वस्तूपमा, स्त्री. काव्यालङ्कारविशेष।
प्रति(ती)वाद, पु. प्रति कूल उत्तर। बरअक्स जवाब।
प्रति-वादिन्, त्रि. प्रतिपक्ष, वादी। मुद्दआलय।
प्रति-वासिन्, त्रि. पड़ौसी। हमसायां।
प्रति-विधान, न. प्रतीकार, सज्ञा। इलाज।
प्रति-बिम्ब, पु. न. प्रतिच्छाया। अक्स।
प्रति-बिम्बन, न. साफ़ शफ़ाफ़ वस्तुमे ठीक २ अक्स।
प्रति-(ती)वेश, पु. पासकी रहनेकी जाय।
प्रति-वेशिन्, त्रि. प्रतिवासी; पड़ौसी।
प्रति-शब्द, पु. प्रतिध्वनि; गूज।
प्रति-शाय, पु. हत्या। कृतल।
प्रति-शासन, न. नौकरोंको काममें लगाना।
प्रति-शीर्ष, पु. प्रतिनिधि। कायम मुकायम।
प्रति-शीर्षक, पु. निष्क्रय; मोल। कीमत।
प्रति-श्रय, पु. सभा, आश्रय, गृह, यज्ञ-गृह। मजलिस, पनाह घर।
प्रति-श्रव, पु. अंगीकार। अहद, मनजूरी।
प्रति-श्रुत्, स्त्री. प्रतिध्वनि; गूंज।
प्रति-श्रुत, त्रि. अङ्गीकृत। मनजूर किया हुआ।
प्रति-षिद्ध, त्रि. निवारित। हटाया हुआ।
प्रति-षेध, पु. निषेध, वर्जन। इनकार, मनह।
प्रतिष्कश, त्रि. वार्तापुरुष। मददगार, अगवानी।
प्रति-ष्टम्भ, पु. प्रतिबन्ध; रोक।
प्रतिष्ठा, स्त्री. सुख्याति। मशहूरी, इज़त, बड़ाई, आठ अक्षरोंके चरणवाला छन्द।
प्रति-ष्ठित, त्रि. मशहूर, मुअज़िज़, खतम, कायम, हासिल।
प्रति-संविधान, न. प्रतिविधान।
प्रति-संहार, पु. निवर्तन, प्रत्याकर्षण; पलटा, लोटाओ, वापिसलेना।

प्र-तल, न. पातालविशेष (पु.) फैलायाहुआ हाथ ।
प्र-तान, पु. विस्तार; वेलकी तारें, फ़ैलाव ।
प्र-तानी, स्त्री. लता; वेल ।
प्र-ताप, पु. रोवदाव, धूप, तपश ।
प्र-तापन, त्रि. तपानेवाला, पु. नरकविशेष ।
प्र-तारक, त्रि. वञ्चक, धूर्त । शरीर ।
प्र-तारण, न. स्त्री. (णा) ठगी, फ़रेब, पारलंघाना ।
प्र-तारित, त्रि. वञ्चित, पारप्रापित । ठगायाहुआ, पार लंघाया हुआ ।
प्र-ति, व्या. प्रतिनिधि, आभिमुख्य, मात्र, भाग, वीप्सा, चिह्न, प्रतिदान, व्यावृत्ति, सादृश्य, विरोध, समाधि, निश्चय, निन्दा, स्वभाव, व्याप्ति, इन अर्थोंका बोधक अव्यय ।
प्रति-कर्मन्, न. प्रतीकार । बदला ।
प्रति-कश, पु. अश्व; घोड़ा ।
प्रति-काय, पु. शत्रु । दुश्मन ।
प्रति(ती)कार, पु. प्रतिफल; वैरका बदला । रोगका इलाज ।
प्रति(ती)काश, त्रि. शब्दके परे लगे तो सा- [दृश्य जैसा ।
प्रति-कूल, त्रि. विरुद्ध । बरअक्स ।
प्रति-कृति, स्त्री. प्रति-मूर्ति, सादृश्य, प्रतिनिधि । नकल, कायममुकायम, वैसेका वैसा ।
प्रति-क्रिया, स्त्री. प्रतीकार । बदला, इलाज ।
प्रति-क्षण, न. व्य. क्षणे२ । हरदम, हर लहमे ।
प्रति-क्षिप्त, त्रि. प्रेरित, तिरस्कृत, निषिद्ध । भेजाहु०, मलामत कियाहुआ, मनह कियाहुआ ।
प्रति-ग्रह, पु. स्वीकार, ग्रहण, प्रत्यभियोग । मानलेना, लेना, दानलेना, देने की चीज़, सेना की पीठ, खोटे ग्रह ।
प्रति-ग्राहित, त्रि. स्वीकारित । मनजूर करायाहु०
प्रति-घ, पु. गुस्सा, (त्रि.) बरअक्स ।
प्रति(ती)घात, पु. आघात, व्याघात, निरास, विरोध, चोट, रोक । नाउमेदी, इख़तिलाफ़ ।
प्रति-घातन, न. वध; मारडालना, क़तल करना ।
प्रति-च्छन्द(स्), त्रि. अभिप्रायानुरूप । मरज़ीमाफ़िक (पु.) (न्द). प्रतिकृति । नकल ।
प्रतिच्छन्न, त्रि. प्रतिनिधि, आच्छन्न । इवज़ी, ढका हुआ । [बराबरी ।
प्रति-च्छाया, स्त्री. प्रति मूर्ति, सादृश्य । नकल,

प्रति-जागर, पु. प्रत्यवेक्षण, रक्षार्थनियोग । इन्तज़ारी, चौकीदारी ।
प्रति-जिह्वा, स्त्री. काकली, घण्डी ।
प्रतिज्ञा, (प्रतिज्ञान), स्त्री. न. मैं करूंगा यह निश्चय दिलवाना, पक्षमें साध्यका निर्देश ।
प्रतिज्ञात, त्रि. अंगीकार कियाहुआ, अभियोगका विषय ।
प्रति-दान, न. परिवर्त; रक्खीहुई वस्तुका लौटाना ।
प्रति-दिन, व्य. प्रत्यह । रोज़२ ।
प्रति-द्वन्द्विन्, त्रि. प्रतिपक्ष, शत्रु । दुश्मन् ।
प्रति-ध्वनि, } पु. प्रतिशब्द । गूंज ।
प्रति-ध्वान, }
प्रति-ध्वनित, त्रि. प्रतिशब्दित, (न) प्रतिशब्द । गूंजताहुआ, गूंज ।
प्रति-नन्दन, न. प्रशंसा । तअरीफ़ ।
प्रति-निधि, पु. प्रतिरूप । कायम मुकायम ।
प्रति-निवृत्त, त्रि. प्रत्यागत । लौट आया ।
प्रति-निश, न. व्य. हरएक रातको ।
प्रति-पक्ष, पु. विपक्ष । दुश्मन ।
प्रति-पत्ति, स्त्री. प्राप्ति, योग्य-पदप्राप्ति, प्रगल्भता, अभिमान, सन्मान, गौरव, अनुमति, प्रवृत्ति, निश्चय, कर्तव्यज्ञान, अङ्गीकार, दान, उपाय । व्यवस्था । हसूल, मुनासिब दर्जा पाना, होशियारी, ग़रूर, इज़त, बड़ाई, इजाज़त, दख़ल, यक़ीन, मनज़ूर, ख़ैरात, तदबीर ।
प्रति-पद्, स्त्री. शुक्ल वा कृष्णपक्षकी १ ली, तिथि । अकल, पाओं ।
प्रति-पद, न. व्य. पदपदमें । हरवक़्त ।
प्रति-पन्न, त्रि. मुअज़्ज़िज़, मशहूर, दलील वग़ैरहसे साबित, मनजूर कियाहुआ, मानलिया ।
प्रति-पादन, न. दान, साबत करना, रोकना, यकीन कराना ।
प्रति-पादित, त्रि. सम्पादित । तैयार किया हुआ, दान दियाहुआ, जताया हुआ ।
प्रति-पालक, त्रि. पोषक, रक्षक । परवरिश कुनिन्दा, मुहाफ़िज़ ।
प्रति-प्रसव, पु. निषेध किये हुए का फिर विधान ।
प्रति-प्रिय, } न. प्रत्युपकार । उपकारके पलेमें उपकार ।
प्रति-फल, }

प्रति-फलन, न. प्रतिबिम्बन अक्स करना ।
प्रति-फलित, त्रि. प्रतिबिम्बित । अक्सी ।
प्रति-बद्ध, त्रि. व्याहत, बाधित । रोकाहु०, बांधाहु०
प्रति-बन्ध, पु. विघ्न, व्याघात । रोक, हर्ज ।
प्रति-बन्धक, त्रि. व्याघातक । रोकनेवाला ।
प्रति-बन्धि, पुं. व्याघात,-अनिष्टार्थप्रसञ्जक वाक्य । रोक, खराबी जतानेवाली बात । [वाला ।
प्रति-बन्धिन्, त्रि. प्रति-बन्धविशिष्ट । रोकने-
प्रति-बन्धु, त्रि. प्रतिकूल । बर अक्स ।
प्रति-बल, त्रि. समर्थ (पु) शत्रु (न) विपक्ष–सैन्य । ताकतवर, दुश्मन, दुश्मन की फौज ।
प्रति-बोध, पु. जागरण, प्रबोध, स्फुरन । जाग, समझ, खिल न ।
प्रति-बोधित, त्रि. जगाया हुआ, समझायाहुआ ।
प्रति-भट, पु. सदृश, प्रतिद्वन्द्वी । मुकाबलेका सिपाही ।
प्रति-भय, त्रि. खौफनाक, खौफका बायस ।
प्रति-भा, स्त्री. बुद्धि, प्रभा, सादृश्य । अकल, फौरण जवाब समझनेवाली अकल, बराबरी ।
प्रति-भान, न. बुद्ध, प्रभा । रौशनी ।
प्रति-भू, पु. ज़ामन ।
प्रति-म, त्रि. (शब्दके परे लगे तो) बराबर, (स्त्री) (मा) हाथीके दोनों दांतोंका बीच, प्रति-मूर्ति, प्रतिबिम्ब, सादृश्य ।
प्रति-मान, न. प्रतिमा देखो ।
प्रति-मानना, स्त्री. पूजा, सम्मान । इज्जत ।
प्रति-मुक्त, त्रि. परिहित, पिनद्ध, त्यक्त, बन्धनमुक्त । पहिराहु०, ढांकाहु०, तजाहु०, छूटाहु० ।
प्रति-मुख, त्रि. सम्मुख; सामने ।
प्रति-मूर्ति, स्त्री. प्रतिकृति । नकल ।
प्रति-यत्न, पु. गुणान्तराधान, संस्कार, लिप्सा, प्रतिग्रह देव, सम्यक्, यत्न, प्रतिशोध । सुधार, लालच, खैरात लेनेकी मर्ज़ी, खूब कोशिश, बदला ।
प्रति-यात, त्रि. प्रतिनिवृत्त; लौट आया हुआ ।
प्रति-यातना, स्त्री. प्रति-कृति । नकल, बदला ।
प्रति-योगिन्, त्रि. सदृश, समान, प्रतिपक्ष । वैसा, इज़त, दुश्मन ।
प्रति-रुद्ध, त्रि. निवारित; रोकाहुआ ।
प्रति-रूप, न. सादृश्य; प्रतिमूर्ति (त्रि) सदृश । बराबर, नकल, यकसां ।
प्रति-रोध, पु. निवारण, प्रतिबंध, तिरस्कार, चौर्य । इनकार, रोक, बे इज़ती, चोरी ।
प्रति-लोम, त्रि. प्रति-कूल, वाम; उलटा ।
प्रति-लोमज, त्रि. उत्तम वर्णकी स्त्रीमेंसे अधम वर्णसे उत्पन्न सन्तान ।
प्रति-वचन, **प्रति-वचस्**, **प्रति-वाक्य**, **प्रति-वाचिक**, } न. प्रत्युत्तर, प्रतिकूल वाक्य, प्रतिध्वनि । जवाबका जवाब, बरअक्स बात ।
प्रति-वस्तूपमा, स्त्री. काव्यालङ्कारविशेष । [वाब ।
प्रति(ती)वाद, पु. प्रति कूल उत्तर । बरअक्स ज-
प्रति-वादिन्, त्रि. प्रतिपक्ष, वादी । मुद्दआलय ।
प्रति-वासिन्, त्रि. पड़ौसी । हमसायां ।
प्रति-विधान, न. प्रतीकार, सज्ञा । इलाज ।
प्रति-विम्ब, पु. न. प्रतिच्छाया । अक्स ।
प्रति-विम्बन, न. साफ़ शफ़ाफ़ वस्तुमे ठीक २ अक्स ।
प्रति-(ती)वेश, पु. पासकी रहनेकी जाग ।
प्रति-वेशिन्, त्रि. प्रतिवासी; पड़ौसी ।
प्रति-शब्द, पु. प्रतिध्वनि; गूंज ।
प्रति-शाय, पु. हत्या । कतल ।
प्रति-शासन, न. नौकरोंको काममें लगाना ।
प्रति-शीर्ष, पु. प्रतिनिधि । कायम मुकायम ।
प्रति-शीर्षक, पु. निष्क्रय; मोल । कीमत ।
प्रति-श्रय, पु. सभा, आश्रय, गृह, यज्ञ-गृह । मजलिस, पनाह घर ।
प्रति-श्रव, पु. अंगीकार । अहद, मनजूरी ।
प्रति-श्रुत्, स्त्री. प्रतिध्वनि; गूंज ।
प्रति-श्रुत, त्रि. अङ्गीकृत । मनजूर किया हुआ ।
प्रति-षिद्ध, त्रि. निवारित । हटाया हुआ ।
प्रति-षेध, पु. निषेध, वर्जन । इनकार, मनह ।
प्रतिष्कश, त्रि. वार्तापुरुष । मददगार, अगवानी ।
प्रति-ष्टम्भ, पु. प्रतिबन्ध; रोक ।
प्रतिष्ठा, स्त्री. सुख्याति । मशहूरी, इज़त, बड़ाई, आठ अक्षरोंके चरणवाला छन्द । [हासिल ।
प्रति-ष्ठित, त्रि. मशहूर, मुअज़िज, खतम, कायम,
प्रति-संविधान, न. प्रतिविधान ।
प्रति-संहार, पु. निवर्तन, प्रत्याकर्षण; पलटा, लौटाओ, वापिसलेना ।

प्रति-संहृत, त्रि. निवर्तित, प्रत्याकृष्ट; हटाया हुआ, खैंचाहुआ, । [एक बुद्धि, गिनती ।
प्रति-संख्यान, न. सांख्य पातञ्जलमें कही हुई
प्रति-सर, पु. व्रणशोधन, द्वार, कड़ा, फौजकी पीठ, मन्त्रविशेष, पु. न. हाथका डोरा, हाथीकी झूल, त्रि. नौकर ।
प्रति-सर्ग, पु. मरीचि आदिकी सृष्टि ।
प्रति-सारित, त्रि. सरकायाहुआ, दूर हटाया हुआ, ठीक साफ़कियाहुआ ।
प्रति-सीरा, स्त्री. यवनिका; पर्दा ।
प्रति-सूर्यक, पु. सूर्यके इरद गिर्दका घेरा ।
प्रति-सृष्ट, त्रि. प्रेरित, छोड़ाहुआ, फेंका हुआ ।
प्रति-हत, त्रि. निरस्त, व्याहत, आहत, प्रतिस्खलित, दिष्ट, रुद्ध, प्रेरित । हटाया हु०, माराहुआ, फिसलाहुआ, दुस्मन, रुकाहुआ, भेजाहुआ ।
प्रति-हन्तृ,(र्तृ), त्रि. हटानेवाला, नाशकरनेवाला।
प्रति-हस्तक, } पु. प्रतिनिधि । गुमाश्ता । का-
प्रति-हस्तिन्, } यम मुकायम ।
प्रति(ती)हार, पु. द्वार, द्वारपाल । दरवाज़ा, दरवान । छल, कपट, (स्त्री) (री) दरवानन ।
प्रति-(ती)हारिन्, पु. स्त्री. (रिणी) दरवान, दरवानन,
प्रति-हार्य, त्रि. परिहार्य; हटाने लायक़ ।
प्रतीक, पु. अवयव (त्रि) प्रतिकूल । जुज़, वरखिलाफ़ ।
प्रतीक्षा, स्त्री. अपेक्षा । इन्तज़ारी, पूजा ।
प्रतीक्ष्य, त्रि. अपेक्षणीय, पूज्य । इन्तज़ारके लायक, मुअज़िज़ ।
प्रतीची, स्त्री. पश्चिमदिशा । मग़रब ।
प्रतीचीन, } त्रि. पश्चिमदिशाका । मग़रबी ।
प्रतीच्य, }
प्रतीत, त्रि. ख्यात । मशहूर, मुअज़िज़, खुश, मोतबिर (स्त्री) (ति) शोहरत, इज़त, खुशी, एतबार, इलम । [विशेष, सजलदेश ।
प्रतीप, त्रि. प्रतिकूल, पु. एक राजा, अर्थालंकर-
प्रतीप-दर्शिन्, त्रि. विपरीतदर्शी (स्त्री) (नी) नारी । वर अक्स देखनेवाला ।
प्रतीयमान, त्रि. ज्ञायमान । म अलूम ।
प्रतीर, न. तट । किनारा ।
प्रतीष्ठ, त्रि. गृहीत; लियाहुआ, पकड़ा हुआ ।

प्रतोद, पु. घोड़े वग़ैरहका कोड़ड़ा ।
प्रतोली, स्त्री. रथ्या; गली ।
प्रत्त, त्रि. दत्त; दियाहुआ ।
प्रत्न, त्रि. पुरातन; पुराना । [नागिया ।
प्रत्यक्ष, व्य. इन्द्रियोंसे जो जाना जाय, (त्रि) जा-
प्रत्यग्र, त्रि. नया, शोधन कियाहुआ ।
प्रत्यङ्ग, न. हरएक अंगमें, अंगके अंग ।
प्रत्यच्, त्रि. पीछेका, पच्छमका ।
प्रत्यनीक, पु. शत्रु, विघ्न, काव्यालङ्कारविशेष ।
प्रत्यन्त, पु. म्लेच्छदेश (त्रि) प्रान्तवर्ती । उसहद्दका ।
प्रत्यभिज्ञा, स्त्री. वह यह वही है ऐसा ज्ञान, एक प्रकारकी याद्दाश्त, स्मरण । [अपील ।
प्रत्यभियोग, पु. अभियोक्ता पर अभियोग ।
प्रत्यय, पु. निश्चय-ज्ञान, । एतबार, यक़ीन, क़सम, सवब, शोहरत, रिवाज ।
प्रत्ययित, त्रि. विश्वस्त । मोतबिर ।
प्रत्यर्थिन्, त्रि. विपक्ष, प्रतिकूल, प्रतिवादी । दुश्मन, वरखिलाफ़, मुद्दआलय । ,
प्रत्यर्पण, न. प्रतिदान; फेर देना ।
प्रत्यवसान, न. भोजन । खाना ।
प्रत्यवसित, त्रि. भुक्त । खायाहुआ ।
प्रत्यवस्कन्द(न), पु. न. मुद्दआलयका जवाव ।
प्रत्यवस्थातृ, त्रि. प्रतिपक्ष । दुश्मन ।
प्रत्यवहार, पु. प्रलय, नाश । तवाही ।
प्रत्यवाय, पु. पाप, क्षति । गुनाह, नुक्सान ।
प्रत्यवेक्षा, } स्त्री. अनुसन्धान, विचार । तलाश ।
प्रत्यवेक्षण, } न. इन्तज़ारी ।
प्रत्यहम्, व्य. प्रतिदिन । हररोज़ ।
प्रत्याख्यात, त्रि. निराकृत, निरुत्साहीकृत । इनकार किया गया, रद्द कियागया, वे हौसला कियागया ।
प्रत्याख्यान, न. निराकरण । नामनजूर । इनकार ।
प्रत्यागत, त्रि. प्रतिनिवृत्त; लौटाहुआ ।
प्रत्यादिष्ट, त्रि. निराकृत, त्यक्त, ज्ञापित । निकाला हुआ, तजा हुआ, जताया हुआ ।
प्रत्यादेश, पु. निराकरण, त्याग, ज्ञापन । हटाना, तर्क करना, जताना । [इच्छावाला ।
प्रत्यानिनीषु, त्रि. प्रत्यानयनेच्छु । वापिस लानेकी

प्रत्या-लीढ, न. तीर चलानेका पैंतड़ा (त्रि) चाटा हुआ, खायाहुआ ।
प्रात्या-वृत्त, त्रि. प्रत्यागत । फिर लौटाहुआ ।
प्रत्याशा, स्त्री. आकांक्षा, प्रत्यय । ख़्वाहिश, उमीद ।
प्रत्याश्वास, पु. पुनर्जीवन, स्वास्थ्य, प्रत्याशा । फिरके ज़िन्दगी, सेहत, फिरके उमीद ।
प्रत्या-सन्न, त्रि. सन्निहित । नज़दीक । [काहुआ ।
प्रत्याहत, त्रि. व्याहत, कुण्ठित । माराहुआ, रु-
प्रत्याहरण, न. फिर लौटा लेना । [आदि संज्ञा ।
प्रत्याहार, पु. वापिस लेना, (व्या.) अचहल् अल्
प्रत्युक्त, न. प्रतिवचन (त्रि) भाषित । जवाब, जवाब दियागया, (स्त्री) (क्ति) जवाब ।
प्रत्युत, व्य. वैपरीत्य । बलकि ।
प्रत्युत्क्रम(मण), **प्रत्युत्क्रान्ति,स्त्री.** } पु. न. युद्धकी कोशिश, असली मुद्दआ पूरा करनेके लिये और काम ।
प्रत्युत्तर, न. जवाब का जवाब । [इस्तकबाल ।
प्रत्युत्थान, न. आगतकी इज़्ज़तके लिये उठना ।
प्रत्युत्पन्न-मति, न. प्रतिभान्वित (स्त्री) झटिति उपस्थित बुद्धि । हाज़र जवाब, हाज़र जवाबी ।
प्रत्युद्गत, **प्रत्युद्यात,** } त्रि. जिसको उत्थान किया है ।
प्रत्युद्गमन, न. आगत व्यक्तिके मानके लिये आगे बढ़ना । इस्तक बाल को जाना ।
प्रत्युद्गमनीय, त्रि. समुपस्थान-योग्य । इस्तक बालके लायक़ (न) धोयेहुए धोती उपरना ।
प्रत्युपकार, पु. उपकारी पर उपकार ।
प्रत्युप्त, त्रि. जड़ाहुआ, पिरोयाहुआ, बोयाहुआ ।
प्रत्यु(त्यू)प, पु. (व्य) (षम्) प्रभात । सुबह ।
प्रत्यूह, पु. विघ्न । खलल ।
प्रत्येक, न. व्य. एक एकको ।
प्रथन, न. प्रकाशकरन । जाहिर करना ।
प्रथम, त्रि. आदिम, मुख्य; १ ला । [औलादा ।
प्रथम-ज, त्रि. अग्रज, ज्येष्ठ; बड़ाभाई, बड़ी
प्रथा, स्त्री. रीति, प्रसिद्धि, विस्तार । रसम, तरीक, फैलाओ । [फैलाहुआ ।
प्रथित, त्रि. प्रसिद्ध, ख्यात, विस्तृत । मशहूर,
प्रथिमन्, पु. स्थूलता, विस्तार । मोटाई, फैलाओ ।
प्रथिष्ठ, **प्रथीयस्,** } त्रि. बहुत बड़ा । बहुत मोटा ।

प्र-द, त्रि. दाता । देनेवाला ।
प्र-दक्षिण, न. पूज्य व्यक्तिको दहनी ओरसे वेष्टन ।
प्र-दत्त, त्रि. समर्पित । दियागया ।
प्र-दर, पु. स्त्रीयोंकी एक बीमारी, चीर फाड़ ।
प्र-दर्शक, त्रि. दिखानेवाला । राह नुमा ।
प्र-दर्शन, न. दिखाना ।
प्र-दर्शित, त्रि. दिखाया हुआ ।
प्र-दान, न. देना । बख़्शना ।
प्र-दिग्ध, त्रि. लिप्त; लिपाहुआ, मिलाहुआ ।
प्र-दिष्ट, त्रि. दिखायाहुआ, दियाहुआ ।
प्र-दीप, पु. दिया । चराग़ ।
प्र-दीपन, न. प्रकाश करना, चमकाना (त्रि) प्रकाश करनेवाला, चमकाने वाला ।
प्र-दीप्त, त्रि. उज्वल, प्रकाशित । उजला, चमकता हुआ, चमकाया हुआ ।
प्र-देश, पु. एकदेश, स्थान, प्रादेश, भित्ति । खित्ता, जगह, बालिश्त, दीवार ।
प्र-देशन, न. हुकम देना, तदबीर, (स्त्री) (शिनी) (शनि) तर्जनी, (अंगुष्ठके पासकी) उंगली ।
प्र-दोष, पु. रजनीमुख । शाम, (त्रि) बड़ा ऐबी ।
प्र-द्युम्न, पु. कन्दर्प, कामदेव ।
प्र-द्योत, पु. दीप्ति, नृपविशेष । बड़ी चमक ।
प्र-द्योतित, त्रि. प्रकाशित । रौशन ।
प्र-द्रव, पु. पलायन; भागना, दौड़ना ।
प्र-द्रुत, त्रि. दौड़ाहुआ; भागाहुआ ।
प्र-धन, न. युद्ध, निधन । जङ्ग, तबाही, नाश ।
प्र-धान, न. त्रिगुणात्म प्रकृति, परमात्मा, मन्त्री, (न) एक श्रेष्ठ (त्रि) श्रेष्ठ । नेक, सर्दार
प्र-धि, पु. चक्र-प्रान्त; चक्रकी धार ।
प्र-धी, स्त्री. उत्तमा-बुद्धि, (त्रि) प्रकृष्ट बुद्धिमान् । उमदह अक़्ल । अक़्ल मंद ।
प्रधूपित, त्रि. सन्तापित; तपाया हुआ ।
प्र-धृष्य, त्रि. सम्यक् धर्षणीय । धमकानेके लायक़ ।
प्र-ध्मात, त्रि. फूंकसे बजाया हुआ ।
प्र-नष्ट, त्रि. मराहुआ, छिपाहुआ, भागाहुआ ।
प्र-पञ्च, पु. समूह, संसार, माया, वैपरीत्य, विस्तार । दुनियां, छल,
प्र-पद, पु. पादाग्र; पाओंका अगला हिस्सा ।
प्र-पदीन, त्रि. पादाग्रसम्बन्धीय; पांओंके आगेका ।

प्र-पन्न, त्रि. शरणागत। तावेदार।
प्र-पा, स्त्री. जल-सत्र; प्याऊ।
प्र-पानक-रस, पु. खांड और काली मिरच मिलाकर एक पीनेकी वस्तु।
प्र-पाठक, पु. वेदका एक भाग विशेष।
प्र-पात, पु. पर्वत आदिका वहुत ऊंचा स्थान, ऊंचा किनारा, पहाड़ी झरना, पानी वगैरहका गिरना।
प्र-पितामह, पु. पड़दादा (स्त्री) (ही) पड़दादी।
प्र-पौत्र, पु. पौत्र सन्तान; पड़पोता, (स्त्री) (त्री) पड़पोती।
प्र-फुल्ल, त्रि. खिलाहुआ, हंसताहुआ।
प्र-वन्ध, पु. रचना, सन्दर्भ, पूर्वापरसङ्गति, प्रकृष्ट वन्धन, वनावट, तरतीव, आगे पीछेकी मिलावट।
प्र-वन्धृ, त्रि. प्रवन्धकर्ता, रचयिता। मुसन्निफ़।
प्र-वल, त्रि. वलवान्। ज़ोरावर।
प्र-वाल, पु. न. नर-पञ्जर, अङ्कुर, विद्रुम, पला, वीणा-दण्ड। आदमी का पिञ्जरा, अंगूरी, मोंगा, वीन वाजेका लकड़ी।
प्र-वुद्ध, त्रि. ज्ञानी, जागाहुआ, समझाहुआ।
प्र-वोध, पु. ज्ञान, जागरण। इलम, जागना।
प्र-वोधन, न. जगाना, समझाना, उक्साना।
प्र-वोधित, त्रि. जागाहुआ, समझायाहु०, उक्सायाहुआ।
प्र-भञ्जन, पु. वायु। हवा।
प्र-भव, पु. उत्पत्ति-स्थान, कारण, संवत्सरविशेप। जा पैदयश, सवव, सठ सम्मतिमेंसे एक।
प्र-भवत्, त्रि. प्रभु, समर्थ। हाकिम। ताकतवर।
प्र-भविष्णु, त्रि. प्रभु। हाकम। ताकतवर।
प्र-भविष्णुता, स्त्री. प्रभुत्व। हकूमत।
प्रभा, स्त्री. दीप्ति, प्रकाश। रौशनी, चमक।
प्रभा-कर, पु. सूर्य, अग्नि, मीमांसक पण्डित विशेष।
प्रभात, न. प्रातःकाल। सुवह (त्रि) चमकीला, रौशन।
प्रभा-प्रभु, पु. सूर्य। आफ़ताव।
प्रभाव, पु. धन और रण जनित तेज; प्रभुभक्ति, सामर्थ्य, महिमा, उद्भव। ताकत, रोवदाव, शान, वड़ाई।
प्रभास, पु. वसु विशेष, तीर्थविशेष।
प्र-भिय, पु. मत्त-हस्ती, (त्रि) प्रस्फुटित, प्रकाशित। मस्तहाथी, खिलाहुआ, ज़ाहिर।
प्रभु, पु. विष्णु, स्वामी, राजा, (त्रि) जो सजा जज़ा दे सके, ताकतवर, नेक।
प्रभुता, } स्त्री. प्रभाव, स्वामित्व, सामर्थ्य, प्राधान्य।
प्रभुत्व, } न. हकूमत रोव, फ़ज़ीलत।
प्र-भूत, त्रि. प्रचुर, उत्पन्न। ज्यादह, पैदा हुआ २।
प्रभृति, व्य. अवधि (शब्दके आगे लगे) वहांसे।
प्र-भेद, पु. प्रकार। तरह।
प्र-भेदनी, } स्त्री. भेदकारिनी, वेधनास्त्र। आर।
प्र-भेदिका, }
प्र-भ्रंश, पु. पतन; गिरना। [हुआ।
प्र-भ्रष्ट, त्रि. पतित, नष्ट। गिराहुआ, तवाह किया
प्रभ्रष्टक, न. चोटीपर पहिनी हुई माला।
प्र-मण(न)स्, त्रि. हृष्टचित्त। खुशदिल।
प्र-मत्त, त्रि. प्रमादी, अत्यासक्त। पागल, वेपरवाह।
प्रमथ, पु. शिवजीका अनुचर,।
प्र-मथन, न. वध, उन्मूलन, त्याग, । क़तल, उखाड़न, मलना, कुचलना, विलोना, निरादर।
प्रमथाऽधिप, पु. शिव। महादेव।
प्र-मद, पु. मत्त, उन्मत्त। मस्त, पागल (स्त्री) (दा) दिल लुभानेवाली स्त्री।
प्रमद-कानन, } न. राजाओंके रनवासमेंका वगीचा।
प्रमदोद्यान, }
प्रमा, स्त्री. प्रमिति, निश्चय ज्ञान। यकीन।
प्रमाण, न. निश्चय करानेके कारण। १ प्रत्यक्ष २ अनुमान ३ उपमान ४ शब्द। साक्षी, लेख्य, शास्त्र, परिमाण, ज्ञानेन्द्रिय, प्रधान, प्रमाता, सत्यवादी, विश्वास, निश्चय।
प्रमाणिका, स्त्री. आठ अक्षरके चरणवाला एक छंद।
प्रमाणीकृत, त्रि. प्रमाणरूपसे निश्चय कियाहुआ। मनज़ूर किया हु०। [नाना पड़नानी।
प्र-मातामह, पु. मातामहका पिता (स्त्री) (ही) पड़
प्र-मातृ, त्रि. प्रमाण-कर्ता। पैमाश करनेवाला।
प्रमाथ, पु. वध, मर्दन, मथन। क़तल, मलना, मथना। [लने वाला।
प्रमाथिन्, त्रि. दुःख देनेवाला, मथनेवाला। कुच-
प्रमाद, पु. अनवधानता, भ्रम, उन्माद। वे तवज्जगी, भूल, मस्ती।

प्रमापण, न. वध । कतल ।
प्र-मित, त्रि. विदित, निश्चित, परिमित । जाना हु०, यकीन किया, मापाहुआ (ति) यकीन ।
प्रमिताक्षरा, स्त्री. १२ अक्षरका एक छन्द ।
प्रमीत, त्रि. मृत; मराहुआ ।
प्र-मीलन, न. निमीलन; मीटना ।
प्रमीला, स्त्री. तन्द्रा, मुद्रण, मेघनादकी स्त्री ।
प्र-मुख, न. आरम्भ (त्रि) शब्दके परे लगे १ म, प्रधान, आदि, पु. ज्येष्ठ ।
प्र-मुद्, त्रि. प्रहृष्ट (स्त्री) वहुत खुश, वड़ी खुशी ।
प्र-मुदित, त्रि. हृष्ट, प्रफुल्ल । खुश, खिलाहुआ ।
प्र-मृष्ट, त्रि. मार्जित, निरस्त । मांजाहुआ । चमकाया हुआ । [भिगोया हुआ ।
प्र-मेदित, त्रि. स्निग्धीकृत । चिकनाकिया हुआ,
प्र-मेह, पु. रोगविशेष । यर्कान ।
प्र-मोक, पु. छुड़ाना । रिहाई ।
प्र-मोचन, न. छुड़ाना । रिहा करना ।
प्र-मोद, पु. आमोद, । खुशी ।
प्र-मोदित, त्रि. आमोदित । खुशकिया हुआ ।
प्र-यत, त्रि. पवित्र, नियमयुक्त पाक, वा कायदा ।
प्र-यत्न, पु. प्रयास । कोशिश ।
प्र-याग, पु. तीर्थविशेष; जहां गङ्गा यमुना सरस्वती तीनों मिलती हैं, यज्ञ, अश्वमेध, घोड़ा ।
प्र-याण, न. युद्ध-यात्रा, प्रस्थान । जङ्गकी झड़ाई रवानगी ।
प्र-याम, पु. दैर्घ्य, संयम । लंबाई, संजीदगी ।
प्र-यास, पु. श्रम, यत्न, इच्छा । मेहनत, ख़ाहिश ।
प्र-युक्त, त्रि. रचित, अनुष्ठित, अर्पित, नियुक्त, प्रेरित, उल्लिखित, उच्चरित, उदाहृत ।
प्र-युञ्जान, त्रि. प्रयोगकारी । तदवीर कुनिन्दा ।
प्र-युत, न. संख्याविशेष (त्रि) संयुक्त । एकलाख ।
प्र-युद्ध, न. अतियुद्ध । बड़ा जङ्ग ।
प्रवण, त्रि. झुकाहुआ, वहिताहुआ, सामने, मुताविक, काबू, होशियार, जल्दबाज़, हलीम, (पु) चौरास्ता ।
प्र-वयन, न. प्राजन-दण्ड । जुलाहेकी नली ।
प्र-वयस्, त्रि. वृद्ध, प्राचीन । बूढ़ा, पुराना ।
प्र-वर, न. गोत्र, सन्तान, (त्रि) अतिश्रेष्ठ ।
प्रवर्तक, त्रि. प्रवृत्तिदायक, प्रणेता । उकसानेवाला ।
प्रवर्तन, न. स्त्री (ना) काममें लगाना । [कहाहुआ ।
प्रवर्तित, त्रि. चालित । किसीकाममे लगानेको
प्र-वर्तिन्, त्रि. प्रवृत्त होनेवाला ।
प्रवर्ह, त्रि. श्रेष्ठ । उमदह ।
प्रवह, पु. वायुवि०, प्रवाह । धार । [प्रवाह ।
प्रवहन, न. ऊपरसे ढंकाहुआ छकड़ा, जहाज़ ।
प्र-वाच्, त्रि. प्रकृष्ट-वक्ता । फ़सीह कलाम ।
प्रवाच्य, त्रि. निन्द्य; निन्दाके योग्य । [नली ।
प्रवाणि(णी), स्त्री. तन्तुवाय शलाका; तांतीकी
प्रवाद, पु. अपवाद, निंदा, आपसकी वात चीत । हजो, अफ़वाह ।
प्र-वास, पु. विदेशस्थिति । ज़िलावतनी ।
प्र-वासन, न. विदेशमें भेजना, निकालना, मारना ।
प्र-वासित, त्रि. विदेशमें भेजाहुआ, निकाला हुआ, माराहु० ।
प्र-वासिन्, त्रि. विदेशस्थ । परदेसी ।
प्र-वाह, पु. स्रोतः; धार ।
प्र-वाहिका, स्त्री. ग्रहणी रोग । इसहालकी बीमारी ।
प्र-वाहिन्, त्रि. प्रवहनशील । वहनेवाला ।
प्र-विदारण, न. युद्ध, विदारण । जङ्ग, फाड़ना, चीरना । [हुआ, गुम ।
प्र-विलुप्त, त्रि. मृष्ट, विलीन । मांजाहुआ, छिपा
प्रवीण, त्रि. निपुण, विज्ञ । होशियार, दाना ।
प्र-वीर, पु. प्रकृष्ट-वीर, प्रधान । बड़ा वहादुर, मुखिया ।
प्र-वृत्त, त्रि. रत, आरब्ध, चलित (स्त्री) (त्ति) इच्छा, यत्न, वार्ता, व्यापार, उत्पत्ति । मसरूफ़, शुरुकिया, हुआ, हिलाहुआ, ख़ाहिश, कोशिश, काम, पैदाश ।
प्र-वृत्ति-निमित्त, न. शक्यतावच्छेदक-धर्म ।
प्र-वृद्ध, त्रि. अति-वृद्धियुत । बहुत बड़ाहुआ ।
प्र-वेणि(णी), स्त्री. केश-विन्यास । बालोंकी बनावट, गुत्त ।
प्र-वेश, पु. अन्तर्गमन । दख़ल । [दख़ल ।
प्र-वेशन, न. सिंहद्वार, प्रवेश । बड़ी डेउडी,
प्रवेश्य, त्रि. प्रवेशके योग्य । दाख़ल होनेके लायक़ ।
प्रवेष्ट (क) पु. बाहु । बाज़ू ।
प्रव्रजित, त्रि. प्रवासगत, भिक्षु, संन्यासी । कहीं चलागयाहुआ, भिखारी, फ़क़ीर ।

प्रव्रज्या, स्त्री. सन्यास, प्रवास, तर्क। जलावर्तनी।
प्रव्रज्या-वसित, पु. अवसित; जिसने सन्यास व्रतको तोड़ डाला है। [करीया।
प्रशंसा, स्त्री. स्तुति, धन्यवाद। तअ़रीफ़। शु-
प्र-शम, पु. शान्ति, वैराग्य। सबर। कनायत।
प्र-शमन, न. हनन, निवारण, अनुरञ्जन, शान्ति। कतल, हटाना, खुशकरना, सबर।
प्र-शान्त, त्रि, निश्चल, शान्तियुत। बेहर्कत, चुपचाप। [चुपचाप, कांयम।
प्र-शान्त-चेष्ट, त्रि. बाह्य-व्यापारशून्य, स्थिर,
प्रश्न, पु. पृच्छा। सवाल।
प्रश्रय, पु. स्नेह, आदर, विनय, विश्वास। मुहब्बत इज़त, हलीमी, एतकाद। [दियाहुआ।
प्रश्रित, त्रि. विनीत, आदत। हलीम, इज़्ज़त
प्रश्लथ, त्रि. शिथिल; ढीला।
प्रष्टृ, पु. त्रि. प्रश्नकर्ता, जिज्ञासु। सायल, जाननेकी खाहिशकला।
प्रष्ठ, त्रि. अगुआ, पहिला, नेक। [आदि।
प्रष्ठ-वाह, पु. युगपार्श्वस्थ वाहक; जोड़ीके बैल
प्रसक्त, त्रि. आसक्त, संलग्न, प्रस्तावित। आशक, जुड़ाहुआ मौजूदह स्त्री. (क्ति) प्रसङ्ग, सङ्गतिविशेष, आसक्ति, प्रवृत्ति, आपत्ति। एक कहनेसे बहुतोंकी प्राप्ति, प्यार, आशकी, दखल, मुसीबत।
प्र-संख्यान, न. अत्मानुसन्धान। अपने आपको खोजना, गिनना।
प्र-सङ्ग, पु. सम्बन्ध, सङ्गतिविशेष, प्रस्ताव, आपत्ति।
प्रसञ्जन, न. अवसरदेना, प्रसन्न करना। मौकादेना, खुशकरना।
प्रसज्य-प्रतिषेध, पु. प्राप्तका निषेध (व्या) एक स्मिन् बहूनां प्राप्तिः [मेल, रिश्तह;
प्रसत्ति, स्त्री. प्रसन्नता, निर्मलता। खुशी, पाकीज़गी।
प्रसन्न, त्रि. सन्तोषी, फूलाहुवा, साफ़ (स्त्री) (न्ना) सुरा। [मिहरबानी, खुशी, सफ़ाई।
प्रसन्नता, स्त्री. अनुग्रह, सन्तोष, निर्मलता।
प्रसभ, न. व्य. बलात्। ज़ोरसे।
प्र-सर, पु. विस्तार, उत्पत्ति, व्याप्ति, चलन, वेग। फैलाव, पैदाश, रफ़तार, तेज़ी।
प्र-सरण, न. स. (णी) शत्रुकी सेनाको चारों ओरसे घेर लेना, फैल जाना।
प्र-सर्पण, न. जाना, फैलना, फैलाव।
प्रसव, पु. गर्भमोचन, उत्पत्ति, सन्तान, फल, फूल, कारण। पैदाश, औलाद, सबब।
प्रसवितृ, **प्रसविन्**, } त्रि. प्रसव-कर्ता। पैदा करनेवाला।
प्र-सव्य, त्रि. प्रतिकूल। बर अक्स।
प्र-सहन, न. क्षमा; सहारा।
प्रसह्य, व्य. बलात्। ज़ोरसे।
प्र-साद, पु. खुशी, सेहत, मेहरबानी, सफ़ाई, काव्यमे एक गुण, पद और अर्थकी प्रसिद्धि, देवता वा गुरुओंकी जूठ।
प्रसाधक, त्रि. अलंकर्ता, साधक, (स्त्री) (धिका) अलंकर्त्री। लिबास पहिरानेवाला, लगानेवाला, लिबासपहिरानेवाली। [(स्त्री) (नी) कंघी।
प्र-साधन, न. सजाना, कांटे हटाना, तैयार वस्तु,
प्र-साधित, त्रि. आरास्ता, तैयार किया हुआ, साफकिया हुआ।
प्र-सार, पु. विस्तार, निकास फैलाव, रफ़तार।
प्रसारण, न. विस्तारकरण; फैलाना, फैलाव।
प्रसारित, त्रि. फैलायाहुआ।
प्रसारिन्, त्रि. प्रसरणशील; फैलनेवाला।
प्रसित, त्रि. आसक्त (स्त्री) (ति) बंधनसाधन; लगाहु०, बांधनेकी डोरी।
प्र-सिद्ध, त्रि. विख्यात। मशहूर (स्त्री) (द्धि) मशहूरी, कामयाबी।
प्रसू, स्त्री. जननी। मां, घोड़ी, बेल, केलेकापेड़।
प्र-सूत, त्रि. जात, उत्पादित। पैदाहुआ हुआ, पैदाकिया हुआ, (स्त्री) (ता) (तिका) नई ब्याई हुई स्त्री (ति) पैदायश औलाद, हमल, मां, सबब।
प्र-सून, न. फूल, फल, (त्रि) जानाहु०, पैदाहु०।
प्र-सृत, त्रि. फैलाहुआ, बढ़ाहुआ, निकलाहु०। सर्काहुआ, (पु) चुक, (स्त्री)(ता). जांघ(ति) चुक।
प्र-सेक, पु. निषेक, सिञ्चन। सींचना।
प्र-सेवक, पु. वीन बाजेके बंद, (स्त्री) (विका) खलियान, पात्रविशेष।
प्रस्कन्दिका, स्त्री. क्षयरोग। सिल्हकी बीमारी।
प्रस्कण्व, पु. ऋषिविशेष, (त्रि) क्षरित, गत, शुष्क। खिरा हुआ, गया हुआ, सूखा।
प्र-स्तर, पु. पाषाण, मणि। पत्थर, जवाहर।

प्र-स्तार, पु. तृणवन, पत्तोंका विस्तरा, पिङ्गलका एक तरीक, विस्तार, समूह ।
प्रस्ताव, पु. प्रकरण, प्रसङ्ग ।
प्रस्तावना, स्त्री. आरम्भ, नाटककी खेलके आरंभ करनेके समय नटद्वारा संपूर्ण खेलका बयान ।
प्रस्तुत, त्रि. तअरीफ किया हुआ, तैयार ।
प्रस्थ, पु. न. पहाड़की चोटी, ३२ सेर परिमाण, जङ्ग, विस्तार ।
प्रस्थान, न. गमन, युद्ध-यात्रा । रवानगी, सफ़र ।
प्रस्थापित, त्रि. प्रेरित; भेजाहुआ । रवना किया हुआ ।
प्र-स्थित, त्रि. गमनोद्यत; जानेको तैय्यार ।
प्र-स्रव, पु. क्षरण, दुग्धक्षरण; बहना, दूदबहना ।
प्र-स्फुट, त्रि. विकसित; खिलाहुआ ।
प्र-स्फोटन, न. छाज, फोड़ना, फाड़ना, खिंडाना ।
प्र-स्राव, पु. मूत्र । पेशाब । [(न.) सोना ।
प्र-स्वापन, त्रि. सुलानेवाला, नींदलानेवाला
प्र-हत, त्रि. आहत, ताडित, वादित, क्षुण्ण, जित, विस्तृत । माराहुआ, ताड़ाहु०, बजायाहु०, खुदाहु०, जीताहु०, फैलहुआ ।
प्रहर, पु. याम, दिनरातका आंठवां भाग; पहर ।
प्र-हरण, न. डांपाहुआ छकड़ा, चोट ।
प्रहरण-कलिका, स्त्री. १८ अक्षरका एक छन्द ।
प्र-हरिन्, पु. स्त्री. चौकीदार, पहिरुआ ।
प्र-हर्तृ, त्रि. योद्धा; मारनेवाला, जंगी । [एकछन्द ।
प्र-ह(र्ष)र्षिणी, स्त्री. १७ अक्षरके चरणवाला
प्र-हसन, न. अति हंसी, व्यङ्गसे कहना, हंसी, करना । नाट्यका एक ख़ास ग्रन्थ ।
प्र-हस्त, पु. विस्तृताङ्गुली हस्त । चपेड़ ।
प्र-हार, पु. आघात, युद्ध । चोट, जंग ।
प्र-हास, पु. अतिहास्य; बहुतहंसी ।
प्रहि, पु. कूप; कूआ ।
प्र-हित, त्रि. प्रक्षिप्त, प्रफुल्ल, प्रेरित, निरस्त, दत्त। फेंकाहुआ, दियाहुआ, फूलाहुआ, भेजाहुआ, दियाहुआ ।
प्र-हृत, त्रि. निग्रहीत, आहृत (न) प्रहार ।
प्रहेलिका, स्त्री. कूट-प्रश्न; पहेली ।
प्र-ह्ला(ह्ला)द, पु. हिरण्यकश्यपका पुत्र । [खुशी ।
प्रह्लादन, न. त्रि. आनन्दजनक; खुशकरनेवाला ।
प्रह्व, त्रि. नम्र, विनीत । झुकाहुआ, हलीम ।
प्रांशु, त्रि. उच्च; ऊंचा लंबा ।
प्राक्, व्य. पहिले, आगे ।
प्राकाम्य, न. स्वच्छन्दाऽनुवर्तितारूप ऐश्वर्य । आठ सिद्धियोंमेंसे एक (जोचाहें करसकें)
प्राकार, पु. प्राचीर, वेष्टन । फ़सील ।
प्राकृत, त्रि. नीच, पृथक्जन, प्रजासम्बन्धीय, स्वाभाविक, लौकिक । अदना आम, कुदरती, दुनयवी ।
प्राकाल, पु. पूर्वसमय; पहिला समय ।
प्राक्तन, त्रि. पूर्वकालीन, पहिला, पुराना ।
प्राखर्य, न. प्रखरता । तेज़ी ।
प्रागभाव, पु. उत्पत्तिके पहिले कार्यका नहोना ।
प्रागल्भ्य, न. औद्धत्य । होशियारी ।
प्राग्-ज्योतिष्, पु. कामरूपदेश । बहु० । उसदेशके निवासी ।
प्राग्भाव, पु. अगला हिस्सा ।
प्राग्र-हर, प्राग्र्य, त्रि. श्रेष्ठ । अच्छा ।
प्राग्वंश, पु. यज्ञघरके सामनेका घर ।
प्राघार, पु. घृतादि क्षरण, क्षरण, यज्ञाग्नि; घी आदिका चूना, यज्ञकी आग ।
प्राघुण(णिक), पु. अतिथि, आगन्तु । महिमान।
प्राङ्गण, न. आंगन, पणव बाजा ।
प्राच्, (ञ्च्) त्रि. पूर्वकाल, पूर्वदेश, (स्त्री) (ची) पूर्वदिशा । [दिशाका ।
प्राचीन, त्रि. पूर्वकालीन, पुरातन, वृद्ध, पूर्व-
प्राचीन-बर्हिस्, पु. इन्द्र, नृपविशेष । एक ख़ास राजा । जनेऊ ।
प्राचीनावीत, न. दक्षिणस्कन्ध लम्बितसूत्रादि ।
प्राचीर, न. प्रान्तस्य आवृति । फ़सील ।
प्राचुर्य, न. आधिक्य । ज़ियादती ।
प्राचेतस, पु. वरुणपुत्र; वाल्मीकी ।
प्राच्य, त्रि. पूर्वदेशका (पु.) पूर्वदेश ।
प्राजक, त्रि. चालक, सारथि । कोचवान् ।
प्राजन, न. चालन-दण्ड; चप्पा ।
प्राजापत्य, पु. विवाहविशेष १२ दिन का एकव्रत, त्रि) प्रजापतिका, (स्त्री) (त्या) संन्यासाश्रममें प्रवेश करनेसे पहिले सर्वस्वदानरूप यज्ञ ।

प्राजितृ, पु. सारथि, (त्रि) चालक। गाड़ीवान।
प्राज्ञ, त्रि. विज्ञ, निपुण, (पु) पण्डित, (स्त्री) (ज्ञा) पण्डितकी स्त्री।
प्राज्य, त्रि. बहुत, (न) अच्छा घी।
प्राञ्जल, त्रि. सरल; सीधा, सोखा।
प्राञ्जलि, पु. बद्धाञ्जलि; हाथ जोड़ेहुए।
प्राडविवाक्, प्राड्विवेक, पु. राजाका प्रधान मन्त्री।
प्राण, पु. हृदयमेंका एक पवन, हवा, ज़ोर, जान, (पु) बहु० प्राण अपान समान उदान और व्यान ५ पवन, (त्रि) पूरित। [कातिल।
प्राण-च्छिद, त्रि. प्राणनाशक; मारनेवाला।
प्राण-द, त्रि. प्राणदाता (स्त्री) (दा) हरीतकी।
प्राणन, न. जीवनधारण; ज़िंदारहना।
प्राण-नाथ, पु. भर्ता, स्वामी। खाविन्द।
प्राणा-न्त, पु. मरण; मौत।
प्राण-भृत्, त्रि. प्राणी, जीव। ज़िन्दह।
प्राण-यात्रा, स्त्री. जीविका। गुज़ारा।
प्राणा-याम, पु. अंगुष्टसे एक नासबंदकरके दूसरी नाससे वायुलागरूप पूरक; दोनोंनास बंदकर वायुका भीतर रोकना कुम्भक; बांई नासको बंदकर दांई नाससे वायु निकालना रेचक प्राणायाम है।
प्राणि-द्यूत, न. मेंढों और मुर्गोंके युद्ध।
प्राणिन्, पु. जीवजन्तु। जानवर
प्राणेश, पु. पति, (स्त्री) (शा) प्रणयिनी प्यारी। ख़ाविन्द, प्यारी।
प्रातःसन्ध्या, स्त्री. प्रभातकाल, प्रभातसमयमें उपास्यसंध्या। सुबह, सुबह की उपासना।
प्रातर, व्य. प्रत्यूष; प्रभात।
प्रातराश, पु. प्रातःकालका भोजन; कलेवा।
प्रातिकूलित, त्रि. प्रतिकूलवर्ती। बरअक्स हुआ।
प्रातिकूल्य, न. प्रतिकूलाचरण। बरअक्सकारवाई।
प्रातिपदिक, न. विभक्तिरहित व्यक्तिवाचक वा विशेषणवाचक शब्द, नाम, इसम।
प्रातिभाव्य, न. प्रतिभू-कर्म। ज़ामनबनना।
प्रातिलोम्य, न. वैपरीत्य; उलटपन।
प्रातिशाख्य, न. वेदशाखासम्बन्धीय *व्याकरणवि०।*
प्रातिबिम्बक, त्रि. स्वकीय, असाधारण। अपना, ख़ास।
प्रातिहार(रिक), त्रि. मायावी, (न.) प्रतिहारीका काम। छलिया, पहिरा। [ज़ामन।
प्रात्ययिक, त्रि. विश्वस्त, (पु.) प्रतिभू। मोतबिर,
प्राथम-कल्पिक, पु. वेदपाठारम्भकारी छात्र (त्रि) प्रथमकल्पका। शिष्य जिसने पहिले पहिल वेद का आरंभ किया है, पहिले कल्प का।
प्राथमिक, त्रि. प्रथमकालीन; पहिलेसमयका।
प्राथम्य, न. प्रथमत्व; पहिलापन।
प्रादुर्भाव, पु. आविर्भाव, प्रकाश। ज़हूरा।
प्रादुस्, व्य. प्रकाश, प्रत्यक्ष, नास, सम्भावना, सत्ता। *आदि अर्थों का बोधक।*
प्रादेश, पु. विस्तृत तर्जनीसे अंगूठेतक।
प्रादेशन, न. दान। खैरात [कूमत, बुज़ुर्गी।
प्राधान्य, न उत्कर्ष, श्रेष्ठत्व, प्रभुत्व। बड़ाई, हु-
प्राध्ययन, न. अच्छीभांत पढ़ना, वेदपढ़ना।
प्राध्व, पु. रथादि, सत्पथ, (त्रि) नम्र, पथगामी।
प्राध्वम्, व्य. आनुकूल्य, नम्रता। हलीमी।
प्रान्त, पु. शेषसीमा। हद्द।
प्रान्तर, व्य. वृक्षादि शून्य दूर पथ, वन, कोटर।
प्रापक, त्रि. अधिगन्ता, अधिगमक। पहुचानेवाला
प्रापण, न प्राप्ति; पाना। बड़ी दुकान्।
प्रापणिक, त्रि. वणिक्; बनियां।
प्रापित, त्रि. अधिगमित। हासिलकियाहुआ।
प्राप्त, त्रि. लब्ध। हासल।
प्राप्त-काल, त्रि. आसन्न मृत्युः मरनेपर, समयपर।
प्राप्त-रूप, त्रि. रम्य, उचित, विज्ञ। खूबसूरत, मुनासिब, दाना।
प्राप्ति, स्त्री. लाभ, अधिगम, वृद्धि, उदय। हसूल।
प्राप्य, त्रि. लभ्य, गम्य। हासिलकरनेकेलायक।
प्राबल्य, न. प्रबलत्व, उत्कटता, शक्ति। ज़ोरावरी। ताकत।
प्राभृत, न. नैवेद्य, चढ़ावा, भेंट। [मोतबिर।
प्रामाणिक, त्रि. प्रमाणसिद्ध, विश्वास्य, अध्यक्ष।
प्रामाण्य, न. विश्वासकता, प्रमाणत्व। मोतबिरी।
प्रामादिक, त्रि. अनवधानताजनित। बेपरवाही का नतीजा।
प्रामितिक, त्रि. *सीमाबद्ध। मियादी।*
प्राय, पु. इच्छापूर्वक अनशन मृत्यु, मृत्यु, उप-वास। जानकर फाकेसे मरना, मौत, फाका।

प्रायशस्, व्य. अक्सरकरके, बहुतकरके ।
प्रायश्चित्त, न. स. पाप दूर करनेके काम; प्रायः नाम तपका और चित्त नाम निश्चयका है तप और निश्चयकरके जो युक्त है उसको प्रायश्चित्त कहते ।
प्रायश्चित्तिन्, त्रि. प्रायश्चित्त करने योग्य पुरुष ।
प्रायश्चेतन, न. "प्रायश्चित्त" । देखो
प्रायस्, व्य. बाहुल्य । बहुतायतसे, अक्सर ।
प्रायोपवेश(न), पु. न. इच्छापूर्वक अएशनार्थवास । (का) अपनी मरजी फाका करके मरने को एक जगह बैठना ।
प्रारब्ध, त्रि. जो आरम्भ किया है (पु) जिनकर्मसे शरीर बनाहै ।
प्रारम्भ, पु. उपक्रम, कार्य (त्रि) सत्कार्यकारी । शुरु ।
प्रारिप्सित, त्रि. आरम्भ करनेको चाहाहुआ ।
प्रार्थन, न. (स्त्री) (ना) याचना, अभिमान, अवरोध । मांगना, गरूर, घुंगट, बुर्का ।
प्रार्थनीय, त्रि. प्रार्थनाके योग्य । जिसके आगे प्रार्थना की गयी है ।
प्रार्थयितृ, पु. याचक; मांगनेवाला ।
प्रार्थित, त्रि. याचित, हत । मांगाहुआ, माराहु० ।
प्रालम्ब, पु. हारविशेष; ऋजुलम्बी माला ।
प्रालेय, न. हिम । बरफ़ ।
प्रावरण, } न. उत्तरीयवस्त्र, आवरणवस्त्र ।
प्रावार, } पु. चादर, बुरका । [शियारी ।
प्रावीण्य, न. प्रवीणता, दक्षता, नैपुण्य । हो-
प्रावृति, स्त्री. आवरण; पर्दा ।
प्रावृष्(षा) स्त्री. वर्षाकाल । मौसिम वर्सात ।
प्रावृषिज, } त्रि. वर्षाकालीन । बरसातका (पु.)
प्रावृषेण्य, } कदमवृक्ष ।
प्राशन, न. भोजन । खुराक ।
प्राशित, त्रि. भुक्त । खायाहुआ ।
प्राश्निक, त्रि. प्रश्न श्रवणकरके विचारकरनेवाला ।
प्रास, पु. अस्त्रविशेष, कुन्त । [जूआ ।
प्रासङ्ग, पु. वृषआदिके स्कन्धका युगकाष्ठविशेष;
प्रासङ्गिक, त्रि. सम्पर्कीय; प्रसङ्गका । मौकेका ।
प्रासङ्ग्य, पु. छकड़ाआदिमे जुपे हुए बैलआदि ।
प्रासाद, पु. देवताका घर । शाही महल ।
प्रासिक, त्रि. कुन्त अस्त्रसे लड़नेवाला, प्रास का ।
प्रास्त, त्रि. प्रक्षिप्त, निरस्त, निर्वासित । फेंकाहु०, निकालाहु० हाराहु० ।
प्रास्थानिक, त्रि. प्रस्थान कालमे उचित । रवानगीके समय कर्तव्य काम ।
प्राह्ण, पु. पूर्वाह्ण; पहिला पहिर ।
प्राह्णिक, त्रि. पहिरका । [सुबा ।
प्राह्णेतराम्(माम्), व्य. बहुतप्रभात । अल-
प्रिय, पु. स्वामी, मृगविशेष, (स्त्री) (या) भार्या (त्रि) प्रीतिपात्र ।
प्रिय-कार, त्रि. प्रिय-कारी, अनुकूल । मुताबिक ।
प्रियम्वद, त्रि. प्रिय-भाषी । मीठाबोलनेवाला । शीरीं कलाम ।
प्रियक, पु. चीता, कदमवृक्ष, केसर, रोली ।
प्रिय-ङ्कर, त्रि. प्रियकारी । भला करने वाला ।
प्रियम्भविष्णु, त्रि. संप्रति प्रियंभूत । अभी प्यार कियाहु० ।
प्रियङ्गु, स्त्री. फलिनीलता, श्यामालता ।
प्रिय-तम, त्रि. अतिप्रिय; बहुतप्यारा ।
प्रियता, स्त्री. स्नेह । मुहब्बत ।
प्रिय-दर्शन, त्रि. सुदृश्य । खूबसूरत ।
प्रिय-वादिन्, त्रि. प्रियभाषी । मीठी बात करनेवाला ।
प्रियव्रत, पु. स्वयम्भू मनुका बड़ापुत्र ।
प्रिय-सख, पु. परम-मित्र, (स्त्री) (खी) सहेली ।
प्रियाल, पु. राजादन वृक्ष, पियालवृक्ष ।
प्रीणन, न. तर्पण, प्रीति-जनक । सेरकरना, खुश करनेवाला ।
प्रीणित, त्रि. तृप्त कियाहुआ, प्रसन्नकियाहुआ ।
प्रीत(ण), त्रि. तृप्त, (स्त्री) (ति) तृप्ति, हर्ष, प्रेम, इच्छा, योगवि० ।
प्रीति, स्त्री. अभ्याससे अभिमानसे सम्प्रदायसे और विषयोंसे चार प्रकारकी प्रीति मानीगईहै ।
प्रीतिमत्, त्रि. प्रीतियुक्त । मुहब्बती, मेहरबान ।
प्रुष्ट, त्रि. दग्ध; जलाहुआ ।
प्रेक्षण, न. दर्शन, चक्षुः । दीदार, चश्म ।
प्रेक्षणीय, त्रि. दर्शनीय । देखने के लायक ।
प्रेक्षा, स्त्री. विचार, बुद्धि, दृष्टि, नृत्यदर्शन ।
प्रेङ्खित, त्रि. } त्रि. चालित, कम्पित; हिलाया-
प्रेङ्खोलित, त्रि. } हुआ, कंपायाहु० ।

प्रेङ्खोलन, न. दोलन; झुलाना । झुराना ।

प्रेत, पु. पिशाच (त्रि) मृत, (ता) प्रेतनदी ।

प्रेत-कर्मन्, } न. शव दाहसे लेकर सपिण्डीकरण-
प्रेत-कार्य, } तक क्रिया ।

प्रेत-गृह, न. श्मशान; मरघट ।

प्रेत-नदी, स्त्री. वैतरणी नदी ।

प्रेत-पति, पु. यमराज । मलिकुल मौत ।

प्रेत्य, परलोकमें; मरकर ।

प्रेप्सु, त्रि. प्राप्तीच्छु; प्राप्तकरनेकी इच्छावाला ।

प्रेमन्, पु. न. प्रणय, स्नेह । मुहब्बत ।

प्रेयस्, त्रि. प्रियतम; बहुतप्यारा ।

प्रेरण, } न. स्त्री. (णा) नियोग; पठाना, भेजना ।
प्रेषण, }

प्रेरित, } त्रि. नियुक्त; भेजाहुआ ।
प्रेषित, }

प्रेष्ठ, त्रि. प्रियतम; बहुतप्यारा ।

प्रेष्य, त्रि. प्रेरणीय, दास, दूत । भेजने के योग्य, गुलाम, जासूस ।

प्रोक्त, त्रि. कथित, (न) कथन । कहाहुआ, कहना ।

प्रोक्षण, न. सेचन, यज्ञआदिमे पशुवध ।

प्रोक्षित, त्रि. सिक्त; यज्ञ आदिमे माराहुआ, यज्ञमें पूजाहुआ ।

प्रोच्छून, त्रि. सम्यगुच्छून; । [छीड़ा हुआ ।

प्रोज्झित, त्रि. दुलाया, चलाया, कंपायाहु०,

प्रोञ्छन न. मार्जन; धोना, पूंछना ।

प्रोत, त्रि. सीयाहु०, गांठाहु०, जड़ाहु०, विंधाहु०, गाडाहु०, (न) वस्त्र । [क्तावट ।

प्रोत्साह, पु. प्रत्युत्साह, उत्तेजना । हौसला, उ-

प्रोत्साहित, त्रि. उत्साहयुक्त । दलेरी दियागया ।

प्रोथ, पु. न. घोड़ेकी नाक, पु. कमर, (त्रि.) घूमनेवाला, प्रसिद्ध ।

प्रोल्लिखित, त्रि. नख आदिसे चिह्न करनेवाला । लिखाहु०, लिखनेवाला ।

प्रोषित, त्रि. विदेशका, हटाहु०, निकाला हुआ ।

प्रोषित-भर्तृका, स्त्री. जिस नायिका का पति विदेश है ।

प्रोष्ठ, त्रि. बैल, (स्त्री)(ष्ठी) मच्छीविशेष ।

प्रोह, पु. गजपद, गर्व, तर्क, (त्रि) तार्किक, निपुन । हाथीका पाओं, गरूर, दलील, मुदल्लिल, होशियार ।

प्रौढ, त्रि. प्रवृद्ध, प्रगल्भ, निपुण, प्रवीण, यथाविधि परिणीत (स्त्री) (ढा) ३० से ५५ वर्ष तककी स्त्री । [इकबाल ।

प्रौढि, स्त्री. ताकत, ख़ाहिश, उद्यम, फुर्ती, तरक्की,

प्लक्ष, पु. पाकडका पेड़, पिलखत ।

प्लव, पु. कूदकर चलाना, तैरना, डुलवान् धरती, नीची ज़मीन, मेंडक, वानर, मेंढ़ा, आबी जानवर, चण्डाल, पिलखनका पेड़, आवाज़, (न) खारदा ।

प्लवग, } पु. बंदर, मेंडक, खासहिरण, सूर्य,
प्लवङ्ग, } गाड़ीवान् ।

प्लवन, न. कूदना, तैरना, जाना, भागना ।

प्लावन, न. जलादि व्याप्ति, अभिषेक । डुबाना, सींचना, [हुआ ।

प्लावित, त्रि. जल आदिसे घिरा हुआ । डुबाया

प्लुत, त्रि. न. छाल, घोड़ेकी चाल, त्रिमात्र स्वर, दूरसे बुलाना, गाना और रोतेमे प्लुत स्वर होताहै ।

प्लुष्ट, त्रि. दग्ध; जलाहुआ ।

प्लोष, पु. दाह; जलन ।

प्सात, त्रि. भक्षित; खायाहुआ ।

फ

पवर्गका २ य, और ओष्ठ्य है ।

फ, पु. झक्खड़, आंधी, यज्ञसाधन विशेष, न. रूखा वचन, निष्फल वचन, फूंक ।

फक्किका, स्त्री. कूट प्रश्न; फांकी ।

फट्, व्य. मन्त्रांशविशेष; मंत्रका एक हिस्सा (त्रि) (ट) सांपका फण ।

फण, त्रि. स्त्री (णा) फैला हुआ सांपका सिर ।

फणा-धर, }
फणा-भृत, } पु. सर्प; सांप ।
फणा-वत्, }

फणी-न्द्र, } पु. वासुकी; सांपोंका राजा ।
फणी-श्वर, }

फल, न. दरख़त और बेलमें जो शस्य लगते हैं । वस्तु-लाभ, कार्यसिद्धि, धन, प्रयोजन, सुख दुःख, ढाल, तीरका फल, तलवार आदिकी धार, त्रिफला । [परीकी हड्डी ।

फलक, पु. न. ढाल, पट्टी, तख़्ती, हथियार, खो-

फल-न्द, त्रि. फलदाता, (पु) वृक्ष । फल देनेवाला ।

फलन, न. प्रसवन, उत्पत्ति; फलना ।
फल-वत्, फल-शालित्, } त्रि. फलदार, फलवाला ।
फलिन्, फलित, फलिन, } त्रि. फलयुक्त, सफल । फलदार ।
फलिनी, फली, } स्त्री. प्रियङ्गुलता, श्यामालता ।
फले-ग्रही, फले-ग्राहिन्, } त्रि. फलग्रहण करनेवाला ।
फलोदय, पु. फलोत्पत्ति; फल पैदाश ।
फल्गु, त्रि. असार, मनोहर (पु) कान्त । निकम्मा, दिल चस्प, प्यारा । [१२ वां, नक्षत्र ।
फल्गुन, पु. फागन महीना, अर्जुन, (नी) ११ वां,
फल्गू-त्सव, पु. होलीका उत्सव, दोलयात्रा ।
फाणी, स्त्री. गुड़, करम्भ । चाश ।
फाणित, त्रि. फूलाहुआ, फेणी, वताशा ।
फाण्ट, न. एक किसमका काढ़ा, हथियारकी धार।
फाल, न. हल की नोक (पु) शिव, वलदेव, सूती-कपड़ा ।
फाल्गुण, पु. मास विशेष, अर्जुन (स्त्री) (णी) फागुनकी पूर्नो, ११-१२ वां, नक्षत्र ।
फाल्गुणिक, पु. फाल्गुण महिनेका ।
फि, पु. पाप. निष्फल-वाक्य, कोप । गुनाह, वे-फ़ायदा कलाम, गुस्सा ।
फिङ्गक, पु. स्त्री. पक्षीविशेष ।
फु, पु. मंत्रोचारण पूर्वक फूत्कार । तुच्छ वाक्य । मंत्र पढ़कर फूंकना । हकीर कलाम ।
फुट, त्रि. विदीर्ण, खिलाहुआ, सांपकी फुत्कार ।
फुत्कार, पु. अग्नि, आग । आतिश, फण ।
फुत्कृति, स्त्री. फूंक मारना, फुंफुंका शब्द ।
फुल्ल, त्रि. विकसित् । खिलाहुआ ।
फुल्लदामन्, न. १८ अक्षरके पांववाला छन्द ।
फेण(न), पु. बुलबुला, झाग, भाफ़ ।
फेणप, पु. स्वयंपतितफलोपजीवी मुनिविशेष । फेणपायी; अपनेआप गिरे फलखानेवाला । झाग खानेवाला । [हुए दुग्धवग़ैरह ।
फेणायमान, त्रि. उत्थित फेण-दुग्धादि । उबले
फेणिका, स्त्री. बुद्बुद; बुल्बुला, फेनी ।
फेणि(नि), स्त्री. पक्वान्न विशेष । फेनी ।

फेणि(नि)ल, त्रि. फेणयुक्त; झागदार ।
फेर(ण्ड), पु. शृगाल, राक्षस, गीदड़ ।
फेरव, पु. शृगाल, राक्षस, वैरी । गीदड़, देव, दुश्मन ।
फेरु, पु. शृगाल, वंचक । फरेबी । [जूठ ।
फेल(क), न. भुक्त समुझित (स्त्री) (लि=लीलिका)
फेला, स्त्री. कै कियाहुआ ।

ब

प वर्गका ३ य, ओष्ठ्य अक्षर ।
ब, पु. वरुण, सिन्धु, योनि, वन्धन ।
बंहिमन्, पु. वाहुल्य; बहुतायत ।
बंहिष्ठ, बंहीयस्, } त्रि. अति बहुल; बहुतही ।
बडवा, स्त्री. समुंदरी घोड़ी, कुम्मदासी, द्विजयोनि-वि०, अश्विनी नक्षत्र ।
बडवा-ग्नि, बडवा-नल, } पु. समुद्रमे स्थित घोड़ीके मुखकी आग । [दस्र ।
बडवा-सुत, पु. द्वि. अश्विनी कुमारद्वय, नासत्य,
बणिकपथ, पु. आपण; हाट । दुकान ।
बणिज्, पु. क्रयविक्रयकारी; वनियां ।
बणिज्य, न. स्त्री. (ज्या) वनिज, व्योपार ।
बदर, पु. स (री) (रा) वेरका पेड़, वेर, कपास (पु) वनोला ।
बदरिकाश्रम, पु. व्यासका आश्रम, तीर्थवि० ।
बद्ध, त्रि. संयत; बंधाहुआ ।
बद्ध-मुष्टि, स्त्री. कृपण, कृपाण । कञ्जूस, तलवार ।
बध, पु. निन्दा, वन्धन । कतल ।
बधिर, त्रि. श्रवण-शक्तिहीन; बहिरा ।
बधू, स्त्री. नारी, नई व्याही जोरू, बहू ।
बधू-जन, पु. युवती स्त्री; जवान औरत ।
बधूटी, (टि)(टिका), स्त्री. बाल्यवधू; बालवहू ।
बन्ध, पु. बंधन, रोध, ग्रंथन, उत्पत्ति, धारा, ग्रंथि, ग्रन्त, गच्छित वस्तु ।
बन्धक, पु. विनमय, (न) आधि (स्त्री) (की) पुंश्चली । मोलदेके खरीदना, गिरवीरक्खी हुई चीज़, छि-नाल औरत, हथिनी । [रस्सा ।
बन्धन, न. बांधना, मारना, रस्ती, हैवान बांधनेका
बन्धन-वेश्मन्, न. कारागार । जेलखाना ।
बन्धु, पु. ज्ञाति, मातुल पुत्रादि, मित्र, पिता, माता भ्राता, वृक्षविशेष, । ज़ात मामेके वेटे दोस्त मां,

प्रेङ्खोलन, न. दोलन; झुलाना । झुराना ।
प्रेत, पु. पिशाच (त्रि) मृत, (ता) प्रेतनदी ।
प्रेत-कर्मन्, **प्रेत-कार्य**, } न. शव दाहसे लेकर सपिण्डीकरण-तक क्रिया ।
प्रेत-गृह, न. श्मशान; मरघट ।
प्रेत-नदी, स्त्री. वैतरणी नदी ।
प्रेत-पति, पु. यमराज । मलिकुल मौत ।
प्रेत्य, परलोकमें; मरकर ।
प्रेप्सु, त्रि. प्राप्तीच्छु; प्राप्तकरनेकी इच्छावाला ।
प्रेमन्, पु. न. प्रणय, स्नेह । मुहब्बत ।
प्रेयस्, त्रि. प्रियतम; बहुतप्यारा ।
प्रेरण, **प्रेषण**, } न. स्त्री. (णा) नियोग; पठाना, भेजना ।
प्रेरित, **प्रेषित**, } त्रि. नियुक्त; भेजाहुआ ।
प्रेष्ठ, त्रि. प्रियतम; बहुतप्यारा ।
प्रेष्य, त्रि. प्रेरणीय, दास, दूत । भेजने के योग्य, गुलाम, जासूस ।
प्रोक्त, त्रि. कथित, (न) कथन । कहाहुआ, कहना ।
प्रोक्षण, न. सेचन, यज्ञआदिमे पशुवध ।
प्रोक्षित, त्रि. सिक्त; यज्ञ आदिमे माराहुआ, यज्ञमें पूजाहुआ ।
प्रोच्छून, त्रि. सम्यगुच्छून; । [छीड़ा हुआ ।
प्रोज्झित, त्रि. दुलाया, चलाया, कंपायाहु०,
प्रोञ्छन न. मार्जन; घोना, पूंछना ।
प्रोत, त्रि. सीयाहु०, गांठाहु०, जड़ाहु०, विंधाहु०, गाडाहु०, (न) वस्त्र । [क्तावट ।
प्रोत्साह, पु. प्रत्युत्साह, उत्तेजना । हौसला, उ-
प्रोत्साहित, त्रि. उत्साहयुक्त । दलेरी दियागया ।
प्रोथ, पु. न. घोड़ेकी नाक, पु. कमर, (त्रि.) घूमनेवाला, प्रसिद्ध ।
प्रोल्लिखित, त्रि. नख आदिसे चिह्न करनेवाला । लिखाहु०, लिखनेवाला ।
प्रोषित, त्रि. विदेशका, हटाहु०, निकाला हुआ ।
प्रोषित-भर्तृका, स्त्री. जिस नायिका का पति विदेश है ।
प्रोष्ठ, त्रि. बैल, (स्त्री)(ष्ठी) मच्छीविशेष ।
प्रोह, पु. गजपद, गर्व, तर्क, (त्रि) तार्किक, निपुन । हाथीका पाओं, गरूर, दलील, मुदल्लिल, होशियार ।
प्रौढ, त्रि. प्रवृद्ध, प्रगल्भ, निपुण, प्रवीण, यथाविधि परिणीत (स्त्री) (ढा) ३० से ५५ वर्ष तककी स्त्री । [इकबाल ।
प्रौढि, स्त्री. ताकत, ख़ाहिश, उद्यम, फ़ुर्ती, तरक्की,
प्लक्ष, पु. पाकडका पेड़, पिलखत ।
प्लव, पु. कूदकर चलाना, तैरना, डुलवानू धरती, नीची ज़मीन, मेंडक, वानर, मेंढ़ा, आबी जानवर, चण्डाल, पिलखनका पेड़, आवाज, (न) ख़ारश ।
प्लवग, **प्लवङ्ग**, } पु. वंदर, मेंडक, खासहिरण, सूर्य, गाड़ीवान् ।
प्लवन, न. कूदना, तैरना, जाना, भागना ।
प्लावन, न. जलादि व्याप्ति, अभिषेक । डुबाना, सींचना, [हुआ ।
प्लावित, त्रि. जल आदिसे घिरा हुआ । डुबाया
प्लुत, त्रि. न. छाल, घोड़ेकी चाल, त्रिमात्र स्वर, दूरसे बुलाना, गाना और रोनेमे प्लुत स्वर होताहै ।
प्लुष्ट, त्रि. दग्ध; जलाहुआ ।
प्लोष, पु. दाह; जलन ।
प्सात, त्रि. भक्षित; खायाहुआ ।

फ

पवर्गका २ य, और ओष्ठ्य है ।
फ, पु. झक्खड़, आंधी, यज्ञसाधन विशेष, न. रूखा वचन, निष्फल वचन, फूंक ।
फक्किका, स्त्री. कूट प्रश्न; फांकी ।
फट्, व्य. मन्त्रांशविशेष; मंत्रका एक हिस्सा (त्रि) (ट) सांपका फण ।
फण, त्रि. स्त्री (णा) फैला हुआ सांपका सिर ।
फणा-धर, **फणा-भृत**, **फणा-वत्**, } पु. सर्प; सांप ।
फणी-न्द्र, **फणी-श्वर**, } पु. वासुकी; सांपोंका राजा ।
फल, न. दरखत और वेलमें जो शस्य लगते हैं । वस्तु-लाभ, कार्यसिद्धि, धन, प्रयोजन, सुख दुःख, ढाल, तीरका फल, तलवार आदिकी धार, त्रिफला । [परीकी हड्डी ।
फलक, पु. न. ढाल, पट्टी, तख़ती, हथियार, खो-
फल-द, त्रि. फलदाता, (पु) वृक्ष । फल देनेवाला ।

व(व)हु-तिथ, त्रि. प्राचीनकालका । मुद्दतका, बहुतदिर का ।
व(व)हुत्र, व्य. बहुस्थाने । बहुत जगहमें ।
व(व)हु-त्वच्, पु. भूर्जवृक्ष; भोजपत्तेका पेड़ ।
व(व)हु-दुग्ध, पु. गोधूम (स्त्री) (ग्धा) प्रचुर क्षीरवती गौ, स्नुही वृक्ष । गेहू, बहुत दूध देनेवाली गाय ।
व(व)हुधा, व्य. अनेक प्रकार । कई तरहसे ।
व(व)हु-पाद्(प), पु. वट-वृक्ष; बड़का दरख़्त ।
व(व)हु-मञ्जरा, स्त्री. तुलसीका पौधा ।
व(व)हु-रूप, पु. सर्जरस, शिव, विष्णु, हिरण्यगर्भ, काम, शेश, (त्रि) नानारूपवान् । राल, बाल, बहुरूपिया ।
व(व)हुरोमन्, पु. मेष, (त्रि) रोमण । मेंढा, जिसके बदनपर बहुतरुई हो ।
बहुल, व्य. अनेक संख्यान्वित (पु) अग्नि, कृष्णवर्ण, त्रि. तद्वान (न) आकाश (स्त्री) (ली) नीली, नीलवर्णांगी ।
बहुलान्धा, स्त्री. एला, एलाइची ।
व(व)हुल-च्छद, पु. रक्तशोभांजन; लालसोहांजना
ब(व)हुव्रीहि, पु. व्याकरणोक्त प्रायेण अन्य पदार्थ प्रधान समास, (त्रि.) अनेक धान्यादियुक्त । सरफ़का एक कायदा, जिसकेपास बहुतसे धान हों ।
बहुशस्, (व्य) अनेकवार; कईवार ।
व(व)हुल्य, पु. रक्तखदिर (त्रि) अनेक कीलयुक्त
व(व)कृच, पु. ऋग्वेदका चरण; (न) सक्त (त्रि) अनभिज्ञ (स्त्री) (चीं) तत्पत्नी । पहिला वेद, ऋग्वेदके जाननेवाला, ऋग्वेदीकी जोरू ।
बाडव, न. घोटक समुदाय (पु) वडवाग्नि; ब्राह्मण, करणवि० । [अश्वनी कुमार द्वय ।
बाडवेय, पु. द्वि. समुद्रकी आग (त्रि) वडवाका,
बाडव्य, न. विप्रसमुदाय । ब्राह्मणोंकी जमात ।
बाण, पु. शर, गोस्तन, विरोचनसुत, दैत्य, कविवर, तीर, गायका थन, बलिराजाका बड़ा बेटा, उमदा शायर, सिरफ़ ।
बाणिज, पु. बनिया ।
बाणिज्य, न. क्रय विक्रय । खरीदो फ़रोख़्त ।
बाणी(णि), स्त्री. वस्त्रादि वपन क्रिया, वाक्य, सरस्वती । कपड़ा वग़ैरा बुननेका काम, कलाम, कलामका देवता ।
बा(बा)दरायण, पु. वेदव्यास; सत्यवतीका बेटा ।
बादरायणि, पु. शुकदेव ।
बाध, पु. प्रतिरोध, न्यायमतमे स्वभाववत्पदार्थ यथा वन्हि युद्धौ वन्ह्य भाववान ह्रदोबाधः (त्रि) प्रतिबंधक । रोक रोकनेवाला, तक़्लीफ़, गज़ब ।
बाधक, त्रि. प्रतिबंधक, पु श्रीरागविशेष; रोकनेवाला ।
बाधन, न. बाधा, बाधित (त्रि) पीडित, व्याहत ।
बान्धव, पु. बंधु, मित्र, भ्राता, स्वजन । रिश्तहदार ।
बाल, पु. १६ वर्षतकका, ५ वर्षतकका हाथी, (स्त्री) इलायची, भूषणवि० स्त्री, गंध द्रव्य भेद, (त्रि) मूर्ख, शिशु, पु. केश, नारकेल, पशुपुच्छ ।
बालक, पु. शिशु, अज्ञ, गन्धद्रव्य वि०, अंगुरीयक, (स्त्री) (लिका) लड़की, कानकी बाली ।
बाल(लि)खिल्य, पु. अंगूठेकी गांठ जितने साठहज़ार पुलस्तकी बेटीमेंसे क्रतु ऋषिके वीर्यसे उत्पन्न हुए २ मुनि ।
बाल-ग्रह, पु बालपीडक उपग्रहविशेष; बच्चोंको तक़्लीफ़ देनेवाले छोटे २ ग्रह ।
बालधि, पु. रोमदार पुच्छ, चवर, बालयाम्य । (स्त्री) बालोंके समेटनेवाला ज़ेवर ।
बाल व्यजन, न. चमर; चौरी, ।
बाल हस्त, पु. केशोंका जूड़ा ।
बालि }
बालिन् } पु. इन्द्र, बालीका पुत्र, बन्दर.
बालिश, त्रि. मूर्ख, शिशु, (न) उपबर्हण । बेवकूफ़, लड़का, तकिया ।
बालि-हन्, पु. रामचंद्र, बालुका, (स्त्री) सिकता ।
बालु, पु. "एलवालुक" नामगंधद्रव्य (स्त्री) सिकता । खुशबूई, रेत ।
बालेय, पु. रासभ, दैत्यभेद, अङ्गार बाह्लरी, त्रि. कोमल, बलिहित । गधा, मुलायम, बलिकाप्यारा ।
बाल्य, न. आषोडशवय; सोलह वर्षतककी उमर ।
बास्य(ष्प), पु. नेत्रजल, ऊष्मा; आंसु, भाफ़ ।
बाहु, पु. भुज; बाजू । त्रिकोण की एक रेखा ।
बाहुक, पु. राज्यभ्रष्ट राजा नल, नौकर ।
बाहु-ज, पु. क्षत्रिय जाति ।

बाप, भाई, "वन्धुआलो" दरख़त । रिश्तहदार रिशतेदारी, दोस्ती ।
वन्धुता, स्त्री. वन्धुसमूह, वन्धुत्व । वहुतसे रिश्तहदार, रिश्तहदारी ।
वन्धुर(ल), न. स्त्री. चिन्ह, पु. मुकुट, तिलकल्क, वधिर, हंस, विडङ्ग, वकपक्षी जीव-वृक्ष (त्रि) रम्य, नम्र, उन्नतानन, (स्त्री) (रा) वेश्या, सक्तु । औरतका निशान, ताज, खल, वहिरा, वगुला खूवसूरत हलीम ऊंचेमुखवाला, कंचनी, सतुआ । [पौदा ।
वन्धूक, पु. वंधुजीवक, पुष्प-वृक्ष, गुलदुपहरियाका
वन्धूलि, त्रि. पु. वंधुजीव वृक्ष; गुलदुपहरी ।
वन्ध्य, त्रि. फल शून्य वृक्ष (स्त्री) (न्ध्या) विना फलके पेड़; वांझ स्त्री ।
वन्ध्याकर्कोटी, स्त्री. वृक्षविशेष, वांझकरोड़वूटी ।
वभ्रु, पु. शिव, विष्णु, नकुल, वन्हि, मुनिवि०, देश वि० (पु) पिङ्गलवर्ण (त्रि) वृहत्‌खल्व । नेवला, आग, ज़र्द, वड़ा, गंजा, ममोला ।
वर, न. कुंकम, आर्द्रक (व्य) ईपदिष्ट (पु) जार (स्त्री) (रा) त्रिफला, त्रि. श्रेष्ठ, केसर, आर्द्रक, थोड़ा पसंदीदा, यार, जमाई, हरड़वहेड़ा आमला, नेक।
वर्वट, पु. राजमाप (स्त्री) (टी) वेश्या; रोंग, कंचनी।
वर्वर, पु. नीच, पामर, मूर्ख ।
वर्ह, पु. न. स्त्री (र्हा) मोरकी पूंछ, पत्ता, पु. नौकर
वर्हिन्, पु. मोर ।
वल, पु. वलराम, कौआ, एक दैत्य, (न.) सैन्य, सामर्थ्य, स्थौल्य, गन्धरस, शुक्र, देह, रक्त, (त्रि) वली (स्त्री) (ला) क्षुद्रवृक्षविशेष, अस्त्रविद्याविशेष। फौज जोर, मोटाई, तोता, खूब ज़ोरावर, ख़ास, दरख़्त खास देव, ख़ास छोटा पौदा, खास इलम लड़ाईका ।
वलक्ष, (पु.) सुपेदरंग (त्रि) श्वेतशाक ।
वलज, न. शस्य, क्षेत्र, पुरद्वार, युद्ध, पु. धान्यराशि, (त्रि) वलजात, स्त्री. (जा) उत्तमा स्त्री.
वलन्द, पु. जीवक पौष्टिक कर्म्माङ्ग अग्नि (त्रि) वलदाता ।
वल-देव, **वल-राम**, **वल-भद्र**, **वलभिद्**, } पु. वलराम । कृष्णजीका भैया रोहिणीका वेटा ।
वल-शालिन्, त्रि. वलविशिष्ट । ज़ोरावर ।
वल-सूदन, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा ।
वलाक, पु. (स्त्री) (का) वकजाति विशेष वकपंक्ति, कामुकी स्त्री ।
वलाट, पु. मुद्ग; मूंग ।
वलात्, व्य. अकस्मात्, वलपूर्वक । अचानक ।
वलात्कार, पु. ज़ोरावरी ।
वला-नुज, पु. कृष्ण ।
वलामोटा, स्त्री. नागदमनी लता ।
वलाय, पु. वरुल-वृक्ष ।
वलावलय, पु. वलका गुरु ।
वला-राति, पु. इन्द्र, देवताओं का राजा ।
वलाहक, पु. मेघ, मुस्तक, पर्वत, दैत्यभेद, नागभेद। वादल, मुस्यां, पहाड़, खास देत्य ।
वलि, पु. पूजोपहार, राजग्राह्य भाग, चामरदण्ड, पञ्चमहायज्ञान्तर्गत यज्ञ, दैत्यभेद, (त्रि) जराद्वारा लोलितचर्म्म, जठरावलि, गुह्यांकुर । पूजाकी भेंट, खिराज, चौरकी डंडी, झुरी, गुररी, मुफ़रह ।
वलिध्वंसिन्, पु. विष्णु ।
वलिन्-वलिन-वलित, त्रि. वलवान् पु. ऊंट भैंसा सूअर, वलराम, वलगम, माप ।
वलिपुष्ट, पु. काक; कौआ, कौवी ।
वलिभ, त्रि. वलियुक्त । झुररीवाला ।
वलि-भुज्, पु. काक, गृहपक्षी (त्रि.) वलिभोक्ता ।
वलि(ली)मुख, पु. वानर; वंदर । [ऊंठ ।
वलिष्ठ, त्रि. अत्यन्त वलवान् (पु) उष्ट्र । ज़ोरावर
वलि-सद्मन्, न. पाताल, राजा वलिका घर ।
वलीयस्, त्रि. अत्यन्त वलवान् । निहायत ज़ोरावर ।
वलीवर्द, पु. वृष; वैल ।
वल्यु, न. वीर्य, शुक्र (स्त्री) अश्वगन्धा ।
वष्क(स्क)यिणी(नी), स्त्री. चिरप्रसूतागौ; चिरकालकी सूई गाय (तीनसे ज्यादह तादाद ।
व(व)हु, त्रि. अनेक संख्यान्वित, (स्त्री) वन्ही ।
व(व)हु-कर, त्रि. मार्जनकर, अनेककार्य्यकर (स्त्री) (री) सम्मार्जनी (पु) उष्ट्र, [कश्चीवूटी ।
व(व)हु-कर्णिका, स्त्री. मूपिकपर्णी; मूसे

ब्र(ब्र)ह्म-बंधु, अपने कर्म्मको छोड़कर बुरा कर्म्म करनेवाला ब्राह्मण । भाट वग़ैरह ।

ब्रह्म-भूय, न. ब्राह्मणत्व । ब्राह्मणपन ।

ब्रह्म-यज्ञ, पु. वेदाध्ययनाध्यापनादि । वेदका पढ़ना और पढ़ाना वग़ैरह ।

ब्र(ब्र)ह्म-रन्ध्र, न. शिरस्थित ब्रह्मप्राप्तिहेतुक स्थान । सिरकी खोपरी जहां ब्रह्मप्राप्तिके लिये योगीलोग ध्यान लगाते हैं ।

ब्रह्म-राक्षस, पु. भूतभेद; महादेवके गणविशेष ।

ब्रह्मर्षि, पु. वेदस्मर्त्त वशिष्ठादि ऋषि; वेदके याद रखनेवाले वसिष्ठादि ऋषि ।

ब्रह्मर्षि-देश, पु. कुरुक्षेत्रादि देशचतुष्टय, जैसे कुरुक्षेत्र २ मत्स्य ३ पाञ्चाल ४ शूरसेन ।

ब्रह्म-लोक, पु. ब्रह्माधिष्ठान भुवन ।

ब्रह्म-वर्चस्, न. वेदाध्ययनजतेजः ।

ब्रह्म-वद्य, त्रि. ब्रह्मोक्त, न. ब्रह्मज्ञान ।

ब्रह्म-वादिन्, पु. वेदवक्ता, वेदान्ती । वेदके पढ़नेवाला ।

ब्रह्म-विद्, पु. ब्रह्मज्ञानी, वेदज्ञ ।

ब्रह्म-विद्या, स्त्री. ब्रह्मज्ञान । ब्रह्मके जाननेका इलम ।

ब्रह्मवि(वि)न्दु, वेदके पढ़ते समय मुखसे निकली हुई पानीकी बूंद या थूक ।

ब्रह्मवैवर्त, न. १८ बड़े २ पुराणोंमेसे १८००० श्लोकका पुराण ।

ब्रह्म-संहिता, (स्त्री) एक पुस्तक जिस्से १०० अध्याय हैं और वैष्णवमत का वर्णन है ।

ब्रह्म-सूत्र, न. यज्ञोपवीत, शारीरिक सूत्र ।

ब्रह्म-हन्, त्रि. ब्राह्मणघाती, ब्रह्महत्यारा ।

ब्रह्मा-ञ्जलि, वेद पढ़ते समय स्वर जाननेनेके लिये हाथोंका संकोच ।

ब्रह्माण्ड, न. भुवनकोष, विश्व, पुराणवि० ।

ब्रह्मा-वर्त्त, न. देशविशेष, सरस्वती और दृपद्वतीके बीचका मुल्क । [बद हुआ ।

ब्रह्मा-स्त्र, न. ब्रह्मशाप, नृपविशेष । ब्राह्मणकी ।

ब्रह्मा-सन, न. ब्रह्मध्यानार्थ आसन ।

ब्रा(ब्रा)ह्म, न. अङ्गुष्ठमूल तीर्थ, पुराणविशेष, विवाहवि०, पारद (स्त्री) (ह्मी) सरस्वती, सोमलता, मातृकाविशेष, त्रि. ब्रह्मसंबंधीय ।

ब्राह्मण-ब्रुव, पु. कदाचारी विप्र । बदचलन ब्राह्मण ।

ब्राह्मण्य, न. विप्र-समूह, ब्राह्मण-धर्म्म, पु. शनिग्रह । ब्राह्मणोंकी जमात, ब्राम्हणपन, जुहल ।

ब्राह्म-मुहूर्त, रातके पिछलेपहिरकी शेष दो घड़िये ।

ब्रुवत्, } त्रि. बोलताहुआ ।
ब्रुवान, }

भ

भ, न. नक्षत्र, मेषादि राशि, ग्रह, पु. शुक्राचार्य्य, भ्रमर, भ्रान्ति, आदि गुरुयुक्त, भगणनाम प्रस्तार । सयारा, भौंरा, भूल ।

भक्त, पु. न. अन्न, त्रि. भक्तियुक्त, विभक्त । अनाज, भात, इबादितकुनिंदा, बांटाहुआ (स्त्री) (क्ति) सेवा, अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्, सेवनं स्मरणं चैव कीर्तनं श्रवणं तथा । विभाग, भङ्गी, अनुरक्ति, गौणवृत्ति । खिदमत, बांट, मुहब्बत, इबादत, एतकाद ।

भक्ति-योग, पु. तदेकाग्रचित्ततारूप योग, प्रेमसे दिलका एकही ओर लगजाना ।

भक्षक, त्रि. खादक; बड़ा पेटू ।

भक्षण, न. अदन । खाना ।

भक्षणीय, त्रि. भक्षण योग्य । खानेके लायक ।

भक्षित, त्रि. चर्वित, । खायाहुआ ।

भक्ष्य, त्रि. भक्षितव्य । खानेके लायक, खानेकी वस्तु ।

भक्ष्य-कार, पु. आपिक, हलवाई, रसोईया ।

भक्ष्य-पत्रा, स्त्री. ताम्बूली, पानकी बेल ।

भग, न. शिव, सूर्य्य, ईश्वर, वीर्य्य, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य, योनि, इच्छा, महात्म्य, यत्न, धर्म, मोक्ष, सौभाग्य, कान्ति, चंद्र । आफ़ताब शानशौकत, हशमत, ताकत, नातेदारी, इलम, नामुहब्बत, कुस, ख्वाहिश, बड़ाई, तरद्दुद, नजात, नेक किस्मत, चमक, चांद ।

भग-दन्त, पु. नृपभेद, कामरूप देशका राजा ।

भगन्दर, पु. स्वनामख्यात रोगभेद । गुदा परका फोड़ा । [दुर्गा ।

भगवत्, त्रि. ऐश्वर्य्ययुक्त, परमेश्वर (स्त्री) (ती)

भगाङ्कुर, पु. अर्शरोग । बवासीरकी बीमारी ।

भगिनी, भग्नी, स्त्री. सोदरा, स्वसा । सकीबहिन ।

भगीरथ, पु. सूर्य्यवंशी राजा दिलीपका बेटा ।

भगोस्, व्य. संभ्रमसूचक संबोधन ।

बाहुदा, स्त्री. नदीविशेष ।
बाहु-त्र(त्राता), पु. न. अस्त्रघात वारणार्थ बाहुबद्ध लोह चर्म्मादि । हथियारकी चोट बचानेके लिये बाहुपर बंधाहुआ चमड़ा वगैरा ।
बाहुल, पु. वन्हि (स्त्री) कार्तिक पौर्णमासी ।
बाहुलक, पु. कार्तिकेय; शिवजी का पुत्र ।
बिन्दु, पु. बूंद । कतरह ।
बिभ्रत्, त्रि. धारणकारी । पकड़नेवाला ।
बीभत्स, त्रि. पापी, जगुप्सित, घृणायोग्य (पु) अर्जुन । गुनाहगार, मलामत कियाहुआ ।
बुक, न. हृदयस्थ मांस पिंड, हृदय, पु. समय, छाग, (स्त्री) (क्का) शोणित, दिलका टुकड़ा, दिल, वकत, बकरा, खून ।
बुद्ध, पु. भगवतावतार विशेष, त्रि. जाग्रत; भगवान्‌का ९ वां, अवतार जिस्सें वेद और वेदके कर्म्मोंकी निंदा कीहै, जागाहुआ, जानाहुआ ।
बुद्धि, स्त्री. ज्ञान, अन्तःकरण वृत्ति विशेष । इलम, अक़ल ।
बुद्धि-मत्, त्रि. ज्ञानी । अक़लमंद ।
बुद्धी-न्द्रिय, न. ज्ञानेन्द्रिय । हवास ख़मसह ।
बुद्बुद, न. जलोपरिस्थ फेण विशेष; पानीका बुलबुला ।
बुध, पु. पण्डित, चन्द्रपुत्र, ग्रहविशेष ।
बुधा-ष्टमी, स्त्री. बुधवार युता शुक्लाअष्टमी; चैत्र पौस और चौमासे के सिवा ।
बुध्न, पु. वृक्षमूल, शिव, पेड़कीजड़ ।
बुभुक्षा, स्त्री. भोजनेच्छा; भूख ।
बुभुक्षित, त्रि. क्षुधित; भूखा ।
बुभुत्सा, स्त्री. भोजन की इच्छा ।
बुष(स), न. फलरहित धान्य, जल; तुस, पानी ।
बुस्त, न. मांसपिंड विशेष, स्थाली भ्रष्ट मांस, फला सार भाग; मांसका टुकडा, भुनाहुआ, गोश्त, फलकी गुठली । [जाग ।
बोध, पु. ज्ञान, दर्पण; जागरण । जानना, दीदार,
बोधक, त्रि. ज्ञापक, द्योतक, जाग्रक । जतानेवाला, बतानेवाला, जगानेवाला ।
बोध-कर, पु. वैतालिक । खबरदेनेवाला ।
बोधन, न. विज्ञापन, जागरण, बुधग्रह (स्त्री) (नी) पिप्पली । इश्तहार, जागना, मर्करी, मघ ।
बोधि, पु. अश्वत्थ-वृक्ष, समाधिभेद त्रि. ज्ञाता, पण्डित ।
बोधि-द्रुम, पु. अश्वत्थ-वृक्ष । पीपल का पेड़ ।
बोधि-सत्व, पु. बुद्ध, बौद्ध ।
बौद्ध, न. बुद्ध प्रणीत निरीश्वरवाद शास्त्र, त्रि. तदध्येता । बुद्धका बनायाहुआ शास्त्र जिस्मे ईश्वर नहीं मानागया, उस इलमके पढ़नेवाला ।
बौद्धायन, पु. ऋषिविशेष ।
ब्रतति (ती), स्त्री. लता । बेल, फ़ैलाव । [देह ।
ब्र(ब्र)ह्म, पु. सूर्य्य, अर्कवृक्ष, शिव, वृक्षमूल, पुत्र,
ब्र(ब्र)कूर्च, न. व्रतविशेष, जिसमे विशेषकरके पूर्ण मासी की दिनरात उपवासकरके दूसरे दिन पंचगव्य (दहि दूध, घी, गोमूत्र और गोबर) मिलाकर पीयाजाता है ।
ब्रह्म-घोष, पु. वेदध्वनि, वेदपाठ ।
ब्रह्म-चर्य, न. वेदज्ञानार्थ उपनयनांतराश्रम, मैथुन राहित्य । वेद पढ़नेके लिये तालिब इलमीकी हालत, जमाह वग़ैरहसे बचे रहनेकी हालत ।
ब्रह्म(ब्रह्म)चारिन्, पु. प्रथमाश्रमी (स्त्री) (णी) ब्रह्मचारिणी, ब्राह्मण यष्टि वृक्ष ।
ब्रह्म-जीविन्, पु. तनखाह लेकर वेद पढ़ानेवाला ।
ब्रह्म-ज्ञ, त्रि. वेदज्ञ, तुरीय शुद्ध चैतन्य ज्ञ ।
ब्र(ब्र)ह्म-ज्ञान, न. विद्याविशेष । रूहानी इलम ।
ब्र(ब्र)ह्म-राय, न. ब्रह्मतेज, त्रि. ब्रह्मका पुत्र विष्णु
ब्र(ब्र)ह्म-तीर्थ, न. पुष्करतीर्थ, पुष्करमूल ।
ब्र(ब्र)ह्मत्व, न. ऋत्विग्विशेषत्व, ब्रह्म धर्म्म, ब्रह्मभाव, ब्रह्मसायुज्य । खुदाई ।
ब्रह्म-दण्ड, पु. विप्रकृत अभिशापरूप दंडन, विप्र यष्टि । ब्राह्मणकी बद्दुआ; ब्राह्मणकी लाठी ।
ब्रह्म-दर्भा, स्त्री. यमानी; अजवैनका पौदा ।
ब्रह्म-दाय, पु. वेद पढ़े हुए को देने योग्य धन ।
ब्र(व)ह्मदारू, पु. पलास का दरख़्त ।
ब्र(ब्र)ह्मन्, न. वेद, तप, सत्य, तत्व, यथार्थ, तुरीय सर्व गुणातीत विशुद्ध चित्स्वरूप (पु) विप्र, ऋत्विग्विशेष, तुरीय ब्रह्म ।
ब्रह्मनाभ, पु. विष्णु । [तीर्थ ।
ब्रह्म-नाल, न. काशीमें मणिकर्णिकाके पासका
ब्रह्म-पुत्र, पु. विषभेद, उत्तरदेश, प्रसिद्ध नदविशेष, स्त्री. सरस्वती नदी ।

भव, पु. उत्पत्ति, स्थिति, लाभ, शिव, संसार ।
भवत्, त्रि. युष्मदर्थ, तुम ।
भवदीय, त्रि. भवत्संबंधि; तुह्मारा ।
भवन, न. गृह, जन्म, सत्ता । घर पैदाश ।
भव-भूति, पु. कविविशेष ।
भवादृश्(श)(क्ष), त्रि. भवत्तुल्य; आप जैसा ।
भवानी, स्त्री. शिवभार्य्या, पार्वती देवी ।
भवापगा, स्त्री. भागीरथी, गंगा ।
भविक, न. मंगल (त्रि.) कुशली । राज़ी । [लमंद ।
भविष्क, न. कुशल, (त्रि.) तद्वान । इकबाल, इकबा-
भवितव्य, } न. अवश्य भव्य । होनहार ।
भवितव्यता, } स्त्री. किसमत ।
भवित, } त्रि. भवनशील; होनेवाला ।
भविष्णु, }
भविष्य(त्), पु. भावीकाल (त्रि.) तत्कालवर्ती पदार्थ, न. पुराणविशेष । मुस्तकबिल ।
भव्य, त्रि. भावी, (न.) शुभ, सत्य, योग्य, (स्त्री.) (व्या) राजपिप्पली, । होनहार, भलाई, सच, लायक ।
भष(क), पु. कुक्कर; कुत्ता ।
भषण, न. कुक्करध्वनी; भौंकना । [दिल ।
भषत्, पु. काष्ठ, जंघा, अंतःकरण; लकड़ी, जांघ,
भसन, पु. भ्रमर, भौरा ।
भसल्लु, भ्रमर; भौरा ।
भसित, न. छाई, राख ।
भस्त्रा, पु. } अग्निदीपक चर्म्मनिर्मित यंत्रविशेष, धौंकनी, सरनाई ।
भस्त्रि(का), }
भस्मक, पु. रोगविशेष, विड़ङ्ग, कलधौत, । एक बीमारी जिसमे जितना चाहो खाओ परन्तु भूक लगी रहे, सुहागा, सोना ।
भस्म-कार, पु. रजक; धोबी ।
भस्मन्, न. शिवाङ्ग-राग; शिवजीकी विभूति ।
भस्म-सात्, व्य. भस्मायत्त । खाकसा ।
भस्मा-व्हय, पु. सुगंधि द्रव्यविशेष, कर्पूर; काफ़ूर ।
भस्मित, त्रि. भस्म किया, नाश किया हुआ ।
भाकट, पु. मत्स्यविशेष; एक किस्मकी मछली ।
भाकुट, पु. पर्वतविशेष, एक मछली ।
भकोप, पु. सूर्य्य, । आफ़ताब ।
भाग, पु. अंश, भाग्य, एक देश; टुकड़ा, क़िसमत, हिस्सा ।

भाग-जाति, स्त्री. भाग्यांश समीकरण । कसर मुजाफ़ ।
भागधेय, न. भाग्य, पु. राजकर, त्रि० दायाद । किसमत, मासूल, वारिस । [गवद्भक्त ।
भागवत, न. १८ पुराणोंमेंसे एक पुराण (त्रि.) भ-
भाग-हर, अंशुमत (पु.) दायाद, अंकविशेष, हरण, हिस्सा लेनेवाला । वारिस, तकफ़ ।
भागार्ह, त्रि. अंशनीय । बांटनेके लायक़ ।
भागिक, त्रि. अंशी; सूदीरुपैया, हिस्सा लेनेवाला ।
भागिन्, त्रि. हिस्सेदार । [भानजा ।
भागिनेय, पु. भगिनीपुत्र (स्त्री.) (यी) भानजी;
भागीरथी, स्त्री. गंगा । [बनानेवाला ।
भागुरि, पु. मुनिविशेष, स्मृति और व्याकरणके
भाग्य, न. शुभाशुभ कर्म्म, भागार्ह । किसमत, तकसीम करनेके लायक ।
भाग्य-वान्, त्रि. शुभादृष्टयुक्त । क़िस्मत मंद ।
भाजक, पु. हारिक । तकसीमकुनिंदा ।
भाजन, न. पात्र, योग्य, आधार, आढकपरिमान । वर्त्तन, लायक, ३२ मुट्ठीभरका पैमाना, तकसीम करना ।
भाजित, त्रि. पृथक्कृत (न) भाग; तोड़ाहुआ हिस्सा ।
भाजी, स्त्री. शाकादि तले हुए पदार्थ, ।
भाज्य, त्रि. भागके लायक ।
भाटक, पु. भाड़ा । कि राया ।
भाराड, न. पात्र, वणिक्, मूलधन, भूषण, नदी, कूलद्वय मध्यस्थान, । वर्त्तन, पूंजी, ज़ेवर, दोनों किनारोंके बीचका ।
भाराडक, पु. पात्र, भाण्ड, न. वाणिज्य द्रव्य । वर्त्तन, भाण्डा, बनियेकी पूंजी ।
भाराडागार, (भाराडार), पु. भंडारा, खज़ाना ।
भाराडप्रतिभाराडक, पु. अङ्कविशेष, मिर्ती काटेका हिसाब ।
भाण्डि, पु. नापित पात्र, नाईकी गुच्छी ।
भाण्डिल, पु. नापित; नाई ।
भाण्डीर, पु. वटवृक्ष (स्त्री) चमक ।
भा, (स्त्री.) दीप्ति । चमक, रौशनी ।
भाक्त, त्रि. चावलोंका, औपचारक । भात ।
भानु, पु. सूर्य्य, दीप्ति, । आफ़ताब, चमक ।
भाद्र, न. नमस्य; भादोंका महीना । [नक्षत्र ।
भाद्र-पद, पु. भादों (स्त्री.) (दा) २५ २६ वां,

भग्न, त्रि. पराजित, खण्डित। हाराहुआ, टूटाहुआ।
भग्न-प्रक्रमता, स्त्री. काव्यदोषविशेष।
भङ्ग, पु. पराजय, खण्ड, भेद, तरंग, कौटिल्य, भय, गमन, जलनिर्गमन (स्त्री) (ङ्गी) मातुली, शणाख्य शस्य, निवृत्ता, विजया। शकस्त, टुकड़ा, फ़र्क़, लहर, टेढ़ापन, खौफ़, जाना, पानीका निकास, तेउड़ी, भांग।
भङ्गि(ङ्गी), स्त्री. तुरी, रचना, शोभा विच्छेद, कौटिल्य, विन्यास, कल्लोल, भेद, व्याज,। जुदाई, फ़रेब, तिरछापन, लहर, फ़र्क़, बहाना।
भङ्गुर, त्रि. कुटिल, भंजन-शील, नदी-वक्र, (स्त्री) (रा) (ला) प्रियंगु, अतिविषा। टेढ़ा, खुद टूटनेवाला, दरयाकी टेढ़, खासवेल।
भङ्गय, न. भंगवपन योग्य क्षेत्र। भांगका खेत।
भजन, न. पूजा, सेवा, उपासना।
भज-मान, त्रि. न्यायागत द्रव्यविभाजक, सेवक। विरसह बांटनेवाला, खिदमतगार।
भट, पु. योद्धा, वीर, वर्णसंकर नीच जातिवि०। स्त्री. इंद्रवारुणी।
भटित्र, न. शूलपक्व मांसादि। कबाब।
भट्ट, पु. स्तुतिपाठक, पंडित; भाट, वेदका पंडित।
भट्टारक, त्रि. पूज्य, सूर्य्य, नाट्यमें पूजा योग्य। (त्रि.) पूजार्ह।
भट्टिनी, (स्त्री) विप्रभार्य्या, नाट्योक्तिमें अकृताभिषेका राज्ञी। रानी।
भणन, न. नदन, उदाहरण। कलाम, मिसाल।
भणित, त्रि. कथित (न) कथन, कलाम (स्त्री) (ति) तकरीर।
भण्टाकी, स्त्री. वार्त्ताकी, वृहती। बेंगनका पौदा।
भण्ड, पु. भाट, मस्करा (स्त्री) (ण्डी) मंजिष्ठा।
भण्डीर, पु. तण्डुलीयशाक, शिरीष वृक्ष।
भद्र, न. मंगल, मुस्तक, स्वर्ण, ज्योतिषोक्त ववादि कर्ण, (पु.) महादेव, वृष, खञ्जन, कदम्ब, बलदेव, रामचंद्र, शैल, (स्त्री.) (द्रा) द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी तिथि, आकाश-गङ्गा (त्रि.) साधु, श्रेष्ठ।
भद्र-काली, (स्त्री) दुर्गा, देवीविशेष।
भद्र-कुम्भ, पु. जलपूर्ण स्वर्णघट,। पानीका भरा हुआ सोनेका घड़ा।
भद्र-ज, पु. इन्द्रजव; इंद्रजौ।
भद्र-तुण, न. जम्बूद्वीपान्तर्गत देशविशेष; जम्बूद्वीपमें एक मुलक।
भद्र-पदा, (स्त्री.) नक्षत्रविशेष, पूर्वोत्तर भाद्रपदा।
भद्र-मल्लिका, स्त्री. नवमल्लिका, मालती।
भद्र-मुस्त, पु. न. मुथा (त्रि.) सुन्दर।
भद्र-श्रय, न. चंदन, साधु संपत्।
भद्रश्री, पु. चंदनवृक्ष; संदलका पेड़।
भद्रा-ली, स्त्री. गंधाली लता। इसीनामसे मशहूर।
भद्रा-श्रम, पु. चन्दन। संदल।
भद्रा-कृत्, त्रि. मङ्गल पूर्वक मुण्डित शिर।
भद्रासन, न. राजाका आसन, योगका आसन।
भय-ङ्कर, त्रि. खौफ़नाक। छयरसोमेंसे एक।
भयद, भयानक, पु. व्याघ्र, राहु, रसभेद, (त्रि.) भयंकर,। वाघ, ९ वां ग्रह। खौफ़नाक।
भर, पु. आधिक्य, समूह। ज्यादती, मजमह।
भरण, न. पोषण, वेतन, धारण (स्त्री) (णी) द्वितीय नक्षत्र।
भरण्य, न. मूल्य, भर्त्ता, राजा, (स्त्री.) (एया) भृत्ति।
भरत, पु. नाट्यप्रणेता नट मुनिविशेष, तंतुवाय, क्षेत्र, केकेयीसुत, रामानुज दुष्यन्त राजाका पुत्र
भरत-खण्ड, न. भारतवर्षान्तर्गत कुमारिकाख्य खण्ड। हिन्दुस्तान।
भरता-ग्रज, पु. रामचंद्र।
भरद्वाज, पु. मुनिविशेष, पक्षिविशेष। उतथ्यके वड़ेभाईकी औरत "ममता" मेंसे बृहस्पतिद्वारा उत्पन्न संतान, अगनचिड़िया।
भरित, त्रि. पालित, पूरित। भराहुआ।
भर्ग, पु. शिव, ज्योतिः, पदार्थ, आदित्यान्तर्गत ऐश्वर तेज। रौशनी; चमक।
भर्जन, न. भूनना।
भर्तृ, पु. स्वामी, पति, राजा, पालक। आका।
भर्तृ-दारक, पु. नाट्यमें राजकुमार (स्त्री) राजकन्या।
भर्तृहरि, पु. राजा विक्रमका वड़ाभाई "वाक्यपदी" आदि ग्रंथोंके बनानेवाला।
भर्त्सन, न. निंदा, तर्जन (स्त्री.) (ना) मलामत।
भल्ल, पु. भाल्ल।
भल्लात(क), } भल्लातक वृक्ष। भलावेका पेड़।
भल्लिका,
भल्लु(ल्लू)क, पु. ऋक्ष; भाल्ल, रीछ।

भास्कर, पु. सूर्य्य, अग्नि, वीर, अर्कवृक्ष, भास्कराचार्य्य, सुवर्ण, सूत्रधार, शिल्पकार ।

भास्वत्, त्रि. चमकदार, सूर्य ।

भिक्षा, स्त्री. अर्दना; भीख, एक ग्रासभर ।

भिक्षाक, पु. भिक्षुक; भिखारी । [निवाला ।

भिक्षा-शिन्, त्रि. भिखारी । भिक्षाका अन्न खा-

भिक्षित, त्रि. याचित; मांगाहुआ ।

भिक्षु(क), पु. चतुर्थाश्रमी, संन्यासी, भिखारी ।

भिण्ड, पु. भिण्डिवृक्ष, शाकविशेष, (स्त्री.) (राडा) रामतुरई ।

भित्त, न. खराड, टुकड़ा (स्त्री.) दीवार ।

भित्तिका, स्त्री. दीवार, ।

भित्ति-पातन, पु. घूंस । रिशवत ।

भिदि, पु. इन्द्रका शस्त्र; वज्र ।

भिदि(दु)र, न. वज्र, (त्रि.) भङ्गुर । भुरभुरा ।

भिन्दि, (स्त्री.) करद, छुरी । [माला ।

भिन्दि-पाल, पु. अस्त्रविशेष, हाथसे चलानेका तीर ।

भिन्न, त्रि. भेद-विशिष्ट, दारित, संवित, अन्य, फूल (न.) क्षतरोगीविशेष, पृथक् । जुदा कियाहुआ, फाड़ाहुआ, दूसरा, खिलाहुआ, खास बीमारी, जुदा, कसर ।

भिन्न-भिन्न, त्रि. पृथक् पृथक्; जुदा जुदा ।

भिल्ल, पु. म्लेच्छजातिविशेष, ब्राह्मणीके पेटसे धीवरकी बिंदसे, भील (स्त्री.) लोध्र ।

भिषक्प्रिया, स्त्री. गिलो ।

भिषज्, पु. वैद्य । तबीब । [भात ।

भिष्यिका, भिस्सटा (स्त्री.) दग्धान्न, जलाहुआ

भिस्सा, (स्त्री.) अन्न, भक्त, भात ।

भी, } स्त्री. त्रास; खौफ़ ।
भीति, }

भीत, (त्रि.) त्रस्त, भययुक्त, । खौफ़, खौफ़जदह ।

भीतिकार, त्रि. डरानेवाला ।

भीम, पु. भयानक रस, शिव, मध्यमपाण्डव, महादेवाष्टमूर्त्यन्तर्गत आकाशमूर्त्ति, त्रि. भयङ्कर, स्त्री, (मा), दुर्गा, कदा, खौफ़, नाक, खासनाम देवीका, घुम्बक । [नाक आवाज़ ।

भीम-नाद, पु. सिंह, भयानक शब्द, । शेर, खौफ़-

भीमर, पु. युद्ध, जंग ।

भीमरथ, पु. तामस मनुवंशजात, असुरविशेष (स्त्री.) (थी) अवस्थाविशेष, नदीविशेष, रात्रिविशेष । तामसमनुके खानदानका एक राक्षस, एक हालत, गंगा दर्या, सतहत्तर बरसके सातवें मासकी सातवीं रात ।

भीम-शासन, पु. यम, (त्रि.) भयानक शासनकर्त्ता, मलिकुलमौत, खौफ़नाक सज़ा देनेवाला ।

भीमसेन, पु. मध्यम पाण्डव, कुन्तीके पेटमें पवनद्वारा उत्पन्न हुआ २ पुत्र । [एकादशी तिथि ।

भीमैकादशी, स्त्री. माघशुक्लैकादशी; माघसुदी

भीरु(लु), त्रि. भयशील, (स्त्री) (स्त्री.) भयशीलास्त्री; अजा, छाया, स्त्री. पु. शृगाल, व्याघ्र, इक्षुविशेष; डरपोक, बकरी, साया, गीदड़, बाघ, पौंडा ।

भीरु(लु)क, न. वन, पु. पेचक, इक्षुविशेष; (त्रि.) भय-युक्त । जंगल, उल्लू, एक किसमका गन्ना, डरपोक ।

भीषा, स्त्री. डर । खौफ़ ।

भीषण, पु. भयानकरस, कपोत, हिन्ताल, शिव, शल्लकी (त्रि.) गाढ़, दारुण (न.) भय ।

भीष्म, त्रि. भयानक. (न.) भयानक रस, शिव, राक्षस, शन्तनुराजपुत्र ।

भीष्म-जननी, स्त्री. भीष्मकी माता, गंगा ।

भीष्म-पंचक, न. कार्तिकके शुक्लपक्षकी एकादशीसे पूर्णिमातकके ५ दिन ।

भीष्म-रत्न, न. एक रत्न सुपेद रंगका हिमालयके उत्तरमें पैदा होताहै ।

भुक्त, त्रि. भक्षित (न.) भक्षण (स्त्री) (क्ति) भोजन, भोग, प्रमाणचतुष्टयान्तर्गत प्रमाणविशेष । खाया हुआ, खाना, ऐश, चार प्रमाणोंमेंसे एक कवज़ा ।

भुक्त-भोग, पु. भक्षित-भक्षण, पुनः २ भोग करना । खायेहुएका फिर खाना । फिर २ भोग करना ।

भुग्न, त्रि. रोगादिद्वारा कुटिलीकृत; कुबड़ा ।

भुज, पु. (स्त्री.) (जा) बाहु, कर, भ्रष्टतण्डुल । बाज़ू, हाथ, भुजे चावल, कौस ।

भुज-कोटर, पु. वक्ष । बगल ।

भुज-ग, पु. सर्प; सांप, अश्लेषा नक्षत्र ।

भुजग-दारण, पु. गरुड़ पक्षी ।

भुजङ्ग, पु. सर्प, लम्पट; सांप, अय्यारा ।

भुजंग-प्रयात, न. द्वादशाक्षरपाद छन्दोविशेष, १२ अक्षरोंके एक २ पादका छंद ।

भानु, पु. सूर्य्य, किरण, प्रभु, राजा, अर्क वृक्ष, । सूरज, शुआ, मालिक, बादशाह ।

भानु-मत्, पु. सूर्य्य, त्रि. चमकीला, (स्त्री.) (ती) विक्रम राजाकी स्त्री, दुर्योधनकी स्त्री ।

भाम, पु. क्रोध, सूर्य्य, दीप्ति, भगिनी-पति ।

भामा(मिनी), स्त्री. कोपना स्त्री; गुस्सेवाली औरत; औरत । [ग्रंथविशेष ।

भामिनी-विलास, पु. जगन्नाथमिश्रकृत काव्य

भार, पु. आठ हज़ार तोला धान, चावल वग़ैरह, बोझा ।

भारत, न. वेदव्यासका बनायाहुआ एकलाख श्लोकका ग्रंथ, जिस्को "महाभारत" कहिते हैं, हिन्दुस्थानका प्रायद्वीप (पु.) नर, आग, भरत राजाका बेटा, (स्त्री.) (ती) सरस्वती ।

भारत-वर्षीय, त्रि. भारतवर्ष वासी, हिन्दुस्थानी ।

भारद्वज, न. अस्थि, (पु.) द्रोणाचार्य्य ऋषिविशेष । अगस्त्यमुनि, मंगलग्रह, व्याघ्राट-पक्षी, बृहस्पति पौत्र (स्त्री.) (जी) कार्पासविशेष ।

भार-यष्टि, पु. तराजूकी डंडी । [चिल्ला ।

भारव, न. धनुर्गुण (स्त्री.) (वी) तुलसी । कमानका

भार-वाह, } पु. भारिक; बोझा उठानेवाला
भार-वाहक, } त्रि. [वाला ।

भारवि, पु. कविविशेष, किरात काव्यके बनाने-

भारिक, पु. भारी, केशरी । शेर ।

भारिन्, पु. भारवाहक, (त्रि.) भारयुक्त; बोझा उठानेवाला, भारसे लदाहुआ ।

भार्गव, पु. परशुराम, शुक्राचार्य्य, धन्वी, गज, भारतवर्षान्तर्गत देशविशेष, (स्त्री.), (वी) पार्वती, लक्ष्मी, दूर्वा, नीलदूर्वा । राम, दैत्योंका गुरु, तीरंदाज़, हाथी, हिन्दुस्थानका एक देश, दुर्गा, देवी, स्याह दूब ।

भार्य्या, स्त्री. पत्नी; जोरू ।

भाल, न. कपाल, तेज । माथा, चमक ।

भाल-दृश,
भाल-नेत्र, } पु. शिव, महादेव ।
भाल-लोचन,

भालाङ्क, पु. करपत्र, शाकविशेष, रोहित-मत्स्य, महालक्षणयुक्त पुरुष, कच्छप, हर, ललाट, चिह्न । संडासी, रोहुमच्छी, नेक क़िस्मतवाला आदमी, कछुआ, शिव, माथेका दाग़ ।

भालू(लू)(क), पु. ऋक्ष; रीछ ।

भाव, पु. उत्पत्ति, स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, काम, जीव, संसार, धात्वर्थ, नाट्योक्तिमें मान्य, नाट्योक्तिमें निर्वेद आदि । [वाला, सोचनेवाला ।

भावक, त्रि. उत्पादक, चिन्ताकारी; पैदा करने-

भावन्, न. चतुर्विधसंस्कार, चिन्ता, ध्यान, अनुध्यान, पर्यालोचना, अधिवासन, मिश्रण, औषध, संस्कार ।

भाव-मिश्र, पु. पण्डित-श्रेष्ठ । बड़ा पण्डित ।

भाविक, त्रि. भावयुक्त, न. अलंकारविशेष ।

भावित, त्रि. चिन्तित, अंगीकृत, प्रमाणीकृत, सोचा हुआ, मनज़ूर किया हु० ।

भाविन्, त्रि. होनहार (नी) कामिनी स्त्री ।

भावुक, न. सुख, त्रि. सोचनेवाला ।

भाव्य, त्रि. अव; होनहार ।

भाषक, पु. कथक । मुतकल्लम ।

भाषण, न. कथन; कहिना । तक़रीर ।

भाषा, स्त्री. रागिनी विशेष, वाक्य कथन । ज़बान, बोली, कलाम ।

भाषा-परिच्छेद, पु. विश्वनाथ न्यायपञ्चाननकृत न्यायग्रंथवि०, कारिकावलीकी टीका ।

भाषापाद, पु. चतुष्पाद व्यवहारान्तर्गत १ म पाद । अर्ज़ी दावा । [बात ।

भाषित, त्रि. कथित, (न.) वचन । कहाहुआ,

भाषिन्, त्रि. वादी । मुतकल्लम ।

भाष्य, न. चूर्णि, सूत्रविवरण ग्रंथविशेष, गृहविशेष, (त्रि.) कथनीय । तशरीह, ख़ास किताब, ख़ासघर, कहनेकेलायक़ । [करनेवाला ।

भाष्यकार, पु. शङ्कराचार्य (त्रि.) सूत्रोंकी तशरीह

भास्, पु. प्रभा, गोष्ठ, कुक्कुर, गृध्र, शकुन्त । चमक, गाय बांधनेकी जगह, मुर्ग़, गीध, परिंदह ।

भास, पु. पक्षिविशेष, कुक्कुट । मुर्ग़ ।

भासन, न. चमक, प्रकाश । रौशनी ।

भासन्त, पु. पक्षिविशेष; सूर्य्य, नक्षत्र, चंद्र ।

भासिन्, } त्रि. प्रकाशमान, पानीपरका तै-
भासमान्, } रनेवाला ।

भासुर, त्रि. चमकीला, पु. बिलौर, वीर ।

भासु(स्व)र, न. कुष्ठौषधि, पु. स्फटिक, वीर, (त्रि.) दीप्तियुक्त, कुष्ठ-दवाई, बिलौर, बहादुर, चमकदार ।

भू-धर, } पु. पर्वत, अनन्तदेव, पहाड़।
भूध्र, }
भू-नेता, पु. राजा। बादशाह।
भू-प,] पु. राजा। [औषधि। पादशाह।
भू-पति,] पु. वटुक भैरव, राजा, ऋषभ नाम
भू-पद, पु. वृक्ष (स्त्री.) (दी) मल्लिका पुष्प।
भू-पाल, पु. भूमिपालनकर्त्ता, राजा।
भू-भृत्, पु. राजा, पर्वत। पादशाह, पहाड़।
भूमन्, पु. बहु; बहुत बड़ा। [स्थान, जिव्हा।
भूमि(मी), स्त्री. पृथिवी, स्थान, रहनेका स्थान, खेत,
भूमिका स्त्री. आभास, छद्मवेश, भूमि, चित्तावस्था-विशेष। [(त्रि). भूमिजात, (स्त्री.) (जा) सीता।
भूमि-ज, न. गौर, सुवर्ण (पु.) मङ्गलग्रह, नरकासुर,
भूमि-लेपन, न. गोमय, गोमयादिद्वारा भूमिलेपन। गोबर, गोबरसे लिपना। [मुर्दा।
भूमिष्ठ, त्रि. झुकाहुआ, ज़मीनपर रक्खा हुआ,
भूमि-रुह, पु. वृक्ष; पेड़। [चोरविशेष।
भूमि-स्पृश, त्रि. भूतलस्पर्शी, पु. वैश्य, मनुष्य,
भूमी-न्द्र, पु. राजा।
भूम्यामलकी, स्त्री. लताविशेष। ख़ासवेल।
भूयस्, व्य. पुनरर्थ, वार २, फिर (त्रि.) बहुतर।
भूयिष्ठ, त्रि. प्रचुर, यथेष्ट। बहुत, काफ़ी।
भू-युक्ता, स्त्री. खजूर। [(त्रि.) प्रचुर, अनेक।
भूरि, न. सुवर्ण (पु.) विष्णु, ब्रह्मा, शिव, इन्द्र
भूरि गम, पु. गर्दभ; गधा (त्रि.) बहुत चलनेवाला।
भूरिज्, पु. धरनी, पृथिवी। ज़मीन।
भूरि-दायिन्, न. प्रचुरदाता। काफ़ी देने वाला।
भूरि-प्रेमन्, पु. चकवाक पक्षी, चकवा (त्रि.) बहुत प्रेम करनेवाला।
भूरिमाय, पु. स्त्री. शृगाल; गीदड़।
भूरिवला, स्त्री. अतिवला दवाई।
भूरि-शस्, व्य. बहुशः, अनेकप्रकार। कईतरहसे।
भूरि-श्रवस्, पु. चन्द्रवंशीय सोमदत्त राजाका पुत्र।
भू-रुह, पु. वृक्ष, पेड़ दरख़्त।
भूर्ज, त्रि. पु. भोजका दरख़्त।
भूर्णि, स्त्री. पृथिवी, मरुभूमि। ज़मीन, रेगिस्तान।
भूर्लोक, पु. मर्त्यलोक; मातलोक।
भू-शय, पु. नकुल, गोधारि, विष्णु; नेवला, गोह।
भू-श्रवस्, पु. कृमिश्रवस्; चिउंटोंकी बिल।

भूषण, न. अलंकार, शोभा, पु. विष्णु। ज़ेवर।
भूषा, स्त्री. अलंकार करना। ज़ेवर पहिराना।
भूषित, त्रि. अलंकृत, सज्जित सजाया हुआ।
भूष्णु, त्रि. भवनशील; होनेवाला।
भूष्य, त्रि. भूषणार्ह, ज़ेवरके लायक।
भू-सुत, पु. मङ्गलग्रह, नरकासुर।
भू-स्वर्ग, पु. सुमेरुपर्वत।
भू-स्वामिन्, राजा। ज़िमीदार।
भृकुंश, पु. स्त्रीवेषधारी नर्तक; औरतकी शकल बनकर नाचनेवाला नट।
भृकुटि(टी), स्त्री. भ्रूकुटी, चीं-ब-जबीं।
भृगु, पु. मुनिविशेष, शिव, शुक्रग्रह, जमदग्नि, अरण्य, कंटक, गिरिरुचदेश। पहाड़के नज़दीकका मैदान, पहाड़की चोटी।
भृगु-पति, पु. परशुराम।
भृगु-सुत, पु. शुक्र, ऋचीक।
भृङ्ग, न. त्वच, अभ्रक, (पु.) भ्रमर, (त्रि.) लंपट, भृंगराज। खाल, अमरक, भौंरा, अय्याश, धमूड़ी, चाकसू।
भृङ्ग-पर्णिका, स्त्री. सूक्ष्मैला; छोटी इलायची।
भृङ्ग-राज, पु. भ्रमर, पक्षीविशेष, वृक्षविशेष।
भृङ्गरि(री)(टि), पु. शिवद्वारपाल। शिवजीका दरवान।
भृङ्गरोल, पु. पक्षीविशेष, कीटविशेष, भृङ्ग।
भृङ्गार, न. लवङ्ग, सुवर्ण, पु. स्वर्णादिघटित पात्र-विशेष,। लौंग, सोना, सोने वग़ैरहका वर्तन।
भृङ्गि, पु. शिवद्वारपालविशेष, वटवृक्ष (स्त्री.) (ङ्गी) अतिविपालता।
भृङ्गिन्, त्रि. शिवका अनुचर।
भृङ्गेष्टा, स्त्री. घृतकुमारी; घीकुवार।
भृत, त्रि. पालित (स्त्री) (ता) वेतन, मूल्य, भरण। पालाहुआ, भराहुआ, मज़दूरी, कीमत।
भृतक, पु. वेतनोपजीवी, कर्म्मकर्त्ता। नौकर।
भृत्य, पु. दास, त्रि. प्रतिपालित (स्त्री.) (त्या) दासी, वेतनसे परवरिश कियाहुआ, मज़दूरी।
भृमि, पु. वावरोला, घुंवर। [बार २, ज़्यादातर।
भृश, न. अत्यन्त (त्रि.) अतिशय-विशिष्ट, बहुत,
भृशस्, व्य. प्रकर्षार्थ, मुहुरर्थ, शोभन। अच्छीत-रहसे, बार २, खूब सूरतीसे।

भुजं-गम, पु. सर्प, सीसक; सांप, सीसा ।
भुजंग-संगता, स्त्री. छन्दोविशेष ।
भुजंग-हन्, पु. गरुड़, मयूर; मोर ।
भुजा-न्तर, न. वक्षस्थल । छाती ।
भुजि, पु. वह्नि; आग । आतिश ।
भुजिष्य, पु. स्वतंत्र, हस्तसूत्र, रोगविशेष (स्त्री.) (ष्या) दासी, वेश्या ।
भुञ्जान, त्रि. भोग-कर्ता । भोगनेवाला ।
भुरिक्, स्त्री. धरती, स्वर्ग और पाताल ।
भुवन, न. जगत, ब्रह्माण्ड, सलिल, गगन, आकाश-जन । दुनियां, पानी, आसमान, शख्स ।
भुवन-कोष, पु. भूगोल । कुरहज़मीन ।
भुवने-श्वर, पु. ईश्वर (स्त्री.) (री) महाविद्याविशेष ।
भुवन्यु, पु. सूर्य्य, अग्नि, चंद्र ।
भुवर, पु. सूर्य्य और पृथिवीका अन्तर ।
भुवि, न. समुद्र ।
भुशुण्डी, स्त्री. अस्त्रविशेष, बंदूक, तोप ।
भू, व्य. रसातल, स्त्री. पृथिवी, यज्ञाग्नि ।
भूक, न. छिद्र, काल, (पु.) अंधकार ।
भूकम्प, पु. भूमि-कम्पन; भूचाल ।
भूकल, पु. अदम्य-घोटक । बेबस घोड़ा ।
भूकश्यप, वासुदेव ।
भूकेश, पु. शेवाल, वटवृक्ष ।
भूक्षित्, पु. शूकर; सूअर ।
भूगर, न. विष । ज़हर ।
भू-गोल, पु. भूमण्डल । कुरह ज़मीन, जुगरा फ़िया ।
भू-चर, त्रि. स्थलचर, मनुष्यादि । इन्सान, वग़ैरह ।
भू-च्छाय, स्त्री. अंधकार; अंधेरह ।
भू-जम्बू, न. स्त्री. गोधूम, विकङ्कत फल; गेहूं ।
भूत, न. पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, न्याय, उचित, (त्रि.) अतिप्राप्त सत्य, भूतकाल, (स्त्री.) (ता) कृष्ण चतुर्दशी, अंधेरी रात ।
भूत-काल, पु. अतीतकाल । माज़ी ।
भूत-गोल, पु. भू-मण्डल । जमीन । [सर ।
भूत-ग्राम, पु. पृथिव्यादि समुदाय । अर्वा अना-
भूत-घ्न, पु. उष्ट्र लसुन, भूर्जपत्र (स्त्री.) (घ्नी) तुलसी (त्रि.) भूतग्रहनाशक, ऊंट, भोजपत्ता, भूतोंका नाश करनेवाले । [चौदस ।
भूत-चतुर्दशी, स्त्री. यम चतुर्दशी; कार्तिक शुदि
भूत-नाथ, पु. शिव, महादेव ।
भूत-नाशन, पु. भल्लातक वृक्ष, सर्षप, भूतहन्ता, (न.) रुद्राक्ष; भिलावेका दरख़्त, सरसों, भूतोंके तबाह करनेवाला, रुद्राक्ष । [पूर्णिमा ।
भूत-पूर्णिमा, स्त्री. अश्विनी पूर्णमा; असूज शुदि
भूत-भावन, पु. परमेश्वर । महादेव ।
भूत-भृत, पु. विष्णु, (त्रि.) भूतपालक । [लिविशेष ।
भूत-यज्ञ, पु. भूतबलि, ५ महायज्ञोंमेंसे एक, ब-
भू-तल, न. पाताल, जमीन ।
भूत-वित्, पु. ना. (स्त्री). नास्तिकविशेष ।
भूत-योनि, पु. परमात्मा, ब्रह्म ।
भूत-शुद्धि, स्त्री. पूजाआदिमें बीजमंत्रद्वारा वाल-कुक्षिस्थ पापपुरुषदहनपूर्वक शरीरशोधन ।
भूत-सर्ग, न. भूतसृष्टि, दुनियांकी पैदायश ।
भूत-सृज्, पु. ब्रह्मा ।
भूत-हर, गुग्गुलु; गूगल ।
भूताङ्कुश, पु. वृक्षविशेष ।
भूता-त्मन्, पु. विष्णु, ब्रह्मा ।
भूता-दि, पु. परमेश्वर ।
भूता-वास, पु. बहेड़ा, विष्णु ।
भूता-मर, पु. देह, ब्रह्मा, शिव, युद्ध, विष्णु ।
भूता-रि, त्रि. हिंगु, भूत शत्रु । हीङ्ग, भूतोंका दुश्मन । [दरख़्त, जिसम ।
भूत-वास, पु. विभीतक वृक्ष, देह, विष्णु, बहेड़ेका
भूति, स्त्री. अणिमाद्यष्ट प्रकार वैभव, शम्भु धृत भस्म, भस्म, सम्पत्ति, हस्तिश्रृंगार, जाति रोहिषतृण, उत्पत्ति, सत्ताके अर्थ माथे पदसंधूरकी रेखा । हशमत्त इकबालमंदी, राख, हाथीकी सजावट; जात, खास, दवाई ।
भूतिक, न. भूनिम्ब, चिरायता, अजवा इन ।
भूतिगर्भ, पु. भवभूतिकवि ।
भूति-निधान, न. धनिष्ठा नक्षत्र ।
भूति-मत्, त्रि. ऐश्वर्य्ययुक्त । हशमतमंद ।
भूतेश, पु. शिव ।
भूत्तम, न. सुवर्ण, सोना । ज़र ।
भू-दार, पु. शूकर, त्रि. भूमिविदारणकारी, ज़मीन खोदनेवाला ।
भू-देव, पु. ब्राह्मण ।
भू-धन, पु. राजा । किसान ।

मणि-बीज, पु. अनार ।
मणि-सर, न. मणिमय हार । मणियोंकी माला ।
मणीव, व्य. मणितुल्य; मणीकी तरह ।
मणीवक, न. पुष्प; फूल ।
मण्ड, पु. न. सर्वाग्रस, पु. एरण्डवृक्ष, शाकविशेष, सार दर्दुर, भक्तादिजात रस, (स्त्री) (ण्डा) मद्य । मांड, एरंडीका पेड़, ख़ास शाक, मेडक, मांड, पिछ ।
मण्डन, व्य. भूषण । ज़ेवर ।
मण्ड-प, पु. न. जनविश्रामगृह, (त्रि) मण्डपानकर्त्ता, (स्त्री) (पा) निष्पावी । आराम लेनेका घर, वेदी, मंडवा, माण्ड पीनेवाला, शूकशिंबी बूटी ।
मण्डल(क), न. परिवेश (पु) समूह, गोल चक्र, नखाघात, योद्धादिस्थितिविशेष, (त्रि) बिम्ब, (पु) कुक्कर, सर्पविशेष, (स्त्री) (ली) सांप, विडाल ।
मण्डला-ग्र, पु. खड्ग । तलवार खंडा ।
मण्डला-धीश, } पु. ४० योजनका राजा ।
मण्डले-श्वर, }
मण्डलिन, पु. विडाल, सर्प, वट-वृक्ष, विद्रा, सांप, वड़का दरख़्त ।
मण्ड-हारक, पु. शौण्डिक । कलाल ।
मण्डित, त्रि. भूषित, वेष्टित, पु. बौद्ध गणाधिप, वि० । सजायाहुआ, लपेटाहुआ, जैनोंका देवता ।
मण्डूक, पु. मेडक, व्याघ्र, मुनिविशेष (स्त्री) (का) (की) मञ्जिष्ठा लता, ब्राह्मी, प्रगल्भा नारी, मण्डूकपर्णी । मेंडक, मजीठकी वेल, ब्राह्मी बूटी, होशयार औरत, मेण्डकी ।
मण्डूर, न. पु. लोहमल; लोहेकी मैल ।
मण्डोदक, न. मांड ।
मत, न. सम्मति, अभिप्राय, ज्ञान, अर्चा, (त्रि) सम्मत, ज्ञात, अर्चित । इज़्त, राय, इलम, मनशा, जानाहुआ, पूजाहुआ ।
मतङ्ग, पु. मुनिविशेष, मेघ, हस्ती । मेंढा, हाथी ।
मतङ्गज, पु. हस्ती; हाथी । फील ।
मतल्लिका, स्त्री. शब्दके परेआवेतो प्रशस्त; भला, उमदह । [मुत्तलफ़राय ।
मता-न्तर, पु. भिन्नमत, अन्य प्रकार । औरतरह,
मति, स्त्री. बुद्धि, इच्छा, स्मृति, आर्य्यता, मुक्ता, शाकविशेष । अकल, ख्वाहिश, यादाशत, अदब, मोती, एक किस्म शाककी ।
मति-मत्, त्रि. बुद्धिमान् । दाना ।
मतिष्ठ, त्रि. अतिशय बुद्धिमान् । बड़ा आकिल ।
मत्क, त्रि. मत्कुण; खटमल ।
मत्कुण, पु. कीटविशेष, निश्मश्रुपुरुष, नारकेल, जंघात्राण (स्त्री) (णा) अजातलोमा भगा; खटमल खोदा आदमी, नरियेल ।
मत्त, पु. क्रोधान्ध हस्ती, धूस्तर, कोकिल, महिष, (स्त्री) (त्ता) सुरा, १० अक्षरपादका छन्द, (त्रि.) प्रसन्न, व्याकुल, मतवाला ।
मत्तकाशि(सि), स्त्री. उत्तमा स्त्री ।
मत्त-मयूर, पु. मेघ. १३ अक्षरका छन्दविशेष ।
मत्ता-क्रीडा, न. छन्दोविशेष । ख़ास बहर ।
मत्स, पु. मच्छ (स्त्री) (त्सी) मछली ।
मत्सर, पु. द्वेष, क्रोध, परश्रीकातरता, (त्रि.) कृपण (स्त्री) (रा) मक्षिका, आत्मधिक्कारविशेष । हसद, गुस्सा, कमीनापन, लालची, मखील, अपनी हिकारत, मक्खी ।
मत्स्य, पु. खनामख्यात जलजन्तु (स्त्री) (त्स्यी) मच्छी, १८ पुराणोंमेंसे एक, १० अवतारोंमेंसे पहिला ।
मत्स्य-गन्धा, (स्त्री.) व्यासमाता; मत्स्योदरी ।
मत्स्यण्डी, स्त्री. दालचीनी ।
मत्स्या-धानी, स्त्री. मछलीका कांटा ।
मत्स्य-राज, पु. विराटराजा, रोहू मछली ।
मथन, न. विलोडन; बिलोना, (पु.) गनेरी दरख़्त ।
मथित, न. निर्जल, घोल, (त्रि.) विलोडित; मठा; विलोया हुआ, उक्साया हुआ ।
मथिन्, पु. मथानी ।
मथुरा, स्त्री. खनामख्यात पुरी ।
मथुरेश, पु. श्रीकृष्ण ।
मद, पु. हस्तिगण्डजल, हर्ष, मद्य, अहंकार (स्त्री) पानपात्र । हाथीकी मस्ती, खुशी, खराब, गरूर, कस्तूरी, प्याला ।
मद-कट, पु. खण्ड; खांड, चीनी ।
मद-कल, पु. मत्तहस्ती; मस्त हाथी ।
मद-च्युत, त्रि. मदस्रावी । मस्ती बहानेवाला ।
मदन, पु. कामदेव, वसन्त, धूस्तर, सिक्थकवृक्षविशेष, भ्रमर, माष, खदिरवृक्ष, बकुलवृक्ष, (स्त्री) (ना) (नी) अंकुश, सुरा, शारिका, मृगनाभि ।

मघवत्, } पु. इन्द्र, जिन चक्रवर्त्ति विशेष, (स्त्री)
मघवन्, } (नी). इन्द्राणी।
माङ्किल, पु. अनल; जंगलकी आग।
मङ्कर, पु. मकर, शीशा।
मङ्क्षु, } व्य. शैघ्य, भृशार्थ। जलदीसे, बार २।
मङ्क्षु, }
मक्षण, न. कच्छ।
मङ्क्षु, व्य. शीघ्र। जल्दी।
मङ्ग, पु. नावका माथा।
मङ्गल, न. अभिप्रेतार्थसिद्धि (त्रि) तद्विशिष्ट, पु. ग्रहविशेष (स्त्री) पार्वती, पतिव्रता, हरिद्रा। खुशी, खुश किस्मत, मरीख़, देवी, पाकदामना, हलदी।
मङ्गल-छाय, पु. वटवृक्ष; बड़का दरख़्त।
मङ्गल-पाठक, त्रि. स्तुतिपाठक; भाट।
मङ्गल-प्रदा, स्त्री. हरिद्रा; हल्दी।
मङ्गलाचरण, न. कर्म्मारम्भमें कर्तव्य शुभजनक-क्रिया। कामके शुरुमें परमेश्वरकी इबादत।
मङ्गल्य, न. दधि, चंदन, स्वर्ण, सिन्दूर (त्रि.) शिवकर, रुचिर, साधु पु. अश्वत्थ, विल्कम, सूकर, जीरक, (स्त्री.) (ल्या) शमी, शुक्र वचा, रोचना, प्रियंगू, हरिद्रा, दूर्वा, नारिकेल, कपित्थ। दहि, संदल, सोना, भला, खूब सूरत, नेक, पीपल, बिल, मसर, ज़ीरा, नरियेल।
मङ्गिनी, स्त्री. नौका; नाव।
मचर्चिका, स्त्री. प्रशस्त। उमदह।
मज्जका, स्त्री. मज्जा।
मज्जन(न्), न. स्नान, मज्जा; न्हाना, मगज़।
मज्जा, स्त्री. अस्थिसार, वृक्षसारांश। मिज, दरख़्तका सत।
मज्जा-ज, पु. भूमिजात, गुग्गुल; गूग्गल।
मज्जा-रस, पु. शुक्र। मनी।
मज्जा-सार, पु. जातीफल; जायफल।
मज्जित, त्रि. मग्न; डुबाहुआ।
मञ्चक, पु. खट्वा, उच्च, उन्नतस्थान; खाट, ऊंचा, चौतड़ा, मचान।
मञ्जरी(रि), स्त्री. मिंजर।
मञ्जन, न. मार्जन, मुखप्रक्षालन द्रव्य, नेत्रमलहर द्रव्य, मांजन; मुंह धोनेकी चीज़, अंजन।
मञ्जर, न. मुक्ता, तिलकवृक्ष, वल्ली, (स्त्री) (रि, री) मोती, ख़ास दरख़्त, बेल, फुनगी, मिंजर।
मञ्जि(ञ्जी)(मञ्जरी)मज्जा, (स्त्री.) छागी, मञ्जरि, लता, बकरी, मिंजर, बेल।
मञ्जिका, स्त्री. वेश्या; छिनाल औरत। [मजीठ।
मञ्जिष्ठा, स्त्री. स्वनामख्यात रक्तवर्ण लताविशेष।
मञ्जीर, पु. न. पादाभरणविशेष (पु.) मन्थानरज्जुबन्धार्थ स्तंभ। पावमें पहिरनेका ज़ेवर, मथानीकी रस्सी, बांधनेका खंभा।
मञ्जु, त्रि. मनोज्ञ, हंस, दिलचस्प। खूब सूरत।
मञ्जुकेशिन्, पु. श्रीकृष्ण, (त्रि) सुन्दर केशयुक्त।
मञ्जुघोष, पु. पूर्व जिनविशेष, (त्रि.) उत्तम शब्दयुक्त, (स्त्री) (षा) अप्सरा। हूर।
मञ्जुभद्र, पु. जिनविशेष।
मञ्जु-भाषिन्, (त्रि) मीठा बोलनेवाला, (स्त्री) (नी)।
मञ्जुल, न. जलाञ्जली, खञ्जन, शवल, (पु) जलरंक पक्षी, त्रि. सुंदर। पानीकी चुली, ममोला, खूब सूरत। [पिटारी, संदूकची।
मञ्जु(ञ्जू)षा, स्त्री. व्याकरण ग्रन्थविशेष, पिटिक;
मठ, पु. छात्रनिलय, मन्त्रीरथ, मंदिर, तालिब इल्मोंके रहनेका घर, योगियोंके रहनेका घर, मदरसहका मकान।
मठर, पु. मुनिविशेष। [कुसका अगला हिस्सा।
मणि, पु. स्त्री. (णी) जवाहर, मिनमिना, बड़ामद्द,
मणिक, न अलिञ्जर; पानीका बड़ा वर्तन।
मणि-कर्णिका, स्त्री. काशीस्थतीर्थविशेष।
मणि-कार, पु. जौहरी, ग्रंथकारविशेष।
मणि-ग्रीव, पु. कुवेरपुत्र, (त्रि) मणिकन्धर, कुवेरका बेटा, जिसके गलेमें मणि है।
मणित, न. मैथुनकालीन वाक्य, रतकूजित।
मणिपूर, पु. शरचक्रान्तर्गत नाभिमध्यस्थित तृतीय चक्र, स्वनामख्यात देश।
मणिप्रभा, स्त्री. छन्दोविशेष। ख़ास बहर।
मणि-बन्ध, पु. प्रकोष्ठ और मणिका मध्यस्थान, हाथका पौंचा, एक ख़ास पहाड़। [बहर।
मणिमध्य, न. ९ अक्षरका छन्दविशेष। ख़ास
मणि-मन्थ, पु. सैंधव, लवण, पर्वतविशेष।
मणि-मय, पु. त्रि. मणिनिर्मित, मणिस्वरूप।
मणि-वर, पु. हीरा, (त्रि) उत्तम मणि।

दीकका खास जंगल । किष्किंधामें सुग्रीवका बन; कोइल ।
मधु-व्रत, पु. भ्रमर; भौंरा ।
मधु-भृत्, पु. भ्रमर; भौंरा ।
मधु-मक्षिका, स्त्री. कीटविशेष; शहदकी मक्खी ।
मधु-मत्, त्रि. मीठा, स्त्री. (ती) नदीविशेष, देवीविशेष, ९ अक्षरका छंद ।
मधु-मथ, } पु. विष्णु ।
मधु-मथन, }
मधु-यष्टि, (ष्टिका) स्त्री. मुलहटी ।
मधुर, न. वह्न, विष, पु. मिष्ट रस, जीवकवृक्ष, रक्तेक्षु गुड़ (त्रि) स्वादुप्रिय, टीन; मीठा ज़ायका, सुरख़ पौंडा, दोस्त । [गभीरावृक्ष ।
मधु-रसा, स्त्री. मूर्वा वृक्ष, अङ्गूरफल, दग्धिका,
मधुर-स्रवा, स्त्री. पिण्ड खर्जूरी; पिण्ड खजूर ।
मधुरा, स्त्री शतपुष्पा, मथुरानगरी, मेद, मधुली, मधुयष्टिका, काकोली, शतावरी, बृहज्जीवंती ।
मधु-रिपु, पु. विष्णु ।
मधुरिन्, पु. मिष्टता; मिठास ।
मधुल, न. मद्य शराव ।
मधुलिका, स्त्री. राजिका; राई ।
मधु-लिह्, }
मधु-लेहिन्, } पु. अलि; भौंरा, शहदकी मक्खी ।
मधु-लोलुप, }
मधु-सख, पु. कामदेव ।
मधु-सूदन, पु. भ्रमर, श्रीकृष्ण । भौंरा ।
मधूत्सव, पु. चैत्री पूर्णिमा; चेतकी पुनों ।
मध्य पु. न. कटिदेश, तालवि० । दशान्त्यसंख्या, (पु.) ग्रह (त्रि). न्याय, अन्तर्वर्ती (स्त्री) (ध्या) स्त्रीविशेष, अंगुली मझली ३ अक्षरका छन्दविशेष, एक बड़ा शुमार, १००००००००००००००००००, सच्यारा, इन्साफ़, बीचका, जवान औरत, मंझली ऊंगली ।
मध्य-देश, पु. प्रयागके पश्चिमका देश ।
मध्यतस्, व्य. अभ्यन्तर । बीचमेंसे ।
मध्यन्दिन, न. मध्यान्ह । दुपहर ।
मध्यम, न. पु. देहमध्यभाग, सप्तस्वरान्तर्गत ५म, स्वर, मृगविशेष, (त्रि.) मध्यम (स्त्री) (मा) दृष्टरजस्का स्त्री, कर्णिका, अंगुलीविशेष, छन्द, वि० स्वीयाद्यन्तर्गत नायकाविशेष । कमर, सातस्वरोंमेंसे ५वी, खास हरण, बीचका, हैज़वाली औरत, मझली ऊंगुली, तीन अक्षरका छंद, स्वीयादि नायकाओमेसे एक ।
मध्यम-लोक, पु. पृथिवी । ज़मीन ।
मध्यम-पाण्डव, पु. अर्जुन ।
मध्यम-भृतक, पु. कृषीकार, भृत्य । किसान ।
मध्य-वर्तिन्, } त्रि. मध्यस्थायी, जोतर्फदारनहो ।
मध्यस्थ, } सालस, बीचका ।
मध्यस्थल, न. कटिदेश । कमर ।
मध्यस्रव, पु. मधुजनित; मद्य ।
मध्यान्ह, पु. कुतुपकाल; दुपहर ।
मन, (प्र.) ४० सेर परिमाण । [वाली वृत्ति ।
मनस्, न. ज्ञानेन्द्रियविशेष; संकल्प विकल्प उठाने
मनःशिल, पु. रक्तवर्ण धातुविशेष; मंछल ।
मनन, न. बुद्धि, चिन्तन, भाषण, मानस, बोधन, धारण । अकल, सोच, ख़याल, पकड़ ।
मनसा, स्त्री. जरत्कारुमुनिकी स्त्री ।
मनसि-ज, पु. कामदेव, (त्रि) मनोजात । दिलका ।
मनस्कार पु. अभिलाष, अनुभव । ख़ाहिश, क़यास ।
मनस्विन्, पु. शरभ, (त्रि) प्रशस्त मनोयुक्त । एक हैवान, साफ़ दिल, ग़ौर करनेवाला ।
मनाक्, व्य. अल्प; थोड़ासा ।
मनायी, (वी) स्त्री. मनुपत्नी; मनुकी जोरू ।
मनित, त्रि. विदित, अवगत; जानाहुआ ।
मनीक, न. अञ्जन; काजल ।
मनीषा, स्त्री. बुद्धि । अकल ।
मनीषिन्, पु. पण्डित (त्रि) सुधी । अकल, दाना ।
मनु, पु. मनुपुत्र, ब्रह्मपुत्र, धर्मशास्त्र वक्ता मुनि, जिनविशेष, मंत्र । १ स्वायंभुव, २ स्वारोचिष ३ उत्तम ४ तामस ५ रैवत ६ चाक्षुष ७ वैवस्वत ८ सावर्णी, ९ दक्षसावर्णी १० ब्रह्मसावर्णी ११ धर्मसावर्णि १२ रुद्रसावर्णि १३ देवसावर्णि, १४ इन्द्रसावर्णि,
मनु-ज, पु. मनुष्य, (स्त्री) (जा) । आदमीकी, औरत ।
मनुभू, पु. मनुष्य । आदमी ।
मनुष्य, पु. मनुपुत्र । इन्सान ।
मनुष्य-धर्मन्, पु. कुबेर, धनका देवता । फ़रज़ ।

शहवतका देवता, मौसिम, धतूरह, मोम, खास एक पेड़, भौरा, उड़द, खैरेका पेड़, आकश, खराव, मयना, चिड़िया, कस्तूरी ।

मदनकाकुवर, पु. पारावत; कबूतर ।

मदन-गृह, न. लग्नसे ७ म, क्षेत्र, मात्राछन्द ।

मदन-चतुर्दशी, स्त्री. चैत्रशुक्ल चतुर्दशी । चेत सुदी चौदस । [सुदी १३ शी ।

मदन-त्रयोदशी, स्त्री. चैत्र शुक्ल त्रयोदशी; चेत

मदन द्वादशी, स्त्री. चैत्र शुदी द्वादशी ।

मदन-पाठक, पु. कोकिल; कोइल ।

मदन-भवन, न. लग्नसे ७ वां स्थान । [सुंदर ।

मदन-मोहन, पु. श्रीकृष्ण नारायण, (त्रि.) अति

मदन-ललित, न. छन्दोविशेष । एक खास बहिर ।

मदन-शलाका, स्त्री. सारकि पक्षी; मैना, कोइल ।

मदना-लय, पु. भगा, जायास्थान, पद्म । कुस, लग्नसे ७ वां घर, कौलफूल ।

मदना-सव, पु. होली ।

मदनो-त्सव, पु. होली ।

मदयन्ती, स्त्री. वनमल्लिका । वनका मालती फूल ।

मदयितृ, त्रि. मादक । सुनदराह चीज़ ।

मदयित्नु, न. मद्य, (पु.) कामदेव, शौण्डिक, मदयुक्त, मेघ । शराव, शरावसे भराहुआ, बादल, शहवतका देवता, कलाल ।

मदाढ्य, पु. तालवृक्ष, (त्रि) मदयुक्त, (स्त्री) (ढ्या) लोहितझिण्टी । तालका दरख़त, मतवाला, बांसा ।

मदा-न्ध, त्रि. अतिदर्पी । मग़रूर ।

मदार, पु. हस्ती, धूर्त, शूकर, कामुक, गंधविशेष, मत्तहस्ती, नृपवि० । हाथी, शरीर, सूअर, शहवती, खुशबूई, मतवाला, हाथी, नाम राजाका ।

मदाम्यद, पु. फलक मत्स्य; फूलई मच्छी ।

मदालस, त्रि निरुद्यम । सुस्त ।

मदिर, पु. रक्तखदिर, (स्त्री) (रा) मत्त, खञ्जनपक्षी, सुरा, छन्दोविशेष । सुरख़ खैरा, मस्त, ममोला, शराब, नाम एक बहिरका ।

मदिराक्षी, स्त्री. मदिरेक्षणा स्त्री, सुलोचना कामिनी ।

मदिष्टा, स्त्री. मदिरा । शराव ।

मदीय, त्रि. मत्संम्बधीय; मेरा ।

मदोत्कट, पु. मत्तहस्ती, (स्त्री) (टा) मदिरा, (त्रि.) मत्त, अहंकारी ।

मदोदग्र, त्रि. उन्मत्त, (स्त्री) (ग्रा) उन्मत्ता

मदोद्धता, स्त्री । मस्त औरत ।

मद्गु, पु. बगुला, दोगला, नाव ।

मद्गुर, पु. मत्स्यविशेष; नाम एक मच्छीका ।

मद्य, सुरा, मद । शराव ।

मद्य-प्रासन, न. मद्यरोचक द्रव्य । नशीयोंका नुकल ।

मद्र, पु. देशविशेष, हर्ष; मारवाड़, खुशी, त्रि. मारवाड़ी आदमी ।

मद्र-सुता, स्त्री. माद्री, पाण्डुपत्नी, नकुल, और सहदेवकी माता ।

मधुत्र, मधु, क्षीर, रसविशेष पुष्परस, (पु) मधुद्रुम, वसन्तऋतु, दैत्यविशेष, चैत्रमास, अशोकवृक्ष, यष्टिमधु, राजाविशेष, (स्त्री) (त्रा) जीवन्ती, वृक्ष, (त्रि) मीठा, शराव, दूध, फलोंका रस, मोहेका पेड़, मौसिमबहार, चेतका महीना, अशोकका दरख़्त, मुलहठी ।

मधुक, न. यष्टिमधुका, त्रपु. (पु) स्तुतिपाठक, विहगान्तर, त्रि. मधुर । खास पौदा, टीन, भाट, मिराशी, चिड़िया, खास मीठा ।

मधु-कण्ठ, पु. कोकिल; कोइल ।

मधु-कर, पु. भ्रमर, कामी, भृङ्गराजवृक्ष; भौरा, शहवती, भीमराज दरख़त ।

मधु-कारि, पु. भ्रमर; भौरा ।

मधु-कृत, पु. भ्रमर; भौरा ।

मधु-गायन, पु. कोकिल; कोइल ।

मधु-ज, न. शिक्थक, (स्त्री) पृथ्वी, सीता; मोम, ज़मीन, मिसरी ।

मधु-जित, पु. विष्णु ।

मधु-त्रय, त्र. शहद, घी और चीनी ।

मधु-द्विप्, पु. विष्णु ।

मधुद, पु. भ्रमर; भौरा ।

मधु-धृत्, पु. पुष्पछत्ता । रसाधार ।

मधु-प, पु. भ्रमर; भौरा । [खानेकी वस्तु ।

मधुपर्क, न. शहद, घी, और दहि मिले हुए ।

मधुपर्णी, स्त्री. गुडूचीलता, गमकारी वृक्ष, नीली वृक्ष; गिलो, गमकारी का पोदा, नीलका पोदा ।

मधु-पुरी, स्त्री. मथुरापुरी ।

मधुवन, न. मथुरानिकटस्थ बनविशेष । किष्किन्धास्थ सुग्रीव वनवि. (पु) पिक । मथुराके नज-

मन्मन, पु. गृहबन्धनी, भ्रमर; गुनगुना, भौंरा।
मन्या, स्त्री. गर्दनके पीछेका पट्ठा।
मन्यु, पु क्रोध, दीनता, यज्ञ, क्षत्रियविशेष।
मन्वन्तर, न. देवताओंके ७१ युग, मनुका शासनकाल।
ममता, } स्त्री. दर्प, ममत्व, गरुड़। खुदगर्ज़ी।
ममत्व, } न.
मय, पु. उष्ट्र, अश्वतर, दानविशेष, तत्स्वरूप। (स्त्री) (या) चिकित्सा; ऊंठ, खचर, दैत्योंका कारीगर, वैसाही तिबाबत।
मयु, पु. किन्नर, मृग, हिरण।
मयूख, पु. किरण, दीप्ति, ज्वाला, शोभा कील।
मयूर, पु. स्वनामख्यात पक्षी, मोर।
मर, पु. मरन, (त्रि) मरणाधीन।
मरकत, पु. हरिद्वर्ण, मणिविशेष; पन्ना।
मरण, न. पञ्चता; मौत।
मरन्द (क), न. मकरन्द; फूलोंका रस।
मराल, पु. राजहंस, कज्जल, कारण्डव पक्षी, अश्व, पक्षी, मेघ, खल, (त्रि.) स्निग्ध, घोड़ा, बद; चिकना।
मिर(चि) च, न. स्वनामख्यात वर्तुलाकार।
मरीच, न. स्वनामख्यात कटुद्रव्य; मिरच।
मरीचि, पु. मुनिविशेष, कृपण, (पु. स्त्री.) ची किरण, परिमाण, मुनिका नाम, कंजूस, पैमाना।
मरीचिका, स्त्री. मृगतृष्णा। सराव। [युक्त।
मरीचिमालिन्, पु सूर्य्य, चन्द्र, (त्रि) किरण-
मरु, पु. पर्वत, निर्जलदेश। पहाड़, रेगस्तान।
मरुटा (ण्डा), स्त्री. उचललाटा स्त्री; ऊंचे माथेवाली औरत।
मरुत (त्), पु. वायुदेवता। हवा।
मरुत्त, पु. चन्द्रवंशीय राजाविशेष, परीक्षित राजाका बेटा। हवा।
मरुत्पुत्र, पु. भीमसेन, हनुमान।
मरु-त्फल, न. घनोफल, आवला, ओला।
मरुत्वत्, पु. इन्द्र, देवताओंका राजा, बादल, हनूमान, समुद्र।
मरुत्सख, पु. इन्द्र, अग्नि। अतिश।
मरुद्रथ, पु. घोटक; घोड़ा।
मरुद्गण, पु. वायुगण, ४९ स, वायु।
मरुद्वर्त्मन्, न. आकाश। आसमान।
मरुद्वाह, पु. धूम, अग्नि; धूंआ। आतिश।
मरुभूमि, स्त्री. निर्जलदेश, वृक्षलतादि शून्य देश।
मरुल, पु. वक; बगुला।
मरूक, पु. मृगविशेष, मयूर। खास हिरण, ताऊस।
मर्क, पु. देह, वायु, वानर, भेक, जिसम, हवा, बंदर, मेंडक। [विशेष, दैत्य।
मर्कट, पु. वानर, ऊर्णनाभ, विंवविशेष, मत्स्य-
मर्ज्जू, स्त्री. शुद्धि, (पु.) रजक। सफ़ाई, धोबी।
मर्त्त, } पु. मनुष्य, मनुष्यलोक। आदमी, दुनियां।
मर्त्य, }
मर्द, पु. मलनेवाला; न. मलना।
मर्द्दन, न. अङ्गमर्दन, चूर्णन, पेषण, दलन। मालिश, चूरा करना, पीसना, दलना।
मर्द्दल, पु. वाद्ययंत्रविशेष।
मर्द्दिन्, त्रि. मला हुआ, चूरा किया हुआ।
मर्म्मन्, न. स्वरूप, तत्व, सन्धिस्थान, जीवनस्थान, अभिप्राय, सार, विषय, गुप्त, हेतु, तात्पर्य्य। शकल, भेद, जोड़, मर्ज़ी।
मर्म्म-ज्ञ, त्रि. तात्पर्य्यज्ञ, रहस्यज्ञ, दान, राजदान।
मर्म्मर, पु. वस्त्र, पत्रध्वनि (स्त्री) (री) हरिद्रा; पत्तें कपड़ेया नखोंकी खड़खड़ाहट, हलदी, (त्रि) खड़खड़ शब्द करनेवाला।
मर्म-स्पृक्, } त्रि. मर्मोंको व्यथा देनेवाला,
मर्म-विध, } मर्मभेदी।
मर्म्मनिक, }
मर्म्मरिक, पु. दीन। ग़रीब, दुखिया।
मर्म्मिक, त्रि. मर्म्मज्ञ। होशियार, दूरंदेश।
मर्य्यादा, स्त्री. न्यायपथमें स्थिति, सदाचार, सीमा, कूल, सम्मान, संभ्रम। रास्त रास्तेपर रहना, हद्द, किनारा, नेक चलनी।
मर्ष, पु. क्षान्ति। सबर, सहारा।
मर्षण, न. क्षमा, सांप, मर्दन। माफ़ी, मलना, सबर।
मर्षित, त्रि. क्षमायुक्त, अभिमर्दित, (न) क्षमा। साबिर, मला हुआ, सबर।
मर्षितवत्, त्रि. क्षमाशील। माफ़ करनेवाला।
मल, पु. न. पाप, विष्ठा, किट्ट, कर्पूर, वात पित्त. कफादि, त्रिपदाभरण त्रि. मलिन, कृपण। गुनाह, मयला, मैल, काफूर, औरतके पांवका ज़ेवर, मैला, कंजूस।

मनो-ज,
मनो-जन्मन्, } पु. काम (त्रि) मनुका ।
मनो-जव, पु. विष्णु (त्रि) अतिवेगवान् (न) मनोवेग । तेज़री, दिलकी तेज़ी ।
मनो-ज्ञ, त्रि. मनोहर, सुन्दर, (स्त्री) (ज्ञा) । सुन्दरी ।
मनो-नीत, त्रि. मनोमत्त । दिलपसन्द ।
मनो-भव, पु. कन्दर्प, कामदेव ।
मनो-भू,
मनोरम, } पु. इच्छा । ख्वाहिश ।
मनो-रम, त्रि. मनोज्ञ (स्त्री) (मा), गोरोचना, बुद्धशक्तिविशेष । दिलचस्प, गोरोचन, १० अक्षरका छन्दविशेष ।
मनो-हर,
मनो-हारिन्, } त्रि. मनोज्ञ, सुन्दर (पु) कुन्दवृक्ष, (न) सुवर्ण, (स्त्री) रा, रिणी, जातीपुष्प, मिष्टान्नविशेष ।
मन्तव्य, त्रि. मननीय, विचारणीय । सोचनेके लायक । [हसद, इन्सान ।
मन्तु, पु. अपराध, ईर्षा, कोप, प्रजापति । क़सूर,
मन्त्र, पु. वेदांशविशेष, देवआदिकी उपासनाके उपयोगी वाक्य, परामर्श । वेदका हिस्सह, सलाह ।
मन्त्र-कर्तृ, पु. मंत्री । वज़ीर ।
मन्त्र-जिव्ह, पु. अग्नि । अतिश ।
मन्त्रण, न. परामर्श, (स्त्री) (णा) सलाह ।
मन्त्र-दातृ, त्रि. गुरु, आचार्य । मुर्शद ।
मन्त्रतस्, व्य. परामर्शण । सलाहसे ।
मन्त्रदीधिति, पु. वन्हि; आग । आतिश ।
मन्त्र-पूत, त्रि. मंत्रद्वारा पवित्रकृत; मंत्रोंसे पवित्र किया हुआ । [वज़ीर ।
मन्त्र-विद्, पु. चर, मंत्री (त्रि) मंत्रज्ञाता । जासूस,
मन्त्रित, त्रि. मंत्रद्वारासहकृत, परामृष्ट । मंत्रोंसे पवित्र किया हुआ, सलाहसे किया हुआ ।
मन्त्रिन्, पु. धीसचिव । वज़ीर, सलाहकार ।
मन्थ, पु. सूर्य्य (न.) मारन, नेत्ररोग, घी और जलमें मिले हुए सत्तू ।
मन्थज, न. नवनीत; माखन ।
मन्थन, न विलोना, नाश, (पु) मथानी ।
मन्थर, पु. कोप, फल, व्याध, मन्थनदण्ड, सूचिक, पिशुन, मन्दगामी योद्धा, कोप, (त्रि) मन्दगामी, पृथु, वक्र, जड़, नट, अलस, स्थूल, प्रकाण्ड (स्त्री) (रा) केकयकी दासी ।
मन्थरु, पु. चामर वात; चौरीकी हवा ।
मन्थशील, पु. मन्दर पर्वत ।
मन्थान, पु. मथानी ।
मन्थोदधि, पु. क्षीरसमुद्र ।
मन्द, पु. शनि, हस्ति, जातिविशेष, यम, प्रलय (त्रि) अति तीक्ष्ण, मूर्ख, स्वैर, म्लेच्छाचारी, अभाग्य, रोगी, अल्प, खल, अपकृष्ट । शनीचर, हाथीकी किसम, जम, आकिबत, बहुत तीखा, बेवकूफ़, आजाद. बदचलन, किस्मत, थोड़ा बुरा ।
मन्दग, (गामिन्) (त्रि.) आहिस्तहचलनेवाला ।
मन्दता, स्त्री. मन्दत्व, अपकृष्टत्व, मृदुत्व । [सुस्ती ।
मन्दत्व, न. आलस्य, बदकिस्मती, बुराई, हलीमी,
मन्दर, मन्थशैल, मन्दारपादप, स्वर्ग, हारविशेष, दर्पण, (त्रि) मन्द । ख़ास पहाड़, स्वर्गका दरख़्त, बहिशत, एक खास हार, शीशा, आरसी ।
मन्दसान, पु. अग्नि, प्राण, निद्रा । आग, जान, नींद ।
मन्दाकिनी, त्रि. वियद्गंगा, आकाशगङ्गा । १२२ अक्षरका एक जिसका मिसरा हो ।
मन्दाक्रांता, स्त्री. १६२ अक्षरके एक मिसरेवाला ।
मन्दाग्नि, पु. अल्प जठराग्नि । बदहज़मी ।
मन्दायुस्, त्रि. अल्पायु; थोड़ीसी उमरका ।
मन्दार, पु. स्वर्गीय पञ्चवृक्षान्तर्गत वृक्षविशेष, हस्त धूर्त, तीर्थविशेष; स्वर्गके पांच वृक्षोंमेंसे एक, हाथ, शरीर, पाक जगह ।
मन्दिर, गृह, देवालय, (न. पु.) नगर (पु) समुद्र, जानुपश्चाद्भाग, (स्त्री) (रा) वाद्ययंत्रविशेष, अश्वशाला । घर, देवताका घर, शहर, समुद्र, घुटनोंका पिछला हिस्साह, एक बाजा, अस्तबल ।
मन्दुरा, स्त्री. अश्वशाला । अस्तबल ।
मन्देह, पु. बहु, ३५०००००० संख्यक राक्षसविशेष स्त्री. (हा) मन्दचेष्टा ।
मन्दोदरी, स्त्री. रावणमहिषी; रावणकी जोरू, पतली कमरवाली औरत । [गरम ।
मन्दोष्ण, न. ईषदुष्ण (त्रि) ईषदुष्णोदक । ज़रासा
मन्द्र, त्रि. गंभीर, पु. वाद्यवि०, गंभीर शब्द ।
मन्मथ, पु. कामदेव, कपित्थवृक्ष; कैथा दरख़्त ।

महा-कपित्थ, पु. कैथावृक्ष, बिल्ववृक्ष, । बिल्वका दरख्त ।

महा-करञ्ज, बड़ा करंजुआ ।

महा-काय, पु. नन्दी, हस्ती (न) वृहच्छरीर, (त्रि) तद्युक्त । शिवजीका दरवान, हाथी, बड़ा जिसम, बड़े जिसमवाला । [काल

महा-काल, पु. विष्णुस्वरूप, अखण्ड दराडायमान महादेव, शिवपुत्रवि. नन्दी और भृङ्गी, (स्त्री) (ली) महाकालपत्नी, पंचवक्त्रा, अष्टभुजा देवी ।

महा-काव्य, न. अधिक सर्गोंवाला काव्य ।

महा-गद, पु. ज्वररोग । बुखारकी बीमारी ।

महा-गन्ध, न. हरिचन्दन, (पु) कुटजवृक्ष, जलवेतस (स्त्री) (न्धा) नागवल्ली, कर्विकापुष्प, चामुण्डा देवी । [गर्दनवाला ।

महा-ग्रीव, पु. उष्ट्र, त्रि. महाग्रीवायुक्त; ऊंठ, बड़ी

महा-गुरु, पु. पिता, माता, आचार्य्य, पति ।

महा-घोर, त्रि. अतिशय भयानक, अत्यन्धकार, नरकविशेष । बड़ा खौफ़नाक, बड़ा अंधेरा, खास दोजख़ ।

महा-घोष, न. हट (त्रि) वृहच्छब्द (स्त्री) (षा) कर्कटश्रृङ्गी, हाट, बड़ी आवाज़, काकड़सिंही ।

महाज, पु. वृहच्छाग, त्रि. प्रसिद्ध; बड़ा बकरा, मशहूर ।

महा-जन, पु. साधु, मन्वादि, धनाढ्य । नेक आदमी ।

महा-जाति, स्त्री. वासन्तीलता, श्रेष्ठवन ।

महा-ज्येष्ठी, स्त्री. रविवारस्थ ज्येष्ठी पुष्पा ।

महा-तरु, पु. स्नुहीवृक्ष, वृहद्वृक्ष; बड़ा पेड़ ।

महा-तल, न. पाताल विशेष, ५ वां पाताल ।

महा-तेजस्, पु. कार्तिकेयाग्नि (त्रि) अति तेजस्वी । आग, बड़ा रौशन ।

महात्मन्, त्रि. उत्तम, मन, उदार । नेक, दिलावर ।

महा-दान, न. सच, बड़ा दान ।

महा-दारु, पु. देवदारुवृक्ष, दयारका दरख्त । [ढोल

महा-दुन्दु, पु. वृहत् रणढक्का; बड़ा भारी जंगी

महादेव, पु. शिव ।

महा-दोष्, त्रि. महाबाहुः । बड़ी २ भुजावाला ।

महा-द्रुम, पु. अश्वत्थवृक्ष, वृहद्वृक्ष । पीपलका पेड़ ।

महा-द्वन्द्व, पु. युद्ध-वाद्य; अति कलह; जंगी बाजा, बड़ी लड़ाई ।

महाध्वनिक, पु. पुण्यनिमित्त हिमालयपर्य्यन्त महापथ गमनद्वारा सम्पादित मरण; हिमालयमें गल मरना ।

महा-नट, पु. शिव, महादेव । [नदीविशेष ।

महा-नदी, स्त्री. चित्रोत्पला, गङ्गा, उत्कलदेशस्थ

महा-नन्द, पु. मुक्ति, अत्याह्लाद (स्त्री) (न्दा) । न जात, निहायत खुशी, माघ सुदि ९ मी ।

महा-नवमी, स्त्री. आश्विनशुक्ल नवमी; असूज सुदी नवमी ।

महानस, न. पु. रन्धनगृह; रसोईखाना ।

महा-नाटक, पु. नाटकविशेष ।

महा-निद्रा, मृत्यु; मौत ।

महानिम्ब, पु. निम्बवृक्षविशेष; नेपालकी नीम ।

महान्त, पु. नवधाभक्तियुक्त भक्त; जिसने नौ तरहकी भक्ति की है, जैसे कपिल, सनक, सनंदन, नारद सनत्कुमार आदि ।

महापथ, पु. प्रधानपथ; बड़ी सड़क ।

महापद्म, पु. नागवि. कुबेरनिधिवि. संख्यावि. ।

महापातक, न. पापविशेष, तत्पञ्चविध यथा ब्राह्मणका मारना, शराबका पीना, चोरी करना, गुरुस्त्रीसे भोग करना ।

महा-पुराण, न. एकादश लक्षणयुक्त, वेदव्यासप्रणीत अष्टादशसंख्यक पुराण । [योगी पुरुष ।

महा-पुरुष, पु. नरश्रेष्ठ, नारायण, साधुव्यक्ति,

महा-पृष्ठ, पु. उष्ट्र; ऊंट । शुतर ।

महा-प्रभ, त्रि. अतिदीप्तियुक्त, (स्त्री) (भा) महती प्रभा । निहायत चमकीला, बड़ी चमक ।

महाप्रभु, पु. परमेश्वर, राजा, इन्द्र, शिव, चैतन्यप्रभु । [यह तीन ।

महा-प्रसाद, पु. पादोदक, निर्माल्य, नैवेद्य

महा-प्रलय, पु. त्रिलोकनाश, ब्रह्माका १०० वर्ष । बड़ी कयामत ।

महा-प्राण, पु. द्रोणकाक, वर्णविशेष; पहाड़ी कौआ, ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, ष, सह, यह अक्षर ।

महा-व्रत, न. द्वादशवार्षिक व्रत, १२ वर्षका व्रत ।

महा-व्रतिन्, पु. शिव, (त्रि) महाव्रतयुक्त ।

महा-ब्राह्मण, पु. निन्दित ब्राह्मण, अन्त्येष्टी कर्म करानेवाला ब्राह्मण ।

मलज, न. पूय, (त्रि) मलोद्भव, पीप, मैलसे पैदा हुआ।

मल-द्राविन्, पु. जयपाल; जमालगोटा।

मलन, न. मर्दन, (पु.) पटवास; मलना; खेमा।

मल-भुज्, पु. काक; कौआ।

मल-मास, पु. अमावस्याद्वययुक्त रविसंक्रांतिरहित मास। अधिक मास, लौंदका महीना।

मलय, पु. चन्दनगिरि, देशविशेष, द्वीपविशेष, ऋषभदेवका ५म, पुत्र।

मलयज, पु. चन्दनवृक्ष। सन्दलका पेड़।

मलाका, स्त्री. कामिनी, दूती, हस्तिनी। छिनाल, कुट्टनी, हथिनी।

मलिन, त्रि. मैला।

मलिन, त्रि. मलयुक्त वस्तु, दूषित, कृष्णवर्ण, पापग्रस्त, शुष्क, म्लान (न) तक्र, दोष, टकन, (स्त्री) (नी) ऋतुमती स्त्री। मैली चीज़, खराब, स्याह, गुनाहगार, सूका, मुरझाया हुआ, छाछ, ऐब, सुहागा, हैजवाली औरत।

मलिनता, } स्त्री. मैलापन।
मलिनत्व, } न. मैलापन।

मलिन-मुख, पु. अग्नि, गोलाङ्गुल प्रेत, (त्रि) क्रूर, खल, मलिनवदन; आग, नस नास। बेरहम, बद, मुरझाया हुआ।

मलिमन्, पु. मैलापन।

मलिम्लुच, पु. मलमास, अग्नि, चोर, वायु। लौंदका महीना, आग, हवा। [मयला।

मलीस, न. मलमास, लौंद (त्रि) मलिन, लोहा,

मल्ल, पु. मद्य-पात्रवि०, माला, देश वि० (स्त्री. (ला) मालती (त्रि) दृढ़, सर्व श्रेष्ठ।

मल्लक, पु. दन्त (पु. स्त्री) दीपाधार, नारिकेलपात्र (स्त्री) (का) मल्लिकापुष्प, प्रदीप। दीया, शमहदान, नारियलका बर्तन, मल्लिका फूल, चराग़।

मल्ल-क्रीडा, स्त्री. मल्लयुद्ध, व्यायाम; कुश्ती, व्याम।

मल्लार, पु. रोगविशेष, (स्त्री) (री) रागिनीविशेष, छयों रोगोंमेंसे दूसरा, वसंतरागकी रागिनी, मेघरागकी रागिनी।

मल्लि (ल्ली), स्त्री. मल्लिका।

मल्लिक, पु. हंस (स्त्री) (का) पुष्प, वृक्षविशेष।

मल्लिकाक्ष, पु. हंसवि० अश्वविशेष।

मश (क), पु. मच्छर, मशक; पखाल। [मसारी।

मशहरी, स्त्री. मशकनिवारक प्रावरणविशेष,

मशुम, पु. कुक्कर; कुत्ता।

मषि (सि), मसी; लिखनेकी रोशनाई।

मषि-कूपी, स्त्री. मसूरकी दाल। दावात।

मसार (क), पु. इन्द्रनीलमणि; पन्ना।

मसिक, पु. सर्पगत; सांपकी झिल्ली।

मसिकूपिका (कूपी), स्त्री. दावात।

मसिपण्य, पु. लेखक। मुनशी।

मसिप्रसू, स्त्री. लेखनी। [मसर, कंचनी।

मसु (सूर), पु. कलायविशेष (स्त्री) (री) वेश्या,

मसूरिका, स्त्री. कुट्टनी, वसंतरोग। मसहरी, कुटनी, चेचककी बीमारी, मसारी।

मसृण, त्रि. कोमल, स्निग्ध (स्त्री) (णा) अतसी। मुलायम, चिकना, अलसी। [बांस।

मस्कर, पु. वंश, सरन्ध्रवंश; बांस, सुराखदार,

मस्करिन्, पु. भिक्षु, चन्द्र; भिखारी, चांद।

मस्त, न. मस्तक, (त्रि) उच्च; माथा, ऊंचा।

मस्तक, पु. न. प्रधानाङ्ग; माथा। [मगज़।

मस्तिष्क, न. मस्तकभव घृताकार स्निग्ध मज्जा।

मस्तु, न. दधिमण्ड, दधिजल; छाछ।

मह, पु. उत्सव, तेज़, यज्ञ, महिष (त्रि) पूजनीय। शादी, रोशनी। [कछुआ।

महक, पु. पुरुषोत्तम, कच्छप, विष्णु। नेक मरद,

महत्, न. राज्य (त्रि) वृद्ध, प्रबल, श्रेष्ठ, उदार।

महत्तरिका, स्त्री. मकरजातिविशेष।

महत्तत्व, न. चतुर्विंशतितत्वान्तर्गत तत्वविशेष, बुद्धि। अकल।

महत्व, न. बड़ाई।

महत्तम, त्रि. अति महत्। सबसे बड़ा।

महत्तर, पु. शूद्र, दास (त्रि) अति महत्। गुलाम, सबसे बड़ा।

महनीय, त्रि. पूज्य। मुतबरक।

महर्लोक, ४ र्थ, स्वर्गस्थान विशेष।

महर्षि, पु. व्यासादि मुनि। [सका रखवाला।

महल (ल्लि)क, पु. अन्तःपुररक्षक, कञ्चुकी, रनवा-

महाकच्छ, पु. समुद्र, वरुण, पर्वत, शेर, पहाड़।

महाकन्द, पु. रसोनक, मूलक, राजपलाण्डु। पियाज़, मूली, बड़ा पयाज़।

महा-वाक्य, न. ब्रह्मप्रतिपादक वाक्य।
महा-विद्या, स्त्री. देवीविशेष । दशमहा विद्या यथा १ काली २ तारा ३ पोडशी ४ भुवनेश्वरी ५ भैरवी ६ छिन्नमस्ता ७ धूम्रावती ८ बगला ९ मातङ्गी १० कमलात्मिका।
महा-बिल, पु. आकाश । असमान।
महा-विषुव, न. मेपसंक्रान्ति; सूर्य्यका मेप-राशीमें जाना।
महा-वीचि, पु. नरकविशेष।
महा-वीर, पु. गरुड़, शूर, सिंह, महातल, वज्र, श्वेत तुरंग, अतिभजिन, कुटिल, धनुर्धर, लक्ष्मण, अंगद, हनुमान, (स्त्री) औषधिविशेष (त्रि) अत्यन्त वीर। [मन्त्र।
महा-व्याहृति, स्त्री. "ओं, भूर्भुवः स्वः" यह तीन
महाशक्ति, पु. पड़ानन, महाबली, (त्रि) प्रथमा प्रकृति; शिवजीका बेटा, बड़ा ज़ोर, निहायत ताकतवर, माया।
महाशंख, पु. मनुष्यास्थि, संख्याविशेष, ललाट, विधिविशेष वृहच्छङ्ख। इन्सानकी हड्डी, पेशानी, ख़ास हशमत, कान और आंखके बीचकी हड्डी, बड़ा शङ्ख। [फ़ैयाज़, बहर, साहिब।
महाशय, पु. उद्भट, उदार, (पु) समुद्र। दिलावर,
महाशल्क, पु. मत्स्यविशेष, (स्त्री) (ल्का), सरस्वती–देवी (त्रि) वृहद्वल्कलयुक्त; चिंगड़ा मच्छी, जिसपर मोटा छिलका हो।
महा-शुभ्र, न. रजित, (त्रि) अतिशुभ्रवर्णयुक्त। सेम, सुपेद। [ग्वाला।
महा-शूद्र, पु. आभीर, गोप, (स्त्री) (द्री) अहीर,
महा-श्वेता, स्त्री. सरस्वती, स्त्रीविशेष।
महा-ष्टमी, स्त्री. आश्विन शुदि अष्टमी।
महा-सेन, पु. कार्तिकेय।
महा-स्वन, पु. मल्लतूर्य्य, वृहच्छब्द, (त्रि) वृहच्छब्दयुक्त। पहिलवानोंका बाजा, बड़ी आवाज़, बड़ी आवाज़वाला।
महा-हनु, पु. शिव, (त्रि) वृहद्धनुयुक्त।
महि (ही), स्त्री. पृथिवी। ज़मीन।
महिका, स्त्री. हिम। बरफ़, कोरा। [हत्व; बड़ाई।
महिमन्, पु. अष्टैश्वर्य्यान्तर्गत ऐश्वर्य्यविशेष, म-
महिर, पु. सूर्य्य; सूरज।
महि (हे)ला, स्त्री. स्त्रीमात्र, मदमत्ता स्त्री, रेणुका नाम गंधद्रव्य, प्रियंगूलता। औरत, मस्त औरत, एक खुशबूदार चीज़, जिसकी शकल लाल मिरचसी होती है।
महिप, पु. स्वनामख्यात पशुविशेष (स्त्री) (षी) कृताभिषेका राजपत्नी, सैरंध्री, औषधिविशेष, महिष। भैंसा, महारानी, एक दवाईका नाम।
महिष-ध्वज, पु. यम, अर्हद्विशेष; जम, एक जैनका नाम।
महिष-वाहन, पु. यम।
महिषा-सुर, पु. राक्षसविशेष; रंभासुरका बेटा।
महिष्मन्, पु. देश विशेष।
महिष-मर्दिनी, स्त्री. देवी विशेष।
महिक्षित्, पु. राजा। [(त्रि) भूमिजात।
महिज, पु. मंगलग्रह, नरकासुर, (न) आर्द्रक,
महीधर (ध्र), पु. पर्वत; पहाड़।
महीप, पु. राजा। बादशाह।
मही-पाल, पु. राजा।
मही-भुज्, पु. राजा। पादशाह।
मही-भृत, पु. पर्वत, राजा; पहाड़। पादशाह।
मही-रुह, पु. वृक्ष, पेड़। दरख़त। [विशेष।
महेन्द्र, पु. विष्णु, इन्द्र, जम्बूद्वीपस्थ पर्वत-
महेन्द्र-नगरी, स्त्री. अमरावती; इन्द्रकी पुरी।
महेन्द्र-पर्वत, पु. पर्वतविशेष।
महेन्द्रपदभृत, पु. श्रीकृष्ण।
महेन्द्रधु, त्रि. जिस बलीका महेन्द्र देवता है।
महेर (रु) राग, स्त्री. शसल्लकीवृक्ष।
महेला (महेलिका), स्त्री. योषित्, स्त्री; औरत।
महेश, पु. महादेव, शिव।
महे-श्वर, पु. शिव (स्त्री) (री) पार्वती।
महे-ष्वास, पु. महाधनुर्धारी; बड़ा तीरंदाज़।
महैला, स्त्री. स्थूलैला; बड़ी इलायची।
महोदधि, पु., समुद्र; समुंदर। बहर।
महोदय, कान्यकुब्जदेश, पु. आनन्द, प्रताप, अहंकार। कन्नौज, खुशी, इकबाल जरूर। [सांप।
महोरग, न. तगरमूल, (पु) सर्पगणविशेष; बड़ा
महोजस्, त्रि. अतितेजस्वी, न. सामर्थ्य। चमकीला, इकबालमंद, ताकत।
महौपधि (धी), स्त्री. दूर्वा, लज्जालुलता। महा-

महा-भट्ट, पु. अतिशय योधा। बड़ा जंगी मनुष्य।
महा-भद्रा, स्त्री. गङ्गानदी।
महा-भाग, त्रि. दयादि आठ गुण जिसमें हो।
महा-भीम, पु. शन्तनुराजा, भृङ्गीनाम शिवद्वारपाल, (त्रि) अति भयानक।
महा-भूत, न. पृथिव्यादि पञ्च;यथा पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, श्रेष्ठ-जीव।
महा-मद, पु. मत्तहस्ती, अतिहर्ष, (त्रि) तद्वान्। मस्तहाथी, बड़ी खुशी, बड़ा खुश।
महा-मनस्, त्रि. महाशय। फ़ियाज, दिलावर।
महा-महावारुणी, स्त्री. योगविशेष शनिवार शतभिखा नक्षत्र शुभयोगयुक्त चैत्रमास के कृष्णपक्षकी त्रयोदशी।
महा-मात्य, (त्र) पु. प्रधानामात्य, हस्तिपकाधिप, समृद्ध। बड़ा वज़ीर, बड़ा महावत, दौलतमंद।
महा-माय, पु. विष्णु (स्त्री) (या) पार्वती, देवी।
महामारी, स्त्री. देवतावि०, जब बहुत जन मरें वह दिन।
महा-मांस, न. नरमांस, गोमांस।
महा-माष, पु. राजमाष; मोटे रवां। [मुहवाला।
महा-मुख, पु. कुंभीर (न) बड़ा मुंह (त्रि) बड़े
महा-मुनि, पु. अगस्त्य,बुद्ध, कृप, काल, व्यासदेव, तुंबरु वृक्ष,(न) औषध, धन्याक; दवाई धनियां।
महा-मूल, पु. राजपलाण्डु; बड़ा पयाज़।
महा-मूल्य, न. महार्घ्य, (त्रि) बहु मूल्यवान्; महिगा। वेश कीमत।
महामृग, पु. हस्ती, शरभ; हाथी।
महा-मृत्युञ्जय, पु. शिवमंत्रवि. (ॐ जूँ सः)
महामेद, पु. अष्टवर्गप्रसिद्ध औषधविशेष (स्त्री) (दा) एक दवाई।
महा-मोह, पु. विषयवासनारूपी अज्ञान।
महा-यज्ञ, पु. वेदपाठादि पंचप्रकार यज्ञ, वेदपाठ, होम, अतिथि पूजा, पितृतर्पण, भूतबलि। दैवो भौतस्तथा पैत्रो मानुषो ब्राह्म एव च, एते पञ्च महायज्ञा, ब्राह्मणा निर्मिताः पुरा। अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणं, होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्। श्राद्धं वा पितृयज्ञः स्यात्, पैत्रो बलिरथापि वा।
महायज्ञ, पु. अर्हद उपासकविशेष।

महा-रजत, न. सुवर्ण, धुस्तूर; सोना, धतूरा।
महा-रण्य, न. वृहद्वन; बड़ा जंगल।
महा-रत्न, महा-रथ, पु. शिव, अकेला, १० सहस्र धनुधारियोंके साथ युद्धमें कुशल योधा, ऐसा एक भारी योधा, जिसके संग १० हज़ार तीरंदाज़ योधा हों।
महारस, न. काञ्जिक, पारा; काञ्जी।
महा-रसाष्टक, न. अष्टधातुविशेष, यथा १ दरद, २ पारद, ३ सस्य, ४ वैक्रान्त, ५ कान्त, ६ अभ्रक, ७ माक्षक, ८ विमल।
महाराज, पु. पूर्वजिनविशेष, नख, सम्राट्। जैनोंका गुरु, नखून, शाहनशाह।
महाराजिक, २२० गणदेवताविशेष।
महा-रात्रि, स्त्री. ब्रह्मलयोपल, महाप्रलयरात्री, आश्विन शु. ८। महाप्रलयकी रात,जब ब्रह्माकाभी नाश होजाताहै, असूज शुदि ८ मी।
महाराष्ट्र, पु. देशविशेष, (स्त्री) (ष्ट्री) गजपिप्पली, भाषाविशेष, मरहटोंका देश, मरहटोंकी ज़ुबान।
महा-रुद्र, पु. महेश—महादेव।
महारूप, पु. शिव, सर्जरस, (त्रि) अतिशय रूपयुक्त। नाम शिवजीका, राल. निहायत खूब सूरत।
महारोग, पु. पापरोग, अष्टविध यथा, १ उन्माद, २ त्वग्दोष, ३ राजयक्ष्म, ४ श्वास, ५ मधुमेह, ६ भगंदर, ७ उदर, ८ अश्मरी।
महारौरव, पु. नरकवि०; बड़ा भारी नरक।
महार्णव, पु. महासमुद्र, शिव, बड़ा समुंदर।
महार्बुद, न. दशार्बुद, १००००००००० सौ करोड़। [शक्ति।
महा-लक्ष्मी, स्त्री. देवी वि. राधा, श्रीकृष्णजीकी
महालय, पु. विहार तीर्थ, ईश्वर, आश्विन कृष्णपक्ष (स्त्री) (या) खेल, पाकजा, खुदा, असौजवदि, अमावस। [मुत्तलधिन।
महालोक, पु. काक (त्रि) अतिचञ्चल; कौआ,
महालोह, पु. अयस्कान्त, चुम्बक। मक्नातीस।
महावारा, स्त्री. दूर्वा; दूब।
महावराह, पु. वराहरूपी भगवान्; सूकरावतार।
महावक्षस्, पु. शिव, वृहद्वक्षस्थलयुक्त।
महा-वरोह, पु. प्लक्ष वृक्ष; पाकड़का दरख़त।

महा-वाक्य, न. ब्रह्मप्रतिपादक वाक्य।
महा-विद्या, स्त्री. देवीविशेष। दशमहा विद्या यथा १ काली २ तारा ३ षोडशी ४ भुवनेश्वरी ५ भैरवी ६ छिन्नमस्ता ७ धूम्रावती ८ बगला ९ मातङ्गी १० कमलात्मिका।
महा-बिल, पु. आकाश। असमान।
महा-विषुव, न. मेषसंक्रान्ति; सूर्य्यका मेष-राशिमें जाना।
महा-वीचि, पु. नरकविशेष।
महा-वीर, पु. गरुड़, शूर, सिंह, महातल, वज्र, श्वेत तुरंग, अतिभजिन, कुटिल, धनुर्धर, लक्ष्मण, अंगद, हनुमान, (स्त्री) औषधिविशेष (त्रि) अत्यन्त वीर। [मन्त्र।
महा-व्याहृति, स्त्री. "ओं, भूर्भुवः स्वः" यह तीन
महाशक्ति, पु. षड़ानन, महाबली, (त्रि) प्रथमा प्रकृति; शिवजीका बेटा, बड़ा ज़ोर, निहायत ताकतवर, माया।
महाशग, पु. मनुष्यास्थि, संख्याविशेष, ललाट, विधिविशेष बृहच्छहस्र। इन्सानकी हड्डी, पेशानी, ख़ास हशमत, कान और आंखके बीचकी हड्डी, बड़ा शस्त्र। [फैयाज़, बहर, साहिब।
महाशय, पु. उद्भट, उदार, (पु) समुद्र। दिलावर,
महाशल्क, पु. मत्स्यविशेष, (स्त्री) (ल्का), सरस्वती–देवी (त्रि) बृहद्वल्कलयुक्त; चिगड़ा मच्छी, जिसपर मोटा छिल्का हो।
महा-शुभ्र, न. रजित, (त्रि) अतिशुभ्रवर्णयुक्त। सेम, सुपेद। [ग्वाला।
महा-शूद्र, पु. आभीर, गोप, (स्त्री) (द्री) अहीर,
महा-श्वेता, स्त्री. सरस्वती, स्त्रीविशेष।
महा-ष्टमी, स्त्री. आश्विन शुदि अष्टमी।
महा-सेन, पु. कार्तिकेय।
महा-स्वन, पु. मल्लतूर्य्य, बृहच्छब्द, (त्रि) बृहच्छब्दयुक्त। पहिलवानोंका बाजा, बड़ी आवाज़, बड़ी आवाज़वाला।
महा-हनु, पु. शिव, (त्रि) बृहद्धनुयुक्त।
महि (ही), स्त्री. पृथिवी। ज़मीन।
महिका, स्त्री. हिम। बरफ़, कोरा। [हत्व; बड़ाई।
महिमन्, पु. अष्टैश्वर्य्यान्तर्गत ऐश्वर्य्यविशेष, म-
महिर, पु. सूर्य्य; सूरज।
महि (हे)ला, स्त्री. स्त्रीमात्र, मदमत्ता स्त्री, रेणुका नाम गंधद्रव्य, प्रियंगूलता। औरत, मस्त औरत, एक खुशबूदार चीज़, जिसकी शकल लाल मिरचसी होती है।
महिष, पु. स्वनामख्यात पशुविशेष (स्त्री) (षी) कृताभिषेका राजपत्नी, सैरंध्री, औषधिविशेष, महिष। भैंसा, महारानी, एक दवाईका नाम।
महिष-ध्वज, पु. यम, अर्हद्विशेष; जम, एक जैनका नाम।
महिष-वाहन, पु. यम।
महिषा-सुर, पु. राक्षसविशेष; रंभासुरका बेटा।
महिष्मन्, पु. देश विशेष।
महिष-मर्दिनी, स्त्री. देवी विशेष।
महिक्षित्, पु. राजा। [(त्रि) भूमिजात।
महिज, पु. मंगलग्रह, नरकासुर, (न) आर्द्रक,
महीधर (ध्र), पु. पर्वत; पहाड़।
महीप, पु. राजा। बादशाह।
मही-पाल, पु. राजा।
मही-भुज्, पु. राजा। पादशाह।
मही-भृत, पु. पर्वत, राजा; पहाड़। पादशाह।
मही-रुह, पु. वृक्ष, पेड। दरख़्त। [विशेष।
महेन्द्र, पु. विष्णु, इन्द्र, जम्बूद्वीपस्थ पर्वत-
महेन्द्र-नगरी, स्त्री. अमरावती; इन्द्रकी पुरी।
महेन्द्र-पर्वत, पु. पर्वतविशेष।
महेन्द्रपदभृत, पु. श्रीकृष्ण।
महेन्द्रथु, त्रि. जिस बलीका महेन्द्र देवता है।
महेर (रु) राग, स्त्री. शसल्लकीवृक्ष।
महेला (महेलिका), स्त्री. योषित्, स्त्री; औरत।
महेश, पु. महादेव, शिव।
महे-श्वर, पु. शिव (स्त्री) (री) पार्वती।
महे-ष्वास, पु. महाधनुर्धारी; बड़ा तीरंदाज़।
महैला, स्त्री. स्थूलैला; बडी इलायची।
महोदधि, पु., समुद; समुंदर। बहर।
महोदय, कान्यकुब्जदेश, पु. आनन्द, प्रताप, अहंकार। कन्नौज, खुशी, इकबाल जरूर। [सांप।
महोरग, न. तगरमूल, (पु) सर्पगणविशेष; बड़ा
महौजस्, त्रि. अतितेजस्वी, न. सामर्थ्य। चमकीला, इकबालमंद, ताकत।
महौषधि (धी), स्त्री. दूर्वा, लज्जालुलता। महा-

स्नपनीय द्रव्यविशेष, -द्रव; रातको चमकनेवाले पोदे, न्हानेकी दवाइयें, जैसे, सहदेवी, व्याघ्री, बला, अतिबला, शडल, पुष्पी, सिंही, अष्टमी, सुवर्चला । [लछमी, मा, मुझको ।

मा, व्य. निवारण (स्त्री) लक्ष्मी, माता । मत, मत्त ।

मांस, न. रक्तजधातुविशेष, काल, कीट । गोश्त, वकत, कीड़ा ।

मांसपेशी, स्त्री. मसानां, पैजा ।

मांसफला, स्त्री. वृन्ताकी; वेंगुन ।

मांसल, त्रि. बली, स्थूल, (न) काव्ये गौडीरीत्यन्तर्गत ओजोगुणांगवि. । ज़ोरावर, मोटा, काव्यमें गौडीरीतीके ओजो गुणका एक अंग ।

मांससार (स्निह), पु. मेद; भिन्न । चर्बी ।

मांसिक, पु. मांसविक्रयी; मांस वेचनेवाला ।

मांसिनी, स्त्री. जटामांसी; एक दवाईका नाम ।

माकन्द, पु. आम्रवृक्ष, (स्त्री) (न्दी) आमलकी, नगरविशेप ।

माकरी, स्त्री. माघशुक्ला सप्तमी; माघ शुदि७ मी ।

माकलि, पु. मातलि, चंद्र; इन्द्रका गाड़ीवान्, चांद ।

माक्षी (क्षि)क, न. मधु, उपधातुविशेष ।

मागध, पु. पाणिखनक, स्तुतिपाठक, वर्णसंकर जाति, (स्त्री) (धी) यूथिका, पिप्पली, शर्करा, भापाविशेष; ताली बजानेवाला, भाट, खतरानीके पेटसे वैश्यकी विंदसे पैदा हुआ, पीपल, मधु, चीनी, जुबान ।

माघ, पु. एकादश मास, श्रीदत्तकपुत्रकृत शिशुपाल वध महाकाव्य, संज्ञाविशेष, (स्त्री) (घी) माघी पूर्णिमा ।

माघ्य, न. कुंदपुष्प ।

माघवन, न. इन्द्रसंबंधीय; इन्द्रका ।

माङ्गलिक, } न. मङ्गलार्थ; भलेके लिये । खैर
माङ्गल्य, } ख्वाही

माचल, पु. ग्रह, रोग, चौर, पीड़ा । तेंदुआ, बीमारी, दुज्द, दर्द ।

माचिका, स्त्री. मक्षिका; मक्खी । [रंग, सुरख़ ।

माञ्जिष्ठ, न. लोहितवर्ण, (त्रि) तद्विशिष्ट । सुरख़

माठर, पु. सूर्य्य परिपार्श्ववर्त्ती, व्यासमुनि, विप्र, शौंडिक । सूर्य-देवताके अगवानी, कलाल ।

माण(न)क, न. कन्दविशेष, पु. स्वनामख्यात वृक्ष

माणवक, पु. मनुष्य, वालक, षोडश यष्टिकहार, बद्ध (न) ८ अक्षरका छंद वि० आदमी, लड़का सोलह लड़ीका हार, ब्रह्मचारी ।

माणवीन, त्रि. मानव संबन्धीय, । लड़केका ।

माणक, न. शिशुसमूह; बहुत लड़के ।

माणिका, स्त्री. ८ पल परिमाण । आधसेर ।

माणिक्य, न. रत्नवि० (स्त्री) (क्या) मणि, मानक, छिपकली ।

माण्डलिक, पु. १२ गांओंका राजा, ।

माण्डूक्य, न. उपनिपद्विशेष ।

मातङ्ग, पु. हस्ती, अश्वत्थवृक्ष, किरातजातिविशेष, श्वपच, (स्त्री) (ङ्गी) दशमहाविद्यान्तर्गता नवमा । हाथी, पिप्पलका वृक्ष, भील, शिकारी, चांडाल ।

मातरिश्वन्, पु. वायु । हवा ।

मातरी, पु. इन्द्रसारथी; इन्द्रका गाड़ीवान् ।

मातापितृ, पु. द्वि० जनकजनन्यौ; मांबाप ।

मातामह, पु. मातृपिता, (स्त्री) (ही) मातृ-माता, नाना, नानी । [न्द्रका सारथी ।

माताली, स्त्री. मातृसखी, मत्ता स्त्री, (पु) (लि) इ-

मातुल, पु. मातृ-भ्राता, व्रीहिविशेष, मदनवृक्ष, (स्त्री) (ला) लानी (ली) मातुलपत्नी । मामा, खास धान, धानका पोदा, मामी ।

मातुलुङ्ग, पु. बीजपुर, दाडिम; नेंबू अनार ।

मातृ, त्रि. मापनेवाला, पु. जीव. आकाश, (स्त्री) मां, गुरु स्त्री, आचार्य्य स्त्री, दादी, नानी । ८ शक्ति, १ ब्राह्मी, २ माहेश्वरी, ३ कौमारी, ४ वैष्णवी, ५ वाराही, ६ इन्द्राणी, ७ भू, ८ गौ, लक्ष्मी, धातृ ।

मातृक, त्रि. मातृसंबंधीय पु. मातुल, (स्त्री) (का) धातृका, माता, देवीवि० वर्णमाला, करण, स्वर मातृकागण, तत्षोडश प्रकार यथा—गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया देवसेना स्वधा स्वाहा शान्ति पुष्टि, धृति, तुष्टि, आत्मा; देवता, कुलदेवता; मांका, दाई, वालदा, हरूफ़तहज्जी । [मासी ।

मातृ-(ष्व) (स्व)सृ, स्त्री. (सा) मातृभगिनी;

मातृष्वस्रेय, पु. मातृष्वसृ पुत्र । मासी का बेटा ।

मातृष्वस्री(स्री)य, (स्त्री) (यी) मासीकी सन्तान

मात्र, न. कात्स्न्यें (व्य) अवधारण। कुल, सिरफ़। (स्त्री) (त्रा) परिच्छेद, अल्पपरिमाण, कर्णभूषा, वित्त, अक्षरावयव, इंद्रिय, अंश। थोड़ासा, कानका ज़ेवर, दौलत, लगमात, हव्वास, हिस्सा।

मात्रा-वृत्त, न. आर्य्यादि छन्द। लघु गुरुगिनकर बताया हुआ बहर।

मात्र, पु. रूपरसादि विषयोंके साथ इन्द्रियका सं-[योग।

मात्सर्य्य, न. मत्सरभाव। हसद, कीनह।

मात्स्य, पु. पुराणविशेष।

माथ, पु. मन्था, मथन, व्यथा; बलोना, तक्लीफ़।

माथुर, पु. मथुरासे आया, गीत विशेष, मथुराका।

मादक, त्रि. मत्तकारक। नशीला।

मादृक्ष(श), **मादृश्**, त्रि. मेरे जैसा।

मादन, न. लवंग (त्रि) हर्ष-कारयता, (पु) कामदेव, मदन वृक्ष, धूस्तर। लौंग, खुश करनेवाला, नाम कामदेवका, खास पेड़, धतूरा।

मादृश, त्रि. मत्सदृश; मेरे जैसा।

माद्री, स्त्री. पाण्डुराजाकी छोटी पत्नी।

माधव, पु. विष्णु, वसन्तकाल, वैशाखमास (त्रि) मधुका (स्त्री) (वी) लतावि०, कुट्टनी, मदिरा, तुलसी, दुर्गा, माधव-पत्नी, मधुपुरवासिनी।

माधु-करा, स्त्री. पांच घरोंकी भीख।

माधुर, न. मल्लिका, (स्त्री) (री) मद्य, माधुर्य्य; मालती, शराब, मिठास।

माधुर्य्य, न. मधुरभाव; पाञ्चालीरीति विशिष्ट वाक्यगुण। मिठास, शौरी; शायरीकी सिफ़त।

माध्यन्दिन, न. दिनका मध्य (स्त्री) (नी) शुक्लयजुर्वेदीय शाखाविशेष।

माध्व, न. मधुजात मद्य; मधुक पुष्पोंकी शराब।

माध्वी, स्त्री. मद्य, मत्स्य। मीठेकी शराब, मछली।

माध्वीक, न. मद्य; अंगूरकी शराब।

मान, न. परिमाण, चित्तसमुन्नति, अनुरक्तदम्पती चेष्टाविशेष प्रिया पराध सूचिका चेष्टा। ग्रह, पैमाना, तालकीले, ग़रूर, इज्जत, माप, तोल।

मान-कलि, पु. अभिमानसे कलह।

मान-ग्रन्थि, पु. अपराध। कसूर.

मानद, त्रि. मानदाता। इज़्त देनेवाला।

मान-दण्ड, पु. मापनेकी दण्डी। तराज़ूकी डंडी।

मानन, न. मानकरना। इज़्त देना।

माननीय, त्रि. मान्य। मानके लायक।

मानव, पु. मनुष्य, (स्त्री) (वी) मानुषी, स्वयंभूमनु कन्या।

मानव्य, न. मानव समूह; बहुतसे आदमी।

मानस्, न. मन, हिमालयके ऊपरका सरोवर (त्रि) मनका।

मानसालय, पु. मराल, हंस।

मानसिक, त्रि. मनोभीष्ट, मनोगत। दिलपसंद, [दिलका।

मानसौकस्, पु. हंस, मानसरोवरका वासी।

मानिका, स्त्री. मद्य। शराब।

मानिन्, त्रि. मानविशिष्ट, सिंह, (स्त्री) (नी) फली वृक्ष, मानवती। मग़रूर, शेर, मिज़ाजदार औरत।

मानुष, पु. मनुष्य। इनसान।

मानुष्य, न. मनुष्यत्व। इनसानीयत।

मानुष्यक, न. मनुष्यसमूह। आदमियोंकीजमात

मान्द्य, न. रोग, मन्दता, जडता, अवगता, अल्पता। बीमारी, बुराई, बेहर्कती, सुस्ती, कमी।

मान्धातृ, पु. राजपुत्र, युवनाश्वराजाका बेटा।

मान्य, त्रि. माननीय, (स्त्री) (न्या) मरुत्, माता, पूज्या, आदरणीया। इज़्तके लायक, हवा।

मापक, त्रि. परिमाणकर्त्ता। मापनेवाला।

मापन, न. परिमाण, पु. तुला। पैमाना, तराज़ू।

माम, पु. मातुल; मामा।

मामक, त्रि. मदीय; ममतायुक्त (पु) मातुल, कृपण; मेरा, खुदगर्जी-मामा, कंजूस।

मामकीन, त्रि. मदीय; मेरा।

माय, पु. पीताम्बर, असुर, (स्त्री) (या) इन्द्रजालविद्या, बुद्धि, कृपा, दम्भ, शठता, लक्ष्मी, बहुमाता, दुर्गा, ईश्वरशक्ति। ज़र्दकपड़ा, दैत्य, मदारी का हुनर, अकल, मेहरबानी, फ़रेब, देवी।

मायाकर(कृत्), **मायाकार(रिन्)**, पु. ऐंद्रजालिक। मदारी, बाजीगर।

माया-वत्, **माया-विन्**, त्रि. मायाकार, ऐंद्रजालिक, विडाल। मदारी, बाजीगर, बिल्ली।

मायिन्, पु. मायाकार,। मदारी, फ़रेबी।

मायु, पु. देहका पित्त,। सफ़रा।

मायु-राज, पु. कुबेरपुत्र; कुबेरका बेटा।

मायूर, न. मोरोंकाझुंड (स्त्री) शिवमंत्रविशेष; बौद्धविद्याविशेष।

मार, पु. कामदेव, विघ्न, मारण, धूस्तर । मौत, नाम "काम" का, रोक, कतल, धतूरह ।

मार-जित्, पु. बुद्ध, शिव ।

मारण, न. वध, प्रहरण (पु) कामदेव । कतल-करना, पीटना । [हादेवकी शक्ति ।

मारी(रि), स्त्री. वध, जनक्षय । मौत, वबा, म-

मारिष, पु. नाट्योक्ति में श्रेष्ठ (स्त्री) (षा) दक्षमाता ।

मारीच, पु. ताडिका पुत्र राक्षसविशेष कश्यपमुनि, कक्कोलक, याजक, ब्राह्मण, (स्त्री) (ची) देवताविशेष । [पिण्ड ।

मारु, पु. सांपके गलेकी कंठी, पथ, गोबरका

मारुत, पु. वायु । हवा ।

मारुति, पु. हनुमान्, भीमसेन ।

मार्कण्ड(ण्डेय), पु. मृकण्डु मुनिका पुत्र, कल्पान्त।

मार्कण्डिका, स्त्री. लताविशेष ।

मार्कव(र), पु. भीमराज, भृंगराज । भंगरा ।

मार्ग, पु. पथ, गुद, अपान, मृगमद, मार्गशीर्ष, अन्वेषण, नक्षत्र, विष्णु, । बाट, गांड, कस्तूरी, मंगशिर, तालाश, ५ वां, नक्षत्र ।

मार्गण, न. अन्वेषण, प्रणय, (त्रि) याचक, (पु) शर । तलाश, मांगना, मुहबत, मंगता, तीर ।

मार्ग-धेनु, पु. योजनपरिमाण; चारकोस ।

मार्गशिर, **मार्गशीर्ष**, पु. अग्रहयन मास, मगशिरका महीना (स्त्री) (री) मंगशिरकी पुन्या ।

मार्गिक, त्रि. मृगहन्ता, पथिक, । शिकारी, मुसाफ़र ।

मार्गित, त्रि. अन्वेषित । तलाश किया हुआ ।

मार्ग्य, त्रि. मार्जनीय, अन्वेषणीय, । मांगनेके लायक, तलाश करनेके लायक ।

मार्ज, पु. विष्णु, रजक, स्नान । [झाड़ ।

मार्जन, न. मांजना, धोना, पु. लोध्रवृक्ष, (स्त्री) (नी)

मार्जित, त्रि. शोधित, तीक्ष्णीकृत (स्त्री) (ता) रसाला; साफ किया हुआ तेजकिया हुआ, दही घी, मरच, शहद, वग़ैरह चीजें मिला काफूरकी खुशबूई देकर बनाई हुई चटनी ।

मार्त(र्ता)ण्ड, पु. सूर्य्य, अर्कवृक्ष, शूकर । आफताब, अकका पेड़; सूअर, त्रि. मट्टीका । सूरज, अकका पौदा, पौदा । [वाला ।

मार्दङ्ग, न. पत्तन (त्रि) मृदङ्गवादक; मृदङ्गबजाने-

मार्दव, न. मृदुता, (पु) वर्णसंकर जातिविशेष । मुलायमी, दोगला ।

मार्द्धीक, न. मधु; अंगूरी शराब ।

मार्ष, पु. नाट्योक्तिमें श्रेष्ठ, (स्त्री) (र्षिका) मारिषशाक ।

मार्ष्टि, स्त्री. मार्जन, तैलम्रक्षण, परिष्कारकरण । मांजना, तेल मलना, सफ़ाकरना ।

माल, पु. जातिविशेष, जिनशेष, देशविशेष, विष्णु, (न) क्षेत्र, कपट, वन, (स्त्री) (ला) कण्ठभूषण, श्रेणी । खेत, फ़रेब, जंगल, हार, कतार ।

मालक, पु. निम्बवृक्ष, (त्रि०) स्थलपद्म, (स्त्री) (का) नीमका दरख़त, सूर्य्यमुखी पद्म ।

मालकौश, पु. गीदड़, रागविशेष ।

मालतिका, (स्त्री) वृक्षविशेष ।

मालती, स्त्री. खासवेल, ख़ासवहर, चम्बेली, जवान औरत, चांदनी रात; दर्या ।

मालती-पत्री, स्त्री. जातीपत्री; जलपत्री ।

मालती-फल, न. जातिफल; जायफल ।

मालाय, पु. चन्दनवृक्ष, (त्रि) मालाका, (न) पान ।

मालव, पु. अवन्तीदेश, भैरवराग, (स्त्री) (वा) मालवा, भैरव रागकी स्त्री, मद्र राजाकी रानी ।

मालय्य, पु. चन्दनवृक्ष, (त्रि) मलयपर्वतीय, संदलका पेड़, मलयपर्वतका ।

माला, स्त्री. हार, पाल । कतार ।

मालाका, स्त्री. माला (पु) उपद्वीपविशेष । हार, ख़ासटापू ।

माला-कार, पु. वर्णसंकर जाति; माली ।

माला-दीपक, न. अर्थालंकारविशेष ।

मालिक, पु. मालाकार, पक्षिविशेष, रञ्जक, मल्लिकापुष्प, (त्रि) माल्यकारक; माली, ख़ास एक परिन्दह, रंग साज़, मालतीका फूल, माला बनानेवाला-(स्त्री) (लिका) माला, नदीविशेष,

मालिन्य, न. मलिनत्व; मयलापन ।

मालिन्, पु. मालाकार (त्रि) माल्यवान् (स्त्री) (नी) मातृका विशेष, छन्दोविशेष, मालिक, पत्नी, गौरी, चम्पा नगरी, मन्दाकिनी, नदीभेद, अग्निशिखा, वृक्ष, दुरालभा; माली, मालावाला ।

मालूर, पु. विल्ववृक्ष, कपित्थवृक्ष ।

मालेय, त्रि. मालाकार, मालाका (स्त्री) (या) स्थूलैला । माली, बड़ा हार, मोटी इलायची ।

माल्य, न. पुष्प, पुष्पस्रक्, (त्रि) मालायोग्य फूल, फूलमाला, मालाके लायक।
माल्यवत्, पु. पर्वत विशेष, राक्षसविशेष। केतुमाल और इलावृत्त वर्षका सीमा पर्वत, रावण राक्षसका नाना।
माष, पु. व्रीहिविशेष, परिमाणविशेष, मूर्ख, त्वग्दोष; उड़द, मासभर, बेवकूफ़, ख़ास बीमारी।
माषक, पु. मासक; मासा, ५ रत्तीभर।
माष-वटी, स्त्री. माषकी वड़ी।
माषीण, न. जिस खेतमें उड़द पैदाहों; माषका।
मास(स्), पु. माषकपरिमाण, पक्षद्वयात्मक काल, चंद्र। माशा, महीना, चांद। मसाड़ी
मासर, पु. भक्तसमुद्भव मण्ड; माण्ड (स्त्री) (री)
मासिक, न. श्राद्धविशेष (त्रि) माससंबंधीय, हरमहीने प्रेतकेलिये श्राद्ध, महीनेका।
मास्य, व्य. वारण। मनह।
मास्य, (त्रि) माससंबंधीय; महीनेका।
महा-कुलीन, त्रि. बड़े घरानेका।
माहात्म्य, न. महत्व; बड़ाई। बजुर्गी।
माहिर, पु. इन्द्र। देवता ओंका राजा
माहिष, न. महिषदुग्ध, घृतादि, (त्रि) महिषशृंगादि; भैंसका दूध वगैरह, भैंसेका सींग वगैरह।
माहिष्य, पु. वर्णसङ्करजाति; वैश्याके गर्भमें क्षत्रियसे पैदाहुई २ औलाद (त्रि) महिष का।
माहेन्द्र, पु. शुभदण्ड क्षणविशेष (त्रि) महेन्द्रका। (स्त्री) (न्द्री) शची। अच्छी वैत, इन्द्रका, इन्द्रकी स्त्री, गाय।
माहेय, त्रि. मही पुत्र, उपद्वीप विशेष (स्त्री) (यी) गौ. मंगल ग्रह, छोटा टापू, गाय।
माहेश्वर, पु. महादेवका, (स्त्री) (री) दुर्गा।
मित, त्रि. परिमित, शब्दित, क्षिप्त; मापाहुआ। बोलाहुआ, फेंका हुआ।
मित-ङ्गम, पु. हस्ती, (त्रि) परिमित गामी; हाथी, थोड़ा चलनेवाला।
मित-म्पच, त्रि. कृपण, थोड़ा पकाने वाला; कंजूस।
मिता-शन, त्रि. परिमित भोजी; थोड़ा खानेवाला।
मिति, त्रि. परिमाण, विज्ञान, अवच्छेद, तारीख़।
मित्र, न. सखा, पु. सूर्य्य, (स्त्री) (त्रा) सुमित्रा, मित्रपत्नी। दोस्त, आफ़ताब, शत्रुघ्न की माता' सूर्य्यकी जोरू।
मित्रता, } स्त्री. सख्य। दोस्ती।
मित्रत्व, } न.
मित्रयु, त्रि. मित्रवत्सल। दोस्त का प्यारा।
मित्र-लाभ, व्य. सुहृद्-प्राप्ति। दोस्तीकरना।
मिथस्, व्य. अन्योन्य; आपसमें, पोशीदहसे।
मिथिला, स्त्री. जनकराजधानी; तिरहुत।
मिथुन, न. युगल, तृतीयराशि, जोड़ा, ३ री, राशि।
मिथ्या, व्य. असत्य; झूठ।
मिथ्या-चार, त्रि. दाम्भिक। फरेबी।
मिथ्या-दृष्टि, स्त्री. नास्तिकता। इलहाद।
मिथ्या-भियोग, पु. मिथ्यावाद; झूठी नालिश।
मिथ्या-भिशंसन, न. अभिशाप। झूठी तोहमत।
मिथ्या-मति, स्त्री. भ्रम; भूल। ख़ता।
मिलन, न. संयोग; मेल।
मिश्र, न. चाणक्यमूलक, मिश्रित, पु. गजजातिविशेष, संयुक्त शब्द, देशविशेष; मिलाहुआ, हाथीकी किस्म, उमदह, मुरक्कब, ख़िताब, ख़ास मुल्क।
मिश्रकावन, न. नन्दनवन; इन्द्रका बाग़।
विश्र-ज, पु. खेचर। खच्चर।
मिश्रण, न. संयोजन; मिलाना।
मिश्रणीय, त्रि. मिश्रणयोग्य; मिलानेके लायक।
मिश्रित, त्रि. मिलाया हुआ।
मिष, न. छल, (पु) स्पर्द्धन, सुरक्व। अहंकार। फ़रेब, हसद, ग़रूर।
मिषि(का), स्त्री. औषधिविशेष; जटामांसी।
मिष्ट, त्रि. सिक्त, स्पर्द्धित, (न) मधुर। सींचाहुआ, हसद किया हुआ, मिठास।
मिष्टता, स्त्री. माधुर्य्य; मिठास।
मिष्टान्न, न. मधुर द्रव्य; मिठाई।
मिहिका, स्त्री नीहार, पाला, कोरा।
मिहिर, पु. सूर्य्य, अर्कवृक्ष, वृद्ध, मेघ, वायु, चंद्र, विक्रमादित्य, नवरत्नान्तर्गत रत्न, आफ़ताब, आक, बूढ़ा, बादल, हवा, चांद, राजा विक्रमके ९ रत्नोंमेंसे एक।
मिहिराण, पु. शिव।

मीढ, त्रि. शिव, वृद्ध, (त्रि) मूत्रित; मूताहुआ,

मीढुष्टम, पु. सूर्य्य, महादेव, चोर।

मीन, पु. मत्स्य, शिति, अवतारविशेष (स्त्री) (ना) ऊषाकन्या, कश्यपत्नी।

मीन-केतन, पु. कन्दर्प्प, कामदेव, समुद्र।

मीन-ध्वज, पु. मित्रा-वरुण, सूर्य्य, और वरुण।

मीमांसक, पु. मीमांसाशास्त्रविद्, त्रि. सिद्धान्तकारी। मीमांसाशास्त्रके जाननेवाला; फैसला करनेवाला,

मीमांसा, स्त्री. जैमिनीकृतदर्शन; शास्त्रविचार, सिद्धान्त, निष्पत्ति।

मीर, पु. समुद्र, पर्वतैकदेश, सीमा, पानीय; समुंदर, पहाड़का एक हिस्सा, हद्द, पीनेका।

मीलन, न. मुद्रण, संकोच, आंख झमकना।

मलित, त्रि. मुद्रित, अप्रफुल्ल, मीचाहुआ।

मुकुट, न. शिरोभूषण। ताज।

मुकुटिन्, पु. मुकुटधारी,। ताजवाला।

मुकुन्दक, पु. पलाण्डु; प्याज़।

मुकुन्द, पु. विष्णु, मुक्ति, निधिविशेष, रक्तविशेष, कुन्दरुवृक्ष, पारद। नजात, एक हश्मत, एक किसका जवाहर, कुंदफूलका दरख, पारा।

मुकुम्, व्य. निर्वाण, भक्तिरस, प्रेम।

मुकुर, पु. दर्पण, बकुलवृक्ष, कुलालदंड, कोरक। आईनह, मालतीका पोदा, घुमारकी लकड़ी, गुंचह।

मुकुलित, त्रि. आधाखिला हुआ।

मुक्त, त्रि. प्राप्त-मोक्ष, नन्दित, (स्त्री) (क्ति) नजात।

मुक्तक, न. क्षेपणीयास्त्रविशेष; कुंडी।

मुक्त-हस्त, त्रि. दान—शील। फयाज़।

मुक्ता, स्त्री. मणिविशेष, पुंश्चली; मोती, छिनाल।

मुंह, चेहरह, शुरु, तजवीज़, पहिला, सर्दार, आवाज़, खेल, ढेऊ दरख़त।

मुख-ज, पु. ब्राह्मण, दन्त, (त्रि) मुखजात;।

मुखतस्, व्य. मुखात्; मुहसे।

मुख-पूरण, न. गण्डूष, ग्रास। चुली, लुगमा।

मुखर, त्रि. वाचाल (पु) काक, शङ्ख। [हुआ।

मुखरित, त्रि. शब्दायमान, शब्दित। शब्दकरता

मुख-शोधिन्, पु. जंबीर; निंबू।

मुख-शोष, न. पियासा; प्यास।

मुख-शील, त्रि. कटु भाषी; कड़वा बोलनेवाला।

मुख-सम्भव, पु. अग्नि, ब्राह्मण, (त्रि) मुखोत्पन्न; आग, ब्राह्मण, मुह से पैदा हुआ २।

मुख-स्थ, त्रि. अभ्यस्त। हिफ़्ज़।

मुख्य, पु. प्रथमकल्प, (त्रि) श्रेष्ठ, प्रधान।

मुग्ध, त्रि. मोहवश, सुन्दर, मनोहर, (स्त्री) (ग्धा) नवयौवना स्त्री। बेवकूफ़, खूबसूरत, दिलचसप, नौ जवान् औरत।

मुचक, पु. लाक्षा; लाख।

मुचु-कुन्द, पु. पुष्पवृक्षविशेष, मान्धातृराजपुत्र; मोतियेका पौधा, मांधाता का बेटा।

मुचुटी, स्त्री. अङ्गुली मोटन, मुष्टि; अंगुलीका मटकाना, मुट्ठी।

मुंज, पु. तृणविशेष; मूंज।

मुण्ड, न. शिर, मस्तक, (पु) दैत्यविशेष, राहुग्रह, नापित, (त्रि) मुण्डित। सर, माथा, नाई, मुंड़ा हुआ, गंजा।

मुण्डक, न. मस्तक. (पु) नापित, अथर्ववेदीयोपनिषत्। [illegible] नाई, अथर्ववेदकी उपनिषत्।

मुण्डन, [illegible], मूंडन। [illegible] [हुआ।

मुद्गर, न. मल्लिका—पुष्पविशेष, (पु) लोष्टादि-भेदक। मालतीका फूल, मोहली।

मुद्गल, न. रोहिषतृण, (पु) हर्य्यश्वराजपुत्र, मुनि-विशेष, इन्द्र—सेनापति। एक ख़ास घास, राजा "हर्य्यश्व" का वेटा, नाम एक संतका जिससे मुद्गल गोत्र चला है, इन्द्रकी फ़ौजका मालिक।

मुद्रण, न. स्त्री (णा) मुद्रित करन; छापना।

मुद्रा-ङ्कण, न. छापन, मोहरलगाना।

मुद्रा-ङ्कित, त्रि. छपा हुआ।

मुद्रा, स्त्री. प्रत्ययकारिणी मुद्रिका। नामकी मोहर, सिक्का, छापेके हुरूफ़, छापा, वामीओंके पांच मकारोंमेंसे एक।

मुद्रिका, स्त्री. स्वर्णरौप्यादि निर्म्मित मुद्रिका; मोहर, रुपैया आदि।

मुधा, व्य. व्यर्थ। वेफ़ायदह।

मुनि, पु. ऋषि, तपस्वी, मौनव्रती, ज्ञानी, सत्य-वाक्, वङ्गसेन वृक्ष, जिन, पलाश वृक्ष। ख़ामोश, आलिम, एक ख़ास दरख़्त।

मुनि-द्रुम, पु. ख़ास फूलदार पेड़।

मुनि-पित्तल, न. ताम्र; तांबा।

मुनि-पुङ्गव, पु. मुनिश्रेष्ठ। मुनियोंमें उत्तम।

मुनि-पूग, पु. गुवाकविशेष। राम—सुपारी।

मुनि-भेषज, न. अगस्त्य, हरीतकी, लंघन। हरीड़, फ़ाक्कह।

मुनी-न्द्र, पु. इन्द्र, बुद्धदेव।

मुमुक्षु, पु. मुक्तीच्छुक। नजात चाहनेवाला।

मुमुचान, पु. मेघ। बादल।

मुमूर्षा, स्त्री. मरणेच्छा। मौतकी ख्वाहिश।

मुर, न. वेष्टन, (पु) दैत्यविशेष, (स्त्री) (रा) गंध-द्रव्यवि०, नन्दराजाकी दासी, चंद्रगुप्तकी माता

मुरज, पु. मृदङ्ग, (स्त्री) (जा) कुवेरपत्नी; मिरदंग वाजा, कुवेरकी जोरू।

मुरन्दला, स्त्री. नर्म्मदानदी। नर्म्मदा दर्या।

मुर-मर्द्दन, } पु. विष्णु, नारायण। [वंसरी।
मुर-रिपु, }

मुरला, स्त्री. केरलदेशकी नदी (ली) नर्म्मदा, दर्या,

मुरली-धर, पु. विष्णु (त्रि)। वंसरी वरदार।

मुरारि, पु. विष्णु, "अनर्घराघवग्रन्थकर्त्ता। कवि-विशेष।

मुर्म्मुर, पु. तुषाग्नि, मन्मथ, रवि वाजी; तुसकी आग, शहवतका देवता, सूरजका घोड़ा।

मुश(स)ली, स्त्री. औषधिविशेष गृहगोधिका, (पु) (लिन्) बलराम। मूसली दवाई, छिपकली, श्री-कृष्णका भाई।

मुष(स)ल, पु. अयोग्र; मोहली। मूसल।

मुषित, त्रि. चोरित; चुराया हुआ।

मुष्क, पु. अण्डकोष, वृक्षविशेष, समूह, तस्कर, (त्रि) स्थूल। वयज़ा, ख़ास दरख़्त, मजमह, चोर, मोटा।

मुष्कर, पु. प्रलम्बाण्ड; जिस्के पोते वड़े हों।

मुष्टामुष्टि, व्य. परस्पर मुष्टिप्रहारकरण; मुक्कियों-से लड़ना। [तोले, मुक्का।

मुष्टि, पु. स्त्री. पल-परिमाण, बद्ध—पाणि; चार

मुष्टिक, पु. कंसराज मल्लविशेष, स्वर्ण-कार; कंस-का पहिलवान, सुनार।

मुष्टिन्धय, पु. वालक; लड़का।

मुष्टक, पु. राज-सर्षप; राई सरसों।

मुस्त(क), पु. तृणमूलविशेष; मुर्था।

मुस्ताद, पु. शूकर; सूअर।

मुस्ताभ, न, मुस्तकविशेष। नागर मुर्था।

मुस्ल, न. गदा, यष्टि। लाठी। [वेवकूफ़।

मुहिर, पु. काम, प्रेम, मूर्ख। ख्वाहिश, मुहब्बत,

मुहुस, } व्य. पुनः पुनः; वार वार।
मुहुर्म्मुहुस, }

मुहूर्त्त, पु. न. द्वादशक्षण परिमितकाल; दो घड़ी।

मूक, त्रि. वाक्यरहित, (पु) मत्स्य, दैत्य, दीन। गूंगा, मछली, दैत, वेचारह।

मूढ, त्रि. मूर्ख, वालक. जड़। वेवकूफ़, हैरान।

मूत, त्रि. बद्ध; बंधाहुआ।

मूत्र, न. उपस्थनिर्गतजल,। पेशाव।

मूत्र-दोष, पु. प्रमेह रोग।

मूत्र-पुट, पु. नाभीका अधोभाग। मसाना।

मूत्रल, न. त्रपुष (त्रि) मूत्रवर्द्धक (स्त्री) (ला) ककैटी, भखडा, पेशाव वढानेवाली दवाई, ककड़ी खीरा।

मूत्रा-घात, पु. मूत्रकृच्छ्ररोग। पेशाव वंदकी वीमारी

मूर्छन, न. मूर्छा। ग़श।

मूर्छना, स्त्री. गीताङ्गविशेष; मामका सातवां भाग।

मूर्छा, स्त्री. सम्मोह । बेहोशी, गश ।
मूर्छाय, पु. मूर्छा । गश ।
मूर्छा-पन्न (गत), पु. मोहप्राप्त । बेहोश ।
मूर्छित, त्रि. मूर्छित । बेहोश ।
मूर्त्त, त्रि. मूर्च्छित, कठिन, (पु) साकार, (स्त्री)(र्त्ति) प्रतिमा, आकृति । बेहोश, सख्त, बावजूद, तसवीर ।
मूर्त्ति-मत्, न. शरीर (स्त्री) (ती) शरीरवती ।
मूर्द्धक, पु. क्षत्रिय; दूसरावर्ण ।
मूर्द्धन, पु. बाल (त्रि) सिरका ।
मूर्द्धन्, पु. शिर, मस्तक; सिर, माथा । [ढ ण ष।
मूर्द्धन्य, त्रि. मस्तकोत्पन्नवर्ण; यथा ऋ ॠ ट ठ ड
मूर्द्धाभिषिक्त, पु. क्षत्रिय, राना, वर्णसंकर जाति विशेष, ब्राह्मणके वीर्यसे क्षत्रियामे जात ।
मूर्द्ध-वेष्टन, न. पगड़ी ।
मूर्वा(र्वी), स्त्री. कमानके चिल्लेके योग्य ।
मूर्विका, स्त्री. मूर्वालता ।
मूल, न. स्कन्ध, नक्षत्रविशेष, निकुञ्ज, अन्तिक, मूलवित्त, निज चरण टीकायोग्य ग्रंथ । तनह, १९ सवाँ नक्षत्र, गली, पूंजी; अपना पांव, मतन, (स्त्री) (ला) शतावरी ।
मूलक, पु. न. कन्दविशेष । मूली ।
मूल-कर्मन्, न. इन्द्रजाल । मंदारीकी खेल ।
मूल-कृच्छ्र, न. एकादशविधपर्णकृच्छ्रान्तर्गत व्रतविशेष (त्रि) तद्वान् ।
मूल-प्रकृति, स्त्री. आद्या शक्ति, महामाया ।
मूल-त्रिभुज, पु. शकट; छकड़ा, रथ ।
मूला, स्त्री. शतावरी लता, मूलनक्षत्र, एकवेल । १९ वां नक्षत्र ।
मूला-धार, पु. गुदा और लिंगके मध्यका स्थान ।
मूलिन्, पु. वृक्ष (न) मूलक, (स्त्री) (नी) ज्येष्ठी । दरख्त, मूली, छिपकली ।
मूलो-त्पाटन, न. जड़से उखाड़ना ।
मूल्य, न. अवक्रय, (त्रि) प्रतिष्ठायोग्य, रोपणयोग्य, । मोल, भाड़ा, इज़्ज़तके लायक, खरीदनेके लायक । [चूही ।]
मूष(षिक), पु. मूषिक (स्त्री) (का) मूसा, चूहा
मूषा(षी), स्त्री. तैजसावर्त्तिनी स्त्री. मूषिक, गवाक्ष । कुठाली, चूही, झरोखा ।
मूषिकाङ्क, पु. गणेश ।
मूषित, त्रि. चोरित । चुराया हुआ ।
मूषीक, पु. स्त्री. इन्दुर; चूहा ।
मृष्यायण, त्रि. जारज पुत्र । हरामज़ादह ।
मृकण्ड(ण्डु)(क), पु. मुनिवि०; मार्कण्डेयका पिता ।
मृग, पु. पशु—मात्र, हस्तिविशेष, नक्षत्रविशेष, अन्वेषण, याच्ञा, मार्गशीर्ष, यज्ञविशेष, मृगनाभि, मकर राशि, कुरङ्ग (स्त्री) (गी) हिरनी, पुलह स्त्री, ३ अक्षरका छन्दोविशेष, रोगविशेष ।
मृग-जन्हु, पु. मृगकी संतान ।
मृग-जालिका, स्त्री. वागुरा, फंदा ।
मृगण, न. अन्वेषण, गईचीज़की तलाश, (स्त्री)(णा) तलाश ।
मृगतृष्(ष्णा)(षा)(ष्णिका), स्त्री. मरीचिका, मरुदेशमे रेतली जगहपर सूरजकी किरणोंमें मृगोंको जलका भासना ।
मृग-दंशक, पु. शिकारी, शिकारी कुत्ता ।
मृग-धूर्त्त(क), पु. शृगाल; गीदड ।
मृग-नाभि(ज), पु. स्त्री. मृगमद; कस्तूरी ।
मृग-नेत्रा, स्त्री. मृगशिरा नक्षत्रयुक्त रात्रि, मृगनयना स्त्री ।
मृग-पति, पु. सिंह, केशरी । शेर । [हिरन ।
मृग-पालिका, स्त्री. कस्तूरी-मृग । कस्तूरीवाला-
मृगया, स्त्री. आखेट । शिकार ।
मृगयु, पु. ब्रह्मा शृगाल, व्याध ।
मृग-राज्(ज), पु. सिंह, चांद । शेर ।
मृग-रिपु, पु. केसरी । शेर । [निशान, चांद ।
मृग-लाञ्छन, न. मृगचिन्ह, पु. चंद्र; हरिनका
मृग-लेखा, स्त्री. चिन्ह । चन्द्रमाकी कला ।
मृग-वाहन, पु. वायु । हवा ।
मृगव्य; न. मृगया । शिकार । [२७वां, नक्षत्र ।
मृगशिरस्, न. २७ नक्षत्रान्तर्गत नक्षत्रविशेष;
मृग-शीर्ष, पु. (स्त्री) (र्षा) मृगशिर नक्षत्र ।
मृगा-ङ्क, पु. चन्द्र, कर्पूर, वायु; चांद, काफ़ूर, हवा ।
मृगा-जीव, पु. व्याध । शिकारी ।
मृगा-दन, पु. व्याघ्र; चीता ।
मृगा-न्तक, [illegible] ।प्र, बाघ [illegible] कुत्ता ।
मृगारि, [illegible] । शेर ।

मृगा·लय, पु. मृगशाला, पश्वाकीर्ण वन। हरनोका घुरा, दरिंदोंसे पुर जंगल। [पीछा कियाहुआ।
मृगित, त्रि. अन्वेषित। तलाश कियाहुआ।
मृगेन्द्र, पु. पशुराज। शेर।
मृज्य, त्रि. मार्जनीय; मांजनेके लायक।
मृजा, स्त्री. मांजना।
मृड, पु. शिव (स्त्री) (डी) डौंगी।
मृडंकण, पु. बालक; लड़का।
मृडीक, पु. हरण।
मृणाल, स्त्री, (ली) पद्मनाल (न) वीरणमूल, । कौलकी डंडीकी नाल, खस्स।
मृणा·लिन्, पु. कमल (स्त्री) (णी) पद्मिनी, पद्मयुक्त लता। कौल फूल, कौलोंका मजमह।
मृणमय, त्रि. मृत्तिकानिर्मित; मट्टीका।
मृत, न. मृत्यु (त्रि.) गतप्राण। मांगा हुआ, मौत, मरा हुआ।
मृतक, न. मरणशील, शव, पातक। मुर्दा।
मृतण्ड, पु. सूर्य्यपिता, कश्यप मुनि।
मृत·कल्प, पु. मृतप्राय। करी बुल मर्ग।
मृत·प्राय, त्रि. मृततुल्य; मराहुआ सा।
मृति, स्त्री. मृत्यु; मौत।
मृत्कार, पु. कुम्भकार; घुम्हार।
मृत्तिका, स्त्री. मृदा; मट्टी।
मृत्यु, पु. यम, कंस (त्रि) प्राणवियोग, जम; श्रीकृष्णाजीका मामा, मौत।
मृत्यु·ञ्जय, पु. महादेव, शिवजी।
मृत्सा(त्स्ना), स्त्री. प्रशस्त मृत्तिका। उमदह मट्टी।
मृद(दा), न. मृत्तिका; मट्टी।
मृदङ्ग, पु. स्वनामख्यात वाद्य; तत्पर्य्याय यथा, मुरज, ढक्का, घोष, वंश, (स्त्री) (ङ्गी) घोषातकी।
मृद्दकार, पु. न. पत्थर का कोयला।
मृदित, त्रि. मर्दित; मलाहुआ।
मृदिनी, स्त्री. प्रशस्त मृत्तिका। उमदह मट्टी।
मृदु, न. कोमल, (स्त्री) गृहकन्या (त्रि) शान्त। मुलायम, हलीम, संजीदह।
मृदु·गण, पु. चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती।
मृदुता, स्त्री. कोमलत्व। मुलायमी।
मृदु·पत्र, पु. नल, (न) कोमलपर्ण, (त्रि) कोमलपर्णविशिष्ट। मुलायम पत्ता, मुलायम पत्तेदार।

मृद्वी(का), स्त्री. कोमलाङ्गी, द्राक्षा। नाज़नीन, किशमिस, दाख।
मृध, न. सङ्ग्राम; लड़ाई। जंग।
मृधा, व्य. मृषा, वृथा; झूठ, बेफायदह।
मृन्मय, त्रि. मृन्निर्म्मित (स्त्री) (यी) मृत् निर्म्मितप्रतिमा। मट्टीका, मट्टीकी बनी तसवीर।
मृषोद्य, न. मिथ्यावाक्य (त्रि) मिथ्यावादी। झूठी कलाम, झूठा।
मृष्ट, न. मरिच, (त्रि) शोधित। मांजाहुआ।
मेक, पु. अज, स्तम्भ; बकरा, खंबा।
मेखल, पु. पर्वतवि०, काञ्ची, चर्म्मरज्वादि, शैलनितम्ब, नर्मदा—नदी, पृश्णिपर्णी लता, उपनयन काले धारणीयशरसूत्रादि निर्म्मित सूत्रत्रय, होमकुण्डोपरि मृद्घटित वेष्टनविशेष। तड़ागी, चमड़ेकी दड़ी वगैरह, पहाड़ की गिर्दनवाई, उपवीत डालने के वक्त बानकी तेहरी तड़ागी, होमकुण्डका घेरा।
मेघ, पु. अभ्र, राक्षसवि०, रागवि०। बादल,।
मेघ·कफ, पु. करका; ओला।
मेघ·ज, त्रि. मेघभववस्तु, वृहन्मुक्ता; बादलसे पैदा हुआ २, बड़ा मोती।
मेघ·ज्योतिस्, न. वज्राग्नि। बिजलीकी चमक।
मेघ·नाद, पु. वरुण, रावण पुत्र, पलाशवृक्ष, तण्डुलीयशाक, (न) मेघशब्द। बादलकी गर्ज।
मेघ·पुष्प, न. जल, पिण्डाभ्र, नदीजल, (पु) शक्रहय। पानी, ओला, दर्याका पानी, इन्द्रका घोड़ा।
मेघ·माल, पु. रमागर्भजात कल्कि देवपुत्र, (स्त्री) (ला) मेघश्रेणी। कल्कि-देवका बेटा, बादलोंका सिलसिलह।
मेघ·योनि, पु. धूम; धूआं।
मेघ·वर्त्मन्, न. आकाश। आसमान।
मेघ·वन्हि, पु. वज्राग्नि। बर्क।
मेघ·वाहन, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।
मेघा·गम, पु. वर्षाकाल। बरसात।
मेघा·नन्दा, स्त्री. बलाका; बगुलोंकी कतार।
मेचक, न. अन्धकार, अञ्जन, (पु) मयूरचन्द्रक, श्यामल, धूम, मेघ, शोभाञ्जन, (त्रि.) श्यामल, बलयुक्त। अंधेरा, स्याह सुरमा, मोरकी पूंछका चांद, धूआं, बादल, सुहांजना, स्याह।

मूर्छा, स्त्री. सम्मोह । बेहोशी, गश ।
मूर्छाय, पु. मूर्छा । गश ।
मूर्छा-पन्न (गत), पु. मोहप्राप्त । बेहोश ।
मूर्छित, त्रि. मूर्छित । बेहोश ।
मूर्त्त, त्रि. मूर्च्छित, कठिन, (पु) साकार, (स्त्री)(र्ति) प्रतिमा, आकृति । बेहोश, सखत, वावजूद, तसबीर ।
मूर्त्ति-मत्, न. शरीर (स्त्री) (ती) शरीरवती ।
मूर्द्धक, पु. क्षत्रिय; दूसरावर्ण ।
मूर्द्धन, पु. बाल (त्रि) सिरका ।
मूर्द्धन्, पु. शिर, मस्तक; सिर, माथा । [ढणष।
मूर्द्धन्य, त्रि. मस्तकोत्पन्नवर्ण; यथा ऋॠ ट ठ ड
मूर्द्धाभिषिक्त, पु. क्षत्रिय, राना, वर्णसंकर जाति विशेष, ब्राह्मणके वीर्यसे क्षत्रियामे जात ।
मूर्द्ध-वेष्टन, न. पगड़ी ।
मूर्वा(र्वी), स्त्री. कमानके चिल्लेके योग्य ।
मूर्विका, स्त्री. मूर्वालता ।
मूल, न. स्कन्ध, नक्षत्रविशेष, निकुञ्ज, अन्तिक, मूलवित्त, निज चरण टीकायोग्य ग्रंथ । तनह, १९ सवां नक्षत्र, गली, पूंजी; अपना पांव, मतन, (स्त्री) (ला) शतावरी ।
मूलक, पु. न. कन्दविशेष । मूली ।
मूल-कर्मन्, न. इन्द्रजाल । मंदारीकी खेल ।
मूल-कृच्छ्र, न. एकादशविधपर्णकृच्छ्रान्तर्गत व्रतविशेष (त्रि) तद्वान् ।
मूल-प्रकृति, स्त्री. आद्या शक्ति, महामाया ।
मूल-विभुज, पु. शकट; छकड़ा, रथ ।
मूला, स्त्री. शतावरी लता, मूलनक्षत्र, एकवेल । १९ वां नक्षत्र ।
मूला-धार, पु. गुदा और लिंगके मध्यका स्थान ।
मूलिन्, पु. वृक्ष (न) मूलक, (स्त्री) (नी) ज्येष्ठी । दरखत, मूली, छिपकली ।
मूलो-त्पाटन, न. जड़से उखाड़ना ।
मूल्य, न. अवक्रय, (त्रि) प्रतिष्ठायोग्य, रोपणयोग्य, । मोल, भाड़ा, इज़तके लायक, खरीदनेके लायक । [चूही ।]
मूष(षिक), पु. मूषिक (स्त्री) (का) मूसा, चूहा
मूषा(षी), स्त्री. तैजसावर्त्तिनी स्त्री. मूषिक, गवाक्ष । कुठाली, चूही, झरोखा ।
मूषिकां-क, पु. गणेश ।
मूषित, त्रि. चोरित । चुराया हुआ ।
मूषीक, पु. स्त्री. इन्दुर; चूहा ।
मूष्यायण, त्रि. जारज पुत्र । हरामज़ादह ।
मृकण्ड(ण्डु)(क), पु. मुनिवि०; मार्कण्डेयका पिता ।
मृग, पु. पशु—मात्र, हस्तिविशेष, नक्षत्रविशेष, अन्वेषण, याच्या, मार्गशीर्ष, यज्ञविशेष, मृगनाभि, मकर राशि, कुरङ्ग (स्त्री) (गी) हिरनी, पुलह स्त्री, ३ अक्षरका छन्दोविशेष, रोगविशेष ।
मृग-जन्हु, पु. मृगकी संतान ।
मृग-जालिका, स्त्री. वागुरा, फंदा ।
मृगण, न. अन्वेषण, गईचीज़की तलाश, (स्त्री)(णा) तलाश ।
मृगतृष्(ष्णा)(षा)(ष्णिका), स्त्री. मरीचिका, मरुदेशमे रेतली जगहपर सूरजकी किरणोंमें मृगोंको जलका भासना ।
मृग-दंशक, पु. शिकारी, शिकारी कुत्ता ।
मृग-धूर्त्त(क), पु. शृगाल; गीदड़ ।
मृग-नाभि(ज), पु. स्त्री. मृगमद; कस्तूरी ।
मृग-नेत्रा, स्त्री. मृगशिरा नक्षत्रयुक्त रात्रि, मृगनयना स्त्री ।
मृग-पति, पु. सिंह, केशरी । शेर । [हिरन ।
मृग-पालिका; स्त्री. कस्तूरी-मृग । कस्तूरीवाला–
मृगया, स्त्री. आखेट । शिकार ।
मृगयु, पु. ब्रह्मा शृगाल, व्याध ।
मृग-राज् (ज), पु. सिंह, चांद । शेर ।
मृग-रिपु, पु. केसरी । शेर । [निशान, चांद ।
मृग-लाञ्छन, न. मृगचिन्ह, पु. चंद्र; हरिनका
मृग-लेखा, स्त्री. चिन्ह । चन्द्रमाकी कला ।
मृग-वाहन, पु. वायु । हवा ।
मृगव्य; न. मृगया । शिकार । [२७वां, नक्षत्र।
मृगशिरस्, न. २७ नक्षत्रान्तर्गत नक्षत्रविशेष;
मृग-शीर्ष, पु. (स्त्री) (र्षा) मृगशिर नक्षत्र ।
मृगा-ङ्क, पु. चन्द्र, कर्पूर, वायु; चांद, काफूर, हवा,
मृगा-जीव, पु. व्याध । शिकारी ।
मृगा-दन, पु. व्याघ्र; चीता ।
मृगा-न्तक, पु. चित्रव्याघ्र; बाघ । [बाघ, कुत्ता ।
मृगारि, पु. सिंह, व्याघ्र, कुकुट, रक्तशिग्रु । शेर

मृगा·लय, पु. मृगशाला, पश्वाकीर्ण वन । हरनोंका घुरा, दरिंदोंसे पुर जंगल । [पीछा कियाहुआ ।
मृगित, त्रि. अन्वेषित । तलाश कियाहुआ ।
मृगेन्द्र, पु. पशुराज । शेर ।
मृज्य. त्रि. मार्जनीय; मांजनेके लायक ।
मृजा, स्त्री. मांजना, ।
मृड, पु. शिव (स्त्री) (डी) दोंगी ।
मृडंकण, पु. बालक; लड़का ।
मृडीक, पु. हरण ।
मृणाल, स्त्री, (ली) पद्मनाल (न) वीरणमूल, । कौलकी डंडीकी नाल, खस्स ।
मृणा·लिन्, पु. कमल (स्त्री) (णी) पद्मिनी, पद्म· युक्त लता । कौल फूल, कौलोंका मजमह ।
मृणमय, त्रि. मृत्तिकानिर्मित; मट्टीका ।
मृत, न. मृत्यु (त्रि.) गतप्राण । मांगा हुआ, मौत, मरा हुआ ।
मृतक, न. मरणशील, शव, पातक । मुर्दा ।
मृतण्ड, पु. सूर्य्यपिता, कश्यप मुनि ।
मृत·कल्प, पु. मृतप्राय । करी बुल मर्ग ।
मृत-प्राय, त्रि. मृततुल्य; मराहुआ सा ।
मृति, स्त्री. मृत्यु; मौत ।
मृत्कार, पु. कुम्भकार; घुम्हार ।
मृत्तिका, स्त्री. मृदा; मट्टी ।
मृत्यु, पु. यम, कंस (त्रि) प्राणवियोग, जम; श्रीकृ· ष्णाजीका मामा, मौत ।
मृत्यु·ञ्जय, पु. महादेव, शिवजी ।
मृत्सा(त्स्ना), स्त्री. प्रशस्त मृत्तिका । उमदह मट्टी ।
मृद(दा), न. मृत्तिका; मट्टी ।
मृदङ्ग, पु. स्वनामख्यात वाद्य; तत्पर्य्याय यथा, मुरज, ढक्का, घोप, वंश, (स्त्री) (ङ्गी) घोपातकी ।
मृदङ्गार, पु· न. पत्थर का कोयला ।
मृदित, त्रि. मर्दित; मलाहुआ ।
मृदिनी, स्त्री. प्रशस्त मृत्तिका । उमदह मट्टी ।
मृदु, न. कोमल, (स्त्री) गृहकन्या (त्रि) शान्त । मुलायम, हलीम, संजीदह ।
मृदु-गण, पु. चित्रा अनुराधा मृगशिर रेवती ।
मृदुता, स्त्री. कोमलत्व । मुलायमी ।
मृदु-पत्र, पु. नल, (न) कोमलपर्ण, (त्रि) कोमल· पर्णविशिष्ट । मुलायम पत्ता, मुलायम पत्तेदार ।
मृद्वी(का), स्त्री. कोमलाङ्गी, द्राक्षा । नाज़नीन, क़िसमिस, दाख ।
मृध, न. सङ्ग्राम; लड़ाई । जंग ।
मृषा, व्य. मृषा, वृथा; झूठ, बेफ़ायदह ।
मृन्मय, त्रि. मृन्निर्म्मित (स्त्री) (यी) मृत् निर्म्मित· प्रतिमा । मट्टीका, मट्टीकी बनी तसवीर ।
मृषोद्य, न. मिथ्यावाक्य (त्रि) मिथ्यावादी । झूठी कलाम, झूठा ।
मृष्ट, न. मरिच, (त्रि) शोधित । मांजाहुआ ।
मेक, पु. अज, स्तम्भ; बकरा, खंभा ।
मेखल, पु. पर्वतवि०, काञ्ची, चर्म्मरज्वादि, शैल· नितम्ब, नर्मदा—नदी, पृश्णिपर्णी लता, उप· नयन काले धारणीयशरसूत्रादि निर्म्मित सूत्र· त्रय, होमकुण्डोपरि मृद्घटित वेष्टनविशेष । त· ड़ागी, चमड़ेकी दड़ी वग़ैरह, पहाड़ की गिर्दन· वाई, उपवीत डालने के वक्त बानकी तेहरी तड़ागी, होमकुण्डका घेरा ।
मेघ, पु. अभ्र, राक्षसवि०, रागवि० । बादल, ।
मेघ·कफ, पु. करका; ओला ।
मेघ-ज, त्रि. मेघ-भववस्तु, वृहन्मुक्ता; बादल· से पैदा हुआ २, बड़ा मोती ।
मेघ-ज्योतिस्, न. वज्राग्नि । बिजलीकी चमक ।
मेघ-नाद, पु. वरुण, रावण पुत्र, पलाशवृक्ष, तण्डुलीयशाक, (न) मेघशब्द । बादलकी गर्ज ।
मेघ·पुष्प, न. जल, पिण्डाभ्र, नदीजल, (पु) शक्र· हय । पानी, ओला, दर्याका पानी, इन्द्रका घोड़ा ।
मेघ-माल, पु. रमागर्भजात कल्कि देवपुत्र, (स्त्री) (ला) मेघश्रेणी । कल्कि-देवका बेटा, बादलों· का सिलसिलह ।
मेघ-योनि, पु. धूम; धूआं ।
मेघ-वर्त्मन्, न. आकाश । आसमान ।
मेघ-वन्हि, पु. वज्राग्नि । बर्क़ ।
मेघ-वाहन, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा ।
मेघा·गम, पु. वर्षाकाल । बरसात ।
मेघा-नन्दा, स्त्री. बलाका; बगुलोंकी क़तार ।
मेचक, न. अन्धकार, अञ्जन, (पु) मयूरचन्द्रक, श्या· मल, धूम, मेघ, शोभाञ्जन, (त्रि.) श्यामल, बल युक्त । अंधेरा, स्याह सुरमा, मोरकी पूंछका चांद, धूआं, बादल, सुहांजना, स्याह ।

मूर्छा, स्त्री. सम्मोह । वेहोशी, गश ।
मूर्छाय, पु. मूर्छा । गश ।
मूर्छा-पन्न (गत), पु. मोहप्राप्त । बेहोश ।
मूर्छित, त्रि. मूर्छित । बेहोश ।
मूर्त्त, त्रि. मूर्च्छित, कठिन, (पु) साकार, (स्त्री)(र्ति) प्रतिमा, आकृति । बेहोश, सख्त, बावजूद, तसबीर ।
मूर्त्ति-मत्, न. शरीर (स्त्री) (ती) शरीरवती ।
मूर्द्धक, पु. क्षत्रिय; दूसरावर्ण ।
मूर्द्धन, पु. बाल (त्रि) सिरका ।
मूर्द्धन्, पु. शिर, मस्तक; सिर, माथा । [ढ ण ष।
मूर्द्धन्य, त्रि. मस्तकोत्पन्नवर्ण; यथा ऋॠ ट ठ ड
मूर्द्धाभिषिक्त, पु. क्षत्रिय, राना, वर्णसंकर जाति विशेष, ब्राह्मणके वीर्यसे क्षत्रियामे जात ।
मूर्द्ध-वेष्टन, न. पगड़ी ।
मूर्वा(र्वी), स्त्री. कमानके चिल्लेके योग्य ।
मूर्विका, स्त्री. मूर्वालता ।
मूल, न. स्कन्ध, नक्षत्रविशेष, निकुञ्ज, अन्तिक, मूलवित्त, निज चरण टीकायोग्य ग्रंथ । तनह, १९ सवां नक्षत्र, गली, पूंजी, अपना पांव, मतन, (स्त्री) (ला) शतावरी ।
मूलक, पु. न. कन्दविशेष । मूली ।
मूल-कर्मन्, न. इन्द्रजाल । मंदारीकी खेल ।
मूल-कृच्छ्, न. एकादशविधपर्णकृच्छ्रान्तर्गत व्रतविशेष (त्रि) तद्वान् ।
मूल-प्रकृति, स्त्री. आद्या शक्ति, महामाया ।
मूल-विभुज, पु. शकट; छकड़ा, रथ ।
मूला, स्त्री. शतावरी लता, मूलनक्षत्र, एकवेल । १९ वां नक्षत्र ।
मूला-धार, पु. गुदा और लिंगके मध्यका स्थान ।
मूलिन्, पु. वृक्ष (न) मूलक, (स्त्री) (नी) ज्येष्ठी । दरखत, मूली, छिपकली ।
मूलो-त्पाटन, न. जड़से उखाड़ना ।
मूल्य, न. अवक्रय, (त्रि) प्रतिष्ठायोग्य, रोपणयोग्य, । मोल, भाड़ा, इज़तके लायक, खरीदनेके लायक । [चूही ।]
मूष(षिक), पु. मूषिक (स्त्री) (का) मूसा, चूहा
मूषा(षी), स्त्री. तैजसावर्त्तिनी स्त्री. मूषिक, गवाक्ष । कुठाली, चूही, झरोखा ।
मूषिकांक, पु. गणेश ।
मूषित, त्रि. चोरित । चुराया हुआ ।
मूषीक, पु. स्त्री. इन्दुर; चूहा ।
मृष्यायण, त्रि. जारज पुत्र । हरामज़ादह ।
मृकण्ड(ण्डु)(क), पु. मुनिवि०; मार्कण्डेयका पिता ।
मृग, पु. पशु—मात्र, हस्तिविशेष, नक्षत्रविशेष, अन्वेषण, याच्ञा, मार्गशीर्ष, यज्ञविशेष, मृगनाभि, मकर राशि, कुरङ्ग (स्त्री) (गी) हिरनी, पुलह स्त्री, ३ अक्षरका छन्दोविशेष, रोगविशेष ।
मृग-जन्हु, पु. मृगकी संतान ।
मृग-जालिका, स्त्री. वागुरा, फंदा ।
मृगण, न. अन्वेषण, गईचीज़की तलाश, (स्त्री) (णा) तलाश ।
मृगतृष्(ष्णा)(षा)(ष्णिका), स्त्री. मरीचिका, मरुदेशमे रेतली जगहपर सूरजकी किरणोंमें मृगोंको जलका भासना ।
मृग-दंशक, पु. शिकारी, शिकारी कुत्ता ।
मृग-धूर्त्त(क), पु. शृगाल; गीदड़ ।
मृग-नाभि(ज), पु. स्त्री. मृगमद; कस्तूरी ।
मृग-नेत्रा, स्त्री. मृगशिरा नक्षत्रयुक्त रात्रि, मृगनयना स्त्री ।
मृग-पति, पु. सिंह, केशरी । शेर । [हिरन ।
मृग-पालिका, स्त्री. कस्तूरी-मृग । कस्तूरीवाला—
मृगया, स्त्री. आखेट । शिकार ।
मृगयु, पु. ब्रह्मा शृगाल, व्याध ।
मृग-राज्(ज), पु. सिंह, चांद । शेर ।
मृग-रिपु, पु. केसरी । शेर । [निशान, चांद ।
मृग-लाञ्छन, न. मृगचिन्ह, पु. चंद्र; हरिनका
मृग-लेखा, स्त्री. चिन्ह । चन्द्रमाकी कला ।
मृग-वाहन, पु. वायु । हवा ।
मृगव्य; न. मृगया । शिकार । [२७वां, नक्षत्र ।
मृगशिरस्, न. २७ नक्षत्रान्तर्गत नक्षत्रविशेष;
मृग-शीर्ष, पु. (स्त्री) (र्षा) मृगशिर नक्षत्र ।
मृगा-ङ्क, पु. चन्द्र, कर्प्पूर, वायु; चांद, काफ़ूर, हवा,
मृगा-जीव, पु. व्याध । शिकारी ।
मृगा-दन, पु. व्याघ्र; चीता ।
मृगान्तक, पु. चित्रव्याघ्र; वाघ । [वाघ, कुत्ता ।
मृगारि, पु. सिंह, व्याघ्र, कुक्कुट, रक्तशिग्रु । शेर

मोषक, पु. तस्कर, वञ्चक; चोर. ठग।
मोषण, न. लुण्ठन; लूटना; चुराना। फ़रेब देना।
मोह, पु. मूर्छा. दुःख, देहाद्यात्मबुद्धि। गश तकलीफ़, ज़हालतेरूहानी। [हनेवाला।
मोहन, न. सुरत (पु) कामबाणविशेप (त्रि०) मो-
मोह-रात्रि, स्त्री. दैनन्दिन प्रलय; जन्माष्टमी की-रात, भादों सुदिअष्टमी।
मोहित, त्रि. फ़रेफ़तह।
मौकुलि, पु. काक; कौआ।
मौक्तिक, न. मुक्ता; मोती।
मौख, त्रि. मुखसंबंधीय; मुंहका।
मौखर्य, न. मुखरता। फ़रेब।
मौञ्जी, स्त्री. मुञ्जनिर्मित मेखला; मूंजकी तड़ागी।
मौञ्जीबन्ध(न), पु. उपनयन; जनेऊ डालनेका-संस्कार। तड़ागी डालना।
मौढ्य, न. मूढता। जहालत।
मौद्गलि, पु. काक; कौआ।
मौद्गल्य, पु. मुनिविशेष; मुद्गल मोत्रका।
मौद्गीन, न. मुद्गान्वितक्षेत्र, मूंग पैदाकरनेके लायक खेत।
मौन, न. तूष्णींभाव, चुपचाप। खामोशी।
मौनिन, पु. मुनि (त्रि) मौनयुक्त, चुपचाप। खामोश।
मौर्ख्य, न. मूर्खपना। जहालत।
मौर्वी, स्त्री. धनुर्गुण;। कमानका चिल्ला।
मौल, त्रि. शिरोमणि। सरताज।
मौलि, पु. स्त्री. चूडा, करीट, मस्तक, पु. अशोक-वृक्ष, (स्त्री) (ली) भूमि, चोटी, ताज़, माथा, अशोकदरखत। ज़मीन।
मौषल, (त्रि) मूसलका।
मौहूर्तिक, पु. ज्योतिषी। नजूमी।
म्रक्षण, न. लेपन; तेल मलना।
म्रदिमन्, पु. मृदुता, कोमलता, नम्रता। मुलायमी, हलीमी, नरमी।
म्रदिष्ठ, म्रदीयस, } त्रि. अतिमृदु। बहुत मुलायम।
म्रियमाण, त्रि. मुमुर्षु, मृतकल्प; मराहुआ, मरनेपर।
म्लक्त, न. चोरित; चुराया हुआ।
म्लान, न. मलिन, शुष्क, विषण्ण; मयला, सूका हुआ, थका हुआ। हैरान।
म्लानि, स्त्री. कान्तिक्षय, मलिनता। हैरानी, मयलापन, मैल।
म्लिष्ट, त्रि. अस्पष्ट,। नासाफ़।
म्लेच्छ, न. हिङ्गुल, (पु.) किरात, शवर, पुलिन्दादि नीच, पापरत अदना, गुनहगार। कमीन, कौम।
म्लेच्छ-कन्द, पु. लशुन, पियाज़। लसन।
म्लेच्छदेश, पु. आचाररहित देश। वैदिककर्म धर्मसे भ्रष्टलोक।
म्लेच्छित, न. अपशब्द। बेमानी लफ़्ज़।

य

य, पु. वायु, कीर्ति (स्त्री) (या) गति, यात्रा. त्याग। हवा, रफ़्तार शोहरत, छोडना।
यक, पु. यक्षवि०, जो कुबेरका खजानची है।
यकृत्, न. कुक्षी, दक्षिणभागस्थ मांसखंडतद्वर्द्धक रोगवि०। कलेजा, कलेजेकी बीमारी।
यक्ष, पु. देवयोनि, गुह्यकमात्र, कुबेर, इन्द्रगृह, धनरक्षक।
यक्ष-कर्दम, पु. कर्प्पूरागुरु कस्तूरी कक्कोल समूह मिश्रित समभाग,। काफ़ूर केसर कस्तूरी कक्कोल वग़ैरह से मिलाहुआ बटना।
यक्ष-धूप, पु. धूप, सर्जरस। राल। [रात।
यक्षरात्रि, स्त्री. कार्तिकी अमावस्या; दिवालीकी
यक्षामलक, न. पिण्डखर्जूरी। पिंडखजूर।
यक्षिणी, स्त्री. कुबेरपत्नी, यक्षभार्य्या; कुबेरकी जोरू, यक्षकी जोरु।
यक्षेन्द्र(श), पु. कुबेर। लक्ष्मीका भंडारी।
यक्ष्मघ्नी, स्त्री. द्राक्षा। किसमस्।
यक्ष्मन्, पु. क्षर, रोगविशेष; राजरोग।
यजति, स्त्री. याग; यज्ञ।
यजत्र, पु. अग्निहोत्र, आतिशय रस्म।
यजन, न. याग, ब्राह्मणके छय कर्म्मोंमेंसे एक।
यजमान, पु. यागाद्यनुष्ठान कर्त्ता; यज्ञ आदिके करनेवाला।
यजाक, त्रि. दाता। फ़ैयाज़।
यजि, पु. यज्ञ कर्त्ता; यज्ञकरने वाला।
यजुर्वेद, पु. २ य, वेद; २ रा, वेद।
यजुर्वेदिन्, त्रि. यजुर्वेदवेत्ता; यजुर्वेदके अनुसार कर्म्म करनेवाला, यजुर्वेदके जाननेवाला।
यजुःसून, कृष्ण और शुक्ल दो भागों में विभक्त मंत्र विशेष।

मेदास, पु. न. मज्जा । चर्वी ।
मेदिनी, स्त्री. औषधिविशेष, काश्मरी, पृथिवी ।
मेदिनी-द्रव, पु. पांशु; धूड़ ।
मेदिप, त्रि. स्निग्ध । चिकना ।
मेदुर, पु. अतिशय—स्निग्ध, सघन, कोमल, पूर्ण।
मेध, पु. यज्ञ (स्त्री) (धा) धारणावती बुद्धि । खूब समझनेवाली अक़ल ।
मेधस, पु. स्वायम्भव मनुका पुत्र ।
मेधा-तिथि, पु. प्लक्षद्वीप का राजा, मनुसंहिताका टीका कार ।
मेधाविन्, पु. शुक, मदिरा, पण्डित, व्याडिमुनि, (त्रि.) मेधायुक्त । तोता, शराव, दाना ।
मेधि, पु. खले पशुबंधनार्थ न्यस्तदारु; खलयानमें पशु बांधनेका खूंटा ।
मेधिर, त्रि. मेधावी । दाना ।
मेधिष्ठ, त्रि. अति मेधावी । बड़ा आक़िल ।
मेध्य, त्रि. शुद्ध, पवित्र, (पु.) खदिर, यव, छाग, (स्त्री) (ध्या) केतकी, वचा, रोचना, शमी ।
मेनका, स्त्री. स्वर्गवेश्या, •उमामाता । हूर, शकुन्तला की मां, पार्वतीकी मां । [वेश्याविशेष ।
मेना, स्त्री. हिमालयपत्नी, हिमालयकी जोरु, स्वर्ग-
मेय, त्रि. परिमाणयोग्य । मापनेके लायक़, समझनेके योग्य । [मालाके सिरेका मनका ।
मेरु, पु. पर्वतविशेष; सुमेरु पर्वत, कंगरोड़की हड्डी,
मेरु-सावर्ण, पु. एकादशमनु; ग्याहरवांमनु ।
मेरुक, पु. यक्षधूप । राल ।
मेरु-दण्ड, न. पृष्ठमध्यस्थितास्थि; कंगरोड़ ।
मेलक, पु. समूह । मजमह ।
मेलन, न. मिलना, मेलना । [दुकान ।
मेला, स्त्री. मसी. महा नीली हट्ट । स्याही, नीलकी
मेलानन्द, पु. दावात ।
मेलान्धु(म्बु), स्त्री. मस्याधार । दावात ।
मेष, पु. पशुवि० रागवि० (स्त्री) (षी) (षिका) मेढा, मेढ़ी १२ राशियोंमें से पहली ।
मेह, पु. प्रमेह रोग; मूत्र बंदका रोग ।
मेहन, न. शिश्न, मूत्र, मूत्रोत्सर्ग, (पु) पुष्कर वृक्ष (स्त्री) (नी) महिला । केर, पेशाब, पेशाब निकालना, नाम एक दरख्तका, औरत ।
मैत्र, न. अनुराधा नक्षत्र, पुरीषोत्सर्ग, (त्रि) मित्रसंबंधीय, (पु) ब्राह्मण, (स्त्री) (त्री) मित्रता । १७ वां, नक्षत्र, पाखानेफिरना दोस्तका, दोस्ती ।
मैत्रावरुण(णि), पु. अगस्त्यमुनि । [दोस्तका ।
मैत्रेय, पु. बुद्धवि०, मुनिविशेष मित्रसम्बंधीय,
मैत्र्य, न. स्त्री. मित्रता दोस्ती । [(ली) सीता ।
मैथिल, त्रि. मिथलाका, (पु) मिथलाका राजा (स्त्री)
मैथुन, न. स्त्रीसंसर्ग । स्त्रीपुरुषका मेल, स्मरण, कीर्त्तन केलि, प्रेक्षण, गुह्य-भाषण, संकल्प, अध्यवसाय, क्रियानिष्पत्ति, यह आठ विधव्यापार ।
मैनाक, पु. हिमालय । पर्वतविशेष ।
मैनिक, पु. माछी । फरेबी ।
मैरेय, न. मद्यविशेष । एक किसकी शराब ।
मैलन्द, पु. भ्रमर; भौंरा ।
मोक्तृ, पु. मोचन कर्त्ता । छुड़ाने वाला । [मौत ।
मोक्ष, पु. मुक्ति, मोचन, मृत्यु । नजात, रिहाई,
मोघ, त्रि. निरर्थक, निष्फल, पु. प्राचीर, (न) पुष्पवि० । बेफायदह, कमीनह, कोट, खास एक फूल ।
मोच, न. कदलीफल, (पु) शोभाञ्जन वृक्ष; ।
मोचक, पु. मोक्ष कारी, शिग्रु, विरागी (त्रि) मोचन कारी, नजात, केला, सुहांजाना, छुडानेवाला, नजात दहिन्दा । [कडयारी, छुडानेवाली ।
मोचन, न. दम्भ (स्त्री) (नी) कण्टकारी; छुडाना,
मोचाट, पु. कृष्णजीकर, चन्दन । स्याह ज़ीरा, संदल । [त्रय ।
मोटक. न. श्राद्धमें प्रयोजनीय, द्विगुण भुग्न कुश-
मोटन, न. मटकाना, पीसना पु. पवन ।
मोटनक, न. ११ अक्षरका छन्दविशेष ।
मेदारित, त्रि. भावविशेष सखीके मुखसे प्यारेकी वात सुनकर अंग भङ्गीजृंभन आदि ।
मोण, पु. शुष्कफल, नक्र, मक्षिका; सूकाफल, कछुआ मक्खी ।
मोद, पु. हर्ष । खुशी, खुशबू ।
मोदक, पु. न. खाद्यविशेष त्रि. हर्षक (पु) वर्णसंकर जातिविशेष । लड्डुआ, खुश करनेवाला, कहार।
मोदन, न. शिक्थक, हर्ष । मोम, खुशी ।
मोदित, त्रि. हर्षयुक्त । खुश ।
मोदिन्, त्रि. आनन्द युक्त, (स्त्री) (नी) अजमोदा मल्लिका, यूथिका कस्तूरी ।

न्तर्गताङ्गविशेष, शरीर साधन मात्र, नित्य कर्म, शनिग्रह, (त्रि) यमज । दिशा का देवता, मलिकुल मौत, दुनियाकी चीजोंसेदिलका रोकना, रोजमररका काम, शनीचर ।

यमक, न. शब्दालङ्कारविशेष (त्रि.) द्वि. यमज, (पु.) संयम । जौड़ा, हमजाद, ज़ब्त, रोक ।

यम-किङ्कर, पु. यमदूत, रोग, पक्षीविशेष ।

यम-घण्ट, पु. योगविशेष । [हम–ज़ाद ।

यम-ज, त्रि. यमक सन्तान; जौड़ी—औलाद

यम-दग्नि, पु. मुनिविशेष; परशुरामका बाप ।

यम-देवता, स्त्री. भरणी नक्षत्र ।

यम-द्वितीया, स्त्री. भ्रातृद्वितीया; भईयादूज ।

यम-धार, पु. अस्त्रविशेष; किरच, कटार ।

यमन, पु. अन्तक, (न.) बन्धन, संयम, छेदन; जम, बांध, रोकना, ज़ब्त करना, काटना ।

यमनिका, स्त्री. यवनिका । क़नात्, पड़दा ।

यम-राजू (ज), पु. धर्म्मराज; मौतका देवता ।

यमला-र्ज्जुन, पु. वृन्दावनस्थ वृक्षद्वयरूपदैत्यविशेष ।

यमवत्, त्रि. संयमी । नफ़सकुश ।

यम-स्वसृ, स्त्री. यमुना, दुर्गा ।

यमानी, स्त्री. यमानिका; अजवेन ।

यमी, स्त्री. यमुना–नदी (पु) (मिन्) जितेन्द्रिय । -जमना दर्या, जिसने हवास क़ायम किये हुए हों।

यमुना, स्त्री. दुर्गा, नदीविशेष; देवी, जमनादर्या।

ययाति, पु. नहुष राजाका बेटा ।

ययिन्, पु. महादेव, पथ; सड़क ।

ययु, पु. अश्वमेधीय–यज्ञ–घोटक, सामान्य घोटक; अश्वमेध यज्ञका घोड़ा, घोड़ा ।

यर्हि, व्य. जब, जिस कारण ।

यव, पु. स्वनामख्यात शूक धान्य; जौं, बड़ी उंगलीके आगेका चिन्ह ।

यवक्य, त्रि. जौं बोने योग्य खेत ।

यव-क्षार, पु. जौखार ।

यव-क्षोद, पु. यवचूर्ण; जौका आटा ।

यव-ज, पु. यवक्षार; जौं खार ।

यवन, पु. देशविशेष, वेग, वेगवान् अश्व, जातिविशेष, (त्रि) वेगी (स्त्री) (नी) पर्दा, अजवेन, यवनकी स्त्री ।

यवना-चार्य, पु. यवन ग्रन्थकर्ता ।

यवनानी, स्त्री. यवनलिपी । तुरकोंके दस्तखत ।

यवनिका, स्त्री. जवनिका । क़नात् ।

यवस, न. तृण; घास ।

यव-सुरा, स्त्री. यवोत्पन्नमद । जौं की शराब ।

यवागू, स्त्री. षड्गुण जल पक्व घन द्रव्यविशेष ।

यविष्ठ, त्रि. कनिष्ट; छोटा ।

यव्य, त्रि. यवाद्युत्पत्तियोग्य क्षेत्र, (पु) मास । जौं बोनेके लायक़ खेत, माष ।

यशस्, न. सुख्याति । मशहूरी, शान, नेकनामी ।

यशस्कर, त्रि. कीर्त्तिकारक (स्त्री) (री) विद्या ।

यशस्वत्, } त्रि. कीर्त्तिमान् । नामवर । मशहूर ।
यशस्विन्, }

यशो-द, पु. पारद, (त्रि) यशोदाता (स्त्री) (दा) नन्दपत्नी । पारा, शुहरत दहिंदा, नंदजीकी जोरू ।

यष्टि, पु. ध्वजदण्ड, भुजदण्ड, (पु. स्त्री) तन्तु, दण्ड, लगुड । निशानका बांस, बाज़ू, डोरा, लकड़ी, छड़ी ।

यष्टृ, पु. यागकर्त्ता; यजमान ।

यष्टिका, स्त्री. हारविशेष, वापी, लगुड़ (पु) (क) जल, कुक्कुट । एक क़िसमका हार, बावली, लकड़ी, पनकुकड़ी ।

यष्टी-मधु, न. मिष्टरसयुक्त मूलविशेष; मुल्हटी ।

यास्क, पु. मुनिविशेष । निरुक्त ग्रंथका बनानेवाला ।

याग, पु. यज्ञ, श्रौताग्निकृत्य, हविर्यज्ञ । सप्तविध यथा ।–१ अग्निहोत्र, २ दर्शपौर्णमास, ३ पिण्डपितृयज्ञ, ४ अग्रयण, ५ चातुर्म्मास्य, ६ निरूढपशुबन्ध, ७ सौत्रामणि; स्मार्त्ताग्नि कृत्य पाकयज्ञ यथा ।–१ उपासन, २ वैश्वदेव, ३ स्थालीपाक, ४ आग्रयण, ५ सर्प्पबलि, ६ ईशानबलि, ७ अष्टकान्वष्टका ।

याचक, त्रि. याच्ञाकर्त्ता; भिखारी, ।

याचक, त्रि. मंगता ।

याचना, स्त्री. याच्ञा; भीखमांगना ।

याचमान, त्रि. मांगता हुआ ।

याचनीय, त्रि. प्रार्थनीय; मांगनेके लायक ।

याचित, त्रि. याचित वस्तु; मांगीहुई चीज़ ।

याचितृ, त्रि. प्रार्थक; मांगने वाला ।

यज्ञ, पु. अध्वर, याग, विष्णु ।
यज्ञ-कुण्ड, पु. यागार्थ चतुष्कोण कुण्ड विशेष; यज्ञ करनेके लिये चौकोन गढ़ा ।
यज्ञ-द्रुह, पु. राक्षस; राछस ।
यज्ञ-पशु, पु. घोटक, छाग । घोड़ा, बकरा ।
यज्ञ पुरुष, पु. विष्णु भगवान् ।
यज्ञ-सूत्र, न. यज्ञोपवीत; जनेऊ ।
यज्ञ-सेन, पु. भ्रमरराज ।
यज्ञा-ङ्ग, न. उदुम्बर, खदिर वृक्ष, ब्राह्मणयष्टिका, (स्त्री) (ङ्गा) सोमवल्ली । गूलर, खैरका दरख़्त, सोम बेल । [न्हाना ।
यज्ञा-न्त, पु. अवभृथस्नान । यज्ञके अख़ीरमें
यज्ञा रि, पु. शिव, महादेव, देव ।
यज्ञिक, पु. पलाशवृक्ष, । पलाशका दरख़्त ।
यज्ञि(ज्ञीय), न. यज्ञकर्म्मार्ह, यज्ञाय हितकर्म्म, (पु) द्वापुर-युग । यज्ञ करनेके लायक, यज्ञ के लिये मुफ़ीदकाम, दूसरा युग, गूल्हरका पेड़ ।
यज्ञे-श्वर, पु. विष्णु ।
यज्ञो-दुम्बर, पु. गूल्हर ।
यज्ञो पवीत, न. यज्ञ-सूत्र; जनेऊ ।
यज्वन्, पु. विधिपूर्वक यज्ञकारयता; विधिसे यज्ञ करानेवाला ।
यत्, व्य. हेतु; क्योंकि, किस लिये । [एक ।
यत-पति, त्रि. वहु मध्येनि र्द्धारित; बहुतो में से
यत-मान्, त्रि. यत्नवान् । कोशिश करनेवाला ।
यतर, त्रि. द्वयोर्मध्येनिर्द्धारित; दोमेंसे जो ।
यतस्, व्य. यस्मात्; जिससे, जहांसे ।
यता-त्मन्, त्रि. वशी; जिसने अपने आपको वश किया है । [विश्राम स्थान ।
यति, पु. मुनि, भिक्षु (स्त्री) श्लोकके उच्चारणमें
यतिन्, पु. सन्यासी (स्त्री) विरति, (त्रि) यत्परिमाण, (स्त्री) (नी) विधवा, संधि । जिसने इंद्रिये जीती हुई हों, पढ़ने का ठहराव, वेवा, मेल ।
यत्त, त्रि. यत्नवान्, सावधान । मुतवज्जे ।
यत्न, पु. रूपादिचतुर्विंशतिगुणान्तर्गत गुणविशेष, उद्योग, प्रयास, २१ वां, गुण । कोशिश, मेहनत ।
यत्नवत्, त्रि. यत्नविशिष्ट । मेहनती ।
यत्र, न. यस्मिन्; जहां ।
यत्र-तत्र, व्य. यथा तथा; जहां तहां ।
यथा, व्य. तादृश्य; जैसे ।
यथा-कथंचित्, व्य. जिसकिस तरहसे ।
यथा-काम, न. यथाभिलाष । मरज़ी माफ़िक ।
यथा-क्रम, न. आनुपूर्विक । सिलसिलहवार ।
यथाजात, त्रि. मूर्ख, नीच । बेवक़ूफ़, कमीना ।
यथा-पूर्व, न. व्य. पहिली तरह ।
यथा-यथम्, व्य. यथार्थ; ठीक ।
यथार्थ, व्य. ठीक । [हत्तउल् मकदूर ।
यथा-शक्ति, न. शक्त्यनुसार । मुआफ़िक तौफ़ीक,
यथे-च्छा, स्त्री. यथाभिलाष । मरज़ीम्वाफ़िक ।
यथेप्सित, त्रि. यथेछित; जैसा चाहिये ।
यथेष्ट, न. प्रचुर, बहुतर । काफ़ी ।
यथो-चित, न. व्य. यथायोग्य; जैसा मुनासिबहो ।
यथोदित, त्रि. व्य. यथोक्त; जैसा कहा गया ।
यदवधि, न. यत्पर्य्यन्त; जबतक, जहांतक ।
यद्, व्य. जो, जो कुछ ।
यदा, व्य. यस्मिन्काले; जब, जिस वक्त ।
यदि, व्य. पक्षान्तर, सम्भावना, । अगर, शायद ।
यदीय, त्रि. यत्सम्बन्धीय; जिस्का ।
यदु, पु. राजा ययातिका बड़ा बेटा, दशार्हदेश ।
यदु-नाथ, **यदु-पति**, } पु. श्रीकृष्ण ।
यदृच्छा, स्त्री. स्वेच्छा; अचानक ।
यद्भविष्य, त्रि. होनहार मानने वाला ।
यद्यपि, व्य. यदिच । अगरचे ।
यद्वा, व्य. पक्षांतर । या ।
यन्तृ, पु. सारथि, हस्तिपक, (त्रि.) दमनकारक, नियामक । गाड़ीवान्, फ़ीलवान्, ग़ालिब, राहनुमा ।
यन्त्र, न. देवाद्यधिष्टान, पात्रविशेष, नियन्त्रण, । देवताका आसन, कल, ख़ास बरतन, बांधना ।
यन्त्र(न्त्रि)का, स्त्री. श्यालिका; साली ।
यन्त्रण, न. रक्षण, बन्धन, नियमन, दमन यातन, सङ्कोच (स्त्री) (णा) पीड़ा । हिफ़ाज़त, बांधना, रोकना, दबाना, दर्द, तक्लीफ़ ।
यन्त्रिका, स्त्री. शरपत्ररचना । [दिया हुआ ।
यन्त्रित, त्रि. बद्ध, शासित; बंधाहुआ, सज़ा
यम, पु. दक्षिण-दिक्पाल, धर्म्मराज, अष्टाङ्गयोगा-

न्तर्गताङ्गविशेष, शरीर साधन मात्र, नित्य कर्म, शनिग्रह, (त्रि) यमज । दिशा का देवता, मलिकुल मौत, दुनियाकी चीजोंसेदिलका रोकना, रोज़मररका काम, शनीचर ।
यमक, न. शब्दालङ्कारविशेष (त्रि.) द्वि. यमज, (पु.) संयम । जौड़ा, हमज़ाद, ज़ब्त, रोक ।
यम-किङ्कर, पु. यमदूत, रोग, पक्षीविशेष ।
यम-घण्ट, पु. योगविशेष । [हम–ज़ाद ।
यम-ज, त्रि. यमक सन्तान; जौड़ी—औलाद
यम-दग्नि, पु. मुनिविशेष; परशुरामका बाप ।
यम-देवता, स्त्री. भरणी नक्षत्र ।
यम-द्वितीया, स्त्री. भ्रातृद्वितीया; भईयादूज ।
यम-धार, पु. अस्त्रविशेष; किरच, कटार ।
यमन, पु. अन्तक, (न.) बन्धन, संयम, छेदन; जम, बांध, रोकना, ज़ब्त कल, काटना ।
यमनिका, स्त्री. यवनिका । क़नात्, पड़दा ।
यम-राज् (ज), पु. धर्म्मराज; मौतका देवता ।
यमला-र्ज्जुन, पु. वृन्दावनस्थ वृक्षद्वयरूपदैत्यविशेष ।
यमवत्, त्रि. संयमी । नफ़सकुश ।
यम-स्वसृ, स्त्री. यमुना, दुर्गा ।
यमानी, स्त्री. यमानिका; अजवेन ।
यमी, स्त्री. यमुना–नदी (पु) (मिन्) जितेन्द्रिय । जमना दर्या, जिस्ने हवास क़ायम किये हुए हों।
यमुना, स्त्री. दुर्गा, नदीविशेष; देवी, जमनादर्या।
ययाति, पु. नहुष राजाका बेटा ।
ययिन्, पु. महादेव, पथ; सड़क ।
ययु, पु. अश्वमेधीय–यज्ञ–घोटक, सामान्य घोटक; अश्वमेध यज्ञका घोड़ा, घोड़ा ।
यर्हि, व्य. जब, जिस कारण ।
यव, पु. स्वनामख्यात शूक धान्य; जौं, वडी उंगलीके आगेका चिन्ह ।
यवक्य, त्रि. जौं बोने योग्य खेत ।
यव-क्षार, पु. जौख़ार ।
यव-क्षोद, पु. यवचूर्ण; जौंका आटा ।
यव-ज, पु. यवक्षार; जौं खार ।
यवन, पु. देशविशेष, वेग, वेगवान् अश्व, जाति विशेष, (त्रि) वेगी (स्त्री) (नी) पर्दा, अजवेन, यवनकी स्त्री ।
यवना-चार्य, पु. यवन ग्रन्थकर्ता ।
यवनानी, स्त्री. यवनलिपी । तुर्कोंके दस्तख़त ।
यवनिका, स्त्री. जवनिका । क़नात् ।
यवस, न. तृण; घास ।
यव-सुरा, स्त्री. यवोत्पन्नमद । जौं की शराब ।
यवागू, स्त्री. षड्गुण जल पक्व घन द्रव्यविशेष ।
यविष्ठ, त्रि. कनिष्ठ; छोटा ।
यव्य, त्रि. यवाद्युत्पत्तियोग्य क्षेत्र, (पु) मास । जौं बोनेके लायक़ खेत, माप ।
यशस्, न. सुख्याति । मशहूरी, शान, नेकनामी ।
यशस्कर, त्रि. कीर्त्तिकारक (स्त्री) (री) विद्या ।
यशस्वत्, } त्रि. कीर्त्तिमान् । नामवर । म-शहूर ।
यशस्विन्, }
यशो-द, पु. पारद, (त्रि) यशोदाता (स्त्री) (दा) नन्दपत्नी ।पारा, शुहरत दहिंदा, नंदजीकी जोरू।
यष्टि, पु. ध्वजदण्ड, भुजदण्ड, (पु. स्त्री) तन्तु, दण्ड, लगुड । निशानका बांस, बाजू, डोरा, लकड़ी, छड़ी ।
यष्टृ, पु. यागकर्त्ता; यजमान ।
यष्टिका, स्त्री. हारविशेष, वापी, लगुड़ (पु) (क) जल, कुकुट । एक क़िसमका हार, बावली, लकड़ी, पनकुकड़ी ।
यष्टी-मधु, न. मिष्टरसयुक्त मूलविशेष; मुलठ्ठी ।
यास्क, पु. मुनिविशेष । निरुक्त ग्रंथका बनानेवाला ।
याग, पु. यज्ञ, श्रौतामिकृत्य, हविर्यज्ञ । सप्तविध यथा ।–१ अग्निहोत्र, २ दर्शपौर्णमास, ३ पिण्डपितृयज्ञ, ४ अग्रयण, ५ चातुर्म्मास्य, ६ निरूढपशुबन्ध, ७ सौत्रामणि; स्मार्त्ताग्नि कृत्य पाकयज्ञ यथा ।–१ उपासन, २ वैश्वदेव, ३ स्थालीपाक, ४ आग्रयण, ५ सर्प्पबलि, ६ ईशानबलि, ७ अष्टकान्वष्टका ।
याचक, त्रि. याच्ञाकर्त्ता; भिखारी, ।
याचक, त्रि. मंगता ।
याचना, स्त्री. याच्ञा; भीखमांगना ।
याचमान, त्रि. मांगता हुआ ।
याचनीय, त्रि. प्रार्थनीय; मांगनेके लायक ।
याचित, त्रि. याचित वस्तु; मांगीहुई चीज़ ।
याचितृ, त्रि. प्रार्थक; मांगने वाला ।

याच्ञा, स्त्री. चाहना, मांगना, याचन ।
याच्य, त्रि. प्रार्थनीय; मांगनेके लायक ।
याज, पु. अन्न; उबालेहुए चावल ।
याजक, पु. ऋत्विक्; यज्ञकराने वाला ।
याजकता, स्त्री. पुरोहिताई, पौरोहित्य ।
याजन, न. यज्ञ कराना ।
याजि, **याजिन्**, पु. यज्ञ, यागकर्त्ता ।
याजुष, त्रि. यजुर्वेदसंबंधी; यजुर्वेदका ।
याज्ञवल्क्य, पु. धर्म्म शास्त्र प्रयोजक मुनिविशेष।
याज्ञसेनी, स्त्री. यज्ञसेन कन्या, द्रौपदी, पाण्डवोंकी स्त्री । [खदिर ।
याज्ञिक, पु. दर्भविशेष, यज्ञकर्त्ता, पुरोहित, रक्त
याज्य, न. यागलब्ध धनादि, यज्ञका स्थान, (त्रि) याजनीय (स्त्री) (ज्या) यागमन्त्र । यज्ञमेंसे जो धन आदि मिला हो, यज्ञ कराने के लायक, यज्ञके मन्त्र ।
यात, (त्रि.) गत, अतीत, लब्ध, (न) अङ्कुश द्वारा हस्तिचालन । गियाहुआ, गुज़रा हुआ, आंकुशसे हाथी को चलाना ।
यातना, स्त्री. गाढ वेदना, नरक—रुजा । निहायत दर्द, दोज़ख़ की तक्लीफ़ ।
यात-याम, त्रि. जीर्ण, परिभुक्त, उज्झित, म्लान। पुराना, बरता हुआ, छोड़ा हुआ ।
यातायात, न. गमनागमन; जाना आना ।
यातिक, पु. पान्थ । मुसाफ़िर । [नेवाला ।
यातु, न. राक्षस, (पु) काल, अध्वर, पथिक, वायु, (त्रि) गन्ता । वक़्, जग, मुसाफ़िर, हवा, जा-
यातुघ्न, पु. गुग्गुलु; गूगल ।
यातु-धान, पु. निशाचर, राक्षस ।
यातृ, पु. गमनकर्त्ता (ता) पति—भ्रातृ पत्नी; जानेवाला, दिरानी, जेठानी ।
यात्रा, स्त्री. व्रज्या, प्रस्थान, उत्सव, उपाय । सफ़र, चलना, खुशी, तजवीज़ ।
यात्रिक, पु. यात्रोपयुक्त तिथि नक्षत्रादि, पथिक। सफ़रका मुहूर्त, हाजी, मुसाफ़िर ज़ादराह ।
यात्रिन्, पु. यात्राकारी, तीर्थपर्य्यटक । मुसाफ़िर-हाजी ।
याद्-पति, पु. समुद्र । बहिर ।
याथातथ्य(याथर्थ्य), न. ठीक ।
यादव, पु. श्रीकृष्ण, यदुवंशीय, (न.) गो महिष्यादिधन (स्त्री) दुर्गा, पार्वती ।
यादस्, न. जल जन्तु; पानीके जानवर ।
यादृश्(श)(क्ष), त्रि. जैसा । [हुआ ।
यादृच्छक, त्रि. स्वतः प्राप्त । अचानक आतमिला
यादोनाथ, पु. समुद्र, वरुण; समुंदर, पानी ।
यान, न. सवारी; जाना, दुश्मनपर चढ़ाई ।
यान-मुख, न. रथाद्यग्रभाग । जूआ ।
यापन, न. वर्त्तन, कालक्षेपण, निरसन, अपसारण, वक्त गुज़ारना, हटाना । [योग्य ।
याप्य, त्रि. गुज़ारने लायक, निंदायोग्य, हटाने
याप्य-यान, न. शिविका; पालकी ।
याम, न. मैथुन । सोहबत ।
याम, पु. प्रहर, संयम, (त्रि) यमसंबन्धीय । पहर, रोक, यम का ।
याम-घोष, पु. कुक्कुट, (स्त्री) (षा) यन्त्रविशेष। मुर्ग़, वक़् देखनेकी घड़ी ।
यामल, न. युग्गल, तन्त्रशास्त्रविशेष। षड्विध यथा १ आदियामल २ ब्रह्मयामल, ३ रुद्रयामल, ४ विष्णुयामल, ५ गणेशयामल, ६ आदित्ययामल, ७ ग्रहयामल । जोड़ा ।
याम-वती, स्त्री. रात्रि । शब ।
यामातृ, पु. जामाता; जमाई । दामाद ।
यामि, स्त्री. कुलस्त्री, रात्रि, धर्म्मपत्नी । घरानेकी बहू, शब, व्याहतास्त्री । [कीदार, रात ।
यामिक, त्रि. प्रहरी (स्त्री) (का) रात्रि । चौ-
यामित्र, न. लग्नसे ७ मी, राशि ।
यामिनी, स्त्री. रात्रि, हरिद्रा । शब, हल्दी ।
यामनी-पति, पु. चन्द्र । माहताब ।
याम्य, पु. अगस्त्यमुनि, चन्दनवृक्ष, स्त्री (म्या) दक्षिणा दिक्, भरणी नक्षत्र। नाम मुनिका, संदलका दरख़्त, जनूब, २ रा, नक्षत्र (त्रि) दक्षिण का।
यामी, स्त्री. दक्षिणदिशा, यमकी ।
यामुन, त्रि. यमुनाका, न. सीसा । [नेवाला ।
यायजूक, पु. सर्वदा यज्ञकारक । बहुत यज्ञ कर-
यायावर, पु. अश्वमेधीयाश्व; अश्वमेध यज्ञका घोड़ा, अनमांगी भीख, जरत्कार मुनि, (त्रि) बार २ जाने वाला ।

याव(क), पु. अलक्त, (त्रि) यव-सम्बन्धीय । लाख, जौं का ।
यावज्जीवन, न. यावदायु । उमरभर ।
यावतिथ, त्रि. यावत्परिमाण; जितना ।
यावत्, व्य. साकल्य, अवधि, परिमाण, निश्चय हेतु (त्रि) यत्संख्यक । कुल्ल, जहांतक, माप, मिकदार यकीन, सबब, जितना ।
यावत्तावत्, व्य. जितना तितना ।
यावतिथ, त्रि. जितना ।
यावतीय, त्रि. समुदय । कुल्ल ।
यावनाल, पु. धान्यविशेष, देशविशेष; जुवार, नाम एक मुल्क का ।
यावस, पु. यवसमूह; घासका ढेर ।
याव्य, त्रि. मिश्रणीय । मिलानेके लायक । [चदार।
याष्टीक, पु. यष्टिधारी योद्धा; लक्कड़बाज़, चो-
यियक्षमाण, त्रि. यज्ञ करना चाहनेवाला ।
यियक्षा, स्त्री. यजनेच्छा; यज्ञ करनेकी मरज़ी ।
यियक्षु, त्रि. यज्ञ करनेच्छु; जो यज्ञ करनाचाहे ।
युक्त, त्रि. न्याय्य, मिश्रित, (न) हस्तचतुष्टय, आसक्त, (पु.) अभ्यस्त-योग । मुनासिब, मुरक्कब. ४ हाथका पैमाना, पूरा योगी ।
युक्ति, स्त्री. न्याय, अनुमान, रीति, परामर्श । दलील, तजवीज़, सोच, सलाह, मिलाप ।
युग, न. युग्म, कृतादि कालचतुष्टय, हस्तचतुष्क; जोड़ा, सत्य द्वापर त्रेता और कलि ये चार युग, चार हाथ भर ।
युगन्धर, पु. रथका जूआ ।
युगपत्, व्य. एकदा । एक वक्तमें ।
युग-पत्र,(क), पु. कोविदार-वृक्ष; (स्त्री) (त्रिका) शमीवृक्ष । जिसके साथ पत्तोंका जोड़ा लागता है, शीशमका दरख़्त ।
युगल, न. युग्म; जोड़ा ।
युगान्त, पु. युग का अंत ।
युग्य, न. यान (पु.) युग वोढा (त्रि) योजनीय । असवारी, जुताहुआ, जोतनेके लायक़ ।
युञ्जान, पु. सारथि, विप्र, योगाभ्यासी । गाड़ीवान्, ब्राह्मण, योगविद्यासे सब कुछ जाननेहारा योगी ।
युत, न. हस्त चतुष्टय, (त्रि.) युक्त; चार हाथभर, जुड़ा हुआ, हाथी के पांओंकी चोट ।
युतक, न. संशय, युग, वस्त्राञ्चल, युक्त, यौतुक, मैत्रीकरण, सूर्प्याग्र । शक, जोड़ा, कपड़ेका किनारा, मुरक्कब, दहेज, दोस्ती ।
युत, त्रि. संयुक्त, मिलित । जुड़ाहुआ, मिलाहुआ ।
युध्(धा), स्त्री. युद्ध । जङ्ग ।
युद्ध, न. योधन; लड़ाई । जङ्ग ।
युधा-जित्, पु. भरत मातुल; भरत का मामा ।
युधान, पु. क्षत्रियजाति, सङ्ग्रामकारी । जंगी सिपाही ।
युधि-ष्ठिर, पु. पाण्डव-राज; पांचों पांडवोंमें बड़ा ।
युयु, पु. अश्व; घोड़ा ।
युयुत्सा, स्त्री. जयेच्छा । जंग करनेकी मरज़ी ।
युयुत्सु, पु. योद्धा, (त्रि.) जयेच्छु, धृतराष्ट्र । जंगी, जङ्ग चाहने वाला ।
युयुधान, पु. सात्यकि, इन्द्र, क्षत्रिय, योद्धा ।
युवक, पु. तरुण । जवान ।
युवजानि, पु. जिस की जवान जोरू है ।
युवति(ती), स्त्री. जवान् स्त्री ।
युवन्, पु. जवान आदमी ।
युवनाश्व, पु. मांधाता का पिता ।
युव-राज, पु. राजाका पुत्र । वली अह्द ।
युष्मदीय, त्रि. भवदीय; तुह्मारा ।
यूक, पु. मत्कुण, केशकीट, (स्त्री.) (का) जूं ।
यूति, स्त्री. मिश्रण; मिलाप ।
यूनी, स्त्री. युवती । [मजमद, चंबेली, जूही ।
यूथ, न. समूह, (स्त्री) (थी) पुष्प-वृक्षविशेष, भीड़,
यूथ-नाथ, } पु. वन्यहस्ति-समूहेश्वर । जंगली
यूथ-प, } हाथियों के झुंडका सर्दार ।
यूथिका, } स्त्री. जूही की बेल ।
यूथी, }
यूनि(नी), स्त्री. मिश्रण, प्राप्तयौवना स्त्री । मिलाना, जवान औरत ।
यूप, पु. न. यज्ञ—पशु बन्धनार्थकाष्ठ, (पु) जयस्तम्भ, यागस्तम्भ । यज्ञका खंबा ।
यूप-कटक, पु. न. यूपके आगेकी लकड़ी ।
यूपद्रु(म), पु. खदिर वृक्ष । खैरेका दरख़्त ।
योक्त्र, न. ईषा दण्ड बद्ध-रज्जु; जूएके साथ हल बांधनेकी रस्सी ।
योग, पु. सन्नहन, समाधि चतुर्विध; उपायध्यान,

सङ्गति, युक्ति, भेषज, विस्रब्धघातक, द्रव्य, कार्म्मण, धन, चार, सूत्र, ऐक्य, जीवात्म और परमात्मकाऐक्य, सम्बन्ध, सद्भाव, चित्तवृत्तिका निरोध, विष्कम्भादि सप्तविंश संख्यक, कालविशेष, लाभ, पतञ्जलिप्रणीत शास्त्रविशेष। जोड़, मन लगाना, मेल, चीज़, दौलत, जासूस, दवाई, रिश्तह, दोस्ती, समाधि, दिलका एक तरफ़ लगाना। [की रक्षा।

योग-क्षेम, न. अलब्ध वस्तु का लाभ, और लब्ध

योग-ज, पु. अगुरु, (त्रि.) योगजात, (पु.) अलौकिक सन्निकर्षविशेष। गूगल, मेल से उत्पन्न, योगविद्या। [से जाना हुआ।

योग-निद्रा, स्त्री. दुर्गा, पार्वती। योग की निंद्रा

योग-पट, न. योगिधार्य्यपटसूत्रविशेष, योगाभ्यासकेलिये वस्त्र।

योग-पट्टक, न. पूजादिसमये धार्य्य उत्तरीय पटविशेष। पूजा वगैरह के वक्त पहिरनेके लायक कपड़ा।

योग-भ्रष्ट, त्रि. समाधिच्युत; ध्यानसे गिराहुआ।

योग-माया, स्त्री. दुर्गा, भगवती, संसारकी माया।

योग-रूढ, पु. योगयुक्त; इन्द्रियोंके विषयों से हटा हुआ, ध्यानमें लागा हुआ।

योग-वाहिन्, त्रि. योगद्वारा उडनेवाला (पु) पारा।

योगा-चार, पु. बौद्ध पंडितविशेष।

योगा-सन, न. योगार्थ स्थिति; योगके लिये बैठक।

योगिन्, त्रि. तपस्वी, ब्रह्मवेत्ता, स्त्री. (नी)योगयुक्ता नारी; भगवती सखी, चतुःषष्ठ्यात्मकदेवता। यथा। नारायणी, गौरी, शाकम्भरी आदि ६४ ठ, जन्मपत्रीमें जो दश प्रकारकी दशा लगती हैं उनमेंसे एक।

योगीश, } **योगीश्वर,** } पु. योगिश्रेष्ठ, याज्ञवल्क्यमुनि, कृष्ण, (स्त्री)(री) पार्वती। योगियोंमें बड़ा।

योगेश(श्वर), पु. याज्ञवल्क्य मुनि, श्रीकृष्ण,।

योग्य, त्रि. उचित, योगार्ह, समर्थ, पवित्र, (न) ऋद्धिनामौषध, (पु) पुष्यनक्षत्र, (स्त्री) (ग्या) सूर्य्यपत्नी। लायक़, योगके लायक़; ताक़तवर, पाक, नाम दवाईका, नक्षत्र, सूर्य्य देवताकी जोरू, क़वायद।

योग्यता, स्त्री. क्षमता, पवित्रता, शाब्दबोध कारणविशेष। लियाक़त पाक़ीज़गी, पदार्थोंके परस्पर सम्बन्ध विषयमें बाधाका न होना।

योजक, त्रि. योगकारक; घटक। दलाल।

योजन, न. परमात्मा, चतुःक्रोशी, योग, (स्त्री. न.) (ना) (नं) संयोग। खुदा, चार कोस, मिलाप।

योजन-गन्धा-(न्धिका), स्त्री. मृगमद, सीता, सत्यवती। कस्तूरी, राजा जनककी बेटी, व्यासदेवजीकी मां।

योजनीय, त्रि. योग्य; जोड़नेके लायक़।

योतु, पु. परिमाण। माप।

योत्र, न. योक्त्र, सम्पत्ति। जोत्तर, हशमत।

योध, पु. योद्धा। बहादुर।

योधन, न. युद्ध, रण, अस्त्र। लड़ाई, मैदान, हथियार।

योध-संराव, पु. युद्धे परस्पराह्वान; जंगीयोंका आपस मे ललकारना।

योधेय, पु. सङ्ग्राम कर्ता। सूरमा।

योनल, पु. शस्यविशेष; यवनाल।

योनि(नी), पु. स्त्री. आकर, उत्पत्ति स्थान, कारण, जल, भग। कान, जाय पैदायश, सबब, पानी, कुस।

योनि-ज, त्रि. योनिनिःसृत शरीर। वह जिसम जो "योनि" से निकला हो। [नक्षत्र।

योनि-देवता, स्त्री. पूर्वाफाल्गुणी नक्षत्र। ११ वां

योनि-मुद्रा, स्त्री. योन्याकारमुद्रा, भगवतीकी पूजाके वक्त दिखानेके लायक अंगुलियोंसे बनी हुई ६४ मुद्राओंमें से एक भगाकीसी शकल।

योषा (षित्, त्), स्त्री. नारी। औरत।

यौक्तिक, त्रि. युक्तिसिद्ध। बादलील।

यौगिक, त्रि. योगजात, योगसम्बन्धीय। मुरक्कब, योगका, प्रकृतिप्रत्ययसे बना हुआ।

यौत(तु)क, पु. यौतुक। दहेज़।

यौधेय, पु. सङ्ग्रामकारी। जंगी।

यौन, न. योनिसम्पर्कज—पाप, (पु) वैवाहिक सम्बन्ध। जनाहकारीका गुनाह, व्याह।

यौवत, न. युवतीसमूह। जवान औरतों का झुंड।

यौवन, न. युवतीसमूह, परिमाण। जवान औरतोंका झुंड, पैमाना, जवानी।

यौवन-कण्टक, न. जवानी, गोद।

यौवन-लक्षण, न. लावण्य, स्तन, तारुण्यचिह्न। खूबसूरती, पिस्तान, जवानीका नशान।
यौवनाश्व, पु. मान्धाता राजा।
यौव-राज्य, न. पितृसत्वे राजपद प्राप्ति; बापके जीते जी बेटेको राजगद्दीका मिलना।
यौष्माक, **यौष्माकीन**, } त्रि. युष्मत्सम्बन्धीय; आपका।

र

र, पु. आग, (त्रि) तेज़। शहवतकी आग, खैरात।
रंहस, न. वेग, शीघ्रता,। तेज़ी, जल्दीपन।
रक्त(क), न. रुधिर, केसर, तामा, पुराना, आमला, संधूर, खून (पु,) सुरख रंग, आशक (त्रि) सुरख, रत्ती, लाख, मजीठ। [याज़, मौंगा।
रक्त-कन्द(ल), पु. राजपलाण्डु, प्रवाल; बड़ापि-
रक्त-कमल, न. सुरख कमल फूल।
रक्तजिव्ह, पु. सिंह, (त्रि) रक्तवर्ण जिह्व जन्तु; शेर, सुरख ज़ुबानवाले जानवर।
रक्त-झिण्डी, स्त्री. कुरवक पोदा।
रक्त-तुण्ड, पु. शुक, त्रि. रक्तचञ्चुयुक्त। तोता, जिसकी लाल चोंच हो।
रक्तदन्ती(न्तिका), स्त्री. भगवती का रूपविशेष।
रक्त-प, पु. राक्षस (त्रि.) रक्तपान-कर्त्ता (स्त्री) (पा) जलौका। खून पीनेवाला।
रक्त-पद, पु. शुक-पक्षी, (त्रि) लोहित-वर्ण, चरण (स्त्री) (दी) क्षुद्रवृक्षविशेष। तोता, लाल पैरवाला।
रक्त-पाकी, स्त्री. बृहती; वेंगनका पोदा।
रक्त-पात, न. शोणित पतन, (स्त्री) (ता) जलौका (त्रि) रुधिर-पाता। खून गिरना, जोंक, खून-पीनेवाला।
रक्त-पायिन्, त्रि. रक्तपानशील, (स्त्री) (नी) जलौका। खूनपीनेवाला, जोंक, खून पीनेवाली औरत।
रक्त-पिण्ड, न. जवापुष्प। जवाफूल।
रक्त-पित्त, न. रोगविशेष। एक बीमारी।
रक्त-पुनर्नवा, स्त्री. स्वनामख्यात शाकविशेष।
रक्त-वृष्टि, स्त्री. उत्पातविशेष,। खून की बारिश।
रक्त-मत्स्य, पु. मत्स्यविशेष, तपस्या, मछली।
रक्त-रेणु, पु. सिन्दूर, पलाशकलिका, पुन्नाग, सिंधूर, पलाशकागुच्छ, लौंग। [रख़ हों।
रक्त-लोचन, पु. कबूतर (त्रि) जिसकी आंखें सु-
रक्त-वात, पु. रोगविशेष। नाम एक बीमारी का।
रक्त-बीज, पु. दाडिम, असुरवि०। अनार। शुंभनिशुंभदैत्यकी फौजका सिपाह सालार।
रक्त-शालि, पु. रक्तवर्ण-धान्यवि०। सुरख रंगके धान।
रक्त-शिग्रु, पु. रक्तशोभाञ्जन वृक्ष,। सुरखसुहांजना।
रक्त-सञ्ज्ञ, न. कुङ्कुम; केसर।
रक्त-सन्दशिका, स्त्री. जलौका; जोंक।
रक्ता-कार, पु. प्रवाल। पला।
रक्ताक्ष, पु. महिष, पारावत, चकोरपक्षी, कोकिल, सारिक पक्षी (त्रि) रक्ताक्ष वशिष्ठ। भैंसा,
रक्ताङ्ग, न. विद्रुम, कुंकुम, (पु) मंगलग्रह, कम्पिल, प्रवाल, मत्कुण, पला, केसर, खटमल।
रक्तातिसार, पु. रोगविशेष। पेचशकी बीमारी।
रक्तालु, पु. रक्तवर्ण कंदवि०। शकरकन्द।
रक्तिका, स्त्री. गुञ्जा, राजिका, रक्तिका परिमाण; रत्ती, राई, रत्तीगर तोल।
रक्तिमन्, पु. सुरख रंग।
रक्तोत्पल, न. रक्तपद्म, (पु) शाल्मलीवृक्ष। सुरख कमलफूल, सिंबलका दरख्त।
रक्तोत्पल, न. गैरिक; गेरी मट्टी।
रक्ष, त्रि. रक्षाकर्त्ता, (पु) स्त्री. (क्षा) हिफ़ाज़त।
रक्षक, त्रि. रक्षाकर्त्ता। हिफ़ाज़त, राख, लाख, हिफाज़त कुनिन्दह।
रक्षण, न. त्राण; रक्षा करनेवाला। [मारी।
रक्षणारक, पु. मूत्रकृच्छ्ररोग; पेशाब बंदकी बी-
रक्षणि(णी), स्त्री. त्रायमाणा लता; लाजवंती वेल।
रक्षणीय, त्रि. रक्षणोपयुक्त; हिफाज़त के लायक।
रक्षाकाण्डपालित, पु. रक्षाके लिये दूबका गुच्छ।
रक्षित, त्रि. त्रात। हिफ़ज़त कियाहुआ।
रक्षित, त्रि. रक्षा किया हुआ।
रक्षिन्, त्रि. रक्षा करनेवाला।
रक्षोहन्, न. काञ्जी, हींग्, सुपेद सरसों, (त्रि) राक्षसोंके नाश करनेवाली वस्तु।
रक्षोघ्न, न. काञ्जिक, हिङ्गु (पु) श्वेतसर्षप।
रघु, पु. सूर्य्यवंशीय राजादिलीपका बेटा।
रघुनन्दन, **रघुनाथ**, **रघुपति**, } पु. श्रीरामजी, दशरथका पुत्र, स्मृतिकार पण्डित।

सङ्गति, युक्ति, भेषज, विस्रब्धघातक, द्रव्य, कार्म्मण, धन, चार, सूत्र, ऐक्य, जीवात्म और परमात्मकाऐक्य, सम्बन्ध, सद्भाव, चित्तवृत्तिका निरोध, विष्कम्भादि सप्तविंश संख्यक, कालविशेष, लाभ, पतञ्जलिप्रणीत शास्त्रविशेष । जोड़, मन लगाना, मेल, चीज़, दौलत, जासूस, दवाई, रिश्तह, दोस्ती, समाधि, दिलका एक तरफ़ लगाना । [की रक्षा ।

योग-क्षेम, न. अलब्ध वस्तु का लाभ, और लब्ध

योग-ज, पु. अगुरु, (त्रि.) योगजात, (पु.) अलौकिक सन्निकर्षविशेष । गूगल, मेल से उत्पन्न, योगविद्या । [से जाना हुआ ।

योग-निद्रा, स्त्री. दुर्ग्गा, पार्वती । योग की निंदा

योग-पट, न. योगिधार्य्यपटसूत्रविशेष, योगाभ्यासकेलिये वस्त्र ।

योग-पट्टक, न. पूजादिसमये धार्य्य उत्तरीय पटविशेष । पूजा वग़ैरह के वक़्त पहिरनेके लायक़ कपड़ा ।

योग-भ्रष्ट, त्रि. समाधिच्युत; ध्यानसे गिराहुआ ।

योग-माया, स्त्री. दुर्गा, भगवती, संसारकी माया ।

योग-रूढ, पु. योगयुक्त; इन्द्रियोंके विषयों से हटा हुआ, ध्यानमे लागा हुआ ।

योग-वाहिन्, त्रि. योगद्वारा उडनेवाला (पु) पारा ।

योगा-चार, पु. बौद्ध पंडितविशेष ।

योगा-सन, न. योगार्थ स्थिति; योगके लिये बैठक ।

योगिन्, त्रि. तपस्वी, ब्रह्मवेत्ता, स्त्री. (नी) योगयुक्ता नारी; भगवती सखी, चतुःषष्ठ्यात्मकदेवता । यथा । नारायणी, गौरी, शाकम्भरी आदि ६४ ठ, जन्मपत्रीमें जो दश प्रकारकी दशा लगती हैं उनमेंसे एक ।

योगीश, } पु. योगिश्रेष्ठ, याज्ञवल्क्यमुनि, कृष्ण,
योगीश्वर, } (स्त्री) (री) पार्वती । योगियोंमें बड़ा ।

योगेश(श्वर), पु. याज्ञवल्क्य मुनि, श्रीकृष्ण, ।

योग्य, त्रि. उचित, योगार्ह, समर्थ, पवित्र, (न) ऋद्धिनामौषध; (पु) पुष्यनक्षत्र, (स्त्री) (ग्या) सूर्य्यपत्नी । लायक़, योगके लायक़; ताक़तवर, पाक, नाम दवाईका, नक्षत्र, सूर्य्य देवताकी जोरू, क़वायद ।

योग्यता, स्त्री. क्षमता, पवित्रता, शाब्दबोध कारणविशेष । लियाक़त पाक़ीज़गी, पदार्थोंके परस्पर सम्बन्ध विषयमें बाधाका न होना ।

योजक, त्रि. योगकारक; घटक । दलाल ।

योजन, न. परमात्मा, चतुःक्रोशी, योग, (स्त्री. न.) (ना) (नं) संयोग । खुदा, चार कोस, मिलाप ।

योजन-गन्धा-(न्धिका), स्त्री. मृगमद, सीता, सत्यवती । कस्तूरी, राजा जनककी बेटी, व्यासदेवजीकी मां ।

योजनीय, त्रि. योग्य; जोड़नेके लायक़ ।

योतु, पु. परिमाण । माप ।

योत्र, न. योक्त्र, सम्पत्ति । जोत्तर, हशमत ।

योध, पु. योद्धा । बहादुर ।

योधन, न. युद्ध, रण, अस्त्र । लड़ाई, मैदान, हथियार ।

योध-संराव, पु. युद्धे परस्पराह्वान; जंगीयोंका आपस मे ललकारना ।

योधेय, पु. सङ्ग्राम कर्त्ता । सूरमा ।

योनल, पु. शस्यविशेष; यवनाल ।

योनि(नी), पु. स्त्री. आकर, उत्पत्ति स्थान, कारण, जल, भग । कान, जाय पैदायश, सबब, पानी, कुस ।

योनि-ज, त्रि. योनिनिःसृत शरीर । वह जिसम जो "योनि" से निकला हो । [नक्षत्र ।

योनि-देवता, स्त्री. पूर्वाफाल्गुणी नक्षत्र । ११ वां

योनि-मुद्रा, स्त्री. योन्याकारमुद्रा, भगवतीकी पूजाके वक़्त दिखानेके लायक अंगुलियोंसे बनी हुई ६४ मुद्राओमें से एक भगाकीसी शकल ।

योषा (षिता, त्), स्त्री. नारी । औरत ।

यौक्तिक, त्रि. युक्तिसिद्ध । बादलील ।

यौगिक, त्रि. योगजात, योगसम्बन्धीय । मुरक्कब, योगका, प्रकृतिप्रत्ययसे बना हुआ ।

यौत(तु)क, पु. यौतुक । दहेज़ ।

यौधेय, पु. सङ्ग्रामकारी । जंगी ।

यौन, न. योनिसम्पर्कज—पाप, (पु) वैवाहिक सम्बन्ध । जनाहकारीका गुनाह, ब्याह ।

यौवत, न. युवतीसमूह । जवान औरतों का झुंड ।

यौवन, न. युवतीसमूह, परिमाण । जवान औरतोंका झुंड, पैमाना, जवानी ।

यौवन-कण्टक, न. जवानी, गोद ।

रति-पति, पु. काम ।
रत्ति(का), स्त्री. परिमाणविशेष; एक माप आठ जौं भर । [वस्तु ।
रत्न, न. अश्म जाति, मुक्तादि, स्वर, जाति-श्रेष्ठ
रत्न-गर्भ, पु. कुवेर, समुद्र, (स्त्री) (र्भा) पृथिवी ।
रत्न-त्रितय, न. सुदृष्टि, ज्ञान, और चरित्र ।
रत्न-पारायण, न. रत्नाधार; पेटी ।
रत्नमय, त्रि. मणिमय । जवाहरातसे भराहुआ, जवाहर का ।
रत्न-राज, न. माणिक्य, रत्नश्रेष्ठ; मानक, हीरा ।
रत्न-सानु, पु. सुमेरु पर्वत ।
रत्न-सू, स्त्री. धरणी, । ज़मीन ।
रत्ना-कर, पु. समुद्र, समुंदर । रत्नोंकी कान ।
रत्नि, पु. स्त्री. बद्धमुष्टिहस्त, मुट्ठी, कोहनी सेलेकर मुष्टितक हाथ । मुक्कि ।
रथ, पु. देह, चरण, पाद, वेतस वृक्ष, युद्ध यान-वि० । जिसम, पांव, वेत कादरखत, जंगकी सवारी।
रथक-ट्य(ट्या), स्त्री. रथसमूह । बहुतसीरथें ।
रथक(का)र, पु. महिष्य से उत्पन्न जाति, । त-खान, रथ-गुप्ति, रथमे छुपनेकी जगह ।
रथ-न्तर, त्रि. रथद्वारा तरणकर्त्ता (न) सामवेद ।
रथयात्रा, स्त्री. आषाढ शुक्र २ या को श्रीजगन्ना-थजीका रथारोहणरूप उत्सव ।
रथ-युज, पु. सारथि; गाडीवान् ।
रथाङ्ग, न. चक्र, (पु) क्षत्रिय वि०, पहिया, चकवा।
रथाङ्गपाणि, } पु. विष्णु, वेतस वृक्ष; वेतका
रथाङ्गिन्, } दरखत ।
रथिक,
रथिन्,
रथित,
रथिर, } पु. रथका स्वामी; रथका सवार, रथपर-का योधा ।
रथ्य, पु. रथवाहकाश्व, (न) चक्र; रथगमनयोग्य-स्थान, (स्त्री) (थ्या) रथ-समूह, पंथा, चत्वर । घो-ड़ा, पहिया, रथचलनेके लायक रास्ता, बहुत रथ, रास्ता, चौंतड़ा ।
रद(न), पु. दन्त । दांत ।
रद(न)-च्छद, पु. ओष्ठ; ओंठ । [क्षर ।
रदनिन्, पु. हस्ती (त्रि) दन्तविशिष्ट; हाथी, दन्त-
रन्तिदेव, पु. विष्णु, चंद्रवंशीयनृपति वि० कुकुर।
रन्धन, न. पाक; रींधना, पकाना
रन्ध्र, न. दोष, छिद्र, कुक्षि । ऐब, सुराख़, कांख ।
रभस, पु. वेग हर्ष, औत्सुक्य, । तेज़ी, खुशी, ख़याल । [मिथुन । सांविद, शौहर ।
रम(क), पु. कान्त, कामदेव, रक्त अशोक वृक्ष,
रमठ, पु. हिङ्गु; हींग ।
रमण, न. पटोलमूल, जघन, जृम्भण, क्रीडन, (पु) पति, भर्त्ता, कामदेव, गर्दभवृषण, महारिष्ट, (त्रि) प्रिय (स्त्री) (णा) (णी) नारी, उमा, सुन्दरी स्त्री।
रमणीय, } त्रि. सुन्दर । खूबसूरत ।
रमण्य, } न.
रमा, स्त्री. लक्ष्मी, शोभा, शशिध्वज-राजकन्या । विष्णुकी शक्ति, चमक, राजा शशिध्वजकी बेटी।
रमा-नाथ(पति), पु. श्रीकृष्ण, विष्णु ।
रमा-पति, पु. विष्णु ।
रमा-प्रिय, पु. कमल, श्रीकृष्ण ।
रम्भ, पु. रेणु, वंदर, असुरवि०, (स्त्री) (म्भा) कदली, अप्सरावि०, देवीवि०, वेश्या, धान्यवि०, गौकी आवाज़ ।
रम्य, न. चम्पक, बकवृक्ष, (त्रि) मनोज्ञ, बलकर, (स्त्री) (म्या) रात्रि । चम्पेका फूल, बकपेड़, दिल-चसप, शब ।
रम्यक, न. जम्बुद्वीपका एक खण्ड विशेष ।
रय, पु. वेग, प्रवाह, । तेज़ी, पानीका बहाव ।
रण्टी, स्त्री. ललाट; माथा ।
रल्लक, पु. कम्बल, पक्ष्म, मृगविशेष; भूरा, पलक, ख़ास किसम हिरणकी ।
रव, पु. शब्द । आवाज़ ।
रवण, न. रव (पु) उष्ट्र, कोकिल, (त्रि.) शब्दन, तीक्ष्ण, भण्डक, चपल । आवाज़, ऊंठ, कोइल, गुनगुनी आवाज़, तीखा, भांड, मुतलव्विन ।
रवथ, पु. कोकिल; कोइल ।
रवि, पु. सूर्य्य, अर्कवृक्ष, । आफ़ताब ।
रवि-प्रिय, पु. कनेर, (न) गुरख, कंवल, ताम्बा ।
रवि ज, पु. शनैश्चर ग्रह, यम, वैवस्वत मनु ।
रवि-सुत, पु. शनि, सुग्रीव, यम ।
रवि-रत्नक, न. माणिक्य; मानक ।
रवि-लोह, न. ताम्र; ताम्बा ।
रशना, स्त्री. जिह्वा, काञ्ची, चन्द्रहार । ज़ुबान, औरतोंकी तागड़ी, एक किसम का हार ।

रङ्क, पु. कञ्जूस, वखील, कंगाल, ।

रङ्ग, न. धातुविशेष, त्रपु (पु) नृत्य, रणभूमि, नाट्यस्थान, टङ्कण । रांगा, टीन, नाच, जंगका मैदान, खेलकी जगह, सोहागा ।

रङ्गद, पु. रङ्कण; सोहागा ।

रङ्ग-पत्री, स्त्री. नीलवृक्ष; नीलका पौदा ।

रङ्ग-भूमि, स्त्री. मल्लभूमि, नाट्यभूमि । पहिलवानोंका अखाड़ा, नटोंका अखाड़ा ।

रङ्गमल्ली, स्त्री. वीणा; वंसरी ।

रङ्गरस, पु. क्रीडा; खेल ।

रङ्ग-शाला, स्त्री. नाट्यगृह । नाचघर ।

रङ्गा-जीव, पु. शिल्पविशेष, चित्रकार, नट ।

रङ्गारि, पु. करवीरपुष्प ।

रङ्गावतार(क,) / **रङ्गावतारिन्**, पु. नट, (स्त्री.) (री) (रिका) (रिणी) नटी ।

रङ्गिन्, त्रि. रङ्गकारक, चित्रकार, कौतुकी, नर्त्तक । रंग करनेवाला, मुसव्विर, मसखरा, नाचा ।

रङ्गस्, न. (हु) वेग । तेज़ी । [मिस्त्री ।

रचक, त्रि. रचना—कर्त्ता, निर्म्मापक । मुसन्निफ़,

रचन, न. निर्म्माण, (स्त्री) (ना) सिलसिलेवार वनाना, गांठना । [वनानेवाला ।

रचयितृ, त्रि. निर्म्माता, ग्रन्थन कारक । मुसनिफ़,

रचित, त्रि. कृत, निर्म्मित, ग्रथित; किया हुआ, रचा हुआ, गठा हुआ ।

रज(स्), न. स्त्री. कुसुम (पु.) पराग रेणु, गुणवि० । हैज़, फूलकी तिरी, धूल, दिलकी खसलत ।

रजक, पु. वर्णसङ्कर जाति (स्त्री) (की) धोवी, धोवन, रंगनेवाला ।

रजत, न. रौप्य, स्वर्ण, हस्तिदन्त, धवल, शोणित, रक्तवर्ण, हाट, हद शैल, (त्रि) शुक्लवर्ण वशिष्ठ । चांदी, सोना, हाथीदांत, सपेद, खून, सुरख, हार, झील, पहाड़, सुपेद ।

रजत-गिरि, / **रजता-चल**, / **रजता-द्रि**, पु. कैलाश पर्वत ।

रजन, न. रञ्जन (स्त्री) (नि) (नी) रात्रि, हरिद्रा, जतुका, । रंगना, शव, हलदी, लाख, नीलका पोदा

रजनि(नी)कर, पु. चन्द्रमा । माहताव ।

रजनी-चर, पु. राक्षस, चौर, प्रहरी । चोर, चौकीदार

रजनी(नि)मुख, पु. सांझका समय । शाम ।

रजसानु, पु. मेघ, चित्त; वादल, दिल ।

रजस्वल, पु. महिष (स्त्री) (ला) रजोयुक्ता स्त्री भैंसा, हैज़वाली औरत ।

रज्जु, पु. वन्धन साधन वस्तु; रस्सी ।

रञ्जक, त्रि. प्रीतिजनक, वस्त्रादिराग कर्त्ता । प्रसन्न करनेवाला । कपड़ारंगनेवाला,

रञ्जन, न. रक्तचंदन, सन्तुष्टकरण, मुञ्जतृण (स्त्री) (नी) झुण्डा, रोचनिका, नीली, मञ्जिष्ठा, हरिद्रा । सुरख़ संदल, खुशकरना, मूंज घास नील, हलदी, मजीठ ।

रञ्जित, त्रि. रंगाहुआ ।

रटन, न. घोषण, कथन । वार २ कहिना, कहना

रटन्ती, स्त्री. माघवदी चतुर्दशी ।

रटित, त्रि. भाषित, कथित । कहा हुआ ।

रण, न. युद्ध, (पु.) शब्द, क्वण, गति । जंग, आवाज़, वंसीकी आवाज़ रफ़तार ।

रणत्, त्रि. शब्दायमान । गूंजता हुआ ।

रण-रण, न. उदाहरण (पु.) मशक । शादीकरन मच्छर ।

रण-रणक, पु. (स्त्री.) (णिका) उद्दाम, उत्कण्ठा ।

रणसङ्कुल, न. तुमुल; वड़ी लड़ाई ।

रणाजिर, न. युद्ध-क्षेत्र । जंग ।

रण्ड, त्रि. धूर्त, निष्फल (स्त्री) (ण्डा) विधवा । शरीर, वेफ़ायदा, वेवा ।

रत, न. मैथुन, गुह्य, (त्रि) आसक्त । सोहवत, गांड आशक ।

रत-कील, पु. कुक्कुट; कुत्ता, मुर्ग ।

रत-कूजित, न. मैथुन कालीन वाक्य । मैथुनके समय स्त्री पुरुषकी आवाज़ ।

रत-नारीच, पु. नारीचीत्कार शब्द, कुक्कुट, सर लम्पट, । कुत्ता, शहवत, अयाश ।

रत-निधि, पु. खञ्जन पक्षी; ममोला ।

रतान्दुक, पु. कुक्कुट, कुत्ता, मुर्ग़ ।

रतान्ध्री, स्त्री. कुज्झटिका; कुहासा ।

रतापर्नी, स्त्री वेश्या; कंचनी । [वाला

रतार्थिन्, पु. मैथुनाभिलाषी, । सोहवत-चाहने

रति, स्त्री. कामदेवकी जोरू, मुहब्बत, सोहवत

रति-कुहर, न. योनि । कुस ।

रति-पति, पु. काम ।
रत्ति(का), स्त्री. परिमाणविशेष; एक माष आठ जौं भर । [वस्तु ।
रत्न, न. अश्म जाति, मुक्तादि, स्वर, जाति-श्रेष्ठ
रत्न-गर्भ, पु. कुबेर, समुद्र, (स्त्री) (र्भा) पृथिवी ।
रत्न-त्रितय, न. सुदृष्टि, ज्ञान, और चरित्र ।
रत्न-पारायण, न. रत्नाधार; पेटी ।
रत्नमय, त्रि. मणिमय । जवाहरातसे भराहुआ, जवाहर का ।
रत्न-राज, न. माणिक्य, रत्नश्रेष्ठ; मानक, हीरा ।
रत्न-सानु, पु. सुमेरु पर्वत ।
रत्न-सू, स्त्री. धरणी, । ज़मीन ।
रत्ना-कर, पु. समुद्र, समुंदर । रत्नोंकी कान ।
रत्नि, पु. स्त्री. बद्धमुष्टिहस्त, मुष्टी, कोहनी सेलेकर मुष्टितक हाथ । शुक्ति ।
रथ, पु. देह, चरण, पाद, वेतस वृक्ष, युद्ध यान-वि० । जिसम, पांव, वेत कादरखत, जंगकी सवारी।
रथक-ड्य(ड्या), स्त्री. रथसमूह । बहुतसीरथें ।
रथक(का)र, पु. महिष्य से उत्पन्न जाति, । त-खान, रथ-गुप्ति, रथमे छुपनेकी जगह ।
रथ-न्तर, त्रि. रथद्वारा तरणकर्त्ता (न) सामवेद ।
रथयात्रा, स्त्री. आषाढ शुक्ल २ या को श्रीजगन्ना-थजीका रथारोहणरूप उत्सव ।
रथ-युज, पु. सारथि; गाडीवान् ।
रथाङ्ग, न. चक्र, (पु) क्षत्रिय वि०, पहिया, चकवा।
रथाङ्गपाणि, } पु. विष्णु, वेतस वृक्ष; वेतका
रथाङ्गिन्, } दरखत ।
रथिक,
रथिन्,
रथित,
रथिर, } पु. रथका स्वामी; रथका सवार, रथपर-का योधा ।
रथ्य, पु. रथवाहकाश्व, (न) चक्र; रथगमनयोग्य-स्थान, (स्त्री) (थ्या) रथ-समूह, पंथा, चत्वर । घो-ड़ा, पहिया, रथचलनेके लायक रास्ता, बहुत रथ, रास्ता, चौतड़ा ।
रद(न), पु. दन्त । दांत ।
रद(न)-च्छद, पु. ओष्ठ; ओंठ । [क्षर ।
रदनिन्, पु. हस्ती (त्रि) दन्तविशिष्ट; हाथी, दन्त-
रन्तिदेव, पु. विष्णु, चंद्रवंशीयनृपति वि० कुक्कुर।
रन्धन, न. पाक; रींधना, पकाना
रन्ध्र, न. दोष, छिद्र, कुक्षि । ऐब, सुराख़, कांख ।
रभस, पु. वेग हर्ष, औत्सुक्य, । तेज़ी, खुशी, ख़याल । [मिथुन । खांविद, शौहर ।
रम(क), पु. कान्त, कामदेव, रक्त अशोक वृक्ष,
रमठ, पु. हिङ्गु; हींग ।
रमण, न. पटोलमूल, जघन, जृम्भण, क्रीडन, (पु) पति, भर्त्ता, कामदेव, गर्दभवृषण, महारिष्ट, (त्रि) प्रिय (स्त्री) (णा) (णी) नारी, उमा, सुन्दरी स्त्री।
रमणीय, } त्रि. सुन्दर । खूबसूरत ।
रमण्य, } न.
रमा, स्त्री. लक्ष्मी, शोभा, शशिध्वज-राजकन्या । विष्णुकी शक्ति, चमक, राजा शशिध्वजकी बेटी।
रमा-नाथ(पति), पु. श्रीकृष्ण, विष्णु ।
रमा-पति, पु. विष्णु ।
रमा-प्रिय, पु. कमल, श्रीकृष्ण ।
रम्भ, पु. रेणु, बंदर, असुरवि०, (स्त्री) (म्भा) कदली, अप्सरावि०, देवीवि०, वेश्या, धान्यवि०, गौकी आवाज़ ।
रम्य, न. चम्पक, बकवृक्ष, (त्रि) मनोज्ञ, बलकर, (स्त्री) (म्या) रात्रि । चम्पेका फूल, बकपेड़, दिल-चसप, शब ।
रम्यक, न. जम्बुद्वीपका एक खण्ड विशेष ।
रय, पु. वेग, प्रवाह, । तेज़ी, पानीका बहाव ।
रण्टी, स्त्री. ललाट; माथा ।
रल्लक, पु. कम्बल, पक्ष्म, मृगविशेष; भूरा, पलक, ख़ास किसम हिरणकी ।
रव, पु. शब्द । आवाज़ ।
रवण, न. रव (पु) उष्ट्र, कोकिल, (त्रि.) शब्दन, तीक्ष्ण, भण्डक, चञ्चल । आवाज़, ऊंठ, कोइल, गुनगुनी आवाज़, तीखा, भांड, मुतलव्विन ।
रवथ, पु. कोकिल; कोईल ।
रवि, पु. सूर्य्य, अर्कवृक्ष, । आफ़ताब ।
रवि-प्रिय, पु. कनेर, (न) सुरख़, कंवल, ताम्बा ।
रवि-ज, पु. शनैश्चर ग्रह, यम, वैवस्वत मनु ।
रवि-सुत, पु. शनि, सुग्रीव, यम ।
रवि-रत्नक, न. माणिक्य; मानक ।
रवि-लोह, न. ताम्र; ताम्बा ।
रशना, स्त्री. जिह्वा, काञ्ची, चन्द्रहार । जुबान, औरतोंकी तागड़ी, एक क़िसम का हार ।

रङ्क, पु. कञ्जूस, बखील, कंगाल, ।

रङ्ग, न. धातुविशेष, त्रपु (पु) नृत्य, रणभूमि, नाट्यस्थान, टङ्कण । रांगा, टीन, नाच, जंगका मैदान, खेलकी जगह, सोहागा ।

रङ्गद, पु. रङ्कण; सोहागा ।

रङ्ग-पत्री, स्त्री. नीलवृक्ष; नीलका पौदा ।

रङ्ग-भूमि, स्त्री. मल्लभूमि, नाट्यभूमि । पहिलवानोंका अखाड़ा, नटोंका अखाड़ा ।

रङ्गमल्ली, स्त्री. वीणा; बंसरी ।

रङ्गरस, पु. क्रीडा; खेल ।

रङ्ग-शाला, स्त्री. नाट्यगृह । नाचघर ।

रङ्गा-जीव, पु. शिल्पविशेष, चित्रकार, नट ।

रङ्गारि, पु. करवीरपुष्प ।

रङ्गावतार(क,) / रङ्गावतारिन्, } पु. नट, (स्त्री.) (री) (रिका) (रिणी) नटी ।

रङ्गिन्, त्रि. रङ्गकारक, चित्रकार, कौतुकी, नर्त्तक । रंग करनेवाला, मुसव्विर, मसखरा, नाचा ।

रङ्हस्, न. (ह्) वेग । तेज़ी । [मिस्त्री ।

रचक, त्रि. रचना-कर्त्ता, निर्म्मापक । मुसन्निफ़,

रचन, न. निर्म्माण, (स्त्री) (ना) सिलसिलेवार बनाना, गांठना । [बनानेवाला ।

रचयितृ, त्रि. निर्म्माता, ग्रन्थन कारक । मुसनिफ़,

रचित, त्रि. कृत, निर्म्मित, ग्रथित; किया हुआ, रचा हुआ, गठा हुआ ।

रज(स्), न. स्त्री. कुसुम (पु.) पराग रेणु,गुणवि० । हैज़, फूलकी तिरी, धूल, दिल्की खसलत ।

रजक, पु. वर्णसङ्कर जाति (स्त्री) (की) धोबी, धोबन, रंगनेवाला ।

रजत, न. रौप्य, स्वर्ण, हस्तिदन्त,धवल, शोणित, रक्तवर्ण, हाट, ह्रद शैल, (त्रि) शुक्लवर्ण वशिष्ट । चांदी, सोना, हाथीदांत, सफेद, खून, सुरख, हार, झील, पहाड़, सुपेद ।

रजत-गिरि, / रजता-चल, / रजता-द्रि, } पु. कैलाश पर्वत ।

रजन, न. रञ्जन (स्त्री) (नि) (नी) रात्रि, हरिद्रा, जतुका, । रंगना,शब, हलदी, लाख, नीलका पौदा

रजनि(नी)कर, पु. चद्रमा । माहताब ।

रजनी-चर, पु. राक्षस और पक्षी । चोर ...

रजनी(नि)मुख, पु. सांझका समय । शाम

रजसानु, पु. मेघ, चित्त; बादल, दिल ।

रजस्वल, पु. महिष (स्त्री) (ला) रजोयु... भैंसा, हैज़वाली औरत ।

रज्जु, पु. बन्धन साधन वस्तु; रस्सी ।

रञ्जक, त्रि. प्रीतिजनक, वस्त्रादिराग कर्त्ता । ... करनेवाला । कपड़ारंगनेवाला,

रञ्जन, न. रक्तचंदन, सन्तुष्टकरण, मुञ्ज... (स्त्री) (नी) शुण्डा, रोचनिका, नीली, मञ्जि... रिद्रा । सुरख़ संदल, खुशकरना, मूं... नील, हलदी, मजीठ ।

रञ्जित, त्रि. रंगाहुआ ।

रटन, न. घोषण, कथन । बार २ कहिना, ...

रटन्ती, स्त्री. माघवदी चतुर्दशी ।

रटित, त्रि. भाषित, कथित । कहा हुआ ।

रण, न. युद्ध, (पु.) शब्द, क्कण, गति । जंग, आवाज़, बंसीकी आवाज़ रफ़तार ।

रणत्, त्रि. शब्दायमान । गूंजता हुआ ।

रण-रण, न. उदाहरण (पु.) मशक । शादी... मच्छर ।

रण-रणक, पु. (स्त्री.) (णिका) उद्दाम, उत्क...

रणसङ्कुल, न. तुमुल; बड़ी लड़ाई ।

रणाग्नि, न. युद्ध-क्षेत्र । जंग ।

रण्ड, त्रि. धूर्त्त, निष्फल (स्त्री) (ण्डा) विधवा... रीर, बेफ़ायदा, बेवा ।

रत, न. मैथुन, गुह्य, (त्रि) आसक्त । सोहबत, ... आशक ।

रत-कील, पु. कुक्कुट; कुत्ता, मुर्ग ।

रत-कूजित, न. मैथुन कालीन वाक्य । मै... समय स्त्री पुरुषकी आवाज़ ।

रत-नारीच, पु. नारीचीत्कार शब्द, कुक्कुट, लम्पट, । कुत्ता, शहवत, अयाश ।

रत-निधि, पु. खञ्जन पक्षी; ममोला ।

रतान्दुक, पु. कुक्कुट, कुत्ता, मुर्ग़ ।

रतान्धी, स्त्री. कुझटिका; कुहासा ।

रतापनी, स्त्री वेश्या; कंचनी । [

रतार्थिन्, पु. मैथुनाभिलाषी, । सोहबत-...

रति, स्त्री. कामदेवकी जोरू, मुहब्बत, सो...

राजकीय, त्रि. राजसम्बधीय; राजाका ।
राज-कोपातकी, स्त्री. हस्तिपर्णिका, घीयातोरी ।
राज-घ्न, त्रि. राजहन्ता । राजाके मारनेवाला ।
राज-जम्बू, स्त्री, पिण्डखर्जूर; पिण्डखजूर, राय जामन ।
राजत, त्रि. रजित-निर्मित, रुप्पेका (स्त्री) (ता) (न) (ल) राजाका धर्म्म, राजाओंकी जमात ।
राज-ताल, पु. सुपारी का पेड़, ताल कापेड़ ।
राज-दन्त, पु. सूए दांत ।
राजदेशीय, पु. राज के तुल्य । [ख़िलाफ़ह ।
राज-धानी, स्त्री. राजाका वासस्थान । दारुल-
राज-नीति, स्त्री. राजनियम,। क़ानून ।
राज-नील, न. रत्नवि०, मरकतमणि; पन्ना ।
राजन्य, पु. क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, क्षीरकावृक्ष
राजन्यक, न. क्षत्रियसमूह । बहुतसे क्षत्रिय ।
राजन्वत्, त्रि. जिसदेशमें बड़ा धर्म्मी राजा हो
राज-पथ, पु. श्रेष्ठपथ, ४० हाथ चौड़ी सड़क ।
राज-पद, पु. राजसिंहासन । तख़्त ।
राज-पुत्र, पु. बुधग्रह, कायस्थ कन्यासे क्षत्रिय जात जातिविशेष, राज-कुमार, (स्त्री) (त्री) राजकन्या, मालती, कटुतुम्बी, रेणुका ।
राज-वल्लभ, पु. नारायणदास कविराजकृत ग्रन्थ-विशेष, त्रि. राजप्रिय । राजाका प्यारा ।
राज-भट, पु. राजकीय सैन्य । पादशाही फौज़ ।
राज-भद्रक, पु. कुष्ठ, निम्ब, पारिभद्रक वृक्ष, कुठ, नीम, एक पेड़ ।
राज-भूय, न. नृपत्व । बादशाही, राजा होकर ।
राज-युध्वन्, पु. राजवैरी । पादशाही दुश्मन ।
राज-रङ्ग, न. रजत; रुप्पा ।
राज-राज, पु. कुवेर, सम्राट, चन्द्र, दौलतका देवता, शाहनशाह, माहताब । [ऋषि ।
राजर्षि, पु. उत्तम-क्षत्रिय, राजश्रेष्ठ । राजा ओंमे
राज-लक्ष्मन्, पु. युधिष्टिर, धर्म्मपुत्र ।
राज-लक्ष्मी, स्त्री. राजसम्पत्ति, बादशाही हशमत ।
राज-वृत्त, न. राजाका चलन, तारीख, न्यायसे धनोपार्जन करना, रक्षा, वृद्धि, और सुपात्रमें दान ।
राज-वंश्य, त्रि. राजाके घरानेका (न) जातिवि० ।
राज-शृंग, न. राजछत्र, (पु) मद्गुर मत्स्य, राजाका-छाता । मागुरमच्छ ।
राज-सदन, न. राज-गृह । बादशाही महल ।
राज-सर्प्प, पु. सर्प वि० । अज़दहा सांप ।
राज-सर्षप, पु. सर्षप वि०; राई सरसों ।
राजस्, त्रि. रजोगुणी (न) नेकनामीका काम, (स्त्री) (सी) रजोगुणवाली, दुर्गा ।
राज-सूय, पु. राजकर्तव्य यज्ञविशेष ।
राज-स्कन्ध, पु. घोटक; घोड़ा ।
रजस्व, न. राजपाथ, धन, कर । ख़िराज ।
राज-हंस, पु. रक्तवर्ण चञ्चुचरण विशिष्ट हंस, कदंव, कलहंस, नृपोत्तम, यश, इन्द्र, नृपति ।
राजा-दान, पु. न. दूध कटोरा, किंशुक-वृक्ष, (स्त्री) (नी) पिंडखजूर, केसूका पेड़ ।
राजा-धिराज, पु. सम्राट, शाहानशाह ।
राजार्ह, न. अगुरु, चंदन (त्रि.) राजयोग्य (स्त्री) (र्हा) जम्बू । संदल; पादशाहके लायक़, जामन् ।
राजाहि, पु. द्विमुख सर्प्प; दुमुखा सांप ।
राजि(का), स्त्री. श्रेणी, रेखा, जमात, लकीर, कतार, राई ।
राजीव, न. पद्म, (पु) हरणवि०, वृहन्मीनवि०, हस्तीवि०, सारसपक्षी, (त्रि) राजोपजीवी ।
राजीव-लोचन, त्री. पद्मलोचन; कमलोंकेसमान जिसकी आंखे हों, पु. विष्णु ।
राजेन्द्र, पु. श्रेष्ठ-राजा, राजाधिराज । पादशाह ।
राज्ञी, स्त्री. राजपत्नी, सूर्य्यपत्नी, कांस्य, नीली । रानी, सूरज देवताकी स्त्री; कांसा, नील ।
राज्य, न. राजत्व, राजकार्य्य । पादशाहत, राजाका काम । [ण्डादि; रायता ।
राज्यक्ता, स्त्री. दधिलवणमिश्रित सूक्ष्मालाबुख-
राज्य-नीति, स्त्री. राज्यनियम । कानून ।
राज्याङ्ग, न. राज्यके सात अंग । स्वामी, आमात्य, मित्र, कोश, दुर्ग, सेना, देश । [पंखेरू ।
राटि, स्त्री. युद्ध, (पु) शरारि पक्षी । जंग, शराल
राढ, पु. (स्त्री) (ढा) वंगदेशमें गंगाके पश्चिम किनारेपरका मुल्क ।
राढीय, त्रि. राढ देश निवासी ।
रात्रक, न. पञ्चरात्रक (पु) एकवर्षान्त-वेश्यागृहवासी ।
रात्रि(त्री), स्त्री. हलदी, रात ।

रश्मि, पु. किरण, पक्ष्म, अश्व-रज्जु। शुआ, पलक, लगाम, बागडोरी।

रस, न. जाल (पु) रसना ग्राह्य गुण—तत् षड्विध यथा।— १ मधुर २ आम्ल ३ लवण ४ कटु ५ तिक्त ६ कषाय। श्रृङ्गारादि दशविध स्थायी भाव, यथा।—१ श्रृङ्गार २ वीर ३ करुण ४ अद्भुत ५ हास्य ६ भयानक, ७ वीभत्स ८ रौद्र ९ शान्त, मनःप्रीतिविशेष, विष, वीर्य्य, गुण, गन्धरस, जल, पारद, सुवर्ण, शुक्रधातु, अभिप्राय, भोग्य-वस्तु, अनुराग, द्रववस्तु। पानी, ज़ायक़ह, मीठा, तुरश, सलोना, कड़वा, तीखा, क़सैला, खुशी, ज़हर, मनी, सिफ्त, पारा, ज़र, अर्क, मुहब्बत।

रस-कर्पूर, न. कर्पूररस, पारद; रसकाफूल, पारा।

रस-घ्न, न. टङ्कन; सुहागा।

रस-ज, न. रक्त (पु.) गुड़, मद्य। खून, गुड़, शराब।

रस-ज्ञ, त्रि. रसिक (स्त्री) (ज्ञा) जिह्वा। रस के जाननेवाला, जुवान।

रस-धातु, पु. पारद; पारा।

रसन, न. आस्वादन, ध्वनि (स्त्री) जिह्वा (स्त्री) (ना) (शना) रज्जु, कांची।

रसना-लिह, पु. कुक्कुर; कुत्ता।

रसने-न्द्रिय, न. जिह्वा। जुवान।

रस-मञ्जरी, स्त्री. नायक नायिका भेदक अलङ्काराङ्ग-ग्रन्थ विशेष।

रस-राज, पु. पारद, रसाञ्जन; पारा।

रस-लेह, पु. पारद; पारा।

रस-शोधन, न. टङ्कण; सुहागा।

रसा, स्त्री. पृथिवी।

रसाञ्जन, न. कज्जलवि०; सुर्म्मा।

रसातल, न. पाताल; ७ सातवां पताल।

रसादान, न. शोषण; सुकाना।

रसाभास, पु. रसतुल्य।

रसायन, न. कटि, मेखला, तक्र, विष, जरा व्याधिनाशकौषधि, गरुड़, विडङ्गनामकौषधि। कमर तागड़ी, छाछ, जहर, बुढ़ापा दूर करनेकी दवाई।

रसायनफला, स्त्री. हरीतकी; हरीड़।

रसाल, पु. इक्षु, आम्र, पनस, गोधूम, (न) सिल्हक (स्त्री) (ला) रसना, दूर्वा, द्राक्षा। ईख, आम, गेहूं, एक खुशबूदार चीज़, ज़वान, दूब, दाख, किसमिस।

रसा-स्वादिन्, पु. भ्रमर, (त्रि) रसास्वादविशिष्ट। भौंरा, रस चखने वाला।

रसिक, पु. सारसपक्षी, तुरङ्ग, हस्ती, (स्त्री) (का) जिह्वा, इक्षुरस, काञ्ची, चन्द्रहार, रसज्ञा स्त्री, (त्रि.) सरस, रसज्ञ। [याहुआ, हवा।

रसित, बादलकी गर्जना, आवाज़। ज़ेवाइश दि-

रसेन्द्र, पु. पारद; पारा। [क़ह। दवाई।

रसोत्तम, पु. मुद्ग, श्रेष्ठरस; मूंगीं। उमदह ज़ाय-

रस्न, न. द्रव्य, सामग्री। चीज़, सामान। [केदार।

रस्या, स्त्री. रास्ना, रसविशिष्टा। गबगव, । जाय-

रंहस, न. वेग। तेज़ी।

रहस्, न. निर्जन, तत्व, रति, गुह्य (व्य) विजन। तनहाई, सोहवत, गांड, तनहाईमें।

रहस्य, त्रि. गोपनीय (स्त्री.) (स्या) नदीविशेष, लताविशेष। छिपानेके लायक़, ख़ास दर्या, ख़ास बेल।

रहित, त्रि. वर्जित, त्यक्त; छोड़ दियाहुआ।

रा, स्त्री. दान, धन। खैरात, दौलत।

राका, स्त्री. नदीविशेष, नूतन ऋतुमती स्त्री, पूर्णिमा।

राक्षस, पु. प्राणिहिंसक जाति; राछस।

राक्षा, स्त्री. लाक्षा; लाख।

राग, पु. रक्तवर्ण, मात्सर्य्य, क्रोध, गान्धारादि, नृप, चन्द्र, सूर्य्य, प्रीति, गान यथा।—१ भैरव २ कौशिक ३ हिण्डोल ४ दीपक ५ श्रीराग, ६ मेघ, इच्छा। लालरंग।

राग-चूर्ण, पु. अमीर, कंदर्प।

रागाढ्या, स्त्री. मञ्जिष्ठा-लता; मजीठ।

रागान्ध, त्रि. अतिक्रोधी। गज़बनाक।

रागिन्, त्रि. राग-युक्त (स्त्री) (णी) विदग्धा नारी, मेनिकाकन्या, रागपत्नी, स्वरविशेष, अनुरागवती, मेनका की बेटी, रागोंकी जोरू, स्वरें; गुस्सेवाली। [मछली, समुंदर।

राघव, पु. रामचन्द्र, मत्स्यविशेष, समुद्र; एक

राङ्कव, त्रि. मृग लोम जात, (न) ऊनी शाल दुशालह वग़ैरह। [मित्र, शत्रुमित्रका मित्र।

राज-मंडल, त्रि. शत्रु, मित्र, शत्रुका मित्र, मित्रका

राजकीय, त्रि. राजसम्बधीय; राजाका ।
राज-कोपातकी, स्त्री. हस्तिपर्णिका, घीयातोरी ।
राज-घ्न, त्रि. राजहन्ता । राजाके मारनेवाला ।
राज-जम्बू, स्त्री, पिण्डखर्जूर; पिण्डखजूर, राय जामन ।
राजत, त्रि. रजित-निर्मित, रुप्पेका (स्त्री) (ता) (न) (त्व) राजाका धर्म्म, राजाओंकी जमात ।
राज-ताल, पु. सुपारी का पेड़, ताल कापेड़ ।
राज-दन्त, पु. सूए दांत ।
राजदेशीय, पु. राज के तुल्य । [ख़िलाफ़ह ।
राज-धानी, स्त्री. राजाका वासस्थान । दारुल-
राज-नीति, स्त्री. राजनियम,। क़ानून ।
राज-नील, न. रत्नवि०, मरकतमणि; पन्ना ।
राजन्य, पु. क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, क्षीरकावृक्ष
राजन्यक, न. क्षत्रियसमूह । बहुतसे क्षत्रिय ।
राजन्वत्, त्रि. जिसदेशमें बड़ा धर्म्मी राजा हो
राज-पथ, पु. श्रेष्ठपथ, ४० हाथ चौड़ी सड़क ।
राज-पद, पु. राजसिंहासन । तख़्त ।
राज-पुत्र, पु. बुधग्रह, कायस्थ कन्यासे क्षत्रिय जात जातिविशेष, राज-कुमार, (स्त्री) (त्री) राजकन्या, मालती, कटुतुम्बी, रेणुका ।
राज-वल्लभ, पु. नारायणदास कविराजकृत ग्रन्थ-विशेष, त्रि. राजप्रिय । राजाका प्यारा ।
राज-भट, पु. राजकीय सैन्य । पादशाही फौज़ ।
राज-भद्रक, पु. कुष्ठ, निम्ब, पारिभद्रक वृक्ष, कुठ, नीम, एक पेड़ ।
राज-भूय, न. नृपत्व । बादशाही, राजा होकर ।
राज-युध्वन्, पु. राजवैरी । पादशाही दुश्मन ।
राज-रङ्ग, न. रजत; रुप्पा ।
राज-राज, पु. कुवेर, सम्राट, चन्द्र, दौलतका देवता, शाहनशाह, माहताब । [ऋषि ।
राजर्षि, पु. उत्तम-क्षत्रिय, राजश्रेष्ठ । राजा ओंमे
राज-लक्ष्मन्, पु. युधिष्ठिर, धर्म्मपुत्र ।
राज-लक्ष्मी, स्त्री. राजसम्पत्ति, बादशाही हशमत।
राज-वृत्त, न. राजाका चलन, तारीख़, न्यायसे धनोपार्जन करना, रक्षा, वृद्धि, और सुपात्रमें दान।
राज-वंश्य, त्रि. राजाके घरानेका (न) जातिवि०।
राज-शृंग, न. राजछत्र, (पु) मद्गुर मत्स्य, राजाका-छाता । मागुरमच्छ ।
राज-सदन, न. राज-गृह । बादशाही महल ।
राज-सर्प्प, पु. सर्प वि० । अजदहा सांप ।
राज-सर्षप, पु. सर्षप वि०; राई सरसों ।
राजस्, त्रि. रजोगुणी (न) नेकनामीका काम, (स्त्री) (सी) रजोगुणवाली, दुर्गा ।
राज-सूय, पु. राजकर्तव्य यज्ञविशेष ।
राज-स्कन्ध, पु. घोटक; घोड़ा ।
राजस्व, न. राजपाय, धन, कर । ख़िराज ।
राज-हंस, पु. रक्तवर्ण चञ्चुचरण विशिष्ट हंस, कदंब, कलहंस, नृपोत्तम, यक्ष, इन्द्र, नृपति ।
राजा-दान, पु. न. दूध कटोरा, किंशुक-वृक्ष, (स्त्री) (नी) पिंडखजूर, केसूका पेड़ ।
राजा-धिराज, पु. सम्राट, शाहानशाह ।
राजार्ह, न. अगुरु, चंदन (त्रि.) राजयोग्य (स्त्री) (र्हा) जम्बू। संदल; पादशाहके लायक़, जामन् ।
राजाहि, पु. द्विमुख सर्प्प; दुमुखा सांप ।
राजि(का), स्त्री. श्रेणी, रेखा, जमात, लकीर, कतार, राई ।
राजीव, न. पद्म, (पु) हरणवि०, वृहन्मीनवि०, हस्तीवि०, सारसपक्षी, (त्रि) राजोपजीवी ।
राजीव-लोचन, त्री. पद्मलोचन; कमलोंकेसमान जिसकी आंखे हों, पु. विष्णु ।
राजेन्द्र, पु. श्रेष्ठ-राजा, राजाधिराज । पादशाह ।
राज्ञी, स्त्री. राजपत्नी, सूर्य्यपत्नी, कांस्य, नीली । रानी, सूरज देवताकी स्त्री; कांसा, नील ।
राज्य, न. राजत्व, राजकार्य्य । पादशाहत, राजा-का काम । [ण्डादि; रायता ।
राज्यक्ता, स्त्री. दधिलवणमिश्रित सूक्ष्मालाबुख-
राज्य-नीति, स्त्री. राज्यनियम । क़ानून ।
राज्याङ्ग, न. राज्यके सात अंग । स्वामी, आमात्य, मित्र, कोश, दुर्ग, सेना, देश । [पंखेरू ।
राटि, स्त्री. युद्ध, (पु) शरारि पक्षी । जंग, शराल
राढ, पु. (स्त्री) (ढा) बंगदेशमें गंगाके पश्चिम किनारेपरका मुल्क ।
राढीय, त्रि. राढ देश निवासी ।
रात्रक, न. पञ्चरात्रक (पु) एकवर्षान्त-वेश्यागृहवासी।
रात्रि(त्री), स्त्री. हलदी, रात ।

रश्मि, पु. किरण, पक्ष्म, अश्व-रज्जु। शुआ, पलक, लगाम, वागडोरी ।

रस, न. जाल (पु) रसना ग्राह्य गुण—तत् षड्विध यथा ।— १ मधुर २ आम्ल ३ लवण ४ कटु ५ तिक्त ६ कषाय । शृङ्गारादि दशविध स्थायी भाव, यथा ।—१ शृङ्गार २ वीर ३ करुण ४ अद्भुत ५ हास्य ६ भयानक, ७ वीभत्स ८ रौद्र ९ शान्त, मनःप्रीतिविशेष, विष, वीर्य्य, गुण, गन्धरस, जल, पारद, सुवर्ण, शुक्रधातु, अभिप्राय, भोग्य-वस्तु, अनुराग, द्रववस्तु । पानी, ज़ायक़ह, मीठा, तुरश, सलोना, कड़वा, तीखा, क़सैला, खुशी, ज़हर, मनी, सिफ़त, पारा, ज़र, अर्क, मुहब्बत ।

रस-कर्पूर, न. कर्पूररस, पारद; रसकाफूल, पारा।

रस-घ्न, न. टङ्कन; सुहागा ।

रस-ज, न. रक्त (पु.) गुड़, मद्य। खून, गुड़, शराब।

रस-ज्ञ, त्रि. रसिक (स्त्री) (ज्ञा) जिह्वा । रस के जाननेवाला, ज़ुबान ।

रस-धातु, पु. पारद; पारा ।

रसन, न. आस्वादन, ध्वनि (स्त्री) जिह्वा (स्त्री) (ना) (शना) रज्जु, कांची ।

रसना-लिह, पु. कुक्कुर; कुत्ता ।

रसने-न्द्रिय, न. जिह्वा । ज़ुबान ।

रस-मञ्जरी, स्त्री. नायक नायिका भेदक अलङ्काराह्ग्रन्थ विशेष ।

रस-राज, पु. पारद, रसाञ्जन; पारा ।

रस-लेह, पु. पारद; पारा ।

रस-शोधन, न. टङ्कण; सुहागा ।

रसा, स्त्री. पृथिवी ।

रसाञ्जन, न. कज्जलवि०; सुर्म्मा ।

रसातल, न. पाताल; ७ सातवां पताल ।

रसादान, न. शोषण; सुकाना ।

रसाभास, पु. रसतुल्य ।

रसायन, न. कटि, मेखला, तक्र, विष, जरा व्याधिनाशकौषधि, गरुड़, विडङ्गनामकौषधि । कमर तागड़ी, छाछ, ज़हर, बुढ़ापा दूर करनेकी दवाई ।

रसायनफला, स्त्री. हरीतकी; हरीड़ ।

रसाल, पु. इक्षु, आम्र, पनस, गोधूम, (न) सिल्हक (स्त्री) (ला) रसना, दूर्वा, द्राक्षा । ईख, आम, गेहूं, एक खुशबूदार चीज़, ज़बान, दूब, दाख, किसमिस ।

रसा-स्वादिन्, पु. भ्रमर, (त्रि) रसास्वादविशिष्ट । भौंरा, रस चखने वाला ।

रसिक, पु. सारसपक्षी, तुरङ्ग, हस्ती, (स्त्री) (का) जिह्वा, इक्षुरस, काञ्ची, चन्द्रहार, रसज्ञा स्त्री, (त्रि.) सरस, रसज्ञ । [याहुआ, हवा ।

रसित, बादलकी गर्जना, आवाज़ । ज़ेवाइश दि-

रसेन्द्र, पु. पारद; पारा । [क़ह । दवाई ।

रसोत्तम, पु. मुद्ग, श्रेष्ठरस; मूंगी । उमदह ज़ाय-

रस्न, न. द्रव्य, सामग्री । चीज़, सामान । [किदार ।

रस्या, स्त्री. रास्ना, रसविशिष्टा । गवगव, । जाय-

रंहस, न. वेग । तेज़ी ।

रहस्, न. निर्जन, तत्व, रति, गुह्य (व्य) विजन । तनहाई, सोहबत, गांड, तनहाईमें ।

रहस्य, त्रि. गोपनीय (स्त्री.) (स्या) नदीविशेष, लताविशेष । छिपानेके लायक़, खास दर्या, खास वेल ।

रहित, त्रि. वर्जित, त्यक्त; छोड़ दियाहुआ ।

रा, स्त्री. दान, धन । खैरात, दौलत ।

राका, स्त्री. नदीविशेष, नूतन ऋतुमती स्त्री, पूर्णिमा।

राक्षस, पु. प्राणिहिंसक जाति; राछस ।

राक्षा, स्त्री. लाक्षा; लाख ।

राग, पु. रक्तवर्ण, मात्सर्य्य, क्रोध, गान्धारादि, नृप, चन्द्र, सूर्य्य, प्रीति, गान यथा ।—१ भैरव २ कौशिक ३ हिण्डोल ४ दीपक ५ श्रीराग, ६ मेघ, इच्छा । लालरंग ।

राग-चूर्ण, पु. अमीर, कंदर्प ।

रागाढ्या, स्त्री. मञ्जिष्ठा-लता; मजीठ ।

रागान्ध, त्रि. अतिक्रोधी । ग़ज़बनाक ।

रागिन्, त्रि. राग-युक्त (स्त्री) (णी) विदग्धा नारी, मेनिकाकन्या, रागपत्नी, स्वरविशेष, अनुरागवती, मेनका की बेटी, रागोंकी जोरू, स्वरें; गुस्सेवाली । [मछली, समुंदर ।

राघव, पु. रामचन्द्र, मत्स्यविशेष, समुद्र; एक

राङ्कव, त्रि. मृग लोम जात, (न) ऊनी शाल दुशालह वग़ैरह । [मित्र, शत्रुमित्रका मित्र ।

राज-मंडल, त्रि. शत्रु, मित्र, शत्रुका मित्र, मित्रका

राजकीय, त्रि. राजसम्बधीय; राजाका ।
राज-कोपातकी, स्त्री. हस्तिपर्णिका, घीयातोरी ।
राज-घ्न, त्रि. राजहन्ता । राजाके मारनेवाला ।
राज-जम्बू, स्त्री, पिण्डखर्ज्जूर; पिण्डखजूर, राय जामन ।
राजत, त्रि. रजित-निर्मित, रुप्पेका (स्त्री) (ता) (न) (ल) राजाका धर्म्म, राजाओंकी जमात ।
राज-ताल, पु. सुपारी का पेड़, ताल कापेड़ ।
राज-दन्त, पु. सूए दांत ।
राजदेशीय, पु. राज के तुल्य । [खिलाफ़द ।
राज-धानी, स्त्री. राजाका वासस्थान । दारुल-
राज-नीति, स्त्री. राजनियम,। क़ानून ।
राज-नील, न. रत्नवि०, मरकतमणि; पन्ना ।
राजन्य, पु. क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, क्षीरकावृक्ष
राजन्यक, न. क्षत्रियसमूह । बहुतसे क्षत्रिय ।
राजन्वत्, त्रि. जिसदेशमें बड़ा धर्म्मी राजा हो
राज-पथ, पु. श्रेष्ठपथ, ४० हाथ चौड़ी सड़क ।
राज-पद, पु. राजसिंहासन । तख़्त ।
राज-पुत्र, पु. बुधग्रह, कायस्थ कन्यासे क्षत्रिय जात जातिविशेष, राज-कुमार, (स्त्री) (त्री) राजकन्या, मालती, कटुतुम्बी, रेणुका ।
राज-वल्लभ, पु. नारायणदास कविराजकृत ग्रन्थ-विशेष, त्रि. राजप्रिय । राजाका प्यारा ।
राज-भट, पु. राजकीय सैन्य । पादशाही फौज़ ।
राज-भद्रक, पु. कुष्ठ, निम्ब, पारिभद्रक वृक्ष, कुष्ठ, नीम, एक पेड़ ।
राज-भूय, न. नृपत्व । बादशाही, राजा होकर ।
राज-युध्वन्, पु. राजवैरी । पादशाही दुश्मन ।
राज-रङ्ग, न. रजत; रुप्पा ।
राज-राज, पु. कुवेर, सम्राट, चन्द्र, दौलतका देवता, शाहनशाह, माहताब । [ऋषि ।
राजर्षि, पु. उत्तम-क्षत्रिय, राजश्रेष्ठ । राजा ओंमे
राज-लक्ष्मन्, पु. युधिष्टिर, धर्म्मपुत्र ।
राज-लक्ष्मी, स्त्री. राजसम्पत्ति, बादशाही हशमत ।
राज-वृत्त, न. राजाका चलन, तारीख, न्यायसे धनोपार्जन करना, रक्षा, वृद्धि, और सुपात्रमें दान ।
राज-वंश्य, त्रि. राजाके घरानेका (न) जातिवि० ।
राज-शृंग, न. राजछत्र, (पु) मद्गुर मत्स्य, राजाका छाता । मागुरमच्छ ।
राज-सदन, न. राज-गृह । बादशाही महल ।
राज-सर्प्प, पु. सर्प वि० । अजदहा सांप ।
राज-सर्षप, पु. सर्षप वि०; राई सरसों ।
राजस्, त्रि. रजोगुणी (न) नेकनामीका काम, (स्त्री) (सी) रजोगुणवाली, दुर्गा ।
राज-सूय, पु. राजकर्तव्य यज्ञविशेष ।
राज-स्कन्ध, पु. घोटक; घोड़ा ।
राजस्व, न. राजपाथ, धन, कर । खिराज ।
राज-हंस, पु. रक्तवर्ण चञ्चुचरण विशिष्ट हंस, कदंब, कलहंस, नृपोत्तम, यज्ञ, इन्द्र, नृपति ।
राजा-दान, पु. न. दूध कटोरा, किंशुक-वृक्ष, (स्त्री) (नी) पिंडखजूर, केसूका पेड़ ।
राजा-धिराज, पु. सम्राट, शाहानशाह ।
राजार्ह, न. अगुरु, चंदन (त्रि.) राजयोग्य (स्त्री) (र्हा) जम्बू । संदल; पादशाहके लायक़, जामन ।
राजाहि, पु. द्विमुख सर्प्प; दुमुखा सांप ।
राजि(का), स्त्री. श्रेणी, रेखा, जमात, लकीर, कतार, राई ।
राजीव, न. पद्म, (पु) हरणवि०, बृहन्मीनवि०, हस्तीवि०, सारसपक्षी, (त्रि) राजोपजीवी ।
राजीव-लोचन, त्री. पद्मलोचन; कमलोंकेसमान जिसकी आंखे हों, पु. विष्णु ।
राजेन्द्र, पु. श्रेष्ठ-राजा, राजाधिराज । पादशाह ।
राज्ञी, स्त्री. राजपत्नी, सूर्य्यपत्नी, कांस्य, नीली । रानी, सूरज देवताकी स्त्री; कांसा, नील ।
राज्य, न. राजत्व, राजकार्य्य । पादशाहत, राजाका काम । [ण्डादि; रायता ।
राज्यक्ता, स्त्री. दधिलवणमिश्रित सूक्ष्मालावुख-
राज्य-नीति, स्त्री. राज्यनियम । कानून ।
राज्याङ्ग, न. राज्यके सात अंग । स्वामी, आमात्य, मित्र, कोश, दुर्ग, सेना, देश । [पंखेरू ।
राटि, स्त्री. युद्ध, (पु) शरारि पक्षी । जंग, शराल
राढ, पु. (स्त्री) (ढा) वंगदेशमें गंगाके पश्चिम किनारेपरका मुल्क ।
राढीय, त्रि. राढ देश निवासी ।
रात्रक, न. पञ्चरात्रक (पु) एकवर्षान्त-वेश्यागृहवासी ।
रात्रि(त्री), स्त्री. हलदी, रात ।

रात्रि(त्री)चर, पु. राक्षस, चोर, त्रि. रात्रिको चलनेफिरनेवाला (स्त्री) (री) राक्षसी ।
रात्रि-मणि, पु. निशाकर; चान्द ।
रात्रि-हास, पु. श्वेतोत्पल; सपेद कमल; फूल ।
रात्रि-हिण्डक, पु.अन्तः पुर रक्षक, ख़ाजा सरा ।
रात्र्यन्ध, त्रि. काक, शुक, बक, कोकिल आदि ।
राद्ध, त्रि. पका हुआ, रिंधा हुआ ।
राद्धान्त, पु. सिद्धान्त; ठीक । नतीजा ।
राध, पु. वैशाखमास, (स्त्री) (धा) विशाषा-नक्षत्र, श्रीकृष्ण सखी; विद्युत (स्त्री) (धी) वैशाखी पूर्णिमा ।
राधन, न. साधन, प्राप्ति, तोषन (स्त्री) (ना) भाषण । पूजन, सवब, जरीया, तकरीर, खुशकरना ।
राधरङ्ग, पु. लांगूल, घनवृष्टि, वर्षोपल, पूंछ, हल, बड़ी वारिश, ओला ।
राधा-कान्त, पु. कृष्णदेव ।
राधा-सुत, पु. महाविराट, कर्ण, कुन्तीगर्भे सूर्य्यजात पुत्रविशेष । [कर्ण ।
राधेय, पु. राधानामिका सूत्रधारीका पालित पुत्र,
राध्य, त्रि. कथनीय । कहनेके लायक ।
राम, न. वास्तूकशाक, कुष्ट, तमालपत्र, (त्रि.) मनोज्ञ, सित, असित, (पु) परशुराम, राघव, बलराम, (स्त्री) (रामा) उत्कृष्टा स्त्री, हिंगू, नदी, हिङ्गुल, श्वेत कण्टकारी, गोरोचना । एक तरकारी, कुष्ठ, तमालका पत्ता, दिलचस्प, सुपेद, स्याह, रामचन्द्र, वलभद्र, दिलके खुश करनेवाला, औरत, हींग, सुपेद कंड्यारी, गोरोचन, गेरी ।
रामकरी(ली), स्त्री. रागिनीविशेष ।
रामचंद्र, पु. दशरथपुत्र, सीताकापति ।
रामगिरि, पु. चित्रकूट । पहाड ।
रामठ, पु. हिङ्गु (स्त्री) (ठी) नाड़ी, । रंग ।
रामण, पु. गिरिनिम्ब; तिन्दुक वृक्ष, पहाडी नीम ।
रामणीयक, न. सौन्दर्य्य । खूबसूरती ।
राम-दूत, पु. हनूमान, (स्त्री) (ती) तुलसीवि० । हनूमान, रामतुलसी ।
राम-नवमी, स्त्री. चेतसुदी नौमी ।
राम-भद्र, पु. श्रीराम; दशरथका बेटा ।
राम-शर, पु. शर वृक्षविशेष, रामेषु । खास पेड़, रामचंद्रका तीर ।
रामायण, न. प्रसिद्ध महाकाव्यविशेष ।
रायण, न. पीडा, रोग । दर्द, बीमारी ।
राव, पु. शब्द, आवाज़ ।
रावण, पु. लङ्काधिपति राक्षसविशेष ।
रावणि, पु. रावणपुत्र, रावणकेपुत्र ।
राशि, पु. धान्यादि समूह, मेषादि द्वादश राशि । धनादि का ढेर, वारह बुरज, मिकदार ।
राष्ट्र, पु. न. विषय, राज्य, उपद्रव । मुल्क, सल्तनत ।
राष्ट्रिय, पु. नाट्योक्ती राज-श्यालक । नाटकर्ममे राजाका साला ।
रास, पु. कोलाहल, भाषा, श्रीकृष्ण-लीलावि० । गोगा, बोली, श्रीकृष्ण भगवान्की लीला ।
रासन, न. रसनेंद्रियजन्य ज्ञान, त्रि. जिन्हासंबंधीय । जायका जुबानका ।
रासभ, पु. गर्द्दभ; गधा ।
रासेश्वरी, स्त्री. राधिका । [नूवेल ।
रास्ना, स्त्री. स्वनामख्यात लताविविशेष; रास-
राहु, पु. त्याग, सिंहिकापुत्र, ग्रहविशेष । तर्क, ८ वां ग्रह ।
राहु-ग्राह, पु. सूर्य्यचंद्रका ग्रहण ।
राहु-रत्न, न. रत्नवि० । गोमेद जवाहर ।
राहू-च्छिष्ट, } पु. लशन; लस्सन ।
राहु-सृष्ट,
रिक्त, न. शून्य-वन, (त्रि) निर्धन (स्त्री) (क्ता) खाली, जंगल, गरीब, चौथ नवमी और चौदस ।
रिक्थ, न. धन, ऐश्वर्य्य । दौलत, हश्मत ।
रिक्थ-हारिन्, पु. दायाद । वारिस, माया, वड़का तुख़म । [दौलतमंद ।
रिक्थिन्, त्रि. उत्तराधिकारी, धनी । वारिस,
रिङ्गण, न. स्खलन, धर्मविलङ्घन । फिसलना, गिरपड़ना । निजधर्मसे फिसलना ।
रिपु, पु. दुश्मन, लग्नसे ६ ठी, राशि ।
रिप्फ, न. लग्नसे १२ हवीं राशि ।
रिप्र, त्रि. अधम । कमीनह ।
रिरंसा, स्त्री. रमणेच्छा । खेलनेकी मरज़ी ।
रिरंसु, पु. रमणेच्छु; खेलना चाहनेवाला ।
रिरी, स्त्री. पित्तल, अव्यक्त-शब्द; पीतल, गुमआवाज़ ।
रिश्य(ष्य), पु. मृग, हरिण ।
रिष्ट, न. क्षेम, मङ्गल, अशुभ, नाश, पाप, (त्रि)

पापी, (पु) खड्ग, सुख । भला, बुरा, तबाही, गुनाह, गुनाहगार, तरवार, राक्षस ।

रीढ(क), पु. पृष्ठवंश; पीठ की हड्डी; कंगरोड़, स्त्री. (ढा) अवज्ञा, घृणा । नाफ़रमानी, नफ़रत ।

रीण, त्रि. स्रुत, क्षरित । बहा हुआ, फिरा हुआ ।

रीति, स्त्री. पीतल, रिवाज, चूना, हद्द, रफ्तार, सिल्सिलह, तरीक़ह ।

रुक्म, न. सोना, धतूरा, लोहा, नागकेसर ।

रुक्मवती, स्त्री. २० अक्षरका छन्दविशेष ।

रुक्माङ्गद, पु. राजाविशेष ।

रुक्मिन्, पु. राजाविशेष, (त्रि) स्वर्णस्वामी (स्त्री) (णी) श्रीकृष्णमहिषी ।

रुक्मिभित्, पु. बलराम, श्रीकृष्ण-भ्राता ।

रु(रू)क्ष, त्रि. निस्नेह; रूखा ।

रुग्ण, त्रि. रोगादिद्वारा कुटिलीकृत; रोगी, बीमार ।

रुचक, न. सर्जिकाक्षार, अश्वाभरण, माल्य, सौवर्चल, माङ्गल्यद्रव्य, उत्कट, खाद्य—रस, रोचना, विड़ङ्ग, लवण, (पु.) बीजपूर, दन्त, कपोत, राल, सज्जी, घोड़ोंका ज़ेवर, माला, सुहागा, सोचल, निमक, नीबू, दांत, कबूतर ।

रुच्, रुचा, स्त्री. दीप्ति, शोभा, इच्छा, शारिशुकवाक्य । चमक, खूबसूरती, ख़ाहिश, मयना और तोतोंकी बोली ।

रुचि(ची), स्त्री. अनुराग, स्पृहा, गभस्ति, शोभा, बुभुक्षा, गोरोचना, (पु.) प्रजापतिविशेष । मुहब्बत, ख़्वाहिश, किरण, भूख, गोरोचन, रौच्य, मनुका बेटा ।

रुचिर, (त्रि.) सुन्दर, मिष्ट, उज्वल (स्त्री) (रा) मनोज्ञा, गोरोचना, ११ अक्षर का छंद ।

रुचिरा-श्व, पु. राजाविशेष, सुन्दर घोटक ।

रुचिष्य, त्रि. मिष्ट वस्तु, अभिप्रेत; मीठी चीज़, दिल पसन्द ।

रुच्य, न. लवणविशेष, (पु.) शाली—धान्य, पति, (त्रि.) सुन्दर, मनोज्ञ । सौंचल निमक, धान, ख़ाविंद, खूबसूरत, दिलचस्प ।

रुज्(जा), स्त्री. व्याधि, पीड़ा, रोग, भङ्ग, मेषी । बीमारी, दर्द, भांग, मेढी ।

रुण्ड, पु. कवन्ध; धड़ ।

रुत, न. परिंदों और दरिंदों की आवाज़, बोल ।

रुदित, न. क्रन्दन, (त्रि.) रोदनविशिष्ट; रोना, रोनेवाला । [घिरा हुआ, रुका हुवा ।

रुद्ध, त्रि. आवृत; नदी या कोट आदिके अंदर ।

रुद्र, पु. शिव, गणदेवताविशेष, एकादश रुद्र नामानि यथा । १ अज २ एकपात् ३ अहिर्बुध्न्य, ४ पिनाकी ५ अपराजित, ६ त्र्यम्बक, ७ महेश्वर, ८ शम्भु, ९ वृषाकपि, १० हरण, ११ ईश्वर, हर ।

रुद्र-जटा, स्त्री. लताविशेष; शंकरजटा बेल ।

रुद्र-प्रिया, स्त्री. हरीतकी, पार्वती; हरीड़ ।

रुद्र-विंशति, पु. प्रभवादिषष्टिवर्षान्तर्गत शेष विंशति; प्रभव आदि साठ बरसोंमे से अन्तकी बीसी ।

रुद्रा-क्ष, पु. स्वनामख्यात वृक्षबीज ।

रुद्राणी, स्त्री. पार्वती, दुर्गा ।

रुधिर, न. शरीरस्थ रसभव धातु । खून, केसर, मंगल, (त्रि) सुरख ।

रुमा, स्त्री. सुग्रीव-भार्य्या; सुग्रीवकी जोरू ।

रुम्र, पु. अरुण । आफ़ताब ।

रुरु, पु. मृगविशेष, दैत्यविशेष; काला हरिण ।

रुवथु, पु. शब्द, कुक्कुट । आवाज़, मुर्ग़ ।

रुवु(क), पु. एरण्ड वृक्ष; एरण्डीका दरख़्त ।

रुशेटि, स्त्री. धूम; धूआं ।

रुष्, पु. क्रोध (स्त्री.) (षा) । गुस्सह ।

रुषित, त्रि. क्रोधयुक्त । गज़बनाक ।

रुष्ट, त्रि. क्रुद्ध (स्त्री.) (ष्टि) कोप । ग़ज़बनाक, गज़ब ।

रुह, त्रि. जात, आरूढ, पैदा हुआ २, चढ़ा हुआ, शब्दके अन्तमे हो तो पैदा हुआ ।

रूक्ष, त्रि. कड़ा, रूखा ।

रूढ, त्रि. जात, प्रसिद्ध, प्रवृद्ध, प्रकृति प्रत्ययके अर्थको छोड़ अन्यार्थबोधक शब्द ।

रूप, न. स्वभाव, नाम, पशु, शब्द, नाटकादि सौन्दर्य्य, आकार, श्लोक, शुक्लादि वर्ण, विभक्तियुक्त शब्द या धातु, धार, (त्रि) सदृश । खसलत, नाम, हैवान, आवाज़, खेल या लीला, खूबसूरती, शकल, शेर, रंग, तरीक़, मुआफ़िक़ ।

रूपक, न. नाटक, मूर्त्ति, वाक्यालङ्कारविशेष, मुद्रा, संख्याविशेष ।

रूपण, न. वर्णन, अभिनय, निरूपण । बयान ।

रात्रि(त्री)चर, पु. राक्षस, चोर, त्रि. रात्रिको चलनेफिरनेवाला (स्त्री) (री) राक्षसी ।
रात्रि-मणि, पु. निशाकर; चान्द ।
रात्रि-हास, पु. श्वेतोत्पल; सपेद कमल; फूल ।
रात्रि-हिण्डक, पु. अन्तः पुर रक्षक, ख़ाज़ा सरा ।
रात्र्यन्ध, त्रि. काक, शुक, बक, कोकिल आदि ।
राद्ध, त्रि. पका हुआ, रिंधा हुआ ।
राद्धान्त, पु. सिद्धान्त; ठीक । नतीजा ।
राध, पु. वैशाखमास, (स्त्री) (धा) विशाषा-नक्षत्र, श्रीकृष्ण सखी; विद्युत् (स्त्री) (धी) वैशाखी पूर्णिमा ।
राधन, न. साधन, प्राप्ति, तोषन (स्त्री) (ना) भाषण । पूजन, सबब, जरीया, तकरीर, खुशकरना ।
राधरङ्ग, पु. लांगूल, घनवृष्टि, वर्षोपल, पूंछ, हल, बड़ी बारिश, ओला ।
राधा-कान्त, पु. कृष्णदेव ।
राधा-सुत, पु. महाविराट, कर्ण, कुन्तीगर्भे सूर्य्यजात पुत्रविशेष । [कर्ण ।
राधेय, पु. राधानामिका सूत्रधारीका पालित पुत्र,
राध्य, त्रि. कथनीय । कहनेके लायक ।
राम, न. वास्तूकशाक, कुष्ट, तमालपत्र, (त्रि.) मनोज्ञ, सित, असित, (पु) परशुराम, राघव, बलराम, (स्त्री) (रामा) उत्कृष्टा स्त्री, हिंगु, नदी, हिङ्गुल, श्वेत कण्टकारी, गोरोचना । एक तरकारी, कुष्ठ, तमालका पत्ता, दिलचस्प, सुपेद, स्याह, रामचन्द्र, बलभद्र, दिलके खुश करनेवाला, औरत, हींग, सुपेद कंडयारी, गोरोचन, गेरी ।
रामकरी(ली), स्त्री. रागिनीविशेष ।
रामचंद्र, पु. दशरथपुत्र, सीताकापति ।
रामगिरि, पु. चित्रकूट । पहाड ।
रामठ, पु. हिङ्गु (स्त्री) (ठी) नाड़ी, । रग ।
रामण, पु. गिरिनिम्ब; तिन्दुक वृक्ष, पहाडी नीम ।
रामणीयक, न. सौन्दर्य्य । खूबसूरती ।
राम-दूत, पु. हनूमान, (स्त्री) (ती) तुलसीवि० । हनूमान, रामतुलसी ।
राम-नवमी, स्त्री. चेतसुदी नौमी ।
राम-भद्र, पु. श्रीराम; दशरथका बेटा ।
राम-शर, पु. शर वृक्षविशेष, रामेषु । खास पेड, रामचंद्रका तीर ।
रामायण, न. प्रसिद्ध महाकाव्यविशेष ।
रायण, न. पीडा, रोग । दर्द, बीमारी ।
राव, पु. शब्द, आवाज़ ।
रावण, पु. लङ्काधिपति राक्षसविशेष ।
रावणि, पु. रावणपुत्र, रावणकेपुत्र ।
राशि, पु. धान्यादि समूह, मेषादि द्वादश राशि । धनादि का ढेर, बारह बुरज, मिकदार ।
राष्ट्र, पु. न. विषय, राज्य, उपद्रव । मुल्क, सल्तनत ।
राष्ट्रिय, पु. नाट्योक्ती राज-श्यालक । नाटकमेंमे राजाका साला ।
रास, पु. कोलाहल, भाषा, श्रीकृष्ण-लीलावि० । गोगा, बोली, श्रीकृष्ण भगवान्‌की लीला ।
रासन, न. रसनेंद्रियजन्य ज्ञान, त्रि. जिव्हासंबंधीय । जायका जुबानका ।
रासभ, पु. गर्द्दभ; गधा ।
रासेश्वरी, स्त्री. राधिका । [नूवेल ।
रास्ना, स्त्री. स्वनामख्यात लताविविशेष; रास-
राहु, पु. त्याग, सिंहिकापुत्र, ग्रहविशेष । तर्क, ८ वां ग्रह ।
राहु-ग्राह, पु. सूर्य्यचंद्रका ग्रहण ।
राहु-रत्न, न. रत्नवि० । गोमेद जवाहर ।
राहु-च्छिष्ट, } पु. लशन; लस्सन ।
राहु-सृष्ट, }
रिक्त, न. शून्य-बन, (त्रि) निर्धन (स्त्री) (क्ता) खाली, जंगल, गरीब, चौथ नवमी और चौदस ।
रिक्थ, न. धन, ऐश्वर्य्य । दौलत, हश्मत ।
रिक्थ-हारिन्, पु. दायाद । वारिस, माया, बड़का तुखम । [दौलतमंद ।
रिक्थिन्, त्रि. उत्तराधिकारी, धनी । वारिस,
रिङ्गण, न. स्खलन, धर्मविलङ्घन । फिसलना, गिरपड़ना । निजधर्मसे फिसलना ।
रिपु, पु. दुश्मन, लग्नसे ६ ठी, राशि ।
रिप्फ, न. लग्नसे १२ हवीं राशि ।
रिप्र, त्रि. अधम । कमीनह ।
रिरंसा, स्त्री. रमणेच्छा । खेलनेकी मरज़ी ।
रिरंसु, पु. रमणेच्छु; खेलना चाहनेवाला ।
रिरी, स्त्री. पित्तल, अव्यक्त-शब्द; पीतल, गुम-आवाज़ ।
रिश्य(ष्य), पु. मृग, हरिण ।
रिष्ट, न. क्षेम, मङ्गल, अशुभ, नाश, पाप, (त्रि)

रोधित, त्रि॰ रुद्ध, (पु.) लोध्र । रोकाहुआ, लोधर-का दरख्त ।
रोधिन्, (त्रि.) रोद्धा । रोकनेवाला ।
रोध्र, न. अपराध, या लोध्रवृक्ष ।
रोप, पु. वाण, (न.) छिद्र; तीर, वोना, सुराख़ ।
रोपण, न. वीज-वपन, अर्पण; वीजवोना, कलम लगाना, उलटा समय लेना ।
रोपणीय, त्रि. वपनार्ह; वोनेके लायक़ । [हुआ ।
रोपित, त्रि. वोया हुआ, चढ़ाया हुआ, लगाया
रोमक, न. पांशुलवण, अयस्कान्त मणि; कलरी निमक, चुंवकपत्थर ।
रोमन्, न. जल, लोम; पानी, रोंआं ।
रोम-कूप, पु. लोमविवर; रोएँका सुराख़ ।
रोमन्थ, पु. उद्गीर्ण, चर्वण; जुगाली ।
रोमराजि, } पु. रोंकटोंकी कतार ।
रोमलता, }
रोम-भूमि, स्त्री. चर्म्म, त्वच्; चमड़ा, खाल ।
रोमश, पु. मेष, चन्द्र, पिण्डालु, कुम्भी, शूकर, (त्रि.) अतिशय लोमविशिष्ट; मेंढा, चांद, सूअर, रोंनेवाला ।
रोम-हर्ष, } पु. रोमाञ्च; रोआं फूटना ।
रोम-हर्षण, } न. रोमांच, (पु.) सूत, विभीतक, वृक्ष । रोंआ फूटना, सूतजी ।
रोमा(व)(लि)ली, स्त्री. नाभेरूर्ध्वरोमराजी । नाफ़, के ऊपर विस्तानतक रोआंकी-कतार ।
रोमोद्गम, } पु. रोमांच ।
रोमोद्भव, }
रोरुदा, स्त्री. अतिरोदन; बहुत रोना ।
रोरुद्यमाण, त्रि. बहुत रोनेवाला ।
रोलम्ब, पु. भ्रमर; भौंरा ।
रोष, पु. क्रोध । गुस्सह ।
रोषण, पु. पारद, हेमघर्षणोपल, ऊपर—भूमि, (त्रि.) क्रोधन । पारा, कसौटी, वञ्जर-ज़मीन, ग़ज़व नाक ।
रोह, पु. अङ्कुर; अंगूर, चढ़ना ।
रोहण, न. चढ़ना, पैदायश (पु.) पर्वत ।
रोहक, पु. प्रेतविशेष, (त्रि.) वहन-कर्त्ता ।
रोहि, पु. वीज, वृक्ष, धार्मिक । तुख़म, पेड़, ईमान्दार ।
रो(रौ)हिण, न. दिवसीय नवम मुहूर्त्त, (पु.) भू-तृण, वटवृक्ष, रोहितक-वृक्ष । दिनका नावां मुहूर्त (स्त्री.) (णी) रोहिणी नक्षत्र, स्त्रीगवी, तडित्, कटुम्भरा, सोमवल्क, काश्मरी, हरीतकी, मञ्जिष्ठा लता, वलदेव माता, सुरभिकन्या, नववर्ष वयस्का कन्या । ४था नक्षत्र, गाय, वर्क़, पथरी, हरीड़, मजीठ, वलदेवजीकी मां ।
रोहित(क), न. मत्स्यवि॰, हिरण वि॰, वृक्ष वि॰, रक्तवर्ण (न) रुधिर, कुंकुम, इन्द्रधनु (त्रि) लालरंगका ।
रौक्म, त्रि. स्वर्णमय; सोने का ।
रौक्ष, न. रूक्षापन ।
रौद्र, न. शृङ्गारादि अष्टरसान्तर्गत रस वि॰, (पु) सूर्य्यतेजः, हेमन्तऋतु, यम, (त्रि.) तीव्र, भीषण, रुद्रसम्बन्धीय (स्त्री.) (द्री) चण्डी, रुद्रजटा, महारौद्री नाम्नी चामुण्डा । धूप, आठ रसोंमेंसे एक, धूप, सर्द मौसिम, मलिकुलमौल तेज़, खौफ़नाक, रुद्रका ।
रौप्य, न. रूप्य; रुप्या । सेम ।
रौरव, पु. नरकविशेष, भयानक, (त्रि.) धूर्त्त, चञ्चल, घोर । खौफ़नाक, शरीर, मुतलव्विन, वदशकल ।
रौहिणेय, पु. वलदेव, वुधग्रह, (न.) मरकतमणि, (त्रि.) गोवत्स । पन्ना, गाय का वछड़ा ।
रौहिष, न. कत्तृण, (पु.) मृगविशेष, रोहितमत्स्य (स्त्री.) (षी) मृगी, दूर्वा । एक क़िसम का घास, ख़ास हरण, रोहू मच्छी, हिरनी, दूव ।

ल.

ल, पु. इन्द्र, (स्त्री.) (ला) दान, ग्रहण, (ली) आश्लेष ।
लक, न. ललाट, धान्यशीर्षक; माथा, धानका सिर, भुट्टा ।
लक (कु)च, पु. वृक्षविशेष ।
लक्त, पु. अलक्त, जीर्णवस्त्र खण्ड, संलग्न; अलता, फटा कपड़ा, लगा हुआ ।
लक्ष(क्ष्य), न. (स्त्री.) (क्षा) व्याज, लक्ष्य, (न) दश अयुत संख्या । फ़रेव, तीरआदिका नशाना, मुद्दआ, १००००० । एक लाख, लाख । मालुम-करलेनेवाला । [नेवाला ।
लक्षक, त्रि. लक्षण द्वारा अर्थ वोधक शब्द; लखा-
लक्षण, न. चिन्ह, नाम, दर्शन (पु.) सुमित्रा पुत्र,

रूपवत्, त्रि. साकार, सौन्दर्य्यशाली, (स्त्री.) (ती) सुन्दरी। बावजूद, खूबसूरत, खूबसूरत औरत।
रूपा-जीवा, स्त्री. वेश्या। कंचनी।
रूपिन्, त्रि. रूपविशिष्ट। बावजूद, खूबसूरत।
रूप्य, न. रजित, स्वर्ण, (त्रि.) सुन्दर। सेम, वहिरत, खूबसूरत।
रूपण, न. लेपन।
रूपित, त्रि. लेपन किया हुआ, पिसा हुआ।
रे, व्य. सम्बोधनविशेष। कमीने आदमीके बुलानेमें।
रेक, पु. शङ्का, नीच, विरेचन, भेक, पात्रविशेष (स्त्री.) (का) सन्देह। शक, कमीनह, इसहाल, मेंडक, धान मापनेका पैमाना।
रेक्नस्, न. काञ्चन; सोना। ज़र।
रेखा, स्त्री. अल्पक, छद्म, आभोग, दण्डाकार लिपिविशेष; थोड़ा, फ़रेब, लकीर, ख़त।
रेखा-गणित, पु. पुस्तकविशेष। उक़्लैदस।
रेचक, त्रि. कङ्कुष्ठमृत्तिका, (पु) प्राणायामाङ्गविशेष, यवक्षार, जयपाल वृक्ष, क्रीडार्थ जल निक्षेपनयन्त्र। कंकरवाली मट्टी, नासिकासे त्यागी हुई हवा, जोंखार, जयपालका दरख़्त, पिचकारी।
रेचन, न. मलभेदन (त्रि.) भेदक (स्त्री) (ना) काम्पिल्ल देशविशेष। मुसल।
रेचित, त्रि. त्यक्त, परिवर्जित, तर्ककि० छोड़दिया।
रेणु, पु. स्त्री. धूलि, (पु.) पर्पट, रेणुका। पांशु। धूड़, पापड़, खुशबूई। [शुराममाता।
रेणुका, स्त्री. मरिचाकृति–सुगन्धि-द्रव्यविशेष, पर-
रेणुका-सुत, पु. परशुराम।
रेतन, न. शुक्र, पारद। मनी, पारा।
रेत्य, न. पित्तल; पीतल।
रेतस्, न. "रेतन" देखो।
रेप, न. शुक्र, पीयूष, पटवारा, (त्रि.) निन्दित, क्रूर, कृपण। मनी, अमृत, खेमा, बदनाम, बेरहम, कंजूस। [कृपण।
रेफ, पु. "र"वर्ण, राग, (त्रि) कुत्सित, दुष्ट, क्रूर,
रेयट, पु. शूकर, रण्ड, उन्मत्त, विपवैद्य, (न.) दक्षिणावर्त्तशंख। सूअर, धूड़, मस्त, ज़हरका तबीब, खासशंख।
रेवत, पु. जम्बीर, राज़ाविशेष; स्त्री. (ती) काम-देवपत्नी, बलरामपत्नी, नक्षत्रविशेष, गाय, दुर्गा, रैवत मनुकी माता।
रेवती-जानि (रेवतीरमण), पु. बलराम, चंद्रमा।
रेवन्त, पु. सूर्य्यपुत्रविशेष, गुह्यकोंका राजा।
रेवा, स्त्री. नर्म्मदा-नदी, रति, नीलीवृक्ष, दुर्गा, नीलका पौदा।
रेरिहान, पु. शिव। [नि को बुलाना
रे रे, व्य. अत्यन्त नीच सम्बोधन। निहायत कमी-
रेषण, न. शब्द, गवादिशब्द; आवाज़, हैवानों की बोली।
रेष्ट्र, पु. क्रोधी। गज़ब नाक।
रै, पु. धन, स्वर्ण। दौलत, सोना।
रैरत्य, (त्रि.) पित्तलका। [मनुः।
रैवत, पु. शिव, पर्वत, त्रि० दैलवि०, ५ म.
रोक, न. छिद्र, नौका, (पु.) दीप्ति, क्रोध, सुराख़, नाव, चमक, गुस्सह।
रोग, पु. कुष्ठौपधि, देहभङ्गकारक। बीमारी।
रोगिन्, त्रि. रोगयुक्त। बीमार।
रोग्य, त्रि. अपथ्य। बीमार करनेवाली चीज़,
रोचक, त्रि. रुचिकारक। पसंदीदह।
रोचन, पु. स्त्री (ना) वर्णद्रव्यविशेष, (त्रि) रुचिकारक। गोरचन, पसन्द।
रोचनक, पु. जम्बीर, नींबू।
रोचन-फल, पु. बीजपूरक। अनार।
रोचना, स्त्री. रक्तकम्बल, हरिद्रा, वेश्या।
रोचनिका, स्त्री. वंशरोचना। तबाशीर।
रोचनी, स्त्री. आमलकी, गोरोचना, मनःशिला, श्वेत त्रिवृता; आंवला, मंछल, तिरवी, मंछिल।
रोचिष्णु, त्रि. कान्तियुक्त। चमकदार।
रोचिस्, न. प्रभा। चमक।
रोटिका, स्त्री. पिष्टकविशेष; रोटी, कचौरी।
रोद(न), पु. न. चिल्लाक; रोना।
रोदक, पु. रोदनकारी, रुलानेवाला। [ज़मीन।
रोदस्, न. स्वर्ग, भूमि (स्त्री.) (सी) (द्वि), वहिश्त,
रोद्ध्री, स्त्री. रोधकारक; रोकनेवाला।
रोध, पु. नदीतीर। किनारा, रोक।
रोधक, (त्रि.) निवारक; रोकनेवाला।
रोधन, न. रोकना (त्रि.) रोकनेवाला।
रोध-वक्रा, स्त्री. तटिनी। दर्या।

लता-यष्टि, स्त्री. मञ्जिष्ठा । मंजीठ ।
लतार्क, पु. हरितपलाण्डु । हरा प्याज़ ।
लतिका, स्त्री. गोधा; गोह सांप ।
लपन, न. मुख, भाषण; मुह, गुफ्तार ।
लपित, न. वाक्य, (त्रि.) कथित । कलाम, कहाहुआ।
लप्सिका, स्त्री. खाद्य द्रव्यवि०; लापसी ।
लब्ध, त्रि. प्राप्त, उपार्जित, गृहीत, (स्त्री.) (ब्धा) (ब्धि) नायिका वि० । पायाहुआ, इकट्ठा किया हुआ, लिया हुआ, हसूल, एक खासकिसमकी औरत ।
लब्ध-वर्ण, पु. विचक्षण। होशियार ।
लब्धा-वसर, त्रि. जिस्को मौका मिला है ।
लभस, पु. घोड़ा बांधनेकी रस्सी, दौलत, मंगता, दरख्वास्त कुनिन्दह । [सल करनेके लायक ।
लभ्य, त्रि. न्याय्य, लब्धव्य, प्राप्य । लायक, हा-
लम्पट, पु. कामुक,(त्रि.)चतुर। अय्याश, चालाक ।
लम्फ, पु. छाल, फलांग,
लमक, पु. लम्पट । यार, अय्याश ।
लम्ब, त्रि. नर्तक, अङ्ग, दोलायमान, दीर्घ, कान्त, (न) उत्कोच, त्रिभुजपर सीधी रेखा, (स्त्री.) (म्बा) लक्ष्मी, गौरी । नचार, दोस्त, लंबा, घूस, अमूद, विष्णुकी शक्ति, हिमालयकी पुत्री ।
लम्बन, न. दोल, न. रस्य वि० । झूलना ।
लम्ब-कर्ण, पु. अङ्कोट वृक्ष, छाग, राक्षस, हस्ती, श्येनपक्षी, गणेश, गर्दभ (त्रि.) लम्बकर्ण युक्त ।
लम्बिका, स्त्री. घण्टिका; घड़ी ।
लम्बित, त्रि. दोलित, आश्रित । लटकता हुआ, पनाहलिये हुए ।
लम्बोदर, पु. गणेश, (त्रि.) औदरिक; गोगड़िया।
लम्बोष्ठ, पु. उष्ट्र (त्रि.) दीर्घ ओष्ठविशिष्ट; ऊंट, जिस्के ओंठ लंबे हों ।
लय, पु. नृत्य, गीत, घर, बग़लगीरी, कयामत ।
ललत्, त्रि. कांपता हुआ, चाटता हुआ ।
ललन, चलन, केलि. (स्त्री.) (ना) जिन्हा, नारी ।
ललन्तिका, स्त्री. नाभितक लटकती हुई ।
ललाट, न. मस्तक, । पेशानी ।
ललाटंतप, त्रि. माथातपानेवाला, ।
ललाटिका, स्त्री. त्रि. टीका, वैयना ।
ललाम, पु. न. भूषण, चिन्ह, माथे परका चिन्ह, ध्वजा, शृङ्ग, अश्व, प्रधान, प्रभाव ।
ललामक, न. माथेपर धरनेकी माला ।
ललित, पु. न. विलास, स्त्रियोंका भाव विशेष । (स्त्री) नृत्य, क्रीडा, हार वि०, स्त्रीगृह, (पु.) स्वर विशेष, (त्रि.) सुंदर, प्रिय, चंचल, (स्त्री.) (ता) गोपी विशेष ।
लाघव, न. लघुत्व, अपमान, क्लैब्य, स्वास्थ । ह-ल्कापन, बेइज़ती, बुजदिली, तनदरुस्ती ।
लाङ्गल, न. स्वनामख्यात भूमि कर्षण यंत्र, हल ।
लाङ्गलग्रह, पु. कृशक । किसान ।
लाङ्गलिक, त्रि. हलचलानेवाला (स्त्री.) (का) कि-सानकी, मोरकी पूंछ । [लाङ्गलाकार पुष्प ।
लाङ्गलिन्, पु. बलराम, नारकेल वृक्ष, सर्प (स्त्री.)
लाङ्-गूल, न. पुच्छ; पूंछ । [दुमदार ।
लाङ्गलिन्, पु. बंदर, नाम एक दवाईका (त्रि)
लाज, न. उशीर, पु. आर्द्रतण्डुल (स्त्री.) (जा) खस, भुंजे चावल, खील ।
लाञ्छ, न. नाम, चिन्ह, ध्वज (पु.) निन्दा । तिर-स्कार (स्त्री.) (ना) भर्त्सना, यन्त्रणा ।
लाञ्छित, त्रि. चिन्हित, तिरस्कृत । नशान ल-गाया हुआ, मलामत किया हुआ ।
लाट, पु. देश वि०, जीर्णभूषणादि, दोष, (त्रि.) पुरातन, मलिन । पुरानेज़ेवर वग़ैरह, ऐब, पुराना, मयला ।
लाटानुप्रास, पु. शब्दानुप्रास विशेष ।
लाप्य, त्रि. कथनीय; कहनेके लायक ।
लाभ, पु. फलवृद्धि, व्याज । सूद ।
लाम्पट्य, न. कामुकता । अय्याशी ।
लालन, न. अत्यन्त स्नेह करना; लड़ाना ।
लालसा, स्त्री. चिन्ह, चंचल, लोभ, आशा । बड़ी ख़ाहिश, मांग, हमलके निशान, हिरस, उमीद ।
लाला, स्त्री. मुखजात जल; लाल, थूक ।
लालिक, पु. महिष; भैंसा ।
लालित, त्रि. प्रतिपालित; पाला हुआ, लड़ाया हुआ । [पन, शीरीं ।
लालित्य, न. कोमलता, सुरसता । मुलायमी, मीठा-
लालिन्, त्रि. चाटुक्ति कारक (पु) प्रलोभक, स्त्री. पुंश्चली । चापलूस, खुशामदी, छिनाल औरत ।

सारस पक्षी, आकार, व्याकरण सूत्र, (स्त्री.) (णा) हंसी, शक्य संबंध, (त्रि.) श्रीमान्। नशान, इसम, लछमन, सरफ़ का क़ायदाह, बयान।

लक्षित, त्रि. आलोचित, दृष्ट, अङ्कित, लक्षणाश्रय। मालूम किया हुआ, देखाहुआ, नशान किया हुआ, लक्षणा का आश्रय। [वड़ानेक।

लक्ष्म, न. चिन्ह, प्रधान, श्रेष्ठ। नशान, मुखिया,

लक्ष्मण, न. चिन्ह, नाम, (त्रि.)श्रीयुक्त, (पु.) सारस, श्रीराम भ्राता, (स्त्री) (णा) श्वेत कंटकारी, दुर्य्योधन कन्या,। निशान, इसम, इकबालमंद, सपेद कंड्यारी, दुर्य्योधन की बेटी।

लक्ष्मी, स्त्री. विष्णु-पत्नी, दुर्गा, संपत्ति, शोभा, सीता, रुक्मिणी, स्थल पद्मिनी, हरिद्रा, शमी वृक्ष, मुक्ता। भगवान् की शक्ति, देवी, हशमत, हल्दी, जंडी, मोती।

लक्ष्मीकान्त, पु. नारायण, विष्णु।

लक्ष्मी-गृह, न. रक्तोत्पल। सुरख़ कौल फूल।

लक्ष्मी-नृसिंह, पु. शालग्राम मूर्त्ति वि०। दो चक्र चूड़ा मुंह वनमाला पहिरेहुए एक शिला।

लक्ष्मी-पति, पु. वासुदेव, नरपति, गुवाक, महाधनी। भगवन्, पादशाह, लौंग. सुपारी, दौलतमंद,

लक्ष्मीवान्, न. दौलत मंद, सुन्दर।

लक्ष्मीश, न. विष्णु। [मेय।

लक्ष्य, न. शक्य, चिन्ह, लक्षण, बोध, जेय, अनु-

लक्ष्यार्थ, पु. लक्षणा शक्तिका अर्थ,।

लगड़, त्रि. चारु। खूब सूरत।

लगनीय, त्रि. लटकाने योग्य।

लगुड़, पु. दण्ड, मुद्गर; लाठी, लकड़ी।

लग्न, न. मेषादि राश्युदय काल, (पु.) स्तुति पाठक, (त्रि.) सक्त, लज्जित। भाट, (त्रि.) लगाहुआ, शरमिंदा।

लग्नक, पु. प्रतिभू। ज़ामिन।

लघिमन्, पु. लघुत्व, ऐश्वर्य्य विशेष। हलकापन, आठ ऐश्वर्य्योंमेंसे एक।

लघिष्ठ, त्रि. अतिलघु; बहुत हलका।

लघीयस्, त्रि. लघुतर; बड़ा हलका।

लघु, न. शीघ्र, कृष्णागुरु, (स्त्री.) पृक्कानामकौषधि, (त्रि.) अगुरु, सुन्दर, असार, ह्रस्व, भारहीन, निस्तेज, शुष्क, क्षुद्र, अल्प संक्षिप्त,। जल्दी, आवनूस, एक दवाई, केसर, खूबसूरत, छोटा हलका फुल्का, छोटा, थोड़ा मुख़्तसर।

लघुता, स्त्री. लाघव, अल्पता, तुच्छता, हलकाई, छुटाई, कमीनगी।

लघु-चेतस्, पु. बुजदिल।

लघु-द्राक्षा, स्त्री. काकली द्राक्षा; किसमिस्।

लघु-हस्त, त्रि. फुर्तीला,।

लघ्वी, स्त्री. हलकी, जनाना रथ।

लक्षण्वत्, पु. चिह्नित (त्रि.)जिसमें शुभ लक्षण हों।

लक्षणीय, त्रि. चिह्न करनेके योग्य।

लक्षण्य, त्रि. शुभचिह्नवाला,।

लक्षवेधिन्, त्रि. नशाना बींधनेवाला।

लक्षान्तर, पु. सौ योजनका फ़र्क।

लङ्का, स्त्री. रक्षा पुरी, कुलटा, वेश्या।

लङ्का-धिपति, पु. लंकाका राजा, रावण।

लङ्का-पिका,
लङ्का-रिका, } स्त्री. पृक्कासाग; पिंडी साग।

लङ्केश, पु. रावण-राक्षस; लंकाका राजा।

ल(ला)ङ्गुल, न. लांगूल; पुंछ। दुम।

लंघन, न. उपवास, अतिक्रम, अभिवाहन, अभिघात। फ़ाक़ह, कूदजाना, उछलना, घोड़ेकी चाल।

लज्जमा, त्रि. लज्जायुत। शर्मिन्दह।

लज्जा, स्त्री. अंतःकरण वृत्ति वि०, लज्जालु लता,। शरम, लाजवंतीवेल।

लज्जालु, पु. लज्जावान्। शर्मसार।

लज्जित, त्रि. लज्जायुक्त। शरमिन्दह।

लज्जर्या, स्त्री. त्रपा; लाज। शरम,।

लञ्ज, पु. पद, कच्छ, पुच्छ, (स्त्री.) वेश्या, निद्रा। पांव, काछा, पूंछ, कंचनी, नींद।

लञ्जिका, स्त्री. वेश्या। खानगी, कंचनी।

लट्ट, पु. जाति वि०, राग वि०, तुरङ्गम (स्त्री.) (ट्टा) वाद्य वि०, पक्षी वि०, ग्रामचेटक, कुसुम्भ वृक्ष, अमरक। नट, रागकी किस्म, एक किसमका वाजा, चिड़िया, कुसुम्भेका पेड़, भौंरा।

लडह, त्रि. सुन्दर। लाडला, खूबसूरत।

लड्डुक(कण), पु. पिष्टक विशेष। लड्डुआ।

लण्ड, न. स्त्री. विष्ठा। गूंहका लेंडा।

लता, स्त्री. वेल, शाखा, डोरा, मोतियोंका हार।

लता-मृग, पु. कपि; बंदर। बूजना

लता-यष्टि, स्त्री. मञ्जिष्ठा । मंजीठ ।
लतार्क, पु. हरितपलाण्डु । हरा प्याज़ ।
लतिका, स्त्री. गोधा; गोह सांप ।
लपन, न. मुख, भाषण; मुंह, गुफ्तार ।
लपित, न. वाक्य, (त्रि.) कथित । कलाम, कहाहुआ।
लप्सिका, स्त्री. खाद्य द्रव्यवि०; लापसी ।
लब्ध, त्रि. प्राप्त, उपार्जित, गृहीत, (स्त्री.) (ब्धा) (ब्धि) नायिका वि० । पायाहुआ, इकट्ठा किया हुआ, लिया हुआ, हसूल, एक खासकिसमकी औरत ।
लब्ध-वर्ण, पु. विचक्षण । होशियार ।
लब्धा-वसर, त्रि. जिस्को मौका मिला है ।
लभस, पु. घोड़ा बांधनेकी रस्सी, दौलत, मंगता, दरखास्त कुनिन्दह । [सल करनेके लायक ।
लभ्य, त्रि. न्याय्य, लब्धव्य, प्राप्य । लायक, हा-
लम्पट, पु. कामुक,(त्रि.)चतुर । अय्यारा, चालाक ।
लम्फ, पु. छाल, फलांग,
लमक, पु. लम्पट । यार, अय्याश ।
लम्ब, त्रि. नर्तक, अङ्ग, दोलायमान, दीर्घ, कान्त, (न) उत्कोच, त्रिभुजपर सीधी रेखा, (स्त्री.) (म्बा) लक्ष्मी, गौरी । नचार, दोस्त, लंबा, घूंस, अमूद, विष्णुकी शक्ति, हिमालयकी पुत्री ।
लम्बन, न. दोल, न. रस्स वि० । झूलना ।
लम्ब-कर्ण, पु. अङ्कोट वृक्ष, छाग, राक्षस, हस्ती, श्येनपक्षी, गणेश, गर्दभ (त्रि.) लम्बकर्ण युक्त ।
लम्बिका, स्त्री. घण्टिका; घड़ी ।
लम्बित, त्रि. दोलित, आश्रित । लटकता हुआ, पनाहलिये हुए ।
लम्बोदर, पु. गणेश, (त्रि.) औदरिक; गोगड़िया।
लम्बोष्ठ, पु. उष्ट्र (त्रि.) दीर्घ ओष्ठविशिष्ट; ऊंठ, जिस्के ओंठ लंबे हों ।
लय, पु. नृत्य, गीत, घर, वग़लगीरी, कयामत ।
ललत्, त्रि. कांपता हुआ, चाटता हुआ ।
ललन, चलन, केलि. (स्त्री.) (ना) जिव्हा, नारी ।
ललन्तिका, स्त्री. नाभितक लटकती हुई ।
ललाट, न. मस्तक, । पेशानी ।
ललाटंतप, त्रि. माथातपानेवाला, ।
ललाटिका, स्त्री. त्रि. टीका, बेंदा ।
ललाम, पु. न. भूषण, चिन्ह, माथे परका चिन्ह, ध्वजा, शृङ्ग, अश्व, प्रधान, प्रभाव ।
ललामक, न. माथेपर धरनेकी माला ।
ललित, पु. न. विलास, स्त्रियोंका भाव विशेष । (स्त्री) नृत्य, क्रीडा, हार वि०, स्त्रीगृह, (पु.) स्वर विशेष, (त्रि.) सुंदर, प्रिय, चंचल, (स्त्री.) (ता) गोपी विशेष ।
लाघव, न. लघुत्व, अपमान, क्लैब्य, स्वास्थ्य । ह-ल्कापन, वेइज़्ज़ती, बुजदिली, तनदरुस्ती ।
लाङ्गल, न. खनामख्यात भूमि कर्षण यंत्र, हल ।
लाङ्गलग्रह, पु. कृषक । किसान ।
लाङ्गलिक, त्रि. हलचलानेवाला (स्त्री.) (का) कि-सानकी, मोरकी पूंछ । [लाङ्गलाकार पुष्प ।
लाङ्गलिन्, पु. बलराम, नारकेल वृक्ष, सर्प (स्त्री.)
लाङ्-गूल, न. पुच्छ; पूंछ । [दुमदार ।
लाङ्गलिन्, पु. बंदर, नाम एक दवाईका (त्रि)
लाज, न. उशीर, पु. आर्द्रतण्डुल (स्त्री.) (जा) खस, भुंजे चावल, खील ।
लाञ्छ, न. नाम, चिन्ह, ध्वज (पु.) निन्दा । तिर-स्कार (स्त्री.) (ना) भर्त्सना, यन्त्रणा ।
लाञ्छित, त्रि. चिन्हित, तिरस्कृत । नशान ल-गाया हुआ, मलामत किया हुआ ।
लाट, पु. देश वि०, जीर्णभूषणादि, दोष, (त्रि.) पुरातन, मलिन । पुरानेज़ेवर वग़ैरह, ऐब, पुराना, मयला ।
लाटानुप्रास, पु. शब्दानुप्रास विशेष ।
लाप्य, त्रि. कथनीय; कहनेके लायक ।
लाभ, पु. फलवृद्धि, व्याज । सूद ।
लाम्पट्य, न. कामुकता । अय्याशी ।
लालन, न. अत्यन्त स्नेह करना; लड़ाना ।
लालसा, स्त्री. चिन्ह, चंचल, लोभ, आशा । बड़ी ख़ाहिश, मांग, हमलके निशान, हिरस, उमीद ।
लाला, स्त्री. मुखजात जल; लाल, थूक ।
लालिक, पु. महिप; भैंसा ।
लालित, त्रि. प्रतिपालित; पाला हुआ, लड़ाया हुआ । [पन, शीरीं ।
लालित्य, न. कोमलता, सरसता । मुलायमी, मीठा-
लालिन्, त्रि. चाटुक्ति कारक (पु) प्रलोभक, स्त्री. पुंश्चली । चापलूस, ख़ुशामदी, छिनाल औरत ।

लालुका, स्त्री. कण्ठभूषण वि० । हार ।
लाव, पु. स्त्री. छेदन, (स्त्री.) (वा) पक्षि वि० । ख़ास परिंदह ।
लावण, **लावणिक**, } त्रि. लवणयुक्त, लवणसंबंधीय, पु. लवण विक्रेता, (न.) लवणमात्र । निमकीन, निमकका, निमकवेचनेवाला, निमक, लंकाआदिदेश ।
लावण्य, न. निमकीन । नज़ाकत ।
लावू(वू), पु. स्त्री. अलाबु; कद्दू, तूं वा ।
लास, पु. नृत्यमात्र, स्त्रीनृत्य, यूष । नाच, औरतों का नाच, मूंग का काढ़ा ।
लासिक, (पु.) नर्तक, मयूर, (स्त्री.) (का) नर्तकी ।
लास्य, न. नृत्य, स्त्रीनृत्य, तौर्य्यत्रिक, (पु.) नर्त्तक, (स्त्री.) (स्या) नर्त्तकी ।
लिक्षा, स्त्री. यूकाण्ड; लीख ।
लिखित, न. लिपि, (त्रि.) लिखितपत्रादि, (पु.) मुनिविशेष । दस्तख़त, लिखा हुआ, नाम एक संत का । [हरण ।
लिगु, न. मन (पु.) मूर्ख, मृग । दिल, जाहिल,
लिङ्ग, न. चिन्ह, शिवमूर्त्तिविशेष, व्यक्त, पुंस्त्वादि, सामर्थ्य, कारण, शेफ । नशान, क़यास, शिवलिंग, अलामत, ज़ाहिर, ताक़त, सबब, केर ।
लिङ्गिन्, पु. हस्ती, धर्मध्वजी । हाथी, गुज़ारे के लिये ज़ात वग़ैरह नशान रखनेवाला तपस्वी ।
लिपि, स्त्री. लिखत । दस्तख़त । [सविर ।
लिपिकर(कार), लेखक, चित्रकार । कातिब, मु-
लिप्त, त्रि. भक्षित, कृत-लेपन, विपदिग्ध । खाया हुआ, लिपा हुआ, ज़हर से मिला हुआ ।
लिप्सा, स्त्री. इच्छा । ख़ाहिश; लेनेकी मरज़ी ।
लिप्सित, त्रि. वाञ्छित; चाहा हुआ । [विशनी ।
लिप्सु, त्रि. लाभेच्छु; लेना चाहनेवाला, लोभी ।
लिम्पाक, न. लिम्बुकविशेष, (पु.) जम्बीर, गर्द्दभ । काग़ज़ी नींबू, गलगल, गधा ।
लीढ, त्रि. आस्वादित; चाटा हुआ ।
लीन, त्रि. लयप्राप्त, मिश्रित, अन्तर्हित । छिपा हुआ, मिला हुआ, गुम ।
लीला, स्त्री. केली, क्रीड़ा, शोभा; खेल, तमाशा ।
लीला-वती, स्त्री. विलासवती, भास्कराचार्य्यकन्या गणितग्रन्थविशेष, न्यायग्रन्थविशेष ।
लीक्षा, स्त्री. यूकाण्ड; लीख ।
लीला-खेल, पु. १५ अक्षरका एक छन्द ।
लुक्कायित, त्रि. अन्तर्हित; छिपाया हुआ ।
लुञ्चित, त्रि. दूरीकृत, अपसारित । निकासा हुआ ।
लुठन, न. घोड़ेका लेटना, लेटना ।
लुठित, त्रि. लेटता हुआ । लेटा हुआ ।
लुण्ठक, पु. शाकविशेष । एक किसमका साग ।
लुण्ठाक, पु. चौर (स्त्री.) (की) चोरकी जोरू ।
लुण्ठक, त्रि. बलद्वारा अपहारक; लुटेरा, धाड़वी ।
लुप्त, न. अपहृत-धन, (त्रि.) नष्ट । ग़ायब, गुम ।
लुब्ध, पु. व्याध, लम्पट, (त्रि.) लोभी । शिकारी आदमी, अयाश, नाम नक्षत्रका, हरीस ।
लुब्धक, पु. व्याध, चाण्डाल, कामुक । फंदक, अयाश, हरीस ।
लुलाय, पु. महिष; भैंसा । [ख़ूबसूरत ।
लुलित, त्रि. आन्दोलित, रम्य । हिलाया हुआ,
लूता(निका), स्त्री. कीटविशेष, रोगविशेष । एक ख़ास कीड़ा, ख़ास बीमारी । [टना ।
लून, कर्त्तित, स्त्री. (नि) छेदन; कटा हुआ, का-
लूम, न. लाङ्गूल, एक रागिनी । [(खा) लकीर ।
लेख, पु. देवता, लेखन, (त्रि.) लेख्य, लिपि (स्त्री.)
लेखक, पु. लेखनकर्त्ता; लिखारु । कातिब ।
लेखन, न. अक्षर विन्यास; लिखना (स्त्री.) (नी) कलम (त्रि.) (नक) लिखारू, कातिब ।
लेण्ड, न. गूथ; गूंह । लेंडना । [सुधा ।
लेप, पु. लेपन, भोजन, (न.) लेपनसाधन वस्तु,
लेपक, पु. जातिविशेष; राज, मिस्तरी ।
लेपभुज(भाज्), ४ र्थ, ५ म और षष्ठ पुरुष । ४ थी, ५ मी, और ६ ठी पीढ़ी ।
लेलिहान, पु. शिव, सर्प्प, (त्रि.) वारम्वार लेहन कर्त्ता । सांप, चाटना, चाटनेवाला ।
लेश, पु. विन्दु; बूंद । ज़रासा ।
लेष्टु, पु. ढेला ।
लेह, **लेहन**, } न. जिव्हाद्वारा रसग्रहण; चाटना । ज़ायकह लेना ।
लेह्य, न. अमृत, (त्रि.) लेहनीय । चाटनेके लायक ।
लैङ्ग, न. पुराण विशेष ।
लोक, पु. भुवन, स्वर्ग मर्त्त्य पाताल, जन, दृष्टि, समूह । शख़स, नज़र, मजमह ।

लोक-चक्षुस्, पु. सूर्य्य । आफ़ताव ।
लोकन, न. दर्शन; देखना । दीदार ।
लोक-नाथ, पु. बुद्ध, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, राजा ।
लोक-पाल, पु. राजा, दिग्पाल, यथा १ इन्द्र २ अग्नि ३ यम ४ निर्ऋति ५ वरुण ६ वायु ७ कुवेर ८ शंकर ।
लोक-मातृ, स्त्री. नारायणपत्नी, लक्ष्मी ।
लोका-न्तर, न. अमुत्र, मृत्यु, अन्यव्यक्ति । आकिवत, मौत, दूसरा शख्स ।
लोकायत, न. नास्तिकमतकी पुस्तक ।
लोकायतिक, पु. चार्वाक मत, नास्तिक मत, (त्रि.) नास्तिक मतका ।
लोका-रण्य, न. जनता, भीड़ ।
लोक-वाह्य, (त्रि.) जहानसे बाहर ।
लोकालोक, पु. सूर्य्य किरण पर्वत परिधि विशेष ।
लोकेश, पु. ब्रह्मा, बुद्ध वि०, राजा, पारद; पारा ।
लोचक, पु. मांस पिण्ड, अक्षि-तारा, कज्जल, स्त्री. ललाट भूषण, कदली, नीलवस्त्र, कर्णपूर, निर्मोक, । गोश्तका टुकड़ा, आंखकी पुतली, बेना, केला, नीला कपड़ा (स्त्री.) (चिका) लुर्चा । सांपकी केंचली (पु.) सूर्य्य ।
लोचन, न. चक्षु । चश्म ।
लोठन, न. लोठना । लेटना
लोत, न. चोरीका माल, आंसू, निशान ।
लो(ध)ध्र, पु. श्वेतवर्ण वृक्ष विशेष । लोधरका दरख़्त । [पत्नी । गुम ।
लोप, पु. अदर्शन, (स्त्री.) (पा) लोपामुद्रा, अगस्त्य-
लोपाक, पु. शृगाल, (स्त्री.)(पिका) शृगाली । गीदड़, गीदड़ी ।
लोभ, पु. लालच, । हिरस ।
लोभिन्, त्रि. लोभी । लालची ।
लोभ्यमान, त्रि० लोपिता । लालची ।
लोमन, न. रोम । रोंगटा ।
लोम-पाद, पु. राजा विशेष ।
लोमश, त्रि. रोमवाला, (पु) मुनि विशेष (त्रि) याञ्चा करनेवाला । [विन, लालची, जुवान ।
लोल, त्रि. चंचल, लालची (ला) जिव्हा । मुतल-
लोलित, त्रि. हिलनेवाला । हिलाया हुआ ।
लोलुप(भ), अति लोभी । वहुत लालची ।
लोष्ट्र(ष्ट)(ष्टु), पु. ढेला ।
लोह, पु. न. लोहा धातु ।
लोह-कार, पु. लुहार ।
लोह-पृष्ठ, पु. कंकपक्षी ।
लोहमय, त्रि. लोहसे वना हुआ ।
लोहित, त्रि. लालरंगका, (पु.) सुरख़, मंगल ।
लोहितक, पु. पद्म, कुवड़ा, (न.) पित्तल ।
लोहिता-श्व, **लोहिता-ङ्ग**, पु. मंगल ग्रह ।
लोहितायस(स), न. ताम्र; तांमा ।
लोहिनी, स्त्री. लाल रंगकी ।
लौकिक, त्रि. लोक प्रसिद्ध । आम, मशहूर ।
लौल्य, त्रि. चांचल, पन, तलव्वन, लोभ ।
लौह, पु. न. लोहा चुम्बको द्रावकश्चैव कर्षको भ्रामकस्तथा (त्रि.) लोहेका ।
लौहित्य, न. लाली, (पु.) ब्रह्मपुत्र नद, वालसमुद्र ।

व.

व, पु. वायु, वरुण, सान्त्वन, कल्याण, समुद्र, व्याघ्र, वसन, शाल्क, (न) वस्त्र (व्य) सादृश्य ।
वंश, पु. पुत्र पौत्रादि । खान्दान, पीठकी हड्डी ।
वंशक, पु. मछली (स्त्री.) (का) वांसरी ।
वंश-कर्पूर-लोचना, स्त्री. वंश पर्वतस्थित औषधि विशेष; वंसलोचन, तवाशीर ।
वंशरो(लो)चना, **वंशशर्करा**, स्त्री. वंसलोचना । तवाशीर ।
वंश-स्थविल, न. १२ अक्षर छंदो विशेष, वंशछिद्र; वांसका सुराख़ ।
वंशावलि(ली), स्त्री. वंशश्रेणी । कुरसीनामा ।
वंशिक, न. खुशबूई, (त्रि.) खान्दानी; वांसका ।
वंशी, स्त्री. मुरली ६४ चौसठ मासे ।
वंशीधर(धारिन्), पु. श्रीकृष्ण, मुरलीधर ।
वंशीय, त्रि. गोत्रज; गोत्री, जातभाई ।
वंश्य, त्रि. वंशका । खान्दानी ।
वंहिष्ठ, **वंहीयस्**, त्रि. अतिशय वहुल । ज्यादहतर ।
वक, पु. कुवेर, वगला; लक्ष्मीका भंडारी, राक्षस, जिसे श्रीकृष्णजीने माराथा । [पांच दिन ।
वक-पञ्चक, न. कार्तिक सुदि एकादशीसे पूर्नोतक
वकु(कू)ल, पु. स्वनामख्यात पुष्पवृक्ष (स्त्री.) (ली) काकोली, नामौषधि विशेष ।

वकेरुका, स्त्री. बक श्रेणी। बगलोंकी कतार।
वक्तव्य, त्रि. निन्दनीय, कथन योग्य (न.) वचन, निंदाके लायक, कहनेके लायक, कलाम।
वक्तृ, पु. वक्ता। मुतकल्लम।
वक्त्र, न. मुख, तगर मूल, वस्त्र विशेष, छंदो वि०। मुह, तगरका मूल, खासकपड़ा. खासबहर।
वक्त्र-खुर, पु. दन्त। दांत।
वक्त्र-तुण्ड, पु. गणेश, शुआ, तोता।
वक्त्र-पक्ष, पु. अश्वादि भोजन पात्र; तोवरा।
वक्र, न. नदीवक्र (पु.) शनैश्वर, रुद्र, त्रिपुरासुर, पर्प्पट, क्रूर, खल। नदीकी टेढ़, सांतवां ग्रह, शिव, कुवड़ा, वेरहम, कमीना।
वक्रवक्र, पु. शूकर, वराह, (त्रि.) कुटिल-मुख। सूअर, तिरछे मुहवाला।
वक्रम(न्), पु. पलायन; भागजाना।
वक्रि, त्रि. मिथ्यावादी; झूंठा।
वक्रिन्, पु. बुद्ध (त्रि.) वक्रताविशिष्ट; टेढ़ा।
वक्रोक्ति, स्त्री. काव्यालंकार विशेष। तनज़; रमज़।
वक्षस्, न. हृदय, उरस्थल। सीना, छाती।
वक्षो-ज, **वक्षो-रुह**, } पु. स्तन। पिस्तान।
वक्ष्यमाण, त्रि आगे कहने योग्य, कहनेकी बात।
वगाह, पु. अवगाहन। आबूरकरन। [बोलनेवाला।
वग्नु, पु. वक्ता, वावदूक। मुतकल्लिम, ज्यादह
वङ्क, पु. नदीवक्र। दर्याकी टेढ़, काठीका मोहड़ा।
वङ्किम, पु. वक्र; टेढ़ा। [गुन, कपास।
वङ्ग, पु. धातु विशेष, त्रपु; रांग, सीसा, बङ्गाल, वें-
वङ्गज, न. सिन्दूर (त्रि.) वंग देश जात; संधूर, बंगालेका मुल्क।
वङ्गन, न. वार्त्ताकु; वेंगन।
वङ्गारि, पु. हरिताल।
वचंडी, स्त्री. शारिका, वस्त्र विशेष।
वचन, न. वाक्य, कथन, ऋषिप्रणीत पद्य। विभक्तिका एकत्व आदि।
वचनीय, त्रि. कथनीय, निन्दनीय, (न.) निंदा।
वचनीयता, स्त्री. निंदा। हजो।
वचलु, पु. शत्रु, दोष। दुश्मन, ऐब।
वचा, स्त्री. वचन, वाक्य। कलाम।
वज्र, पु. न. इन्द्रास्त्र विशेष, रत्न विशेष, श्रीकृष्णप्रपौत्र, पञ्चदश योग, (न) वालक, (स्त्री.) धात्री, काञ्जिक, वज्रपुष्प, लोह विशेष, अभ्र विशेष।
वज्र-चर्म्मन्, पु. खड्गी; गैंडा।
वज्र-जित्, पु. गरुड़पक्षी।
वज्र-दन्त, पु. शूकर, मूषक, रावणका सेनानी। सूअर, मूसा, रावनकासिपह सालार।
वज्र-धर, पु. इन्द्र, जिन विशेष।
वज्रनिर्घोष(निष्पेष)(निःस्वन्), पु. वज्रजनित शब्द स्फूर्जथु। वज्रकी आवाज़, गर्जन।
वज्र-रद, पु. शूकर, वज्रतुल्य दंत। सूअर, वज्रतुल्य दांतवाला।
वज्रिन्, पु. इन्द्र, (स्त्री.) (ज्रीं) लुही वृक्ष विशेष।
वञ्चक, पु. श्रृगाल, खल, धूर्त, प्रतारक। गीदड़, कमीना, शरीर, ठग।
वञ्चन, न. ठगी, (स्त्री.) (ना) ठगी, फ़रेब।
वञ्चित, त्रि. ठगा हुआ। फ़रेब खाया हुआ।
वञ्जुल, पु. अशोकवृक्ष, वेतसवृक्ष, वकुलवृक्ष, पक्षी विशेष, स्थल पद्म वृक्ष, बहुदुग्धा गौ।
वट, पु. वटका पेड़, कौड़ी, जटा, दायरा, खुराक, सनकी रस्सी, (स्त्री.) (टि) काकली। [पैमाना।
वटक, पु. वड़ा, स्त्री. (टी) (टिका) वड़ी, ८ मासेका
वटर, पु. कुक्कुर, शठ, चौर, चञ्चल। मुर्ग, लुच्चा, चोर, मुतलव्विन।
वटु(क), पु. माणवक, ब्राह्मण, ब्रह्मचारी, बालक।
वठर, पु. मूर्ख, अम्बष्ठ, शब्दकार, वक, (त्रि) शठ। जाहिल, वैद्य, कौम, टेढ़ा, लुच्चा।
वडवा, स्त्री. घोड़ी, पहिला नक्षत्र, समुंदरी आग, कनीज़।
वडवा(ग्नि)(नल)(मुख), पु. समुदरकी आग।
वडा, स्त्री. पिष्टक विशेष।
वडाभ(भी), भि, स्त्री. चौबारा, ऊपरकी छत।
वडिश, न. स्त्री. मत्स्यधारणार्थ वक्र लोहकंटक विशेष; (स्त्री.) (शी) मच्छी पकड़नेकी कुंडी।
वड्, त्रि. बृहत्, श्रेष्ठ; बड़ा, अच्छा।
वण्ट, पु. बाटना, बांट (त्रि.) कंवारा।
वणिज्(ज), पु. वाणिज्यकारक, करणवि०, वैश्यजाति; बनियां, ६ ठा, करण। [ब्योपार।
वणिज्य, न. वाणिज्य (स्त्री.) (ज्या) वणिग्वृत्ति।

वण्ट, पु. हिस्सा, दातीकी मुट्ठी, क्वारा। [निवाला।
वण्टक, पु. भाग (त्रि) भागकर्त्ता। हिस्सा बांट-
वण्टन, न. भागकरण; बांटना।
वण्ड, पु. क्वारा, पाहुना, वरछी।
वण्ठर, पु. कुक्कुर-लाङ्गूल, मेघ; कुत्तेकी पूंछ, बादल। [कुदाल।
वण्ठाल, पु. शूरयुद्ध, नौका, खनित्र। जंग, नाव,
वत, व्य. खेद, अनुकम्पा, सन्तोष, विस्मय, आमंत्रण (तृ) तुल्य। तक्लीफ़, मेहरबानी, सबर, तअज्जुब, दावत, मानिंद, कानफूल।
वर-वर्णिनी, स्त्री. अत्युत्तमास्त्री। नेक औरत। लाख, हल्दी, रोचना, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी।
वर-वारण, पु. उत्तम हस्ती। उमदह हाथी।
वरम्, व्य. न. ईषत्प्रिय, अपेक्षाकृत उत्कृष्ट। थोड़ा प्यारा, किसीसे अच्छा। [पत्नी।
वरयितृ, पु. भर्त्ता, वरण कारयिता (त्री) (त्री)
वर-रुचि, पु. विक्रमकी सभाके ८ कविराजोंमेंसे १ क, कात्यायन। [विरनी।
वरण्ट, पु. स्त्री. वरट, (स्त्री) (टी) हंसी। हंस
वरण, न. निरोग, पूजा, प्रार्थना, इच्छा, वेष्टन, पु. प्राचीर, उष्ट्र, (णा) काशीस्थनदी. [विचारा।
वराक, पु. शिव, बुद्ध, नीच, (त्रि) शोचनीय।
वराङ्ग, न. मस्तक, गुह्य, योनी, (त्रि) श्रेष्ठावयव (पु) हस्ती, विष्णु (स्त्री) (ङ्गी) हरिद्रा, श्रेष्ठाङ्गयुक्ता।
वराट, पु. कपर्दक, रज्जु, पद्मबीज (स्त्री) (टी) कौड़ी, रस्सी, कौलगट्टा।
वराटक, त्रि. (स्त्री) (टिका) कौड़ी।
वराणसी, स्त्री. काशी; बनारस।
वराशि, पु. स्थूल वस्त्र; मोटा कपड़ा।
वरासन, न. वडूपुष्प, उत्तमासन, पु. लम्पट, द्वारपाल। जवाका फूल, उमदह आसन, आयाश, दरबान।
वरासि, पु. स्थूल वस्त्र (स्त्री) (सी) मलिन वस्त्र,। मोटा कपड़ा, मयला कपड़ा।
वराह, पु. सूअर, खास एक पहाड़, मूंथा, घड़याल, खास एक टापू, हरएक किसकी मुथा।
वरिवस्, व्य. पूजा, सेवा। इबादत।
वरिवसि, पु. सेवित, पूजित। [वाला।
वरिवसितृ, त्रि. पूजक, सेवक। इबादत करने-
वरिवस्या, स्त्री. शुश्रूषा, उपासना, पूजा, सेवा। खिदमत।
वरिष्ठ, न. ताम्र, मरिच, (त्रि) श्रेष्ठतम, वत्स, (पु) तित्तरी पक्षी। तांबा, मिरच, बहुत उमदह, बच्छा, तीतर, योगविशेष।
वरी(ली)वर्द्द, पु. वृष; बैल।
वरीयु, पु. काम।
वरुट(ड), पु. म्लेच्छ जातिविशेष। वरड़कौम।
वरुण, पु. देवता विशेष। जल, सूर्य्य, पानीका देवता पानी, सूरज।
वरुण-पत्नी, स्त्री. वरुणानी। वरुणकी स्त्री।
वरुणात्मजा, स्त्री. वारुणी, मदिरा।
वरुत्र, न. उत्तरीय वस्त्र; दुपट्टा।
वरुणानी, स्त्री. वरुणपत्नी।
वरूथ, न. तनुत्राण, चर्म्मगृह, (स्त्री) (थी) सेना, संजोह, चमड़ा, घर, फौज।
वरूथिन् पु. रथ, (नी) सेना।
वरेण्य, त्रि. प्रधान (न) कुंकम। [अरीफ़ करना।
वर्णन, न. (स्त्री) (र्णी) स्तुति, विवरण, बयान। त-
वर्ण-संकर, पु. अनुलोम, वा. विलोम,। दोगला।
वर्व, पु युव पशु, मेषशावक, छाग, परिहास। जवान, हैवान, मेढेका बचा, बकरा, ठट्ठा।
वरेण्य, न. श्रेष्ठ, प्रार्थनीय, कुंकुम। [धानी।
वरेन्द्र, पु. राजा, इन्द्र, (न्द्री) गौड देशकी राज-
वर्कंद, पु. तरुण पशु। [मजमह, बाब, कोशिश।
वर्ग, पु. सजातीय समूह, ग्रंथ परिच्छेद, कृति।
वर्ग-मूल, न. पूरित समानाङ्क द्वय घातैकाङ्क। जज़र।
वर्गीय, त्रि. वर्गगणित; वर्गका। [मक।
वर्चस, न. रूप, विष्ठा, दीप्ति। हुसन, मैल, च-
वर्चस्क, पु. न. विष्ठा; गूंह।
वर्चस्विन्, पु. चंद्र (त्रि) तेजस्वी। चांद, चमकीला, शानशौकतवाला।
वर्ज्जन, न. हिंसा, त्याग। कतल, तर्क करना, मारना,
वर्ण, न. कुङ्कुम. पु. ब्राह्मणादि जाति, गज-चित्रकंबल, (न) शुक्ल कृष्णादि रंग, यश, गुण स्तुति, स्वर्ण, मत, रूप, अक्षर, भेद, चित्र, तालविशेष, (पु. न) विलेपन, ककारादि, । केसर, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र। हाथीकी झुल, रंग, नामवरी, सिफ़त, तारीफ़, सोना॰शकल, हरुफ़, नकशा।

वर्णक, पु. न. हरिताल, चंदन, न. उबटन, विलेपन द्रव्य, (पु.) चारण, स्तुतिपाठक, मण्डल । [फर्ज़ ।
वर्ण-तुलि(का), स्त्री. लेखनी । क़लम ।
वर्ण-धर्म्म, पु. न. जातिधर्म्म । ब्राह्मण आदिका
वर्णन, न. स्तवन, विस्तरण, दीपन (स्त्री) (ना) गुणकथन । तअ़रीफ़, बयान ।
वर्ण-वृत्त, न. छन्दोक्षरविन्यासविशेष । बहर में हरूफ़ोंका शुमार ।
वर्ण-माला, स्त्री. अक्षर श्रेणी । हरूफ़तहज्जी ।
वर्णरे(ले)खा, स्त्री. कठिनी; खड़िया मट्टी ।
वर्ण-सङ्कर, पु. मिश्रित जाति; दोग़ला ।
वर्णसि, पु. जल; पानी ।
वर्णा, स्त्री. आढ़की; पैमाना ।
वर्णि, न. स्वर्ण; सोना ।
वर्णिक, पु. लेखक (स्त्री) (का) कठिनी, मसि । कातिव, खड़िया, स्याही ।
वर्णिन्, पु. लेखक, चित्रकर (त्रि) वर्ण सम्बन्धीय (स्त्री) (नी) हरिद्रा, वनिता । कातिव, नक़ाश, ज़ातका, हलदी, जोरू ।
वर्णिलिङ्गिन्, पु. ब्रह्मचारी ।
वर्ण्य, त्रि. वर्णनीय । बयान के लायक ।
वर्त्तक, पु. पक्षीविशेष, (का) वटेर (पु) अश्वमुख ।
वर्त्तन, न. स्थापन, प्रेपण, वृत्ति, जीविका, पथ. (स्त्री) (नी) पथ, तूलनाला (पु.) वामन, (त्रि) वृत्तियुक्त, वर्तमान । रोज़ी, गोल, पस्तकद ।
वर्त्तमान, पु. प्रयोगाधिकरणीभूतकाल (त्रि) तत्काल वृत्त, । हाल, मौजूद ।
वर्तिक, पु. पक्षीविशेष (स्त्री) (का) वटेर, वत्ती ।
वर्त्तित, त्रि. निष्पादित; बनाया हुआ ।
वर्त्तिन्, त्रि. वर्तनशील, स्थितिशील ।
वर्त्तिष्णु, } पु. भविष्यत्काल, (त्रि) तद्वृत्ति ।
वर्त्तिष्यमाण, } मुस्तकबिल, होनहार ।
वर्तुल, त्रि. गोलाकार (स्त्री) (ला) गजपीपल ।
वर्त्मन्, न. पथ, आचार । रास्ता, चलन ।
वर्द्ध, पु. पूर्ण, छेदन ।
वर्द्धक, त्रि. पूरक । बढ़ानेवाला ।
वर्द्धकि(किन्), पु. त्वष्टा; बढ़ई ।
वर्द्धन, न. छेदन, वृद्धि (त्रि) वर्द्धिष्णु (स्त्री) (नी) घटी, सम्मार्जनी । काटना, बढ़ाना, बढ़नेवाला घड़ी झाड़ू । [वि०, (त्रि)वृद्धिशील चढ़नेवाला ।
वर्द्धमान, पु. देशवि०, विष्णु, पंडितवि०, जिन-
वर्द्ध-मानक, पु. शराव ।
वर्द्धित, त्रि. पंडित, पोषित; बढ़ाया हुआ ।
वर्ण, पु. नदविशेष, सूर्य्य । ख़ास दर्या, आफ़ताब ।
वर्द्धिष्णु, त्रि. वर्द्धनशील; बढ़नेवाला । [तसमा ।
वर्द्ध, न. चर्म्म, (स्त्री) (र्द्धी) चर्म्मरज्जु । चमड़ा,
वर्म्मन्, न. (र्म्म) संजोह, कवच, (पु) (र्म्मा) क्षत्रिय पदवी । [पहिरे हुए, जवान ।
वर्मधार, त्रि. कवचधारी (पु.) तरुण । ज़राबक्तर-
वर्म्मि, पु. मत्स्यविशेष; मछली ।
वर्मित, त्रि. वर्णयुक्त । रंगीला ।
वर्म्मिन्, पु. कवची; संजोहधारी ।
वर्य्य, त्रि. प्रधान, श्रेष्ठ (पु.) कामदेव (स्त्री) (र्य्या) कन्या, पतींवरा । सर्दार, नेक, क्वारी लड़की ।
वर्वट, पु. राज—माष (स्त्री) (टी) पण्ययोषा, व्रीहिविशेष । पहाड़ी माष, कंचनी, एक क़िसम के धान ।
वर्वणा, स्त्री. नील मक्षिका । स्याह मक्खी ।
वर्वर, न. हिङ्गुल, पीत चन्दन, (पु.) पामर, नीच जाति, केश, देशविशेष, वृक्ष विशेष, (स्त्री) (रा) पुष्पविशेष, शाकविशेष, मक्षिका विशेष, क्षुद्रवृक्ष विशेष । संदल, कमीना, बाल, ख़ास मुल्क ।
वर्वरी, } स्त्री. क्षुद्र वृक्षवि०; न्याजबूका पोदा ।
वर्वा, }
वर्ष, पु. न. वृष्टि, वत्सर, जम्बूद्वीप, जंबू द्वीपके ९ खण्ड । भारत, किंपुरुष, .हरि, रुमण्वक, हिरण्मय, कुरु, इलावृत्त, भद्राश्व, केतुमाल, (स्त्री) (र्षा) बारिश ।
वर्षण, न. वृष्टि, (स्त्री) (णी) क्रुति । बारिश ।
वर्ष-पर्वत, पु. वर्षविभाजक गिरि, यथा । हिमालय, हेमकूट आदिशीतपहाड़, हिमवान् हिमकूटश्च निषधोमेरुरेवच श्वेतो नीलश्च श्रृङ्गी च सप्तैते वर्षपर्वताः ।
वर्षवट, पु. षण्ड; हिजड़ा ।
वर्ष-वृद्धि, स्त्री. जन्या तिथि ।
वर्षाभू, पु. भेक (स्त्री) भेकी, पुनर्नवा, त्रि. वर्षाजात । मेंड़क, मेंड़की, बारशकी पैदायश ।

वर्षामद(मोद), पु. मयूर; मोर।
वर्षिष्ठ, वर्षीयस्, } त्रि. अतिवृद्ध; बड़ा बूढ़ा।
वर्षुक, त्रि. वर्षण शील; बरसनेवाला।
वर्षोपल, पु. करका; ओला। [शकल, पैमाना।
वर्ष्मन्, न. देह, आकार, परिमाण। जिसम,
वर्ह, न. मयूर पुच्छ, अग्नि-दीप्ति, यज्ञ, । मोरकी पूंछ, आग, चमक, यज्ञ।
वर्हण, न. पत्र; पत्ता।
वर्हिस्, पु. अग्नि, दीप्ति, यज्ञ, चित्रक, (पु. न.) कुश, तृण (न) ग्रन्थिपर्ण; आग, चमक, चित्रा का पौदा, कुशा का तिनका, खास पौदा।
वर्हिःशुष्मन्, पु. अग्नि; आग।
वर्हिण(न्), पु. मयूर; मोर।
वर्हिर्मुख, पु. देवता। [बल्ख।
वलक्ष, पु. शुक्लवर्ण (त्रि) शुक्ल, सुपेद रंग, सुपेद,
वल-ज, न. क्षेत्र, पुरद्वार, शस्य, युद्ध, त्रिवलजात, खेत, शहरका दरवाज़ा, अनाज, जंग।
वलय, पु. रोगविशेष, (पु. न.) हाथका कड़ा।
वलयित, त्रि. वेष्टित; लपेटा हुआ।
वला(स), पु. श्लेष्मा। कफ़।
वलासक, पु. कोकिल, भेक; कोइल, मेंडक।
वलाह, न. वारि; पानी।
वलाहक, पु. मेघ, पुस्तक, पर्वत, दैत्यविशेष, नाग विशेष, श्रीकृष्ण घोटकविशेष।
वलित, त्रि. वेष्टित; लपेटा हुआ।
वलीक, न. वलीक देखो।
वलूक, न. पद्मसमूह। बहुत कमल।
वलूल, त्रि. वल्कल, शल्क, खण्ड, (पु) लोध, छिलका, मच्छीका कांटा, हिचड़ा, लोध, दालचीनी।
वल्कल, न. पेड़का छिलका।
वल्ग, त्रि. सुन्दर। खूबसूरत।
वल्गा, स्त्री. रस्सी। लगाम।
वल्गित, न. अश्वगतिवि०, पु. घोड़ेकी खासचाल।
वल्गु, पु. छाग, (त्रि) सुन्दर। बकरा, खूबसूरत।
वल्गुक, न. नन्दन, विपिन, चान्द, पण, (त्रि.) रुचिर, सुन्दर, जंगल, कीमत, खूबसूरत।
वल्मि(ल्मी)क, पु. वर्मा; वाल्मीक।
वल्ल, पु. गुञ्जत्रयपरिमाण। तीन रत्तीभर।
वल्लकी, स्त्री. वीणा, वृक्षविशेष। बीनबाजा।
वल्लभ, पु. अध्यक्ष, शुभलक्षण कान्त घोटक (स्त्री) (भा) जाया, (त्रि) प्रिय। मालक, उमदा घोड़ा, जोरू, प्यारा, दिलपसंद।
वल्लव, पु. गोप, (त्रि) सूपकार, (स्त्री) (वी) गोपपत्नी; ग्वाला, बावरची, ग्वालन।
वल्लभ-जन, पु. प्यारा। अज़ीज़। [लता।
वल्लर, (स्त्री) (रि) (री) मञ्जरीमें घिका, चित्रमूल
वल्लि(ल्ली), स्त्री. लता, पृथिवी; बेल, ज़मीन।
वल्लूर, त्रि. रौद्रद्वारा शुष्क मांस, शूकर मास, वनक्षेत्र, वाहन, ऊषरभूमि, । धूप वग़ैरहसे सूका हुआ गोश्त, सूअरका गोश्त, जंगल, खेत, सवारी, काली ज़मीन।
वल्या, स्त्री. धात्रिवृक्ष; आमलेका दरख़्त।
वव, पु. (द्वि) करण विशेष।
वश, न. इच्छा, प्रभुत्व, अयत (त्रि) अयत्त (पु.) वेश्यागृह, जन्म, । ख्वाहिश, बड़ाई, हकूमत, कंचनीका घर, पैदायश।
वश-म्वद, त्रि. अपक्षकर वाक्यवक्ता, वशीभूत। हकूमतसे बोलनेवाला, शीरींकलां, अधीन।
वश-ग, त्रि. वशीभूत, (स्त्री) वशीभूता, तावहदार।
वशता, स्त्री. अधीनता। ताबहदारी।
वश-वर्तिन्, त्रि. वशीभूत। तावेदार।
वशा, स्त्री. वन्ध्या स्त्री, योषा, कन्या, गवी हस्तनी, वन्ध्या गवी; बांझ औरत, लड़की, गाय, हथनी, बांझ गाय।
वशा-नुग, त्रि तावहदार. अधीन।
वशिक, त्रि. शून्य (स्त्री) (का) सूना। खाली।
वशित्व, न. अपने आपको वसमें रखना।
वशिर, न. समुद्र, लवण, (पु) गजपिप्पली, अपामार्ग, वचा; समुन्दरी निमक, गजपीपल, अपुठ कांटा, वच।
वशिष्ट, वशिष्ठ, वसिष्ट, } पु. स्वनामख्यात मुनि, मित्रावरुणीका बेटा, अरुंधतीका खाविंद।
वश्य, न. लवंग, (पु) वश (स्त्री) (श्या) वशग, तावहदार, फ़रमाबरदार औरत।
वषट्-कार, अ. देवोद्देश्य हविस्त्यागमंत्र; देवताके उद्देश्य हवि देनेका मंत्र।

वर्णक, पु. न. हरिताल, चंदन, न. उबटन, विलेपन द्रव्य, (पु.) चारण, स्तुतिपाठक, मण्डल ।
वर्ण-तुलि(का), स्त्री. लेखनी । क़लम । [फर्ज़ ।
वर्ण-धर्म्म, पु. न. जातिधर्म्म । ब्राह्मण आदिका
वर्णन, न. स्तवन, विस्तरण, दीपन (स्त्री) (ना) गुणकथन । तअ़रीफ़, बयान ।
वर्ण-वृत्त, न. छन्दोक्षरविन्यासविशेष । बहर में हरूफ़ोंका शुमार ।
वर्ण-माला, स्त्री. अक्षर श्रेणी । हरूफ़तहज्जी ।
वर्णरे(ले)खा, स्त्री. कठिनी; खड़िया मट्टी ।
वर्ण-सङ्कर, पु. मिश्रित जाति; दोग़ला ।
वर्णसि, पु. जल; पानी ।
वर्णा, स्त्री. आढ़की; पैमाना ।
वर्णि, न. स्वर्ण; सोना ।
वर्णिक, पु. लेखक (स्त्री) (का) कठिनी, मसि । कातिब, खड़िया, स्याही ।
वर्णिन्, पु. लेखक, चित्रकर (त्रि) वर्ण सम्बन्धीय (स्त्री) (नी) हरिद्रा, वनिता । कातिब, नक़ाश, ज़ातका, हलदी, जोरू ।
वर्णिलिङ्गिन्, पु. ब्रह्मचारी ।
वर्ण्य, त्रि. वर्णनीय । बयान के लायक ।
वर्त्तक, पु. पक्षीविशेष, (का) बटेर (पु) अश्वखुर ।
वर्त्तन, न. स्थापन, प्रेषण, वृत्ति, जीविका, पथ. (स्त्री) (नी) पथ, तूलनाला (पु.) वामन, (त्रि) वृत्तियुक्त, वर्तमान । रोज़ी, गोल, पस्तकद ।
वर्त्तमान, पु. प्रयोगाधिकरणीभूतकाल (त्रि) तत्काल वृत्त, । हाल, मौजूद ।
वर्तिक, पु. पक्षीविशेष (स्त्री) (का) बटेर, बत्ती ।
वर्त्तित, त्रि. निष्पादित; बनाया हुआ ।
वर्त्तिन्, त्रि. वर्त्तनशील, स्थितिशील ।
वर्त्तिष्णु, **वर्त्तिष्यमाण**, } पु. भविष्यत्काल, (त्रि) तद्वृत्ति । मुस्तकबिल, होनहार ।
वर्तुल, त्रि. गोलाकार (स्त्री) (ला) गजपीपल ।
वर्त्मन्, न. पथ, आचार । रास्ता, चलन ।
वर्द्ध, पु. पूर्ण, छेदन ।
वर्द्धक, त्रि. पूरक । बढ़ानेवाला ।
वर्द्धकि(किन्), पु. त्वष्टा; बढ़ई ।
वर्द्धन, न. छेदन, वृद्धि (त्रि) वर्द्धिष्णु (स्त्री) (नी) घटी, सम्मार्जनी । काटना, बढ़ाना, बढ़नेवाला घड़ी झाड़ू । [वि॰, (त्रि)वृद्धिशील बढ़नेवाला ।
वर्द्धमान, पु. देशवि॰, विष्णु, पंडितवि॰, जिन
वर्द्धमानक, पु. शराव ।
वर्द्धित, त्रि. पंडित, पोषित; बढ़ाया हुआ ।
वर्ण, पु. नदविशेष, सूर्य्य । ख़ास दर्या, आफ़ताब ।
वर्द्धिष्णु, त्रि. वर्द्धनशील; बढ़नेवाला । [तसमा ।
वर्द्ध, न. चर्म्म, (स्त्री) (द्धी) चर्म्मरज्जु । चमड़ा,
वर्म्मन्, न. (र्म्म) संजोह, कवच, (पु) (र्म्मा) क्षत्रिय पदवी । [पहिरे हुए, जवान ।
वर्मधार, त्रि. कवचधारी (पु.) तरुण । ज़राबक्तर
वर्म्मि, पु. मत्स्यविशेष; मछली ।
वर्मित, त्रि. वर्णयुक्त । रंगीला ।
वर्म्मिन्, पु. कवची; संजोहधारी ।
वर्य्य, त्रि. प्रधान, श्रेष्ठ (पु.) कामदेव (स्त्री) (र्य्या) कन्या, पतींवरा । सर्दार, नेक, क्वारी लड़की ।
वर्वट, पु. राज-माष (स्त्री) (टी) पण्ययोषा, त्रीहिविशेष । पहाड़ी माष, कंचनी, एक क़िस्म के धान ।
वर्वणा, स्त्री. नील मक्षिका । स्याह मक्खी ।
वर्वर, न. हिङ्गुल, पीत चन्दन, (पु.) पामर, नीच जाति, केश, देशविशेष, वृक्ष विशेष, (स्त्री) (रा) पुष्पविशेष, शाकविशेष, मक्षिका विशेष, क्षुद्रवृक्ष विशेष । संदल, कमीना, बाल, ख़ास मुल्क ।
वर्वरी, **वर्वा**, } स्त्री. क्षुद्र वृक्षवि॰; न्याजवूका पोदा ।
वर्ष, पु. न. वृष्टि, वत्सर, जम्बूद्वीप, जंबू द्वीपके ९ खण्ड । भारत, किंपुरुष, हरि, रम्यक, हिरण्मय, कुरु, इलावृत्त, भद्राश्व, केतुमाल, (स्त्री) (र्षा) बारिश ।
वर्षण, न. वृष्टि, (स्त्री) (णी) कृति । बारिश ।
वर्ष-पर्वत, पु. वर्षविभाजक गिरि, यथा । हिमालय, हेमकूट आदिशीतपहाड़, हिमवान् हेमकूटश्च निषधोमेरुरेवच श्वेतो नीलश्च शृङ्गी च सप्तैते वर्षपर्वताः ।
वर्षघट, पु. खण्ड; हिजड़ा ।
वर्ष-वृद्धि, स्त्री. जन्म तिथि ।
वर्षाभू, पु. भेक (स्त्री) भेकी, पुनर्नवा, त्रि. वर्षाजात । मेंढ़क, मेंढ़की, बारशकी पैदायश ।

वर्षामद(मोद), पु. मयूर; मोर।
वर्षिष्ठ, } त्रि. अतिवृद्ध; बड़ा बूढ़ा।
वर्षीयस्, }
वर्षुक, त्रि. वर्षण शील; बरसनेवाला।
वर्षोपल, पु. करका; ओला। [शकल, पैमाना।
वर्ष्मन्, न. देह, आकार, परिमाण। जिसम,
वर्ह, न. मयूर पुच्छ, अग्नि-दीप्ति, यज्ञ,। मोरकी पूंछ, आग, चमक, यज्ञ।
वर्हण, न. पत्र; पत्ता।
वर्हिस्, पु. अग्नि, दीप्ति, यज्ञ, चित्रक, (पु. न.) कुश, तृण (न) ग्रन्थिपर्ण; आग, चमक, चित्रा का पौदा, कुशा का तिनका, खास पौदा।
वर्हिःशुष्मन्, पु. अग्नि; आग।
वर्हिण(न्), पु. मयूर; मोर।
वर्हिर्मुख, पु. देवता। [वलक्ष।
वलक्ष, पु. शुक्लवर्ण (त्रि) शुक्ल, सुपेद रंग, सुपेद,
वल-ज, न. क्षेत्र, पुरद्वार, शस्य, युद्ध, त्रिवलजात, खेत, शहरका दरवाजा, अनाज, जंग।
वलय, पु. रोगविशेष, (पु. न.) हाथका कड़ा।
वलयित, त्रि. वेष्टित; लपेटा हुआ।
वला(स), पु. श्लेष्मा। कफ।
वलासक, पु. कोकिल, भेक; कोइल, मेंडक।
वलाह, न. वारि; पानी।
वलाहक, पु. मेघ, पुस्तक, पर्वत, दैत्यविशेष, नाग विशेष, श्रीकृष्ण घोटकविशेष।
वलित, त्रि. वेष्टित; लपेटा हुआ।
वलीक, न. वलीक देखो।
वल्कूक, न. पद्मसमूह। बहुत कमल।
वल्कूल, त्रि. वल्कल, शल्क, खण्ड, (पु) लोध, छिल्का, मच्छीका कांटा, हिजड़ा, लोध, दालचीनी।
वल्कल, न. पेड़का छिलका।
वल्ग, त्रि. सुन्दर। खूबसूरत।
वल्गा, स्त्री. रस्सी। लगाम।
वल्गित, न. अश्वगतिवि०, पु. घोड़ेकी खासचाल।
वल्गु, पु. छाग, (त्रि) सुन्दर। बकरा, खूबसूरत।
वल्गुक, न. चन्दन, विपिन, चान्द, पण, (त्रि.) रुचिर, सुन्दर, जंगल, कीमत, खूबसूरत।
वल्मि(ल्मी)क, पु. वर्मी; वाल्मीक।
वल्ल, पु. गुञ्जात्रयपरिमाण। तीन रत्तीभर।

वल्लकी, स्त्री. वीणा, वृक्षविशेष। बीनबाजा।
वल्लभ, पु. अध्यक्ष, शुभलक्षण कान्त घोटक (स्त्री) (भा) जाया, (त्रि) प्रिय। मालक, उमदा घोड़ा, जोरू, प्यारा, दिलपसंद।
वल्लव, पु. गोप, (त्रि) सूपकार, (स्त्री) (वी) गोपपत्नी; ग्वाला, बावरची, ग्वालन।
वल्लभ-जन, पु. प्यारा। अज़ीज़। [लता।
वल्लर, (स्त्री) (रि) (री) मञ्जरीमे षिका, चित्रमूल
वल्लि(ल्ली), स्त्री. लता, पृथिवी; बेल, ज़मीन।
वल्लूर, त्रि. रौद्रद्वारा शुष्क मांस, शूकर मास, वनक्षेत्र, वाहन, ऊषरभूमि,। धूप वग़ैरहसे सूका हुआ गोश्त, सूअरका गोश्त, जंगल, खेत, सवारी, काली ज़मीन।
वल्या, स्त्री. धात्रिवृक्ष; आमलेका दरख़्त।
वव, पु. (द्वि) करण विशेष।
वश, न. इच्छा, प्रभुत्व, अयत (त्रि) अयत्त (पु.) वेश्यागृह, जन्म,। ख्वाहिश, बड़ाई, हकूमत, कंचनीका घर, पैदायश।
वश-म्वद, त्रि. अपक्षकर वाक्यवक्ता, वशीभूत। हकूमतसे बोलनेवाला, शीरींकलां, अधीन।
वश-ग, त्रि. वशीभूत, (स्त्री) वशीभूता, तावहदार।
वशता, स्त्री. अधीनता। तावहदारी।
वश-वर्तिन्, त्रि. वशीभूत। तावेदार।
वशा, स्त्री. वन्ध्या स्त्री, योषा, कन्या, गवी हस्तनी, वन्ध्या गवी; बांझ औरत, लड़की, गाय, हथनी, बांझ गाय।
वशा-नुग, त्रि तावहदार. अधीन।
वशिक, त्रि. शून्य (स्त्री) (का) सूना। खाली।
वशित्व, न. अपने आपको वसमे रखना।
वशिर, न. समुद्र, लवण, (पु) गजपिप्पली, अपामार्ग, वचा; समुन्दरी निमक, गजपीपल, अपुठ कांटा, वच।
वशिष्ठ, } पु. स्वनामख्यात मुनि, मित्रावरुणीका
वशिष्ठ, } बेटा, अरुंधतीका खाविंद।
वसिष्ठ, }
वश्य, न. लवंग, (पु) वश (स्त्री) (श्या) वदाग, तावहदार, फ़रमाबरदार औरत।
वषट्-कार, व्य. देवोद्देश्य हविस्त्यागमंत्र; देवताके उद्देश्य हवि देनेका मंत्र।

वष्क(स्क)(यि)णी, स्त्री. चिरप्रसूता गौ।
वसत्, त्रि. वासकारी (स्त्री) (ती) आबादी।
वसन, न. वस्त्र (स्त्री) (ना) कटिभूषण; कपड़ा, औरतोंकी तड़ागी।
वसन्त, पु. अतिसार, ऋतुवि०, द्वितीय राग, रोगवि०। इसहाल, मौसम चेत वैशाख २ महीने, २ रा, राग, सीतलाकी बीमारी।
वसन्तक, पु. नाम किसी पुरुषका। [वहिर।
वसन्त-तिलक, न. १४ हरूफोंके मिसरेवाला एक
वसन्त-दूत, पु. आम्रवृक्ष, कोकिल, पञ्चम राग, (स्त्री.) (ती) माधवीलता, पिकी; आमका पेड़, कोइल, ५ वां, राग, एक वेल;।
वसन्त-सख, पु. कन्दर्प। कामदेव। [चरबी।
वसा, स्त्री. मांसोद्भव धातुवि०, भिक्षा, मेदा
वसान, न. परिधानकर्त्ता। पहिरानेवाला।
वसिर, न. समुद्रलवण, गजपिप्पली, समुंदरी निमक, गजपिप्पली।
वसु, न. रत्न, धन, स्याम, स्वर्ण, जल, (पु.) सूर्य, कुबेर, बकवृक्ष, अग्नि, धनिष्ठा नक्षत्र, रश्मि, गणदेवता वि०, यथा; भव २ ध्रुव ३ सोम ४ विष्णु ५ सावित्र ६ अनिल, अनल, प्रयूष, प्रभव, राजा, धनाधिप, साधु, वृक्ष, पुष्करणी, शिव, (त्रि) मधुर, शुष्क, उपाधिविशेष।
वसुक, पु. न. आकका पौदा, (न) सांभर निमक, धूड, एक साग, खास एक फूल।
वसुकीट, पु. याचक, लोभी; मंगता, लालची।
वसुता, स्त्री. धन, उदारता। फ़ैयाजी।
वसुत्व(न), न. धन दौलत।
वसु-दत्त, पु. (स्त्री) (त्ता) नाम एक व्यक्तिका।
वसु-देय, न. उदारता। फ़याज़ी।
वसुदेव, पु. श्रीकृष्णपिता,। श्रीकृष्णजीका बाप।
वसुधा, त्रि. उदार, स्त्री. पृथवी। जमीन।
वसुधा-धिप, पु. राजा। पादशाह।
वसुधा-भृत्, पु. पर्वत, राजा। शाह।
वसु-न्धरा, } स्त्री. पृथवी। ज़मीन।
वसु-मती, }
वसु-भूति, पु. एक मनुष्यका नाम।
वसुमन्त, पु. धनी, ८ वसुओंमेंसे एक।
वसु-मित्र, पु. मनुष्य विशेष।
वसुर, त्रि. कीमती, (स्त्री) (रा) वेश्या, कंचनी।
वस्क, पु. अध्यवसाय। मेहनत।
वस्य, पु. छाग, (न.) गृह; बकरा, घर।
वस्तक, न. कृत्रिम लवण; बनावटी निमक।
वस्तय, पु. स्त्री. वस्त्रदशा; कपड़ेकी दस्सी।
वस्तव्य, त्रि. वसनेयोग्य। वसनेलायक।
वस्ति, पु. स्त्री. नाभेरधो भाग, वस्त्रदशा, नाफ़का निचला हिस्सा, कपड़ेकी दस्सी।
वस्तिमल, न. मूत्र। पेशाब।
वस्तु, न. द्रव्य, चीज़, जगह, आसन।
वस्तुतस्, व्य. वास्तविक, असलमें।
वस्तूपमा, स्त्री. अलंकार विशेष।
वस्य, न. गृह; घर।
वस्त्र, न. कपड़ा।
वस्न, न. वेतन, मूल्य, वसन, द्रव्य, धन। मज़्दूरी, मोल, कपड़ा, चीज़, दौलत।
वह, पु. वृषस्कन्ध देश, घोटक, वायु, पन्थ, (स्त्री) (हा) नदी; बैलका कंधा, घोड़ा, हवा, बाट, दर्या।
वहति, पु. वायु, गाभी, मन्त्री, (स्त्री) नदी। हवा, गाय, वज़ीर, दर्या।
वहतु, पु. पथिक, वृषभ। मुसाफ़िर, सांढ।
वहनीय, त्रि. उठाने योग्य।
वहल, न. पोत, नौका, (त्रि) दृढ, शक्त (स्त्री)(ला) स्थूलैला। जहाज़, नाव, मज़बूत, दरस्त, मोटी इलायची।
वहित्र(क), न. पोत। जहाज़।
वहि-रङ्ग, पु. व्याकरणमें प्रत्यय घटित कार्य।
वहिरिन्द्रिय, न. ज्ञानेन्द्रिय। हवासखमसह।
वहिर्मुख, त्रि. विषयासक्त। अय्याश।
वहिष्कृत, त्रि. दूरीकृत। निकाला हुवा।
वहिस्, व्य. बाह्य; बाहर।
वन्हि, पु. अग्नि। आतिश। [जंडीका दरख़्त।
वन्हि-गर्भ, पु. वंश, (स्त्री) (र्भा) शमीवृक्ष, बांस,
वन्हि-वधू, स्त्री. स्वाहा।
वन्हि-मित्र, पु. वायु,। हवा।
वन्हि-मुख, पु. देवता।
वह्य, न. वाहन, शकट (स्त्री) ह्या मुनिपत्नी। गाड़ी, छकड़ा, मुनि की स्त्री।
वन्ह-पत्य, पु. शूकर, मूषिक (त्रि.) बहुसन्तानयुक्त

(स्त्री) (त्रा) । सुअर, चूही, जिसकी वहुत औलाद हो ।

वन्हाशिन्, त्रि. वहु-भोजनशील, वन्हाशाविशिष्ट । पेटू, हिरसी ।

वा, व्य. उपमा, विकल्प, वितर्क, पादपूरण, समुच्चय, एवार्थ (न) जल । जैसा, या, आया, और, भी । [गुलेका, कलाम ।

वाक, त्रि. बकसम्बन्धीय; (पु.) वचन, वाक्य । ब-

वाकुची, वृक्षविशेष । एक बूटी ।

वाको-वाक्य, न. प्रत्युत्तर । वेदमें सवाल जवाब ।

वाकलह, न. वाक्य विवाद; झगड़ा ।

वाक्पति, पु. वृहस्पति (त्रि) उद्दाम वचन । देवताओं का गुरू, खुश कलाम ।

वा-क्पारुष्य, न. कटूक्ति । खराव कलाम या गाली ।

वाक्य, न. पद समुदाय, तिङन्तचय, सुवन्तचय; कारकान्विता क्रिया । फ़िकरह ।

वागर, पु. वारक, शाण, निर्णय, वाडव, वक, मुमुक्षु, पण्डित, निर्भय ।

वागीश, पु. वृहस्पति, ब्रह्मा, वक्ता, (त्रि) सुष्टुवक्ता, (स्त्री) (शा) सरस्वती । [दाम ।

वागुरा, स्त्री. मृग-बन्धनार्थ-जालविशेष; जाल,

वागुरिक, पु. व्याध । फंदक ।

वाग्गुलि(क), पु. ताम्बूली; तंबोली ।

वाग्दण्ड, पु. वाक्यसंयमा ।

वाग्दत्त, त्रि. वाक्यद्वारा कृत दान (स्त्री) (त्ता) वाक्यद्वारा पात्रदत्ता कन्या । जुवानी—खैरात, सगाई की हुई वेटी । [सगाई ।

वा-ग्दान, न. वाक्यद्वारा विवाह निश्चयकरण ।

वाग्देवता, स्त्री. सरस्वती । कलाम का देवता ।

वाग्मिन्, त्रि. वक्ता (पु) सुराचार्य्य । सुतकल्लम, देवताओंका गुरु । उम्दह वोलनेवाला ।

वाग्यत, त्रि. मौनी । खामोश ।

वाङ्क, पु. समुद्र; समुंदर । वहर ।

वाङ्क्षती, स्त्री. नदीविशेष । एक दर्या ।

वाङ्मय, त्रि. वाक्यस्वरूप, शास्त्र (स्त्री) (यी) सरस्वती । फ़साहत ।

वाङ्मल, पु. न. कटुवाक्य । खराब कलाम ।

वाङ्मुख, न. उपन्यास, प्रारम्भ ।

वाचक, (त्रि) कथक, पुराणादिपाठक, वोधक । पुराण वगैरह पढ़नेवाला, जतानेवाला अभिधा शक्तिसे अर्थप्रकाशक शब्द ।

वाच्(चा), स्त्री वचन । कलाम ।

वाचंयम, त्रि. मौनी, मितभाषी । खामोश, कमगो ।

वाचन, न. पठन, कथन, वाक्य । पढ़ना, कहना, कलाम करना ।

वाचनक, न. प्रहेलिका; पहेली । [का, जुवानी ।

वाचनिक, त्रि. शास्त्र-प्रसिद्ध, मौखिक । शास्त्रमें

वाचस्पति, सुरगुरु; देवताओं का गुरु । [गप्पी ।

वाचाट(ल), त्रि. वहुकुत्सितभाषी । बकवासी,

वाचिक, त्रि. वाक्यनिष्पादित पापादि । ज़ुवानसे किये हुए पाप गाली वगैरह ।

वाचस्पति, पु. वृहस्पति । देवताओंका गुरु ।

वाचस्पत्य, न. वक्तृता, वाग्मिता । तक़रीर ।

वाच्य, न. निंदा (त्रि) दूष्य, प्रतिपाद्य, अभिधेय, व्याकरणसंज्ञाविशेष । हजो, ऐवदार, ज़ाहर करने के लायक ।

वाच्यमान, त्रि. निंद्य, निंदायोग्य । हजोके लायक ।

वाज, न. अन्न, घृत, जल, यज्ञ, (पु) वेग, शर यज्ञ, शब्द । अनाज, घी, पानी, तीरकापर, आवाज़ ।

वाज-पेय, पु. न. सामवेदविहित यागभेद; नाम एक जज्ञका ।

वाजपेयिन्, पु. वाजपेय यज्ञ के करनेवाला ।

वाजसनेयिन्, यजुर्वेद की एक ख़ास शाखा के पढ़नेवाले ब्राह्मण आदि, उसी रीतसे काम करनेवाले ब्राह्मण ।

वाजिन्, पु. घोटक, वाण (त्रि) वेगवान् (स्त्री) अश्वगन्धा । घोड़ा, तीर, तेज़ री, एकपौधा ।

वाजिन, न. अमिक्षा से निकला हुआ पानी ।

वाजि-भक्ष, पु. चनक; चना ।

वाजी-करण, न. वीर्य्यवृद्धि-कारक-औषधिभेद । एक दवाई वा फेल जिस्के खानेवाकरनेसे मनुष्य घोड़े की भांत मैथुन कर सका है ।

वाञ्छा, स्त्री. इच्छा । ख़ाहिश ।

वाञ्छित, त्रि. अभिलषित । मनशा ।

वाट, पु. पथ, स्थान, वृतिस्थान, (टी) (टीका) वास्तुभूमि । सड़क, जा, गुज़ारे की जगह, घर की ज़मीन ।

वाटवा, स्त्री. वृक्षविशेष । वेडियाला पौदा ।
वाटवाल(क), पु. वृक्षविशेष (स्त्री) (ली) ।
वाडवेय, पु. समुद्रस्थाश्वी मुखजानल । समुद्र मे की घोड़ी के मुह से निकली हुई आग ।
वाढ, न. अतिशय, सत्य (त्रि) तद्युक्त (व्य) (ढं) प्रतिज्ञा, स्वीकार । ज्यादह, वादा, मनजूर ।
वाण, पु. शर, गोस्तन, दैत्यभेद, केवल, वन्हि, काण्डावयव, भद्र-मुञ्ज, कादम्बरीग्रन्थकार । तीर, गाय का पिस्तान, नाम एक दैत्यका, सिरफ़, आग, मूंज, खास शायर जिसने कादम्बरी ग्रन्थ वनया है ।
वाण-वार, पु. कवच । वख्तर ।
वाणि, स्त्री. वपन; बुनने की नली, दूती, नर्तकी, मत्ता स्त्री, विदग्धा स्त्री, १६ अक्षरका छन्दोवि० (वाणी) सरस्वती ।
वात, पु. पवन, रोग, (त्रि) गन्ता, जार । हवा, वीमारी, जानेवाला, यार । [विमारी है ।
वात-किन्, वातरोग-युक्त; जिस को वाई की
वात-केतु, पु. धूलि, रजः । धूड़ ।
वात-घ्नी, स्त्री. शालपर्णी-वृक्ष, अश्वगन्धा-वृक्ष ।
वात-ध्वज, पु. मेघ । वादल ।
वात-प्रमी, **वात-गज**, **वात-मृग**, पु. शीघ्रगामी मृग । तेज़ रो हिरण ।
वात-रक्त, पु. रोगभेद । गंठिया की वीमारी ।
वातल, पु. चञ्चल, (त्रि) वायुकारक-द्रव्य । वा हर्कत, बाई पैदा करनेवाली चीज़ ।
वाताद, पु. वादाम का दरख्त ।
वातापि, पु. असुरविशेष; जिसको अगस्त्यजीने मारडाला था ।
वाता-मोदा, स्त्री. कस्तूरी ।
वाता-यन, न. खिड़की, झरोखा, (पु) घोड़ा ।
वातायु, पु. हरिण ।
वाता-रि, पु. एरण्डवृक्ष, शतमूली, सेफालिका, यवानी, भार्गी, स्नुहि, विडङ्ग, शूरण, भल्लातक, जतुका ।
वाति, पु. वायु । हवा ।
वार्तिक, त्रि. वातजनितहृद्रोगविशेष ।
वाति-ङ्गण, पु. वार्ताकु; वेंगन ।
वातीय, न. काञ्जिक; कांजी ।
वातु(त)ल, पु. वात-समूह (त्रि) वातयुक्त । झक्खड़, वाईसे वीमार ।
वात्या, स्त्री. वातसमूह । आंधी ।
वात्सक, न. वत्ससंघ; वछड़ों का गल्ला ।
वात्सल्य, न. स्नेह, भेद । मुहब्बत ।
वात्स्यायन, पु. वात्स्यमुनिका पुत्र ।
वादन, न मृदङ्गादि वाद्य । वाजेकी आवाज़ ।
वादर, न. कार्प्पास, सूत्रनिर्म्मित वस्त्रादि (स्त्री) (रा) कार्प्पासी । कपास, सूती कपड़ा ।
वादरायण, (णि) पु. वेदव्यास पु. शुकदेव ।
वादित्र, न. मृदङ्गादि वाद्य । वाजा ।
वादिन्, त्रि. वादकर्त्ता; वाद करनेवाला ।
वाद्य, न. वादनीय मृदङ्गादि; वाजा ।
वान, न. शुष्कफल, (त्रि) शुष्क, वनसम्वन्धीय, वनसमूह । सूकाफल, सूका, जंगल का, वड़ा जंगल ।
वान-प्रस्थ, पु. ३ य, आश्रम । ३ रा, आश्रम ।
वानर, पु. स्वनामख्यात पशु, (स्त्री) (री) शूकशिम्वी, वानरयोपित् । वंदर, एक वूटी, वंदरी ।
वानरेन्द्र, पु. सुग्रीव, हनूमान ।
वानायु, पु. वनायु देश । अरवदेश ।
वानायुज, पु. वनायुदेशका घोड़ा ।
वानीर, पु. वेतस, वञ्जुलवृक्ष; वैत ।
वानेय, न. कैवर्त्ती मुस्तक, त्रि, जलसम्वन्धीय ।
वान्त, त्रि. उद्गीर्ण । कै किया हुआ ।
वाप-दण्ड, पु. तन्तु वपन दण्ड; तांती का चूहा ।
वापि(पी), स्त्री. जलाशय; वावड़ी ।
वापीह, पु. चातक । पपीहा ।
वाप्य, न. कुष्ठौषधि, (त्रि) वापीभव, वपनीय । दवाई कुठ, वावड़ी का, वुननेके लायक ।
वामदेव, पु. महा-देव; शिव, मुनिविशेष ।
वाम, त्रि. सव्य, दक्षिणेतर, प्रतिकूल, विरुद्ध, श्रेष्ठ (न) धन (पु.) कामदेव, महादेव, स्त्री. (मा) नारी, लक्ष्मी । वायां, वरअक्स, वरखिलाफ़, उत्तम, दौलत ।
वामन, स्त्री. दक्षिण दिग्गज, अङ्कोटवृक्ष, अवतारविशेष, पण्डितविशेष, (त्रि) ह्रस्व, । दक्खनदिशाका हाथी, अङ्कोटका दरख़त, राजा वल के छलने के लिये विष्णु का अवतार, पस्तकद ।

वामलूर, पु. वल्मीक; वल्मी ।
वाम-लोचना, स्त्री. स्त्रीभेद । खूबसूरत औरत ।
वामा-चार, पु. तन्त्रोक्त मद्यमांसादि सेवन रूपाचार, पीलुवृक्ष । तंत्रशास्त्रमे लिखाहुआ आचार, जिस्मे मांस शराव मच्छी मुद्रा और मैथुनकी कुच्छ मुमानियत नहिं ।
वामी, स्त्री. अश्वी, शृगाली, रासभी । घोडी, गिदड़ी, गधी । [सूरत हैं ।
वामोरू, स्त्री. प्रशस्तोरुमती । जिस्के पाट खूव-
वाद, पु. यथार्थ विचार, वितर्क, वाक्य । रगड़ा, मुवाहसा, दलील जुमला ।
वाय, पु. वयन । वुनना ।
वायवी, स्त्री. वायुसम्बन्धिनी, उत्तर पश्चिम । हवा की, उत्तर और पच्छम के वीच का कोना ।
वायवीय } त्रि. वायुदेवताका, (न) गोरजः स्नान ।
वायव्य } हवा का, गोधूली सेन्हाना ।
वायस, त्रि. काक, अगुरुवृक्ष, ओवास; कौआ ।
वायसा-राति, पु. पेचक; उल्लू ।
वायु, पु. पञ्चभूतान्तर्गतभूतविशेष, उत्तर पश्चिम विदिशाधिपति देवभेद, देहस्थ धातुविशेष । हवा, गोशह जनूवो मग़रव ।
वायु-पुत्र, पु. हनूमान्, भीम ।
वायु-वाह, पु. धूम; धूंआं ।
वायु-सख, पु. अग्नि; आग । आतिश ।
वार्, न. जल । पानी ।
वार, पु. समूह, अवसर, द्वार, शिव, दिन, क्षण, (न) नल, यज्ञपात्र (त्रि) निवारण योग्य ।
वारक, त्रि. रोकनेवाला, (पु) घोडे की चाल ।
वारण, न. हटाना, निषेध, (पु) गज, (पु.न.) कवच ।
वारणावत, पु. महाभारतोक्त नगरविशेष ।
वार-नारी, स्त्री. वेश्या । कंचनी ।
वारणावुषा(सा) } स्त्री. कदली । केला ।
वारण-वल्लभा }
वार-मुख्या, स्त्री. वेश्यावृन्द मुख्या । कंचनीओंमेसे वड़ी कंचनी ।
वारंवारम्, व्य. पौनःपुन्य; वार २ ।
वारयितृ, पु. पति (त्रि) वारणकर्त्ता । ख़ाविंद, हटानेवाला । [वधू" आदि भी ।
वार-योषा, स्त्री. वेश्या । कंचनी ऐसेहिं "वार-
वारवाण, पु. न. कवच, स्त्री (णी) । ज़रा वख़्तर ।
वारांनिधि, स्त्री. समुद्र । वहिर ।
वाराणसी, स्त्री. काशी नगर । वनारस ।
वाराह, पु. महापिण्डीतक वृक्ष (त्रि) वराह सम्बन्धीय (स्त्री) (ही) वराहशक्ति, वराहयोषित् । सूअरका, वराह अवतारकी शक्ति, सूअरी ।
वारि, न. जल, ह्रीवेर, (स्त्री) हस्तिबन्धन, सरस्वती पानी, हाथी का संगल ।
वारि-कण्टक, पु. न. शृङ्गाटक । सिंघाड़ा ।
वारि-चर, पु. मत्स्य, (त्रि) जलचर जन्तुमात्र; मछली, आवी जानवर ।
वारि-ज, न. पद्म, लवङ्ग, पु. शङ्ख, घोंगा ।
वारि-त्रा, स्त्री. छत्र; छाता ।
वारि-द, न. वादल, मुथा, (त्रि.) जलदाता ।
वारिधि, पु. समुद्र; समुंदर "वारिनिधि" आदि भी ।
वारि-मुच्, पु. मेघ । वादल । ।
वारि-राशि, पु. समुद्र । वहर ।
वारि-रुह, पु. पद्म; कमल फूल ।
वारिवाह, पु. मेघ । वादल ।
वारीश, पु. विष्णु, समुद्र, वरुण, एसेही "वारिनाथ" आदि भी ।
वारुण, न. जल, जलसे न्हाना (त्रि) वरुण (स्त्री) (णि) पश्चिमदिशा, मदिरा, शतभिषा, दूर्वा, शतभिषा नक्षत्रयुक्त चैत्र कृष्ण १३ शी, वरुण की स्त्री ।
वार्त्त, न. आरोग्य, पाटव (त्रि) वृत्तिशील, रोगरहित, पटु, मनोहर, (स्त्री) (र्त्ता) दुर्गा, कृषिकर्म, वृत्ति, जनश्रुति, वृत्तान्त । तनदरुस्ती, होशियारी, गुज़ारेवाला, तनदरुस्त ।
वार्त्तक, वार्ताकु; वेंगन ।
वार्त्तिक, न. सूत्रानुक्तार्थाविष्कारकग्रंथविशेष (त्रि) वृत्तिजीवी, वार्ताप्रद, (स्त्री) (की) वृत्तिका सूत्रमें जो वात नहीकही उसको पूरा करनेवाली इवारत ।
वार्त्रघ्न, पु. अर्जुन ।
वार्दर, न. दक्षिणावर्त्तशङ्खवीज, काक चिंचा शाक, भारती, कृमिज, जल, आम्रवीज ।
वार्द्धक, न. वृद्धसमूह; वूढोंकामजमह ।

वार्द्धक्य, न. वृद्धावस्था; बुढापा ।
वार्द्धि, पु. समुद्र; समुंदर ।
वार्द्धुषि(क), पु. वृद्ध्याजीवी । सूदख़ोर ।
वर्द्धुषिन्, त्रि. वृद्धिजीवी । सूदखोर ।
वार्द्धुष्य, न. धान्यवर्द्धन ऋणदान । कर्ज़देना ।
वार्द्ध, न. (त्री.) (र्द्धी) (र्द्धि) चर्म्मरज्जु । तसमा ।
वार्द्धीणस, पु. नथेला हुआ पशु; गैंडा, बूढ़ा बकरा, खास ।
वार्षिक, त्रि. वत्सरभव, वर्षाकालभव (त्री) (की) वरसका, वरसातका, वरस पीछे की पूजा ।
वार्हत, न. वृहतीफल । वेंचन ।
वार्हद्रथ(थि), पु. वृहद्रथ राजाका पुत्र, जरासंध।
वाल्क(स), त्रि वकुले का (पु.) दैत्यविशेष ।
वालिम(ल्मी)कि(क), पु. रामायणग्रंथकर्ता ।
वावदूक, त्रि. वहुत वोलनेवाला ।
वावृज्यमान, त्रि. अभिलाषी । ख़ाहिशामन्द ।
वाशित, न. पक्षिशब्द, आह्वान (त्री) (ता) करिणी, स्त्रीमात्र । परिन्दोंकी आवाज़, बुलाना, हथिनी, औरत ।
वाशि(सि)ष्ठ, न. वसिष्ठप्रणीत पुराण, योगशास्त्रविशेष, वसिष्ठ का । [रास्ता, रोज़ ।
वाश्र, न. गृह, चतुष्पथ, (पु) दिवस । घर, चौ-
वाष्कल, त्रि. योद्धा (पु) असुरविशेष । सिपाही ।
वाष्प(स्प), पु. ऊष्मा, लोह, अश्रु । भाफ़, आंसु ।
वास, पु. गृह, वस्त्र, सुगंध, नेत्रजल। घर, कपड़ा, खुशक, आंसू ।
वासक, पु. स्वनामख्यात वृक्ष । वांसा दरख़्त ।
वासक-सज्जा, स्त्री. नायिकाविशेष । खूब उमदह लिवास पहिनकर "नायक" की इन्तिज़ार औरत।
वास-गृह, न. शयनागार, रणवासा ।
वासत्, पु. गर्द्दभ; गधा । खर ।
वासत, त्रि. वासयोग्य (स्त्री) (ती) रात ।
वासन, न. धूपन, जलपात्र, वस्त्र, ज्ञान, (त्रि) वसनसम्बन्धीय (स्त्री) (ना) प्रत्याशा, देहात्मबुद्धिजन्य मिथ्यासंस्कारकल्पना । खुशबूदार करना, पानीका वरतन, कपड़ा, इल्म, कपड़े का भरोसा, जहालत ।
वासन्त, पु. उष्ट्र, कोकिल, (त्रि) वसन्तकालीन (स्त्री) (न्ती) माधवी लता, वनदेवतावि० १८ अक्षर छंदोविशेष ।
वासर, पु. न. दिन, (पु) नागविशेष, विवाहरात्रि शयनगृह । रोज़, नाम एक सांप का, ५ व्याह की रातको सोनेका घर ।
वासव, पु. इन्द्र (स्त्री) (वी) व्यासमाता ।
वासवदत्ता, स्त्री. काव्यग्रंथविशेष ।
वासा, स्त्री. वासक-वृक्ष, वसति-स्थान, नीड । वांसा दरख़्त, जा रिहायश, घोंसला ।
वासस्, न. वस्त्र । कपड़ा ।
वासित, न. सुगंधिकृत, भापित, व्याख्यात जूठाहृत, ज्ञान-मात्र, खररव (त्रि) सुरभी गन्ध, सूंघा हुआ (स्त्री) (ता) स्त्रीमात्र, हस्तिनी ।
वासिन्, त्रि. वसने वाला, वशिन्दा ।
वा(शि)सिष्ठ, न. रुधिर, । खून, वसिष्ठ का ।
वासु, पु. नारायण, पुनर्वसु नक्षत्र ।
वासुकि, पु. अहिपति, सांपों का राजा ।
वासुदेव, पु. श्रीकृष्ण, विष्णु ।
वास्तव, न. यथार्थभूत, ठीक २ ।
वास्तवोपा, स्त्री. रात्रि । शव ।
वास्तव्य, त्रि. वासयोग्य । रहने के लायक ।
वास्तु, न. वास्तूकशाक (पु. न.) गृहकरणयोग्य भूमि । एक साग, घर वनाने के लायक ज़मीन।
वास्तोष्पति, पु. इन्द्र; देवताओं का राजा ।
वास्त्र, त्रि. वस्त्रावृत । कपड़ेसे ढांपा हुआ ।
वास्प, पु. ऊस्मा, अश्रु, लोह । भाफ़, आंसू, लोहा ।
वाह, पु. अश्व, परिमाणभेद । घोड़ा, एक पैमाना।
वाहन, न. रथादियान । सवारी ।
वाहस, पु. अजगर सर्प । अज़्दहा सांप ।
वाहिन्, त्रि. वाहक (पु) (न) वाहक । लादू । वाहनेवाला ।
वाहिनी, स्त्री. सेना, नदी । फौज, दर्या ।
वाहीक, पु. जातिभेद, देशविशेष । जाट, पंजाव, (त्रि) वारवरदार, वाहर का ।
वाहु, पु. भुज, रेखाभेद । बाज़ू, खत ।
वाहु-मूल, न. कक्ष; कांख ।
वाह्य, न. अश्वादियान, वानर, (त्रि) वहिर्भव । घोडा वगैरह सवारी, वंदर, लादू, वाहरका ।
वाल्हि(ल्ही)क, पु. देशविशेष, तद्देशजात (न) कुङ्कुम । वलख, उस देश का, केसर ।

वि, व्य. नियोगविशेष, निश्चय, असहन, निग्रह, हेतु, ईषदर्थ, परिभव, शुद्धि, अवलम्बन, ज्ञान, गति, आलस्य, पालन, (पु) विहग । ज्यादह, यकीन, बेपरवाहतगी, सबब, थोडा, मलामत, पाकीज़गी, पनाह, इल्म, रफ़्तार, सुस्ती परवरिश, परिंदह ।

विंश, त्रि. वीसवां । [सदी बीस सूद ।

विंशक, न. प्रतिशत विंशत्यधिक लाभादि । फ़ी

विंशति, स्त्री. द्विदशक संख्या; बीस ।

विंशति-तम, त्रि. बीसवां ।

विकच, पु. केतु, क्षपणक, ध्वज, (त्रि) केशशून्य । मुलहिद, नशान, गंजा ।

विकट, पु. विस्फोटक, (त्रि.) विशाल, विकृत, सुन्दर, दन्तुर । फोडा, फैलाहुआ, बदशकल, खूबसूरत, ऊंचेदांतोंवाला ।

विकण्टक, पु. यवास, (त्रि) शत्रुहीन, ख़ास योधा, बेदुश्मन । [संदी । खुदपसंद ।

वि-कत्थन, न. आत्मश्लाघा, (त्रि) तत्कर्त्ता । खुदप-

विकर्त्तन, पु. सूर्य, अर्कवृक्ष । आफ़ताब, आक का पोदा ।

विकल, त्रि. विव्हल, स्वभावहीन, कलाहीन । बेचैन, निकम्मा । [शक ।

विकल्प, पु. विविध कल्पन, पक्षतः प्राप्ति । या,

विकश्व(स्व)र, त्रि. प्रकाशशील । चमकनेवाला ।

विकषा, (स्त्री.) मंजिष्टा; मजीठ ।

विकशि(सि)त, त्रि. प्रकाशयुक्त; खिलाहुआ ।

विकार, पु. प्रकृतोन्यरूप, परिणाम । तबदीली, बीमारी ।

विकार्य, त्रि. विकारयोग्य । तबदीलीके लायक ।

विकाश, न. रहः, आकाश, प्रकाश, स्वर्ग । तनहाई रौशनी, आसमान, बहिश्त ।

विकाशि(सि)न्, त्रि. प्रकाशशील । चमकनेवाला ।

विकिर, पु. कुश, विघ्नोपशमके अर्थ उत्क्षिप्त श्वेतसर्षपादि । परिंदह, कुस, विघ्नदूरकरनेके लिये सपेद सरसोंका उछालना ।

विकिरण, न. क्षेपण, हिंसन. ज्ञान (पु.) अर्कवृक्ष (त्रि.) किरण शून्य । बखेरना, मारना, जानना ।

विकीर्ण, त्रि. विक्षिप्त, विस्तृत; वखेरा हुआ, फैलाया हुआ । [तबदीली ।

विकृत, त्रि. वीभत्स, रोग, (स्त्री) (ति) विकार,

विक्रम, पु. विष्णु, विक्रमादित्यराजा, चरण, शौर्यातिशय, सामर्थ्य, पक्षिगति । ज़ोर, ताकत ।

विक्रमादित्य } पु. उज्जैनका राजा । [कतवर ।
विक्रमार्क }

विक्रमिन्, पु. सिंह विष्णु, (त्रि) विक्रमयुक्त । ता-

विक्रयानुशय, पु. पश्चात्ताप; वेचकर पीछे पछतावा ।

विक्रयिक् } पु. विक्रेता; वेचनेवाला ।
विक्रयिक } त्रि.

विक्रान्त, पु. सिंह, शूर (न) बल (त्रि) जयवाला ।

विक्रीत, त्रि. वेचाहुआ ।

विक्रेय, त्रि. विक्रय योग्य पदार्थ । वेचनेकेलायक ।

विक्लित्ति, स्त्री. अन्नका पाक । [हुआ, पुराना ।

विक्लिन्न, त्रि. आर्द्र, शीर्ण, जीर्ण, । गीला, सड़ा

विक्षत, त्रि. ज़खमी । वेज़ख़म । [हटाना ।

विक्षप, पु. त्याग, प्रेरण, दूरीकरण । छोड़, रवानगी,

विक्षाव, पु. शब्द, ध्वनि । आवाज, बमअनी कलाम ।

विक्षाव, पु. शब्द, कासादि रोग कृत शब्द । आवाज़ खांसीकी आवाज़ ।

विक्षिप्त, त्रि. छोड़ा हुआ, वखेरा हुआ ।

विक्षेप, पु. क्षेप । खराबी ।

विख, त्रि. गतनासिक; नककटा ।

विख्यात, त्रि. प्रसिद्ध । मशहूर ।

विख्यापन, न. विज्ञापन, विवरण । इश्तिहार ।

विगत, त्रि. गया हुआ, खोया हुआ ।

विगाय, पु. अवगय, नाश । तबाह ।

विगर्हण, न. स्त्री. निन्दा । हजो, मलामत ।

विगर्हित, त्रि. निंदित । मलामत किया हुआ ।

विगलित, त्रि. गिरा हुआ (न.) निंदा ।

विगाढ, त्रि. स्नात, कृतावगाहन; न्हाया हुआ, पार उतरा हुआ ।

विगान, न. निंदा, । हजो । [हजो ।

विगीत, त्रि. निंदित । बदनाम (स्त्री) (ति) निंदा ।

विगुण, त्रि. विकृत; विगड़ा हुआ । वेसिफ़्त ।

विगूढ, त्रि. गुप्त, गर्हित । छिपाहुआ, बदनाम हुआ २ ।

विग्र, त्रि. विगतनासिक । नककटा ।

विग्रह, पु. देह, विभाग, युद्ध, विशेषज्ञान । जिसम, फ़र्क, जंग, ज्यादह जानना ।

विद्यमान, पु. वर्तमान काल, (त्रि) तद्वृत्ति-पदार्थ। हाल, मौजूद चीज़।
विद्या, स्त्री. तत्व ज्ञान, दुर्गा, गणिकारका वृक्ष, तंत्रोक्त देवीमंत्र। इलम।
विद्या-चन(ण) } (त्रि) विद्ययाख्यात। इलमसे
विद्या-चुञ्चु } मशहूर हुआ २।
विद्या-धर, पु. देवयोनिविशेष। देवताओंकी ज़ात।
विद्या-धन, न. विद्याद्वारा एकत्रितधन।
विद्या-लय, पु. स्कूल, कालिज।
विद्या-वत्, त्रि. विद्वान्, पंडित। आलिम।
विद्युत्, स्त्री. तडित, संध्या। वर्क, शाम।
विद्युन्माला, स्त्री. अष्टाक्षरपाद छंदोविशेष। आठ २ हरूफोंके मिसरहवाला बहर।
विद्र(द्रा), पु. पलायन, क्षरण, युद्ध; भागना, खिरना, जंग विघलना।
विद्रुत, त्रि. पिघलाया हुआ, भागा हुआ।
विद्रुम, पु. वैडुर्य; मोंगा, शगूफ़ह।
विद्व-त्कल्प, त्रि. थोड़ा पढ़ा हुआ पंडित।
विद्व-त्तम, पु. अतिपण्डित। निहायत दाना।
विद्वत्तर, त्रि. दोनोंमेंसे पंडित। [जाइनिससे।
विद्वेष } पु. तंत्रोक्त अभिचार कर्म, वैर।
विद्वेषण } न. वैर व दुश्मनी।
विद्वेषिन्, पु. शत्रु। दुश्मन।
विधवा, स्त्री. मृतपतिका नारी। बेवा औरत।
विधवावेदन, न. विधवा विवाह। बेवा का नकाह।
विधातृ, पु. प्रजापति, ब्रह्मा, कामदेव, मदिरा, भृगु मुनिपुत्र।
विधान, न. करण, विधि, निर्माण, जनन, उपाय, गजभक्ष्या, जरीया, आईन, कायदा, हाथी-कालुकमा, तदवीर। [वाकिफ, कानूनदान।
विधान-ज्ञ, पु. पंडित, (त्रि.) विधिज्ञ, आईनसे
विधि, पु. ब्रह्मा, मान्य, क्रम, कर्म, गजभक्ष्यान्न, वैद्य, अप्राप्त प्रापक सूत्रविशेष, वेदवाक्य, उपाय, व्यापार, आचार, यज्ञ। [मरज़ी।
विधित्सा, स्त्री विधानेच्छा। वधान या करनेकी
विधित्सु, त्रि. चिकीर्षु, करना जो चाहे।
विधि-देशक, त्रि. उपदेशक। हादी।
विधिवत्, व्य. यथाविधि; ठीक ठीक।
विधु, पु. चंद्र, कर्पूर, विष्णु, ब्रह्मा, शंकर।
विधु(धू)त, त्रि. कम्पित, त्यक्त। कांपाहुआ, तर्ककिया हुआ। [कंपाना।
विधु(धू)नन, न. कंपन, चालन,। हिलाना।
विधुन्तुद, पु. राहु, ६ ठा, ग्रह।
विधुवन, न. कंपन, लज्जा। कांपना, शरण।
विधेय, त्रि. विधान-योग्य। विधान करनेके लायक।
विध्वंसिन् } त्रि. विनाश; नाशकरनेवाला।
विध्वंस } पु. तबाही, खराबी।
विधृत, त्रि० अवलम्बित। पनाह दिया हुआ।
विनत, त्रि. प्रणत, भुग्न, शिक्षित, (स्त्री) (ता) गरुड़माता, कश्यपपत्नी. झुकाहुआ।
विनता-सन, पु. अरुण, गरुड़।
विनय, पु. शिक्षा, प्रणाम, अनुनय; तालीम, ताज़ीम, हलीमी।
विनयन, न. शिक्षामोचन। हलीमी।
विनशन, न. विनाश, कुरुक्षेत्रस्थ तीर्थविशेष। वर० वादी, कुरुक्षेत्रमें एक पाक जा।
विना, व्य. वर्जन, सरस्वती नदीके मध्यका देश सिवाय। [क्रिया।
विनाकृत, त्रि. व्यक्त, वियोजित। ज़ाहिर, जुदा
विनायक, पु. गणेश, गरुड, विघ्न, गुरु, (त्रि.)। विनययुक्त, (स्त्री.) (का) गरुड़ पत्नी।
विनाश, पु. ध्वंस, अदर्शन। तबाही।
विनाशक, त्रि. संहारक। तबाह करनेवाला।
विनाशिन्, त्रि. नश्वर, विनाशी। फ़ानी। [गया।
विनाशित, त्रि. नाश कियागया। तबाह किया
विनाह, पु. कूपके मुखका ढकना।
विनिगमक, त्रि. व्यवच्छेदक, संशयनिवारक।
विनिगमना, स्त्री. निश्चयोपाय। जाननेकी तदवीर। दोनोंमेंसे एक पक्ष सिद्ध करनेवाली युक्ति।
वि(वी)नाह, पु. कूपमुखपिधान; कूंएका ढकना।
विनिद्र, त्रि. प्रकाशित, निद्राहीन। रौशन, खुला हुआ, जागा हुआ।
विनिपात, पु. अपमान, दैव-दुःख। बेइज़्ज़ती, मौत, गिरना। [रहन।
विनिमय, पु. परिवर्त तुल्य द्रव्य दानेन द्रव्यान्तर्ग्रहण, पतन, बन्धक। बदला, अमानत,
विनिमय, पु. परिवर्त; पलटा, इनकारा। निषेध।

विनियुक्त, त्रि. अर्पित, प्रेरित । लगाया हु० ।
विनियोग, पु. नियोग, प्रेषण । लगाओ ।
विनियोजित, त्रि. अर्पित । लगाया हुआ ।
विनिर्गत, त्रि. विद्रुत । निकला हुआ ।
विनिर्णय, पु. निश्चय । यकीन, फैसला ।
विनिश्वसत्, त्रि. लंबेसांसलेनेवाला ।
विनिष्पेष, पु. पीसन । [हुआ ।
विनिवेशित, त्रि. दाखल किया हुआ, बैठाया
विनीत, त्रि. विनययुक्त, क्षिप्त, अपनीत, निभृत, (पु) सुशिक्षिताश्व, दमन, वृक्ष । हलीम, फेंका हुआ, दूर किया हुआ, तनहा, सीखा हुआ-घोड़ा, ख़ास एक दरख़्त ।
विनीय, पु. कल्क, पाप । मैल, गुनाह । [हुआ ।
विनीयमान, त्रि. सिखाया हुआ । हलीम किया
विनेय, त्रि. शिक्षणीय, प्राप्य । सीखानेके लायक, लेनेके लायक, दमन करनेके लायक ।
विनोक्ति, स्त्री. अर्थालङ्कारविशेष । ख़ास इबत आरह ।
विनोद, पु. कौतूहल, क्रीडा, खण्डन । ठट्ठा । दिल लगी, खेल ।
विनोदन, न. खेल, तोडन । रद्द करन, खुश करन ।
विन्द, त्रि. लाभवान् । हासल कुनिन्दह ।
विन्दु, पु. जलकण, भ्रूमध्य, चिन्हविशेष, अनुस्वार, (त्रि) ज्ञाता, दाता, वेदितव्य । पानी का कतरह, भवों का दरमियान, सिफ़र, (ं) हरूफ़, जाननेवाला, फ़याज़, जानने के लायक ।
विन्दुजालालका, पु. हाथीकी सूंड पैके नशान ।
विन्दु-पत्र, पु. भूर्जपत्र । भोजपत्ता ।
विन्दुसरस्, न. सरोवरविशेष । ख़ास तलाव ।
विन्ध्य, पु. कुलपर्वतविशेष । विन्ध्याचल पहाड़ ।
विन्ध्य-वासिनी, स्त्री. दुर्गा वि० ।
विन्न, त्रि. ज्ञात, प्राप्त, स्थित । जानाहुआ, हासलकियाहु०, ठहिरायाहु० ।
विन्यास, पु. स्थापन, रचन, मन्त्रोच्चारणपूर्वक हृदयादिष्वङ्गुल्यर्पण । रखना, बनाना, मंत्र पढ़कर, हृदय आदि पर अंगुली रखना ।
विपक्रिम, त्रि. पका हुआ ।
विपक्ष, पु. शत्रु । दुश्मन (त्रि) पक्षरहित । बेपर ।
विपञ्ची, स्त्री. वीणा; बीन ।
विपण, पु. विपणन (न) विक्रय । फ़रोख़्तनी ।
विपणि(णी), पु. स्त्री. पण्य विक्रयशाला । दुकान ।
विपत्ति, स्त्री. आपद, नाश, यातना । मुसीबत, बरबादी, दर्द ।
विपद्(दा), स्त्री. विपत्ति । मुसीबत ।
विपन्न, त्रि. विपद्युक्त, नष्ट, (पु.) सर्प । मुसीबत ज़दह, तबाह, सांप ।
विपरीत, त्रि. प्रतिकूल । बरअक्स ।
विपर्णक, पु. पलाश वृक्ष । पलाश का दरख़्त ।
विपर्यय, पु. व्यतिक्रम । ख़िलाफ़ ।
विपर्यस्त, त्रि. व्यतिक्रान्त, परावृत्त । बरख़िलाफ़ ।
विपर्यास, न. वैपरीत्य, व्यतिक्रम, उत्क्षेप । ख़िलाफ़ ।
विपश्चित्, पु. विप्रकृष्टचेत: । दाना ।
विपाक, पु. पाक, खेद, कर्मफल परिणाम । पकाना, तक़्लीफ़, अमाल का नतीजा, हाज़मह ।
विपाश(शा), स्त्री. नदीविशेष । ब्यासदर्या ।
विपिन, न. वन । जंगल ।
विपुल, विस्तीर्ण, अगाध, (पु) मेरु हिमाचल (स्त्री) (ला) छन्दोविशेष । फैला हुआ, अथाह, सुमेरु पहाड़, हिमालय । [पौदा ।
विपुलास्रव, स्त्री. घृत कुमारी वृक्ष । घीकुंवारका
विप्र, पु. ब्राह्मण १ म, वर्ण । [मत, शरारत ।
विप्र-कार, पु. अपकार, तिरस्कार । बुराई, मला-
विप्र-कर्ष, पु. दूरत्व । दूरी ।
विप्र-कृत, त्रि. उपद्रुत, तिरस्कृत । मुसीबत ज़दह, मलामत किया हुआ ।
वि-प्रकृष्ट, त्रि. दूरस्थ । दूर का ।
वि-प्रचिति, पु. दानव विशेष । एक राक्षस ।
विप्रतिपत्ति, स्त्री. विरोध, संशय, विकार । दुश्मनी, शक, तबदीली । [दुश्मन ।
वि-प्रतिपन्न, त्रि. सन्देह युक्त, कृतविरोध । शकी,
विप्रति(ती)सार, पु. अनुताप, अनुशय, रोष । पछताव, वखीली, ग़ुस्सह । [हुआ ।
विप्र-युक्त, त्रि. वियुक्त, विरहित । अलग किया
विप्र-योग, पु. विप्रलम्भ, विरोध, विसंवाद । ठगी या फ़रेब, दुश्मनी, झगड़ा ।
विप्र-लब्ध, त्रि. वञ्चित (स्त्री) (ब्धा) नायिकाविशेष । फ़रेब दिया हुआ, वह औरत जिस्का दोस्त वादा करके फ़िर ना आवे ।
विप्र-लम्भ, पु. विसंवाद, वंचन, विरह, शृंगारावस्था भेद । झगड़ा, फरेब, जुदाई ।

विद्यमान, पु. वर्तमान काल, (त्रि) तद्वृत्ति-पदार्थ । हाल, मौजूद चीज़ ।

विद्या, स्त्री. तत्व ज्ञान, दुर्गा, गणिकारका वृक्ष, तंत्रोक्त देवीमंत्र । इलम ।

विद्या-चन(ण) } (त्रि) विद्ययाख्यात । इलमसे
विद्या-चुञ्चु } मशहूर हुआ २ ।

विद्या-धर, पु. देवयोनिविशेष । देवताओंकी ज़ात ।

विद्या-धन, न. विद्याद्वारा एकत्रितधन ।

विद्या-लय, पु. स्कूल, कालिज ।

विद्या-वत्, त्रि. विद्वान्, पंडित । आलिम ।

विद्युत्, स्त्री. तडित, संध्या । वर्क, शाम ।

विद्युन्माला, स्त्री. अष्टाक्षरपाद छंदोविशेष । आठ २ हरूफोंके मिसरहवाला बहर ।

विद्र(द्रा), पु. पलायन, क्षरण, युद्ध; भागना, खिरना, जंग विघलना ।

विद्रुत, त्रि. पिघलाया हुआ, भागा हुआ ।

विद्रुम, पु. वैडुर्य; मौंगा, शगूफ़ह ।

विद्व-त्कल्प, त्रि. थोड़ा पढ़ा हुआ पंडित ।

विद्व-त्तम, पु. अतिपण्डित । निहायत दाना ।

विद्वत्तर, त्रि. दोनोंमेंसे पंडित । [जाइलिससे ।

विद्वेष } पु. तंत्रोक्त अभिचार कर्म, वैर ।
विद्वेषण } न. वैर व दुश्मनी ।

विद्वेषिन्, पु. शत्रु । दुश्मन ।

विधवा, स्त्री. मृतपतिका नारी । वेवा औरत ।

विधवावेदन, न. विधवा विवाह । वेवा का नक़ाह ।

विधातृ, पु. प्रजापति, ब्रह्मा, कामदेव, मदिरा, भृगु मुनिपुत्र ।

विधान, न. करण, विधि, निर्माण, जनन, उपाय, गजभक्ष्या, जरीया, आईन, कायदा, हाथी-कालुकमा, तदवीर । [वाकिफ, कानूनदान ।

विधान-ज्ञ, पु. पंडित, (त्रि.) विधिज्ञ, आईनसे

विधि, पु. ब्रह्मा, मान्य, क्रम, कर्थ, गजभक्ष्यान्न, वैद्य, अप्राप्त प्रापक सूत्रविशेष, वेदवाक्य, उपाय, व्यापार, आचार, यज्ञ । [मरज़ी ।

विधित्सा, स्त्री विधानेच्छा । वधान या करनेकी

विधित्सु, त्रि. चिकीर्षु, करना जो चाहे ।

विधि-देशक, त्रि. उपदेशक । हादी ।

विधिवत्, व्य. यथाविधि; ठीक ठीक ।

विधु, पु. चंद्र, कर्पूर, विष्णु, ब्रह्मा, शंकर ।

विधु(धू)त, त्रि. कम्पित, त्यक्त । कांपाहुआ, तर्ककिया हुआ । [कंपाना ।

विधु(धू)नन, न. कंपन, चालन, । हिलाना ।

विधुन्तुद, पु. राहु, ६ ठा, ग्रह ।

विधुवन, न. कंपन, लज्जा । कांपना, शरण ।

विधेय, त्रि. विधान-योग्य । विधान करनेके लायक ।

विध्वंसिन् } त्रि. विनाश; नाशकरनेवाला ।
विध्वंस } पु. तबाही, खराबी ।

विधृत, त्रि॰ अवलम्बित । पनाह दिया हुआ ।

विनत, त्रि. प्रणत, भुम, शिक्षित, (स्त्री) (ता) गरुड़माता, कश्यपपत्नी. झुकाहुआ ।

विनता-सन, पु. अरुण, गरुड़ ।

विनय, पु. शिक्षा, प्रणाम, अनुनय; तालीम, ताज़ीम, हलीमी ।

विनयन, न. शिक्षामोचन । हलीमी ।

विनशन, न. विनाश, कुरुक्षेत्रस्थ तीर्थविशेष । वरबादी, कुरुक्षेत्रमें एक पाक जा ।

विना, व्य. वर्जन, सरस्वती नदीके मध्यका देश सिवाय । [किया ।

विनाकृत, त्रि. व्यक्त, वियोजित । ज़ाहिर, जुदा

विनायक, पु. गणेश, गरुड, विघ्न, गुरु, (त्रि.) । विनययुक्त, (स्त्री.) (का) गरुड़ पत्नी ।

विनाश, पु. ध्वंस, अदर्शन । तबाही ।

विनाशक, त्रि. संहारक । तबाह करनेवाला ।

विनाशिन्, त्रि. नश्वर, विनाशी । फ़ानी । [गया ।

विनाशित, त्रि. नाश कियागया । तबाह किया

विनाह, पु. कूपके मुखका ढकना ।

विनिगमक, त्रि. व्यवच्छेदक, संशयनिवारक ।

विनिगमना, स्त्री. निश्चयोपाय । जाननेकी तदवीर । दोनोंमेंसे एक पक्ष सिद्ध करनेवाली युक्ति ।

वि(वी)नाह, पु. कूपमुखपिधान; कूंएका ढकना ।

विनिद्र, त्रि. प्रकाशित, निद्राहीन । रौशन, खुला हुआ, जागा हुआ ।

विनिपात, पु. अपमान, दैव-दुःख । वेइज़्ज़ती, मौत, गिरना । [रहन ।

विनिमय, पु. परिवर्त तुल्य द्रव्य दानेन द्रव्यान्तर्ग्रहण, पतन, बन्धक । बदला, अमानत,

विनिमय, पु. परिवर्तः पलटा, इनकारा । निषेध ।

विनियुक्त, त्रि. अर्पित, प्रेरित । लगाया हु० ।
विनियोग, पु. नियोग, प्रेषण । लगाओ ।
विनियोजित, त्रि. अर्पित । लगाया हुआ ।
विनिर्गत, त्रि. विसृत । निकला हुआ ।
विनिर्णय, पु. निश्चय । यकीन, फैसला ।
विनिश्वसत्, त्रि. लंबेसांसलेनेवाला ।
विनिष्पेष, पु. पीसन ।
विनिवेशित, त्रि. दाखल किया हुआ, बैठाया [हुआ ।
विनीत, त्रि. विनययुक्त, क्षिप्त, अपनीत, निभृत, (पु) सुशिक्षिताश्व, दमन, वृक्ष । हलीम, फेंका हुआ, दूर किया हुआ, तनहा, सीखा हुआ-घोड़ा, ख़ास एक दरख़त ।
विनीय, पु. कल्क, पाप । मैल, गुनाह ।
विनीयमान, त्रि. सिखाया हुआ । हलीम किया [हुआ ।
विनेय, त्रि. शिक्षणीय, प्राप्य । सीखानेके लायक, लेनेके लायक, दमन करनेके लायक ।
विनोक्ति, स्त्री. अर्थालङ्कारविशेष । ख़ास इस्त आरह ।
विनोद, पु. कौतूहल, क्रीडा, खण्डन । ठट्ठा । दिल लगी, खेल ।
विनोदन, न. खेल, तोड़न । रद्द करन, खुश करन।
विन्द, त्रि. लाभवान् । हासल कुनिन्दह ।
विन्दु, पु. जलकण, भ्रूमध्य, चिन्हविशेष, अनुस्वार, (त्रि) ज्ञाता, दाता, वेदितव्य । पानी का कतरह, भवों का दरमियान, सिफ़र, (ं) हरूफ, जाननेवाला, फ़्याज़, जानने के लायक ।
विन्दुजालालका, पु. हाथीकी सूंड पेके नशान ।
विन्दु-पत्र, पु. भूर्जपत्र । भोजपत्ता ।
विन्दुसरस्, न. सरोवरविशेष । ख़ास तलाव ।
विन्ध्य, पु. कुलपर्वतविशेष । विन्ध्याचल पहाड़ ।
विन्ध्य-वासिनी, स्त्री. दुर्गा वि० ।
विन्न, त्रि. ज्ञात, प्राप्त, स्थित । जानाहुआ, हासलकियाहु०, ठहिरायाहु० ।
विन्यास, पु. स्थापन, रचन, मन्त्रोचारणपूर्वक हृदयादिष्वङ्गुल्यर्पण । रखना, बनाना, मंत्र पढ़कर, हृदय आदि पर अंगुली रखना ।
विपक्किम, त्रि. पका हुआ ।
विपक्ष, पु. शत्रु । दुश्मन (त्रि) पक्षरहित । बेपर ।
विपञ्ची, स्त्री. वीणा; बीन ।
विपण, पु. विपणन (न) विक्रय । फ़रोख़तनी ।
विपणि(णी), पु. स्त्री. पण्य विक्रयशाला । दुकान ।
विपत्ति, स्त्री. आपद, नाश, यातना । मुसीबत, बरबादी, दर्द ।
विपद्(दा), स्त्री. विपत्ति । मुसीबत ।
विपन्न, त्रि. विपद्युक्त, नष्ट, (पु.) सर्प । मुसीबत ज़दह, तबाह, सांप ।
विपरीत, त्रि. प्रतिकूल । बरअक्स ।
विपर्णक, पु. पलाश वृक्ष । पलाश का दरख़त् ।
विपर्यय, पु. व्यतिक्रम । खिलाफ़ ।
विपर्यस्त, त्रि. व्यतिक्रान्त, परावृत्त । बरखिलाफ़ ।
विपर्यास, न. वैपरीत्य, व्यतिक्रम, उत्क्षेप । खिलाफ़ ।
विपश्चित्, पु. विप्रकृष्टचेतः । दाना ।
विपाक, पु. पाक, खेद, कर्मफल परिणाम । पकाना, तक़्लीफ़, अमाल का नतीजा, हाज़मह ।
विपाश(शा), स्त्री. नदीविशेष । व्यासदर्या ।
विपिन, न. वन । जंगल ।
विपुल, विस्तीर्ण, अगाध, (पु) मरु हिमाचल (स्त्री) (ला) छन्दोविशेष । फैला हुआ, अथाह, सुमेरु पहाड़, हिमालय ।
विपुलास्त्रव, स्त्री. घृत कुमारी वृक्ष । घीकुंवारका [पौदा ।
विप्र, पु. ब्राह्मण १ म, वर्ण ।
विप्र-कार, पु. अपकार, तिरस्कार । बुराई, मला[मत, शरारत ।
विप्र-कर्म, पु. दूरत्व । दूरी ।
विप्र-कृत, त्रि. उपद्रुत, तिरस्कृत । मुसीबत ज़दह, मलामत किया हुआ ।
वि-प्रकृष्ट, त्रि. दूरस्थ । दूर का ।
वि-प्रचिति, पु. दानव विशेष । एक राक्षस ।
विप्रतिपत्ति, स्त्री. विरोध, संशय, विकार । दुश्मनी, शक, तबदीली ।
वि-प्रतिपन्न, त्रि. सन्देह युक्त, कृतविरोध । शकी, [दुश्मन ।
विप्रति(ती)सार, पु. अनुताप, अनुशय, रोष । पछताव, वखीली, गुस्सह ।
विप्र-युक्त, त्रि. वियुक्त, विरहित । अलग किया [हुआ ।
विप्र-योग, पु. विप्रलम्भ, विरोध, विसंवाद । ठगी या फ़रेब, दुश्मनी, झगड़ा ।
विप्र-लब्ध, त्रि. वञ्चित (स्त्री) (ब्धा) नायिकाविशेष । फ़रेब दिया हुआ, वह औरत जिसका दोस्त वादा करके फ़िर ना आवे ।
विप्र-लम्भ, पु. विसंवाद, वंचन, विरह, शृंगारावस्था भेद । झगड़ा, फरेब, जुदाई ।

विप्रलाप, पु. विरोधोक्ति, परस्परविरुद्धार्थकथन। झगड़ा, मुबाहसह।
विप्राश्निका, स्त्री. दैवज्ञा स्त्री। नजूमन।
विप्रसात्, व्य. ब्राह्मण सदृश। ब्राह्मणकी मानिंद।
विप्रिय, पु. अपराध, (त्रि) अप्रिय, मन्द। कसूर, दुश्मन, कमीनह।
विप्रुष्, स्त्री. विन्दु, वेदपाठकाले मुख निस्सृत विन्दु जल। बूंद, वेद पढ़ते वक्त मुख से निकली हुई थूक।
विप्रोषित, त्रि. प्रवसित; जलावतन किया हुआ।
विप्लव, पु. विवाद, विनाश, उपद्रव, भयप्राप्ति। विपद, रंज, तबाही, आफ़त, ख़ौफ़खाना, मुसीबत।
विप्लाव, पु. अश्वगतिविशेप, जलप्लावन। घोड़े- की दुल्की, पांनीमे डूबना।
विप्लुत्, त्रि. व्यसनार्त्त, उपद्रुत (न) ध्वंस, हानि, जलप्लावन। अय्याश, मुसीबत ज़दह, तबाही, नुक्सान्, पानीमें घिरजाना।
विफल, त्रि. निष्फल, निरर्थक (स्त्री) (ला) केतकी। वेफ़ायदह, केतकी का पौदा।
विफुल्ल, त्रि. विकसित; खिला हुआ।
विवध, पु. सङ्गृहीत; धान्य तण्डुलादि; भार।
विवन्ध, पु. रोगभेद। ख़ास बीमारी। [चांद।
विबुध, पु. पण्डित, देव, चन्द्र। दाना, देवता,
विबुध-वनिता, स्त्री. अपसरा। हूर।
विबोधन, न. उद्बोध, जागरण; समझना, जगाना।
विवक्तृ, त्रि. मौनी, विरुद्ध वक्ता। खामोश, खिलाफ़गो।
विभक्त, त्रि. पृथक्कृत, कृतविभाग, (न) विभाग। जुदा किया हुआ, बांटा हुआ, जुदाई, तक्सीम।
विभक्तन, पु. विभागके पीछे उत्पन्न पुत्र। रचना, भंगी। [जुदाई, अलामते सीग़ह।
विभक्ति, स्त्री. विभाग, व्याकरणोक्त सुप्तिङ् प्रत्यय,
विभङ्ग, पु. विन्यास, खण्ड। बनावट, टुकड़ा।
विभजनीय, त्रि. विभागयोग्य। बांटनेलायक़।
विभव, पु. धन, मोक्ष, ऐश्वर्य, षष्टिसंवत्सरान्तर्गत वत्सरविशेष। दौलत, नजात, हृश्मत, सठ संमति मे से एक बरस का नाम।
विभा, स्त्री. किरण, शोभा, प्रकाश। शुआ, ख़ूबसूरती, चमक।
विभा-कर, पु. सूर्य, वृक्ष, अग्नि। सूरज, पेड़ आग।
विभाग, पु. भाग, अंश, पार्थक्य, चतुर्विंशति गुणान्तर्गत गुणविशेष। हिस्सा, बांट, फ़र्क़, न्याय.के २४ वीस गुणोंमेसे एक।
विभाज्य, त्रि. विभाग योग्य। बांटनेके लायक।
विभाण्डक, पु. मुनिविशेष ऋष्यश्रृङ्गका पिता।
विभात, न. प्रभात। सुबह।
विभाव, पु. परिचय, रसोद्दीपनादिभाव, मुलाक़ात।
विभावन, न. अवधारण, विवेचन, दर्शन। यक़ीन, ग़ौर, दीदार।
विभावना, स्त्री. अलङ्कारविशेष। अनुभव; प्रसिद्ध कारण के अभाव से कार्य की उत्पत्ति।
विभावनीय, त्रि. विवेचनीय। विचारके लायक।
विभावरी, स्त्री. रात्रि, हरिद्रा, कुटनी, अनुरक्त- योषित। शब, हल्दी, कुटनी, छिनाल औरत।
विभावसु, पु. सूर्य, अर्कवृक्ष, वन्हि, चित्रक वृक्ष। आफ़ताब, आकका पौदा, आतिश, चित्रा।
विभाषा, व्य. निषेध, विकल्प। शक, या।
विभिन्न, त्रि. प्रकाशित, विभक्त, विदलित। ज़ाहिर किया हुआ, अलग किया हुआ, तोड़ा हुआ, पिसा हुआ।
विभीतक, पु. वृक्षविशेष। वहेड़े का दरख़्त।
विभीषण, पु. रावण-भ्राता राक्षस, जलतृण, घोर। रावण का भाई, ख़ौफ़नाक।
विभीषिका, स्त्री. खौफ़, ख़ौफ़की जगह।
विभु, पु. प्रभु, सर्वगत, शङ्कर, ब्रह्मा, प्रजापति, भृत्य, विष्णु, व्यापक, नित्य दृढ, (त्रि) सर्व मूर्त-संयोगी। मालक, मुहीत, नौकर, मजबूत।
वि-भूति, स्त्री. अणिमाआदिआठ ऐश्वर्योंमें से २ रा, भस्म, हश्मत, राख़।
विभूषण } न. [चमक, ज़ेबाइश।
विभूषा } स्त्री. शोभा, भूषण। ख़ूबसूरती, ज़ेवर,
विभूषित, त्रि. अलंकृत। आरास्तह।
विभ्रम, पु. स्त्रीभावविशेष, भ्रांति, शोभा, संशय, भ्रमण (स्त्री) (भा) वार्द्धक्य। जल्दीसे जेवरों का उलटा पलटा पहिरना, भूल, खुबसूरती, शक, घूमना, बुढ़ापा।
विभ्राज्, त्रि. शोभमान, दीप्तिमान, अलङ्कारादि-

द्वारा-दीप्ति शील । ज़ेवर वग़ैरहसे सजाया हुआ, चमकीला, शान्दार । [हुआ ।
विभ्रान्त, त्रि. विभ्रमवाला, भूला हुआ, घबराया
विमत, त्रि. विरुद्ध-मति-युक्त। ग़ैरमतवाला, दुश्मन।
विमर्दित, त्रि. दलित, मथित, धृष्ट, घूर्णित । मला हु०, मथाहुआ, घिसा हुआ, घूमा हुआ ।
विमनस्(स्क), त्रि. चिन्ताव्याकुल-चित्त। ग़मगीन।
विमनी-कृत, त्रि. दुर्मनाः, अप्रफुल्ल । नाखुश, मुर्झाया हुआ ।
विमर्द्द, पु. वृक्षविशेष, मर्द्दन । एक खास दरख़त, मलन, रगड़ । [मथना ।
विमर्द्दन, न. धर्षण, पेषण, मन्थन; घिसना, पिसना,
विमर्शन / **विमर्श** } न. परामर्श, वितर्क । सोच, दलील, मुबाहसह । [हसह ।
विमर्ष, पु. विचार, नाटकाङ्गविशेष । सोच, मुबा-
विमर्षण, न. असन्तोष, नाटक का एक अंग ।
विमल, त्रि. स्वच्छ, निर्म्मल, (स्त्री) (ला) जगन्नाथ क्षेत्रस्थदेवीविशेष । साफ़, बेदाग़, ख़ास देवी ।
विमातृ, स्त्री. (ता) मातृसपत्नी; सौतेली मां ।
विमातृ-ज, त्रि. सौतेलाभाई ।
विमान, पु. न. देवयान, रथ, (पु) अश्व, (न) यान, परिमाण । देवताओं की सवारी, घोड़ा, सवारी, माप, बेइज़्ज़ती ।
विमानना, स्त्री. अपमान । बेइज़्ज़ती ।
विमार्ग, पु. कुपथ, कदाचरण; खोटीराह ।
विमुख, त्रि. बहिर्म्मुख, निवृत्त । दुश्मन, बरखिलाफ़ । [खुलाहुआ ।
विमुद्र, त्रि. विकसित; मुद्रारहित । खिला हुआ,
विमृष्ट, त्रि. विवेचित; विचारा हुआ । [हुये ।
विमुक्त, त्रि. मुक्ति प्राप्त । न जात हासल किये
विमोक्षण, न. मुक्ति । न जात, छुटकारा ।
विमोक्ष } पु. उद्धार । न जात, छुटकारा ।
विमोचन } न.
विमोह, पु. जडता । बेहोशी ।
विमोहन, न. भूलत्व; भूलना ।
विमोहित, त्रि. मोहको प्राप्त । बेहोश, करैफ़्तह ।
विम्ब, पु. न. प्रतिविम्ब, कमण्डलु, जलबुद्बुद, सूर्यादिमण्डल, (पु) कृकलास स्त्री (म्बा) (म्बी) बिम्बिका । साया, लोटा, पानी का बबूला, चांद और सूरज का दायरा ।

विम्बट, पु. सर्षप । सरसों का पौदा ।
वियत्, न. आकाश । आसमान ।
वियत, त्रि. धृष्ट, निर्लज्ज । बेशरम ।
वियद्गङ्गा, स्त्री. मन्दाकिनी; स्वर्गकी गंगा ।
वियात, त्रि. धृष्ट । बेशरम, गुस्ताख़ ।
वियुक्त(न), त्रि. वियोग प्राप्त । अलगकिया हुआ ।
वियोग, पु. विच्छेद, (त्रि) पक्षियोग । जुदाई, परिंदो का मेल ।
वियोगिन्, पु. चकवाक पक्षी (त्रि) विछेंवान् । चकवा परिंदाह. जुदा किया हुआ ।
वियोजित, त्रि. विरहित; अलगकिया हुआ ।
विरक्त, त्रि. विछिन्न, विरल (स्त्री) (क्ति) वैराग्य, अनिच्छा; जुदा हुआ २ बे मुहबत ।
विरचन, न. निर्म्माण; बनाना, रचना ।
विरचित, त्रि. कृत, निर्म्मित, ग्रथित, वर्णित ।
विरजा, स्त्री. दूर्वा, राधा सखीवि०, नदीवि०, । दूब ।
विर(रि)ञ्च(ञ्ची), पु. ब्रह्मा, जगत्स्रष्टा ।
विरत, त्रि. निवृत्त, विश्रान्त, उपरत, (स्त्री) (ति) निवृत्ति, विराग । हटाहुआ नाराज़, घबराया ।
विरल, त्रि. अवकाश, अनिविड । फ़ुरसद, विरला ।
विरह, पु. विच्छेद, अभाव, विप्रलम्भाख्यरसविशेष । जुदाई, नहोना, शृंगाररसकी एक हालत ।
विरहित, त्रि० त्यक्त, वियुक्त, हीन । तर्क किया हुआ, अकेला, जुदाकिया हु० ।
विरहिन्, त्रि. विरहयुक्त । जुदाईवाला ।
विराग, पु. रागाभाव, (त्रि) रागशून्य, । नामुहबत, बेमुहबत ।
विराज्(ज), पु. क्षत्रिय, ब्रह्माण्डात्मक, स्थूल देहाभिमानी पुरुष, छंदोवि० ।
विराजित, (त्रि.) सम्यक् शोभित । सजा हुआ ।
विराट, पु. देशवि०, तद्देशीयराजा ।
विराद्ध, त्रि. कोपित । गुस्से किया हुआ ।
विराधन, न. पीड़ा । दर्द ।
विराम, पु. अवसान, विरति, निवृत्ति, । आख़ीर, अञ्जाम, ठहराव ।
विराल, पु. विडाल (स्त्री) (ली) बिल्ली ।
विराव, पु. शब्द, (त्रि) विगत रव । आवाज़, चुपचाप । [हुआ ।
विरूढ, त्रि. जात-अङ्कुरित । पैदा हुआ २, फूटा

विरूप, त्रि. दुष्टरूप, निन्दित, (स्त्री) (पा) यम स्त्री। बदशकल, खराब, यमकी औरत।
विरूपाक्ष, पु. शिव. महादेव, (त्रि) विकट नेत्र। बदचश्म।
विरेक, पु. मलादेरधोनिस्सारण। मुसल। [दह
विरेचक, त्रि. मलाधो निस्सारक। जुलाब दहिं
विरेचन, न. मलादिनिस्सारण, (त्रि) भेदक (पु.) पीलवृक्ष। मुसल, जुदा करनेवाला, पीलुका पेड़। [सुराख़, सूर्य्य की किरण।
विरोक, पु. छिद्र, (पु.) सूर्य्यकिरण, सुराख़। गूढ़ा-
विरोचन, पु. सूर्य, अग्नि, बलिपिता, चंद्र, (त्रि) रुचिकर, आप्लाव। आक का पेड़, प्रल्हाद का बेटा, चान्द, पसंदीदा।
विरोध, पु. वैर, विरुद्धता, साध्यैनासमानाधिकरण हेतु दोष। दुश्मनी। [दुश्मन।
विरोधिन, न. विरोध (त्रि) विरोधकारक, दुश्मनी,
विरोधन, पु. रिपु, षष्टिसंवत्सरान्तर्गत वत्सर वि०। दुश्मन, साठ संमतीमेंसे एक, मुख़ालिफ़।
विरोधोक्ति, स्त्री. काव्यालंकार वि०, विप्रलाप। दुशनाम।
विल, न. छिद्र, गुहा, घोटकोत्तम (पु.) वेतस। सुराख़, ग़ार, उमदह घोड़ा, बैत।
विलक्ष, पु. मुतअजब, हैरान।
विलक्षण, त्रि. विभिन्न, विशेषण युक्त, (न.) निष्प्रयोजनस्थिति (स्त्री.) शय्यावि०। जुदा, अजीव, उमदह, बेफ़ायदह ठहराव।
विलग्न, न. कटिदेशलम, (त्रि.) कृश। देरी।
विलज्ज, त्रि. निर्लज्ज,। बेशरम।
विलपन } न. रोना। गिरयोज़ारी।
विलाप }
विलम्ब, पु. देरी (त्रि) बहुत लंबा।
विलंबित, त्रि. अशीघ्र, मध्यम नृत्य। देरी का, एक किसम का नाच।
विलय, पु. प्रलय, विनाश,। आक़बत, बरबादी।
विल(ले)शन, पु. सर्प, मूषिक, गोधा,। सांप, मूसा, गोह।
विलसन्, त्रि. शोभायमान; चमकता हुआ।
विलसन, न. विलास, खेल, चमकन।
विलाप, पु. परिदेवनोक्ति। गिरयो ज़ारी।
विलास, पु. स्त्रीशृंगारचेष्टावि०, दीप्ति। खुशी खुशीकी हर्कत, ठट्ठा मसख़री, चमक।
विलासिन्, त्रि. विषयी, (पु.) शिव, विष्णु काम, चंद्र, अग्नि, सर्प (स्त्री.) नारी, वेश्या। शहवती, खुश, माहताब, आतिश, सांप, औरत, कंचनी।
विलिखन, न. खोदना, लिखना, कुरेदना।
विलीन, त्रि. अन्तर्हत, छिपा, हुआ।
विलुप्त, त्रि. नष्ट; छिपा हुआ।
विलुभित, त्रि. चंचल। मुतलव्वि। [हुआ।
विलुलित, त्रि. चंचल, कंपित; हिलाहुआ, कांपा
विलेपन, न. गात्रानुलेपन द्रव्य (स्त्री.) (नी) सुवेशा स्त्री, यवागू (त्रि) लेपनीय। उबटन, माण्ड लिपने के लायक।
विलोकन, न. दर्शन, नेत्र। दीदार, चशम।
विलोचन, न. नेत्र, दर्शण। आंख, दीदार।
विलोडित, न. तक्र, (त्रि.) आलोडित। छाछ, विलोया हुआ।
विलोम, त्रि. विपरीत, (न) अर्द्दक, पु. सूर्य, कुक्कर, वरुण,। उलटा, कुएकी घिरनी या चौबचा, सांप, मुर्ग़, पानीका देवता।
विलोल, त्रि. चंचल, विशेषसंतृष्ण। मुतलविन, लालची। हित चानेवाला।
विल्ल, न. आलवाल, छिद्र। थाम्ला, सुराख़।
विल्व, पु. श्रीफलवृक्ष, (न.) परिमाणा, नरयेलका-वृक्ष, पैमाना।
विवक्षा, स्त्री. बोलनेकी इच्छा। [हना है।
विवक्षित, त्रि. बोलनेको इच्छित। जो कुच्छ क-
विवक्षु, पु. बोलनेकी इच्छावाला।
विवक्षमान, त्रि. कहनेवाला, कलहकारी। [नहीं।
विवत्सा, स्त्री. बोलनेकी इच्छा, जिसका बछडा
विवर, न. छिद्र, दोष। सुराख़, ऐब। [तर्जुमा।
विवरण, न. व्याख्यात, प्रकाश, टीका। शरा,
विवर्ण, त्रि. अधम, नीच। बदरंग।
विवर्त, पु. नृत्य, समुदाय, अपवर्त्तन, परिणाम, कारणविशेष।
विवर्त्तन, न. भ्रमण; घूमना, लौटना, नाच।
विवर्त्तित, त्रि. लौटाया हुआ, घुमाया हुआ।
विवश, त्रि. अबाध्य, विश्लिष्ट। बेकाबू, जुदा किया हुआ।

विवस्व(स)त्, पु. सूर्य, अर्कवृक्ष, अरुण देव ।
विवाद, पु. व्यवहार, कलह । मुकद्दमा, हंगामा ।
विवास, पु. निर्वासन; निकास ।
विवाह, पु. दार परिग्रह, विवाह । ब्राह्म, दैव, आर्ष प्राजापत्य, आसुर, गंधर्व, राक्षस, पैशाच ।
विवाहित, त्रि. जात विवाह; व्याहा हुआ ।
विवाह्य, त्रि. निर्जन, पवित्र, असंयुक्त, विवहार्ह ।
विविग्न, त्रि. भीत; डरा हुआ ।
विविदिषु, त्रि. अभिवादनेच्छु; अभिवादन या झगड़ेकीइच्छावाला ।
विविध, व्य. नानाप्रकारेण । कईतरह, गूनागून ।
विविधा-गम, पु. अनेकशास्त्र । [गाह ।
विवीत, पु. प्रचुर तृण, घासादियुक्त देश । चरा-
विवृत्त, त्रि. विस्तृत, वर्णित, व्याख्यात (स्त्री) (ति) फैलाया हुआ, मशरह, मुतशरह ।
विवृद्धि, स्त्री. वढना । तरक्की, लंबाई ।
विवेक, पु. याथार्थ्येन वस्तुस्वरूपावधारण, प्रकृति-पुरुषयोर्भेदज्ञान । वस्तुके स्वरूपको ठीक २ जानना, प्रकृति और ब्रह्मकी अलग २ पहिचान ।
विवेक-दृश्वन्, त्रि. विवेकवान् । दाना ।
विवेकिन्, त्रि. विरागी । दाना ।
विवेचक, त्रि. विचक्षण, चतुर; सोचनेवाला ।
विवेचन, न. (स्त्री) (ना) विचार । सोंच, दलील ।
विवेचनीय, त्रि. विवेचित । विचारके लायक, सोचने के काबिल ।
विवोढु, पु. जामाता; जमाई, दायाद ।
विव्वोक, पु. प्रिय वस्तुमेभी अनादर । [वनियां ।
विश(श्) पु. मनुज, वैश्य । इनसानव्य, वर्ण,
विश(स)ङ्कट, त्रि. विशाल । लंबा, चौड़ा ।
विशद, पु. शुभ्र, निर्मल, स्पष्ट, (त्रि) दक्षान्, विमल, व्यक्त । सुफेद रंग, सुफेद, साफ़, ज़ाहिर, मुफ़सल ।
विशय, पु. संशय । शक ।
विशर, पु. वध, । कतल ।
विशसन } **विशस** } पु. खड्ग (न) मारण । तलवार, कतल ।
विशल्य, त्रि. शल्य हीन, गतव्यथ ।
विशस्त, त्रि. हत, नाशित; माराहुआ, बरबाद ।
विशाख, पु. कार्त्तिकेय, (स्त्री) (खा) नक्षत्रवि० कठिकठ । शिवजीका वेटा, सोल्हवां नक्षत्र ।

विशारद, पु. बकुल वृक्ष, क्षुद्र दुरालभा (त्रि) पंडित, प्रगल्भ, श्रेष्ठ (स्त्री) (दा) देवी होशयार, नेक ।
विशाल, त्रि. विस्तीर्ण, बृहत्, (पु) मृग, नृप, (स्त्री) (ला) उज्जैननगरी । फैला हुआ, बड़ा ख़ास हिरण, एक पादशाह, खास बूटी ।
विशालता, स्त्री. पार्श्वविस्तार । फैलावट ।
विशाला-क्ष, पु. महादेव, गरुड़, विष्णु, (त्रि) बृहन्नेत्र, (स्त्री) पार्वती, नागदन्ती ।
विशिख, पु. तोयवल्ल (त्रि) शिखारहित (स्त्री) (खा) (ख्या) ।
विशिष्ट, त्रि. युक्त, विलक्षण, विशेषण-युक्त । मुरक्कब, अजीब, मौसूफ़ ।
विशिष्टा-द्वैत, न. रामानुजायुक्त प्रकृतिविशिष्टस्य ब्रह्मणोऽद्वयत्वं । रामानुज जी का मत है जिसमें प्रकृति ब्रह्मसे अलग नहीं मानी ।
विशीर्ण, त्रि. शुष्क, जरावस्थापन्न । सूखा, बूढा, फटा हुआ ।
विशुद्ध, त्रि. दोपरहित, विशद (स्त्री) (द्धि) दोपराहित्य । बे ऐब, फैलाहुआ, बे ऐबी ।
विश्रृङ्खल, त्रि. परिपाटीशून्य । बेक़ायदह ।
विशेष, पु. प्रभेद, प्रकार, व्यक्त, तिलक, वैशेषिकोक्त पदार्थविशेष, अर्थालङ्कारविशेष । ज्यादती, तरह, ज़ाहिर, टीका ।
विशेषक, पु. न. तिलक, तमालपत्र, (त्रि.) विशेषकर्ता, (न.) एक वाक्यतापन्नश्लोकत्रय । माथे पे का टीका, ज्यादह करनेवाला, एक वाक्य बने हुए तीन श्लोक ।
विशेषण, न. भेदक धर्म । सिफ़त ।
विशेषित, त्रि. भेदित, विशेषण-युक्ती-कृत । फर्क किया हुआ, सिफ्त किया हुआ ।
विशेष्य, त्रि. गुणादिभिर्भेद्य । मौसूफ़ ।
वि-शोक, पु. अशोक वृक्ष (त्रि) शोकरहित, (स्त्री) चित्तवृत्ति भेद (स्त्री) (का) । वेग़म, दिलकी हालत ।
विशोधिन्, त्रि. शोधन-कारक (स्त्री) (नी) नागदन्ती । सफ़ा या सही करनेवाला, एक ख़ास पौदा ।
विश्र(श्रा)णन, न. दान । खैरात ।

विश्र(स्र)ब्ध, त्रि. विश्वस्त, शान्त, अनुद्धत, गाढ । मोतविर, आराम, हलीममे, मज़बूत ।
विश्र(स्र)म्भ, पु. विश्वास, प्रत्यय, केलिकलह, वध । यकीन या भरोसा, झगड़ा, कतल ।
विश्रवस्, पु. मुनिविशेष ।
विश्राणन्, न. दान । खैरात ।
विश्राणित, त्रि. दिया हुआ, बख़शा हुआ ।
विश्रान्त, त्रि. शान्त, बैठा हु०, हटा हुआ, (स्त्री.) (न्ति) आराम ।
विश्रम्भिन्, त्रि. विश्वासवान् । मोतकिद ।
विश्राव, पु. प्रसिद्धि, ख्याति । मशहूरी, शोहरत।
विश्रुत, पु. विख्यात (स्त्री.) (ति) प्रसिद्धि । मशहूर, पिघला हुआ, मशहूरी ।
वि-श्लथ, त्रि. शिथिल; ढीला ।
वि-श्लिष्ट, त्रि. शिथिल; ढीला ।
विश्व, न. जगत् (पु) तदभिमानी जीव (पु) (श्वे) श्राद्ध देवता; त्रि. सकल ।
विश्व-कर्म्मन्, पु. सूर्य, देवशिल्पी, मुनि, परमेश्वर।
विश्वकेतु, पु. अनिरुद्ध ।
विश्व(ष्व)क्सेन, पु. विष्णु (स्त्री) प्रियङ्गु वृक्ष ।
विश्व(ष्व)च्, व्य. सर्वतः, विश्वगामी ।
विश्व-जित्, पु. सर्वस्वदक्षिणयज्ञ विशेष ।
विश्व-देव, पु. अग्नि, (पु) (बहु) गणदेवताविशेष।
विश्व-धारिणी, स्त्री. पृथिवी । ज़मीन ।
विश्व(ष्व)प्सन्, पु. अग्नि, चन्द्र, देव, विश्वकर्म्मा, भूमि ।
विश्वपद्, पु. सूर्य्य, चान्द, आग ।
विश्व-भेषज, न. शुण्ठी; सोंठ ।
विश्व-म्भर, पु. इन्द्र, विष्णु (स्त्री) (रा) पृथिवी ।
विश्व-राज, पु. परमेश्वर। तमाम दुनियांका राजा।
विश्व-रेतस्, पु. चतुर्भुख, ब्रह्मा ।
विश्व-वेदस्, पु. इन्द्रादि देवता, सर्वज्ञ मुनि ।
विश्व-श्रवस्, पु. मुनिविशेष ।
विश्व-सृज्, पु. चतुर्मुख, ब्रह्मा ।
विश्व-सित, त्रि. जात-विश्वास, (स्त्री) (ता) विधवा । मोतबिर, बेवा ।
विश्वाची, स्त्री. अप्सराभेद, । हूर ।
विश्वा-त्मन्, पु. विष्णु, ब्रह्मा । [मुनिविशेष ।
विश्वा-मित्र, पु. महर्षिविशेष, गाधिराजाका सुत,
विश्वास, पु. चित्तवृत्तिभेद, प्रत्यय, श्रद्धा । यकीन, एतबार ।
विश्वास्य, पु. विश्वासयोग्य, । एतवार के लायक ।
विष्, स्त्री. विष्ठा; गूह, जहर । [गरल ।
विष, न. जल, पद्म केशर, मृणाल (पु. न.)
विश्व-कण्ठ, पु. महादेव । शिव
विष-घातिन्, पु. विशेषवृक्ष, त्रि. विषनाशक, शरीहकापेड़, ज़हरके दूर करनेवाला ।
विष-घ्न, पु. शरीष वृक्ष, यवास, विभीतक, चम्पक, हिलमोचिका, इन्द्रवारुणि, वर्वरा, भूम्यामलकी रक्तपुनर्नवा हरिद्रा (त्रि) विषनाशक ।
विष-ज्वर, पु. महिष; भैंसा ।
विषण्ड, मृणाल, कमलफूलकीडंडी, भिस ।
विषण्ण, त्रि. खेद-युक्त । आज़ुर्दा ।
विषण्णता, स्त्री. आज़ुर्दगी ।
विष-द, न. पुष्पकासीस, (पु) शुक्लवर्ण, (त्रि) तद्वान, । हीराकसीस, सुपेदरंग, सुपेद, ज़हर देनेवाला ।
विष-दन्त, पु. } ज़हरीला सांप ।
विष-भृत्, पु. } ज़हरीला सांप ।
विष-धृत, पु. } ज़हरीला सांप ।,
विषम, पु. असम, दारुण संकट, न. मद्यविशे. अर्थालंकारवि० । न्नहमवार, मुशकिल, तंगी, मुसीवत ।
विषम, पु. ज्वरभेद । तपदिक ।
विषमस्थ, त्रि० मुसीवत ज़दह ।
विषमा-युध, } पु. पंचवान । काम ।
विषमे-षु, } पु. पंचवान । काम ।
विषय, पु. इन्द्रिय-ग्राह्यवस्तु, ज्ञेयवस्तु, धन, स्थान, पात्र, वर्णनीय पदार्थ । रूप आदि, जानने के लायक वस्तु, दौलत, जा, वर्तन, वर्णन करनेके लायक ।
विषयिन्, न. ज्ञान, इंद्रिय, (त्रि) विषयासक्त, (पु) राजा, कामदेवध्वनि । [मनसादेवी ।
विषवैद्य, पु. विषहर, त्रि. विषघ्न, (स्त्री) (द्या)
विषाण, न. पशु, शृङ्ग, हस्तिदन्त, वराह, सींग; हाथीदांत ।
विषा-राति, पु. कृष्णधूस्तर । स्याहधतूरा ।
विषास्य, पु. सर्प, भल्लातक, । सांप, भिलावा ।
विषु, व्य. साम्य, नानारूपता । वैसाहि ।

विषुव(वत्), न. समरात्रिदिनकाल। मेष और तुला संक्रांति।

विष्कुम्भ(क), पु. प्रथम योग, विस्तार, प्रतिबंध, व्यास, कीलक। १ ला योग, फैलाव, रोक, चटकनी, कुतर।

विष्किर, पु. विहग। परिंदह।

विष्टप, न. भवन। दुनिया।

विष्टब्ध, त्रि. प्रतिबद्ध। रुका हुआ।

विष्टर, त्रि. दर्भा-सन, आसन, कुशमुष्टि, वृक्ष। कुशाका आसन, कुशकी मुट्ठी।

विष्टर-श्रवस्, पु. विष्णु भगवान्।

विष्टि, स्त्री. वेतन, आसन विनाकर्मकरण व प्रेषण, सप्तमकरण, विगार का काम, वारिश, भेजना, १ वां कारण।

विष्ठा, (त्रि.) पुरीष; गूंह।

विष्णु, पु. व्यापक-देव, परमेश्वर, वह्नि, शुद्ध धर्मशास्त्रकारक मुनिविशेष; भगवान्, आग, सफा, एक मुनि जिसने धर्मशास्त्र बनाया है।

विष्णु-क्रान्ता, (त्रि.) अपराजिता। एक बूटी।

विष्णु-गुप्त, पु. न्यायभाष्यकर्त्ता, चाणिक्य पण्डित।

विष्णु-पद, न. आकाश, (स्त्री) (दी) गङ्गा, वृष-सिंह, वृश्चिक, कुम्भ राशि। आसमान, दर्या गंगा।

विष्णु-रथ, पु. गरुड़। विष्णु का रथ।

विष्णु-रात, पु. परीक्षित राजा।

विष्कार, पु. धनुर्गुणाकर्षण-शब्द। कमान के चिल्ला खींचने की आवाज़।

विष्य, त्रि. विषवध्य। जहर से मारनेके लायक।

विष्वक्सेन, पु. विष्णु, विष्णु निर्म्माल्य भक्षक. (स्त्री) (ना) प्रियङ्गु। भगवान्, विष्णु की चढ़त खाने वाला।

विष्वाण, पु. भोजन। खुराक।

विस, न. मृणाल; कमल फूल की डंडी।

वि-संवाद, पु. विप्रलम्भ, वंचन, कलह, विरोध। ठगी, झगड़ा, दुश्मनी।

विसंष्ठुल, त्रि. विश्रृङ्खल। बेतरतीब।

विस-कण्ठिका, } स्त्री. बकविशेष। खास किसम
विसकण्ठी, } का वगुला।

विस-कुसुम, पु. पद्म; कमल फूल। [का दरख्त।

विसटङ्क, पु. सिंह, इङ्गुदी वृक्ष। शेर, हिंगोट

विस-नाभि, स्त्री. पद्मिनी, पद्मसमूह; कम्मी, कौल फूलों का मजमह।

विस-प्रसून, न. पद्म। कौलफूल

विसर, पु. समूह, विस्तार। मजमा, फैलाव।

विसर्ग, पु. दान, त्याग, जलत्याग, विसर्जनीया-ख्यवर्ण विशेष, मोक्ष, प्रलय। खैरात, तर्क, पानी देना, (:) यह हरफ़, नजात, तुफ़ान।

विसर्जन, न. दान, त्याग, प्रेरण। बख्शश, तर्क, कर्ना, भेजना।

विसर्जनीय, त्रि. त्याज्य (पु): विसर्ग अक्षर।

विसार, पु. मत्स्य, (न) अरण्य। मछली, जङ्गल।

विसारित, त्रि. फैलाया हुआ।

विसारिन्, त्रि. प्रसरणशील, (पु) मत्स्य। फैल-नेवाला, मछली।

विसीनी, स्त्री. पद्मलता, पद्मसमूह। बहुत कमल।

विसू(ची)चिका, स्त्री. रोगविशेष। हैज़ा।

विसृत, त्रि. व्याप्त, विस्तीर्ण। फैला हुआ, मुहीत।

विसृत्वर, त्रि. प्रसरण शील; फैल जानेवाला।

विसृष्ट, त्रि. प्रेरित, विक्षिप्त, क्षिप्त, त्यक्त। भेजा हुआ, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ।

विस्त, पु. न. स्वर्ण कर्ष; अस्सी रत्ती भर। १ तोला.

विस्तर, पु. शब्दसमूह, वाक्यसङ्ग, विस्तार। फैलाव, दराज़ी, बहुतायत।

विस्तारित, त्रि. प्रसारित; फैलाया हुआ।

विस्तीर्ण, त्रि. विपुल, विस्तारयुक्त; फैला हुआ।

विस्तृत, त्रि. विस्तारयुक्त (स्त्री) (ति)। फैला हुआ, वसीह।

विस्पष्ट, त्रि. ज़ाहर, प्रकट। [की आवाज़।

विस्फार, पु. टंकार ध्वनि, स्फूर्ति। चिल्लाचढ़ाने

विस्फरित, } त्रि. कंपित, ध्वनित, निकासित।
विस्फारित, } त्रि.

विस्फुलिङ्ग, पु. वन्हिकण, विषविशेष। चंगारा, जहर की किसम।

विस्फूर्ज(र्जुः), पु. उद्रेक, वज्रनिर्घोष। बिज-लीकी कडक। [सी। चेचक, हुंबल।

विस्फोट, (न.) पु. स्फोटकविशेष; फोडा, फिन-

विस्मय, पु. आश्चर्य, अद्भुत, रसभेद, संशय। तअज्जुब, शक।

विस्मरण, न. भूल। [पुर। फ़रेब।

विस्मापन, पु. कुहक, कामदेव, (न) गन्धर्व-

विस्मित, त्रि. विस्मय-युक्त । हैरान ।
विस्मृत, त्रि. स्मरणाविषय, भ्रान्त (स्त्री) (ति) भूला हुआ, भूल ।
विस्र, न. आमगन्धि । कच्चे मास की बू ।
विस्रंस, पु. पतन, क्षरण । गिरना, खिरना ।
विस्रंसिन्, त्रि. पतनशील; गिरनेवाला ।
विस्र-गंधा, स्त्री. त्रपुषा । लाख, हौवेर ।
विस्र-गन्धि, पु. हरिताल । हड़ताल ।
विस्रम्भ, पु. विश्वास, प्रत्यय, परिचय । यक़ीन, वाकफ़ी । [तविर, मुहिब्ब ।
विस्रम्भिन्, त्रि. विश्वासयुक्त, प्रणयी । मो-
विस्रसा, स्त्री. जरा; बुढ़ापा ।
विस्वन(स्वा)न, न. ध्वनि, शब्द । आवाज़ ।
विह-ग, } पु. पक्षी, मेघ, शर, चन्द्र सूर्य ग्रह ।
विहं-ग, } परिंदह, बादल, तीर, सय्यारह ।
विह-ङ्गम, पु. पक्षी । परिंदह ।
विहग-राज, पु. गरुड़ । परिन्दो का राजा ।
विहङ्गिका, स्त्री. भारयष्टि ।
विहर, } पु. वियोग । विहार । जुदाई ।
विहरण, } न. खेल ।
विहसित, न. मध्यम हास्य; हंसी ।
विहसन, न. मधुरहंसी । मुसकराना, [पांडा ।
विहस्त, त्रि. व्याकुल, (पु) पण्डित, हैरान दाना,
विहारित, न. दान, त्याग । ख़ैरात । [परिंदह ।
विहायस, पु. न. आकाश, (पु.) पक्षी । आसमान,
विहार, पु. गमन, भ्रमण, स्कन्ध, लीला, बौद्ध देवालय, वैजयन्त । जाना, घूमना, कंधा, खेल, बौद्धोंका मंदिर, ख़ास विहिया ।
विहारिन्, त्रि. विहारकारी । खिलाड़ी । [हुआ ।
विहीन, त्रि. त्यक्त, वर्जित । खाली, महरूम किया
विह्वल, त्रि. व्याकुल, विलीन । हैरान, छुपा हुआ । [शनी, तन्हाई ।
वी(वि)काश, पु. रहः, प्रकाश । तनहाई, रौ-
वीक्षण, न. नेत्र, दर्शन, (स्त्री) दृष्टि । चशम, दीदार, नजर ।
वीक्षित, त्रि. दृष्ट । देखा हुआ ।
वीङ्खा, स्त्री. शूकशिम्बी, गतिविशेष, नृत्य, सन्धि, अश्वगति, कपि कच्छू । रफ़तार, नाच, मेल, घोड़ेकी चाल ।
वीचि(ची), पु. स्त्री. तरङ्ग, अवकाश, सुख, अल्प, किरण । लहर, फ़ुरसत, थोडासा, शुआ ।
वीचि-मालिन्, पु. समुद्र समंदर, सूरज ।
वीज, न. कारण, शुक्र, अङ्कुर, अव्यक्त-गणित-विशेष, मन्त्रविशेष, धान्य-फलादि । सवब, नुत-फ़ह, अंगूरी, जबर मुकाबलह ।
वीज-कोश, पु. वीजाधार । फली ।
वीजन, न. व्यजन, चामर; पंखा, चौरी ।
वीज-पूर, पु. जम्बीरभेद; लेंबू ।
वीजाकृत, त्रि. वीज बोनेंके पीछे कृष्ट ।
वीज-फलक, पु. जम्बीर; निम्बू, अनारगी ।
वीज-वपन, न. क्षेत्र, वीजक्षेपण; खेत, वीज बोना ।
वीज-सू, पु. पृथिवी । ज़मीन ।
वीजिन्, पु. उत्पादी, (त्रि) वीजविशिष्ट । बाप, तुख़मदार ।
वीज्य, त्रि. कुलीन । ख़ान्दानी ।
वीटि(टी)का, } स्त्री. सज्जितताम्बूल; पान का
वीटिका, } वीड़ा ।
वीणा, तन्त्रीगत वाद्यविशेष; वीन बाजा ।
वीणावती, स्त्री. अप्सराविशेष ।
वीत, न. युद्धासमर्थ हस्त्यश्वादि सैन्य, अङ्कुशकर्म, (त्रि) शान्त, गत (स्त्री) (ति) गति, दीप्ति, प्रजन, अशनधावन । जंग में नालायक हाथी घोड़ा, वग़ैरह, फ़ौज, आंकशका काम, हलीम, गुजरा हुआ, रफ़तार, चमक, खाना, दौड़ना ।
वीतंस, पु. मृगपक्षिणां बन्धनोपकरण, विश्वासहेतु प्रावरण । फंदह, जाल ।
वीत-कल्मष, पु. निष्पाप । बेगुनाह ।
वीत-शोक, त्रि. शोकरहित, (पु) अशोकवृक्ष । बेग़म, अशोक दरख़त ।
वीति-होत्र, पु. अग्नि, अनल, सूर्य । आतिश, हवा, आफ़ताब ।
वीथि(थी)(का), स्त्री. श्रेणी, वर्त्म, गृहांग, ना-टकाङ्गविशेष । क़तार, बाट, घरका कोना, नाटक का हिस्सह । [हवा, सफ़ा ।
वीध्र, पु. नभस्, वायु, (त्रि) निर्मल । आसमान,
वी(वि)नाह, पु. कूपादि मुखबन्धन साधन । कूएंका ढंकना ।

वीप्सा, स्त्री. युगपद्व्याप्तीच्छा।
वीर, न. मरिच, पद्म-मूल, काञ्जिक, उशीर; (त्रि) वेगवान्, शौर्ययुक्त, (स्त्री) (रा) शट्टी, सुरानाम गंधद्रव्य, आमलकी, पतिपुत्रवती स्त्री, रम्भा, विदारी, दुग्धिका। मिर्च, कांजी, तेज़, बहादुर।
वीरण, न. उशीर (स्त्री) निम्नस्थान। खस्स, नीची जगह।
वीर-पत्नी, स्त्री. वीरभार्या। बहादुर की जोरू।
वीर-पत्रा, स्त्री. विजया; भांग।
वीर-पाण(न), न. युद्धार्थ–सुरापान, युद्ध खेद दूरीकरणार्थ सुरापान। जंग के लिये शराब पीना, जंगकी तक़्लीफ़ दूर करनेके वास्ते शराब का पीना।
वीर-भद्र, पु. अश्वमेधीयाश्व, गणविशेष। अश्वमेधका घोड़ा, शिवजी का गण।
वीर-रजस्, न. सिन्दुर। सिंधूर।
वीर-सू, स्त्री. वीरजननी। बहादूरों की मां।
वीर-सेन, पु. नलराजा का पिता।
वीरा-श्वसन, न. अति विपद्वाक युद्ध।
वीरा-सन. न: उपवेशन विशेष। ख़ासनशस्त।
वीर-हन्, पु. नष्टाग्नि विप्र; जिस अग्निहोत्री की आग ठंडी हो गयी है। [जंग का मैदान।
वीरा-शंसन, न. भयङ्कर युद्धक्षेत्र, । खौफ़नाक
वीरुध(धा), स्त्री. विस्तृता लता; वेल।
वीरे-श्वर, पु. वीरभद्र। शिवगण।
वीर्य्य, न. देहस्थ चरम धातु, पराक्रम, प्रभाव। नुतफ़ा, ज़ोर, इकबाल।
वीर्य्य-वत्, त्रि. बलवान्। जोरावर।
वीवधिक, पु. भारवाहक। बारबरदार।
वीहार, पु. बुद्धमन्दिरविशेष, विहार।
वृक, पु. स. (की) बाघ, काक, जठराग्नि।
वृकदंश, पु. कुकुर; कुत्ता।
वृक-धूर्त्त, पु. शृगाल; गीदड़।
वृको-दर, पु. भीम, ब्रह्मा (त्रि.) पडपेटा।
वृकण, पु. छिन्न। कटा हुआ।
वृक्ष, पु. द्रुम; पेड़। दरख़्।
वृक्षक, पु. छोटा पेड़।
वृक्ष-चर, पु. वानर; बंदर, त्रि. वृक्षोंपर रहनेवाला।
वृक्ष-च्छाय, न. पेड़ोंका साया।
वृक्ष-धूप, पु. सरल द्रुम। तारपीन।
वृक्ष-नाथ, पु. वट वृक्ष। बड़ का दरख़्त।
वृक्ष-पाक, पु. वट वृक्ष। बड़ का पेड़।
वृक्ष-वाटिका, स्त्री. घर के नज़दीक का बगीचा।
वृजन, न. पाप, आकाश, (पु) केश (त्रि) कुटिल। गुनाह, आसमान, बाल, तिरछा।
वृजिन, न. पाप, चर्म्म (त्रि.) भुग्न, (पु) देश। गुनाह, चमड़ा, तिरछह, मुल्क।
वृत, त्रि. प्रार्थित, (स्त्री) (ति) वेष्टन। चुना हुआ, मनजूर किया हुआ, ढांपा हुआ, पड़दा।
वृत्त, न. चरित्र, अक्षर, पद्यवि०, वृत्ति, (त्रि) अतीव वर्तुल, दृढ़, अधीत, मृत, जात, अभ्यस्त, (पु) कूर्म्म (न) पद्य। चालचलन, शेअर, गुज़ारा। माज़ी, गोल, मज़बूत, पढ़ा हुआ, मरा हुआ, पैदा हुआ २, कछुआ, नज़म, दायरा।
वृत-गन्धन, न. गद्यविशेष। ख़ासनसर।
वृत्तस्थ, त्रि. सच्चरित्र। नेक चाल चलन।
वृत्तान्त, पु. संवाद, संदेश, वार्ता, वर्णन, । वार्दात, पैग़ाम, बयान।
वृत्ति, स्त्री. वर्त्तन, स्थिति, विवरण, जीविका, अंतःकरण, परिणाम, विवर्ण, रचना, व्याख्यान।
वृत्र, पु. अन्धकार, रिपु, त्वाष्ट्रपुत्र, दानववि०, मेघ, पर्वतवि. मंत्र, शब्द, । अंधेरा दुश्मन, नाम एक देवका बादल, पहाड़, आवाज़।
वृत्र-द्विष्, } पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।
वृत्रहन्, }
वृथा, व्य. व्यर्थ, निरर्थक। बे फ़ायदह।
वृद्ध, न. शैलज नाम गंध द्रव्य, पु. वृक्षवि०, त्रि० वृद्धियुक्त, ज्येष्ठ, पण्डित, पुराना।
वृद्धत्व, न. वार्द्धक्य; बुढ़ापा, (स्त्री) (द्धि) आधिक्य, विस्तार, योगविशेष।
वृद्ध-प्रपितामह, पु. पड़दादा (स्त्री) (ही) पड़दादी।
वृद्ध-भाव, पु. बुढ़ापा।
वृद्ध-श्रवस्, पु. इन्द्र। [श्राद्ध।
वृद्धि-श्राद्ध, न. आभ्युदयिक श्राद्ध, नांदी मुख-
वृद्धोक्ष, पु. बूढ़ा सांड।
वृद्ध्याजीव, त्रि. सूदख़ोर।
वृन्द, न. समूह (पु. न.) संख्यावि० (स्त्री) (न्दा) राधा, तुलसी।

वृन्दारक, पु. देवता, (त्रि) श्रेष्ठ, सुन्दर। नेक, खूबसूरत।
वृन्दावन न. श्रीकृष्णवन। मधुपुरीका वन।
वृन्दिष्ठ, त्रि. अतिसुन्दर। खूबसूरत।
वृश्चिक, पु. विच्छू, ८ म, राशि, मार्गशिर मास।
वृष, पु. २ य;राशि, धर्म्म, इन्द्र, मूल, शुक्र, जल।
वृषण, पु. मुष्क, अण्ड। आंडा। वैज़ा।
वृष-ध्वज, पु. शिव। महादेव।
वृषन्द, पु. इन्द्र, वरुण, वृष, अश्व।
वृष-पर्वन्, पु. दैत्यविशेष, शिव।
वृषभ, पु. वैल। सांड।
वृषभानु, पु. राधिकाजीका पिता।
वृषल, पु. शूद्र, चन्द्रगुप्त राजा, धर्म्म (स्त्री) (ली) अविवाहिता ऋतुमती, शूद्रा।
वृषाकपायी, पु. द्वि. हरविष्णू। स्त्री. लक्ष्मी, गौरी, स्वाहा, शाची।
वृषाङ्क, पु. शिव, महादेव।
वृषि(षी), कुशासनविशेष।
वृषोत्सर्ग, पु. वृषत्यागरूप श्राद्धविशेष।
वृष्ट, त्रि. सिक्त (स्त्री) (ष्टि) वर्षा।
वृष्णि, पु. यदुवंश, कृष्ण,
वृष्य, त्रि. वलकर। ज़ोरावर।
वृहत्, त्रि. विपुल, महत्, आच्छादित न. स्त्री (ती) (तिका)वाक्य, विद्या, वस्तु, वीणा, छन्दोवि० उत्तरीय वस्त्र, क्षुद्र वार्ताकी।
वृहती-पति, पु. वृहस्पति, देवताओंका गुरु।
वृहद्भानु, पु. अग्नि, सूर्य।
वृहस्पति, पु. देवगुरु। जुहल।
वेग, पु. शीघ्रतारूपसंस्कारवि०, मलमूत्रादिनिस्सरण, प्रवृत्ति, प्रवाह। तेज़ी काहली।
वेजित, त्रि. कांपता हुआ।
वेण, पु. पृथुराजपिता संकरजातिविशेष।
वेणि(णिका), स्त्री. केशपाश। गुत्त।
वेणु, पु. बांसरी, नृपविशेष।
वेणुक, न. तोत्र, अंकुश; छड़ी, आंकुश।
वेणुन, न. कटुरसयुक्त द्रव्यविशेष, मिरच।
वेतन, न. मज़दूरी, गुज़ारा मोल।
वेतनिक, त्रि. वेतनोपजीवी मज़दूर।
वेतस, पु. वेत्र। वेतका दरख़्त।
वेतस्वत्, जहांपर वांसकी बहुतसी वेलें हो।
वेताल, पु. द्वारपाल, भूताधिष्ठित शव, मल्लविशेष, शिवगणाधिपविशेष।
वेत्र, पु. स्वनामख्यात दरख़्त। बांसरी (न.) वेतकी छड़ी वांस पिटारी।
वेत्र-धर, पु. द्वारपाल। दरबान।
वेत्रवती, स्त्री. मालवेकी नदीविशेष, वेत्रा, सुरमाता।
वेत्रिन्, पु. "वेत्रधर" देखो।
वेत्रासन, न. वेतकी कुरसी।
वेद, पु. विष्णु, वृत्त, वित्त, यज्ञाङ्ग, अपौरुषेय वाक्य, श्रुति। गोल, दौलत यज्ञकाहिस्सा, कलाम इलाही, १ ऋक् २ यजुष् ३ साम ४ अथर्व।
वेद-गर्भ, पु. ब्रह्मा, ब्राह्मण।
वेद-ज्ञ, पु. वेदज्ञाता; वेदके जाननेवाला।
वेदन, न. अनुभव, ज्ञान, दुःख, विवाह, (स्त्री) (ना) ज्ञान, चर्मा व्यथा। [मुलहिद।
वेद-निन्दक, पु. नास्तिक, शूद्र, वेदनिंदाकारी,
वेदनीय, त्रि. ज्ञेय। जानने के लायक।
वेद-वृत्त, न. वेदोक्ताचरण। वेदके मुताबिक चलन। [वाला।
वेद-विद्, पु. विष्णु (त्रि) वेदज्ञ। वेदके जानने
वेदव्यास, पु. मुनिविशेष, सत्यवती का पुत्र।
वेदत्, त्रि. वेत्ता। जाननेवाला।
वेदा-ङ्ग, न. शुल्बवयय पद्प्रकार शास्त्र। यथा १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६ छन्द।
वेदादि, पु. प्रणव, ओंकार।
वेदान्त, पु. उपनिषद, उत्तर मीमांसा।
वेदान्तिन्, पु. वेदान्तके जाननेवाला।
वेदा-भ्यास, पु. अध्ययन, विचार, जप, अध्यापन।
वेदि, न. अम्बष्ट (स्त्री) (दी) (दिका) आविष्कृत भूमि, मंत्र, पु. पंडित।
वेदिजा, स्त्री. द्रौपदी; राजा पाण्डुकी जोरू।
वेदित, त्रि. ज्ञापित, दर्शित। जताया हुआ। दिखाया हुआ।
वेदितव्य, त्रि. वेद्य जाननेके लायक।
वेदोदय, पु. सूर्य्य। आफ़ताब।
वेद्य, त्रि. वेदितव्य; जाननेके लायक।

वेध, पु. वेधन नक्षत्रादि घटित योगविशेष। गहराई, सूराख़।

वेधक, न. धन्याक (पु) कर्पूर आम्लवेतस (त्रि) वेधकर्त्ता। धनिया, काफूर, वींधनेवाला।

वेधिन्, त्रि. वेधक, (स्त्री.) हस्तीकर्ण, वेधनास्त्र,। वींधने वाला, हाथीका कान, वींधनेकी सूई।

वेध-मुख्य, पु. कर्चूर, (स्त्री) (ख्या) कस्तूरी।

वेधस, न. ब्रह्मतीर्थ; अंगुठेकामूल।

वेधस्, पु. ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य्य, पंडित, श्वेतार्क वृक्ष, अनन्तपुत्र। सूर्य्य, दाना, अक, सुपेद।

वेधित, त्रि. छेदित; विंधाहुआ। [लायक।

वेध्य, न. लक्ष्य (त्रि) वेधनीय,। नशाना, वींधनेके

वेपथु, } पु.
वेपन, } न. कम्प, लड़न। कांपना, लड़ना।

वेम(न्), पु. वाप दराड; तांतीकी नाल।

वेर, न. पु. शरीर, वार्त्ताकु, कुंकम,। जिसम, वेंगुन, केसर।

वेल, न. उपवन, श्रीफल, विल्वफल, (स्त्री) (ला) काल, मर्य्यादा समुद्र कूल, रोग, वाक्य, वुध स्त्री,। वगीचा, नारयेल, विल्व, वक्त, हद्द, समुद्रका किनारा, बीमारी, कलाम।

वेल्ल, } न. अश्वलुण्ठन, रोटिका, निर्म्माणार्थ
वेल्लन, } स्थूलवर्तुल। घोड़ेका लोटना बेलन।

वेल्लहल, पु. लम्पट,। अय्याश, लुचा।

वेल्लित, त्रि. वक्रदोलित (न) दोलन, लुण्ठन।

वेविज, त्रि. शीघ्र जल्द,।

वेश(ष), पु. अलंकार रचनादि कृतशोभा, वेश्यागृह, गृहमात्रप्रवेश लिबास, कंचनीका घर, घर, खानह (स्त्री) (सी) पिन। [करनेवाला।

वेशक, पु. गृह (त्रि) वेशकारक,। घर, दाखल।

वेशन, न. गृह, मुद्गादिचूर्ण; घर, मुंगी वगैरहका आटा, दाखल होना।

वेश-वास, पु. वेश्यागृह। कंचनीका घर।

वेशस, पु. पड़ोसी। हमसायह।

वेश(स)र, पु. खच्चर वेसर।

वेशा, स्त्री. कच्चाताल। पोखरा, जौहड़।

वेश्मन, न. गृह घर, महल।

वेश्यकालङ्क, पु. चटक; चिड़िया।

वेश्य, न. वेश्यालय, (स्त्री) (श्या) वेश्या,। कंचनीका घर, कंचनी।

वेषण, न. दत्त जार, (स्त्री) (णा) नौकरी, हाज़री।

वेष्ट, पु. प्रदक्षिण, परिधि, लपेट पगडी।

वेष्टित, त्रि. नदी, प्राचीरादि द्वाराकृत वेष्टन, न. युद्ध, आवृत्त, दर्या या कोटसेघिरा हुआ, रुका हुआ, ढपा हुआ।

वेष्ट्य, त्रि. वेष्टनीय; लपेटनेके लायक।

वेसग, न. द्विदलचूर्ण। दाल, खिचड़ी।

वेसवार, पु. उपस्कार वसार, मसाला।

वै, व्य. पादपूरण, संबोधन, अनुनय।

वैकक्ष(क), गल स्थलमें तिरछी पहिरीहुईमाला, उत्तरीय। माला, अंगोच्छा।

वैकतक, पु. मणिकार, रत्नवणिक; जौहरी।

वैकल्य, न. विकलत्व, विकृतभाव,। लंगड़ापन, हैरानी। [स्थानविशेष।

वैकुण्ठ, पु. श्रीकृष्ण, इन्द्र, (न) नारायणवास

वैकृति, न. विकार। तबदीली।

वैक्रान्त, न. मणिविशेष, मिकनातीस, चुम्बक।

वैक्लव्य, न. विक्लवता, क्षोभ, विकलत्व। घबराहट।

वैखरी, स्त्री. बुद्धिद्वारा उत्थित कंठगत नादरूप वर्णन, भाषावि०। [पात्रविशेष।

वैखानस, पु. वानप्रस्थ, ब्रह्मपुत्र, (स्त्री) (सी)

वैजयन्त, पु. इन्द्रप्रासाद, इन्द्रध्वज, गुह। इन्द्रका घर, इन्द्रका नशान, शिवजीका पुत्र।

वैजयन्तिक, त्रि. पताकाधारी, (स्त्री) (का) पताका वृक्षविशेष,। नशानबरदार, झंडी, जयन्तीका पोदा।

वैजयि, पु. मघवा, जिनचक्रवर्ती विशेष।

वैजात्य, न. जातिच्युति, वैलक्षण्य। जातिसे निकाल देना। शरारत।

वैजिक, पु. परमात्मा (त्रि) वीजका।

वैज्ञानिक, त्रि. निपुण, हेश्यार, कारीगर।

वैडालव्रत, न. दिखाकर धर्म्म करना और भीतर दुष्टाचार। मकर।

वैडालव्रति(क)(तिन्), भांड, मक्कार।

वैण, पु. पृथुराजा, वेणुजीवी,। वांसोंका काम करनेवाला।

वैणव, न. वांसका फल, (त्रि) वांसका, (पु) उपनयनके समय गुरुद्वारा हाथमें दी हुई लकड़ी- (स्त्री) (वी) तवाशीर।

वैणविक, त्रि. वंसीवजानेवाला।

वैणिक, त्रि. वीणवादक । वीण बजानेवाला ।
वैण्य, पु. पृथुराजा, यदुवंशीय ५ म, राजा ।
वैतसिक, पु. बांस बेचनेवाला ।
वैतथ्य, पु. अलीकता; झूठापन ।
वैतरणि(णी), स्त्री. नरककी नदी, पितृकन्या ।
वैतस, पु. बेतका पेड़ छड़ी आदि ।
वैतान(निक), पु. वेदविहित होम, (त्रि) वैतानसंबंधीय । वेदकी रीतिसे होम, होमका, निशान का ।
वैताल(लिक) पु. बोधकर, स्तुतिपाठक, खट्टिताल (त्रि) वेमालका, (स्त्री) (की) विद्यावि० ।
वैताली, न. मात्राछन्दोविशेष । खास बहिर ।
वैत्रक, पु. वेत्रसंबंधीय; छड़ीका ।
वैदग्ध, न. पाण्डित्य, चातुर्य्य, (स्त्री) (ग्धा) भङ्गी, चातुर्य्य, रसिकता । दानाई हेश्यारी, मजाख़ ।
वैदर्भ, न. व्यङ्ग्य वाक्य, (त्रि) विदर्भसंबंधीय, (पु) विदर्भ देशीय राजा, रुक्मिनीपिता, (स्त्री) (र्भी) काव्यरीतिवि०, अगस्त्यपत्नी; दमयन्ती, रुक्मिणी ।
वैदिक, पु. वेदज्ञ ब्राह्मण, (त्रि) वेदोक्त, । वेदके जाननेवाला, वेदमें कहा हुआ ।
वैदुष्य, न. पाण्डित्य, विज्ञता । दानाई ।
वैदूर्य्य, न. मणिविशेष; पन्ना ।
वैदेह, पु. वणिक, निमीराजपुत्र, (स्त्री) (ही) रोचना, हरिद्रा, सीता वणिकस्त्री, । निमीराजाका बेटा, बनिया, हलदी, रामचंद्रजीकी स्त्री, बनिये की जोरू ।
वैद्य, पु. पण्डित, वासकवृक्ष, आयुर्वेदवेत्ता, (त्रि) वेदसंबंधीय, (स्त्री) (द्या) काकोली । दाना, वांसादरख, तबीब, वेदका, दवाईका, खासबूटी ।
वैद्यक, न. आयुर्वेद, । इल्मतिब्ब ।
वैद्यनाथ, पु. प्रसिद्धशिव ।
वैध, न. विधिसिद्ध, विधिबोधित । वेदकी हिदायत ।
वैधर्म्य, न. विरुद्धधर्म्म; पाप, गुनाह ।
वैधव्य, न. विधवात्व; रंडेपा ।
वैध(धात्र), पु. सनत्कुमार आदि मुनिविशे०, (स्त्री) (त्री) ब्राह्मी ।
वैधृति, स्त्री. विष्कुम्भादि सप्तविंशति योगान्तर्गत योगविशेष ।

वैधेय, त्रि. मूर्ख, विधिसंबंधीय, । बेवकूफ़, विधिका ।
वैनतेय, पु. गरुड़, अरुण ।
वैनायक, त्रि. गणेश का ।
वैन्य, } पु. वेनपुत्र । राजा पृथु ।
वैनी, }
वैपरीत्य, न. विपरीतत्व, उलटापन, मुखालिफ़त ।
वैभव, न. ऐश्वर्य्य । हश्मत, शान ।
वैभ्राज, न. देवोद्यान, देवताओंका बाग़ ।
वैमात्र, पु. विमातृपुत्र, (स्त्री) त्रा, विमातृकन्या, । सौतेलाभाई सौतेली बहिन ।
वैयर्थ(र्थ्य), न. निरर्थकता, वृथात्व । बेमअनी, बेफ़ायदगी ।
वैयाकरण, पु. व्याकरणवेत्ता, व्याकरणाध्येता, (स्त्री) (णी) व्याकरणवेतृस्त्री, (त्रि) व्याकरणसम्बधीय ।
वैयाघ्रपद, पु. गोत्रकारक मुनिविशेष ।
वैयामा, न. निर्लज्जिता । बेशरमी ।
वैयासकी, पु. शुकदेव, (स्त्री) (की) व्यासदेवकृत संहिता । [ग्रंथ ।
वैयासिक, त्रि. व्यासका, (स्त्री) (की) व्यासकृत
वैर, न. विरोध । दुश्मनी, बहादुरी ।
वैर-निपातन, } न. दुश्मनी का बदला लेना ।
वैर-प्रतिकार, } पु. वैरका पलटा ।
वैरशुद्धि, } त्रि.
वैरस्य, न. विरसता । बज़ायक़ह ।
वैरसेनि, पु. नलराजा । वीरसेनका बेटा ।
वैराग्य, न. सांसारिकसुख वैतृष्णता, (पु) (गिन्) विषयेच्छा राहित्य । दुनयावी ख्वाहशो सेबेपरवाह या बेबहरा ।
वैराट, पु. इन्द्र गोपकीट, (त्रि) विराटसंबंधीय, (स्त्री) (ट्या) जिन षोडश विद्यान्तर्गत देवी विशेष ।
वैरायमाण, त्रि. विरोधी । दुश्मन ।
वैरारोह, पु. युद्ध; जंग ।
वैरूप्य, न. विचित्रता फ़र्क, बदशकली ।
वैरोचन, (त्रि) विरोचनका (पु.) बुद्ध, बलिराजा, अग्निपुत्र सूर्य्यपुत्र सिद्धगण ।
वैल्व, न. विल्वफल, (त्रि.) विल्वसंबंधीय, । विल्वकाफल, विलका ।
वैलक्षण्य, न. भिन्नाभिन्नता । तबदीली ।

वैलक्ष्य, न. घबराहट, व्याकुलता । हैरानी ।
वैवर्ण्य, न. बदरंगी ।
वैवस्वत, त्रि. सूर्य्यका (पु) पहिला मनु ।
वैवाह, त्रि. } विवाहका । शादीका ।
वैवाहिक, न. } विवाहका ।
वैशम्पायन, पु. मुनिविशेष । [वैफायदह ।
वैशस, न. विपक्ष, कलह, अनर्थ । दुश्मन, लड़ाई
वैशाख, न. धनुर्वेद संस्थान वि०, (पु) मन्थान दण्ड, १ म, मास, (स्त्री) (खी) वैशाखी पूर्णिमा और संक्रांति, तीरन्दाज़का पैंतड़ा, मथानी ।
वैशिष्ट्य, न. अधिकाई, बड़ाई ।
वैशेषिक, त्रि. कनादमुनि कृत दर्शन शास्त्र वेत्ता, (न) तत्कृत दर्शन, न्यायविशेष ।
वैशेष्य, न. विशेषता; बडाई । फरक ।
वैश्य, पु. तृतीयवर्ण, वाणीयां आदिक, द्वीपविशेष, (स्त्री) (श्या) वैश्यजाति स्त्री ।
वैश्रवण, पु. कुबेर ।
वैश्वदेव, त्रि. विश्वदेवके उद्देश्य दिया हुआ अन्न।
वैश्रवणा(लय)(वास)(णोदय), पु. वटवृक्ष । बड़का दरख़्त ।
वैश्वानर, पु. अग्नि, वेदांशवि०, चित्रक वृक्ष, (स्त्री) यज्ञविशेष, (त्रि) अग्निसम्बन्धीय । आतिश, चित्रा दरख़्त, नाम एक यज्ञका, आग का ।
वैश्वी, स्त्री. उत्तराषाढा नक्षत्र; २१ सवां, नक्षत्र ।
वैषम्य, न. साम्याभाव, विषमत्व, आतिशय्य, दाय, उत्पात । जुदाई, तर्फ़दारी ।
वैषयिक, त्रि, विषय सम्बन्धीय ।
वैष्ठुत, न. होम भस्म; होम की राख । [हवा ।
वैष्टुन्, न. विष्टप, स्वर्ग, वायु, विष्णु । वहिश्त,
वैष्णव, न. होम भस्म (त्रि) विष्णु सम्बन्धीय, पु. विष्णुभक्त (स्त्री) (वी) विष्णुभक्ति, अपराजिता, तुलसी, दुर्गा, गङ्गा, वैणवस्त्री ।
वैसारिण, पु. मत्स्य; मछली ।
वैसूचन, न. नाटकमें पुरुष का स्त्रीवेष धारण ।
वैहासिक, पु. भण्ड; भांड ।
वोङ्, पु. गुवाक; सुपारी ।
वोड्, पु. गोनस सर्प्प, मत्स्यविशेष (स्त्री) (ड्री) पणचतुर्थांश । गोह सांप, एक खास मछली, पांच गंडे कौड़ी ।
वोढव्य, त्रि. वहनीय । उठाने के लायक, भार ।
वोढु, पु. मुनिविशेष ।
वोढृ, पु. भारिक, वहनकर्त्ता, मूढ, मूर्ख, परिणेतृ, सूत, अनड्वान्, ऋषभ । बोझा बरदार, गाड़ीवान, बेवकूफ, दूला, बैल, नेक ।
वोद, त्रि. गीला, काले रंगकी पतली मट्टी ।
वोरट, पु. कुन्द-पुष्प; कुंद फूल ।
वोहित्थ, न. नौका, अर्णवयान । नाव, जहाज़ ।
वौषट्, व्य. देवता के लिये हवि चढ़ाने का मन्त्र ।
व्यंसक, पु. धूर्त, वञ्चक । बाजीगर, शरीर, वैश्वदेव ।
व्यंसित, त्रि. प्रतारित । फ़रेब दिया हुआ ।
व्यक्त, त्रि. स्फुट, प्रकट, स्थूल (पु) विष्णु (स्त्री) (क्ति) प्रकाश, जीव, वस्तु, पदार्थ, जन ।
व्यङ्ग, पु. मेंडक, अंगहीन, मुहकी बीमारी, मस्खरी, ठट्ठा ।
व्यङ्गित, त्रि. व्याकुल हुआ २ ।
व्यङ्गोक्ति, स्त्री. परिहासवाक्य, श्लेषोक्ति । तानह, तनज़, मसख़री, दुमअनी कलाम ।
व्यङ्ग्य, त्रि. गूढतात्पर्य्यक वाक्य, श्लेष वाक्य । मज़ाख़ की कलाम ।
व्यजन, पु. न. व्यजन; पंखा । हवा करना ।
व्यञ्जक, पु. अविनय, (त्रि) प्रकाशक, सूचक, श्लेषोक्ति । ज़ाहिर कुनिंदह ।
व्यञ्जन, न. सूपशाकादि, चिन्ह, श्मश्रू, अवयव, दिन, उपस्थ, हल्वर्ण, कखआदि, (स्त्री) (ना) शब्दवृत्तिविशेष, श्लेष ।
व्यति-कर, पु. व्यसन, दुःख, परस्पर-संश्लेष ।
व्यतिक्रम, पु. क्रमविपर्यास, उल्लङ्घन । बेतरतीबी, उलटा सुलटा, उलांघना ।
व्यतिक्रमिन्, त्रि. अन्यथाचारी, प्रतिकूल । विरक्त, बेतरतीब करनेवाला ।
व्यतिव्यस्त, त्रि. व्याकुल, उत्कण्ठित । हैरान ।
व्यतिरेक, पु. भेद, प्रभाव, काव्यालङ्कारविशेष ।
व्यतिरेकिन्, त्रि. भेद, प्रभाव, वृद्धि, विभेदक । फ़र्क कुनिंदह ।
व्यतिषक्त, त्रि. आसक्त, मिलित, ग्रथित ।
व्यति-सङ्ग, पु. परस्परमिलन; आपस में मेल ।
व्यति(ती)हार, पु. एक जातीय. क्रियाकरण, विनिमय । बदला ।

व्यतीत, त्रि. अतीत । गुज़रा हुआ ।

व्यतीपात, पु. महोत्पात, अपमान; विष्कुम्भादि सप्तविंशति योगान्तर्गत योगविशेष, पारिभाषिक योगविशेष । ह्रादसह, वेइज्जती। गगनेहिमकरार्कौ युगपतस्यातां यदैक मार्गस्थौ । गगनेद्वेकैस्थ यदा शशी समवेत व्यतीपातः ।

व्यत्यय, **व्यत्यास**, पु. व्यतिक्रम, अन्यथा । तबदीली, उलटापन ।

व्यथक, पु. वेदनाकारक । तक्लीफ़ दहिंदह ।

व्यथनीय, त्रि. वेदनीय, पीडनीय । तक्लीफ़ देनेके लायक ।

व्यथा, (स्त्री.) दुःख, पीडा शोक, भय, कष्ट ।

व्यथित, त्रि. पीडित, दुःखित । तकलीफ़ ज़दह ।

व्यध, पु. वेध.भेदन, प्रहार, व्यथा ।

व्यध्व, पु. कुपथ । खराब रास्ता।

व्यनुनाद, पु. प्रतिध्वनि । गूंज ।

व्यपदिष्ट, त्रि. कथित, छलित ।

व्यपदेश, पु. कपट, नाम, वाक्यविशेष ।

व्यपनयन, न. प्रत्याख्यान, त्याग । इनकार, तर्क।

व्यपरोचन, न. छेदन, अवतारण । काटना ।

व्यपरोपित, त्रि. छेदित, अवतारित ।

व्यपवर्जन, न. त्याग, दान, निवारण।

व्यपवर्जित, त्रि. त्यक्त, दत्त, निषिद्ध ।

व्यपाकृत, त्रि. अपनीत, अस्वीकृत (स्त्री) (ति) नमानना, छिपाना ।

व्यपाश्रय, पु. आश्रय । पनाह ।

व्यपेक्ष, त्रि. प्रतीक्षक (स्त्री) (क्षा) प्रतीक्षासंबंध, व्याकरणमते सूत्रद्वय मिलन । इन्तज़ार, इन्तज़ारी,

व्यपेत, त्रि. अलग किया हुआ । [बेइन्साफ़ी ।

व्यभिचार, कदाचार, अन्यथाचरण । बदचलनी,

व्यभिचारित, पु. (त्रि) दुःष्क्रियासक्त ।

व्यय, पु. खरच । नाश ।

व्ययित, त्रि. खरच किया हुआ ।

व्यर्ण, त्रि. पीडित । दुखिया ।

व्यर्थ, त्रि. निकम्मा । बेमअने ।

व्यलीक, न. मनोदुःख, अपराध (त्रि) अप्रिय, मिथ्या । फ़िकर, कसूर, न प्यारा, गृढ ।

व्यवकलन, न. वियोग । जुदाई तफ़रीक ।

व्यवकलित, त्रि. कृतव्यवकलन, । तफ़रीक, किया हुआ, जुदा किया हुआ ।

व्यवक्रोशन, न. तिरस्कार, परिभाषण । मलामत, झगड़ा । [हुआ ।

व्यवच्छिन्न, त्रि. भिन्न, अन्तर ।जुदा, फ़र्क किया

व्यवच्छेद, पु. पृथक्त्व, मोचन, निर्धारण, अस्त्रचिकित्सा । जुदाई, अलहदगी, सबमेंसे एक को अलग करके दिखाना । जराही ।

व्यवधा, स्त्री. व्यवधान, पिधान । पर्दा, पोशीदगी ।

व्यवधान, न. आच्छादन, पर्दा । दर्मियानी ।

व्यवधि, पु. व्यवधान, तिरोधान, आछादन; पड़दा, ढकना ।

व्यवधापक, त्रि. अच्छादक । ढांपनेवाला ।

व्यवसाय, पु. उपजीवका, अनुष्ठान, निश्चय, वाणिज्यचेष्टा, विष्णु । पेशा, यकीन, तजारतका तरदुद, नामविष्णुका ।

व्यवसायिन्, त्रि. व्यवसायविशिष्ट, वाणिज्यकारक, अनुष्ठाता, । मेहनती, व्योपारी ।

व्यवसित, त्रि. उद्यत, प्रतारित, अनुष्ठित, चेष्टित, निश्चित । तैय्यार, छला हुआ, काम, मतलब, प्रयोजन ।

व्यवस्था, स्त्री. शास्त्रनिरूपित विधि, मत । फ़ैसला।

व्यवस्थान, पु. विष्णु (न) स्थान, स्थापन । जगह, रखना ।

व्यवस्थानीय, त्रि. विधेय । करनेलायक ।

व्यवस्थापक, त्रि. विधानकर्त्ता, व्यवस्थाकर्त्ता । फ़ैसला देनेवाला, फ़तवा देनेवाला ।

व्यवस्थापन, न. विधिस्थापन । फ़ैसलादेना, फ़तवा देना । बैठना । [सला ।

व्यवस्था-पत्र, न. विधान, लिपि । तहरीरी फ़ै-

व्यवस्थापित, त्रि. स्थिर कियाहुआ । कायम कियाहुआ, ठहराया हुआ ।

व्यवस्थित, त्रि. विधिपूर्वक स्थित, विनिर्दिष्ट पृथक्कृत, सम्यक्स्थित । [मुन्सिफ़ ।

व्यवहर्तृ, त्रि. व्यवहारकर्त्ता, विचारक । बनिया;

व्यवहरणीय, त्रि. व्यवहर्तव्य, ग्राह्य । इस्तहमालमें लानेके लायक, [दानादि १४ विवाद ।

व्यवहार, पु. मुकद्दमा, रिवाज, व्यापार । ऋण-

व्यवहार-पाद, पु. व्यवहारांश, मुकद्दमेका एक हिस्सा । लिखित, कबज़ा वगैरह ।

व्यवहार-मातृका, स्त्री. विचार किया । मिसल ।

व्यवहार-विषय, पु. व्यवहारपद, तदष्टाविध यथा ।—ऋणादान, २ विक्षेप, ३ अस्वामिविक्रय, वेतनादान, सम्विदोव्यतिक्रम, क्रयविक्रयानुशय, स्वामिपालयोर्विवाद सीमाविवादधर्म, पारुपारुष्य, दण्डपारुष्य, स्तेय, साहस, स्त्री संग्रहण, स्त्री पुंधर्म, विभाग, द्यूत ।

व्यवहारिक, त्रि. व्यवहारी । बनियां, सौदागर ।

व्यवहारिन्, पु. व्यवहारकर्त्ता, व्योपारी; झगड़ालू ।

व्यवहित, त्रि. आच्छादित; ढंपा हुआ ।

व्यवाय, न. तेज, (पु) मैथुन; अन्तर्द्धान, शुद्धि । रौशनी, जमा, लुकाव, पाकीज़गी ।

व्यष्णुवान, त्रि. व्यापक, व्यापनशील ।

व्यष्टि, स्त्री, भिन्न भिन्न ।

व्यसन, न. विपदा, भ्रंश, अशुभ, पाप, वायु । निष्फल उद्यम, व्यर्थचेष्टा, विषयासक्ति । अष्टादश व्यसन यथा ।—१ मृगया, २ द्यूतक्रीडा, ३ दिवानिद्रा, ४ असूया, ५ वेश्यागमन, ६ नृत्य ७ गीत, ८ क्रीड़ा, ९ मिथ्यापर्यटन, १० मदिरापान, ११ शठता, १२ अपकार, १३ हिंसा, १४ दण्डपारुष्य, १५ वाक्पारुष्य, १६ आक्रमण १७ अनिष्टेच्छा, १८ प्रवञ्चना । मुसीबत, बुराई गुनाह, हवा, अठारह व्यसन जैसे । १ शिकार, २ जूआ, ३ दिन में सोना, ४ हसद, ५ अय्याशी, ६ नाच, ७ राग, ८ खेल, बेफ़ायदह घूमना, १० शराब पीना, ११ शरारत १२ बदी १३ ईज़ा पहुंचाना, सज़ा देना, गाली देना ।

व्यसनिन्, त्रि. व्यसनविशिष्ट; व्यसनवाला । ऐबदार ।

व्यसु, त्रि. मृत । मरा हुआ ।

व्यस्त, त्रि. व्याकुल, व्याप्त, प्रत्येक, विपरीत । हैरान, फैलहुआ, उलटा ।

व्यस्त, त्रि. व्याकुल, व्याप्त, प्रत्येक, विपरीत, व्यत्यय । हैरान, फैला हुआ, हरएक, उल्टा, ।

व्यन्ह, त्रि. दो दिनों में जो काम हो ।

व्याकरण, न. व्याख्यान, वेदाङ्गविशेष । सरफ़ नहव ।

व्याकार, पु. वक्रता, वैकल्य, व्याख्या । तिरछापन, बदशकल, शरह ।

व्याकुल, त्रि. शोकादिद्वारा इति कर्तव्यता शून्य । हैरान हुआ २, घबराया हुआ ।

व्याकृत, त्रि. प्रकाशित, व्याख्यात (ति) विरुद्ध आकृति । ज़ाहिर किया हुआ, तशरीह किया हुआ, बदशकल ।

व्याकोश(ष), त्रि. विकसित । खिला हुआ ।

व्याक्रोश, पु. कटूक्ति, तिरस्कार (स्त्री) (शी) परस्पर कटु भाषण । दुशनाम, मलामत, गालमगाली ।

व्याख्या, स्त्री. }
व्याख्यान, न. } विवरण । शरह, तशरीह, विधान ।

व्याख्यात, त्रि. विवृत, वर्णित, कथित । शरह कियाहुआ, कहाहुआ, बयान किया हुआ ।

व्याख्यातव्य, त्रि. विवरणके योग्य । तशरीहके लायक । [वाला ।

व्याख्यातृ, पु. व्याख्यान कर्ता । तशरीह करने-

व्याख्यान, न. विवरण । तशरीह ।

व्याख्येय, त्रि. विवरणीय । लायक शरह करनेके ।

व्याघात, पु. योगविशेष, विघ्न, प्रहार, काव्यालङ्कारविशेष । १३ वां योग, रोक चोट, टक्कर ।

व्याघातिन्, त्रि. प्रतिबन्धक । विघ्न करनेवाला ।

व्याघ्र-चर्मन्, न. शेरका चर्म ।

व्याघ्र, पु. जन्तुविशेष, स्त्री (घ्री) । बाघ, एरण्डीका दरख़्त, करंज का दरख़्त । [का दरख़्त ।

व्याघ्र-दल, पु. रक्त, एरण्ड वृक्ष । सुर्ख़ एरंड

व्याघ्र-पात्(द), पु. विकङ्कत वृक्ष, मुनिविशेष, (त्रि) व्याघ्र तुल्य चरण ।

व्याघ्राट, पु. भरद्वाज पक्षी । चंडूल ।

व्याघ्रास्य, पु. विडाल, (न) व्याघ्र-मुख । बिल्ली, बाघ का मुंह (त्रि) बाघकी भांतजिस का मुख है ।

व्याज, पु. कपट । देरी, बहाना । [शेष । तनज़ ।

व्याज-निंदा, स्त्री. कपटनिन्दा, काव्यालङ्कारवि-

व्याज-स्तुति, स्त्री. कपट-प्रशंसा, काव्यालङ्कारविशेष; जहां निंदा में प्रशंसा प्रतीत होती है । तनज़ ।

व्याड, पु. सर्प, पशु, हिंस्र, इन्द्र, ठग ।

व्याडि, पु. कोष और व्याकरणकार मुनिविशेष ।

व्याप्त, त्रि. विस्तृत । फैला हुआ ।

व्यात्यु(भ्यु)क्षी, स्त्री. जलक्रीडाविशेष, एक दूसरे पर पानी डालनेकी खेल ।

व्यादान, न. उद्घाटन; खोलदेना, फैलाना ।
व्यादिश, पु. विष्णु, नारायण ।
व्याध, पु. मृगहिंसक–जाति । शिकारी ।
व्याधाम, पु. वज्र ।
व्याधि, पु. कुष्टरोग, रोग, पीडा, काम-व्यथा, सन्तापजन्य-कृशता । कोढ़की बीमारी, बीमारी, दर्द, दर्द फ़राक से पैदा हुआ २ दुबलापन ।
व्याधित, त्रि. व्याधियुक्त । बीमार ।
व्याधु(धू)त, त्रि. कम्पित, वायुवेग चलित । कांपा हुआ, हवा से हिला हुआ ।
व्यान, पु. सर्व शरीरगत वायु ।
व्यापक, त्रि. व्यापनकारी, आच्छादक । फैलनेवाला, ढांपनेवाला ।
व्यापत्ति, } स्त्री. विपद, मृत्यु । मुसीवत, मौत ।
व्यापद्, } स्त्री. मृत्यु, आपत् ।
व्यापन, न. आच्छादन, व्याप्ति; ढांपना, फैलना ।
व्यापन्न, त्रि. मृत, मराहुआ । मुसीवत ज़दह, मारा हुआ ।
व्यापाद, पु. } द्रोहचिन्तन, हिंसा । किसीकी
व्यापादन, न. } बुराई सोचना, ईज़ा ।
व्यापादित, त्रि. द्रोहचिन्तित, मारित, हत । मारा हुआ ।
व्यापार, पु. कर्म, व्यवसाय, लाभजनक कर्म, आडम्बर । काम, मेहनत, नफेवालाकाम, दिखलावा ।
व्यापारिन्, त्रि. व्यवसाई, व्योपारी । सौदागर ।
व्यापिन्, पु. विष्णु (त्रि) ढापनेवाला, मुहीत ।
व्यापृत्त, त्रि. व्यापारनियुक्त । काममें मशगूल ।
व्याप्त, त्रि. पूर्ण आच्छन्न, वेष्टित । पूराहुआ, घिराहुआ, लपेटा हुआ ।
व्याप्ति, स्त्री. सवजगह होना, अष्टैश्वर्योंमेंसे एक, न्यायमें साध्य वह्निसमे असंबद्ध ।
व्याप्य, त्रि. व्याप्ति विशिष्ट, व्यापनीय । आवृत, निवृत्त, निराकृत । लपेटा हुआ, घिराहुआ, हटा हुआ । [मान ।
व्याप्य-वृत्ति, त्रि. अल्पदेशवृत्ति पदार्थमें वर्त-
व्याम, पु. प्रसारित बाहुद्वय । फैलाये हुए दोनों बाजू ।
व्यामिश्र, न. संमिलित । मिलाहुआ ।
व्यामुग्ध, न. दुःखित । दर्द ज़दह ।
व्यामृष्ट, त्रि. प्रक्षालित; धोया हुआ ।
व्यामोह, पु. पीड़ा, व्याधि, भ्रम । दर्द, बीमारी, भूल, ग़म । [वाला ।
व्यामोहक(र), त्रि. पीडाजनक, । तक्लीफ़ देने-
व्यायत, त्रि. व्यापृत, दीर्घ, दृढ, अतिशय फैला हुआ, लंबा, मज़बूत, निहायत ।
व्यायाम, पु. पौरुष, श्रम, विषम व्याम, मल्लक्रीडा । मेहनत, जवांमरदी, पहिलवानोंकी जिसमानी हर्कत ।
व्यायोग, पु. दृश्यकाव्यविशेष ।
व्याल, पु. सर्प, श्वापद, दुष्टगज, चित्रक, व्याघ्र, राजा (त्रि) शठ, व्याध । सांप, गीदड़, ख़राब हाथी, चीता, वाघ; बादशाह, शरीर, फंदक ।
व्याल-क, पु. दुष्ट-गज; मस्तहाथी ।
व्याल-ग्राह, (हिन्) पु. सर्पग्राही । सपादा ।
व्याल-मृग, पु. चित्रव्याघ्र; चीता, वाघ ।
व्यालम्ब, पु. रक्तैरण्डवृक्ष, सुरखएरंडीका पेड़ ।
व्यावक्रोशी, स्त्री. परस्पर आक्रोश, वियोग; लपेट घेरा ।
व्यावर्त्तन, न मुहफेरना । लौटना ।
व्यावर्त्तित, त्रि. फिराहुआ । पीठ दिये हुए ।
व्यावहारिक, त्रि. अदालती, (पु) मंत्री, जज्ज । वज़ीर । [करना ।
व्यावहासी, स्त्री. परस्पर हसन; आपसमें हासी
व्यावृत्त, त्रि. हटाहुआ, (स्त्री) (ति) निषेध ।
व्यास, पु. विस्तार, मान विशेष; पाठक ब्राह्मण, गोलमध्य रेखा । फैलाव, एक माना, पुराणोंके बनानेवाला ऋषि, खत । [कसमूह ।
व्यास-कूट, पु. महाभारत आदिमें कठिन श्लो-
व्यासक्त, त्रि. हैरान हुआ २, मसरूफ, लगाहुआ ।
व्यासङ्ग, पु आसक्ति । मशगूलीयत ।
व्यासपीठ पु. पुराण पाठासन, व्यासकीगद्दी ।
व्यासिद्ध, त्रि. निषिद्ध । रोकाहुआ, मनहकियाहुआ ।
व्याहत, त्रि. निषिद्ध, विशेषेणहत । घबराया हुआ, (स्त्री) (ति) खलल, शिकस्त ।
व्याहार, पु. वाक्य, युक्ति । कलाम, दलील ।
व्याहृत, त्रि. उक्त (स्त्री) (त्ति) मंत्रविशेष, भूरादि त्रय । कलाम, भूः भुवः स्वः येह तीन मंत्र ।
व्युत्क्रम, पु. क्रमविपर्यास । उल्टी तरह ।
व्युत्थान, न. स्वातन्त्र्यकृत्य, प्रतिरोधन, समाधि-

पारण, नृत्यविशेष, विशेषेणोत्थान। बेतआस्तुक, काम आमना ध्यानसे उठना, खासनाच, उठना।
व्युत्पत्ति, स्त्री. अच्छी पैदायश, इस्तिहदाद, इल्मीयत, शब्दकी प्रकृति और प्रत्ययकोपृथक् २ करके समझना। [बालियाकत,।
व्युत्पन्न, त्रि. संस्कृत, व्युत्पत्तियुक्त। आलिम
व्युत्पादक, त्रि. व्युत्पत्ति-जनक। इस्तअदाद जिससे पैदाहो।
व्यु, (व्यू) त, त्रि. व्यूत, स्त्री (ति) तन्तुसंतति। सी या हुआ, बुनाहु०, बुनना।
व्युदास, पु. निराकरण।
व्युष्ट, न. जल. दिन, प्रभात, पर्युषित (त्रि) दग्ध, उषित (स्त्री) (ष्टि) विन्यास. संहति, पृथुलता। जूठा, बासी, जला हुआ, तरतीब, मज मह।
व्यूत, त्रि. बुनाहुआ, (स्त्री) (ति) उनावट।
व्यूह, पु. समूह, निर्म्माण, तर्क, देह, सैन्य, युद्धार्थ सैन्यरचना। मजमह, बनाना, दलील, जिस्म, फौज, फौजकी किलाबंदी।
व्यूहन, न. सैन्यसंस्थान। फौजको कतार बांधकर खड़ा करना। [लिये कवायद।
व्यूह-रचना, स्त्री. युद्धार्थ सेना संस्थापन। जंगके
व्योमन्, न. आकाश, जल,स्वर्ग, सूर्यार्चनामंदिर।
व्योमकेश(शिन्), पु. महादेव।
व्योम-चारिन्, पु. देवता, पक्षी, चिरंजीव।
व्योम-धूप, पु. मेघ; बादल, अंबर।
व्योम-यान, न. विमान। बुरजेरेशमी, बैलून।
व्योष, न. त्रिकटु; त्रिकुटा। साहमरच शुण्ठी,मघ।
व्रज, पु. समूह, गोष्ठ, पथ, गोकुलगांव। ८४ कोस धरती जिला मथुराके गिर्द।
व्रज-नाथ, व्रज-वल्लभ, } पु. कृष्णचंद्र।
व्रज्या, स्त्री. पर्य्यटन, गमन। सफ़र।
व्रण, न. घाओ। जखम।
व्रणित, त्रि. जख़मी, घायल।
व्रणिन्, त्रि. जखमी, घायल।
व्रत, न. नियम, पुण्यकर्म्म। कायदह, वरत।
व्रतति(ती), स्त्री. लता विस्तार।
व्रतिन्, त्रि. यजमान, तपस्वी, व्रतधारी।
व्रश्चन, न. छेदन, छेदनास्त्र (त्रि) छेदक। काटना काटनेका हाथियार, काटनेवाला।
व्रात, पु. समूह, दल, मजमह।
व्रातीन, त्रि. मज़दूर। मेहनती।
व्रात्य, त्रि. संस्कारहीन, सावित्रीभ्रष्ट।
व्रीड, पु. व्रीडन, न. } (स्त्री) (डा) शर्म्म। हया।
व्रीडित, त्रि. लज्जित। शर्मिन्दह।
व्रीहि, पु. धान्य; धान।
व्रैहय, त्रि. धान्य उत्पादक खेत।

श.

श, न. धर्म्म, शुभ, (पु.) शिव, शस्त्र, सीमा।
शम्, अ. कल्याण, शुभशास्त्र।
शंवर, न. जल,। पानी।
शंसन, न. शंसा, स्त्री, } कथन,सूचन, प्रशंसा, इच्छा। बंधान, इशारह, तअरीफ़, ख्वाहिश।
शंसित, त्रि. कथित; कहाहुआ।
शंस्तृ, पु. स्तोता, होता। चापलूस,तहरीफ़ कुनिंदा।
शंसिन्, त्रि. सूचक, ज्ञापक, कथक। वतानेवाला, बयानकरने वाला।
शंस्य, त्रि. हिंस्य, स्तुत्य, प्रशंसनीय, कथनीय।
शक, पु. म्लेच्छजातिवि, देशवि०, नृपवि० शालिवाहनराजा, शब्द, शकदेशीय।
शकट, पु. न. यानवि०,असुरवि०,द्विसहस्र पलपरिमाण०, तिनिशवृक्ष। छकड़ा, दैत्यकानाम जिसको कृष्णचंद्रजीने माराथा, दोहज़ार पलभर वजन।
शकटाल, पु. दात्यूहपक्षी,। पपीहा।
शकटिका, स्त्री. क्षुद्र शकटवि०; छोटी गाड़ी।
शकल, पु. खण्ड, न. वल्कल शल्क, टुकड़ा छिल्का, कांटा।
शकलिन्, पु. मीन; मच्छी।
शका-ब्द, पु. राजा शालिवाहनकासाल।
शका-न्तक, शकारि, } पु. विक्रमादित्य राजा,। राजाविक्रम,शक जातिके म्लेच्छोंका दुश्मन।
शकुन, न. शुभाशुभसूचक चिन्ह, निमित्त (पु.) पक्षी, गृध्र, चिल्ल, चित्रवि०,गीतवि०, शुभशंसी। शुगून, परिंदह, गिद्ध, चील, एक खास ब्राह्मण, अच्छी खबरदेनेवाला।
शकुनि, पु. पक्षी, गृध्र, चिल्ल, कौरव, मातुल, (स्त्री) (नी) श्यामापक्षी, चटका, गृध्री करण। परिंद, गिद्ध, चील, मामा, चिड़िया।

शकुन्त, पु. पक्षी, कीटवि०, भासपक्षी । परिन्दह । कौवा, मामा, श्यामाचिड़िया ।

शकुन्तला, स्त्री. मेनकाअप्सरा के गर्भमें विश्वामित्रके विंदुसे उत्पन्न हुई २ वेटी, राजा दुष्यन्तकी रानी ।

श(स)कुट, पु. मत्स्य । मच्छ ।

शकर(रि), पु. वृक्ष, खण्ड, वैल । चीनी । स्त्री. (री) छन्दोवि०, नदीवि०, मेखला, चंद्रहार, २६ मेंसे १२ वां, नामदर्योका, तड़ागी, एक किसमका हार ।

शकृत्, न. व्य. विष्ठा । गूंह ।

शकृत्करि, पु. स्त्री. (री) गौ आदिका वछड़ा ।

शक्त, पु. समर्थ, दृढ, परिश्रमी, । ताक़तवर, मज़बूत, मेहनती ।

शक्तता, स्त्री. कठिनता । सख्ती ।

शक्ति, स्त्री. सामर्थ्य, गौरी, लक्ष्मी, (पु.) वसिष्ठज्येष्ठपुत्र । ताकत, ज़ोर, वरछी, वसिष्ठजीका वड़ा वेटा ।

शक्ति-ग्रह, पु. शिव, कार्त्तिकेय, शब्दशक्तिज्ञान, स्वामिकार्तिक, जिस अर्थमें शब्दकी शक्ति है उसका जानना ।

शक्तिधर(पाणि)(भृत्), पु. कार्तिकेय, (त्रि) शक्तिधारी । शिवजीका वेटा, नेज़ावरदार ।

शक्ति-मत्, त्रि. शक्तिविशिष्ट । ज़ोरावर ।

शक्तु, पु. न. भर्जितयवादि चूर्ण; सत्तू ।

शक्त(क्र), त्रि. प्रियम्वद; मीठा वोलनेवाला ।

शक्य, त्रि. समर्थनीय, शक्त्याश्रय, वाच्य । जो कर सका जाय, जो होसके ।

शक्यता-वच्छेदक, त्रि. शक्यधर्म ।

शक्र, पु. इन्द्र, कुटज-वृक्ष, अर्जुन-वृक्ष, ज्येष्ठा नक्षत्र । दरख़त जिसको इन्द्रजौं लगते हैं, १८ वां; नक्षत्र ।

शक्र-गोप, पु. रक्तवर्ण-कीटविशेष । वीचवहूटी ।

शक्र-ज(जात), पु. काक, (त्रि) इन्द्रजात, जयन्त ।

शक्र-जित्, पु. रावणपुत्र, मेघनाद, (त्रि.) इन्द्रजेता । इन्द्रको जीतने वाला ।

शक्र-धनुष्य, न. इन्द्रधनुष । कौस कज़ा ।

शक्र-ध्वज, पु. न. भाद्रशुक्लद्वादशीमें पूज्य ध्वजाकार वस्तु ।

शक्राणी, स्त्री. इन्द्राणी । इन्द्रकी स्त्री [हाथी ।

शक्रि, पु. मेघ, वज्र, हस्ती, पर्वत । वादल, पहाड़,

शक्रु, पु. प्रियम्वद; मीठा वोलनेवाला । खुश कलाम ।

शङ्क, पु. शकटादि वाहक वृष, (स्त्री) (ङ्का) भय, तर्क । गाड़ीका वैल, ख़ौफ़, शक ।

शङ्कनीय, त्रि. सन्देह स्थल । शककी जगह ।

शङ्कर, पु. शिव, शङ्कराचार्य्य, (त्रि) मङ्गलकारक, (स्त्री) (री) शिवानी, मजिष्ठा लता, शमी ।

शङ्का, स्त्री. भय । खौफ, शक ।

शङ्कित, त्रि. त्रस्त, सन्दिग्ध, अविश्वस्त, (पु.) रोचक नामक गन्धद्रव्य । डराहुआ, शकदार, न यकीन किया हुआ ।

शङ्कु, पु. स्थाणु, मत्स्यविशेष, अस्त्रविशेष, संख्याविशेष, ईश, कलुष, मेढ्र, राक्षस, कीलक, कन्दर्प । सूका दरख़त, खास मछली, हथियार, दस लाख किरोड़, गुनाह, केर, राच्छस, सूरज की छाया मिलनेके लिये लकड़ी वग़ैरह से वनी हुई सूक्ष्माग्र वारह अंगुली की लकड़ी, कामदेव ।

शङ्कु-कर्ण, पु. गर्दभ; गधा ।

शङ्कु-तरु, पु. शालवृक्ष; सालका पेड़ ।

शङ्कुला, स्त्री. उत्पलपत्रिका, पूगकर्त्तनी । कमलका पत्ता, सरौंता ।

शङ्कोच(चि), पु. मत्स्यविशेष । एक ख़ास मछली ।

शङ्ख, पु. न. समुद्रजातजीवविशेष, रत्नविशेष, नाग, (पु.) ललाटास्थि, कुवेरनिधिविशेष, दशनिखर्व संख्या, धर्म्मशास्त्रप्रयोजक मुनि । समुंदरी जानवर, ख़ास जवाहर, माथेपरकी हड्डी, कुवेर की हश्मत, तअदाद, १०००००००००००० नाम एक धर्म्मशास्त्र वनाने वाले मुनि का ।

शङ्ख-धरा, स्त्री. हिलमोचिका; हिंचा साग ।

शङ्ख-ध्मा, पु. शङ्खवादक; शङ्ख वजानेवाला ।

शङ्ख-भृत, पु. विष्णु (त्रि) शंख धारने वाला ।

शङ्खिन्, पु. विष्णु, समुद्र, (त्रि) शङ्खधारी (स्त्री) (नी) चोरपुष्पी, श्वेतपुन्नाग वृक्ष, श्वेत वृन्दा, श्वेत चुका, वुद्धशक्तिविशेष, चतुर्विधनायकान्तर्गत स्त्रीविशेष ।

शचि(ची), स्त्री. इन्द्रपत्नी, इन्द्राणी ।

शचि(ची)पति. पु. इन्द्र । देवता ओंका राजा ।

शट, न. अम्लरसविशेष (स्त्री) (टा) जटा, केशर (स्त्री) (टी) खनामख्यात औषधिविशेष ।
शठ, न. तगरपुष्प-वृक्ष, कुङ्कुम, लोह, (पु) मध्यस्थ-पुरुष, धूर्त, धूस्तरवृक्ष; तगरका पेड, केसर, लोहा, सालिस, लुचा, धतूरहका पौदा ।
शठ(त्व)ता, स्त्री. न. धूर्तता । शरारत ।
शण, न. भांग, सनका पौदा, तीर ।
शणीर, न. शोणमध्यस्थपुलिन, दर्द्दरी तट । छोटा टापू, शोण दर्य्याका किनारा ।
शण्ड, न. पद्मादि समूह, (पु) नपुंसक, गोपति, मूर्ख । कमल वगैरह का मजमा, हीजड़ा, सांढ ।
शण्डता, स्त्री. नपुंसकत्व । हीजड़ापन ।
शण्डिल, पु. मुनिविशेष ।
शत, न. दशगुणित-दश; १०० एक सौ ।
शतक, त्रि. शतसंख्याविशिष्ट; सद, (न.) सौश्लोक का मजमह । [(म्मी) वृक्षविशेष ।
शत-कुम्भ, पु. पर्वतविशेष, (न) स्वर्ण (स्त्री)
शत-कोटि, पु. वज्र; सौ करोड़, पद्म ।
शत-क्रतु, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा ।
शत-खण्ड, न. सुवर्ण; सोना ।
शत-घ्नी, स्त्री. अस्त्रविशेष, बिच्छू, गलेकी बीमारी ।
शत-तम, त्रि. एकशत संख्या पूरक; सौवां ।
शत-द्रु, स्त्री. नदीविशेष । सतलुज ।
शत-धा, स्त्री. दूर्वा (व्य) शत प्रकार, शत गुण । दूब, सौ तरह से, सौ गुना ।
शत-धामन्, पु. विष्णु, नारायण ।
शत-धार, पु. वज्र (त्रि) सौधारवाला ।
शत-धृति, पु. इन्द्र, ब्रह्मा, स्वर्ग ।
शत-पत्र, न. पद्म, (पु) मयूर, सारसपक्षी । (स्त्री) (त्रा) औरत ।
शत-पथ, पु. यजुर्वेदका ब्राह्मण ग्रन्थ ।
शत-पथिक, त्रि. कईरास्तोंमें चलनेवाला, कई मतों पर चलनेवाला ।
शत-पद, न. नामकरणके लिये १ म, वर्ण चक्र-वि०, सूचक, स्त्री. (दी) कनकोल । कानखजूरा ।
शत-पद्म, न. श्वेतकमल; सुपेद सौ दलका कमल ।
शत-पर्वन्, पु. बांस, इक्षु, (स्त्री) (र्वा) दूब, बचा, शरत् पूर्णिमा, भार्गवपत्नी ।
शत-पाद, स्त्री. कर्णजलौका । कनकोल ।
शत-पुष्प, पु. भारवि (स्त्री) किरातार्जुनीय ग्रंथ-का बनानेवाला कवि, सोये का साग ।
शतभिषा, स्त्री. शतभिषा नक्षत्र । २४ वां नक्षत्र ।
शत-मख, } पु. इन्द्र; देवताओं का राजा ।
शत-मन्यु, }
शत-रूपा, स्त्री. ब्रह्मा के पुत्र स्वयम्भू मनुकी स्त्री ।
शत-लुम्प(क), पु. भारवि; किरात काव्यका कर्ता ।
शत-सहस्र, पु. लक्ष; एक लाख ।
शत-ह्रदा, स्त्री. विद्युत्, अशनि, दक्षकन्या; बिजुली, वज्र, दक्षकी बेटी ।
शता-नक, पु. श्मशान; मरघट । [विष्णुरथ ।
शतानन्द, पु. मुनिविशेष, ब्रह्मा, गौतम मुनि,
शतानीक, पु. वृद्ध, मुनिविशेष, राजाविशेष; बूढ़ा, एक संत वेदव्यास का चेला, राजा जन-मेजय का बेटा ।
शता-युस्, त्रि. सौ वर्ष का ।
शतारुस्, न. कुष्ठविशेष; कोढ़ ।
शता-वर्त्त(र्त्तिन्), पु. नारायण; भगवान् ।
शतिक, त्रि. सौ से खरीदाहुआ, सौ का ।
शते-श, पु. शतग्रामाधिपति; सौ गांवका राजा ।
शत्य, त्रि. शतद्वारा क्रीत । सौ से खरीदा हुआ ।
शत्रि, पु. हस्ती; हाथी ।
शत्रु, पु. रिपु, सपत्न । दुश्मन । [करने हारा ।
शत्रु-घ्न, पु. राम का भ्राता, (त्रि) शत्रुके घात
शत्रुता, स्त्री. वैर । दुश्मनी ।
शत्वरी, स्त्री. रात्रि । शब ।
शद, पु. क्षेत्रोत्पन्न फल मूलादि । नबातात ।
शद्रि, पु. मेघ, जिष्णु, हस्ती, (स्त्री) विद्युत्, खण्ड । बादल, अर्जुन, हाथी, वर्क, टुकड़ा, खांड, मिसरी ।
शनि, पु. } सप्तमग्रह, वारविशेष; सातवां ग्रह ।
शनैश्चर, पु. } जुहल ।
शनैस्, व्य. } मन्द, २ क्रमसे । अहिस्तह २ ।
शपथ, पु. प्रतिज्ञा । कसम ।
शपन, न. शपथ, दुर्वाक्य । बददुआ, कसम ।
शफ, न. घोड़ा आदिका खुर, वृक्षमूल ।
शफर, पु. मत्स्यविशेष, (स्त्री) (री) मछली ।
शबल, त्रि. नानावर्णका (पु) अनेकवर्ण ।
शब्द, पु श्रोत्रेन्द्रिय माह्यगुणविशेष, निनाद निनद आदि । आवाज़, लफ्ज ।

शब्दन, त्रि. शब्दकर्ता (न) शब्दमात्र । बोलने वाला, आवाज़ ।

शब्द-प्रवृत्ति, स्त्री. चतुर्विध वाक निष्पत्ति । वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती, सूक्ष्मा ।

शब्द-ब्रह्मन्, न. वेद ।

शब्द-भेदिन्, }
शब्द-वेधिन्, } पु. अर्जुन, पायु, उपस्थ, वाणविशेष । तीसरा पाण्डव, गुदा, केर, किसम का तीर जो शब्द को वींधता है ।

शब्द-योनि, स्त्री. शब्दाकर, धातु; जिससे शब्द निकसता है ।

शब्द-सङ्ग्रह, पु. शब्दकोष । लुग़ात । [किताब ।

शब्दा-नुशासन, न. व्याकरणशास्त्र । सरफ़की

शब्दार्थ, पु. शब्द प्रतिपाद्य पदार्थ । मअ़ने ।

शब्दित, त्रि. बोलाहुआ, बुलाया हुआ ।

शम, पु. शान्ति, उपचार, इन्द्रियनिग्रह । आराम, गाली, इन्द्रियों का रोकना ।

शमता, स्त्री. शान्ति, । सबर ।

शम पु. }
शमथ, पु. } शान्ति, मन्त्र । सबर, सलाह, दिल की क़ायमी ।

शमन, न. यज्ञार्थ पशुहनन, शान्ति, चर्वण, हिंसा, (पु.) यम, मृगविशेष । कुरबानी, आराम, ईज़ा, मलिकुलमौत, ख़ास हिरण ।

शमयितृ, त्रि. शमनकारक, विनाशक ।

शमल, न. पाप, विष्ठा । गुनाह, गूंह ।

शमित, त्रि. शान्त, हत, नाशित । वाआराम, मारा हुआ, तबाह किया हुआ ।

शमि(मी), स्त्री. जंड का पेड ।

शमिर, पु. वृक्षविशेष । जंडीका दरख़्त ।

शमिन्, त्रि. शान्त, धीर । साबिर, धीमा ।

शमीक, पु. मुनिविशेष । श्टङ्गी ऋषिका वाप ।

शमी-गर्भ, पु. ब्राह्मण, अग्नि । [अनाज ।

शमी-धान्य, न. माषादि सस्य; उड़द वग़ैरह

शम्पा, स्त्री. विद्युत्; बिजली । बर्क़ ।

शम्पात, पु. आरग्वध वृक्ष ।

शम्ब, पु. मूसलके आगेका लोहा. वज्र, (त्रि) भाग्यवान् । ताल्यवर, राम ।

शम्बर, न. सलिल, वित्त, चित्र, वौद्ध-मतविशेष, युद्ध, (पु) मृगविशेष, दैत्यविशेष, मत्स्यविशेष, शैलविशेष, जिनविशेष, युद्धश्रेष्ठ, लोध्रवृक्ष, अर्जुन वृक्ष, असुरविशेष (स्त्री) (री) । पानी, दौलत, नकश, जैनों का खास व्रत, जंग, खास हरण, नाम एक दैत्य का, नाम एक मछली का, खास पहाड़ ।

शम्बरा-रि, पु. कामदेव, बलराम ।

शम्ब-(म्भ)ल, पु. न. तीर, पाथेय, मत्सर (स्त्री) (ली) कुटनी । कनारा, सफ़र-खर्च, वकीली, कुटनी । [नाम एक दैत्य का ।

शम्बु(क), पु. जलजन्तुविशेष, दैत्यविशेष; घोंगा,

शम्बूक, पु. स्त्री. जलजन्तुविशेष (पु) गजकुम्भाग्र, शूद्रतापसवि०, दैत्यविशेष, शङ्ख, क्षुद्रशङ्ख (स्त्री) जलशुक्ति । घोंगा, हाथी के रुखसारे का कोनह, सिप्पी ।

शम्भु, पु. महादेव, ब्रह्मा, बुद्ध, विष्णु, सिद्ध ।

शम्या-प्रास, पु. बदरीकाश्रमान्तर्गत व्यासाश्रम; बदरीकाश्रम में व्यासदेव का आश्रम ।

शय, पु. हाथ, विस्तरा, सांप, नींद, बाज़ी, (त्रि) सोया हुआ ।

शयथ, पु. अजगर सर्प, शय्या, मैथुन, खट्वा । अजदहा, विस्तरा, सोहबत, खाट ।

शयनैकादशी, स्त्री. आसाढ़ सुदि एकादशी ।

शयान, त्रि. निद्रित; सोया हुआ । [अजगर ।

शया-लु, त्रि. सोनेवाला (पु) कुक्कुट, श्टगाल,

शयु, पु. अजगर सर्प । अजदहा सांप ।

शय्या, स्त्री. खट्वा, गुम्फन; खाट, बिछौना, विस्तरा ।

श(स)र, न. जल, (पु) बाण; पानी, तीर, सरकड़ा ।

शर-जन्मन्, पु. कार्त्तिकेय; शिवपुत्र । [भशाक ।

शरठ, पु. शाकविशेष, कृकला; गिरगिट, कुसु-

शरण, न. गृह, रक्षण, वध, वधक (स्त्री) (णि) पन्था, पृथिवी, (णी) प्रसारणी लता, । घर, हिफ़ाज़त, (त्रि.) हिफ़ाज़त कुनिन्दह, क़तल कुनिंदह, वाट, जमीन, ख़ास बेल ।

शरणा-गत, त्रि. शरणापन्न । पनाहगीर ।

शरणार्थिन्, त्रि. शरणागत । पनाह मांगनेवाला ।

शरण्ड, पु. पक्षी, कामुक, धूर्त्त, शरठ, भूषणविशेष, चतुष्पात् । परिंदह, अय्याश, शरीर, गिरगिट, ख़ास ज़ेवर, चौपाया, लुच्चा ।

शरण्य, न. रक्षणीय, (स्त्री) दुर्गा, शरणयोग्या, (त्रि) रक्षित । हिफ़ाज़त के योग्य, देवी, हिफ़ाज़त किया हुआ ।

शरण्यु, पु. वारिद, वायु । बादल, हवा, मुहाफ़िज़ ।
शरत्(द्)(दा), स्त्री. वत्सर, ऋतुविशेष; बरस, मौसमख़िज़ां ।
शरधि, पु. तूणी । तरकश ।
शरभ, पु. मृगेन्द्र, वानरवि०; उष्ट्र, शलभ; मकड़ी ।
शर-भू, पु. कार्त्तिकेय । शिवजीका पुत्र ।
शर(यु)यू, स्त्री. नदीविशेष; सरजू दर्या ।
शरारि, पु. पक्षीविशेष; "सारी" चिड़िया ।
शरव्य, न. तीरका नशाना ।
शराटि, स्त्री. पक्षीविशेष ।
शरार, पु. मृत्पात्रविशेष । मट्टीका प्याला ।
शरारु, त्रि. हिंस्र । दरिन्दह ।
शराव, पु. न. मृत्पात्रवि०; परिमाणवि०; मट्टीका प्याला, सेरकापैमाना, पड़दा ।
शरावती, स्त्री. नदीविशेष ।
शरा-सन, शरा-स्य } न. धनुष । कमान ।
शरीर, न. देह । जिसम ।
शरीर-ज, पु. रोग, कामदेव, पुत्र (त्रि) देहजात ।
शरीरा-वरण, न. चर्म्म, जिसमका चमड़ा ।
शरीरिन्, त्रि. मनुष्य, देही, (न) जीवात्मा ।
शरु, पु. क्रोध, वज्र, बाण, आयुध, सूक्ष्म, । गुस्सा, वज्र, तीर, हथयार, बारीक ।
शरेष्ट, पु. आम्र, आमका पेड़ ।
शर्कर, पु. वालुका, सिताखंड, (स्त्री) (री) खण्ड । वालू, चीनी, कंकर, खांड, छंदो वि०, नदी । [वाला
शर्करि(ल)क, त्रि. शर्कराविशिष्ट । खांड या कंकर
शर्द्ध(न), पु. अपानोत्सर्ग, पाद । गोज़ ।
शर्मद, पु. विष्णु, त्रि. सुखदायक ।
शर्म्मन्, न. सुख, त्रि. तद्विशिष्ट (पु) (शर्म्मा) ब्राह्मणोपाधि । आरामवाला । ब्रह्मणका ख़िताब ।
शर्म्मर, पु. वस्त्रवि०; (स्त्री) (रा) दारुहरिद्रा ।
शर्य्या, स्त्री. रात्रि । शब । [बेटा ।
शर्य्याति, पु. वैवस्वत मनु पुत्र; वैवस्वतमनुका
शर्व्व, पु. महादेव ।
शर्व्वर, न. अंधकार, कन्दर्प, (स्त्री) (री) रात्रि, योषित, हरिद्रा, संध्या । अंधेरह, काम, शब, जोरु, औरत, हल्दी, शाम ।
शर्व्वरीक, पु. हिंस्र, खल, नीच । ईजारसान, बद, कमीना ।
शर्व्वाणी, स्त्री. पार्वती ।
शल, न. शल्की, लोम, (पु) भृङ्गी, ब्रह्मा कुन्ताख, उष्ट्र, नृपतिवि०, असुरवि०, सहीकातकला, गण, बरछी, ऊंठ ।
शलभ, पु. कीटवि०, पतंग ।
शलाका, स्त्री. शल्य, शारिका, पक्षिणी, शल्की, शर, सूली, अस्थिकण्डक, अंकुर । सलाई, मयनापंखी, सहीकाकांटा, तीर, नकाश की कलम, हड्डी, कांटा ।
शलाकापरि, व्य. शलाका के खेलमें हार ।
शल्क, शल्कल, } न. खण्ड, वल्कल, मत्स्यत्वक् । टुकड़ा, छिलका, मच्छीका कांटा ।
शल्कलिन्, शल्किन् } पु. मत्स्य; मछली (त्रि) कांटेदार ।
शल्मलि, पु. शल्मलिवृक्ष (स्त्री) (ली) सिंबल का पेड़ ।
शल्य, न. बाण दुर्वाक्य, अस्थि, (पु) मदनवृक्ष, व्याध, माद्रदेशीय नृपवि०, शजारु पशु, सीमा शलाका, विल्ववृक्ष मत्स्यविशेष (पु. न.) शब्द, अस्त्रविशेष ।
शल्यारि, पु. युधिष्ठर राजा ।
शल्ल, न. त्वक् (पु) भेक । छाल, मेंडक ।
शल्लक, न. त्वक् (पु) शोणवृक्ष, (स्त्री) (की) पशुवि० । खाल, छिलका, सोना, ख़ास दरख़त, सही ।
शव, न. नल (पु. न.) मृतदेह । मुर्दह । [जोरू ।
शवर, पु. शिव, जल, व्याध (स्त्री) (री) व्याधकी
शवरथ, पु. अरथी, तखता ।
शवल, पु. कर्बुरवर्ण, जल (त्रि) बहुवर्ण (स्त्री) (ली) कर्बुरवर्णागौ, । चितकबरारंग, चितकबरा, पानी; चितकबरी गाय । [घट ।
शवसान, पु. पथिक (न) श्मशान । मुसाफ़िर, मर-
शश(क), पु. मृगविशेष, चतुर्विधपुरुषान्तर्गत पुरुषवि०, लोध्रवृक्ष । ख़रगोश, ख़ासआदमी ।
शश-धर, शश-भृत, शश-लाञ्छन } पु. चंद्र, कापूर; चांद, काफ़ूर ।
शश-स्थली, स्त्री. अन्तर्वेदी गंगा और यमुना के बीचका देश दुआबा ।

शब्दन, त्रि. शब्दकर्ता (न) शब्दमात्र । बोलने वाला, आवाज़ ।

शब्द-प्रवृत्ति, स्त्री. चतुर्विध वाक निष्पत्ति । वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती, सूक्ष्मा ।

शब्द-ब्रह्मन्, न. वेद ।

शब्द-भेदिन्, } पु. अर्जुन, पायु, उपस्थ, वाणविशेष । तीसरा पाण्डव, गुदा,
शब्द-वेधिन्, } केर, किसम का तीर जो शब्द को वींधता है ।

शब्द-योनि, स्त्री. शब्दाकर, धातु; जिससे शब्द निकसता है ।

शब्द-सङ्ग्रह, पु. शब्दकोष । लुग़ात । [किताब ।

शब्दा-नुशासन, न. व्याकरणशास्त्र । सरफ़की

शब्दार्थ, पु. शब्द प्रतिपाद्य पदार्थ । मअ़ने ।

शब्दित, त्रि. बोलाहुआ, बुलाया हुआ ।

शम, पु. शान्ति, उपचार, इन्द्रियनिग्रह । आराम, गाली, इन्द्रियों का रोकना ।

शमता, स्त्री. शान्ति, । सबर ।

शम पु. } शान्ति, मन्त्र । सबर, सलाह, दिल
शमथ, पु. } की क़ायमी ।

शमन, न. यज्ञार्थ पशुहनन, शान्ति, चर्वण, हिंसा, (पु.) यम, मृगविशेष । क़ुरबानी, आराम, ईज़ा, मलिकुलमौत, ख़ास हिरण ।

शमयितृ, त्रि. शमनकारक, विनाशक ।

शमल, न. पाप, विष्टा । गुनाह, गूंह ।

शमित, त्रि. शान्त, हत, नाशित । बाआराम, मारा हुआ, तबाह किया हुआ ।

शमि(मी), स्त्री. जंड का पेड ।

शमिर, पु. वृक्षविशेष । जंडीका दरख़्त ।

शमिन्, त्रि. शान्त, धीर । साबिर, धीमा ।

शमीक, पु. मुनिविशेष । शृङ्गी ऋषिका वाप ।

शमी-गर्भ, पु. ब्राह्मण, अग्नि । [अनाज ।

शमी-धान्य, न. माषादि सस्य; उड़द वग़ैरह

शम्पा, स्त्री. विद्युत्; विजली । वर्क़ ।

शम्पात, पु. आरग्वध वृक्ष ।

शम्ब, पु. मूसलके आगेका लोहा. वज्र, (त्रि) भाग्यवान् । ताल्यवर, राम ।

शम्बर, न. सलिल, वित्त, चित्र, बौद्ध-व्रतविशेष, युद्ध, (पु) मृगविशेष, दैत्यविशेष, मत्स्यविशेष, शैलविशेष, जिनविशेष, युद्धश्रेष्ठ, लोध्रवृक्ष, अर्जुन वृक्ष, असुरविशेष (स्त्री) (री) । पानी, दौलत, नकश, जैनों का ख़ास व्रत, जंग, ख़ास हरण, नाम एक दैत्य का, नाम एक मछली का, ख़ास पहाड़ ।

शम्बरा-रि, पु. कामदेव, बलराम ।

शम्ब-(म्भ)ल, पु. न. तीर, पाथेय, मत्सर (स्त्री) (ली) कुट्टनी । कनारा, सफ़र-ख़र्च, वख़ीली, कुटनी । [नाम एक दैत्य का ।

शम्बु(क), पु. जलजन्तुविशेष, दैत्यविशेष; घोंगा,

शम्बूक, पु. स्त्री. जलजन्तुविशेष (पु) गजकुम्भाग्र, शूद्रतापसवि०, दैत्यविशेष, शङ्ख, क्षुद्रशङ्ख (स्त्री) जलशुक्ति । घोंगा, हाथी के रुख़सारे का कोनह, सिप्पी ।

शम्भु, पु. महादेव, ब्रह्मा, बुद्ध, विष्णु, सिद्ध ।

शम्या-प्रास, पु. वदरिकाश्रमान्तर्गत व्यासाश्रम; वदरिकाश्रम में व्यासदेव का आश्रम ।

शय, पु. हाथ, विस्तरा, सांप, नींद, वाज़ी, (त्रि) सोया हुआ ।

शयथ, पु. अजगर सर्प्प, शय्या, मैथुन, खट्वा । अजदहा, विस्तरा, सोहबत, खाट ।

शयनैकादशी, स्त्री. आसाढ़ सुदि एकादशी ।

शयान, त्रि. निद्रित; सोया हुआ । [अजगर ।

शया-लु, त्रि. सोनेवाला (पु) कुक्कुट, शृगाल,

शयु, पु. अजगर सर्प्प । अजदहा सांप ।

शय्या, स्त्री. खट्वा, गुम्फन; खाट, विछौना, विस्तरा ।

श(स)र, न. जल, (पु) वाण; पानी, तीर, सरकड़ा ।

शर-जन्मन्, पु. कार्त्तिकेय; शिवपुत्र । [म्भशाक ।

शरठ, पु. शाकविशेष, कृकला; गिरगिट, कुसु-

शरण, न. गृह, रक्षण, वध, वधक (स्त्री) (णि) पन्था, पृथिवी, (णी) प्रसारणी लता, । घर, हिफ़ाजत, (त्रि.) हिफ़ाज़त कुनिन्दह, कतल कुनिंदह, वाट, जमीन, ख़ास वेल ।

शरणा-गत, त्रि. शरणापन्न । पनाहगीर ।

शरणार्थिन्, त्रि. शरणागत । पनाह मांगनेवाला ।

शरण्ड, पु. पक्षी, कामुक, धूर्त्त, शरठ, भूषणविशेष, चतुष्पात् । परिंदह, अय्यारा, शरीर, गिरगिट, ख़ास ज़ेवर, चौपाया, लुचा ।

शरण्य, न. रक्षणीय, (स्त्री) दुर्गा, शरणयोग्या, (त्रि) रक्षित । हिफ़ाज़त के योग्य, देवी, हिफ़ाज़त किया हुआ ।

शान्तनव, पु. नृपविशेष; भीष्मका पिता। (शन्तनुज) पु. चन्द्रवंशीय राजा विशेष।

शान्ति, स्त्री. मनकी स्थिरता, मंगल, कामक्रोधाद्युपशम, गोपीवि०, दुर्गा, दुरित निवृत्ति, सौभाग्य, मुक्ति, विश्राम, (पु) जिनचक्रवर्त्तिविशेष, दशममन्वन्तरीय इन्द्र। अमन आराम।

शान्त्व, न. सान्त्व। तसल्ली।

शाप, पु. आक्रोश, दिव्य, शपथ। बददुआ, क़सम।

शापास्त्र, त्रि. मुनिविप्र प्रभृति, भर्त्सित, निन्दित, ऋषि मुनि तथा ब्राह्मण, हजो किया हुआ, झिड़का हुआ।

शाब्द, त्रि. शब्दसम्बन्धीय (स्त्री) (ब्दा) सरस्वती।

शाब्दिक, त्रि. वैयाकरण।

शामित्र, न. पशुवध स्थान, पशुवध। कसाखाना, कसाईपन। [ख़ाक, राख़।

शामील, न. भस्म (स्त्री) (ली) यज्ञद्रव्यविशेष।

शाम्बरी, स्त्री. माया विद्या इन्द्रजाल आदि।

शाम्भव, न. देवदारु वृक्ष, (पु.) कर्पूर, गुग्गुल, विषविशेष, शम्भुपुत्र, शम्भुपूजक, (त्रि.) शम्भु सम्बन्धीय (स्त्री) (वी) पार्वती, तन्त्र-विद्या। दियार का दरख़्त, काफ़ूर, गूगल, ख़ास ज़हर, शिवजीका।

शायक, पु. बाण, खड्ग। तीर, शमशेर।

शार, त्रि. कर्बुर-वर्ण, (पु.) पवन (स्त्री) (री) चितकबरा रंग, हवा, कुश।

शारङ्ग, पु. चातक पक्षी, मृग, हस्ती, मयूर, मधुमक्षी, (त्रि.) कर्बुरवर्णविशिष्ट (स्त्री) (ङ्गी) वाद्ययन्त्रविशेष।

शारद, न. श्वेत-कमल (पु) वासर, (स्त्री) (दा) सरस्वती, दुर्गा, वीणाविशेष (दी) कार्तिकी पूर्णिमा (त्रि) शरद ऋतुका।

शारदीय, त्रि. शरत्सम्बन्धीय। ख़िज़ांका।

शारि(री)(रि)का, स्त्री. पक्षिणीविशेष वीणाबजानेकी लकड़ी। युद्धमें गजका भागना, छकड़ा, गीतिविशेष। [(त्रि.) शरीरका।

शारीर(क), न. वेदान्तसूत्र (पु) जीव, शरीरदण्ड,

शारुक, त्रि. हिंसक। ईज़ारसां।

शार्कर, पु. शर्करा; चीनी, मिसरी।

शार्कक, पु. दुग्धफेन, शर्करापिण्ड; दूध की झाग, चीनी वा मिसरीका ढेला (त्रि) पथरीला।

शार्कर(रि)क, पु, शार्करीय, त्रि. } शर्करावहुल देश।

शार्ङ्ग, न. आर्द्रक (पु.) विष्णुधनुः, धनुर्मात्र, (त्रि) शृङ्गसंबन्धीय, शृङ्गनिर्म्मित। सींगका।

शार्ङ्ग-पाणि, पु. विष्णु।

शार्ङ्गिन्, पु. विष्णु, धनुर्धारी। तीरन्दाज़।

शार्दूल, पु. व्याघ्र, शब्दके परवर्तीहोतो श्रेष्ठ, राक्षस, पशुविशेष, शरभ, पक्षिविशेष, चित्रकवृक्ष।

शार्दूल-ललित, न. छन्दो विशेष; १८ ह २ हरूफों के मिसरोंवाला वहर।

शार्दूल-विक्रीडित, न. छन्दो वि०; १९ उन्नीस २ हरूफोंके मिसरोंका वहर।

शाल, पु. मत्स्यविशेष, प्राकार, वृक्षविशेष, नदविशेष, शालिवाहन राजा, वृक्षमात्र (स्त्री) (ला) गृह, गृहैकदेश, वृक्ष की डाल।

शालङ्कायन, शालङ्कि, } पु. मुनिविशेष, नन्दी।

शाल-ग्राम, पु. देशविशेष, गण्डकी की शिला, विष्णुमूर्ति विशेष।

शाल-निर्य्यास, पु. सर्जरस; राल।

शाल-पर्णी, स्त्री. वृक्षविशेष। ख़ास एक बूटी।

शाल-भञ्जि(का), स्त्री. वेश्या, काष्ठनिर्म्मित पुत्तलिका, क्रीडावि०। कंचनी, लकड़ीकी पुतली। [नाई, नेज़ाबरदार।

शालाकिन्, पु. अस्त्रवैद्य, नापित। जराह,

शालावृक, पु. वानर, कुक्कुर, शृगाल, मृग, विडाल। बंदर, कुत्ता, गीदड़, हरण, बिल्ली।

शा(सा)ल, पु. धान्य; धान।

शाला-मृग, पु. शृगाल; तिआर, गीदड़,

शालार, न. हस्तिनख, सोपान, पक्षीपिंजर। हाथीके नाख़ून, सीढी ज़ीना, परिंदोंका पिंजरा।

शालि, पु. गंधमार्जार, तण्डुल, कस्तूरी. चावल, झोना।

शालिक, त्रि. (स्त्री) (का) शालपर्णि, पनिमगनी; शालाका, तांती, कारीगर, मासूल, ख़ासएक वेल, साली।

शालिन्, त्रि. युक्त, शोभायमान, (स्त्री) (नी) श्याली ११ अक्षरछन्दोविशेष।

शशिप्रभ, न. नीलकमल, (त्रि) गौरवर्ण; (स्त्री.) (भा) कौमुदी। नीलोफर, गोराआदमी चांदनी।

शशि-भूषण
शशि शेखर } पु. शिव। महादेव। [वि०।
शशि-लेखा } स्त्री. चंद्रकला, गडूचीलता, छंदो-

शशिन्, पु. चन्द्र, ब्रह्मदेव, ध्वजावि०। माहताव।

शशि-वदना, स्त्री. छय अक्षर का छंद। चांदमुखी।

शश्वत्, व्य. पुनः २ वारंवार, सर्वदा, निरन्तर।

शष्कुल, पु. मत्स्यवि०, वृक्षवि०, (स्त्री) (ली) कर्ण छिद्र। एक खास मछली।

श(स्य)ष्प, न. नूतन घास। नई घास।

शसन, न. यज्ञ के लिये हैवान की कुरवानी, वध।

शस्त, न. कल्याण, शरीर, (त्रि.) सुखी, स्तुत, प्रशस्त, उत्कृष्ट,। सुख, देह, नेक, वढ़िया।

शस्त्र, न. लोह, अस्त्र, (पु.) खड्ग (स्त्री) स्त्री। हथियार।

शस्त्र-भृत्
शस्त्रिन् } त्रि. शस्त्रधारी। हथियारवंद।

शस्त्रहत-चतुर्द्दशी, स्त्री. आश्विन कृष्णा चतुर्दशी।

शस्य, न. कृषिकर्म्मोत्पन्नफल, वृक्षफलवि०, (त्रि) प्रशंसनीय फल।

शाक, न. पु. पत्रपुष्पादि, (पु) शिरीष वृक्ष, नृप-विशेष, द्वीपविशेष, वन्दरवि०, (स्त्री) (का) हरीतकी, शालिवाहन राजाका सन।

शाकट, त्रि. (पु) श्लेष्मान्तक वृक्ष; छकडे का, छकड़े का वैल, छकडा वाहनेवाला।

शाकटायन, पु. अष्टशाब्दिकान्तर्गत शाब्दिक विशेष यथा। इन्द्र २ चन्द्र ३ काश ४ कृत्स्न ५ आपिशलि ६ शाकटायन ७ पाणिनि ८ अमर जैनेन्द्र।

शाकटीन, पु. गाड़ी का वोझ, (त्रि) छकड़े का।

शाकम्भरी, स्त्री. दुर्गा, नगरविशेष।

शाकम्भरीय, अजमेराख्य देशान्तर्गत शाम्भर-नगरीय जलाशयोत्पन्न लवण; सांभर निमक।

शाकिनी, स्त्री. शाकवती पृथिवी, दुर्गानुचरी।

शाकुन, त्रि. परोत्तापी, ग्रन्थविशेष, पक्षीसम्ब-न्धीय, निमित्तज्ञ "शकुनावली" पोथी, परिंदों का, सवय जानने वाला।

शाकुनि(णि)क, पु. शकूनवतानेवाला, चिड़ीमार, (त्रि) चिड़िया का (न) पक्षियों का समूह।

शाकुनेय, पु. दुण्डुल पक्षी, (त्रि) शकुनसम्बन्धीय खास चिड़िया, चिड़िया का।

शाकुन्तलेय, पु. राजा भरत (त्रि) शकुन्तला का।

शाक्कर, पु. वृक्ष, (न) छन्दोविशेष।

शाक्त, त्रि. शक्त्युपासक; शक्ति के पूजनेवाला।

शाक्तीक, पु. शक्तिअस्त्रद्वारा योद्धा। वरछेसे लड़-ने वाला।

शाक्य(सिंह)(मुनि), पु. वुद्ध; वौद्धमत के चलानेवाला मुनि।

शाख, पु. कार्त्तिकेय (स्त्री) (खा) वृक्षाङ्गविशेष, वाहु, वेद-भाग, ग्रन्थविशेष, एकदेश।

शाखा-ग्र, न. अंगुलि, दरखत की टहनी।

शाखा-मृग, पु. वानर; वंदर। नसनास।

शाखा-रथ्या, स्त्री. सोलह हाथ चौड़ी सड़क।

शाखिन्, पु. वृक्ष, वेद, राजाविशेष, (त्रि) शाखा-युक्त। पेड़, वेद, टहनीवाला।

शाखोट, पु. वृक्षविशेष, पिशाचद्रु। खासदरखत।

शाङ्कर, न. छन्दोविशेष, (पु) वलीवर्द, (त्रि) श-ङ्करसम्वन्धीय।

शाङ्करि, पु. कार्त्तिकेय, गणेश, अग्नि।

शाङ्ख, त्रि. शङ्खका, स्मृतिशास्त्रविशेष।

शाट(क), पु. परिधेय—वस्त्रविशेष (स्त्री) (टी) (टिका) साहड़ा, साहड़ी।

शा(स्य)ठ्य, न. शठता। शरारत।

शाड्वल, पु. शाद्वल। सरसवज़।

शाण, न. शणवस्त्र (पु) (स्त्री) (णी) हस्तकटारा, सनका कपड़ा, इशारह,।

शाणित, त्रि. तेज़ कियाहुआ। [मुनिविशेष।

शाण्डिल्य, पु. विल्ववृक्षविशेष, अग्निविशेष,

शात, न. सुख, (त्रि) सुखी, कृश, दुर्वल, तीक्ष्णीकृत।

शात-कुम्भ, न. काञ्चन, सोना।

शातन, न. तराशना, गिराना, काटना।

शातला, स्त्री. चर्म्मकशा। चावुक।

शाद, पु. पङ्क, नवतृण। कीचड, नईघास।

शाद-हरित
शाद्वल } त्रि. नईघाससे हराभरा स्थल।

शान्त, त्रि. जितेंद्रिय, सौम्य, मृत, (पु) काव्यरस-विशेष, (स्त्री) (न्ता) कन्या, शमी-वृक्ष, (व्य) (न्तम्) वारण।

शान्तनव, पु. नृपविशेष; भीष्मका पिता। (शन्तनुज) पु. चन्द्रवंशीय राजा विशेष।

शान्ति, स्त्री. मनकी स्थिरता, मंगल, कामक्रोधाद्युपशम, गोपीवि०, दुर्गा, दुरित निवृत्ति, सौभाग्य, मुक्ति, विश्राम, (पु) जिनचक्रवर्तिविशेष, दशममन्वन्तरीय इन्द्र। अमन आराम।

शान्त्व, न. सान्त्व। तसल्ली।

शाप, पु. आक्रोश, दिव्य, शपथ। बददुआ, कसम।

शापास्त्र, त्रि. मुनिविप्र प्रभृति, भर्त्सित, निन्दित, ऋषि मुनि तथा ब्राह्मण, हजो किया हुआ, झिड़का हुआ।

शाब्द, त्रि. शब्दसम्बन्धीय (स्त्री) (ब्दी) सरस्वती।

शाब्दिक, त्रि. वैयाकरण।

शामित्र, न. पशुवध स्थान, पशुवध। कसाखाना, कसाईपन। [खाक, राख।

शामील, न. भस्म (स्त्री) (ली) यज्ञद्रव्यविशेष।

शाम्बरी, स्त्री. माया विद्या इन्द्रजाल आदि।

शाम्भव, न. देवदारु वृक्ष, (पु.) कर्पूर, गुग्गुल, विषविशेष, शम्भुपुत्र, शम्भुपूजक, (त्रि.) शम्भु सम्बन्धीय (स्त्री) (वी) पार्वती, तन्त्र-विद्या। दियार का दरख्त, काफूर, गूगल, खास जहर, शिवजीका।

शायक, पु. वाण, खड्ग। तीर, शमशेर।

शार, त्रि. कर्बुर-वर्ण, (पु.) पवन (स्त्री) (री) चितकबरा रंग, हवा, कुश।

शारङ्ग, पु. चातक पक्षी, मृग, हस्ती, मयूर, मधुमक्षी, (त्रि.) कर्बुरवर्णविशिष्ट (स्त्री) (ङ्गी) वाद्ययन्त्रविशेष।

शारद, न. श्वेत-कमल (पु) वासर, (स्त्री) (दा) सरस्वती, दुर्गा, वीणाविशेष (दी) कार्तिकी पूर्णिमा (त्रि) शरद ऋतुका।

शारदीय, त्रि. शरत्सम्बन्धीय। खिज़ांका।

शारि(री)(रि)का, स्त्री. पक्षिणीविशेष वीणाबजानेकी लकड़ी। युद्धमें गजका भागना, छकड़ा, गीतिविशेष। [(त्रि.) शरीरका।

शारीर(क), न. वेदान्तसूत्र (पु) जीव, शरीरदण्ड,

शारुक, त्रि. हिंसक। ईज़ारसां।

शार्क, पु. शर्करा; चीनी, मिसरी।

शार्कक, पु. दुग्धफेन, शर्करापिण्ड; दूध की झाग, चीनी वा मिसरीका डेला (त्रि) पथरीला।

शार्कर(रि)क, पु, } शर्करावहुल देश।
शार्करीय, त्रि. }

शार्ङ्ग, न. आर्द्रक (पु.) विष्णुधनुः, धनुर्मात्र, (त्रि) शृङ्गसंबन्धीय, शृङ्गनिर्म्मित। सींगका।

शार्ङ्ग-पाणि, पु. विष्णु।

शार्ङ्गिन्, पु. विष्णु, धनुर्धारी। तीरन्दाज।

शार्दूल, पु. व्याघ्र, शब्दके परवर्ती होतो श्रेष्ठ, राक्षस, पशुविशेष, शरभ, पक्षिविशेष, चित्रकवृक्ष।

शार्दूल-ललित, न. छन्दो विशेष; १८ ह २ हरूफों के मिसरोंवाला बहर।

शार्दूल-विक्रीडित, न. छन्दो वि०; १९ उन्नीस २ हरूफोंके मिसरोंका बहर।

शाल, पु. मत्स्यविशेष, प्राकार, वृक्षविशेष, नदविशेष, शालिवाहन राजा, वृक्षमात्र (स्त्री) (ला) गृह, गृहैकदेश, वृक्ष की डाल।

शालङ्कायन, } पु. मुनिविशेष, नन्दी।
शालङ्कि, }

शाल-ग्राम, पु. देशविशेष, गण्डकी की शिला, विष्णुमूर्ति विशेष।

शाल-निर्य्यास, पु. सर्जरस; राल।

शाल-पर्णी, स्त्री. वृक्षविशेष। खास एक बूटी।

शाल-भञ्जि(का), स्त्री. वेश्या, काष्ठनिर्म्मित पुत्तलिका, क्रीडावि०। कंचनी, लकड़ीकी पुतली। [नाई, नेजाबरदार।

शालाकिन्, पु. अस्त्रवैद्य, नापित। जराह,

शालावृक, पु. वानर, कुक्कुर, शृगाल, मृग, बिडाल। बंदर, कुत्ता, गीदड़, हरण, बिल्ली।

शा(सा)ल, पु. धान्य; धान।

शाला-मृग, पु. शृगाल; सिआर, गीदड़,

शालार, न. हस्तिनख, सोपान, पक्षीपिंजर। हाथीके नाखून, सीढी जीना, परिंदोंका पिंजरा।

शालि, पु. गंधमार्जार, तण्डुल, कस्तूरी. चावल, सोना।

शालिक, त्रि. (स्त्री) (का) शालपर्णी, पत्निभगनी; शालका, तांती, कारीगर, महसूल, खासएक वेल, साली।

शालिन्, त्रि. युक्त, शोभायमान, (स्त्री) (नी) ग्यारहीं ११ अक्षरछन्दोविशेष।

शालि-पिष्ट, पु. स्फटिक । बिलोर ।
शालि-वाहन, पु. शाकाचलानेवाला राजा ।
शालिहोत्र, पु. घोटक; घोड़ा ।
शालीन, त्रि. सलज्ज, विनीत, तुल्य ।
शालु(लू)क, पु. मण्डूक, (न) कुमुदादिमूल, जातिफल । मेंडक, भिस, जायफल ।
शालूर, पु. भेक; मेंडक ।
शालोत्तरीय, पु. पाणिनी मुनि ।
शाल्मल } पु. शाल्मलीवृक्ष, (स्त्री) (ली) सिंवल-
शाल्मलि } का पेड़, खास एकद्वीप ।
शाल्व, पु. देशविशेष, राजाविशेष ।
शाव(क), पु. शिशु (त्रि) शव का ।
शावर, त्रि. शवरका, (पु.) सांप, अपराध, लोध्र वृक्ष, (न.) भाष्यग्रंथ, मृगचर्म्म ।
शाश्वत } त्रि. नित्य (न) आकाश (स्त्री) (ती)
शाश्वतिक } पृथ्वी ।
शाष्कुल, त्रि. मांसाशी । गोश्तखोर ।
शाष्कुलिक, न. शष्कुलिसमूह । समोसे ।
शासक, त्रि. शास्ता, । सज़ादेनेवाला, सिखानेवाला ।
शासन, न. आज्ञा, शास्त्र, राज्य, उपदेश, दमन, राजदत्तभूमि । हुकम, सज़ा, हिदायत । [लायक ।
शासनीय, त्रि. सजा देनेके लायक । सिखाने
शासित, त्रि. कृतशासन, पालित, (स्त्री) (ता) सज़ा दिया हुआ, सिखलाया हुआ ।
शास्ति, स्त्री. शासन, दण्ड, आज्ञा, यंत्रणा, नियम । सज़ा, हुकम । [दिनेवाला, हुकम देनेवाला ।
शास्तृ, त्रि. शासिता, (पु) बुद्ध, शिक्षक । सज़ा
शास्त्र, न. निदेश, देवमुनि प्रणीतग्रंथ, यथा वेद शास्त्र, पुराण, तंत्रदर्शनादि । हुकम, पाक किताबें, किताब ।
शास्त्र-ज्ञ } त्रि. जो शास्त्र जानें । आलिम ।
शास्त्र-दर्शिन्, }
शास्त्र-चक्षुस्, न. व्याकरण, त्रि. अत्यंत विद्वान् ।
शास्त्रिन्, त्रि. पण्डित, दाना । [मानी हुई ।
शास्त्रीय, त्रि. शास्त्रसिद्ध, शास्त्रसम्मत । शास्त्रमे
शास्य, त्रि. शासनीय, । सज़ा देनेके लायक ।
शिंशपा, (स्त्री) वृक्षविशेष; शीशम ।
शिक्य(क), न. मधुजातद्रव्यविशेष, मोम ।
शिक्य(क्या)न, स्त्री. द्रव्यरक्षार्थं, रज्जुमय, दोलनाधार; छीका ।

शिक्षक, त्रि. शिक्षादायक; सिखानेवाला । अता-लीक । [पढ़ाना ।
शिक्षण, न. शिक्षा, अभ्यास, अध्यापन । सिखाना,
शिक्षयितृ, त्रि. सिखानेवाला । उस्ताद ।
शिक्षा, स्त्री. शिक्षण, उपदेश, उच्चारण, बोधन, वेदाङ्गग्रंथवि०, । सीखना, पढ़ना, हिदायत, एक ग्रंथ जिसके पढ़नेसे वेदके पढ़नेका तरीकह आता है ।
शिक्षित, त्रि. विनीत, वश्य, दक्ष, विज्ञ । सीखा-हुआ, शरमसार, हिला हुआ, होशियार, दाना ।
शिक्ष्य, त्रि. शिक्षितव्य । सिखानेके लायक ।
शिखण्ड(क), पु. मयूर पुच्छ; मयूरकी पूंछ, कों-चलका पर, जुलफ़, चोटी ।
शिखण्डिन्, पु. मयूर, द्रुपदराजाका पुत्र । कुक्कुट, वाण, (स्त्री) (नी) मोरनी ।
शिखर, न. पहाड़की चोटी (पु. न.) पेड़का सिरा, कांख, सुरख़, मानक, सूका घास ।
शिखरिन्, पु. पर्वत, वृक्ष, पर्वतीय दुर्ग, (स्त्री) (णी) इन्द्रवारुणी लता, छन्दोवि०, नारीरत्न, मल्लिका, रोमावली, द्राक्षावि०, मूर्वालता, । ख़ास एक बूटी, नाम एक बहरका, उमदह औरत, मालती, रोंआकी क़तार, एक किसमकी दाख, ख़ास एक वेल, खिरनी । [गीदार ।
शिखा-ध(धा)र, पु. मयूर, मञ्जुघोष; मोर, कल-
शिखा-मूल, न. गृञ्जन; गाजर, शलगम ।
शिखिन्, पु. मयूर, अग्नि, चित्रकवृक्ष, वलीवर्द, शर, केतुग्रह, कुक्कुट, घोटक, अजलोमा, पर्वत, ब्राह्मण, दीप, (त्रि) शिखावान्; मोर, वैल, तीर, ९ वां ग्रह ।
शिखि-वाहन, पु. कार्तिकेय; शिवजीका वेटा ।
शिग्रु, पु. शाक, वृक्षविशेष, । मोरंगा वृक्ष ।
शिङ्घान(क), पु. न. नासिका मल, (पु.) श्लेष्मा, सींढ, वलगम, लोहेका ज़ंगार ।
शिङ्घित, त्रि. घ्रात; सूंघा हुआ । [गमक ।
शिञ्ज, पु. स्त्री. (आ) । नूपुर ध्वनि । पायजेब की
शिञ्जित, पु. स्त्री. भूषण ध्वनि; जेवरोंका छनकार ।
शित, त्रि. शाणित, दुवला पतला, तेज़ किया हु० ।
शितद्रु, स्त्री. सतलुज दर्या ।
शित-शूक,

शिति, पु. काला, चिह्न, भोजपत्रका पेड़, त्रि. ए ऐ वर्णयुक्त ।
शिति-कण्ठ, पु. शिव, दात्यूह पक्षी; पपीहा, मोर ।
शिति-च्छन्द(पक्ष), पु. हंस ।
शिति-वासस्, पु. बलदेव ।
शिथिल, त्रि. ढीला, थका हुआ। सुस्त, कमज़ोर।
शिनि, पु. यदुवंशीय नृपविशेष ।
शिपि-विष्ट, पु. रोगविशेष, दुश्चर्म्मा, शिव, विष्णु ।
शिप्र, सरोवरविशेष, स्त्री. (प्रा) नदीविशेष, एक ख़ास तालाव, एक नदी ।
शिफ, न. वृक्षलता, (स्त्री.) (फा) नदीमाता, शतपुष्पा, हरिद्रा, पद्मकंद ।
शिम्ब, पु. सखा, (म्बि) (म्बिक) वृक्षविशेष।दोस्त।
शिम्बिक, पु. कृष्ण मुद्ग, (स्त्री) (का) शमी; काले मूंग, सेमकी फली ।
शिर, } न. शिखर, मस्तक, प्रधान, वृक्षाग्र, अ-
शिरस्, } ध्यक्ष, शिर (स्त्री) (रा) धमनी।
शिरसि-ज, पु. सिरके बाल ।
शिरस्क, }
शिरस्त्र, } न. पगडी, टोपी (त्रि) शिरका रक्षक।
शिर-स्त्राण }
शिरा, स्त्री. नाड़ी । रग़ ।
शिराल, त्रि. शिरायुक्त । रग़दार ।
शिरीष, पु. वृक्षवि॰, (न.) उसका फल ।
शिरि-गृह, न. ऊपरका घर । बाला खाना ।
शिरो-धि, } स्त्री. गर्दन । शिरोमणि ।
शिरो-धरा, }
शिरो-रुह्(ह), पु. केश; शिरके बाल।
शिल, न. पु. खेतके स्वामीद्वारा धान्य लेजानेके पीछे अवशिष्टधान्योंका चुगना, ओला, पत्थर (स्त्री) (ला) चिटान, मन्छल, काफ़ूर ।
शिला-जतु, न. पर्वतजात उपधातुवि॰ । शिलाजीत ।
शिलाटक, पु. चौबारह, गढ़ा, वाड़ ।
शिला-तल, न. चटानकी सतह ।
शिला-पट्ट, पु. चूर्ण पीसनेका पत्थर ।
शिला-पुत्र, पु. गन्धद्रव्य ।
शिला-सार, पु. लोह; लोहा ।
शिलि, पु. भूर्जपत्र, वृक्ष, (स्त्री) (लि) (ली) द्वाराधःस्थित काष्ठ; भोजपत्तेका पेड़, दहलीज़ ।
शिलीन्ध्र, पु. मत्स्यवि॰, कदलीवृक्ष (स्त्री) (न्ध्री) चिड़ियावि॰, मेंडक, मृत्तिका (न) केलेका फल ।
शिली-मुख, पु. भ्रमर, वाण, युद्ध, । मधुमक्खी, तीर, जंग ।
शिलो-च्चय, पु. पर्वत, पर्वतशृङ्ग ।
शिलो-कस्, पु. गरुड । [हुनर ।
शिल्प, न. कलादिकर्म, श्रुत, वाद्य नृत्यगीत आदि।
शिल्पक(का)र, पु. शिल्पकर्ता । कारीगर ।
शिल्प-कारिन्, त्रि. कारीगर ।
शिल्पशा(ल)(ला), न. स्त्री. शिल्पकर्मगृह । कारखाना ।
शिल्पिन्, त्रि. शिल्पकर्ता, शिल्पसंबंधीय । कारीगर, कारीगरका ।
शिव, न. शुद्धजल, सुख, सेंधलवण, पु. महादेव, वेदपार, मोक्ष, योगवि॰, (स्त्री) भगवती, शृगाली, दूर्वा, हरिद्रा, शक्ति, (त्रि.) सुखद, रम्य ।
शिव-द, त्रि. मङ्गलदायक । आराम देह ।
शिव-दूती, स्त्री. देवीविशेष ।
शिव-रात्रि, स्त्री. फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी ।
शिवा-लय, पु. शिवगृह, श्मशान, रक्ततुलसी ।
शिवालु, पु. शृगाल; सियार ।
शिवि, पु. हिंस्र-पशु, नृपविशेष ।
शिविका, स्त्री. यानवि॰ । पालकी । [शीतल ।
शिशिर, पु. हिम, (पु. न.) शीतऋतु, (त्रि.)
शिशु(क), बालक, वृक्षविशेष । बच्चा ।
शिशुक, पु. जलजन्तुविशेष, मत्स्यविशेष ।
शिशु-गन्धा, स्त्री. मल्लिकाविशेष, मधुमल्ली; मालती।
शिशु-चान्द्रायण, न. प्रायश्चित्तरूप व्रतविशेष, सन्ध्याके समय एक तोलाभर हविष्य खाकर गुज़ारा करना ।
शिशु-पाल(क), पु. दमघोषसुत (त्रि). शिशुपालक; रुक्मिनी का बाप, बच्चोंकी परवरिश करनेवाला । [चक्रविशेष ।
शिशुमार, पु. जलजन्तुविशेष, विष्णु; ताराओंका
शिश्न, पु. मेढ्र, पुरुष का उपस्थ ।
शिश्विदान, त्रि. पापकर्म्मा; पापी ।
शिष्ट, त्रि. सभ्य, सुशील, अवशिष्ट (त्रि.) आज्ञाकार, शासित । दरबारी, सर्दार, हलीम, फर्मा बर्दार, सिखाया हुआ ।

शिष्टता, स्त्री. उत्तमाचार। अशराफ़त।
शिष्टा-चार, पु. भद्रता (त्रि) शुद्धाचार। भलमानसी, हलीम, नेक चलन।
शिष्य, पु. छात्र, उपदिश्य। शागिर्द।
शिल्ह, पु. सिल्हक; लोवान्।
शीकर, पु. शरलद्रुम, वातप्रेरित जलकण, वायु, शिशिर; बौछार, पानीका कतरह, बूंद, हवा।
शीघ्र, न. विलम्बाभाव (त्रि.) त्वरायुक्त (व्य) (घ्र)। जल्दी, जल्दवाज़, जल्दीसे। [हवा।
शीघ्र-ग, त्रि. द्रुतगामी, (पु.) वायु। जल्दरौ,
शीघ्रिय, त्रि. शीघ्र-भव, (पु) शिव, विष्णु, विडाल-युद्ध। जल्द होजानेवाला, बिल्लीयोंकी लड़ाई।
शीत, न. हिम-गुण, जल, त्वच, (पु.) वेतसवृक्ष, पर्प्पट, निम्ब, कर्प्पूर, हिम ऋतु, (त्रि.) शीतल, अलस, कथित, (स्त्री) गणपती, सदन्ता।
शीत-कर, पु. चांद। कापूर।
शीत-कृच्छ्र, पु. व्रतविशेष; तीन २ दिन दहि घी और दूध पीकर उपवास करना।
शीत(क)र, पु. चन्द; चांद। [रसी।
शीत-चम्पक, पु. दर्पण, प्रदीप। आईनह, आ-
शीत-प्रभ, पु. चन्द्र, कर्पूर, (त्रि.) शीतल प्रभायुक्त; चांद, काफ़ूर।
शीत-भानु, पु. चन्द; चांद।
शीत-भीरु, स्त्री. मल्लिका, (त्रि.) शीतभीत; मालती, सर्दीसे डरा हुआ।
शीत-मयूर, पु. चन्द, कर्प्पूर; चांद, काफ़ूर।
शीत-रश्मि, पु. चन्द्र; चांद।
शीतल, न. पुष्पकासीस, कर्प्पूर, चन्दन, मौक्तिक, शैत्य, वीरणमूल, (पु.) असनपर्णी, अर्हद्विशेष, व्रतविशेष, चन्द्र, चम्पक (त्रि.) शीतगुणविशिष्ट, (स्त्री) (ला) रोगविशेष। नीला थोथा, हीराकसीस, काफ़ूर, संदल, मोती, खशखास, नाम एक जैनका, चांद, चंपा, सर्द, चेचककी बीमारी।
शीता, स्त्री. लाङ्गल-पद्धति, औषधिविशेष, तृणविशेष। हलकी फाल।
शीतांशु, पु. चन्द्र; चांद।
शीता-द्रि, पु. } हिमालयपर्वत।
शीतालु, त्रि. }
शीतार्त, त्रि. शीतपीडित; सर्दीसे तक्लीफ़ ज़दह।
शीता-दमन्, पु. चन्द्रकान्तमणि।
शीत्य, त्रि. कृष्ट, शीतयोग्य। हल चलाया हुआ, सर्दीके लायक।
शीत्कार, पु. श्रेष्ठ स्त्रियोंका रतिके समय शब्द।
शीधु, पु. न. मधुविशेष; पके हुए फलोंके रसकी शराव।
शीन, त्रि. घनीभूत, घृतादि, (पु.) मूर्ख, वृहत् सर्प। जमे हुए घी वगैरह, वेवकूफ़, अज़दहा, सांप।
शीभव, पु. जलकण। पानीका कतरह।
शीर्ण, त्रि. गिरा हुआ; सूका, दुबला,।
शीर्ष, न. मस्तक। सर।
शीर्षक, न. पगड़ी, टोपी, (न) राहुग्रह, मस्तक।
शीर्षण्य, न. शिरस्त्राण; टोप, पगड़ी।
शील, न. स्वभाव, चरित्र, (पु) अजगर (स्त्री.) (ला) कौण्डिन्य-पत्नी। मिज़ाज, अज़दहा।
शीलित, त्रि. अभ्यस्त, शिक्षित, आलोचित।
शीलवत्, त्रि. सुशील। नेक चलन।
शुक, न. ग्रन्थिपर्ण, वस्त्र, वस्त्राञ्चल, शिरस्त्राण, (पु.) पक्षिविशेष, व्यासपुत्र, रावणमन्त्री, शिरीष वृक्ष, (स्त्री) (की) कश्यप-पत्नी, शुकस्त्री। खास एक दरख़्त्, कपड़ा, कपड़ेका किनारा, पगड़ी, तोता, व्यासदेवका वेटा, रावणका वज़ीर, शरीसका दरख़्त्, कश्यपकी जोरू, तोती।
शुकम्, व्य. शीघ्र। जल्दीसे।
शुकास्य, पु. वातापीड़ राजाका मंत्री (त्रि.) शुकसमान जिसकी नासिका है।
शुक्त, न. मांस, काञ्जिक, कर्कशवाक्य (त्रि.) निष्ठुर, पूत, अम्ल, शिष्ट, निर्जन (स्त्री) (क्ति) (क्ता) जलजन्तुविशेष। गोश्त, कांजी, तेज़ाव, कठोर, साफ़, तुरश, नेक, तनहाई, सिप्पी, शंख, नखी नाम खुशबूई, बवासीर, घोड़ेके पहलूपर लोमोंके तीन कुंडल, अश्वकी बीमारी, चार तोलेभर, खोपरी।
शुक्ति-मत्, पु. श्वेतापी, पर्वतविशेष, सप्तकुलाचल। यथा, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य, भा०।
शुक्र, न. ... वीर्य्य, नेत्ररोगवि-
(पु.) ... ज्येष्ट-

गारा। पित्त, आंखकी बीमारी, छठा ग्रह, आतिश, जेठमहीना।

शुक्र-भुज्, पु. मयूर, (त्रि.) रेतोभोजक। ताऊस।

शुक्रल, त्रि. शुक्रयुत। शुतर्फे वाला।

शुक्र-शिष्य, पु. असुर, कच, राक्षस।

शुक्रिय, त्रि. शुक्र-सम्बन्धीय; शुक्रका।

शुक्ल, न. रजत, नवनीत, चक्षुरोगवि०, काञ्जिकादि (पु.) योगवि०, पक्षवि०, (त्रि.) वर्णविशेष (स्त्री) (क्ला) सरस्वती, शर्करा, काकोलीनामकौषधि, विदारी। सेम, ताज़ा मक्खन, आंखकी बीमारी, कांजी, सुपेद रंग, इल्मका देवता, चीनी।

शुक्ला-पाङ्ग, पु. मयूर। मोर

शुक्ल(त्व)ता, स्त्री. शुभ्रता। सुफ़ेदी।

शुक्लि-मन्, पु. शुक्लता। सुफ़ेदी।

शुक्लो-पला, स्त्री. शर्करा, (पु.) श्वेत प्रस्तर। चीनी, मिसरी, सुफ़ेद पत्थर।

शुङ्ग, पु. वटवृक्ष (स्त्री) (ङ्गा) वृक्षविशेष, धान्यादिशूक। बड़ का दरख़्त, पाकड़ का दरख़्त, भुट्टा।

शुच्(चा), स्त्री. शोक, मन-स्ताप। फ़िकर, अफ़सोस, ख़याल।

शुचि, पु. अग्नि, आपाढ़मास, शुक्ल-वर्ण, शृङ्गाररस, ग्रीष्मकाल, सूर्य्य, चन्द्र, शुक्र, ब्राह्मण (स्त्री) कश्यपकन्या, (त्रि.) शुक्लगुणविशिष्ट, पवित्र, निर्दोष, धार्म्मिक। [मुस्कराना।

शुचि-स्मित, त्रि. मृदुहास। मुस्करानेवाला (न.)

शुटीर्य्य, न. वीर्य्य। बहादुरी।

शुण्ठि(ण्ठी)(ण्ठिका), स्त्री. शुष्कआर्द्रक; सोंठ।

शुण्ड, पु. करिकर, (स्त्री) (ण्डा) मद्यपानगृह, वेश्या, मद्य, हस्तिहस्त, नलिनी, कुट्टनी। हाथीकी सूंड, शराब पीनेका घर, कंचनी, शराब, कमलनी, कुटनी।

शुण्डाल, पु. हस्ती, हाथी। फ़ील।

शुण्डिन्, पु. शौण्डिक, हस्ती, (स्त्री) (नी) तत्पत्नी। कलाल, साथी, कलालन, हथिनी।

शुतुद्रि, स्त्री. शतद्रु नदी। सतलुज दर्या।

शुद्ध, न. सैन्धव-लवण, मरिच, (त्रि) केवल, निर्दोष, पवित्र, शुक्ल, स्वच्छ, उज्ज्वल, उद्धृत। सेंधानिमक, सिरफ़, बेऐब, पाक, सुफ़ेद, उजला।

शुद्ध-जङ्घ, पु. गर्दभ; गधा।

शुद्धता, स्त्री. शुद्धत्व। पाकीज़गी।

शुद्ध-मति, पु. चतुर्विंशति जिनान्तर्गत जिनविशेष, (स्त्री.) पवित्र बुद्धि (त्रि.) सुबोध। चौबीस जिनों में से एक, नेक, दाना। [रनवास रानी।

शुद्धान्त, पु. अन्तःपुर, (स्त्री) (न्ता) राजयोषित्,

शुद्धा-पन्हुति, स्त्री. अलङ्कारविशेष।

शुद्धि, स्त्री. दुर्गा, मार्जन, शोधन, स्वच्छता, वैदिककर्म्मे योग्य संस्कारविशेष। देवी, मांजना, सफ़ाई, वेदके काम करनेके लायक संस्कार, दरुस्ती।

शुन(क), पु. श्वान; कुत्ता।

शुना(शा)सीर, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।

शुनि, पु. कुक्कुर, (स्त्री) (नी) कुकुरी।

शुनःशेफ, पु. मुनिविशेष।

शुनक, पु. मुनिविशेष।

शुभ, न. मङ्गल, पद्मकाष्ठ, सुख, (पु.) विष्कुम्भादि सप्तविंशतियोगान्तर्गत त्रयोविंशयोग, (त्रि.) मङ्गलकारक, सुखी, सुन्दर, (स्त्री) (भा) शोभा, कान्ति, इच्छा, वंशरोचना, देव-सभा, उमा-सखी मङ्गल-जलिका। भलाई, एक दवाई, वा आराम, २७ सत्ताईस योगोंमेंसे २३ तेईसवां, भला करनेवाला, ख़ूबसूरत, शान, छवि, ख्वाहिश, तबाशीर, देवताओंकी मजलिस।

शुभंयु, त्रि. मङ्गलान्वित। सुदा, क़िस्मतवाला।

शुभ-ङ्कर, शुभद, } त्रि. मङ्गलकारक, (पु) स्वनामख्यात अङ्कशास्त्रकारक (स्त्री) (री) पार्वती।

शुभ-दन्ती, स्त्री. पुष्प-दन्त नाम हस्तिपत्नी, शोभन-दन्ता स्त्री। शुभदन्त नाम हाथीकी हथिनी, सुंदर दांतवाली औरत।

शुभा-ङ्गी, स्त्री. कुबेर-पत्नी, रति। कुबेर की जोरु, कामदेव की जोरु, ख़ूबसूरत औरत।

शुभ्र, न. अभ्रक, गड़लवन, रौप्य, कासीश, (पु.) शुक्लवर्ण, चन्दन (त्रि) उद्दीप्त (स्त्री) (भ्रा) गङ्गा, स्फटिक, वंशरोचन। अभरक, शीशानिमक, सेम, चांदी, हीराकसीस, सुपेद रंग, चन्दन, चमकीला, दर्या, गंगा, बिलौर, तबाशीर।

शुभ्रां-शु, पु. चन्द्र, कर्पूर; चांद, काफ़ूर।

शुभ्रा-लु, पु. महिषकन्द। हाथीपिच।

शुभ्रि, पु. ब्रह्मा, प्रजापति।

शिष्टता, स्त्री. उत्तमाचार। अशराफ़त।
शिष्टा-चार, पु. भद्रता (त्रि) शुद्धाचार। भलमानसी, हलीम, नेक चलन।
शिष्य, पु. छात्र, उपदिश्य। शागिर्द।
शिल्ह, पु. सिल्हक; लोबान्।
शीकर, पु. शरलद्रुम, वातप्रेरित जलकण, वायु, शिशिर; बौछार, पानीका कतरह, बूंद, हवा।
शीघ्र, न. विलम्बाभाव (त्रि.) त्वरायुक्त (व्य) (प्र)। जल्दी, जल्दबाज़, जल्दीसे। [हवा।
शीघ्र-ग, त्रि. द्रुतगामी, (पु.) वायु। जल्दरौ,
शीघ्रिय, त्रि. शीघ्र-भव, (पु) शिव, विष्णु, विडाल-युद्ध। जल्द होजानेवाला, बिल्लीयोंकी लड़ाई।
शीत, न. हिम-गुण, जल, त्वच, (पु.) वेतसवृक्ष, पर्पट, निम्ब, कर्पूर, हिम ऋतु, (त्रि.) शीतल, अलस, कथित, (स्त्री) गणपती, सदन्ता।
शीत-कर, पु. चांद। कापूर।
शीत-कृच्छ्र, पु. व्रतविशेष; तीन २ दिन दहि घी और दूध पीकर उपवास करना।
शीत(क)र, पु. चन्द; चांद। [रसी।
शीत-चम्पक, पु. दर्पण, प्रदीप। आईनह, आ-
शीत-प्रभ, पु. चन्द्र, कर्पूर, (त्रि.) शीतल प्रभायुक्त; चांद, काफ़ूर।
शीत-भानु, पु. चन्द्र; चांद।
शीत-भीरु, स्त्री. मल्लिका, (त्रि.) शीतभीत; मालती, सर्दीसे डरा हुआ।
शीत-मयूर, पु. चन्द्र, कर्पूर; चांद, काफ़ूर।
शीत-रश्मि, पु. चन्द्र; चांद।
शीतल, न. पुष्पकासीस, कर्पूर, चन्दन, मौक्तिक, शैत्य, वीरणमूल, (पु.) अशनपर्णी, अर्हद्विशेष, व्रतविशेष, चन्द्र, चम्पक (त्रि.) शीतगुणविशिष्ट, (स्त्री) (ला) रोगविशेष। नीला थोथा, हीराकसीस, काफ़ूर, संदल, मोती, खशखास, नाम एक जैनका, चांद, चंपा, सर्द, चेचककी बीमारी।
शीता, स्त्री. लाङ्गल-पद्धति, औषधिविशेष, तृणविशेष। हलकी फाल।
शीतांशु, पु. चन्द्र; चांद।
शीता-द्रि, पु. } हिमालयपर्वत।
शीतालु, त्रि. }
शीतार्त, त्रि. शीतपीडित; सर्दीसे तक्लीफ़ ज़दह।
शीता-श्मन्, पु. चन्द्रकान्तमणि।
शीत्य, त्रि. कृष्ट, शीतयोग्य। हल चलाया हुआ, सर्दीके लायक।
शीत्कार, पु. श्रेष्ठ स्त्रियोंका रतिके समय शब्द।
शीधु, पु. न. मधुविशेष; पके हुए फलोंके रसकी शराब।
शीन, त्रि. घनीभूत, घृतादि, (पु.) मूर्ख, बृहत् सर्प। जमे हुए घी वग़ैरह, बेवकूफ़, अज़दहा, सांप।
शीभव, पु. जलकण। पानीका कतरह।
शीर्ण, त्रि. गिरा हुआ; सूका, दुबला,।
शीर्ष, न. मस्तक। सर।
शीर्षक, न. पगड़ी, टोपी, (न) राहुग्रह, मस्तक।
शीर्षण्य, न. शिरस्त्राण; टोप, पगड़ी।
शील, न. स्वभाव, चरित्र, (पु) अजगर (स्त्री.) (ला) कौण्डिन्य-पत्नी। मिज़ाज, अज़दहा।
शीलित, त्रि. अभ्यस्त, शिक्षित, आलोचित।
शीलवत्, त्रि. सुशील। नेक चलन।
शुक, न. ग्रन्थिपर्ण, वस्त्र, वस्त्राञ्चल, शिरस्त्राण, (पु.) पक्षिविशेष, व्यासपुत्र, रावणमन्त्री, शिरीष वृक्ष, (स्त्री) (की) कश्यप-पत्नी, शुकस्त्री। ख़ास एक दरख़्त, कपड़ा, कपड़ेका किनारा, पगड़ी, तोता, व्यासदेवका बेटा, रावणका वज़ीर, शरीसका दरख़्त, कश्यपकी जोरू, तोती।
शुकम्, व्य. शीघ्र। जल्दीसे।
शुकास्य, पु. चातापीड़ राजाका मंत्री (त्रि.) शुकसमान जिसकी नासिका है।
शुक्त, न. मांस, काञ्जिक, कर्कशवाक्य (त्रि.) निष्ठुर, पूत, अम्ल, शिष्ट, निर्जन (स्त्री) (क्ति) (क्ता) जलजन्तुविशेष। गोश्त, कांजी, तेज़ाब, कठोर, साफ़, तुरश, नेक, तनहाई, सिप्पी, शंख, नखी नाम खुशबूई, बवासीर, घोड़ेके पहलूपर लोमोंके तीन कुंडल, अश्वकी बीमारी, चार तोलेभर, खोपरी।
शुक्ति-मत्, पु. श्वेतापी, पर्वतविशेष, सप्तकुलाचल। यथा, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य, पारियात्र।
शुक्र, न. मज्जाजात धातुविशेष, वीर्य्य, नेत्ररोगविशेष (पु.) ग्रहविशेष, अग्नि, चित्रकवृक्ष ज्येष्ट-

मारा। चिंद, आंखकी बीमारी, छठा ग्रह, आतिश, जेटमहीना।

शुक्र-भुज्, पु. मयूर, (त्रि.) रेतोभोजक। ताऊस।

शुकल, त्रि. शुक्रयुत। जुतफे वाला।

शुक्र-शिष्य, पु. असुर, कच, राक्षस।

शुक्रिय, त्रि. शुक्र-सम्बन्धीय; शुक्रका।

शुक्ल, न. रजत, नवनीत, चक्षुरोगवि०, काञ्जिकादि (पु.) योगवि०, पक्षवि०, (त्रि.) वर्णविशेष (स्त्री) (क्ला) सरस्वती, शर्करा, काकोटीनामकौषधि, विदारी। सेम, ताज़ा मक्खन, आंखकी बीमारी, कांजी, सुपेद रंग, इलमका देवता, चीनी।

शुक्ला-पाङ्ग, पु. मयूर। मोर

शुक्ल(त्व)ता, स्त्री. शुभ्रता। सुफ़ेदी।

शुक्लि-मन्, पु. शुक्लता। सुफ़ेदी।

शुक्लो-पला, स्त्री. शर्करा, (पु.) श्वेत प्रस्तर। चीनी, मिसरी, सुफ़ेद पत्थर।

शुङ्ग, पु. वटवृक्ष (स्त्री) (ङ्गा) वृक्षविशेष, धान्यादिशूक। बड़ का दरख़्त, पाकड़ का दरख़्त, भुट्टा।

शुच्(चा), स्त्री. शोक, मन-स्ताप। फ़िकर, अफ़सोस, वबाल्।

शुचि, पु. अग्नि, आपाढ़मास, शुक्ल-वर्ण, शृङ्गाररस, ग्रीष्मकाल, सूर्य्य, चन्द्र, शुक्र, ब्राह्मण (स्त्री) कश्यपकन्या, (त्रि.) शुक्लगुणविशिष्ट, पवित्र, निर्दोष, धार्म्मिक। [मुस्कराना।

शुचि-स्मित, त्रि. मृदुहास। मुस्करानेवाला (न.)

शुटीर्य्य, न. वीर्य्य। बहादुरी।

शुण्टि(ण्ठी)(ण्ठिका), स्त्री. शुष्कआर्द्रक; सोंठ।

शुण्ड, पु. करिकर, (स्त्री) (ण्डा) मद्यपानगृह, वेश्या, मद्य, हस्तिहस्त, नलिनी, कुटनी। हाथीकी सूंड, शराब पीनेका घर, कंचनी, शराब, कमलनी, कुटनी।

शुण्डाल, पु. हस्ती, हाथी। फ़ील।

शुण्डिन्, पु. शौण्डिक, हस्ती, (स्त्री) (नी) तत्पत्नी। कलाल, साथी, कलालन, हथिनी।

शुतुद्रि, स्त्री. शतद्रु नदी। सतलुज दर्या।

शुद्ध, न. सैन्धव-लवण, मरिच, (त्रि) केवल, निर्दोष, पवित्र, शुक्ल, स्वच्छ, उज्ज्वल, उद्धृत। सैंधानिमक, सिरफ़, बेऐब, पाक, सुफ़ेद, उजला।

शुद्ध-जङ्घ, पु. गर्दभ; गधा।

शुद्धता, स्त्री. शुद्धत्व। पाकीज़गी।

शुद्ध-मति, पु. चतुर्विंशति जिनान्तर्गत जिनविशेष, (स्त्री.) पवित्र बुद्धि (त्रि.) सुबोध। चौबीस जिनों में से एक, नेक, दाना। [रनवास रानी।

शुद्धान्त, पु. अन्तःपुर, (स्त्री) (न्ता) राजयोषित्,

शुद्धा-पन्हुति, स्त्री. अलङ्कारविशेष।

शुद्धि, स्त्री. दुर्गा, मार्जन, शोधन, स्वच्छता, वैदिककर्म्म योग्य संस्कारविशेष। देवी, मांजना, सफ़ाई, वेदके काम करनेके लायक संस्कार, दरुस्ती।

शुन(क), पु. श्वान; कुत्ता।

शुना(शी)सीर, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।

शुनि, पु. कुक्कुर, (स्त्री) (नी) कुकुरी।

शुनःशेफ, पु. मुनिविशेष।

शुनक, पु. मुनिविशेष।

शुभ, न. मङ्गल, पद्मकाष्ठ, सुख, (पु.) विष्कुम्भादि सप्तविंशतियोगान्तर्गत त्रयोविंशयोग, (त्रि.) मङ्गलकारक, सुखी, सुन्दर, (स्त्री) (भा) शोभा, कान्ति, इच्छा, वंशरोचना, देव-सभा, उमा-सखी मङ्गल-जनिका। भलाई, एक दवाई, वा आराम, २७ सत्ताइस योगोंमेंसे २३ तेईसवां, भला करनेवाला, खूबसूरत, शान, छवि, ख्वाहिश, तबाशीर, देवताओंकी मजलिस।

शुभंयु, त्रि. मङ्गलान्वित। खुश, किस्मतवाला।

शुभ-ङ्कर } त्रि. मङ्गलकारक, (पु) स्वनामख्यात

शुभद, } अङ्कशास्त्रकारक (स्त्री) (री) पार्वती।

शुभ-दन्ती, स्त्री. पुष्पदन्त नाम हस्तिपत्नी, शोभन-दन्ता स्त्री। शुभदन्त नाम हाथीकी हथिनी, सुंदर दांतवाली औरत।

शुभा-ङ्गी, स्त्री. कुबेर-पत्नी, रति। कुबेर की जोरु, कामदेव की जोरु, खूबसूरत औरत।

शुभ्र, न. अभ्रक, गड़लवन, रौप्य, कासीस, (पु.) शुक्लवर्ण, चन्दन (त्रि) उद्दीप्त (स्त्री) (भ्रा) गङ्गा, स्फटिक, वंशरोचन। अभरक, सींधानिमक, सेम, चांदी, हीराकसीस, सुपेद रंग, चन्दन, चमकीला, दर्या, गंगा, बिलौर, तबाशीर।

शुभ्रां-शु, पु. चन्द्र, कर्पूर; चांद, काफ़ूर।

शुभ्रा-लु, पु. महिषकन्द। हाथीपिच।

शुभ्रि, पु. ब्रह्मा, प्रजापति।

शुम्भ, पु. दानवविशेष; प्रल्हाद का पोता।

शुम्भ-पुर, न. एक चक्र। सम्भलपुर का ज़िलह।

शुल्क, पु. न. मासूल, लड़की का मोल, दहेज़, मोल।

शुल, न. रज्जु, ताम्र। रस्सी, तांबा।

शुल्व, न. ताम्र, रज्जु, यज्ञ-कर्म, आचार। तामां, रस्सी, यज्ञका काम, चलन।

शुशुमा, स्त्री. शुक्रा-चार्य-पत्नी; शुक्र जी की जोरू।

शुश्रु, स्त्री. माता; मां।

शुश्रूपक, पु. परिचारक। ख़िदमतगार।

शुश्रूपण, न. सेवा। ख़िदमत। [ख़ाहिश।

शुश्रूषा, स्त्री सेवा, श्रवणेच्छा। खिदमत, सुनने की

शुश्रूषु, त्रि. श्रवणेच्छुक; सुनने की इच्छावाला, खिदमत गुज़ार।

शुष, पु. शोषण, गर्त्त, सेवक (स्त्री) (षि); सुकाना, गढ़ा, ख़िदमतगार।

शुषिर, न. विवर, वंश्यादिवाद्य, (त्रि) सरन्ध्र, (पु) मूषिक, अग्नि (स्त्री) (रा) नदी नलीनाम गन्ध-द्रव्य। सुराख़, बंसरी, सुराख़दार, मूसा, आग, दर्या, एक खुशबूई।

शुष्किल, पु. वायु। हवा।

शुष्क, त्रि. निस्नेह; सूका। खुश्क।

शुष्कल, त्रि. शुष्क आमिष-भोजी, रावणदूतवि-शेष (स्त्री) (ला) मांसयात्र। सूका गोश्त गो-श्तखोर, रावण का दूत।

शुष्म(न्), न. तेजः, बल (पु) सूर्य अग्नि, वायु, पक्षी, अर्चि। रौशनी, ज़ोर, आफ़ताव, आतिश, हवा, परिन्दह, चंगारह।

शूक(क), पु. यव, रस। जौं, मुलायमी। [सूरी।

शूकर, पु. पशुविशेष (स्त्री) (री) वराही। सूअर,

शूकल, पु. दुर्विनीताश्व। शोख़ घोड़ा।

शूद्र, पु. चतुर्थवर्ण, (स्त्री) (द्री) (द्रा) (द्राणी) शूद्र की जोरू। [करनेवाला।

शूद्रावेदिन्, त्रि. शूद्राविवाहकर्ता। शूद्री संगव्याह

शून, त्रि. वर्द्धित, (स्त्री) (ना) वध्यभूमि, अधोजि-ह्विका। फूला हुआ, कसाईखानह। काकली।

शूना-चत्, पु. (वान्) प्राणिवधोपजीवी। कसाई।

शून्य, न. आकाश, विन्दु (स्त्री) (न्या) नली, वन्ध्या। आसमान, सिफ़र, नुक्तह, ख़ाली।

शून्य-वादिन्, त्रि. नास्तिकविशेष।

शूर, पु. बहादुर, श्रीकृष्णजी का दादा। सूरज, शेर, सूअर, साल का पेड़, मसूर।

शूरण, पु. मूलविशेष, श्येनाक वृक्ष।

शूरता, स्त्री. शौर्य्य। बहादुरी। [का मुल्क।

शूर-सेन, पु. राजाविशेष, देशविशेष। मथुरा

शूर्प, पु. न. तण्डुलादि परिष्करणार्थ वंशनिर्मित पात्रविशेष, (स्त्री) (र्पा) रावणभगिनी। छाज, रावण की बहिन।

शूर्प-कर्ण, पु. हस्ती, गणेश (त्रि) सूर्पतुल्य कर्णयुक्त। छाज के से कानवाला।

शूर्प-णखा, स्त्री. रावणभगिनी। सूपनखा।

शूर्मि(र्मी), पु. लोहे की पुतली। अहिरन, निहाई।

शूल, पु. न. पीडा रोगविशेष, त्रिसूल, मृत्यु, ध्वजा, योगविशेष, सुतीक्ष्ण, विक्रेतव्य (स्त्री) (ली) कंचनी।

शूल द्विप्, पु. हिङ्गु। हींग।

शूल-धन्वन्, पु. शिव, महादेव।

शूल-धर(पाणि), पु. शिव, महादेव।

शूल्य, त्रि. शूलाकृत। कबाब।

शूलिन्, पु. शिव, (त्रि) शूलरोगी, शूलधारी, महादेव, (स्त्री) (नी) पार्वती।

शृकाल, पु. नृपवि०, देशवि०, शृगाल (स्त्री) (ली) गिदड़ी (त्रि.) कठोर, नीच।

शृङ्खल, त्रि. पुरुषकटिभूषण, (स्त्री) (ली) निगड़। तागड़ी, गिदडी, हथकड़ी, संगल।

शृङ्खलक, पु. उष्ट्र; ऊंठका बच्चा, संगल।

शृङ्खलित, त्रि. शृङ्खल बद्ध; संगलसे बंधा हुआ।

शृंगक, पु. औषधि, वृक्षविशेष, जीवक। [पुरी।

शृंगवेर(क), न. अदरक, सोंठ, गुह चंडाल की

शृङ्गार(क), न. चौरास्ता, (पु) सिंहाडा, कामा-ख्या देश का पहाड़।

शृंगार, न. लवङ्ग, सिन्दूर चूर्ण, आर्द्रक, कालागुरु (पु) सुरत, गजभूषण, आदरस; लौंग, चूरा। अदरक, स्याहसंदल, जमा, हाथी की जेवायश का निशान।

शृङ्गारक, न. सिन्दूर, (त्रि) शृङ्गविशिष्ट।

शृङ्गिन्, पु. हस्ती, वृक्ष, पर्वतभूमिवि०, (त्रि) शृङ्गयुत, (स्त्री) (ङ्गिनी) मत्स्यविशेष।

श्रणि, स्त्री. अङ्कुश; आंकड़ा ।
श्रत, त्रि. उबला हुआ, काहड़ा हुआ ।
शेमुषु, पु. बुद्धि, गुदा । अक़ल, फ़्न ।
शेखर, न. करीटस्थ पुष्प, किरीट, लौंग, सुहांजने की जड़, पहाड़की चोटी; मुकटपर का फूल, ताज ।
शे(प)फ(स्), पु. शेफ । केर ।
शेफालि(ली)(लिका), स्त्री. पुष्पवृक्षविशेष, खास एक फूलदार पेड़ ।
शेमुखी, स्त्री. बुद्धि, । अक़ल ।
शेव, पु लिङ्ग, सर्प, आनन्द ।
शेवधि, पु. माणिक; कुवेर की निधि ।
शेव(वा)ल, न. शैवाल, । शिवाल ।
शेवलिनि, स्त्री. नदी । दर्या ।
शेष, न. प्रसाद (पु) सर्पराज, नाश, गजनिष्पत्ति, अन्त, सीमा, (पु. न.) उपयुक्त (त्रि.) बचा हुआ, जूठा, बाकी ।
शैत्य, न. शीतलत्व । सर्दी ।
शैथिल, न. शिथलत्व; ढीलापन । सुस्ती ।
शैनेय, पु. सात्यकि; कृष्णका गाड़ीवान् ।
शैल, न. शिलाजीत, (पु.) पहाड़ (त्रि) चटानका (स्त्री) (ली) इशारह, तरीकह ।
शैल-ज, न. अश्मन्तपुष्प (त्रि) पर्वतजात, (स्त्री) (जा) शेहली लता, गजपिप्पली, पहाड़ी चीज़, पार्वती । [सुहागा ।
शैल-भक्ति, स्त्री. प्रस्तरच्छेदकास्त्र, टङ्क । छयनी,
शैल-राज, पु. हिमालय पर्वत ।
शैल-सुता, स्त्री. पार्वती, गंगा, ज्योतिष्मती लता ।
शैलालिन्, पु. नट; नाचनेवाला ।
शैलूष, पु. विल्ववृक्ष, नट, नर्तक, धूर्त, (स्त्री) (षी) (षिका) नटी । विल्वका पेड़, नाचार, लुचा ।
शैलेय, त्रि. पर्वतीयगन्धद्रव्यविशेष (त्रि) पर्वतका ।
शैव, पु. शिवभक्त (त्रि) शिवसम्बधीय ।
शैवल, पु. सिवाल । काही ।
शैवलिनी, स्त्री. नदी । दर्या ।
शैब्य, पु. श्रीकृष्णका घोड़ा; पाण्डवों की सेनामें एक सूरमा (स्त्री) (ब्या) हरिश्चन्द्रपत्नी ।
शैशव, न. शिशुत्व; लड़कपन । [सोस, ग़म ।
शोक, पु. इष्टवियोग-जनित दुःख । फ़िकर, अफ़-
शोचन, न. मनोदुःख प्रकाश करण (स्त्री)(ना) विलाप । अफ़सोस, गिरियो ज़ारी ।
शोचिस्, न. चमक, शोलह, भड़क ।
शोचि-ष्केश, पु. अग्नि । आतिश ।
शोच्य, } शोचनीय, } शोचनीय । शोक करने के लायक ।
शोण, न. सिन्दूर, रुधिर, रक्तवर्ण, (पु) रक्तोत्पलनिभ, नदविशेष, अग्नि, समुद्रविशेष, (त्रि) रक्त-मुख ।
शोण-रत्न, न मणिविशेष; पन्ना । लाल ।
शोणित, पु. रक्तकुङ्कुम, (त्रि) रक्तवर्ण । खून, केसर, सुरख ।
शोथ(फ), पु. सोजशकी बीमारी । [दरख्त ।
शोथ-जित्,(हृत्) पु. भल्लातक-वृक्ष; भिलावेका
शोध, (पु.) परिष्कार, वैरनिर्य्यातन, प्रतिक्रिया । सफ़ाई, बदला, इलाज ।
शोधक, त्रि. शोधनेवाला । साफकरने वाला, मसेह ।
शोधन, न. साफ करना, गूंह, हीराकसीस, (पु) कागज़ी निंबू, (त्रि) शुद्धिकारक, (स्त्री) (नी) झाड़ू ।
शोधित, त्रि. साफ़ किया हुआ, नितारा हुआ, सही कीया हुआ ।
शोफ, पु. शोथ । सोज़श ।
शोभन, न. पद्म, (पु) ग्रह, विष्कम्भादि २७ मंसे पञ्चम (त्रि) सुन्दर (स्त्री) (ना) हरिद्रा, गोरोचना । कमल का फूल, सयारा, २७ स योगों में से ५ वां, खूबसूरत, चमकीला, मुबारिक, हलदी, गोरोचन । [चमक, शान ।
शोभा, स्त्री. दीप्ति, गोपीविशेष, हरिद्रा, गोरोचना,
शोभाञ्जन, पु. वृक्षविशेष; सुहांजना ।
शोष, पु. यक्ष्मारोग, शोषण, कामदेव-बाण । तपदिक, सुकाना, सोज़श । [कुनिंदह ।
शोषक, त्रि. शोषणकर्त्ता । सुकानेवाला, तबाह
शोषण, न. रसाकर्षण, शुण्ठी, (पु) कामदेवका बाण, श्योनाक वृक्ष । खुश्क करना, चूसना, सोंठ, (त्रि) सुखानेवाला ।
शौक, न. शुकगण; तोतोंका झुण्ड, ग़म ।
शौक्तिकेय, न. मोती, सिप्पीका ।
शौक्ल(क्ल्य), न. शुभ्रता । सुफ़ेदी । [सांप ।
शौक्तिकेय, न. विष (पु.) सर्प्पविशेष । जहर,

शौच, न. शुद्धि, शुचित्व; अभक्ष्यका भक्षण न करना, निंदितो कोसाथ न देना, निजधर्म मेंस्थित रहना।

शौचिक, पु. वर्ण संकरजातिविशेष; कैवर्त्तकी कन्या में शोण्डिककी विंदसे पैदा हुआ २।

शौण्ड, त्रि. मत्त, वीर, अत्यासक्त (स्त्री) (ण्डी) मद्य। मस्त, बहादुर, आशक़। शराब।

शौण्डिता, स्त्री. मत्तता, वीरत्व। मस्ती, बहादुरी, पागलपन।

शौण्डिर्य्य, न. अहङ्कार, गर्व्व। गरूर।

शौण्डिक, न. वर्णसङ्कर जातिविशेष; गांधीकी लड़की के गर्भमे कैवर्त्तकी विन्दसे पैदा हुई २ औलाद। कलाल।

शौण्डिर(ण्डी)र, त्रि. गर्वित। मग़रूर।

शौद्र, पु. शूद्रा–पुत्र (त्रि) शूद्रसम्बन्धीय; बारह तरहके पुत्रोंमेंसे एक, शूद्रका।

शौद्धोदनि, पु. शुद्धोदन मुनिका बेटा।

शौधिका, स्त्री. धान्यविशेष; कंगुनी।

शौनक, पु. मुनिविशेष; नैमिषक्षेत्रका प्रधान ऋषि। [वाला।

शौनिक, पु. मांसक्रेता। कसाई, मांस बेचने

शौभ, न. व्योमचारि पुर, आकाशयान, (पु) देवता, गुवाक (भा) राजा हरिश्चन्द्रकी पुरी। बुर्ज, सुपारी।

शौभिक, पु. इन्द्रजालिक। मदारी।

शौरि, पु. श्रीकृष्ण, शनैश्चर ग्रह। जुहल।

शौर्य्य, न. बल, साहस। ताक़त, दलेरी।

शौल्क(ल्कि)(क), त्रि. शुल्कसम्बन्धीय। महसूलिया, तअसीलदार।

शौल्किक, पु. कांस्यकार; कसेरा।

वर्ण, धूस्तूर, श्यामाक। स्याहमिरच, सेंधानिमक, स्याह, इलाहबादमे बड़का दरख़त, बादल, कोइल, स्याहरंग, धतूरा, सुआंक [स्यांक।

श्याम(म)क, न. तृणविशेष, (पु) तृणधान्य। सुआंक।

श्याम-कण्ठ, पु. मयूर, शिव। मोर।

श्यामता, स्त्री. कृष्णता। स्याही।

श्यामल, स्त्री. (ला) पार्वती, अश्वगन्धा, (त्रि) कृष्णवर्ण (पु) वटवृक्ष। स्याह, बड़का पेड़।

श्यामा, स्त्री. औषधिविशेष, अप्रसूता स्त्री, यमुना, रात्रि, नीलिका, गुग्गुलु, कृष्णा, गडूची, कस्तूरी पिप्पली, हरिद्रा, नीलदूर्वा, तुलसी, गाभी, स्त्री, छाया, शिंशपावृक्ष, पक्षिविशेष। खास एक दवाई, ना प्रसूत हुई २ औरत, जमुना, रात, नील, गुग्गल, गिलो, पीपल, हलदी, दूब, गाय, औरत, साया, शीशम, एक चिड़िया।

श्यामिका, स्त्री. श्यामवर्ण स्याही। अंधेरा, खोट।

श्याल, पु. पत्नीभ्राता (स्त्री) (ली) पत्नीभगिनी; साला, साली।

श्याव, पु. कालेपीलेवाल, (त्रि) उसवाला। [सुफ़ेद।

श्येत, पु. शुक्लवर्ण (त्रि) तद्विशिष्ट। सुफेद रंग,

श्येन, पु. पक्षिविशेष यागविशेष। बाज, (श्येनयाग) (स्त्री) (नी) श्येन-पत्नी। मादा बाज।

श्येनम्पाता, स्त्री. मृगया। शिकार।

श्रत्, श्रद्धा, भक्ति। एतकाद।

श्रथन, न. हनन, पुनः २ हर्षण, मोक्ष, शिथिलीकरण। मारना, तरद्दद, बांधना, छुडाना, ढीला करना।

श्रद्दधत, त्रि. भक्तिमान्। एतक़ादवाला।

श्रपित, त्रि. पकाहुआ। [थकान।
श्रम, पु. तपः खेद, शान्ति। तक्लीफ़, मेहनत,
श्रमण, पु. यति, संन्यासी, (स्त्री) (णा) सुदर्शना, संन्यास, मुण्डीरी, शबरी-विशेष (त्रि) मन्दकर्म।
श्रम-नीर, न. घर्मजल; पसीना।
श्रमिन्, पु. श्रम-विशिष्ट। मेहनती।
श्रय, } पु. आश्रय, अवलम्बन। पनाह।
श्रयण, } न.
श्रव, पु. कर्ण. निर्झर; कान, झरना। [शोहरत।
श्रवस्, न. कर्ण, प्रसिद्ध, कीर्ति। कान, मशहूरी,
श्रवण, पु. कान, (स्त्री) (णा) नक्षत्र, (न) सुनना, ख़िदमत (त्रि) श्रवण का।
श्रव्य, त्रि. सुनने योग्य।
श्राण, त्रि. घृत दुग्ध जल भिन्न पक्व द्रव्य (स्त्री) (णा) यवागू। भुजा हुआ, जौं का कोटा, मांड, भाजी।
श्राद्ध, न. शास्त्रोक्तविधानद्वारा पित्रुद्देश्य अन्नादिदान (त्रि) भक्त। शास्त्र की रीतसे पितरों के लिये अन्न वग़ैरह का देना। द्वादशविध यथा। १ नित्य, २ नैमित्तिक, ३ काम्य, ४ वृद्धि, ५ सपिण्डन, ६ पार्वण, ७ गोष्ठी, ८ शुद्ध्यर्थ, ९ कर्माङ्ग, १० वैदिक, ११ यात्रार्थ, १२ पुष्ट्यर्थ, (त्रि.) श्रद्धायुक्त।
श्राद्ध-देव, पु. यम, मनुविशेष। जम, सूर्य की संज्ञा नाम पत्नीके गर्भमें पैदा हुई २ औलाद।
श्रान्त, पु. संन्यासी (त्रि) श्रान्ति-युक्त, भोगतृप्त, (स्त्री) (न्ति) श्रम, विश्राम, निवृत्ति। थका हुआ, थकावट, थकान, आराम, हटजाना।
श्रास, पु. मास; महीना।
श्राय, पु. आश्रयस्थान, विश्वास (त्रि) श्रीसम्बन्धीय। पनाह, भरोसा, श्रीका।
श्राव, पु. निर्झर; बहना, झरना।
श्रावक, पु. काक; कौवा, सरौगी।
श्रावण, पु. मासविशेष, (स्त्री) (णी) श्रावणपूर्णिमा, (त्रि) श्रवणसम्बन्धीय। सावनका महीना, सावन सुदि पूनों, श्रवण का।
श्रावणिक, पु. सावनमास।
श्रावन्ती, पु. स्त्री. पुरीविशेष। ख़ास नगरी।
श्राव्य, त्रि. सुनाने योग्य। [किया हुआ।
श्रित, त्रि. सेवित, आश्रित, उपजीवित। सेवा
श्रित-वत्, त्रि. परिचारक, आश्रयकारी, ख़िदमतगार, जिसने आश्रय किया है।
श्री, स्त्री. लक्ष्मी, लवङ्ग, वेश-रचना, शोभा, सरस्वती, त्रिवर्ग, सम्पत्ति, विधा, उपकरण, विभूति अधिकार, प्रभा, कीर्ति, वृद्धि, सिद्धि, कमल, विल्ववृक्ष, (पु.) रागविशेष। हश्मत, लौंग, ज़ेबाइश, शोअरत, शान।
श्री-कण्ठ, पु. शिव, देश-विशेष। हस्तिनापुर के उत्तर की ओर पश्चिम में कुरुजाङ्गल देश, भवभूति कविकी पदवी।
श्री-कर, न. रक्तोत्पल (पु.) विष्णु, स्मृति-ग्रन्थकारविशेष, (त्रि.) श्रीकारक, सुर। सुरख़ कौल फूल।
श्री-कान्त } पु. विष्णु।
श्री-नाथ }
श्री-खण्ड, पु. न. चन्दन। संदल।
श्री-गर्भ, पु. विष्णु, खड्ग। शमशेर।
श्री-घन, न. दधि (पु.) बुद्धावतारविशेष।
श्री-द, पु. कुवेर (त्रि.) श्रीदाता।
श्री-दाम, पु. कृष्णसखा गोपविशेष।
श्री-निवास, } पु. विष्णु।
श्री-निकेतन, } [पञ्चमी।
श्री-पञ्चमी, स्त्री. माघशुक्ला पञ्चमी; माघ सुदि
श्री-पति, पु. विष्णु, पृथिवी-पति। पादशाह।
श्री-पर्ण, न. पद्म, अग्निमन्थ वृक्ष, (स्त्री) (र्णी) गम्भारी, शाल्मलिवृक्ष। कौल का फूल, सिंबल का पेड़।
श्री-पुत्र, पु. अश्व, कामदेव; घोड़ा, काम।
श्री-फल, पु. विल्ववृक्ष, (स्त्री) (ला) नीली वृक्ष, क्षुद्रकारवेल्ली, (ली) आमलकी। विल्व का दरख़्त, नील का पौदा, करेले की वेल, आमला, नरवेल।
श्री-भद्रा, स्त्री. भद्र-मुस्तक। नागरमुथा।
श्री-भ्रात, पु. घोड़ा। चंद्रमा।
श्री-मत्, पु. (त्रि) मनोज्ञ, धनी। तिलक-दरख़्त, पीपल का दरख़्त, ख़ूबसूरत, दौलतमंद।
श्री-यु(क्त)त, त्रि. लक्ष्मीवान्, जीवित पुरुष नाम पूर्व दातव्य शब्द। नामवर, इक़बालमन्द, बड़ों का इलक़ाब।
श्रीरङ्ग-पत्त(ट्ट), न. नगरविशेष।

शौच, न. शुद्धि, शुचित्व; अभक्ष्यका भक्षण न करना, निंदितो कोसाथ न देना, निजधर्म मेंस्थित रहना।

शौचिक, पु. वर्ण संकरजातिविशेष; कैवर्त्तकी कन्या में शौण्डिककी बिंदसे पैदा हुआ २।

शौण्ड, त्रि. मत्त, वीर, अलासक्त (स्त्री) (ण्डी) मद्य। मस्त, बहादुर, आशक़। शराब।

शौण्डिता, स्त्री. मत्तता, वीरत्व। मस्ती, बहादुरी, पागलपन।

शौण्डिर्य्य, न. अहङ्कार, गर्व्व। गरूर।

शौण्डिक, न. वर्णसङ्कर जातिविशेष; गांधीकी लड़की के गर्भमे कैवर्त्तकी विन्दसे पैदा हुई २ औलाद। कलाल।

शौण्डिर(ण्डी)र, त्रि. गर्वित। मग़रूर।

शौद्र, पु. शूद्रा–पुत्र (त्रि) शूद्रसम्बन्धीय; बारह तरहके पुत्रोंमेंसे एक, शूद्रका।

शौद्धोदनि, पु. शुद्धोदन मुनिका बेटा।

शौधिका, स्त्री. धान्यविशेष; कंगुनी।

शौनक, पु. मुनिविशेष; नैमिषक्षेत्रका प्रधान ऋषि। [वाला।

शौनिक, पु. मांसक्रेता। कसाई, मांस बेचने

शौभ, न. व्योमचारि पुर, आकाशयान, (पु) देवता, गुवाक (भा) राजा हरिश्चन्द्रकी पुरी। बुर्ज, सुपारी।

शौभिक, पु. इन्द्रजालिक। मदारी।

शौरि, पु. श्रीकृष्ण, शनैश्वर ग्रह। जुहल।

शौर्य्य, न. बल, साहस। ताक़त, दलेरी।

शौल्क(ल्कि)(क), त्रि. शुल्कसम्बन्धीय। महसूलिया, तअसीलदार।

शौल्किक, पु. कांस्यकार; कसेरा।

शौवस्तिक, त्रि. भाविदिन स्थायी। कल्हका।

श्चोत, पु. क्षरण, प्रोक्षण। खिरना, चूता।

श्चोतत्, त्रि. चूता हुआ।

श्मशान, न. शवदाह स्थान; मरघट।

श्मश्रु, न. पुरुष-मुख-वर्द्धित लोम; दाढ़ी मूछ।

श्मश्रुल, त्रि. श्मश्रुविशिष्ट। दाढ़ीवाला।

श्मीलन, न. निमीलन; मूंदना।

श्यम्, न. सुख (पु.) शव। [गाढा, धूंआं।

श्यान, त्रि. गत, गाढ, (न) धूम। गुज़श्तह,

श्याम, न मरिच, सिन्धुलवण, (त्रि) कृष्णताविशिष्ट, (पु.) प्रयागस्थित वटवृक्ष, मेघ, कोकिल, कृष्णवर्ण, धूस्तूर, श्यामाक। स्याहमिरच, सैंधानिमक, स्याह, इलाहवादमे वड़का दरख्त, वादल, कोइल, स्याहरंग, धतूरा, सुआंक [सांक।

श्याम(म)क, न. तृणविशेष, (पु) तृणधान्य। सुआंक।

श्याम-कण्ठ, पु. मयूर, शिव। मोर।

श्यामता, स्त्री. कृष्णता। स्याही।

श्यामल, स्त्री. (ला) पार्वती, अश्वगन्धा, (त्रि) कृष्णवर्ण (पु) वटवृक्ष। स्याह, वड़का पेड़।

श्यामा, स्त्री. औषधिविशेष, अप्रसूता स्त्री, यमुना, रात्रि, नीलिका, गुग्गुलु, कृष्णा, गडूची, कस्तूरी पिप्पली, हरिद्रा, नीलदूर्वा, तुलसी, गाभी, स्त्री, छाया, शिंशपावृक्ष, पक्षिविशेष। खास एक दवाई, ना प्रसूत हुई २ औरत, जमुना, रात, नील, गुग्गल, गिलो, पीपल, हलदी, दूब, गाय, औरत, साया, शीशम, एक चिड़िया।

श्यामिका, स्त्री. श्यामवर्ण स्याही। अंधेरा, खोट।

श्याल, पु. पत्नीभ्राता (स्त्री) (ली) पत्नीभगिनी; साला, साली।

श्याव, पु. कालेपीलेवाल, (त्रि) उसवाला। [सुफ़ेद।

श्येत, पु. शुक्लवर्ण (त्रि) तद्विशिष्ट। सुफ़ेद रंग,

श्येन, पु. पक्षिविशेष यागविशेष। बाज, (श्येनयाग) (स्त्री) (नी) श्येन-पत्नी। मादा बाज।

श्येनम्पाता, स्त्री. मृगया। शिकार।

श्रत्, श्रद्धा, भक्ति। एतकाद।

श्रथन, न. हनन, पुनः २ हर्षण, मोक्ष, शिथिलीकरण। मारना, तरद्दद, बांधना, छुडाना, ढीला करना।

श्रद्धधत्, त्रि. } भक्तिमान्। एतकादवाला।
श्रद्धधान, } त्रि. श्रद्धायुक्त। यक़ीनवाला।

श्रद्धा, स्त्री. प्रत्यय, भक्ति, विश्वास, स्पृहा, आदर, शुद्धि, शास्त्रमे दृढ प्रत्यय। यक़ीन, ख्वाहिश, इज़त, पक्का यक़ीन।

श्रद्धा-लु, त्रि. श्रद्धा-युक्त, इच्छुक। यक़ीनवाला।

श्रद्धा-वत्, पु. श्रद्धाविशिष्ट, भक्तिमान्। मोतकिद।

श्रन्थ, पु. विष्णु, दर्भ, वध, मोक्ष। दाभ, क़तल, नजात, वार २, ढीलापन। [बांधना।

श्रन्थन, न. ग्रन्थन; गोंठना, फूलों का गूंदना,

श्रन्थित, त्रि. ग्रन्थित, बद्ध, कृतवध, मुक्त, हर्षित। गांठाहुआ, बंधाहुआ, खुश।

श्रपित, त्रि. पकाहुआ। [थकान।
श्रम, पु. तपः खेद, शान्ति। तक्लीफ़, मेहनत,
श्रमण, पु. यति, संन्यासी, (स्त्री) (णा) सुदर्शना, संन्यास, मुण्डीरी, शवरी-विशेष (त्रि) मन्दकर्म।
श्रम-वीर, न. घर्मजल; पसीना।
श्रमिन्, पु. श्रम-विशिष्ट। मेहनती।
श्रय, } पु. आश्रय, अवलम्बन। पनाह।
श्रयण, } न.
श्रव, पु. कर्ण. निर्झर; कान, झरना। [शोहरत।
श्रवस्, न. कर्ण, प्रसिद्ध, कीर्ति। कान, मशहूरी,
श्रवण, पु. कान, (स्त्री) (णा) नक्षत्र, (न) सुनना, ख़िदमत (त्रि) श्रवण का।
श्रव्य, त्रि. सुनने योग्य।
श्राण, त्रि. घृत दुग्ध जल भिन्न पक्व द्रव्य (स्त्री) (णा) यवागू। भुजा हुआ, जौं का कोटा, मांड, माजी।
श्राद्ध, न. शास्त्रोक्तविधानद्वारा पित्रुद्देश्य अन्नादिदान (त्रि) भक्त। शास्त्र की रीतसे पितरों के लिये अन्न वग़ैरह का देना। द्वादशविध यथा। १ नित्य, २ नैमित्तिक, ३ काम्य, ४ वृद्धि, ५ सपिण्डन, ६ पार्वण, ७ गोष्ठी, ८ शुद्धार्थ, ९ कर्माङ्ग, १० दैविक, ११ यात्रार्थ, १२ पुष्ट्यर्थ, (त्रि.) श्रद्धायुक्त।
श्राद्ध-देव, पु. यम, मनुविशेष। जम, सूर्य की संज्ञा नाम पत्नीके गर्भमें पैदा हुई २ औलाद।
श्रान्त, पु. संन्यासी (त्रि) श्रान्ति-युक्त, भोगतृप्त, (स्त्री) (न्ति) श्रम, विश्राम, निवृत्ति। थका हुआ, थकावट, थकान, आराम, हटजाना।
श्रास, पु. मास; महीना।
श्राय, पु. आश्रयस्थान, विश्वास (त्रि) श्रीसम्बन्धीय। पनाह, भरोसा, श्रीका।
श्राव, पु. निर्झर; वहना, झरना।
श्रावक, पु. काक; कौवा, सरोगी।
श्रावण, पु. मासविशेष, (स्त्री) (णी) श्रावणपूर्णिमा, (त्रि) श्रवणसम्बन्धीय। सावनका महीना, सावन सुदि पूर्नो, श्रवण का।
श्रावणिक, पु. सावनमास।
श्रावन्ती, पु. स्त्री. पुरीविशेष। खास नगरी।
श्राव्य, त्रि. सुनाने योग्य। [किया हुआ।
श्रित, त्रि. सेवित, आश्रित, उपजीवित। सेवा
श्रित-वत्, त्रि. परिचारक, आश्रयकारी, ख़िदमतगार, जिसने आश्रय किया है।
श्री, स्त्री. लक्ष्मी, लवङ्ग, वेश-रचना, शोभा, सरस्वती, त्रिवर्ग, सम्पत्ति, विधा, उपकरण, विभूति अधिकार, प्रभा, कीर्त्ति, वृद्धि, सिद्धि, कमल, विल्ववृक्ष, (पु.) रागविशेष। हश्मत, लौंग, ज़ेवाइश, शोहरत, शान।
श्री-कण्ठ, पु. शिव, देश-विशेष। हस्तिनापुर के उत्तर की ओर पश्चिम में कुरुजाङ्गल देश, भवभूति कविकी पदवी।
श्री-कर, न. रक्तोत्पल (पु.) विष्णु, स्मृति-ग्रन्थकारविशेष, (त्रि.) श्रीकारक, सुर। सुरख कौल फूल।
श्री-कान्त } पु. विष्णु।
श्री-नाथ }
श्री-खण्ड, पु. न. चन्दन। संदल।
श्री-गर्भ, पु. विष्णु, खड्ग। शमशेर।
श्री-घन, न. दधि (पु.) बुद्धावतारविशेष।
श्री-द, पु. कुवेर (त्रि.) श्रीदाता।
श्री-दाय, पु. कृष्णसखा गोपविशेष।
श्री-निवास, } पु. विष्णु।
श्री-निकेतन, } [पञ्चमी।
श्री-पञ्चमी, स्त्री. माघशुक्ला पञ्चमी; माघ सुदि
श्री-पति, पु. विष्णु, पृथिवी-पति। पादशाह।
श्री-पर्ण, न. पद्म, अग्निमन्थ वृक्ष, (स्त्री) (र्णी) गम्भारी, शाल्मलिवृक्ष। कौल का फूल, सिंवल का पेड़।
श्री-पुत्र, पु. अश्व, कामदेव; घोड़ा, काम।
श्री-फल, पुः विल्ववृक्ष, (स्त्री) (ला) नीली वृक्ष, क्षुद्रकारवेल्ली, (ली) आमलकी। विल्व का दरख़्त, नील का पौदा, करेले की बेल, आमला, नरवेल।
श्री-भद्रा, स्त्री. भद्र-मुस्तक। नागरमुथा।
श्री-भ्रातृ, पु. घोड़ा। चंद्रमा।
श्री-मत्, पु. (त्रि) मनोज्ञ, धनी। तिलक-दरख़्त, पीपल का दरख़्त, ख़ूबसूरत, दौलतमंद।
श्री-यु(क्त)त, त्रि. लक्ष्मीवान्, जीवित पुरुष नाम पूर्व दातव्य शब्द। नामवर, इक़्वालमन्द, वडों का इलकाब।
श्रीरङ्ग-पत्त(ट्ट), न. नगरविशेष।

शौच, न. शुद्धि, शुचित्व; अभक्ष्यका भक्षण न करना, निंदितो कोसाथ न देना, निजधर्म मेंस्थित रहना।
शौचिक, पु. वर्ण संकरजातिविशेष; कैवर्त्तकी कन्या में शौण्डिककी विंदसे पैदा हुआ २।
शौण्ड, त्रि. मत्त, वीर, अत्यासक्त (स्त्री) (ण्डी) मद्य। मस्त, बहादुर, आशक़। शराब।
शौण्डिता, स्त्री. मत्तता, वीरत्व। मस्ती, बहादुरी, पागलपन।
शौण्डिर्य्य, न. अहङ्कार, गर्व्व। गरूर।
शौण्डिक, न. वर्णसङ्कर जातिविशेष; गांधीकी लड़की के गर्भमे कैवर्त्तकी विन्दसे पैदा हुई २ औलाद। कलाल।
शौण्डिर(ण्डी)र, त्रि. गर्वित। मग़रूर।
शौद्र, पु. शूद्रा-पुत्र (त्रि) शूद्रसम्बन्धीय; बारह तरहके पुत्रोंमेंसे एक, शूद्रका।
शौद्धोदनि, पु. शुद्धोदन मुनिका बेटा।
शौधिका, स्त्री. धान्यविशेष; कंगुनी।
शौनक, पु. मुनिविशेष; नैमिषक्षेत्रका प्रधान ऋषि। [वाला।
शौनिक, पु. मांसक्रेता। कसाई, मांस बेचने
शौभ, न. व्योमचारि पुर, आकाशयान, (पु) देवता, गुवाक (भा) राजा हरिश्चन्द्रकी पुरी। बुर्ज, सुपारी।
शौभिक, पु. इन्द्रजालिक। मदारी।
शौरि, पु. श्रीकृष्ण, शनैश्चर ग्रह। जुहल।
शौर्य्य, न. बल, साहस। ताक़त, दलेरी।
शौल्क(ल्कि)(क), त्रि. शुल्कसम्बन्धीय। महसूलिया, तअसीलदार।
शौल्किक, पु. कांस्यकार; कसेरा।
शौवस्तिक, त्रि. भाविदिन स्थायी। कल्का।
श्चोत, पु. क्षरण, प्रोक्षण। खिरना, चूता।
श्चोतत्, त्रि. चूता हुआ।
श्मशान, न. शवदाह स्थान; मरघट।
श्मश्रु, न. पुरुष-मुख-वर्द्धित लोम; दाढ़ी मूछ।
श्मश्रुल, त्रि. श्मश्रुविशिष्ट। दाढ़ीवाला।
श्मीलन, न. निमीलन; मूंदना।
श्यम्, न. सुख (पु.) शव। [गाढा, धूंआं।
श्यान, त्रि. गत, गाढ, (न) धूम। गुज़रतह,
श्याम, न मरिच, सिन्धुलवण, (त्रि) कृष्णताविशिष्ट, (पु.) प्रयागस्थित वटवृक्ष, मेघ, कोकिल, कृष्णवर्ण, धूस्तूर, श्यामाक। स्याहमिरच, सेंधानिमक, स्याह, इलाहबादमे बड़का दरखत, बादल, कोइल, स्याहरंग, धतूरा, सुआंक [स्वांक।
श्याम(म)क, न. तृणविशेष, (पु) तृणधान्य। सुआंक।
श्याम-कण्ठ, पु. मयूर, शिव। मोर।
श्यामता, स्त्री. कृष्णता। स्याही।
श्यामल, स्त्री. (ला) पार्वती, अश्वगन्धा, (त्रि) कृष्णवर्ण (पु) वटवृक्ष। स्याह, बड़का पेड़।
श्यामा, स्त्री. औषधिविशेष, अप्रसूता स्त्री, यमुना, रात्रि, नीलिका, गुग्गुल, कृष्णा, गडूची, कस्तूरी पिप्पली, हरिद्रा, नीलदूर्वा, तुलसी, गाभी, स्त्री, छाया, शिंशपावृक्ष, पक्षिविशेष। खास एक दवाई, ना प्रसूत हुई २ औरत, जमुना, रात, नील, गुग्गल, गिलो, पीपल, हलदी, दूब, गाय, औरत, साया, शीशम, एक चिड़िया।
श्यामिका, स्त्री. श्यामवर्ण स्याही। अंधेरा, खोट।
श्याल, पु. पत्नीभ्राता (स्त्री) (ली) पत्नीभगिनी; साला, साली।
श्याव, पु. कालेपीलेबाल, (त्रि) उसवाला। [सुफ़ेद।
श्येत, पु. शुक्लवर्ण (त्रि) तद्विशिष्ट। सुफ़ेद रंग,
श्येन, पु. पक्षिविशेष यागविशेष। बाज, (श्येनयाग) (स्त्री) (नी) श्येन-पत्नी। मादा बाज।
श्यैनम्पाता, स्त्री. मृगया। शिकार।
श्रत्, श्रद्धा, भक्ति। एतक़ाद।
श्रथन, न. हनन, पुनः २ हर्षण, मोक्ष, शिथिलीकरण। मारना, तरद्दद, बांधना, छुडाना, ढीला करना।
श्रद्धधत्, त्रि. } भक्तिमान्। एतक़ादवाला।
श्रद्धधान, } त्रि. श्रद्धायुक्त। यक़ीनवाला।
श्रद्धा, स्त्री. प्रत्यय, भक्ति, विश्वास, स्पृहा, आदर, शुद्धि, शास्त्रमे दृढ प्रत्यय। यक़ीन, ख्वाहिश, इज़्ज़त, पक्का यक़ीन।
श्रद्धालु, त्रि. श्रद्धा-युक्त, इच्छुक। यक़ीनवाला।
श्रद्धा-वत्, पु. श्रद्धाविशिष्ट, भक्तिमान्। मोतक़िद।
श्रन्थ, पु. विष्णु, दर्भ, वध, मोक्ष। दाम, क़तल, नजात, बार २, ढीलापन। [बांधना।
श्रन्थन, न. ग्रन्थन; गांठना, फूलों का गूंदना,
श्रन्थित, त्रि. ग्रन्थित, बद्ध, कृतबध, मुक्त, हर्षित। गांठाहुआ, बंधाहुआ, खुश।

श्रपित, त्रि. पकाहुआ। [थकान।
श्रम, पु. तपः खेद, शान्ति। तक़्लीफ़, मेहनत,
श्रमण, पु. यति, संन्यासी, (स्त्री) (णा) सुदर्शना, संन्यास, मुण्डीरी, शबरी-विशेष (त्रि) मन्दकर्म।
श्रम-वीर, न. घर्मजल; पसीना।
श्रमिन्, पु. श्रम-विशिष्ट। मेहनती।
श्रय, **श्रयण**, पु. न. आश्रय, अवलम्बन। पनाह।
श्रव, पु. कर्ण. निर्झर; कान, झरना। [शोहरत।
श्रवस्, न. कर्ण, प्रसिद्ध, कीर्ति। कान, मशहूरी,
श्रवण, पु. कान, (स्त्री) (णा) नक्षत्र, (न) सुनना, ख़िदमत (त्रि) श्रवण का।
श्रव्य, त्रि. सुनने योग्य।
श्राण, त्रि. घृत दुग्ध जल भिन्न पक्व द्रव्य (स्त्री) (णा) यवागू। भुजा हुआ, जौं का कोटा, मांड, भाजी।
श्राद्ध, न. शास्त्रोक्तविधानद्वारा पितृुद्देश्य अन्नादिदान (त्रि) भक्त। शास्त्र की रीतसे पितरों के लिये अन्न वग़ैरह का देना। द्वादशविध यथा। १ नित्य, २ नैमित्तिक, ३ काम्य, ४ वृद्धि, ५ सपिण्डन, ६ पार्वण, ७ गोष्ठी, ८ शुद्धार्थ, ९ कर्माङ्ग, १० वैदिक, ११ यात्रार्थ, १२ पुष्ट्यर्थ, (त्रि.) श्रद्धायुक्त।
श्राद्ध-देव, पु. यम, मनुविशेष। जम, सूर्य की संज्ञा नाम पत्नीके गर्भमें पैदा हुई २ औलाद।
श्रान्त, पु. संन्यासी (त्रि) श्रान्ति-युक्त, भोगतृप्त, (स्त्री) (न्ति) श्रम, विश्राम, निवृत्ति। थका हुआ, थकावट, थकान, आराम, हटजाना।
श्रास, पु. मास; महीना।
श्राय, पु. आश्रयस्थान, विश्वास (त्रि) श्रीसम्बन्धीय। पनाह, भरोसा, श्रीका।
श्राव, पु. निर्झर; बहना, झरना।
श्रावक, पु. काक; कौवा, सरौगी।
श्रावण, पु. मासविशेष, (स्त्री) (णी) श्रावणपूर्णिमा, (त्रि) श्रवणसम्बन्धीय। सावनका महीना, सावन सुदि पूनों, श्रवण का।
श्रावणिक, पु. सावनमास।
श्रावन्ती, पु. स्त्री. पुरीविशेष। ख़ास नगरी।
श्राव्य, त्रि. सुनाने योग्य। [किया हुआ।
श्रित, त्रि. सेवित, आश्रित, उपजीवित। सेवा
श्रित-वत्, त्रि. परिचारक, आश्रयकारी, ख़िदमतगार, जिसने आश्रय किया है।
श्री, स्त्री. लक्ष्मी, लवङ्ग, वेश-रचना, शोभा, सरस्वती, त्रिवर्ग, सम्पत्ति, विधा, उपकरण, विभूति अधिकार, प्रभा, कीर्त्ति, वृद्धि, सिद्धि, कमल, विल्ववृक्ष, (पु.) रागविशेष। दस्मत, लौंग, ज़ेबाइश, शोहरत, शान।
श्री-कण्ठ, पु. शिव, देश-विशेष। हस्तिनापुर के उत्तर की ओर पश्चिम में कुरुजाङ्गल देश, भवभूति कविकी पदवी।
श्री-कर, न. रक्तोत्पल (पु.) विष्णु, स्मृति-ग्रन्थकारविशेष, (त्रि.) श्रीकारक, सुर। सुरख़ कौल फूल।
श्री-कान्त, **श्री-नाथ**, पु. विष्णु।
श्री-खण्ड, पु. न. चन्दन। संदल।
श्री-गर्भ, पु. विष्णु, खड्ग। शमशेर।
श्री-घन, न. दधि (पु.) बुद्धावतारविशेष।
श्री-द, पु. कुबेर (त्रि.) श्रीदाता।
श्री-दाम, पु. कृष्णसखा गोपविशेष।
श्री-निवास, **श्री-निकेतन**, पु. विष्णु। [पञ्चमी।
श्री-पञ्चमी, स्त्री. माघशुक्ला पञ्चमी; माघ सुदि
श्री-पति, पु. विष्णु, पृथिवी-पति। पादशाह।
श्री-पर्ण, न. पद्म, अग्निमन्थ वृक्ष, (स्त्री) (र्णी) गम्भारी, शाल्मलिवृक्ष। कौल का फूल, सिंबल का पेड़।
श्री-पुत्र, पु. अश्व, कामदेव; घोड़ा, काम।
श्री-फल, पु. विल्ववृक्ष, (स्त्री) (ला) नीली वृक्ष, क्षुद्रकारवेल्ली, (ली) आमलकी। बिल्व का दरख़्त, नील का पौदा, करेले की बेल, आमला, नरबेल।
श्री-भद्रा, स्त्री. भद्र-मुस्तक। नागरमुथा।
श्री-भ्रात्, पु. घोड़ा। चंद्रमा।
श्री-मत्, पु. (त्रि) मनोज्ञ, धनी। तिलक-दरख़्त, पीपल का दरख़्त, ख़ूबसूरत, दौलतमंद।
श्री-यु(क्त)त, त्रि. लक्ष्मीवान्, जीवित पुरुष नाम पूर्व दातव्य शब्द। नामवर, इक़्बालमन्द, बड़ों का इलक़ाब।
श्रीरङ्ग-पत्त(ट), न. नगरविशेष।

श्री-रस, पु. सरलनिर्य्यास । राल, तारपीन ।

श्री-राग, पु. षटरागान्तर्गत रागविशेष, अस्य रागिण्यो यथा।—गान्धारी, देवगान्धारी, मालश्री, रामकली ।

श्रील, त्रि. लक्ष्मीवान्, शोभायुक्त । दौलतमन्द ।

श्री-वत्स पु. विष्णु, विष्णुचिन्हविशेष, जिनध्वजा, नृपतिविशेष, गृहविशेष, कौस्तुभमणि, वक्षस्थलमें श्वेतवर्ण दक्षिणावर्त रोमावली, जैनो का—झंडा, नाम एक राजा का, एक खास घर, कौस्तुभमणि ।

श्रीवत्स-भृत्, पु. विष्णु ।

श्री-वत्स-लाञ्छन, पु. विष्णु, नारायण ।

श्री-वराह, पु. विष्णु नारायण ।

श्रीवास, पु. सरज वृक्षरस, पद्म, विष्णु, शिव । राल, कौल फूल । तारपीन ।

श्री-वे(श)ष्ट, पु. सरलवृक्षनिर्य्यास । राल,

श्री-श, पु. विष्णु, श्रीराम ।

श्री-संज्ञ, न. लवङ्ग; लौंग ।

श्रुज्, न. यज्ञपात्रविशेष; जज्ञ का एक वर्तन ।

श्रुत, न. वेद, शास्त्र, ज्ञान, श्रवणगोचर, (त्रि) अवधूत, आकर्णित, प्रसिद्ध । पढ़ना, सुना हुआ, मशहूर, समझा हुआ ।

श्रुत-कीर्ति, स्त्री. कुशध्वज राजकन्या, (पु.) देवर्षि (त्रि.) कीर्तियुक्त । शत्रुघ्नकी जोरू, नारद आदि, नामवर ।

श्रुत-बोध, पु. छंदोग्रंथविशेष ।

श्रुत-श्रवस्, पु. शिशुपालपिता, दमघोष ।

श्रुता-न्वित, त्रि. शास्त्रज्ञ, पण्डित । वेदके जाननेवाला, दाना ।

श्रुता-युस्, पु. सूर्य्यवंशीय राजाविशेष ।

श्रुति, स्त्री. वेद, कर्ण, श्रोत्र, श्रवणेन्द्रिय ग्राह्यगुण, श्रवण-नक्षत्र, किम्वदन्ती, सूक्ष्मस्वरविशेष । कान, आवाज़, २३ तेईसवां नक्षत्र, शोहरत या गौगा, स्वर का अवयव, बारीक सी आवाज़ ।

श्रुति-कटु, पु. कठोरशब्द, अलङ्कार-दोषविशेष । सख्त आवाज़ ।

श्रुव, पु. याग, (न.) यज्ञपात्रविशेष, (स्त्री) (वा) मूर्वा लता । यज्ञ, श्रुवा, नाम एक वेल का ।

श्रेढी, स्त्री. अङ्कशास्त्रमें गणना की रीति विशेष ।

श्रेणि(णी), स्त्री. निरिच्छद्रपङ्क्ति, दल । कतार, जमात ।

श्रेयस्, न. धर्म, मुक्ति, शुभसौभाग्य (त्रि.) अतिप्रशस्त, शुभकर (स्त्री) (सी) हरीतकी, गजपिप्पली, राम्ना, शुभयुक्ता । नेककिस्मत, वहुत उमदह, भला करनेवाला, हरड़, गजपीपल, नेककिसमतवाली ।

श्रेष्ठ, न. गोदुग्ध (पु.) कुबेर, नृप, द्विज, विष्णु, (त्रि.) प्रशस्त (स्त्री) (ष्ठा) स्थलपद्मिनी, औषधविशेष, उत्तमा स्त्री । गाय का दूध, धन का देवता, राजा, ब्राह्मण, उमदह, सूरजमुखी फूल, एक दवाई, नेक औरत ।

श्रेष्ठिन्, पु. वणिग्विशेष । सेठ ।

श्रोण, पु. पङ्गु (स्त्री.) (णी) श्रवण नक्षत्र, काञ्जिक (त्रि.) पक्क । लुंजा, कांजी, पका हुआ ।

श्रोणि(णी), स्त्री. कटिदेश, नितम्ब, पन्था । कमर, चूतड़, वाट ।

श्रोतव्य, त्रि. श्रवणीय । सुनने के लायक़ ।

श्रोतस्, न. कर्ण, नदीवेग, इन्द्रिय । कान, आवरवां, दर्या की धार, हवस ।

श्रोतृ, पु. (ता) श्रवणकर्त्ता; सुननेवाला ।

श्रोत्र, न. कर्ण; कान ।

श्रोत्रिय, पुं. वेदज्ञ-विप्र, (त्रि.) सुशील । वेद के जाननेवाला ब्राह्मण, नेक चलन ।

श्रौत, न. गृहस्वामिकर्तृक हवनीय दक्षिणदिक् सम्बन्धीय अग्नि, (त्रि.) श्रुतसम्बन्धीय, श्रुतिविहित धर्म्मादि । [काम ।

श्रौत्र, न. कर्ण, श्रोत्रियकर्म्म । कान, श्रोत्रियका

श्रौषट्, व्य. देवता को हवि देने का मन्त्र ।

श्लक्ष्ण, त्रि. शिथिल, सूक्ष्म, मनोहर, कृश । ढीला, बारीक, दिलचस्प्, पतला ।

श्लथ, त्रि. शिथिल, दुर्बल । ढीला, दुवला ।

श्लाघा, स्त्री. प्रशंसा, परिचर्य्या, अभिलाष, इच्छा । तअरीफ़, ख़िदमत, ख़्वाहिश, चापलूसी ।

श्लिषा, स्त्री. आलिङ्गन । बग़लगीरी ।

श्लिष्ट, त्रि. श्लेषयुक्त शब्दादि, मिलित । दुमअने लफ़्ज़, मिला हुआ ।

श्लील, त्रि. श्रीयुक्त । खुश ।

श्लेष, पु. संयोग, आलिङ्गन, अलङ्कारविशेष । मिलाप, बग़लगीरी, ठट्ठेवाज़ी, मखौल ।

श्लेष्मक, पु. कफ़। बलग़म। [बलग़मी।
श्लेष्मण,(ल) त्रि. कफ़वाला (स्त्री) (णा) वृक्षविशेष।
श्लेष्मन्, पु. (ष्मा) कफ। बलग़म, पियाज़।
श्लेष्मा-न्तक, पु. वृक्षविशेष। लसूड़े का दरख़त।
श्लोक, पु. पद्य, कविता, कीर्ति, यशः।
श्वःश्रेयस्, पु. भलाई।
श्वगणिक, पु. मृगवाधा, जीव. शिकारी।
श्व-पच(चा) } पु. चण्डाल, व्याध। खराब पेशे-
श्व-पाक् } वाला, शिकारी।
श्वफल, पु. बीजपूर; अनार, नारंगी।
श्वफलक, पु. अक्रूरपिता। अक्रूर का बाप।
श्व-धूर्त, पु. शृगाल। गीदड़।
श्व भीरु, पु. शृगाल। गीदड़। शिआर।
श्वभ्र, न. रन्ध्र गर्त,। सुराख़, गड्ढा।
श्वयथु, पु. शोफ, सोजश।
श्वयिची, स्त्री. पीड़ा, रोग। दर्द, बीमारी।
श्व-वृत्ति, स्त्री. सेवा, चाकरी।
श्वशुर, पु. ससुरा। सुतवईक।
श्वशुर्य्य, पु. सौहरेका पुत्र।
श्वश्रू, स्त्री. सास।
श्वस्, व्य. आगामीदिन। आनेवाला दिन।
श्वसन, न. श्वसित जीवन, (पु.) वायु, मदनवृक्ष, सांस, जान, हवा, नाम दरख़त का।
श्वसित, न. विश्वास, जीवन। एतकाद, जिंदगी।
श्वस्तन, } त्रि. आगामिदिन, (न.) भविष्यत्काल।
श्वस्त्य, }
श्वन्, } पु. (श्वा) कुकुर, कुत्ता (स्त्री) कुक्कुरी।
श्वान, }
श्वागणिक, पु. व्याध, कुत्तोंसे शिकार करनेवाला।
श्वापद, पु. हिंस्र पशु, व्याघ्र। दरिंदह, चीता।
श्वास, पु. श्वसित वायु, प्राण, रोगविशेष। सांस, हवा, जान, दम की बीमारी।
श्वासिन्, पु. वायु (त्रि) श्वासयुक्त। हवा, सांस-की बीमारीवाला।
श्वित्र, न. श्वेतकुष्ट; सुपेद कोढ़।
श्वेत, न. रूप्य. (पु) शुक्लवर्ण, द्वीपवि०, पर्वतवि०, शुक्रग्रह, शंख राजाविशेष (त्रि) शुक्लवर्णयुक्त। रूप्या, सुपेदरंग, ख़ास एक टापू, ख़ास एक पहाड़, अजारित, सुपेद (स्त्री) ता, कौड़ी।
श्वेतक, न. रूप्य (पु) वराटक, कौड़ी।
श्वेत कुंजर, पु. ऐरावत हस्ती, शुक्लगज।
श्वेत-केतु, } पु. ऋषिविशेष।
श्वेत-गृत, }
श्वेत-छद, } पु. हंस (त्रि) सुंदर पक्षवाला।
श्वेत-गरुत, }
श्वेत-द्वीप, पु. चंद्रद्वीप. वैकुण्ठपुरी।
श्वेत-धामन्, पु. चंद्र, कर्पूर, समुद्रफेन। चांद, काफ़ूर, समुंदर की झाग।
श्वेत-पत्र, पु. हस (न) शुक्लवर्ण पत्र।
श्वेत-पद्म, न. सिताम्भोज; सुपेदकमल फूल।
श्वेत-पिङ्ग(ल) पु. सिंह, शेर।
श्वेतभद्रा, स्त्री. श्वेतापराजिता लता। सुपेद अप-राजिता वेल।
श्वेत-माला, पु मेघ, धूम। बादल, धूंआ।
श्वेत-रक्त, पु. पाटलवर्ण। गुलाबी।
श्वेत-रश्मि, पु. चंद्र, शुभ्रांशु, चांद।
श्वेत रोचिस्, पु. शुभ्रांशु, चांद, (त्रि) सुपेद। प्रकाशवाला।
श्वेत-वाह, पु. इंद्र, अर्जुन।
श्वेतोदर, पु. कुबेर (त्रि) शुक्लवर्ण, जठर।
श्वेतौही, स्त्री. इंद्राणी, शची। इंद्र की जोरू।
श्वोवसीयस्, न. परदिनभावी सुख। कलका होनहार सुख।

ष.

ष, पु. अत्र, मानव, सर्व श्रेष्ठ, (त्रि) विज्ञ, श्रेष्ठ। बाल, आदमी, कुल, नेक, दाना, उमदह।
षट्क, त्रि. सङ्ख्याविशेष। छय।
षट्-कर्ण, पु. वीणा यंत्रवि०। बीनबाजा।
षट्-कर्म्मन्, न. यजन, याजन, दान प्रतिग्रह पठन, पाठन। षट्प्रकार शान्त्यादिकर्म यथा-शान्ति, वश्य, स्तम्भन, विद्वेष उच्चाटन (पु) ब्राह्मण.
षट्-कोण, न. लग्नात् षष्ठग्रह, रिपुस्थान, वज्र, लग्नसे छठीराशि, छयकोना।
षट्-चक्र, न. देहमध्यस्थ मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अपहत, विशुद्ध, आज्ञा नामक छय चक्र।
षट्-चरण, पु. भ्रमर, यूका, षट्पद। भौंरा, जूं।
षट्-त्रिंशत्, स्त्री. संख्यावि०। ३६ सं.।

पट्-त्रिंशत, न. पट्त्रिंशद्धर्म्म शास्त्र प्रयोजक मुनिगणाभिप्राय; धर्म्मशास्त्र बतानेवाले ३६ मुनियों का मत।

पट्-पद, पु. भ्रमर, यूका, पट्चरण, (स्त्री) मधुमक्षिका। भौंरा, जूं, शहिद की मक्खी।

पड्गव, त्रि. छय बैलोंसे आकृष्ट खेत।

पड्-गुण, पु. संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध, आश्रय, (त्रि) छय से गुणाहुआ।

पडङ्ग, न. शरीर पडवयव, दोनो जांघ, दो हाथ, सिर, कमर, वेदके छय अंग, जैसे शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिप।

पडङ्घ्रि, पु. भ्रमर; भौंरा।

पड्-भिज्ञ, पु. दिव्य-चक्षु, श्रोत्र, परिचित ज्ञान, पूर्वजन्म, स्मरण, आत्मज्ञान।

पड्रिपु, पु. काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, मात्सर्य्य। ख्वाहिश, गुस्सा, लालच, मुहवत, गुरूर।

पड-शीति, स्त्री. सूर्य संक्रमणविशेप, पडधिक अशीति संख्या,। ८६ छयासी।

पडशीतिचक्र, न. मिथुन, कन्या, धनु और मीन राशिमें स्थितसूर्यके शुभाशुभ फलजाननेके लिये नक्षत्राङ्ग नराकारविशेप।

पड-ष्टक, न. योगविशेप, वरकन्याको अपनी २ राशिसे छटे आठमें घरका विचार।

पडानन, पु. कार्त्तिकेय, स्वामिकार्तिक।

पडाम्नाय, पु. शिवजीके छय मुखोंसे निकले हुए छय मंत्र।

पडृतु, पु. छयऋतु, यथा-शरद् हेमंत, शीत, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा। [छय गांठें।

पड्ग्रन्थि, न. पिप्पलीमूल, (पु.) पट्पर्व। मघ,

पड्ज, पु. तंत्री कण्ठोत्थितस्वरविशेप. ७ स्वरोंमेंसे मादि समूह। सांढ, हीजड़ा, मजमह, कौल फूलोंका ढेर।

पण्डाली, स्त्री. तैलपात, सरसी, कामुका, स्त्री. छटांक, तालाव, अय्याश औरत।

पण्णवति, त्रि. संख्याविशेप। ९६ छयानवें।

पण्मुख, पु. कार्तिकेय, (न.) पट्संख्याक, वदन, (त्रि) पट् संख्याक वदनविशिष्ट। छयमुंह जिसके हों।

पप्, त्रि. (वहु) संख्याविशेप; छठा।

पष्टि, स्त्री. संख्याविशेप ६० साठ।

पष्टिक, पु. धान्यविशेप, (स्त्री) (का) सठियाधान।

पष्टितम, त्रि. पष्टिपूरण; साठवां।

पष्टि, व्य. पष्टिप्रकार; साठतरहसे।

पष्टिहायन, पु. हस्ती, धान्यविशेप। हाथी, ६० दिनोंमे पकनेवाला धान।

पष्ट(म), त्रि छठह, (स्त्री) (ष्ठी) (ष्ठिका) देवी विशेप, मातृकावि०, दुर्गा, तिथिविशे०।

पह, व्य. सम्बोधन शब्द।

पाड्गुण्य, न. राजाओं के राज रक्षणके छय उपाय, छय गुण। [मां हों।

पाण्मातुर, पु. स्वामिकार्तिक (त्रि) छय जिसकी

पिड्ग, पु. कामुक, लम्पट। शहवती, अयाश, लुचा।

पोडश, त्रि. संख्याविशेप, १६ वां, (स्त्री) (शी) देवीविशेप।

पोडश मातृका, स्त्री. पोडशसंख्या देवीविशेप, यथा गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शान्ति, पुष्टि, तुष्टि, आतमदेवता।

पोडपक, न. भूमि, आसन, जल, वस्त्र, दीप, अन्न, तांवूल, छत्र, गंध, माल्य, फल शय्या, पादुका, गौ, कांचन, रजत यह १६ वस्तु।

षोडशोपचार, पु. बहु॰ आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ, आचमन, स्नान, मधुपर्क, पुनराचमन, स्नान, वसन, आभरण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य ।

षोढा, व्य. षट् प्रकार; छयतरहसे ।

ष्ठीवन, न. थुत्कार, थूक फेंकना ।

ष्ठ्यूत, त्रि. वमि । कै ।

स.

स, ३२ यवां, वर्ण, इसका उच्चारण दांतोंसे होताहै, (पु.) विष्णु, जीव, चंद्रप्रभा, शान्ति, श्री ।

सं, व्य. शोभनार्थ, समानार्थ, प्रकृष्टार्थ, उपसर्ग विशेष ।

संक्षिप्त, त्रि. संक्षेपविशिष्ट । मुख्तसर ।

संक्षुब्ध, त्रि. हैरान, परेशान ।

संक्षुभित, त्रि. चंचल, आन्दोलित, मुतलव्विम ।

संक्षेप, पु. इख्तसार, खुलासा ।

संक्षोभ, पु. हलचली । तलवन ।

संग्रह, पु. इकट्ठा, इकट्ठा करना ।

संज्ञ, न. काष्टविशेष, (त्रि) लग्नजानुक (स्त्री) (ज्ञा) चेतना, बुद्धि; नाम, गायत्री, सूर्य्यपत्नी । जर्द लकड़ी, अग्राहज, लूला, खयाल, होश, अकल, इसम, सूरजदेवता की जोरू ।

संज्ञपन) न.
संज्ञप्ति) स्त्री. मारण, विज्ञापन, । कतल, इश्तिहार ।

संज्ञा, स्त्री. नाम, चेतना, आग, सूर्यपत्नी ।

संज्ञान, न. संकेतज्ञान; । इश्तहार ।

संज्ञापन, न. विज्ञापन; जताना । इश्तहार ।

संज्ञु, त्रि. संहतजानु, मिलितजानु; लुंजा ।

संज्वर, पु. संताप । बुखार ।

संवत्, व्य. वर्ष, विक्रमादित्य राजा का सन ।

संवत्सर, पु. वत्सर; वरस । [रता ।

संवदन, } न. आलोचना, वशीकरण । तावेक-
संवयन, } न. वशीकरण, आलोचन ।

संवर, न. जल, बौद्ध मतविशेष, (पु) दैत्यविशेष, मत्स्यवि॰, हरणवि॰ । [पड़दा ।

संवरण, न. मंगलाचरणवि॰, संगोपन, आवरण ।

संवरित, त्रि. गुप्त, आवृत; छिपाहुआ, ढांपा हुआ, ।

संवर्त, पु. महाप्रलय, प्रलयकालका मेघ ।

संवर्तक, पु. बलदेव, बलदेवलाङ्गल, वडवानल । श्रीकृष्णका भाई, बलरामका हल, समुंदरी आग, (स्त्री) (का) कमलका नया पत्ता, षाण्मासिक, (त्रि) छठे महीने कर्तव्य श्राद्धादि ।

संवर्तकिन्, पु. बलदेव, श्रीकृष्णका भाई;

संवर्त्ति, स्त्री. संवर्त्तिका, नूतनपत्र, दलमात्र; वत्ती, नयापत्ता, पत्ता ।

संवह, पु. वायुविशेष, ।

संवसथ, पु. ग्राम; गांव ।

संघाटिका, स्त्री. शृङ्गाटक; सिंघाड़ा ।

संवाद, पु. समाचार, । खबर । [कलिम ।

संवादिन्, त्रि. सदृश सम्भाषी । म्वाफ़िक मुत-

संवास, पु. गृह, घर, खुलाघर ।

संवाह(हन), न. भार उठाना, शरीरमलन ।

संवित्ति, स्त्री. चेतना, बुद्धि, प्रतिपत्ति ।

संविग्न, त्रि. डराहुआ । आज़ुर्दा ।

संविदित, त्रि. स्वीकृत, अङ्गीकृत; अच्छीतरह जाना हुआ, मनजूर किया हुआ ।

संविद्(दा), स्त्री. बुद्धि, अङ्गीकार, ज्ञान, प्रतिज्ञा, नियम आचार संकेत ।

संवीत, त्रि. रुद्ध, आवृत, आच्छादित । रुका हुआ, ढांपा हुआ ।

संवीक्षण, न. अन्वेक्षण, । तलाश, खोज ।

संवेग, पु. भयादिजनित त्वरा, सम्यक् वेग । तेज़ी ।

संवेद, पु. अनुभव, प्रतीति, ज्ञान, । इल्म ।

संवेश, पु. निद्रा, भृति, वेतन; नींद, हरामत, मज़दूरी ।

संव्यान, न. उत्तरीय वस्त्र, । दुपट्टा ।

संय, पु. कङ्काल अस्थि; हाड ।

संयत, त्रि. बद्ध, कृतसंयम । बांधा हुआ, नम्र ।

संयत्, स्त्री. पु. युद्ध । जंग, लड़ाई ।

संयद्वर, पु. नृप, पादशाह ।

संयन्तृ, पु. नियन्ता; रोकनेवाला ।

संयम, पु. व्रतादिपूर्वदिनकर्तव्याचारनियम ।

संयमक, पु. नियन्ता, संयम विशिष्ट । रोकनेवाला संयमवाला । [बांधना, रोकना ।

संयमन, न. बंधन, दमन, (स्त्री) (नी) यमपुरी ।

संयमित, त्रि. बद्ध, निगृहीत । कैद, रुका हुआ ।

संयमिन्, पु. मुनि, निगृहीतेन्द्रिय ।

संयाव, पु. पिष्टक वि०, । मिठाई, पूड़ा, वड़ा ।
संयु(त)क्त, त्रि. संलग्न । मुरक्कव, मिला हुआ ।
संयुग, पु. समर । जंग ।
संयोग, पु. मिलन; मेल ।
संयोगिन्, त्रि. संयोगविशिष्ट; मिला हुआ ।
संरम्भ, पु. क्रोध, उत्साह । गुस्सा, दलेरी ।
संरंभिन्, त्रि. परिश्रमी । हिम्मती ।
संराव, पु. शब्द । आवाज़ ।
संरुद्ध, त्रि. निरुद्ध, रुकाहुआ । कैद ।
संरूढ, त्रि. अङ्कुरित, ज्ञात, प्रवृद्ध ।
संरोध, पु. रोकना । रोक ।
संलय, पु निद्रा, प्रलय । नींद ।
संलग्न, त्रि. संगत; लगा हुआ ।
संलाप, पु. परस्परभाषण । गुफ्तगू । [ना दिखावे ।
संशप्तक, पु. सेनाविशेष; जो कभी दुश्मनको पीठ
संशय, पु. सन्देह । शक । शुभा ।
संशय-स्थ, त्रि. संदेहयुक्त । शक़ी ।
संशयान / **संशयालु** / **संशयिन्** } त्रि. संदेही । शक़ी । संशयालु, संशयित आदि भी इसीके वाचक है ।
संशरण, न. रणारम्भ, । जंग का शुरु ।
संशुद्धि, स्त्री. सम्यक् शोधन । सफ़ाई, सेहत ।
संशोधक, त्रि. सोधनेवाला । मसेह ।
संशोधन, न. परिष्करण । सहीकरना ।
संशोधित, त्रि. सही किया हुआ ।
संशयान, त्रि. शक किया हुआ । [मिलाप ।
संश्र(श्रा)व, पु. अंगीकार, संयोग । इकरार,
संश्रय, पु. आश्रय, उपाय, गति, कारण । पनाह, तजवीज, रफ़्तार ।
संश्रित, त्रि. शरणापन्न । पनाहगीर ।
संश्रुत, अंगीकृत, संयुक्त । इकरार किया हुआ, मिला हुआ ।
संश्लिष्ट, त्रि. मिलित, संयुक्त, संवद्ध; मिला हुआ ।
संश्लेष, न. आलिङ्गन, मेल । बग़लगीरी ।
संसक्त, त्रि. संलग्न, युक्त, (स्त्री) (क्ति) संयोग, अव्यवधान । जुड़ा हुआ, लगा हुआ, मेल, निहायत नज़दीक ।
संसद्, स्त्री. सभा । मजलस ।
संसरण, न. संसार, गमन, युद्धारंभ, सैन्य गमन, संगति, प्रधानपथ । दुनया, रफ्तार, जंगका शुरु, वेरोक फौजकी रफ्तार, वड़ी सड़क ।
संसर्ग, पु. संबंध, सहवास, । रिश्तह, मेल ।
संसर्गिन्, त्रि. साथी, संगी मिलापी ।
संसर्प्प, पु. खूब तरहकी चाल, सांप आदि की भांति, चाल ।
संसर्पिन्, त्रि. सर्कनेवाला, जगत् । दुनिया दार ।
संसारिन्, पु. संसाराश्रमी । दुनियादार ।
संसिद्ध, त्रि. स्वभाव-सिद्ध, सम्यक्-सिद्ध । कुदरती, खूब तैयार, (स्त्री) (द्धि) कुदरती हालत ।
संसृति, संसार, प्रवाह, संगमन । दुनिया, धार ।
संसृष्ट, त्रि. संसर्गान्वित, सहवासी, (न) संबद्ध, मिलाहुआ, पड़ौसी । [वर्ती ।
संसृष्टिन्, त्रि. विभागानान्तर मिलित एकान्त-
संस्कर्त्तृ, त्रि. पाचक, सुधारक ।
संस्कार, पु. सुधारना, मांजना, सजाना, चमकाना, मरम्मत, मंत्रोंसे सिंचना, लियाकत, गर्भाधान आदि दश द्विजातिकी कर्तव्य रीतियें, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडा, उपनयन, विवाह । मनोवृत्तिगुणवि०, वेग, भावना, स्थितिस्थापक । विवाह आदि दशविध धर्म, मानस ।
संस्कृत, न. पवित्रभाषा, देववाणी, (त्रि) शोधित, परिष्कृत । सही, सफ़ा ।
संस्क्रया, स्त्री. संस्कार, शवदाह आदि क्रिया ।
संस्तव, पु. परिचय, सम्यक् स्तुति । तअरीफ़ ।
संस्तर, पु. शय्या, यज्ञ, पल्लवादिरचित शय्या । विस्तरा, फूलपात वग़ैरह का विस्तरा । [हुआ ।
संस्तुत, त्रि. सम्यक् स्तवविशेष, तअरीफ़ किया
संस्तु(स्ता)व, पु. परिचय ।
संस्थ, त्रि. अवस्थित, मृत, (स्त्री) (स्था) न्याय यथास्थिति, । ठहरा हुआ, मरा हुआ । राह रास्तीपर रहना ।
संस्थान, पु. चतुष्पथ, आकृति, उपाय, मृत्यु । चौरास्तह, शकल, तजवीज़, मौत ।
संस्थापक, पु. स्थिति स्थापक, स्थितिकारयिता । ठहरनेवाला ।
संस्थापन, न. स्थिरीकरण; ठहरना ।
संस्थापित, त्रि. कृतसंस्थापन; ठहराया हुआ ।

संस्थित, त्रि. मृत, सम्यक् स्थित (स्त्री) (ति) मृत्यु, गृह संस्थान। मरा हुआ, ठहरा हुआ। मौत।
संस्पर्श, पु. सम्यक्स्पर्श; छूय।
संस्पृष्ट, त्रि. संलग्न; साथ लगा हुआ, छुआ हुआ।
संस्फाल, पु. मेंढा।
संस्फुट, त्रि. विकसित, व्यक्त; खिला हुआ। ज़ाहिर।
संस्फोट, त्रि. युद्ध। जंग।
संस्मरण, न. पूर्वानुभूतस्य ज्ञान। खयाल। याद।
संस्मृति, स्त्री. स्मरण। याद्दाश्त।
संस्रव, पु. मिश्रण, संसर्ग; मिलाप।
संहत, त्रि. मिलित, दृढ, सम्यक् हत, (स्त्री) (ति) समूह, संघ। मिला हुआ, मज़बूत, तबाह, मजमा, ढेर। [कतल।
संहनन, न. शरीर, घात, वध। जिसम, मजमह
संहर्तृ, पु. घातक। कातिल। [हसद।
संहर्ष, पु. प्रमोद, आल्हाद, स्पर्धा, वायु। खुशी,
संहार, पु. विनाश, वध, प्रलय, नरकवि०। तबाही, कतल, कयामत।
संहारक, त्रि. वधकारक। कातिल,।
संहारण, न. विनाशकरण; मारडालना। [तिल।
संहारिन्, त्रि. विनाशक, मारडालनेवाला। का-
संहित, त्रि. मिलित, युक्त, सञ्चित, (स्त्री) (ता), मन्वादि मुनिप्रणीत धर्मशास्त्र। मिला हुआ, इकट्ठा किया हुआ। [बुलाना।
संहूति, स्त्री. बहुकर्तृक एकवार आव्हान।
संहृत, त्रि. संग्रहीत, सञ्चित (स्त्री) (ति) नाश, प्रलय। इकट्ठा किया हुआ, जमा किया हुआ, कतल, कयामत।
संहृष्ट, त्रि. सम्यक् प्रसन्न; खुश।
संह्लाद, पु. शब्दविशेष।
संह्लादिन्, त्रि. गर्जता हुआ।
स-कर्मक, त्रि. कर्मयुक्त, पु. फेल मुत अद्दी।
सकल, त्रि. समुदाय; सारा (त्रि) कलायुत।
सकाम, त्रि. कामनाविशिष्ट। कामयाब।
सकाल, त्रि. प्रातःकाल। सुबह।
सकाश, पु. समीप, (त्रि) काशयुक्त। नज़दीक रौशन। [एकमछली।
सकुल(ली), (त्रि) पु. शब्दकलिका, मत्स्यवि०,
सकुल्य, त्रि. सगोत्र। जातभाई।
सकृत्, व्य. एकवार, (पु.) विष्ठा।
सकृत्प्रज, पु. काक, (त्रि.) एक मात्र सन्तति। कौवा, जिसकी एकही औलाद हो।
सकृत्फला, स्त्री. कदलीवृक्ष; केलेका पेड़।
सकृद्गर्भ, पु. खचर, (स्त्री) (र्भा) एकवार मात्र गर्भिणी। खचर, एकहि वेर जिसको हमल हुआ हो।
सक्त, त्रि. निरन्तर, आसक्त, मनोयोगि, संलग्न। (क्ति) संलग्नता। लगातार, आशक, एकतरफ़ लगा हुआ, जुड़ा हुआ।
सक्तु(क), पु. न. भ्रष्टयवचूर्ण; सतू।
सक्थि, न. ऊरु, जांघ, हड्डी, गाडीका जोड़।
सखि, पु. (खा) सौहार्दयुक्त, सहाय (स्त्री) (खी) वयस्या,। दोस्त, मददगार, सहेली।
सख्य, न. मित्रता,। दोस्ती।
सगन्ध, त्रि. गंधयुक्त। खुशबूदार।
सगर, पु. अर्हद्विशेष, सूर्यवंशीय राजाविशेष। त्रि. विषयुक्त,। ज़हरी।
सगर्भ(र्भ्य), पु. सहोदर (स्त्री) (र्भा) गर्भवती, सहोदरा। सगाभाई, हामिलह, सगी बहिन।
स-गुण, त्रि. गुणवान्। मौसूफ़।
स-गोत्र, त्रि. एकवंशीय, ज्ञाति। जातभाई।
सग्धि, स्त्री. सहभोजन; मिलकर खाना,
संकट, त्रि. सम्बाध, निबिड, (न) दुःख (स्त्री) (टा) देवीविशेष,। मुसीबत, तंग, भीड, तकलीफ़, झाड़ की धूड़, विरुद्ध पदार्थोका एकत्र मेल।
सं-कथा, स्त्री. परस्परालाप। गुफ्तगू।
सङ्कर्षण, न. आकर्षण, (पु.) बलदेव। हलचलाना, कोश, बलराम।
सङ्कल, पु. सङ्कलन; जोड़।
संकलित, त्रि. योजित, एकत्रित, (न.) संकलन; जोड़ा हुआ, एकट्ठाकिया हुआ, जोड़।
संकल्प, पु. मानस-कर्म, मनोरथ। दिल का काम, ख्वाहिश, इरादह।
संकल्पा-त्मन्, पु. कामदेव।
सङ्कार, पु. धूड़, खाक (स्त्री) (री) नई वहु।
सङ्काश, त्रि. सदृश, अन्तिक। नज़दीक।
सङ्कीर्ण, त्रि. जनादिद्वारा निरवकाश, संकट, अपवित्र, सङ्कुचित (पु) जातिविशेष, मिश्रित राग।

आदमियोंसे भरा हुआ, भीड़, नापाक, मुकुड़ा हुआ, दोगला, मिलेहुएरंग।

संकीर्णता, स्त्री. निरवकाशता। तंगी।

संकुचित, त्रि. मुकुचा हुआ; सुकड़ा हुआ।

संकट, न. मृत्यु; मौत, मुख्तसर।

संकल, न. युद्ध, जनता (त्रि) जनादिद्वारा निरवकाश, मिश्रित। जंग, भीड़, तंग।

सङ्केत, पु, स्वाभिप्राय प्रकाशक चेष्टा, नियम। कायदा, नशान, इशारह।

सङ्कोच, न कुङ्कुम (पु.) मत्स्यविशेष, संक्षेप। केसर, एक मछली, इख्तसार।

संकोचन, न. संक्षेप, सामान्य विषयोंका विशेष करना, मुद्रण, बंधन, जड़ीभाव, मुकोड़ना।

संकोचनी, स्त्री. लज्जालुलता। लाजवन्ती।

संक्रन्दन, पु. इन्द्र, (न) रोदन, । रोना।

संक्र(क्रा)म, पु. न. दुर्गसञ्चर, (पु.) क्रमण, व्याप्ति, प्रवेश, सेतु, सोपान।

संक्र(क्रा)मण, न. गमन, सूर्य्यस्य राश्यंतर्गमन। रफ़तार, सूर्यका एकराशिसे दूसरी राशिमें जाना।

सङ्क्रान्त, त्रि० गत, संचारित, प्राप्त, व्याप्त। स्त्री. (न्ति) महिने का पहिला दिन।

सङ्क्लेद, पु. आर्द्रीभाव। गीलापन।

सङ्क्षय, पु. नाश, प्रलय। तवाही।

सङ्क्षिप्त, त्रि. मुख्तसर।

सङ्क्षेप, पु. अल्पीकरण। इख्तसार।

संक्षोभ, पु. चांचल्य, घर्षण, अतिक्षोभ।

सङ्ख्य, न. युद्ध, (त्रि.) संख्येय, (स्त्री) (ख्या,) बुद्धि, विचारणा, एकत्वादि, एकंदश शतं चैव सहस्रमयुतं तथा लक्षंच नियुतं चैव कोटिरर्बुद मेवच वन्दं खर्वोनिखर्वश्च, शंखः पद्मश्च सागरः अंत्यं मध्यं परार्द्धं च। जंग, गिननेके लायक, अकल, सोच, शुमार,।

संख्यात, त्रि. गणित। गिना हुआ।

संख्यान, न. गणना; गिनती। शुमार।

संख्यापन, न. स्थिरीकरण। क़ायम करना।

संख्या-वत्, त्रि. संख्यावान् (पु.) पंडित।

संख्येय, त्रि. संख्यायोग्य। गिनने के लायक।

संग, पु. संसर्ग; मेल।

संगत, न. सौहार्द, मिलन (स्त्री) (ति) ज्ञान (त्रि.) मिलित। दोस्ती, मेल, मिलावट, इल्म, मिला हुआ।

संगम, पु. न. मिलन, सहवास, संयोग, स्त्री पुरुष सङ्गति, नदीद्वयसंयोग। मेल, सोहवत, दोदरयाओंकामिलना।

सङ्गर, न शमीवृक्षफल, (पु.) युद्ध, आपत्, प्रतिज्ञा, सम्पत्, अङ्गीकार, सम्वित्, विष, नियम, प्रश्न। शमी का फल, जंग, मुसीबत, हश्मत, वाइदा, इल्म, ज़हर, कायदा, सवाल।

सङ्गिन्, त्रि. सहचर, आसक्त। शहवती, साथी,

सङ्गीत, न. तौर्य-त्रिक, तौर्यत्रिकशास्त्र, (स्त्री) (ति) नाच गीत और वाजा इनका, आलाप।

सङ्गीर्ण, त्रि. अङ्गीकृत, प्रतिज्ञात, वाअदा कियाहुआ, मन।

सङ्गुप्त, त्रि. लुक्कायित. (पु.) बुद्धिविशेष। गुम किया हुआ, लुकायाहुआ। [हुआ, वुलाया हुआ।

सङ्गृहीत, त्रि. संकलित, आहूत। जमा किया

सङ्गोपन, न. सम्यग्गोपन। अच्छीतरहसे लुकाना।

सङ्ग्र (ग्रा)ह, सङ्ग्रहण, पु. समादृत, (न.) एकत्री करण, उत्तंग, ग्रहण, संक्षेप, मुट्ठी, स्वीकार। इकठ्ठा करना, वड़ा ऊंचा, हासिल करना, मुख्तसर, मुट्ठी, मनजूर, ऊंचाई।

सङ्ग्रहणी, स्त्री. रोगविशेष। इसहाल की बीमारी।

संग्राम, पु. शब्द। जंग।

संग्राहक, संग्राहिन्, त्रि. जमा करनेवाला, जंग करनेवाला।

संग्राह, पु. फलक मुष्टि। ढालकी मुट्ठी।

सङ्घ, पु. समूह। जमह, शुमार, ढेर।

सङ्घट्ट(न), न. मेलन, सङ्घर्ष, परस्पर घर्षण (स्त्री) (ट्टा) लता, वेल। मिलाना, रगड़ना, आपसमें घिसना, रगड़।

सङ्घट्टित, त्रि. मिलित; मिला हुआ, घिसाया हुआ।

सङ्घ-तल, पु. मिलित प्रतलद्वय; जुड़ेहुए हाथ।

सङ्घ-पुष्पी, स्त्री. धातकी। एक खास बूटी।

सङ्घशस्, व्य. सब एकट्ठे होकर।

सङ्घाटिका, स्त्री. युग्म, कुट्टनी, जलकण्टक घ्राण। जोड़ा, छिनाल, संघाड़ा, बू,

सङ्घात, पु. समूह, नरकविशेष, हनन, कफ्म। रगड़, मजमा, ख़ास दोज़ख़, कतल, वलग़म, गाढ़ा।

सङ्घुष्ट, त्रि. सम्यग्घोषित; घोषा हुआ।
सचर, पु. दोस्त, साथी, वज़ीर।
स-चराचर, त्रि. सर्वसाधारण। आम, सब।
सचिव, पु. मन्त्री, सहाय, कृष्ण धत्तूर। वज़ीर, मददगार, स्याह धतूरा।
स-चेतन, त्रि. प्राणी। इन्सान।
स-चेष्ट, पु. आम्र, (त्रि.) चेष्टायुक्त; आम, चालाक चाहकेत।
सच्चरित, त्रि. उत्तम। नेक चलन, न. उत्तम त्व- दियानतदार। नेक चलनी।
सच्चारा, स्त्री. हरिद्रा; हल्दी।
सच्चित्, न. ब्रह्म।
सच्चिदानन्द, न. नित्यज्ञान और सुखस्वरूप ब्रह्म।
स-जम्बाल, त्रि. पङ्किल; कीचड़वाला।
स-जाति, त्रि. एक जातिका। हमकौम।
स-जातीय, त्रि. एक जातीय। हमकौम।
स-जुपस्, त्रि. एकत्र सेवाकारी, सहाय।
सज्ज, त्रि. सन्नद्ध, विस्तृत, निभृत, भूषित, प्रस्तुत (स्त्री) (ज्जा) वेश, सन्नाह। तय्यार, वसीह, तनहाई सजा हुआ, ज़ेवाइश, ज़िरह।
सज्जन, (न.) रक्षणार्थ-सैन्यस्थान, घाटी, सज्जा, (पु) सत्कुलोद्भव, (स्त्री) (ना) नायकारोहणार्थ हस्ती सज्जीकरण। पहरे की जगह, नायकाकी सवारी के लिये हाथी को सजाना।
सज्जमान, त्रि. भूषित, प्रस्तुत। सजा हुआ, तै- य्यार किया हुआ।
सज्जित, त्रि. भूषित, वर्म्मित। सजाहुआ, तैयार किया हुआ, मुसल्लह। [किया हुआ।
सज्जी-कृत, त्रि. भूषित। सजाया हुआ, तैयार
सञ्च, पु. पुस्तक लेखनार्थ पत्र-समूह। कापी, सैंची।
सञ्चत्, पु. प्रतारक। फ़रेबी।
सञ्चय, पु. समूह। मजमा, इकट्ठ।
सञ्चयन, न. संचय; इकट्ठा करना। जमा करना।
सञ्चयनीय, त्रि. संग्राह्य। इकट्ठा करनेके लायक।
सञ्चयिन्, त्रि. सञ्चय-विशिष्ट। जमावाला।
सञ्चर, पु. सेतु,। पुल, बंद।
सञ्चरण, न. गमन, प्रचलन। रफ़्तार।
सञ्चरित, त्रि. प्रचलित, गत।
सञ्चरिष्णु, त्रि. संचरणशील। फिरनेवाला।
सञ्चाय्य, पु. यज्ञ-विशेष।
सञ्चार, पु. दुर्ग सञ्चर, गमन, ग्रहाणां राश्यन्तर्ग- मनं, (न.) गति, वृद्धि। रफ्तार, सयारे का एक बुर्ज से दुसरे मे जाना। [फ़लिस।
सञ्चार-जीविन्, त्रि. शरणापन्न। पनाहगीर, मु-
सञ्चारिका, स्त्री. दूती, कुट्टनी, छिनाल।
सञ्चारिणी, स्त्री. हंसपदी।
सञ्चारित, त्रि. इतस्ततश्चालित। इधर उधर च- लाया हुआ, उचकाया हुआ।
सञ्चारिन्, पु. धूप, वायु, (त्रि) सञ्चरणशील। हवा, विचरने वाला। मुतहर्रक।
सञ्चित, त्रि. संग्रहीत, एकत्रीकृत। जमा किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ।
सञ्चेय, त्रि. सञ्चययोग्य। जमा करनेके लायक।
सज, पु. ब्रह्मा, शिव (स्त्री) (जा) छागी। बकरी।
सजन, न. बन्धन, संघटन।
सजवन, न. परस्पराभि मुखगृहचतुष्टय, चौक।
सजात, त्रि. सहजात। पैदा किया हुआ।
सजीवन, न. प्राणधारण (स्त्री) (नी) प्राणधारिणी। ज़िन्दह रहना, एक ख़ास बूटी।
संज्ञ, न. पीतकाष्ट, (त्रि) लग्नजानुक (स्त्री) (ज्ञा) चेतना, नाम, सङ्केत। ज़र्द लकड़ी, जिसके घुटने जुड़े हुए हैं, होशमंदी, इस्म, इशारह।
संज्ञु, त्रि. संहत जानुक। जिस्के घुटने जुडे हों।
सट, न. जटा, (त्रि) केशर, (स्त्री) (टा) शेर की गर्दन के बाल।
सटाङ्क, पु. सिंह, केशरी। शेर।
सण्ड, पु. वृष; सांड, हीजड़ा।
सण्डिश, पु. सन्दंश। संडासी।
सण्डीन, न. पक्षिगतिविशेष। परिंदोंका उड़ना।
सत्, त्रि. सत्य, साधु, विद्यमान, प्रशस्त, अभ्य- र्हित, उत्तम, शोभन, गुण, नित्य, मान्य, (न.) ब्रह्म। अबरोंका खास छंद, व्य. आदर (स्त्री) (ती) साध्वी स्त्री।
सतत, न. निरन्तर-क्रिया, (त्रि.) निरन्तरयुक्त। लगातार, हमेशह का।
स-तीर्थ(र्थ्य), पु. परस्पर एक गुरुकशिष्य; गुरु- भाई, एक मुर्शद के मुरीद।
स-तृप, त्रि. (ट्) तृष्णायुक्त; प्यासा, भूखा।

आदमियोंसे भरा हुआ, भीड़, नापाक, सुकुड़ा हुआ, दोगला, मिलेहुएरंग ।

संकीर्णता, स्त्री. निरवकाशता । तंगी ।

संकुचित, त्रि. सुकुचा हुआ; सुकड़ा हुआ ।

संकट, न. मृत्यु; मौत, मुख्तसर ।

संकल, न. युद्ध, जनता (त्रि) जनादिद्वारा निरवकाश, मिश्रित । जंग, भीड़, तंग ।

सङ्केत, पु. स्वाभिप्राय प्रकाशक चेष्टा, नियम । कायदा, नशान, इशारह ।

सङ्कोच, न कुङ्कुम (पु.) मत्स्यविशेष, संक्षेप । केसर, एक मछली, इख्तसार ।

संकोचन, न. संक्षेप, सामान्य विषयोंका विशेष करना, मुद्रण, बंधन, जड़ीभाव, सुकोड़ना ।

संकोचनी, स्त्री. लज्जालुलता । लाजवन्ती ।

संक्रन्दन, पु. इन्द्र, (न) रोदन, । रोना ।

संक्र(क्रा)म, पु. न. दुर्गसञ्चर, (पु.) क्रमण, व्याप्ति, प्रवेश, सेतु, सोपान ।

संक्र(क्रा)मण, न. गमन, सूर्य्यस्य राश्यंतर्गमन । रफ़तार, सूर्यका एकराशिसे दूसरी राशिमें जाना।

सङ्क्रान्त, त्रि० गत, संचारित, प्राप्त, व्याप्त । स्त्री. (न्ति) महिने का पहिला दिन ।

सङ्क्लेद, पु. आर्द्रभाव । गीलापन ।

सङ्क्षय, पु. नाश, प्रलय । तबाही ।

संक्षिप्त, त्रि. मुख्तसर ।

संक्षेप, पु. अल्पीकरण । इख्तसार ।

संक्षोभ, पु. चांचल्य, घर्षण, अतिक्षोभ ।

सङ्ख्य, न. युद्ध, (त्रि.) संख्येय, (स्त्री) (ख्या,) बुद्धि, विचारणा, एकत्वादि, एकंदश शतं चैव सहस्रमयुतं तथा लक्षंच नियुतं चैव कोटिरर्बुद मेवच वृन्दं खर्वोनिखर्वश्च, शंखः पद्मश्च सागरः अंत्यं मध्यं परार्द्धं च । जंग, गिननेके लायक, अकल, सोच, शुमार, ।

संख्यात, त्रि. गणित । गिना हुआ ।

संख्यान, न. गणना; गिनती । शुमार ।

संस्थापन, न. स्थिरीकरण । क़ायम करना ।

संख्या-वत्, त्रि. संख्यावान् (पु.) पंडित ।

संख्येय, त्रि. संख्यायोग्य । गिनने के लायक ।

संग, पु. संसर्ग; मेल ।

संगत, न. सौहार्द, मिलन (स्त्री) (ति) ज्ञान (त्रि.) मिलित । दोस्ती, मेल, मिलावट, इलम, मिला हुआ ।

संगम, पु. न. मिलन, सहवास, संयोग, स्त्री पुरुष सङ्गति, नदीद्वयसंयोग । मेल, सोहबत, दोदरयाओंकामिमलना ।

सङ्गर, न शमीवृक्षफल, (पु.) युद्ध, आपत्, प्रतिज्ञा, सम्पत्, अङ्गीकार, सम्वित्, विष, नियम, प्रश्न । शमी का फल, जंग, मुसीबत, हशमत, वाहदा, इलम, ज़हर, कायदा, सवाल ।

सङ्गिन्, त्रि. सहचर, आसक्त । शहवती, साथी,

सङ्गीत, न. तौर्य-त्रिक, तौर्यत्रिकशास्त्र, (स्त्री) (ति) नाच गीत और बाजा इनका, आलाप ।

सङ्गीर्ण, त्रि. अङ्गीकृत, प्रतिज्ञात, वाअदा कियाहुआ, मन ।

सङ्गुप्त, त्रि. लुक्कायित. (पु.) बुद्धिविशेष । गुम किया हुआ, लुकायाहुआ । [हुआ, बुलाया हुआ ।

सङ्गृहीत, त्रि. संकलित, आहूत । जमा किया

सङ्गोपन, न. सम्यग्गोपन । अच्छीतरहसे लुकाना।

सङ्ग्र (ग्रा)ह, } पु. समादृत, (न.) एकत्री करण, उत्तंग, ग्रहण, संक्षेप, मुष्टी, स्वीकार।
सङ्ग्रहण, }

इकठा करना, बड़ा ऊंचा, हासिल करना, मुख्तसर, मुष्टी, मनजूर, ऊंचाई ।

सङ्ग्रहणी, स्त्री. रोगविशेष । इसहाल की बीमारी ।

संग्राम, पु. शब्द । जंग । [वाला ।

संग्राहक, } त्रि. जमा करनेवाला, जंग करने-
संग्राहिन्, }

संग्राह, पु. फलक मुष्टि । ढालकी मुट्ठी ।

सङ्घ, पु. समूह । जमह, शुमार, ढेर ।

सङ्घट्ट(न), न. मेलन, सङ्घर्ष, परस्पर घर्षण (स्त्री) (ट्टा) लता, वेल । मिलाना, रगड़ना, आपसमे घिसना, रगड़।

सङ्घट्टित, त्रि. मिलित; मिला हुआ, घिसाया हुआ।

सङ्घ-तल, पु. मिलित प्रतलद्वय; जुड़ेहुए हाथ ।

सङ्घ-पुष्पी, स्त्री. धातकी । एक खास बूटी ।

सङ्घशस्, व्य. सब एकठे होकर ।

सङ्घाटिका, स्त्री. युग्म, कुट्टनी, जलकण्टक घ्राण । जोड़ा, छिनाल, संघाड़ा, बू,

सङ्घात, पु. समूह, नरकविशेष, हनन, कफ़न्न । रगड़, मजमा, ख़ास दोज़ख़, कतल, बलग़म, गाढ़ा ।

सद्यो-जात, पु. वत्स, शिव, (त्रि.) तत्क्षणोत्पन्न । बछड़ा, नाम "शिवजी" का, अभी पैदा हुआ ।
सद्वृत्त, न. साधुस्वभाव, सच्चरित्र (त्रि.) साधु (त्ति) सत् टीका । नेकखसलत, नेक, ग्रंथकी उमदह टीका ।
स-धन, त्रि. धनवान । दौलतमंद ।
स-धवा, स्त्री. जीवत्पतिका; सुहागन ।
स-धर्मिन्, त्रि. एक धर्मी, सदृश (स्त्री) (णी) पाणि गृहीता भार्या । मुवाफ़िक, व्याहता स्त्री ।
सध्र्यच्(ञ्च्), संगी, सहाय, (स्त्री) (ध्रीची) पत्नी सखी; सहेली ।
सनक, पु. ब्रह्मा का पुत्र, विष्णु का पार्षद ।
सनत्, पु. ब्रह्मा, (व्य) सर्वदा । हमेशह ।
सनत्कुमार, पु. वैधात्र, ब्रह्मा का पुत्र ।
सनन्द, पु. मुनिविशेष ।
सनस्, न. विष्ठा; गूंह ।
सना, व्य. नित्य । हमेशह से ।
सना-तन, पु. विष्णु, शिव, ब्रह्मा, दिव्य मनुष्य, ब्रह्मा पुत्र, (त्रि) नित्य, (स्त्री) (नी) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती ।
सनात्, व्य. नित्य । हमेशह से ।
स-नाथ, त्रि. नाथवान् । मालिक वाला ।
सनि, सनी, पु. पूजा, दान (पु.स्त्री) (नी) अध्येषणा, क्वचिदर्थे सत्कारपूर्वक गुरुनियोजन, दिशा । परस्तिश, खैरात, ।
सन्तत, न. सतत, (त्रि.) तद्युक्त । लगातार, हमेशह का (स्त्री) (ति), गोत्र, वंश, पङ्क्ति, विस्तार ।
सन्तप्त, त्रि. सन्तापवान् । जलाहुआ ।
सन्तरण, न. पार होना, तैरना ।
सन्तमस, न. गाढ़ अंधेरा ।
सन्तान, पु. कल्प-वृक्ष, वंश, विस्तार, अपत्य, (न) प्रबन्ध, प्रवाह । खास एक बहिश्त का दरख़्त, खान्दान, फैलाव, औलाद, दास्तान, दर्या की धार ।
सन्ताप, पु. अग्निज-ताप, मनस्ताप । गरमी, जोश ।
सन्तापन, पु. कामदेव-बाणविशेष, (त्रि) जलाने वाला ।
सन्तापित, त्रि. उष्ण । गरम किया हुआ ।
सन्तुष्ट, त्रि. सन्तोषयुक्त, तृप्त (स्त्री) (ष्टि) आल्हाद । खुश, सेअ़र, खुशी ।
सन्तोष, पु. तृप्ति, आल्हाद । खुशी, सबर ।
सन्तोषिन्, त्रि. हर्षान्वित । खुश, साबिर ।
सन्त्रस्त, त्रि. भीत; डराहुआ, खौफ़ज़दह ।
सन्त्रास, पु. भय, शङ्का । खौफ़, शक ।
सन्दंश(क), पु. कङ्कमुख; संडासी ।
सन्दर्भ, पु. ग्रन्थ, प्रबन्ध, सङ्ग्रह, सूक्ष्मतात्पर्य्य । गांठ, मजमून, मजमह, असलीखुलासह ।
सन्दर्शन, न. अवलोकन, ज्ञान । दीदार, इल्म ।
सन्दष्ट, त्रि. संलग्न । लगा हुआ, काटा हुआ ।
सन्दान, न. सम्यग्दान, (पु.) हस्ती ऊर्ध्वभाग ।
सन्दानित, त्रि. बंधा हुआ ।
सन्दाव, पु. पलायन; भागना ।
सन्दानितक, न. तीनश्लोकोंका एकान्वयी ।
सन्दाह, पु. मुंह ओंठ और तालुका जलना ।
सन्दिग्ध, त्रि. सन्देहयुक्त । मशकूक ।
सन्दिष्ट, न. वार्ता (त्रि.) कथित । खबर, बात, कहा हुआ ।
सप्तक, त्रि. संख्या, (स्त्री) (की) स्त्रियोंकी तड़ागी ।
सप्त-चत्वारिंशत्, स्त्री. (त्रि.) ४७ लीस, ४७ सवां ।
सप्त-जिव्ह, पु. अग्नि; आग (त्रि.) सात जिसकी जिव्हाहों । १ काली, २ कराली, ३ मनोजवा, ४ सुलोहिता, ५ धूम्रवर्णा, ६ स्फुलिंगिनी, ७ विश्वरूपिणी, अग्निकी यह सात ज्वाला । एकमतमें आवह, प्रवाह, उद्वह, संवह, निवाह, परिवाह, यह, ७ वायुकी जिव्हा ।
सप्त-ज्वाल, पु. अग्नि, आग । आतिश ।
सप्त-तन्तु, पु. यज्ञ । जग ।
सप्तति, स्त्री. ७० संख्या (त्रि.) ७० वां ।
सप्तति-तम, त्रि. ७० सत्तरवां, ।
सप्त-त्रिंशत्, संख्याविशेष, ३७ स ।
सप्त-दशन्, त्रि. सप्तदशसंख्यापूरण १७ सताहरवां ।
सप्त-दीधिति, पु. अग्नि; आग ।
सप्त-द्वीप-पति, पु. अग्नीध्र; आदि सात राजा ।
सप्त-द्वीपा, स्त्री. पृथिवी । जमीन ।
सप्तधा, व्य. साततरह से, सात बार ।
सप्तन्, (त्रि.) (बहु) सात ।
सप्तम, त्रि. सप्तपूरण, (स्त्री) (मी) तिथिविशेष । सातवां, सप्तमी तिथि ।
सप्तर्षि, पु. सप्तसंख्याक ऋषि । १ मरीचि, २ अत्रि, ३ अङ्गिरा, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु ७ वसिष्ठ ।

स-तृष्ण, त्रि. तेजस्वी, धृत्तवान्। लालची।

सत्कार **सत्कीर्ति** **सत्क्रिया** } पु. पूजा, शवदाहादि क्रिया। इज्जत, इज़त, स्त्री. मुर्दे का जलाना वग़ैरह। [हुआ।

सत्कृत, त्रि. पूजित। इज़त किया हुआ, पूजा

सत्ता, स्त्री. जातिविशेष, विद्यमानता, गुण और कर्मनिष्ठजाति, साधुता, उत्पत्ति। मौजूदगी, नेकी, पैदायश, खसलत।

सत्र, न. यज्ञ, आच्छादन, अरण्य, कैतव, धन, गृह, दान, सरोवर, यागविशेष, सहस्रवत्सर साध्य-याग, (स्त्री) (त्रा) सहार्थ। ढकना, जंगल, फ़रेब, दौलत, घर, खैरात, तालाव।

सत्रा-जित्, पु. राजाविशेष; सत्यभामाका बाप, कृष्णजीका सुसरा। [हाथी, फ़तहयाब।

सत्रि, पु. मेघ, हस्ती, (त्रि.) जयशील। बादल,

सत्रिन्, पु. गृहस्थ, यज्ञकारयिता। यज्ञ करनेवाला।

सत्व, न. प्रकृतिगुणविशेष, द्रव्य, प्राण, व्यवसाय, वल, स्वभाव, आत्मा, चित्त, रस, आयु, कुवेर, धन, साहस, उत्साह, धैर्य्यपदार्थ, जीवन, (पु. न.) जन्तु। ज़िन्दगी, पेशा, ज़ोर, आदत, रूह, दिल, अर्क, उमर, दौलतका देवता, दौलत, दलेरी, सञ्जीदह पन, जिनस, जानवर।

सत्पथ, पु. प्रशस्तपथ। नेक रास्तह।

सत्पशु, पु. यज्ञीयपशु; यज्ञ का पशु।

सत्पात्र, न. नेक मर्द। नेक चलन।

सत्पुत्र, पु. उत्तम सन्तान। नेक बेटा।

सत्प्रतिपक्ष, पु. न्यायमें हेत्वाभासविशेष।

सत्य, न. कृतयुग, प्रतिज्ञा, शपथ, अमिथ्या, यथार्थ, (त्रि.) सत्यवादी, (पु.) श्रीराम विष्णु, अश्वत्थ वृक्ष, ब्रह्मलोक, (स्त्री) (त्या) सीता, व्यास-माता, सरलता। पहिला युग, वादह, क़सम, हक़ीक़त, सच, ठीक, सांचा, पीपल का दरख़्त। [रार।

सत्यम्, व्य. स्वीकार; आर्द्राहीकार। वादह, इक-

सत्य-ङ्कार, पु. सत्यापना। बयाना देना।

सत्यता, स्त्री. यथार्थता; सचाई। हक़ीक़त।

सत्य-भामा, स्त्री. श्रीकृष्णपत्नीविशेष।

सत्य-युग, न. प्रथमयुग; पहिला युग।

सत्य-वचस्, मुनि (त्रि) सच्चा।

सत्य-वत्, पु. सावित्रीका पति एक राजा (स्त्री) (ती) व्यास-माता, नारद-पत्नी, (त्रि) सत्यविशिष्ट। व्यासजीकी मां, नारद की जोरू, सांचा।

सत्य-व्रत, पु. एक खास राजा, भीष्म (त्रि) सच्चा।

सत्य-वाच्, पु. (क्) ऋषि, काक, (त्रि) सत्यवादी। कौआ, सच्चा।

सत्य-वादिन्, त्रि. यथार्थवक्ता। सांचा। रास्तगो।

सत्य-सन्ध, पु. रामानुजभरत, जनमेजय, श्रीराम, (त्रि.) सत्य-प्रतिज्ञ (स्त्री) (न्धा) द्रौपदी। रामजीका छोटा भाई भरत, राजा जनमेजय, वादह वफ़ा। [ल्दबाज़।

सत्वर, न. शीघ्र, (त्रि.) द्रुतान्वित। जल्दी, ज-

सदन, न. गृह, जल; घर, पानी।

स-दय, त्रि. दयावान् (पु) शुभावहविधि।

सदस्, स्त्री. न. सभा। मजलिस।

सदस्य, पु. विधिदर्शी, सभ्य। यज्ञ की विधि दिखलाने वाला, मजलिस का।

सदा, व्य. सर्वदा। हमेशह।

सदा-गति, पु. वायु, सूर्य्य, निर्वाण (त्रि) सदा चलनेवाला। हवा, आफ़ताब, नजात, परमात्मा।

सदा-चार, पु. (त्रि.) नेक चकती। उत्तमाचार। नेक चलन।

सदा-तन, पु. विष्णु, (त्रि) नित्य। हमेशह का।

सदा-त्मन्, त्रि. सदन्तःकरण। नेक खयाल वाला।

सदा-दान, पु. ऐरावत, मत्तहस्ती, गणेश, (न) नित्यदान। [खुश।

सदा-नन्द, पु. शिव (त्रि.) सदाप्रसन्न। हमेशह

सदा-नीरा, स्त्री. करतोया नदी।

सदा-पुष्प, पु. नारिकेल वृक्ष, (त्रि) सर्वदा कुसुमयुक्त (स्त्री) (ष्पी) रक्तार्क वृक्ष। नारियल का दरखत, हमेशह फूला हुआ।

सदाशिव, पु. महादेव।

सदृश(श) **सदृक्ष** } त्रि. तुल्य, समान। म्वाफ़िक़, यकसां।

सदेश, त्रि. निकट देशान्वित। नज़दीक देशका।

सद्भाव, पु. स्थिति, साधुता, प्रणय। मौजूदगी, दोस्ती, नेकी, हलीमी।

सद्मन्, न. गृह, तोय। घर, पानी।

सद्यस्, व्य. सपदि। उसी वक्त।

सद्यस्क, त्रि. नूतन; नया।

सद्यो-जात, पु. वत्स, शिव, (त्रि.) तत्क्षणोत्पन्न। बछड़ा, नाम "शिवजी" का, अभी पैदा हुआ।
सद्वृत्त, न. साधुस्वभाव, सच्चरित्र (त्रि.) साधु (त्ति) सत् टीका। नेकखसलत, नेक, ग्रंथकी उमदह टीका।
स-धन, त्रि. धनवान। दौलतमंद।
स-धवा, स्त्री. जीवत्पतिका; सुहागन।
स-धर्मिन्, त्रि. एक धर्मी, सदृश (स्त्री) (णी) पाणि गृहीता भार्या। मुवाफ़िक, ब्याहता स्त्री।
सध्र्यच्(ञ्च), संगी, सहाय, (स्त्री) (ध्रीची) पत्नी सखी; सहेली।
सनक, पु. ब्रह्मा का पुत्र, विष्णु का पार्षद।
सनत्, पु. ब्रह्मा, (व्य) सर्वदा। हमेशह।
सनत्कुमार, पु. वैधात्र, ब्रह्मा का पुत्र।
सनन्द, पु. मुनिविशेष।
सनस्, न. विष्ठा; गूंह।
सना, व्य. नित्य। हमेशह से।
सना-तन, पु. विष्णु, शिव, ब्रह्मा, दिव्य मनुष्य, ब्रह्मा पुत्र, (त्रि) नित्य, (स्त्री) (नी) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती।
सनात्, व्य. नित्य। हमेशह से।
स-नाथ, त्रि. नाथवान्। मालिक वाला।
सनि, सनी, पु. पूजा, दान (पु.स्त्री) (नी) अध्येषणा, क्वचिदर्थे सत्कारपूर्वक गुरुनियोजन, दिशा। परस्तिश, ख़ैरात,।
सन्तत, न. सतत, (त्रि.) तद्युक्त। लगातार, हमेशह का (स्त्री) (ति), गोत्र, वंश, पङ्क्ति, विस्तार।
सन्तप्त, त्रि. सन्तापवान्। जलाहुआ।
सन्तरण, न. पार होना, तैरना।
सन्तमस, न. गाढ़ अंधेरा।
सन्तान, पु. कल्प–वृक्ष, वंश, विस्तार, अपत्य, (न) प्रबन्ध, प्रवाह। खास एक बहिश्त का दरख्त, खान्दान, फ़ैलाव, औलाद, दास्तान, दर्या की धार।
सन्ताप, पु. अग्निज–ताप, मनस्ताप। गरमी, जोश।
सन्तापन, पु. कामदेव-बाणविशेष, (त्रि) जलाने वाला।
सन्तापित, त्रि. उष्ण। गरम किया हुआ।
सन्तुष्ट, त्रि. सन्तोषयुक्त, तृप्त (स्त्री) (ष्टि) आल्हाद। खुश, सेअ़र, खुशी।
सन्तोष, पु. तृप्ति, आल्हाद। खुशी, सबर।
सन्तोषिन्, त्रि. हर्षान्वित। खुश, साबिर।
सन्त्रस्त, त्रि. भीत; डराहुआ, खौफ़ज़दह।
सन्त्रास, पु. भय, शङ्का। खौफ़, शक।
सन्दंश(क), पु. कङ्कमुख; संडासी।
सन्दर्भ, पु. ग्रन्थ, प्रबन्ध, सङ्ग्रह, सूक्ष्मतात्पर्य्य। गांठ, मजमून, मजमह, असलीखुलासह।
सन्दर्शन, न. अवलोकन, ज्ञान। दीदार, इल्म।
सन्दष्ट, त्रि. संलग्न। लगा हुआ, काटा हुआ।
सन्दान, न. सम्यग्दान, (पु.) हस्ती ऊर्ध्वभाग।
सन्दानित, त्रि. बंधा हुआ।
सन्दाव, पु. पलायन; भागना।
सन्दानितक, न. तीनश्लोकोंका एकान्वयी।
सन्दाह, पु. मुंह ओंठ और तालुका जलना।
सन्दिग्ध, त्रि. सन्देहयुक्त। मशकूक।
सन्दिष्ट, न. वार्ता (त्रि.) कथित। खबर, बात, कहा हुआ।
सप्तक, त्रि. संख्या, (स्त्री) (की) स्त्रियोंकी तड़ागी।
सप्त-चत्वारिंशत्, स्त्री. (त्रि.) ४७ सैंतालीस, ४७ सवां।
सप्त-जिव्ह, पु. अग्नि; आग (त्रि.) सात जिसकी जिव्हाहों। १ काली, २ कराली, ३ मनोजवा, ४ सुलोहिता, ५ धूम्रवर्णा, ६ स्फुलिंगिनी, ७ विश्वरूपिणी, अग्निकी यह सात ज्वाला। एकमतमें आवह, प्रवाह, उद्वह, संवह, निवाह, परिवाह, वह, ७ वायुकी जिव्हा।
सप्त-ज्वाल, पु. अग्नि, आग। आतिश।
सप्त-तन्तु, पु. यज्ञ। जग।
सप्तति, स्त्री. ७० संख्या (त्रि.) ७० वां।
सप्तति-तम, त्रि. ७० सत्तरवां,।
सप्त-त्रिंशत्, संख्याविशेष, ३७ स।
सप्त-दशन्, त्रि. सप्तदशसंख्यापूरण १७ सत्तारवां।
सप्त-दीधिति, पु. अग्नि; आग।
सप्त-द्वीप-पति, पु. अग्नीध्र; आदि सात राजा।
सप्त-द्वीपा, स्त्री. पृथिवी। ज़मीन।
सप्तधा, व्य. साततरह से, सात बार।
सप्तन्, (त्रि.) (बहु) सात।
सप्तम, त्रि. सप्तपूरण, (स्त्री) (मी) तिथिविशेष। सातवां, सप्तमी तिथि।
सप्तर्षि, पु. सप्तसंख्याक ऋषि। १ मरीचि, २ अत्रि, ३ अङ्गिरा, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु ७ वशिष्ठ।

सप्त-शती, स्त्री. सप्तशतश्लोकात्मक देवीमाहात्म-ग्रंथ, सातसौ श्लोकी चंडी ।

सप्त-सप्ति, पु. सूर्य्य । आफ़ताव ।

सप्त र्चिस, सप्तांशु, पु. अग्नि, चित्रकवृक्ष, शनिग्रह (त्रि.) क्रूरचक्षु । आतिश, चित्रका पोदा, ज़ुहल, बदचशम ।

सप्ताङ्ग, न. (बहु) स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, बल, यह ७ राजाङ्ग हैं ।

सप्ताश्व(वाहन), पु. सूर्य्य, गायत्री, २ ऋक् अनुष्टप्, बृहती, पंक्ति त्रिष्टुप् ।

सप्ताह, न. सप्तदिवस । हफ्तह ।

सप्ति, पु. अश्व; घोड़ा ।

सफर, पु. मत्स्यवि. (स्त्री) (री) एक खास मछली ।

सब्रह्मचारिन्, पु. गुरुभाई ।

स-भय, त्रि. भीत । ख़ौफ़ज़दह ।

सभा, स्त्री. परिषत । मजलिस ।

सभा-जन, न. पूजा, कुशलप्रश्न; (पु.) सभ्य, (त्रि.) भाजन-युत । इज़त, इस्तकबाल ।

सभा-पति, पु. समाजाधिपति । मीरमजलिस ।

सभा-सद्, पु. सभ्य । मेंबर, मजलसमेंसे एक ।

सभ(भी)क, पु. द्यूतकारक । जुवारिया ।

सम, त्रि. सर्व, समान, पूर्ण, साधु, सदृश हीन, (स्त्री) (मा) वर्ष (न.) गीतमान, अलङ्कारविशेष, कुल्ल, मानिन्द, पूरा, नेक, म्वाफिक, बरस ।

सम-कोण, पु. ज़ावीया क़ायमह ।

समक्ष, त्रि. सन्मुख; सामने ।

समग्र, त्रि. सकल; सारा, कुल्ल ।

समङ्गा, स्त्री. मञ्जिष्ठा लता, लज्जालुलता ।

समज, न. वन, (पु.) पशुसमूह, मूर्खसंहति (स्त्री) (जा) कीर्ति । जंगल, हैवानों का गल्ला, बेवकूफ़ों का झुंड, नामवरी ।

समञ्जस, न. उचित, (त्रि.) अभ्यास, सादृश्य, योग्य । दुरुस्त, सही, नेक, माफ़िक ।

समता, स्त्री. समत्व । बराबरी ।

समन्ततस्, व्य. चतुर्दिगभिव्याप्त । सबतरफ़ ।

समन्त-भुज, पु. अग्नि । आतिश ।

समधिक, त्रि. अधिक । ज़्यादह ।

समन्वय, पु. मलिन; मेल ।

समभिव्याहार, पु. सहित, साथ ।

समभिव्याहृत, पु. एकत्र, सहोच्चरित; सहित । इकट्ठा पड़ाहुआ, मिलाहुआ । [ज़्यादती ।

समभिहार, पु. पौनःपुन्य, भृशार्थ । बार. २,

समम्, व्य. साथ, एक कालमें ।

समय, पु. वक्त, कसम, अहद, मौक़ह, फ़ुरसत ।

समया, व्य. निकट, मध्य । नज़दीक, दरमियान ।

समर, पु. न. युद्ध, लड़ाई, जंग ।

समर्ण, त्रि. बलवान् । ज़ोरावर, लायक़ ।

समर्थन, न. कर्त्तव्याकर्त्तव्य निश्चय फ़ैसला, दियाहु० ।

समर्थित, त्रि. विचाराहुआ, दृढ कियाहुआ ।

समर्पण, न. सम्यक्समर्प्पण, सोपान । अच्छी तरहसे सौंपना, चढ़ाना; सीढ़ी ।

समर्पित, त्रि. दियाहुआ, सौंपाहुआ ।

समल, न. विष्ठा, (त्रि.) मलयुक्त । पाप, गूंह ।

समवकार, पु. नाट्यविशेष ।

समवतार, पु. सोपान; सीढ़ी ।

समवधान, न. निष्पत्ति, निश्चय । तवज्जह ।

समवस्था, स्त्री. साम्य । बराबरी । [हक़ा तअल्लुक़ ।

समवाय, पु. समूह, नित्य संबंध । मजमह, हमेश-

समवेत, त्रि. नित्ययुक्त, हमेश मिलाहुआ ।

समष्टि, स्त्री. समस्त । कुल्ल । [हुआ ।

समस्त, त्रि. सम्पूर्ण, समुदाय । कुल्ल, समास किया

समस्थली, स्त्री. गङ्गा और यमुना का दुआबा ।

समस्या, स्त्री. समासार्था । एक दो या तीन चरण सुनकर बाकी श्लोक पूरा करना ।

समह्वा, स्त्री. यशः । नामवरी ।

समांश, पु. समान, भाग (त्रि) अंशग्राही । बराबर, हिस्सा, हिस्सादार ।

समा, स्त्री. वत्सर । बरस ।

समाकुल, त्रि. संशयित, व्याकुल । हैरान ।

समा-क्रान्त, त्रि. व्याप्त, विस्तृत, गृहीत ।

समाख्या, स्त्री. कीर्ति । नामवरी ।

समागत, त्रि. आगमनाश्रय, (स्त्री) (ति) समागम पु. उपस्थित; आयाहुआ, आना, हाज़िर, मेल ।

समाघात, पु. युद्ध, वध । जंग, कतल, मार ।

समाचरण, न. अभ्यासकरण । मशक़करना ।

समाचार, पु. सम्यगाचरण, वार्त्ता । उमदह-चलन, खबर, मशक़ ।

समान, पु. अभिन्न, देहस्थ वायु। चकसां, जिस में नाकके भीतर की हवा।
समादर, पु. सम्मान। इज़्ज़त।
समादान, न. माकूल तरहसे लेना, बौद्धों का रोज़मर्रे का काम।
समादृत, त्रि. सम्मानित, अलादृत। इज़्ज़त किया [हुआ।
समाधा, } स्त्री. समाधि, पूर्व पक्षोत्तर। ब्रह्ममें मनकाजोड़ना, सवाल का जवाब।
समाधान, }
समाधि, स्त्री. समर्थन, समाधान, नियम, ध्यान, काव्यगुणविशेष, इन्द्रियनिरोधन, एकाग्रता, कारण समूह, श्मशान। दिल लगाना, एकतरफ़ ख़याल, मढ़ी, कबर।
समाधि-स्थ, त्रि. समाधियुक्त; मनको सङ्कल्प रहित करके ब्रह्ममें लगानेवाला।
समाध्मात, त्रि. भलीभांति बजाया हुआ।
समान, त्रि. तुल्य, अभिन्न, (पु) शारीरिक वायुवि०, वर्णवि०। बराबर, जिस्मानी एक हवा, एक स्थान प्रयत्नके अक्षर।
समानोदर्य, त्रि. सके भाईबहिन।
समाप, पु. देव यजन। देवताओंकी बलियें।
समापक, त्रि. समापनकर्त्ता; मारनेवाला, ख़तम करानेवाला। [हिंसा, कतल, ग़ौर।
समापन, न. परिच्छेद, समाप्ति, वध, समाधान;
समापत्ति, स्त्री. यदृच्छामेल। अचानक मुलाकत।
समापन्न, त्रि. समाप्त, प्राप्त, क्लिष्ट, वधित। ख़तम, हासिल किया हुआ, तक्लीफ़ ज़दह, कतल किया हुआ।
समाप्त, त्रि. समापन्न, प्राप्त, (स्त्री) (ति) ख़तम किया हुआ, तमाम शुदह। [हुआ।
समा-प्लुत, त्रि. पाप्लुत; पानीसे घिरा हुआ, बाहवा
समापन्न, त्रि. फैला हुआ।
समाय, पु. मुलाकात।
समायात, न. आया हुआ।
समायोग, पु. मिलाप, मतलब, पोशाक।
समारूढ, त्रि. आरोहित; चढ़ा हुआ।
समारोह, पु. चढ़ना। तरक्की।
समा-लब्ध, त्रि. मिलाहुआ। हासिल।
समा-लम्बन, न. भरोसा करना; पनाहलेनी।
समालम्भन, पु. वध। कतल।
समालम्भ, पु. विलेपन, वध, समावर्जित, त्रि. झुका हुआ, टेढा किया हु०।
समावर्तन, न. वेदाध्ययनानन्तर गार्हस्थ्याधिकार प्रयोजक धर्म्म। वेदपढ़नेके पीछे गृहस्थाश्रम करने की विधि।
समावाय, पु. समूह। मजमा।
समावास, पु. गृह, घर (न) एकट्ठे रहना।
समाविद्ध, त्रि. जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ।
समाविष्ट, त्रि. सम्यगाविष्ट; भली भांत बैठा हुआ।
समावृत, त्रि. घिरा हुआ, लौटा हुआ, शिष्य। शागिरद, ब्रह्मचर्य्य करके गृहस्थ में आया हुआ।
समावेश, पु. प्रवेश, भूतावेश, एक जातिमें इकट्ठा रहिना, दख़ल, भूत चढ़ना।
समाश्रय, पु. आश्रय। पनाह। [महफ़ूज़।
समाश्रित, त्रि. सम्यगाश्रित, रक्षित। मातहत,
समास, पु. बहुत शब्दों का एक पद बनाना, वह ६ प्रकारका है. १ अव्ययीभाव, २ तत्पुरुष, ३ कर्मधारय, ४ द्विगु, ५ द्वंद, ६ बहुव्रीहि। जमा, सब। इख़्तसार, जमा। [हुआ, मेल।
समासक्त, त्रि. संलग्न, (स्त्री) (क्ति) खूब जुड़ा
समासञ्जन, न. संयोगकरण; मिलाना।
समा-सङ्ग, पु. संयोग; मेल।
समासन्न, त्रि. निकट-प्राप्त। नज़दीक आया हुआ; हासिल हुआ २।
समासर्ज्जन, न. परित्याग। तर्क करना।
समाधन, न. आराधना; सेवा। ख़िदमत।
स-मासादन, न. प्रापण। हासिल करना, पूरा करना।
समासादित, त्रि. आहूत, प्राप्त, समानीत। हासिल किया हुआ, बुलाया हुआ, लाया हुआ।
समासार्था, स्त्री. समस्या, एक दो या तीन पाद सुनकर श्लोक का पूरा करना।
समासीन, त्रि. भली तरह बैठा हुआ।
समासोक्ति, स्त्री. अर्थालंकारविशेष; प्रस्तुत वृत्तान्त विषे अप्रस्तुतका स्फुरन।
समाहार, पु. मिलन, संग्रह, द्विगु और द्वंद्ववि०।
समाहित, त्रि. समाधिस्थ, अवहित, प्रतिज्ञात, निर्विवादीकृत, निष्पन्न, मीमांसित, स्थापित, संचित, दत्त (पु.) शुचि। ख़यालमें लगा हुआ, पूरा किया हुआ, अहद किया हुआ, रखा हुआ, जमा किया हुआ।

समाहृत, त्रि. इकट्ठा किया हुआ । स्त्री. (ति.) संग्रह, संक्षेप । जमा, मुख्तसर ।

समाह्वय, पु. द्यूत, आव्हान, सङ्गर, पशुपक्ष्यादिभिःसहक्रीडन । जूआ, बुलाना, परिंदो और दरिन्दोंसे खेलना ।

समिक, न. शेल; बरछी ।

समित्, स्त्री. युद्ध । जङ्ग । [मैयदा ।

समिता, स्त्री. गोधूमचूर्ण; गेंहूका चूर्ण, आटा,

समिती, स्त्री. युद्ध, सभा, संग, साम्य । जंग, मजलिस, मेल, बराबरी ।

समिध्, स्त्री. संग्राम, होमाग्निप्रज्वालनार्थ तृणकाष्ट (ध.) पु. यज्ञकी लकड़ी । मैदानजंग, आग जलानेके लिये लकड़ी वगैरह । [जलता हु०, ।

समिद्ध, त्रि. दीप्त, (पु) प्रदीप्त, जलाया हु०,

समिन्धन, न. आग जलानेकी लकड़ी वगैरह ।

समीर, पु. वायु । हवा, बरछा ।

समीक, पु. युद्ध, संग्राम । जंग ।

समी-करण, न. तुल्यकरन; एकजातिकरना ।

समीक्ष, न. साङ्ख्यदर्शन, सम्यग्दर्शन (स्त्री) (क्षा) बुद्धि, मीमांसाशास्त्रदृष्टि, अन्वेषण, सम्यक् ज्ञान ।

समीक्षण, न. प्रेक्षण । खूबतरहसे देखना ।

समीच, पु. समुद्र, (स्त्री) (ची) मृगी, वन्दना ।

समीचीन, न. यथार्थ, उत्तम, (त्रि.) तद्वान् (न) राच, ठीक, उमदह. दुरुस्त ।

समीर, पु. गोधूमचूर्ण, मयदा, हवा ।

समीन, त्रि. वत्सरसंबधीय । बरसका ।

समीप, त्रि. निकट । नज़दीक ।

समीर, } वायु, शमीवृक्ष । हवा, जंडीका पेड़ ।
समीरण, } पु प्रेरण, (न) भेजना क्षेपण । हवा, मरूआ, मुसाफर, फेंकना ।

समीहा, स्त्री. चेष्टा, संधान, इच्छा । कोशिश, ख़ाहिश, तवज्जो । [हुआ, मनपसंद ।

समीहित, त्रि. चेष्टित, अभीष्ट, वांछित । चाहा

समुख, त्रि. वाग्मी । बकड़वासी, खुशकलाम ।

समुचित, त्रि. उपयुक्त । मुनासिब ।

समुच्चय, पु. समाहार, अनेकपदार्थोंका एक क्रिया में अन्वय, एवंच, अपिच ।

समुच्च(च्चा)र, अर्थालंकारविशेष, । [रनेवाला ।

समुच्चार, पु. सम्यक् उच्चारण, त्यागे, (त्रि) फि-

समुच्चरित, त्रि. उच्चारण किया हुआ, ।

समुच्छ्वसित, त्रि. उच्छ्वास-युक्त । खिलाहुआ, उच्छ्वासलेता हुआ ।

समुच्छेद, पु. नाश । तबाही ।

समुच्छ्राय, पु. विरोध, उत्सेध । दुश्मनी, ऊंचाई ।

समुच्छ्रित, त्रि. उन्नत, वर्द्धित, । ऊंचा, बढ़ाहुआ ।

समुज्झित, त्रि. त्यक्त, छोड़दिया हुआ ।

समुत्कीर्ण, त्रि. क्षोदित, विद्ध, विदीर्ण; पिसा हुआ, विंधा हुआ, फाड़ा हुआ ।

समुत्क्रम, पु. ऊर्द्धगमन; ऊंचे चढ़ाव ।

समुत्थ, } त्रि. समुत्पन्न, सम्यगुत्थित, । पैदा
समुत्थित, } हुआ २, उठा हुआ ।

समुत्थान, न. समुद्योग, व्याधिनिर्णय, ऊर्ध्वगमन, सम्यगुत्थान, उत्पत्ति, कार्य्यारंभ । कोशिश, बीमारीका मालूम करना, कामका आगाज़, ऊपर जाना, उठना ।

समुत्पाट, (न) पु. न. उखाड़ना ।

समुत्पन्न, त्रि. पैदा हुआ २ ।

समुत्पिञ्ज, त्रि. अत्यन्तव्याकुल, पु. अतिव्याकुलसैन्य, । बड़ी हैरान हुई २ फौज ।

समुत्सुक, त्रि. इच्छावान् । खाहिशमंद ।

समुदय, न. लग्न, (पु.) समूह, युद्ध, उन्नति, दिवस ।

समुदित, त्रि. कथित, उत्पन्न, उन्नत । कहाहुआ, चढ़ाहुआ ।

समुद्गीत, त्रि. ऊंचे गाया हुआ ।

समुदीरण, न. पुनः २ कथन; फिर २ कहना ।

समुद्गीत, त्रि. उच्चैर्गीत; ऊंचे गाया हुआ ।

समुद्गीर्ण, त्रि. वमित, उत्तोलित, कथित । उगला हुआ, उठाया हुआ, कहा हु० ।

समुद्दिष्ट, त्रि. कथित; कहा हुआ ।

समुद्धत, त्रि. अविनीत, समुद्गीर्ण, गर्वित, उद्धत, उत्थापित । शरीर, कैकिया हुआ, मग़रूर, उठाया हुआ ।

समुद्धरण, न. वान्तान्त, उन्नय, समुद्धार, पु. मोचन, उन्मूलन । डाकी, रिहाईपाना, जड़से उखाड़ना ।

समूल, त्रि. जड़समेत ।

समूहन, न. गाड़ना (नी) झाड़ू ।

समुद्धार, न. मोचन, छुड़ाना, रिहाकरना ।

समुद्धृत, त्रि. समुत्कीर्ण, अपनीत, उत्थापित, सम्यगुद्धृत, । विंधाहुआ, दूरकिया हुआ, उठाया हुआ ।

समुद्धर्तृ, त्रि. उद्धार करनेवाला, उखाड़नेवाला ।

समुद्भव, पु. उत्पत्तिकारण, (त्रि) उत्पन्न । पैदाश

समुद्भूत, त्रि. समुत्पन्न, जात । पैदा हुआ २ ।

समुद्यम, पु. बड़ा यत्न ।

समुद्र, पु. जल-समूह, (त्रि) मुद्रायुक्त, । बहर मोहर लगाया हुआ ।

समुद्र-कान्ता, स्त्री. नदी । दर्या ।

समुद्र-मेखला, पृथिवी । ज़मीन ।

समुद्र-यान, न. बृहत्पोत । जहाज़ ।

समुद्र-शोक, पु. वृक्षवि०, ख़ास एक दरख़्त ।

समुद्वह, त्रि. श्रेष्ठ; विवाहा हुआ ।

समुन्न, **समुन्नत** त्रि. बहुत ऊंचा (स्त्री) (ति) तरक्क़ी, ऊंचाई ।

समुन्नद्ध, त्रि. गर्वित । मग़रूर ।

समुन्नय (न) पु. न. उतक्षेपन । उछालना ।

समुपजोषम्, व्य. सुखसे, भाग्यसे ।

समुपधान, न. उछालना, रखना ।

समुपोढ, त्रि. संजात, समुदित, संगत ।

समुल्लसत्, त्रि. दीप्तिमत् । रोशन ।

समुल्लेख, (न.) पु. न. खनन; खोदन ।

स-मूढ, त्रि. राशिकृत, धृत, ऊढ, शोधित ।

समूह, पु. मृगविशेष ।

समूल(क), त्रि. मूल सहित, सहेतुक । बासबच ।

समूह, पु. समुदय, तर्क । मजमा झुण्ड, ढीला ।

समूह्य, पु. यज्ञाग्नि । यज्ञ की आग । [स्याण ।

समृद्ध, त्रि. बढ़ा हुआ, (स्त्री) (द्धि) वृद्धि, क-

समृध, पु. पूरा, निर्दोष । बेगुनाह ।

समेत, सहित । मिला हुआ ।

समेधित, त्रि. बहुत बढ़ाया हुआ, ऊंचे किया हुआ ।

संपत्ति, **सम्पद्**, (दा) स्त्री. ऐश्वर्य, धन, लक्ष्मी, शोभा, उत्कर्ष, गौरव ।

सम्पन्न, त्रि. संपदावाला । दौलतमंद, तैयार ।

सम्पराय, पु. युद्ध, आपत्, उत्तरकाल ।

सम्पराय(यि)क, न. युद्ध । जंग, मुसीबत का ।

सम्पर्क, पु. संबन्ध, संयोग ।

सम्पर्किन्, त्रि. सम्बद्ध; जुड़ा हुआ ।

सम्पर्कीय, त्रि. संबन्धीय । मेलवाला ।

सम्पा, स्त्री. विद्युत्; बिजली ।

सम्पात, पु. पतन, गमन, प्रवेश; उडारी ।

सम्पाति, पु. पक्षिविशेष । जटायु का बड़ा ।

सम्पादक, त्रि. निर्वाहक । तैयार करनेवाला ।

सम्पादन, न. निर्वाह । तय्यार करदेना ।

सम्पीड(न), पु. न. भीचना, भेंचना ।

सम्पूर्ण, त्रि. समाप्त, पूरा, सारा ।

सम्पृक्त, त्रि. मिला हुआ, जुड़ा हुआ ।

सम्प्रति, व्य. अब ।

सम्प्रतिपत्ति, स्त्री. वादि वाक्य का स्वीकार, प्राप्ति, समझाना, अनुमति, चढ़ना ।

सम्प्रदातृ, त्रि. दाता ।

सम्प्रदान, न. दानीयव्यक्ति; जिसको देना है ।

सम्प्रदाय, पु. गुरुपरंपरागत उपदेश । समाज, दल, सजातीय । [धारण, निश्चय ।

सम्प्रधारण, न. स्त्री (णा) युक्तायुक्तविचार, अव-

सम्प्रसाद, पु. प्रसन्नता, विश्वास ।

सम्प्रसारण, न. फैलाना, व्याकरणमें य, व, र, ल के स्थान, इ, उ, ऋ, लृ ।

सम्प्रहार, पु. युद्ध, बड़ी चोट ।

सम्प्राप्त, त्रि. फलित (स्त्री) (प्ति) लाभ ।

सम्प्रीति, स्त्री. सम्यक् प्रीति; बड़ी प्रीति ।

सम्बन्ध, पु. संयोग, मेल, जन्यजनक आदि ।

सम्प्लव, पु. तूफ़ान, तुग़यानी ।

सम्बन्धिन्, त्रि. सम्बन्धवाला, साला, समधि ।

सम्बन्धु, पु. रिश्तहदार ।

सम्बरण, न. छिपाना, लुकाना ।

सम्बल, पु. न. पाथेय न. जल । ज़ादराह ।

सम्बाकृत, त्रि. इकट्ठा किया हुआ ।

सम्बाध, पु. बाधा, भय, संकट, (त्रि) प्रशान्त ।

सम्बुद्धि, स्त्री. संबोधन । बुलाना ।

सम्बोधन, न. आव्हान । बुलाना ।

सम्भव, पु. उत्पत्ति, योग्यता, जैनविशेष (त्रि) उत्पन्न, मेलक । पैदाश, लियाकत, पैदाहुआ २ ।

सम्भावन, न. स. योग्यता का अध्यवसाय, गौरव, पूजा, सत्कार, चिन्ता, काव्यालंकारविशेष ।

सम्भावित, त्रि. पूजित, विख्यात । पूजा हुआ, मशहूर ।
सम्भाव्य, त्रि. श्लाघ्य, प्रतर्क्य । लायक तारीफ़ ।
सम्भाष, पु. स्त्री. (षा) बात । गुफ़तगू ।
सम्भाषण, न. आलाप; बातचीत ।
सम्भिन्न, त्रि. चालित, भग्न । हटा हुआ ।
सम्भूत, त्रि. उत्पन्न, उद्भूत । पैदा हुआ, ज़ाहिर ।
सम्भूति, स्त्री. विभूति, उत्पत्ति । हशमत, पैदाश ।
सम्भूय-समुद्धान, न. हिस्सेदारों का मिलकर वनज करना ।
सम्भृत, त्रि. संचित, दत्त, लब्ध, पूर्ण, (स्त्री) (ति) सम्यक् पोषण, वर्द्धन, संचय । जमा, दियाहुआ,
सम्भेद, पु. नदीके संगम का स्थान ।
सम्भोग, पु. उपयोग । ज़रूरत [त्पन्न वेग ।
सम्भ्रम, पु. भय, साध्वस, हर्ष, भय आदि से उ-
सम्भ्रान्त, त्रि. आदरणीय, विख्यात (स्त्री) (न्ति) घबराहट । मुअजिज़ मशहूर ।
सम्मत, त्रि. अनुमत, अभिप्रेत, प्रिय, (स्त्री) (ति) अनुमति । सलाह ।
सम्मर्द, पु. युद्ध, सङ्घर्ष; जंग, घिसना ।
सम्मान, न. आदर । इज़त ।
सम्मानन, न. स्त्री (ना) आदर । इज़त ।
सम्मानित, त्रि. पूजित; पूजा हुआ ।
सम्मार्जन, न. झाड़ना (स्त्री) (नी) झाड़ू ।
सम्मृष्ट, त्रि. परिष्कृत, मार्जित । साफ़ किया हुआ, मांजा हुआ ।
सम्मोद, पु. आमोद, हर्ष । खुशी ।
सम्मोहन, त्रि. मोह जनक; कन्दर्प का बाणविशेष ।
सम्यच्, व्य. भलीभांतसे (त्रि) सुन्दर, शुद्ध सत्य, सम्पूर्ण । उमदह, सही, सच, पूरा ।
सम्राज्, पु. सर्वभूमीश्वर । शानशाह, पातशाह ।
शर, पु. बाण, सरोवर, जल, मधु (त्रि) चलनेवाला, (पु) चलना । [शरावका वर्तन, शराव पीना ।
सरक, पु. न. मद्य, मद्यपात्र, मद्यपान । शराव,
सरघा, स्त्री. मधुमक्खी । शहदकी मक्खी ।
सरज, न. नवनीत । मक्खन ।
सरजस्, त्रि. रजोविशिष्ट, स्त्री (स्का) ऋतुमती स्त्री ।
सरट, पु. गिरगिट । [सर्कना, सर्कने वाला ।
सरण, न. गमन (त्रि) गमनशील, गमन कर्ता ।
सरणि(णी) स्त्री. पथ, श्रेणी, रीति । रास्ता, कतार, तरीक ।
सरमा, स्त्री. कुत्ती, विभीषण्की पत्नी ।
सरयु(यू) स्त्री. मान सरोवर से निकली हुई अयोध्याके नीचे बहनेवाली नदी ।
सरल, पु. वृक्षवि०, (त्रि) उदार, साधु, ऋजु । सादा मिज़ाज, नेक, साफ़ दिल ।
सरस्, न. स्त्री. (सी) तालाव ।
सरसि-ज, **सरसी-रुह,** } न. कमल पुष्प ।
सरस्वत्, पु. समुद्र, नद (स्त्री) (ती) नदीविशेष, नदी, गङ्गा, वाग्देवी, वाक्य, भूमि, स्त्रीरत्न ।
स-राग, त्रि. अनुरक्त, रंजित । आशक, रंगा हुआ ।
सराव, पु. मृत्पात्र । मट्टीका वर्तन ।
सरित्, स्त्री. नदीविशेष । दर्या ।
सरि-त्पति, पु. समुद्र । वहर ।
सरी-सृप, पु. सांप, विछुआ आदि ।
सरु, पु. पङ्ग आदिकी मुट्ठी । [तालावकी पैदाश ।
सरो-ज, न. पद्म, (त्रि) सरोजात । कमलफूल,
सरोजिन्, पु. ब्रह्मा, (स्त्री) (नी) सर से उत्पन्न ।
सरो-रुह(ह), न. पद्म; कमल पुष्प ।
सरो-वर, पु. पद्मादि युक्त जलाशय । वहताल जिसमें कमल खिले हैं ।
सर्ग, पु. सृष्टि, स्वभाव, नियम, निश्चय, मोह, मोक्ष, त्याग, एक ग्रंथका अध्याय ।
सर्ज, पु. राल ।
सर्जन, न. सृष्टि, सैन्य पश्चाद्भाग ।
सर्जरस, पु. शालनिर्यास; राल ।
सर्जि(र्जी), नदीविशेष, सज्जी ।
सर्प, पु. स्त्री (र्पी) सांप, गमन ।
सर्पण, न. गमन, सरल । रफ़्तार ।
सर्प-भुज्, पु. मोर, गरुड़ ।
सर्प-राज, पु. वासुकी, अनन्तदेव । सापोंका राजा ।
सर्प-सत्र, न. सर्प नाशक यज्ञ ।
सर्पा-शन, पु. मोर, गरुड़ । [नी ।
सर्पिन्, त्रि. गामी (स्त्री) (णी) । चलनेवाला, सांप-
सर्पिस्, न. घृत; घी ।
स(र्पि)र्ष्पीष्ट, न. श्रीखण्ड, चन्दन ।
सर्व(क), त्रि. सम्पूर्ण, कुल, बिलकुल ।

सर्वके, व्य. सर्वत्र; सब जगह में ।
सर्वकैस्, व्य. सर्वत्र; सब जगह में ।
सर्वग(त), न. जल (पु) वायु, शिव, ब्रह्मा, आत्मा । त्रि. सर्वत्र गमनशील । [सबके नाश करनेवाला ।
सर्व-ङ्कष, पु. धूर्त्त, चोर (त्रि) सर्वनाशक । शरीर,
सर्व-ज्ञ, त्रि. शिव, बन्धु, त्रि. सकलज्ञाता, (स्त्री) दुर्गा, पार्वती ।
सर्वतस्, व्य. समन्ततः । चारोंतरफ़, सबतरफ़ ।
सर्वतोभद्र, पु. न. ईश्वरगृहवि०, (न) वृषोत्सर्ग, व्रतप्रतिष्ठादि पूजाधार मण्डलवि०, मनुष्यस्य- शुभाशुभज्ञानार्थ ज्योतिश्चक्रवि०, (पु) निम्बवृक्ष, व्यूह वि०, विष्णुरथ, वंश, चित्रकाव्यवि० ।
सर्वतो-मुख, न. जल, आकाश, (पु.) शिव, ब्रह्मा, आत्मा, ब्राह्मण, स्वर्ग, अग्नि, । आब, आसमान रूह, बहिशत आतिश । [या वक्त में ।
सर्वत्र, व्य. सर्वदिग्देशकाले, । सब तरफ, जगह
सर्वथा, व्य. प्रतिज्ञा, भृश, हेतु, सर्वप्रकार, । बा- हदह, हमेश, सबब, सब तरहसे ।
सर्व-दर्शिन्, पु. बुद्ध, (त्रि) सकल दर्शन कर्त्ता ।
सर्वदा, व्य. सदा । हमेशह ।
सर्व-नामन्, न. व्याकरण संज्ञावि० । इसम ज़मीर ।
सर्व-भक्ष, अग्नि (त्रि) सर्वभुक् (स्त्री) (क्षा) छागी । आतिश, सर्वभक्षी, बकरी, मौत ।
सर्व-मय, त्रि. सर्वात्मक । पु. ईश्वर ।
सर्व-मूषक, पु. काल, यम । वक्त, मलिकुल मौत ।
सर्वमेध, त्रि. सर्वसंहारक । सबके तबाह करनेवाला ।
सर्व-रस, पु. धूनक, वाद्यभाण्ड, तुरी, लवनरस । राल, बाजा, निमकीन ज़ायकह ।
सर्वरी, स्त्री. शर्वरी; रात । शब ।
सर्व-विद्, पु. परमेश्वर (त्रि) सकल-ज्ञाता ।
सर्व-वेदस्, पु. सर्व वेदाध्ययनकर्त्ता (त्रि) सर्वज्ञ । सब वेदोंके पढ़नेवाला, कुलके जाननेवाला ।
सर्व-वेशिन्, पु. नर (त्रि) सकल वेशधारी । बहु- रूपीया ।
सर्व-व्यापक, त्रि. सर्वत्रगत, आत्मा । हाज़र ओ- नाज़र, मलिकुल मुहीत ।
सर्व-शक्तिमत्, पु. परमेश्वर (त्रि) सकल सामर्थ्य युक्त । क़ादर मुतलक, जिसमे सबतरहकी ता- क़त हो ।

सर्व-सङ्गत, पु. यष्टिका धान्य (त्रि) सकलसंगति- युक्त सद्विधान, तमाम, दरुस्त ।
सर्व-स्व, न. समुदाय धन । सारी दौलत । सरवंस ।
सर्वस्वार, पु. अचिकित्स्य रोगार्त्त । लाइलाज बीमार । [पैदा हुआ २ ।
सर्वस्विन्, पु. वर्णसङ्कर; गोपकी लड़कीसे नाईसे
सर्वाङ्ग, न. सकलावयव । कुल जिसम । [हुआ ।
सर्वाङ्गिन्, त्रि. सर्वाङ्गव्यापक । कुल जिसममें व्यापा
सर्वापेक्षा, स्त्री. सकलापेक्षा; सबकी निसबतसे ।
सर्षप, पु. शस्यविशेष, स्त्री (पी) पक्षीविशेष; सरसो, एक चिड़िया ।
सर्वाणी, स्त्री. भवानी ।
सर्वा-र्थसिद्ध, पु. बुद्ध, (त्रि) सबकामनायुत ।
सर्वे-श्वर, पु. शिव, (त्रि) सबका प्रभु ।
स-लज्ज, त्रि. सव्रीड । शर्मसार, शर्मिंदह ।
सलि(ली)ल, न. जल । आब ।
सलिल(नि)धि, पु. समुद्र, । बहर ।
सल्लकी, स्त्री. स्वनामख्यात वृक्ष । ख़ास दरख़्त ।
सव, पु. अपत्य, प्रसव, यज्ञ । [द्वीपपति ।
सवन, न. यज्ञ स्नान, सोमरसपान, (पु) पुष्कर-
स-वयस्, त्रि. हमउमर । [स्थानीवर्ण ।
स-वर्ण, त्रि. सदृश; एकसा । व्याकरणमे एक-
स-विकल्पक, न. न्या. विशेषणयुक्त विशेष्यका ज्ञान । वेदान्ते ज्ञात ज्ञेय भेद ज्ञान ।
स-विकाश, त्रि. खिला हुआ । रौशन ।
सवितृ, पु. सूर्य, ईश्वर, (त्रि) जगत्पति ।
सविध, त्रि. निकट । नज़दीक ।
स-विशेष, त्रि. अच्छीतरहसे । खासतरहसे ।
सवेश(प), त्रि. समीप का । नज़दीकी ।
सव्य, त्रि. वाम, प्रतिकूल । बरक्स ।
सव्य-साचिन्, पु. अर्जुन, बायें हाथसेतीर चला- नेवाला ।
स-व्याज, त्रि. छलीया । फ़रेबी ।
सव्येष्ठ(ष्ठृ), पु. सारथि, रथके बामभागका वीर ।
स-व्रीड, त्रि. सलज्ज । शर्मिंदा ।
सशङ्क, त्रि. भीत; डरा हुआ ।
सशङ्कित, त्रि. त्रस्त, डरा हुआ ।
स-सत्वा, स्त्री. गर्भिणी । हामिला । [क़ुरबानी ।
स-सन, न. यज्ञार्थ पशु हनन । यज्ञमें हैवान की ।
सस्य, न. धान्य, शस्त्र, गुण; हथियार, रस्सी ।

सस्यक, पु. मणिविशेष, असि। तलवार।

सह, व्य. सहित, साकल्य, विद्यमान, सादृश्य, यौगपद्य, सामर्थ्य, (न.) पाश बलवन, (पु.) अग्रहायण मास, (त्रि) क्षम, सहाय, (पु. न.) सामर्थ्य, । साथ, कुल, मौजूद, मुआफिक, यकयारगी, ताकत, एक खासनिमक, भादों महीना, साविर, मददगार, ताकत।

सह-कार, पु. आम्रवृक्ष, आम्रपत्र, सहाय्य।

सह-कारिन्, पु. सहायकारी, कारणवि०,।

सह-कृत्वन्, त्रि. (स्त्री) त्वरी) सहायक।

सह-गमन, न. सहितगमन, अनुमरण (स्त्री) (नी) साथजाना, पीछेमरना, सती होनेवाली।

सह-चर, पु. वयस्य, संगी, प्रतिबंधक (त्रि) अनुचर (पु. स्त्री) पीतझुंडी, (स्त्री) (री) सखी, भार्या।

सह-चारिन्, त्रि. संगी; साथी।

सह-ज, पु. जन्मसे तृतीय लग्न; सगाभाई। आदत।

सहदेव, पु. पाण्डु राजाका ५ वां वेटा (स्त्री) (वी) सहदेवस्त्री।

सह-धर्म्मिणी,
सह-चारिणी, } स्त्री. वेदविधान द्वारा विवाहिता स्त्री। जोरू।

सहन, न. क्षान्ति, (त्रि) सहनशील। सवर, वरदाशत करनेवाला।

सहनीय, त्रि. सहारे योग्य। वरदाश्तके लायक।

सह-भाविन्, पु. सहाय। मददगार।

सह-मरण, न. मृतस्वामिसहित ज्वलच्चितारोहण पूर्वक मरण; सती हो मरना।

स-हरि, व्य. हरिसदृश (पु) सूर्य्य, वृष। हरि जैसा, आफताव, वैल। [खुशी, खुश।

स-हर्ष, पु. स्पर्द्धन, हर्ष, (त्रि) हर्षयुक्त। हसद,

सह-वर्त्तिन्, पु. सङ्गी; साथी।

सह-वास, पु. एकत्र वासः एक जगह रिहायश।

सह-वासिन्, त्रि. एकत्र वासकारी; एक घर में रहने वाला। हमखानह।

सहस, त्रि. वलवान्, जयी, (न) वल।

सहस, व्य. हठात्, अकस्मात्, (स्त्री) सहासा। अचानक, नागहानी, जल्दीसे, हसने वाली औरत।

सहसान, त्रि. बलवान्। ताकतवर।

सहस्कृत्, त्रि. वलवान् किया हुआ।

सहस्य, पु. पौषमास; पूस का महीना।

सहस्र, न. दशशतसंख्या; १००० एक हज़ार।

सहस्र-कर,
सहस्र-किरण, } पु. सूर्य्य। आफ़ताव।

सहस्र-दंष्ट्र, पु. पाठीन। एक ख़ास मछली।

सहस्र-नेत्र, पु. विष्णु, इन्द्र।

सहस्र-पत्र, पद्म; हज़ार पत्तोंवाला फूल।

सहस्र-पाद, पु. विष्णु, सूर्य्य, ब्रह्मा।

सहस्र-भुज, पु. विष्णु, कार्त्तवीर्य्यार्जुन नामराजा। (स्त्री) (जा) महालक्ष्मी।

सहस्र-मूर्द्धन्, पु. अनंत, विष्णु।

सहस्र-वेध, पु. हिङ्गु; हींग।

सहस्र-लोचन, पु. इन्द्र।

सहस्र-शिखर, पु. विन्ध्य पर्वत।

सहस्र-वेधिन्, पु. अम्बुवेतस, कस्तूरी (त्रि) सहस्रवेधकर्ता। आवीवेत, कस्तूरी, हजारको वींधनेवाला।

सहस्रां-शु, पु. सूर्य्य। आफ़ताव। [वाला।

सहस्रा-क्ष, पु. विष्णु, इन्द्र, (त्रि) हज़ार आंख

सहस्रा-नीक, शतानीक राजपुत्र; राजा शतानीक का वेटा।

सहस्रार, न. शिरके मध्यमें हज़ार दलका पत्र।

सहस्रिन्, पु. सहस्रसंख्यक सैन्ययुक्त। जिसकी फौज का हज़ार आदमी हो।

सहाय, पु. अनुकूल, सहकारी, साथी। मददगार।

सहायता, स्त्री. मदद, साथियोंका समूह।

सहार, पु. आम्रवृक्ष, महाप्रलय, (त्रि) हारयुक्त।

सहित, त्रि. समभिव्याहृत, संहित, हितयुक्त। मिला हुआ। मुहिब्ब (न) साथ।

सहिष्णु, त्रि. सहनशील। वरदाश्त करने वाला।

सहिष्णुता, स्त्री. तितिक्षा। वरदाश्तगी।

स-हृदय, त्रि. प्रशस्त, सामाजिक (पु) पंडित।

सहोक्ति, स्त्री अलंकारविशेष। जिस उक्ति विषे सह या साथपाया जाय।

सहोढ-ज, पु. पर्णकटी, द्वादशविध पुत्रान्तर्गत पुत्र। हामिलाके साथ शादी करनेके बाद उसके जो वेटा पैदा होता है। चोर।

सहो-दर, पु. सोदर्य्य; सका भाई।

सहो-दा, स्त्री. बलदाता। वलदेने वाला।

सहोवत्, त्रि. वलवान्। जोरावर।

सहो·षित, त्रि. एक दूसरे के साथ रहिनेवाला ।

सह्य, न. आरोग्य, साम्य, (पु) पर्वतविशेष, (त्रि) सोढव्य । तनदुरुस्ती, मुआफ़िकत, मीठा, नाम एक पहाड़का जो पूना के दक्षिण उत्तरमें है ।

सा, स्त्री. गौरी, लक्ष्मी, पूर्वोक्त परामर्शविषयी भूता । पार्वती, विष्णु की शक्ति, वह स्त्री ।

साङ्ख्य, न. षड्दर्शनान्तर्गतदर्शनविशेष । कपिलजी का बनायाहुआ शास्त्र, जिसमें प्रकृति पुरुष और तत्वोंका वर्णन है ।

साकम्, व्य. सहार्थ; साथ ।

साकल्य, न. समुदाय; सब ।

सा·कार, पु. मूर्तिमान् । बामजूद, शकल·दार ।

साकेत, पु. न. अयोध्या नगर ।

साक्षात्, व्य. प्रत्यक्ष, सामने ।

साक्षात्कार, पु. प्रत्यक्ष करना । सामने देखना ।

साक्षिन्, त्रि. प्रत्यक्ष द्रष्टा । गवाह ।

सागर, पु. समुद्र, दश पद्म-संख्या, १०००००००००००००० तादाद, एक खास हिरण ।

सागर·मेखला, **सागरनेमी**, स्त्री, पृथिवी । ज़मीन ।

सागरा·लय, पु. वरुण; जलों का राजा ।

साग्निक, पु. अग्नि-होत्री । जिनके एकहिं अग्निसे संस्कार जीवित और मृतक ।

साङ्कर्य्य, न. संकरता । दोग़लापन । होते हैं ।

सांग्रामिक, त्रि. संग्रामशील, युद्धके स्वभाववाला ।

साङ्ग, त्रि. सम्पूर्ण, पूरा, अंगयुक्त ।

साङ्गता, स्त्री. संपूर्णता; पूरापन ।

साङ्ग्रामिक, त्रि. युद्धका । जंगी ।

साचि, व्य. तिर्य्यक; तिरछेपनसे ।

साचिव्य, न. मंत्रित्व, साहाय्य । वज़ारत । मदद,

साची·कृत, त्रि. वक्रीकृत; झुकाया हुआ, मरोड़ा हुआ ।

सा·चारिक, त्रि. योग्य । लायक ।

सा·टोप, त्रि. अहंकारी । मग़रूर । [ख़राब ।

सात, न. सुख, (त्रि) दत्त, विनष्ट; दिया हुआ,

सातला, स्त्री. चर्म्म·कषा, क्षुदवि०; चाबक ।

सा·तिशय, त्रि. अतिशय युक्त, बहुत, अधिक ।

सात्वत, पु. बलदेव, विष्णु, विष्णुभक्तविशेष, यदुवंशीयाशुराजपुत्र ।

सात्वत, पु. यदुवंशीयोंका देशवि० (त) बलदेव, (स्त्री) (ती) वसुदेवभगिनी, नाटक वृत्तिविशेष ।

सात्विक, पु. त्रिविधभावान्तर्गत भाववि०, (त्रि) सत्वगुणसपन्न । दिल की अच्छी खासीयत, नेक ।

साद, न. पवित्रता, नाश । फ़िक़र तावश रफ़्तार, पाकीज़गी, तबाही ।

सादन, **सादन्य**, त्रि. अवर्ण, विनाशन । तबाही ।

सादि(न्), पु. शारथि, सवार, हाथीसवार (त्रि) योधा, योद्धा, अवसन्न, वायु । गाड़ीवान्, जंगी, भरा हुआ । हवा ।

सादित, त्रि. विषादित, विनाशित, शरण प्रापित । हैरान किया हुआ, तबाह किया हुआ, पनाहलिया हुआ ।

सादृश्य, न. सदृशत्व, आलेख्य । मुशाबिहत ।

साद्य, त्रि. चढ़ने योग्य ।

साधक, पु. साधनकर्ता, स्त्री (की) दुर्गा ।

साधन, न. करणकारक विशेष, मृतसंस्कार, अभिदान, गति, द्रव्य, धन, सामग्री, सैन्य, मैत्र, ऊध, सिद्धि कारक, प्रमाण, व्याप्य, मुमुक्षुत्व, (स्त्री) (ना) सिद्धि, आराधना । ज़रीयह, मुर्दह का फूकना वग़ैरह, रफ्तार, चीज़, दौलत, सामान, फौज, कट, लेवा नजात, की ख्वाहिश, खिदमत, तजवीज़ ।

साधन्त, पु. भिक्षुक, याचक; भिखारी, मंगता ।

साधर्म्य, न. सादृश्य, समानधर्म्मवत्ता; बराबरी, यक सा हो ना । [चीज़ ।

साधारण, त्रि. तुल्य, समान, सामान्य । आम-

साधित, त्रि. दापित, दण्डित, सम्पादित । दिया हुआ, सज़ा दिया हुआ, पूरा किया हुआ ।

साधिमन्, पु. साधुत्व । नेकी ।

साधिष्ठ, **साधीयस**, त्रि. दृढतम, न्याय, अन्याय्य, कठिन । ज्यादह मज़बूत, बहुत मुनासिब, बहुत सख़्त, नेकमर्द ।

सा·धिष्ठान, न. देहस्थ षटचक्र मध्ये २ य, चक्र ।

साधु, पु. आर्य्य, जिन, मुनि, (त्रि) सुन्दर, सज्जन, उत्तम, हित, निपुण, समर्थ, योग्य (स्त्री) (ध्वी) सुशीला स्त्री ।

साधुता, स्त्री. सौजन्य, शिष्टता । भलमानसी ।

साधु·धी, स्त्री. श्वश्रू, सुन्दर बुद्धि, (त्रि) तद्युक्त । सास, उमदह अकल, अकलमंद ।

साध्य, पु. द्वादश गण देवता, एकविंशयोग, (त्रि) साधनीय, ज्ञेय, अनुमिति, विधेय, मन्त्रविशेष, (पु) शव १२ देवता ओंका समूह, २१ वां योग, खासमन्त्र, मुर्दा।

साध्वस्, न. भय, शङ्का। खौफ़, शक।

साध्वी, स्त्री. पतिव्रता। नेकपाक औरत।

सा-नन्द, त्रि. हर्षवान्। खुश—

सानु, पु. न. पर्वत के ऊपर की समतल पृथिवी, कोविद, मूर्ख, पल्लव मार्ग।

सानुक, त्रि. लूट का लोभी।

सानुमत्, पु. पर्वत। पहाड़।

सानेयिका, स्त्री. वंशी; वांसरी। [फिद।

सान्तपन, ल. व्रतविशेष, पहिलेदिन गोमूत्र, गोमय, दधि, घृत, कुशाका जल, क्रमसे खिलापिला ५ दिनका व्रत।

सा-न्तर, त्रि. विरल, सछिद्र। विरला।

सान्तानिक, पु संतान चाहनेवाला, स्वर्ग का पेड़।

सान्त्व, पु. न. सामवाक्य, दाक्षिण्य, (त्रि) प्रिय, (न. स्त्री.) प्रबोधन। तसल्ली, खुशामद, चतुराई, समझना।

सान्त्वन, न. सामोपाय, (स्त्री) (ना) प्रणय। उमदह वातें करके गुस्से को नष्ट करना, प्यार।

सान्द्र, न. वन (त्रि) घन, मृदु, मनोज्ञ, प्रवृद्ध, दृढ़। जंगल, गाढ़ा, नरम, दिलचस्प, वढ़ा हुआ, मजबूत, चिकना।

सान्ध्या, स्त्री. सोझका।

सान्नाय, न. मंत्र, हविपूत घृत।

सान्निध्य, न. नैकव्य। नज़दी की।

सान्निपातक, त्रि. सन्निपातजनित। सन्निपात की बीमारीसे उत्पन्न।

सा-पराध, त्रि. कसूर वार। [भाई।

साप(त्न)त्न्य, पु. शत्रु, शत्रुता, (त्रि) सौतेला

सापिण्ड्य, न. सपिण्डता। हमज़ात।

सा-पेक्ष, त्रि. अपेक्षायुक्त, साकाङ्क्ष। वापरवाह।

साप्त-पदीन, न. सख्य। दोस्ती।

साप्त-पौरुप, त्रि. सात पीढ़ीतक।

साफल्य, न. सफलता, फलोत्पत्ति। कामयावी।

सामक, न. मूलऋण, (पु) तर्कु, शान असलीकर्ज, सान। [पत्नी।

साम-ग, पु. सामवेदी ब्राह्मण, स्त्री. (गा) गुरु

सामग्र, न. पूरा, कारण-समूह, द्रव्य, (स्त्री) (ग्री) सामान। [वेदका।

साम-ज, पु. हस्ती, त्रि. सामवेदोत्पन्न; हाथी, साम

सामञ्जस्य, न. औचित्य, समीचीनता। मुनासिवत, दरुस्ती।

सामधेनी, स्त्री. आग सुलगानेके मंत्र।

सामन्, न. वेदवि॰, चतुर्वेदान्तर्गत तृतीय वेद, प्रिय वाक्यद्वारा क्रोधापशमन स्त्री. (ती) ३ रा, वेद।

सामन्त, पु. ज़िलअ का सर्दार, कप्तान।

सामयिक, त्रि. समयोचित, नियमानुयायी। मुनासिव वक्तका।

साम-योनि, पु. ब्रह्मा, हस्ती (त्रि) सामवेदसे निकला हुआ। फ़ील, सांमका।

सामर्थ्य, न. योग्यता, वल। लियाकत, ताकत।

सा-मर्ष, त्रि. क्रुद्ध। गज़वनाक। [लिस का।

सामाजिक, पु. सभ्य (त्रि) सभा संवन्धीय, मज-

सामानाधिकरण्य, न. एकाश्रय में रहना।

सामान्य, न. जाति, (त्रि) अनेक सवन्धी एक वस्तु, जैसे गोत्व आदि।

सामान्य-लक्षण, स्त्री. अलौकिक सन्निकर्षविशेष; एक वस्तु देखने से उसकी सजातीय वस्तुओं मे व्यापक व्यापार।

सामान्या, स्त्री. साधारणी नायका; कंचनी।

सामि, व्य. अर्द्ध, कियदंश। निसफ़, कुछ एक हिस्सा। [अग्निजलते

सामिधेनी, स्त्री. अग्निसमिन्धन ऋक्; यज्ञ की समय पढ़ने का मंत्र। लकड़ी।

सामीची, स्त्री. वन्दना, स्तव। ताअरीफ़।

सामुद्र, न. समुद्र निमक (त्रि) समुद्र का, देहपर के चिन्ह।

साम्परायिक, न. पारलौकिक कर्म। [ठीक।

साम्प्रतम्, व्य. युक्त, इदानीम्। मुनासिव, अव,

साम्य, न. तुल्यत्व; वरावरी।

साम्राज्य, न. दशलक्ष्याधिपत्य। वादशाहत।

साय, पु. शाम, तीर, वरवादी।

सायक, पु. शर, खड्ग (स्त्री) (यिका) तरकीवसे खड़ा होना।

साय-न्तन, त्रि. सांझ का।

सायिन्, पु. अश्वारोह; घुड़ चढ़ा, [जाना।
सायुज्य, न. मुक्तिविशेष; वीचमिलकर एक हो
सा-युध, त्रि. हाथियार बंध। मुसल्ला।
साये, व्य. दिनान्त। शाम के वक्त।
सार, न. जल, धन, न्याय्य, नवनीत, लौह, विपन, (पु) वल, वायु, रोग, पाशक, अतिदृढ, अतिशय, उत्कर्ष, (त्रि) वर, श्रेष्ठ, स्थायी, नाना वर्ण। आव, हशमत, इन्साफ़, मक्खन, लोहा, जंगल, ज़ोर, हवा, वीमारी, पासा, निहायत सख़्त, ज्यादती, फ़ज़ीलत, उमदह, वक, क़ायम, चितकवरा।
सारक, पु. जयपाल वीज; जमालगोटा।
सारघ, पु. मधु। शहद।
सारङ्ग, पु. चातकपक्षी, हरिण, हस्ती, भृङ्ग, पक्षीविशेष, छत्र, राजहंस, चित्र-मृग, वस्त्र, मयूर, कामदेव, धनुः, केश, स्वर्ण, भूषण, कमल, शङ्ख, चन्दन, कर्पूर, रागविशेष, पुष्प, कोकिल, मेघ, पृथिवी, रात्रि, दीप्ति, सिंह (त्रि) सरल, नानावर्ण, (स्त्री) (ङ्गी) वजानेका वाजा।
सारङ्गिक, पु. व्याध। शिकारी।
सारण, न. गन्धविशेष, दोषशुद्धि, अपसारण, (पु) अतीसार रोग, रावण मन्त्री (स्त्री) (णी) स्वल्पा नदी। खुशवूई।
सारण्ड, पु. सर्पाण्ड। सांप का अंडा।
सारथि, पु. यन्ता। साईस, गाड़ीवान्।
सारथ्य, न. साहाय्य, रथादि चालन। मदद, रथ हांकना।
सारमेय, पु. कुकुर (स्त्री) (यी) शुनी। कूकर, कुत्ती। [दिली।
सारल्य, न. अकापट्य; सीधापन। सादगी, साफ़
सारस, न. पद्म, स्त्रीकटिभूषण, (पु) चन्द्र, (पु.स्त्री) हंस, पक्षीविशेष, (त्रि) सरोवरोद्भव जलादि। गुलेसौसन, औरतोंकी कमर का ज़ेवर, चांद, वाघ परिंद, सरसे जो पैदा हो।
सारस्वत, पु. विल्वदण्ड, देशविशेष, मुनिविशेष, व्याकरणविशेष, (स्त्री) (ती) देवीविशेष, नदीविशेष, (त्रि.) सरस्वतीसम्बन्धीय, सारस्वत देशसम्बन्धीय।
सारि(री)का, स्त्री. पक्षिविशेष; मयना चिड़िया।

सारी, स्त्री. सारिकापक्षिणी, पाशक; मयना पंखी, पासा।
सार्थ, पु. जन्तुसमूह, वणिक समूह, समूहमात्र, (त्रि) अर्थयुक्त, धनी। जानवरों का मजमह, ताजरों का क़ाफ़ला, दौलतमंद।
सार्थक, त्रि. अर्थसहित, वर्तमान, सफल। वामअना, कामयाव।
सार्थकता, स्त्री. सफलता। कामयावी।
सार्थक्य, न. सार्थकता, साफल्य। कामयावी।
सार्द्र, त्रि. आर्द्र। गीला।
सार्द्ध, व्य. सहित, (त्रि) अर्द्ध-सहित। मय, डेढ़।
सार्प्पिष, त्रि. घी का।
सार्व, पु. जिन, बुद्ध, (त्रि) सर्व-सम्वन्धीय; सवों का।
सार्व-जनीन, त्रि. सकल-जन-सम्वन्धीय। सब लोगों का, सारी धरती का
सार्व-भौम, पु. उत्तरदिशा का हाथी। शाहानशाह।
सार्व-लौकिक, त्रि. सर्वजनविदित। सब में प्रसिद्ध। मशहूर। [लोगों में का।
सार्व-विभक्तिक, त्रि. सर्वविभक्तिजात। सब
सार्षप, त्रि. सर्षप-सम्बन्धीय; सरसों का।
सार्ष्टि, स्त्री. मुक्तिविशेष। सायुज्य आदि ४ मुक्तियों मेसे एक।
साल, पु. शालमत्स्य, वृक्षमात्र, प्राचीर, (स्त्री)(ला) गृह। एक किसम की मछली, दरख़त, शहरपनाह, घर।
साल-निर्यास, पु. राल। [कंचनी।
साल-भञ्जिका, स्त्री. पुत्तलिका, वेश्या। पुतली,
साल-रस, पु. सालनिर्यास। राल।
सालार, न. द्रव्यरक्षणार्थ भित्तिस्थ कीलक। खूंटी।
सालूर, पु. मण्डूक; मेंडक।
सालोक्य, न. मुक्तिविशेष; भगवान् के तुल्य लोकमें लय। [(त्रि) साल्वदेशसम्वन्धीय।
साल्व, पु. विष्णुवध्य राक्षसविशेष, देश विशेष,
साल-वेष्ट, पु. धूनक। राल, तारपीन।
सा-वकाश, त्रि. कर्मरहितसमय, छिद्र। फ़ुरसत का वक़्त, सुराख़।
सावधान, त्रि. सचेतन। खबरदार, होशियार।
सावर, पु. लोध्र, पाप, अपराध। लोध, गुनाह, कसूर।
सावर्ण(र्णि), पु. सूर्यपुत्र, आठवां मनुः।

सावित्र, न. यज्ञोपवीत, (पु) ब्राह्मण, शङ्कर, वसु, सूर्य्य, गर्भ (स्त्री) (त्री) गायत्री, उमा, साल्वदेशीय बलवान राजपत्नी, ब्राह्मण पत्नी। जनेऊ, ब्राह्मण, शिव, हवा, आफ़ताब, गुह्र, पार्वती, सालदेश के राजा की जोरू।

सावित्री-पतित, पु. अतीतकालमें जिसका उपनय किया है।

सावित्री-व्रत, न. ज्येष्ठकृष्णचतुर्थी को कर्तव्य व्रत।

सावित्री, स्त्री. नदी विशेष। खास दर्या, गायत्री।

साहसी, त्रि. सहारेवाला। दलेर, बाहौसला।

साश्रुधी, स्त्री. श्वश्रू; सास।

सास्ना, स्त्री. गोगल कम्बल; गबगब। [सोहवत।

साहचर्य्य, न. सहचरत्व, सामानाधिकरण्य। साथ,

साहस, न. सज़ा, खराब काम, ज़बरजनाह, दुश्मनी, (पु) एक किसम की आग, होसला।

साहसिक, त्रि. साहसी। दलेर, बेख़ौफ़।

साहस्र, न. हज़ारहा, हज़ार (पु) हजारसे, खरीदा हुआ, जिस्केसाथ हज़ार हाथी हों।

साहयक / **साहय्य** न. साहायता, दोस्ती। मदद, आनुकूल्य।

साहित्य, न. मेलन, काव्यशास्त्रके अंग। अलंकारादि बोधक गद्य, ग्रंथ। [सनामक।

साह्वय, पु. मेंढा, दावलगाकरजूआ (त्रि)

सिंह, पु. स्वनामख्यात पशु, जिन की ध्वजा, पञ्चम राशि, (स्त्री) (ही) राहु की माता (हा) नाडी। शेर, रग।

सिंह-द्वार, न. बड़ी डेउढ़ी, कहक।

सिंह-ध्वनि(नाद), पु. बहादुरोंकी गर्जना, शेरकी गर्जना,।

सिंहमुख, न. हरितभूषणविशेष, शेरकामुख।

सिंह-विक्रान्त, पु. अश्व, घोड़ा, (त्रि) शेरके से बलवाला।

सिंहल, न. रङ्ग, रीति, त्वच (पु.स्त्री.) देशविशेष। उपद्वीप, सांग, पीतल, सीलोन टापू।

सिं(घा)हा(ण)न, न. लौहमल, नासिकामल, कफ, वाम, सींढ, खंगार।

सिंहासन, न. राजासन,। तख़्त। [माता।

सिंही(हिल्लका), स्त्री. कश्यपपत्नी। राहुकी

सिकता, स्त्री. वालुकामयभूमि। रेतली ज़मीन।

सिकता-मय, / **सिकतावत**, पु. रेतला स्थान। रेगस्तान।

सिकतिल, त्रि. रेतला देश। रेगस्तान।

सिक्त, सेकाश्रय; सींचा हुआ।

सिक्थ, न. स्त्री. मधूच्छिष्ट, रोम, नीलीवृक्ष, (पु) भक्त। मोम, वाल, नीलका पोदा, भात।

सिङ्ख(ङ्घा)ण(क), न. लोहमल; लोहेकी मैल, नासिकामल, कफ़, सींढ।

सिच्, त्रि. सींचनेवाला।

सिचय, पु. वस्त्र, जीर्णवस्त्र; कपड़ा, चीथड़ा।

सिञ्चत्, त्रि. सींचता हुआ।

सिञ्जन, न. अलङ्कारध्वनि; ज़ेवरों का आहट।

सिञ्जित, न. अलङ्कारध्वनि (त्रि) धनुर्गुणयुक्त। ज़ेवरों की आहट, चिल्लाचढ़ी हुई कमान वाला।

सित, न. रौप्य, मूलक, चन्दन, (पु.) शुक्लवर्ण। शुक्राचार्य, शर (त्रि) शुक्ल, समाप्त, ज्ञात, नष्ट, (स्त्री) (ता) खांड, सुपेद, दवाई।

सित-कण्ठ, पु. दात्यूह-पक्षी, (त्रि) श्वेत-कण्ठयुक्त।

सित-कर, पु. कर्पूर, चन्द्र; काफूर, महताब।

सित-कुञ्जर, पु. ऐरावत, इंद्र देवता, या उस्का-हाथी।

सित-च्छद, पु. हंस (स्त्री) (दा) श्वेत-दूर्वा।

सितां-शु, पु. चन्द्र, कर्पूर; चान्द, काफ़ूर।

सितांग, पु. मत्स्यविशेष; रोहू मछली।

सिता-दि, पु. गुड खण्ड चीनी।

सिता-भ्र(क), पु. न. कर्पूर; काफ़ूर।

सिता-म्भोज, न. श्वेत पद्म; सुपेद कमल।

सिता-श्व, पु. अर्जुन रूप पाण्डव, सफेद घोड़ा।

सिता-सित, पु. बलदेव, (त्रि) स्याह और सपेद।

सिति, पु. सपेदरंग, कालारंग, (स्त्री) बंधन।

सितिवार, पु. वृक्षविशेष, सुनिषण्णक। खास दरख़्त, बैठा हुआ।

सितिमन्, पु. श्वेतता। सुपेदी।

सिति-वासस्, पु. बलदेव; बलराम।

सिते-तर, पु. श्याम, कुलत्थ कलाय, शुक्ल भिन्नवर्ण। सफेद, कुलथकीदाल, नासुपेद, काला।

सितो-दर, पु. कुबेर, (त्रि) शुक्ल कुक्षियुक्त (न) शुक्लकुक्षि,। पानीकादेवता, सुपेद शिकम वाला, सुपेद शिकम।

सितो-त्पल, न. सुपेद कमल ।
सितोद्भव, पु. श्वेत चंदन, (त्रि) शर्कराजात; सुपेद संदल, चीनी का ।
सितो-पल, न. कठिनी, (पु) स्फटिक, (स्त्री) (ला) शर्करा । खड़िया, बिलौर, मिसरी ।
सिद्ध, (पु.) देवयोनिविशेष, व्यासादिमुनि, सप्तविंशतियोगान्तर्गत एकविंशयोग, व्यवहार, कृष्णधूस्तर, गुड़ (त्रि) प्रसिद्ध, नित्य, निष्पन्न, मुक्त, पक्व, सिद्धिविशिष्ट, विचारित, प्रमाणीकृत (स्त्री) (द्धा) ऋद्धि, योगिनीविशेष । सेंधा निमक, व्यास वगैरह संत, विष्कम्भ आदि २७ स योगों में से २१ सवां, स्याह धतूरा, मशहूर, दायम, तैयार, नजात याफ्तह, रिहा, पुख्तह, करामाती, सोंचा हुआ, मनजूर किया हुआ ।
सिद्ध-क्षेत्र, न. सिद्धों का स्थान ।
सिद्ध-गङ्गा, स्त्री. मन्दाकिनी; स्वर्ग की गंगा ।
सिद्ध-देव, पु. शिव, महादेव ।
सिद्ध-धातु, पु. पारद । सीमाब ।
सिद्ध-पीठ, पु. सिद्धस्थान । जहां पर लाख वेर बलिदान हुआ है, जहां कोड़ वेर होम और महाविद्या का मन्त्र जपा गया हो वह स्थान ।
सिद्ध-पुर, न. उत्तम नगर ।
सिद्ध-भूमि, स्त्री. सिद्धों की जा ।
सिद्ध-रस, पु. पारद; पारा । सीमाब ।
सिद्ध-साधन, न. सिद्धस्य पुनस्साधन, (पु) गौर सर्षप । सिद्ध का फिर सिद्ध करना, सेती सरसों ।
सिद्ध-सिन्धु, पु. गङ्गा नदी ।
सिद्ध-सेन, पु. कार्त्तिकेय; शिवजीका पुत्र ।
सिद्धा-देश, पु. सिद्धों की आज्ञा ।
सिद्धान्त, पु. राद्धान्त, नवविध ज्योतिर्ग्रन्थ । एतिराज़ों को रद्द करके एक को कायम करना, नतीजह । [व्याकरण की पुस्तक ।
सिद्धान्त कौमुदी, स्त्री. भट्टोजिदीक्षित कृत
सिद्धान्तिन्, पु. मीमांसक । फ़तवा दहिंदह ।
सिद्धा-र्थ, पु. जिनविशेष, श्वेत-सर्षप, वट वृक्ष, प्रसिद्धार्थ । सेती सरसों (त्रि) कामयाब ।
सिद्धि, स्त्री. दुर्गा, भगा, ऋद्धिनामकौषधि, पादुका, अन्तर्द्धि, वृद्धि, मोक्ष, सम्पत्ति, बुद्धि, फलोत्पत्ति, शुभ, पुरुषार्थ, ज्ञान, शुद्धि, जयलाभ, राजकीय त्रिविध सिद्धि यथा–प्रभाव मन्त्र उत्साह । देवी, जादू की खड़ां, छिपावट, तरक्की, नजात, हश्मत, अक़्ल कामयाबी, भलाई, इल्म, पाकीज़गी, फ़तहयाबी, बादशाहों की तीन ताक़तें ज़ोर, जादू, दलेरी ।
सिद्धि-योग, पु. शुक्रे नंदा, बुधे भद्रा, शनौ रिक्ता, कुजे जया, गुरौ पूर्णा च संयुक्तो सिद्धियोगः प्रकीर्तितः ।
सिद्ध-योगिनी, स्त्री. दक्षकी पचास लड़कियें जैसे–सती स्मृति स्वाहा ज्योति अनुसूया स्वधा वगैरह । [एक ।
सिध्मन्, न. सात क़िसम के बड़े कोढ़ों में से
सिध्मल, त्रि. किलास रोगी (स्त्री) (ला) मांसविकृति । कोढ़ड़ी, कोढ़ ।
सिध्य, पु. पुष्यनक्षत्र; २७ में से ८ वां ।
सिन, न. शरीर, (पु) ग्रास, काण, (त्रि) शुक्ल । जिसम, लुक़मा, काना, सुफ़ेद ।
सिनीवाली, स्त्री. चतुर्दशीयुक्ता अमावास्या, दुर्गा । चौदस के संग मिली हुई अमावस, देवी ।
सिन्दु-वार, पु. वृक्षविशेष; ख़ास पेड़ ।
सिन्दूर, न. रक्तवर्ण चूर्णविशेष; (पु) वृक्षविशेष, हस्ती । संधूर, ख़ास एक दरख़्त, हाथी ।
सिन्धु, पु. समुद्र, श्मश्रु, देशविशेष, नदविशेष, श्वेतटङ्कन, रागविशेष, हस्ती (स्त्री) (न्धू) नदी । बहर, सिंध का मुल्क, सिंध दर्या, सुपेद सुहागा, नाम एक राग का, फ़ील, दर्या ।
सिन्धु-नाथ, पु. समुद्र; समुंदर ।
सिन्धु-मातृ, पु. स्त्री. नदियों की माता, समुद्र ।
सिन्धुवार(क), } पु. हयोत्तम, वृक्षविशेष । उमदह घोड़ा, इन्द्राणी बूटी ।
सिन्धुवारित, }
सिप्र, न. सरोवरविशेष, (पु) चन्द्र, घर्म्म (स्त्री) (प्रा) नदीविशेष । नाम एक तालाब का, माहताब, पसीना, उज्जैन के पास की नदी ।
सिम, पु. समुदाय । कुल ।
सिम्बा, स्त्री. शमी, शुण्ठी । जंडी, सोंठ ।
सिर, पु. पिप्पलीमूल (स्त्री) (रा) नाड़ी । पीपलामूल, रग़ ।
सिराल, त्रि. बहुत नाड़ियां वाला ।

सुख-द, पु. विष्णु, (त्रि) सुखप्रद, (स्त्री) (दा) गङ्गा, सुखदात्री, स्वर्गवेश्या, शमीवृक्ष, (न) विष्णु-सिंहासन ।
सुख-भाज्, त्रि. सुखी; सुखिया ।
सुख-मोदा, स्त्री. सल्लकी वृक्ष ।
सुख-रात्रि, स्त्री. दीवाली की रात, लक्ष्मी ।
सुख-वेदन, न. मनोगत सुखानुभव । सुख का जानना ।
सुखा-वह, त्रि. सुखिया, सुखदाता ।
सुखा-श, पु. वरुण (त्रि) शोभनाशायुक्त ।
सुख-शालिन्, त्रि. सुखान्वित; सुखिया ।
सुखा-धार, पु. स्वर्ग, (त्रि) सुखाश्रय । बहिश्त, सुख का स्थान ।
सुखा-यत, पु. सुशिक्षिताश्व; सीखा हुआ घोड़ा ।
सुखा-र्थ, व्य. सुखनिमित्त । आराम के लिये ।
सुखा-र्थिन्, पु. सुखाभिलाषी। आराम चाहने वाला।
सुखो-पविष्ट, त्रि. सुखासीन । आराम से बैठा हुआ । [मशहूर, मशहूरी ।
सु-ख्यात, त्रि. यशस्वी (स्त्री) (ति) कीर्ति, यश ।
सुग, न. विष्ठा, (त्रि) सुन्दरगमनकारी । गूह, आराम से चलने वाला ।
सु-गत, पु. बुद्ध, (त्रि) सुन्दरगमनशील ।
सु-गति, स्त्री. खुशी । अच्छी हालत ।
सु-गन्ध, पु. रक्तशिग्रु, गन्धक, चनक, भूतृण, (स्त्री) (न्धा) रास्ना, शटी, रुद्र जटा, वन्ध्याकर्कोटकी, पृक्का, माधवी, अनन्ता ।
सुगन्धि, पु. सद्गन्धि युक्ताम्र वृक्ष (त्रि) सद्गन्धयुक्त, धार्मिक, (न) एलवालुक, मुस्ता । खुशबूई, खुशबूदार आम, ईमान्दार, एलुआ, मुस्था ।
सु-गम, त्रि. अनायास लभ्य, । आसानीसे प्राप्त होनेके लायक ।
सुगहन, त्रि. निबडवन (स्त्री) (ना) बड़ा गाढ़ा जंगल, यज्ञकी वेदीमें अस्पृश्य दर्शन करानेके लिये निर्विकाश स्थान । [करने लायक ।
सु-गम्य, त्रि. सहज प्राप्ति योग्य। आसानी से प्राप्त
सु-गव, पु. उत्तम सांढ ।
सु गीत, न. सुंदर गान, (स्त्री) (ति) छन्दोविशेष ।
सु-ग्रह, त्रि. निगृहा हुआ, भली भान्ति पकड़ा हुआ ।
सु-ग्रीव, पु. श्रीकृष्णाश्व, वानर, राज्य, शिव, इंद्र, राजहंस, असुर, पर्वतविशेष, अस्त्रविशेष, नागविशेष, शोभनग्रीवावान्, (स्त्री) (वी) कश्यप की कन्या । [तिहि नष्ट हुईहो ।
सुग्ल, त्रि. हर्ष क्षय विशिष्ट । जिसकी खुशी हो
सु-घटन, न. सुयोग । उमदह मौकह ।
सु-घोष, पु. उत्तम शब्द । उमदह आवाज़ ।
सुचरित(त्र), त्रि. उत्तम स्वभावविशिष्ट (न) सुचरित्रा नेकचलन वाला, नेकचलनी ।
सु-चारु, त्रि. अति मनोहर, सुन्दर । दिलचस्प, खूबसूरत ।
सु-चुटी, स्त्री. आम्याशुद्धारणार्थ लौहयन्त्र; चिमटा।
सु-चेतस्, त्रि. सन्तुष्ट चित्त, सतर्क । खुशदिल ।
सु छत्री, स्त्री. शतद्रुनदी; सतलुजदरया ।
सु-जन, पु. साधु, इन्द्र, सारथी ।
सुजनता, स्त्री. सुशीलता, इन्सानीयत, अच्छे आदमियोंका झुण्ड ।
सु-जन्मन्, त्रि. उत्तम जन्मवाला ।
सु-जय, पु. अच्छी फतह । [वर्धाय, ।
सु-जल, न. कमल, सुन्दर सलिल (त्रि) सुजल सं-
सु-जीर्ण, त्रि. अति पुरातन । निहायत पुराना ।
सु-जीवित, त्रि. उत्तम गुज़ारेवाला ।
सु-ज्ञ, त्रि. ज्ञानी । आलिम ।
सु-ज्ञान, न. । उमदा इल्म (त्रि) आलिम ।
सुत, त्रि. पुत्र (स्त्री) (ता) कन्या; बेटा, दुख्तर ।
सु तपस्, पु सूर्य्य, मुनिविशेष, शोभनतपस्यायुक्त।
सु तर(ण) त्रि. सहजतरन योग्य ।
सुतराम्, व्य. अवश्य, अत्यन्त, अगला । ज़रूर, निहायत, लाचार ।
सुतर्द्दन, पु. कोकिल, पिक; कोइल ।
सु-तर्मन, त्रि. जहाज़ । [पाताल ।
सु-तल, पु. अट्टालिका, षष्ठपाताल । अटारी, छठा
सुतार, त्रि. बहुत साफ सुथरा । [तार ।
सुतिन्, त्रि. पुत्रवान्, मुनिविशेष, त्रि. अति तीखा
सु-तीर्थ, न. सुन्दर, घाद (त्रि) उत्तमतीर्थ ।
सु-तुङ्ग, पु. नारकेल वृक्ष, (त्रि) अत्युच्च । नारयेलका दरखत, बहुत ऊंचा ।
सुत्या, स्त्री. यज्ञिय स्नानविशेष, यज्ञ ।
सुत्रामन, पु. इद्र; देवताओंका राजा ।

सिवर, पु. हस्ती; हाथी । फ़ील ।
सिषाधयिषा, स्त्री. साधनेच्छा; सिद्ध करने या साबित करने की मरज़ी ।
सिसृक्षा, स्त्री. सृष्टिकरणेच्छा; सृजन करने की मरज़ी ।
सिसृक्षु, त्रि. सृजन की इच्छावाला ।
सिल्ह, पु. सिल्हा । हीराकसीस ।
सी(शी)कर, पु. शीकर; पानी का क़तरा ।
सीता, स्त्री. लाङ्गलपद्धति, जनकपुत्री, लक्ष्मी, उमा, मदिरा, गङ्गास्रोतः । हलका फाला, राजा जनक की बेटी, पार्वती, शराब, गंगा की धार ।
सीता-द्रव्य, पु. खाती के हाथियार ।
सीता पति, पु. श्रीराम; दशरथ का बेटा ।
सीत्कार, पु. } गुणानुरागजात शब्द, अव्यक्त सुखशब्द । सी २ की अवाज़ ।
सीत्कृत, न. }
सील्य, न. धान्य, (त्रि) कृष्टक्षेत्रादि; धान, अनाज, हल चला हुआ खेत ।
सीद्य, न. आलस्य । सुस्ती ।
सीधु, पु. मद्य, कदम्ब पुष्प जात मद्य । शराब, कदम फूलों की शराब ।
सीधु-रस, आम्रवृक्ष; आम का पेड़ ।
सीध्र, न. गुह्य-द्वार; गांड़ ।
सीमन्त, पु. केशवीथी, संस्कारविशेष (पु. न.) शिरः । मांग, सर ।
सीमन्तक, न. सिन्दूर, (पु) अधम जीव (स्त्री) (का) सिर की मांग कढानी ।
सीमन्तिनी, स्त्री. नारी, वधू । औरत, जोरू ।
सीमन्तोन्नयन, न. चतुर्थ षष्ठ वा अष्टममासे कर्त्तव्यगर्भसंस्कारविशेष, सौर, सिर गुंदाना ।
सीमा, स्त्री. मर्य्यादा, क्षेत्र, तीर, अण्डकोष । हद्द, वयज़ा खेत, किनारा ।
सीमा-ज्ञान, स्त्री. हद्दोंका न जानना ।
सीमा न्त, पु. हद्द का आख़री स्थान ।
सीमा-वाद, पु. सीमा का झगड़ा ।
सीमा-विवाद, पु. सीमाविषयक विवाद । हद्दों का मुक़द्दमा ।
सीर, पु. सूर्य्य, हल, अर्कवृक्ष (स्त्री) (री) घड़की ।
सीरक, पु. जल-जन्तुविशेष; शिशुमार ।
सीर-पाणि, पु. बलदेव; श्रीकृष्ण का भईया ।
सीर-वाह, त्रि. हलचलानेवाला ।
सीरिन्, पु. बलदेव ।
सीलाची, स्त्री. एक ख़ास योधा ।
सीस(क), पु. सीसक; सीसा धांत ।
सु, व्य. पूजा, निर्भर, अनुमति, कृच्छ्र, समृद्धि, क्षनायास उत्तम, सुन्दर, शुभ, अत्यन्त । इबादत, भरोसा, इजाज़त, मुश्कलात, तरक्की, सहूलियत, उमदगी, ख़ूबसूरती, नेकी, निहायत इन सब अर्थोंके लताने मेयह उपसर्ग आता है ।
सु-कथा, स्त्री. उमदा कहानी ।
सु-कन्दक, पु. पलाण्डु; प्याज़ ।
सु-कर, त्रि. सुसाध्य (स्त्री) (रा) सुशीला गौ, (न) दातत्व । आसान, ग़रीब गाय, फ़याज़ी ।
सु-कर्म्मन्, पु. विश्वकर्म्मा, योगविशेष, (त्रि) कर्म्मठ । देवताओं का मिस्तरी, ७ वां योग, चालाक ।
सु-कल, त्रि. दाता, भोक्ता, अविकल ।
सु-कल्प, त्रि. सुगम । सुखाला ।
सुकाण्डिन्, पु. भ्रमर, सुन्दर काण्ड युक्त । भौंरा, शहद की मक्खी ।
सुकालिन्, पु. गोत्रप्रवर्तक मुनिविशेष ।
सु-कीर्ति, त्रि. नेक नाम (स्त्री) नेकनामी ।
सु-कुचा, स्त्री. सुन्दर जिसके पिस्तान हैं ।
सु-कुन्दक, पु. पलाण्डु; पियाज़ ।
सु-कुमार, पु. कोमल, उत्तम-बालक, वनचम्पक, श्यामाक, दैत्यविशेष । नरम, छोटा बालक ।
सु-कृत, न. पुण्य, शुभ, (त्रि) पुण्यात्मा (स्त्री) (ति) पुण्य, मङ्गल, सुकर्म्म ।
सुकृतिन्, त्रि. पुण्यवान्, धार्म्मिक । दाना, ईमान्दार, क़िस्मतवर, फ़याज़ ।
सु-केश, स्त्री. (शी) स्वर्गवेश्या, (त्रि) शोभनकेश, (पु) राक्षसराजविशेष । उमदह बालों वाला, नाम देवों के बादशाह का, हूर ।
सुख, न. आनन्द, स्वर्ग, ऋद्धिनामौषधि, जल, (त्रि) सुखी, प्रिय, मनोहर, मधुर (स्त्री) (खा) वरुणपुरी । आराम, ख़ुशी, बहिश्त, नाम एक दवाई का, पानी, ख़ुश, महिबूब, दिलचसप, मीठा ।
सुख-चार, पु. उत्कृष्टाश्व । उमदह घोड़ा ।
सुख-जात, त्रि. सुखी ।

सुख-द, पु. विष्णु, (त्रि) सुखप्रद, (स्त्री) (दा) गङ्गा, सुखदात्री, स्वर्गवेश्या, शमीवृक्ष, (न) विष्णु-सिंहासन।

सुख-भाज्, त्रि. सुखी; सुखिया।

सुख-मोदा, स्त्री. सल्लकी वृक्ष।

सुख-रात्रि, स्त्री. दीवाली की रात, लक्ष्मी।

सुख-वेदन, न. मनोगत सुखानुभव। सुख का जानना।

सुखा-वह, त्रि. सुखिया, सुखदाता।

सुखा-श, पु. वरुण (त्रि) शोभनाशायुक्त।

सुख-शालिन्, त्रि. सुखान्वित; सुखिया।

सुखा-धार, पु. स्वर्ग, (त्रि) सुखाश्रय। बहिश्त, सुख का स्थान।

सुखा-यत, पु. सुशिक्षिताश्व; सीखा हुआ घोड़ा।

सुखा-र्थ, व्य. सुखनिमित्त। आराम के लिये।

सुखा-र्थिन्, पु. सुखाभिलाषी। आराम चाहने वाला।

सुखो-पविष्ट, त्रि. सुखासीन। आराम से बैठा हुआ। [मशहूर, मशहूरी।

सु-ख्यात, त्रि. यशस्वी (स्त्री) (ति) कीर्ति, यश।

सुग, न. विष्ठा, (त्रि) सुन्दरगमनकारी। गूंह, आराम से चलने वाला।

सु-गत, पु. बुद्ध, (त्रि) सुन्दरगमनशील।

सु-गति, स्त्री. खुशी। अच्छी हालत।

सु-गन्ध, पु. रक्तशिग्रु, गन्धक, चनक, भूतृण, (स्त्री) (न्धा) रास्ना, शटी, रुद्र जटा, वन्ध्या-कर्कोटकी, वृक्का, माधवी, अनन्ता।

सुगन्धि, पु. सद्गन्धि युक्ताम्र वृक्ष (त्रि) सद्गन्धयुक्त, धार्मिक, (न) एलवालुक, मुस्ता। खुशबूई, खुशबूदार आम, ईमान्दार, एलुआ, मुत्थां।

सु-गम, त्रि. अनायास लभ्य,। आसानीसे प्राप्त होनेके लायक।

सुगहन, त्रि. निवडवन (स्त्री) (ना) बड़ा गाढ़ा जंगल, यज्ञकी वेदीमें अस्पृश्य दर्शन करानेके लिये निर्विकाश स्थान। [करने लायक।

सु-गम्य, त्रि. सहज प्राप्ति योग्य। आसानी से प्राप्त

सु-गव, पु. उत्तम सांड।

सु गीत, न. सुंदर गान, (स्त्री) (ति) छन्दोविशेष।

सु-ग्रह, त्रि. निगला हुआ, भली भान्ति पकड़ा हुआ।

सु-ग्रीव, पु. श्रीकृष्णाश्व, वानर, राज्य, शिव, इंद्र, राजहंस, असुर, पर्वतविशेष, अस्त्रविशेष, नागविशेष, शोभनग्रीवावान्, (स्त्री) (वी) कश्यप की कन्या। [तिहि नष्ट हुईहो।

सुग्ल, त्रि. हर्ष क्षय विशिष्ट। जिसकी खुशी हो

सु-घटन, न. सुयोग। उमदह मौकह।

सु-घोष, पु. उत्तम शब्द। उमदह आवाज़।

सुचरित(त्र), त्रि. उत्तम स्वभावविशिष्ट (न) सुचरित्रा नेकचलन वाला, नेकचलनी।

सु-चारु, त्रि. अति मनोहर, सुन्दर। दिलचसप, खूबसूरत।

सु-चुटी, स्त्री. आम्याद्युद्धारणार्थ लौहयन्त्र; चिमटा।

सु-चेतस्, त्रि. सन्तुष्ट चित्त, सतर्क। खुशदिल।

सु छत्री, स्त्री. शतद्रुनदी; सतलुजदरया।

सु-जन, पु. साधु, इन्द्र, सारथी।

सुजनता, स्त्री. सुशीलता, इन्सानीयत, अच्छे आदमियोंका झुण्ड।

सु-जन्मन्, त्रि. उत्तम जन्मवाला।

सु-जय, पु. अच्छी फतह। [विधीय,।

सु-जल, न. कमल, सुन्दर सलिल (त्रि) सुजल सं-

सु-जीर्ण, त्रि. अति पुरातन। निहायत पुराना।

सु-जीवित, त्रि. उत्तम गुजारेवाला।

सु-ज्ञ, त्रि. ज्ञानी। आलिम।

सु-ज्ञान, न.। उमदा इल्म (त्रि) आलिम।

सुत, त्रि. पुत्र (स्त्री) (ता) कन्या; बेटा, दुख्तार।

सु तपस्, पु सूर्य्य, मुनिविशेष, शोभनतपस्यायुक्त।

सु तर(ण) त्रि. सहजतरन योग्य।

सुतराम्, व्य. अवश्य, अत्यन्त, अगला। ज़रूर, निहायत, लाचार।

सुतर्दन, पु. कोकिल, पिक; कोइल।

सु-तर्मन, त्रि. जहाज़। [पाताल।

सु-तल, पु. अट्टालिका, षष्ठपाताल। अटारी, छटा

सुतार, त्रि. बहुत साफ सुथरा। [तार।

सुतिन्, त्रि. पुत्रवान्, मुनिविशेष, त्रि. अति तीव्र

सु-तीर्थ, न. सुन्दर, बाद (त्रि) उत्तमतीर्थ।

सु-तुङ्ग, पु. नारकेल वृक्ष, (त्रि) अत्युच्च। नारयेलका दरखत, बहुत ऊंचा।

सुत्या, स्त्री. यज्ञिय स्नानविशेष, यज्ञ।

सुत्रामन, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा।

सुन्द, पु. वानरविशेष, राक्षस विशेष, नारायण-पार्षद ।

सुन्दर, त्रि. मनोहर, (पु) कामदेव, वृक्षविशेष । (स्त्री) (री) रूपलावण्यसम्पन्नास्त्री, हरिद्रा, पुर-सुन्दरी, योगिनीविशेष । दिलचस्प, खूबसूरत, खास एक पेड़, नाज़नीन, हल्दी ।

सु-पक्व, पु. आम, (त्रि) शोभनपरिणत । एक किस्म आमकी, पुख्तह । [पकानेवाला ।

सु-पक्ष, त्रि. सुन्दर पक्ष वाला ।

सु-पच्, त्रि. लघुपाक, उत्तम-पाचक । उमदह

सु-पत्र, न. तेजपत्र, (पु) आदित्यपत्र, पल्लिवाहतृण, (स्त्री) (त्रा) रुद्रजटा, शतावरी, पालक्य, शमी, शालपर्णी ।

सु-पथ, पु. सन्मार्ग, (त्रि) शोभनमार्गयुक्त । राह रास्त, जिस्का अच्छा रास्ताहो ।

सुपथिन्, पु. सत्पथ । राह रास्त ।

सु-पद्म, पु. शोभनपद्म, (त्रि) शोभन पद्म विशिष्ट । (स्त्री) (द्मा) वचा । उमदहकमल, जहांपर उमदह कमल हों, वच ।

सु-पर्ण, पु. गरुड, स्वर्ण पर्ण पक्षी (त्रि) शोभनपर्ण-विशिष्ट, (स्त्री) (र्णा) पद्मिनी, पार्वती, दुर्गा ।

सुपर्णाख्य, पु. नागकेसर ।

सुपर्याप्त, त्रि. पूरा पूरा । काफ़ी ।

सु-पर्व्वन्, पु. देवता, बाण वंश, पर्व, धूम, (स्त्री) श्वेतदूर्वा, सुन्दर पर्व विशिष्टा ।

सु-पात्र, न. योग्य व्यक्ति, शोभन पात्र, (त्रि) उत्तमपात्रयुक्त, । लायक शख़्स, खूबवर्तन, जिसकेपास उमदहवर्तन हों ।

सु-पार्श्व, पु. चतुर्विंशति जिनान्तर्गत जिनविशेष, प्लक्ष वृक्ष, पक्षीविशेष, । चौबीस जिनोंमेंसे एक, पिलखनकादरख़्त, संपातीका बेटा ।

सुपिवन्, पु. शोभनपान कर्त्ता । अच्छा पीनेवाला ।

सुपूर, पु. बीजपूर; नारंगी ।

सुप्त, न. सुषुप्ति, निद्रा (त्रि) निद्रित, (स्त्री) (प्ति) विश्राम । नींद, सोयाहुआ, आराम ।

सुप्त-घातिन्, त्रि. निद्रित वधकारी । सोएहुएका क़ातिल, अश्वत्थामा ।

सुप्त-ज्ञान, न. स्वप्न । ख़्वाब ।

सुप्रतिष्ठा, स्त्री. पञ्चाक्षरवृत्तिछन्द ।

सुप्रतिष्ठित, पु. उदुम्बरवृक्ष, (त्रि) सुन्दरप्रतिष्ठा-युक्त, । गूलरका पेड़, मुअज़्ज़िज़, स्थापन किया हुआ ।

सुप्रतीक, पु. ईशान दिग्गज, शिव, कामदेव, शोभनाङ्ग, (त्रि) सुन्दरावयवी । ईशान का हाथी, उमदह जिसम, जिसके औज़ा उमदह हों ।

सुप्रचुर, त्रि. विजयसे आगे बढ़ा हुआ ।

सु-प्रपाण, न. पीनेकी जगह । प्याऊ ।

सु-प्रभ, पु. शुक्रप्रभ, (त्रि) सुन्दरप्रभायुक्त, (स्त्री) (भा) अग्नि जिह्वाविशेष, शोभनदीप्ति । चमकीला, शानदार, अग्निदेवताकी सात जुबानोंमेंसे एक, चमक ।

सु-प्रभात, न. शुभसूचक प्रातः, प्राभातिक मंगल, वाक्य, (स्त्री) (ता) नदीविशेष, शोभन प्रभात युता रात्रि । नेक सुबह, सुबहकी नेक कलाम, एक दर्या, नेक सुबह शब ।

सु-प्रसन्न, पु. कुबेर, (त्रि) सुप्रसादयुक्त । खुश-हुआ हुआ । [रवान, खुशी, मेहरवानी ।

सु-प्रसाद, पु. शिव, सुप्रसन्नता, (त्रि) बहुत मेह-

सु-प्रसिद्ध, त्रि. विख्यात । मशहूर ।

सु-प्रसू, त्रि. सहज जन्मा हुआ ।

सु-फल, पु. कर्णिकार, दाडिम, बदिर, मुद्ग, कपित्थ, स्त्री. (ला) इन्द्रवारुणी, कूष्माण्डी, काश्मरी, कपिलद्राक्षा (त्रि) शोभन फलयुक्त, । कनेर, अनार, बेर, मूंग ।

सु-बंधु, त्रि. निकट संबंधी, मित्र, (पु) कविविशेष ।

सु-बहु, त्रि. बहुतसारा ।

सु-बाल, त्रि. बच्चा, मूर्ख, ।

सु-बाहु, त्रि. सुंदर भुजावाला (पु.) राक्षस विशेष ।

सुभग, पु. टङ्कण, चम्पक, अशोक, (त्रि) सुहृदय, प्रिय, भाग्यवान्, सुखदाता, (स्त्री) (गा) हरिद्रा, नीलदूर्वा, तुलसी, कस्तूरी, प्रियंगू, पतिप्रिया । सुहागा, चम्पा, खास-दरखत, खुशनुमा, प्यारा, हल्दी, दूब, कंगनी शौहर की प्यारी ।

सुभग-मन्य, त्रि. अपने आपको खुश माननेवाला ।

सु-भङ्ग, पु. नारिकेल वृक्ष, नारियलका दरख़्त ।

सु-भट, पु. योधा । जङ्गी ।

सु-भद्र, पु. विष्णु, विष्णुपार्षद (स्त्री) (द्रा) श्यामालता, घृतमराडा, काश्मीरी, श्रीकृष्णभगीनी, (त्रि) नेक ।

सुत्वन्, पु. यज्ञाङ्ग स्नानकारी, सोमपा ।
सु-दक्षिण, पु. विदर्भदेशकाराजा (स्त्री) (णा) दिलीपराजा की स्त्री, (त्रि) उत्तम, दक्षिणयुक्त, अनुकूल ।
सु-दण्ड, पु. वेत्र; वेत ।
सु-दत्, त्रि. शोभनदन्त । खूबसूरत दांतवाला ।
सु-दन्त, पु. नट, शोभनदन्त, (स्त्री) (न्ती) दिग्गज पत्नी । नचार, खूबसूरत दान्त ।
सु-दय, त्रि.| **सुदर्श(न)**, | इंद्र नगर, कृष्णचक्र, (पु) सुन्दर, इन्द्र राजाका शहर, कृष्णका चक्र, गीध, खूबसूरत । [दवाई ।
सुदर्शन-चूर्ण, न. ज्वरौषधिविशेष । बुखार की
सु-दामन्, पु. मेघ, पर्वत, गोपविशेष, समुद्र, ऐरावत, श्रीकृष्णभक्त विप्रविशेष, (त्रि) सुदाता, (स्त्री) नदी विशेष, । अबर, पहाड़, ग्वाला, बहर, इन्द्रकाहाथी, सुदामा मिश्र, फय्याज़, नाम दर्याका ।
सु-दाय, पु. यौतुकादि, पितृ, मातृ, भ्रातृ, कुलसंबंधीय ।
सुदि, व्य. शुक्लपक्ष; चांदनापक्ष ।
सुदिन, न. उत्तम दिन; अच्छादिन ।
सुदुष्कर, त्रि. अति क्लेशकर । मुश्किल ।
सु-दुस्तर, त्रि. दुष्पार । बेगुज़र ।
सु-दूर, त्रि. बहुत दूरका ।
सु-दृश, त्रि. सुचक्षु, (न) सुन्दर चक्षु । खूबसूरत आखों वाला । खूबसूरत आंख ।
सु-दृढ, न. गाढ, (त्रि) अतिकठिन । संघना, मज़बूत, ज्यादह सख्त, । [शनुमा ।
सु-दृश्य, त्रि. शोभनीय, दर्शनीय । खूबसूरत, खु-
सु-द्युम्न, पु. वैवस्वत मनु-पुत्र । वैवस्वत मनु का बेटा ।
सु-धन्वन्, त्रि. उत्तम धनुर्द्धारी (पु) विश्वकर्म्मा राजाविशेष । आच्छा तीरंदाज़ ।
सु-धर्म्म, पु. जिन गणाधिपविशेष, (स्त्री) (र्म्मा) (र्म्मी) देवसभा, (त्रि) अतिधार्म्मिक ।
सु-धर्म्मन्, त्रि. न्यायवान्, धर्म्मी, सच्चा । मुन्सिफ़ ।
सुधा, स्त्री. अमृत, लेपन, चूना, मूर्वा, स्नुही, गङ्गा, इष्टका, विद्युत, रस, जल, धात्री, हरीतकी, मधु, शालपर्णी ।
सुधांशु, पु. चन्द्र, । माहताब ।
सुधांशु-रत्न, न. मौक्तिक; मोती ।
सुधा-क(का)र | **सुधा-निधि**, | चन्द्र, सुधाकर । माहताब ।
सुधात, त्रि. अच्छा साफ़ किया हुआ, ।
सु-धातु, त्रि. अच्छी भांतिकी नीमवाला ।
सुधा-धारा, स्त्री. अमृतकी धारा ।
सुधा-पाणि, पु. धन्वन्तरि; देवताओंका तबीब ।
सुधा-भुज्, पु. देवता (त्रि) अमृत-भोजी ।
सुधा-भृति, पु. चंद्र, यज्ञ; चांद ।
सुधा-भूति, पु. यज्ञ, चंद्र, पद्म; चांद, कौलफूल ।
सुधा-हर, पु. गरुड, वैनतेय; विनताका बेटा ।
सुधा-हृत, पु. पक्षिराज; गरुड़ ।
सुधिति, त्रि. अच्छीतरह तरतीब किया हुआ ।
सु-धीर, पु. अतिशिष्ट । नेकचलन ।
सुधुर, त्रि. जूआ वा हलचलानेवाला घोड़ा, वा बैल ।
सुधोद्भव, पु. धन्वन्तरि (स्त्री) (वा) हरीतकी स्वर्ग वैद्य, हरीड़ ।
सुनन्द, पु. कृष्णपार्षद वि०, द्वादशविध राजगृहान्तर्गत गृहविशेष, (स्त्री) (न्दा) उमा, गोरोचना, उमा सखी विशेष, अर्कपत्री वृक्ष (न) बलदेवका मूसल, कृष्णजीका दरबान, एक किसका बादशाही पहल, पार्वती, गोरोचन ।
सु-नय, पु. नेक चलनी, दानाई, अखलाक़ ।
सु-नयन, पु. मृग (त्रि) शोभनचक्षुयुक्त, (स्त्री) (ना) रमणी, हरिणी । उम्दह । [वाला ।
सुना-भ, पु. मैनाकपर्वत, हिमालयका पुत्र । चश्म-
सुनार, पु. कुत्तीका दूध, सांपकी आंड, अबाबील ।
सु(शु)नासीर, पु. इन्द्र, देवताओंका राजा ।
सु-नीत, त्रि. सुनीतियुक्त, (स्त्री) (ति) शोभननीति, ध्रुवमाता (न) (तं) अखलाक मंद । नेक अखलाक़, ध्रुवकी माता ।
सुनीहार, त्रि. कोहर वाला, पु. कोहर ।
सुनील, पु. दाडिम, (न) सुन्दर नील वर्ण (स्त्री) (ला) अतसी, विष्णुक्रान्ता । जरती तृण ।
सुनु, न. जल, पुत्र । पानी, बेटा ।
सुनृत, त्रि. सच्ची और प्यारी बात ।
सुनौ, त्रि. शोभन नौकाविशिष्ट, (स्त्री) शोभन नौका । जिस्की उमदह नाव हो, उमदह नाव ।

सुन्द, पु. वानरविशेष, राक्षस विशेष, नारायण-पार्षद ।

सुन्दर, त्रि. मनोहर, (पु) कामदेव, वृक्षविशेष । (स्त्री) (री) रूपलावण्यसम्पन्नास्त्री, हरिद्रा, पुर-सुन्दरी, योगिनीविशेष । दिलचस्प, खूबसूरत, खास एक पेड़, नाजनीन, हल्दी ।

सु-पक्क, पु. आम, (त्रि) शोभनपरिणत । एक किस्म आमकी, पुख्तह ।

सु-पक्ष, त्रि. सुन्दर पक्ष वाला ।

सु-पच्, त्रि. लघुपाक, उत्तम-पाचक । उमदह पकानेवाला ।

सु-पत्र, न. तेजपत्र, (पु) आदित्यपत्र, पल्लिवाहतृण, (स्त्री) (त्रा) रुद्रजटा, शतावरी, पालक्य, शमी, शालपर्णी ।

सु-पथ, पु. सन्मार्ग, (त्रि) शोभनमार्गयुक्त । राह रास्त, जिस्का अच्छा रास्ताहो ।

सुपथिन्, पु. सत्पथ । राह रास्त ।

सु-पद्म, पु. शोभनपद्म, (त्रि) शोभन पद्म विशिष्ट । (स्त्री) (द्मा) वचा । उमदहकमल, जहांपर उमदह कमल हों, बच ।

सु-पर्ण, पु. गरुड, स्वर्ण पर्ण पक्षी (त्रि) शोभनपर्ण-विशिष्ट, (स्त्री) (र्णा) पद्मिनी, पार्वती, दुर्गा ।

सुपर्णाख्य, पु. नागकेसर ।

सुपर्याप्त, त्रि. पूरा पूरा । काफ़ी ।

सु-पर्व्वन्, पु. देवता, बाण वंश, पर्व, धूम, (स्त्री) श्वेतदूर्वा, सुन्दर पर्व विशिष्टा ।

सु-पात्र, न. योग्य व्यक्ति, शोभन पात्र, (त्रि) उत्तमपात्रयुक्त, । लायक शख़्स, खूबवर्तन, जिसकेपास उमदहवर्तन हों ।

सु-पार्श्व, पु. चतुर्विंशति जिनान्तर्गत जिनविशेष, प्लक्ष वृक्ष, पक्षीविशेष, । चौबीस जिनोंमेंसे एक, पिलखनकादरख़त, संपातीका बेटा ।

सुपिबन्, पु. शोभनपान कर्त्ता । अच्छा पीनेवाला ।

सुपूर, पु. बीजपूर; नारंगी ।

सुप्त, न. सुषुप्ति, निद्रा (त्रि) निद्रित, (स्त्री) (प्ति) विश्राम । नींद, सोयाहुआ, आराम ।

सुप्त-घातिन्, त्रि. निद्रित वधकारी । सोएहुएका कातिल, अश्वत्थामा ।

सुप्त-ज्ञान, न. स्वप्न । ख़्वाब ।

सुप्रतिष्ठा, स्त्री. पञ्चाक्षरवृत्तिछन्द ।

सुप्रतिष्ठित, पु. उडुम्बरवृक्ष, (त्रि) सुन्दरप्रतिष्ठा-युक्त, । गूलरका पेड़, मुअज़्ज़िज़, स्थापन किया हुआ ।

सुप्रतीक, पु. ईशान दिग्गज, शिव, कामदेव, शोभनाङ्ग, (त्रि) सुन्दरावयवी । ईशान का हाथी, उमदह जिसम, जिसके औज़ा उमदह हों ।

सुप्रचुर, त्रि. विजयसे आगे बढ़ा हुआ ।

सु-प्रपाण, न. पीनेकी जगह । प्याऊ ।

सु-प्रभ, पु. शुक्रप्रभ, (त्रि) सुन्दरप्रभायुक्त, (स्त्री) (भा) अग्नि जिव्हाविशेष, शोभनदीप्ति । चमकीला, शानदार, अग्निदेवताकी सात जुबानोमेसे एक, चमक ।

सु-प्रभात, न. शुभसूचक प्रातः, प्राभातिक मंगल, वाक्य, (स्त्री) (ता) नदीविशेष, शोभन प्रभात युता रात्रि । नेक सुबह, सुबहकी नेक कलाम, एक दर्या, नेक सुबह शब ।

सु-प्रसन्न, पु. कुबेर, (त्रि) सुप्रसादयुक्त । खुश-हुआ हुआ ।

सु-प्रसाद, पु. शिव, सुप्रसन्नता, (त्रि) बहुत मेह-रबान, खुशी, मेहरबानी ।

सु-प्रसिद्ध, त्रि. विख्यात । मशहूर ।

सु-प्रसू, त्रि. सहज जन्मा हुआ ।

सु-फल, पु. कर्णिकार, दाडिम, बदिर, मुद्ग, कपित्थ, स्त्री. (ला) इन्द्रवारुणी, कूष्माण्डी, काश्मरी, कपिलद्राक्षा (त्रि) शोभन फलयुक्त, । कनेर, अनार, बेर, मूंग ।

सु-बंधु, त्रि. निकट संबंधी, मित्र, (पु) कविविशेष ।

सु-बहु, त्रि. बहुतसारा ।

सु-बाल, त्रि. बचा, मूर्ख, ।

सु-बाहु, त्रि. सुंदर भुजावाला (पु.) राक्षस विशेष ।

सुभग, पु. टङ्कण, चम्पक, अशोक, (त्रि) सुहृदय, प्रिय, भाग्यवान्, सुखदाता, (स्त्री) (गा) हरिद्रा, नीलदूर्वा, तुलसी, कस्तूरी, प्रियंगू, पतिप्रिया । सुहागा, चम्पा, खास-दरख़्त, खुशनुमा, प्यारा, हलदी, दूब, कंगनी शौहर की प्यारी ।

सुभग-मन्य, त्रि. अपने आपको खुश माननेवाला ।

सु-भङ्ग, पु. नारिकेल वृक्ष, नारियलका दरख़्त ।

सु-भट, पु. योधा । जद्दी ।

सु-भद्र, पु. विष्णु, विष्णुपार्षद (स्त्री) (द्रा) श्यामालता, घृतमराश, काश्मीरी, श्रीकृष्णभगीनी, (त्रि) नेक ।

सु-भिक्ष, त्रि. सुलभ भैक्ष्ययुक्त कालादि, (स्त्री) (क्षा) वृक्षविशेष, । सुकाल, सस्त ।
सु-भुज, पु. विष्णु (त्रि) सुन्दर बाहुवाला ।
सु-भू, पु. सुजन्मा, (स्त्री) उत्कृष्ट भूमि, (त्रि) उत्तम भूमि सम्बन्धीय, । जिसकी पैदायश मुबारिक है, उमदह ज़मीन, उमदह ज़मीनका ।
सु-भूत, त्रि. कामयाब, (स्त्री) (ति) खुशी ।
सु-भृश, न. अतिशय। विशिष्ट। निहायत, बहुत ।
सु(श्रु)भ्रू, स्त्री. नारी (त्रि)(भ्रु)(भ्रू) सुन्दरभ्रुयुक्त। औरत, खूबसूरत आब्रूवाला । [चांद ।
सुम, न. पुष्प, (पु) चन्द्रनभ, आकाश । फूल,
सुमत, त्रि. सुन्दर ज्ञातविषय, (त्रि) सुन्दरमतियुक्त, (पु.) वर्तमानकालीन जिनविशेष, (स्त्री) (ति) शोभनामति, । बड़ादाना, खास एक जिन, उमदह अकल, कल्की अवतारकी मा ।
सु-मधुर, न. अत्यन्त मधुर वाक्य, (त्रि) अतिमधुर, (पु) जीवशाक । निहायत मीठी कलाम, निहायत मीठा ।
सु-मध्य(म), त्रि. जिसका मध्यभाग सुन्दर हो, (स्त्री) (ध्या) (मा) सुन्दर स्त्री, छन्दोविशेष ।
सुमन, पु. गोधूम, धुस्तूर, (त्रि.) मनोहार, (स्त्री.) (ना) पुष्पविशेष, । गेहूं, धतूरा, दिलचस्प, खूबसूरत, चम्बेली ।
सुमनस्, न. पुष्प, उत्तम मनस्, (त्रि) शोभन मनोयुक्त, (पु.) (ना) पण्डित, गोधूम, निम्बवृक्ष।
सुमना-दामन्, त्रि. फूलोंकी माला ।
सुमन्तु, पु. मुनिविशेष, (त्रि) अत्यन्तापराधी, अथर्ववेदकी शाखाको प्रचार देनेवाला, निहायत कसूरवार ।
सुमन्त्र, पु. कल्किदेवका ज्येष्ठ भ्राता; कल्कीदेवका बड़ाभाई (त्रि) अच्छा सिखाया हुआ (न.) नेक मशवरा ।
सुमित्र, पु. जिन-पिता, इक्ष्वाकुवंशीय वृहद्बलान्वय सुरथराज पुत्र, (स्त्री) (त्रा) दशरथराजपत्नी। जिनका बाप, सूर्य्यवंशीय वृहद्बलके खान्दानमें राजा सुरथका बेटा, लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी मा ।
सुमुख, न. नखक्षत, (पु.) गरुड पुत्र, गणेश, नागभेद, त्रि. मनोज, सुन्दरानन, (स्त्री) (खा) सुन्दरी स्त्री. आदर्शगृह, दर्पण, (स्त्री) सुन्दरी नारी।
सुमृडीक, त्रि. दयालु (न) दया। रहीम, रहम ।
सुमेक, त्रि. अच्छी भांति कायम किया हुआ ।
सुमेध, त्रि. दृढ, सुबुद्धि । मज़बूत, दाना ।
सुमेधस्, त्रि. बुद्धिमान् । अकलमन्द ।
सुमेरु, पु. पर्वतविशेष, हेमाद्री, शिव, (त्रि.) उत्तम । ख़ास एक पहाड़ सोनेका, उमदह, कुतब, मालाका सिरा ।
सुम्न(म्ना)य, (त्रि) दयाके योग्य । काबल रहम ।
सुम्भ, पु. देशविशेष । मुल्कका नाम । [फ़ताब।
सु-यात्र, पु. सूर्य्य (त्रि) शोभन गति मान् । आ-
सु-यमुन, पु. विष्णु, वत्सराज, प्रासाद, अद्रिवि०, मेघवि०, देशविशेष, ।
सु-यशस्, (त्रि.) बहुतप्रसिद्ध । मशहूर, नेकनाम।
सुयोधन, पु. दुर्योधन राजा ।
सुर, पु. देवता, सूर्य्य, पण्डित, (स्त्री) (रा) मद्य ।
सुर-गण, पु. देवताओंका समूह । देवोंका मजमा।
सुर-गुरु, पु. वृहस्पति; देवताओंका मुर्शिद ।
सुर-ग्रामणी, स्त्री. देवताओंका राजा ।
सुरङ्ग, न. पतङ्ग, हिङ्गुल, (पु) नागरङ्ग, गर्तविशेष (स्त्री) (ङ्गा) पतंगा । खूबसूरतरंग, गेरुमाटी, सुरंग ।
सुर-ज्येष्ठ, पु. ब्रह्मा ।
सुरञ्जन, पु. गुवाक् वृक्ष; सुपारी का पेड़ ।
सुरत, न. मैथुन, (त्रि) दयालु (स्त्री) (ता) देवसमूह, देवत्व। सोहवत, मेहरबान, बहुत देवता, देवतापन ।
सुरत-ताली, स्त्री. दूती; कुट्टिनी, माथे पर चढ़ी हुई माला । [कारक ।
सुर-तोपक, पु. कौस्तुभ–मणि (त्रि) देव प्रीति-
सु-रथ, पु. चन्द्रवंशीय चैत्रराजपुत्र । चंद्रवंशी राजा चैत्र का बेटा, गाड़ीवान्, (त्रि) सुन्दर रथवाला ।
सुर-दीर्घिका, स्त्री. स्वर्ग–गङ्गा ।
सुर-द्विप, पु. देवहस्ती । देवताओंका हाथी ।
सुर-द्विष्(द्विट्), पु. असुर, देवद्वेषक । देवताओं का दुश्मन ।
सुर-धनुस, न. इंद्र धनुष । कौसकज़ा ।
सुर-धानी, **सुर-धुनी** } स्त्री. स्वर्ग गङ्गा; गङ्गा दर्या ।

सुर-निम्नगा, स्त्री. गङ्गानदी ।
सुर-धूप, पु. राल ।
सुर-नन्दा, स्त्री. नदीविशेष । ख़ास दर्या ।
सुर-निम्नगा, स्त्री. गङ्गा नदी ।
सुर-पति, पु. इन्द्र; देवताओं का राजा ।
सुर-पथ, न. आकाश । आसमान ।
सुर-पादप, पु. कल्पवृक्ष । बहिश्त का दरख़त् ।
सुर-प्रिय, पु. अगस्त्यपुष्प वृक्ष, इन्द्र, वृहस्पति, (त्रि) देवहृद्य, (स्त्री) (या) जाति, स्वर्गरम्भा । देवतोओंका प्यारा ।
सुरभि, न. स्वर्ण, गन्धाश्म, सुन्दर, (पु) सुगन्धि द्रव्य, चम्पक, वसन्तऋतु, जातिफल वृक्ष, शमी-वृक्ष, गन्धतृण, वकुल-वृक्ष, राल, (स्त्री) शलकी, मातृकाविशेष, सुरा, गौ, रुद्रजटा, वनमालिका, तुलसी, पाची, पृथिवी, गोमाता, (त्रि) कान्त, धीर, विख्यात । सोना, गंधक, खुशबू, चंवा, मौसम बहार, जायफल का दरख़त्, जंडीका दरख़त्, खस्स, शराब, गाय, मालती, ज़मीन ।
सुरभित, त्रि. सुगंधित, ख्यात (स्त्री) (ता)सौरभ।
सुरभि-त्वच्, न. वृहदेला; बड़ी इलायची ।
सुरभि-वल्कल, न. गुडत्वच्; दारचीनी ।
सुरभि-बाण, पु. कामदेव । [लादि ।
सु-रर्षि, पु. देवर्षि, नारद, पर्वत, तुम्बरु, कोलाह-
सुरला, स्त्री. गङ्गा; नदीविशेष ।
सुरला-त्मिका, स्त्री. वंशीवाद्य; बांसरीकी स्वर ।
सुर लोक, पु. देवलोक, स्वर्ग । बहिश्त ।
सुर-वर्त्मन्, न. आकाश । आसमान ।
सुर-वैरिन्, पु. दैत्य ।
सुरस, न. त्वच, गन्धतृण, तुलसी, (पु) मोच-रस, (त्रि) स्वादु, सुन्दर रसयुक्त (स्त्री) (सा) सर्प्प माता, दुर्गा । खाल, छिल्का, खस्स, ज़ाय-क़हदार ।
सुर-सद्मन्, न. स्वर्ग । बहिश्त ।
सुर-सरित्, स्त्री. गङ्गा, स्वर्ग गङ्गा ।
सुर-सुन्दरी, स्त्री. अप्सरा, मत्स्यविशेष । हूर ।
सुरा, स्त्री. चषक, मद्य (पु. स्त्री.) धनवान् । शराब, दौलतमंद ।
सुरा-कर, पु. नारिकेलवृक्ष, मद्योत्पत्तिस्थान । ना-रियेल का दरख़त्, शराबख़ाना ।
सुरा-चार्य्य, पु. वृहस्पति । देवताओंका मुर्शिद ।
सुरा-जीविन्, पु. शौण्डिक । कलाल ।
सुरापाण(न), न. शराबपीना ।
सुरा-भाजन, न. शराबका प्याला, या वर्तन ।
सुरारि(सुरद्विष्), पु. देवशत्रु । देवताओंका दुश्मन ।
सुराप, त्रि. मद्यपायी । शराबख़ाना ।
सुरा-रि, पु. असुर । देव ।
सुरा-लय, पु. सुमेरु-पर्वत, स्वर्ग, सुरा-गृह, । सुमे-रुपहाड़, बहिश्त, शराबका घर ।
सु-राष्ट्र, पु. देशविशेष, राम परिवारविशेष । सू-रत का ज़िलह ।
सुराष्ट्र-ज, न. तुंबरिका, (पु) कृष्ण मुद्ग, विषवि-शेष, (त्रि) सुराष्ट्रदेशीय । तूंबा, स्याह मूंग, खारा ज़हर, सुराष्ट्र देश का ।
सुरुङ्ग, पु. शोभाञ्जन (स्त्री) (ङ्गा) । सुहांजना, सुरंग।
सुरूप, न. तूल, (त्रि) रूपविशिष्ट, विद्वान्, (स्त्री) (पा) शालपर्णी, सुन्दरी स्त्री । रुई, खूबसूरत, दाना, खास बूटी, खूबसूरत औरत ।
सुरे-ज्य, पु. वृहस्पति (स्त्री) (ज्या) तुलसी; देव-ताओं का गुरु, तुलसी ।
सुरे-न्द्र, पु. सुरपति; देवताओं का गुरु । [बेटा ।
सुरेन्द्र-जित्, पु. गरुड, इन्द्रजित्; रावण का
सुरेभ, पु. रङ्ग, देवहस्ती । रांगा, देवताओं का हाथी । [दुर्गा ।
सुरे-श्वर, पु. रुद्र, महादेव, इन्द्र, (स्त्री) स्वर्ग-गङ्गा,
सुरो-त्तम, पु. सूर्य्य । आफ़ताब, विष्णु । [वाला ।
सु-लक्षण, न. अच्छे नशान (त्रि) सुन्दर लक्षण-
सुलभ, त्रि. सुखलभ्य, (स्त्री) (भा) माषपर्णी, धूम्रपत्रा; सुखाला, आसान, खास बूटी । [सप ।
सुलभित, त्रि. सुन्दर, मनोज्ञ । खूबसूरत, दिलच-
सुललित, त्रि. उत्तम । उमदह, लज़ीज़ ।
सुलू, त्रि. उत्तम छेदनकर्ता । तरान ।
सुलोचन, पु. हरिण, दुर्योधन, (त्रि) शोभन चक्षु-युक्त, (स्त्री) (नी) माधव राजपत्नी । हरण, नेक चश्म, राजा माधवकी जोरू ।
सु-वचस्, त्रि. वाग्मी, फ़सीह कलाम् । [माहताब ।
सु-वन, पु. सूर्य्य, शशि चन्द्र । आफ़ताब, अतिश,
सुवर्चला, स्त्री. सूर्य्यपत्नी; सूरजकी जोरू ।

सुस्नात, त्रि. सुन्दररूपसे न्हाया हुआ, माङ्गल्य द्रव्य द्वारा स्नात, (न) उत्तम स्नान ।
सुहन, त्रि. सहज माराजानेवाला ।
सुहित, त्रि. प्यारा, मुफ़ीद, लाभकारी ।
सु-हृत्(द्), पु. मित्र, लग्नसे ४ था स्थान। दोस्त।
सु-हृदय, त्रि. शुद्धचित्त । साफ़ दिल्वाला ।
सु-होत्र, पु. चंद्रवंशीय बृहद्रथराज पुत्र, ।
सूक, पु. बाण, वात, उत्पल, । तीर, हवा, कमल ।
सूकर, पु. सुअर, कुम्हार, खास हरण ।
सूक्त, त्रि. शोभनोक्ति विशिष्ट, (न.) वेदोक्त स्तोत्र, मंत्रादि, (स्त्री) (क्ति) शारिकापक्षी । खुशगो, वेदमें मंत्रोंके झुमके, मैना चिड़िया ।
सूक्ष्म, त्रि. अल्प, अतीन्द्रिय (पु.) अणु, (न.) कैतव, अर्थालङ्कारवि०, (स्त्री) शब्द प्रवृत्तिवि०, । थोड़ा, बारीक । [लम्बंद।
सूक्ष्म-दर्शिन्, त्रि. अति बुद्धिमान । बड़ा अक्-
सूक्ष्म-भूत, न. क्षित्यादि पञ्चभूतोंके सूक्ष्मांश, पु. पञ्चज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय, ५ प्राण, मन, बुद्धि इन १७ का समुदाय ।
सूच, पु. दामकी सूल, (स्त्री) (ची) सुई ।
सूचक, त्रि. पिशुन, (पु.) बोधक, कुक्कर, बिडाल, काक, पिशुन, बुद्ध, सिद्ध, पिशाच, सूत्रधार, पथिक, सूक्ष्मशालिधान्य । चुगल, कुत्ता, बिल्ली, कौआ, मुसाफ़िर, एक किसम के जंगलीधान ।
सूचन, न. दृष्टि गन्धन, अभिनय, खबर, (स्त्री) (ना) जताना, छेदना, नज़र, बताना, अदा ।
सूचिक, पु. सूचिजीवी, (स्त्री) (का) सूची, हस्तिशुण्ड । दरज़ी, सुई, हाथीकी सूण्ड ।
सूचित, त्रि. कथित, बोधित । कहा हुआ, जताया हुआ ।
सूचि-वत्, पु. गरुड़, पक्षि-राज ।
सूचि-वदन, पु. नकुल, मशक; नेवला, मच्छर ।
सूची(चिका), स्त्री. सुई ।
सूची-मुख, न. हीरक, (त्रि.) सूच्यग्रमुख । हीरा, सूईकी नोककी मानिन्द जिसका मुख हो ।
सूची-रोमन्, पु. शूकर । सूअर ।
सूच्या-स्य, पु. मूषिक, (त्रि) सूचीमुख, मूसा, चूंस।
सूत, पु. सारथि, त्वष्टा, वन्दी, स्तुतिपाठक, पारद, सूर्य, प्रधानकर्ता, (पु. न.) पारद, (त्रि) प्रसूत, प्रेरित, (स्त्री) (ति)। गाड़ीवान, तरखान, क्षत्रिय की बिंदसे ब्राह्मणीके पेटमें पैदा हुआ २, भाट, पारा, आफ़ताब, जन्मा हुआ, भेजा हुआ ।
सूतक, न. जन्म, जननाशौच, पैदायश, लड़का लड़की पैदाहोनेके पीछे १२ १३ १७ ३० दिनतक वर्णोंके क्रमसे अशुद्धि (स्त्री) (का) नई सूई हुई ।
सूतिका-गार, पु. प्रसवगृह; प्रसूत होनेका घर ।
सूत्कार, न. सुरसुराना, जानना ।
सूत्या, स्त्री. यज्ञस्नान, सोमलतारसपान ।
सूत्र, न. तन्तू, व्यवस्था, शास्त्रादिसूचना ग्रंथ, डोरा, सूत, सिलसिला, शास्त्रके कर्म्मको मुख्तसर दिखलानेके कायदे, नाट्यशास्त्र का उपक्रम व्यवस्था ।
सूत्र-कण्ठ, पु. विप्र, खञ्जरीट, कपोत, ब्राह्मण; ममोला, कबूतर ।
सूत्र(ध)-धार, पु. त्वष्टा, इन्द्र, नान्दीपाठांतर । सूत्रधारी, शिल्पविशेष । तरखान, मुख्य नट ।
सूत्र-भित्(द्), पु. सौचिक । दरज़ी ।
सूत्र-यन्त्र, न. खड्डी । चरखा ।
सूत्रामन्, पु. इन्द्र, देवताओं का राजा ।
सूत्रिन्, पु. काक, (त्रि) सूत्रविशिष्ट । कौवा, सूतवाला ।
सूद, पु. सूपकार, व्यञ्जन, अपराध, लोध्र, पाप, सूप। बावरची, तरकारी, कसूर, गज़ब, गुनाह ।
सूदन, त्रि. नाशकरनेवाला, (न) वध ।
सूद-शाला, (स्त्री) पाकशाला । बावरचीखाना ।
सून, न. जन्म, (त्रि) विकसित, ज्ञात (स्त्री) (ना) वधस्थान । पैदाइश, खिलाहुआ, मालूम किया हुआ रण, मांसविक्रयस्थान ।
सूनिन्, पु. शिकारी, मांसवेचनेवाला । कसाई ।
सूनु, पु. बेटा, छोटाभाई, सूर्य, आकका पेड़ (नू) बेटी । [प्यारा ।
सूनृत, न. सच्ची और मीठी बात, (त्रि) सच्चा,
सूप, पु. दाल, (त्रि) रसोईया ।
सूप-कार, पु. बावरची, शूद्रकी पकीहुई खानेवाला।
सूपाङ्ग, न. हिङ्गु; हींङ्ग । [पानी ।
सूम, न. क्षीर, आकाश, जल; दूध, आसमान,
सूर, पु. सूर्य, अर्कवृक्ष, जिन-पितृविशेष, पण्डित।

सुवर्धिका, स्त्री. जतुका; लाख ।
सुवर्ण, न. सोना, हरि चन्दन, नागकेसर, अशीति ८० रत्तिकाभर स्वर्ण, कर्ष, (पु) यज्ञविशेष, धतूरह (त्रि) शोभन वर्णयुक्त, (स्त्री) (र्णा) हरिद्रा, स्वर्णक्षीरी, एलुआ सुहागा ।
सु-वर्णक, न. पित्तल, (त्रि) सुन्दरवर्ण युक्त ।
सुवर्ण-कदली, स्त्री कदलीविशेष; चापा केला ।
सुवर्ण-कार, पु. पश्यतो हर; सुनार ।
सुवर्ण-पिञ्जर, त्रि. सुनहरी रंग का ।
सुवर्ण-वर्ण, पु. विष्णु (स्त्री) (र्णा) हरिद्रा, (त्रि) सुवर्णवर्णयुक्त, हलदी, सुनहरी रंगका ।
सुवर्ण-वणिक, पु. वर्णसङ्कर जातिविशेष, अम्बष्ठकी विंदसे वैश्याके पेटसे पैदा हुआ २ ।
सुवर्ण-विन्दु, पु. विष्णु ।
सुवर्ण-भाण्ड, पु. सोनेका संदूक ।
सुवर्ण-मय, त्रि. सोनेका ।
सुवर्ण यूथिका, स्त्री. पुष्पविशेष ।
सु-वयस्, स्त्री. प्रौढा स्त्री । जवान औरत ।
सु-वह, त्रि. सुखवाह्य । आसानीसे उठाने लायक ।
सु-वासस, त्रि. सुन्दर वस्त्रक । उमदह पौशाकवाला । [व्याही हुई ।
सु-वासिनी, स्त्री. सुगन्धियुक्ता स्त्री, कुमारी; नई
सु-विग्रह, त्रि. दिव्य देह । सुंदर शरीरवाला ।
सु-विद्(द), पु. पण्डित, (स्त्री)(दा) गुणवती स्त्री ।
सु-विदल्ल, न. अन्तःपुर, (स्त्री) (ल्ला) ऊढानारी । रनवास; व्याही हुई स्त्री ।
सु-विभक्त, त्रि. बांटा हुआ ।
सु-विश्रब्ध, त्रि. प्रसन्न; विश्वासवाला ।
सुवीज, न. सुन्दर बीज, त्रि. शोभन बीजयुक्त, (पु.) खसखास ।
सु-वृक्ति, स्त्री. स्तुति (त्रि) स्तुत । तअरीफ़ । तअरीफ़ किया हुआ । [चलनी ।
सु-वृत्त, त्रि. नेकचलन, गोल, (स्त्री) (त्ति) नेक-
सु-वृद्ध, त्रि. प्रसन्न, खुश पवित्र, पुण्यात्मा ।
सु-वेल, पु. पर्वतविशेष । नेकसैंत ।
सु-वेश, पु. सुंदर पौशाक (त्रि) सुंदर पौशाकवाला ।
सु-शर्म्मन्, पु. निन्दित ब्राह्मण, राजावि०, त्रि. सुन्दर ।
सु-शाक, न. आर्द्रक, पु. चञ्चु, भिण्डा, तंडलीय ।
सु-शान्त, त्रि. चुपचाप (स्त्री) (न्ता) राजा शशिध्वजकी जोरू ।
सु-शिक्षित, त्रि. सीखाहुआ । तालीम याफ्तह ।
सुशिख, पु. अग्नि, त्रि. उत्तम शिखा युक्त ।
सु-शिप्र, त्रि. जिसके हनु सुन्दर हों ।
सुशिश्वि, त्रि. अच्छा बढ़ा हुआ ।
सु-शीत, न. शीतविशेष । बड़ी सर्दी, त्रि. शिष्ट । बड़ा सर्द । [सर्दी ।
सुशीम, पु. शीतगुण, (त्रि) शीतगुणविशिष्ट, । सर्द,
सु-शील, पु. चोलराज, (त्रि) शोभनशीलविशिष्ट (स्त्री) (ला) श्रीकृष्ण महिषी विशेष । यमभार्य्या । नेक चलन, नेक चलनी ।
सु-शीलता, स्त्री. नम्रता, विनय । हलीमी ।
सुश्री, त्रि. सुन्दर श्रीयुक्त । खूबसूरत ।
सुश्रुत, पु. चिकित्साशास्त्रकर्त्ता, विश्वामित्र मुनिपुत्र, त्रि. अच्छी तरह सुना हुआ (न) सुन्दर श्रवण, (स्त्री) (ति) अच्छा श्रवण ।
सु-श्लक्ष्ण, त्रि. बड़ा मुलायम ।
सु-षम, त्रि. शोभन सम, (स्त्री) (षिमा) परमाशोभा (न) अच्छा बरस ।
सुषि, स्त्री. गर्त, शुष्क जल; गढ़ा, खुश्क ।
सुषिर, त्रि. कृतगर्त, (न) विवर, (पु) अग्नि, (स्त्री) वंसी, । सुराख़दार, सुराख, वंसरी ।
सुषीम, पु. सर्प्पवि०, चन्द्रकान्तमणिविशेष, (त्रि.) शीतगुणयुक्त, मनोज्ञ, जड़ असीम खूबसूरत, वेहरकत, वेहद ।
सु-षुप्त, त्रि. निद्रित, (न.) सुषुप्ताऽवस्था, (स्त्री) (प्ति) आनन्दमय कोष, सुनिद्रा । [सूर्यकिरण ।
सुषुम्ना, स्त्री. देहान्तर्गतमेरु दण्डवाह्य नाडीविशेष,
सुषेण, पु. करमर्दक विष्णु, सुग्रीव, वैद्य, वेतसवृक्ष ।
सुष्ठु, व्य. प्रशंसा, अतिशय, सत्य, तअरीफ़ ।
सु-सम्पद्(त्), स्त्री. सौभाग्य । हश्मत ।
सुसह, त्रि. सुखसे सहारने योग्य ।
सुसार, पु. रक्तखदिर, (त्रि.) अतिसार विशिष्ट । (स्त्री.) कारवेल्ल । सुरख खैरा, असहालकी बीमारीवाला ।
सुस्थ, त्रि. सुखस्थायी, नीरोग । तन्दरुस्त, खुश ।
सुस्थकल्प, त्रि. तनदरुस्त, राजी, ।
सुस्थित, त्रि. अच्छाकायम, (न) अच्छी स्थिति ।
सुस्थिर, त्रि. अचञ्चल । कायम, धीमा ।

सुस्नात, त्रि. सुन्दररूपसे न्हाया हुआ, माङ्गल्य द्रव्य द्वारा स्नात, (न) उत्तम स्नान।
सुहन, त्रि. सहज माराजानेवाला।
सुहित, त्रि. प्यारा, मुफ़ीद, लाभकारी।
सु-हृत्(द्), पु. मित्र, लग्नसे ४ था स्थान। दोस्त।
सु-हृदय, त्रि. शुद्धचित्त। साफ़ दिलवाला।
सु-होत्र, पु. चंद्रवंशीय वृहद्रथराज पुत्र,।
सूक, पु. बाण, वात, उत्पल,। तीर, हवा, कमल।
सूकर, पु. सुअर, कुह्मार, खास हरण।
सूक्त, त्रि. शोभनोक्ति विशिष्ट, (न.) वेदोक्त स्तोत्र, मंत्रादि, (स्त्री) (क्ति) शारिकापक्षी। सुशगो, वेदमें मंत्रोंके जुमले, मैना चिड़िया।
सूक्ष्म, त्रि. अल्प, अतीन्द्रिय (पु.) अणु, (न.) कैतव, अर्थालङ्कारवि०, (स्त्री) शब्द प्रवृत्तिवि०,। थोड़ा, बारीक। [लमंद।
सूक्ष्म-दर्शिन्, त्रि. अति बुद्धिमान। बड़ा अक़-
सूक्ष्म-भूत, न. क्षित्यादि पञ्चभूतोंके सूक्ष्मांश, पु. पञ्चज्ञानेंद्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय, ५ प्राण, मन, बुद्धि इन १७ का समुदाय।
सूच, पु. दाभकी सूल, (स्त्री) (ची) सूई।
सूचक, त्रि. पिशुन, (पु.) बोधक, कुक्कर, विडाल, काक, पिशुन, बुद्ध, सिद्ध, पिशाच, सूत्रधार, पथिक, सूक्ष्मशालिधान्य। चुग़ल, कुत्ता, बिल्ली, कौआ, मुसाफ़िर, एक क़िसम के जंगलीधान।
सूचन, न. दृष्टि गन्धन, अभिनय, खबर, (स्त्री) (ना) जताना, छेदना, नज़र, बताना, अदा।
सूचिक, पु. सूचिजीवी, (स्त्री) (का) सूची, हस्तिशुण्ड। दरज़ी, सूई, हाथीकी सूण्ड।
सूचित, त्रि. कथित, बोधित। कहा हुआ, जताया हुआ।
सूचि-पत्, पु. गरुड़, पक्षि-राज।
सूचि-वदन, पु. नकुल, मशक; नेवला, मच्छर।
सूची(चिका), स्त्री. सूई।
सूची-मुख, न. हीरक, (त्रि.) सूच्यग्रमुख। हीरा, सूईकी नोककी मानिन्द जिसका मुख हो।
सूची-रोमन्, पु. शूकर। सूअर।
सूच्या-स्य, पु. मूषिक, (त्रि) सूचीमुख, मूसा, घूंस।
सूत, पु. सारथि, त्वष्टा, वन्दी, स्तुतिपाठक, पारद, सूर्य्य, पुराणवक्ता, (पु. न.) पारद, (त्रि) प्रसूत, प्रेरित, (स्त्री) (ति)। गाड़ीवान, तरखान, क्षत्रिय की बिंदसे ब्राह्मणीके पेटमें पैदा हुआ २; भाट, पारा, आफ़ताब, जन्मा हुआ, भेजा हुआ।
सूतक, न. जन्म, जननाशौच, पैदायश, लड़का लड़की पैदाहोनेके पीछे १२ १३ १७ ३० दिन-तक वर्णोंके क्रमसे अशुद्धि (स्त्री) (का) नई सूई हुई।
सूतिका-गार, पु. प्रसवगृह; प्रसूत होनेका घर।
सूत्कार, न. सुरसुराना, जानना।
सूत्या, स्त्री. यज्ञस्नान, सोमलतारसपान।
सूत्र, न. तन्तु, व्यवस्था, शास्त्रादिसूचना ग्रंथ, डोरा, सूत, सिलसिला, शास्त्रके कर्म्मको मुख़्तसर दिखलानेके कायदे, नाट्यशास्त्र का उपक्रम व्यवस्था।
सूत्र-कण्ठ, पु. विप्र, खञ्जरीट, कपोत, ब्राह्मण; ममोला, कबूतर।
सूत्र(ध)-धार, पु. त्वष्टा, इन्द्र, नान्दीपाठांतर। सञ्चारी, शिल्पविशेष। तरखान, मुख्य नट।
सूत्र-भित्(द्), पु. सौचिक। दरज़ी।
सूत्र-यन्त्र, न. खड्डी। चरखा।
सूत्रामन्, पु. इन्द्र, देवताओं का राजा।
सूत्रिन्, पु. काक, (त्रि) सूत्रविशिष्ट। कौवा, सूतवाला।
सूद, पु. सूपकार, व्यञ्जन, अपराध, लोध्र, पाप, सूप। बावरची, तरकारी, कसूर, गज़ब, गुनाह।
सूदन, त्रि. नाशकरनेवाला, (न) वध।
सूद-शाला, (स्त्री) पाकशाला। बावरचीखाना।
सून, न. जन्म, (त्रि) विकसित, ज्ञात (स्त्री) (ना) वधस्थान। पैदाइश, खिलाहुआ, मालूम किया हुआ रण, मांसविक्रयस्थान।
सूनिन्, पु. शिकारी, मांसवेचनेवाला। कसाई।
सूनु, पु. बेटा, छोटाभाई, सूर्य्य, आकका पेड़ (नू) बेटी। [प्यारा।
सूनृत, न. सच्ची और मीठी बात, (त्रि) सच्चा,
सूप, पु. दाल, (त्रि) रसोईया।
सूप-कार, पु. बावरची, शूद्रकी पकीहुई खानेवाला।
सूपाङ्ग, न. हिङ्गु; हींङ्। [पानी।
सूम, न. क्षीर, आकाश, जल; दूध, आसमान,
सूर, पु. सूर्य्य, अर्कवृक्ष, जिन-पितृविशेष, पण्डित।

आफ़ताव, आक का पेड़, १७ वें जिनका बाप, दाना।

सूरण, न. मूल-विशेष, ज़ीमीकंद, वृक्षविशेष।

सूर-सूत, पु. अरुण; सूरज का गाड़ीवान्।

सूरि, पु. पण्डित, यादव, सूर्य्य, कृष्ण। दाना, यदु का खान्दान, आफ़ताव।

सूरिन्, पु. पण्डित, (स्त्री) (णी) राजसर्षप। दाना, राई सरसों। [चौसठ सेर वज़न।

सूर्प्प, पु. न. शूर्प्प, द्विद्रोणपरिमाण; छाज, ६४

सूर्प्प-णखा, स्त्री. रावणभगिनी; रावण की बहिन।

सूर्म्मि, स्त्री. प्रतिमा। पुतली, खंबा।

सूर्य्य, पु. अर्कपर्ण, बलिपुत्र दानवविशेष, ग्रहविशेष। आफ़ताव, (स्त्री) (र्या) सूर्य की जोरू, नयी व्याही हुई।

सूर्य्य-कान्त, पु. बिल्लौर, आतशी शीशा, सूरजमुखी फूलों का पेड़।

सूर्य्य-ज, } **सूर्य्य-तनय**, } पु. सुग्रीव वानर, यम, शनि, (स्त्री) (जा) यमुना, तापती। ऐसेहि "सूर्य्यसुत", आदि। बंदरोंका राजा सुग्रीव, मलिकुलमौत, ज़ुहल, जमना, तापती।

सूर्य्या-वर्त, पु. सूर्यमुखी फूल।

सूर्य्या-श्मन्, पु. सूर्य्यकान्तमणि। आतशीशीशा।

सूर्य्ये-न्दु-सङ्गम, पु. *अमावास्या (स्त्री) (मा) अ*मावस। [अतिथि।

सूर्य्योढ, त्रि. सूर्यके साथहि प्राप्त (पु.) रातका

सृक, पु. वाण, पद्म, वायु।

सृकन्, न. खुखवाड़। जबाड़ा। [भाग।

सृक(कि) } न. सृक्कणी; दोनों ओठों के प्रान्त-

सृक(कि)णी } स्त्री. ओष्ठद्वयप्रान्तभाग। खुखवाडे।

सृक्कण(णी) } न. स्त्री. खुखवाडा, जबड़े।

सृगाल, पु. जम्बुक (स्त्री) (ली) (लिका) गीदड़, गीदड़ी।

सृङ्क्या, स्त्री. बाट। रास्तह।

सृज्, पु. (क्, ग्, ट्, ड्) स्रष्टा। पैदा कुनिन्दह।

सृजन, न. रचन, उत्पादन; बनाना, पैदा करना।

सृणि, पु. शत्रु (स्त्री) (णि) (णी) अङ्कुश। दुश्मन, आंकश।

सृणिका, स्त्री. लाला, थूक।

सृत, त्रि. गत, पक्व, (स्त्री) (ति) मार्ग, गमन, हनन। गिया हुआ, पुख़्तह, रास्तह, रफ़्तार, ईज़ा देना। [कर्त्री।

सृत्वर, त्रि. गमनकर्त्ता (स्त्री) (री) माता, गमन-

सृदर, पु. सर्प्प; सांप।

सृदाकु, पु. वायु, वज्र, अग्नि, मृग (स्त्री) (कू) नदी। हवा, आतिश, हरण, वज्र, दर्या।

सृप्त, त्रि. गत; गिया हुआ।

सृप्र, पु. शशधर। माहताव। [चुस्त, चालाक।

सृमर, पु. पशु-विशेष। हरिण का बच्चा, (त्रि)

सृष्ट, त्रि. निर्म्मित, युक्त, निश्चित (स्त्री) (ष्टि) निर्म्माण-स्वभाव। बनाया हुआ, जुड़ा हुआ, यकीन किया हुआ, पैदा हुआ २, बनावट, मौजूदात।

सेक, पु. सेचन; सींचना।

सेक-पात्र, न. जलसेचनाधार। बोका, डोल।

सेकिम, न. मूलक; मूली। [निवाला।

सेक्तृ, पु. स्वामी, (त्रि) सेचनकर्ता, मालिक, सींच-

सेक्त्र, न. सेक-पात्र; सींचनेकावर्तन।

सेचन, न. छिडकना, भिगोना, (स्त्री) (नी) सींचनेका वर्तन।

सेतिका, स्त्री. अयोध्या पुरी।

सेतु, पु. पुल, खासपेड़, वेद पगडंडी, (डों) अक्षर।

सेतु-बन्ध, पु. *लंकामें पहुंचनेके लिये जो पुल श्री* रामचंद्रजीने समुद्रपर बनायाथा।

सेत्र, न. निगड, वेडी; हथकड़ी।

सेना, स्त्री. फौज, चौवीसजिनोंकी तीसरी माता।

सेना-ध्यक्ष, पु. सेनानी,। सिपाह सालार।

सेनानी, पु. कार्तिकेय, सेनापति,।

सेना-मुख, न. ३ हार्थी, ३ घोड़े, ६ रथ, १५ पैदल।

सेव, पु. सेवा। ख़िदमत।

सेवक, त्रि. नौकर, परिचारक। खिदमतगार।

सेवधि, पु. कुवेरकी निधि। शंख, पद्म आदि।

सेवन, न. उपासना, सेवा, सूई का काम (नी) सूई।

सेवनीय, त्रि. सेवायोग्य, उपास्य।

सेवित, त्रि. उपासित, आराधित, आश्रित (न.) फलविशेष। खिदमत किया हुआ।

सेव्य, न. पेड़ पीपलका (त्रि) सेवाके योग्य, (स्त्री) (व्या) वृन्दा, तुलसी।

सेव्य-मान, त्रि. जिसकी सेवा की जावे।
सैंह, त्रि. सिंहतुल्य। शेरकासा।
सैंहिक(केय), पु. राहुग्रह।
सैकत, न. वालुकामयतट; रेतला किनारा।
सैकतिक, न. यात्राकालमें बांधा हुआ डेरा (पु.) नास्तिक, (त्रि) संदेह करनेवाला।
सैकतिल, त्रि. सिकतायुक्त। रेतला।
सैनापत्य, न. सेनापति का काम। सूबेदारी।
सैनिक, त्रि. सेनाका। सिपाही [निमक, घोड़ा।
सैन्धव, न. लवणविशेष; (पु.) घोटक, । सेंधा-
सैन्य, न. सेना, (पु.) सेनासमेत। फौज।
सैवाल, न. शैवाल, पानीके ऊपर जमी हुई काई।
सैरिभ, पु. महिष, स्वर्ग। भैंसा, बहिश्त।
सो, स्त्री. पार्वती, दुर्गा।
सोढ, त्रि. क्षान्त। सहारनेवाला। [ताकतवर।
सोढृ, (त्रि) (ढा) क्षमायुक्त,। बरदाश्त कुनिंदह,
सोढव्य, त्रि. सहारनेके योग्य।
सोत्कण्ठ, त्रि. उत्सुक। ख्वाहिश-मन्द। [वाक्य।
सोत्प्रास, पु. सुहास्य वाक्य, श्लेषवाक्य, प्रिय-
सोदर, **सोदर्य**, पु. सकाभाई, (स्त्री) (र्या) सकी बहिन।
सोपप्लव, त्रि. राहुग्रस्त सूर्य चांद।
सोपाधिक, त्रि. उपाधिवाला।
सोपान, न, आरोहिणी; सीढ़ी।
सोभरि, पु. एक कविका नाम।
सोम, न. कान्जिक, स्वर्ग, (पु.) शिव, चंद्र, कर्पूर, वानर, कुबेर, यम, वायु, जल, सोमलताओषधि, शिव, दीधिति, अमृत, पर्वतविशेष, (त्रि) सैन्य, मनोहर। [चांद।
सोम-ज, न. दुग्ध (त्रि.) चन्द्रमा। दूध, पु. बुध,
सोम-तीर्थ, पु. प्रभासतीर्थ।
सोमप(पा), पु. यज्ञमें सोमरस पीनेवाला।
सोमधारा, स्त्री. आकाश। आसमान।
सोम-पीतिन् (थित्) पु. पीतसोमलतारस; जिसने यज्ञमे सोमवेलका रस पिया हो।
सोम-भू, पु. बुधग्रह, (त्रि) सोमवंशोद्भव। चंद्रवंशी।
सोम-याग, पु. यज्ञविशेष; तीनवर्षके पीछे यह यज्ञ होता है, सोमवेलका रस इसमें पीया जाता है।
सोम-याजिन्, पु. "सोमाप" देखो। [बेल।
सोमलता(तिका), स्त्री. गडूचीलता, गिलोकी
सोम-सता, स्त्री. नर्मदा नदी।
सोमसिद्धान्त, पु. ज्योतिषग्रंथ विशेष।
सोम-सूत्र, न. प्रणाल, शिवलिङ्गस्थ गौरीयजल निर्गमनस्थान। जलहदी।
सोम-सूता, स्त्री. चन्द्रमासे उत्पन्न।
सोमाल, त्रि. कोमल। नरम।
सोल्लुण्ठ, पु. सोल्लुण्ठन। ताश्नहज़नी।
सौकर, त्रि. सूकर संबधीय,। सूअरका।
सौकरिक, पु. व्याध। शिकारी। [सूअरका।
सौकर्य्य, न. अनायास, शूकर क्रिया। सौखा,
सौख्य, न; सुखता। आराम, खुशी।
सौगत, पु. बुद्धविशेष। मुलहिद।
सौचि(क), पु. सूचिकर्म्मोपजीवी। दर्ज़ी।
सौजन्य, न. सुजनता, भद्रता; भलमानसी, दोस्ती।
सौण्डी, स्त्री. पिप्पली; मघ।
सौत्य, न. सारथ्य; गाडीवानी। कोचवानी।
सौत्र(त्रिक), पु. ब्राह्मण, (त्रि) सूत्रसम्बन्धीय, व्या. व्याकरणमें गणपाठ धृत धातुवत् दृष्ट प्रयोगमय, वा शब्द विशेष साधनार्थ स्वीकृत सूत्र धातु। शाही महल, अमृतका, चौंदवें भागमेंसे एक भाग।
सौत्रामणी(नी), स्त्री. यागविशेष। नामएक यज्ञ का। [वर्क।
सौदाम(मि)नी(म्नी), स्त्री. विद्युत; बिजली।
सौदायिक, न. स्त्रीधनविशेष।
सौदास, पु. इक्ष्वाकुवंशीय राजा विशेष।
सौध, पु. न. राजगृह (त्रि) सुधासम्बन्धीय।
सौधार, पु. नाटक चतुर्दशामार्गैकभाग।
सौधाल, न. शिवमन्दिर। [चनेका गोश्त।
सौन, त्रि. सूनासम्बन्धीय; सूनाका, कसाईके बे-
सौनन्द, पु. बलदेवजीका मूपल।
सौनन्दिन्, पु. बलदेव; कृष्णजी का भईया।
सौनिक, पु. कौलिक। कसाई।
सौन्दर्य्य, न. सुन्दरता। खूबसूरती।
सौपर्ण, न. मरकतमणि। पन्ना, सोंठ, गरुड़।
सौपर्णेय, पु. वैनतेय; गरुड़ देवता।
सौतिक, पु. रात्रियुद्ध, महाभारतका पर्व, (त्रि.)

स्तन्य, न. दुग्ध; दूध । [किये हुए पाला ।
स्तब्धकरण, त्रि. निश्चलोर्द्धकरण; कान खड़े
स्तबक, पु. गुच्छक, स्तुति, ग्रन्थ, परिच्छेद,समूह, (त्रि) स्तवकारक । गुच्छा, तअरीफ़, किताबका बाब, मजमह, तारीफ़ कुनिन्दह । [बेवकूफ़ ।
स्तब्ध, त्रि. जडीकृत, मूर्ख । बेहर्कत, बेहोश,
स्तम्ब, पु. तिनकों का गुच्छा । [सतून ।
स्तम्भ, पु. अकाण्ड रहितवृक्ष, । तनह, खंबा ।
स्तम्भकिन्, पु. वाद्यवि०; एक बाजा ।
स्तम्भन, न. जडीकरण, दृढकरन, मनहकरना, पु. काम बाणविशेष, ।
स्तम्भित, त्रि. जडीकृत, दृढीकृत । बेहर्कत किया गया, मज़बूत किया हुआ ।
स्तरिमन्, पु. तल्पशय्या, । बिस्तरा, बिछोना ।
स्तर, पु. भूमिभागवि०, शय्या, (स्त्री) (री) धूम, ज़मीन का ख़ास हिस्सा, बिस्तरा, धूंआं ।
स्तवक, पु. गुच्छा, समूह, ।
स्तवकित, त्रि. गुच्छा बनाया हुआ ।
स्ताव, पु. स्तुति । तअरीफ़ ।
स्तावक, त्रि. स्तवकर्त्ता, । ताअरीफ़ कुनिन्दह ।
स्तिमित, त्रि. आर्द्र (न) अचञ्चल । गीला, ठहरा हुआ ।
स्तुत, त्रि. ईडित । ताअरीफ़ किया हुआ (स्त्री) स्तव, दुर्गा । ताअरीफ़, देवी । [भाट ।
स्तुति-पाठक, (त्रि) (स्त्री) (ठिका) स्तुति कर्त्ता;
स्तुति-वाद, पु. प्रशंसा वाक्य । तअरीफ़ का कलमा ।
स्तुनक, पु. छाग । बकरा ।
स्तुभ, पु. छाग । बकरा ।
स्तूप, पु. संघात, निष्प्रयोजन । मजमह, बेफ़ायदह, ढेर ।
स्ते(स्तै)(न्य)न, न. चौर्य्य (पु.) तस्कर । चोरी, चोर । दुज़दनी, दुज़द ।
स्तेय, न. चौर्य्य; चोरी ।
स्तेयिन्, पु. चोर, सुनार ।
स्तेयित्व, न. गोलापन, जडता ।
स्तोक(क), पु. चातकपक्षी, जलविन्दु (त्रि) अल्प।
स्तोतृ, त्रि. स्तवकर्त्ता, । तअरीफ़ कुनिंदह ।
स्तोत्र, न. स्तव । तअरीफ़ ।
स्तोभ, पु. सामावयवविशेष, हेलन, स्तम्भन रागमें आलाप पूरा करनेवाला हरूफ़ ।
स्तोम, न. मस्तक, घन शस्त्र, (त्रि.) वक, नत, (पु.) समूह, यज्ञ, स्तव ।
स्त्यान, न. समूह, स्निग्ध, आलस्य, शब्द (त्रि) शब्दित, निविड, संहत । चिकना, घना, सुस्ती, आवाज़, गूंज-दार, आवाज़ कुनिन्दह ।
स्त्री, स्त्री. नारी । औरत ।
स्त्रीता(त्व), स्त्री. स्त्रीपन; जनानापन ।
स्त्री-धन, न. स्त्रियों को मातृ वा पितृकुलसे प्राप्तधन।
स्त्री-धर्म, पु. ऋतु । हैज़ ।
स्त्रीधर्मिणी, स्त्री. ऋतुमती । हैज़वाली ।
स्त्री-रत्न, न. उत्तम स्त्री । निहाय उम्दह औरत ।
स्त्रीलिङ्ग, न. योषिद्वाचक, स्त्री चिन्ह । मुअन्नस, औरत का निशान ।
स्त्रैण, न. स्त्रीत्व, स्त्री स्वभाव, स्त्रीसमूह, (पु.) स्त्री वशीभूत पुरुष, स्त्रीसंबंधीय, स्त्रीपन ।
स्थ, त्रि. स्थित, वर्तमान । मौजूद ।
स्थग, त्रि. धूर्त, शठ । शरीर, लुचा ।
स्थगन, न. ढांपना, छिपाना ।
स्थगित, त्रि. तिरोहित; छिपाहुआ, ढका हुआ ।
स्थण्डिल, न. यागार्थ प्रस्तुत भूमि; यज्ञके वास्ते तयार की हुई ज़मीन । हेम-भूमि ।
स्थण्डिल-शायिन्, स्थण्डिल-शय } पु. यज्ञस्थानमें सोनेवाला ।
स्थ-पति, पु. बृहस्पति सवन नामक यज्ञकर्त्ता, शिल्पी, कञ्चुकी, कुबेर, अधीश, (त्रि) सत्तम । कारीगर, मिस्तरी, दौलत का देवता, मालिक, नेक ।
स्थ-पुट, स्यत, न. (स्त्री) (ली) थलका मुलक, त्रि. दर्दसे कुबड़ाहु० (न) हड्डियोंके जोड़ ।
स्थवि, पु. तन्तुवाय, स्वर्ग, जङ्गम । तांती, बहिश्त, गैर मनकूलह ।
स्थविर, न. शैलेय, (पु) ब्रह्मा, (त्रि) वृद्ध, अचल। पहाड़का, बूढ़ा, कायम ।
स्थविष्ठ, त्रि. अति-स्थूल । निहायत मोटा ।
स्थल, न. तम्बू, (न. स्त्री) जलशून्य देश (स्त्री) (ली) । खेमा, थलका मुलक ।

सुप्तिजनक। रातकी लड़ाई, नींद पैदा करनेवाला।

सौभ, न. हरिश्चन्द्रपुर, यन्त्रविशेष।

सौभद्र(द्रेय), पु. सुभद्रा-तनय; अभिमन्यु।

सौभन, पु. भाग्य। किस्मत।

सौभाग्य, न. चतुर्थयोग। संधूर, सुहागा, नेक किस्मत, नाम एक योग का, विष्कम्भआदि सत्ताईस योगोंमें से ४ था, योग।

सौभागिनेय, पु. सुभगास्त्री का पुत्र।

सौभिक, पु. इन्द्रजालिक। मदारी।

सौभ्रात्र, न. भाईयों का परस्परस्नेह।

सौमनस्य, न. श्राद्धपिण्ड दानानन्तर ब्राह्मण हस्ते पुष्पदान मन्त्र, प्रीति, प्रसन्नता।

सौमित्र(त्रि), पु. लक्ष्मण; सुमित्रा का बेटा।

सौमेचक, न. सुवर्ण; सोना।

सौमेधिक, पु. सिद्ध, (त्रि) सुमेधावी, दाना।

सौमेरुक, न. सुवर्ण, (त्रि.) सुमेरुसम्बन्धीय। सोना, सुमेरुका।

सौम्य, पु. बुध–ग्रह, विप्र, भास्वर, उदुम्बर, वृष कर्क कन्या वृश्चिक मकर मीन ये राशियें, (त्रि) अनुग्रह, मनोज्ञ (स्त्री) (म्या) दुर्गा। अतारिद, ब्राह्मण, चमकीला, गूलर का पेड़, मेहरबानी, दिलचसप।

सौर, पु. शनैश्चरग्रह, तुम्बरुवृक्ष, सूर्य्योपासक। (स्त्री) (री) सूर्य्य-कन्या। जुहल, सूरज परस्त, सूर्य्य की बेटी।

सौरभ, न. कुङ्कुम, सुगन्ध। केसर, खुशबू।

सौरभेय, पु. वृष (स्त्री) (यी) धेनू (त्रि) सुरभि सम्बन्धीय। सांढ़, बैल, गाय, सुरभीका।

सौर(भ)भ्य, न. सुन्दरता। खूबसूरती, खुशबूई।

सौरसेय, पु. स्कन्द, सुरसापत्य,। स्वामिकार्तिक, सुरसा की औलाद।

सौराज्य, न. सुराजत्व। बादशाहत। [वासी।

सौराष्ट्र, पु. देशविशेष, बहु० (ष्ट्राः) उस देशकेनि- (स्त्री) (ष्ट्री) तद्देशीय सुगन्धयुक्त मृत्तिका, पार्वती, काशी।

सौरि, पु. शनिग्रह, असन–वृक्ष, यम, कृष्ण।

सौरिक, पु. स्वर्ग, सुराविक्रयी। बहिश्त, शराब-बेचने वाला।

सौवर्ग, त्रि. स्वर्गका। देवता।

सौवर्ण, त्रि. सोनेका।

सौवस्तिक, पु. पुरोहित, स्वस्तिवाचक।

सौविदल्लविदसौ, (पु.) कंचुककी, सुविद।

सौष्ठव, न. बड़ाई, ज्यादती, खूबसूरती,।

सौहार्द(र्ध), न. सख्य। दोस्ती।

सौहृद(द्य), न. मित्रता। दोस्ती।

स्कन्द, पु. कार्तिकेय नृपति, शरीर, पारद, नदी तट, पण्डित। बादशाह, जिसम, पारा, दर्या का किनारा, दाना। [चलना, चूता, सूकना

स्कन्दन, न. रेचन, गमन, क्षरण, शोषण; बहना

स्कन्द-षष्ठी, स्त्री. चैत्रशुक्ला षष्ठी। चैत सुदि छठ

स्कन्ध, पु. दरखत का तनह, देह, बादशाह, मजमह, रास्तह, सेनापति, युद्ध, छंदोवि० पुस्तकका अध्यायविशेष।

स्कन्ध-रुह, पु. नारिकेलकावृक्ष, वड़का पेड़।

स्कन्ध-वार, पु. शिविर। छावनी।

स्कन्ध-वाह(क), त्रि. कंधेसे उठाने योग्य भार।

स्कन्ध-शृङ्ग, पु. महिष; भैंसा।

स्कन्धस्, न. वृक्षमूल, स्कन्ध। वेखदरखत, कंधा।

स्कन्धिन्, पु. वृक्ष, (त्रि) स्कन्ध-युक्त। पेड़, तनहदार।

स्कन्न, त्रि. च्युत, क्षरित, शुष्क, गत। गिरा हुआ, सूका हुआ, गया हुआ।

स्कभन, न. शव। मुर्दा।

स्खदन, न. विदारण, पराजय। फाड़ना, हार।

स्खलन, न. पतन; गिरना खिसलना, तुलजाना, पक्का करना।

स्खलित, त्रि. पतित, चलित, कुण्ठित, प्रतिहत, (न.) पतन। गिरा हुआ, फिसला हुआ, रुका हुआ।

स्तन, पु. वक्षोज, अवयववि०। पिस्तान।

स्तनन, न. मेघशब्द; बादल की गर्ज।

स्तन-न्धय
स्तन-प } पु. अतिशिशु (स्त्री) (या) (यी) (पा) क्षीरखोरा बच्चा, क्षीरखोरी।

स्तनयित्नु, पु. मेघ, मुस्तक, मेघध्वनि, विद्युत, मृत्यु, रोग। बादल, मुर्थाघास, बादलकी गर्ज, वर्क मौत, बीमारी।

स्तनित, न. मेघ-निर्घोष, करतालि शब्द (त्रि) शब्दित। बादलकी गर्ज, तालीकी आवाज़।

स्तन्य, न. दुग्ध; दूध । [किये हुए धाला ।

स्तब्धकरण, त्रि. निश्चलोर्द्धकरण; कान खड़े

स्तबक, पु. गुच्छक, स्तुति, ग्रन्थ, परिच्छेद, समूह, (त्रि) स्तवकारक । गुच्छा, तअरीफ़, किताबका बाब, मजमह, तारीफ़ कुनिन्दह । [बेवकूफ़ ।

स्तब्ध, त्रि. जडीकृत, मूर्ख । बेहर्कत, बेहोश,

स्तम्ब, पु. तिनकों का गुच्छा । [सतून ।

स्तम्भ, पु. प्रकाण्ड रहितवृक्ष, । तनह, खंबा ।

स्तम्भकिन्, पु. वाद्यवि०; एक बाजा ।

स्तम्भन, न. जडीकरण, दृढकरन, मनहकरना, पु. काम बाणविशेष, ।

स्तम्भित, त्रि. जडीकृत, दृढीकृत । बेहर्कत किया गया, मज़बूत किया हुआ ।

स्तरिमन्, पु. तल्पशय्या, । बिस्तरा, बिछौना ।

स्तर, पु. भूमिभागवि०, शय्या, (स्त्री) (री) धूम, ज़मीन का ख़ास हिस्सा, बिस्तरा, धूंआं ।

स्तवक, पु. गुच्छा, समूह, ।

स्तवकित, त्रि. गुच्छा बनाया हुआ ।

स्ताव, पु. स्तुति । तअरीफ़ ।

स्तावक, त्रि. स्तवकर्त्ता, । ताअरीफ़ कुनिन्दह ।

स्तिमित, त्रि. आर्द्र (न) अचञ्चल । गीला, ठहरा हुआ ।

स्तुत, त्रि. ईडित । ताअरीफ़ किया हुआ (स्त्री) स्तव, दुर्गा । ताअरीफ़, देवी । [भाट ।

स्तुति-पाठक, (त्रि) (स्त्री) (ठिका) स्तुति कर्त्ता;

स्तुति-वाद, पु. प्रशंसा वाक्य । तअतीफ़ का कलमा ।

स्तुनक, पु. छाग । बकरा ।

स्तुभ, पु. छाग । बकरा ।

स्तूप, पु. संघात, निष्प्रयोजन । मजमह, बेफ़ायदह, ढेर ।

स्ते(स्तै)(न्य)न, न. चौर्य्य (पु.) तस्कर । चोरी, चोर । दुज़्दनी, दुज़द ।

स्तेय, न. चौर्य्य; चोरी ।

स्तेयिन्, पु. चोर, सुनार ।

स्तेयित्य, न. गोलापन, जडता ।

स्तोक(क), पु. चातकपक्षी, जलविन्दु (त्रि) अल्प ।

स्तोतृ, त्रि. स्तवकर्त्ता, । तअरीफ़ कुनिंदह ।

स्तोत्र, न. स्तव । तअरीफ़ ।

स्तोभ, पु. सामावयवविशेष, हेलन, स्तम्भन रागमें आलाप पूरा करनेवाला हुरूफ़ ।

स्तोम, न. मस्तक, धन शस्त्र, (त्रि.) वक्र, नत, (पु.) समूह, यज्ञ, स्तव ।

स्त्यान, न. समूह, स्निग्ध, आलस्य, शब्द (त्रि) शब्दित, निविड, संहत । चिकना, घना, सुस्ती, आवाज़, गूंज-दार, आवाज़ कुनिन्दह ।

स्त्री, स्त्री. नारी । औरत ।

स्त्रीता(त्व), स्त्री. स्त्रीपन; जनानापन ।

स्त्री-धन, न. स्त्रियों को मातृ वा पितृकुलसे प्राप्तधन ।

स्त्री-धर्म, पु. ऋतु । हैज़ ।

स्त्रीधर्मिणी, स्त्री. ऋतुमती । है ज़वाली ।

स्त्री-रत्न, न. उत्तम स्त्री । निहाय उम्दह औरत ।

स्त्रीलिङ्ग, न. योषिद्वाचक, स्त्री चिन्ह । मुअन्नस, औरत का निशान ।

स्त्रैण, न. स्त्रीत्व, स्त्री स्वभाव, स्त्रीसमूह, (पु.) स्त्री वशीभूत पुरुष, स्त्रीसंबंधीय, स्त्रीपन ।

स्थ, त्रि. स्थित, वर्तमान । मौजूद ।

स्थग, त्रि. धूर्त, शठ । शरीर, लुचा ।

स्थगन, न. ढांपना, छिपाना ।

स्थगित, त्रि. तिरोहित; छिपाहुआ, थका हुआ ।

स्थण्डिल, न. यागार्थ प्रस्तुत भूमि; यज्ञके वास्ते तयार की हुई ज़मीन । हेम-भूमि ।

स्थण्डिल-शायिन्, **स्थण्डिल-शय** } पु. यज्ञस्थानमें सोनेवाला ।

स्थ-पति, पु. बृहस्पति सवन नामक यज्ञकर्त्ता, शिल्पी, कञ्चुकी, कुवेर, अधीश, (त्रि) सत्तम । कारीगर, मिस्तरी, दौलत का देवता, मालिक, नेक ।

स्थ-पुट, स्तत, न. (स्त्री) (ली) थलका मुलक, त्रि. दर्दसे कुबड़ाहु० (न) हड्डियोंके जोड़ ।

स्थवि, पु. तन्तुवाय, स्वर्ग, जङ्गम । तांती, बहिश्त, गैर मनकूलह ।

स्थविर, न. शैलेय, (पु) ब्रह्मा, (त्रि) वृद्ध, अचल। पहाड़का, बूढ़ा, कायम ।

स्थविष्ठ, त्रि. अति-स्थूल । निहायत मोटा ।

स्थल, न. तम्बू, (न. स्त्री) जलशून्य देश (स्त्री) (ली) । खेमा, थलका मुलक ।

स्थल-पद्म, न. स्वनामख्यात पुष्पविशेष, यथा। –नेपाली गुलाब; बकुल, कदम्ब।

स्थाणु, पु. महादेव, (पु. न.) शाखाशून्य वृक्ष, (त्रि) स्थिर। बेशाख़ दरख़्त, कायम।

स्था-तव्य, त्रि. स्थानीय। ठहरनेके लायक।

स्थातृ, पु. स्थितिकर्ता; ठहरनेवाला।

स्थान, न. सादृश्य, अवकाश, स्थिति, सन्निवेश, वसति, ग्रन्थसन्धि, पात्र, निकट। मुआफ़िकत, मौक़अ, रिहायश, जगह, चाव, वर्तन, नज़दीक।

स्थानक, न. आलवाल, नगर, फेण। थाम्ला, शहर, झाग। [हर, जगह का।

स्थानीय, न. नगर, (त्रि) स्थानसम्बन्धीय। श-

स्थापत्य, पु. अन्तःपुर रक्षक, (न) स्थपतिभाव। ख्वाजहसरा, राजगीरी।

स्थापन, न. रोपण, पुंसवन, समाधि (स्त्री) (ना) निवेशन, लगाना, रखना, ठहराना, बैठा।

स्थापनीय, त्रि. स्थापनार्ह। ठहराने के लायक़।

स्थापित, त्रि. निश्चित, न्यस्त। यकीन किया हुआ, रक्खा हुआ।

स्थामन्, न. शक्ति, बल। ताक़त, ज़ोर।

स्थायित्व, न. स्थिरीभाव। कायमी। [कायम।

स्थायिन्, पु. भावविशेष, (त्रि) स्थितिविशिष्ट,

स्थायुक, पु. ग्रामैकाधिकारी; एक ग्रामका हाकिम।

स्थाल, न. थाल (स्त्री) (ली) पिठर, टोकनी।

स्थाली-पाक, पु. यज्ञ भाजन पक्कान्नादि।

स्थाली-पुलाक, पु. न्यायविशेष; थोडी वस्तु देखकर कुलको जानना।

स्थावर, न. धनुर्गुण, (पु) पर्वत (त्रि) अचलवस्तु, गृहादि। कमानका चिल्ला, पहाड, गैरमनकूला चीज।

स्थाविर, न. स्थविरत्व; बुढ़ापा।

स्थासक, पु. बुद्बुद; बुलबुला, एकचूर्ण।

स्थास्नु, त्रि. स्थिरतर, शाश्वत, वृक्ष। कायम, हमेशह, दरख़्त।

स्थित, त्रि. स्थिर, क़ायम, ठहरा हुआ।

स्थित-प्रज्ञ, त्रि. मनोगत सर्व वासना रहित, जिसके दिलमें खराब वासना नहीं।

स्थिति, स्त्री. न्याय्यपथ स्थिति, सीमा, अवस्थान, मुनासिब रास्तेपर ठहरना,।

स्थिति-स्थापक, न. पहिलीजगहमें स्थापनकारी गुण। लचक।

स्थिर, न. देव पर्वत, कार्तिकेय, वृक्ष, शनि, मोक्ष, अनड्वान, वृष, वृश्चिक, सिंह, कुम्भ राशि, (त्रि) कठिन, निश्चल, (स्त्री) (रा) पृथिवी देवता। पहाड, पेड़, ज़ुहल, नजात, बैल, सख़्त, कायम, ज़मीन।

स्थिरायुस्, पु. शाल्मली वृक्ष, (त्रि) चिरजीवी। सिम्बल का पेड,। उमरदराज़।

स्थूणा, स्त्री. गृहस्तम्भ, शूर्मी, लोह प्रतिमा; खूंटी, अहरन, लोहेकी तसवीर,।

स्थूम, पु. प्रकाश, चन्द्र,। चान्दनी, रौशनी।

स्थूर, पु. वृष, मनुष्य, बैल, आदमी।

स्थूरिन्, त्रि. भारादिके उठानेवाले, घोडा आदि।

स्थूरीपृष्ठ, पु. नवारूढ अश्व, । नयी सवारीमें का घोड़ा।

स्थूल, त्रि. मोटा, न. वोदा।

स्थूलोच्चय, पु, हाथीकी मध्यम चाल।

स्थूल-लक्ष्य, त्रि. बहु-प्रद; बड़ा दाता। फ़याज़।

स्थूल-शरीर, न. भौतिक शरीर। जिसम।

स्थूल-शाटक, पु. स्थूलवस्त्र (स्त्री) (टिका) मोटा कपड़ा। मोटी धोती।

स्थूल-हस्त, पु. हस्तिशुण्ड; हाथी की सूंड।

स्थूला-स्य, पु. सर्प्प, (त्रि) वृहन्मुख; सांप, बड़े मुहवाला।

स्थूलिन्, पु. उष्ट्र; ऊंट। शुतर।

स्थूलैला, स्त्री. एलाविशेष। बड़ी इलायची।

स्थूलोच्चय, पु. गजकी धीमी चाल।

स्थेय, त्रि. स्थिरतर, ठहराने योग्य। क़ायम, दायम।

स्थेष्ठ, त्रि. अति-स्थिर। क़ायम। [मज़बूती।

स्थैर्य्य, न. स्थिरता, दृढता, अवधारण। क़ायमी,

स्थो(स्थौ)रिन्, पु. भारवाहकाश्व; लादूटट्टू।

स्थौल्य, न. पीनत्व; मोटाई।

स्नपन, न. स्नान; न्हाना, गीलाकरना।

स्नपित, त्रि. कृतस्नान; न्हाया हुआ।

स्नात, त्रि. न्हाया हुआ। अभिषेक किया हुआ।

स्नातक, पु. आप्लुत-व्रती; समावर्तन के पीछे जिसने गृहस्थव्रत किया है वह ब्राह्मण।

स्नान, न. अवगाहन; न्हाना-वारुण, वायव्य, आग्नेय और ब्राह्म यह चार स्नान।

स्नातक-व्रत, न. स्नातकब्राह्मणका कर्तव्य व्रत ।
स्नानीय, त्रि. स्नानयोग्य, स्नानसम्पादकद्रव्य । न्हाने के लायक, न्हाने की चीजें, उबटन ।
स्नायिन्, त्रि. स्नानकर्ता; न्हानेवाला ।
स्नायु, स्त्री. वायुवाहिनीनाड़ी । रग ।
स्नायुर्म्मन्, न. नेत्ररोगविशेष । आंखकी बीमारी।
स्निग्ध, पु. वयस्य, रक्तैरण्ड, सरल-वृक्ष, (त्रि) स्नेह-युक्त (स्त्री) (ग्धा) मेदा । हमउमर, सुरख एरंडी, सरल का पेड़, प्यारा, चिकना, मिस्र ।
स्निग्धता, स्त्री. स्नेह; चिकनाहट ।
स्नु, पु. सानु, (स्त्री) वायुवाहिनी नाड़ी ।
स्नुषा, स्त्री. पुत्र-वधू, सुहीवृक्ष । बेटे की बहू ।
स्नुहि(ही), स्त्री. वृक्षविशेष ।
स्नेह, पु. प्रेम, तैलादिरसविशेष, गुणविशेष । मुहब्बत, तेल घी वगैरह की चिकनाई ।
स्नेहन, न. तैलमर्द्दन; तेल मलना । [व्वती ।
स्नेहवत्(स्नेहिन्), पु. स्नेहवान् । चिकना, मुह-
स्नेह-भू, पु. श्लेष्मा, (त्रि) स्निग्ध भूमि । कफ, चिकनी ज़मीन । [चिकनह ।
स्नेहित, पु. बन्धु, (स्त्री) स्नेहयुक्त । रिश्तहदार,
स्नेहिन्, पु. वयस्य, प्रिय, (त्रि) स्नेह-युक्त । दोस्त, प्यारा, चिकना ।
स्पद, पु. वेग, शीघ्र । तेज़ी । [कांपना ।
स्पन्द, पु. प्रस्फुरण; फरकना, बहना । तनक-
स्पन्दन, न.
स्पन्द, पु. सरल, वेग, चूना, चलना ।
स्पन्दित, त्रि. कम्पित, स्फुरित, (न) स्पदन । कांपा हुआ ।
स्पन्दिन्, त्रि. चूनेवाला, फरकने वाला (स्त्री) (नी) नाड़ी [बराबरीकी इच्छा ।
स्पर्द्धा, स्त्री. संहर्ष, उन्नति, साम्य । खुशी, तरक्की,
स्पर्द्धिन्, त्रि. स्पर्द्धाकारी । हासिद, यकसां ।
स्पर्श, पु. रोग, दान, स्पर्शन, स्पर्शक, सम्पराय, प्रणिधि, वर्गाक्षर, वायु, त्वगिन्द्रिय ग्राह्य गुण । बीमारी, खैरात, छूना, छूनेवाला, क से म तक २५ स अक्षर, हवा, छूना ।
स्पर्शन, न. दान, (पु) वायु । खैरात, हवा ।
स्पर्श-मणि, पु. स्वर्णजनक प्रस्तर विशेष; पारस-पत्थर ।
स्पर्शिन्, त्रि. छूनेवाला (पु.) चर । जासूस ।
स्पृश, त्रि. स्पर्श योग्य, । छूनेकेलायक ।
स्पृश्(शा), स्पर्श; छूना ।
स्पृश्य, त्रि. छूनेके योग्य ।
स्पृष्ट, त्रि. छूआ हुआ (न) छूना ।
स्पृष्टक, न. बहानेसे परस्त्रीको ठोकर मारना ।
स्पृहणीय, त्रि. लोभ्य । चाही हुई वस्तु ।
स्पृहा, स्त्री. इच्छा । ख्वाहिश, ।
स्फट, पु. स्त्री. सर्प फण, (स्त्री) (रि) (री) फटकरी ।
स्फटिक, पु. सूर्य्यकान्तमणि । आतशी शीशा ।
स्फटिकारि(का), स्त्री. श्वेतवर्णखनिद्रव्य; फटकरी । [खिंचना ।
स्फ(स्फा)रण, न. स्फुरण; फुरकना, चिल्ला
स्फाट(टी)क, पु. स्फटिक, (न) जलबिन्दु; बिलौर पानीका कतररह स्त्री (रि) फटी ।
स्फात, त्रि. वृद्धियुक्त; बढ़ा हुआ ।
स्फार, त्रि. बृहत्, टी । चौड़ा, मोटा ।
स्फिर, त्रि. प्रचुर; बहुत ।
स्फीत, त्रि. वर्द्धित; बढ़ाहुआ फूला हुआ ।
स्फुट, त्रि. व्यक्त, प्रफुल्ल, शुक्ल, भिन्न, स्पष्ट, छिन्न, (स्त्री) (टा) फराए । ज़ाहिर, खिला हुआ, सुपेद, जुदा, साफ, सांपकी फण ।
स्फुटित, त्रि. विकसित, भिन्न, परिहासित । व्यक्तीकृत । खिला हुआ, पूरा हुआ २, हंसा हुआ, ज़ाहर किया हुआ ।
स्फुटि(टी) स्त्री. पांउ फूटनेकी बीमारी ।
स्फुत्कर, पु. अग्नि; आग । आतिश ।
स्फुरण, न. किञ्चिचलन; फरकना ।
स्फुरत्, त्रि. कम्पनयुक्त; कांपताहुआ ।
स्फु(स्फू)र्ज्जथु, पु. वज्रनिर्घोष; वज्र पड़नेका शब्द।
स्फुरित, त्रि. फुरकता हुआ ।
स्फुलिङ्ग, त्रि. अग्निकण; चंगारा, फुनगी ।
स्फूर्ति, स्त्री. स्पन्दन, फुरकना, तेज़ी ।
स्फूर्तिमत्, त्रि. स्फूर्तियुक्त । हाज़िर जवाब ।
स्फोट, पु. स्फोटक; फोड़ा । व्याकरणमें पूर्व २ वर्ण के अनुभवके साथ अन्तिम वर्ण व्यंग्य शब्दविशेष ।
स्फोटन, न. विदारण, प्रकाशन, (स्त्री) (नी) मणिवेधक यंत्र, । फोड़ना, ज़ाहर करना, जवाहिर बींधनेकी सलाई ।

स्फोटायमान, पु. मुनिविशेष ।
स्फ्य, न. खड्गार, खादिरयज्ञ, काष्टविशेष ।
स्मय, . अद्भुत, गर्व, । अजीब, गरूर, अचरज।
स्मर, पु. कामदेव, शहवत, याद, वेद व्याख्यान (त्रि) स्मरण कर्ता (न) स्मरण ।
स्मरण, न. स्मृति, अर्थालङ्कार विशेष । यादाश्त ।
स्मरणीय, त्रि. स्मर्तव्य। याद करनेके लायक ।
स्मर-दशा, १. मदनावस्था, नयन प्रीति, चिंता, सङ्ग, संकल्प, अतिक्षीणता, विषयनिवृति, त्रपानाश, उन्माद मूर्छा मृत्यु ।
स्मर-प्रिया, स्त्री. रति; कामकी पत्नी । [चांद,
स्मर-सख, पु. वसन्त, चन्द्र । मौसिम वहार,
स्मर-हर, पु. शिव । महादेव ।
स्मार्त, त्रि. स्मृतिशास्त्रव्यवसायी, स्मृति शास्त्रोक्त कर्म । स्मृतिका, स्मृतिको माननेवाला, स्मृति शास्त्र का धर्म ।
स्मर्त्तव्य, त्रि. स्मरणीय । यादकरनेके लायक ।
स्मित, न. ईषद्धास्य, (त्रि) विकसित; मुस्करान; खिला हुआ, हंसता हुआ ।
स्मृत, त्रि. स्मरणविषय, स्त्री. (ति) याद, याद्दाश्त। मनुआदि ऋषियोंकी बनाईहुई संहिता ।
स्यन्न, त्रि. क्षारित, पतित, पात ।
स्यमन्तक, पु. सूर्य्यकान्तमणि, मणिविशेष । अतशी शीशा ।
स्यमीक, पु. वृक्षविशेष, वल्मीक, काल, मेघ। खास पेड़, बल्मीक, वक्त, बादल ।
स्याल, पु. स्यालक; साला ।
स्युत्त, न. आल्हाद, हर्ष । खुशी ।
स्यूत, त्रि. सूत्रित, प्रोत, ग्रथित,(पु) सूत्र रचित-भांड, सीया हुआ (स्त्री) (ति) सीवनी, सिलाई ।
स्यून(म), पु. किरण, सूर्य्य, स्यूत । शुआ, आफताब ।
स्रंसण, न. अधःपतन; नीचे गिरना ।
स्रसत्, (त्रि) गिरनेवाला, ।
स्रज्, पु. (क्, ग्) माल्य, मस्तकार्पित पुष्पसमूह, फूल माला, माथेपर चढ़ाए हुए फूल वगैरह ।
स्रग्वत्(ग्विन्), त्रि. माल्यविशिष्ट, मालापहिरे हुए ।
स्रजिष्ठ, **स्रजीयस्**, } "स्रग्विन्" देखो ।

स्रव, पु. स्रवण, निर्झर; वहना, झरना। [खिरना।
स्रवण, न. मूत्र, धर्म्म, क्षरण; मूत, पसीना,
स्रवत् त्रि. स्रवण शील; वहता हुआ (स्त्री) नदी।
स्रष्टृ, पु. ब्रह्मा (त्रि) रचनेवाला ।
स्राव, पु. गिरना, बहना ।
स्रुच, पु. (स्त्री) (ची) यज्ञपात्रविशेष; स्रुवा ।
स्रुत, त्रि. वहिता हुआ, गिरा हुआ, (स्त्री) (ति) वहना ।
स्रुव, पु. (स्त्री) (वा) होममें घृतादि पदार्थ डालनेकाखदिरकाष्ट का बना हुआ पात्रविशेष ।
स्रोत(स्), न. स्वाभाविकाम्बु निस्सरण, वेगजल-वहन । चशमह, ज़ोरसे पानीका वहिना ।
स्रोतस्वत्(स्विन्), त्रि. स्रोतयुक्त, (स्त्री) (ती) नदी, दर्य्या ।
स्रोतो-वह, पु. सुनद; नदी ।
स्व, पु. न. धन, (त्रि) आत्मीय (पु) ज्ञाति, आत्मा। दौलत, अपना, ज़ात, रूह ।
स्वक, त्रि. स्वीय; अपना, ।
स्वगत, न. मनोगत, (त्रि) आत्मप्राप्त, नट्यमें आलाप्यव्यक्ति, सिवाशंका श्रवणयोग्य वाक्य दिल मे ।
स्वङ्ग, त्रि. सुन्दराङ्ग विशिष्ट । खूबशकलदार ।
स्वच्छ, न. अतिनिर्मल, मुक्ता, शुभ्र, (त्रि) राग वियुक्त, शुक्ल, निर्मल, (पु) स्फटिक । साफ़ शफ़ाफ़, मोती सुफ़ेद, साफ़, साफ़दिल, सुपेद, बिलौर ।
स्वच्छन्द, त्रि. स्वाधीन । आज़ाद (पु) आज़ादी ।
स्वजन, पु. जाति, आत्मीय लोक । जात, अपने लोक ।
स्वतन्त्र, त्रि. स्वाधीन । आज़ाद ।
स्वतस्, व्य. अपनेआप । खुदबखुद ।
स्वत्र, पु. अंध, दर्शनहीन; अंधा ।
स्वत्व, न. अधिकार । कब्ज़ा ।
स्वदित, त्रि. कृतभक्षण; खायाहुआ ।
स्वदेश, पु. जन्मभूमि, । जाय पैदायश ।
स्वदेशिन्, पु. स्वदेशवासी । हमवतन ।
स्वध, व्य. पितृुद्देश्य हविर्दोम मंत्र (स्त्री) (धा) दक्षकन्या। पितरोंके लिये ज़कात देनेका मंत्र, आप्य मातृका देवीविशेष ।

स्वधिति, पु. स्त्री. (ती) कुठार; कुल्हाड़ी ।
स्वधीत, त्रि. उत्तमरूपेणाधीत; अच्छी रीतिसे पढ़ा हुआ ।
स्वन(नि), पु. शब्द । आवाज़ ।
स्वनित, न. गर्जित । बादल की गर्जना ।
स्वप्न, न. } निद्रा; नीद । [दीदार, ख्वाब ।
स्वपन, पु. } निद्रा, दर्शन, प्रसुप्त, विज्ञान । नींद;
स्वप्न-ज, त्रि. सोनेवाला ।
स्वभाव, पु. स्वकीयभाव । मिज़ाज ।
स्वभावोक्ति, स्त्री. स्वभाविक कथन; काव्यमें अर्थालंकारविशेष ।
स्व-भू, पु. विष्णु, ब्रह्मा, शिव ।
स्वयम्, व्य. आत्मना; अपनेआप । खुद ।
स्वयंवर, पु. कन्याकरके स्वयं पतिग्रहण, स्वयंवरका स्थान, स्त्री. (रा) अपने आप पतिको वरनेवाली लड़की ।
स्वय-म्भू, पु. ब्रह्मा, विष्णु, शिव । धूम्रपत्रा ।
स्वर्, व्य. स्वर्ग, परलोक, आकाश, शोभन । बहिश्त, आसमान, खूबसूरत ।
स्वर, पु. अच्; उदात्त अनुदात्त स्वरित, अ; आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ वर्ण; खड्ज, मध्यम, धैवत, निषाद, ऋषभ, गान्धार यह सात आवाज़; तन्त्रमे प्राणादि वायु व्यापारविशेष । [भिप्राय ।
स्वरस, पु. शिलापिष्ट—कल्प, कषायविशेष, स्वा-
स्व-राज्, पु. ब्रह्मा, स्वयम्प्रकाश, वैदिकछन्दोविशेष ।
स्वरा-पगा, स्त्री. नदीविशेष ।
स्वरु, पु. वज्र । इन्द्रका अस्त्र, बाणयज्ञ, यूप खण्ड ।
स्व-रुचि, त्रि. स्वतन्त्र, (स्त्री) स्वेच्छा । आज़ाद, अपनी मरज़ी । अपनी ख्वाहिश ।
स्व-रूप, न. स्वभाव, निजरूप, (त्रि) पण्डित, मनोज्ञ । मिज़ाज, अपनीशकल, दाना, खूबसूरत ।
स्वरूप, पु. योग्य, त्रि. कार्यसाधन योग्य भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्य ।
स्वर्ग, पु. देवतालय । बहिश्त ।
स्वर्गति, स्त्री. मृत्युः; मौत ।
स्वर्गिरि, पु. सुमेरुपर्वत ।
स्वर्गिन्, पु. देवता, स्वर्गगमनकर्ता । बहिश्ती ।
स्वर्ग्य(र्गीय), त्रि. स्वर्गीय; स्वर्गका ।

स्वर्ण, न. सुवर्ण, धुस्तूर, नागकेशर । सोना, धतूरा, नागकेशर ।
स्वर्ण-कार, पु. जातिविशेष; सुनार ।
स्वर्ण(न)दी, स्त्री. मन्दाकिनी; स्वर्ग की गंगा ।
स्वर्ण-द्रु, पु. आरग्वध वृक्ष । गूलरका पेड़ ।
स्वर्ण-पक्ष, पु. गरुड़, पक्षिराज ।
स्वर्ण-पाठक, पु. टङ्कण; सुहागा ।
स्वर्ण-पुष्पा, स्त्री. कण्टिकारी । कंडिपारी ।
स्वर्ण वर्णा, स्त्री. हरिद्रा, (त्रि) सुवर्णसदृश वर्णवती । हलदी, सुनहरी पत्तियोंवाली बूटी ।
स्वर्ण-दीधिति, पु. अग्नि; आग । आतिश ।
स्वर्वे-धू, स्त्री. अप्सरा, स्वर्गीय स्त्रीमात्र । हूर ।
स्वर्वेश्या, स्त्री. स्वर्ग की स्त्री । हूर ।
स्वर्वापी, स्त्री. गङ्गा नदी ।
स्वर्भानु, पु. राहुग्रह ८ वां, ग्रह ।
स्वल्प, त्रि. अत्यल्प; बहुत थोड़ा, अति थोड़ा ।
स्वसृ, स्त्री. भगिनी; बहिन ।
स्वसृ-पति, पु. भगिनी पति; बहनोई ।
स्वस्ति, व्य. आशीर्वाद, क्षेम, पुण्यादि ।
स्वस्तिक, पु. न. धनिगृहविशेष, (पु.) माङ्गल्द्रव्य, चतुष्पथ, पिष्टकविशेष, जिन चतुर्विंशति चिन्हान्तर्गत चिन्हविशेष । दौलतमंद का घर, चौरास्तह, बड़ा, खास नशान जैनों का ।
स्वस्ति-वाचन, न. मङ्गल कर्म के आरम्भ में पठनीय मन्त्रवि०, स्तुतिपाठकर्ता ।
स्वस्थ, त्रि. निरुपद्रव । बे खटके । [भानजी ।
स्वस्रीय, पु. भागिनेय; भानजा (स्त्री) (यी)
स्वागत, न. कुशलप्रश्न, सुखागत । मिज़ाज पुरसी, खुश आमदेदा ।
स्वाच्छन्द्य } न. स्वाधीनता । आज़ादी ।
स्वातन्त्र्य }
स्वाति(ती), स्त्री. सूर्य्यपत्नीविशेष, खड्ग, (पु.स्त्री.) सप्तविंशति नक्षत्रान्तर्गतनक्षत्रविशेष । सूरज की जोरू, शमशीर, १५ वां; नक्षत्र ।
स्वाद, पु. रसग्रहण, प्रीतिकरण । ज़ायक़ह, ख़ुशग्वार ।
स्वादन, न. रसग्रहण । ज़ायक़ह चखना ।
स्वादु, पु. मधुररस, गुड़, सुगन्धिद्रव्यविशेष । (स्त्री) द्राक्षा (त्रि.) इष्ट, मनोज्ञ । मज़ेअदार एक मुनक्कई, दाख, दिलपसंद, दिलचस्प ।

स्वादु-मूल, न. गर्जर; गाजर ।
स्वादु-रसा, स्त्री. काकोली, आम्रातकफल, मदिरा, शतावरी, द्राक्षा ।
स्वाधीन, त्रि. स्वतन्त्र । आज़ाद ।
स्वाधीनता, स्त्री. अनाधीनता । आज़ादी ।
स्वाध्याय, पु. आवृत्तवेदाध्ययन; जप, वेदांशविशेष, प्रणव । निजशाखाका पाठ, "ओं" का जप ।
स्वाध्यायिन्, पु. वेदपाठक; अपना वेद पढ़नेवाला ।
स्वाध्यायवत्, त्रि. वेद पढ़नेवाला ।
स्वान, पु. शब्द । आवाज़ ।
स्वान्त, न. मनः, गव्हर, (त्रि.) शब्दित । दिल, ग़ार, ग़ाजता हुआ ।
स्वाप्, पु. निद्रा, शयन, अज्ञान; नींद, सोना, बेख़बरी ।
स्वापतेय, न. धन । दौलत । [क़ुदरती ।
स्वाभाविक, त्रि. स्वभावतउत्पन्न । ज़ाती,
स्वामिन्, त्रि. अधिपति, (पु.) कार्तिकेय, राजा, विभु, हर, हरि, गुरु, भर्ता, वात्स्यायनमुनि, गरुड, परमहंस ।
स्वायम्भुव, पु. प्रथममनु; पहिलामनु, स्वयंभूपुत्र ।
स्वाराज्, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा ।
स्वाराज्य, न. ईश्वरत्व । इकबाल ।
स्वारोचिष्, पु. द्वितीयमनु; दूसरामनु ।
स्वा-र्जित, त्रि. स्वयंलब्ध । खुद कमाया हुआ ।
स्वार्थ, पु. स्वीय धन, स्वीयवस्तु, आत्मप्रयोजन, स्ववृत्ति, लिङ्गार्थविशेष । अपना माल, अपना मतलब ।
स्वास्थ्य, न. आरोग्य, सन्तोष । तनदरुस्ती,
स्वाहा, व्य. देवहविर्दान मंत्र (स्त्री) अग्निभार्या, देवताको हवि देनेका मंत्र ।
स्विदत्, व्य. प्रश्न, वितर्क, पादपूरण, प्रज्ञा, जिज्ञासा, । सवाल, दलील, पूछना आदि अर्थोंका बोधक । [पका हुआ ।
स्विन्न, त्रि. घर्मयुक्त, आर्द्र, पक्व । भीगा, गीला,
स्वीक, त्रि. अपना । निजका ।
स्वीकार, पु. अङ्गीकार, प्रतिग्रह । मनज़ूर ।
स्वीय, त्रि. अपना, (स्त्री) (या) नायकाविशेष ।
स्वेच्छा, स्त्री. अपनी मरज़ी ।
स्वेद, पु. घर्म, स्वेदन, ऊष्मा, ताप । पसीना घाम, भाफ़ ।
स्वेद-ज, त्रि. उष्मजात मच्छर मक्खी वग़ैरह ।
स्वेदनिका, स्त्री. कन्दु, भर्जनपात्र; कढ़ाई ।
स्वैर, त्रि. स्वच्छन्द, मन्द (न.) आज़ादी, आज़ाद, खराब ।
स्वैरिन्, त्रि. स्वेच्छाचारी (णी) व्यभिचारिणी । आ ज़ाद, छिनाल औरत ।
स्वैरिन्ध्री, स्त्री. परायेघरमें रही हुई स्वाधीन शिल्पकारिणी औरत ।
स्वोपार्जित, त्रि. आप जमा किया हुआ ।
स्वोवश्यीय, न. कल्याण, शुभ, भलाई ।

ह.

ह, व्य. पादपूरण, सम्बोधन, विनिग्रह, नियोग, क्षेप, कुत्सा ।
हं, व्य. क्रोधोक्ति, अनुनय, आकाश, बीज (पु.) छेदन, उपदंश, शिव, विष्णु, चन्द्र ।
हंस, पु. पक्षिविशेष, निर्लोभनृप, विष्णु, सूर्य्य, परमात्मा, मत्सर, योगिविशेष, मंत्रवि०, शरीरस्थवायुवि०, तुरङ्गम वि०, गुरु, पर्वत, शिव, श्रेष्ठ, विशुद्ध, (स्त्री) (सी) हंसभार्या, द्वाविंशत्यक्षरछंदोविशेष ।
हंसक, पु. पैरका कड़ा, नूपर, हसली ।
हंस-गामिनी, स्त्री. हंसकीसी चालवाली स्त्री, ब्रह्माणी ।
हंहो, व्य. सम्बोधन, दर्प्प, दम्भ, प्रश्न; दूसरे बुलाना, ग़रूर, मकर, सवाल । इन अर्थोंमें आनेवाला अव्यय ।
हकार, पु. आव्हान; बुलाना ।
हञ्जा(ञ्ज), व्य. नाट्योक्तिमें चेटीका बोलना ।
हञ्जि, पु. क्षुत; छींक ।
हट्ट, पु. क्रयविक्रयस्थान; हाट, बाजार, मेला ।
हठ, पु. बलात्कार, बल, (स्त्री) (ठी) वृक्षविशेष । ज़बरदस्ती; ज़ोर ।
हड्ड, न. अस्थि; हड्डी ।
हड्डक, पु. चाण्डाल । खाक रोब ।
हण्डा, स्त्री. नाट्योक्तिमें नीच संबोधन (स्त्री) (ण्डी) (ण्डिका) मृत्पात्रविशेष, कमीनों को बुलाने में, हंडिया ।

हण्डे, व्य. नाट्यमें नीच स्त्रीके बुलानेमें अव्यय ।
हत, त्रि. निराश, घातित, गुणित, (न) हनन । नाउमेद, कतल किया हुआ, गुणा हुआ कतल ।
हतक, व्य. नाशित, नीच, प्रतिहत, निराश ।
हता(श), त्रि. निर्दय, आशारहित, पिशुन, वन्ध्य । बेरहिम, नाउमेद, चुगल, बांझ ।
हति, स्त्री. मारना, गुणना । ज़र्ब ।
हतौजस्, त्रि. दुर्बल, (पु) ज्वर । कमजोर, बुख़ार ।
हतु, पु. व्याधि, शस्त्र । बीमारी, हथियार ।
हत्या, स्त्री. कतल; मारना ।
हदन, न. विष्ठात्याग, मलत्याग; हगना ।
हद्दा, स्त्री. मेषादि त्रिंशदंश; मेषादिराशियोंका तीसवां हिस्सा । [देना ।
हनन, न. मारना, गुणना । कतल करना, ज़र्ब-
हनु, पु. स्त्री. कपोलद्वयो परिभाग । जबाड़ा ।
हनुमत्, पु. वानरविशेष, अंजनीके पेटसे पवनदेवसे पैदा हुआ २ । [दर्द, रहम ।
हन्त, व्य. हर्ष, विषाद, आर्ति । खुशी, रंज,
हन्तकार, पु. अतिथिदेय षोडशग्रास, १६ ग्रास जो अतिथिको देने लिये हैं ।
हन्तु, पु. मृत्यु, वृष । मौत, बैल ।
हन्तृ, पु. (ता) मारने वाला । कातिल ।
हम्, व्य. क्रोधोक्ति । गुस्सेकी कलाम ।
हम्भा(म्मा), स्त्री. गोध्वनि । गायके बोलनेकी आवाज़ ।
हय, पु. इन्द्र, घोटक, घोड़ा (स्त्री) (यी) घोड़ी ।
हयग्रीव, पु. दैत्यविशेष, भगवदवतारविशेष ।
हयरूप, पु. मातलि; इन्द्रका गाड़ीवान् ।
हयन्, न. घोड़ेकी गाडी (पु.) बरस ।
हयवाहन्, (पु) सूर्य-पुत्र, कुबेर ।
हर, पु. अग्नि, गर्दभ, हरण, शिव, (त्रि) हरणकर्ता । आग, गधा, चोरी, नसबनुमा, चोर, छीन लेने वाला ।
हरक, पु. शिव । महादेव ।
हरण, न. यौतकादिदेयद्रव्य, भुजङ्गक, स्वर्ण, कपर्दक, उष्णोदक, भागग्रहण, (पु.) दहेजमें देनेकी चीज़, बाज़, सोना, जटाका जूड़ा । गरमपानी, तक्सीम, हाथ ।
हरि, पु. विष्णु, सिंह, शुक, सर्प, वानर, भेक, चंद, सूर्य, वायु, अश्व, यम, शिव, ब्रह्मा, किरण, इंद्र, मयूर, कोकिल, हंस, अग्नि, भर्तृहरि, हरिद्वर्ण, । शेर, तोता, सांप, बंदर, मेंडक, चांद, हवा, घोड़ा, सुआ, मोर, कोइल, आतिश, ज़र्द रंग ।
हरिचन्दन, पु. न. देवतरुविशेष । संदलका पेड़ ।
हरिण, पु. स्वनामख्यातपशु, शुक्लवर्ण, विष्णु, शिव, सूर्य, हंस, पाण्डुवर्ण, (त्रि) पाण्डुवर्णयुक्त, (स्त्री) (णी) मृगी, नारीविशेष, तरुणी, वरस्त्री, १७ अक्षरछन्दोविशेष ।
हरिणाक्षी, स्त्री. मृगनयनी स्त्री ।
हरिणाश्व, पु. पवन । हवा ।
हरित(त्), पु. हरिद्वर्ण, सिंह. त्रि. हरिद्वर्णयुक्त (स्त्री) (ता) दूर्वा, हरिद्रा, नीलदूर्वा । हरा, शेर, सबज़, दूब, हल्दी, तरफ़ ।
हरिताल(क), न. पीतवर्ण धातुविशेष, (स्त्री.) (लिका) भाद्रशुक्लतृतीया । हड़ताल, भादो शुदि तीज ।
हरितालिका, (स्त्री). दूब घास, छायापथ ।
हरिताश्मन्, न. मरकतमणि, हीरा, पन्ना ।
हरिदश्व, पु. सूर्य, अर्कवृक्ष, नृपतिविशेष । आफ़ताब, आकका पोदा, पादशाह ।
हरिद्रा, स्त्री. औषधिविशेष; हल्दी ।
हरिद्वार, न. मायापुरी, हरिद्वार ।
हरिमणि, पु. मरकतमणि; पन्ना ।
हरिप्रस्थ, न. इंद्रप्रस्थ नगर । पुरानी देहली ।
हरिप्रिय, पु. वृक्षविशेष, शिव, मूर्ख, (न) कृष्णचंदन, (स्त्री) (या) लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशीतिथि, पृथिवी ।
हरिवर्ष, पु. जम्बुद्वीपस्थ नव वर्षान्तर्गत वर्षविशेष, निषद और हेमकूट के बीचका । [प्रहर ।
हरिवासर, न. एकादशी और द्वादशीका पहिला
हरिशयन, पु. आषाढशुदि द्वादशीसे लेकर कार्तिकशुदि द्वादशीतक काल ।
हरिश्चन्द्र, पु. नृपविशेष, त्रिशङ्कु राजाका पुत्र ।
हरिष, पु. आल्हाद (स्त्री) (षा) मांस व्यंजनविशेष, गोस्तकी तरकारी ।
हरिहय, पु. इन्द्र, सूर्य, कार्तिकेय, गणेश ।
हरीतकी, स्त्री. स्वनामख्यात वृक्ष; हरीड़ ।

स्वादु-मूल, न. गर्जर; गाजर ।
स्वादु-रसा, स्त्री. काकोली, आम्रातकफल, मदिरा, शतावरी, द्राक्षा ।
स्वाधीन, त्रि. स्वतन्त्र । आज़ाद ।
स्वाधीनता, स्त्री. अनाधीनता । आज़ादी ।
स्वाध्याय, पु. आवृत्तवेदाध्ययन; जप, वेदांशविशेष, प्रणव। निजशाखाका पाठ, "ओं" का जप।
स्वाध्यायिन्, पु. वेदपाठक; अपना वेद पढ़नेवाला ।
स्वाध्यायवत्, त्रि. वेद पढ़नेवाला ।
स्वान, पु. शब्द । आवाज़ ।
स्वान्त, न. मनः, गव्हर, (त्रि.) शब्दित । दिल, ग़ार, गाजता हुआ ।
स्वाप्, पु. निद्रा, शयन, अज्ञान; नींद, सोना, वेख़बरी ।
स्वापतेय, न. धन । दौलत । [क़ुदरती ।
स्वाभाविक, त्रि. स्वभावतउत्पन्न । ज़ाती,
स्वामिन्, त्रि. अधिपति, (पु.) कार्तिकेय, राजा, विभु, हर, हरि, गुरु, भर्ता, वात्स्यायनमुनि, गरुड, परमहंस ।
स्वायम्भुव, पु. प्रथममनु; पहिलामनु, स्वयंभूपुत्र।
स्वाराज्, पु. इन्द्र; देवताओंका राजा ।
स्वाराज्य, न. ईश्वरत्व । इक़बाल ।
स्वारोचिष्, पु. द्वितीयमनु; दूसरामनु ।
स्वा-र्जित, त्रि. स्वयंलब्ध । खुद कमाया हुआ ।
स्वार्थ, पु. स्वीय धन, स्वीयवस्तु, आत्मप्रयोजन, स्ववृत्ति, लिङ्गार्थविशेष । अपना माल, अपना मतलब ।
स्वास्थ्य, न. आरोग्य, सन्तोष । तनदरुस्ती,
स्वाहा, व्य. देवहविर्दान मंत्र (स्त्री) अग्निभार्या, देवताको हवि देनेका मंत्र ।
स्विदत्, व्य. प्रश्न, वितर्क, पादपूरण, प्रश्न, जिज्ञासा, । सवाल, दलील, पूछना आदि अर्थोंका वोधक । [पका हुआ ।
स्विन्न, त्रि. घर्मयुक्त, आर्द्र, पक्व । भीगा, गीला,
स्वीक, त्रि. अपना । निजका ।
स्वीकार, पु. अङ्गीकार, प्रतिग्रह । मनज़ूर ।
स्वीय, त्रि. अपना, (स्त्री) (या) नायकाविशेष ।
स्वेच्छा, स्त्री. अपनी मरज़ी ।
स्वेद, पु. घर्म, स्वेदन, ऊष्मा, ताप । पसीना घाम, भाफ़ ।
स्वेद-ज, त्रि. उष्मजात मच्छर मक्खी वग़ैरह ।
स्वेदनिका, स्त्री. कन्दु, भर्जनपात्र; कढ़ाई ।
स्वैर, त्रि. स्वच्छन्द, मन्द (न.) आज़ादी, आज़ाद, ख़राव ।
स्वैरिन्, त्रि. स्वेच्छाचारी (णी) व्यभिचारिणी । आ ज़ाद, छिनाल औरत ।
स्वैरिन्ध्री, स्त्री. परायेघरमें रही हुई स्वाधीन शिल्पकारिणी औरत ।
स्वोपार्जित, त्रि. आप जमा किया हुआ ।
स्वोवश्वीय, न. कल्याण, शुभ, भलाई ।

ह.

ह, व्य. पादपूरण, सम्वोधन, विनिग्रह, नियोग, क्षेप, कुत्सा ।
हं, व्य. क्रोधोक्ति, अनुनय, आकाश, वीज (पु.) छेदन, उपदेश, शिव, विष्णु, चन्द्र ।
हंस, पु. पक्षिविशेष, निर्लोभनृप, विष्णु, सूर्य्य, परमात्मा, मत्सर, योगिविशेष, मंत्रवि०, शरीरस्थवायुवि०, तुरङ्गम वि०, गुरु, पर्वत, शिव, श्रेष्ठ, विशुद्ध, (स्त्री.) (सी) हंसभार्या, द्वाविंशत्यक्षरछंदोविशेष ।
हंसक, पु. पैरका कड़ा, नूपर, हसली ।
हंस-गामिनी, स्त्री. हंसकीसी चालवाली स्त्री, ब्रह्माणी ।
हंहो, व्य. सम्वोधन, दर्प्प, दम्भ, प्रश्न; दूरसे वुलाना, ग़ुरूर, मकर, सवाल । इन अर्थोंमें आनेवाला अव्यय ।
हक्कार, पु. आव्हान; बुलाना ।
हञ्जा(ञ्ज), व्य. नाट्योक्तिमें चेटीका वोलना ।
हञ्जि, पु. क्षुत; छींक ।
हट्ट, पु. क्रयविक्रयस्थान; हाट, वाजार, मेला ।
हठ, पु. वलात्कार, वल, (स्त्री) (ठी) वृक्षविशेष । ज़वरदस्ती; ज़ोर ।
हड्ड, न. अस्थि; हड्डी ।
हड्डक, पु. चाण्डाल । खाक रोव ।
हंडा, स्त्री. नाट्योक्तिमें नीच संवोधन (स्त्री) (ण्डी) (ण्डिका) मृत्पात्रविशेष, कमीनों को वुलाने में, हंडिया ।

हायन, न. वत्सर, (पु) व्रीहिविशेष, अग्निशिखा, । वरस, धान, अगिका शोलह ।

हार, पु. मोतीमाला, तक्सीम-कुनिंदह ।

हारक, पु. माजक, (त्रि) वाहक । तकसीमकुनिन्दह, उठानेवाला ।

हारि(री), स्त्री. पथिकसंतान, मुक्ताफल, (त्रि) रुचिर । मुसाफिरकी औलाद, मोती, खूबसूरत ।

हारि-कण्ठ, पु. कोकिल, हारयुक्त गलदेश; कोइल, हार पहिने हुए, ।

हारिण, त्रि. हिरनका ।

हारित, पु. पक्षीविशेष, (त्रि) लक्ष । खास चिड़िया, सबज ।

हारिद्र, त्रि. हरिद्रावर्ण, (पु.) कदम्ब । हल्दीसे रंगा हुआ ।

हारिन्, पु. चुरानेवाला । चोर ।

हारीत, पु. पक्षीविशेष, मुनिविशेष, केतव । खास-परिंद:, मुनिविशेष, फ़रेब ।

हार्द(र्द्द), पु. प्रेम, स्नेह । मुहब्बत, मेहरबानी ।

हार्य्य, पु. बिभीतकवृक्ष, (त्रि) हारयितव्य, भाज्य । खास पेड़, चुराया जानेके लायक, मकसूम अलअ ।

हाल, पु. बलराम, शालिवाहन राजा, हल (स्त्री) (ला) मद्य, तालरस, (ली) कनिष्ठा स्याली । शराब, छोटी साली ।

हालाहल, न. विषविशेष, (पु.) कीटविशेष (स्त्री) (ली.) मद्यविशेष ।

हालिक, त्रि. हलका । किसान ।

हालु, पु. दंत; दान्त ।

हाव, पु. अव्हान, कटाक्ष । बुलाना, करिशमा ।

हास, पु. हास्य । हंसी ।

हासक, त्रि. हंसानेवाला ।

हासिन्, (त्रि) हंसानेवाला ।

हास्य, त्रि. हंसी ।

हास्या-र्णव, पु. नाटकविशेष ।

हास्या-स्पद, न. हंसीकी जगह ।

हासस, पु. चंद्र; चांद । माहताव ।

हासिका, स्त्री. हंसानेवाली ।

हास्तिक, न. हस्तिसमूह; हाथियोंका झुंड ।

हास्तिन, न. हस्तिनापुर नगर ।

हाहा, पु. देवगन्धर्वविशेष, (व्य) विस्मय । शोकवाचक उपसर्ग । तअज्जुब, आफ़सोसके जितानेवाला उपसर्ग ।

हि, व्य. पु. हिंस पशु, अथर्वविद्ब्राह्मण, शत्रु, (त्रि) हिंसाकर्ता । दरिंदा, अथर्व जाननेवाला ब्राह्मण, दुश्मन, इज़ारसान् ।

हिंसन, न. हिंसा करना । इज़ा पहुंचाना, कतल करना ।

हिंसा, स्त्री. घात, चौर्य्यादि, कतल, चोरीकरना इज़ापहुंचाना ।

हिंसालु, त्रि. हिंसाशील । कातिल ।

हिंसीर, पु. व्याघ्र, खल । चीता, शरीर ।

हिंस्र(क), न. हिंसाशील (पु) घोर भीमसेन । शिव, (स्त्री) (स्रा) जटामांसी, नाड़ी । ईजारसां, खौफ़नाक, तुंद, रग, ख़ास बूटी ।

हिक्का, स्त्री. हिचकी ।

हिक्कार, पु. व्याघ्र, शार्दूल; चीता ।

हिज्जल, पु. वृक्षविशेष ।

हिङ्गु, न. मूलविशेषनिर्यास; हींड़ ।

हिङ्गुल, (त्रि.) पु. न. रक्तद्रव्यविशेष । शिंगरफ ।

हिडिम्ब, राक्षसवि०, (स्त्री) (म्बा) खास राक्षस ।

हिडिम्बजित्, पु. भीमसेन ।

हिण्डन, न. भ्रमण, लेखन; घूमना, लिखना ।

हिण्डिक, पु. लग्नाचार्य, दैवज्ञ, ज्योतिषी । नजूमी ।

हिण्डि(ण्डी)र, पु. समुद्रफेण; समुंदरझाग दवा ।

हित, त्रि. पथ्य, गत, धृत, इष्टसाधन, मंगल, मित्र, (पु.) लाभ, (स्त्री) (ता) गर्त । मुफीद, गुज़शत:, पकड़ा हुआ, मुफीद, दोस्त, फ़ायदह, गढ़ा ।

हित-कर, त्रि. भला करनेवाला ।

हित-काम, त्रि. भला चाहनेवाला ।

हित-प्रणी, पु. चार । जासूस ।

हितैषिन्, त्रि. हितेच्छु, दाता, भलाचाहनेवाला ।

हितो-पदेश, पु. नेक नसीहत, ग्रंथविशेष ।

हित्वन्, पु. शीघ्र । जल्दी ।

हिन्दोल, पु. षड्रागान्तर्गत रागविशेष, श्रावण शुक्लपक्षविहित भगवद्यात्राविशेष; हिंडोल राग, झूलन यात्रा (स्त्री) (ला) दोली, पालकी ।

हिम, त्रि. शीतगुण वशिष्ट, (न.) आकाशवाष्प, चन्दन, पद्मकाष्ठ, मौक्तिक, नवनीत शीत (पु) चन्दनवृक्ष, चन्द्र, कर्पूर, हेमन्तऋतु, हिमालय,

हर्तृ, त्रि. हरणकर्ता, पु. चोर, हरनेवाला ।
हर्फन्, न. जृम्भण; जभाई ।
हर्मित्, त्रि. क्षिप्त, दग्ध, जृम्भित, । फैंका हुआ, जला हुआ, जिझाई लेता हुआ ।
हर्म्मुट, पु. सूर्य्य, कच्छप । आफताब, कछुआ ।
हर्म्य, न. धनियोंकेघर; अटारी ।
हर्य्यक्ष, पु. सिंह, कुबेर, शेर ।
हर्य्यंत, पु. घोटक, अश्वमेधीयाश्व, अश्वमेधका घोडा।
हर्य्याश्व, पु. इन्द्र ।
हर्ष, पु. इष्टश्रवण जन्य सुख । खुशी ।
हर्षयित्नु, पु. वेटा, सोना, खुश रहिनेवाला ।
हर्षुल, पु. मृग, कामुक, (त्रि) हर्षणशील; हरण, शहवती, खुश ।
हल, न. लाङ्गल (स्त्री) (ला) नाट्योक्तौ सख्याव्हान। हल, नाटक में नीच दासीया सखीको बुलाना ।
हलधर(भृत्), पु. वलराम, (त्रि) हलधारी ।
हलन्त, पु. व्यञ्जन अक्षर जिसके अन्तमें हो वह शब्द ।
हलिन्, पु. वलदेव, कार्षिक । किसान।
हलि-प्रिय, पु. कदंब, स्त्री. (या) रेवती ।
हलीषा स्त्री. लाङ्गुलदण्ड । हलकी लकड़ी ।
हल्य, त्रि. कर्षितक्षेत्र, (स्त्री) (ल्या) हलसमूह । हल चलाया हुआ खेत, वहुतसे हल ।
हल्लीष(क), न. स्त्रीसहित नर्तन । स्त्रीको साथ लेकर नाचना ।
हव, पु. होम, यज्ञ, आव्हान, आज्ञा ।
हवन, न. होम, आगमें मंत्रोंसे घी आदिका डालना, (स्त्री) (नी) होमका कुण्ड ।
हवनीय, त्रि. हवनके लायक, (न) होमकी वस्तु ।
हविर्भुज्, पु. अग्नि; आग ।
हविष्य, न. घृत; घी, चावल ।
हविस्, न. हवनीय द्रव्य । घृत, जल, होमकी सामग्री, घी, पानी ।
हविष्यान्न, न. व्रतभक्षणीय द्रव्य; उवलेहुए चावल वगैरह । [योग्य ।
हव्य, न. देववली, हविर्योग्य । देवताओंके देने
हव्य-भाज्, पु. चरु । घी खांड तिल जों आदि ।
हव्यवाह(ह) न. पु.
हव्याश (न.) पु. } अग्नि । आग ।

हस, पु. हास्य; हंसी ।
हसन, त्रि. हंसी करनेवाला ।
हसन्तिका, स्त्री. अंगीठी ।
हसित, न. हास्य, कामधनुष, (त्रि) विकसित, कृतहास्य। हंसी, कामदेवकी कमान, खिला हुआ, हंसा हुआ । [हाथभर माप, (न) धोंकनी ।
हस्त, पु. हाथ, हाथीका सुंड, १३ वां नक्षत्र,
हस्त-लिख, पु. मशक ।
हस्तिक, न. हस्तिसमूह; हाथियोंका झुंड ।
हस्तिकंद, पु. वृहत्कन्दवि०; वड़ा कंद ।
हस्तिकक्ष्य, पु. सिंह, व्याघ्र; शेर, वाघ ।
हस्तिन(ना)पुर, पु. चन्द्रवंशीय हस्ती नामक राज-निर्मितपुर; पुरानी दिल्ली ।
हस्तिदन्त, पु. खूंटी, कील ।
हस्तिन्, पु. हस्ती (स्त्री) (नी) गजपत्नी, स्त्री. । हथिनी, चार प्रकारकी स्त्रियोंमेंसे एक ।
हस्ति नख, पु. पुरद्वारस्थ मृत्तिकास्तूप । गांओंके पास खातका ढेर ।
हस्ति(स्ती)प, पु. हस्तिपालक । फीलवान् ।
हस्ती-मद्, पु. मत्तहाथीके दोनो गण्ड, दोनों शुंड-छिद्र, दोनों आखों और शिश्न इन स्थानोंसे वहता हुआ मद ।
हस्ति-मल्ल, पु. गणेश, वृहत्नाग, ऐरावत ।
हस्तिशुण्डा(ण्डी), स्त्री. क्षुपवि०; हाथीकी सूंड, खास वूटी ।
हस्ते, व्य. स्वीकार । मनजूर । [दिया हुआ ।
हस्त्य, न दत्त, हस्तकृत । हाथसे किया हुआ, या
हस्र, त्रि. मूर्ख । जाहिल ।
हहल, न. गरलविशेष । एक खास ज़हर ।
हहा, पु. नाम एक गंधर्वका (व्य) विखाद, शोक, आर्त निन्दा । गम, अफसोस, दर्द, मलामत ।
हाङ्गन्, पु. जलजीवविशेष ।
हार, पु. मत्स्यविशेष, तंदुआ ।
हाटक, न. स्वर्ण धूस्तर (त्रि) स्वर्णनिर्मित; सोना, धतूरा, सोनेका वनाहुआ ।
हातव्य, त्रि. त्यक्तव्य, छोड़ देनेके लायक ।
हात्र, न. मजदूरी, किराया । [तर्क, नुकसान ।
हान, न. त्याग (स्त्री) (नि) गतिक्षति (त्रि) त्यक्त ।
हान्द्र, न. मरण, मौत; मरना ।

ह्रद्, त्रि. } दिल । जीवित ।
हृदय, न. }
हृदय-ग्राहिन्, (त्रि) मनोहर । दिलचस्प ।
हृदय-वत् } त्रि. हृदयालु । साफ़दिल, मेहरवान्।
हृदयिन् }
हृदये-श, पु. भर्त्ता (स्त्री) (शा) भार्य्या । खाविंद जोरू ।
हृदि-स्पृश्, त्रि. हृद्य; प्यारा ।
हृदिका-सुत, पु. कृपाचार्य, ।
हृद्य, न. गुडत्वच (पु) वशकृत् वेदमन्त्र, (त्रि) मनोहर, हृत्प्रिय (स्त्री) (द्या) वृद्धिनामकौषधि । दालचीनी, वश करनेके मन्त्र, दिलपसंद ।
हृद्रोग, पु. कुम्भराशि, काम, हृदयपीड़ा ।
हृल्लास, पु. हिक्का । हिचकी ।
हृल्लेख, न. ज्ञान, (पु.) विरहपीडा, तर्क (स्त्री) (खा) औत्सुक्य । इलम, दलील, ख्वाहिश ।
हृषित, त्रि. विस्मृत, प्रीत, प्रहत, प्रणत, वर्म्मित। भूला हुआ, प्यारा, मारा हुआ, झुका हुआ, ज़रहपोश ।
हृषी, स्त्री. अग्नि, चन्द्रः आग, चांद ।
हृषीक, न. इन्द्रिय । हवास ।
हृषीके-श, पु. विष्णु ।
हृष्ट, त्रि. प्रीत, जातहर्ष (स्त्री.) (ष्टि) आनन्द, मान । खुश, खुशी, इज्ज़त ।
हे, व्य. आव्हान, सम्बोधन; दूरसे बुलाना ।
हेक्का, स्त्री. हिक्का; हिचकी ।
हेड-ज, पु. क्रोध । गुस्सह ।
हेति, स्त्री. अस्त्र, सूर्य्यकिरण, अग्निशिखा । हथियार, शुआ, आगका शोलह ।
हेतु, पु. कारण, निमित्त । सबब, प्रयोजन ।
हेतु-मत्, त्रि. सकारण । बा सबब ।
हेत्वाभास, पु. हेतुदोष—तत्पञ्चविध यथा ।— १ व्यभिचार, २ विरुद्ध, ३ असिद्ध, ४ सत्प्रतिपक्ष, ५ बाधित । झूठा सबब ।
हेम(न्), न. स्वर्ण, धूस्तर, (पु.) माषकपरिमाण; मासाभर, स्याह घोड़ा ।
गुली, मोंगा ।
।

हेम-केश, पु. महादेव । [कर्त्ता ।
हेम-चन्द्र, पु. अभिधान चिन्तामणि नामक ग्रन्थ-
हेम-ज्वाल, पु. अग्नि; आग, आतिश ।
हेम-तार, न. नीलाथोथा ।
हेम-दुग्ध, पु. उदुम्बरवृक्ष; गूलरका पेड़ ।
हेमन्त, पु. न. ऋतुविशेष; जाड़ेका मौसिम ।
हेम-पुष्पक, पु. चम्पक-पुष्प, लोध्र । चंपेका फूल, लोध का दरख़्त ।
हेम-बल, पु. मौक्तिक; मोती । [सोनीकी माला ।
हेम माला, स्त्री. यमपत्नी, स्वर्णस्रक्; यमकी जोरू,
हेम-मालिन्, पु. सूर्य्य, राक्षसविशेष ।
हेमल, पु. स्वर्णकार, प्रस्तरविशेष; सोनार, कसौटी।
हेम-शङ्ख, पु. विष्णु ।
हेम, पु. बुधग्रह, (स्त्री) (मा) अप्सरा, सुन्दरी स्त्री ।
हेमा-ङ्ग, पु. गरुड, सिंह, सुमेरु, ब्रह्मा, चम्पकवृक्ष, विष्णु, (न) हेमवर्ण, शरीर, (त्रि) तद्युक्त ।
हेमा-द्रि, पु. सुमेरुपर्वत, क्षत्रिय राजाविशेष ।
हेय, त्रि. त्याज्य, तुच्छ । तर्क करनेके लायक, कमीना ।
हेर, त्रि. मुकुटविशेष, हरिद्रा, आसुरीमाया ।
हेरम्ब, पु. गणेश, शौर्य्य-गर्वित, बुद्धविशेष ।
हेरिक, पु. चर, दूत । जासूस । [विशेष, गणेश ।
हेरुक, पु. बुद्धविशेष, महाकालगण, शिवलिङ्ग-
हेलन, न. अवज्ञाकरण । नाफ़रमानी करना ।
हेला, स्त्री. शृङ्गारभावजातक्रियाविशेष, अवज्ञा, ज्योत्स्ना । नखरह, बेइज़्ज़ती, चांदनी ।
हेलिन्, पु. सूर्य्य, आलिङ्गन, (स्त्री) अवज्ञा। आफ़ताब, बगलगीरी, बेइज़्ज़ती ।
हेया, स्त्री. घोड़ेका हींगना । [हिनाना ।
हेषि, पु. अश्व-ध्वनि (स्त्री) (षा) घोड़े का हिन-
हेषिन्, पु. अश्व; घोडा ।
हेहे, व्य. सम्बोधन । दूर से बुलाना ।
है, व्य. सम्बोधन; बुलाना ।
हैडिम्ब, त्रि. हिडिम्बाकी औलाद । [निवाला ।
हैतुक, पु. सयुक्तिव्यवहारी । दलीलसे काम कर-
हैम, न. प्रातर्हिमोद्भवजल (त्रि) हिमजात, (पु.) भूनिम्ब, स्वर्णविकार (स्त्री) (मी) पीतचम्पक । शबनम, कोरा, बरफ का, चिरा, सोने का, चमेली । [(त्रि) हैमसम्बन्धीय ।
हैमन, पु. न. हेमन्तऋतु, स्वर्णजात, मासविशेष,

(स्त्री) (मा) गन्धद्रव्यवि० । सर्द, वरफ़, सन्दल, मोती, मक्खन, सन्दलका पेड़, चांद, काफ़ूर, सर्द मौसम ।

हिम-कर(किरण), पु. कर्पूर, चंद्र; काफ़ूर, चांद ।

हिम-गिरि, पु. हिमालय पर्वत ।

हिम-द्युति, पु. चंद्र; चांद । माहताव । [पार्वती ।

हिम-वत्सुत, पु. मैनाक (स्त्री) (ता) गङ्गा, उमा,

हिम-वत्, पु. हिमालयपर्वत; (त्रि) हिमयुक्त । हिमालय पहाड़, वरफवाला ।

हिम-संहति, पु. हिमसमूह । वरफका ढेर ।

हिमांशु, पु. चंद, कर्पूर; चांद, काफ़ूर ।

हिमाद्रि, पु. हिमालयपर्वत, हिमालय पहाड़ ।

हिम-शैलजा, स्त्री. पार्वती ।

हिमानी, स्त्री हिमसंहति । वर्फका ढेर ।

हिमिका, स्त्री. घास (त्रि) जमाहुआ, जाडे से नाचार ।

हिम्य, त्रि. हिमभव । वरफ़का । [कौड़ी ।

हिरण, न. रेत; स्वर्ण, वराटक । नुतफ़ह सोना,

हिरण्मय, न. भारतवर्षान्तर्गत वर्षविशेष, (पु) ब्रह्मा, (त्रि) सुवर्णमय, (स्त्री) (यी) सोनेरंगा । सुनहरी, सहनी ।

हिरण्य, न. स्वर्ण, वराट, अकूप्य, रजत, धन । सोना, कौड़ी, चांदी, दौलत ।

हिरण्य-कशिपु, पु. दैत्यविशेष; दितिका वेटा ।

हिरण्य गर्भ, पु. ब्रह्मा, विष्णु, सूक्ष्मशरीर, व्यष्ट्युपहित चैतन्यविशेष, ।

हिरण्यदा, स्त्री. पृथिवी, (त्रि) हिरण्यदाता । जमीन । सोना देनेवाला ।

हिरण्य-गर्भ, पु. ब्रह्मा ।

हिरण्य-रेतस्, पु. अग्नि, चित्रक, सूर्य, शिव ।

हिरण्या-क्ष, पु. दैत्यविशेष ।

हिरिक्, व्य. शिवा, दरमयान, नज़दीक इन अर्थोंमें आता है ।

हिलमोचि(ची)(चिका), स्त्री. शाकविशेष ।

हिल्ल, पु. शरारीपक्षी । खासपरिंदह ।

हिल्लोल, पु. तरंग, रतिबंधविशेष । जह्र ।

हिलुक, न. क्रोधोक्ति । गाली, लग्नसे ४ था, घर ।

हिल्वला, स्त्री. मृगशिरो नक्षत्रस्य शिरोदेशस्थ पञ्चस्वल्पतारक । मृगशिरताराके ऊपर पांच छोटी २ तारियें ।

हिबुक, न. लग्नचतुर्थस्थान । लग्नसे ४ था, घर ।

हिहि, व्य. विस्मय दुःख विषादबोधक । शोक तक़लीफ़, तआज्जुब, अफ़सोस जताने वालाशब्द ।

ही, व्य. हैरानगी, थकान, इसीलिये, ऐसा; इन अर्थोंका बोधक अव्यय ।

हीन, त्रि. ऊन, गर्ह्य, अधम, प्रतिवादीविशेष, त्यक्त । कम, खराव, कमीना, छोड़ा हुआ ।

हीना-ङ्ग, त्रि. अंगहीन, विकलांग । अंधा काना आदि ।

हीर, न. वज्र, (पु) शिव, सर्प्प, हार, सिंह श्री हर्षपिता, (स्त्री) (रा) लक्ष्मी, पपीलिका काश्मरी । हीरा, सांप, माला, शेर, चीउंटी, झीगर ।

हीरक, पु. रत्नविशेष; हीरा ।

हील, न. शुक्र । नुतफ़ह ।

हीही, व्य. हास्य । हंसी ।

हुङ्कार, पु. गम्भीर ध्वनि । ऊंची आवाज़ ।

हुण्ड, पु. व्याघ्र, ग्राम्यशूकर, चीता, कुत्ता, मीढा ।

हुत, त्रि. अग्नि-प्रक्षिप्त-घृतादि, कृताह्वान, न. होम, आहुति । बुलाया हुआ ।

हुत-भुज्, पु. अग्नि, चित्रक वृक्ष; आग ।

हुत-वह
हुता श
हुता-शन } पु. अग्नि; आग । आतिश ।

हुहु, पु. गन्धर्वविशेष; नाम एक गन्धर्वका, पीडा ध्वनि । दर्दकी आह । [(ति) । धधकार ।

हुंकृत(हुंकार), पु. निरादर बोधक शब्द, (स्त्री)

हू, व्य. आह्वान, अवज्ञा, अहङ्कार, शोक । बुलाना, नफ़रमानी, गरूर, फ़िकर, रंजका बोधक ।

हूंकार } पु. अवज्ञासूचक शब्द ।
हूंकृत } न. नाफरमानीका जतानेवाला शब्द ।

हूत, त्रि. आहूत; बुलाया हुआ (स्त्री) (ति) अव्हान; बुलाना ।

हूम्, व्य प्रश्न, तर्क, सम्मति, क्रोध, भय, निन्दा, अवज्ञा । सवाल, दलील, गुस्सा, खौफ़, बदनामी वेइज़्ज़तीका बोधक ।

हृच्छय, पु. कामदेव, (त्रि) हृदयशायी ।

ह्रणि(णी)या, स्त्री. लज्जा, निन्दा । शरम, मलामत ।

धात्वर्थ तालिका.

साङ्केतिक अक्षर.

भू-भ्वादि। अ-अदादि। जु०-जुहोत्यादि। दि-दिवादि। सु-स्वादि। त-तनादि। क्री-क्र्यादि। रु-रुधादि। चु-चुरादि। तु-तुदादि।

प.-परस्मैपदी। आ-आत्मनेपदी। उ-उभयपदी। सेट्-अनिट्-वेट्।

धातुसूचीमें जिनके (ओ) अनुबन्ध हो, वह सब धातु अनिट्; और जो धातु एकस्वर, आकारान्त, इकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त और ऋकारान्त हैं, वह सब अनिट्, इनकेसिवा और सब धातु सेट् हैं। परन्तु श्वि, श्रि, डी, शी, यु, रु, नु, स्नु, क्षु, वृङ् और वृञ् यह बारह धातु एक स्वरभी हैं फिरभी सेट्॥ ऐसेहि दरिद्रा दीधी, वेवी, र्ण, और जागृ भिन्न स्वरान्त बहुस्वरभी अनिट् होते हैं, ऊ अनुबन्ध हो तो वेट् होती हैं।

सकर्मक—अकर्मक

सत्ता-जीवन-दर्प-भीति-शयन-क्रीडा-निवास-क्षया,
व्यक्तध्वान नभोगतिः स्थिति जरा लज्जा प्रमादोदये,
उन्मादे च पलायन भ्रमणयोः ख्यातौ, क्षये खोटने,
मोहे धावन शुद्धशुद्धि दहने, शान्तौ मृतौ मज्जने,
दीप्तौ जागर शोप वक्र गणनोत्साहे प्लुतौ संशये,
ग्लानौ मन्दगतौ च नृत्य पतने चेष्टा क्रुधा रोदने,
वृद्धौस्थावकृतौ च सिद्धिविरतौ, हर्षो पवेशे बले,
कम्पोद्वेग निमेष शब्द यतन स्वेदे धवोऽकर्मकाः॥

इन सब अर्थोंमें धातु अकर्मक, और इनकेसिवा और अर्थोंमें अकर्मक हैं। कभी २ सकर्मक धातुभी कर्मकी विवक्षा न होनेपर अकर्मक होता है। यथा ग्रामे गच्छति। कर्मकेसाथ धात्वर्थ मिलारहे तबभी अकर्मक होता हैं, यथा। तपस्यति मुनिः। कभी किसी २ उपसर्गके योगसे धातु सकर्मक होता है। यथा—सुखमनुभवति।

अक, चु. पं. वक्रगति। तिरछा चलना।
अकि, भ्वा. आ. चिन्ह करना। नशान करना।
अक्ष, भू. प. सू. पं. व्याप्ति, संहति।
अग, भ्वा. प. वक्र-गति; टेढ़ा चलना।
अगद्, चु. प. नीरोग करना।
अघ, चु. पं. पाप करना।
अग्र, भ्वा. प. शीघ्र चलना।
अङ्क, चु. प. चिन्ह करना।
अङ्ग, चु. प. चिन्ह करना।
अञ्च, भू. प. गति, पूजा।
अज, भू. प. गमन, क्षेपण।
अट, भू. पं. गति, भ्रमण।
अटि, भू. आ. गति।
अट्ट, चु. पं. तुच्छता, अनादर।
अट्ट, भू. आ. अतिक्रम, वध।
अठ, भू. प. गति।
अण, भू. पं. शब्दादि० आ. प्राणन।
अत, भू. पं. सततगति; लगानार चलना।
अति, भू. पं. बंधन। बांधना।
अद, अ. प. भक्षण। खाना।
अदि, भू. प. बन्धन; बांधना।
अन्घ, भू. प. पूजा, निन्दा, आरध, वेग।
अञ्च, भू. पं. पूजा, गति, अस्पष्ट-उक्ति, चु. पं. प्रकाश।
अञ्ज, रु० पं. गति, प्रकाश, म्रक्षण, चु. पं. प्रकाश।
अ(न्त)न्द, भू. पं. बन्धन।
अन्ध, चु. पं. अंधा करना।
अम्ब, भू. आ. शब्द भू. पं. गति, हिंसा।
अम्भ, भू. आ. शब्द। आवाज़ करना।
अंश(स), चु. पं. विभाजन; बांटना।
अंह, भू. आ. गति। चु. प. दीप्ति।
अभ्र, भू. पं. गति, भक्षण; खाना।
अम, भू. पं. गति शब्द, सेवा, विभाग।
अय, भू. आ. गति कृपा। चलना।

ऋक्ष, तु. प. वध; मारना।
ऋच्, तु. प. स्तुति; बड़ाई।
ऋच्छ, तु. प. मूर्ति, गति, मोह, सत्ता।
ऋज, भू. आ. गति, स्थैर्य, अर्जन, प्राणन, बल।
ऋण(न), त. उ. गति; जाना, पाना, जानना।
ऋत, भू. पं. स्पर्धा, ऐश्वर्य, दया, गति, निंदा।
ऋध, दि. प. स्वा. प. वृद्धि; बढ़ना।
ऋञ्ज, भू. आ. भर्जन; भूनना।
ऋफ, तु. प. वध, दान, श्लाघा, निन्दा, युद्ध।
ऋप्(सौत्र), भू. प. गति, स्मरण।
ऋप, भू. प. गति। गमन।

ॠ.

ॠ, क्या. प. गति।

ए.

एज, भू. प. कांपना, भू. आ. दीप्ति।
एठ, भू. आ. बाधा, शाठ्य; पीड़ा, प्रकाश।
एध, भू. आ. वृद्धि; बढ़ना।
एप, भू. आ. गति।

ओ.

ओख, भू. प. सुखाना, व्यर्थता, सामर्थ्य, भूषण।
ओन, चु. प. बल, तेज।
ओण, भू. पं. अपसारण; निकासना।
ओलज्ज, भू. पं. उत्क्षेपण; उछालना।

क.

कक, भू. आ. इच्छा, गर्व, चांचल्य।
कक, भू. प. हास्य; हंसना।
कख, भू. प. हास्य; हंसना।
कग, भू. प. क्रिया; काम।
कच, भू. प. शब्द भू. आ. बंधन, दीप्ति।
कट, भू. प. गति, वर्षण, आवरण। [ना।
कठ, भू. प. कृच्छ्रजीवन; कठिनतासे निर्वाह कर-
कड, तु. पं. भक्षण, दर्प; खाना। तकब्बर करना।
कड्ड, तु. प. कार्कश्य; कड़ा होना।
कण, भू. प. आर्तनाद (चु. प.) निमीलन, संकोच।
कण्डु, (नामधातु) खुजलाना।
कत्थ, भू. आ. श्लाघा; बड़ाई।
कत्र, चु. प. शैथिल्य। ढीलापन।
कथ, चु. पं. कथन; कहना।

कद, भू. आ. व्याकुलता। बेचैनी।
कन, भू. प. प्रीति, गति, दीप्ति।
कङ्क, भू. आ. गति। रफ़तार।
कञ्च, भू. आ. बन्धन, दीप्ति। रौशनी।
कज(सौत्र), भू. प. उत्पत्ति। पैदाश।
कण्ट, भू. प. गति; गमन।
कण्ठ, भू. आ. चु. भू. प. आध्मान, शोक।
कण्य, भू. आ. दर्प। चु. प. छेदन।
कन्द, भू. पं. बुलाना, रोना।
कम्प, भू. आ. कांपना।
कन्च, भू. प. गति, वध।
कन्स, भू. आ. शासन, शातन।
कप(सौत्र), भू. प. चलन।
कप, भू. चु. आ. कांपना।
कर्क, भू. पं. हंसना।
कर्ज, भू. प. पीडा, व्यथा।
कर्ण, चु. प. भेदन; तोड़ना।
कर्त, चु. प. शैथिल्य; ढीला करना, काटना।
कर्द, भू. प. कुत्सित शब्द।
कल, भू. आ. गणना, शब्द, चु. प. गति, प्रेरण कंपन।
कल्ल, भू. आ. शब्द, अस्फुट शब्द।
कश, भू. प. शब्द, गति, शासन।
कष, भू. पं. वध; मारना।
कस, भू पं. गति, अ. आ. गति, शासन, क्षमापन।
कांक्ष, भू. प. आकांक्षा; इच्छा करण।
काञ्च, भू. आ. बन्धन, दीप्ति।
काश, दि. आ. दीप्ति; चमकना।
कास, भू. आ. बुरा शब्द।
कि, जु. प. ज्ञान; जानना।
किट, भू. प. भय, गति, वर्षण, आवरण।
कित, भू. प. संशय, इच्छा, वास, रोगशान्ति, चु. पं. यति, ज्ञान।
किल, भू. प. श्वेतता, क्रीडा, चु. प. प्रेरण।
किष्क, चु. आ. वध करण।
कीट, भू. पं बन्धन; रंग करना
कील, भू. प. बन्धन; बांधना।
कु, भू आ. अ. प. शब्द, तु. पं. आर्तनाद।
कुक, भू. आ. ग्रहण; पकड़ना। लेना।

अर्व्य, चु. पं. ताप, स्तुति; बड़ाई ।
अर्घ, भू. पं. मूल्य, पूजा; मोल ।
अर्च, भू. पं. चु. पं. पूजन ।
अर्ज, भू. पं. अर्जन, चु. पं. संस्कार, इकट्ठा करना ।
अर्थ, चु. आ. याचन; मांगना ।
अर्द, भू. पं. पीडा, गति, याचन । चु. पं. वध ।
अर्व, भू. प. हिंसा, गति ।
अर्ह, भू. प. योग्यता, चु. पं पूजा, योग्यता करण ।
अव, भू. पं. रक्षा, गति, शोभा, दीप्ति, प्रीति, तृप्ति, प्रार्थना, कामना, आलिङ्गन, प्रवेश, सत्ता, वुद्धि, ग्रहण, वध, सामर्थ्य, अवगम, करण ।
अवधीर, चु. पं. अवज्ञा; परवाह नाकरना ।
अश, स्वा. आ. व्याप्ति, संहति । क्री. पं. भोजन ।
अशूङ्, स्वा. पं. व्याप्ति, संघात ।
अष, भू. उभ. गति, दीप्ति, आदान, श्या. गति, दान ।
अस, भू. प. दीप्ति, ग्रहण, गति, सत्ता । दि. प. क्षेपण । फेंकना ।

आ.

आञ्छ, भू. पं. दैर्घ्य । लंबा करना ।
आन्दोल, चु. पं. दोलन । दुलाना ।
आप, सु. पं. चु. प. भू. प. व्याप्ति, प्राप्ति ।
आस, अ. आ. उपवेशन, स्थिति । वैठना, ठहरना ।

इ.

इ, भू. पं. अ. प. गति । अधि-इ अ. पं. स्मरण, अ. आ. पढ़ना ।
इट्, भू. पं. गति; जाना, पाना, जानना ।
इड(ल), भू. पं शयन, गति; सोना ।
इनूख } भू. पं. गति ।
इनूग }
इन्द, भू. प. परमऐश्वर्य; बड़ा इकवाल ।
इन्ध, रु. आ. दीप्ति; प्रकाश ।
इष्, दि. पं. गति भू. प. इच्छा, क्री. पं. वारंवार ।

ई.

ई, अ. पं. कामना, गति, क्षेपण, भक्षण, दि. आ. गति ।
ईक्ष, भू. आ. दर्शन; देखना ।
ईज, भू. आ. निन्दा, गति ।
ईड, अ. आ. चु. प. स्तुति ।
ईनूख, भू. प. गति; जाना, पाना, जानना ।
ईनूज, भू. प. आ. निन्दा, गति ।
ईन्त, भू. पं. वन्धन; बांधना ।
ईर, अ. आ. कांपना, चलना, चु. पं. प्रेरण ।
ईर्क्ष्य(र्ष्य), भू. प. ईर्षा करना ।
ईश, अ. आ. ऐश्वर्य ।
ईष, भू. आ. दान, दर्शन, वध, गति भू. पं. उञ्छवृत्ति । सिलह चुनना ।
ईह, भू. आ. चेष्टा । हर्कत करना ।

उ.

उ, भू. आ. शब्द करण ।
उक्ष, भू. पं. सेचन, वर्षण । सींचना, वरसना ।
उख, भू. पं. गति; जाना, पाना, जानना ।
उच, दि. पं. मिलन; मिलना ।
उञ्छ, भू. पं. वंधन, समाप्ति, त्याग, अतिक्रम । सिल्ह चुनना ।
उ(ठ)ठ, भू. पं. उपघात ।
उड, भू. पं. संहति; संघात ।
उद, क्री. पं. आघात । चोट देना ।
उद्द(सौत्र), भू. पं. आघात ।
उन्द, रु. प. क्लेदन; गीला करना
उमृय, तु. पं. पूरण करना ।
उभ, तु. पं पूरण करण ।
उर(सौत्र) भू. प. गति ।
उल, भू. प. दाह करण ।
उर्द, भू. आ. परिपूरण, क्रीडा, आच्छादन ।
उर्व, भू. प. वध करना ।
उष, भू. प. दाह, वध ।
उह, भू. प. पीडन ।

ऊ.

ऊन, चु. पं. परिहानि । कम करणा ।
ऊय चु. आ. सीवन । सीवन ।
ऊर्ज, चु. प. प्राणन, वल ।
ऊर्णु, अ. उ. आच्छादन; ढ़कना ।
ऊष, भू. प. रोग; वीमारी ।
ऊह, भू. आ. तर्क, अध्याहार ।

ऋ.

ऋ, भू. प. गति, प्राप्ति, सु. प. वध ।

ऋक्ष, सु. प. वध; मारना ।
ऋच्, तु. प. स्तुति; बड़ाई ।
ऋच्छ, तु. प. मूर्ति, गति, मोह, सत्ता ।
ऋज, भू. आ. गति, स्थैर्य, अर्जन, प्राणन, बल ।
ऋण(न), त. उ. गति; जाना, पाना, जानना ।
ऋत, भू. पं. स्पर्धा, ऐश्वर्य, दया, गति, निंदा ।
ऋध, दि. प. स्वा. प. वृद्धि; बढ़ना ।
ऋञ्ज, भू. आ. भर्जन; भूनना ।
ऋफ, तु. प. वध, दान, श्लाघा, निन्दा, युद्ध ।
ऋप्(सौत्र), भू. प. गति, स्मरण ।
ऋप, भू. प. गति । गमन ।

ऋृ.

ऋृ, क्या. प. गति ।

ए.

एज, भू. प. कांपना, भू. आ. दीप्ति ।
एठ, भू. आ. बाधा, शाठ्य; पीड़ा, प्रकाश ।
एध, भू. आ. वृद्धि; बढ़ना ।
एष, भू. आ. गति ।

ओ.

ओख, भू. प. सुखाना, व्यर्थता, सामर्थ्य, भूषण ।
ओन, चु. प. बल, तेज ।
ओण, भू. पं. अपसारण; निकासना ।
ओलञ्ज, भू. पं. उत्क्षेपण; उछालना ।

क.

कक, भू. आ. इच्छा, गर्व, चांचल्य ।
कक्क, भू. प. हास्य; हंसना ।
कख, भू. प. हास्य; हंसना ।
कग, भू. प. क्रिया; काम ।
कच, भू. प.,शब्द भू. आ. बंधन, दीप्ति ।
कट, भू. प. गति, वर्षण, आवरण । [ना ।
कठ, भू. प. कृच्छ्रजीवन; कठिनतासे निर्वाह कर-
कड, तु. पं. भक्षण, दर्प; खाना । तकब्बर करना ।
कड्ड, तु. प. कार्कश्य; कड़ा होना ।
कण, भू. प. आर्तनाद (चु. प.) निमीलन, संकोच ।
कण्डु, (नामधातु) खुजलाना ।
कत्थ, भू. आ. श्लाघा; बड़ाई ।
कत्र, चु. प. शैथिल्य । ढीलापन ।
कथ, चु. पं. कथन; कहना ।
कद, भू. आ. व्याकुलता । बेचैनी ।
कन, भू. प. प्रीति, गति, दीप्ति ।
कङ्क, भू. आ. गति । रफ़तार ।
कञ्च, भू. आ. बन्धन, दीप्ति । रौशनी ।
कज(सौत्र), भू. प. उत्पत्ति । पैदाश ।
कण्ट, भू. प. गति; गमन ।
कण्ठ, भू. आ. चु. भू. प. आध्मान, शोक ।
कण्य, भू. आ. दर्प । चु. प. छेदन ।
कन्द, भू. पं. बुलाना, रोना ।
कम्प, भू. आ. कांपना ।
कम्ब, भू. प. गति, वध ।
कन्स, भू. आ. शासन, शातन ।
कप(सौत्र), भू. प. चलन ।
कप, भू. चु. आ. कांपना ।
कर्क, भू. पं. हंसना ।
कर्ज, भू. प. पीडा, व्यथा ।
कर्ण, चु. प. भेदन; तोड़ना ।
कर्त, चु. प. शैथिल्य; ढीला करना, काटना ।
कर्द, भू. प. कुत्सित शब्द ।
कल, भू. आ. गणना, शब्द, चु. प. गति, प्रेरण कंपन ।
कल्ल, भू. आ. शब्द, अस्फुट शब्द ।
कश, भू. प. शब्द, गति, शासन ।
कष, भू. पं. वध; मारना ।
कस, भू. पं. गति, अ. आ. गति, शासन, क्षमापन ।
कांक्ष, भू. प. आकांक्षा; इच्छा करण ।
काञ्च, भू. आ. बन्धन, दीप्ति ।
काश, दि. आ. दीप्ति; चमकना ।
कास, भू. आ. बुरा शब्द ।
कि, जु. प. ज्ञान; जानना ।
किट, भू. प. भय, गति, वर्षण, आवरण ।
कित, भू. प. संशय, इच्छा, वास, रोगशान्ति, चु. पं. यति, ज्ञान ।
किल, भू. प. श्वेतता, क्रीडा, चु. प. प्रेरण ।
किष्क, चु. आ. वध करण ।
कीट, भू. पं बन्धन; रंग करना
कील, भू. प. बन्धन; बांधना ।
कु, भू आ. अ. प. शब्द, तु. पं. आर्तनाद ।
कुक, भू. आ. ग्रहण; पकड़ना । लेना ।

कुच्च, भू. प. शोध, संपर्क, कौटिल्य, विलेखन, भू. प. ऊंचा शब्द, तु. प. संकोच।
कुज, भू. प. चोरी करना।
कुट, तु. प. कुटिलता, चु. आ. प्रतारण।
कुटुम्ब, चु. आ. धृति, पालन।
कुट्ट, चु. पं. निन्दा, छेदन, चु. आ. प्रतारण।
कुठ, भू. प. छेदन; काटना।
कुड, भू. प. बाल्य चापल्य, भोजन।
कुण, तु. प. उपकार, शब्द, चु. प.
कुण्ठ, भू. प. विकलता आलस्य।
कुण्ड, भू. प. विकलता भू. आ. दाह चु प. रक्षा।
कुत(सौत्र), भू. प. आस्तरण; बिछौना।
कुत्स, चु. आ. निंदा करना।
कुथ, दि. प. दुर्गन्ध. क्री. प. आश्लेष, क्लेश।
कुन्थ, भू. प. वध, दुःख, क्री. प. आश्लेष।
कुन्द्र, चु. प. झूठ कहना।
कुंश(स), दि. प. संश्लेष।
कुष, क्री प. निष्कोक, विस्तारण।
कुष्म(स्य), चु. आ. बुद्धिद्वारा दर्शन, कुहास।
कुह, चु. आ. विस्मापन।
कुटुम्ब, चु. आ. धृति, पालन।
कुट्ट, चु. प. निंदा, छेदन, चु. आ. प्रतापन।

कूण्ट(ण्ठ), भू. प. वैकल्य, आलस्य।
कूर्द, भू. आ. क्रीडा; खेलना।
कूल(स), दि. प. संश्लेष।
कूष्म(स्य), चु. आ. बुद्धिद्वारा दर्शन।
कूह, चु. आ. विस्मापन। हैरान करना।
कू, तु. आ. आर्तनाद,
कूज, तु. प. अव्यक्त शब्द; पक्षीओंका बोलना।
कूट, चु. आ. अप्रसन्नता चु. प. दाह, मन्त्रणा।
कूभ, तु. प. घनता, भक्षण; खाना।
कूण, चु. आ. संकोच; सुकुचन।
कूर्द, भू. आ. क्रीडा; कूदना, खेलना।
कूल, भू. प. आवरण; ढांपना।
कृ, भू. उ. करना, सु. आ. वध।
कृत, तु. प. घनता; गाढ़ा करना।
कृत, तु. प. छेदन कृत, वेष्टन।
कृत्व, सु. प. करण, वध, करण।
कृ(इय)य, भू. आ. कल्पना, मिश्रण, चु. प. दुर्बलता।
कृश, दि. प. कृशता; दुबला करना।
कृष, भू. प. आकर्षण, तु. पं. आकर्षण, विलेखन।
कॄ, तु. प. विक्षेप, क्री. उ. हिंसा, चु. आ. विज्ञान।
कॄत, चु. प. कीर्तन; गाना, बजाना।

क्रीड़, भू. प. खेलना ।
क्रुड, तु. प. निमज्जन; गोता मारना ।
क्रुध, दि. प. कोप । गुस्सा करना ।
क्रुञ्च, भू. प. गति, वक्रण, अवज्ञा ।
क्रुन्थ, क्री. प. आश्लेष, क्लेश ।
क्रुश, भू. प. रोदन, आव्हान ।
क्लथ, भू. प. वध; मारना ।
क्लद, भू. आ. वैक्लव्य; व्याकुलता । भवन ।
क्लय, भू. प. दि. प. ग्लानि ।
क्लच, भू. आ. भय; डरना ।
क्लिद, दि. प. क्लेद; गीला करना ।
क्लिन्द, तु. उ. रोदन; रोना ।
क्लिश, दि. आ. उपताप, वध, क्री. प. पीडा ।
क्लीव(ब), भू. आ. अप्रगल्भता; डरवे डरे रहना ।
क्लू, तु. आ. गति; जाना, पाना, जानना ।
क्लेश, भू. आ. वध, अव्यक्त शब्द ।
क्वण, भू. प. शब्द, उपकार । वीनकी आवाज़ ।
क्वथ, भू. प. काढ़ा करना ।
क्वेल, भू. प. गति, चलन ।
क्षज, भू. आ. दान, गति ।
क्षण(ज), तु. प. वध करन ।
क्षद(सौत्र), तु. प. संवरण; ढांपना ।
क्षणज, तु. आ. दान, गति चु. प. कृच्छ्र जीवन ।
क्षन्प, चु. प. शक्ति, क्षमा ।
क्षर, चु. प. क्षेप । फेंकना ।
क्षम, भू. आ. दि. प. सहन । सहारना ।
क्षर, भू. प. संचलन, क्षरण ।
क्षि, भू प. क्षय, ऐश्वर्य, सु. क्री. प. वध, तु. प. वास, गति, ऐश्वर्य ।
क्षिण(न), तु. उ. वध । कतल ।
क्षिप, दि. प. तु. उ. प्रेरण, क्षेपण ।
क्षिव, तु. दि. प. निरसन ।
क्षी, तु. उ. वध, दि. आ. क्षय करना ।
क्षीज, भू. प. अव्यक्त शब्द ।
क्षीव(च), भू. प. निरसन ।
क्षु, अ. प. क्षुत; छीकना ।
क्षुद, तु. उ. क्षोदन; पीसना ।
क्षुध, दि. प. भूखा होना ।
क्षुप, भू. प. अवसाद; भोजन करना ।
क्षुभ, भू. आ. दि. क्री. प. संचालन, क्षोभ ।
क्षुर, तु. प. विलेपन; लिपना ।
क्षै, भू. अ. क्षय । मारना ।
क्ष्णु, आ. प. भोजन; खाना ।
क्ष्माय, भू. आ. विधूनन; कंपाना ।
क्ष्मील, तु. प. निमेष; रमकना ।
क्ष्विड(द), भू. आ. स्नेह, मोक्ष ।
क्ष्वेड, भू. प. चंचलता, गति ।

ख.

खक्ख, भू. प. हंसी.-करना ।
खच, क्री, प. पवित्रताकी उत्पत्ति चु. प. बंधन ।
खज, भू. प. मंथन; विलोना ।
खट, भू. प. आकांक्षा; इच्छा करना ।
खद, चु. प. संवरण; ढांपना ।
खभ, चु. प. भोजन; खाना ।
खद, भू. प. स्थिरता, वध ।
खन, भू. उ. विदारण; फाड़ना, खोदना ।
खनूज, भू. प. गतिवैकल्य; लंगड़ाना ।
खण्ड, भू. आ. मन्थन; मथना ।
खर्ज, तु. प. पीडा, मार्जन, घिसना ।
खर्द, तु. प. दंशन; डसना ।
खर्व, तु. प. गति; जानना, पाना ।
खर्व, तु. प. गर्व; हंकार करना ।
खल, भू. प. संचरण, संचय ।
खच, क्री. प. उत्पन्नकी फिर उत्पत्ति ।
खाद, भू. प. भक्षण; खाना ।
खिट, भू. प. भय, त्रृत्ति, वर्पण ।
खिद, तु. आ. दि. प. मोक्ष । दुःखी होना ।
खिद, दि. रु. आ. दीनता, तु. प. परिखात ।
खु, भू. आ. ध्वनि । आवाज़ ।
खुज, भू. प. चोरी, चौर्य ।
खुड, चु. प. भोजन; खाना ।
खुम्भ, चु. प. भोजन । खाना ।
खुर, तु. प. लेपन, छेदन ।
खुर्द, भू. आ. क्रीडा; खेलना ।
खट(भ), चु. प. भक्षण; खाना ।
खेल, भू. प. गति, चालन ।
खेव, भू. आ. सेवा; चाकरी ।
खै, भू. प. स्थिरता, वध, खनन ।

खोर(व), भू. प. पोटन ।
ख्या, अ. प. ख्याति, कथन ।

ग.

गग्घ, भू. प. हास; हंसना ।
गज, भू. प. हर्ष, शब्द, चु. प. शब्द ।
गड, भू. प. सेचन, क्षरण ।
गण, चु. प. संख्यान । गिनना ।
गर्जि, भू. प. शब्द करना ।
गभि, चु. प. कुण्ड, कम्पन, गण्ड, चुम्बन; चूमना ।
गन्ध, चु. आ. द्रोह, पीडन ।
गय, भू. प. गति ।
ग(र्ज)र्द, भू. चु. प. शब्द करना ।
गर्ध, चु. प. लिप्सा, लोभ ।
गर्व, भू. प. चु. आ. दर्प करना ।
गर्ह, भू. आ. चु. प. निंदा करना ।
गल, भू. प. भक्षण, क्षरण, चु. आ. स्मरण ।
गल, भू. आ. धृष्टता ।
गल्ह, भू. आ. निंदा । इजोक० ।
गवेष, चु. प. अन्वेषण । तलाशक० ।
गह, भू. प. गहन । आवूरक० ।
गा, भू. आ. गति, स्तुति, जन्म ।
गात्र, चु. आ. शैथिल्य ।
गाथ, भू. आ. लिप्सा, ग्रन्थन ।
गाह, भू. आ. विलोडन; विलोना ।
गु, भू. आ. ध्वनि, तु. प. मलत्याग, हागना ।
गुज, भू. प. कूजन, तु. प. शब्द ।
गुण, चु. प. मन्त्रण, आम्रेडन ।
गुद, भू. आ. क्रीडा; खेलना ।
गुध, भू. आ. क्रीडा, दि. प. वेष्टन, क्री. प. रोष ।
गुञ्ज, भू. प. कूजन; बोलना ।
गुण्ठ, चु. प. वेष्टन; लपेटना ।
गुण्ड, चु. प. वेष्टन, पेषण ।
गुन्द्र, चु. प. मिथ्या-कथन । झूठ कहना ।
गुम्फ, तु. प. ग्रन्थन; गांठना ।
गुप, भू. प. रक्षा, भू. आ. गोपन दि. प. व्याकुलता ।
गुफ, तु. प. ग्रंथन; गांठना
गुर्द भू. आ. वास, क्रीडा,
गूर, दि गति,

गूर्द, भू. आ. वास, क्रीडा, चु. प. वास ।
गृ, भू. प. सेचन; सींचना ।
गृज, भू. प. ध्वनि, शब्द ।
गृध, दि. प. लिप्सा; लभनेकी इच्छा ।
गृञ्ज, भू. प. ध्वनि; शब्द ।
गृह, चु. आ. ग्रहण; पकड़ना ।
गॄ, तु. प. निगरण, भक्षण, क्री. प. शब्द ।
गेय, भू. आ. गति, जाना, पाना, जानना ।
गेव, भू. आ. सेवा; टहल करना ।
गेष, भू. अन्वेषण; ढूंडना ।
गै, भू. प. गाना, शब्द करना ।
गोप, चु. प. लेपन; लिपना । छिपाना ।
गोष्ठ, भू. आ. संघात । जमा करना ।
ग्रन्थ, भू. आ. कुटिलता, क्री. प. भू. आ. प. गांठ ।
ग्रस, भू. आ. भक्षण, चु. भू. प. ग्रसना ।
ग्रह, क्री. चु. भू. प. आदान, लेना ।
ग्लस, भू. आ. भक्षण । खाना ।
ग्लह, चु. भू. प. आदान भू. आ. निंदा करन ।
ग्लुञ्च, भू. प. गति ।
ग्लेप, भू. आ. दीनता ।
ग्लेव, भू. आ. सेवा ।
ग्लै, भू. प. ग्लानि, हर्ष, क्षय ।

घ.

घग्घ, भू. प. हंसना ।
घट, भू. आ. चेष्टा, चु. प. वध, संघात ।
घट्ट, भू. आ. चु. प. चालन ।
घण(न), तु. पं. दीप्ति ।
घन्ट, चु. भू. प. दीप्ति ।
घर्घ, भू. प. गति ।
घस, भू. प. भक्षण ।
घिन्, तु. आ. ग्रहण ।
घु, भू. आ. ध्वनि । आवाज़ ।
घुट, भू. आ. परिवर्तन, तु. प. प्रतिघात ।
घुड, तु. प. व्याघात, रक्षा ।
घु तु. प. घूमना ।
ग्रहण; लेना ।
, भय ।
चु. प. स्तुति ।
।

घृ, भू. प. सेचन, हु. प. दीप्ति, आच्छादन ।
घृण(न), त. उ. ग्रहण; लेना ।
घृष, भू. प. घिसना ।
घ्रा, भू. प. सूंघना ।

ङ.

ङ, भू. आ. ध्वनि ।

च.

चक, भू. आ. प्रतिघात, तृप्ति ।
चक्क, चु. प. व्यथा ।
चक्ष, अ. आ. कथन, दर्शन ।
चख, सू. प. वध ।
चट, भू. प. भेदन, वध, चु. प. वध ।
चण, तु. प. शब्द, भू. प. दान ।
चत(द), भू. उ. याचन । मांगना ।
चकि(सौत्र), भू. प. भ्रमण; घूमना ।
चचि, भू. प. गति; जानना, पाना, जाना ।
चभि, भू. आ. चु. प. रोष ।
चवि, भू. प. गति ।
चप, भू. प. सान्त्वन, चु. प. तसल्ली, चूर्णनकरना ।
चय, भू. सू. प. भक्षण; खाना ।
चर, भू. आ. गति ।
चर्च, तु. प. उक्ति, भर्त्सन, चु. प. पढ़ना ।
चर्व, भू. प. गति ।
चर्व, चु. भू. प. चाबना ।
चल, भू. प. गति, तु. प. विलास, चु. प. भृति, पोषण ।
चष, भू. प. वध, भू. उ. भक्षण ।
चह, भू. प. चु. प. शठता ।
चाघ, भू. उ. देखना, सुनना, पूजना ।
चि, भू. सु. उ. चु. प. चुनना ।
चिक्क, चु. प. पीडा ।
चिट्ट, भू. प. प्रेरण; भेजना ।
चित, भू. प. चु. आ. ज्ञान । [चितरना ।
चित्र, चु. प. चित्रकरन, अद्भुत, क्षणिक दर्शन
चिन्त, चु. प. सोचना, स्मरण करना ।
चिरि, सू. प. मारना ।
चिल, तु. प. पहिरना ।
चिल, भू. प. रोना, टैलना ।
चिन्ह, प. (नामधातु) चिन्ही करना ।
चीक, चु. भू. प. छूना, क्षमाक० ।
चीभ, भू. आ. प्रशंसा ।
चीर, भू. उ. संवरण; ढांपना, चु. प. दीप्ति ।
चीव, भ. उ. पकडना, ढांपना ।
चुक, चु. प. पीडा देना ।
चुच्य, भू. प. न्हाना ।
चुड्ड, भू. प. हाव करना; ठट्ठा करना ।
चुण, तु. प. छेदन; काटना ।
चुत, भू. प. क्षरण; खिरना, चूना ।
चुद, चु. प. प्रेरण, नियोजन । भेजना, लगाना ।
चुप, भू. प. मन्दगति; शनैः २ चलना ।
चुर, चु. भू. प. चोरी करना ।
चुल, चु. प. उन्नति । तरक्की करना ।
चुलुम्प, भू. प. लोप; छुपना ।
चुण, चु. प. संकोच; सकुचना ।
चूच्य, भू. प. स्नान; न्हाना ।
चूट, भू. प. तुच्छ करना, तु. प. छेदन ।
चूर, दि. आ. दाह; जलना ।
चूर्ण, भू. प. पिसना; चूरा करना ।
चूप, भू. प. पीना, चूसना ।
चृत, भू. प. वध करना, चु. पं. गमन, संदीपन ।
चेल(ल), भू. प. चालन, गमन ।
चेष्ट, भू. आ. चेष्टा, ईहा । हर्कत ।
च्यु, भू. आ. गति, पतन, चु. प. हसन, सहना ।
च्युस, चु. प. त्याग, क्षति ।
च्यू, भू. आ. गति; जाना, पाना, जानना ।

छ.

छद, चु. भू. प. सन्दीपन, चु. उ. ढांपना ।
छन्द, चु. भू. प. संवरण, दीप्ति ।
छर्द, चु. प. वमन, दीप्ति, प्रकाश ।
छल(नाम), पं छलना ।
छिद, रु. उ. तोड़ना, ढांपना ।
छिद्र, चु. प. भेदन; छेदना ।
छुट, तु. प. चु. प. छेदन ।
छुप, तु. प. स्पर्श; छूना ।
छुर, तु. प. लिपना ।
छृद, रु. उ. दीप्ति, क्रीडा ।
छेद, चु. प. छेदन; काटना ।

खोर(व), भू. प. पोटन।
ख्या, अ. प. ख्याति, कथन।

ग.

गग्घ, भू. प. हास; हंसना।
गज, भू. प. हर्ष, शब्द, चु. प. शब्द।
गड, भू. प. सेचन, क्षरण।
गण, चु. प. संख्यान। गिनना।
गजि, भू. प. शब्द करना।
गभि, चु. प. कुण्ड, कम्पन, गण्ड, चुम्बन; चूमना।
गन्ध, चु. आ. द्रोह, पीडन।
गय, भू. प. गति।
ग(र्ज)र्द्द, भू. चु. प. शब्द करना।
गर्ध, चु. प. लिप्सा, लोभ।
गर्व, भू. प. चु. आ. दर्प करना।
गर्ह, भू. आ. चु. प. निंदा करना।
गल, भू. प. भक्षण, क्षरण, चु. आ. स्मरण।
गल, भू. आ. धृष्टता।
गल्ह, भू. आ. निंदा। इजोक०।
गवेष, चु. प. अन्वेषण। तलाशक०।
गह, भू. प. गहन। आवूरक०।
गा, भू. आ. गति, स्तुति, जन्म।
गात्र, चु. आ. शैथिल्य।
गाथ, भू. आ. लिप्सा, ग्रन्थन।
गाह, भू. आ. विलोडन; विलोना।
गु, भू. आ. ध्वनि, तु. प. मलत्याग, हागना।
गुज, भू. प. कूजन, तु. प. शब्द।
गुण, चु. प. मन्त्रण, आम्रेडन।
गुद, भू. आ. क्रीडा; खेलना।
गुध, भू. आ. क्रीडा, दि. प. वेष्टन, क्री. प. रोष।
गुञ्ज, भू. प. कूजन; वोलना।
गुण्ठ, चु. प. वेष्टन; लपेटना।
गुण्ड, चु. प. वेष्टन, पेषण।
गुन्द्र, चु. प. मिथ्या-कथन। झूठ कहना।
गुम्फ, तु. प. ग्रन्थन; गांठना।
गुप, भू. प. रक्षा, भू. आ. गोपन, कुत्सा, दि. प. व्याकुलता।
गुफ, तु. प. ग्रंथन; गांठना।
गुर्द भू. आ. वास, क्रीडा, चु. प. वास।
गूर, दि. आ. वध, गति, चु. आ. उद्यम।
गूर्द, भू. आ. वास, क्रीडा, चु. प. वास।
गृ, भू. प. सेचन; सींचना।
गृज, भू. प. ध्वनि, शब्द।
गृध, दि. प. लिप्सा; लभनेकी इच्छा।
गृञ्ज, भू. प. ध्वनि; शब्द।
गृह, चु. आ. ग्रहण; पकड़ना।
गॄ, तु. प. निगरण, भक्षण, क्री. प. शब्द।
गेय, भू. आ. गति, जाना, पाना, जानना।
गेव, भू. आ. सेवा; टहल करना।
गेष, भू. अन्वेषण; ढूंढना।
गै, भू. प. गाना, शब्द करना।
गोप, चु. प. लेपन; लिपना। छिपाना।
गोष्ठ, भू. आ. संघात। जमा करना।
ग्रन्थ, भू. आ. कुटिलता, क्री. प. भू. आ. प. गांठ।
ग्रस, भू. आ. भक्षण, चु. भू. प. ग्रसना।
ग्रह, क्री. चु. भू. प. आदान, लेना।
ग्लस, भू. आ. भक्षण। खाना।
ग्लह, चु. भू. प. आदान भू. आ. निंदा करन।
ग्लुञ्च, भू. प. गति।
ग्लेप, भू. आ. दीनता।
ग्लेव, भू. आ. सेवा।
ग्लै, भू. प. ग्लानि, हर्ष, क्षय।

घ.

घग्घ, भू. प. हंसना।
घट, भू. आ. चेष्टा, चु. प. वध, संघात।
घट्ट, भू. आ. चु. प. चालन।
घण(न), तु. पं. दीप्ति।
घन्ट, चु. भू. प. दीप्ति।
घर्व, भू. प. गति।
घस, भू. प. भक्षण।
घिन्, तु. आ. ग्रहण।
घु, भू. आ. ध्वनि। आवाज़।
घुट, भू. आ. परिवर्तन, तु. प. प्रतिघात।
घुड, तु. प. व्याघात, रक्षा।
घुण, भू. आ. तु. प. घूमना।
घुन्ण, भू. आ. ग्रहण; लेना।
घुर, तु. प. ध्वनि, भय।
घुष, भू. प. शब्द, चु. प. स्तुति।
घूर्ण, तु. प. भ्रमण। घूमना।

तय, चु. प. प्रकाश । रोशन करना ।
तव, चु. प. दीप्ति । चमकना, दमकना ।
तव, त. उ. विस्तार चु. भू. प. उपकार करना, श्रद्धा करना ।
तकि(गि), भू. प. खिसलना, कांपना, चलना ।
तचि, रु. प. संकोच भू. प. गति ।
ताजि, रु. प. संकोच करना । सुकड़ना ।
तड़ि, भू. आ. ताड़न, प्रकाश करन ।
तत्रि, चु. आ. धारण ।
तद्रि, भू. प. मोह, अवसाद ।
तवि, भू. प. गति, ज्ञान, प्राप्ति ।
तसि, चु. भू. प. अलंकरण; सजाना ।
तप, भू. आ. उ. चु. प. दाह; भू. प. दि. आ. सन्ताप, ऐश्वर्य ।
तम, दि. प. ग्लानि; निगलाना ।
तय, भू. आ. गति, रक्षा ।
तर्क, चु. प. दीप्ति । ऊहाकरण ।
तर्ज, भू. प. चु. आ. झिड़कना
तर्द, भू. प. वध । कतल ।
तल, चु. भू. प. प्रतिष्ठा, भू. प. गति ।
तस, दि. प. उत्क्षेपण, उपक्षय; उछालना ।
ताय, भू. आ. पालन, विस्तार ।
तिक, (ग) (घ), भू. आ. गति भू. प. आस्कन्दन, वध. सू. प. वध ।
तिज, भू. आ. क्षय, निशान, चु. प. चिन्ह ।
तिप, भू. आ. क्षरण; खिरना, चूना ।
ति(ती)म, दि. प. गीलाकरना । भिगोना ।
तिल, भू. प. गति, तु. चु. प. स्नेह । चु. प. कर्मसमाप्ति ।
तीव, भू. प. स्थूलता; ।
तु, अ. प. जीवन; वध, जीना. कतल क० ।
तुज, भू. प. वध । कतल क० ।
तुट, तु. प. कलह । [तोड देना ।
तुड, भू. आ. वध । तु. प. भेदन । मार डालना,
तुड्ड, भू. प. अनादर; । बेइज़त करना ।
तुल, भू. प. कुटिलता ।
तुध, चु. प. आच्छादन । ढापना ।
तुद, तु. उ. पीड़ादेना ।
तुजि, भू. प. जीवन, चु. प. कथन, अनादर ।
तुडि, भू. आ. वध, आघात, । कतल करना, चोट देना ।
तुणि चु. प. पीडन, भू. प. वध, तु. प. चेष्टा
तुफि, भू. प. वध, तु. प. दुःख ।
तुल, चु. पू. प. अर्द्ध परिमाण । तोलना ।
तुष, दि. प. तुष्टि । खुश होना ।
तुस, भू. प. शब्द । बोलना ।
तुह, भू. प. पीडन । तकलीफ देना ।
तूड, भू. प. अनादर । बेइज़त करना ।
तूण, चु. प. आ. संकोच । सकुचना ।
तूर, दि. आ, वध, वेग । कतल क० ।
तृप, दि. प. सू. प. प्रीणन, तृप्ति, संदीप, तृफ. तु. प. प्रीणन ।
तृ, भू. प. तरण, प्लवन, अभिभव ।
तेम, भू. आ. कंप, क्षरण ।
तेव, भू. आ. क्रीड़ा । शरमिंदा करना ।
तोड, पू. प. अनादर ।
त्यज, भू. प. त्याग; छोड़ना ।
त्रन्द, भू. प. चेष्टा । हर्कत करना ।
त्रसि, चु. भू. प. दीप्ति । डरना, डराता ।
त्रप, भू. आ. लज्जा ।
त्रस, भू. दि. प. शर्म । [तोड़ना ।
त्रुट, दि. प, तु. प. चु. आ, छेदन । टूटना,
त्रुपि(फि), भू. प. वध । कतल करना ।
त्रै, भू. आ. पालन, त्राण ।
त्रोक, भू. आ. गति ।
त्वक्ष, भू. प. मोचन । छोड़ना । तराशना ।
त्वच, तु. प. आवरण । ढांपना ।
त्वगि, भू. प. कांपना ।
त्वचि, भू. प. गति । जाना, पहुचना, पालना ।
त्वर, भू. आ. वेग । जल्द करना ।
त्विप, भू. उ. दीप्ति । चमकना ।
त्सर, भू. प. कपटगति ।
थुड, तु. प. संवरण; ढंकना ।
थुर्व, भू. प. वध । कतल करना ।

द.

दक्ष, भू. आ. वेग, वृद्धि, वध, गति ।
दघ, सू. प. वध; मारना ।
दद(घ), भू. आ. दान; देना ।

छो, दि. प. छेदन; काटना ।

ज.

जक्ष, अ. प. खाना, हंसना ।
जङ्ग, भू. प. युद्ध करना ।
जट, भू. प. संहति; इकट्ठा होना ।
जन, दि. आ. हु. आ. उत्पत्ति ।
जम्फ, भू. आ. दान; देना ।
जम्भ, भू. पं. रमण चु. पं. नाश ।
जय, भू. पं. जयना ।
जजि, भू. प. युद्ध करना ।
जयि, भू. प. रमण; खेलना ।
जसि, चु. प. रक्षा करना ।
जप, भू. प. हृदयमें उच्चारण ।
जभ, भू. प. रमण, भू. आ. जृम्भण ।
जय, भू. प. भक्षण; खाना ।
जर्च(र्छ)(र्जे)(र्झ)(र्त्स), तु. प. कहना, झिड-कना ।
जल, भू. प. समृद्धि, तु. प. आच्छादन ।
जल्प, भू. प. कहना, बकना ।
जस, दि. प. मोक्षण चु. प. वध, अनादर ।
जागृ, अ. प. जागना ।
जि, भू. प. जय; जीतना ।
जिय, भू. प. जीयना, खाना ।
जिवि, भू. प. वध; मारना ।
जिम, भू. प. सींचना ।
जीव, भू. प. प्राणन; जीना ।
जु, भू. प. वेग, भू. आ. गति ।
जुड, तु. प. गति, तु. प. बन्धन. चु. प. प्रेरण ।
जुगि, भू. प. त्याग, छोडदेना ।
जुत, भू. आ. दीप्ति; प्रकाश ।
जुन, तु. प. गति, ज्ञान, गमन, प्राप्ति ।
जुर्व, भू. प. वध ।
जुरी, दि. आ. हिंसा, मोहन ।
जुल, चु. प. पेषण; पीसना ।
जुषी, तु. आ. प्रीति, सेवा, चु. भू. प. तृप्ति, तर्क ।
जृ, भू. प. न्यक्कार; तिरादर ।
जृभि(भी), चु. प. जिह्वाई लेना ।
जृ, चु. प. जीर्ण होना ।
जॄ, दि. प. जीर्णता ।
जेष्ट, भू. आ. गमन, ज्ञान, प्राप्ति ।
जेह, भू. आ. यत्न, लोभ ।
जै, भू. प. क्षय ।
ज्ञप, चु. प. जताना, मारना ।
ज्या, क्या. प. वयोहानि, बूढा होना ।
ज्यु, भू. आ. चमकना, गति ।
ज्रि, भू. प. निरादर, ।
ज्री, क्या. प. बुढापा ।
ज्वर, भू. प रोग ।

झ.

झट, भू. प. संघात, समूह ।
झमु, भू. प. अदन, खाना ।
झर्च, भू. प. परनिंदा ।
झर्ज(र्झ), भू. प. परनिंदा ।
झप, भू. प. हिंसा, भू. उ. लेना, ढांपना ।
झूप, भू. प. हिंसा ।
झॄ, क्या. प. बूढा होना ।

ट.

टकि, चु. प. बन्धन; बांधना ।
टल, भू. प. व्याकुलहोना, टलजाना ।
टि(टी)क, भू. उ. गमन प्राप्ति, ज्ञान ।
टिप, चु. प्रेरण । उकसाना ।
टीक, भू. आ. गमन; टीका करना ।

ड.

ड्वल, भू. प. विक्लवता ।
डपि, चु. आ. उ. संहति; इकट्ठाकरना ।
डपि, चु. उ. संहति; एकत्रहोना ।
डिप, चु. आ. उ. संहति ।
डिवि, चु. आ. प्रेरणा; भेजना ।
डिभि चु. उ. संहति; एकत्रहोना ।
डिय, चु. प. वध; मारना ।
डी, दि. आ. गति भू. आ. ऊपर उड़ना ।

ढ.

ढुटि, भू. प. अन्वेषण । तलाश करना ।
ढौक, भू. आ. गति । ज्ञा, गमन, प्राप्ति ।

त.

तक, भू. प. सहन; सहारना ।
तक्ष, भू. प. छीलना, भू. सु. प. तराशना ।
तट, भू. प. उन्नति, भू. प. आहति ।

तय, चु. प. प्रकाश। रोशन करना।
तव, चु. प. दीप्ति। चमकना, दमकना।
तव, त. उ. विस्तार चु. भू. प. उपकार करना, श्रद्धा करना।
तकि(गि), भू. प. खिसलना, कांपना, चलना।
तचि, रु. प. संकोच भू. प. गति।
तञ्जि, रु. प. संकोच करना। सुकड़ना।
तड़ि, भू. आ. ताड़न, प्रकाश करन।
तन्त्रि, चु. आ. धारण।
तद्रि, भू. प. मोह, अवसाद।
तवि, भू. प. गति, ज्ञान, प्राप्ति।
तसि, चु. भू. प. अलंकरण; सजाना।
तप, भू. आ. उ. चु. प. दाह; भू. प. दि. आ. सन्ताप, ऐश्वर्य।
तम, दि. प. ग्लानि; निगलाना।
तय, भू. आ. गति, रक्षा।
तर्क, चु. प. दीप्ति। ऊहाकरण।
तर्ज, भू. प. चु. आ. झिड़कना
तर्द, भू. प. वध। कतल।
तल, चु. भू. प. प्रतिष्ठा, भू. प. गति।
तस, दि. प. उत्क्षेपण, उपक्षय; उछालना।
ताय, भू. आ. पालन, विस्तार।
तिक, (ग) (व), भू. आ. गति भू. प. आस्कन्दन, वध. सू. प. वध।
तिज, भू. आ. क्षय, निशान, चु. प. चिन्ह।
तिप, भू. आ. क्षरण; खिरना, चूना।
ति(ती)म, दि. प. गीलाकरना। भिगोना।
तिल, भू. प. गति, तु. चु. प. स्नेह। चु. प. कर्मसमाप्ति।
तीव, भू. प. स्थूलता;।
तु, अ. प. जीवन; वध, जीना. कतल क०।
तुज, भू. प. वध। कतल क०।
तुट, तु. प. कलह। [तोड देना।
तुड, भू. आ. वध। तु. प. भेदन। मार डालना,
तुड्ड, भू. प. अनादर;। बेइज़त करना।
तुल, भू. प. कुटिलता।
तुव, चु. प. आच्छादन। ढापना।
तुद, तु. उ. पीड़ादेना।
तुजि, भू. प. जीवन, चु. प. कथन, अनादर।
तुडि, भू. आ. वध, आघात,। कतल करना, चोट देना।
तुणि चु. प. पीडन, भू. प. वध, तु. प. चेष्टा
तुफि, भू. प. वध, तु. प. दुःख।
तुल, चु. पू. प. अर्द्ध परिमाण। तोलना।
तुष, दि. प. तुष्टि। खुश होना।
तुस, भू. प. शब्द। बोलना।
तुह, भू. प. पीडन। तकलीफ देना।
तूड, भू. प. अनादर। बेइज़त करना।
तूण, चु. प. आ. संकोच। सकुचना।
तूर, दि. आ, वध, वेग। कतल क०।
तृप, दि. प. सू. प. प्रीणन, तृप्ति, संदीप, तृफ. तु. प. प्रीणन।
तृ, भू. प. तरण, प्लवन, अभिभव।
तेम, भू. आ. कंप, क्षरण।
तेव, भू. आ. क्रीड़ा। शरमिंदा करना।
तोड, पू. प. अनादर।
त्यज, भू. प. त्याग; छोड़ना।
त्रन्द, भू. प. चेष्टा। हर्कत करना।
त्रसि, चु. भू. प. दीप्ति। डरना, डराता।
त्रप, भू. आ. लज्जा।
त्रस, भू. दि. प. त्रास। [तोड़ना।
त्रुट, दि. प, तु. प. चु. आ, छेदन। टूटना,
त्रुपि(फि), भू. प. वध। कतल करना।
त्रै, भू. आ. पालन, त्राण।
त्रौक, भू. आ. गति।
त्वक्ष, भू. प. मोचन। छोड़ना। तराशना।
त्वच, तु. प. आवरण। ढांपना।
त्वगि, भू. प. कांपना।
त्वचि, भू. प. गति। जाना, पहुचना, पालन।
त्वर, भू. आ. वेग। जल्द करना।
त्विष, भू. उ. दीप्ति। चमकना।
त्सर, भू. प. कपटगति।
थुड, तु. प. संवरण; ढंकना।
थुर्व, भू. प. वध। कतल करना।

द.

दक्ष, भू. आ. वेग, वृद्धि, वध, गति।
दघ, सू. प. वध; मारना।
दद(ध), भू. आ. दान; देना।

दधि, भू. प. त्याग; छोड़ना।
दमि, चु. प. दण्डपातन; डंडामारना। [प्रेरण।
दवि, प. गर्व, दण्ड, चु. आ. संघात, चु. प.
दवि, भू. प. गति।
दशि, भू. प. डसना, चु. प. चमक, देखना।
दसि, चु. प. दीप्ति, चु. आ. दर्शन, दंशन।
दहि, चु. प. दीप्ति, दाह; चमक, जलन।
दभ, चु. प. प्रेरण; उकसाना।
दम, दि. प. दमन; दवाना।
दय, भू. आ. ग्रहण, दान, वध, रक्षा, गति।
दरिद्रा, अ. प. दुर्गति; गरीवहोना।
दल, भू. प. चु. प. भेदन, विकाशन।
दस, दि. प. उत्क्षेप; उछालना।
दह, भू. प. दाह; जलाना।
दा, हु. उ. दाव, भू. प. अ. प. छेदन। काटना।
दान, भू. उ. छेदन, सरलता।
दाय, भू. आ. दान।
दाश(स), भू. उ. चु. आ. दान, सू. प. वध।
वखशना, कतल करना।
दिपि, चु. उ. आ. संघात; समूह।
दिमि, चु. आ. प्रेरण। मजमह वनाना, उकसाना।
दिवि, दि. प. क्रीडा. गति, जिगीषा, इच्छा दीप्ति,
क्रयविक्रय, चु. प. पीडा, चु. आ. परिकूजन।
दिश, तु. उ. आदेश, दान। हुकम देना, देना।
दिह, अ. उ. लेपन; लिपना।
दी, दि. आ. क्षय, दीनता। [ग्रहण।
दीक्ष, भू. आ. मुण्डन, यजन, अभिषेक; नियम
दीधी, अ. आ. देवन, दीप्ति। [होना।
दीप, दि. आ. दीप्ति, प्रकाश। चमना, रौशन-
दु, भू. प. गमन, सू. प. अनुताप। पहुचना,
पछतान।
दुःख, चु. प. दुखदेना। दुःखी होना।
दुर्व, भू. प. वध; मारना।
दुल, चु. प. दोलन, उत्क्षेपण; झुलाना, उछालना।
दुष, दि. प. दोष, अवगुण।
दुह, भू. प. पीडन, अ. उ. दोहन।
दू, दि. आ. परिताप; पछताना।
दृपि, चु. उ. संघात। मजमह वनाना।
दृम्फ, तु. प. उत्क्षेप,।
दृम्भ, तु. चु. प. गांठना।
दृन्ह, भू. प. वृद्धि; वढ़ना। [संदीपन।
दृफ, दि. प. हर्ष, गर्व, तु. प. पीडन। चु. भू. प.
दृप, चु. भू. प. भय।
दृश, भू. प. दर्शन; देखना।
दृह, भू. प. वृद्धि; वढ़ना।
दृहि, प. क्री. प. चीरना, भू. प. क्री. प. भय।
दे, भू. आ. पालन।
देव, भू. आ. देवन. क्रीडा। पासाखेलना, खेलना।
दैप, भू. प. शोधन; सुधारना।
दो, दि. प. खण्डन, छेदन; तोड़ना।
द्यु, अ. प. गति। ज्ञान, गमन, प्राप्ति।
द्युत, भू. आ. दीप्ति, प्रकाश। चमकना।
द्यै, भू. प. न्यक्कार, निरादर,। वेइजत करना।
द्रम, भू. प. गति।
द्रा, अ. प. प्लायन, निद्रा.। भागना, सोना।
द्राख, भू. प. शोषण। सुखाना।
द्राघ, भू. आ. श्रम, आयास। मेहनत।
द्राड, भू. आ. शीर्णता, वध; मारना।
द्राह, भू. आ. जागना, विक्षेप करना।
द्रु, भू. प. गति, पिघलना सु. प. पछताना।
द्रुड, भू. प. तु. प. मज्जन. डूवना।
द्रुण, तु. प. हिंसा, कुटिलता, गति।
द्रुय, भू. प. हिंसा, कुटिलता, गति।
द्रू, सू. क्रीउ० वध, गति।
द्रेक, भू. आ. शब्द, उत्साह।
द्रै, भू. प. नींद। सोना।
द्विष, अ. उ-वैर। दुश्मनी करना।
द्वृ, भू. प. आच्छादन; पर्दा, ढकना।

ध.

धक, चु. प. नाशन।
धण, भू. प. शब्द। आवाज़।
धन, भू. प. शब्द, हु. प. समृद्धि,।
धवि, भू. प. गति।
धा, हु. उ. धारण, पोषण, दान।
धाव, भू. उ. मार्जन, वेग। मांजना, दौड़ना।
धि, तु. प, धारण।
धिक्ष, भू. आ. सन्दीपन, क्लेशन, प्राणन।

धिवि, हु. प. शब्द ।
धिन्व, भू. प. गति, प्रीति ।
धी, दि. आ. आराधना, अनादर ।
धू, सु. उ. कम्पन; कांपना ।
धूप, भू. प. ताप, चु. प. प्रकाश ।
धूर, दि. आ. वध, गति, ।
धूप(श)स, चु. प. शोभा संपादन ।
धृ, भू. उ. धारण स्थिति, भू आ घूर्णन, पतन, तु. आ. स्थिति, चु. प. धारण, ऋण-ग्रहण ।
धृज, भू. प. गमन ।
धृष, भू. प. ढीठपन, संहति, वध, सू. प. धृष्टता । चु. आ. बलसे बांधना, धमकना, कोप ।
धेट, भू. प. पीना ।
धोर, भू. प. गति, चातुर्य; चाल ।
ध्मा, भू. प. धौंकणा, शब्द, फूंकना ।
ध्वांक्ष, भू. प. आकांक्षा, इच्छा ।
ध्यै, भू. प. चिन्ता । फिकरकरना ।
ध्रज, भू. प. गति । ज्ञान गमन प्राप्ति ।
ध्रण, भू. प. शब्द । बोलना ।
ध्रजि, भू. प. गति. [लना, खिलह चुगना ।
ध्रस, चु. प. उत्क्षेपण, क्री. प. उञ्छवृत्ति । उछा·
ध्राप, भू. प. सुखाना, असमर्थ होना ।
ध्राम, भू. आ. शीर्णता; । सड़जाना ।
ध्रिज, भू. प. गमन ।
ध्रु, भू. प. स्थिरता । अटलरहना ।
ध्रेक, भू. आ. शब्द, उत्साह ।
ध्रै, भू. प. तृप्ति, ।
ध्वज, भू. प. गति ।
ध्वण, भू. प. शब्द ।
ध्वान, भू. प. चु. प. शब्द.
ध्वजि, भू. प. गति ।
ध्वसि, भू. आ. गमन, पतन ।
ध्वनूक्ष, भू. प. आकांक्षा, घोरशब्द ।
ध्वृ, भू. प. कुटिलता; तिरछापन ।

न.

नक्क, चु. प. नाशन ।
नक्ष, भू. प. गमन ।
नख, भू. प. गमन ।
नज, भू. आ. लज्जा ।
नट, भू. प. नृत्य, वध ।
नड, चु. प. भ्रंश, पतन; गिरना ।
नद, भू. प. अस्पष्टशब्द, नाद, चु. प. प्रकाश ।
नक्ष, भू. प. समृद्धि, आनन्द ।
नभ, दि. क्री. प. चु. आ. वध ।
नम, भू. प. शब्द, नति । नमस्कार करना,
नय, भू. आ. गति, रक्षा । ज्ञान गमन, प्राप्ति ।
नर्द, भू. प. शब्द । गाजना ।
नर्व, भू. प. गमन । चलना ।
नल, भू. प. वन्धन, चु. प. प्रकाश ।
नश, दि. प. विनाश, अदर्शन ।
नस, भू. आ. कुटिलता; तिरछापन ।
नह, दि. उ. बन्धन; बांधना ।
नाथ, भू. उ. ताप, ऐश्वर्य, प्रार्थना, आशीर्वाद ।
नाध, भू. आ. ताप, ऐश्वर्य, प्रार्थना, आशीः ।
नास, भू. आ. शब्द, ध्वनि ।
निक्ष, भू. प. चुम्बन; चूमना ।
निज, हु. उ. सामीप्य; पासहोना ।
निजि, अ. आ. पोषण. शोधन ।
निदि, भू. प. मोचन; निन्दन ।
निसि, अ. आ. चुम्बन; चूमना ।
निल, तु. प. गहन; गहरा ।
निवास, चु. प. आच्छादन; ढांपना ।
निश, तु. प. समाधि; ध्यान ।
निप, भू. प. सेचन; सींचना ।
निष्क, चु. आ. परिमाण; मापना ।
नी, भू. उ. प्रापण; लेना ।
नील, भू. प. नीलवर्ण; नीला ।
नीव, भू. प. स्थूलता; मोटापन ।
नु, अ. प. स्तुति; बडाई ।
नुड, तु. प. वध; मारना ।
नुद, तु. उ. प्रेरण । उकसाना ।
नू, तु. प. स्तुति; बड़ाई ।
नृत, दि. प. नृत्यकरना ।
नॄ, भू. प. क्री. प. प्रापण ।
नेद, भू. उ. सन्निधान; पास होना ।
नेप, भू. आ. गति; जानना, पाना, चलना ।

प.

पक्ष, चु. प. परिग्रह; तर्फदारी करना ।

पच्, भू. उ. पकाना, भू. आ. वक्रीकरण; टेढा करना ।
पट, भू. प. गमन; जाना ।
पठ, भू. प. पठन; पढ़ना ।
पण, भू. आ. क्रयविक्रय, स्तुति । ख़रीद फ़रोख़्त, तअरीफ़ । [चु. प. गति ।
पत, भू. प. पतन; गिरना, दि. आ. ऐश्वर्य,
पथ, भू. प. गति; चलना ।
पद, भू. प. स्थैर्य, दि. आ. गमन, चु. गमन ।
पन, भू. आ. स्तुति; बड़ाई ।
पचि, भू. आ. व्यक्तीकरण, चु. प. विस्तार ।
पजि, भू. प. रोध; रोकना ।
पडि, भू. आ. गति चु. प. संहति ।
पथि, चु. प. गमन; जाना ।
पवि, भू. प. गमन; जाना ।
पथि, चु. प. नाशन; नाशकरना ।
पर्ण, चु. प. हारित्व; हरा होना ।
पर्द, भु. आ, आपानवायुसरण; पाद मारना ।
पर्न, भू. प. गमन; जाना ।
पर्व, भू. प. गमन । जाना ।
पर्ष, भू. आ. स्नेहन ।
पल, भू. प. गति, चु. प. रक्षाकरना ।
पल्ल, भू. प, (ल्यू) गति ।
पल्युल, चु. प. छेदन; तोड़ना ।
पस, भू. उ. पीडन, ग्रन्थन, चु. प. वन्धन ।
पा, भू. प. पीना, अ. प. रक्षाकरना ।
पार, चु. प. कर्मसमाप्ति; काम पूरा करना ।
पाल, चु. प. रक्षा; बचाना ।
पि, तु. प. गमन; जाना ।
पिच्छ, चु. प. छेदन, पीडन; दुःखदेना ।
पिट, भू. प. शब्दसंहति ।
पिठ, भू. प. क्लेशन, वध ।
पिजि, अ. आ. वर्ण, पूजन, चु. प. कथन, प्रकाश वास, वध, वल, घन, ।
पिडि, भू. आ. चु. प. संघात, पिंडीकरण ।
पिचि, भू. प. सींचना ।
पिसि, भु. प. प्रकाश ।
पिज, चु. प. प्रेरण, ।
पिश, तु. प. अवयव, खण्ड । टुकड़े करना ।
पिष, उ. प. चूर्णन; पीसना ।
पिछ, भू. प. गमन, चु. प. गति, वास ।
पी, दि. आ. पान; पीना ।
पीड, चु. प. पीडन, अवगाहन ।
पील, भू. प. रोध, स्तम्भन ।
पीव, भू. प. स्थूलता; मोटाई ।
पुच्छ, भू. प. प्रमाद; वेपरवाही ।
पुट, तु. प. संश्लेष, चु. प. चूरण, दीपन ।
पुट्ट, चु. प. तुच्छता; छोटा जानना ।
पुण, तु. प. धर्माचरण; धर्म करना ।
पुत्त, भू. प. गमन; जाना ।
पुथ, दि. प. वध, चु. प. प्रकाश ।
पुथि भू. प. क्लेशन, वध ।
पुसि, चु. प. मर्दन; मलना ।
पुर, तु. प. अग्रगति; आगे चलना ।
पुर्व, भू. प. पूरण; पूरा । [पोषण ।
पूल, भू. प. दि. प. क्री प. पोषण चु. प. धारण,
पुष्प, दि. प. विकसन; खिलना ।
पुस्त, चु. प. वंधन; बांधना ।
पू, भू. दि. आ. क्री. उ. शोधन; सुधारना ।
पूज, चु. प. पूजना ।
पूण, चु. प. सङ्घात; इकठा करना ।
पूय, भू. आ. दुर्गन्ध, जीर्णता; पूरा करना ।
पूर, दि. आ. चु. प. पूरण; पूरा करना ।
पूर्ण, चु. प. संघात; इकठा करना ।
पूर्व, चु. प. निकेतन ।
पूल, चु. भू. प. संघात; एकत्र करना ।
पूष, भू. प. वृद्धि; बढाना ।
पृ, हु. प. पालन, सू. प. प्रीति, तु. आ. व्यायाम ।
पृच्, चु. भू. प. संयमन रु. प. अ. आ. संपर्क ।
पृड, तु. प. प्रीति; प्रेम करना ।
पृण, तु. प. तृप्ति; रजजाना ।
पृथ, चु. प. प्रक्षेपण; फेंकदेना ।
पृजि, अ. आ. संपर्क; मिलना ।
पृष, भू. प. सेचन; सींचना ।
पॄ, हु. प. क्री. प. पालन, चु. प. पूरण ।
पेण, भू. प. पेषण, गति, आश्लेष ।
पेल, भू. प. गति चालन, ।
पेव, भू. आ. सेवा; सेवा करना ।

पेप, भू. आ. यत्न; परिश्रम करना ।
पेस, भू. प. गमन; चलना ।
पै, भू. प. शोषण; सुखाना ।
प्याय, भू. आ. वृद्धि; बढना ।
प्यूय, दि. प. भाग, दाह चु. प. त्याग ।
प्यै, भू. आ. वृद्धि; बढ़ना ।
प्रच्छ, तु. प. जिज्ञासा; पूछना ।
प्रथ, भू. आ. चु. प. ख्याति, प्रक्षेप; प्रसिद्धि, [फेंकना ।
प्रस, भू. आ. प्रसव; सूना ।
प्रा, अ. प. पूरण; पूरा करना ।
प्री, भू. उ. प्रीणन. दि. आ. प्रसन्नता, क्री. उ. चु. प. कामना, प्रीणना ।
प्रु, भू. आ. गति, प्लुति; चलना, कूदना ।
प्रुष, भू. प. दाह, क्री. प. सेचन, पूरण, स्नेहन ।
प्रेङ्खोल, चु. प. दोलन; झूलना ।
प्रेष, भू. आ. प्रेरण; भेजना ।
प्रोथ, भू. उ. पर्याप्ति; पूरापन ।
प्लक्ष, भू. उ. भक्षण; खाना ।
प्लव, प्लिह, } भू. आ. गमन; चलना ।
प्लु, भू. आ. गति, प्लुति; कूदना ।
प्लुष, भू. प. दि. प. दाह क्री. प. सेचन, पूरण, [स्नेहन ।
प्लुस, दि. प. दाह, भाग ।
प्लेव भू. आ. सेवा; रहस्य ।
प्सा, अ. प. भक्षण; । खाना ।

फ.

फक्क, तु. प. असत् व्यवहार, मन्दगति ।
फण, भू. प. निस्नेहन; सूखा करना ।
फल, भू. प. निष्पत्ति, भेदन, गति ।
फुल्ल, भू. प. विकाश; फूटना ।
फेल, भू. प. गति; जानना, पाना, ।

ब.

बट, भू. प. पीनता; मोटापन ।
बल, भू. प. शब्द । बोलना ।
बद, भू. प. ऐश्वर्य; बड़ाई ।
बध, भू. आ. निंदा, बंधन, चु. प. बन्धन ।
बन, तु. आ. याच्ना; मांगना ।
बन्ध, क्री. प. चु. प. बांधना ।
बर्हि भू. आ. वृद्धि चु. प. प्रकाश ।
बभ्र, बर्ब, } भू. प. गमन ।
बर्ह, भू. आ. विस्तार ।
बल, भू. प. धान्यावरोध, प्राणन भू. आ. दान, वध, चु. प. प्राशन चु. आ. निरूपण, दान. वध ।
बाड, भू. आ. आप्लावन; पानीसे घिरना ।
बाध, भू. आ. व्याघात; रोक ।
बिन्द, भू. प. अंशकरण; बांटना ।
बिस, दि. प. क्षेपण; फेंकना ।
बुक्क, चु. भू. प. कुकुरादिका शब्द ।
बुट, चु. भू. प. वध; मारना ।
बुध, भू. प. विज्ञापन, दि. आ० बोध ।
बुद्ध, चु. प. वर्जन; हटाना ।
बुल, चु. प. मज्जन; डूबना ।
बुस, दि. प. त्याग; छोड़ना ।
बुस्त, चु. प. आदर, अनादर बंधना ।
बृ, क्र. प. वृत्ति, भृति; ।
ब्रण, भू. प. शब्द ।
ब्रू, अ. उ. वचन; कहना ।

भ.

भक्ष, चु. प. खाना ।
भज, भू. उ. भाग, सेवा, चु. प. पाक ।
भट, भू. प. भृति, कथन ।
भण, भू. प. शब्द ।
भञ्जि, रु. प. भङ्ग, चु. प. प्रकाश ।
भडि, भू. आ. कथन, परीहास चु. प. कल्याण ।
भन्द, भू. आ. आमोद, प्रीति, ।
भर्त्स भू. उ. चु. आ. झिड़कना ।
भर्य(र्व), भू. प. वध ।
भल(ल्ल), भू, आ. दान, वध ।
भष, भू. प. कूकर आदिका शब्द, निन्दा
भस, जु. प. प्रकाश, भर्त्सना; झिडकना ।
भा, अ. प. दीप्ति; प्रकाश ।
भाज, चु. प. पृथक् करना ।
भाम, भू. आ. क्रोध, चु. प. क्रोध करना ।
भाष, भू. आ. कथन; कहना ।
भास, भू. आ. प्रकाश ।
भिक्ष, भू. आ. प्रार्थना, लाभ, क्लेश ।
भिद, रु. उ. भेदन, छेदन; तोड़ना ।

पच, भू. उ. पकाना, भू. आ. वक्रीकरण; टेढा करना।
पट, भू. प. गमन; जाना।
पठ, भू. प. पठन; पढ़ना।
पण, भू. आ. क्रयविक्रय, स्तुति। ख़रीद फ़रोख़्त, तअरीफ़। [चु. प. गति।
पत, भू. प. पतन; गिरना, दि. आ. ऐश्वर्य,
पथ, भू. प. गति; चलना।
पद, भू. प. स्थैर्य, दि. आ. गमन, चु. गमन।
पन, भू. आ. स्तुति; बड़ाई।
पचि, भू. आ. व्यक्तीकरण, चु. प. विस्तार।
पजि, भू. प. रोध; रोकना।
पडि, भू. आ. गति चु. प. संहति।
पवि, चु. प. गमन; जाना।
पवि, भू. प. गमन; जाना।
पथि, चु. प. नाशन; नाशकरना।
पर्ण, चु. प. हारित्य; हरा होना।
पर्द, भ्र. आ, आपानवायुसरण; पाद मारना।
पर्न, भू. प. गमन; जाना।
पर्व, भू. प. गमन। जाना।
पर्प, भू. आ. स्नेहन।
पल, भू. प. गति, चु. प. रक्षाकरना।
पल्ल, भू. प, (ल्यू) गति।
पल्युल, चु. प. छेदन; तोड़ना।
पस, भू. उ. पीडन, ग्रन्थन, चु. प. बन्धन।
पा, भू. प. पीना, अ. प. रक्षाकरना।
पार, चु. प. कर्मसमाप्ति; काम पूरा करना।
पाल, चु. प. रक्षा; बचाना।
पि, तु. प. गमन; जाना।
पिच्छ, चु. प. छेदन, पीडन; दुःखदेना।
पिट, भू. प. शब्दसंहति।
पिठ, भू. प. क्लेशन, वध।
पिजि, अ. आ. वर्ण, पूजन, चु. प. कथन, प्रकाश वास, वध, बल, घन,।
पिडि, भू. आ. चु. प. संघात, पिंडीकरण।
पिवि, भू. प. सींचना।
पिसि, भू. प. प्रकाश।
पिज, चु. प. प्रेरण,।
पिश, तु. प. अवयव, खण्ड। टुकड़े करना।
पिष, उ. प. चूर्णन; पीसना।
पिछ, भू. प. गमन, चु. प. गति, वास।
पी, दि. आ. पान; पीना।
पीड, चु. प. पीडन, अवगाहन।
पील, भू. प. रोध, स्तम्भन।
पीव, भू. प. स्थूलता; मोटाई।
पुच्छ, भू. प. प्रमाद; बेपरवाही।
पुट, तु. प. संश्लेष, चु. प. चूरण, दीपन।
पुट्ट, चु. प. तुच्छता; छोटा जानना।
पुण, तु. प. धर्माचरण; धर्म करना।
पुत्त, भू. प. गमन; जाना।
पुथ, दि. प. वध, चु. प. प्रकाश।
पुथि भू. प. क्लेशन, वध।
पुसि, चु. प. मर्दन; मलना।
पुर, तु. प. अग्रगति; आगे चलना।
पुर्व, भू. प. पूरण; पूरा। [पोषण।
पूल, भू. प. दि. प. क्री प. पोषण चु. प. धारण,
पुष्प, दि. प. विकसन; खिलना।
पुस्त, चु. प. बंधन; बांधना।
पू, भू. दि. आ. क्री. उ. शोधन; सुधारना।
पूज, चु. प. पूजना।
पूण, चु. प. संघात; इकट्ठा करना।
पूय, भू. आ. दुर्गन्ध, जीर्णता; पूरा करना।
पूर, दि. आ. चु. प. पूरण; पूरा करना।
पूर्ण, चु. प. संघात; इकट्ठा करना।
पूर्व, चु. प. निकेतन।
पूल, चु. भू. प. संघात; एकत्र करना।
पूष, भू. प. वृद्धि; बढाना।
पृ, हु. प. पालन, स्व. प. प्रीति, तु. आ. व्यायाम।
पृच्, चु. भू. प. संयमन रु. प. अ. आ. संपर्क।
पृड, तु. प. प्रीति; प्रेम करना।
पृण, तु. प. तृप्ति; रजजाना।
पृथ, चु. प. प्रक्षेपण; फेंकदेना।
पृजि, अ. आ. संपर्क; मिलना।
पृष, भू. प. सेचन; सींचना।
पॄ, हु. प. क्री. प. पालन, चु. प. पूरण।
पेण, भू. प. पेषण, गति, आश्लेष।
पेल, भू. प. गति चालन,।
पेव, भू. आ. सेवा; सेवा करना।

मील, भू. प. निमेष, । झमकना ।
मीव, भू. प. स्थूलता, । मोटापन ।
मुख, भू. प. मण्डन, शोभा ।
मुच, भू. आ. दम्भ. शाठ्य, चु. प. मोचन ।
मुठ, तु. प. आक्षेप, मर्दन ।
मुण, तु. प. प्रतिज्ञा ।
मूद, भू. आ. हर्ष. चु. प. संसर्ग ।
मुद, भू. आ. हर्ष चु. प. संसर्ग ।
मुञ्चि, भू. आ. दम्भ, शाठ्य, भू. प. गति ।
मुजि, चु. प. मार्जन, शब्द ।
मुटि, भू. प. मर्दन । मलना ।
मुठि, भू. आ. पलायन । भागना ।
मुडि, भू. प. छेदन, मर्दन, भू. आ. मज्जन, ।
मुर, तु. प. वेष्टन । लपेटना ।
मूर्छ, भू. प. मोह, वृद्धि ।
मूर्व, भू. प. बन्धन । बांधना ।
मूश, भू. प. वध दि. प. छेदन क्री. प. लुण्ठन ।
मूस, दि. प. छेदन । तोडना ।
मूस्त, चु. प. संहति । मिलाना ।
मृ, तु. आ. मरण । मारना ।
मृग, दि. प. चु. आ. अन्वेषण ।
मृज, अ. प. शोधन चु. भू. प. भूषण शोधन ।
मृड, तु- क्री. प. हर्ष, मर्दन । मलना ।
मृण, तु. प. वध । मारना ।
मृद, क्री. प. मर्दन । मलना ।
मृध, भू. उ. क्लेदन । गालना ।
मृश, तु. प. मर्शन, स्पर्श । [सहन ।
मृष, भू. प. सेचन, भू. उ. अदि. उ. चु. प. क्षमा
मॄ, क्री. प. वध ।
मे, भू. आ. प्रतिदान, विनमय ।
मेट(ड), भू. प. उन्माद ।
मेथ(ध), भू. उ. संग, वध ।
मेद, भू. उ. वध, मेधा ।
मेथ, भू. आ. गमन ।
मेव, भू. आ. सेवा ।
मोक्ष, चु. भू. प. क्षेपण । छूटना ।
म्ना, भू. प. अभ्यास ।
म्रक्ष, भू. प. संघात. चु. प. मोक्षण, लेहन ।
म्रद, भू. आ. क्षोदन । पीसना ।
म्रुच, भू. प. गति ।
म्रेट(ड), भू. प. उन्माद ।
म्लुच, } भू. प. गमन ।
म्लुचि, }
म्लेछ, चु. भू. प. अपशब्द ।
म्लेट(ड), भू. प. उन्माद ।
म्लेव, भू. आ. सेवा ।
म्लै, भू. प. हर्ष, जय ।

य.

यक्ष, चु. आ. पूजन ।
यज, भू. उ. देवपूजन, दान, संग करण ।
यत, भू. आ. यत्न चु. प खेद, भूषण ।
यंत्र, चु. प. संकोच ।
यभ, भू. प. स्त्रीसंग, मैथुन । जमथा करना ।
यम, भू. प. उपरम चु. प. परिवेषण, वेष्टन ।
यस, दि. प. यत्न करना ।
या, अ. प. गति । जाना ।
याच, भू. उ. याच्ञा । मागना । [बांधना ।
यु, अ. प. मिश्रण, क्री उ. बन्धन । मिलाना,
युज, दि. आ. समाधि, रु. उ. संयोग, संयम, चु. भू. प. चु. आ. निन्दा, संयम ।
युत, भू. आ. प्रकाश ।
युध, दि. आ. युद्धकरना ।
युगि, भू. प. त्याग । तजना ।
युथ, दि. प. विमोह ।
युग, भू. प. भजन ।
यूप, भू. प. वध । मारना ।
येष, भू. आ. यत्न । कोशश करना ।
यौट(ड), भू. प. सम्बन्ध ।

र.

रक, चु. प. स्वाद. प्राप्ति ।
रक्ष, भू. प. पालन ।
रख, भू. प. गति ।
रग, भू. प. शङ्का. गति. चु. प. आ. स्वाद प्राप्ति ।
रच, चु. प. करण । रचना ।
रट(ठ), भू. प. कथन, याच्ञा ।
रण, भू. प. गति, शब्द ।
रद, भू. प. उत्खात, ।
रध, दि. प. वध, पाक ।

भिन्द, भू. प. खण्ड २ करना ।
भिल, चु. प. भेदन; तोड़ना ।
भिष्, भू. प. रोगशान्ति; रोग दूर होना ।
भी, जु. प. भय करना; डरना ।
भुज, तु. प. वक्रण; तिरछा होना ।
भुडि, भू. आ. पोषण आच्छादन; ढांपना ।
भू, भू. प. सत्ता, (भू. उ. 'चु. आ' प्राप्ति 'शुद्धि चिन्ह, मिश्रण' ।
भूष, चु. भू. प. भूषण; सजाना ।
भृ, भू. जु. उ. भरण, पोषण; पालना ।
भृज, भू. आ. भर्जन; भूनना ।
भृश, दि. प. अधःपतन; नीचेगिरना ।
भॄ, क्री. प. पोषण. भर्जन, भर्त्सन; झिड़कना ।
भेप, भू. उ. भय; गति ।
भ्राश(स), दि. भू. आ. प्रकाश ।
भ्यस, भू. आ. भय; डर ।
भ्रण, भू. प. शब्द ।
भ्रंश, भू. आ. दि. प. अधःपतन ।
भ्रम, भू. प. दि. प. चलना, भ्रमण भ्रान्ति ।
भ्रस्ज, तु. उ. पाक. भर्जन ।
भ्राज, भू. आ. प्रकाश ।
भ्राश(स), दि. भू. आ. प्रकाश ।
भ्री, क्री. प. भय. पोषण; डर, पालना ।
भ्रुड, तु. प. संवर्ण, संहृति ।
भ्रूण, चु. आ. आशा, आशंका ।
भ्राज, भू. आ. प्रकाश । चमकना ।
भ्राश, भू. उ. गमन ।
भृक्ष, भू. उ. भक्षण; खाना ।

म.

मक्क, भू. आ. गति; जानना, चलना, पाना ।
मक्ष, भू. प. कोष. संघात । गुस्सा, ।
मख, भू. प. सर्पण, गमन ।
मच, भू. आ. कलकल, दम्भ. शाठ्य ।
मट, भू. प. भक्षण; खाना ।
मठ, भू. प. वास, मर्दन; मलना ।
मण, भू. प. पूजन; पूजना ।
मथ, भू. प. अवगाहन, विलोटन; विलोना ।
मद, दि. प. हर्ष. मत्तहोना, चु. आ. तृप्ति ।
मन, भू. प. चु. आ. पूजा गर्भ दि. आ. तु. आ, बोध, चु. प. धैर्य ।

मकी(खी), भू. आ. भूषा; सजाना ।
मघि, भू. प. भूषा, भू. आ. धल. गति, वेग, निन्दा, प्रारंभ, । [प. गमन ।
मीच, भू. आ. प्रकाश, उन्नति, पूजन, धारण, भू.
मीज, चु. प. शब्द, मार्जन, भू. प. शब्द ।
मीठ, भू. आ. चिन्ता ।
मीड, भू. आ. भाग, वेटन, चु. प. आमोद ।
मंत्र, चु. आ. गुप्तकथन ।
मंथ, भू. प. यद्ध क्लेश. क्री. प. विलोडन । [गति, ।
मंद, भू. आ. निद्रा. जडता, मद हर्ष. स्तुति,
मह्रि, चु. प. प्रकाश. भू. आ. वृद्धि ।
मभ्र, भू. प. गति; ज्ञान, गमन, प्राप्ति ।
मय, भू. आ. गति; ।
मर्व, भू. प. गति ।
मल(ल्ल), भू. आ. धारण ।
मव, भू. प. बन्धन ।
मश, भू. प. शब्द, कोप । अवाज, गुस्सा ।
मस, भू. प. सर्पण, गति ।
मस, दि. प. परिमाण, परिणाम ।
मस्क(ष्क), भू. आ. गमन ।
मस्न, तु. प. स्नान ।
मह, भू. प. चु. प. पूजा ।
मा, दि. आ. परिमाण. जु. आ. शब्दपरिमाण ।
मान, भू. आ. विचार. भू. प. पूजा, ।
माक्षि, भू. प. आकांक्षा ।
मार्ग, भू. प. अन्वेषण चु. प. संस्कार, गति,
मार्ज, चु. प. शब्द; मार्जन ।
माह, भू. उ. परिमाण ।
मि, सु. उ. क्षेपण ।
मिच्छ, तु. प. पीड़ा, बाधन ।
मिथ, भू. उ. वध । मारना । [भू. उ. वध ।
मिद, भू. प. गर्व भू. आ. दि. प. चु. प. स्नेहन
मिजि, चु. प. प्रकाश, ।
मिवि, भू. प. सेचन, ।
मिश, भू. प. शब्द, कोप, ।
मिश्र, चु. प. योग; मिलना ।
मिष, भू. प. सेचन तु. प-स्पर्धा, । हसद करना ।
मिह, भू. प. सेचन, । सींचना ।
मीह, दि. आ. क्री. उ. वध; चु. भू. प. निमेष, ।

मील, भू. प. निमेष, । झमकना ।
मीव, भू. प. स्थूलता, । मोटापन ।
मुख, भू. प. मण्डन, शोभा ।
मुच, भू. आ. दम्भ. शाठ्य, चु. प. मोचन ।
मुठ, तु. प. आक्षेप, मर्दन ।
मुण, तु. प. प्रतिज्ञा ।
मूद, भू. आ. हर्ष. चु. प. संसर्ग ।
मुद, भू. आ. हर्ष चु. प. संसर्ग ।
मुचि, भू. आ. दम्भ, शाठ्य, भू. प. गति ।
मुजि, चु. प. मार्जन, शब्द ।
मुटि, भू. प. मर्दन । मलना ।
मुठि, भू. आ. पलायन । भागना ।
मुडि, भू. प. छेदन, मर्दन, भू. आ. मज्जन, ।
मुर, तु. प. वेष्टन । लपेटना ।
मूर्छ, भू. प. मोह, वृद्धि ।
मूर्व, भू. प. वन्धन । बांधना ।
मूश, भू. प. वध दि. प. छेदन क्री. प. लुण्ठन ।
मूस, दि. प. छेदन । तोडना ।
मूत्त, चु. प. संहति । मिलाना ।
मृ, तु. आ. मरण । मारना ।
मृग, दि. प. चु. आ. अन्वेषण ।
मृज, अ. प. शोधन चु. भू. प. भूषण शोधन ।
मृड, तु॰ क्री. प. हर्ष, मर्दन । मलना ।
मृण, तु. प. वध । मारना ।
मृद, क्री. प. मर्दन । मलना ।
मृध, भू. उ. क्लेदन । गालना ।
मृश, तु. प. मर्शन, स्पर्श । [सहन ।
मृष, भू. प. सेचन, भू. उ. अदि. उ. चु. प. क्षमा
मॄ, क्री. प. वध ।
मे, भू. आ. प्रतिदान, विनमय ।
मेट(ड), भू. प. उन्माद ।
मेथ(ध), भू. उ. संग, वध ।
मेद, भू. उ. वध, मेधा ।
मेथ, भू. आ. गमन ।
मेव, भू. आ. सेवा ।
मोक्ष, चु. भू. प. क्षेपण । छूटना ।
म्ना, भू. प. अभ्यास ।
म्रक्ष, भू. प. संघात. चु. प. मोक्षण, स्नेहन ।
म्रद, भू. आ. क्षोदन । पीसना ।
म्रुच, भू. प. गति ।
म्रेट(ड), भू. प. उन्माद ।
म्लुच, }
म्लुचि, } भू. प. गमन ।
म्लेछ, चु. भू. प. अपशब्द ।
म्लेट(ड), भू. प. उन्माद ।
म्लेव, भू. आ. सेवा ।
म्लै, भू. प. हर्ष, जय ।

य.

यक्ष, चु. आ. पूजन ।
यज, भू. उ. देवपूजन, दान, संग करण ।
यत, भू. आ. यत्न चु. प खेद, भूषण ।
यंत्र, चु. प. संकोच ।
यभ, भू. प. स्त्रीसंग, मैथुन । जमआ करना ।
यम, भू. प. उपरम चु. प. परिवेषण, वेष्टन ।
यस, दि. प. यत्न करना ।
या, अ. प. गति । जाना ।
याच, भू. उ. याच्ञा । मागना । [बांधना ।
यु, अ. प. मिश्रण, क्री उ. वन्धन । मिलाना,
युज, दि. आ. समाधि, रु. उ. संयोग, संयम. चु. भू. प. चु. आ. निन्दा, संयम ।
युत, भू. आ. प्रकाश ।
युध, दि. आ. युद्धकरना ।
युगि, भू. प. त्याग । तजना ।
युथ, दि. प. विमोह ।
युग, भू. प. भजन ।
यूप, भू. प. वध । मारना ।
येष, भू. आ. यत्न । कोशश करना ।
यौट(ड), भू. प. सम्बन्ध ।

र.

रक, चु. प. स्वाद. प्राप्ति ।
रक्ष, भू. प. पालन ।
रख, भू. प. गति ।
रग, भू. प. शङ्का. गति. चु. प. आ. स्वाद प्राप्ति. ।
रच, चु. प. करण । रचना ।
रट(ठ), भू. प. कथन, याच्ञा ।
रण, भू. प. गति, शब्द ।
रद, भू. प. उत्खात, ।
रध, दि. प. वध, पाक ।

भिन्द, भू. प. खण्ड २ करना ।
भिल, चु. प. भेदन; तोड़ना ।
भिष्, भू. प. रोगशान्ति; रोग दूर होना ।
भी, जु. प. भय करना; डरना ।
भुज, तु. प. वक्रण; तिरछा होना ।
भुण्डि, भू. आ. पोषण आच्छादन; ढांपना ।
भू, भू. प. सत्ता, (भू. उ. 'चु. आ' प्राप्ति 'शुद्धि चिन्ह, मिश्रण' ।
भूप, चु. भू. प. भूषण; सजाना ।
भृ, भू. जु. उ. भरण, पोषण; पालना ।
भृज, भू. आ. भर्जन; भूनना ।
भृश, दि. प. अधःपतन; नीचेगिरना ।
भॄ, क्री. प. पोषण. भर्जन, भर्त्सन; झिटकना ।
भेष, भू. उ. भय; गति ।
भ्राश(स), दि. भू. आ. प्रकाश ।
भ्यस, भू. आ. भय; डर ।
भ्रण, भू. प. शब्द ।
भ्रंश, भू. आ. दि. प. अधःपतन ।
भ्रम, भू. प. दि. प. चलना, भ्रमण भ्रान्ति ।
भ्रस्ज, पु. उ. पाक. भर्जन ।
भ्राज, भू. आ. प्रकाश ।
भ्राश(स), दि. भू. आ. प्रकाश ।
भ्री, क्री. प. भय. पोषण; डर, पालना ।
भ्रुड, तु. प. संसर्ग, संहति ।
भ्रूण, चु. आ. आशा, आशंका ।
भ्राज, भू. आ. प्रकाश । चमकना ।
भ्राश, भू. उ. गमन ।
भ्रक्ष, भू. उ. भक्षण; खाना ।

म.

मक, भू. आ. गति; जानना, चलना, पाना ।
मक्ष, भू. प. क्रोध. संघात । गुस्सा, ।
मख, भू. प. सर्पण, गमन ।
मच, भू. आ. कलकल, दम्भ. शाठ्य ।
मट, भू. प. भक्षण; खाना ।
मठ, भू. प. वास, मर्दन; मलना ।
मण, भू. प. पूजन; पूजना ।
मथ, भू. प. अवगाहन, विलोडन; विलोना ।
मद, दि. प. हर्ष. मत्तहोना, चु. आ. तृप्ति ।
मन, भू. प. चु. आ. पूजा गर्भ दि. आ. तु. आ, बोध, चु. प. धैर्य ।
मकी(खी), भू. आ. भूषा; सजाना ।
मघि, भू. प. भूषा, भू. आ. घल. गति, वेग, निन्दा, प्रारंभ, । [प. गमन ।
मीच, भू. आ. प्रकाश, उन्नति, पूजन, धारण, भू.
मीज, चु. प. शब्द, मार्जन, भू. प. शब्द ।
मीठ, भू. आ. चिन्ता ।
मीड, भू. आ. माग, वेष्टन, चु. प. आमोद ।
मंत्र, चु. आ. गुप्तकथन ।
मंथ, भू. प. चद्ध क्लेश. क्री. प. विलोडन । [गति, ।
मंद, भू. आ. निद्रा. जडता, मद हर्ष. स्तुति,
महि, चु. प. प्रकाश. भू. आ. वृद्धि ।
मभ्र, भू. प. गति; ज्ञान, गमन, प्राप्ति ।
मय, भू. आ. गति; ।
मर्व, भू. प. गति ।
मल(ल्ल), भू. आ. धारण ।
मव, भू. प. बन्धन ।
मश, भू. प. शब्द, कोप । अवाज, गुस्सा ।
मष, भू. प. सर्पण, गति ।
मस, दि. प. परिमाण, परिणाम ।
मस्क(ष्क), भू. आ. गमन ।
मस्ज, तु. प. स्नान ।
मह, भू. प. चु. प. पूजा ।
मा, दि. आ. परिमाण. जु. आ. शब्दपरिमाण ।
मान, भू. आ. विचार. भू. प. पूजा, ।
माक्षि, भू. प. आकांक्षा ।
मार्ग, भू. प. अन्वेषण चु. प. संस्कार, गति,
मार्ज, चु. प. शब्द; मार्जन ।
माह, भू. उ. परिमाण ।
मि, सु. उ. क्षेपण ।
मिच्छ, तु. प. पीड़ा, बाधन ।
मिथ, भू. उ. वध । मारना । [भृ. उ. वध ।
मिद, भू. प. गर्व भू. आ. दि. प. चु. प. स्नेहन
मिजि, चु. प. प्रकाश, ।
मिवि, हु. प. सेचन, ।
मिश, भू. प. शब्द, कोप, ।
मिश्र, चु. प. योग; मिलना ।
मिष, भू. प. सेचन तु. प-स्पर्धा, । हसद करना ।
मिह, भू. प. सेचन, । सींचना ।
मीह, दि. आ. क्री. उ. वध; चु. भू. प. निमेष, ।

मील, भू. प. निमेष,। झमकना।
मीव, भू. प. स्थूलता,। मोटापन।
मुख, भू. प. मण्डन, शोभा।
मुच, भू. आ. दम्भ. शाठ्य, चु. प. मोचन।
मुठ, तु. प. आक्षेप, मर्दन।
मुण, तु. प. प्रतिज्ञा।
मूद, भू. आ. हर्ष. चु. प. संसर्ग।
मुद, भू. आ. हर्ष चु. प. संसर्ग।
मुचि, भू. आ. दम्भ, शाठ्य, भू. प. गति।
मुजि, चु. प. मार्जन, शब्द।
मुटि, भू. प. मर्दन। मलना।
मुठि, भू. आ. पलायन। भागना।
मुडि, भू. प. छेदन, मर्दन, भू. आ. मज्जन,।
मुर, तु. प. वेष्टन। लपेटना।
मूर्छ, भू. प. मोह, वृद्धि।
मूर्व, भू. प. बन्धन। बांधना।
मूश, भू. प. वध दि. प. छेदन क्री. प. लुण्ठन।
मूस, दि. प. छेदन। तोडना।
मूस्त, चु. प. संहति। मिलाना।
मृ, तु. आ. मरण। मारना।
मृग, दि. प. चु. आ. अन्वेषण।
मृज, अ. प. शोधन चु. भू. प. भूषण शोधन।
मृड, तु- क्री. प. हर्ष, मर्दन। मलना।
मृण, तु. प. वध। मारना।
मृद, क्री. प. मर्दन। मलना।
मृध, भू. उ. क्लेदन। गालना।
मृश, तु. प. मर्शन, स्पर्श। [सहन।
मृष, भू. प. सेचन, भू. उ. अदि. उ. चु. प. क्षमा
मॄ, क्री. प. वध।
मे, भू. आ. प्रतिदान, विनमय।
मेट(ड), भू. प. उन्माद।
मेथ(ध), भू. उ. संग, बध।
मेद, भू. उ. वध, मेधा।
मेथ, भू. आ. गमन।
मेव, भू. आ. सेवा।
मोक्ष, चु. भू. प. क्षेपण। छूटना।
म्रा, भू प. अभ्यास।
म्रक्ष, भू. प. संघात. चु. प. मोक्षण, स्नेहन।
म्रद, भू. आ. क्षोदन। पीसना।
म्रुच, भू. प. गति।
म्रेट(ड), भू. प. उन्माद।
म्लुच, } भू. प. गमन।
म्लुचि, }
म्लेछ, चु. भू. प. अपशब्द।
म्लेट(ड), भू. प. उन्माद।
म्लेव, भू. आ. सेवा।
म्लै, भू. प. हर्ष, जय।

य.

यक्ष, चु. आ. पूजन।
यज, भू. उ. देवपूजन, दान, संग करण।
यत, भू. आ. यत्न चु. प खेद, भूषण।
यंत्र, चु. प. संकोच।
यभ, भू. प. स्त्रीसंग, मैथुन। जमआ करना।
यम, भू. प. उपरम चु. प. परिवेषण, वेष्टन।
यस, दि. प. यत्न करना।
या, अ. प. गति। जाना।
याच, भू. उ. याच्ञा। मागना। [बांधना।
यु, अ. प. मिश्रण, क्री उ. बन्धन। मिलाना,
युज, दि. आ. समाधि, रु. उ. संयोग, संयम. चु. भू. प. घु. आ. निन्दा, संयम।
युत, भू. आ. प्रकाश।
युध, दि. आ. युद्धकरना।
युगि, भू. प. त्याग। तजना।
युथ, दि. प. विमोह।
युग, भू. प. भजन।
यूप, भू. प. वध। मारना।
येष, भू. आ. यत्न। कोशश करना।
यौट(ड), भू. प. सम्बन्ध।

र.

रक, चु. प. स्वाद. प्राप्ति।
रक्ष, भू. प. पालन।
रख, भू. प. गति।
रग, भू. प. शङ्का. गति. चु. प. आ. स्वाद प्राप्ति.।
रच, चु. प. करण। रचना।
रट(ठ), भू. प. कथन, याच्ञा।
रण, भू. प. गति, शब्द।
रद, भू. प. उत्खात,।
रध, दि. प. वध, पाक।

रखि(गी), भू. प. गति, चु. प. प्रकाश ।
रघि, भू. आ. गति, चु. प. प्रकाश ।
रजि, भू. दि. उ. रंजन, राग, ।
रफि, भू. प. गति, वध ।
रवि, भू. प. गति, भू. आ. शब्द ।
रभि, भू. आ. शब्द । बोलना ।
रहि, भू. प. गति । गमन ।
रुप, भू. प. कथन ।
रुफ, भू. प. गति, वध ।
रभ, भू. आ. वेगसे चलना, औत्सुक्य ।
रम, भू. आ. क्रीड़ा, रति ।
रय, भू. आ. गति । ज्ञान, गमन, प्राप्ति ।
रस, भू. प. शब्द चु. प. आस्वादन. स्नेहन ।
रह, भू. प. चु. प. त्याग ।
रा, अ. प. दान । देना ।
राख, भू. प. शोषण, अलमर्थ ।
राग, भू. आ. शक्ति ।
राज, भू. उ. प्रकाश ।
राध, दि. सु. प. सिद्धि, वध, ।
रास, भू. आ. शब्द ।
रि, तु. प. गति, सु. प. वध ।
रिच, रु. उ. शून्यकरण, चु. भू. प. संपर्क, विरोध ।
रिज, भू. आ. भर्जन । भूनना ।
रिखि(गि), भू. प. गति ।
रिफि, तु. प. वध । कतल करना ।
रिभ, भू. प. शब्द । बोलना ।
रिश, तु. प. वध । कतल करना ।
रिप(ह), भू. प. वध । कतल करना
री, दि. आ. क्षरण क्री. आ. गति, शब्द ।
रीव, भू. उ. ग्रहण, संवृति ।
रु, भू. आ. गति, वध, अ. प. शब्द ।
रुच, भू. आ. प्राभिलाप, दीप्ति ।
रुज, तु. प. भङ्ग, चु. प. वध ।
रुट, भू. आ. दीप्ति, प्रतिघात, चु. प. क्रोध दीप्ति ।
रुठ, भू. प. उपघात, भू. आ. प्रतिघात ।
रुद, अ. प. रोदन । रोना ।
रुध, रु. उ. आवरण । रोकना ।
रुदि, भू. प. चोरी । चुराना ।
रुठि, भू. प. गति आलस्य, चौर्य ।
रुशि, चु. प. दीप्ति । चमकना ।
रुष, तु. प. वध । कतल करना ।
रुश, भू. प. दि. प. चु प. क्रोध ।
रुह, भू. प. उत्पत्ति; उत्पन्न होना ।
रुक्ष, चु. प. पारुष्य; रुखा बोलना ।
रेक, भू. आ. शंका; संदेह करना ।
रेज, भू. आ. प्रकाश; । चमकना ।
रेट, भू. उ. याचना; मांगना ।
रेभ, रेप भू. आ. शब्द ।
रेव, भू. आ. लम्फ; छाल मारना ।
रेष, भू. आ. अश्वध्वनि, वृक-शब्द; हिनहिनाना,
रै, भू. प. शब्द । बोलना ।
रोड, रोट. भू. प. अनादर; । बेइज़त क०

ल.

लक, चु. प. स्वादन, प्राप्ति । खाना, पाना ।
लक्ष, चु. आ. आलोचन, चु. उ. दर्शन, चिन्ह-करण ।
लख, भू. प. गति । गमन ।
लग, भू. प. संग, चु. प. स्वादन, प्राप्ति ।
लट, भू. प. बालकत्व कथन ।
लड, { भू. प. विलास, जिव्हा चालन । चु. प. सेवा । चु. आ. वीप्सा ।
लत, भू. प. आघात, वध ।
लथि, { भू. प. शोषण । सुखाना । भू. आ. भोजन, गति । चु. प. प्रकाश । रोशनक.
लजि, { भू. प. भर्त्सन । झिडकना । चु. प. प्रकोष्टवास वध बल दान ।
लडि, भू चु. प. उत्क्षेप, कथन ।
लभि, भू. आ. शब्द ।
लप, भू. प. कथन । करना ।
लभ, भू. आ. प्राप्ति; लाभ ।
लय, भू. आ. गति । पहुंचना ।
लल, चु. आ. चु. प. प्राप्तीच्छा ।
लश, (प) (स) चु. प. शिल्पयोग ।
लष, भू. दि स्पृहा; इच्छा । चाहना ।
लस्ज, सू. आ. लज्जा । शरमिंदह होना ।
ला, अ. प. दान, ग्रहण; देना, लेना ।
लाख, भू. प. शोषण, अलमर्थ; सुखाना ।

लाघ, भू. आ. शक्ति; सामर्थ्य ।
लाज, भू. प. भर्त्सन, तर्जन; झिड़कना ।
लाड, चु. प. चिन्ह करणा । नशानक० ।
लिख, तु. प. लेखन; लिखना ।
लिट, भू. प, भृत्य भाव; नाचना ।
लिखि(गि) { भू. प. ज्ञान, गमन, प्राप्ति । चु. प. चित्रीकरण ।
लिप, तु. उ. लेपन; लिपना ।
लिप, दि. आ. तुच्छता, तु. प. गति ।
लिह, अ. उ. आस्वाद; स्वादचखना । [वीकरण ।
ली, दि. आ. आश्लेप, क्री. प. गति, भू. प. द्र-
लुट, { भू. आ. प्रतिघात, चु. प. प्रकाश । दि. प. भू. प. विलुंठन, विलोडन ।
लुठ, भू. प. भू. आ. लुंठन, गति, आलस्य, स्तेय, प्रतिघात, तु. प. लुंठन, विलोडन, चु. प. चौर्य्य ।
लुचि, भू. प. अपनयन ।
लुडि, भू. प. विलोडन, तु. प, संवरण, आश्लेष ।
लुडि, चु. प. चौर्य्य; चोरी करना ।
लुथि, भू. प. वध; मारना ।
लुप, दि. प. विमोहन; भू. उ. छेदन, श्लेष ।
लुभ, दि. प. लोभ; तु. प. विमोहन; लालच करना ।
लुह, भू. प. लोभ । लालच ।
लू, क्री. उ. छेदन । काटना ।
लूप, चु. प. वध । कतल ।
लोक (च), भू. आ. दर्शन चु. प. प्रकाश ।
लोट, (ड) भू. प. उन्माद ।
लोष्ट, भू. आ. संहति ।
ल्पी, क्री. प. आश्लेप ।
ल्वी, क्री. प. गति ।

व

वक, भू. आ. गति ।
वक्ष, भू. प. कोप, संघात ।
वख, भू. प. गति, ज्ञान, प्राप्ति ।
वच, भू. आ. प. कथन. चु. प. संदेश ।
वज, भू. प. गति, चु. प. गति संस्कार ।
वट, भू. प. कथन, चेष्टा, चु. प. विभाग ।
वठ, भू. प. स्थौल्य । मोटा होना ।
वड, भू. प. आरोहण; चढ़ना ।
वण, भू. प. शब्द । [संदेश ।
वद, भू. प. कथन, भू. आ. उ. चु. प. कथन,
वध, भू. प. हनन; मारना ।
वन, भू. प. सेवा, भाग, भू. प. व्यापृति, त. आ. याचना, भू. प. उपकार, श्रद्धा ।
वकि, चु. भू. प. गति, कौटिल्य ।
वखि, भू. प. गति । [रम्भ, वेग ।
वगि (घि) भू. प. खंजगति, भू. आ. निंदा, आ-
वचि, भू. प. गति, चु, आ. वंचन ।
वटि, चु. भू. प. विभाग, कतल ।
वठि, भू. आ. एकाकी भ्रमण ।
वडि, भू. आ. वेष्टन, चु. आ. विभागकरण ।
वदि, भू आ. स्तुति, अभिवादन; वन्दना ।
वहि, भू. आ. वृद्धि, चु. प. प्रकाश ।
वप, भू. उ. मुण्डन कराना ।
वभ्र, भू. प. गति ।
वम, भू. प. वमन-करना । कयक० ।
वय, भू आ. गति ।
वर, चु. प. प्राप्तीच्छा ।
वर्च, भू. आ. प्रकाश ।
वर्ण, चु. प. स्तुति, विस्तार ।
वर्ध, चु. प. पूरण, छेदन ।
वर्ह, भू. प. श्रेष्ठता, चु. प. वध, प्रकाश ।
वल, भू. आ. आस्तरण; बिछौना ।
वल्क, चु. प. कथन; कहना ।
वल्ग, भू. प. गति प्लुति; कूदना ।
वल्भ, भू. आ. भोजन; खानाखाना ।
वल्ह, भू. आ. श्रेष्ठता ।
वश, अ. प. इच्छा, कामना ।
वश, भू. प. वध. ।
वस, भू. प. चु. प. निवास अ. आ. आच्छादन । दि. प. स्तम्भन, औद्धत्य चु. प. स्नेह, छेद, वध ।
वस्क(ष्क) भू. आ. गति ।
वस्त, चु. आ. वध. पीड़न ।
वह, भू. उ. प्रापण, वहन । उठाना ।
वा, अ. प. गति, वध, चु. प. ख्याति, गति, सेवा ।
वाड, भू. आ. आप्लावन; डुबोना ।
वात, चु. प. गति, सेवा ।
वाध, भू. आ. पीडन । पीडा देना ।
वांक्षि(छि) भू. प. इच्छा । इच्छा करना ।
वाश, दि. आ. शब्द करना ।

स्तृह, तु. प. वध । कतल क० ।
स्तृ, क्री. उ. आच्छादन । ढांपना ।
स्तृह, तु. प. वध । कतल क० ।
स्तेन, चु. प. चौर्य । चोरी क० ।
स्तेय, भू. आ. क्षरण, चु. क्षेपण ।
स्त्यै, भू. प. संघात ।
स्थण, भू. प. संवरण । ढांपना ।
स्था, भू. प. स्थिति । ठहरना ।
स्थूड, तु. प. संवरण । ढांपना ।
स्थूल, चु. आ. बृंहण, वृद्धि । मोटा होना ।
स्नस, दि. प. निवास, निरास ।
स्ना, अ. प. न्हाना ।
स्निट, चु. प. स्नेह करना ।
स्निह, दि. प. प्रीति, चु. प. स्नेहन ।
स्नु, अ. प. क्षरण; खिरना ।
स्नुस, दि. प. भक्षण; खाना ।
स्नुह, दि. प. वमन । कै करना ।
स्नै, भू. प. वेष्टन; लपेटना ।
स्पन्द, भू. आ. ईपत्कम्प; तनक कांपना ।
स्पर्द्ध, भू. आ. संघर्ष, स्पर्द्धा । हसद क० ।
स्पर्श, चु. आ. ग्रहण, आश्लेप, भू. उ. ग्रथन ।
स्पृ, सु. प. प्रीति, रक्षा, ।
स्पृश, तु. प. स्पर्श; छूना ।
स्पृह, चु. प. ईप्सा, लोभ; इच्छा, ।
स्फट तु. प. विसरण । फटना ।
स्फर(ल), तु. प. स्फूर्ति, चलन ।
स्फाय, तु. आ. वृद्धि । फूलना ।
स्फिट(ट्ट), चु. वध, आवरण, अनादर ।
स्फुन्ट, चु. प. परिहास; हंसी ।
स्फुर(ल), तु. प. स्फूर्ति, संचलन । फरकना ।
स्फूर्छ, भू. प. विस्मरण; चूक जाना ।
स्फूर्ज, भू. प. वज्रनिर्घोष, बिजलीका कड़कना ।
स्मि, भू. आ. ईपद्धास्य; तनकहंसना ।
स्मिट, चु. प. अनादर करना ।
स्मील, भू. प. निमेषण, झमकना ।
स्यन्द, भू. आ. क्षरण; खिरना ।
स्यम, तु. प. चु. प. शब्द, चु. उ. वितर्क ।
स्रन्क, भू. आ. गति, ज्ञान, प्राप्ति ।
स्रन्भ, भू. आ. प्रसाद, भू. आ. विश्वास करना ।
स्रन्स, भू. आ. भ्रंश, पतन, प्रमाद ।
स्रव, दि. प. शोषण, गति ।
स्रु, भू. प. गति, क्षरण; खिरना, बहना ।
स्रै, भू. प. पाक; पकाना ।
स्वद, भू. आ. आस्वादन, प्रीति, चु. प. छेदन ।
स्वन, भू. प. चु. प. शब्द; भूषणोंका शब्द ।
स्वन्ज, भू. आ. आलिङ्गन; गलेमिलना ।
स्वप, अ. प. सोना ।
स्वर, चु. प. आक्षेप, निंदा । हजो क० ।
स्वर्त, चु. प. गति । चलना, पाना ।
स्वर्द, भू. आ. प्रीति, आस्वादन ।
स्वाद, भू आ. प्रीति, आस्वादन । ज़ायका चखना ।
स्विद, भू. आ. दि. प. स्वेदन, घर्म, मोह, स्नेद, मोक्ष । पसीजना ।
स्वूर्छ, भू. प. भूलजाना ।
स्वृ, क्री. प. वध । कतल करना ।
स्वेक, भू. आ. गति । चलना ।

ह

हट, भू. प. दीप्ति । चमकना ।
हठ, भू प. शठता, बलात्कार, क्षुति, ।
हद, भू. आ. विष्ठात्याग; हगना ।
हन, अ. प. वध, गति ।
हम्म्य, भू. प. गति ।
हय(र्य), भू. प. क्लान्त, गति, भक्ति, शब्द ।
हल, भू. प. विलेखन; खोदना ।
हस, भू. प. हंसी । हसना ।
हा, जु. आ. गति जु. प. त्याग । छोड़ना ।
हि, सु. प. वृद्धि, गति । बढ़ना ।
हिक्क, भू. उ. कूजन, चु. आ. वध ।
हिट, भू. प, आक्रोश; निंदाकरना ।
हिन्ड, भू. आ. गति । चलना ।
हिन्व, भू प. प्रीति । प्यार करना ।
हिंस, भू. प. वध, रु. चु । मारना, ईज़ा पहुंचाना ।
हिल, तु. प. हावकरण । ताड करना ।
हिल्लोल, चु. प. दोलन । झूटना ।
हु, हु. प. होम, भक्षण, दान, आदान, ।
हुड, तु. प. भजन, भू. आ. गति । [मारना ।
हुन्ड, भू. आ. संघ, मज्जन; इकत्र होना, गोता
हुर्छ, भू. प. कौटिल्य ।

ष्वक्क, भू. आ. गति ।

स

सग, भू. संवरण । ढांपना ।
सघ, सु. प. वध । कतल क० ।
संकेत, चु. प. आमन्त्रण, संग्राम, चु. आ. युद्ध ।
सच, भू. प. संबंध, भू. आ. सेचन ।
सट, भू. प. अंश, चु. प. प्रकाशन ।
सट्ट, चु. प. वास. वध. दान ।
सठ, चु. प. गति, अहंकार ।
सत्र, चु. आ. संबंध, संतति ।
सद, भू. तु. प. विषाद, गति ।
सन, भू. प. सेवा, लाग, तु. उ. दान ।
सजि, भू. प. सङ्ग । मिलना ।
स्रवि, भू. प. गति । चलना ।
संसा, अ. प. गति ।
सप, भू. प. गमन । पतन ।
सपर, नामधातु; पूजा करना ।
सभाज, चु. प. सेवा, संभाषण ।
सम, भू. प. चु. प. वैक्लव्य ।
सर्ज, भू. प. अर्जन । इकट्ठा क० ।
सर्व, भू. प. गति ।
सल, भू. प. गति ।
स्रव, अ. प. निद्रा ।
सह, भू. आ. दि. प. चु. भू. प. शक्ति, सहन ।
साघ, दि. सु. प. सिद्धि ।
सान्त्व, चु. प. प्रियवचन । तसल्ली देना ।
साम, चु. प. प्रियवचन कहना ।
सि, सु. क्री. उ. बन्धन । बांधना ।
सि, भू. प. सेचन । सींचना ।
सिच, तु. प. सेचन, क्षरण ।
सिट, भू. प. अनादर करना ।
सिघ, भू. प. गति दि. प. सिद्धि ।
सिभि, भू. प. वध ।
सिल, तु. प. उंछवृत्ति । खोशाचीनी करना ।
सिव, दि. प. तन्तुसन्तान । सीना ।
सीक, चु. भू. प. स्पर्श, भू. आ. सेचन ।
सु, भू. उ. गति भू. प. गति, ऐश्वर्य, प्रसव, अ. प. ऐश्वर्य, प्रसव, सु. उ. सन्धान स्नान, पीडन, मन्थन, चन्धन ।
सुख, चु. प. सुखकरण । आराम देना ।
सुट्ट, चु. प. तुच्छता, अनादर करना ।
सुन्थ, भू. प. प्रकाश, वध । चमकना, मारना ।
सुच, तु. प. दीप्ति, ऐश्वर्य ।
सुह, दि. प. तृप्ति ।
सू, अ. आ. दि. आ. प्रसव, तु. प. क्षेप, प्रेरण ।
सूच, चु. प पिशुनता । चुगली करना ।
सूत्र, चु. प. ग्रन्थन, वेष्टन, मोचन ।
सूद, भू. आ. निरसन, चु. प. क्षरण ।
सूर, दि. आ. वध, स्तम्भ ।
सूर्क्ष(र्क्ष्य), भू. प. अनादर ।
सूष, भू. प. प्रसव ।
सृ, भू. प. उ. प. गति, चु. प. आसारण ।
सृज, दि. आ. तु. प. विसर्जन, निर्माण ।
सृप, भू. प. गति । सरकना ।
सेक, भू. आ. गति ।
सेल, भू. प. चलन, गति, ।
सेव, भू. आ. उ. सेवा करना ।
सै, भू. प. क्षय करना ।
सो, दि. प. नाश करना । [उद्धार, द्रुतगति ।
स्कन्द, भू. प. गति, शोषण, भू. आ. आरोपण
स्कन्ध, भू. चु. प. इकट्ठा करना ।
स्कम्भ, भू. आ. स्तम्भन; रोकना ।
स्खल, भू. आ. विदारण; फाड़ना ।
स्तक, भू. प. प्रतीघात । रोकना ।
स्तन, भू. प. संवरण । ढांपना, गर्जना । [गर्जना ।
स्तुन, भू. प. शब्द, चु. प. मेघ-ध्वनि । बादलका
स्तुन्प, भू. आ. स्तम्भन, सु. क्री. प. रोध ।
स्तुम, भू. प. चु. प. विक्लवता ।
स्तिघ, सु. आ. आस्कन्दन ।
स्तिप, भू आ. क्षरण । गिरना ।
स्तित(स्ती), दि. प. आर्द्रीभाव ।
स्तु, अा. उ. स्तुति । तारीफ क० ।
स्तुच्, भू. आ. प्रसाद ।
स्तुन्य, सु. क्री. प. रोध ।
स्तुप, भू. आ. रोध ।
स्तूप, दि. प. उच्छ्राय । [रक्षा ।
स्तृ, सु. उ. विस्तार, प्रासारण, सु. प. प्रीति,
स्तृक्ष, भू. प. गति ।

स्तृह, तु. प. वध । कतल क० ।
स्तृ, क्री. उ. आच्छादन । ढांपना ।
स्तृह, तु. प. वध । कतल क० ।
स्तेन, चु. प. चौर्य । चोरी क० ।
स्तेय, भू. आ. क्षरण, चु. क्षेपण ।
स्तै, भू. प. संघात ।
स्थग, भू. प. संवरण । ढांपना ।
स्था, भू. प. स्थिति । ठहरना ।
स्थूड, तु. प. संवरण । ढांपना ।
स्थूल, चु. आ. बृंहण, वृद्धि । मोटा होना ।
स्नस, दि. प. निवास, निरास ।
स्ना, अ. प. न्हाना ।
स्निट, चु. प. स्नेह करना ।
स्निह, दि. प. प्रीति, चु. प. स्नेहन ।
स्नु, अ. प. क्षरण; खिरना ।
स्नुस, दि. प. भक्षण; खाना ।
स्नुह, दि. प. वमन । कै करना ।
स्नै, भू. प. वेष्टन; लपेटना ।
स्पन्द, भू. आ. ईषत्कम्प; तनक कांपना ।
स्पर्द्ध, भू. आ. संघर्ष, स्पर्द्धा । हसद क० ।
स्पर्श, चु. आ. ग्रहण, श्लेष, भू. उ. ग्रथन ।
स्पृ, सु. प. प्रीति, रक्षा, ।
स्पृश, तु. प. स्पर्श; छूना ।
स्पृह, चु. प. ईप्सा, लोभ; इच्छा, ।
स्फट तु. प. विसरण । फटना ।
स्फर(ल), तु. प. स्फूर्ति, चलन ।
स्फाय, तु. आ. वृद्धि । फूलना ।
स्फिट(ट्ट), चु. वध, आवरण, अनादर ।
स्फुन्द, चु. प. परिहास; हंसी ।
स्फुर(ल), तु. प. स्फूर्ति, संचलन । फरकना ।
स्फूर्छ, भू. प. विस्मरण; चूक जाना ।
स्फूर्ज, भू. प. वज्रनिर्घोष, विजलीका कड़कना ।
स्मि, भू. आ. ईषत्हास्य; तनकहंसना ।
स्मिट, चु. प. अनादर करना ।
स्मील, भू. प. निमेषण, झमकना ।
स्यन्द, भू. आ. क्षरण; खिरना ।
स्यम, तु. प. चु. प. शब्द, चु. उ. वितर्क ।
स्रन्क, भू. आ. गति, ज्ञान, प्राप्ति ।
स्रन्भ, भू. आ. प्रसाद, भू. आ. विश्वास करना ।
स्रन्स, भू. आ. भ्रंश, पतन, प्रमाद ।
स्रव, दि. प. शोषण, गति ।
स्रु, भू. प. गति, क्षरण; खिरना, बहना ।
स्रै, भू. प. पाक; पकाना ।
स्वद, भू. आ. आस्वादन, प्रीति, चु. प. छेदन ।
स्वन, भू. प. चु. प. शब्द; भूषणोंका शब्द ।
स्वन्ज, भू. आ. आलिङ्गन; गलेमिलना ।
स्वप, अ. प. सोना ।
स्वर, चु. प. आक्षेप, निंदा । हज्वो क० ।
स्वर्त, चु. प. गति । चलना, पाना ।
स्वर्द, भू. आ. प्रीति, आस्वादन ।
स्वाद, भू. आ. प्रीति, आस्वादन । ज़ायका चखना ।
स्विद, भू. आ. दि. प. स्वेदन, घर्म, मोह, स्नेह, मोक्ष । पसीजना ।
स्वूर्छ, भू. प. भूलजाना ।
स्वृ, क्री. प. वध । कतल करना ।
स्वेक, भू. आ. गति । चलना ।

ह

हट, भू. प. दीप्ति । चमकना ।
हठ, भू. प. शठता, बलात्कार, गति, ।
हद, भू. आ. विष्टात्याग; हगना ।
हन, अ. प. वध, गति ।
हम्य, भू. प. गति ।
हय(र्य), भू. प. क्लान्त, गति, शक्ति, शब्द ।
हल, भू. प. विलेखन; खोदना ।
हस, भू. प. हंसी । हंसना ।
हा, जु. आ. गति जु. प. त्याग । छोड़ना ।
हि, सु. प. वृद्धि, गति । बढ़ना ।
हिक, भू. उ. कूजन, चु. आ. वध ।
हिट, भू. प, आक्रोश; निंदाकरना ।
हिन्ड, भू. आ. गति । चलना ।
हिन्व, भू प. प्रीति । प्यार करना ।
हिंस, भू. प. वध, रु. चु । मारना, ईज़ा पहुंचाना ।
हिल, तु. प. हावकरण । ताड करना ।
हिलोल, चु. प. दोलन । झूलना ।
हु, हु. प. होम, भक्षण, दान, आदान, ।
हुड, तु. प. भजन, भू. आ. गति । [मारना ।
हुन्ड, भू. आ. संघ, मज्जन; इकट्ठा होना, गोता
हुर्छ, भू. प. कौटिल्य ।

हुल, भू. प. गति, आवरण, वध।
हृ, भू. उ. हरण; हरा जु. प. बलात्कारसे छीनना।
हृष, भू. प. दि. प. तुष्टि भू. प. झूठ।
हेट, भू. प. पीडन। दुःख देना।
हेठ, भू. उ. बाधा, तु. प. दुःख देना।
हेड, भू. आ. अनादर, गति, भू. प. वेष्टन।
हेष, भू. आ. अश्वध्वनि। घोडेका हिनहिनाना।
हो(हौ), भू. आ. गति। पंहुंच
ह्मल, भू. प, चलन।
ह्रग, भू. प. आच्छादन; पर्दा,
ह्रस, भू. प. शब्द, अल्पीभाव; कम होना।
ह्राद, भू. आ. शब्द, आमोद।
हुडु(म) (ह्रीम), भू. आ. गति।
ह्रेप, भू. आ. गति। पहुंचना, जाना।
ह्रेष, भू. आ. अश्वध्वनि; हिनहिनाना।
ह्लग(ह्लग), देखो।
ह्लप, चु. प. कथन। कहना।
ल्हाद, भू. आ. आमोद। खुश होना।
ह्वल, ह्मल देखो।
ह्वृ, भू. प. कौटिल्य। तिरछा चलना।
ह्वे, भू. उ. स्पर्द्धा, आव्हान। हसद करना, बुलाना।